vol - 8 हदीस न. 6517 से 7563

بسم الله الرحمن الرحيم

صحیح بخاری

सहीह बुख़ारी

मय तर्जुमा व तफ़्सीर

जिल्द : आठ

मुरत्तिब

अमीरुल मोमिनीन फ़िल हदीष़ सैयदुल फ़ुक़हा हज़रत इमाम अबू अब्दुल्लाह

मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी (रह.)

उर्दू तर्जुमा व तशरीह

हज़रत मौलाना मुहम्मद दाऊद राज़ (रह.)

हिन्दी तर्जुमा

सलीम ख़िलजी

प्रकाशक : शो'बा नश्रो इशाअत

जमीअ़त अहले हदीस, जोधपुर-राजस्थान

© सर्वाधिकार प्रकाशनाधीन सुरक्षित

अल्लामा मुहम्मद दाऊद राज़ (रह.) के ख़लीफ़ा नज़ीर अहमद बिन मुहम्मद दाऊद राज़ ने सहीह बुख़ारी की उर्दू शरह के हिन्दी अनुवाद सम्बंधित समस्त अधिकार जमीयत अहले हदीष़ जोधपुर (प्रकाशक) के नाम कर दिये हैं। इस किताब में प्रकाशित सामग्री के सर्वाधिकार प्रकाशक के पास सुरक्षित है। कोई व्यक्ति/संस्था/समूह/प्रकाशन आदि इस पुस्तक की आंशिक अथवा पूरी सामग्री किसी भी रूप में मुद्रित/प्रकाशित नहीं कर सकता। इस चेतावनी का उल्लंघन करने वालों के ख़िलाफ़ क़ानूनी कार्रवाई की जाएगी, जिसके समस्त हर्जे-ख़र्चे के वे स्वयं उत्तरदायी होंगे। सभी विवादों का न्यायक्षैत्र जोधपुर (राजस्थान) होगा।

नाम किताब : सहीह बुख़ारी (हिन्दी तर्जुमा व तफ़्सीर)
मुरत्तिब (अरबी) : अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी (रह.)
उर्दू तर्जुमा व शरह : अल्लामा मुहम्मद दाऊद राज़ (रह.)
हिन्दी तर्जुमा व नज़रे-षानी : सलीम ख़िलजी
तस्हीह (Proof Checking) : जमशेद आलम सलफ़ी

कम्प्यूटराइज़ेशन, डिज़ाइनिंग एवं लेज़र टाइपसेटिंग : ख़लीज मीडिया, जोधपुर (राज.)
khaleejmedia78@yahoo.in # 91-98293-46786
हिन्दी टाइपिंग : मुहम्मद अकबर
ले-आउट व कवर डिज़ाइन : मुहम्मद निसार खिलजी, बिलाल ख़िलजी
मार्केटिंग एक्ज़ीक्यूटिव : फ़ैसल मोदी

ता'दाद पेज (जिल्द-8) : 652 पेज
प्रकाशन (प्रथम संस्करण) : रमज़ान 1433 हिजरी (अगस्त 2012)
ता'दाद (प्रथम संस्करण) : 2400
क़ीमत (जिल्द-8) : 450/-
प्रिण्टिंग : अनमोल प्रिण्ट्स, जोधपुर (0291-2742426)
प्रकाशक : जमीयत अहले हदीष़ जोधपुर (राज.)

मिलने के पते

मुहम्मदी एण्टरप्राइजेज़
तेलियों की मस्जिद के पीछे, सोजती गेट के अन्दर, जोधपुर-1
(फ़ोन): 99296-77000, 92521-83249,
93523-63678, 90241-30861

अल किताब इण्टरनेशल
जामिया नगर, नई दिल्ली-25
(फ़ोन): 011-6986973
93125-08762

फ़ेहरिस्ते-मज़ामीन

मज़मून	सफ़ा नं.
सूर फूँकने का बयान	17
अल्लाह तआला ज़मीन को अपनी मुट्ठी में ले लेगा	19
हश्र की कैफ़ियत का बयान	20
अल्लाह तआला का सूरह हज्ज में इर्शाद कि क़यामत की हलचल........	24
सूरह मुतफ़्फ़िफ़ीन में इर्शादे बारी तआला 27	25
क़यामत के दिन बदला लिया जाएगा	26
जिसके हिसाब में खोद कुरेद की गई	28
जन्नत में सत्तर हज़ार आदमी बिलाहिसाब दाख़िल होंगे	30
जन्नत और जहन्नम का बयान	33
स़िरात़ एक पुल है जो दोज़ख़ पर बनाया गया है	45
हौज़े कौष़र का बयान	49
किताबुल क़द्र	
अल्लाह के इल्म (तक़दीर) के मुताबिक़ क़लम ख़ुश्क हो गया	59
इस बयान में कि मुश्रिकों की औलाद......	60
अल्लाह ने जो हुक्म दिया है वो ज़रूर होकर रहेगा	61
अमलों का ऐतबार ख़ात्मे पर मौक़ूफ़ है	63
नज़्र करने से तक़दीर नहीं पलट सकती	64
ला हौल वला क़ुव्वत इल्लाबिल्लाह की फ़ज़ीलत का बयान	65
मा'सूम वो है जिसे अल्लाह गुनाहों से बचाए रखे	66
और उस बस्ती पर हमने ह़राम कर दिया है......	67
सूरह बनी इस्राईल की एक आयत की तफ़्सीर	68
आदम (अ़लैहि.) और मूसा (अ़लैहि.) ने जो मुबाहसा	68
जिसे अल्लाह दे उसे कोई रोकने वाला नहीं	69
बदक़िस्मती और बदनस़ीबी से अल्लाह की पनाह माँगना	70
एक आयत की तश्रीह़	70
एक और आयत की तश्रीह़	71
आयत 'वमा कुन्ना लिनहतदिय' अल्ख़ की तफ़्सीर	72
किताबुल ईमान.........	
सूरह माइदा में एक इर्शादे बारी तआला	73
रसूलुल्लाह (ﷺ) का यूँ क़सम खाना.....	75
अपने बाप दादा की क़सम न खाओ	87
लात व उ़ज़्ज़ा और बुतों की क़सम खाए	87
बिन क़सम दिये क़सम खाना कैसा है	88
उस शख़्स़ के बारे में जिसने इस्लाम के सिवा और किसी	88
यूँ कहना मना है कि जो अल्लाह चाहे और आप चाहें	89
सूरह नूर की एक आयते शरीफ़ा	90
अगर किसी ने कहा कि मैं अल्लाह को गवाह करता हूँ	91
जो शख़्स़ अ़ला अ़हदिल्लाह कहे तो क्या हुक्म है	92
अल्लाह तआला की इ़ज़्ज़त, उसकी स़िफ़ात.....	93
कोई शख़्स़ कहे कि	94
लग़्व क़समों के बारे में इर्शादे बारी तआला	94
अगर क़सम खाने के बाद भूले से...... 27	95
क़समों का बयान	101
सूरह आले इ़म्रान की आयत की तश्रीह़	101
मिल्क ह़ास़िल होने से पहले या गुनाह की बात......	102
जब किसी ने कहा कि वल्लाह मैं आज बात......	105
जिसने क़सम खाई कि अपनी बीवी के पास एक महीने..	106
जब किसी ने क़सम खाई कि सालन नहीं खाऊँगा	108
क़समों में निय्यत का ऐतबार होगा	110
जब कोई शख़्स़ अपना माल नज़्र या तौबा के तौर पर ख़ैरात कर दे	110
अगर कोई शख़्स़ अपना खाना अपने ऊपर ह़राम कर ले	111
मन्नत नज़्र पूरी करना वाजिब है	112
उस शख़्स़ का गुनाह जो नज़्र पूरी न करे	113
ऐसी नज़्र का पूरी करना लाज़िम है जो इ़बादत और इ़ताअ़त........	114
किसी ने जाहिलिय्यत में इस्लाम लाने से पहले....	114
जो मर गया और उस पर कोई नज़्र बाक़ी रह गई	114
ऐसी चीज़ की नज़्र जो उसकी मिल्कियत में नहीं है......	115
जिसने कुछ ख़ास़ दिनों में रोज़ा रखने की नज़्र मानी हो	117

फ़ेहरिस्ते-मज़ामीन

मज़मून	सफ़ा नं.
क्या क़समों और नज़्रों में ज़मीन, बकरियाँ......	118
किताब कफ़्फ़ारतुल ऐमान	
सूरह माइदा में अल्लाह तआला का फ़र्मान	120
सूरह तह्रीम में अल्लाह का फ़र्मान अदा करने के लिए	120
जिसने कफ़्फ़ारा अदा करने के लिए किसी तंगदस्त की मदद की	121
कफ़्फ़ारा में दस मिस्कीनों को खाना खिलाया जाए	122
मदीना मुनव्वरा का साअ......	123
सूरह माइदा में एक इर्शादे बारी	124
जब कफ़्फ़ारे में गुलाम आज़ाद करेगा तो.....	126
अगर कोई शख़्स क़सम में इंशाअल्लाह कह दे	126
क़सम का कफ़्फ़ारा, क़सम तोड़ने से पहले.....	127
किताबुल फ़राइज़	
फ़राइज़ का इल्म सिखना	132
नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि हमारा कोई वारिष़ नहीं	133
नबी करीम (ﷺ) का इर्शाद कि जिसने माल छोड़ा हो	136
लड़के की मीराष़ उसके बाप.....	137
अगर किसी के लड़का न हो तो पोते की मीराष़ का बयान	138
अगर बेटी की मौजूदगी में पोती भी हो?	139
बाप या भाईयों की मौजूदगी में दादा की मीराष़ का बयान	140
औलाद के साथ ख़ाविन्द को क्या मिलेगा?	141
बीवी और ख़ाविन्द को औलाद वग़ैरह के साथ क्या मिलेगा?	142
बेटियों की मौजूदगी में बहनें अ़स्बा हो जाती हैं	142
बहनों और भाईयों को क्या मिलेगा	143
सूरह निसा में विराष़त के बारे में	143
अगर कोई औरत मर जाए....	144
ज़विल्अर्हाम का बयान	144
लिआ़न करने वाली औरत अपने बच्चे की वारिष़ होगी	145
बच्चा उसी का कहलाएगा जिसकी बीवी या लौण्डी से पैदा हुआ	146
साइबा वो गुलाम या लौण्डी जिसको मालिक आज़ाद कर दे	147
जो गुलाम अपने अस़ली मालिकों को छोड़कर......	148
जब कोई किसी मुसलमान के हाथ पर इस्लाम लाए.....	148
वलाअ का तअ़ल्लुक़ औरत के साथ क़ायम हो सकता है	149
जो शख़्स किसी क़ौम का गुलाम हो आज़ाद किया हो...	150
अगर कोई वारिष़ काफ़िरों के हाथ क़ैद हो गया?	150
मुसलमान काफ़िर का वारिष़ नहीं हो सकता, न काफ़िर...	151
जो किसी शख़्स को अपना भाई या भतीजा होने का दावा	152
किसी औरत का दावा करना कि ये मेरा बच्चा है	153
क़याफ़ा शनास का बयान	153
किताबुल हुदूद	
ज़िना और शराब नोशी के बयान में	155
शराब पीने वालों को मारने के बयान में	155
जिसने घर में ह़द मारने का हुक्म दिया	156
शराब में छड़ी और जूते से मारना	156
शराब पीने वाला इस्लाम से निकल नहीं जाता....	157
चोर जब चोरी करता है	159
चोर का नाम लिए बग़ैर उस पर ला'नत भेजना दुरुस्त है	159
ह़द क़ायम होने से गुनाह का कफ़्फ़ारा हो जाता है	159
मुसलमान की पीठ मह़फ़ूज़ है हाँ जब कोई......	160
हुदूद क़ायम करना अल्लाह की हुरमतों....	161
जब कोई बुलन्द मर्तबा शख़्स हो.....	161
जब ह़द्दे मुक़द्दमा ह़ाकिम के पास पहुँच जाए, फिर....	162
सूरह माइदा में इर्शादे बारी	162
चोर की तौबा का बयान	163
किताबुल मह़ारिबीन	
सूरह माइदा की आयत की तफ़्सीर	167
नबी करीम (ﷺ) ने उन मुर्तदों डाकूओं के.......	169
मुर्तद लड़ने वालों को पानी भी न देना	169
नबी करीम (ﷺ) मुर्तद लड़ने वालों की आँखों में......	169
जिसने फ़वाहिश को छोड़ दिया.....	170
ज़िना के गुनाह का बयान	172

फ़ेहरिस्ते-मज़ामीन

मज़मून	सफ़ा नं.
महज़ शादीशुदा को ज़िना की इल्लत में संगसार करना	174
पागल मर्द या औरत को रजम नहीं किया जाएगा	175
ज़िना करने वालों के लिए पत्थरों की सज़ा है	176
बलात् में रजम करना	176
ईदगाह में रजम करना	177
जिसने कोई ऐसा गुनाह किया जिस पर कोई हृद नहीं	177
जब कोई शख़्स हृद्दे गुनाह का इक़रार.....	179
क्या इमाम ज़िना इक़रार करने वाले से ये कहे कि......	179
ज़िना का इक़रार करना	181
अगर कोई औरत ज़िना से हामिला पाई जाए.....	182
इस बयान में कि ग़ैर शादीशुदा मर्द व औरत को कोड़े..	189
बदकारों और मुख़न्नषों को शहर बदर करना	190
जो शख़्स हाकिमे इस्लाम के पास न हो.....	190
एक इर्शादे बारी तआला	191
जब कोई कनीज़ ज़िना कराए	192
लौण्डी को शरई सज़ा देने के बाद.....	192
ज़िम्मियों के अहकाम.....	193
अगर हाकिम के सामने कोई शख़्स अपनी औरत को....	194
हाकिम की इजाज़त के बग़ैर अगर कोई शख़्स.....	195
उस मर्द के बारे में जिसने अपनी बीवी के साथ....	196
इशारे कनाए के तौर पर कोई बात कहना	197
तम्बीह और तअज़ीर यानी हृद्दे से कम सज़ा कितनी.....	198
अगर किसी शख़्स की बेहयाई और बेशर्मी	200
पाक दामन औरतों पर तोहमत लगाना गुनाह है	202
गुलामों पर नाहक़ तोहमत लगाना....	203
अगर इमाम किसी शख़्स को हुक्म करे.....	204

किताबुत दियात

28

मज़मून	सफ़ा नं.
सूरह निसा की एक आयत की तशरीह	205
सूरह माइदा की एक आयत की तशरीह	207
सूरह बक़रह में आयते क़िसास	212
हाकिम का क़ातिल से पूछगछ करना	212
जब किसी ने पत्थर या डण्डे से किसी को क़त्ल किया	212
अल्लाह तआला ने सूरह माइदा में फ़र्माया कि जान के बदले...	213
पत्थर से क़िसास लेने का बयान	214
जिसका कोई क़त्ल कर दिया गया हो......	214
जो कोई नाहक़ किसी का ख़ून करने की फ़िक्र में हो	216
क़त्ले ख़ता में मक़्तूल की मौत के बाद उस के वारिष का	216
सूरह निसा में इर्शादे बारी तआला	217
क़ातिल एक मर्तबा क़त्ल का इक़रार करे.....	217
औरत के बदले में मर्द का क़त्ल करना....	218
मर्दों और औरतों के दरमियान ज़ख़्मों में भी......	218
जिसने अपना हक़ या क़िसास सुल्तान की इजाज़त.....	218
जब कोई हुजूम में मर जाए....	219
अगर किसी ने ग़लती से अपने बाप ही को मार डाला	220
जब किसी ने किसी को दाँत से काटा.....	220
अंगुलियों की दियत का बयान	221
अगर कई आदमी एक शख़्स को क़त्ल कर दें	221
क़सामत का बयान	223
जिसने किसी के घर में झाँका.....	227
आक़िला का बयान	228
औरत के पेट का बच्चा जो अभी पैदा न हुआ हो	228
जिसने गुलाम या बच्चे को काम के लिए आरियत माँग..	230
खान में दबकर और कूँए में दबकर मर जाए....	231
चौपायों का नुक़्सान करना	231
अगर कोई ज़िम्मी काफ़िर को बेगुनाह मार डाले....	232
मुसलमान को काफ़िर के बदले क़त्ल न करेंगे	233
अगर मुसलमान ने गुस्से में यहूदी को तमाचा लगाया	233

किताब इस्तिताबुल मुर्तद्दीन

28

मज़मून	सफ़ा नं.
सूरह लुक़मान में इर्शादे बारी तआला	235
मुर्तद मर्द और मुर्तद औरत का हुक्म	237
जो शख़्स इस्लाम के फ़र्ज़ अदा करने से इंकार करे	241
अगर ज़िम्मी काफ़िर इशारे किनाये में आँहज़रत (ﷺ)	242
ख़ारजियों और बेदीनों से उन पर दलील.....	243

फ़ेहरिस्ते-मज़ामीन

मज़मून	सफ़ा नं.
दिल मिलाने के लिए किसी मस्लिहत से......	246
नबी करीम (ﷺ) का इर्शाद कि क़यामत उस वक़्त....	248
तावील करने वालों के बारे में बयान	248
किताबुल इक्राह	
जिसने कुफ़्र पर मार खाने, क़त्ल किये जाने.....	255
जिसके साथ ज़बरदस्ती की जाए......	256
जिसके साथ ज़बरदस्ती की जाए उसका निकाह	257
अगर किसी को मजबूर किया गया और आख़िर उसने गुलाम हिबा किया	258
इक्राह की बुराई का बयान	259
जब औरत से ज़बरदस्ती ज़िना किया गया हो	260
अगर कोई शख़्स दूसरे मुसलमान को अपना भाई कहे	261
किताबुल हियल	
हीले छोड़ने का बयान	264
नमाज़ के ख़त्म करने में एक हीले का बयान	265
ज़कात में हीला करने का बयान	265
ख़रीदो-फ़रोख़्त में हीला......	269
नजश की कराहियत	269
ख़रीदो-फ़रोख़्त में धोखा देने की मुमानिअत	270
यतीम लड़की से जो मरग़ूब हो......	270
जब किसी शख़्स ने दूसरे की लौण्डी ज़बरदस्ती छीन ली	271
निकाह पर झूठी गवाही गुज़र जाए....	272
औरत का अपने शौहर या सौकन के साथ से हीला...	274
ताऊन से भागने के लिये हीला करना मना है	275
हिबा फेर लेने या शुफ़आ का हक़ साकित करने के लिए हीला	277
आमिल का तोहफ़ा लेने के लिए हीला करना	280
किताबुत तअबीर	
और रसूलुल्लाह (ﷺ) पर वह्य की इब्तिदा सच्चे ख़्वाब के ज़रिये हुई	282
सालेहीन के ख़्वाबों का बयान	285
अच्छा ख़्वाब अल्लाह की तरफ़ से होता है	286
अच्छा ख़्वाब नुबूव्वत के छियालिस हिस्सों में से एक..	286
मुबश्शरात का बयान	288
हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम का ख़्वाब का बयान	288
हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के ख़्वाब का बयान	289
ख़्वाब का तवारुद यानी.......	290
क़ैदियों और अहले शिर्क व फ़साद के ख़्वाब का बयान	290
नबी करीम (ﷺ) को ख़्वाब में देखना	292
रात के ख़्वाब का बयान	294
दिन के ख़्वाब का बयान	296
औरतों के ख़्वाब का बयान	297
बुरा ख़्वाब शैतान की तरफ़ से होता है	298
दूध को ख़्वाब में देखना	299
जब दूध किसी के अअज़ा व नाख़ूनों से फूट निकले	299
ख़्वाब में क़मीस़ कुर्ता देखना	300
ख़्वाब में कुर्ते का घसीटना	300
ख़्वाब में सब्ज़ी या हराभरा बाग़ देखना	301
ख़्वाब में औरत का मुँह खोलना	302
ख़्वाब में रेशम के कपड़े देखना	302
हाथ में कुंजिया ख़्वाब में देखना	302
कण्डे या हलक़े को पकड कर उससे निकल जाना	303
ख़्वाब में रेशमी कपड़ा देखना	303
ख़्वाब में पाँव में बेड़ियाँ देखना	304
ख़्वाब में पानी का बहता चश्मा देखना	305
ख़्वाब में कूँए से पानी खींचना	306
ख़्वाब में आराम करना	307
ख़्वाब में महल देखना	308
ख़्वाब में किसी को वुज़ू करते देखना	309
ख़्वाब में किसी को कअबा का तवाफ़ करते देखना	309
जब किसी ने अपना बचा हुआ दूध ख़्वाब में किसी....	310
ख़्वाब में आदमी अपने तईं बेडर देखे	310
ख़्वाब में दाईं तरफ़ ले जाते देखना	312
ख़्वाब में प्याला देखना	312
जब ख़्वाब में कोई चीज़ उड़ती नज़र आए	313

28

फ़ेहरिस्ते-मज़ामीन

मज़मून	सफ़ा नं.
जब गाय को ख़्वाब में ज़िब्ह होते देखे	313
ख़्वाब में फूँक मारते देखना	314
जब किसी ने देखा कि उसने कोई चीज़......	315
स्याह औरत को ख़्वाब में देखना	315
परागन्दा बाल औरत ख़्वाब में देखना	315
जब ख़्वाब में तलवार हिलाए	316
झूठा ख़्वाब बयान करने की सज़ा	316
जब कोई बुरा ख़्वाब देखे तो उसकी किसी को ख़बर ना दे	318
अगर पहली ता'बीर देने वाला ग़लत़ ता'बीर दे.....	319
सुबह़ की नमाज़ के बाद ख़्वाब की ता'बीर बयान करना	320
किताबुल फ़ित्न	
सूरह अन्फ़ाल की एक आयते मुबारका	326
नबी करीम (ﷺ) का एक इर्शादे गिरामी	328
नबी करीम (ﷺ) का ये फ़र्माना कि मेरी उम्मत की तबाही	331
नबी करीम (ﷺ) का ये फ़र्माना कि एक बला से जो...	332
फ़ित्नों के ज़ाहिर होने का बयान	333
हर ज़माने के बाद दूसरे आने वाले ज़माने....	335
नबी करीम (ﷺ) का ये फ़र्माना कि जो हम मुसलमान पर हथियार.....	336
नबी करीम (ﷺ) का ये फ़र्मान कि मेरे बाद एक दूसरे की	338
आँह़ज़रत (ﷺ) का ये फ़र्मान कि एक ऐसा फ़ित्ना उठेगा...	340
जब दो मुसलमान अपनी तलवारें लेकर एक दूसरे....	342
जब किसी शख़्स की इमामत पर ऐतमाद न हो....	343
मुफ़्सिदों और ज़ालिमों की जमाअ़त को बढ़ाना मना है	344
जब कोई बुरे लोगों में रह जाए......	345
फ़ित्ना फ़साद के वक़्त जंगल में जा रहना	346
नबी करीम (ﷺ) का ये फ़र्माना कि फ़ित्ना मश्रिक की त़रफ़ से उठेगा	348
उस फ़ित्ने का बयान जो फ़ित्ना समन्दर की त़रह़ ठाठे मार कर उठे.....	350
जब अल्लाह किसी क़ौम पर अ़ज़ाब नाज़िल करता है...	356
नबी करीम (ﷺ) का ह़ज़रत हसन के मुताल्लिक़ फ़र्माना	356
कोई शख़्स लोगों के सामने एक बात कहे.......	359
क़यामत क़ायम न होगी यहाँ तक कि लोग........	361
क़यामत के क़रीब ज़माने का रंग बदलना......	361
मुल्के हिजाज़ से एक आग का निकलना	363
दज्जाल का बयान	365
दज्जाल मदीना के अंदर नहीं दाख़िल हो सकेगा	369
याजूज़ माजूज़ का बयान	370
किताबुल अहकाम	
सूरह निसा में एक इर्शादे बारी तआ़ला	372
अमीर, सरदार और ख़ुल्फ़ा हमेशा क़ुरैश......	374
जो शख़्स अल्लाह के हुक्म के मुवाफ़िक़ फ़ैसला करे उसका स़वाब	375
इमाम और बादशाह की बात सुनना.......	376
जिसे बिन माँगे सरदारी मिले.......	377
जो शख़्स माँगकर हुकूमत या सरदारी ले......	378
हुकूमत और सरदारी की ह़िर्स़ करना मना है	378
जो शख़्स रइय्यत का ह़ाकिम बने......	380
जो शख़्स बन्दगाने ख़ुदा को सताए.......	380
चलते-चलते रास्ते में कोई फ़ैसला करना	381
ये बयान कि नबी करीम (ﷺ)का कोई दरबान नहीं था	382
मातह़त हाकिम क़िसास़ का हुक्म दे सकता है	382
क़ाज़ी को फ़ैसला या फ़त्वा गुस्से की ह़ालत में देना?	383
क़ाज़ी को अपनी ज़ाती इल्म की रू से......	385
मुहरी ख़त़ पर गवाही देने का बयान	386
क़ाज़ी बनने के लिए क्या-क्या शर्तें होनी ज़रूरी हैं?	387
हुक्काम और हुकूमत के आ़मिलों का तनख़्वाह लेना	389
जो मस्जिद में फ़ैसला करे या लिआ़न कराए	390
ह़दी मुक़द्दमा मस्जिद में सुनना......	391
फ़रीक़ैन को इमाम का नस़ीह़त करना	392
अगर क़ाज़ी ख़ुद ओहदाए-क़ज़ा ह़ासिल करने के बाद	392
जब ह़ाकिमे आ़ला दो शख़्सों को किसी एक जगह.....	395
ह़ाकिम दा'वत क़ुबूल कर सकता है	396
ह़ाकिमों को हदिये तोहफ़े दिये जाएँ उनका बयान	396

फ़ेहरिस्ते-मज़ामीन

मज़मून	सफ़ा नं.
आज़ादशुदा ग़ुलाम को क़ाज़ी या हाकिम बनाना	397
लोगों के चौधरी या नक़ीब बनाना	398
बादशाह के सामने मुँह दर मुँह ख़ुशामद करना	398
एक तरफ़ा फ़ैसला करने का बयान	399
अगर किसी शख़्स को हाकिम दूसरे मुसलमान भाई.....	399
कूँए और उस जैसी चीज़ों के मुक़द्दमात फ़ैसल करना	401
नाहक़ माल उड़ाने में जो वईद है.....	401
हाकिम लोगों की जायदादे मन्क़ूला और ग़ैर मन्क़ूला...	402
किसी शख़्स की सरदारी में नाफ़र्मानी से लोग....	402
अलद्दुलख़सम का बयान	403
जब हाकिम का फ़ैसला ज़ालिमाना हो...... 21	404
किसी जमाअत के पास आए	404
फ़ैसला लिखने वाला अमानतदार और अक़्लमंद होना चाहिए	406
इमाम का अपने नाइबों को और क़ाज़ी का अपने अ़मला को लिखना	407
क्या हाकिम के लिए जाइज़ कि वो किसी एक शख़्स	408
हाकिम के सामने मुतर्जिम का रहना	409
इमाम का अपने आ़मिलों से हिसाब तलब करना	410
इमाम का ख़ास मुशीर जिसे बित़ाना भी कहते हैं	411
इमाम लोगों से किन बातों पर बैअ़त ले?	412
जिसने दो मर्तबा बैअ़त की	416
देहातियों का इस्लाम और जिहाद पर बैअ़त करना	417
नाबालिग़ लड़के का बैअ़त करना	417
बैअ़त कराने के बाद उसका फ़स्ख़ कराना	418
जिसने किसी से बैअ़त की और मक़सद ख़ालिस......	419
औ़रतों से बैअ़त लेना	419
उसका गुनाह जिसने बैअ़त तोड़ी	422
एक ख़लीफ़ा मरते वक़्त किसी और को ख़लीफ़ा कर...	422
झगड़ा और फ़िस्क़ो फ़ुजूर करने वालों को....	426
क्या इमाम के लिए जाइज़ है कि वो मुजरिमों और.....	427

किताबुत तमन्ना

मज़मून	सफ़ा नं.
आरज़ू करने के बारे में और जिसने.....	428
नेक काम जैसे ख़ैरात की आरज़ू करना	429
नबी करीम (ﷺ) का एक इर्शादे गिरामी	430
एक और पाकीज़ा इर्शाद	431
क़ुर्आन मजीद और इल्म की आरज़ू करना	432
जिसकी तमन्ना करना मना है	432
किसी शख़्स का कहना कि अगर अल्लाह ना होता....	433
दुश्मन से मुठभेड़ होने की आरज़ू करना मना है	434
लफ़्ज़ अगर मगर के इस्तेमाल का जवाज़.....	434

किताबु अख़्बारिल आहाद.....

मज़मून	सफ़ा नं.
एक सच्चे शख़्स की ख़बर पर	439
नबी करीम (ﷺ) का ज़ुबैर (रज़ि.) को अकेले.....	447
सूरह अहज़ाब में एक इर्शादे बारी	448
नबी करीम (ﷺ) का आ़मिलों और क़ासिदों को एक के बाद दूसरे....	449
वुफ़ूदे अ़रब को नबी करीम (ﷺ) की ये वसीय्यत.....	450
एक औ़रत की ख़बर का बयान	451

किताबुल ए'तिसाम बिल किताब वस्सुन्नह

मज़मून	सफ़ा नं.
नबी करीम (ﷺ) का इर्शाद कि मैं जामेअ़ कलिमात के साथ...	455
नबी करीम (ﷺ) की सुन्नतों की पैरवी करना	456
बेफ़ायदा बहुत सवालात करना मना है	463
नबी करीम (ﷺ) के कामों की पैरवी करना	469
किसी अम्र में तशद्दुद और सख़्ती करना 21	469
जो शख़्स बिदअ़ती को ठिकाना दे	477
राय क़यास की मज़म्मत	477
आँहज़रत (ﷺ) ने कोई मसला राय या क़यास से नहीं बतलाया	479
रसूले अकरम (ﷺ) अपनी उम्मत के मर्दों और....	480
नबी करीम (ﷺ) का इर्शाद कि मेरी उम्मत की एक	

फ़ेहरिस्ते-मज़ामीन

मज़मून	सफ़ा नं.
जमाअ़त हक़.......	481
सूरह अनआ़म की एक इबरतअंगेज़ आयते करीमा	482
एक अम्रे मा'लूम को दूसरे अम्रे वाज़ेह से.......	482
क़ाज़ियों को कोशिश करके अल्लाह की किताब....	483
नबी करीम (ﷺ) का ये फ़र्मान कि ऐ मुसलमानों!....	485
उसका गुनाह जो किसी गुमराही की त़रफ़ बुलाए.....	486
आँह़ज़रत (ﷺ) आ़लिमों के इत्तिफ़ाक़ करने.......	488
सूरह आले इम्रान की एक आयते शरीफ़ा	497
सूरह कहफ़ की एक आयते शरीफ़ा की तश्रीह़	499
जब कोई आ़मिल या ह़ाकिम इज्तिहाद करे....	500
ह़ाकिम का स़वाब जबकि वो इज्तिहाद करे.....	501
उस शख़्स़ का रद्द जो ये समझता है.....	502
आँह़ज़रत से एक बात कही जाए और......	504
दलाइले-शरइय्यासे अह़काम का निकाला जाना.....	505
नबी करीम (ﷺ) का फ़र्मान कि अहले किताब से दीन की कोई बात.......	509
अह़कामे शरइय्या में झगड़ा करने की कराहत	511
नबी करीम (ﷺ) किसी चीज़ से लोगों को मना कर दें...	512
सूरह शूरा की एक आयत की तश्रीह़	514

किताबुत तौहीद

मज़मून	सफ़ा नं.
आँह़ज़रत (ﷺ) का अपनी उम्मत को अल्लाह तआ़ला की	519
सूरह बनी इस्राईल की एक आयत की तश्रीह़	522
अल्लाह तआ़ला का इर्शाद सूरह अज़्ज़ारियात में	524
अल्लाह तआ़ला का इर्शाद सूरह जिन्न में	524
सूरह हश्र में अस्मा-ए-बारी तआ़ला	525
अल्लाह तआ़ला का इर्शाद और वही ग़ालिब है	526
सूरह अन्आ़म में अल्लाह का तआ़रुफ़	528
अल्लाह तआ़ला का इर्शाद और अल्लाह बहुत सुनने और बहुत देखने वाला....	529
सूरह अनआ़म में एक फ़र्माने बारी तआ़ला	531
अल्लाह की एक स़िफ़त ये भी है.......	532
इस बयान में कि अल्लाह के निन्नानवे (99) नाम हैं	532
अल्लाह के नामों के वसीले से माँगना	533
अल्लाह तआ़ला को ज़ात कह सकते हैं	536
अल्लाह अपनी ज़ात से तुमको डराता है सूरह आले इम्रान	537
सूरह क़स़स़ में इर्शादे बारी तआ़ला	539
सूरह त़ाहा में इर्शादे बारी तआ़ला	539
सूरह हश्र में इर्शादे बारी तआ़ला	540
नबी करीम (ﷺ) का इर्शाद कि अल्लाह से ज़्यादा ग़ैरतमन्द कोई नहीं	540
अल्लाह तआ़ला ने फ़र्माया तूने उसको क्यों सज्दा नहीं किया.....	541
सूरह अन्आ़म में अल्लाह तआ़ला ने फ़र्माया ऐ पैग़म्बर! उनसे पूछ किसी.......	546
सूरह हूद में अल्लाह का फ़र्मान और उसका अ़र्श पानी पर था	547
सूरह मआ़रिज में अल्लाह तआ़ला का फ़र्मान फ़रिश्ते और रूहुल कुदुस......	552
सूरह क़ियामा में अल्लाह तआ़ला का इर्शाद	555
अल्लाह तआ़ला के इस इर्शाद के रिवायात बिलाशुब्हा...	570
सूरह फ़ातिर में एक फ़र्माने बारी तआ़ला.....	572
आसमानों और ज़मीन और दूसरी मख़्लूक़ के पैदा करने का बयान	573
सूरह स़ाफ़्फ़ात में एक इर्शादे बारी तआ़ला	574
अल्लाह तआ़ला का इर्शाद सूरह नह़्ल में.........	577
सूरह कहफ़ में अल्लाह तआ़ला का इर्शाद कि अगर समन्दर	579
मशीय्यत और इरादा-ए-ख़ुदावन्दी का बयान	580
अल्लाह तआ़ला का इर्शाद और उसके यहाँ किसी की शफ़ाअ़त.......	589
जिब्रईल के साथ अल्लाह तआ़ला का कलाम करना	592
सूरह निसा में अल्लाह तआ़ला का इर्शाद 'अल्लाह तआ़ला' ने इस....	594
सूरह फ़तह़ में अल्लाह तआ़ला का इर्शाद ये गंवार चाहते हैं कि अल्लाह	595
अल्लाह तआ़ला का क़यामत के दिन अंबिया और	

फ़ेहरिस्ते-मज़ामीन

मज़मून	सफ़ा नं.
दूसरे लोगों से......	605
सूरह निसा में अल्लाह तआला का इर्शाद कि अल्लाह ने हज़रत मूसा......	610
अल्लाह तआला का जन्नत वालों से बातें करना	615
अल्लाह अपने बन्दों को हुक्म करके याद करता है...	616
सूरह बक़रह में अल्लाह तआला का इर्शाद 'पस अल्लाह के शरीक न बनाओ'	617
सूरह हाम्मीम सज्दा में अल्लाह का एक फ़र्मान	618
सूरह रह्मान में एक इर्शादे बारी तआला	619
सूरह क़ियामा में अल्लाह तआला का इर्शाद 'कुर्आन नाज़िल होते....'	621
सूरह मुल्क में अल्लाह तआला का फ़र्मान 'अपनी बात आहिस्ता से.......'	622
नबी करीम (ﷺ) का इर्शाद कि एक शख़्स जिसे अल्लाह ने कुर्आन.......	623
अल्लाह तआला का सूरह माइदा में फ़र्माना कि ऐ रसूल तेरे....	624
अल्लाह तआला का सूरह आले इम्रान में यूँ फ़र्माना ऐ रसूल कह......	627
नबी करीम (ﷺ) ने नमाज़ को अमल कहा......	628
सूरह मआरिज में अल्लाह तआला का फ़र्मान कि आदमज़ाद दिल का कच्चा......	629
नबी करीम (ﷺ) का अपने रब से रिवायत करना	629
तौरेत और उसके अलावा दूसरी आसमानी किताबों की तफ़्सीर	631
सूरह मुज़्ज़म्मिल में अल्लाह तआला का फ़र्मान 'पस कुर्आन में से.......'	635
सूरह क़मर में अल्लाह तआला का फ़र्मान 'और हमने कुर्आन मजीद को.......'	636
अल्लाह तआला का सूरह बुरूज में फ़र्माना 'बल्कि वो अज़ीम कुर्आन है.......'	637
सूरह साफ़्फ़ात में अल्लाह तआला का इर्शाद 'और अल्लाह ने पैदा किया........'	639
फ़ासिक़ और मुनाफ़िक़ की तिलावत का बयान	642
सूरह अंबिया में अल्लाह का फ़र्मान 'और क़यामत के दिन हम.....'	647

फ़ेहरिस्त तशरीहे-मज़ामीन

मज़मून	सफ़ा नं.
सूर पर क़ाबिलेदीद तब्सरा	17
सूर फूँकने पर बेहोश न होने वाले	18
अहले जन्नत की पहली मेहमानी	20
बिदआत का तूफ़ान बरपा करने वाले	22
अल्लाह के शुक्रगुज़ार बन्दे दुनिया में थोड़े ही होते हैं	24
मुक़ल्लिदीन के लिए एक नसीहत	26
जन्नत एक अज़ीम मुल्क है	28
इमाम मालिक (रह.) का तलामज़ा पर एक निशानदेही	28
ये कहना ग़लत है कि अल्लाह की आवाज़ में न आवाज़ है न हर्फ़	30
हज़रत उकाशा बिन मुहसिन असदी (रज़ि.) के हाथ से एक करामत	31
फ़ुक़रा की फ़ज़ीलत	34
मुअतज़िला और ख़वारिज वग़ैरह की एक तर्दीद	38
जामेउल फ़ज़ाइल हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.)	38
अबू तालिब के कुछ हालात	39
अबू तालिब दोज़ख़ के अज़ाब में	39
एक इश्काल की तौज़ीह	40
शफ़ाअते कुबरा की तफ़्सीलात क़ाबिले मुतालआ	42
शफ़ाअत चार क़िस्म की होगी	42
आख़िरत के हालात को दुनिया पर क़यास करना सरीह नादानी है	43
पुल सिरात को पार करने के कुछ कवाइफ़	49
अल्लाह की किसी सिफ़त को मख़्लूक़ात की सिफ़त से तश्बीया नहीं दे सकते	49
हौज़े कौषर पर एक तब्सरा	49
मुर्तदीन मुनाफ़िक़ीन और अहले बिदअत हौज़े कौषर पर	53
तक़्दीर पर एक इल्मी तब्सरा	57
रहमे मादर में बच्चे के कुछ कवाइफ़े ज़िन्दगी	58
सहीह मरफ़ूअ हदीष ग़लत नहीं हो सकती	58
असल दारोमदार ख़ात्मे पर मौक़ूफ़ है	63
नज़्र मानने से तक़्दीर नहीं बदल सकती हालाँकि......	64
हज़रत शैख़ मुजद्दिद (रह.) के अमलियाते मुजर्रबा	65
कलमा ला हौल वला क़ुव्वत अल्ख़ जन्नत का एक ख़ज़ाना है	65
मा'सूम वो है जिसे अल्लाह गुनाहों से बचाए	67
आदम अलैहिस्सलाम तक़्दीर ही की दलील से ग़ालिब हुए	69
असल दज्जाल क़यामत के क़रीब ज़ाहिर होगा	71
मुअतज़िला और क़दरिया का रद्द	72
लग़्व क़स्में मुन्अक़िद नहीं होती है न उन पर कफ़्फ़ारा है	73
किस्रा-क़ैसर की हुकूमतें ख़त्म हो गई सदक़ रसूलुल्लाह	77
मुहब्बते रसूलुल्लाह (ﷺ) पर एक तशरीह	78
इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) का एक क़ौल	78
हालात हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.)	85
सलफ़ सालेहीन की अपने तलामज़ा को एक ख़ास नसीहत	92
हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर बिन आस सहमी क़ुरैशी के कुछ	96
क़ाबिले तवज्जोह उलमाए-किराम	96
नमाज़ के चोरों का बयान	97
जंग उहद में इब्लीस का धोखा मुसलमानों पर चल गया	98
ख़िज़्र और मूसा	99
ख़ादिमे ख़ास हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.)	100
कुछ हालात अबू मूसा अश्अरी (रज़ि.)	103
हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) और हज़रत मिस्तह (रज़ि.) का सबक़ आमेज़ वाक़िआ	104
नबीज़ जैसी दीगर मश्रूबात की तफ़्सील	107
ग़ज़्वाए-तबूक से पीछे रह जाने वाले तीन बुज़ुर्ग	111
लफ़्ज़ ईमान और कुफ़्फ़ार की तशरीह	119

फ़ेहरिस्त तशरीहे-मज़ामीन

मज़मून	सफ़ा नं.
मदनी साअ और मुद का वज़न	123
साअ के मुतअल्लिक़ इमाम यूसुफ़ (रह.) ने हनफ़ी मस्लक छोड़ दिया	123
मुदब्बर और उम्मे वलद मुकातब वग़ैरह अल्फ़ाज़ की तशरीह	125
क़ुर्आनी हिदायात बाबत तक़्सीमे तरका	131
फ़राइज़ का इल्म हासिल करने की ताकीद	132
बाअ फ़िदक के बारे में तफ़्सीलात	134
अपनी विराषत के बारे में इर्शादे नबवी	135
तरकाए-नबवी का मुक़द्दमा अहदे फ़ारूक़ी में	136
हज़रत सिद्दीक़ (रज़ि.) ने हज़रत फ़ातिमा को राज़ी कर लिया था	136
हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊन का एक फ़त्वा और हज़रत अबू मूसा अश्अरी का रुजूअ करना	140
मुक़ल्लिदीने जामेदीन को सबक़ लेना चाहिए	140
दादा की मीराष की तफ़्सीलात	140
ख़ाविन्द अपनी बीवी के तरके में औलाद के साथ वारिष होता है	142
बाज़ दफ़ा क़ियाफ़ा शनास का अंदाज़ा सहीह होता है	145
हुदूद वग़ैरह की तशरीह फ़त्हुल बारी से	145
ज़िक्रे ख़ैर हज़रत उबादा बिन सामित (रज़ि.)	166
क़बीला-ए-उकल और उरैना के चन्द डाकू	167
हज़रत इमाम बुख़ारी मुज्तहिदे आज़म	170
अर्शे इलाही के साये में जगह पाने वाले सात ख़ुशनसीब	176
आयते रजम की तिलावत मन्सूख़ हो गई हुक्म बाक़ी है	182
हज़रत उमर (रज़ि.) का एक अज़ीम ख़ुत्बा	183
षक़ीफ़ा बनू साअदा में ख़िलाफ़ते सिद्दीक़ी का बयान	185
इस हदीष की तफ़्सीलात	188
लौण्डी की सज़ा	192
आलिम की शान ये होनी चाहिए.......	193
तअज़ीर में ज़्यादा से ज़्यादा दस कोड़े	199
ख़लीफ़-ए-इस्लाम को तअ़्ज़ीरी सज़ाओं में इख़्तियार है	200
अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) का ज़िक्रे ख़ैर	201
कबीरा गुनाहों का बयान	203
अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद (रज़ि.) का ज़िक्रे ख़ैर	206
दो अहादीष में तत्बीक़	206
मुसलमानों का ख़ून बिला वजह हलाल जानकर बहाना काफ़िर होना है	208
क़ाज़ी अयाज़ का एक फ़त्वा	212
शिर्क के बारे में हज़रत क़ाज़ी अयाज़ की तशरीह	236
ज़िन्दीक़ की एक तारीख़	239
सहाबा किराम एक दूसरे के मुक़ल्लिद न थे	241
जंगे उहुद में क़ुरैश के हक़ में दुआए नबवी	243
फ़िरक़ाए-ख़वारिज का बयान	244
हज़रत अली और मुआविया (रज़ि.) की बाहमी उख़ुव्वत का बयान	248
कुछ हालात हज़रत अली (रज़ि.)	252
बहालते इक्राह मजबूरी इन्दल्लाह क़ुबूल है	255
फ़ुक़हा का एक बेअसल इस्तिहसान	262
शरई हीलों का बयान	263
बाज़ फ़ुक़हाए-इस्लाम के लिए क़ाबिले ग़ौर....	264
मुतआ और शिग़ार वग़ैरह की तशरीह	269
ख़्वाबों की क़िस्मों का बयान	282
ज़ाती मुबश्शिरात पर एक इशारा	285
अच्छा ख़्वाब नुबूव्वत का छियालिसवाँ हिस्सा है	287
अस्वद अनसी और मुसैलमा कज़्ज़ाब पर इशारा	315
एक इबरतअंगेज़ ख़्वाबे नबवी का बयान मअ तफ़्सीलात	320
फ़ित्नों की तशरीह	326
बिदअत के बुरे नताइज	327
एक दुआए नेक की तअलीम	329
इताअत अमीरे इस्लाम के मुताल्लिक़	330
हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) की एक दुआ	331
हज़रत उसामा और हज़रत ज़ैनब (रज़ि.) का ज़िक्रे ख़ैर	333

फ़ेहरिस्त तशरीहे-मज़ामीन

मज़मून	सफ़ा नं.
इल्मे दीन से मुताल्लिक़ एक ज़रूरी तशरीह़	337
काश किसी दिल वाले भाई के दिल में	338
अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर व ह़ज़रमी का वाक़िआ़	339
लाक़ानूनी दौर के लिए ख़ास हिदायते नबवी (ﷺ)	343
आजकल अमानत व दयानत का जनाज़ा निकल चुका है	344
कुछ मौलाना लोगों की बेअ़क़्ली पर इशारा	348
नज्द से इराक़ का मुल्क मुराद है	349
ह़ज़रत मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल वह्हाब नज्दी का ज़िक्रे ख़ैर	349
फ़ज़ीलत ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.)	352
आ़लिमे बेअ़मल का इ़ब्रतनाक अंजाम	354
जंगे जमल पर एक इशारा	354
ह़ज़रत हसन (रज़ि.) के लिए दुआए-नबवी (ﷺ)	358
क़ुर्बे क़यामत के लिए एक पेशगोई	361
दज्जाल की तशरीह़	365
याजूज व माजूज याफ़िष़ बिन नूह की औलाद से है	370
याजूज व माजूज की मज़ीद तशरीह़	371
किताब अह़काम का बयान	372
दो शख़्स जो रश्क के क़ाबिल हैं	375
जाहिलिय्यत की मौत मरने की वज़ाह़त	376
आप (ﷺ) आ़लिमुल ग़ैब नहीं थे	392
अ़हदे नबवी के क़ानूनों की तफ़्सील	397
ह़ज़रत इमाम बुख़ारी की बारीक फ़हम में आफ़रीं	400
ह़ज़रत उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) का ज़िक्रे ख़ैर	403
मुक़द्दमाए-क़त्ल से मुताल्लिक़ सवालानामा-ए-नबवी	409
हिरक़्ल की एक पेशगोई	410
ज़िक्रे ख़ैर ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.)	414
बैअ़त करने का मतलब क्या है?	416
औरतों से बैअ़त लेने का बयान	419
ख़िलाफ़ते सिद्दीक़ी के बारे में	423
अस़ल दूर रशी इर्शादे नबवी की रोशनी में	429
अगर मगर कहना शैतान का काम है	435
कअ़बतुल्लाह के मुताल्लिक़ एक इशारा	438
किसी ह़क़ीक़ी मस्लहत का पेशे नज़र रखना	438
ख़बरे वाह़िद की तशरीह़	439
ज़िक्रे किस्रा परवेज़ शाहे ईरान	449
वअ़तसिमु बिह़बलिल्लाह की तफ़्सीर	452
अस़ल विलायत इत्तिबाअ़े सुन्नत में है	454
एक मुअजज़-ए- क़ुर्आनी का बयान	455
क़ुर्आन की तफ़्सीर ह़दीष़े नबवी है	457
क़ुर्आन मजीद तर्जुमा ष़नाई में एक इशारा	457
बिदअ़त पर एक तफ़्सीली मज़्मून	457
ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) का ज़िक्रे ख़ैर	462
ह़ज़रत उ़मर पैबन्द लगा हुआ कुर्ता पहनते थे	466
रूह़ के मुताल्लिक़ एक तशरीह़	468
क़ुर्आन व ह़दीष़ की फ़ुक़ाहत बड़ी चीज़ है	480
वक़्ते सहर की दुआ अज़ नाशिर	488
मुआनिदीन के मुँह पर तमाचा	488
ख़िलाफ़े शरअ़ उमूर में ह़रमैन शरीफ़ैन का इज्माअ़ कोई हुज्जत नहीं	488
अइम्माए-अरबाअ़ की तक़्लीद पर......	488
उ़लमाए-मदीना की एक फ़ज़ीलत ह़याते नबवी में	489
ह़ज़रत उ़मर फ़ारूक़ (रज़ि.) का एक अ़ज़ीम ख़ुत्बा मदीना में	490
ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) का एक इ़ब्रतनाक बयान	491
ज़िक्रे ख़ैर ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम (रज़ि.)	496
फ़ज़ाइले मदीनतुल मुनव्वरा	467
उम्मते मुस्लिमा ह़ज़रत नूह अ़लैहिस्सलाम की गवाह होगी	500
मुज्तहिद के ष़वाब और अ़ज़ाब के बारे में	502
क़ुर्आन मजीद अंधी तक़्लीद के ख़िलाफ़ है	502
बाज़ मसाइल में ह़ज़रत उ़मर (रज़ि .) से ग़लती हुई है	503
तक़रीरी ह़दीष़ की तफ़्सील	504
इब्ने ज़ियाद और दज्जाल	504
उसूले शरई बुनियादी तौर पर सिर्फ़ क़ुर्आन और ह़दीष़ हैं	505

फ़ेहरिस्त तशरीहे-मज़ामीन

मज़मून	सफ़ा नं.
दलालते शरइय्या की एक मिषाल	509
ख़िलाफ़ते सिद्दीक़ी पर एक दलील	509
ह़दीष़ क़ुर्आन की शरह है	510
बाज़ दफ़ा अम्र वजूब के लिए नहीं होता	512
अल्लाह की तौह़ीद और जहमियों वग़ैरह की तर्दीद	517
तौह़ीद की दो क़िस्मों का बयान	520
तफ़्सीर सूरह इख़्लास अज़ शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ मरहूम	521
हर रकअ़त में सूरह इख़्लास पढ़ना	522
ग़ैब की कुन्जियाँ	525
आँह़ज़रत (ﷺ) आ़लिमुल ग़ैब नहीं थे	525
दोज़ख़ का 'हल मिम्मज़ीद' कहना	528
ला हौल वला क़ुव्वत इल्ला बिल्लाह अ़जीब पुरअष़र कलिमा है	530
रह़मते इलाही से कभी मायूस न होना चाहिए	539
सूरज मुतहर्रिक है	550
अल्लाह के लिए उ़लू और फ़ौक़ियत मानना फ़ित़रते इंसानी है	552
क़यामत में दीदारे इलाही बरह़क़ है	555
मक़ामे मह़मूद एक रफ़उ़श्शान दर्जा है	565
उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रत मैमूना (रज़ि.) का बयान	574
मुसैलमा कज्ज़ाब का एक बयान	578
मोमिन की मिषाल नर्म ख़ेती है	582
मुतकल्लिमीन की वाज़ेह तर्दीद	590
फ़ज़ीलत ह़ज़रत ख़दीजतुल कुबरा (रज़ि.)	596
ह़दीष़ भी कलामे इलाही है	603
एक गुनहगार जिसने ख़ौफ़े ख़ुदा से अपनी लाश के जलाने की वसीय्यत की	604
मग़्फ़िरते बन्दगान के लिए अल्लाह पाक का क़ीमिया बयान	607
ज़िक्रे ख़ैर ह़ज़रत अ़दी बिन ह़ातिम (रज़ि.)	609
बाज़ नेचरों की तर्दीद	610
ईमाम बुख़ारी पर एक पर एक इत्तिहाम की ख़ुद इमाम स़ाह़ब की त़रफ़.........	623
क़ुर्आन मजीद के माहिर के बयान	633
क़िरआते क़ुर्आन से मुताल्लिक़ पाँच ह़दीष़ों पर इशारा	635
इमाम बुख़ारी की किताब 'ख़लक़ुल अफ़्आ़लुल इ़बाद' पर एक इशारा	638
बन्दों के अफ़्आ़ल सब मख़्लूक़ हैं	640
ह़दीष़ क़र्नेशैत़ान वाली अस़ल मा'नो में	644
आ़माल के तौले जाने पर तब्स़रा	647
कलिमाते मुबारका ख़ात्मा-ए-बुख़ारी शरीफ़ की तशरीह	649
दुआए-ख़त्मे बुख़ारी शरीफ़ अज़ नाशिर	

इंतिसाब (समर्पण)

अल्हम्दुलिल्लाह! हिन्दी भाषी दीनी किताबों की दुनिया में पहली बार, सहीह बुख़ारी (मुकम्मल आठ जिल्द) छपकर अब आपके हाथों में है. यह कोशिश नाकाम रहती, अगर अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की नुस़रत व मदद, हर ह़ाल में हमारे साथ न होती. इसलिये निहायत आजिज़ी के साथ स़हीह़ बुख़ारी (हिन्दी) बारगाहे-इलाही में समर्पित है.

*****

क़ारेईने किराम! अ़ल्लामा दाऊद राज़ स़ाह़ब ने आज से क़रीब 40 साल पहले स़ह़ीह़ बुख़ारी के अ़रबी नुस्ख़े का उर्दू में तर्जुमा और तशरीह क़लमबंद की थी। बहुत ही सीमित संसाधनों के साथ उन्होंने इस अ़ज़ीमुश्शान काम को शुरू किया था। हर पारे की समाप्ति पर और हर नये पारे की शुरूआत पर उनके द्वारा की गई गुज़ारिशों से आप अन्दाज़ा लगा सकते हैं कि कितनी मेहनत के बाद, एक मुश्किल नज़र आने वाला यह काम उनके हाथों मुकम्मल हुआ। यक़ीनन उसमें भी अल्लाह ही की मदद शामिले-हाल थी, वर्ना मुकम्मल स़ह़ीह़ बुख़ारी को अ़रबी से उर्दू में मुंतक़िल (ट्रांसफ़र) करना, लगभग नामुमकिन काम था।

ठीक इसी त़रह़ मुकम्मल स़ह़ीह़ बुख़ारी को उर्दू से हिन्दी में अनुवादित करना भी एक बड़ा भारी काम था। **अब से पहले भी ऐसी कई कोशिशें की गईं, लेकिन एक या दो जिल्द से ज़्यादा आगे कोई इदारा नहीं बढ़ सका।** कुछ लोगों ने स़ह़ीह़ बुख़ारी का मुख़्तस़र (संक्षिप्त) वर्ज़न छापकर कुछ ह़द तक लोगों की ज़रूरत को पूरा करने की कोशिश की थी, अल्लाह तआ़ला उन लोगों को भी अज्रे-अ़ज़ीम से नवाज़े, आमीन!

इससे पहले की जिल्दों में आपकी ख़िदमत में स़ह़ीह़ बुख़ारी की कम्पोज़िंग के ता'ल्लुक़ से कुछ अहम बातें आपकी ख़िदमत में पेश की जा चुकी है।

- उर्दू शरह़ का हिन्दी तर्जुमा करते समय हद दर्जा एहतियात बरता गया है। ऑरिजनल किताब में किसी जगह अगर कोई ग़लती नज़र आई तो उसे दुरुस्त किया गया। यहाँ तक कि एक ह़दीष़ के अ़रबी टेक्स्ट में ग़लती नज़र आई तो उसे भी स़ह़ीह़ बुख़ारी के दूसरे नुस्ख़े से स्कैन करके, दुरुस्त करके स़ह़ीह़ बुख़ारी (हिन्दी) में छापा गया। उर्दू तर्जुमे में छपे ह़दीष़ के रावियों के नाम को मूल अ़रबी टेक्स्ट के साथ मिलान किया गया। **हुसैन** और **हुस़ैन**, **बशर** और **बिश्र**, **मुस्लिमा** और **मस्लमा** जैसे बहुत सारे मिलते-जुलते लफ़्ज़ों के फ़र्क़ का भी एहतियात बरता गया। इन्हीं कारणों से स़ह़ीह़ बुख़ारी के हिन्दी अनुवाद, कम्पोज़िंग और प्रूफ़ चैकिंग में कुछ ज़्यादा समय भी लगा है।
- **मौजूदा वक़्त में जितनी भी दीनी किताबें हिन्दी में उपलब्ध हैं, उन सबमें भाषा और वर्तनी के लिहाज़ से स़ह़ीह़ बुख़ारी (हिन्दी) काफ़ी ह़द तक बेहतर है लेकिन इसके बावजूद हम यह दावा नहीं करते कि हमारा किया हुआ काम सर्वश्रेष्ठ है। तकब्बुर अल्लाह को नापसन्द है इसलिये हम बेहद आजिज़ी के साथ बारगाहे-इलाही में अपनी इन्सानी कमज़ोरी का ए'तिराफ़ (स्वीकारोक्ति) करते हुए तमाम पाठकों से गुज़ारिश करते हैं कि अगर आपको इन तमाम आठ जिल्दों में कोई ग़लती नज़र आई हो तो इस़्लाह की निय्यत से हमारे पते पर लिखकर भेजें। साथ ही अपना नाम-पता भी ज़रूर लिखें ताकि अगर भूल-सुधार का परिशिष्ठ छापना पड़े तो आपके पते पर भेजा जा सके।**

क़ारेईने किराम! 5400 से ज़्यादा पेज वाली सहीह बुख़ारी (मुकम्मल आठ जिल्द) प्रोजेक्ट को पूरा करने में पाँच लोगों की टीम को तीन साल लगे हैं। इन तीन सालों में प्रोजेक्ट कोस्ट क़रीब दोगुनी हो गई लेकिन हमने अपना वादा निभाते हुए जमइय्यत अहले हदीष जोधपुर से उतना ही पेमेण्ट लिया जिसका कमिटमेण्ट प्रोजेक्ट शुरू करते समय हमने किया था और बढ़ी हुई लागत अपने स्तर पर बर्दाश्त की ताकि आप लोगों तक रियायती दर पर सहीह बुख़ारी (हिन्दी) पहुँच सके।

01. बेहद सावधानी के साथ इसकी तस्हीह व नज़रे-षानी की गई है ताकि ग़लतो की कम से कम गुंजाइश रहे, इसके लिये अरबी के माहिर आलिम मौलाना जमशेद आलम सलफ़ी की ख़िदमात बेहद सराहनीय रही है। कुछ हज़रात ने अरबी हर्फ़ (ث) के लिये हिन्दी अक्षर 'ष' इस्ते'माल पर ए'तिराज़ जताया है। सहीह बुख़ारी की आठों जिल्दों के कवर पेज पर हदीष 'इन्नमल अअमालु बिन्नियात' छपी है जिसका मा'नी है, 'अमल का दारोमदार निय्यत पर है।' हमारी निय्यत यह है कि अरबी-उर्दू का हर हर्फ़ अलग नज़र आए।

02. इस किताब की हिन्दी को उर्दू के मुवाफ़िक़ बनाने की भरपूर कोशिश की गई है इसके लिये उर्दू के कुछ ख़ास हर्फ़ों को अलग तरह से लिखा गया ह मिषाल के तौर पर :– (ا) के लिये अ, (ع) के लिये अ; (ث) के लिये ष, (س) के लिये स, (ش) के लिये श, (ص) के लिये स; (ح) के लिये ह, (ہ) के लिये ह, (خ) के लिये ख़, (غ) के लिये ग़, (ف) के लिये फ़, (ک) के लिये क, (ق) के लिये क़ लिखा गया है। (ج) के लिये ज का इस्तेमाल किया गया है लेकिन ज़ाल (ذ), ज़े (ز), ज़ाद, (ض) और ज़ोय (ظ) के लिये मजबूरी में एक ही हुरूफ़ ज़ का इस्तेमाल किया गया है क्योंकि इन हर्फ़ों के लिये सहीह विकल्प हमें नज़र नहीं आया। आपको यह बता देना मुनासिब होगा कि उर्दू ज़बान के कुछ हुरूफ़ ऐसे हैं कि अगर उनकी जगह कोई दूसरा हुरूफ़ लिख दिया जाए तो अर्थ का अनर्थ हो जाता है।

03. जिन अल्फ़ाज़ में बीच में अेन (ع) आया है, वहाँ (') के ज़रिये सहीह तलफ़्फ़ुज़ (उच्चारण) दर्शाने की कोशिश की गई है। अगर ऐसा न किया जाता तो शेर (ش ی ر) यानी Lion और ग़ज़ल के शे'र (ش ع ر) के मतलब में फ़र्क़ करना कितना मुश्किल होता।

04. आठवीं जिल्द में कुछ जगह एडीटिंग की गई है क्योंकि ऐसा करना ज़रूरी था (जैसे, अल्लाह के रसूल ﷺ ने अल्लाह को एक जवान मर्द की शक्ल में देखा, यह पेज नं. 518 पर छपा था जिसे हटाया गया है)। मैं एक बार फिर ये दोहराना मुनासिब समझता हूँ कि यह किताब अल्लामा मुहम्मद दाऊद राज़ (रह.) की शरह का हिन्दी रूपान्तरण है। हर तशरीह (व्याख्या) से अनुवादक सहमत हो, ये ज़रूरी नहीं है।

इस किताब की कम्पोज़िंग, तस्हीह (त्रुटि संशोधन) और कवर डिज़ाइनिंग में मेरे जिन साथियों की मेहनत जुड़ी हैं, उन सब पर अल्लाह की रहमतें, बरकतें व सलामती नाज़िल हों। ऐ अल्लाह! मेरे वालिद-वालदा को अपने अर्श के साये तले, अपनी रहमत की पनाह नसीब फ़र्मा जिनकी दुआओं के बदले तूने मुझे दीने-इस्लाम का फ़हम अता किया। ऐ अल्लाह! हमारी ख़ताओं और कोताहियों से दरगुज़र फ़र्माते हुए तू हमसे राज़ी हो जा और हमें रोज़े आख़िरत वो नेअमतें अता फ़र्मा, जिनका तूने अपने बन्दों से वा'दा फ़र्माया है। आमीन! तक़ब्बल या रब्बल आलमीन!! व सल्लल्लाहु तआला अला नबिय्यिना व अला आलिही व अस्हाबिही व अत्बाइहि व बारिक व सल्लिम.

पत्र-व्यवहार के लिये हमारा पता :

ख़लीज मीडिया, छोटे ताज़िये का चौक, गुलज़ारपुरा बम्बा जोधपुर-2 मोबाइल : 98293-46786)

website : www.khaleejmedia.com

email : contact@khaleejmedia.com

दुआओं का तालिब,

सलीम ख़िलजी.

(17 रमज़ान 1433 हिजरी)

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

सत्ताईसवां पारा

बाब 43 : सूर फूँकने का बयान

٤٣- باب نَفْخِ الصُّورِ

मुजाहिद ने कहा कि सूर एक सींग की त़रह़ है। और (सूरह यासीन में जो है, फ़इन्नमा हिय ज़ज्रतुंव्वाहिदा तो) ज़ज्रत के मा'नी चीख़ के हैं (दूसरी बार) फूँकना और स़यहत पहली बार फूँकना। और इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा नाक़ूर (जो सूरह माइदह में है) स़ूर को कहते हैं (वस़्ल अत् त़बरी व इब्ने अबी ह़ातिम) अर् राजिफ़ह (जो सूरह नाज़िआ़त में है) पहली बार स़ूर का फूँकना, अर् रादिफ़ह (जो उसी सूरत में है) दूसरी बार का फूँकना।

قَالَ مُجَاهِدٌ: الصُّورُ كَهَيْئَةِ الْبُوقِ. زَجْرَةٌ صَيْحَةٌ. وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ النَّاقُورُ: الصُّورُ، الرَّاجِفَةُ، النَّفْخَةُ الأُولَى، وَالرَّادِفَةُ: النَّفْخَةُ الثَّانِيَةُ.

तशरीह : स़ूर एक जिस्म है जिसको अल्लाह ने पैदा करके ह़ज़रत इस्राफ़ील (अ़लैहिस्सलाम) नामी फ़रिश्ते के ह़वाले किया हुआ है। उसमें इतने सूराख़ हैं जितनी कि दुनिया में रूहें हैं। उस स़ूर को फूँकते ही वो रूहें निकल निकलकर अपने अपने बदनों में दाख़िल हो जाएँगी। ये दूसरा फूँकना है। पहली बार फूँकने पर वो बदनों से निकल निकलकर स़ूर में आ जाएँगी। किर्मानी शारेह़ बुख़ारी फ़र्माते हैं, **उख़्तुलिफ़ फ़ी अददिहा फ़अस़्ह़्ह़ु अन्नहा नफ़्ख़तानि क़ालल्लाहु व नुफ़िख़ फ़िस्सूरि फ़स़इक़ मन फ़िस्समावाति व मन फ़िल्अर्ज़ि इल्ला मन शाअल्लाहु षुम्म नुफ़िख़ फ़ीहि उख़्रा फ़इज़ा हुम क़ियामुन यन्ज़ुरुन वल्क़ौलुष्षानी अन्नहा ष़लाष़ नफ़ख़ातिन नफ़्ख़तुल्फ़ज़इ फ़यफ़्ज़उ अहलुस्समावाति वल्अर्ज़ि बिहैषु यज़्हलु कुल्ल मुर्ज़िअतिन अम्मा अर्ज़अ़त षुम्म नफ़्ख़तुस्सइक़ि षुम्म नफ़्ख़तुल्बअ़षि फ़उजीब बिअन्नल्उलियैनि आइदतानि इला वाहिदतिन फ़ज़ऊ इला अन सइक़ू वल्लाहु आ़लमु**. (किर्मानी) या'नी नफ़्ख़े सूर के अ़दद में इख़्तिलाफ़ किया गया है और स़ह़ीह़ ये है कि वो दो नफ़्ख़े होंगे जैसा कि इर्शादे बारी है, और सूर फूँका जाएगा जिसके बाद ज़मीन व आसमान वाले सब बेहोश हो जाएँगे मगर जिसे अल्लाह बचाना चाहेगा वो बेहोश न होगा। फिर दोबारा उसमें फूँका जाएगा, जिसके बाद अचानक तमाम ज़ी रूह़ खड़े होकर देखते होंगे। दूसरा क़ौल ये है कि नफ़्ख़े तीन होंगे। पहला नफ़्ख़ा क़ज़्अ का होगा जिसके बाद तमाम ज़मीन व आसमान वाले घबरा जाएँगे इस त़ौर कि दूध पिलाने वाली औरतें अपने बच्चों को दूध पिलाने से ग़ाफ़िल हो जाएँगी, फिर दूसरा नफ़्ख़ा बेहोशी का होगा। फिर तीसरा नफ़्ख़ा होगा जिसके बाद तमाम ज़मीन व आसमान वाले उठ खड़े होंगे। इसका जवाब यूँ दिया गया है कि नफ़्ख़ा-ए-क़ज़्अ और नफ़्ख़ा-ए-स़अ़क़ ये दोनों एक ही हैं। या'नी वो पहले नफ़्ख़े पर ऐसे घबराएँगे कि घबराते घबराते बेहोश हो जाएँगे।

या अल्लाह! आज अ़शरा-ए-मुह़र्रम 1396 हिजरी का मुबारकतरीन वक़्ते सह़र है, मैं इस पारे की तस्वीद का आग़ाज़ कर रहा हूँ। परवरदिगार! मैं निहायत ही आ़जिज़ी से इस मुक़द्दस घड़ी में तेरे सामने हाथ फैलाता हूँ कि पहले की त़रह़ इस पारे को भी इशाअ़त में लाने के लिये ग़ैब से अस्बाब मुहय्या कर दे और तक्मीले बुख़ारी शरीफ़ के शर्फ़े अ़ज़ीम से मुशर्रफ़

फ़र्मा और मेरे सारे मुख़्लिसीन को इस ख़िदमत के ष़वाबे अ़ज़ीम में ह़िस्सा-ए-वाफ़िर फ़र्मा और मुझको अम्राज़े क़ल्बी और क़ालिबी और अफ़्कारे ज़ाहिरी और बातिनी से ख़ुलास़ी बख़्श दीजियो और मेरे तमाम साथियों के साथ मेरी औलाद लड़के व लड़कियों को भी बरकाते दारैन अ़ता फ़र्माइयो और बाक़ी पारों की तस्वीद और इशाअ़त के लिये भी नुस़रत फ़र्माइयो ताकि ये ख़िदमत तक्मील को पहुँचकर तमाम अहले इस्लाम के लिये बाअ़िषे रुश्दो-हिदायत बन सके।

या अल्लाह! इस ख़िदमत के सिलसिले में मुझसे जो लग़्ज़िशें और कोताही हो जाए उसको भी मुआ़फ़ फ़र्मा दीजियो। आज रमज़ानुल मुबारक 1396 हिजरी का पहला जुम्आ और सातवाँ रोज़ा है कि नज़रे ष़ालिष़ के बाद इसे बिऔनिल्लाह तबारक व तआ़ला कातिब स़ाह़िबान की ख़िदमत में किताबत के लिये ह़वाले कर रहा हूँ। **रब्बना तक़ब्बल मिन्ना इन्नक अन्तस्समीउ़ल अ़लीम व स़ल्लि अ़ला ह़बीबिक मुह़म्मदिंव्व अ़ला आलिही व अस़्ह़ाबिही अज्मई़न बिरह़्मतिक या अर्ह़मर्राह़िमीन।** राक़िम ख़ादिम मुह़म्मद दाऊद राज़, 7 रमज़ान 1396 हिजरी वारिद ह़ाले कुतुबख़ाना मुह़म्मदिया जामेउ़ल ह़दीष़ नम्बर 17 मार्केट रोड बंगलौर। दारुल सुरूर। (हरसहल्लाहु मिन शुरूरिद् दुहूर आमीन)

6517. मुझसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे इब्राहीम बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रह़मान ने और अ़ब्दुर्रह़मान अल अअ़रज ने बयान किया, उन दोनों ने बयान किया कि ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने फ़र्माया कि दो आदमियों ने आपस में गाली-गलूच की। जिनमें से एक मुसलमान था और दूसरा यहूदी था मुसलमान ने कहा कि उस परवरदिगार की क़सम! जिसने मुह़म्मद (ﷺ) को तमाम जहान पर बरगुज़ीदा किया। यहूदी ने कहा कि उस परवरदिगार की क़सम! जिसने मूसा (अ़लैहि.) को तमाम जहान पर बरगुज़ीदा किया। रावी ने बयान किया कि मुसलमान यहूदी की बात सुनकर ख़फ़ा हो गया और उसके मुँह पर एक तमाचा रसीद किया। यहूदी रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास गया और आँह़ज़रत (ﷺ) से अपना और मुसलमान का सारा वाक़िया बयान किया। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि देखो मूसा (अ़लैहि.) पर मुझको फ़ज़ीलत मत दो क्योंकि क़यामत के दिन ऐसा होगा कि स़ूर फूँकते ही तमाम लोग बेहोश हो जाएँगे और मैं सबसे पहला शख़्स़ होऊँगा, जिसे होश आएगा। मैं क्या देखूँगा कि मूसा (अ़लैहि.) अ़र्शे इलाही का कोना थामे हुए हैं। मुझे नहीं मा'लूम कि मूसा (अ़लैहि.) भी उन लोगों में होंगे जो बेहोश हुए थे और फिर मुझसे पहले ही होश में आ गये थे या उनमें से होंगे जिन्हें अल्लाह तआ़ला ने उससे अलग कर दिया। (राजेअ़ : 2411)

٦٥١٧- حَدَّثَنِي عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنِي إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، وَ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الأَعْرَجِ أَنَّهُمَا حَدَّثَاهُ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ قَالَ: اسْتَبَّ رَجُلاَنِ : رَجُلٌ مِنَ الْمُسْلِمِينَ وَرَجُلٌ مِنَ الْيَهُودِ فَقَالَ الْمُسْلِمُ : وَالَّذِي اصْطَفَى مُحَمَّدًا عَلَى الْعَالَمِينَ، فَقَالَ الْيَهُودِيُّ: وَالَّذِي اصْطَفَى مُوسَى عَلَى الْعَالَمِينَ، قَالَ: فَغَضِبَ الْمُسْلِمُ عِنْدَ ذَلِكَ فَلَطَمَ وَجْهَ الْيَهُودِيِّ، فَذَهَبَ الْيَهُودِيُّ إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ، فَأَخْبَرَهُ بِمَا كَانَ مِنْ أَمْرِهِ وَأَمْرِ الْمُسْلِمِ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((لاَ تُخَيِّرُونِي عَلَى مُوسَى، فَإِنَّ النَّاسَ يَصْعَقُونَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَأَكُونُ أَوَّلَ مَنْ يُفِيقُ، فَإِذَا مُوسَى بَاطِشٌ بِجَانِبِ الْعَرْشِ فَلاَ أَدْرِي أَكَانَ مُوسَى فِيمَنْ صَعِقَ فَأَفَاقَ قَبْلِي أَوْ كَانَ مِمَّنِ اسْتَثْنَى اللهُ)). [راجع: ٢٤١١]

तशरीह : फ़र्माया, **इल्ला मन शाअल्लाह।** कहते हैं कि जिब्राईल व मीकाईल व इ़ज़्राईल और ह़ामिलाने अ़र्श और मलाइका अ़लैहिमुस्सलाम और बहिश्त के हूर व ग़िल्मान वग़ैरह बेहोश न होंगे। आपने ये अज़्राहे तवाज़ोअ़

फ़र्माया वरना आप सारे अंबिया से अफ़ज़ल हैं। (ﷺ)

6518. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, कहा हमसे अबुज़्ज़िनाद ने, उनसे अअ़रज ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि बेहोशी के वक़्त तमाम लोग बेहोश हो जाएँगे और सबसे पहले उठने वाला मैं होऊंगा। उस वक़्त मूसा अ़र्शे इलाही का कोना थामे होंगे। अब मैं नहीं जानता कि वो बेहोश भी होंगे या नहीं। इस ह़दीष़ को अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने भी आँहज़रत (ﷺ) से रिवायत किया है। (राजेअ़ : 2411)

٦٥١٨- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، حَدَّثَنَا أَبُو الزِّنَادِ عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((يَصْعَقُ النَّاسُ حِينَ يَصْعَقُونَ فَأَكُونُ أَوَّلَ مَنْ قَامَ، فَإِذَا مُوسَى آخِذٌ بِالْعَرْشِ، فَمَا أَدْرِي أَكَانَ فِيمَنْ صَعِقَ)) رَوَاهُ أَبُو سَعِيدٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ. [راجع: ٢٤١١]

जो ऊपर किताबुल अश्ख़ास़ में मौसूलन गुज़र चुकी है।

बाब 44 : अल्लाह तआ़ला ज़मीन को अपनी मुट्ठी में ले लेगा.

٤٤- باب يَقْبِضُ اللهُ الأَرْضَ

इस अम्र को नाफ़ेअ़ ने इब्ने उ़मर (रज़ि.) से रिवायत किया है और उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से।

رَوَاهُ نَافِعٌ عَنِ ابْنِ عُمَرَ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ.

जो किताबुत् तौह़ीद में मौसूलन आएगा।

6519. हमसे मुक़ातिल मरवज़ी ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, कहा हमको यूनुस बिन यज़ीद ऐली ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुहरी ने, कहा मुझसे सईद बिन मुसय्यब ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, अल्लाह तआ़ला ज़मीन को अपनी मुट्ठी में ले लेगा और आसमानों को अपने दाएँ हाथ में लपेट लेगा। फिर फ़र्माएगा कि अब मैं हूँ बादशाह। आज ज़मीन के बादशाह कहाँ गये? (राजेअ़ : 4812)

٦٥١٩- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مُقَاتِلٍ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ، أَخْبَرَنَا يُونُسُ عَنِ الزُّهْرِيِّ حَدَّثَنِي سَعِيدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: قَالَ ((يَقْبِضُ اللهُ الأَرْضَ وَيَطْوِي السَّمَاءَ بِيَمِينِهِ، ثُمَّ يَقُولُ: أَنَا الْمَلِكُ أَيْنَ مُلُوكُ الأَرْضِ؟)). [راجع: ٤٨١٢]

जो अपनी बादशाहत पर नाज़ किया करते थे।

6520. हमसे यह़्या बिन बुकैर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे ख़ालिद बिन यज़ीद ने, उनसे सईद बिन अबी हिलाल ने, उनसे ज़ैद बिन असलम ने, उनसे अ़त़ा बिन यसार ने और उनसे अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, क़यामत के दिन सारी ज़मीन एक रोटी की त़रह हो जाएगी जिसे अल्लाह तआ़ला अहले जन्नत की मेज़बानी के लिये अपने हाथ से उलटेगा पलटेगा जिस त़रह तुम दस्तरख़्वान

٦٥٢٠- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ خَالِدٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ أَبِي هِلاَلٍ، عَنْ زَيْدِ بْنِ أَسْلَمَ، عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((تَكُونُ الأَرْضُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ خُبْزَةً وَاحِدَةً يَتَكَفَّؤُهَا الْجَبَّارُ بِيَدِهِ كَمَا

पर रोटी हिराते फिराते हो। फिर एक यहूदी आया और बोला, अबुल क़ासिम! तुम पर रहमान की बरकत नाज़िल करे क्या मैं तुम्हें क़यामत के दिन अहले जन्नत की सबसे पहले ज़ियाफ़त के बारे में ख़बर न दूँ? आपने फ़र्माया, क्यों नहीं। तो उसने (भी यही) कहा कि सारी ज़मीन एक रोटी की तरह हो जाएगी जैसा कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया था। फिर आँहज़रत (ﷺ) ने हमारी तरफ़ देखा और मुस्कुराए जिससे आपके आगे के दांत दिखाई देने लगे। फिर (उसने) पूछा क्या मैं तुम्हें उसके सालन के बारे में ख़बर न दूँ? (फिर ख़ुद ही) बोला कि उनका सालन बालाम व नून होगा। सहाबा (रज़ि.) ने कहा ये क्या चीज़ है? उसने कहा कि बैल और मछली जिसकी कलेजी के साथ ज़ाइद चर्बी के हिस्से को सत्तर हज़ार आदमी खाएँगे।

يَكْفَأُ أَحَدُكُمْ خُبْزَتَهُ فِي السَّفَرِ نُزُلاً لأَهْلِ الْجَنَّةِ))، فَأَتَى رَجُلٌ مِنَ الْيَهُودِ فَقَالَ: بَارَكَ الرَّحْمَنُ عَلَيْكَ يَا أَبَا الْقَاسِمِ، أَلاَ أُخْبِرُكَ بِنُزُلِ أَهْلِ الْجَنَّةِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ؟ قَالَ ((بَلَى)) قَالَ: تَكُونُ الأَرْضُ خُبْزَةً وَاحِدَةً كَمَا قَالَ النَّبِيُّ ﷺ. فَنَظَرَ النَّبِيُّ ﷺ إِلَيْنَا ثُمَّ ضَحِكَ حَتَّى بَدَتْ نَوَاجِذُهُ ثُمَّ قَالَ: ((أَلاَ أُخْبِرُكَ بِإِدَامِهِمْ؟)) قَالَ: ((إِدَامُهُمْ بَالاَمٌ وَنُونٌ)). قَالُوا : وَمَا هَذَا؟ قَالَ: ((ثَوْرٌ وَنُونٌ يَأْكُلُ مِنْ زَائِدَةِ كَبِدِهِمَا سَبْعُونَ أَلْفًا))

तश्रीह : अल्लाहु अकबर! कितनी अज़ीमुश्शान नेअमत से मेहमानी की जाएगी। बालाम इबरानी लफ़्ज़ है, इसके मा'नी बैल ही के सहीह हैं और नून मछली को कहते हैं, ये अरबी ज़ुबान का लफ़्ज़ है। क़ुर्आन मजीद में भी मछली के लिये ये लफ़्ज़ बोला गया है। मज़्कूरा सत्तर हज़ार वो लोग होंगे जो बिला हिसाब जन्नत में जाएँगे। **अल्लाहुम्मज्अल्ना** मिन्हुम आमीन!

6521. हमसे सईद बिन अबी मरयम ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको मुहम्मद बिन जा'फ़र ने ख़बर दी, उन्होंने कहा कि मुझसे अबू हाज़िम सलमा बिन दीनार ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने सहल बिन सअद साएदी (रज़ि.) से सुना कहा कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना, आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि, क़यामत के दिन लोगों का हश्र सफ़ेद व सुर्ख़ी आमेज़ ज़मीन पर होगा जैसे मेदे की रोटी साफ़ व सफ़ेद होती है। उस ज़मीन पर किसी (चीज़) का कोई निशान न होगा।

٦٥٢١- حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ أَبِي مَرْيَمَ، أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنِي أَبُو حَازِمٍ قَالَ: سَمِعْتُ سَهْلَ بْنَ سَعْدٍ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ: يَقُولُ : ((يُحْشَرُ النَّاسُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ عَلَى أَرْضٍ بَيْضَاءَ عَفْرَاءَ كَقُرْصَةِ نَقِيٍّ)) قَالَ سَهْلٌ: أَوْ غَيْرُهُ ((لَيْسَ فِيهَا مَعْلَمٌ لأَحَدٍ)).

या'नी उसमें कोई मकान, रास्ता, बाग़, टीला या पहाड़ न होगा। आयाते क़ुर्आनिया बताती हैं कि हश्र की ज़मीन और होगी जैसा कि आयत **यौम तुबद्दलुल्अर्ज़ु ग़ैरल्अर्ज़ि।** (इब्राहीम : 48) से ज़ाहिर है।

बाब 45 : हश्र की कैफ़ियत के बयान में

٤٥- باب كَيْفَ الْحَشْرُ

6522. हमसे मुअल्ला बिन असद ने बयान किया, कहा हमसे वुहैब बिन ख़ालिद ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह बिन ताउस ने, उनसे उनके वालिद ताउस ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, लोगों!

٦٥٢٢- حَدَّثَنَا مُعَلَّى بْنُ أَسَدٍ، حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ، عَنِ ابْنِ طَاوُسٍ عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ

عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: ((يُحْشَرُ النَّاسُ عَلَى ثَلاَثِ طَرَائِقَ رَاغِبِينَ رَاهِبِينَ، وَاثْنَانِ عَلَى بَعِيرٍ، وَثَلاَثَةٌ عَلَى بَعِيرٍ، وَأَرْبَعَةٌ عَلَى بَعِيرٍ، وَعَشَرَةٌ عَلَى بَعِيرٍ، وَيَحْشُرُ بَقِيَّتَهُمُ النَّارُ، تَقِيلُ مَعَهُمْ حَيْثُ قَالُوا، وَتَبِيتُ مَعَهُمْ حَيْثُ بَاتُوا، وَتُصْبِحُ مَعَهُمْ حَيْثُ أَصْبَحُوا، وَتُمْسِي مَعَهُمْ حَيْثُ أَمْسَوْا)).

का ह़श्र तीन फ़िर्क़ों में होगा (एक फ़िर्क़े वाले) लोग रग़बत करने वाले नीज़ डरने वाले होंगे (दूसरा फ़िर्क़ा ऐसे लोगों का होगा कि) एक ऊँट पर दो आदमी सवार होंगे किसी ऊँट पर तीन होंगे, किसी ऊँट पर चार होंगे और किसी पर दस होंगे। और बाक़ी लोगों को आग जमा करेगी (अहले शिर्क का ये तीसरा फ़िर्क़ा होगा) जब वो क़ैलूला करेंगे तो आग भी उनके साथ ठहरी होगी जब वो रात गुज़ारेंगे तो आग भी उनके साथ वहाँ ठहरी होगी जब वो सुबह करेंगे तो आग भी सुबह के वक़्त वहाँ मौजूद होगी और जब वो शाम करेंगे तो आग भी शाम के वक़्त उनके साथ मौजूद होगी।

उ़लमा-ए-इस्लाम ने उस आग से मुराद कई नारी वाक़िआत को लिया है। बाक़ी अस़ल ह़क़ीक़त अल्लाह ही को मा'लूम है। हमारा ईमान है कि स़दक़ रसूलुल्लाहि (ﷺ)

٦٥٢٣- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ، حَدَّثَنَا يُونُسُ بْنُ مُحَمَّدٍ الْبَغْدَادِيُّ، حَدَّثَنَا شَيْبَانُ عَنْ قَتَادَةَ، حَدَّثَنَا أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَجُلاً قَالَ: يَا نَبِيَّ اللهِ ﷺ كَيْفَ يُحْشَرُ الْكَافِرُ عَلَى وَجْهِهِ؟ قَالَ ((أَلَيْسَ الَّذِي أَمْشَاهُ عَلَى الرِّجْلَيْنِ فِي الدُّنْيَا قَادِرًا عَلَى أَنْ يُمْشِيَهُ عَلَى وَجْهِهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ؟)) قَالَ قَتَادَةُ : بَلَى، وَعِزَّةِ رَبِّنَا. [راجع: ٤٧٦٠]

6523. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुह़म्मद ने बयान किया, कहा हमसे यूनुस बिन मुह़म्मद बग़दादी ने बयान किया, कहा हमसे शैबान नह़्वी ने बयान किया, कहा उनसे क़तादा ने, कहा हमसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि एक स़ह़ाबी ने कहा, ऐ अल्लाह के नबी! क़यामत में काफ़िरों को उनके चेहरे के बल किस त़रह ह़श्र किया जाएगा? आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया क्या वो ज़ात जिसने उन्हें दुनिया में दो पैर पर चलाया उसे इस पर क़ुदरत नहीं है कि क़यामत के दिन उन्हें चेहरे के बल चला दे। क़तादा (रज़ि.) ने कहा कि ज़रूर है हमारे रब की इ़ज़्ज़त की क़सम! बेशक वो मुँह के बल चला सकता है। (राजेअ़ : 4760)

٦٥٢٤- حَدَّثَنَا عَلِيٌّ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ عَمْرٌو، سَمِعْتُ سَعِيدَ بْنَ جُبَيْرٍ، سَمِعْتُ ابْنَ عَبَّاسٍ سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((إِنَّكُمْ مُلاَقُو اللهِ حُفَاةً عُرَاةً، مُشَاةً غُرْلاً)). قَالَ سُفْيَانُ : هَذَا مِمَّا نَعُدُّ أَنَّ ابْنَ عَبَّاسٍ سَمِعَهُ مِنَ النَّبِيِّ ﷺ. [راجع: ٣٣٤٩]

6524. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया कि अ़म्र बिन दीनार ने कहा कि मैंने सईद बिन जुबैर से सुना, उन्होंने इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से सुना और उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से सुना, आपने फ़र्माया कि तुम अल्लाह से क़यामत के दिन नंगे पैर, नंगे बदन और पैदल चलकर बिन ख़त्ना मिलोगे। सुफ़यान ने कहा कि ये ह़दीष़ उन (नौ या दस ह़दीष़ों) में से है जिनके बारे में हम समझते हैं कि इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने ख़ुद उनको नबी करीम (ﷺ) से सुना। (राजेअ़ : 3349)

6525. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, उनसे अ़म्र बिन दीनार ने बयान किया, उनसे सईद बिन जुबैर ने, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना कि आप मिम्बर पर ख़ुत्बा में फ़र्मा रहे थे कि तुम अल्लाह तआ़ला से इस ह़ाल में मिलोगे कि नंगे पैर, नंगे जिस्म और बग़ैर ख़त्ना होगे। (राजेअ़ : 3349)

٦٥٢٥- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ عَمْرٍو، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَخْطُبُ عَلَى الْمِنْبَرِ يَقُولُ: ((إِنَّكُمْ مُلاَقُو اللهِ حُفَاةً عُرَاةً غُرْلاً)). [راجع: ٣٣٤٩]

6526. मुझसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे ग़ुन्दर ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे मुग़ीरह बिन नोअ़मान ने बयान किया, उनसे सईद बिन जुबैर ने, उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) हमें ख़ुत्बा देने के लिये खड़े हुए और फ़र्माया, तुम लोग क़यामत के दिन इस ह़ाल में जमा किये जाओगे कि नंगे पैर और नंगे जिस्म होओगे। जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने फ़र्माया कि, जिस त़रह़ मैंने शुरू में पैदा किया था उसी त़रह़ लौटा दूंगा, और तमाम मख़लूक़ात में सबसे पहले जिसे कपड़ा पहनाया जाएगा वो इब्राहीम (अ़लैहि.) होंगे और मेरी उम्मत के बहुत से लोग लाए जाएँगे जिनके आ'मालनामे बाएँ हाथ में होंगे। मैं उस पर कहूँगा ऐ मेरे रब! ये तो मेरे साथी हैं। अल्लाह तआ़ला फ़र्माएगा तुम्हें मा'लूम नहीं कि इन्होंने तुम्हारे बाद क्या क्या नई बिदआ़त निकाली थीं। उस वक़्त मैं भी वही कहूँगा जो नेक बन्दे (ईसा अ़लैहि.) ने कहा कि या अल्लाह! मैं जब तक इनमें मौजूद रहा उस वक़्त तक मैं इन पर गवाह था। (अल माइदह : 117,118)

रसूलुल्लाह (ﷺ) ने बयान किया कि फ़रिश्ते (मुझसे) कहेंगे कि ये लोग हमेशा अपनी ऐड़ियों के बल फिरते ही रहे। (मुर्तद होते रहे)। (राजेअ़ : 3349)

٦٥٢٦- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنِ الْمُغِيرَةِ بْنِ النُّعْمَانِ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَامَ فِينَا النَّبِيُّ ﷺ يَخْطُبُ فَقَالَ ((إِنَّكُمْ مَحْشُورُونَ حُفَاةً عُرَاةً، ﴿كَمَا بَدَأْنَا أَوَّلَ خَلْقٍ نُعِيدُهُ﴾)) [الأنبياء: ١٠٤] الآيَةَ. ((وَإِنَّ أَوَّلَ الْخَلاَئِقِ يُكْسَى يَوْمَ الْقِيَامَةِ إِبْرَاهِيمُ، وَإِنَّهُ سَيُجَاءُ بِرِجَالٍ مِنْ أُمَّتِي فَيُؤْخَذُ بِهِمْ ذَاتَ الشِّمَالِ، فَأَقُولُ يَا رَبِّ أُصَيْحَابِي؟ فَيَقُولُ اللهُ: إِنَّكَ لاَ تَدْرِي مَا أَحْدَثُوا بَعْدَكَ، فَأَقُولُ كَمَا قَالَ الْعَبْدُ الصَّالِحُ ﴿وَكُنْتُ عَلَيْهِمْ شَهِيدًا مَا دُمْتُ فِيهِمْ﴾ [المائدة: ١١٧] إِلَى قَوْلِهِ ﴿الْحَكِيمُ﴾ فَيُقَالُ إِنَّهُمْ لَمْ يَزَالُوا مُرْتَدِّينَ عَلَى أَعْقَابِهِمْ)). [راجع: ٣٣٤٩]

तश्रीह़ : इस ह़दीष़ में मुर्तदीन लोग मुराद हैं जिनसे ह़ज़रत सिद्दीक़े अकबर (रज़ि.) ने जिहाद के लिये कमर बाँधी थी और वो लोग भी मुराद हैं जिन्होंने इस्लाम में बिदआ़त का तूमार बपा करके दीने ह़क़ का ह़ुलिया बिगाड़ दिया है। आजकल क़ब्रों और बुज़ुर्गों के मज़ारात पर ऐसे लोग बकष़रत देखे जा सकते हैं जिनके लिये कहा गया है।

शिकवा जफ़ा-ए-वफ़ानुमा जो ह़रम को अहले ह़रम से है, अगर बुतकदे में बयाँ करूँ तो कहे सनम भी हरी हरी

ह़ज़रत ईसा (अ़लैहिस्सलाम) ने फ़र्माया, ऐ अल्लाह! मैं जब तक इनमें मौजूद रहा उस वक़्त तक मैं इन पर गवाह

था। फिर जबकि तूने ख़ुद मुझे ले लिया फिर तू ही इन पर निगहबान था और तू तो हर चीज़ से पूरा बाख़बर है अगर तू इन्हें सज़ा दे तो ये तेरे ग़ुलाम हैं और अगर तू इन्हें बख़्श दे तो बेशक तू ज़बरदस्त ग़ल्बे वाला और हिक्मत वाला है।

٦٥٢٧- حدَّثَنَا قَيْسُ بْنُ حَفْصٍ، قَالَ حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ الْحَارِثِ، قَالَ حَدَّثَنَا حَاتِمُ بْنُ أَبِي صَغِيرَةَ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ قَالَ: حَدَّثَنِي الْقَاسِمُ بْنُ مُحَمَّدِ بْنِ أَبِي بَكْرٍ أَنَّ عَائِشَةَ قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ ((تُحْشَرُونَ حُفَاةً عُرَاةً غُرْلاً)) قَالَتْ عَائِشَةُ: فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ الرِّجَالُ وَالنِّسَاءُ يَنْظُرُ بَعْضُهُمْ إِلَى بَعْضٍ؟ فَقَالَ: ((الأَمْرُ أَشَدُّ مِنْ أَنْ يُهِمَّهُمْ ذَاكَ)).

6527. हमसे क़ैस बिन ह़फ़्स ने बयान किया, कहा हमसे ख़ालिद बिन ह़ारिष़ ने बयान किया, कहा हमसे ह़ातिम बिन अबी स़ग़ीरह ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन अबी मुलैका ने बयान किया, कहा कि मुझसे क़ासिम बिन मुह़म्मद बिन अबीबक्र ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, तुम नंगे पैर, नंगे जिस्म, बिला ख़त्ना के उठाए जाओगे। ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) फ़र्माती हैं कि उस पर मैंने पूछा, या रसूलल्लाह! तो क्या मर्द-औरतें एक-दूसरे को देखते होंगे? आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि उस वक़्त मामला इससे कहीं ज़्यादा सख़्त होगा। इसका ख़्याल भी कोई नहीं कर सकेगा।

सब पर क़यामत की ऐसी दहशत ग़ालिब होगी कि होश व ह़वास जवाब दे जाएँगे इल्ला माशाअल्लाह।

٦٥٢٨- حدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ، قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنْ عَمْرِو بْنِ مَيْمُونٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ قَالَ: كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ فِي قُبَّةٍ، فَقَالَ: ((أَتَرْضَوْنَ أَنْ تَكُونُوا رُبُعَ أَهْلِ الْجَنَّةِ؟)) قُلْنَا: نَعَمْ. قَالَ: ((تَرْضَوْنَ أَنْ تَكُونُوا ثُلُثَ أَهْلِ الْجَنَّةِ؟)) قُلْنَا: نَعَمْ. قَالَ: ((أَتَرْضَوْنَ أَنْ تَكُونُوا شَطْرَ أَهْلِ الْجَنَّةِ؟)) قُلْنَا: نَعَمْ. قَالَ: ((وَالَّذِي نَفْسُ مُحَمَّدٍ بِيَدِهِ إِنِّي لأَرْجُو أَنْ تَكُونُوا نِصْفَ أَهْلِ الْجَنَّةِ وَذَلِكَ أَنَّ الْجَنَّةَ لاَ يَدْخُلُهَا إِلاَّ نَفْسٌ مُسْلِمَةٌ، وَمَا أَنْتُمْ فِي أَهْلِ الشِّرْكِ إِلاَّ كَالشَّعْرَةِ الْبَيْضَاءِ فِي جِلْدِ الثَّوْرِ الأَسْوَدِ - أَوْ كَالشَّعْرَةِ السَّوْدَاءِ - فِي جِلْدِ الثَّوْرِ الأَحْمَرِ)).[طرفه في: ٦٦٤٢].

6528. हमसे मुह़म्मद बिन बश्शार ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे ग़ुन्दर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे अबू इस्ह़ाक़ ने बयान किया, उनसे अ़म्र बिन मैमून ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने बयान किया कि हम नबी करीम (ﷺ) के साथ एक ख़ैमे में थे। आपने फ़र्माया, क्या तुम इस पर राज़ी हो कि अहले जन्नत का एक चौथाई रहो? हमने कहा कि जी हाँ। आपने फ़र्माया क्या तुम इस पर राज़ी हो कि अहले जन्नत का तुम एक तिहाई रहो? हमने कहा जी हाँ। आपने फ़र्माया क्या तुम इस पर राज़ी हो कि अहले जन्नत का तुम आधा रहो? हमने कहा जी हाँ। फिर आपने फ़र्माया कि उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मुह़म्मद (ﷺ) की जान है, मुझे उम्मीद है कि तुम लोग (उम्मते मुस्लिमा) अहले जन्नत का आधा ह़िस्सा होओगे और ऐसा इसलिये होगा कि जन्नत में फ़र्मांबरदार नफ़्स के अ़लावा और कोई दाख़िल न होगा और तुम लोग शिर्क करने वालों के बीच (ता'दाद में) इस त़रह़ होगे जैसे स्याह बैल के ज़िस्म पर सफ़ेद बाल होते हैं या जैसे सुर्ख़ रंग के जिस्म पर एक स्याह बाल हो। (दीगर मक़ाम : 6642)

तश्रीह : दूसरी रिवायत में यूँ है जैसे सफ़ेद बैल में एक बाल काला हो। मक़्सूद ये है कि दुनिया में मुश्रिकों और फ़ासिक़ों की ता'दाद बहुत ज़्यादा ही रही है और अल्लाह के मुवह्हिद और मोमिन बन्दे उन मुश्रिकों और काफ़िरों से हमेशा कम ही रहे हैं तो इसमें कोई तअज्जुब की बात नहीं है। क़ुर्आन मजीद में साफ़ मज़्कूर है, **व क़लीलुम्मिन इबादियश्शकूर** (सूरह सबा : 13) मेरे शुक्रगुज़ार बन्दे थोड़े ही होते हैं। आम तौर पर यही हाल है और मुसलमानों में तौहीद व सुन्नत वालों की ता'दाद भी हमेशा थोड़ी ही चली आ रही है जो लोग आजकल अहले सुन्नत वल जमाअत कहलाने वाले हैं उनकी ता'दाद उर्सों में और ता'ज़ियों में देखी जा सकती है। मुश्रिकीन व मुब्तदिईन बकषरत मिलेंगे। अहले तौहीद, पाबन्दे शरीअत, फ़िदा-ए-सुन्नत बिलकुल अक़्ले क़लील हैं। अल्लाह पाक हमको तौहीद और सुन्नत का आमिल और इस्लाम का सच्चा ताबेअे फ़र्मान (आज्ञाकारी) बनाए, आमीन।

6529. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, कहा मुझसे मेरे भाई ने बयान किया, उनसे सुलैमान ने, उनसे षौर ने, उनसे अबुल ग़ैष ने, उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने और उनसे नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि क़यामत के दिन सबसे पहले हज़रत आदम (अलैहि.) को पुकारा जाएगा। फिर उनकी नस्ल उनको देखेगी तो कहा जाएगा कि ये तुम्हारे बुज़ुर्ग दादा आदम हैं। (पुकारने पर) वो कहेंगे कि लब्बैक व सअदैक। अल्लाह तआला फ़र्माएगा कि अपनी नस्ल में से दोज़ख़ का हिस्सा निकाल लो। आदम (अलैहि.) अर्ज़ करेंगे ऐ परवरदिगार! कितनों को निकालूँ? अल्लाह तआला फ़र्माएगा फ़ीसद (निन्नान्वे फ़ीसद दोज़ख़ी एक जन्नती) सहाबा रिज़्वानुल्लाह अलैहिम ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! जब हममें से सौ में से निन्नान्वे निकाल दिये जाएँ तो फिर बाक़ी क्या रह जाएँगे? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि तमाम उम्मतों में मेरी उम्मत इतनी ही ता'दाद में होगी जैसे काले बैल के जिस्म पर सफ़ेद बाल होते हैं।

٦٥٢٩- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، قَالَ حَدَّثَنِي أَخِي عَنْ سُلَيْمَانَ، عَنْ ثَوْرٍ، عَنْ أَبِي الْغَيْثِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: ((أَوَّلُ مَنْ يُدْعَى يَوْمَ الْقِيَامَةِ آدَمُ فَتَرَاءَى ذُرِّيَّتُهُ، فَيُقَالُ: هَذَا أَبُوكُمْ آدَمُ فَيَقُولُ: لَبَّيْكَ وَسَعْدَيْكَ، فَيَقُولُ: أَخْرِجْ بَعْثَ جَهَنَّمَ مِنْ ذُرِّيَّتِكَ فَيَقُولُ: يَا رَبِّ كَمْ أُخْرِجُ؟ فَيَقُولُ: أَخْرِجْ مِنْ كُلِّ مِائَةٍ تِسْعَةً وَتِسْعِينَ))، فَقَالُوا: يَا رَسُولَ اللهِ إِذَا أُخِذَ مِنَّا مِنْ كُلِّ مِائَةٍ تِسْعَةٌ وَتِسْعُونَ فَمَاذَا يَبْقَى مِنَّا؟ قَالَ: ((إِنَّ أُمَّتِي فِي الأُمَمِ كَالشَّعْرَةِ الْبَيْضَاءِ فِي الثَّوْرِ الأَسْوَدِ)).

इसलिये अगर निन्नान्वे फ़ीसदी भी दोज़ख़ में जाएँ तो तुमको फ़िक्र न करना चाहिये, एक फ़ीसदी आदम (अलैहि.) की औलाद में सारे सच्चे मुसलमान आ जाएँगे बल्कि दूसरी उम्मतों के मुवह्हिद लोग भी होंगे। इस हदीष से ये भी निकला कि दोज़ख़ की मर्दुमशुमारी (जनगणना) जन्नत की मर्दुशुमारी से कहीं ज़्यादा होगी।

बाब 46 : अल्लाह तआला का सूरह हज्ज में इर्शाद कि क़यामत की हलचल एक बड़ी मुसीबत होगी और सूरह नज्म और सूरह अंबिया में फ़र्माया, क़यामत क़रीब आ गई

٤٦- باب قَوْلِهِ عَزَّ وَجَلَّ : ﴿إِنَّ زَلْزَلَةَ السَّاعَةِ شَيْءٌ عَظِيمٌ﴾ [الحج : ١] أَزِفَتِ الآزِفَةُ : اقْتَرَبَتِ السَّاعَةُ.

क़यामत का एक नाम आज़िफ़ा भी है।

6530. मुझसे यूसुफ़ बिन मूसा क़त्तान ने बयान किया, कहा

٦٥٣٠- حَدَّثَنِي يُوسُفُ بْنُ مُوسَى، أَنْبَأَنَا

جَرِيرٌ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((يَقُولُ اللهُ يَا آدَمُ فَيَقُولُ: لَبَّيْكَ وَسَعْدَيْكَ وَالْخَيْرُ فِي يَدَيْكَ، قَالَ: يَقُولُ أَخْرِجْ بَعْثَ النَّارِ، قَالَ: وَمَا بَعْثُ النَّارِ؟ قَالَ: مِنْ كُلِّ أَلْفٍ تِسْعَمِائَةٍ وَتِسْعَةً وَتِسْعِينَ، فَذَاكَ حِينَ يَشِيبُ الصَّغِيرُ وَتَضَعُ كُلُّ ذَاتِ حَمْلٍ حَمْلَهَا، ﴿وَتَرَى النَّاسَ سُكَرَى وَمَاهُمْ بِسُكَرَى، وَلَكِنَّ عَذَابَ اللهِ شَدِيدٌ﴾ فَاشْتَدَّ ذَلِكَ عَلَيْهِمْ)) فَقَالُوا: يَا رَسُولَ اللهِ أَيُّنَا ذَلِكَ الرَّجُلُ؟ قَالَ: ((أَبْشِرُوا فَإِنَّ مِنْ يَأْجُوجَ وَمَأْجُوجَ أَلْفٌ، وَمِنْكُمْ رَجُلٌ، ثُمَّ قَالَ: وَالَّذِي نَفْسِي فِي يَدِهِ إِنِّي لأَطْمَعُ أَنْ تَكُونُوا ثُلُثَ أَهْلِ الْجَنَّةِ))، قَالَ: فَحَمِدْنَا اللهَ وَكَبَّرْنَا ثُمَّ قَالَ: ((وَالَّذِي نَفْسِي فِي يَدِهِ إِنِّي لأَطْمَعُ أَنْ تَكُونُوا شَطْرَ أَهْلِ الْجَنَّةِ، إِنَّ مَثَلَكُمْ فِي الأُمَمِ كَمَثَلِ الشَّعْرَةِ الْبَيْضَاءِ فِي جِلْدِ الثَّوْرِ الأَسْوَدِ - أَوِ الرَّقْمَةِ فِي ذِرَاعِ الْحِمَارِ)).

[راجع: ٣٣٤٨]

हमसे जरीर बिन अ़ब्दुल ह़मीद ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे अबू स़ालेह ने और उनसे अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया अल्लाह तआ़ला फ़र्माएगा ऐ आदम! आदम (अ़लैहि.) कहेंगे ह़ाज़िर हूँ फ़र्मांबरदार हूँ और हर भलाई तेरे हाथ में है। अल्लाह तआ़ला फ़र्माएगा जो लोग जहन्नम में डाले जाएँगे उन्हें निकाल लो। आदम (अ़लैहि.) पूछेंगे जहन्नम में डाले जाने वाले लोग कितने हैं? अल्लाह तआ़ला फ़र्माएगा कि हर एक हज़ार में से नौ सौ निन्नान्वे। यही वो वक़्त होगा जब बच्चे ग़म से बूढ़े हो जाएँगे और ह़ामला औ़रतें अपना ह़मल गिरा देंगी और तुम लोगों को नशे की ह़ालत में देखोगे, ह़ालाँकि वो वाक़ई नशे की ह़ालत में न होंगे बल्कि अल्लाह का अ़ज़ाब होगा। स़ह़ाबा को ये बात बहुत सख़्त मा'लूम हुई तो उन्होंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! फिर हममें से वो (ख़ुशनस़ीब) शख़्स़ कौन होगा? आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुम्हें ख़ुशख़बरी हो, एक हज़ार याजूज व माजूज की क़ौम से होंगे और तुममें से वो एक जन्नती होगा। फिर आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ मे मेरी जान है, मुझे उम्मीद है कि तुम लोग अहले जन्नत का एक तिहाई ह़िस़्स़ा होगे। रावी ने बयान किया कि हमने उस पर अल्लाह की ह़म्द बयान की और उसकी तक्बीर कही। फिर आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है मुझे उम्मीद है कि आधा ह़िस़्स़ा अहले जन्नत का तुम लोग होओगे। तुम्हारी मिस़ाल दूसरी उम्मतों के मुक़ाबले मे ऐसी है जैसे किसी काले बैल के जिस्म पर सफ़ेद बालों की (मा'मूली ता'दाद) होती है या वो सफ़ेद दाग़ जो गधे के अगले पैर पर होता है। (राजेअ़ : 3348)

٤٧- باب قَوْلِ اللهِ تَعَالَى :

﴿أَلَا يَظُنُّ أُولَئِكَ أَنَّهُمْ مَبْعُوثُونَ لِيَوْمٍ عَظِيمٍ يَوْمَ يَقُومُ النَّاسُ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ﴾ [المطففين: ٤] وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ:

बाब 47 : अल्लाह तआ़ला का सूरह मुत़फ़्फ़िफ़ीन में यूँ फ़र्माना कि,

क्या ये ख़याल नहीं करते कि ये लोग फिर एक अ़ज़ीम दिन के लिये उठाए जाएँगे। उस दिन जब तमाम लोग रब्बुल आ़लमीन के हुज़ूर में खड़े होंगे। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा व तक़त्तअ़त

﴿وَتَقَطَّعَتْ بِهِمُ الأَسْبَابُ﴾ [البقرة : ١٦٩] قَالَ : الْوُصْلاَتُ فِي الدُّنْيَا.

बिहिमुल अस्बाब का मत़लब ये है कि दुनिया के रिश्ते नात़े जो यहाँ एक-दूसरे से थे वो ख़त्म हो जाएँगे।

तश्रीह़ : यहाँ तक कि जो दुनिया में झूठे पीर व मुर्शिद पकड़ रखे थे वो सब भी बेज़ार हो जाएँगे और वो आपस में एक-दूसरे के दोस्त होने के बजाय उल्टे दुश्मन बन जाएँगे। क़ुर्आन शरीफ़ की आयत, **व यौमा यअ़ज़्ज़ुज़्ज़ालिमु अ़ला यदैहि यक़ूलु यालैतनी इत्तख़ज़्तु मअ़र्रसूलि सबीला** (अल फ़ुर्क़ान : 27) वग़ैरह में इसी ह़क़ीक़त का इज़्हार है। अल्लाह पाक मुक़ल्लिदीने जामेदीन को भी नेक समझ दे जो ख़ुद अपने इमामों के ख़िलाफ़ चलकर उनकी नाराज़ी मोल लेंगे इल्ला माशाअल्लाह।

٦٥٣١- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ أَبَانٍ، قَالَ حَدَّثَنَا عِيسَى بْنُ يُونُسَ، قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ عَوْنٍ، عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: ((﴿يَوْمَ يَقُومُ النَّاسُ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ﴾ قَالَ: يَقُومُ أَحَدُهُمْ فِي رَشْحِهِ إِلَى أَنْصَافِ أُذُنَيْهِ)).

[راجع: ٤٩٣٨]

6531. हमसे इस्माई़ल बिन अबान ने बयान किया, कहा हमसे ईसा बिन यूनुस ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने औ़न ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ़ ने और उनसे इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने यौम यक़ूमुन्नासु लिरब्बिल आ़लमीन की तफ़्सीर में फ़र्माया कि तुममें से हर कोई सारे जहानों के परवरदिगार के आगे खड़ा होगा इस ह़ाल में कि उसका पसीना कानों की लौ तक पहुँचा हुआ होगा। (राजेअ़ : 4938)

٦٥٣٢- حَدَّثَنِي عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللهِ قَالَ حَدَّثَنِي سُلَيْمَانُ، عَنْ ثَوْرِ بْنِ زَيْدٍ، عَنْ أَبِي الْغَيْثِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((يَعْرَقُ النَّاسُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ حَتَّى يَذْهَبَ عَرَقُهُمْ فِي الأَرْضِ سَبْعِينَ ذِرَاعًا، وَيُلْجِمُهُمْ حَتَّى يَبْلُغَ آذَانَهُمْ)).

6532. मुझसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अ़ब्दुल्लाह उवैसी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे सुलैमान बिन बिलाल ने बयान किया, उनसे ष़ौर बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अबुल ग़ैष़ ने और उन्होंने ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, क़यामत के दिन लोग पसीने में सराबोर हो जाएँगे और ह़ालात ये हो जाएँगे कि तुममें हर एक का पसीना ज़मीन में सत्तर हाथ तक फैल जाएगा और मुँह तक पहुँचकर कानों को छूने लगेगा।

٤٨- باب الْقِصَاصِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ

बाब 48 : क़यामत के दिन बदला लिया जाना

وَهْيَ الْحَاقَّةُ لأَنَّ فِيهَا الثَّوَابَ، وَحَوَاقُّ الأُمُورِ. الْحَقَّةُ وَالْحَاقَّةُ وَاحِدٌ، وَالْقَارِعَةُ وَالْغَاشِيَةُ وَالصَّاخَّةُ. وَالتَّغَابُنُ : غَبْنُ أَهْلِ الْجَنَّةِ أَهْلَ النَّارِ.

क़यामत को ह़ाक़्क़ा भी कहते हैं क्योंकि इस दिन बदला मिलेगा और वो काम होंगे जो ष़ाबित और ह़क़ हैं। ह़क़्क़ा और ह़ाक़्क़ा के एक ही मा'नी हैं और क़ारिया और ग़ाशिया और स़ाख़्ख़ा भी क़यामत ही को कहते हैं इसी त़रह़ यौमुत् तग़ाबून भी क्योंकि उस दिन जन्नती काफ़िरों की जायदाद दबा लेंगे।

٦٥٣٣- حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصٍ، قَالَ حَدَّثَنَا أَبِي قَالَ حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، قَالَ

6533. हमसे उ़मर बिन ह़फ़्स़ बिन ग़यास़ ने बयान किया, कहा हमसे हमारे वालिद ने बयान किया, कहा हमसे आ'मश

ने बयान किया, कहा मुझसे शक़ीक़ ने बयान किया, कहा मैंने अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) से सुना कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, सबसे पहले जिस चीज़ का फ़ैसला लोगों के बीच होगा वो नाहक़ ख़ून के बदले का होगा। (दीगर : 6764)

-حَدَّثَنِي شَقِيقٌ: سَمِعْتُ عَبْدَ اللهِ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((أَوَّلُ مَا يُقْضَى بَيْنَ النَّاسِ بِالدِّمَاءِ)). [طرفه في : ٦٨٦٤].

6534. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, कहा कि मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे सईद मक़्बरी ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया जिसने अपने किसी भाई पर ज़ुल्म किया हो तो उसे चाहिये कि उससे (इस दुनिया में) मुआ़फ़ी करा ले। इसलिये कि आख़िरत में रुपये पैसे नहीं होंगे। इससे पहले (मुआ़फ़ करा ले) कि उसके भाई के लिये उसकी नेकियों में से ह़क़ दिलाया जाएगा और अगर उसके पास नेकियाँ न होंगी तो उस (मज़्लूम) भाई की बुराइयाँ उस पर डाल दी जाएँगी। (राजेअ़ : 2449)

٦٥٣٤- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، حَدَّثَنِي مَالِكٌ، عَنْ سَعِيدٍ الْمَقْبُرِيِّ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((مَنْ كَانَتْ عِنْدَهُ مَظْلِمَةٌ لأَخِيهِ فَلْيَتَحَلَّلْهُ مِنْهَا، فَإِنَّهُ لَيْسَ ثَمَّ دِينَارٌ وَلاَ دِرْهَمٌ مِنْ قَبْلِ أَنْ يُؤْخَذَ لأَخِيهِ مِنْ حَسَنَاتِهِ، فَإِنْ لَمْ يَكُنْ لَهُ حَسَنَاتٌ أُخِذَ مِنْ سَيِّئَاتِ أَخِيهِ فَطُرِحَتْ عَلَيْهِ)). [راجع: ٢٤٤٩]

हुक़ूक़ुल इ़बाद हर्गिज़ मुआ़फ़ न होंगे जब तक बन्दे वो हुक़ूक़ न चुका दें।

6535. हमसे स़ल्त बिन मुहम्मद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे यज़ीद बिन ज़ुरैअ़ ने बयान किया, इस आयत के बारे में व नज़अ़ना मा फ़ी सुदूरिहिम मिन ग़िल्ल (सूरह आ़राफ़) कहा कि हमसे सईद ने बयान किया, उनसे क़तादा ने बयान किया, उनसे अबुल मुतवक्किल नाजी ने और उनसे ह़ज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, मोमिनीन जहन्नम से छुटकारा पा जाएँगे लेकिन दोज़ख़ व जन्नत के बीच एक पुल पर उन्हें रोक लिया जाएगा और फिर एक के दूसरे पर उन मज़ालिम का बदला लिया जाएगा जो दुनिया में उनके बीच आपस में हुए थे और जब कांट-छांट कर ली जाएगी और स़फ़ाई हो जाएगी तब उन्हें जन्नत में दाख़िल होने की इजाज़त मिलेगी। पस उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मुहम्मद (ﷺ) की जान है! जन्नतियों में से हर कोई जन्नत में अपने घर को दुनिया के अपने घर के मुक़ाबले में ज़्यादा बेहतर त़रीक़े पर पहचान लेगा। (राजेअ़ : 2440)

٦٥٣٥- حَدَّثَنِي الصَّلْتُ بْنُ مُحَمَّدٍ، قَالَ حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ، وَنَزَعْنَا مَا فِي صُدُورِهِمْ مِنْ غِلٍّ قَالَ : حَدَّثَنَا سَعِيدٌ عَنْ قَتَادَةَ: عَنْ أَبِي الْمُتَوَكِّلِ النَّاجِيِّ أَنَّ أَبَا سَعِيدٍ الْخُدْرِيَّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((يَخْلُصُ الْمُؤْمِنُونَ مِنَ النَّارِ فَيُحْبَسُونَ عَلَى قَنْطَرَةٍ بَيْنَ الْجَنَّةِ وَالنَّارِ، فَيُقَصُّ لِبَعْضِهِمْ مِنْ بَعْضٍ مَظَالِمُ كَانَتْ بَيْنَهُمْ فِي الدُّنْيَا، حَتَّى إِذَا هُذِّبُوا وَنُقُّوا أُذِنَ لَهُمْ فِي دُخُولِ الْجَنَّةِ، فَوَ الَّذِي نَفْسُ مُحَمَّدٍ بِيَدِهِ لأَحَدُهُمْ أَهْدَى بِمَنْزِلِهِ فِي الْجَنَّةِ مِنْهُ بِمَنْزِلِهِ كَانَ فِي الدُّنْيَا)). [راجع: ٢٤٤٠]

तश्रीह़ : इसकी वजह ये है कि बरज़ख़ में हर एक आदमी को सुबह़ व शाम उसका ठिकाना दिखाया जाता है। जैसे क़ुर्आन व ह़दीष़ में है। अब ये जो अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ज़ुहद में निकाला कि फ़रिश्ते दाएँ बाएँ से उनको

जन्नत के रास्ते बतलाएँगे ये इसके ख़िलाफ़ नहीं है। इसलिये कि अपना मकान पहचान लेने से ये ज़रूरी नहीं कि शहर के सब रास्ते भी मा'लूम हों और बहिश्त तो बहुत बड़ा शहर ही नहीं बल्कि एक मुल्के अ़ज़ीम होगा। उसके सामने सारी दुनिया की भी कोई ह़क़ीक़त नहीं है जैसा कि ख़ुद क़ुर्आन शरीफ़ में फ़र्माया, **अर्ज़ुहस्समावातु वल्अर्ज़ु** या'नी जन्नत वो है जिसके अ़र्ज़ में सातों आसमान और सातों ज़मीनें हैं। स़दक़ल्लाहु तबारक व तआ़ला।

इसी बाब में दूसरी ह़दीष़ की सनद में इमाम मालिक (रह़.) भी हैं। ये बड़े ही जलीलुल क़द्र और अ़ज़ीमुल मर्तबत इमाम हैं। फ़िक़्ह और ह़दीष़ में इमामे ह़िजाज़ कहलाते हैं। ह़ज़रत इमाम शाफ़िई (रह़.) इनके शागिर्द हैं और इमाम बुख़ारी (रह़.) व मुस्लिम (रह़.) अबू दाऊद (रह़.) तिर्मिज़ी (रह़.) वग़ैरह सभी के ये इमाम हैं। इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह़.) ने इनके दर्स मे बैठकर एक महीने तक ह़दीष़ का सिमाअ़ किया है। इमाम मुह़म्मद (रह़.) फ़न्ने ह़दीष़ में इमाम मालिक (रह़.) के शागिर्द हैं और इमाम अह़मद बिन ह़ंबल (रह़.) भी इमाम मालिक (रह़.) के शागिर्द के शागिर्द हैं और भी बहुत से ज़बरदस्त अइम्मा व मुह़द्दिष़ीन इल्मे ह़दीष़ में इन्हीं के शागिर्द हैं, उस्ताज़ुल अइम्मा और मुअ़ल्लिमुल ह़दीष़ होने का इतना ज़बरदस्त शर्फ़ अइम्मा-ए-अरबआ़ में से किसी को ह़ासिल नहीं हुआ। मौत़ा इमाम मालिक ह़दीष़ की मशहूर किताब है। 95 साले हिजरी में पैदा हुए और चौरासी साल की उ़म्र पाई 179 हिजरी में इंतिक़ाल फ़र्माया। इल्मे ह़दीष़ की बहुत ही ज़्यादा ता'ज़ीम किया करते थे। रह़िमहुल्लाह रह़मतुंव्वासिआ।

बाब 49 : जिसके ह़िसाब में खोद-कुरेद की गई उसको अ़ज़ाब दिया जाएगा

٤٩- باب مَنْ نُوقِشُ الْحِسَابَ عُذِّبَ

6536. हमसे उ़बैदुल्लाह बिन मूसा ने बयान किया, उनसे उ़ष़्मान बिन अस्वद ने बयान किया, उनसे इब्ने अबी मुलैका ने, उनसे उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जिसके ह़िसाब में खोद कुरेद की गई उसको ज़रूर अ़ज़ाब होगा। वो कहती हैं कि मैंने अ़र्ज़ किया क्या अल्लाह तआ़ला का ये फ़र्मान नहीं है कि, फिर अ़न्क़रीब उनसे हल्का ह़िसाब लिया जाएगा, आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि इससे मुराद स़िर्फ़ पेशी है।

मुझसे अ़म्र बिन अ़ली ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे यह़्या ने बयान किया, उनसे उ़ष़्मान बिन अस्वद ने, उन्होंने कहा मैंने इब्ने अबी मुलैका से सुना, कहा कि मैंने ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) से सुना, उन्होंने कहा कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से ऐसा ही सुना। और इस रिवायत की मुताबअ़त इब्ने जुरैज, मुह़म्मद बिन सुलैम, अय्यूब और स़ालेह़ बिन रुस्तम ने इब्ने अबी मुलैका से की है, उन्होंने ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) से और उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से।

٦٥٣٦- حدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ مُوسَى، عَنْ عُثْمَانَ بْنِ الأَسْوَدِ، عَنِ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ، عَنْ عَائِشَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((مَنْ نُوقِشُ الْحِسَابَ عُذِّبَ)) قَالَتْ: قُلْتُ : أَلَيْسَ يَقُولُ اللهُ تَعَالَى: ﴿فَسَوْفَ يُحَاسِبُ حِسَابًا يَسِيرًا﴾ [الانشقاق : ٨] قَالَ : ((ذَلِكِ الْعَرْضُ)).

حدَّثَنِي عَمْرُو بْنُ عَلِيٍّ، قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى، عَنْ عُثْمَانَ بْنِ الأَسْوَدِ، سَمِعْتُ ابْنَ أَبِي مُلَيْكَةَ، قَالَ: سَمِعْتُ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ مِثْلَهُ. وَتَابَعَهُ ابْنُ جُرَيْجٍ وَمُحَمَّدُ بْنُ سُلَيْمٍ وَأَيُّوبُ وَصَالِحُ بْنُ رُسْتَمَ عَنِ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ عَنْ عَائِشَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ.

उ़ष़्मान बिन अस्वद के साथ इस ह़दीष़ को इब्ने जुरैज और मुह़म्मद बिन सुलैम और अय्यूब सुख़्तियानी और स़ालेह़ बिन रुस्तम ने भी इब्ने अबी मुलैका से और उन्होंने ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) से और उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से रिवायत किया है। इब्ने जुरैज और मुह़म्मद बिन सुलैम की रिवायतों को अबू अ़वाना ने अपनी स़ह़ीह़ में और अय्यूब सुख़्तियानी की रिवायत

को इमाम बुख़ारी (रह.) ने तफ़्सीर में और सालेह की रिवायत को इस्हाक़ बिन राह्वै ने अपनी मुस्नद में वस्ल किया।

٦٥٣٧- حدَّثَنِي إِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ، قَالَ حَدَّثَنَا رَوْحُ بْنُ عُبَادَةَ، قَالَ حَدَّثَنَا حَاتِمُ بْنُ أَبِي صَغِيرَةَ، قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ أَبِي مُلَيْكَةَ، قَالَ حَدَّثَنِي الْقَاسِمُ بْنُ مُحَمَّدٍ، حَدَّثَتْنِي عَائِشَةُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((لَيْسَ أَحَدٌ يُحَاسَبُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ إِلاَّ هَلَكَ)) فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ أَلَيْسَ قَدْ قَالَ اللهُ تَعَالَى: ﴿فَأَمَّا مَنْ أُوتِيَ كِتَابَهُ بِيَمِينِهِ فَسَوْفَ يُحَاسَبُ حِسَابًا يَسِيرًا﴾ [الانشقاق : ٨] فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِنَّمَا ذَلِكَ الْعَرْضُ وَلَيْسَ أَحَدٌ مِنَّا يُنَاقَشُ الْحِسَابَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ إِلاَّ عُذِّبَ)).
[راجع: ١٠٣]

6537. मुझसे इस्हाक़ बिन मंसूर ने बयान किया, कहा हमसे रौह बिन उबादह ने बयान किया, कहा हमसे हातिम बिन अबू सग़ीरह ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल्लाह बिन अबी मुलैका ने बयान किया, कहा मुझसे क़ासिम बिन मुहम्मद ने बयान किया, और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, जिस शख़्स से भी क़यामत के दिन हिसाब लिया गया पस वो हलाक हुआ। मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! क्या अल्लाह तआला ने ख़ुद नहीं फ़र्माया है कि, पस जिसका नामा-ए-आ'माल उसके दाएँ हाथ में दिया गया तो अन्क़रीब उससे एक आसान हिसाब लिया जाएगा। इस पर आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि ये तो सिर्फ़ पेशी होगी। (अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के कहने का मतलब ये है कि) क़यामत के दिन जिसके भी हिसाब में खोद कुरेद की गई उसको अज़ाब यक़ीनी होगा। (राजेअ: 103)

٦٥٣٨- حدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ، قَالَ حَدَّثَنَا مُعَاذُ بْنُ هِشَامٍ، قَالَ حَدَّثَنِي أَبِي عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ، ح وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ مَعْمَرٍ، قَالَ حَدَّثَنَا رَوْحُ بْنُ عُبَادَةَ، حَدَّثَنَا سَعِيدٌ، عَنْ قَتَادَةَ، حَدَّثَنَا أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ نَبِيَّ اللهِ ﷺ كَانَ يَقُولُ: ((يُجَاءُ بِالْكَافِرِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَيُقَالُ لَهُ: أَرَأَيْتَ لَوْ كَانَ لَكَ مِلْءُ الأَرْضِ ذَهَبًا أَكُنْتَ تَفْتَدِي بِهِ؟ فَيَقُولُ: نَعَمْ. فَيُقَالُ لَهُ: قَدْ كُنْتَ سُئِلْتَ مَا هُوَ أَيْسَرُ مِنْ ذَلِكَ)). [راجع: ٣٣٣٤]

6538. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे मुआज़ बिन हिशाम ने बयान किया, कहा कि मुझसे मेरे वालिद ने बयान किया, उनसे क़तादा ने, उनसे अनस (रज़ि.) ने और उनसे नबी करीम (ﷺ) ने (दूसरी सनद) और मुझसे मुहम्मद बिन मअमर ने बयान किया, कहा हमसे रौह बिन उबादह ने बयान किया, कहा हमसे सईद ने बयान किया, उनसे क़तादा ने, कहा हमसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) फ़र्माते थे कि क़यामत के दिन काफ़िर को लाया जाएगा और उससे पूछा जाएगा कि तुम्हारा क्या ख़्याल है अगर ज़मीन भरकर तुम्हारे पास सोना हो तो क्या सबको (अपनी नजात के लिये) फ़िदये मे दे दोगे? वो कहेगा कि हाँ, तो उस वक़्त उससे कहा जाएगा कि तुमसे उससे बहुत आसान चीज़ का (दुनिया में) मुतालबा किया गया था। (राजेअ: 3334)

और तुमने उसे भी पूरा नहीं किया या'नी शिर्क से बाज़ नहीं आए और तौहीद से दूर रहे।

6539. मुझसे उमर बिन हफ़्स ने बयान किया, कहा मुझसे मेरे वालिद ने बयान किया, कहा कि मुझसे आ'मश ने बयान किया, कहा कि मुझसे ख़ुषैमा ने बयान किया, उनसे अदी बिन हातिम (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया तुममें हर एक फ़र्द से अल्लाह तआला क़यामत के दिन इस तरह कलाम करेगा कि अल्लाह के और बन्दे के बीच कोई तर्जुमान न होगा। फिर वो देखेगा तो उसके आगे कोई चीज़ नज़र नहीं आएगी। फिर वो अपने सामने देखेगा और उसके सामने आग होगी। पस तुममें से जो शख़्स भी चाहे कि वो आग से बचे तो वो अल्लाह की राह में ख़ैर खैरात करता रहे। ख़्वाह खजूर के एक टुकड़े के ज़रिये से ही मुम्किन हो। (राजेअ : 1413)

٦٥٣٩- حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصٍ، قَالَ حَدَّثَنَا أَبِي قَالَ حَدَّثَنِي الأَعْمَشُ قَالَ حَدَّثَنِي خَيْثَمَةُ عَنْ عَدِيِّ بْنِ حَاتِمٍ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((مَا مِنْكُمْ مِنْ أَحَدٍ إِلاَّ وَسَيُكَلِّمُهُ اللهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ، لَيْسَ بَيْنَ اللهِ وَبَيْنَهُ تُرْجُمَانٌ، ثُمَّ يَنْظُرُ فَلاَ يَرَى شَيْئًا قُدَّامَهُ، ثُمَّ يَنْظُرُ بَيْنَ يَدَيْهِ فَتَسْتَقْبِلُهُ النَّارُ، فَمَنِ اسْتَطَاعَ مِنْكُمْ أَنْ يَتَّقِيَ النَّارَ وَلَوْ بِشِقِّ تَمْرَةٍ)). [راجع: ١٤١٣]

6540. अदी बिन हातिम (रज़ि.) से एक और रिवायत है कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, जहन्नम से बचो। फिर आपने चेहरा फेर लिया, फिर फ़र्माया कि जहन्नम से बचो और फिर उसके बाद चेहरा-ए-मुबारक फेर लिया, फिर फ़र्माया जहन्नम से बचो। तीन बार आपने ऐसा ही किया। हमने उससे ये ख़याल किया कि आप जहन्नम को देख रहे हैं । फिर फ़र्माया कि जहन्नम से बचो ख़्वाह खजूर के एक टुकड़े ही के ज़रिये हो सके और जिसे ये भी न मिले तो उसे (लोगों मे) किसी अच्छी बात कहने के ज़रिये से ही (जहन्नम से) बचने की कोशिश करनी चाहिये। (राजेअ : 1413)

٦٥٤٠- قَالَ الأَعْمَشُ: حَدَّثَنِي عَمْرٌو عَنْ خَيْثَمَةَ عَنْ عَدِيِّ بْنِ حَاتِمٍ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((اتَّقُوا النَّارَ)) ثُمَّ أَعْرَضَ وَأَشَاحَ ثُمَّ قَالَ: ((اتَّقُوا النَّارَ)) ثُمَّ أَعْرَضَ وَأَشَاحَ ثَلاَثًا حَتَّى ظَنَنَّا أَنَّهُ يَنْظُرُ إِلَيْهَا ثُمَّ قَالَ: ((اتَّقُوا النَّارَ وَلَوْ بِشِقِّ تَمْرَةٍ، فَمَنْ لَمْ يَجِدْ فَبِكَلِمَةٍ طَيِّبَةٍ)). [راجع: ١٤١٣]

तश्रीह : दूसरी रिवायत में है कि बेह़िजाब और बे-तर्जुमान के या'नी खुल्लम खुल्ला अल्लाह पाक को देखेगा और अल्लाह तआला ख़ुद अपनी ज़ात से बात करेगा। ये नहीं कि उसकी तरफ़ से कोई मुतर्जिम (अनुवादक) बात करे। अब ये ज़ाहिर है कि दुनिया में सैंकड़ों ज़ुबानें हैं तो अल्लाह पाक हर ज़ुबान में बात करेगा और ये कलाम ह़ुरूफ़ और आवाज़ के साथ होगा वरना आदमी उसकी बात कैसे समझेंगे और क्यूँकर सुनेंगे? इस ह़दीष़ से उन लोगों का रद्द हुआ जो कहते हैं कि अल्लाह के कलाम में आवाज़ और ह़ुरूफ़ नहीं हैं बल्कि मुअतज़िला और जहमिया तो ये कहते हैं वो कलाम ही नहीं करता किसी दूसरी चीज़ में कलाम करने की क़ुव्वत पैदा कर देता है। अल्फ़ाज़ **फ़तस्तक़्बिलुहुन्नारु** की मज़ीद तश्रीह मुस्लिम में यूँ आई है कि दाईं तरफ़ देखेगा तो अपने आ'माल नज़र आएँगे। बाईं तरफ़ देखे तो भी अपने आ'माल नज़र आएँगे। सामने नज़र करेगा तो मुँह के सामने दोज़ख़ नज़र आएगी। अच्छी बात वो है जिससे किसीको हिदायत हो, अल्लाह और रसूल की बातें या जिससे कोई झगड़ा दूर हो, लोगों में मिलाप हो जाए या जिससे किसी का ग़ुस्सा दूर हो जाए, ऐसी उम्दह बात कहने में भी ष़वाब मिलेगा। ह़दीष़ के आख़िरी अल्फ़ाज़ का यही मतलब है। हमदर्दी व ग़मख़्वारी, मुह़ब्बत व शफ़क़त, इत्तिफ़ाक़ व हुस्ने अख़्लाक़ की बातें करना ये भी सब कलिमाते तय्यिबात में दाख़िल हैं और इनसे भी सदक़ा-ख़ैरात का ष़वाब मिलता है मगर कितने लोग ऐसे हैं कि उनको ये भी नसीब नहीं, अल्लाह उनको नेक समझ अता करे, आमीन।

बाब 50 : जन्नत में सत्तर हज़ार आदमी बिला

٥٠- باب يَدْخُلُ الْجَنَّةَ سَبْعُونَ أَلْفًا

हिसाब दाख़िल होंगे

بغیرِ حِسَابٍ

6541. हमसे इमरान बिन मैसरह ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन फ़ुज़ैल ने, कहा हमसे हुसैन बिन अ़ब्दुर्रहमान ने बयान किया (दूसरी सनद) और मुझसे उसैद बिन ज़ैद ने बयान किया, कहा हमसे हुशैम ने बयान किया कि मैं सईद बिन जुबैर की ख़िदमत में मौजूद था उस वक़्त उन्होंने बयान किया कि मुझसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया मेरे सामने उम्मतें पेश की गईं किसी नबी के साथ पूरी उम्मत गुज़री, किसी नबी के साथ चंद आदमी गुज़रे, किसी नबी के साथ दस आदमी गुज़रे, किसी नबी के साथ पाँच आदमी गुज़रे और कोई नबी तन्हा गुज़रा। फिर मैंने देखा तो इंसानों की एक बहुत बड़ी जमाअ़त दूर से नज़र आई। मैंने जिब्राईल अ़लैहिस्सलाम से पूछा क्या ये मेरी उम्मत है? उन्होंने कहा कि नहीं बल्कि उफ़ुक़ की तरफ़ देखो। मैंने देखा तो एक बहुत ज़बरदस्त जमाअ़त दिखाई दी। फ़र्माया कि ये है आपकी उम्मत और ये जो आगे आगे सत्तर हज़ार की ता'दाद है उन लोगों से हिसाब न लिया जाएगा और न उन पर अ़ज़ाब होगा। मैंने पूछा, ऐसा क्यूँ होगा? उन्होंने कहा कि इसकी वजह ये है कि ये लोग दाग़ नहीं लगवाते थे, दम झाड़ नहीं करवाते थे शगुन नहीं लेते थे, अपने रब पर भरोसा करते थे। फिर आँहज़रत (ﷺ) की तरफ़ उ़क्काशा बिन मिह़सन (रज़ि.) उठकर बढ़े और अ़र्ज़ किया कि हुज़ूर दुआ़ करें कि अल्लाह तआ़ला मुझे भी उन लोगों में कर दे। आँहज़रत (ﷺ) ने दुआ़ फ़र्माई कि ऐ अल्लाह! इन्हें भी उनमें से कर दे। उसके बाद एक और सहाबी खड़े हुए और अ़र्ज़ किया कि मेरे लिये भी दुआ़ कीजिए कि अल्लाह तआ़ला मुझे भी उनमें से कर दे। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि उ़क्काशा इसमें तुमसे आगे बढ़ गये। (राजेअ़ : 3410)

٦٥٤١- حَدَّثَنَا عِمْرَانُ بْنُ مَيْسَرَةَ، قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ فُضَيْلٍ، حَدَّثَنَا حُصَيْنٌ، ح وَحَدَّثَنِي أَسِيدُ بْنُ زَيْدٍ، حَدَّثَنَا هُشَيْمٌ، عَنْ حُصَيْنٍ، قَالَ: كُنْتُ عِنْدَ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، فَقَالَ: حَدَّثَنِي ابْنُ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((عُرِضَتْ عَلَيَّ الأُمَمُ، فَأَخَذَ النَّبِيُّ يَمُرُّ مَعَهُ الأُمَّةُ، وَالنَّبِيُّ يَمُرُّ مَعَهُ النَّفَرُ، وَالنَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَمُرُّ مَعَهُ الْعَشَرَةُ وَالنَّبِيُّ يَمُرُّ مَعَهُ الْخَمْسَةُ وَالنَّبِيُّ يَمُرُّ وَحْدَهُ، فَنَظَرْتُ فَإِذَا سَوَادٌ كَثِيرٌ قُلْتُ: يَا جِبْرِيلُ هَؤُلاَءِ أُمَّتِي؟ قَالَ: لاَ، وَلَكِنِ انْظُرْ إِلَى الأُفُقِ فَنَظَرْتُ فَإِذَا سَوَادٌ كَثِيرٌ، قَالَ : هَؤُلاَءِ أُمَّتُكَ، وَهَؤُلاَءِ سَبْعُونَ أَلْفًا قُدَّامَهُمْ لاَ حِسَابَ عَلَيْهِمْ، وَلاَ عَذَابَ، قُلْتُ : وَلِمَ؟ قَالَ : كَانُوا لاَ يَكْتَوُونَ وَلاَ يَسْتَرْقُونَ وَلاَ يَتَطَيَّرُونَ وَعَلَى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ))، فَقَامَ إِلَيْهِ عُكَّاشَةُ بْنُ مِحْصَنٍ فَقَالَ: ادْعُ اللهَ أَنْ يَجْعَلَنِي مِنْهُمْ، قَالَ. ((اللَّهُمَّ اجْعَلْهُ مِنْهُمْ)) ثُمَّ قَامَ إِلَيْهِ رَجُلٌ آخَرُ قَالَ : ادْعُ اللهَ أَنْ يَجْعَلَنِي مِنْهُمْ قَالَ : ((سَبَقَكَ بِهَا عُكَّاشَةُ)).

[راجع: ٣٤١٠]

तश्रीह : ये उ़क्काशा बिन मिह़सन असदी बनी उमय्या के ह़लीफ़ हैं। जंगे बद्र में इनकी तलवार टूट गई थी तो आँहज़रत (ﷺ) ने इनको एक छड़ी दे दी जो उनके हाथ में तलवार हो गई। बाद की लड़ाइयों में भी शरीक रहे। फ़ाज़िल सहाबा मे से थे जो ख़िलाफ़ते सिद्दीक़ी में बउम्र 45 साल फ़ौत हुए। ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास, ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ियल्लाहु अ़न्हुम) और उनकी बहन उम्मे क़ैस (रज़ि.) इनसे रिवायत करती हैं। सनद में ह़ज़रत सईद बिन जुबैर का नाम आया है जिन्हें

हज्जाज बिन यूसुफ़ ने शाबान 95 हिजरी में ज़ुल्म व जोर से क़त्ल किया था। सईद बिन ज़ुबैर (रज़ि.) की बद् दुआ से कुछ दिनों बाद ही हज्जाज का इस बुरी तरह ख़ात्मा हुआ कि वो लोगो के लिये इबरत बन गया। जैसा कि कुतुबे तवारीख़ में मुफ़स्सल हालात मुतालआ किये जा सकते हैं। हमने भी कुछ तफ़्सील किसी जगह पेश की है। मन शाअ फ़ल्यन्ज़ुर इलैहि

6542. हमसे मुआज़ बिन असद मरवज़ी ने बयान किया, कहा हमको अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, कहा हमको यूनुस बिन यज़ीद ने ख़बर दी, उनसे ज़ुहरी ने बयान किया, कहा कि मुझसे सईद बिन मुसय्यब ने बयान किया और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना, आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मेरी उम्मत की एक जमाअत जन्नत में दाख़िल होगी जिसकी ता'दाद सत्तर हज़ार होगी। उनके चेहरे इस तरह रोशन होंगे जैसे चौदहवीं रात का चाँद रोशन होता है। हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि उस पर हज़रत उक्काशा बिन मिहसन असदी (रज़ि.) खड़े हुए। अपनी धारीदार कमली जो उनके जिस्म पर थी, उठाते हुए अर्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! अल्लाह तआला से दुआ कीजिए कि मुझे भी उनमें से कर दे। आँहज़रत (ﷺ) ने दुआ की कि ऐ अल्लाह! इन्हें भी उनमें से कर दे। उसके बाद एक और सहाबी खड़े हुए और अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! दुआ कीजिए कि अल्लाह मुझे भी उनमें से कर दे। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि उक्काशा तुम पर सबक़त ले गये। (राजेअ : 5811)

٦٥٤٢- حدَّثَنَا مُعَاذُ بْنُ أَسَدٍ، قَالَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ، قَالَ أَخْبَرَنَا يُونُسُ، عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: حَدَّثَنِي سَعِيدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ، أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ حَدَّثَهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((يَدْخُلُ مِنْ أُمَّتِي زُمْرَةٌ هُمْ سَبْعُونَ أَلْفًا تُضِيءُ وُجُوهُهُمْ إِضَاءَةَ الْقَمَرِ لَيْلَةَ الْبَدْرِ)). وَقَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ: فَقَامَ عُكَّاشَةُ بْنُ مِحْصَنٍ الأَسَدِيُّ يَرْفَعُ نَمِرَةً عَلَيْهِ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ ادْعُ اللهَ أَنْ يَجْعَلَنِي مِنْهُمْ قَالَ: ((اللَّهُمَّ اجْعَلْهُ مِنْهُمْ)) ثُمَّ قَامَ رَجُلٌ مِنَ الأَنْصَارِ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ ادْعُ اللهَ أَنْ يَجْعَلَنِي مِنْهُمْ فَقَالَ: ((سَبَقَكَ عُكَّاشَةُ)).

[راجع: ٥٨١١]

अब हर रोज़ ईद नीस्त कि हलवा ख़ूरद कसे।

6543. हमसे सईद बिन अबू मरयम ने बयान किया, कहा हमसे अबू ग़स्सान ने बयान किया, कहा कि मुझसे अबू हाज़िम ने बयान किया, उनसे सहल बिन सअद साएदी (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, जन्नत में मेरी उम्मत के सत्तर हज़ार या सात लाख (रावी को उनमें से किसी एक ता'दाद में शक था) आदमी इस तरह दाख़िल होंगे कि कुछ कुछ को पकड़े हुए होंगे और इस तरह उनमें के अगले पिछले सब जन्नत में दाख़िल हो जाएँगे और उनके चेहरे चौदहवीं रात के चाँद की तरह रोशन होंगे।

(राजेअ : 3247)

٦٥٤٣- حدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ أَبِي مَرْيَمَ، قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو غَسَّانَ، قَالَ حَدَّثَنِي أَبُو حَازِمٍ، عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ ((لَيَدْخُلَنَّ الْجَنَّةَ مِنْ أُمَّتِي سَبْعُونَ أَلْفًا - أَوْ سَبْعُمِائَةِ أَلْفٍ - شَكَّ فِي أَحَدِهِمَا مُتَمَاسِكِينَ آخِذٌ بَعْضُهُمْ بِبَعْضٍ، حَتَّى يَدْخُلَ أَوَّلُهُمْ وَآخِرُهُمُ الْجَنَّةَ وَوُجُوهُهُمْ عَلَى ضَوْءِ الْقَمَرِ لَيْلَةَ الْبَدْرِ)).

[راجع: ٣٢٤٧]

6544. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया,

٦٥٤٤- حدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ، قَالَ

कहा हमसे यअ़क़ूब बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे हमारे वालिद ने बयान किया, उनसे स़ालेह़ ने, कहा हमसे नाफ़ेअ ने बयान किया और उनसे इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, जब अहले जन्नत जन्नत में और अहले जहन्नम जहन्नम में दाख़िल हो जाएँगे तो एक आवाज़ देने वाला उनके बीच में खड़ा होकर पुकारेगा कि ऐ जहन्नम वालों! अब तुम्हें मौत नहीं आएगी और ऐ जन्नत वालों! तुम्हें भी मौत नहीं आएगी बल्कि हमेशा यहीं रहना होगा। (दीगर : 6548)

حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، قَالَ حَدَّثَنَا أَبِي عَنْ صَالِحٍ، حَدَّثَنَا نَافِعٌ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((إِذَا دَخَلَ أَهْلُ الْجَنَّةِ الْجَنَّةَ وَأَهْلُ النَّارِ النَّارَ، ثُمَّ يَقُومُ مُؤَذِّنٌ بَيْنَهُمْ يَا أَهْلَ النَّارِ لاَ مَوْتَ، وَيَا أَهْلَ الْجَنَّةِ لاَ مَوْتَ خُلُودٌ)).

[طرفه في : ٦٥٤٨].

6545. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐ़ब ने ख़बर दी, कहा हमसे अबुज़्ज़िनाद ने बयान किया, उनसे अअ़रज ने, उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, अहले जन्नत से कहा जाएगा कि ऐ अहले जन्नत! हमेशा (तुम्हें यहीं) रहना है, तुम्हें मौत नहीं आएगी और अहले जहन्नम से कहा जाएगा कि ऐ जहन्नम वालों! हमेशा (तुमको यहीं) रहना है, तुमको मौत नहीं आएगी।

٦٥٤٥– حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ، قَالَ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((يُقَالُ لأَهْلِ الْجَنَّةِ يَا أَهْلَ الْجَنَّةِ خُلُودٌ لاَ مَوْتَ، وَلأَهْلِ النَّارِ يَا أَهْلَ النَّارِ خُلُودٌ لاَ مَوْتَ)).

बाब 51 : जन्नत और जहन्नम का बयान

٥١– باب صِفَةِ الْجَنَّةِ وَالنَّارِ

और अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि सबसे पहले खाना जिसे अहले जन्नत खाएँगे वो मछली की कलेजी की बढ़ी हुई चर्बी होगी। अ़दन के मा'नी हमेशा रहना। अ़रब लोग कहते हैं अ़दन्तु बिअर्ज़िन या'नी मैंने इस जगह क़याम किया और इसी से मअ़दिन आता है फ़ी मअ़दिनि स़िदक़ि (या मक़अ़दु स़िदक़ि जो सूरह क़मर में है) या'नी सच्चाई पैदा होने की जगह।

وَقَالَ أَبُو سَعِيدٍ : قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((أَوَّلُ طَعَامٍ يَأْكُلُهُ أَهْلُ الْجَنَّةِ زِيَادَةُ كَبِدِ حُوتٍ)). عَدْنٌ: خُلْدٌ عَدَنْتُ بِأَرْضٍ أَقَمْتُ، وَمِنْهُ الْمَعْدِنُ فِي مَعْدِنِ صِدْقٍ فِي مَنْبَتِ صِدْقٍ.

चूँकि ये बाब जन्नत के बयान में है और क़ुर्आन शरीफ़ में जन्नत का नाम अ़दन आया है इसलिये इमाम बुख़ारी (रह़.) ने अ़दन की तफ़्सीर कर दी।

6546. हमसे उ़स्मान बिन हैशम ने बयान किया, कहा हमसे औ़फ़ बिन अबी जमीला ने बयान किया, उनसे अबू रजाअ इमरान अ़त़ारदी ने , उनसे इमरान बिन हुस़ैन (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने बयान किया कि मैंने जन्नत में झांककर देखा तो वहाँ रहने वाले अक्स़र ग़रीब लोग थे और मैंने जहन्नम में झांककर देखा (शबे मे'राज में) तो वहाँ औ़रतें बहुत थीं। (राजेअ़ : 3241)

٦٥٤٦– حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ الْهَيْثَمِ، قَالَ حَدَّثَنَا عَوْفٌ، عَنْ أَبِي رَجَاءٍ عَنْ عِمْرَانَ بْنَ الْحُصَيْنِ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((اطَّلَعْتُ فِي الْجَنَّةِ فَرَأَيْتُ أَكْثَرَ أَهْلِهَا الْفُقَرَاءَ، وَاطَّلَعْتُ فِي النَّارِ فَرَأَيْتُ أَكْثَرَ أَهْلِهَا النِّسَاءَ)). [راجع: ٣٢٤١]

6547. हमसे मुसद्दद बिन मुस्रहिद ने बयान किया, कहा हमसे इस्माईल बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे सुलैमान तैमी ने बयान किया, उन्हें अबू उ़ष्मान नह्दी ने, उन्हें उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, मैं जन्नत के दरवाज़े पर खड़ा हुआ तो वहाँ अकष़र दाख़िल होने वाले मुह़्ताज लोग थे और मेह़नत मज़दूरी करने वाले थे और मालदार लोग एक त़रफ़ रोके गये हैं, उनका ह़िसाब लेने के लिये बाक़ी है और जो लोग जहन्नमी थे वो तो जहन्नम के लिये भेज दिये गये और मैंने जहन्नम के दरवाज़े पर खड़े होकर देखा तो उसमें अकष़र दाख़िल होने वाली औ़रतें थीं। (राजेअ़ : 5196)

٦٥٤٧- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، قَالَ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، قَالَ حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ التَّيْمِيُّ، عَنْ أَبِي عُثْمَانَ عَنْ أُسَامَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((قُمْتُ عَلَى بَابِ الْجَنَّةِ فَكَانَ عَامَّةُ مَنْ دَخَلَهَا الْمَسَاكِينَ، وَأَصْحَابُ الْجَدِّ مَحْبُوسُونَ غَيْرَ أَنَّ أَصْحَابَ النَّارِ قَدْ أُمِرَ بِهِمْ إِلَى النَّارِ، وَقُمْتُ عَلَى بَابِ النَّارِ فَإِذَا عَامَّةُ مَنْ دَخَلَهَا النِّسَاءُ)).

[راجع: ٥١٩٦]

तश्रीह़ : मत़लब ये है कि ये मालदार जो बहिश्त के दरवाज़े पर रोके गये वो लोग थे जो दीनदार और बहिश्त में जाने के क़ाबिल थे लेकिन दुनिया की दौलतमंदी की वजह से वो रोके गये और फ़ुक़रा लोग झट जन्नत में पहुँच गये। बाक़ी जो लोग काफ़िर थे वो तो दोज़ख़ में भिजवा दिये गये। ये ह़दीष़ बज़ाहिर मुश्किल है क्योंकि अभी जन्नत और दोज़ख़ में जाने का वक़्त कहाँ से आया? मगर बात ये है कि अल्लाह तआ़ला के इ़ल्म में माज़ी (भूतकाल) मुस्तक़्बिल (भविष्य) और ह़ाल (वर्तमान) के सब वाक़ियात यक्साँ मौजूद हैं तो अल्लाह पाक ने अपने पैग़म्बर (ﷺ) को ये वाक़िया नींद में ख़्वाब के ज़रिये या शबे मे'राज में इस त़रह़ दिखला दिया जैसे अब हो रहा है।

6548. हमसे मुआ़ज़ बिन असद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको अ़ब्दुल्लाह ने ख़बर दी, उन्होंने कहा हमको उ़मर बिन मुह़म्मद बिन ज़ैद ने ख़बर दी, उन्हें उनके वालिद ने, उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया जब अहले जन्नत जन्नत में चले जाएँगे और अहले दोज़ख़ दोज़ख़ में चले जाएँगे तो मौत को लाया जाएगा और उसे जन्नत और दोज़ख़ के बीच रखकर ज़िब्ह़ कर दिया जाएगा। फिर एक आवाज़ देने वाला आवाज़ देगा कि ऐ जन्नत वालों! तुम्हें अब मौत नहीं आएगीऔर ऐ दोज़ख़ वालों! तुम्हें भी अब मौत नहीं आएगी। इस बात से जन्नती और ज़्यादा ख़ुश हो जाएँगे और जहन्नमी और ज़्यादा ग़मगीन हो जाएँगे। (राजेअ़ : 5644)

٦٥٤٨- حَدَّثَنَا مُعَاذُ بْنُ أَسَدٍ، قَالَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ، قَالَ أَخْبَرَنَا عُمَرُ بْنُ مُحَمَّدِ بْنِ زَيْدٍ، عَنْ أَبِيهِ أَنَّهُ حَدَّثَهُ عَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((إِذَا صَارَ أَهْلُ الْجَنَّةِ إِلَى الْجَنَّةِ وَأَهْلُ النَّارِ إِلَى النَّارِ جِيءَ بِالْمَوْتِ، حَتَّى يُجْعَلَ بَيْنَ الْجَنَّةِ وَالنَّارِ ثُمَّ يُذْبَحُ، ثُمَّ يُنَادِي مُنَادٍ يَا أَهْلَ الْجَنَّةِ لاَ مَوْتَ، وَيَا أَهْلَ النَّارِ لاَ مَوْتَ، فَيَزْدَادُ أَهْلُ الْجَنَّةِ فَرَحًا إِلَى فَرَحِهِمْ، وَيَزْدَادُ أَهْلُ النَّارِ حُزْنًا إِلَى حُزْنِهِمْ)). [راجع: ٥٦٤٤]

ये मौत एक मेंढ़े की शक्ल में लाई जाएगी। इसलिये इसका ज़िब्ह़ किया जाना अ़क़्ल के ख़िलाफ़ क़त़ई नहीं है।

6549. हमसे मुआ़ज़ बिन असद ने बयान किया, कहा हमको

٦٥٤٩- حَدَّثَنَا مُعَاذُ بْنُ أَسَدٍ، قَالَ

أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ، قَالَ أَخْبَرَنَا مَالِكُ بْنُ أَنَسٍ، عَنْ زَيْدِ بْنِ أَسْلَمَ، عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ قَالَ : قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِنَّ اللهَ يَقُولُ لأَهْلِ الْجَنَّةِ : يَا أَهْلَ الْجَنَّةِ يَقُولُونَ : لَبَّيْكَ رَبَّنَا وَسَعْدَيْكَ فَيَقُولُ : هَلْ رَضِيتُمْ؟ فَيَقُولُونَ: وَمَا لَنَا لاَ نَرْضَى، وَقَدْ أَعْطَيْتَنَا مَا لَمْ تُعْطِ أَحَدًا مِنْ خَلْقِكَ، فَيَقُولُ: أَنَا أُعْطِيكُمْ أَفْضَلَ مِنْ ذَلِكَ، قَالُوا: يَا رَبِّ وَأَيُّ شَيْءٍ أَفْضَلُ مِنْ ذَلِكَ؟ فَيَقُولُ: أُحِلُّ عَلَيْكُمْ رِضْوَانِي، فَلاَ أَسْخَطُ عَلَيْكُمْ بَعْدَهُ أَبَدًا)).

[طرفه في: ٧٥١٨].

अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, कहा हमको इमाम मालिक बिन अनस ने ख़बर दी, उन्हें ज़ैद बिन असलम ने, उन्हें अ़ता बिन यसार ने और उनसे ह़ज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि अल्लाह तआ़ला अहले जन्नत से फ़र्माएगा कि ऐ जन्नत वालों! जन्नती जवाब देंगे, हम ह़ाज़िर हैं ऐ हमारे परवरदिगार! तेरी सआ़दत ह़ासिल करने के लिये। अल्लाह तआ़ला पूछेगा क्या अब तुम लोग ख़ुश हुए? वो कहेंगे अब भी भला हम राज़ी न होंगे क्योंकि अब तो तूने हमें वो सब कुछ दे दिया जो अपनी मख़्लूक़ के किसी आदमी को नहीं दिया। अल्लाह तआ़ला फ़र्माएगा कि मैं तुम्हें इससे भी बेहतर चीज़ दूँगा। जन्नती कहेंगे ऐ रब! इससे बेहतर और क्या चीज़ होगी? अल्लाह तआ़ला फ़र्माएगा कि अब मैं तुम्हारे लिये अपनी रज़ामंदी को हमेशा के लिये दाइमी कर दूँगा या'नी इसकेबाद कभी तुम पर नाराज़ नहीं होऊँगा। (दीगर : 7518)

अल्लाह तआ़ला अपने रह़म और करम, लुत्फ़ व इनायत से ये शर्फ़ व फ़ज़ीलत हमको अ़ता फ़र्माए आमीन षुम्म आमीन।

٦٥٥٠- حَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ، قَالَ حَدَّثَنَا مُعَاوِيَةُ بْنُ عَمْرٍو، قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو إِسْحَاقَ، عَنْ حُمَيْدٍ، قَالَ: سَمِعْتُ أَنَسًا يَقُولُ : أُصِيبَ حَارِثَةُ يَوْمَ بَدْرٍ وَهُوَ غُلاَمٌ، فَجَاءَتْ أُمُّهُ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَتْ: يَا رَسُولَ اللهِ قَدْ عَرَفْتَ مَنْزِلَةَ حَارِثَةَ مِنِّي فَإِنْ يَكُ فِي الْجَنَّةِ أَصْبِرْ وَأَحْتَسِبْ وَإِنْ تَكُنِ الأُخْرَى تَرَى مَا أَصْنَعُ؟ فَقَالَ: ((أَوَ هَبِلْتِ؟ أَوَ جَنَّةٌ وَاحِدَةٌ هِيَ؟ إِنَّهَا جِنَانٌ كَثِيرَةٌ وَإِنَّهُ لَفِي جَنَّةِ الْفِرْدَوْسِ)).

[راجع: ٢٨٠٩]

6550. मुझसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुह़म्मद मुस्नदी ने बयान किया, कहा हमसे मुआ़विया बिन अ़म्र ने बयान किया, कहा हमसे अबू इस्ह़ाक़ इब्राहीम बिन मुह़म्मद ने बयान किया, उनसे हुमैद त़वील ने बयान किया, कहा कि मैने ह़ज़रत अनस (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि ह़ारिषा बिन सुराक़ा (रज़ि.) बद्र की लड़ाई में शहीद हो गये। वो उस वक़्त नौ उ़म्र थे तो उनकी वालिदा नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में आईं और अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! आपको मा'लूम है कि ह़ारिषा से मुझे कितनी मुह़ब्बत थी, अगर वो जन्नत में है तो मैं स़ब्र कर लूँगी और स़ब्र पर षवाब की उम्मीदवार रहूँगी और अगर कोई और बात है तो आप देखेंगे कि मैं उसके लिए क्या करती हूँ। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया अफ़सोस! क्या तुम पागल हो गई हो। जन्नत एक ही नहीं है, बहुत सी जन्नतें हैं और वो (ह़ारिषा रज़ि.) जन्नतुल फ़िरदौस में है। (राजेअ़ : 2809)

तश्रीह : ये ह़ारिषा बिन सुराक़ा अंस़ारी (रज़ि.) हैं। उनकी माँ का नाम रबीअ़ बिन्ते नज़्र है जो अनस बिन मालिक (रज़ि.) की फूफी हैं। यही ह़ारिषा जंगे बद्र में शहीद हुए थे। ये पहले अंस़ारी नौजवान हैं जो जंगे बद्र में अंस़ार में से शहीद हुए। (रज़ि.)

٦٥٥١- حَدَّثَنَا مُعَاذُ بْنُ أَسَدٍ، أَخْبَرَنَا

6551. हमसे मुआ़ज़ बिन असद ने बयान कया, कहा हमको

फ़ज़्ल बिन मूसा ने ख़बर दी, कहा हमको फ़ुज़ैल ने ख़बर दी, उन्हें हाज़िम ने, उन्हें अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, काफ़िर के दोनों शानों के बीच तेज़ चलने वाले के लिये तीन दिन की मसाफ़त का फ़ासला होगा।

الْفَضْلُ بْنُ مُوسَى، قَالَ أَخْبَرَنَا الْفُضَيْلُ، عَنْ أَبِي حَازِمٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((مَا بَيْنَ مَنْكِبَيِ الْكَافِرِ مَسِيرَةُ ثَلاَثَةِ أَيَّامٍ لِلرَّاكِبِ الْمُسْرِعِ)).

6552. और इस्हाक़ बिन इब्राहीम ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको मुग़ीरह बिन सलमा ने ख़बर दी, उन्होंने कहा हमसे वुहैब ने बयान किया, उनसे अबू हाज़िम ने बयान किया, उनसे सहल बिन सअ़द (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि, जन्नत में एक पेड़ है जिसके साये में सवार सौ साल तक चलने के बाद भी उसे तै नहीं कर सकेगा ।

٦٥٥٢- وقال إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ أَخْبَرَنَا الْمُغِيرَةُ بْنُ سَلَمَةَ، حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ، عَنْ أَبِي حَازِمٍ، عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ، عَنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ قَالَ: ((إِنَّ فِي الْجَنَّةِ لَشَجَرَةً يَسِيرُ الرَّاكِبُ فِي ظِلِّهَا مِائَةَ عَامٍ لاَ يَقْطَعُهَا)).

6553. अबू हाज़िम ने बयान किया कि फिर मैंने ये ह़दीष़ नोअ़मान बिन अबी अ़य्याश से बयान की तो उन्होंने कहा कि मुझसे अबू सईद (रज़ि .) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, जन्नत में एक पेड़ होगा जिसके साये में उ़म्दह और तेज़ रफ़्तार घोड़े पर सवार शख़्स सौ साल तक चलता रहेगा और फिर भी उसे तै न कर सकेगा।

٦٥٥٣- قال أَبُوحَازِمٍ: فَحَدَّثْتُ بِهِ النُّعْمَانَ بْنَ أَبِي عَيَّاشٍ فَقَالَ: حَدَّثَنِي أَبُو سَعِيدٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((إِنَّ فِي الْجَنَّةِ لَشَجَرَةً يَسِيرُ الرَّاكِبُ الْجَوَادَ الْمُضَمَّرَ السَّرِيعَ مِائَةَ عَامٍ مَا يَقْطَعُهَا)).

या अल्लाह! ये जन्नत हर बुख़ारी शरीफ़ पढ़ने वाले भाई बहन को अ़ता फ़र्माइयो, आमीन।

6554. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अबी हाज़िम ने बयान किया, उनसे अबू हाज़िम बिन दीनार ने, उनसे सहल बिन सअ़द साएदी (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, मेरी उम्मत में से सत्तर हज़ार या सात लाख आदमी जन्नत में जाएँगे। रावी को शक हुआ कि सहल से कौनसी ता'दाद बयान हुई थी, (वो जन्नत में इस त़रह़ दाख़िल होंगे कि) वो एक-दूसरे को थामे हुए होंगे। उनमें का अगला अभी अंदर दाख़िल न होने पाएगा कि जब तक आख़िर भी दाख़िल न हो जाए। उनके चेहरे चौदह्वीं रात के चाँद की त़रह़ रोशन होंगे। (राजेअ़: 3247)

٦٥٥٤- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ، عَنْ أَبِي حَازِمٍ، عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((لَيَدْخُلَنَّ الْجَنَّةَ مِنْ أُمَّتِي سَبْعُونَ أَوْ سَبْعُمِائَةِ أَلْفٍ)) لاَ يَدْرِي أَبُو حَازِمٍ أَيُّهُمَا قَالَ: ((مُتَمَاسِكُونَ آخِذٌ بَعْضُهُمْ بَعْضًا لاَ يَدْخُلُ أَوَّلُهُمْ حَتَّى يَدْخُلَ آخِرُهُمْ وُجُوهُهُمْ عَلَى صُورَةِ الْقَمَرِ لَيْلَةَ الْبَدْرِ)).

[راجع: ٣٢٤٧]

ह़दीष़ के रावी ह़ज़रत सहल बिन सअ़द साएदी अंसारी हैं। वफ़ाते नबवी के वक़्त ये 15 साल के थे ये मदीना में आख़िरी स़ह़ाबी हैं जो 91 हिजरी में फ़ौत हुए। रज़ियल्लाहु अ़न्हु व अरज़ाहु आमीन।

6555. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मस्लमा ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अबी ह़ाज़िम ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ह़ाज़िम ने बयान किया, उनसे सहल बिन सअ़द (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, जन्नत वाले (अपने ऊपर के दर्जों के) बालाख़ानों को इस त़रह देखेंगे जैसे तुम आसमान में सितारों को देखते हो।

٦٥٥٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْلَمَةَ قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ، عَنْ أَبِيهِ عَنْ سَهْلٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((إِنَّ أَهْلَ الْجَنَّةِ لَيَتَرَاءَوْنَ الْغُرَفَ فِي الْجَنَّةِ كَمَا تَتَرَاءَوْنَ الْكَوَاكِبَ فِي السَّمَاءِ)).

6556. रावी (अ़ब्दुल अ़ज़ीज़) ने बयान किया कि फिर मैंने ये ह़दीष़ नोअ़मान बिन अबी अ़य्याश से बयान की तो उन्होंने कहा कि मैं गवाही देता हूँ कि मैंने ह़ज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) को ये ह़दीष़ बयान करते सुना और उसमें वो उस लफ़्ज़ का इज़ाफ़ा करते थे कि, जैसे तुम मश्रिक़ी और मग़्रिबी किनारों में डूबते सितारों को देखते हो। (राजेअ़ : 3356)

٦٥٥٦- قَالَ أَبِي فَحَدَّثْتُ النُّعْمَانَ بْنَ أَبِي عَيَّاشٍ فَقَالَ: أَشْهَدُ لَسَمِعْتُ أَبَا سَعِيدٍ يُحَدِّثُ وَيَزِيدُ فِيهِ كَمَا تَرَاءَوْنَ الْكَوْكَبَ الْغَارِبَ فِي الأُفُقِ الشَّرْقِيِّ وَالْغَرْبِيِّ. [راجع: ٣٢٥٦]

तश्रीह़ : कुछ ने ग़ारिब के बदले इसको ग़ाबिर पढ़ा है या'नी उस सितारे को जो बाक़ी रह गया हो। मत़लब ये है कि जैसे ये सितारा बहुत दूर और चमकता नज़र आता है वैसे ही बहिश्त में बुलंद दर्जे वाले जन्नतियों के मकानात दूर से नज़र आएँगे। ऐ अल्लाह! तू अपने फ़ज़्लो-करम से हमको भी उनमें शामिल फ़र्मा दे, आमीन।

6557. मुझसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे गुन्दर मुहम्मद बिन जा'फ़र ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे अबू इमरान जौफ़ी ने बयान किया, कहा मैंने अनस बिन मालिक (रज़ि.) से सुना कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, अल्लाह तआ़ला क़यामत के दिन दोज़ख़ के सबसे कम अ़ज़ाब पाने वाले से पूछेगा (या'नी अबू त़ालिब से) अगर तुम्हें रूए ज़मीन की सारी चीज़ें मयस्सर हों तो क्या तुम उनको फ़िदये में (इस अ़ज़ाब से नजात पाने के लिये) दे दोगे। वो कहेगा कि हाँ। अल्लाह तआ़ला फ़र्माएगा कि मैंने तुमसे उससे भी आसान चीज़ का उस वक़्त मुतालबा किया था जब तुम आदम (अ़लैहिस्सलाम) की पीठ में थे कि मेरे साथ किसी को शरीक न करना लेकिन तुमने (तौह़ीद का) इंकार किया और न माना आख़िर शिर्क ही किया। (राजेअ़ : 3334)

٦٥٥٧- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ، قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ أَبِي عِمْرَانَ قَالَ: سَمِعْتُ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ ((يَقُولُ اللهُ تَعَالَى لأَهْوَنِ أَهْلِ النَّارِ عَذَابًا يَوْمَ الْقِيَامَةِ لَوْ أَنَّ لَكَ مَا فِي الأَرْضِ مِنْ شَيْءٍ أَكُنْتَ تَفْتَدِي بِهِ؟ فَيَقُولُ؟ نَعَمْ. فَيَقُولُ : أَرَدْتُ مِنْكَ أَهْوَنَ مِنْ هَذَا وَأَنْتَ فِي صُلْبِ آدَمَ أَنْ لاَ تُشْرِكَ بِي شَيْئًا فَأَبَيْتَ إِلاَّ أَنْ تُشْرِكَ بِي)). [راجع: ٣٣٣٤]

6558. हमसे अबुन नोअ़मान मुहम्मद बिन फ़ज़्ल सदूसी ने बयान किया, कहा हमसे ह़म्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अ़म्र बिन दीनार ने और उनसे जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह अंसारी (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कुछ लोग दोज़ख़ से शफ़ाअ़त के ज़रिये इस त़रह निकलेंगे गोया कि

٦٥٥٨- حَدَّثَنَا أَبُو النُّعْمَانِ، قَالَ حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، عَنْ عَمْرٍو، عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ : ((يَخْرُجُ مِنَ النَّارِ بِالشَّفَاعَةِ، كَأَنَّهُمْ

ष़आरीर हों। ह़म्माद कहते हैं कि मैंने अ़म्र बिन दीनार से पूछा कि ष़आरीर क्या चीज़ है? उन्होंने कहा कि इससे मुराद छोटी ककड़ियाँ हैं और हुआ ये था कि आख़िर उ़म्र में अ़म्र बिन दीनार के दांत गिर गये थे। ह़म्माद कहते हैं कि मैंने अ़म्र बिन दीनार से कहा ऐ अबू मुह़म्मद! (ये अ़म्र बिन दीनार की कुन्नियत है) क्या आपने जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) से ये सुना है? उन्होंने बयान किया कि हाँ! मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना, आपने फ़र्माया कि जहन्नम से शफ़ाअ़त के ज़रिये लोग निकलेंगे? उन्होंने कहा हाँ बेशक सुना है।

الثَّعَارِيرُ)) قُلْتُ: مَا الثَّعَارِيرُ؟ قَالَ: ((الضَّغَابِيسُ)) وَكَانَ قَدْ سَقَطَ فَمُهُ فَقُلْتُ لِعَمْرِو بْنِ دِينَارٍ، أَبَا مُحَمَّدٍ سَمِعْتَ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ يَقُولُ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: ((يَخْرُجُ بِالشَّفَاعَةِ مِنَ النَّارِ)). قَالَ: نَعَمْ.

तश्रीह़ : कुछ ने कहा कि ष़आरीर एक क़िस्म की दूसरी तरकारी है जो सफ़ेद होती है। मत़लब ये है कि ये लोग पहले दोज़ख़ मे जल जलकर कोयला की त़रह़ काले पड़ जाएँगे। फिर जब शफ़ाअ़त के सबब से दोज़ख़ से निकलेंगे और माउल ह़यात में नहलाए जाएँगे तो ष़आरीर की त़रह़ सफ़ेद हो जाएँगे। इस ह़दीष़ से उन लोगों का रद्द हुआ जो कहते हैं कि मोमिन दोज़ख़ में नहीं जाएगा। इसी त़रह़ उन लोगों की भी तर्दीद हो गई जो कहते हैं कि शफ़ाअ़त से कोई फ़ायदा न होगा, जैसे मुअ़तज़िला और ख़्वारिज का क़ौल है। बैहक़ी ने ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) से निकाला, उन्होंने ख़ुत़्बा सुनाया, फ़र्माया इस उम्मत में ऐसे लोग पैदा होंगे जो रजम का इंकार करेंगे, दज्जाल का इंकार करेंगे, क़ब्र के अ़ज़ाब का इंकार करेंगे, शफ़ाअ़त का इंकार करेंगे। दूसरी ह़दीष़ में है कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया मेरी शफ़ाअ़त उन लोगों के वास्ते होगी जो मेरी उम्मत में कबीरा गुनाहों में मुब्तला होंगे। **अल्लाहुम्मर्ज़ुक़्ना शफ़ाअ़त मुह़म्मदिन व आलिही व अस़्ह़ाबिही अज्मईन बिरह़मतिक या अर्ह़मर्राह़िमीन**, आमीन।

6559. हमसे हुदबा बिन ख़ालिद ने बयान किया, कहा हमसे हम्माम बिन यह़्या ने बयान किया, उनसे क़तादा ने, कहा हमसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया एक जमाअ़त जहन्नम से निकलेगी उसके बाद कि जहन्नम की आग ने उनको जला डाला होगा और फिर वो जन्नत में दाख़िल होंगे। अहले जन्नत उनको जहन्नमीन के नाम से याद करेंगे। (दीगर मक़ामात : 7450)

٦٥٥٩- حَدَّثَنَا هُدْبَةُ بْنُ خَالِدٍ، قَالَ حَدَّثَنَا هَمَّامٌ عَنْ قَتَادَةَ، قَالَ حَدَّثَنَا أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((يَخْرُجُ قَوْمٌ مِنَ النَّارِ بَعْدَمَا مَسَّهُمْ مِنْهَا سَفْعٌ، فَيَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ فَيُسَمِّيهِمْ أَهْلُ الْجَنَّةِ الْجَهَنَّمِيِّينَ)). [طرفه في : ٧٤٥٠].

तश्रीह़ : फिर वो अल्लाह से दुआ करेंगे तो उनका ये लक़ब मिटा दिया जाएगा। इस ह़दीष़ के रावी अनस बिन मालिक अंस़ारी (रज़ि.) ख़ज़रजी हैं। माँ उम्मे सुलैम बिन्ते मिल्ह़ान हैं। आँह़ज़रत (ﷺ) के मदीना तशरीफ़ लाते वक़्त उनकी उ़म्र दस साल की थी। शुरू ही से ख़िदमते नबवी में ह़ाज़िर रहे और पूरे दस साल उनको ख़िदमत करने का शर्फ़ ह़ासिल हुआ। ख़िलाफ़ते फ़ारूक़ी मे मुअ़ल्लिम बनकर बस़रा में मुक़ीम हो गये थे। तमाम अस़्ह़ाबे किराम के बाद जो बस़रा में मुक़ीम थे, 91 हिजरी में इंतिक़ाल फ़र्माया। आँह़ज़रत (ﷺ) की दुआ की बरकत से इंतिक़ाल के वक़्त एक सौ की ता'दाद में औलाद छोड़ गये। बड़े ही मशहूर जामेउल फ़ज़ाइल स़ह़ाबी हैं। (रज़ियल्लाहु अ़न्हु व अरज़ाहू) मुस्लिम शरीफ़ की रिवायत के मुत़ाबिक़ बाद में दोज़ख़ियों का ये लक़ब ख़त्म कर दिया जाएगा।

6560. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे वुहैब ने बयान किया, कहा हमसे अ़म्र बिन यह़्या ने बयान

٦٥٦٠- حَدَّثَنَا مُوسَى، قَالَ حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ، قَالَ حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ يَحْيَى، عَنْ

أَبِيهِ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: ((إِذَا دَخَلَ أَهْلُ الْجَنَّةِ الْجَنَّةَ وَأَهْلُ النَّارِ النَّارَ يَقُولُ اللهُ: مَنْ كَانَ فِي قَلْبِهِ مِثْقَالُ حَبَّةٍ مِنْ خَرْدَلٍ مِنْ إِيمَانٍ فَأَخْرِجُوهُ، فَيَخْرُجُونَ قَدِ امْتُحِشُوا وَعَادُوا حُمَمًا، فَيُلْقَوْنَ فِي نَهْرِ الْحَيَاةِ فَيَنْبُتُونَ كَمَا تَنْبُتُ الْحِبَّةُ فِي حَمِيلِ السَّيْلِ)) - أَوْ قَالَ حَمِيَّةِ السَّيْلِ - وَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((أَلَمْ تَرَوْا أَنَّهَا تَنْبُتُ صَفْرَاءَ مُلْتَوِيَةً)).

[راجع: ٢٢]

किया, उनसे उनके वालिद ने और उनसे अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जब अहले जन्नत जन्नत में और अहले जहन्नम जहन्नम में दाख़िल हो चुकेंगे तो अल्लाह तआला फ़र्माएगा कि जिसके दिल में राई के दाने के बराबर भी ईमान हो तो उसे दोज़ख़ से निकाल लो। उस वक़्त ऐसे लोग निकाले जाएँगे और वो उस वक़्त जलकर कोयले की तरह हो गये होंगे। उसके बाद उन्हें नहरे हयात (ज़िंदगीबख़्श दरिया) में डाला जाएगा। उस वक़्त वो इस तरह तरोताज़ा और शगुफ़्ता हो जाएँगे जिस तरह सैलाब की जगह पर कूड़े–करकट का दाना (उसी रात या दिन में) उग आता है। या रावी ने (हमीलुस्सैल के बजाय) हमिय्यतिस्सैल कहा है या'नी जहाँ सैलाब का ज़ोर हो और नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि क्या तुमने देखा नहीं कि उस दाने से ज़र्द रंग का लिपटा हुआ बा रौनक़ पौधा उगता है। (राजेअ : 22)

٦٥٦١- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا إِسْحَاقَ قَالَ: سَمِعْتُ النُّعْمَانَ، قَالَ سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((إِنَّ أَهْوَنَ أَهْلِ النَّارِ عَذَابًا يَوْمَ الْقِيَامَةِ لَرَجُلٌ تُوضَعُ فِي أَخْمَصِ قَدَمَيْهِ جَمْرَةٌ يَغْلِي مِنْهَا دِمَاغُهُ)).

[طرفه في : ٦٥٦٢]

6561. मुझसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे गुन्दर ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, कहा कि मैंने अबू इस्हाक़ सबीई से सुना, कहा कि मैंने नोअमान बिन बशीर (रज़ि.) से सुना, कहा कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना, आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि क़यामत के दिन अज़ाब के ए'तिबार से सबसे कम वो शख़्स होगा जिसके दोनों क़दमों के नीचे आग का अंगारा रखा जाएगा और उसकी वजह से उसका दिमाग़ खोल रहा होगा। (दीगर मक़ामात : 6562)

सहीह मुस्लिम में आग की दो जूतियाँ पहनाने का ज़िक्र है। इससे अबू तालिब मुराद हैं।

तश्रीह : अबू तालिब आँहज़रत (ﷺ) के निहायत ही मुअज़्ज़ चचा हैं। इनका नाम अब्दे मुनाफ़ बिन अब्दुल मुत्तलिब बिन हाशिम है। हज़रत अली मुर्तज़ा (रज़ि.) इनके फ़रज़न्द हैं। हमेशा आँहज़रत (ﷺ) की हिमायत करते रहे मगर क़ौम के तअस्सुब की वजह पर इस्लाम क़ुबूल नहीं किया। इनकी वफ़ात के पाँच दिन बाद हज़रत ख़दीजा (रज़ि.) का भी इंतिक़ाल हो गया। इन दोनों की जुदाई से रसूलुल्लाह (ﷺ) को बेहद रंज हुआ मगर सब्र व इस्तिक़ामत का दामन आपने नहीं छोड़ा, यहाँ तक कि अल्लाह तआला ने आपको ग़ालिब फ़र्माया।

٦٥٦٢- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ رَجَاءٍ، قَالَ حَدَّثَنَا إِسْرَائِيلُ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنِ النُّعْمَانِ بْنِ بَشِيرٍ، قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((إِنَّ أَهْوَنَ أَهْلِ النَّارِ عَذَابًا

6562. हमसे अब्दुल्लाह बिन रजाअ ने बयान किया, कहा हमसे इस्राईल ने बयान किया, उनसे अबू इस्हाक़ ने, उनसे नोअमान बिन बशीर (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना, आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि क़यामत के दिन दोज़ख़ियों में अज़ाब के ए'तिबार से सबसे हल्का

अ़ज़ाब पाने वाला वो शख़्स होगा जिसके दोनों पैरों के नीचे दो अंगारे रख दिये जाएँगे जिनकी वजह से उसका दिमाग़ खोल रहा होगा। जिस त़रह हाँडी और केतली जोश खाती है। (राजेअ़ : 6561)

يَوْمَ الْقِيَامَةِ رَجُلٌ عَلَى أَخْمَصِ قَدَمَيْهِ جَمْرَتَانِ يَغْلِي مِنْهُمَا دِمَاغُهُ كَمَا يَغْلِي الْمِرْجَلُ وَالْقُمْقُمُ)). [راجع: ٦٥٦١]

केतली से चायदानी की त़रह़ का बर्तन मुराद है जिसमें पानी को जोश देते हैं कुछ नुस्ख़ों में **वल क़ुमक़ुम** की जगह **बिल क़ुमक़ुम** है। क़ाज़ी अ़याज़ ने कहा कि स़ह़ीह़ लफ़्ज़ **वल क़ुमक़ुम** ही है। ये वाव आ़तिफ़ा है लेकिन इस्माईली (रह़.) की रिवायत में **अविल क़ुमक़ुम** है।

6563. हमसे सुलैमान बिन ह़र्ब ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे अ़म्र बिन मुर्रह़ ने, उनसे ख़ष़मा बिन अ़ब्दुर्रह़मान ने और उनसे अ़दी बिन ह़ातिम (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने जहन्नम का ज़िक्र किया और रूए-मुबारक फेर लिया और उससे पनाह मांगी। फिर जहन्नम का ज़िक्र किया और रूए मुबारक फेर लिया और उससे पनाह माँगी। उसके बाद फ़र्माया कि दोज़ख से बचो स़दक़ा देकर ख़्वाह खजूर के एक टुकड़े ही के ज़रिये हो सके, जिसे ये भी न मिले उसे चाहिये कि अच्छी बात कहकर। (राजेअ़ : 1413)

٦٥٦٣- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ، قَالَ حَدَّثَنَا شعبةُ، عَنْ عَمْرٍو، عَنْ خَيْثَمَةَ، عَنْ عَدِيِّ بْنِ حَاتِمٍ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ ذَكَرَ النَّارَ فَأَشَاحَ بِوَجْهِهِ فَتَعَوَّذَ مِنْهَا، ثُمَّ ذَكَرَ النَّارَ فَأَشَاحَ بِوَجْهِهِ وَ تَعَوَّذَ مِنْهَا، ثُمَّ قَالَ: ((اتَّقُوا النَّارَ وَلَوْ بِشِقِّ تَمْرَةٍ، فَمَنْ لَمْ يَجِدْ فَبِكَلِمَةٍ طَيِّبَةٍ)). [راجع:١٤١٣]

अपने आपको दोज़ख़ से बचाए।

6564. हमसे इब्राहीम बिन ह़म्ज़ा ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इब्ने अबी ह़ाज़िम ने और दरावर्दी ने बयान किया, उनसे यज़ीद बिन अ़ब्दुल्लाह बिन हाद ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन ख़ब्बाब ने बयान किया, और उनसे अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने बयान किया कि उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से सुना, आँह़ज़रत (ﷺ) के सामने आपके चचा अबू त़ालिब का ज़िक्र किया गया था, तो आपने फ़र्माया मुम्किन है क़यामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त उनके काम आ जाए और उन्हें जहन्नम में टख़नों तक रखा जाएगा जिससे उनका भेजा खोलता रहेगा। (राजेअ़ : 3885)

٦٥٦٤- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ حَمْزَةَ، قَالَ حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي حَازِمٍ وَالدَّرَاوَرْدِيُّ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ خَبَّابٍ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللهِ ﷺ، وَذُكِرَ عِنْدَهُ عَمُّهُ أَبُو طَالِبٍ فَقَالَ لَعَلَّهُ تَنْفَعُهُ شَفَاعَتِي يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَيُجْعَلُ فِي ضَحْضَاحٍ مِنَ النَّارِ يَبْلُغُ كَعْبَيْهِ تَغْلِي مِنْهُ أُمُّ دِمَاغِهِ. [راجع: ٣٨٨٥]

तश्रीह : क़ुर्आन शरीफ़ में **फ़मा तन्फ़उहुम शफ़ाअ़तुश्शाफ़िईन** (मुद्दष़्ष़िर : 48) (उनको शफ़ाअ़त करने वालों की शफ़ाअ़त काम न देगी) लेकिन आयत में नफ़ा से ये मुराद है कि वो दोज़ख़ से निकाल लिये जाएँ, ये फ़ायदा काफ़िरों और मुश्रिकों के लिये नहीं हो सकता। इस सूरत में ह़दीष़ और आयत में इख़्तिलाफ़ नहीं रहेगा मगर दूसरी आयत मे जो ये फ़र्माया, **फ़ला युख़फ़्फ़फ़ु अ़न्हुमुल अ़ज़ाबु** (अल बक़र: : 86) (या'नी उनसे अ़ज़ाब कम नहीं किया जाएगा) इसका जवाब यूँ भी दे सकते हैं कि जो अ़ज़ाब उन पर शुरू होगा वो हल्का नहीं होगा ये उसके मनाफ़ी नहीं है कि कुछ काफ़िरों पर शुरू ही से हल्का अ़ज़ाब मुक़र्रर किया जाए, कुछ के लिये सख़्त हो।

6565. हमसे मुसद्दद बिन मुस्रहिद ने बयान किया, कहा हमसे अबू अ़वाना ने, उनसे क़तादा ने और उनसे अनस

٦٥٦٥- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ

عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((يَجْمَعُ اللهُ النَّاسَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَيَقُولُونَ، لَوِ اسْتَشْفَعْنَا عَلَى رَبِّنَا حَتَّى يُرِيحَنَا مِنْ مَكَانِنَا فَيَأْتُونَ آدَمَ فَيَقُولُونَ: أَنْتَ الَّذِي خَلَقَكَ اللهُ بِيَدِهِ، وَنَفَخَ فِيكَ مِنْ رُوحِهِ وَأَمَرَ الْمَلاَئِكَةَ فَسَجَدُوا لَكَ، فَاشْفَعْ لَنَا عِنْدَ رَبِّنَا فَيَقُولُ: لَسْتُ هُنَاكُمْ، وَيَذْكُرُ خَطِيئَتَهُ وَيَقُولُ: ائْتُوا نُوحًا أَوَّلَ رَسُولٍ بَعَثَهُ اللهُ، فَيَأْتُونَهُ فَيَقُولُ: لَسْتُ هُنَاكُمْ وَيَذْكُرُ خَطِيئَتَهُ، ائْتُوا إِبْرَاهِيمَ الَّذِي اتَّخَذَهُ اللهُ خَلِيلاً، فَيَأْتُونَهُ فَيَقُولُ : لَسْتُ هُنَاكُمْ وَيَذْكُرُ خَطِيئَتَهُ، ائْتُوا مُوسَى الَّذِي كَلَّمَهُ اللهُ فَيَأْتُونَهُ فَيَقُولُ: لَسْتُ هُنَاكُمْ فَيَذْكُرُ خَطِيئَتَهُ، ائْتُوا عِيسَى فَيَأْتُونَهُ فَيَقُولُ: لَسْتُ هُنَاكُمْ ائْتُوا مُحَمَّدًا صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَدْ غُفِرَ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ وَمَا تَأَخَّرَ فَيَأْتُونِي فَأَسْتَأْذِنُ عَلَى رَبِّي، فَإِذَا رَأَيْتُهُ وَقَعْتُ سَاجِدًا، فَيَدَعُنِي مَا شَاءَ اللهُ، ثُمَّ يُقَالُ : ارْفَعْ رَأْسَكَ سَلْ تُعْطَهْ وَ قُلْ يُسْمَعْ وَاشْفَعْ تُشَفَّعْ فَأَرْفَعُ رَأْسِي فَأَحْمَدُ رَبِّي بِتَحْمِيدٍ يُعَلِّمُنِي، ثُمَّ أَشْفَعُ فَيَحُدُّ لِي حَدًّا ثُمَّ أُخْرِجُهُمْ مِنَ النَّارِ، وَأُدْخِلُهُمُ الْجَنَّةَ ثُمَّ أَعُودُ، فَأَقَعُ سَاجِدًا مِثْلَهُ فِي الثَّالِثَةِ أَوِ الرَّابِعَةِ حَتَّى مَا بَقِيَ فِي النَّارِ، إِلاَّ مَنْ حَبَسَهُ الْقُرْآنُ)). وَكَانَ قَتَادَةُ يَقُولُ : عِنْدَ هَذَا أَيْ وَجَبَ عَلَيْهِ الْخُلُودُ.

(रज़ि.) ने कि रसूले अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया, अल्लाह तआला क़यामत के दिन लोगों को जमा करेगा। उस वक़्त लोग कहेंगे कि अगर हम अपने रब के हुज़ूर में किसी की शफ़ाअ़त ले जाएँ तो नफ़ा बख़्श साबित हो सकती है। मुम्किन है हम अपनी इस हालत से नजात पा जाएँ। चुनाँचे लोग आदम (अ़लैहि.) के पास आएँगे और अ़र्ज़ करेंगे आप ही वो बुज़ुर्ग नबी हैं जिन्हें अल्लाह तआला ने अपने हाथ से बनाया और आपके अंदर अपनी छुपाई हुई रूह फूँकी और फ़रिश्तों को हुक्म दिया तो उन्होंने आपको सज्दा किया, आप हमारे रब के हुज़ूर में हमारी शफ़ाअ़त कर दें। वो कहेंगे कि मैं तो उस लायक़ नहीं हूँ, फिर वो अपनी लग़्ज़िश याद करेंगे और कहेंगे कि नूह के पास जाओ, वो सबसे पहले रसूल हैं, जिन्हें अल्लाह तआला ने भेजा। लोग नूह के पास आएँगे लेकिन वो भी यही जवाब देंगे कि मैं इस लायक़ नहीं हूँ। वो अपनी लग़्ज़िश का ज़िक्र करेंगे और कहेंगे कि तुम इब्राहीम के पास जाओ जिन्हें अल्लाह तआला ने अपना ख़लील बनाया था। लोग उनके पास आएँगे लेकिन ये भी यही कहेंगे कि मैं इस लायक़ नहीं हूँ, अपनी ख़ता का ज़िक्र करेंगे और कहेंगे कि तुम लोग मूसा के पास जाओ जिनसे अल्लाह तआला ने कलाम किया था। लोग मूसा (अ़लैहि.) के पास जाएँगे लेकिन वो भी यही जवाब देंगे कि मैं इस लायक़ नहीं हूँ, अपनी ख़ता का ज़िक्र करेंगे और कहेंगे कि ईसा के पास जाओ। लोग ईसा (अ़लैहि.) के पास जाएँगे, लेकिन ये भी कहेंगे कि मैं इस लायक़ नहीं हूँ, मुहम्मद (ﷺ) के पास जाओ क्योंकि उनके तमाम अगले-पिछले गुनाह मुआ़फ़ कर दिये गये हैं। चुनाँचे लोग मेरे पास आएँगे। उस वक़्त मैं अपने रब से (शफ़ाअ़त की) इजाज़त चाहूँगा और सज्दे में गिर जाऊँगा। अल्लाह तआला जितनी देर तक चाहेगा मुझे सज्दे में रहने देगा। फिर कहा जाएगा कि अपना सर उठा लो, मांगो, दिया जाएगा, कहो, सुना जाएगा, शफ़ाअ़त करो, शफ़ाअ़त क़ुबूल की जाएगी। मैं अपने रब की उस वक़्त ऐसी ह़म्द बयान करूँगा कि जो अल्लाह तआला मुझे सिखाएगा। फिर शफ़ाअ़त करूँगा और मेरे लिये ह़द मुक़र्रर कर दी जाएगी और मैं लोगों को जहन्नम से निकालकर जन्नत में दाख़िल करूँगा और इसी त़रह सज्दे में गिर जाऊँगा, तीसरी या चौथी बार जहन्नम में सिर्फ़ वही लोग बाक़ी रह जाएँगे जिन्हें क़ुआर्न

ने रोका है (या'नी जिनके जहन्नम में हमेशा रहने का ज़िक्र कुर्आन में स़राहत के साथ है) क़तादा (रह.) इस मौक़े पर कहा करते थे कि इससे वो लोग मुराद हैं जिन पर जहन्नम में हमेशा रहना वाजिब हो गया है। (राजेअ : 44)

[راجع: ٤٤]

तश्रीह : यहाँ शफ़ाअत से वो शफ़ाअत मुराद है जो आँहज़रत (ﷺ) दोज़ख़वालों की ख़बर सुनकर उम्मती उम्मती फ़र्माएँगे। फिर उन सब लोगों को जहन्नम से निकालेंगे जिनमें ज़र्रा बराबर भी ईमान होगा। लेकिन वो शफ़ाअत जो मैदाने ह़श्र से बहिश्त में ले जाने के लिये होगी वो पहले उन लोगों को नसीब होगी जो बग़ैर हिसाब व किताब के बहिश्त में जाएँगे। फिर उनके बाद उन लोगों को जो हिसाब के बाद बहिश्त में जाएँगे। क़ाज़ी अयाज़ ने कहा शफ़ाअतें पाँच होंगी। एक तो ह़श्र की तकलीफ़ों से नजात देने के लिये, ये हमारे पैग़म्बर (ﷺ) से ख़ास़ है। इसको शफ़ाअते उ़ज़्मा कहते हैं और मक़ामे महमूद भी इसी मर्तबे का नाम है। दूसरी शफ़ाअत कुछ लोगों को बेहिसाब जन्नत में ले जाने के लिये। तीसरी हिसाब के बाद उन लोगों को जो अ़ज़ाब के लायक़ ठहरेंगे उनको बेअ़ज़ाब जन्नत में ले जाने के लिये। चौथी शफ़ाअत उन गुनहगारों के लिये जो दोज़ख़ में डाल दिये जाएँगे, उनके निकालने के लिये। पाँचवीं शफ़ाअत जन्नतियों के दर्जात की तरक़्क़ी के लिये होगी।

अंबिया किराम ने अपनी अपनी जिन लग़्ज़िशों का ज़िक्र किया वो लग़्ज़िशें ऐसी हैं जो अल्लाह की त़रफ़ से मुआफ़ हो चुकी हैं लेकिन फिर भी बड़ों का मुक़ाम बड़ा होता है, अल्लाह पाक को ह़क़ है वो चाहे तो उन लग़्ज़िशों पर उनको गिरफ़्त में ले ले। इस ख़त़रे की बिना पर अंबिया किराम ने वो जवाबात दिये जो इस ह़दीष़ में मज़्कूर हैं। आख़िरी मामले में आँहज़रत (ﷺ) पर ठहरा लिया। वो मक़ामे महमूद है जो अल्लाह ने आपको अ़ता फ़र्माया है। **असा अन् यब्अ़ष़क रब्बुक मक़ामम्महमूदा** (बनी इस्राईल : 76) कुर्आन ने जिनको जहन्नम के लिये हमेशा के वास्ते रोका उनसे मुराद मुश्रिकीन हैं। **इन्नल्लाह ला यग़्फ़िरु अय्युंश्रक बिही** (अन निसा : 48) ह़ज़रत ईसा(अ़लैहि.) ने आँहज़रत (ﷺ) ही को शफ़ाअत का अहल समझा। ह़ाफ़िज़ इब्ने हजर इस मौक़े पर फ़र्माते हैं। **ष़ुम्म इहतज्ज ईसा बिअन्नहू साहिबुशशफ़ाअति लिअन्नहू क़द गुफ़िर लहू मा तक़द्दम मिन ज़म्बिही व मा तअख़्ख़र बिमअ़ना अन्नल्लाह अख़्बर अन्नहू ला युआख़िज़ुहू बिजम्बिही लौ वक़अ मिन्हु व हाज़ा मिनन्नफ़ाइसिल्लती फ़तहल्लाहु बिहा फ़ी फ़त्हिल बारी फ़लिल्लाहिल ह़म्द** या'नी ये इसलिये कि अल्लाह तआला ने आप (ﷺ) के अगले-पिछले सारे गुनाह मुआफ़ कर दिये हैं। इस मा'नी से बेशक अल्लाह तआला आपको ये ख़बर दे चुका है कि अगर आपसे कोई गुनाह वाक़ेअ़ हो भी जाए तो अल्लाह आपसे उसके बारे में मुवाख़िज़ा नहीं करेगा। इसलिये शफ़ाअत का मन्सब दर ह़क़ीक़त आप ही के लिये है। ये एक निहायत नफ़ीस वज़ाहत है जो अल्लाह ने अपने फ़ज़्ल से फ़त्हुल बारी में खोली है। (फ़त्हुल बारी)

6566. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे यह्या ने बयान किया, उनसे ह़सन बिन ज़क्वान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अबू ह़ाज़िम ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इमरान बिन हुसैन (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि एक जमाअ़त जहन्नम से (ह़ज़रत) मुहम्मद (ﷺ) की शफ़ाअत की वजह से निकलेगी और जन्नत में दाख़िल होगी जिनको जहन्नमीन के नाम से पुकारा जाएगा।

٦٥٦٦- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى، عَنِ الْحَسَنِ بْنِ ذَكْوَانَ، قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو حَازِمٍ قَالَ : حَدَّثَنَا عِمْرَانُ بْنُ حُصَيْنٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((يَخْرُجُ قَوْمٌ مِنَ النَّارِ بِشَفَاعَةِ مُحَمَّدٍ ﷺ، فَيَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ يُسَمَّوْنَ

الْجَهَنَّمِيِّينَ)).

6567. हमसे क़ुतैबा ने बयान किया, कहा हमसे इस्माईल बिन जा'फ़र ने बयान किया, उनसे हुमैद ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने कि हारिषा बिन सुराक़ा बिन हारिष (रज़ि.) की वालिदा रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुईं। हारिषा (रज़ि) बद्र की जंग में एक नामा'लूम तीर लग जाने की वजह से शहीद हो गये थे और उन्होंने कहा, या रसूलल्लाह! आपको मा'लूम है कि हारिषा से मुझे कितनी मुहब्बत थी, अगर वो जन्नत में है तो उस पर मैं नहीं रोऊँगी, वरना आप देखेंगे कि मैं क्या करती हूँ? आँहज़रत (ﷺ) ने उनसे फ़र्माया, बेवक़ूफ़ हुई हो, क्या कोई जन्नत एक ही है, जन्नतें तो बहुत सी हैं और हारिषा फ़िरदौसे आला (जन्नत के ऊँचे दर्जे) में है। (राजेअ : 2809)

٦٥٦٧- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، قَالَ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ جَعْفَرٍ، عَنْ حُمَيْدٍ، عَنْ أَنَسٍ أَنَّ أُمَّ حَارِثَةَ أَتَتْ رَسُولَ اللهِ ﷺ، وَقَدْ هَلَكَ حَارِثَةُ يَوْمَ بَدْرٍ أَصَابَهُ سَهْمٌ غَرْبٌ فَقَالَتْ: يَا رَسُولَ اللهِ قَدْ عَلِمْتَ مَوْقِعَ حَارِثَةَ مِنْ قَلْبِي، فَإِنْ كَانَ فِي الْجَنَّةِ لَمْ أَبْكِ عَلَيْهِ، وَإِلاَّ سَوْفَ تَرَى مَا أَصْنَعُ، فَقَالَ لَهَا: ((هَبِلْتِ أَجَنَّةٌ وَاحِدَةٌ هِيَ؟ إِنَّهَا جِنَانٌ كَثِيرَةٌ، وَإِنَّهُ فِي الْفِرْدَوْسِ الأَعْلَى)). [راجع: ٢٨٠٩]

6568. और आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अल्लाह के रास्ते में जिहाद के लिये एक सुबह या एक शाम सफ़र करना दुनिया और जो कुछ उसमें है, से बढ़कर है और जन्नत में तुम्हारी एक कमान के बराबर जगह या एक क़दम की दूरी के बराबर जगह दुनिया और जो कुछ इसमें है, से बेहतर है और अगर जन्नत की औरतों में से कोई औरत रूए ज़मीन की तरफ़ झाँककर देख ले तो आसमान से लेकर ज़मीन तक मुनव्वर कर दे और उन तमाम को ख़ुश्बू से भर दे और उसका दुपट्टा दुनिया व मा फ़ीहा से बढ़कर है। (राजेअ : 2792)

٦٥٦٨- وَقَالَ : ((غَدْوَةٌ فِي سَبِيلِ اللهِ أَوْ رَوْحَةٌ خَيْرٌ مِنَ الدُّنْيَا، وَمَا فِيهَا وَلَقَابُ قَوْسِ أَحَدِكُمْ، أَوْ مَوْضِعُ قَدَمٍ مِنَ الْجَنَّةِ خَيْرٌ مِنَ الدُّنْيَا وَمَا فِيهَا، وَلَوْ أَنَّ امْرَأَةً مِنْ نِسَاءِ أَهْلِ الْجَنَّةِ اطَّلَعَتْ إِلَى الأَرْضِ لأَضَاءَتْ مَا بَيْنَهُمَا، وَلَمَلأَتْ مَا بَيْنَهُمَا رِيحًا وَلَنَصِيفُهَا يعني الْخِمَارَ خَيْرٌ مِنَ الدُّنْيَا وَمَا فِيهَا)). [راجع:٢٧٩٢]

तश्रीह : दूसरी रिवायत में यूँ है कि सूरज और चाँद की रोशनी मांद पड़ जाए। एक और रिवायत में है कि उसकी ओढ़नी के सामने सूरज की रोशनी ऐसी मांद पड़ जाए जैसे बत्ती की रोशनी, सूरज के सामने मांद पड़ जाती है। अगर अपनी हथेली दिखाए तो सारी ख़िल्क़त उसके हुस्न की शैदा हो जाए। कुछ मुल्हिदों ने इस क़िस्म की अहादीष पर ये शुब्हा किया है कि जब हूर की रोशनी सूरज से भी ज़्यादा है या वो इतनी मुअत्तर है कि ज़मीन से लेकर आसमान तक उसकी ख़ुश्बू पहुँचती है तो बहिश्ती लोग उसके पास क्यूँकर जा सकेंगे और इतनी ख़ुश्बू और रोशनी की ताब क्यूँकर ला सकेंगे? उनका जवाब ये है कि बहिश्त में हम लोगों की ज़िंदगी और ताक़त और क़िस्म की होगी जो उन सब बातों का तहम्मुल कर सकेंगे। जैसे दूसरी आयतों और अहादीष में दोज़ख़ियों के ऐसे ऐसे अज़ाब बयान हुए हैं कि अगर दुनिया में उसका दसवाँ हिस्सा भी अज़ाब दिया जाए तो फ़ौरन मर जाए लेकिन दोज़ख़ी उन अज़ाबों का तहम्मुल कर सकेंगे और ज़िन्दा रहेंगे। बहरहाल आख़िरत के हालात को दुनिया के हालात पर क़यास करना और हर एक बात में खोद-कुरैद करना सरीह नादानी है। रिवायत में मज़्कूर हारिषा बिन सुराक़ा बिन हारिष बिन अदी मुराद हैं। इनकी वालिद का नाम रबीअ बिन्ते नज़्र है।

6569. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, कहा हमसे अबुज़्ज़िनाद ने, उनसे अअ़रज ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, जन्नत में जो भी दाख़िल होगा उसे उसका जहन्नम का ठिकाना भी दिखाया जाएगा कि अगर नाफ़र्मानी की होती (तो वहाँ उसे जगह मिलती) ताकि वो और ज़्यादा शुक्र करे और जो भी जहन्नम में दाख़िल होगा उसे उसका जन्नत का ठिकाना भी दिखाया जाएगा कि अगर अच्छे अ़मल किये होते (तो वहाँ जगह मिलती) ताकि उसके लिये हसरत व अफ़सोस का बाइ़ष़ हो।

٦٥٦٩- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ، قَالَ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لاَ يَدْخُلُ أَحَدٌ الْجَنَّةَ إِلاَّ أُرِيَ مَقْعَدَهُ مِنَ النَّارِ، لَوْ أَسَاءَ لِيَزْدَادَ شُكْرًا وَلاَ يَدْخُلُ النَّارَ أَحَدٌ إِلاَّ أُرِيَ مَقْعَدَهُ مِنَ الْجَنَّةِ، لَوْ أَحْسَنَ لِيَكُونَ عَلَيْهِ حَسْرَةً)).

6570. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, उन्हों ने कहा हमसे इस्माईल बिन जा'फ़र ने बयान किया, उनसे अ़म्र ने बयान किया, उनसे सईद बिन अबी सईद मक़्बरी ने बयान किया, उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! क़यामत के दिन आपकी शफ़ाअ़त की सआ़दत सबसे ज़्यादा कौन ह़ासिल करेगा? आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया ऐ अबू हुरैरह! मेरा भी ख़्याल था कि ये ह़दीष़ तुमसे पहले और कोई मुझसे नहीं पूछेगा, क्योंकि ह़दीष़ के लेने के लिये मैं तुम्हारी बहुत ज़्यादा ह़िर्स़ देखा करता हूँ। क़यामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त की सआ़दत सबसे ज़्यादा उसे ह़ासिल होगी जिसने कलिमा ला इलाहा इल्लल्लाह ख़ुलूसे दिल से कहा। (राजेअ़ : 99)

٦٥٧٠- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، قَالَ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ جَعْفَرٍ، عَنْ عَمْرٍو، عَنْ سَعِيدِ بْنِ أَبِي سَعِيدٍ الْمَقْبُرِيِّ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّهُ قَالَ : قُلْتُ يَا رَسُولَ اللهِ مَنْ أَسْعَدُ النَّاسِ بِشَفَاعَتِكَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ؟ فَقَالَ: ((لَقَدْ ظَنَنْتُ يَا أَبَا هُرَيْرَةَ أَنْ لاَ يَسْأَلُنِي عَنْ هَذَا الْحَدِيثِ أَحَدٌ أَوَّلُ مِنْكَ، لَمَّا رَأَيْتُ مِنْ حِرْصِكَ عَلَى الْحَدِيثِ أَسْعَدُ النَّاسِ بِشَفَاعَتِي يَوْمَ الْقِيَامَةِ مَنْ قَالَ : لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ خَالِصًا مِنْ قِبَلِ نَفْسِهِ)). [راجع: ٩٩]

ख़ुलूसे दिल से कहा और अ़मली जामा पहनाया कि सारी उ़म्र तौह़ीद पर क़ायम रहा और शिर्क की हवा भी न लगी। यक़ीनन उसे शफ़ाअ़त ह़ासिल होगी और तौह़ीद की बरकत से और अ़मली मेहनत से उसके गुनाह बख़्श दिये जाएँगे। ये सआ़दत अल्लाह तआ़ला हम सबको नस़ीब करे, आमीन।

6571. हमसे उ़ष़्मान बिन अबी शैबा ने बयान किया, कहा हमसे जरीर बिन अ़ब्दुल ह़मीद ने बयान किया, उनसे मंसूर ने, उनसे इब्राहीम नख़ई ने, उनसे उ़बैदह सलमानी ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया मैं ख़ूब जानता हूँ कि अहले जहन्नम में से कौन सबसे आख़िर में वहाँ से निकलेगा और अहले जन्नत में कौन सबसे आख़िर में दाख़िल होगा। एक शख़्स़ जहन्नम से घुटनों के बल घिसटते हुए निकलेगा। अल्लाह तआ़ला उससे कहेगा कि जाओ और जन्नत में दाख़िल हो जाओ, वो जन्नत

٦٥٧١- حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، قَالَ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنْ مَنْصُورٍ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ عَبِيدَةَ، عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِنِّي لأَعْلَمُ آخِرَ أَهْلِ النَّارِ خُرُوجًا مِنْهَا، وَآخِرَ أَهْلِ الْجَنَّةِ دُخُولاً رَجُلٌ يَخْرُجُ مِنَ النَّارِ كَبْوًا، فَيَقُولُ اللهُ : اذْهَبْ فَادْخُلِ الْجَنَّةَ، فَيَأْتِيهَا

के पास आएगा लेकिन उसे मा'लूम होगा कि जन्नत भरी हुई है। चुनाँचे वो वापस आएगा और अ़र्ज़ करेगा, ऐ मेरे रब! मैंने जन्नत को भरा हुआ पाया, अल्लाह तआ़ला फिर उससे कहेगा कि जाओ और जन्नत में दाख़िल हो जाओ। वो फिर आएगा लेकिन उसे ऐसा मा'लूम होगा कि जन्नत भरी हुई है वो वापस लौटेगा और अ़र्ज़ करेगा कि ऐ रब! मैंने जन्नत को भरा हुआ पाया। अल्लाह तआ़ला फ़र्माएगा जाओ और जन्नत में दाख़िल हो जाओ तुम्हें दुनिया और उससे दस गुना दिया जाता है या (अल्लाह तआ़ला फ़र्माएगा कि) तुम्हें दुनिया के दस गुना दिया जाता है। वो शख़्स कहेगा तू मेरा मज़ाक़ बनाता है ह़ालाँकि तू शहंशाह है। मैंने देखा कि उस पर रसूलुल्लाह (ﷺ) हंस दिये और आपके आगे के दंदाने मुबारक ज़ाहिर हो गये और कहा जाता है कि वो जन्नत का सबसे कम दर्जे वाला शख़्स होगा। (दीगर मक़ामात : 7511)

فَيُخَيَّلُ إِلَيْهِ أَنَّهَا مَلأَى فَيَرْجِعُ فَيَقُولُ : يَا رَبِّ وَجَدْتُهَا مَلأَى فَيَقُولُ: اذْهَبْ فَادْخُلِ الْجَنَّةَ، فَيُخَيَّلُ إِلَيْهِ أَنَّهَا مَلأَى فَيَرْجِعُ فَيَقُولُ: يَا رَبِّ وَجَدْتُهَا مَلأَى فَيَقُولُ: اذْهَبْ فَادْخُلِ الْجَنَّةَ، فَإِنَّ لَكَ مِثْلَ الدُّنْيَا وَعَشَرَةَ أَمْثَالِهَا أَوْ إِنَّ لَكَ مِثْلَ عَشَرَةِ أَمْثَالِ الدُّنْيَا، فَيَقُولُ: تَسْخَرُ مِنِّي أَوْ تَضْحَكُ مِنِّي وَأَنْتَ الْمَلِكُ؟ فَلَقَدْ رَأَيْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ضَحِكَ حَتَّى بَدَتْ نَوَاجِذُهُ وَكَانَ يُقَالُ أَدْنَى أَهْلِ الْجَنَّةِ مَنْزِلَةً)).

[طرفه في : ٧٥١١].

तश्रीह : बुलंद दर्जे वालो का क्या कहना, उनको कैसे कैसे वसीअ़ मकानात मिलेंगे। ह़ाफ़िज़ ने कहा कि ये कलाम भी दूसरी रिवायत से निकलता है जिसे इमाम मुस्लिम ने अबू सईद से निकाला। (वह़ीदी)

6572. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अबू अ़वाना ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल मलिक ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन ह़ारिष़ बिन नौफ़िल ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से पूछा क्या आपने अबू त़ालिब को कोई नफ़ा पहुँचाया? (राजेअ़ : 3883)

٦٥٧٢- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، قَالَ حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ، عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ الْحَارِثِ بْنِ نَوْفَلٍ، عَنِ الْعَبَّاسِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّهُ قَالَ لِلنَّبِيِّ ﷺ : هَلْ نَفَعْتَ أَبَا طَالِبٍ بِشَيْءٍ؟. [راجع: ٣٨٨٣]

ये रिवायत मुख़्तसर है। दूसरी जगह है कि आपने फ़र्माया, हाँ पहुँचाया। वो घुटनों तक अ़ज़ाब में हैं और अगर मेरी ये शफ़ाअ़त न होती तो वो दोज़ख़ के नीचे वाले दर्जे में दाख़िल होता।

बाब 52 : स़िरात़ एक पुल है जो दोज़ख़ पर बनाया गया है

٥٢- باب الصِّرَاطُ جِسْرُ جَهَنَّمَ

इसी को पुल स़िरात़ कहते हैं। क़ुर्आन शरीफ़ में इसका ज़िक्र यूँ है, **वइम्मिन्कुम इल्ला वारिदुहा कान अला रब्बिक ह़त्मम्मक़्ज़िय्या** (सूरह मरयम : 71)।

6573. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐ़ब ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुह्री ने, कहा मुझको सईद और अ़त़ा बिन यज़ीद ने ख़बर दी और उन्हें अबू हुरैरह (रज़ि.) ने और उन्हें नबी करीम (ﷺ) ने (दूसरी सनद) और मुझसे मह़मूद बिन

٦٥٧٣- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ قَالَ: أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، قَالَ أَخْبَرَنِي سَعِيدٌ وَعَطَاءُ بْنُ يَزِيدَ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ

ग़ीलान ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ बिन हम्माम ने, कहा हमको मअ़मर ने, उन्हें अ़ता बिन यज़ीद लैष़ी ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि कुछ लोगों ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! क्या क़यामत के दिन हम अपने रब को देख सकेंगे। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया क्या सूरज के देखने में तुम्हें कोई दुश्वारी होती है जबकि उस पर कोई बादल, अब्र वग़ैरह न हो। स़हाबा ने अ़र्ज़ किया नहीं या रसूलल्लाह! आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, क्या जब कोई बादल न हो तो तुम्हें चौदह्वीं रात के चाँद को देखने में कोई दुश्वारी होती है? स़हाबा ने अ़र्ज़ किया, नहीं या रसूलल्लाह! आपने फ़र्माया कि फिर तुम अल्लाह तआ़ला को इसी त़रह क़यामत के दिन देखोगे। अल्लाह तआ़ला लोगों को जमा करेगा और कहेगा कि तुममें से जो शख़्स़ जिस चीज़ की पूजा पाठ करता था वो उसी के पीछे लग जाए। चुनाँचे लोग सूरज की परस्तिश किया करते थे और वो उसके पीछे लग जाएँगे और जो लोग चाँद की पूजा किया करते थे वो उसके पीछे हो लेंगे। जो लोग बुतों की परश्तिश करते थे वो उनके पीछे लग जाएँगे और आख़िर में ये उम्मत बाक़ी रह जाएगी और इसमें मुनाफ़िक़ीन की जमाअ़त भी होगी, उस वक़्त अल्लाह तआ़ला उनके सामने इस सूरत में आएगा जिसको वो पहचानते न होंगे और कहेगा कि मैं तुम्हारा रब हूँ। लोग कहेंगे तुझसे अल्लाह की पनाह। हम अपनी जगह पर उस वक़्त तक रहेंगे जब तक कि हमारा परवरदिगार हमारे सामने न आए। जब हमारा रब हमारे पास आएगा तो हम उसे पहचान लेंगे (क्योंकि वो ह़श्र मे एक बार इसको पहले देख चुके होंगे) फिर ह़क़ तआ़ला उस सूरत में आएगा जिसको वो पहचानते होंगे और उनसे कहा जाएगा (आओ मेरे साथ हो लो) मैं तुम्हारा रब हूँ! लोग कहेंगे कि तू हमारा रब है, फिर उसी के पीछे हो जाएँगे और जहन्नम पर पुल बना दिया जाएगा। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैं सबसे पहला शख़्स़ होऊँगा जो उस पुल को पार करूँगा और उस दिन रसूलों की दुआ़ ये होगी कि ऐ अल्लाह! मुझको सलामत रखियो। ऐ अल्लाह! मुझको सलामत रखियो और वहाँ सअ़दान के काँटों की त़रह आँकड़े होंगे। तुमने सअ़दान के कांटे देखे हैं? स़हाबा किराम ने अ़र्ज़ किया, हाँ देखे हैं या रसूलल्लाह! आप (ﷺ) ने फ़र्माया

أَخْبَرَهُمَا عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. وَحَدَّثَنِي مَحْمُودٌ، قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، قَالَ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَزِيدَ اللَّيْثِيِّ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ : قَالَ أُنَاسٌ يَا رَسُولَ اللهِ هَلْ نَرَى رَبَّنَا يَوْمَ الْقِيَامَةِ؟ فَقَالَ: ((هَلْ تُضَارُّونَ فِي الشَّمْسِ لَيْسَ دُونَهَا سَحَابٌ؟)) قَالُوا : لاَ يَا رَسُولَ اللهِ، قَالَ: ((هَلْ تُضَارُّونَ فِي الْقَمَرِ لَيْلَةَ الْبَدْرِ لَيْسَ دُونَهُ سَحَابٌ؟)) قَالُوا: لاَ يَا رَسُولَ اللهِ قَالَ: ((فَإِنَّكُمْ تَرَوْنَهُ كَذَلِكَ، يَجْمَعُ اللهُ النَّاسَ فَيَقُولُ: مَنْ كَانَ يَعْبُدُ شَيْئًا فَلْيَتْبَعْهُ فَيَتْبَعُ مَنْ كَانَ يَعْبُدُ الشَّمْسَ، وَيَتْبَعُ مَنْ كَانَ يَعْبُدُ الْقَمَرَ، وَيَتْبَعُ مَنْ كَانَ يَعْبُدُ الطَّوَاغِيتَ، وَتَبْقَى هَذِهِ الأُمَّةُ فِيهَا مُنَافِقُوهَا، فَيَأْتِيهِمُ اللهُ فِي غَيْرِ الصُّورَةِ الَّتِي يَعْرِفُونَ فَيَقُولُ: أَنَا رَبُّكُمْ فَيَقُولُونَ: نَعُوذُ بِاللهِ مِنْكَ هَذَا مَكَانُنَا حَتَّى يَأْتِيَنَا رَبُّنَا، فَإِذَا أَتَانَا رَبُّنَا عَرَفْنَاهُ فَيَأْتِيهِمُ اللهُ فِي الصُّورَةِ الَّتِي يَعْرِفُونَ فَيَقُولُ: أَنَا رَبُّكُمْ فَيَقُولُونَ: أَنْتَ رَبُّنَا فَيَتْبَعُونَهُ وَيُضْرَبُ جِسْرُ جَهَنَّمَ قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: فَأَكُونُ أَوَّلَ مَنْ يُجِيزُ وَدُعَاءُ الرُّسُلِ يَوْمَئِذٍ اللَّهُمَّ سَلِّمْ سَلِّمْ، وَبِهِ كَلاَلِيبُ مِثْلُ شَوْكِ السَّعْدَانِ أَمَا رَأَيْتُمْ شَوْكَ السَّعْدَانِ؟)) قَالُوا: بَلَى، يَا

वो फिर सअ़दान के काँटों की त़रह़ होंगे अल्बत्ता उसकी लम्बाई चौड़ाई अल्लाह के सिवा और कोई नहीं जानता। वो लोगों को उनके आ'माल के मुत़ाबिक़ उचक लेंगे और इस त़रह़ उनमें से कुछ तो अपने अ़मल की वजह से हलाक हो जाएँगे और कुछ का अ़मल राई के दाने के बराबर होगा, फिर वो नजात पा जाएगा। आख़िर जब अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों के बीच फ़ैसले से फ़ारिग़ हो जाएगा और जहन्नम से उन्हें निकालना चाहेगा जिन्हें निकालने की उसकी मशिय्यत होगी। या'नी वो जिन्होंने कलिमा ला इलाहा इल्लल्लाह की गवाही दी होगी और अल्लाह तआ़ला फ़रिश्तों को हुक्म देगा कि वो ऐसे लोगों को जहन्नम से निकालें। फ़रिश्ते उन्हें सज्दों के निशानात से पहचान लेंगे क्योंकि अल्लाह तआ़ला ने आग पर ह़राम कर दिया है कि वो इब्ने आदम के जिस्म में सज्दों के निशान को खाए। चुनाँचे फ़रिश्ते उन लोगों को निकालेंगे। ये जलकर कोयले हो चुके होंगे फिर उन पर पानी छिड़का जाएगा जिसे माउल ह़यात (ज़िंदगी बख़्शने वाला पानी) कहते हैं उस वक़्त वो इस त़रह़ तरोताज़ा हो जाएँगे जैसे सैलाब के बाद ज़रख़ैज़ ज़मीन में दाना उग आता है। एक ऐसा शख़्स बाक़ी रह जाएगा जिसका चेहरा जहन्नम की त़रफ़ होगा और वो कहेगा ऐ मेरे रब! इसकी बदबू ने मुझे परेशान कर दिया है और इसकी लपेट ने मुझे झुलसा दिया है और इसकी तेज़ी ने मुझे जला डाला है, ज़रा मेरा मुँह आग की त़रह़ से दूसरी त़रफ़ फेर दे। वो इसी त़रह़ अल्लाह से दुआ़ करता रहेगा। आख़िर अल्लाह तआ़ला फ़र्माएगा अगर मैं तेरा ये मुत़ालबा पूरा कर दूँ तो कहीं तू कोई दूसरी चीज़ माँगनी शुरू न कर दे। वो शख़्स अ़र्ज़ करेगा नहीं, तेरी इ़ज़्ज़त की क़सम! मैं इसके सिवा कोई दूसरी चीज़ नहीं माँगूँगा। चुनाँचे उसका चेहरा जहन्नम की त़रफ़ से जन्नत की त़रफ़ कर दिया जाएगा। अब उसके बाद वो कहेगा। ऐ मेरे रब! मुझे जन्नत के दरवाज़े के क़रीब कर दीजिए। अल्लाह तआ़ला फ़र्माएगा क्या तूने अभी यक़ीन नहीं दिलाया था कि इसके सिवा और कोई चीज़ नहीं माँगेगा। अफ़सोस! ऐ इब्ने आदम! तू बहुत ज़्यादा वा'दा ख़िलाफ़ है। फिर वो बराबर इसी त़रह़ दुआ़ करता रहेगा तो अल्लाह तआ़ला फ़र्माएगा कि अगर मैं तेरी ये दुआ़ क़ुबूल कर लूँ तो तू फिर इसके अ़लावा कुछ

رَسُولَ اللهِ قَالَ: ((فَإِنَّهَا مِثْلُ شَوْكِ السَّعْدَانِ، غَيْرَ أَنَّهَا لاَ يَعْلَمُ قَدْرَ عِظَمِهَا إِلاَّ اللهُ، فَتَخْطِفُ النَّاسَ بِأَعْمَالِهِمْ مِنْهُمُ الْمُوبَقُ بِعَمَلِهِ، وَمِنْهُمُ الْمُخَرْدَلُ ثُمَّ يَنْجُو حَتَّى إِذَا فَرَغَ اللهُ مِنَ الْقَضَاءِ بَيْنَ عِبَادِهِ وَأَرَادَ أَنْ يُخْرِجَ مِنَ النَّارِ مَنْ أَرَادَ أَنْ يُخْرِجَ مِمَّنْ كَانَ يَشْهَدُ أَنْ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ أَمَرَ الْمَلاَئِكَةَ أَنْ يُخْرِجُوهُمْ فَيَعْرِفُونَهُمْ بِعَلاَمَةِ آثَارِ السُّجُودِ، وَحَرَّمَ اللهُ عَلَى النَّارِ أَنْ تَأْكُلَ مِنَ ابْنِ آدَمَ أَثَرَ السُّجُودِ، فَيُخْرِجُونَهُمْ قَدِ امْتُحِشُوا فَيُصَبُّ عَلَيْهِمْ مَاءٌ يُقَالُ لَهُ : مَاءُ الْحَيَاةِ فَيَنْبُتُونَ نَبَاتَ الْحِبَّةِ فِي حَمِيلِ السَّيْلِ وَيَبْقَى رَجُلٌ مُقْبِلٌ بِوَجْهِهِ عَلَى النَّارِ فَيَقُولُ : يَا رَبِّ قَدْ قَشَبَنِي رِيحُهَا وَأَحْرَقَنِي ذَكَاؤُهَا فَاصْرِفْ وَجْهِي عَنِ النَّارِ، فَلاَ يَزَالُ يَدْعُو اللهَ فَيَقُولُ : لَعَلَّكَ إِنْ أَعْطَيْتُكَ أَنْ تَسْأَلَنِي غَيْرَهُ، فَيَقُولُ : لاَ وَعِزَّتِكَ لاَ أَسْأَلُكَ غَيْرَهُ، فَيَصْرِفُ وَجْهَهُ عَنِ النَّارِ، ثُمَّ يَقُولُ بَعْدَ ذَلِكَ: يَا رَبِّ قَرِّبْنِي إِلَى بَابِ الْجَنَّةِ فَيَقُولُ: أَلَيْسَ قَدْ زَعَمْتَ أَنْ لاَ تَسْأَلَنِي غَيْرَهُ وَيْلَكَ ابْنَ آدَمَ مَا أَغْدَرَكَ فَلاَ يَزَالُ يَدْعُو فَيَقُولُ: لَعَلِّي إِنْ أَعْطَيْتُكَ ذَلِكَ تَسْأَلُنِي غَيْرَهُ فَيَقُولُ: لاَ وَعِزَّتِكَ لاَ أَسْأَلُكَ غَيْرَهُ فَيُعْطِي اللهَ مِنْ عُهُودٍ وَمَوَاثِيقَ أَنْ لاَ يَسْأَلَهُ غَيْرَهُ، فَيُقَرِّبُهُ إِلَى

بَابِ الْجَنَّةِ فَإِذَا رَأَى مَا فِيهَا سَكَتَ مَا شَاءَ اللهُ أَنْ يَسْكُتَ ثُمَّ يَقُولُ: رَبِّ أَدْخِلْنِي الْجَنَّةَ، فَيَقُولُ يَقُولُ: أَوَلَيْسَ قَدْ زَعَمْتَ أَنْ لاَ تَسْأَلَنِي غَيْرَهُ، وَيْلَكَ يَا ابْنَ آدَمَ مَا أَغْدَرَكَ، فَيَقُولُ : يَا رَبِّ لاَ تَجْعَلْنِي أَشْقَى خَلْقِكَ، فَلاَ يَزَالُ يَدْعُوا حَتَّى يَضْحَكَ فَإِذَا ضَحِكَ مِنْهُ، أَذِنَ لَهُ بِالدُّخُولِ فِيهَا، فَإِذَا دَخَلَ فِيهَا قِيلَ تَمَنَّ مِنْ كَذَا فَيَتَمَنَّى، ثُمَّ يُقَالُ لَهُ : تَمَنَّ مِنْ كَذَا فَيَتَمَنَّى حَتَّى تَنْقَطِعَ بِهِ الأَمَانِيُّ فَيَقُولُ هَذَا لَكَ وَمِثْلُهُ مَعَهُ)) قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ: وَذَلِكَ الرَّجُلُ آخِرُ أَهْلِ الْجَنَّةِ دُخُولاً.

[راجع: ٨٠٦]

और चीज़ माँगने लगेगा। वो शख़्स कहेगा नहीं , तेरी इज़्ज़त की क़सम! मैं इसके सिवा और कोई चीज़ तुझसे नहीं मांगूगा और वो अल्लाह से अ़हदो पैमान करेगा कि इसके सिवा अब कोई और चीज़ नहीं मांगेगा। चुनाँचे अल्लाह तआ़ला उसे जन्नत के दरवाज़े के क़रीब कर देगा। जब वो जन्नत के अंदर की नेअ़मतों को देखेगा तो जितनी देर तक अल्लाह तआ़ला चाहेगा वो शख़्स ख़ामोश रहेगा, फिर कहेगा ऐ मेरे रब! मुझे जन्नत में दाख़िल कर दे। अल्लाह तआ़ला फ़र्माएगा कि क्या तूने ये यक़ीन नहीं दिलाया था कि अब तू इसके सिवा और चीज़ नहीं मांगेगा। ऐ इब्ने आदम! अफ़सोस! तू कितना वा'दा ख़िलाफ़ है। वो शख़्स अ़र्ज़ करेगा ऐ मेरे रब! मुझे अपनी मख़्लूक़ का सबसे बदबख़्त बन्दा न बना। वो बराबर दुआ़ करता रहेगा यहाँ तक कि अल्लाह तआ़ला हंस देगा। जब अल्लाह हंस देगा तो उस शख़्स को जन्नत में दाख़िल होने की इजाज़त मिल जाएगी। जब वो अंदर चला जाएगा तो उससे कहा जाएगा कि फ़लाँ चीज़ की ख़्वाहिश कर चुनाँचे वो ख़्वाहिश करेगा। फिर उससे कहा जाएगा कि फ़लाँ चीज़ की ख़्वाहिश करो, चुनाँचे वो फिर ख़्वाहिश करेगा यहाँ तक कि उसकी ख़्वाहिशात ख़त्म हो जाएँगी तो अल्लाह की त़रफ़ से कहा जाएगा कि तेरी ये सारी ख़्वाहिशात पूरी की जाती हैं और इतनी ही ज़्यादा नेअ़मतें और दी जाती हैं। अबू हुरैरह (रज़ि.) ने इसी सनद से कहा कि ये शख़्स जन्नत में सबसे आख़िर मे दाख़िल होने वाला होगा। (राजेअ़ : 806)

٦٥٧٤- قَالَ عَطَاءٌ: وَأَبُو سَعِيدٍ الْخُدْرِيُّ جَالِسٌ مَعَ أَبِي هُرَيْرَةَ لاَ يُغَيِّرُ عَلَيْهِ شَيْئًا مِنْ حَدِيثِهِ حَتَّى انْتَهَى إِلَى قَوْلِهِ هَذَا لَكَ وَمِثْلُهُ مَعَهُ قَالَ أَبُو سَعِيدٍ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

6574. अ़ता ने बयान किया कि अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) भी उस वक़्त अबू हुरैरह (रज़ि.) के साथ बैठे हुए थे और उन्होंने उनकी किसी बात पर ए'तिराज़ नहीं किया लेकिन जब अबू हुरैरह (रज़ि.) ह़दीष़ के इस टुकड़े तक पहुँचे कि तुम्हारी ये सारी ख़्वाहिशात पूरी की जाती हैं और इतनी ही और ज़्यादा नेअ़मतें दी जाती हैं तो अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने कहा कि

मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना था कि आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुम्हारी ये सारी ख़्वाहिशात पूरी की जाती हैं और उससे दस गुना और ज़्यादा नेअमतें दी जाती हैं। और अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा कि नहीं मैंने यूँ ही सुना है। ये सब चीज़ें और इतनी ही और। (राजेअ : 22)

يَقُولُ: ((هَذَا لَكَ وَعَشَرَةُ أَمْثَالِهِ))، قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ: حَفِظْتُ مِثْلَهُ مَعَهُ.

[راجع: ٢٢]

तश्रीह : इस हदीष़ में परवरदिगार की दो सिफ़ात का इष़्बात है। एक आने का, दूसरी सूरत का। मुतकल्लिमीन ऐसी सिफ़ात की दूर अज़्कार ता'वीलात करते हैं मगर अहले हदीष़ ये कहते हैं कि अल्लाह तआला आ सकता है, जा सकता है, उतर सकता है, चढ़ सकता है। इसी तरह जिस सूरत में चाहे तजल्ली फ़र्मा सकता है। उसको सब तरह की क़ुदरत है। बस इतनी सी बात है कि अल्लाह की किसी सिफ़त को मख़्लूक़ात की सिफ़त से मुशाबिहत नहीं दे सकते।

इस हदीष़ में बहुत सी बातें बयान में आई हैं। पुल सिरात का भी ज़िक्र है जिसके बारे में दूसरी रिवायात में है कि उस पुल पर से पार होने वाले सबसे पहले मैं होऊँगा और मेरी उम्मत होगी। पुल सिरात पर सअदान नामी पेड़ के जैसे आँकड़ों का ज़िक्र है जो सअदान के काँटों के मुशाबेह होंगे, मिक़्दार में नहीं क्योंकि मिक़्दार में तो वो बहुत बड़े होंगे जिसे अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता। सअदान अरब की एक घास का नाम है जिसमें टेढ़े मुँह के काँटे होते हैं। आगे रिवायत में दोज़ख़ पर निशाने सज्दा और मक़ामे सज्दा के हराम होने का ज़िक्र है। सज्दे के मक़ाम पेशानी दोनों हथेलियाँ, दोनों घुटने, दोनों क़दम या सिर्फ़ पेशानी मुराद है। मतलब ये है कि सारा बदन जलकर कोयला हो गया होगा मगर ये मक़ामाते सज्दा सलामत होंगे जिनको देखकर फ़रिश्ते पहचान लेंगे कि ये मुवह्हिद मुसलमान नमाज़ी थे। आह बेनमाज़ी मुसलमानों के पास क्या अलामत होगी जिसकी वजह से उन्हें पहचान कर दोज़ख़ से निकाला जाए? आगे रिवायत मे सबके बाद जन्नत में जाने वाले एक शख़्स का ज़िक्र है ये वो होगा जो दोज़ख़ में सात हज़ार बरस गुज़ार चुका होगा। उसके बाद निकलकर इसी तरह में जन्नत मे जाएगा। उसी शख़्स के बारे में अल्लाह तआला के हंसने का ज़िक्र है। ये भी अल्लाह की एक सिफ़त है जिसका इंकार या ता'वील अहले हदीष़ नहीं करते, न उसे मख़्लूक़ की हंसी से मुशाबिहत देते हैं।

बाब 53 : हौज़े कौष़र के बयान में

٥٣- باب فِي الْحَوْضِ

और अल्लाह तआला ने सूरह कौष़र में फ़र्माया, बिला शुब्हा मैंने आपको कौष़र अता किया। (अल कौष़र : 1) **और अब्दुल्लाह बिन ज़ैद माज़नी ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने अंसार से फ़र्माया, कि तुम उस वक़्त तक सब्र किये रहना कि मुझसे हौज़े कौष़र पर मिलो।**

وَقَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿إِنَّا أَعْطَيْنَاكَ الْكَوْثَرَ﴾ [الكوثر: ١] وَقَالَ عَبْدُ اللهِ بْنُ زَيْدٍ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((اصْبِرُوا حَتَّى تَلْقَوْنِي عَلَى الْحَوْضِ)).

तश्रीह : हौज़े कौष़र जन्नत की एक नहर। कौष़र का यही मा'नी सहीह और मशहूर और हदीष़ से ष़ाबित है। कुछ ने कहा है कि ख़ैरे कष़ीर मुराद है। कौष़र वो हौज़ है जो क़यामत के दिन आँहज़रत (ﷺ) को मिलेगा। आपकी उम्मत के लोग उसमें से पानी पियेंगे। इस बारे में सहीह यही है कि पुल सिरात के ऊपर गुज़रने से पहले ही जन्नती पानी पियेंगे क्योंकि पहले क़ब्रों में से प्यासे उठेंगे। लेकिन हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) जो इस बाब को पुल सिरात के बाद लाए हैं , इससे ये निकलता है कि पुल सिरात से गुज़रने के बाद उसमें से पियेंगे और तिर्मिज़ी ने हज़रत अनस (रज़ि.) से जो रिवायत की है उससे भी यही निकलता है। उसमें ये है कि अनस (रज़ि.) ने आपसे शफ़ाअत चाही। आपने वा'दा फ़र्माया। उसने कहा उस दिन आप कहाँ मिलेंगे। फ़र्माया पहले मुझको पुल सिरात के पास देखना। वरना फिर तराज़ू के पास, अगर वहाँ भी न पा सको तो हौज़े कौष़र के पास देखना। एक हदीष़ में है कि हर पैग़म्बर को एक हौज़ मिलेगा जिसमें से वो अपनी उम्मत वालो को पानी पिलाएगा और लकड़ी लिये वहीं खड़ा रहेगा। सनद में मज़्कूर हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ैद माज़नी अंसारी सहाबी हैं जो जंगे

उहुद में शरीक हुए और जंगे यमामा में मुसैलमा कज़्ज़ाब को वह्शी बिन हरब के साथ मिलकर क़त्ल करने में ये अ़ब्दुल्लाह शरीक थे। 73 हिजरी में हर्रा की लड़ाई में ये 72 साल की उ़म्र में शहीद हुए। रज़ियल्लाहु अ़न्हु व अरज़ाहू।

6575. मुझसे यह्या बिन हम्माद ने बयान किया, कहा हमसे अबू अ़वाना ने बयान किया, उनसे सुलैमान ने, उनसे शक़ीक़ ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने और उनसे नबी करीम (ﷺ) ने कि मैं तुमसे पहले ही हौज़ पर मौजूद रहूँगा। (दीगर मक़ामात : 6576, 7049)

٦٥٧٥- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ حَمَّادٍ، حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ، عَنْ سُلَيْمَانَ، عَنْ شَقِيقٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((أَنَا فَرَطُكُمْ عَلَى الْحَوْضِ)).

[طرفاه في : ٦٥٧٦، ٧٠٤٩].

6576. (दूसरी सनद) और मुझसे अ़म्र बिन अ़ली ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन जा'फ़र ने, कहा हमसे शुअ़बा ने, उनसे मुग़ीरह ने, कहा कि मैंने अबू वाइल से सुना और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, मैं अपने हौज़ पर तुमसे पहले ही मौजूद रहूँगा और तुममें से कुछ लोग मेरे सामने लाए जाएँगे फिर उन्हे मेरे सामने से हटा दिया जाएगा तो मैं कहूँगा कि ऐ मेरे रब! ये मेरे साथी हैं लेकिन मुझसे कहा जाएगा कि आप नहीं जानते कि इन्होंने आपके बाद दीन में क्या क्या नई चीज़ें ईजाद कर ली थीं। इस रिवायत की मुताबअ़त आ़सिम ने अबू वाइल से की, उनसे हुज़ैफ़ह (रज़ि.) ने और उनसे नबी करीम (ﷺ) ने बयान फ़र्माया। (राजेअ़ : 6575)

٦٥٧٦- وحَدَّثَنِي عَمْرُو بْنُ عَلِيٍّ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنِ الْمُغِيرَةِ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا وَائِلٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((أَنَا فَرَطُكُمْ عَلَى الْحَوْضِ، وَلَيُرْفَعَنَّ رِجَالٌ مِنْكُمْ ثُمَّ لَيُخْتَلَجُنَّ دُونِي، فَأَقُولُ يَا رَبِّ أَصْحَابِي؟ فَيُقَالُ إِنَّكَ لاَ تَدْرِي مَا أَحْدَثُوا بَعْدَكَ)). تَابَعَهُ عَاصِمٌ عَنْ أَبِي وَائِلٍ وَقَالَ حُصَيْنٌ: عَنْ أَبِي وَائِلٍ، عَنْ حُذَيْفَةَ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ. [راجع: ٦٥٧٥]

6577. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या ने बयान किया, उनसे उ़बैदुल्लाह ने, उनसे नाफ़ेअ़ ने बयान किया और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, तुम्हारे सामने ही हौज़ होगा वो इतना बड़ा है जितना जरबाअ और अज़रहाअ के बीच दूरी है।

٦٥٧٧- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، قَالَ حَدَّثَنَا يَحْيَى، عَنْ عُبَيْدِ اللهِ قَالَ حَدَّثَنِي نَافِعٌ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((أَمَامَكُمْ حَوْضٌ كَمَا بَيْنَ جَرْبَاءَ وَأَذْرُحَ)).

तश्रीह : जरबाअ और अज़रहाअ शाम के मुल्क में दो गाँव हैं जिनमें तीन दिन की राह है। एक हदीष़ में है कि मेरा हौज़ एक महीने की राह है। दूसरी हदीष़ में है कि जितनी दूरी ईला और सन्आ में है। तीसरी हदीष़ में है कि जितना फ़ासला मदीना और सन्आ में है। चौथी हदीष़ में है कि जितना फ़ासला ईला से अदन तक है। पाँचवीं हदीष़ में है कि जितना फ़ासला ईला से जुहैफ़ा तक है। ये सब आपने तक़रीबन लोगों को समझाने के लिये फ़र्माया जो जो मक़ाम वो पहचानते थे वो बयान किये। मुम्किन है किसी रिवायत मे तूल (लम्बाई) का बयान हो और किसी में अ़र्ज़ (चौड़ाई) का बयान। क़स्तलानी (रह़.) ने कहा कि ये सब मक़ाम क़रीब क़रीब एक ही दूरी रखते हैं या'नी आधे महीने की मसाफ़त (दूरी) या उससे कुछ ज़ाइद।

6578. मुझसे अम्र बन मुहम्मद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे हुशैम ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको अबू बिश्र और अता बिन साइब ने ख़बर दी, उन्हें सईद बिन जुबैर ने और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि कौषर से मुराद बहुत ज़्यादा भलाई (ख़ैरे कषीर) है जो अल्लाह तआला ने आँहज़रत (ﷺ) को दी है। अबू बिश्र ने बयान किया, कि मैंने सईद बिन जुबैर से कहा कि कुछ लोगों का ख़्याल है कि कौषर जन्नत में एक नहर है तो उन्होंने कहा कि जो नहर जन्नत में है वो भी उस ख़ैर (भलाई) का हिस्सा है जो अल्लाह तआला ने आँहज़रत (ﷺ) को दी है।

(राजेअ: 4966)

٦٥٧٨- حدَّثَنِي عَمْرُو بْنُ مُحَمَّدٍ، قَالَ أَخْبَرَنَا هُشَيْمٌ، قَالَ أَخْبَرَنَا أَبُو بِشْرٍ وَعَطَاءُ بْنُ السَّائِبِ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: الْكَوْثَرُ الْخَيْرُ الْكَثِيرُ الَّذِي أَعْطَاهُ اللهُ إِيَّاهُ قَالَ أَبُو بِشْرٍ: قُلْتُ لِسَعِيدٍ إِنَّ أُنَاسًا يَزْعُمُونَ أَنَّهُ نَهَرٌ فِي الْجَنَّةِ فَقَالَ سَعِيدٌ: النَّهَرُ الَّذِي فِي الْجَنَّةِ مِنَ الْخَيْرِ الَّذِي أَعْطَاهُ اللهُ إِيَّاهُ. [راجع: ٤٩٦٦]

6579. हमसे सईद बिन अबी मरयम ने बयान किया, कहा हमको नाफ़ेअ बिन उमर ने ख़बर दी, उनसे इब्ने अबी मुलैका ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, मेरा हौज़ एक महीने की मसाफ़त के बराबर होगा। उसका पानी दूध से ज़्यादा सफ़ेद और उसकी ख़ुश्बू मुश्क से ज़्यादा अच्छी होगी और उसके कूज़े (प्याले) आसमान के सितारों की ता'दाद के बराबर होंगे। जो शख़्स उसमें से एक मर्तबा पी लेगा वो फिर कभी भी (मैदाने महशर में) प्यासा न होगा।

٦٥٧٩- حدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ أَبِي مَرْيَمَ، حَدَّثَنَا نَافِعُ بْنُ عُمَرَ، عَنِ ابْنِ ابي مُلَيْكَةَ قَالَ: قَالَ عَبْدُ اللهِ بْنُ عَمْرٍو قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((حَوْضِي مَسِيرَةُ شَهْرٍ مَاؤُهُ أَبْيَضُ مِنَ اللَّبَنِ وَرِيحُهُ أَطْيَبُ مِنَ الْمِسْكِ، وَكِيزَانُهُ كَنُجُومِ السَّمَاءِ مَنْ يَشْرَبُ مِنْهَا فَلاَ يَظْمَأُ أَبَدًا)).

6580. हमसे सईद बिन उफ़ैर ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे इब्ने वहब ने बयान किया, उनसे यूनुस ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, मेरे हौज़ की लम्बाई इतनी होगी जितनी ईला और यमन के शहर सन्आ के बीच की लम्बाई है और वहाँ इतनी बड़ी ता'दाद में प्याले होंगे जितनी आसमान के सितारों की ता'दाद है।

٦٥٨٠- حدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ عُفَيْرٍ، قَالَ: حَدَّثَنِي ابْنُ وَهْبٍ، عَنْ يُونُسَ قَالَ ابْنُ شِهَابٍ، حَدَّثَنِي أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((إِنَّ قَدْرَ حَوْضِي كَمَا بَيْنَ أَيْلَةَ وَصَنْعَاءَ مِنَ الْيَمَنِ، وَإِنَّ فِيهِ مِنَ الأَبَارِيقِ كَعَدَدِ نُجُومِ السَّمَاءِ)).

6581. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, कहा हमसे हम्माम ने बयान किया, उनसे क़तादा ने, उनसे अनस (रज़ि.) ने और उनसे नबी करीम (ﷺ) ने (दूसरी सनद) और हमसे हुदबा बिन ख़ालिद ने बयान किया, कहा हमसे हम्माम ने

٦٥٨١- حدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ، حَدَّثَنَا هَمَّامٌ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ. وَحَدَّثَنَا هُدْبَةُ بْنُ خَالِدٍ، حَدَّثَنَا هَمَّامٌ،

बयान किया, कहा हमसे क़तादा ने बयान किया, कहा हमसे अनस बिन मालिक ने बयान किया और उनसे नबी करीम (ﷺ) ने बयान किया कि मैं जन्नत में चल रहा था कि मैं एक नहर पर पहुँचा, उसके दोनों किनारों पर ख़ोलदार मोतियों के गुम्बद बने हुए थे। मैंने पूछा जिब्रईल! ये क्या है? उन्होंने कहा ये कौषर है जो आपके रब ने आपको दिया है। मैंने देखा कि उसकी ख़ुश्बू या मिट्टी तेज़ मुश्क जैसी थी। रावी हुदबा को शक था। (राजेअ : 3570)

حَدَّثَنَا قَتَادَةُ، حَدَّثَنَا أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((بَيْنَمَا أَنَا أَسِيرُ فِي الْجَنَّةِ إِذَا أَنَا بِنَهَرٍ حَافَتَاهُ قِبَابُ الدُّرِّ الْمُجَوَّفِ، قُلْتُ: مَا هَذَا يَا جِبْرِيلُ؟ قَالَ: هَذَا الْكَوْثَرُ الَّذِي أَعْطَاكَ رَبُّكَ، فَإِذَا طِينُهُ أَوْ طِيبُهُ مِسْكٌ أَذْفَرُ)). شَكَّ هُدْبَةُ [راجع: ٣٥٧٠]

कि आपने मिट्टी फ़र्माया या ख़ुश्बू।

6582. हमसे मुस्लिम बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे वुहैब बिन ख़ालिद ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ ने बयान किया, उनसे अनस (रज़ि.) बयान करते हैं कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, मेरे कुछ साथी हौज़ पर मेरे सामने लाए जाएँगे और मैं उन्हें पहचान भी लूँगा लेकिन फिर वो मेरे सामने से हटा दिये जाएँगे। मैं उस पर कहूँगा कि ये तो मेरे साथी हैं। लेकिन मुझसे कहा जाएगा कि आपको मा'लूम नहीं कि उन्होंने आपके बाद क्या क्या नई चीज़ें ईजाद कर ली थीं।

٦٥٨٢- حَدَّثَنَا مُسْلِمُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، قَالَ حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ، قَالَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ، عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ قَالَ: ((لَيَرِدَنَّ عَلَيَّ نَاسٌ مِنْ أَصْحَابِي الْحَوْضَ حَتَّى عَرَفْتُهُمُ اخْتُلِجُوا دُونِي فَأَقُولُ أَصْحَابِي؟ فَيَقُولُ: لاَ تَدْرِي مَا أَحْدَثُوا بَعْدَكَ)).

मुर्तदीन, मुनाफ़िक़ीन और अहले बिदअ़त मुराद हैं।

6583. हमसे सईद बिन अबी मरयम ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन मुत़र्रिफ़ ने बयान किया, कहा कि मुझसे अबू ह़ाज़िम ने, उनसे सहल बिन सअ़द (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, मैं अपने ह़ौज़े कौषर पर तुमसे पहले मौजूद रहूँगा। जो शख़्स भी मेरी त़रफ़ से गुज़रेगा वो उसका पानी पियेगा और जो उसका पानी पियेगा वो फिर कभी प्यासा नहीं होगा और वहाँ कुछ ऐसे लोग भी आएँगे जिन्हें मैं पहचानूँगा और वो मुझे पहचानेंगे लेकिन फिर उन्हें मेरे सामने से हटा दिया जाएगा। (दीगर मक़ामात : 7050)

٦٥٨٣- حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ أَبِي مَرْيَمَ، قَالَ حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مُطَرِّفٍ، قَالَ حَدَّثَنِي أَبُو حَازِمٍ، عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِنِّي فَرَطُكُمْ عَلَى الْحَوْضِ مَنْ مَرَّ عَلَيَّ شَرِبَ، وَمَنْ شَرِبَ لَمْ يَظْمَأْ أَبَدًا، لَيَرِدَنَّ عَلَيَّ أَقْوَامٌ أَعْرِفُهُمْ وَيَعْرِفُونِي ثُمَّ يُحَالُ بَيْنِي وَبَيْنَهُمْ)). [طرفه في: ٧٠٥٠].

6584. अबू ह़ाज़िम ने बयान किया कि ये ह़दीष मुझसे नोअ़मान बिन अबी अ़य्याश ने सुनी और कहा कि क्या यूँ ही आपने सहल (रज़ि.) से सुनी थी ये ह़दीष? मैंने कहा हाँ! उन्होंने कहा कि मैं गवाही देता हूँ कि मैंने अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) से ये ह़दीष इस त़रह़ सुनी थी और वो इस ह़दीष में कुछ

٦٥٨٤- قَالَ أَبُو حَازِمٍ فَسَمِعَنِي النُّعْمَانُ بْنُ أَبِي عَيَّاشٍ فَقَالَ : هَكَذَا سَمِعْتَ مِنْ سَهْلٍ فَقُلْتُ: نَعَمْ فَقَالَ: أَشْهَدُ عَلَى أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ لَسَمِعْتُهُ، وَهُوَ يَزِيدُ فِيهَا فَأَقُولُ إِنَّهُمْ مِنِّي فَيُقَالُ: ((إِنَّكَ لاَ تَدْرِي

مَا أَحْدَثُوا بَعْدَكَ، فَأَقُولُ سُحْقًا سُحْقًا لِمَنْ غَيَّرَ بَعْدِي)). وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: سُحْقًا: بُعْدًا. يُقَالُ سَحِيقٌ : بَعِيدٌ . سَحَقَهُ وَأَسْحَقَهُ : أَبْعَدَهُ.

[طرفه في : ٧٠٥١].

ज़्यादती के साथ बयान करते थे। (या'नी ये कि आँहज़रत (ﷺ) फ़र्माएँगे कि) मैं कहूँगा कि ये तो मुझमें से हैं। आँहज़रत (ﷺ) से कहा जाएगा कि आपको नहीं मा'लूम कि इन्होंने आपके बाद दीन में क्या-क्या नई चीज़ें ईजाद कर ली थीं। उस पर मैं कहूँगा कि दूर हो वो शख़्स जिसने मेरे बाद दीन में तब्दीली कर ली थी। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि सुह़क़न बमा'नी बुअ़दन है। सह़ीक़न या'नी बईदन, अस्ह़क़हू या'नी अब्अ़दहू। (दीगर मक़ामात : 7051)

٦٥٨٥- وَقَالَ أَحْمَدُ بْنُ شَبِيبِ بْنِ سَعِيدِ الْحَبَطِيُّ، حَدَّثَنَا أَبِي، عَنْ يُونُسَ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّهُ كَانَ يُحَدِّثُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((يَرِدُ عَلَيَّ يَوْمَ الْقِيَامَةِ رَهْطٌ مِنْ أَصْحَابِي فَيُجْلَوْنَ عَنِ الْحَوْضِ فَأَقُولُ يَا رَبِّ أَصْحَابِي فَيَقُولُ: إِنَّكَ لاَ عِلْمَ لَكَ بِمَا أَحْدَثُوا بَعْدَكَ؟ إِنَّهُمُ ارْتَدُّوا عَلَى أَدْبَارِهِمُ الْقَهْقَرِي)). وَقَالَ شُعَيْبٌ: عَنِ الزُّهْرِيِّ كَانَ أَبُو هُرَيْرَةَ يُحَدِّثُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ فَيُجْلَوْنَ، وَقَالَ عُقَيْلٌ : فَيُحَلَّؤُونَ، وَقَالَ الزُّبَيْدِيُّ: عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَلِيٍّ، عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ أَبِي رَافِعٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ.[طرفه في : ٦٥٨٦].

6585. अह़मद बिन शबीब बिन सईद ह़ब्ती ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने बयान किया, उनसे यूनुस ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे सईद बिन मुसय्यब ने, उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि वो बयान करते थे कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, क़यामत के दिन मेरे स़ह़ाबा में से एक जमाअ़त मुझ पर पेश की जाएगी। फिर वो ह़ौज़े कौष़र से दूर कर दिये जाएँगे। मैं अ़र्ज़ करूँगा ऐ मेरे रब! ये तो मेरे स़ह़ाबा हैं। अल्लाह तआ़ला फ़र्माएगा कि तुम्हें मा'लूम नहीं कि इन्होंने तुम्हारे बाद क्या क्या नई चीज़ें गढ़ ली थीं। ये लोग (दीन से) उल्टे क़दमों वापस लौट गये थे। (दूसरी सनद) शुऐ़ब बिन अबी ह़म्ज़ा ने बयान किया, उनसे ज़ुह्री ने कि अबू हुरैरह (रज़ि.) नबी करीम (ﷺ) के ह़वाले से फ़युज्लौन (बजाय फ़युह़ल्लऊन) के बयान करते थे। और अ़क़ील फ़युह़ल्लऊन बयान करते थे और ज़ुबैदी ने बयान किया, उनसे ज़ुह्री ने, उनसे मुह़म्मद बिन अ़ली ने, उनसे उ़बैदुल्लाह बिन अबी राफ़ेअ़ ने, उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से। (दीगर मक़ामात : 6586)

तश्रीह़ : ये वो नामोनिहाद मुसलमान होंगे जिन्होंने दीन में नई नई बिदआ़त निकालकर दीन का हुलिया बिगाड़ दिया था मजालिसे मौलूदे मुरव्वजा, तीजा, फ़ातिह़ा, क़ब्रपरस्ती और उ़र्स करने वाले, ता'जियापरस्ती करने वाले, औलिया अल्लाह के मज़ारात को मसाजिद की त़रह बनाने वाले, मक्कार क़िस्म के पीर, फ़क़ीर, मुर्शिद व इमाम ये सारे लोग इस ह़दीष़ के मिस्दाक़ हैं ज़ाहिर में मुसलमान नज़र आते हैं लेकिन अंदर से शिर्क व बिदआ़त में ग़र्क़ हो चुके हैं। अल्लाह पाक ऐसे अहले बिदअ़त को आपके दस्ते मुबारक से जामे कौष़र नस़ीब नहीं करेगा। पस बिदआ़त से बचना हर मुख़्लिस़ मुसलमान के लिये ज़रूरी है। स़ह़ाबा से वो लोग मुराद हैं जो आपकी वफ़ात के बाद मुर्तद हो गये थे जिनसे ह़ज़रत स़िद्दीक़े अकबर (रज़ि.) ने जिहाद किया था।

٦٥٨٦- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ صَالِحٍ، حَدَّثَنَا

6586. हमसे अह़मद बिन स़ालेह़ ने बयान किया, उन्हने कहा

हमसे इब्ने वहब ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझे यूनुस ने ख़बर दी, उन्हे इब्ने शिहाब ने, उन्हें इब्ने मुसय्यब ने, वो नबी करीम (ﷺ) के सहाबा से रिवायत करते थे कि आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, हौज़ पर मेरे सहाबा की एक जमाअत आएगी। फिर उन्हें उससे दूर कर दिया जाएगा। मैं अर्ज़ करूँगा मेरे रब! ये तो मेरे सहाबा हैं। अल्लाह तआला फ़र्माएगा कि तुम्हें मा'लूम नहीं कि इन्होंने तुम्हारे बाद क्या क्या नई चीज़ें ईजाद कर ली थीं, ये उल्टे पैर (इस्लाम से) वापस लौट गये थे। (राजेअ : 6585)

ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي يُونُسُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنِ ابْنِ الْمُسَيَّبِ أَنَّهُ كَانَ يُحَدِّثُ عَنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: ((يَرِدُ عَلَيَّ الْحَوْضَ رِجَالٌ مِنْ أَصْحَابِي فَيُحَلَّؤُونَ عَنْهُ، فَأَقُولُ، يَا رَبِّ أَصْحَابِي فَيَقُولُ : إِنَّكَ لاَ عِلْمَ لَكَ بِمَا أَحْدَثُوا بَعْدَكَ؟ إِنَّهُمُ ارْتَدُّوا عَلَى أَدْبَارِهِمُ الْقَهْقَرِي)). [راجع: ٦٥٨٥]

6587. हमसे इब्राहीम बिन मुंज़िर हिज़ामी ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन फ़ुलैह ने, कहा हमसे हमारे वालिद ने, कहा कि मुझसे हिलाल ने, उनसे अ़ता बिन यसार ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया मैं (हौज़ पर) खड़ा होऊँगा कि एक जमाअ़त मेरे सामने आएगी और जब मैं उन्हें पहचान लूँगा तो एक शख़्स (फ़रिश्ता) मेरे और उनके बीच से निकलेगा और उनसे कहेगा कि इधर आओ। मैं कहूँगा कि किधर? वो कहेगा कि वल्लाह! जहन्नम की तरफ़। मैं कहूँगा कि इनके हालात क्या हैं? वो कहेगा कि ये लोग आपके बाद उल्टे पैर (दीन से) वापस लौट गये थे। फिर एक और गिरोह मेरे सामने आएगा और जब मैं उन्हें भी पहचान लूँगा तो एक शख़्स (फ़रिश्ता) मेरे और उनके बीच में से निकलेगा और उनसे कहेगा कि इधर आओ। मैं पूछूँगा कि कहाँ? तो वो कहेगा, अल्लाह की क़सम जहन्नम की तरफ़। मैं कहूँगा कि इनके हालात क्या हैं? फ़रिश्ता कहेगा कि ये लोग आपके बाद उल्टे पैर वापस लौट गये थे। मैं समझता हूँ कि इन गिरोहों में से एक आदमी भी नहीं बचेगा। इन सबको दोज़ख़ में ले जाएँगे।

٦٥٨٧- حَدَّثَنِي إِبْرَاهِيمُ بْنُ الْمُنْذِرِ الْحِزَامِيُّ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ فُلَيْحٍ، حَدَّثَنَا أَبِي حَدَّثَنِي هِلاَلٌ، عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ ((بَيْنَا أَنَا قَائِمٌ، فَإِذَا زُمْرَةٌ حَتَّى إِذَاعَرَفْتُهُمْ خَرَجَ رَجُلٌ مِنْ بَيْنِي وَبَيْنِهِمْ فَقَالَ هَلُمَّ فَقُلْتُ أَيْنَ قَالَ إِلَى النَّارِ وَاللهِ، قُلْتُ: وَمَا شَأْنُهُمْ؟ : قَالَ : إِنَّهُمُ ارْتَدُّوا بَعْدَكَ عَلَى أَدْبَارِهِمُ الْقَهْقَرِي، ثُمَّ إِذَا زُمْرَةٌ حَتَّى إِذَا عَرَفْتُهُمْ خَرَجَ رَجُلٌ مِنْ بَيْنِي وَبَيْنِهِمْ فَقَالَ هَلُمَّ، قُلْتُ: أَيْنَ؟ قَالَ: إِلَى النَّارِ وَاللهِ، قُلْتُ: مَا شَأْنُهُمْ؟ قَالَ: إِنَّهُمُ ارْتَدُّوا بَعْدَكَ عَلَى أَدْبَارِهِمُ الْقَهْقَرِي، فَلاَ أُرَاهُ يَخْلُصُ مِنْهُمْ إِلاَّ مِثْلُ هَمَلِ النَّعَمِ)).

6588. मुझसे इब्राहीम बिन मुंज़िर ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे अनस बिन अ़याज़ ने बयान किया, उनसे उ़बैदुल्लाह ने बयान किया, उनसे ख़ुबैब बिन अ़ब्दुर्रहमान ने, उनसे हफ़्स बिन आ़सिम ने बयान किया और उनसे अबू हुरैरह

٦٥٨٨- حَدَّثَنِي إِبْرَاهِيمُ بْنُ الْمُنْذِرِ قَالَ حَدَّثَنَا أَنَسُ بْنُ عِيَاضٍ، عَنْ عُبَيْدِ اللهِ، عَنْ خُبَيْبِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ حَفْصِ بْنِ

عَاصِمٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((مَا بَيْنَ بَيْتِي وَمِنْبَرِي رَوْضَةٌ مِنْ رِيَاضِ الْجَنَّةِ، وَمِنْبَرِي عَلَى حَوْضِي)). [راجع: ١١٩٦]

(रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि मेरे घर और मेरे मिम्बर के बीच का हिस्सा जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ है और मेरा मिम्बर हौज़े कौषर पर है। (राजेअ़ : 1196)

٦٥٨٩- حَدَّثَنَا عَبْدَانُ، أَخْبَرَنِي أَبِي عَنْ شُعْبَةَ، عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ قَالَ: سَمِعْتُ جُنْدَبًا قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((أَنَا فَرَطُكُمْ عَلَى الْحَوْضِ)). [راجع: ٣٨٤١]

6589. हमसे अ़ब्दान ने बयान किया, कहा मुझको मेरे वालिद ने ख़बर दी, उन्हें शुअ़बा ने, उनसे अ़ब्दुल मलिक ने बयान किया, कहा कि मैंने जुन्दुब (रज़ि .) से सुना, कहा कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना, आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैं हौज़ पर तुमसे पहले से मौजूद रहूँगा। (राजेअ : 3841)

٦٥٩٠- حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ خَالِدٍ، قَالَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ يَزِيدَ، عَنْ أَبِي الْخَيْرِ، عَنْ عُقْبَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ خَرَجَ يَوْمًا فَصَلَّى عَلَى أَهْلِ أُحُدٍ صَلاَتَهُ عَلَى الْمَيِّتِ ثُمَّ انْصَرَفَ عَلَى الْمِنْبَرِ فَقَالَ ((إِنِّي فَرَطٌ لَكُمْ، وَأَنَا شَهِيدٌ عَلَيْكُمْ، وَإِنِّي وَاللهِ لأَنْظُرُ إِلَى حَوْضِي الآنَ، وَإِنِّي أُعْطِيتُ مَفَاتِيحَ خَزَائِنِ الأَرْضِ - أَوْ مَفَاتِيحَ الأَرْضِ - وَإِنِّي وَاللهِ مَا أَخَافُ عَلَيْكُمْ أَنْ تُشْرِكُوا بَعْدِي، وَلَكِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ أَنْ تَنَافَسُوا فِيهَا)). [راجع: ١٣٤٤]

6590. हमसे अ़म्र बिन ख़ालिद ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ ने बयान किया, उनसे यज़ीद ने, उनसे अबुल ख़ैर मुर्षिद बिन अ़ब्दुल्लाह ने और उनसे उ़क़्बा बिन आ़मिर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) बाहर तशरीफ़ लाए और उहुद के शहीदों के लिये इस त़रह दुआ की जिस त़रह मय्यत के लिये जनाज़ा में दुआ की जाती है। फिर आप मिम्बर पर तशरीफ़ लाए और फ़र्माया लोगों! मैं तुमसे आगे जाऊँगा और तुम पर गवाह रहूँगा और मैं वल्लाह! अपने हौज़ की त़रफ़ इस वक़्त भी देख रहा हूँ और मुझे ज़मीन के ख़ज़ानों की चाबियाँ दी गई हैं या फ़र्माया कि ज़मीन की चाबियाँ दी गई हैं। अल्लाह की क़सम! मैं तुम्हारे बारे में इस बात से नहीं डरता कि तुम मेरे बाद शिर्क करोगे, अल्बत्ता इससे डरता हूँ कि तुम दुनिया की लालच में पड़कर एक दूसरे से हसद करने लगोगे। (राजेअ़ : 1344)

٦٥٩١- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ، قَالَ حَدَّثَنَا حَرَمِيُّ بْنُ عُمَارَةَ، قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ مَعْبَدِ بْنِ خَالِدٍ أَنَّهُ سَمِعَ حَارِثَةَ بْنَ وَهْبٍ يَقُولُ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ وَذَكَرَ الْحَوْضَ فَقَالَ: ((كَمَا بَيْنَ الْمَدِينَةِ وَصَنْعَاءَ)).

6591. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे हरमिय्य बिन अ़म्मारा ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे मअ़बद बिन ख़ालिद ने बयान किया, उन्होंने हारिषा बिन वहब (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना। आँहज़रत (ﷺ) ने हौज का ज़िक्र किया और फ़र्माया कि (वो इतना बड़ा है) जितनी मदीना और स़न्आ के बीच दूरी है।

٦٥٩٢- وَزَادَ ابْنُ أَبِي عَدِيٍّ، عَنْ شُعْبَةَ، عَنْ مَعْبَدِ بْنِ خَالِدٍ، عَنْ حَارِثَةَ

6592. और इब्ने अबू अ़दी मुहम्मद बिन इब्राहीम ने भी शुअ़बा से रिवायत किया, उनसे मअ़बद बिन ख़ालिद ने और उनसे हारिषा (रज़ि.) ने कि उन्होंने नबी करीम (ﷺ) का ये

سَمِعَ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَوْضَهُ مَا بَيْنَ صَنْعَاءَ وَالْمَدِينَةِ فَقَالَ لَهُ الْمُسْتَوْرِدُ: أَلَمْ تَسْمَعْهُ؟ قَالَ : الأَوَانِي قَالَ : لاَ، قَالَ الْمُسْتَوْرِدُ : تُرَى فِيهِ الآنِيَةُ مِثْلَ الْكَوَاكِبِ.

इर्शाद सुना, उसमें इतना ज़्यादा है कि आपका हौज़ इतना लम्बा होगा जितनी स़न्आ और मदीना के बीच दूरी है। इस पर ह़ज़रत मुस्तौरदि ने कहा क्या आपने बर्तनों वाली रिवायत नहीं सुनी? उन्होंने कहा कि नहीं। मुस्तौरद ने कहा कि उसमें बर्तन (पीने के) इस त़रह़ नज़र आएँगे जिस त़रह़ आसमान में सितारे नज़र आते हैं।

या'नी बेशुमार और चमकदार होंगे।

٦٥٩٣- حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ أَبِي مَرْيَمَ، عَنْ نَافِعِ عَنْ بْنِ عُمَرَ قَالَ: حَدَّثَنِي ابْنُ أَبِي مُلَيْكَةَ، عَنْ أَسْمَاءَ بِنْتِ أَبِي بَكْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَتْ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِنِّي عَلَى الْحَوْضِ حَتَّى أَنْظُرَ مَنْ يَرِدُ عَلَيَّ مِنْكُمْ، وَسَيُؤْخَذُ نَاسٌ دُونِي فَأَقُولُ: يَا رَبِّ مِنِّي وَمِنْ أُمَّتِي فَيُقَالُ: هَلْ شَعَرْتَ مَا عَمِلُوا بَعْدَكَ وَاللهِ مَا بَرِحُوا يَرْجِعُونَ عَلَى أَعْقَابِهِمْ؟)). فَكَانَ ابْنُ أَبِي مُلَيْكَةَ يَقُولُ : اللَّهُمَّ إِنَّا نَعُوذُ بِكَ أَنْ نَرْجِعَ عَلَى أَعْقَابِنَا أَوْ نُفْتَنَ عَنْ دِينِنَا. قَالَ أَبُو عَبْدِ اللهِ أَعْقَابِكُمْ تَنْكِصُونَ: تَرْجِعُونَ عَلَى الْعَقِبِ.

6593. हमसे सईद बिन अबी मरयम ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ बिन उ़मर ने, कहा कि मुझसे इब्ने अबी मुलैका ने बयान किया, उनसे अस्मा बिन्ते अबीबक्र (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, मैं ह़ौज़ पर मौजूद रहूँगा और देखूँगा कि तुममें से कौन मेरे पास आता है। फिर कुछ लोगों को मुझसे अलग कर दिया जाएगा। मैं अ़र्ज़ करूँगा कि ऐ मेरे रब! ये तो मेरे ही आदमी हैं और मेरी उम्मत के लोग हैं। मुझसे कहा जाएगा कि तुम्हें मा'लूम भी है इन्होंने तुम्हारे बाद क्या काम किये थे? वल्लाह ये मुसलसल उल्टे पैर लौटते रहे। (दीन इस्लाम से फिर गये) इब्ने अबी मुलैका (जो कि ये ह़दीष़ ह़ज़रत अस्मा से रिवायत फ़र्माते हैं) कहा करते थे कि ऐ अल्लाह! हम इस बात से तेरी पनाह मांगते हैं कि हम उल्टे पैर (दीन से) लौट जाएँ या अपने दीन के बारे में फ़ित्ने में डाल दिये जाएँ। अबू अ़ब्दुल्लाह इमाम बुख़ारी (रह़.) ने कहा कि सूरह मोमिनून में जो फ़र्माने इलाही है अअ़क़ाबिकुम तन्किसून उसका मा'नी भी यही है कि तुम दीन से अपनी ऐड़ियों के बल उल्टे फिर गये थे या'नी इस्लाम से मुर्तद हो गये थे।

82. किताबुल क़द्र

किताब तक़दीर के बयान में

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

तश्रीह : तक़्दीर पर ईमान लाना ईमान का हिस्सा है। अकष़र नुस्ख़ों में यहाँ सिर्फ़ बाब फ़िल क़द्र है। फ़त्हुल बारी में इस त़रह है जैसा कि यहाँ नक़्ल किया गया। अल्लाह पाक ने फ़र्माया। **इन्ना कुल्ल शैइन ख़लक़्नाहु बिक़द्र** (अल क़मर : 49) मैंने हर चीज़ को तक़्दीर के तहत पैदा किया है। **क़ाल अबुल मुज़फ़्फ़र बिन अस्समआनी फ़ी सबीलि मअरिफ़ति हाज़ल बाबि अत्तौक़ीफ़ु मिनल किताबि वस्सुन्नति दून महज़िल क़ियासि वल्अक़्लि फ़मन अद्ल अनित्तौक़िफ़ि फ़ीहि ज़ल्ल व ताह फ़ी बिहारिल्हीरति व लम यब्लुग शिफ़ाअल ऐनि व ला मा यत्मइन्नु बिहिल्क़ल्बु लिअन्नल क़दर सिर्रूम्मिन अस्रारिल्लाहि तआला इख़्तस्सल अलीमुल ख़बीरु बिही व ज़रब दूनहुल अस्तार व हजबहू अन उक़ूलिल ख़ल्क़ि व मआरिफ़िहिम लिमा अल्लमहू मिनल हिक्मति फ़लम युअल्लूमहू नबिय्युन मुर्सलुन व ला मलकुन मुक़र्रबुन** (फ़त्हुल बारी) ख़ुलास़ा इस इबारत का ये है कि, तक़्दीर का बाब सिर्फ़ किताब व सुन्नत की रोशनी में समझने पर मौक़ूफ़ है। उसमें क़यास और अक़्ल का मुत्लक़ दख़ल नहीं है जो शख़्स किताब व सुन्नत की रोशनी से हटकर उसे समझने की कोशिश में लगा वो गुमराह हो गया और हैरत व इस्तिअजाब के दरिया में डूब गया और उसने चश्मे शफ़ा को नहीं पाया और न उस चीज़ तक पहुँच सका जिससे उसका दिल मुत्मइन हो सकता। इसलिये कि तक़्दीर अल्लाह के भेदों में से एक ख़ास़ भेद है। अल्लाह ने अपनी ज़ाते अलीम व ख़बीर के साथ इसको ख़ास़ किया है और मख़्लूक़ की अक़्लों और उनके उ़लूम के और तक़्दीर के बीच में परदे डाल दिये हैं। ये ऐसी हिक्मत है जिसका इल्म किसी मुर्सल नबी और मुक़र्रब फ़रिश्ते को भी नहीं दिया गया।

पस तक़्दीर पर ईमान लाना फ़र्ज़ है और ये ईमान का हिस्सा है या'नी जो कुछ बुरा भला छोटा बड़ा दुनिया में क़यामत तक होने वाला था वो सब अल्लाह तआला के इल्मे अज़्ली में ठहर चुका है। उसी के मुत़ाबिक़ ज़ाहिर होगा और बन्दे को एक ज़ाहिरी इख़्तियार दिया गया है जिसे कसब कहते हैं। ह़ासिल ये है कि बन्दा न बिलकुल मजबूर है न बिलकुल मुख़्तार है। अहले सुन्नत वल जमाअत और स़हाबा किराम और जमाअते सलफ़ स़ालिहीन का यही ए'तिक़ाद था। फिर क़दरिया और जबरिया पैदा हुए। क़दरिया कहने लगे कि बन्दे के अफ़आ़ल में अल्लाह तआला को कुछ दाख़िल नहीं है, वो अपने अफ़आ़ल का ख़ुद ख़ालिक़ है और जो करता है अपने इख़्तियार से करता है। जबरिया कहने लगे कि बन्दा जमादात की त़रह बिलकुल मजबूर है, उसको अपने किसी फ़ेअल का कोई इख़्तियार नहीं। एक ने इफ़रात़ की राह और दूसरे ने तफ़्रीत़ की राह इख़्तियार की। अहले सुन्नत बीच में हैं। जा'फ़र स़ादिक़ (रज़ि.) (ह़ज़रत हुसैन रज़ि. के पोते) ने फ़र्माया **ला जबर व ला तफ़्वीज़ व लाकिन अम्रुन अमरैन।** इमाम इब्ने सम्आनी ने कहा कि तक़्दीर अल्लाह पाक का एक राज़ है जो दुनिया में किसी पर ज़ाहिर नहीं हुआ यहाँ तक कि पैग़म्बरों पर भी नहीं, बहरहाल तक़्दीर पर ईमान लाना फ़र्ज़ है। तक़्दीर में लिखे हुए उमूर बिला किसी ज़ाहिरी सबब के ज़ाहिर हो जाते हैं जिनमें से एक ये बुख़ारी शरीफ़ मुतर्जम उर्दू की इशाअ़त भी है वरना मैं किसी भी सूरत से इस अ़ज़ीम ख़िदमत का अहल न था **व लाकिन कान अम्रुल्लाहि मफ़्ऊ़ला व कान अम्रुल्लाहि क़दरम मक़्दूरा, फ़लिल्लाहिल ह़म्दु ह़म्दन कष़ीरा, तक़ब्बलहुल्लाहु**, आमीन।

6594. हमसे अबुल वलीद हिशाम बिन अ़ब्दुल मलिक ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, कहा मुझको सुलैमान आ'मश ने ख़बर दी, कहा कि मैंने ज़ैद बिन वहब से सुना, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने बयान किया कि हमको रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ये बयान सुनाया और आप सच्चों के सच्चे थे और आपकी सच्चाई की ज़बरदस्त गवाही दी गई। फ़र्माया कि तुममें से हर शख़्स पहले अपनी माँ के पेट में चालीस दिन तक नुत्फ़ा ही रखा जाता है। फिर इतनी ही मुद्दत में अ़लक़ह या'नी ख़ून की फुटकी (बस्ता ख़ून) बनता है फिर इतने ही अ़र्से में मुज़ग़ा (या'नी गोश्त का लोथड़ा) फिर चार माह बाद अल्लाह तआ़ला एक फ़रिश्ता भेजता है और उसके बारे में (माँ के पेट ही में) चार बातों के लिखने का हुक्म दिया जाता है। उसकी रोज़ी का, उसकी मौत का, उसका कि वो बदबख़्त है या नेकबख़्त। पस वल्लाह! तुममें से एक शख़्स दोज़ख़ वालों के से काम करता रहता है और जब उसके और दोज़ख़ के बीच सिर्फ़ एक बालिश्त की दूरी या एक हाथ की दूरी बाक़ी रह जाती है तो उसकी तक़्दीर उस पर ग़ालिब आ जाती है और वो जन्नत वालों के से काम करने लगता है और जन्नत में जाता है। इसी तरह एक शख़्स जन्नत वालों के से काम करता रहता है और जब उसके और जन्नत के बीच एक हाथ की दूरी बाक़ी रह जाती है तो उसकी तक़्दीर उस पर ग़ालिब आ जाती है और वो दोज़ख़ वालों के काम करने लगता है और दोज़ख़ में जाता है। इमाम बुख़ारी (रह.) कहते हैं कि आदम बिन अबी अयास ने अपनी रिवायत में यूँ कहा कि जब एक हाथ की दूरी रह जाती है। (राजेअ़ : 3208)

٦٥٩٤- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ هِشَامُ بْنُ عَبْدِ الْمَلِكِ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، أَنْبَأَنِي سُلَيْمَانُ الأَعْمَشُ قَالَ: سَمِعْتُ زَيْدَ بْنَ وَهْبٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ قَالَ: حَدَّثَنَا رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ الصَّادِقُ الْمَصْدُوقُ قَالَ: ((إِنَّ أَحَدَكُمْ يُجْمَعُ فِي بَطْنِ أُمِّهِ أَرْبَعِينَ يَوْمًا، ثُمَّ يَكُونُ عَلَقَةً مِثْلَ ذَلِكَ، ثُمَّ يَكُونُ مُضْغَةً مِثْلَ ذَلِكَ، ثُمَّ يَبْعَثُ اللهُ مَلَكًا فَيُؤْمَرُ بِأَرْبَعٍ: بِرِزْقِهِ، وَأَجَلِهِ، وَشَقِيٌّ، أَوْ سَعِيدٌ، فَوَ اللهِ إِنَّ أَحَدَكُمْ أَوِ الرَّجُلَ يَعْمَلُ بِعَمَلِ أَهْلِ النَّارِ حَتَّى مَا يَكُونُ بَيْنَهُ وَبَيْنَهَا غَيْرُ بَاعٍ أَوْ ذِرَاعٍ فَيَسْبِقُ عَلَيْهِ الْكِتَابُ فَيَعْمَلُ بِعَمَلِ أَهْلِ الْجَنَّةِ فَيَدْخُلُهَا، وَإِنَّ الرَّجُلَ لَيَعْمَلُ بِعَمَلِ أَهْلِ الْجَنَّةِ، حَتَّى مَا يَكُونُ بَيْنَهُ وَبَيْنَهَا غَيْرُ ذِرَاعٍ، أَوْ ذِرَاعَيْنِ فَيَسْبِقُ عَلَيْهِ الْكِتَابُ فَيَعْمَلُ بِعَمَلِ أَهْلِ النَّارِ فَيَدْخُلُهَا)). قَالَ أَبُو عَبْدِ اللهِ قَالَ آدَمُ : إِلاَّ ذِرَاعٌ.

[راجع: ٣٢٠٨]

तशरीह : या'नी इससे जन्नत और जहन्नम की दूरी उतनी ही रह जाती है क़िस्मत ग़ालिब आती है और वो तक़्दीर के मुताबिक़ जन्नत या जहन्नम में दाख़िल किया जाता है। **अल्लाहुम्म इन् कुन्त कतब्तनी मिन अहलिन्नारि फ़म्हहू फ़इन्नक तमहू मा तशाउ व तुष्बितु व इन्दक उम्मुल किताब**, आमीन।

दूसरी रिवायत में इतना ज़्यादा है कि वो उसमें रूह फूँकता है, तो रूह चार महीने के बाद फूँकी जाती है। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) की रिवायत में यूँ है कि चार महीने दस दिन के बाद। क़ाज़ी अयाज़ ने कहा इस पर उ़लमा का इत्तिफ़ाक़ है कि रूह एक सौ बीस दिन के बाद फूँकी जाती है और मुशाहिदा और जनीन की हरकत से भी यही ष़ाबित होता है। मैं (वहीदुज़्ज़माँ) कहता हूँ कि इस ज़माने के हकीमों और डॉक्टरों ने मुशाहिदे और तजुर्बे से ष़ाबित किया है कि चार महीने गुज़रने से पहले ही जनीन में जान पड़ जाती है। अब जिन रिवायतों में रूह फूँकने का ज़िक्र नहीं है जैसे इमाम बुख़ारी (रह.) की इस रिवायत में है उनमें तो कोई इश्काल ही न होगा लेकिन जिन रिवायतों में इसका ज़िक्र है तो हदीष़ ग़लत नहीं हो सकती बल्कि हकीमो और डॉक्टरों का दा'वा ग़लत है और ये भी मुम्किन है कि रूहे हैवानी चार महीने से पहले ही जनीन में पड़ जाती है लेकिन हदीष़ में रूह से मुराद रूहे इंसानी या'नी

नफ़्से नातिक़ा है। वो चार महीने दस दिन के बाद ही बदन के बारे में होता है।

6595. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद ने बयान किया, उनसे उबैदुल्लाह बिन अबूबक्र बिन अनस ने और अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, अल्लाह तआला ने रहमे मादर पर एक फ़रिश्ता मुक़र्रर कर दिया है और वो कहता रहता है कि ऐ रब! ये नुत्फ़ा क़रार पाया है। ऐ रब! अब अलक़ा या'नी जमा हुआ ख़ून बन गया है। ऐ रब! अब मुज़्ग़ा (गोश्त का लोथड़ा) बन गया है। फिर जब अल्लाह तआला चाहता है कि उसकी पैदाइश पूरी करे तो वो पूछता है ऐ रब! लड़का है या लड़की? नेक है या बुरा? उसकी रोज़ी क्या होगी? उसकी मौत कब होगी? इसी तरह ये सब बातें माँ के पेट ही में लिख दी जाती हैं। दुनिया में उसी के मुताबिक़ ज़ाहिर होता है। (राजेअ : 318)

٦٥٩٥- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ أَبِي بَكْرِ بْنِ أَنَسٍ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((وَكَّلَ اللهُ بِالرَّحِمِ مَلَكًا فَيَقُولُ: أَيْ رَبِّ نُطْفَةٌ؟ أَيْ رَبِّ عَلَقَةٌ؟ أَيْ رَبِّ مُضْغَةٌ؟ فَإِذَا أَرَادَ اللهُ أَنْ يَقْضِيَ خَلْقَهَا قَالَ: يَا رَبِّ ذَكَرٌ أَمْ أُنْثَى أَشَقِيٌّ أَمْ سَعِيدٌ، فَمَا الرِّزْقُ فَمَا الأَجَلُ؟ فَيُكْتَبُ كَذَلِكَ فِي بَطْنِ أُمِّهِ)).
[راجع: ٣١٨]

बाब 2 : अल्लाह के इल्म (तक़्दीर) के मुताबिक़ क़लम ख़ुश्क हो गया

٢- باب جَفَّ الْقَلَمُ عَلَى عِلْمِ اللهِ

और अल्लाह ने फ़र्माया जैसा अल्लाह के इल्म में था उसके मुताबिक़ उनको गुमराह कर दिया। (ये बाब का तर्जुमा ख़ुद एक हदीष में मज़्कूर है जिसे इमाम अहमद और इब्ने हिब्बान ने निकाला है। और अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि मुझसे नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि जो कुछ तुम्हारे साथ होने वाला है, उस पर क़लम ख़ुश्क हो चुका है (वो लिखा जा चुका है) इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने लहा साबिक़ून की तफ़्सीर में फ़र्माया कि नेकबख़्ती पहले ही उनके मुक़द्दर में लिखी जा चुकी है।

﴿وَأَضَلَّهُ اللهُ عَلَى عِلْمٍ﴾ [الجاثية: ٢٣]. وَقَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ: قَالَ لِي النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ. ((جَفَّ الْقَلَمُ بِمَا أَنْتَ لاَقٍ)). قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ : لَهَا سَابِقُونَ سَبَقَتْ لَهُمُ السَّعَادَةُ.

6596. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, कहा हमसे यज़ीद रिश्क ने बयान किया, उन्होंने मुतर्रिफ़ बिन अब्दुल्लाह बिन शिख़ैरि से सुना, वो इमरान बिन हुसैन (रज़ि.) से बयान करते थे, उन्होंने कहा कि एक साहब ने (या'नी ख़ुद उन्होंने) अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! क्या जन्नत के लोग जहन्नमियों मे से पहचाने जा चुके हैं । आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, हाँ! उन्होंने कहा कि फिर अमल करने वाले क्यूँ अमल करें ? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि हर शख़्स वही अमल करता है जिसके लिये वो पैदा किया गया है या जिसके लिये उसे सहूलत दी

٦٥٩٦- حَدَّثَنَا آدَمُ، قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، قَالَ حَدَّثَنَا يَزِيدُ الرِّشْكُ، قَالَ : سَمِعْتُ مُطَرِّفَ بْنَ عَبْدِ اللهِ بْنِ الشِّخِّيرِ يُحَدِّثُ عَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ، قَالَ : قَالَ رَجُلٌ يَا رَسُولَ اللهِ أَيُعْرَفُ أَهْلُ الْجَنَّةِ مِنْ أَهْلِ النَّارِ؟ قَالَ: ((نَعَمْ)) قَالَ: فَلِمَ يَعْمَلُ الْعَامِلُونَ؟ قَالَ: ((كُلٌّ يَعْمَلُ لِمَا خُلِقَ لَهُ أَوْ لِمَا يُسِّرَ لَهُ)).

गई है। (दीगर मक़ाम : 7551)

[طرفه في : ٧٥٥١].

रिश्क बि-कस्र यज़ीद का लक़ब है, इनकी दाढ़ी बहुत ही लम्बी थी। ह़दीष़ का मत़लब ये है कि हर शख़्स़ को लाज़िम है कि नेक कामों की कोशिश करे और अल्लाह से जन्नती होने की दुआ भी करे क्योंकि दुआ से अल्लाह तआला ख़ुश होता है और दुआ करना भी तक़्दीर से है।

बाब 3 : इस बयान में कि मुश्रिकों की औलाद का ह़ाल अल्लाह ही को मा'लूम कि अगर वो बड़े होते, ज़िन्दा रहते तो कैसे अमल करते

٣- باب ا لله أَعْلَمُ بِمَا كَانُوا عَامِلِينَ

6597. हमसे मुह़म्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे ग़ुन्दर मुह़म्मद बिन जा'फ़र ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे अबू बिश्र ने, उनसे सईद बिन जुबैर ने और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) से मुश्रिकीन की औलाद के बारे में सवाल किया गया तो आपने फ़र्माया कि अल्लाह को ख़ूब मा'लूम है कि वो (बड़े होकर) क्या अ़मल करते। (राजेअ़ : 1383)

٦٥٩٧- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، قَالَ حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ، قَالَ : قَالَ حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ أَبِي بِشْرٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: سُئِلَ النَّبِيُّ ﷺ عَنْ أَوْلاَدِ الْمُشْرِكِينَ فَقَالَ: ((ا لله أَعْلَمُ بِمَا كَانُوا عَامِلِينَ)). [راجع: ١٣٨٣]

6598. हमसे यह़्या बिन बुकैर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे यूनुस ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझे अ़त़ा बिन यज़ीद ने ख़बर दी, उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) से मुश्रिकीन की औलाद के बारे में पूछा गया तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि अल्लाह ख़ूब जानता है कि वो क्या अ़मल करत? (राजेअ़ : 1384)

٦٥٩٨- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ، قَالَ حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ يُونُسَ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَطَاءُ بْنُ يَزِيدَ أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ يَقُولُ: سُئِلَ رَسُولُ ا لله ﷺ عَنْ ذَرَارِيِّ الْمُشْرِكِينَ فَقَالَ: ((ا لله أَعْلَمُ بِمَا كَانُوا عَامِلِينَ)). [راجع: ١٣٨٤]

6599. मुझसे इस्ह़ाक़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने ख़बर दी, कहा हमको मअ़मर ने ख़बर दी, उन्हें हम्माम ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कोई बच्चा ऐसा नहीं है जो फ़ित़रत पर न पैदा होता हो। लेकिन उसके वालदैन उसे यहूदी या नस़रानी बना देते हैं जैसाकि तुम्हारे जानवरों के बच्चे पैदा होते हैं। क्या उनमें कोई कनकटा पैदा होता है? वो तो तुम ही उसका कान काट देते हो। (राजेअ़ : 1358)

٦٥٩٩- حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ، قَالَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، قَالَ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنْ هَمَّامٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ : قَالَ رَسُولُ ا لله ﷺ: ((مَا مِنْ مَوْلُودٍ إِلاَّ يُولَدُ عَلَى الْفِطْرَةِ، فَأَبَوَاهُ يُهَوِّدَانِهِ وَيُنَصِّرَانِهِ، كَمَا تُنْتِجُونَ الْبَهِيمَةَ هَلْ تَجِدُونَ فِيهَا مِنْ جَدْعَاءَ حَتَّى تَكُونُوا أَنْتُمْ تَجْدَعُونَهَا؟)). [راجع: ١٣٥٨]

6600. स़ह़ाबा ने अ़र्ज़ किया फिर या रसूलल्लाह (ﷺ)! उस बच्चे के बारे में क्या ख़्याल है जो बचपन ही में मर गया हो? आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि अल्लाह ख़ूब जानता है कि वो (बड़ा

٦٦٠٠- قَالُوا : يَا رَسُولَ ا لله أَفَرَأَيْتَ مَنْ يَمُوتُ وَهُوَ صَغِيرٌ قَالَ: ((ا لله أَعْلَمُ

होकर) क्या अमल करता। (राजेअ : 1384)

بِمَا كَانُوا عَامِلِينَ)). [راجع: ١٣٨٤]

तश्रीह : औलादे मुश्रिकीन के बारे में बहुत से क़ौल हैं कुछ ने इस मसले में तवक़्क़ुफ़ किया है और अल्लाह ख़ूब जानता है जो होने वाला है। मालिक अपने मुल्क का मुख़्तार है। **सुब्हानक ला इल्म लना इल्ला मा अ़ल्लम्तना इन्नक अन्तल अ़लीमुल ह़कीम।**

बाब 4 : और अल्लाह ने जो हुक्म दिया है (तक़्दीर में जो कुछ लिख दिया है) वो ज़रूर होकर रहेगा

٤- باب قَوْلِهِ وَكَانَ أَمْرُ اللهِ قَدَرًا مَقْدُورًا

6601. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें अबज़्ज़िनाद ने, उन्हें अअ़रज ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कोई औरत अपनी किसी (दीनी) बहन की त़लाक़ का मुत़ालबा (शौहर से) न करे कि उसके घर को अपने ही लिये ख़ास़ करना चाहे बल्कि उसे निकाह़ (दूसरी औरत की मौजूदगी में भी) कर लेना चाहिये क्योंकि उसे उतना ही मिलेगा जितना उसके मुक़द्दर में होगा। (राजेअ : 2140)

٦٦٠١- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ، أَخْبَرَنَا مَالِكٌ، عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((لاَ تَسْأَلِ الْمَرْأَةُ طَلاَقَ أُخْتِهَا لِتَسْتَفْرِغَ صَحْفَتَهَا، وَلْتَنْكِحْ فَإِنَّ لَهَا مَا قُدِّرَ لَهَا)). [راجع: ٢١٤٠]

ये हुक्म उस वक़्त है जबकि अ़द्ल व इंस़ाफ़ के साथ दोनों के ह़क़ अदा कर सके **व इन् ख़िफ़्तुम अल्ला तअ़दिलू फ़वाहिदः** (अन् निसा : 3) अगर दोनों बीवियों के हुक़ूक़ अदा न कर सकने का डर हो तो एक ही बेहतर है।

6602. हमसे मालिक बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे इस्राईल ने बयान किया, उनसे आ़स़िम ने, उनसे अबू उ़ष्मान ने और उनसे उसामा (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में मौजूद था कि आँह़ज़रत (ﷺ) की स़ाह़बज़ादियों में से एक का बुलावा आया। आँह़ज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में सअ़द, उबई बिन कअ़ब और मुआ़ज़ (रज़ि.) मौजूद थे। बुलाने वाले ने आकर कहा कि उनका बच्चा (आँह़ज़रत ﷺ का नवासा) नज़अ़ की ह़ालत में है। आँह़ज़रत (ﷺ) ने कहला भेजा कि अल्लाह ही का है जो वो लेता है और अल्लाह ही का है जो वह देता है, इसलिये वो स़ब्र करें और अल्लाह से अज्र की उम्मीद रखें। (राजेअ : 1284)

٦٦٠٢- حَدَّثَنَا مَالِكُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا إِسْرَائِيلُ، عَنْ عَاصِمٍ، عَنْ أَبِي عُثْمَانَ، عَنْ أُسَامَةَ قَالَ : كُنْتُ عِنْدَ النَّبِيِّ ﷺ إِذْ جَاءَهُ رَسُولُ إِحْدَى بَنَاتِهِ وَعِنْدَهُ سَعْدٌ وَأُبَيُّ بْنُ كَعْبٍ وَمُعَاذٌ أَنَّ ابْنَهَا يَجُودُ بِنَفْسِهِ فَبَعَثَ إِلَيْهَا : للهِ مَا أَخَذَ، وَ للهِ مَا أَعْطَى، كُلٌّ بِأَجَلٍ فَلْتَصْبِرْ وَلْتَحْتَسِبْ. [راجع: ١٢٨٤]

यहाँ इमाम बुख़ारी (रह़.) इस ह़दीष़ को इसलिये लाए हैं कि इससे हर चीज़ की मुद्दत मुक़र्रर होना और हर काम का अपने वक़्त पर ज़रूर ज़ाहिर होना निकलता है।

6603. हमसे ह़िब्बान बिन मूसा ने बयान किया, उन्होने कहा हमको अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, उन्होंने कहा हमको यूनुस ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुहरी ने कहा कि हमको अ़ब्दुल्लाह बिन मुहैरीज़ जम्ही ने ख़बर दी, उन्हें अबू सईद ख़ुदरी

٦٦٠٣- حَدَّثَنَا حِبَّانُ بْنُ مُوسَى، قَالَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ، قَالَ حَدَّثَنَا يُونُسُ، عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: أَخْبَرَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَيْرِيزٍ الْجُمَحِيُّ أَنَّ أَبَا سَعِيدٍ الْخُدْرِيَّ

أَخْبَرَهُ أَنَّهُ بَيْنَمَا هُوَ جَالِسٌ عِنْدَ النَّبِيِّ ﷺ جَاءَ رَجُلٌ مِنَ الأَنْصَارِ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ إِنَّا نُصِيبُ سَبْياً وَنُحِبُّ الْمَالَ كَيْفَ تَرَى فِي الْعَزْلِ؟ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((أَوَ إِنَّكُمْ تَفْعَلُونَ ذَلِكَ لاَ عَلَيْكُمْ أَنْ لاَ تَفْعَلُوا، فَإِنَّهُ لَيْسَتْ نَسَمَةٌ كَتَبَ اللهُ أَنْ تَخْرُجَ إِلاَّ هِيَ كَائِنَةٌ)). [راجع: ٢٢٢٩]

(रज़ि.) ने कि वो नबी करीम (ﷺ) के पास बैठे हुए थे कि क़बीला अंसार का एक आदमी आया और अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! हम लौण्डियों से हमबिस्तरी करते हैं और माल से मुहब्बत करते हैं। आपका अ़ज़्ल के बारे में क्या ख़याल है? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया अच्छा तुम ऐसा करते हो, तुम्हारे लिये कुछ क़बाहत नहीं अगर तुम ऐसा न करो, क्योंकि जिस जान की भी पैदाइश अल्लाह ने लिख दी है वो ज़रूर पैदा होकर रहेगी। (राजेअ़ : 2229)

इसका तजुर्बा आज के दौर में भी बराबर हो रहा है। स़दक़न् नबिय्यु (ﷺ)। इंज़ाल के वक़्त ज़कर बाहर निकाल लेना अ़ज़्ल कहलाता है। आपने इसे पसंद नहीं किया।

٦٦٠٤- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ مَسْعُودٍ، قَالَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي وَائِلٍ، عَنْ حُذَيْفَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: لَقَدْ خَطَبَنَا النَّبِيُّ ﷺ خُطْبَةً مَا تَرَكَ فِيهَا شَيْئًا إِلَى قِيَامِ السَّاعَةِ إِلاَّ ذَكَرَهُ عَلِمَهُ مَنْ عَلِمَهُ وَجَهِلَهُ مَنْ جَهِلَهُ، إِنْ كُنْتُ لأَرَى الشَّيْءَ قَدْ نَسِيتُ فَأَعْرِفُ مَا يَعْرِفُ الرَّجُلُ إِذَا غَابَ عَنْهُ فَرَآهُ فَعَرَفَهُ.

6604. हमसे मूसा बिन मसऊ़द ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे आ'मश ने बयान किया, उनसे अबू वाइल ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने हमे एक ख़ुत्बा दिया और क़यामत तक की कोई (दीनी) चीज़ ऐसी नहीं छोड़ी जिसका बयान न किया हो, जिसे याद रखना था उसने याद रखा और जिसे भूलना था वो भूल गया, जब मैं उनमें की कोई चीज़ देखता हूँ जिसे मैं भूल चुका हूँ तो इस त़रह उसे पहचान लेता हूँ जिस त़रह वो शख़्स जिसकी कोई चीज़ गुम हो गई हो कि जब वो उसे देखता है तो फ़ौरन पहचान लेता है।

٦٦٠٥- حَدَّثَنَا عَبْدَانُ عَنْ أَبِي حَمْزَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ سَعْدِ بْنِ عُبَيْدَةَ، عَنْ أَبِي عَبْدِ الرَّحْمَنِ السُّلَمِيِّ، عَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : كُنَّا جُلُوسًا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ وَمَعَهُ عُودٌ يَنْكُتُ فِي الأَرْضِ وَقَالَ : ((مَا مِنْكُمْ مِنْ أَحَدٍ إِلاَّ قَدْ كُتِبَ مَقْعَدُهُ مِنَ النَّارِ، أَوْ مِنَ الْجَنَّةِ)) فَقَالَ رَجُلٌ: مِنَ الْقَوْمِ أَلاَ نَتَّكِلُ يَا رَسُولَ اللهِ؟ قَالَ: ((لاَ اعْمَلُوا فَكُلٌّ مُيَسَّرٌ، ثُمَّ قَرَأَ: ﴿فَأَمَّا مَنْ أَعْطَى وَاتَّقَى﴾)) [الليل : ٥] الآيَةَ.

6605. हमसे अ़ब्दान ने बयान किया, उनसे अबू ह़म्ज़ा ने, उनसे आ'मश ने, उनसे सअ़द बिन उ़बैदह ने, उनसे अबू अ़ब्दुर्रह़मान सुल्मी ने और उनसे ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) ने बयान किया कि हम नबी करीम (ﷺ) के साथ बैठे हुए थे और आँह़ज़रत (ﷺ) के हाथ में एक लकड़ी थी जिससे आप ज़मीन को कुरैद रहे थे और आपने (इसी अष्ना में) फ़र्माया कि तुममें से हर शख़्स का जहन्नम का या जन्नत का ठिकाना लिखा जा चुका है, एक मुसलमान ने उस पर अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! फिर क्यूँ न हम उस पर भरोसा कर लें? आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि नहीं अ़मल करो क्योंकि हर शख़्स (अपनी तक़्दीर के मुताबिक़) अ़मल की आसानी पाता है। फिर आपने इस आयत की तिलावत की फ़अम्मा मन अअ़ता वत्तक़ा अल आयत (पस जिसने राहे लिल्लाह दिया और तक़्वा

इख़्तियार किया अल् अख़। (राजेअ़ : 1362)

[راجع: ١٣٦٢]

बाब 5 : अ़मलों का ए'तिबार ख़ात्मा पर मौक़ूफ़ है

٥- باب الْعَمَلُ بِالْخَوَاتِيمِ

6606. हमसे ह़िब्बान बिन मूसा ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, उन्होंने कहा हमको मअ़मर ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुह्री ने, उन्हें सईद बिन मुसय्यब ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ ख़ैबर की लड़ाई में मौजूद थे, आँह़ज़रत (ﷺ) ने एक शख़्स के बारे में जो आपके साथ शरीके जिहाद था और इस्लाम का दावेदार था फ़र्माया कि ये जहन्नमी है। जब जंग होने लगी तो उस शख़्स ने बहुत जम कर लड़ाई में ह़िस्सा लिया और बहुत ज़्यादा ज़ख़्मी हो गया फिर भी वो षाबित क़दम रहा। आँह़ज़रत (ﷺ) के एक स़हाबी ने आकर अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! उस शख़्स के बारे में आपको मा'लूम है जिसके बारे में अभी आपने फ़र्माया था कि वो जहन्नमी है वो तो अल्लाह के रास्ते में बहुत जमकर लड़ा है और बहुत ज़्यादा ज़ख़्मी हो गया है। आँह़ज़रत (ﷺ) ने अब भी यही फ़र्माया कि वो जहन्नमी है। मुम्किन था कि कुछ मुसलमान शुब्हे में पड़ जाते लेकिन उस अ़र्से में उस शख़्स ने ज़ख़्मों की ताब न लाकर अपना तरकश खोला और उसमें से एक तीर निकालकर अपने आपको ज़िब्ह कर लिया। फिर बहुत से मुसलमान आँह़ज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में दौड़ते हुए पहुँचे और अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! अल्लाह तआ़ला ने आपकी बात सच्ची कर दिखाई। उस शख़्स ने अपने आपको हलाक करके अपनी जान ख़ुद ख़त्म कर डाली। आँह़ज़रत (ﷺ) ने उस मौक़े पर फ़र्माया कि ऐ बिलाल! उठो और लोगों में ऐलान कर दो कि जन्नत में सिर्फ़ मोमिन ही दाख़िल होगा और ये कि अल्लाह तआ़ला इस दीन की ख़िदमत व मदद बेदीन आदमी से भी कराता है। (राजेअ़ : 4062)

٦٦٠٦- حَدَّثَنَا حِبَّانُ بْنُ مُوسَى، أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: شَهِدْنَا مَعَ رَسُولِ اللهِ ﷺ خَيْبَرَ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ لِرَجُلٍ مِمَّنْ مَعَهُ يَدَّعِي الإِسْلاَمَ: ((هَذَا مِنْ أَهْلِ النَّارِ)). فَلَمَّا حَضَرَ الْقِتَالُ قَاتَلَ الرَّجُلُ مِنْ أَشَدِّ الْقِتَالِ، كَثُرَتْ بِهِ الْجِرَاحُ فَأَثْبَتَتْهُ فَجَاءَ رَجُلٌ مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ أَرَأَيْتَ الَّذِي تَحَدَّثْتَ أَنَّهُ مِنْ أَهْلِ النَّارِ قَدْ قَاتَلَ فِي سَبِيلِ اللهِ مِنْ أَشَدِّ الْقِتَالِ، فَكَثُرَتْ بِهِ الْجِرَاحُ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((أَمَا إِنَّهُ مِنْ أَهْلِ النَّارِ)) فَكَادَ بَعْضُ الْمُسْلِمِينَ يَرْتَابُ فَبَيْنَمَا هُوَ عَلَى ذَلِكَ إِذْ وَجَدَ الرَّجُلُ أَلَمَ الْجِرَاحِ فَأَهْوَى بِيَدِهِ إِلَى كِنَانَتِهِ فَانْتَزَعَ مِنْهَا سَهْمًا فَانْتَحَرَ بِهَا، فَاشْتَدَّ رِجَالٌ مِنَ الْمُسْلِمِينَ إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ فَقَالُوا: يَا رَسُولَ اللهِ صَدَّقَ اللهُ حَدِيثَكَ، قَدِ انْتَحَرَ فُلاَنٌ فَقَتَلَ نَفْسَهُ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((يَا بِلاَلُ قُمْ فَأَذِّنْ، لاَ يَدْخُلُ الْجَنَّةَ إِلاَّ مُؤْمِنٌ، وَإِنَّ اللهَ لَيُؤَيِّدُ هَذَا الدِّينَ بِالرَّجُلِ الْفَاجِرِ)).

[راجع: ٣٠٦٢]

तश्रीह : बज़ाहिर वो शख़्स जिहाद कर रहा था, मगर बाद में उसने ख़ुदकुशी करके अपने सारे आ'माल को बर्बाद कर दिया। बाब और ह़दीष में यही मुत़ाबक़त है। फ़िल वाक़ेअ़ अ़मलों का ए'तिबार ख़ात्मे पर है। अल्लाह पाक हर मुसलमान को तौह़ीद व सुन्नत और अपनी और अपने ह़बीब (ﷺ) की मुह़म्मद पर ख़ात्मा नसीब करे और दमे आख़िरी

कलिमा तृय्यिबा पर जान निकले, आमीन।

6607. हमसे सईद बिन अबी मरयम ने बयान किया, कहा हमसे अबू ग़स्सान ने बयान किया, कहा मुझसे अबू हाज़िम ने बयान किया और उनसे सहल बिन सअ़द (रज़ि.) ने कि एक शख़्स जो मुसलमानों की तरफ़ से बड़ी बहादुरी से लड़ रहा था और उस ग़ज़्वे में नबी करीम (ﷺ) भी मौजूद थे। आँहज़रत (ﷺ) ने देखा और फ़र्माया कि जो किसी जहन्नमी को देखना चाहता है वो इस शख़्स को देख ले चुनाँचे वो शख़्स जब इसी तरह लड़ने में मसरूफ़ था और मुश्रिकीन को अपनी बहादुरी की वजह से सख़्ततर तकलीफ़ों में मुब्तला कर रहा था तो एक मुसलमान उसके पीछे पीछे चला, आख़िर वो शख़्स ज़ख़्मी हो गया और जल्दी से मर जाना चाहा, इसलिये उसने अपनी तलवार की धार अपने सीने पर लगा ली और तलवार उसके शानों को पार करती हुई निकल गई। उसके बाद पीछा करने वाला शख़्स आँहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में दौड़ता हुआ हाज़िर हुआ और अ़र्ज़ किया, मैं गवाही देता हूँ कि आप अल्लाह के रसूल हैं। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, क्या बात है? उन साहब ने कहा कि आपने फ़लाँ शख़्स के बारे में फ़र्माया था कि जो किसी जहन्नमी को देखना चाहता है वो उस शख़्स को देख ले हालाँकि वो शख़्स मुसलमानों की तरफ़ से बड़ी बहादुरी से लड़ रहा था। मैं समझा कि वो इस हालत में नहीं मरेगा। लेकिन जब वो ज़ख़्मी हो गया तो जल्दी से मर जाने की ख़्वाहिश में उसने ख़ुदकुशी कर ली। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि बन्दा दोज़ख़ियों के से काम करता रहता है हालाँकि वो जन्नती होता है (इसी तरह दूसरा बन्दा) जन्नतियों के काम करता रहता है हालाँकि वो दोज़ख़ी होता है, बिला शुब्हा अ़मलों का ए'तिबार ख़ात्मे पर है। (राजेअ़ : 2898)

٦٦٠٧- حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ أَبِي مَرْيَمَ، حَدَّثَنَا أَبُو غَسَّانَ حَدَّثَنِي أَبُو حَازِمٍ، عَنْ سَهْلٍ أَنَّ رَجُلاً مِنْ أَعْظَمِ الْمُسْلِمِينَ غَنَاءً عَنِ الْمُسْلِمِينَ فِي غَزْوَةٍ غَزَاهَا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ فَنَظَرَ النَّبِيُّ ﷺ فَقَالَ: ((مَنْ أَحَبَّ أَنْ يَنْظُرَ إِلَى الرَّجُلِ مِنْ أَهْلِ النَّارِ فَلْيَنْظُرْ إِلَى هَذَا)) فَاتَّبَعَهُ رَجُلٌ مِنَ الْقَوْمِ وَهُوَ عَلَى تِلْكَ الْحَالِ مِنْ أَشَدِّ النَّاسِ عَلَى الْمُشْرِكِينَ، حَتَّى جُرِحَ فَاسْتَعْجَلَ الْمَوْتَ فَجَعَلَ ذُبَابَةَ سَيْفِهِ بَيْنَ ثَدْيَيْهِ حَتَّى خَرَجَ مِنْ بَيْنِ كَتِفَيْهِ، فَأَقْبَلَ الرَّجُلُ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ مُسْرِعًا فَقَالَ: أَشْهَدُ أَنَّكَ رَسُولُ اللَّهِ فَقَالَ: ((وَمَا ذَاكَ؟)) قَالَ : قُلْتَ لِفُلاَنٍ : ((مَنْ أَحَبَّ أَنْ يَنْظُرَ إِلَى رَجُلٍ مِنْ أَهْلِ النَّارِ فَلْيَنْظُرْ إِلَيْهِ)) فَكَانَ مِنْ أَعْظَمِنَا غَنَاءً عَنِ الْمُسْلِمِينَ، فَعَرَفْتُ أَنَّهُ لاَ يَمُوتُ عَلَى ذَلِكَ فَلَمَّا جُرِحَ اسْتَعْجَلَ الْمَوْتَ فَقَتَلَ نَفْسَهُ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ عِنْدَ ذَلِكَ: ((إِنَّ الْعَبْدَ لَيَعْمَلُ عَمَلَ أَهْلِ النَّارِ وَإِنَّهُ مِنْ أَهْلِ الْجَنَّةِ، وَيَعْمَلُ عَمَلَ أَهْلِ الْجَنَّةِ وَإِنَّهُ مِنْ أَهْلِ النَّارِ وَإِنَّمَا الأَعْمَالُ بِالْخَوَاتِيمِ)).

[راجع: ٢٨٩٨]

बाब 6 : नज़्र करने से तक़्दीर नहीं पलट सकती

٦- باب إِلْقَاءِ النَّذْرِ الْعَبْدَ إِلَى الْقَدَرِ

होगा वही जो तक़्दीर में है।

तश्रीह : अकषर लोगों का क़ायदा है कि यूँ तो अल्लाह की राह में अपना पैसा ख़र्च नहीं करते, जो कोई मुसीबत आन पड़े उस वक़्त तरह तरह की मन्नतें और नज़्रें मानते हैं। बाब की हदीष में आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि नज़्र और मन्नत मानने से तक़्दीर नहीं पलट सकती होता वही है जो तक़्दीर में है। मुस्लिम की हदीष में साफ़ यूँ है कि नज़्र न माना करो इसलिये कि नज़्र से तक़्दीर नहीं पलट सकती। हालाँकि नज़्र का पूरा करना वाजिब है। मगर आपने जो नज़्र से मना फ़र्माया वो इस नज़्र से जिसमें ये ए'तिक़ाद हो कि नज़्र मानने से बला टल जाएगी जैसे अक्षर जाहिलों का अक़ीदा होता है लेकिन

अगर ये जानकर नज़्र करे कि नाफ़ेअ़ और ज़ार अल्लाह ही है और जो उसने क़िस्मत मे लिखा है वही होगा तो ऐसी नज़्र मना नहीं बल्कि उसका पूरा करना एक इबादत और वाजिब है। अब उन लोगों के हाल पर बहुत ही अफ़सोस है जो अल्लाह को छोड़कर दूसरे बुज़ुर्गों या दुर्वेशों की नज़्र मानें वो अलावा गुनहगार होने के अपना ईमान भी खोते हैं क्योंकि नज़्र एक माली इबादत है इसलिये ग़ैरुल्लाह की नज़्र मानने वाला मुश्रिक हो जाता है।

٦٦٠٨ - حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ مَنْصُورٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مُرَّةَ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ : نَهَى النَّبِيُّ ﷺ عَنِ النَّذْرِ قَالَ: ((إِنَّهُ لاَ يَرُدُّ شَيْئًا إِنَّمَا يُسْتَخْرَجُ بِهِ مِنَ الْبَخِيلِ)). [طرفاه في : ٦٦٩٢، ٦٦٩٣].

6608. हमसे अबू नुऐम फ़ज़्ल बिन दुकैन ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़यैना ने बयान किया, उनसे मंसूर बिन मुअ़तमिर ने, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुर्रह ने और उनसे इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने नज़्र मानने से मना किया था और फ़र्माया था कि नज़्र किसी चीज़ को नहीं लौटाती, नज़्र सिर्फ़ बख़ील के दिल से पैसा निकालती है। (दीगर मक़ामात : 6692, 6693)

तश्रीह : यूँ तो उसके दिल से पैसा निकलता नहीं जब कोई मुसीबत पड़ती है तो नज़्र मानता है और इत्तिफ़ाक़ से इसका मत़लब पूरा हो गया तो अब पैसा ख़र्च करना पड़ता है झक मारकर उस वक़्त ख़र्च करना पड़ता है अलग़र्ज़ सारे मामलात तक़्दीर ही के तह़त अंजाम पाते हैं। यही ष़ाबित करना ह़ज़रत इमाम क़द्दस सिर्रुहु का मक़्सद है।

٦٦٠٩ - حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ مُحَمَّدٍ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنْ هَمَّامِ بْنِ مُنَبِّهٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((لاَ يَأْتِي ابْنَ آدَمَ النَّذْرُ بِشَيْءٍ لَمْ يَكُنْ قَدْ قَدَّرْتُهُ، وَلَكِنْ يُلْقِيهِ الْقَدَرُ وَقَدْ قَدَّرْتُهُ لَهُ أَسْتَخْرِجُ بِهِ مِنَ الْبَخِيلِ)). [طرفه في: ٦٦٩٤].

6609. हमसे बिश्र बिन मुह़म्मद ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, कहा हमको मअ़मर ने ख़बर दी, उन्हें हम्माम बिन मुनब्बा ने, उन्हें अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, नज़्र (मन्नत) इंसान को कोई चीज़ नहीं देती जो मैं (रब) ने उसकी तक़्दीर में न लिखी हो बल्कि वो तक़्दीर देती है जो मैं (रब) ने उसके लिये मुक़र्रर कर दी है, अल्बत्ता उसके ज़रिये में बख़ील का माल निकलवा लेता हूँ। (दीगर मक़ाम : 6694)

बाब 7 : ला ह़ौल वला क़ुव्वत इल्ला बिल्लाह की फ़ज़ीलत का बयान

٧- باب لاَ حَوْلَ وَلاَ قُوَّةَ إِلاَّ بِاللهِ

तश्रीह : ये बड़ी बरकत का कलिमा है और शैत़ान और तमाम बलाओं से बचने की उ़म्दह ढाल है। इसका मत़लब ये है कि आदमी को गुनाह या बला से बचाने वाला और इबादत की तौफ़ीक़ और त़ाक़त और नेअ़मत देने वाला अल्लाह ही है। हमारे मुर्शिद ह़ज़रत शैख़ अह़मद मुजद्दिद (रह़.) फ़र्माते हैं जो कोई किसी मुसीबत में मुब्तला हो वो हर रोज़ पाँच सौ बार ला ह़ौल वला क़ुव्वत इल्ला बिल्लाह पढ़े, इस त़रह़ कि अव्वल और आख़िर सौ सौ बार दरूद पढ़े, तो अल्लाह इसकी मुसीबत दूर कर देगा। हमारे शैख़ रिज़्वानुल्लाह अ़लैहिम अज्मईन ने हर वक़्त जब फ़ुर्सत हो खड़े या बैठे या लेटे इस ज़िक्र पर मुवाज़िबत की है। **सुब्ह़ानल्लाह व बिह़म्दिही सुब्ह़ानल्लाहिल अ़ज़ीम अस्तग़्फ़िरुल्लाह ला इलाह इल्लल्लाहु ला ह़ौल व ला क़ुव्वत इल्ला बिल्लाह ह़स्बुनल्लाहु व निअ़मल वकील, निअ़मल मौला व निअ़मन् नसीर।**

इस ज़िक्र में अ़जीब बरकत है, जो कोई आदमी हमेशा इस ज़िक्र पर मुवाज़िबत करे उसको ~~बुस्अ़ते रिज़्क़~~, ग़िना और मालदारी ह़ासिल होती है, हर बला से मह़फ़ूज़ रहता है, अल्लाह तआ़ला से उम्मीद होती है कि उसके सब गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाएं, रात और दिन में हर वक़्त ये ज़िक्र करता रहे और सुबह़ व शाम तीन बार ये दुआ़ पढ़ लिया करे। **बिस्मिल्लाहि**

ख़ैरुल अस्माइ बिस्मिल्लाहि रब्बिल अर्ज़ि वस्समाइ बिस्मिल्लाहि ला यज़ुर्रूहू मअ़ इस्मिही शैउन फ़िल अर्ज़ि व ला फ़िस्समाइ व हुवस्समीउल अ़लीम अल्लाहुम्म अन्त रब्बी ला इलाहा इल्ला अन्त ख़लक़्तनी व अना अ़ब्दुक व अना अ़ला अहदिक व वअ़दिक मस्ततअ़तु अऊज़ुबिक मिन शर्रि मा सनअ़त अबूउ लक बिनिअ़मतिक अ़लय्य व अबूउ बिज़म्बी फ़ग़्फ़िरली फ़इन्नहू ला यग़फ़िरुज़्ज़ुनूब इल्ला अन्त. बिस्मिल्लाहि माशाअल्लाहु ला याती बिल्ख़ैर इल्लल्लाह. बिस्मिल्लाहि माशाअल्लाह ला युस्रिफ़ुस्सूअ इल्लल्लाह. बिस्मिल्लाहि माशाअल्लाहु व मा बिकुम मिन निअ़मतिन फ़मिनल्लाह. बिस्मिल्लाहि माशाअल्लाहु तवक्कल्तु अलल्लाहि ला हौल व ला क़ुव्वत इल्ला बिल्लाह. माशाअल्लाहु कान व मा लम यशा लम यकुन आ़लमु अन्नल्लाह अ़ला कुल्लि शैइन क़दीर व अन्नल्लाह कद अहात बिकुल्लि शैइन इल्मा। और शाम को सूरह मुल्क या'नी तबारकल्लज़ी और सूरह वाक़िया और तहज्जुद की आठ रकआ़त में सूरह यासीन पढ़ा करे। (वहीदी)

٦٦١٠- حدَّثني مُحَمَّدُ بْنُ مُقَاتِلٍ أَبُو الْحَسَنِ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ، أَخْبَرَنَا خَالِدٌ الْحَذَّاءُ، عَنْ أَبِي عُثْمَانَ النَّهْدِيِّ، عَنْ أَبِي مُوسَى، قَالَ: كُنَّا مَعَ رَسُولِ اللهِ ﷺ فِي غَزَاةٍ، فَجَعَلْنَا لاَ نَصْعَدُ شَرَفًا وَلاَ نَعْلُو شَرَفًا، وَلاَ نَهْبِطُ فِي وَادٍ إِلاَّ رَفَعْنَا أَصْوَاتَنَا بِالتَّكْبِيرِ قَالَ: فَدَنَا مِنَّا رَسُولُ اللهِ ﷺ فَقَالَ: ((يَا أَيُّهَا النَّاسُ ارْبَعُوا عَلَى أَنْفُسِكُمْ، فَإِنَّكُمْ لاَ تَدْعُونَ أَصَمَّ وَلاَ غَائِبًا، إِنَّمَا تَدْعُونَ سَمِيعًا بَصِيرًا، ثُمَّ قَالَ: يَا عَبْدَ اللهِ بْنَ قَيْسٍ، أَلاَ أُعَلِّمُكَ كَلِمَةً هِيَ مِنْ كُنُوزِ الْجَنَّةِ؟ لاَ حَوْلَ وَلاَ قُوَّةَ إِلاَّ بِاللهِ)). [راجع: ٢٩٩٢]

6610. मुझसे अबुल ह़सन मुह़म्मद बिन मुक़ातिल ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, उन्होंने कहा हमको ख़ालिद ह़ज़्ज़ाअ ने ख़बर दी, उन्हें अबू उ़ष्मान नह्दी ने और उनसे अबू मूसा अश्अ़री (रज़ि.) ने बयान किया कि हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ एक ग़ज़्वा में थे और जब भी हम किसी बुलन्दी पर चढ़ते या किसी नशीबी इलाक़े में उतरते तो तक्बीर बुलंद आवाज़ से कहते। बयान किया कि फिर आँह़ज़रत (ﷺ) हमारे क़रीब आए और फ़र्माया ऐ लोगों! अपने आप पर रह़म करो, क्योंकि तुम किसी बहरे या ग़ैर मौजूद को नहीं पुकारते बल्कि तुम उस ज़ात को पुकारते हो जो बहुत ज़्यादा सुनने वाला बड़ा देखने वाला है। फिर फ़र्माया ऐ अ़ब्दुल्लाह बिन क़ैस! (अबू मूसा अश्अ़री रज़ि.) क्या मैं तुम्हें एक कलिमा न सिखा दूँ जो जन्नत के ख़ज़ानों में से हैं (वो कलिमा है) ला ह़ौल वला क़ुव्वत इल्ला बिल्लाह (त़ाक़त व क़ुव्वत अल्लाह के सिवा और किसी के पास नहीं) (राजेअ़ : 2992)

٨- باب الْمَعْصُومُ مَنْ عَصَمَ اللهُ

बाब 8 : मा'सूम वो है जिसे अल्लाह गुनाहों से बचाए रखे

عَاصِمٌ: مَانِعٌ. قَالَ مُجَاهِدٌ: سُدًّا عَنِ الْحَقِّ يَتَرَدَّدُونَ فِي الضَّلاَلَةِ. دَسَّاهَا: أَغْوَاهَا.

सूरह हूद में अल्लाह ने फ़र्माया, ला आ़सिमुल यौम मिन अम्रिल्लाह आ़सिम के मा'नी रोकने वाला। मुजाहिद ने कहा ये जो सूरह यासीन में फ़र्माया व जअ़ल्ना मिम्बैनि ऐदीहिम सुदन या'नी मैंने ह़क़ बात के मानने से उन पर आड़ कर दी वो गड्ढे में डगमगा रहे हैं। सूरह वश्शम्स में जो लफ़्ज़ दस्साहा है उसका मा'नी गुमराह किया।

तश्रीह़ : कुछ नुस्ख़ों में सुदन की जगह सुदा है और किर्मानी ने अपनी शरह़ में उसका इज़्हार किया है और ह़दीष अयह़्सबुल इंसानु अय्युंतरक सुदा को मुराद लिया है मगर ह़ाफ़िज़ ने कहा कि सुदा की शरह़ में मुजाहिद से मैंने ये रिवायत नहीं पाई। ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) ने आ़सिम की मुनासबत से सुदा की भी तफ़्सीर बयान कर दी, क्योंकि

लफ़्ज़े आ़सिम के मा'नी मानेअ़ के हुए और सद भी मानेअ़ होती है। अब सद की मुनासबत से दस्साहा की भी तफ़्सीर की क्योंकि सद और दस्स के हुरूफ़ एक ही हैं तक़्दीम और ताख़ीर का फ़र्क़ है। **अल्मअ़सूमु मन असिमहुल्लाहु मिनलवुक़ूइ फ़िल हलाकि औ मा यज़ुर्रु इलैहि व ल अ़स्मिहुल अंबियाअ अ़ला नबिय्यिना अ़लैहिमुस्सलाम हफ़िज़हुम मिनन्नक़ाइस़ि तख़सीसुहुम बिल कमालातिन नफ़्सिय्यति वन्नुस्रतु वष्षिबातु फिल उमूर इन्ज़ालुस्सकीनति वल्फ़र्क़ु बैनहुम व बैन ग़ैरिहिम इन्नल इस्मत फ़ी हक़्क़िहिम बितरीक़िल वुजूबि व फ़ी हक़्क़ि ग़ैरिहिम बितरीक़िल जवाज़.** (फ़त्हुल बारी) मा'सूम वो है जिसको अल्लाह पाक ने हलाक करने वाले गुनाहों में वाक़ेअ़ होने से बचा ले और नक़ाइस़ से अंबिया अ़लैहिमुस्सलाम का मा'सूम होना बतरीक़े वुजूब है और उनकी ख़ुसूसियात में से है कि नफ़ीस कलिमात उनकी जुबानों से अदा होते हैं, उनको आसमानी मदद मिलती है और कामों में उनको ष़बात ह़ासिल होता है और उन पर अल्लाह की तरफ़ से तस्कीन नाज़िल होती है और उनमें और उनके ग़ैर में फ़र्क़ ये है कि उनको ये ख़ुसूसियात बतरीक़े वुजूब व दियत होती हैं और उनके ग़ैर को बतरीक़े जवाज़।

٦٦١١- حَدَّثَنَا عَبْدَانُ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ، أَخْبَرَنَا يُونُسُ عَنِ الزُّهْرِيِّ، قَالَ: حَدَّثَنِي أَبُو سَلَمَةَ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((مَا اسْتُخْلِفَ خَلِيفَةٌ إِلاَّ لَهُ بِطَانَتَانِ، بِطَانَةٌ تَأْمُرُهُ بِالْخَيْرِ وَتَحُضُّهُ عَلَيْهِ، وَبِطَانَةٌ تَأْمُرُهُ بِالشَّرِّ وَتَحُضُّهُ عَلَيْهِ وَالْمَعْصُومُ مَنْ عَصَمَ اللهُ)).

[طرفه في : ٧١٩٨].

6611. हमसे अ़ब्दान ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, कहा हमको यूनुस ने ख़बर दी, उनसे ज़ुह्री ने बयान किया, कहा मुझसे अबू सलमा ने बयान किया, उनसे अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जब भी कोई शख़्स ह़ाकिम होता है तो उसके स़लाहकार और मुशीर दो त़रह के होते हैं एक तो वो जो उसे नेकी और भलाई का हुक्म देते हैं और उस पर उभारते रहते हैं और दूसरे वो जो उसे बुराई का हुक्म देते रहते हैं और उस पर उसे उभारते रहते हैं और मा़सूम वो है जिसे अल्लाह मह़फ़ूज़ रखे। (दीगर मक़ाम : 7198)

٩- باب ﴿وَحَرَامٌ عَلَى قَرْيَةٍ أَهْلَكْنَاهَا أَنَّهُمْ لاَ يَرْجِعُونَ﴾ [الأنبياء: ٩٥]. ﴿إِنَّهُ لَنْ يُؤْمِنَ مِنْ قَوْمِكَ إِلاَّ مَنْ قَدْ آمَنَ﴾ [هود: ٣٦] ﴿وَلاَ يَلِدُوا إِلاَّ فَاجِرًا كَفَّارًا﴾ [نوح: ٢٧]. وَقَالَ مَنْصُورُ بْنُ النُّعْمَانِ: عَنْ عِكْرِمَةَ ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ وَحِرْمٌ بِالْحَبَشِيَّةِ وَجَبَ.

बाब 9 : और उस बस्ती पर हमने ह़राम कर दिया है

जिसे हमने हलाक कर दिया कि वो अब दुनिया में लौट नहीं सकेंगे (सूरह अंबिया) और ये कि जो लोग तुम्हारी क़ौम के ईमान ला चुके हैं उनके सिवा और कोई अब ईमान नहीं लाएगा (सूरह हूद) और ये कि, वो बदकिरदारों के सिवा और किसी को नहीं जनेंगे (सूरह नूह) और मंस़ूर बिन नोअ़मान ने इक्रिमा से बयान किया और उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कि ह़िर्म ह़ब्शी ज़ुबान का लफ़्ज़ है। उसके मा'नी ज़रूरी और वाजिब के हैं।

ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) का मक़्स़द इन आयात से तक़्दीर का ष़ाबित करना है जो ज़ाहिर है, **फ़तदब्बरू या उलिल अल्बाब।**

٦٦١٢- حَدَّثَنِي مَحْمُودُ بْنُ غَيْلاَنَ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ ابْنِ طَاوُسٍ، عَنْ أَبِيهِ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ : مَا

6612. मुझसे महमूद बिन ग़ीलान ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने बयान किया, कहा हमको मअ़मर ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने त़ाउस ने, उन्हें उनके वालिद ने और उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि ये जो लमम का

رَأَيْتُ شَيْئًا أَشْبَهَ بِاللَّمَمِ مِمَّا قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((إِنَّ اللهَ كَتَبَ عَلَى ابْنِ آدَمَ حَظَّهُ مِنَ الزِّنَا أَدْرَكَ ذَلِكَ لاَ مَحَالَةَ، فَزِنَا الْعَيْنِ النَّظَرُ، وَزِنَا اللِّسَانِ الْمَنْطِقُ، وَالنَّفْسُ تَمَنَّى وَتَشْتَهِي، وَالْفَرْجُ يُصَدِّقُ ذَلِكَ وَيُكَذِّبُهُ)). وَقَالَ شَبَابَةُ : حَدَّثَنَا وَرْقَاءُ، عَنِ ابْنِ طَاوُسٍ، عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ.
[راجع: ٦٢٤٣]

लफ़्ज़ क़ुर्आन में आया है तो मैं लमम के मुशाबेह उस बात से ज़्यादा कोई बात नहीं जानता जो अबू हुरैरह (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से बयान की है कि अल्लाह तआला ने इंसान के लिये ज़िना का कोई न कोई हिस्सा लिख दिया है जिससे उसे ला मुहाल गुज़रना है, पस आँख का ज़िना (ग़ैर महरम को) देखना है, ज़ुबान का ज़िना ग़ैर महरम से बातचीत करना है, दिल का ज़िना ख़्वाहिश और शह्वत है और शर्मगाह उसकी तस्दीक़ कर देती है या उसे झुठला देती है। और शबाबा ने बयान किया कि हमसे वरक़ा ने बयान किया, उनसे इब्ने ताउस ने, उनसे उनके वालिद ने, उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने, उन्होंने आँहज़रत (ﷺ) से फिर इस हदीष़ को नक़ल किया। (राजेअ : 6243)

इस हदीष़ के बयान करने से इमाम बुख़ारी (रह.) की ग़र्ज़ ये है कि ताउस ने ये हदीष़ ख़ुद अबू हुरैरह (रज़ि.) से भी सुनी है जैसे अगली रिवायत से ये निकलता है कि इब्ने अब्बास (रज़ि.) के वास्ते से कहा। बाब और हदीष़ में मुताबक़त ज़ाहिर है कि ज़िना करने वाला भी तक़्दीर के तहत ज़िना करता है।

١٠- باب ﴿وَمَا جَعَلْنَا الرُّؤْيَا الَّتِي أَرَيْنَاكَ إِلاَّ فِتْنَةً لِلنَّاسِ﴾ [الأسراء: ٦٠]

बाब 10 : आयत और वो ख़्वाब जो मैंने तुमको दिखाया है, उसे हमने सिर्फ़ लोगों के लिये आज़माइश बनाया है, की तफ़्सीर

٦٦١٣- حَدَّثَنَا الْحُمَيْدِيُّ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، حَدَّثَنَا عَمْرٌو، عَنْ عِكْرِمَةَ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا ﴿وَمَا جَعَلْنَا الرُّؤْيَا الَّتِي أَرَيْنَاكَ إِلاَّ فِتْنَةً لِلنَّاسِ﴾ قَالَ: هِيَ رُؤْيَا عَيْنٍ أُرِيَهَا رَسُولُ اللهِ ﷺ لَيْلَةَ أُسْرِيَ بِهِ إِلَى بَيْتِ الْمَقْدِسِ، قَالَ: وَالشَّجَرَةَ الْمَلْعُونَةَ فِي الْقُرْآنِ قَالَ : هِيَ شَجَرَةُ الزَّقُّومِ. [راجع: ٣٨٨٨]

6613. हमसे हुमैदी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, उनसे अ़म्र बिन दीनार ने बयान किया, उनसे इक्रिमा ने और उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने, आयत और वो ख़्वाब जो हमने तुम्हें दिखाया है उसे हमने सिर्फ़ लोगों के लिये आज़माइश बनाया है, के बारे में कहा कि इससे मुराद आँख का देखना है जो रसूलुल्लाह (ﷺ) को उस मे'राज की रात दिखाया गया था। जब आपको बैतुल मक़्दिस तक रात को ले जाया गया था। कहा कि क़ुर्आन मजीद में, अश्शजरतल मल्ऊना से मुराद ज़क़्क़ूम का पेड़ है। (राजेअ : 3888)

तश्रीह : कुछ शारेहीन ने हदीष़ और बाब की मुताबक़त इस तौजीह के साथ की है कि अल्लाह तआला ने मुश्रिकों की तक़्दीर में ये बात लिख दी थी कि वो मे'राज का क़िस्सा झुठलाएँगे और इसी तरह से हुआ।

١١- باب تَحَاجَّ آدَمُ وَمُوسَى عِنْدَ اللهِ عَزَّ وَجَلَّ

बाब 11 : अल्लाह तआला की बारगाह में आदम व मूसा (अलैहिस्सलाम) ने जो मुबाहष़ा किया उसका बयान

٦٦١٤- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا

6614. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा

हमसे सुफ़यान ने बयान किया, कहा कि हमने अ़म्र से इस ह़दीष़ को याद किया, उनसे ताउस ने, उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने इर्शाद फ़र्माया, आदम और मूसा ने मुबाहिषा किया। मूसा (अ.) ने आदम (अ.) से कहा आदम! आप हमारे बाप हैं मगर आप ही ने हमें महरूम किया और जन्नत से निकाला। आदम (अ.) ने मूसा (अ.) से कहा मूसा! आपको अल्लाह तआला ने हम कलामी के लिये बरगुज़ीदा किया और अपने हाथ से आपके लिये तौरात को लिखा। क्या आप मुझे एक ऐसे काम पर मलामत करते हैं जो अल्लाह तआला ने मुझे पैदा करने से चालीस साल पहले मेरी तक़्दीर में लिख दिया था? आख़िर आदम (अ.) बहष में मूसा (अ.) पर ग़ालिब आए। तीन मर्तबा आँहज़रत (ﷺ) ने ये जुम्ला फ़र्माया। सुफ़यान ने इसी इस्नाद से बयान किया, कहा हमसे अबुज़्ज़िनाद ने बयान किया, उनसे अअरज ने, उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से फिर यही हदीष नक़ल की। (राजेअ : 3409)

سُفْيَانُ قَالَ: حَفِظْنَاهُ مِنْ عَمْرٍو، عَنْ طَاوُسٍ سَمِعْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: ((احْتَجَّ آدَمُ وَمُوسَى فَقَالَ لَهُ مُوسَى يَا آدَمُ أَنْتَ أَبُونَا خَيَّبْتَنَا وَأَخْرَجْتَنَا مِنَ الْجَنَّةِ، قَالَ لَهُ آدَمُ: يَا مُوسَى اصْطَفَاكَ اللهُ بِكَلاَمِهِ وَخَطَّ لَكَ بِيَدِهِ، أَتَلُومُنِي عَلَى أَمْرٍ قَدَّرَ اللهُ عَلَيَّ قَبْلَ أَنْ يَخْلُقَنِي بِأَرْبَعِينَ سَنَةً؟ فَحَجَّ آدَمُ مُوسَى ثَلاَثًا)). قَالَ سُفْيَانُ: حَدَّثَنَا أَبُو الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِثْلَهُ.

[راجع: ٣٤٠٩]

तशरीह : ज़ाहिर यही है कि ये बहष उसी वक़्त हुई होगी जब हज़रत मूसा दुनिया में थे। कुछ ने कहा कि क़यामत के दिन ये बहष होगी। इमाम बुख़ारी (रह.) ने इन्दल्लाह कहकर यही इशारा किया है। अबू दाऊद की रिवायत में है कि हज़रत मूसा (अलैहि.) ने अल्लाह से दरख़्वास्त की ऐ रब! हमको आदम (अलैहि.) दिखला दे जिसने हमको जन्नत से निकाला उस पर ये मुलाक़ात हुई। आदम तक़्दीर का हवाला देकर ग़ालिब आ गये। यही किताबुल क़द्र से मुनासबत है।

बाब 12 : जिसे अल्लाह दे उसे कोई रोकने वाला नहीं है

١٢ - باب لاَ مَانِعَ لِمَا أَعْطَى اللهُ

6615. हमसे मुहम्मद बिन सिनान ने बयान किया, कहा हमसे फुलैह ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दह बिन अबी लुबाबा ने बयान किया, उनसे मुग़ीरह बिन शुअबा के गुलाम वर्राद ने बयान किया कि मुआविया (रज़ि.) ने मुग़ीरह बिन शुअबा (रज़ि.) को लिखा मुझे रसूलुल्लाह (ﷺ) की वो दुआ लिख कर भेजो जो तुमने आँहज़रत (ﷺ) को नमाज़ के बाद करते सुनी है। चुनाँचे मुग़ीरह (रज़ि.) ने मुझको लिखवाया। उन्होंने कहा कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना है आँहज़रत (ﷺ) हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद ये दुआ किया करते थे। अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं वो एक है उसका कोई शरीक नहीं, ऐ अल्लाह! जो तू देना चाहे उसे कोई रोकने वाला नहीं और जो तू रोकना चाहे उसे कोई देने वाला नहीं और तेरे सामने दौलत कुछ काम नहीं दे सकती। और इब्ने जुरैज ने कहा कि मुझको

٦٦١٥- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سِنَانٍ، حَدَّثَنَا فُلَيْحٌ، حَدَّثَنَا عَبْدَةُ بْنُ أَبِي لُبَابَةَ، عَنْ وَرَّادٍ مَوْلَى الْمُغِيرَةِ بْنِ شُعْبَةَ قَالَ: كَتَبَ مُعَاوِيَةُ إِلَى الْمُغِيرَةِ اكْتُبْ إِلَيَّ مَا سَمِعْتَ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ خَلْفَ الصَّلاَةِ، فَأَمْلَى عَلَيَّ الْمُغِيرَةُ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ خَلْفَ الصَّلاَةِ : ((لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيكَ لَهُ، اللَّهُمَّ لاَ مَانِعَ لِمَا أَعْطَيْتَ، وَلاَ مُعْطِيَ لِمَا مَنَعْتَ، وَلاَ يَنْفَعُ ذَا الْجَدِّ مِنْكَ الْجَدُّ)). وَقَالَ ابْنُ جُرَيْجٍ، أَخْبَرَنِي

अ़ब्दह ने ख़बर दी और उन्हें वर्राद ने ख़बर दी फिर उसके बाद मैं मुआविया (रज़ि.) के यहाँ गया तो मैंने देखा कि वो लोगों को इस दुआ के पढ़ने का हुक्म दे रहे थे। (राजेअ़ : 844)

عَبْدَةُ أَنَّ وَرَّادًا أَخْبَرَهُ بِهَذَا، ثُمَّ وَفَدْتُ بَعْدُ إِلَى مُعَاوِيَةَ فَسَمِعْتُهُ يَأْمُرُ النَّاسَ بِذَلِكَ الْقَوْلِ [راجع: ٨٤٤]

तशरीह : अल्फ़ाज़ दुआ से ही किताबुल क़द्र से मुनासबत निकली। अ़ब्दह बिन अबी लुबाबा की सनद ज़िक्र करने से इमाम बुख़ारी (रह़.) की ग़र्ज़ ये है कि अ़ब्दह का सिमाअ़ वर्राद से षाबित हुआ क्योंकि अगली रिवायत में इस सिमाअ़ की सराहत नहीं।

बाब 13 : बदक़िस्मती और बदनसीबी से अल्लाह की पनाह मांगना और बुरे ख़ात्मे से. अल्लाह तआ़ला का फ़र्मान कि, कह दीजिये कि मैं सुबह की रोशनी के रब की पनाह मांगता हूँ उसकी मख़्लूक़ात की बदी से

١٣- باب مَنْ تَعَوَّذَ بِاللهِ مِنْ دَرَكِ الشَّقَاءِ وَسُوءِ الْقَضَاءِ وَقَوْلِهِ تَعَالَى : ﴿قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ﴾

6616. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे सुमय ने बयान किया, उनसे अबू स़ालेह़ ने बयान किया और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, अल्लाह से पनाह मांगा करो, आज़माइश की मुशक़्क़त, बदबख़्ती की पस्ती, बुरे ख़ात्मे और दुश्मन के हंसने से। (राजेअ़ : 6347)

٦٦١٦- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ سُمَيٍّ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((تَعَوَّذُوا بِاللهِ مِنْ جَهْدِ الْبَلاَءِ وَدَرَكِ الشَّقَاءِ، وَسُوءِ الْقَضَاءِ وَشَمَاتَةِ الأَعْدَاءِ)). [راجع: ٦٣٤٧]

बाब 14 : उस आयत का बयान कि अल्लाह पाक बन्दे और उसके दिल के बीच में ह़ाइल हो जाता है

١٤- باب يَحُولُ بَيْنَ الْمَرْءِ وَقَلْبِهِ

6617. हमसे अबुल ह़सन मुह़म्मद बिन मुक़ातिल ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको अ़ब्दुल्लाह ने ख़बर दी, उन्होंने कहा हमको मूसा बिन उ़क़्बा ने ख़बर दी, उनसे सालिम ने बयान किया, और उनसे अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि अक़्षर नबी करीम (ﷺ) क़सम खाया करते थे कि, नहीं! दिलों के फेरने वाले की क़सम।

(दीगर मक़ामात : 6628, 7391)

٦٦١٧- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مُقَاتِلٍ أَبُو الْحَسَنِ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ، أَخْبَرَنَا مُوسَى بْنُ عُقْبَةَ، عَنْ سَالِمٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ قَالَ: كَثِيرًا مَا كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَحْلِفُ: ((لاَ وَمُقَلِّبِ الْقُلُوبِ)).

[طرفاه في : ٦٦٢٨، ٧٣٩١].

6618. हमसे अ़ली बिन ह़फ़्स़ और बिश्र बिन मुह़म्मद ने बयान किया, उन दोनों ने कहा कि अ़ब्दुल्लाह ने हमें ख़बर दी, कहा हमको मअ़मर ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुह्री ने, उन्हें सालिम ने और उनसे इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने इब्ने स़य्याद से फ़र्माया कि मैंने तेरे लिये एक बात दिल में छुपा रखी है (बता वो क्या है?) उसने कहा कि, धुआँ। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, बदबख़्त! अपनी हैषियत से आगे

٦٦١٨- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ حَفْصٍ، وَبِشْرُ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالاَ : أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ سَالِمٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ لاِبْنِ صَيَّادٍ: ((خَبَأْتُ لَكَ خَبِيئًا)) قَالَ :

الدُّخُّ قَالَ: ((اخْسَأْ فَلَنْ تَعْدُوَ قَدْرَكَ)) قَالَ عُمَرُ: ائْذَنْ لِي فَأَضْرِبَ عُنُقَهُ، قَالَ: ((دَعْهُ إِنْ يَكُنْ هُوَ فَلاَ تُطِيقُهُ، وَإِنْ لَمْ يَكُنْ هُوَ فَلاَ خَيْرَ لَكَ فِي قَتْلِهِ)). [راجع: ١٣٥٤]

न बढ़। उमर (रज़ि.) ने अर्ज़ किया, आप मुझे इजाज़त दें तो मैं इसकी गर्दन मार दूँ। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि इसे छोड़ दो, अगर ये वही (दज्जाल) हुआ तो तुम इस पर क़ाबू नहीं पा सकते और अगर ये वो न हुआ तो इसे क़त्ल करने में तुम्हारे लिये कोई भलाई नहीं। (राजेअ : 1354)

तश्रीह : हज़रत उमर (रज़ि.) ने ये इसलिये कहा कि आइन्दा दज्जाल का अंदेशा ही न रहे। इस हदीष़ की मुनासबत किताबुल क़द्र से यूँ है कि आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, अगर वो दज्जाल है तब तो तुम उसे मार ही न सकोगे क्योंकि अल्लाह ने तक़्दीर यूँ लिखी है कि वो क़यामत के क़रीब निकलेगा और लोगों को गुमराह करेगा आख़िर ईसा (अलैहि.) के हाथ से क़त्ल होगा। तक़्दीर के ख़िलाफ़ नहीं हो सकता। हक़ीक़त ये है कि दज्जाल के लफ़्ज़ी मा'नी के लिहाज़ से इब्ने स़य्याद भी दज्जालों की फ़ेहरिस्त ही का एक फ़र्द था उसके सारे कामों में दजल और फ़रेब का पूरा पूरा दख़ल था, ऐसे लोग उम्मत में बहुत हुए हैं और आज भी मौजूद हैं और आइन्दा भी होते रहेंगे उनको दज्जालून कज़्ज़ाबून कहा गया है।

١٥- باب

﴿قُلْ لَنْ يُصِيبَنَا إِلاَّ مَا كَتَبَ اللَّهُ لَنَا﴾ [التوبة: ٥١] قَضَى. قَالَ مُجَاهِدٌ: بِفَاتِنِينَ بِمُضِلِّينَ إِلاَّ مَنْ كَتَبَ اللَّهُ أَنَّهُ يَصْلَى الْجَحِيمَ ﴿قَدَّرَ فَهَدَى﴾ [الأعلى: ٣] قَدَّرَ الشَّقَاءَ وَالسَّعَادَةَ وَهَدَى الأَنْعَامَ لِمَرَاتِعِهَا.

बाब 15 : सूरह तौबा की उस आयत का बयान

कि ऐ पैग़म्बर! आप कह दीजिए कि हमें सिर्फ़ व ही दरपेश आएगा जो अल्लाह ने हमारे लिये लिख दिया है। और मुजाहिद ने बिफ़ातिनीन की तफ़्सीर में कहा तुम किसी को गुमराह नहीं कर सकते मगर उसको जिसकी क़िस्मत में अल्लाह ने दोज़ख़ लिख दी है और मुजाहिद ने आयत वल्लज़ी क़द्रि फ़हदी की तफ़्सीर में कहा कि जिसने नेकबख़्ती और बदबख़्ती सब तक़्दीर में लिख दी और जिसने जानवरों को उनकी चरागाह बताई।

٦٦١٩- حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ الْحَنْظَلِيُّ، أَخْبَرَنَا النَّضْرُ حَدَّثَنَا دَاوُدُ بْنُ أَبِي الْفُرَاتِ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ بُرَيْدَةَ، عَنْ يَحْيَى بْنِ يَعْمَرَ أَنَّ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا أَخْبَرَتْهُ أَنَّهَا سَأَلَتْ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ عَنِ الطَّاعُونِ فَقَالَ: ((كَانَ عَذَابًا يَبْعَثُهُ اللَّهُ عَلَى مَنْ يَشَاءُ فَجَعَلَهُ اللَّهُ رَحْمَةً لِلْمُؤْمِنِينَ، مَا مِنْ عَبْدٍ يَكُونُ فِي بَلَدٍ يَكُونُ فِيهِ وَيَمْكُثُ فِيهِ لاَ يَخْرُجُ مِنَ

6619. मुझसे इस्हाक़ बिन इब्राहीम हंज़ली ने बयान किया, उन्होंने कहा मुझको नज़्र ने ख़बर दी, उन्होंने कहा हमसे दाऊद बिन अबिल फ़ुरात ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन बुरैदह ने बयान किया, उनसे यह्या बिन यअ़मर ने बयान किया और उन्हें आइशा (रज़ि.) ने ख़बर दी कि उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से ताऊन के बारे में पूछा तो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि ये अ़ज़ाब है और अल्लाह तआ़ला जिस पर चाहता है उसे भेजता है। फिर अल्लाह तआ़ला ने उसे मोमिनों के लिये रहमत बना दिया, कोई भी बन्दा अगर किसी ऐसे शहर में है जिसमें ताऊन की वबा फैली हुई है और वो उसमें ठहरा है और उस शहर से भागा नहीं स़ब्र किया हुआ है और उस पर अज्र का

उम्मीदवार है और यक़ीन रखता है कि उस तक सिर्फ़ व ही चीज़ पहुँच सकती है जो अल्लाह ने उसकी तक़्दीर में लिख दी है तो उसे शहीद के बराबर षवाब मिलेगा। (राजेअ़ : 3474)

الْبَلْدَةِ صَابِرًا مُحْتَسِبًا يَعْلَمُ أَنَّهُ لاَ يُصِيبُهُ إِلاَّ مَا كَتَبَ اللهُ لَهُ إِلاَّ كَانَ لَهُ مِثْلُ أَجْرِ شَهِيدٍ)). [راجع: ٣٤٧٤]

तश्रीह : ताऊ़न एक वरम से शुरू होता है जो बग़ल या गर्दन में ज़ाहिर होता है इससे बुख़ार होकर आदमी जल्द ही मर जाता है। अल्लाहुम्मह़्फ़िज़्ना आमीन।

बाब 16 : आयत वमा कुन्ना लिनह्तदिय अल्अख़ की तफ़्सीर

١٦- باب

और हम हिदायत पाने वाले नहीं थे, अगर अल्लाह ने हमें हिदायत न की होती। अगर अल्लाह ने मुझे हिदायत की होती तो मैं मुत्तक़ियों में से होता। (सूरह अज़्ज़ुमर : 57)

﴿وَمَا كُنَّا لِنَهْتَدِيَ لَوْ لاَ أَنْ هَدَانَا اللهُ﴾ [الأعراف: ٤٣] ﴿لَوْ أَنَّ اللهَ هَدَانِي لَكُنْتُ مِنَ الْمُتَّقِينَ﴾ [الزمر : ٥٧]

तश्रीह : इन आयता को लाकर ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) ने मुअ़तज़िला और क़दरिया के मज़हब का रद्द किया है क्योंकि इन आयात से स़ाफ़ ज़ाहिर होता है कि हिदायत और गुमराही दोनों अल्लाह की त़रफ़ से हैं। इमाम अबू मंसूर ने कहा मुअ़तज़िला से तो काफ़िर ही बेहतर होगा जो आख़िरत में यूँ कहेगा। लौ अन्नल्लाह ह़दानी लकुन्तु मिनल मुत्तक़ीन।

6620. हमसे अबुन नोअ़मान ने बयान किया, उन्हों ने कहा कि हमको जरीर ने ख़बर दी जो इब्ने हाज़िम हैं, उन्हेंअबू इस्ह़ाक़ ने, उनसे बराअ बिन आ़ज़िब (रज़ि.) ने कहा कि मैंने ग़ज़्वा ख़ंदक़ के दिन रसूलुल्लाह (ﷺ) को देखा कि आप हमारे साथ मिट्टी उठा रहे थे और ये कहते जाते थे।

वल्लाह! अगर अल्लाह न होता तो हम हिदायत न पा सकते।
न रोज़ा रख सकते और न नमाज़ पढ़ सकते।
पस ऐ अल्लाह! हम पर सकीनत नाज़िल फ़र्मा।
और जब आमना-सामना हो तो हमे षाबित क़दम रख।
और मुश्रिकीन ने हम पर ज़्यादती की है।
जब वो किसी फ़ित्ने का इरादा करते हैं तो हम इंकार करते हैं।
(राजेअ़ : 2836)

٦٦٢٠- حَدَّثَنَا أَبُو النُّعْمَانِ، أَخْبَرَنَا جَرِيرٌ هُوَ ابْنُ حَازِمٍ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ قَالَ: رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَوْمَ الْخَنْدَقِ يَنْقُلُ مَعَنَا التُّرَابَ وَهُوَ يَقُولُ :

وَاللهِ لَوْ لاَ اللهُ مَا اهْتَدَيْنَا
وَلاَ صُمْنَا وَلاَ صَلَّيْنَا
فَأَنْزِلَنْ سَكِينَةً عَلَيْنَا
وَثَبِّتِ الأَقْدَامَ إِنْ لاَقَيْنَا
وَالْمُشْرِكُونَ قَدْ بَغَوْا عَلَيْنَا
إِذَا أَرَادُوا فِتْنَةً أَبَيْنَا
[راجع: ٢٨٣٦]

83. किताबुल ऐमान वन्नुज़ूर

किताब क़समों और नज़रों के बयान में

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

बाब 1 : अल्लाह तआला ने सूरह माइदह में फ़र्माया

١- باب

قَوْلُ اللهِ تَعَالَى: ﴿لاَ يُؤَاخِذُكُمُ اللهُ بِاللَّغْوِ فِي أَيْمَانِكُمْ، وَلَكِنْ يُؤَاخِذُكُمْ بِمَا عَقَّدْتُمُ الأَيْمَانَ فَكَفَّارَتُهُ إِطْعَامُ عَشَرَةِ مَسَاكِينَ مِنْ أَوْسَطِ مَا تُطْعِمُونَ أَهْلِيكُمْ أَوْ كِسْوَتُهُمْ أَوْ تَحْرِيرُ رَقَبَةٍ فَمَنْ لَمْ يَجِدْ فَصِيَامُ ثَلاَثَةِ أَيَّامٍ ذَلِكَ كَفَّارَةُ أَيْمَانِكُمْ إِذَا حَلَفْتُمْ وَاحْفَظُوا أَيْمَانَكُمْ كَذَلِكَ يُبَيِّنُ اللهُ لَكُمْ آيَاتِهِ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ﴾ [المائدة: ٨٩].

अल्लाह तआला लग़्व क़समों पर तुमको नहीं पकड़ेगा, अल्बत्ता उन क़समों पर पकड़ेगा जिन्हें तुम पक्के तौर पर खाओ। पस उसका कफ़्फ़ारा दस मिस्कीनों को मा'मूली खाना खिलाना है, उस औसत खाने के मुताबिक़ जो तुम अपने घरवालों को खिलाते हो या उनको कपड़ा पहनाना या एक गुलाम आज़ाद करना। पस जो शख़्स ये चीज़ें न पाए तो उसके लिये तीन दिन के रोज़े रखना है ये तुम्हारी क़समों का कफ़्फ़ारा है जिस वक़्त तुम क़सम खाओ और अपनी क़समों की हिफ़ाज़त करो। इसी तरह अल्लाह तआला अपने हुक्मों को खोलकर बयान करता है शायद कि तुम शुक्र करो। (सूरह अल माइदह : 89)

तश्रीह : आयत से ये उसूल क़ायम हुआ कि लग़्व क़समें मुनअक़िद नहीं होती हैं न उन पर कफ़्फ़ारा है हाँ जो दिल से खाई जाएँ उन पर शरई अहकाम लाज़िम आते हैं। मज़ीद तफ़्सीलात आगे आ रही हैं जो बग़ौर मुतालआ फ़र्माने वाले मा'लूम फ़र्मा सकेंगे, **वल्लाहु हुवल मुवफ़्फ़िक़।**

٦٦٢١- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مُقَاتِلٍ أَبُو الْحَسَنِ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ، أَخْبَرَنَا هِشَامُ بْنُ عُرْوَةَ، عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ أَنَّ أَبَا بَكْرٍ لَمْ يَكُنْ يَحْنَثُ فِي يَمِينٍ قَطُّ حَتَّى أَنْزَلَ

6612. हमसे अबुल हसन मुहम्मद बिन मुक़ातिल ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, कहा हमको हिशाम बिन उ़र्वा ने ख़बर दी, उन्हें उनके वालिद ने और उन्हें हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि अबूबक्र (रज़ि.) कभी अपनी क़सम नहीं तोड़ते थे, यहाँ तक कि अल्लाह तआला ने

क़सम का कफ़्फ़ारा उतारा। उस वक़्त उन्होंने कहा कि अब अगर मैं कोई क़सम खाऊँगा और उसके सिवा कोई चीज़ भलाई की होगी तो मैं वही काम करूँगा जिसमें भलाई हो और अपनी क़सम का कफ़्फ़ारा दे दूँगा। (राजेअ़ : 4614)

اللهُ كَفَّارَةَ الْيَمِينِ وَقَالَ: لاَ أَحْلِفُ عَلَى يَمِينٍ، فَرَأَيْتُ غَيْرَهَا خَيْرًا مِنْهَا إِلاَّ أَتَيْتُ الَّذِي هُوَ خَيْرٌ وَكَفَّرْتُ عَنْ يَمِينِي.

[راجع: ٤٦١٤]

6622. हमसे अबुन नोअ़मान मुहम्मद बिन फ़ज़ल सदूसी ने बयान किया, कहा हमसे जरीर बिन ह़ाज़िम ने बयान किया, कहा हमसे इमाम ह़सन बस़री ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुर्रह़मान बिन समुरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, ऐ अ़ब्दुर्रह़मान बिन समुरह! कभी किसी हुकूमत के ओहदे की दरख़्वास्त न करना क्योंकि अगर तुम्हें ये मांगने के बाद मिलेगा तो अल्लाह पाक अपनी मदद तुझसे उठा लेगा। तू जान, तेरा काम जाने और अगर वो ओहदा तुम्हें बग़ैर मांगे मिल गया तो उसमें अल्लाह की त़रफ़ से तुम्हारी मदद की जाएगी और जब तुम कोई क़सम खा लो और उसके सिवा किसी और चीज़ में भलाई देखो तो अपनी क़सम का कफ़्फ़ारा दे दो और वो काम करो जो भलाई का हो। (दीगर मकामात : 6777, 7146, 7147)

٦٦٢٢- حَدَّثَنَا أَبُو النُّعْمَانِ مُحَمَّدُ بْنُ الْفَضْلِ، حَدَّثَنَا جَرِيرُ بْنُ حَازِمٍ، حَدَّثَنَا الْحَسَنُ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنِ سَمُرَةَ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((يَا عَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنَ سَمُرَةَ لاَ تَسْأَلِ الإِمَارَةَ، فَإِنَّكَ إِنْ أُوتِيتَهَا عَنْ مَسْأَلَةٍ وُكِلْتَ إِلَيْهَا وَإِنْ أُوتِيتَهَا مِنْ غَيْرِ مَسْأَلَةٍ أُعِنْتَ عَلَيْهَا، وَإِذَا حَلَفْتَ عَلَى يَمِينٍ فَرَأَيْتَ غَيْرَهَا خَيْرًا مِنْهَا فَكَفِّرْ عَنْ يَمِينِكَ، وَائْتِ الَّذِي هُوَ خَيْرٌ)).

[أطرافه في: ٦٧٧٧، ٧١٤٦، ٧١٤٧].

6623. हमसे अबुन नोअ़मान ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे ग़ीलान बिन जरीर ने, उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने, उनसे उनके वालिद ने बयान किया, कि मैं अश्अ़री क़बीले की एक जमाअ़त के साथ रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुआ और आपसे सवारी मांगी। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि वल्लाह! मैं तुम्हारे लिये सवारी का कोई इंतिज़ाम नहीं कर सकता और न मेरे पास कोई सवारी का जानवर है। बयान किया फिर जितने दिनों अल्लाह ने चाहा हम यूँ ही ठहरे रहे। उसके बाद तीन अच्छी क़िस्म की ऊँटनियाँ लाई गईं और आँह़ज़रत (ﷺ) ने उन्हें हमें सवारी के लिये इनायत कर दिया। जब हम रवाना हुए तो हमने कहा या हममें से कुछ ने कहा, वल्लाह! हमें इसमें बरकत नहीं ह़ासिल होगी। हम आँह़ज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में सवारी मांगने आए थे तो आपने क़सम खा ली थी कि आप हमारे लिये सवारी का इंतिज़ाम नहीं कर सकते और अब आपने हमें सवारी इनायत की है हमें आँह़ज़रत (ﷺ) के पास जाना चाहिये

٦٦٢٣- حَدَّثَنَا أَبُو النُّعْمَانِ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، عَنْ غَيْلاَنَ بْنِ جَرِيرٍ، عَنْ أَبِي بُرْدَةَ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: أَتَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي رَهْطٍ مِنَ الأَشْعَرِيِّينَ أَسْتَحْمِلُهُ فَقَالَ: ((وَاللهِ لاَ أَحْمِلُكُمْ، وَمَا عِنْدِي مَا أَحْمِلُكُمْ عَلَيْهِ)) قَالَ: ثُمَّ لَبِثْنَا مَا شَاءَ اللهُ أَنْ نَلْبَثَ ثُمَّ أُتِيَ بِثَلاَثِ ذَوْدٍ غُرِّ الذُّرَى فَحَمَلَنَا عَلَيْهَا، فَلَمَّا انْطَلَقْنَا قُلْنَا: أَوْ قَالَ بَعْضُنَا، وَاللهِ لاَ يُبَارَكُ لَنَا أَتَيْنَا النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَسْتَحْمِلُهُ فَحَلَفَ أَنْ لاَ يَحْمِلَنَا ثُمَّ حَمَلَنَا، فَارْجِعُوا بِنَا إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَنُذَكِّرَهُ فَأَتَيْنَاهُ فَقَالَ: ((مَا أَنَا

حَمَلْتُكُمْ، بَلِ اللهُ حَمَلَكُمْ وَإِنِّي وَاللهِ إِنْ شَاءَ اللهُ لاَ أَحْلِفُ عَلَى يَمِينٍ فَأَرَى غَيْرَهَا خَيْرًا مِنْهَا إِلاَّ كَفَّرْتُ عَنْ يَمِينِي، وَأَتَيْتُ الَّذِي هُوَ خَيْرٌ أَوْ أَتَيْتُ الَّذِي هُوَ خَيْرٌ وَكَفَّرْتُ عَنْ يَمِينِي)). [راجع: ٣١٣٣]

और आपको क़सम याद दिलानी चाहिये। चुनाँचे हम आपकी ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए तो आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैंने तुम्हारी सवारी का कोई इंतिज़ाम नहीं किया है बल्कि अल्लाह तआला ने इंतिज़ाम किया है और मैं, वल्लाह! कोई भी अगर क़सम खा लूँगा और उसके सिवा किसी और चीज़ में भलाई देखूँगा तो अपनी क़सम का कफ़्फ़ारा दे दूँगा। जिसमें भलाई होगी या आँह़ज़रत (ﷺ) ने यूँ फ़र्माया कि वही करूँगा जिसमें भलाई होगी और अपनी क़सम का कफ़्फ़ारा अदा कर दूँगा। (राजेअ: 3133)

٦٦٢٤- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنْ هَمَّامِ بْنِ مُنَبِّهٍ، قَالَ: هَذَا مَا حَدَّثَنَا أَبُو هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((نَحْنُ الآخِرُونَ السَّابِقُونَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ)).[راجع: ٢٣٨]

6624. मुझसे इस्ह़ाक़ बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने ख़बर दी, कहा हमको मअ़मर ने ख़बर दी, उनसे हम्माम बिन मुंबा ने बयान किया कि ये वो ह़दीष़ है जो हमसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान की कि नबी करीम (ﷺ)ने फ़र्माया कि, हम आख़िरी उम्मत हैं और क़यामत के दिन जन्नत में सबसे पहले दाख़िल होंगे। (राजेअ: 238)

٦٦٢٥- فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((وَاللهِ لأَنْ يَلَجَّ أَحَدُكُمْ بِيَمِينِهِ فِي أَهْلِهِ آثَمُ لَهُ عِنْدَ اللهِ مِنْ أَنْ يُعْطِيَ كَفَّارَتَهُ الَّتِي افْتَرَضَ اللهُ عَلَيْهِ)).

6625. फिर आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि वल्लाह! (बसा औक़ात) अपने घर वालों के मामले में तुम्हारा अपनी क़समों पर इस़रार करते रहना अल्लाह के नज़दीक उससे ज़्यादा गुनाह की बात होती है कि (क़सम तोड़कर) उसका वो कफ़्फ़ारा अदा कर दिया जाए जो अल्लाह तआ़ला ने उस पर फ़र्ज़ किया है।

٦٦٢٦- حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ يَعْنِي ابْنَ إِبْرَاهِيمَ، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ صَالِحٍ، حَدَّثَنَا مُعَاوِيَةُ، عَنْ يَحْيَى، عَنْ عِكْرِمَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((مَنِ اسْتَلَجَّ فِي أَهْلِهِ بِيَمِينٍ، فَهُوَ أَعْظَمُ إِثْمًا لِيَبَرَّ)) يَعْنِي الْكَفَّارَةَ. [راجع: ٦٦٢٥]

6626. मुझसे इस्ह़ाक़ या'नी इब्ने इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे यह़्या बिन स़ालेह ने बयान किया, उन्हों ने कहा हमसे मुआविया ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे यह़्या ने, उनसे इक्रिमा ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, वो शख़्स़ जो अपने घरवालों के मामले में क़सम पर अड़ा रहता है वो उससे बड़ा गुनाह करता है कि उस क़सम का कफ़्फ़ारा अदा कर दे। (राजेअ: 6625)

तश्रीह: इसमें ये इशारा है कि ग़लत़ क़सम पर अड़े रहना कोई उ़म्दह काम नहीं है बल्कि उसे तोड़कर उसका कफ़्फ़ारा अदा कर देना ये ही बेहतर है नीचे की अह़ादीष़ में भी यही मज़्मून बयान हुआ है। क़सम खाने में ग़ौर व एह़तियात़ की बहुत ज़रूरत है और क़सम अल्लाह के नाम की खानी चाहिये।

٢- باب قَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ: ((وَايْمُ اللهِ))

बाब 2 : रसूलुल्लाह (ﷺ) का यूँ क़सम खाना, वयमुल्लाह (अल्लाह की क़सम)

6627. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इस्माईल बिन जा'फ़र ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन दीनार ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूले करीम (ﷺ) ने एक फ़ौज भेजी और उसका अमीर उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) को बनाया। कुछ लेगो ने उनके अमीर बनाए जाने पर ए'तिराज़ किया तो आँह़ज़रत (ﷺ) खड़े हुए और फ़र्माया अगर तुम लोग इसके अमीर बनाए जाने पर ए'तिराज़ करते हो तो तुम इससे पहले इसके वालिद ज़ैद के अमीर बनाए जाने पर भी ए'तिराज़ कर चुके हो और अल्लाह की क़सम! (वयमुल्लाह) ज़ैद (रज़ि.) अमीर बनाए जाने के क़ाबिल थे और मुझे सब लोगों से ज़्यादा अ़ज़ीज़ थे और ये (उसामा रज़ि.) उनके बाद मुझे सबसे ज़्यादा अ़ज़ीज़ हैं। (राजेअ़ : 3730)

٦٦٢٧- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، عَنْ إِسْمَاعِيلَ بْنِ جَعْفَرٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ دِينَارٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: بَعَثَ رَسُولُ اللهِ ﷺ بَعْثًا، وَأَمَّرَ عَلَيْهِمْ أُسَامَةَ بْنَ زَيْدٍ فَطَعَنَ بَعْضُ النَّاسِ فِي إِمْرَتِهِ فَقَامَ رَسُولُ اللهِ ﷺ فَقَالَ: ((إِنْ كُنْتُمْ تَطْعُنُونَ فِي إِمْرَتِهِ، فَقَدْ كُنْتُمْ تَطْعُنُونَ فِي إِمْرَةِ أَبِيهِ مِنْ قَبْلُ، وَايْمُ اللهِ إِنْ كَانَ لَخَلِيقًا لِلإِمَارَةِ، وَإِنْ كَانَ لَمِنْ أَحَبِّ النَّاسِ إِلَيَّ، وَإِنَّ هَذَا لَمِنْ أَحَبِّ النَّاسِ إِلَيَّ بَعْدَهُ)). [راجع: ٣٧٣٠]

बाब 3 : नबी करीम (ﷺ) क़सम किस त़रह़ खाते थे

٣- باب كَيْفَ كَانَتْ يَمِينُ النَّبِيِّ ﷺ؟

और सअ़्द बिन अबी वक़्क़ास़ (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ मे मेरी जान है, और अबू क़तादा (रज़ि.) ने बयान किया कि अबूबक्र (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) की मौजूदगी में कहा नहीं, वल्लाह। इसलिये वल्लाह, बिल्लाह और तल्लाह की क़सम खाई जा सकती है।

وَقَالَ سَعْدٌ، قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ)). وَقَالَ أَبُو قَتَادَةَ: قَالَ أَبُو بَكْرٍ عِنْدَ النَّبِيِّ ﷺ: لاَ هَا اللهِ إِذًا يُقَالُ وَاللهِ وَبِاللهِ وَتَاللهِ.

6628. हमसे मुह़म्मद बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उनसे सुफ़यान ने, उनसे मूसा बिन उ़क़्बा ने और उनसे सालिम ने और उनसे इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) की क़सम बस इतनी थी कि नहीं, दिलों के फेरने वाले अल्लाह की क़सम। (राजेअ़ : 6617)

٦٦٢٨- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ، عَنْ سُفْيَانَ، عَنْ مُوسَى بْنِ عُقْبَةَ، عَنْ سَالِمٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: كَانَتْ يَمِينُ النَّبِيِّ ﷺ ((لاَ وَمُقَلِّبِ الْقُلُوبِ)).[راجع: ٦٦١٧]

तश्रीह़ : इस ह़दीष़ से ये निकला कि अल्लाह की किसी स़िफ़त के साथ क़सम खाना स़ह़ीह़ होगा और वो शरई क़सम होगी, बवक़्ते ज़रूरत इसका कफ़्फ़ारा भी लाज़िम होगा।

6629. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अबू अ़वाना ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल मलिक ने, उनसे जाबिर बिन समुरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, जब क़ैस़र हलाक हो जाएगा तो फिर उसके बाद कोई क़ैस़र नहीं पैदा होगा और जब किसरा हलाक हो जाएगा तो उसके बाद कोई किसरा पैदा नहीं होगा और उस ज़ात की

٦٦٢٩- حَدَّثَنَا مُوسَى، حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ، عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ، عَنْ جَابِرِ بْنِ سَمُرَةَ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((إِذَا هَلَكَ قَيْصَرُ فَلاَ قَيْصَرَ بَعْدَهُ، وَإِذَا هَلَكَ كِسْرَى فَلاَ كِسْرَى بَعْدَهُ، وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ

क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है तुम उनके ख़ज़ाने अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करोगे। (राजेअ : 3121)

لَتُنْفَقَنَّ كُنُوزُهُمَا فِي سَبِيلِ اللهِ)).

[راجع: ٣١٢١]

तश्रीह : फ़ला कैसर बअदुहू अल्ख़ फ़िश्शाम व हाज़ा क़ालहू (ﷺ) ततय्यिबल लिक़ुलूबि असहाबिही मिन क़ुरैश व तब्शीरल्लहुम सयज़ूलु अनिल अक़्लीमैनिल मज़्कूरैन लिअन्नहुम कानू यातूनहुमा लित्तिजारति फ़लम्मा अस्लमू ख़ाफ़ू इन्क़िताअ सफ़्रिहिम इलैहिमा फ़अम्मा किस्रा फ़क़द फ़र्रक़ल्लाहु मुल्क़हू बिदुआइ (ﷺ) कमा फ़र्रक़ किताबहू व वल तबक़ बक़िय्यतुन व ज़ाल मुल्कुहू मिन जमीइल अर्ज़ि व अम्मा क़ैसरु फ़इन्नहू लम्मा वरद इलैहि किताबुन नबी (ﷺ) अक्रमहू व वज़अहू फ़िल मिस्कि फ़दआ लहू (ﷺ) अंय्युष्बितल्लाहु मुल्कहू फ़षबत मुल्कुहू फ़िर्रूम वन्क़तअ फ़िश्शाम. (क़स्तलानी)

या'नी उसके हलाक होने के बाद शाम में अब और कोई क़ैसर नहीं हो सकेगा। आँहज़रत (ﷺ) ने ये अपने अस्हाबे किराम को बतौरे बशारत फ़र्माया था कि अन्क़रीब अब किसरा व क़ैसर की हुकूमतें ख़त्म हो जाएँगी। ये क़ुरैशी सहाबा किराम इस्लाम से पहले उन मुल्कों में तिजारती सफ़र किया करते थे इस्लाम लाने के बाद उनको इस सफ़र मे ख़दशा नज़र आया इसलिये आपने उनको ये बशारत सुनाई। किसरा ने तो आँहज़रत (ﷺ) के नाम-ए-मुबारक को चाक चाक किया था आँहज़रत (ﷺ) की बद्दुआ से उसका मुल्क चाक चाक हो गया और सारी रूए ज़मीन से उसका नामो–निशान मिट गया। क़ैसर ने आपके नामा-ए-मुबारक को बाइज़्ज़त व इकराम रखा था उसके मुल्क के बाक़ी रहने की आप (ﷺ) ने दुआ फ़र्माई। पस उसका मुल्क शाम से मुन्क़तअ होकर रोम में बाक़ी रह गया मुल्के शाम के बारे में आपकी दोनों हुकूमतें के बारे मे पेशीनगोई हर्फ़ ब हर्फ़ सहीह षाबित हुई। (ﷺ)

6630. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुह्री ने, उन्हें सईद बिन मुसय्यब ने ख़बर दी और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया जब किसरा (बादशाहे ईरान) हलाक हो जाएगा तो उसके बाद कोई किसरा नहीं पैदा होगा और जब क़ैसर (बादशाहे रोम) हलाक हो जाएगा तो उसके बाद कोई क़ैसर नहीं पैदा होगा और उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है तुम उनके ख़ज़ाने अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करोगे। (राजेअ : 327)

٦٦٣٠- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ أَخْبَرَنِي سَعِيدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِذَا هَلَكَ كِسْرَى فَلاَ كِسْرَى بَعْدَهُ، وَإِذَا هَلَكَ قَيْصَرُ فَلاَ قَيْصَرَ بَعْدَهُ، وَالَّذِي نَفْسُ مُحَمَّدٍ بِيَدِهِ لَتُنْفَقَنَّ كُنُوزُهُمَا فِي سَبِيلِ اللهِ)).[راجع: ٣٢٧]

आँहज़रत (ﷺ) ने जैसा फ़र्माया था वैसा ही हुआ। ईरान और रोम दोनों मुसलमानों ने फ़तह कर लिये और उनके ख़ज़ाने सब मुसलमानों के हाथ आए। पेशीनगोई हर्फ़ ब हर्फ़ सहीह षाबित हुई। उस दिन से आज तक ईरान मुसलमानों ही के ज़ेरे नगीं है। सदक़ रसूलुल्लाह (ﷺ)।

6631. मुझसे मुहम्मद बिन सलाम ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको अब्दह ने ख़बर दी, उन्हें हिशाम बिन उर्वा ने, उन्हें उनके वालिद उर्वा बिन ज़ुबैर ने और उन्हें हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, ऐ उम्मते मुहम्मद! वल्लाह! अगर तुम वो जानते जो मैं जानता हूँ तो ज़्यादा रोते और कम हंसते। (राजेअ : 1044)

٦٦٣١- حَدَّثَنِي مُحَمَّدٌ، أَخْبَرَنَا عَبْدَةُ، عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ قَالَ: ((يَا أُمَّةَ مُحَمَّدٍ وَاللهِ لَوْ تَعْلَمُونَ مَا أَعْلَمُ لَبَكَيْتُمْ كَثِيرًا وَلَضَحِكْتُمْ قَلِيلاً)).

[راجع: ١٠٤٤]

6632. हमसे यह्या बिन सुलैमान ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे इब्ने वहब ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझे हैवह ने ख़बर दी, कहा कि मुझसे अबू अक़ील ज़ुह्रा बिन मअ़बद ने बयान किया, उन्होंने अपने दादा अ़ब्दुल्लाह बिन हिशाम से सुना, उन्होंने बयान किया कि हम नबी करीम (ﷺ) के साथ थे और आप उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) का हाथ पकड़े हुए थे। उ़मर (रज़ि.) ने अ़र्ज़ किया, या रसूलल्लाह! आप मुझे हर चीज़ से ज़्यादा अ़ज़ीज़ हैं, सिवा मेरी अपनी जान के। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया नहीं, उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है। (ईमान उस वक़्त तक मुकम्मल नहीं हो सकता) जब मैं तुम्हें तुम्हारी अपनी जान से भी ज़्यादा अ़ज़ीज़ न हो जाऊँ। उ़मर (रज़ि.) ने अ़र्ज़ किया फिर वल्लाह! अब आप मुझे मेरी अपनी जान से भी ज़्यादा अ़ज़ीज़ हैं। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, हाँ उ़मर! अब तेरा ईमान पूरा हुआ। (राजेअ़ : 3694)

٦٦٣٢- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سُلَيْمَانَ، قَالَ حَدَّثَنِي ابْنُ وَهْبٍ، قَالَ أَخْبَرَنِي حَيْوَةُ، قَالَ حَدَّثَنِي أَبُو عَقِيلٍ زُهْرَةُ بْنُ مَعْبَدٍ أَنَّهُ سَمِعَ جَدَّهُ عَبْدَ اللهِ بْنَ هِشَامٍ قَالَ: كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ وَهُوَ آخِذٌ بِيَدِ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ فَقَالَ لَهُ عُمَرُ: يَا رَسُولَ اللهِ لأَنْتَ أَحَبُّ إِلَيَّ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ، إِلاَّ مِنْ نَفْسِي فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ لَهُ: ((لاَ وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ حَتَّى أَكُونَ أَحَبَّ إِلَيْكَ مِنْ نَفْسِكَ))، فَقَالَ لَهُ عُمَرُ: فَإِنَّهُ الآنَ وَاللهِ لأَنْتَ أَحَبُّ إِلَيَّ مِنْ نَفْسِي فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ ((الآنَ يَا عُمَرُ)). [راجع: ٣٦٩٤]

तश्रीह : इस ह़दीष़ से साफ़ ज़ाहिर हुआ कि रसूले करीम (ﷺ) की मुहब्बत आपकी इक़्तिदा व फ़र्मांबरदारी सबसे बुलंद व बाला है। उस्ताद हो या पीर मुर्शिद या इमाम मुज्तहिद सबसे मुक़द्दम जनाब रसूले करीम (ﷺ) की शख़्सियत है। मुहब्बत के यही मा'नी हैं ये नहीं कि ज़ुबान से या रसूलल्लाह पुकार लिया या आपका नामे मुबारक सुनकर उँगलियों को चूम लिया या निस्बतन अ़क़ाइद तस्नीफ़ कर लिये ये सब रस्मी और बिदई तरीक़े अल्लाह के यहाँ काम आने वाले नहीं हैं। क़ुर्आन पाक में साफ़ इर्शाद है, **इन कुन्तुम तुहिब्बूनल्लाह फ़त्तबिऊनी युहबिबकुमुल्लाह** अगर अल्लाह की मुहब्बत का दा'वा है तो मेरे क़दम ब क़दम चलो, इस सूरत में अल्लाह भी तुमको अपना महबूब बना लेगा। इसलिये कहा गया है **दुऊ कुल्ल क़ौलिन इन्द क़ौलि मुहम्मद** या'नी जहाँ रसूले करीम (ﷺ) के इर्शाद से किसी भी इमाम या मुज्तहिद या पीर मुर्शिद कसे बाशद भी का क़ौल आपके क़ौल से टकराए वहाँ आप (ﷺ) के क़ौले मुबारक को मुक़द्दम रखो और मुख़ालिफ़ तौर पर सारे अक़्वाल को छोड़ दो। बस सिर्फ़ इतनी ही बात है जो भी मुक़ल्लिदीन जामेदीन को पसंद नहीं कि इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह़.) ने माना जो बहुत बड़े इमाम बुज़ुर्ग हैं और आपने ख़ुद साफ़ फ़र्मा दिया है कि, **इज़ा सह्हल ह़दीष़ फ़हुव मज़हबी** जब सहीह ह़दीष़ मिल जाए और मेरा क़ौल उसके ख़िलाफ़ हो तो मेरे क़ौल को छोड़ दो और सहीह ह़दीष़ पर अ़मल करो क्योंकि मेरा मज़हब भी वही है जो ह़दीष़ सहीह से ष़ाबित है मगर इस बात को सुनकर मुक़ल्लिदीन जामेदीन अहले ह़दीष़ को गुस्ताख़ और लामज़हब ग़ैर मुक़ल्लिद नामों से मशहूर करके अपनी ग़लत़ रवी का षुबूत देते हैं ऐसे लोग बक़ौल ह़ज़रत शाह वलीउल्लाह मुहद्दिष़ देहलवी क़यामत के दिन अल्लाह को क्या मुँह दिखलाएँगे। जब अल्लाह पाक पूछेगा कि मेरे और मेरे रसूल के सरीह़ हुक्म के ख़िलाफ़ तुमने अपने इमाम मुज्तहिद की बात को क्यूँ मज़हब बनाया था इसलिये अल्लाह वालों ने साफ़ लफ़्ज़ों में लिख दिया है कि अल्लाह ने हर शख़्स पर मुसलमान होना फ़र्ज़ क़रार दिया है ये फ़र्ज़ नहीं कि वो ह़नफ़ी या शाफ़ई या मालिकी या ह़ंबली नहीं बल्कि सिर्फ़ मुसलमान मोमिन फ़र्ज़ क़रार दिया है।

मगर मुक़ल्लिदीन का ह़ाल देखकर कहना पड़ता है कि **मालि हाउलाइल्क़ौमु ला यकादून यफ़्क़हून ह़दीष़ा**

6633,34. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, कहा कि मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे उ़बैदुल्लाह बिन उ़त्बा बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने,

٦٦٣٣، ٦٦٣٤- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكٌ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ

عُبَيْدِ اللهِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُتْبَةَ بْنِ مَسْعُودٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ وَزَيْدِ بْنِ خَالِدٍ أَنَّهُمَا أَخْبَرَاهُ أَنَّ رَجُلَيْنِ اخْتَصَمَا إِلَى رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ أَحَدُهُمَا: اقْضِ بَيْنَنَا بِكِتَابِ اللهِ وَقَالَ الآخَرُ وَهُوَ أَفْقَهُهُمَا: أَجَلْ يَا رَسُولَ اللهِ فَاقْضِ بَيْنَنَا بِكِتَابِ اللهِ وَائْذَنْ لِي أَنْ أَتَكَلَّمَ قَالَ: ((تَكَلَّمْ)) قَالَ: إِنَّ ابْنِي كَانَ عَسِيفًا عَلَى هَذَا، قَالَ مَالِكٌ، وَالْعَسِيفُ: الأَجِيرُ زَنَى بِامْرَأَتِهِ، فَأَخْبَرُونِي أَنَّ عَلَى ابْنِي الرَّجْمَ فَافْتَدَيْتُ مِنْهُ بِمِائَةِ شَاةٍ وَجَارِيَةٍ، ثُمَّ إِنِّي سَأَلْتُ أَهْلَ الْعِلْمِ فَأَخْبَرُونِي أَنَّ مَا عَلَى ابْنِي جَلْدُ مِائَةٍ وَتَغْرِيبُ عَامٍ، وَإِنَّمَا الرَّجْمُ عَلَى امْرَأَتِهِ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((أَمَا وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لأَقْضِيَنَّ بَيْنَكُمَا بِكِتَابِ اللهِ، أَمَّا غَنَمُكَ وَجَارِيَتُكَ فَرَدٌّ عَلَيْكَ)) وَجَلَدَ ابْنَهُ مِائَةً وَغَرَّبَهُ عَامًا وَأَمَرَ أُنَيْسًا الأَسْلَمِيَّ أَنْ يَأْتِيَ امْرَأَةَ الآخَرِ، فَإِنِ اعْتَرَفَتْ رَجَمَهَا فَاعْتَرَفَتْ فَرَجَمَهَا.

[راجع: ٢٣١٤، ٢٣١٥]

उन्हें अबू हुरैरह (रज़ि.) और ज़ैद बिन ख़ालिद (रज़ि.) ने ख़बर दी कि दो आदमियों ने रसूलुल्लाह (ﷺ) की मज्लिस में अपना झगड़ा पेश किया। उनमें से एक ने कहा कि हमारे दरम्यान आप किताबुल्लाह के मुताबिक़ फ़ैसला कर दें। दूसरे ने, जो ज़्यादा समझदार था कहा कि ठीक है, या रसूलल्लाह! हमारे बीच किताबुल्लाह के मुताबिक़ फ़ैसला कर दीजिए और मुझे इजाज़त दीजिए कि इस मामले में कुछ अ़र्ज़ करूँ। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि कहो। उन साहब ने कहा कि मेरा लड़का इस शख़्स के यहाँ अ़सीफ़ था। अ़सीफ़, अजीर को कहते हैं। (अजीर के मा'नी मज़दूर के हैं) और उसने उसकी बीवी से ज़िना कर लिया। इन्होंने मुझसे कहा कि अब मेरे लड़के को संगसार किया जाएगा। इसलिये (इससे नजात दिलाने के लिये) मैंने सौ बकरियों और एक लौण्डी का इन्हें फ़िदया दे दिया फिर मैंने दूसरे इल्मवालों से इस मसले को पूछा तो उन्होंने बताया कि मेरे लड़के की सज़ा ये है कि उसे सौ कोड़े लगाए जाएँ और एक साल के लिये शहर बदर कर दिया जाए, संगसार की सज़ा सिर्फ़ उस औरत को होगी। इस पर आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है मैं तुम्हारे फ़ैसला किताबुल्लाह के मुताबिक़ करूँगा। तुम्हारी बकरियाँ और तुम्हारी लौण्डी तुम्हें वापस होगी और फिर आपने उस लड़के को सौ कोड़े लगवाए और एक साल के लिये जलावतन कर दिया। फिर आपने उनैस असलमी से फ़र्माया कि मुद्दई की बीवी को लाएऔर अगर वो ज़िना का इक़रार करे तो उसे संगसार कर दे उस औरत ने ज़िना का इक़रार कर लिया और संगसार कर दी गई। (राजेअ़ : 2314,2314)

٦٦٣٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ، حَدَّثَنَا وَهْبٌ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ أَبِي يَعْقُوبَ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي بَكْرَةَ، عَنْ أَبِيهِ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((أَرَأَيْتُمْ إِنْ كَانَ أَسْلَمُ وَغِفَارٌ وَمُزَيْنَةُ وَجُهَيْنَةُ خَيْرًا مِنْ تَمِيمٍ وَعَامِرِ بْنِ صَعْصَعَةَ

6635. मुझसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे वहब ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन अबी यअ़क़ूब ने, उनसे अ़ब्दुर्रहमान बिन अबीबक्र ने और उनसे उनके वालिद ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया भला बतलाओ असलम, ग़िफ़ार, मुज़ैना और जुहैना के क़बाइल अगर तमीम, आ़मिर बिन स़अ़स़आ़, ग़त़्फ़ान और असद वालों से बेहतर हों तो ये तमीम और आ़मिर और ग़त़्फ़ान और असद वाले घाटे में पड़े और नुक़्सान में रहे या नहीं।

स़हाबा ने अ़र्ज़ किया, जी हाँ! बेशक। आँहज़रत (ﷺ) ने उस पर फिर फ़र्माया कि उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है वो (पहले जिन क़बाइल का ज़िक्र हुआ) उन (तमीम वग़ैरह) से बेहतर हैं। (राजेअ़ : 3515)

وَغَطَفَانَ وَأَسَدٍ خَابُوا وَخَسِرُوا)) قَالُوا: نَعَمْ. فَقَالَ: ((وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ إِنَّهُمْ خَيْرٌ مِنْهُمْ)). [راجع: ٣٥١٥]

6636. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐ़ब ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुह्री ने, कहा कि मुझे उ़र्वा ष़क़्फ़ी ने ख़बर दी, उन्हेंअबू हुमैद साइ़दी (रज़ि.) ने ख़बर दी कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने एक आ़मिल मुक़र्रर किया। आ़मिल अपने काम पूरे करके आँहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अ़र्ज़ किया, या रसूलल्लाह! ये माल आपका है और ये माल मुझे तोह़फ़ा दिया गया है। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि फिर तुम अपने माँ-बाप के घर ही में क्यूँ नहीं बैठे रहे और फिर देखते कि तुम्हें कोई तोह़फ़ा देता है या नहीं। उसके बाद आप ख़ुत़्बे के लिये खड़े हुए, रात की नमाज़ के बाद फ़र्माया, अम्मा बअ़द! ऐसे आ़मिल को क्या हो गया है कि हम उसे आ़मिल बनाते हैं। (जिज़्या और दूसरे टेक्स वसूल करने के लिये) और वो फिर हमारे पास आकर कहता है कि ये तो आपका टेक्स है और ये मुझे तोह़फ़ा दिया गया है। फिर वो अपने माँ-बाप के घर क्यूँ नहीं बैठा और देखता कि उसे तोह़फ़ा दिया जाता है या नहीं। उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है, अगर तुममें से कोई भी इस माल में से कुछ भी ख़यानत करेगा तो क़यामत के दिन उसे अपनी गर्दन पर उठाएगा। अगर ऊँट की उसने ख़यानत की होगी तो इस ह़ाल मे लेकर आएगा कि ऊँट की आवाज़ निकल रही होगी। अगर गाय की ख़यानत की होगी तो इस ह़ाल में उसे लेकर आएगा कि गाय की आवाज़ आ रही होगी। अगर बकरी की ख़यानत की होगी तो इस ह़ाल में आएगा कि बकरी की आवाज़ आ रही होगी। बस मैंने तुम तक पहुँचा दिया। ह़ज़रत अबू हुमैद (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर आँहज़रत (ﷺ) ने अपना हाथ इतना ऊपर उठाया कि हम आपकी बग़लों की सफ़ेदी देखने लगे। अबू हुमैद (रज़ि.) ने बयान किया कि मेरे साथ ये ह़दीष़ ज़ैद बिन ष़ाबित (रज़ि.) ने भी आँहज़रत (ﷺ) से सुनी थी, तुम लोग उनसे भी पूछ लो। (राजेअ़ : 925)

٦٦٣٦- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ عَنْ أَبِي حُمَيْدٍ السَّاعِدِيِّ أَنَّهُ أَخْبَرَهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ اسْتَعْمَلَ عَامِلاً فَجَاءَهُ الْعَامِلُ حِينَ فَرَغَ مِنْ عَمَلِهِ، فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ هَذَا لَكُمْ، وَهَذَا أُهْدِيَ لِي فَقَالَ لَهُ : ((أَفَلاَ قَعَدْتَ فِي بَيْتِ أَبِيكَ وَأُمِّكَ فَنَظَرْتَ أَيُهْدَى لَكَ أَمْ لاَ؟)) ثُمَّ قَامَ رَسُولُ اللهِ ﷺ عَشِيَّةً بَعْدَ الصَّلاَةِ، فَتَشَهَّدَ وَأَثْنَى عَلَى اللهِ بِمَا هُوَ أَهْلُهُ، ثُمَّ قَالَ: ((أَمَّا بَعْدُ فَمَا بَالُ الْعَامِلِ نَسْتَعْمِلُهُ فَيَأْتِينَا فَيَقُولُ: هَذَا مِنْ عَمَلِكُمْ وَهَذَا أُهْدِيَ لِي، أَفَلاَ قَعَدَ فِي بَيْتِ أَبِيهِ وَأُمِّهِ فَنَظَرَ هَلْ يُهْدَى لَهُ، أَمْ لاَ؟ فَوَ الَّذِي نَفْسُ مُحَمَّدٍ بِيَدِهِ لاَ يَغُلُّ أَحَدُكُمْ مِنْهَا شَيْئًا إِلاَّ جَاءَ بِهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ يَحْمِلُهُ عَلَى عُنُقِهِ، إِنْ كَانَ بَعِيرًا جَاءَ بِهِ لَهُ رُغَاءٌ، وَإِنْ كَانَتْ بَقَرَةً جَاءَ بِهَا لَهَا خُوَارٌ، وَإِنْ كَانَتْ شَاةً جَاءَ بِهَا تَيْعَرُ، فَقَدْ بَلَّغْتُ)) فَقَالَ أَبُو حُمَيْدٍ: ثُمَّ رَفَعَ رَسُولُ اللهِ ﷺ يَدَهُ حَتَّى إِنَّا لَنَنْظُرُ إِلَى عُفْرَةِ إِبْطَيْهِ، قَالَ أَبُو حُمَيْدٍ: وَقَدْ سَمِعَ ذَلِكَ مَعِي زَيْدُ بْنُ ثَابِتٍ مِنَ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَسَلُوهُ.

[راجع: ٩٢٥]

6637. मुझसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको हिशाम बिन यूसुफ़ ने ख़बर दी, उन्हें मअमर ने, उन्हें हम्माम बिन मुनब्बा ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ मे मेरी जान है अगर तुम भी आख़िरत की वो मुश्किलात जानते जो मैं जानता हूँ तो तुम ज़्यादा रोते और कम हंसते। (राजेअ : 6485)

٦٦٣٧- حدَّثَنِي إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى، أَخْبَرَنَا هِشَامٌ هُوَ ابْنُ يُوسُفَ، عَنْ مَعْمَرٍ، عَنْ هَمَّامٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ أَبُو الْقَاسِمِ ﷺ: ((وَالَّذِي نَفْسُ مُحَمَّدٍ بِيَدِهِ لَوْ تَعْلَمُونَ مَا أَعْلَمُ، لَبَكَيْتُمْ كَثِيرًا وَلَضَحِكْتُمْ قَلِيلاً)).[راجع: ٦٤٨٥]

6638. हमसे उमर बिन ह़फ़्स ने बयान किया, कहा हमसे हमारे वालिद ने, कहा हमसे आ'मश ने, उनसे मअरूर ने, उनसे अबू ज़र्र (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं आँह़ज़रत (ﷺ) तक पहुँचा तो आप का'बा के साये में बैठे हुए फ़र्मा रहे थे कअबा के रब की क़सम! वही सबसे ज़्यादा ख़सारे वाले हैं। का'बा के रब की क़सम! वही सबसे ज़्यादा ख़सारे वाले हैं। मैंने कहा कि हुज़ूर, मेरी ह़ालत कैसी है, क्या मुझमें (भी) कोई ऐसी बात नज़र आई है? मेरी ह़ालत कैसी है? फिर मैं आँह़ज़रत (ﷺ) के पास बैठ गया और आँह़ज़रत (ﷺ) फ़र्माते जा रहे थे, मैं आपको ख़ामोश नहीं करा सकता था और अल्लाह की मशिय्यत के मुताबिक़ मुझ पर अजीब बेक़रारी त़ारी हो गई। मैंने फिर अ़र्ज़ की, मेरे माँ-बाप आप पर फ़िदा हों, या रसूलल्लाह (ﷺ)! वो कौन लोग हैं? आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि, ये वो लोग हैं जिनके पास माल ज़्यादा है। लेकिन उससे वो मुस्तष्ना हैं जिन्होंने उसमें से इस इस त़रह (या'नी दाएँ और बाएँ बे दरेग़ मुस्तह़क़ीन पर) अल्लाह की राह में ख़र्च किया होगा। (राजेअ : 1460)

٦٦٣٨- حدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، عَنِ الْمَعْرُورِ، عَنْ أَبِي ذَرٍّ قَالَ: انْتَهَيْتُ إِلَيْهِ وَهُوَ يَقُولُ فِي ظِلِّ الْكَعْبَةِ: هُمُ الأَخْسَرُونَ وَرَبِّ الْكَعْبَةِ، هُمُ الأَخْسَرُونَ وَرَبِّ الْكَعْبَةِ، قُلْتُ : مَا شَأْنِي أَيُرَى فِيَّ شَيْءٌ مَا شَأْنِي؟ فَجَلَسْتُ إِلَيْهِ وَهُوَ يَقُولُ: فَمَا اسْتَطَعْتُ أَنْ أَسْكُتَ وَتَغَشَّانِي مَا شَاءَ اللهُ فَقُلْتُ : مَنْ هُمْ بِأَبِي أَنْتَ وَأُمِّي يَا رَسُولَ اللهِ قَالَ ((الأَكْثَرُونَ أَمْوَالاً إِلاَّ مَنْ قَالَ : هَكَذَا وَهَكَذَا وَهَكَذَا)).

[راجع: ١٤٦٠]

6639. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, कहा हमसे अबुज़्ज़िनाद ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुर्रह़मान अअरज ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया सुलैमान (अ़लैहि.) ने एक दिन कहा कि आज मैं रात में अपनी नब्बे बीवियों के पास जाऊँगा और हर एक के यहाँ एक घुड़सवार बच्चा पैदा होगा जो अल्लाह के रास्ते में जिहाद करेगा। उस पर उनके साथी ने कहा कि इंशाअल्लाह। लेकिन सुलैमान (अ़लैहि.) ने इंशाअल्लाह नहीं कहा। चुनाँचे वो अपनी तमाम बीवियों के पास गये

٦٦٣٩- حدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، حَدَّثَنَا أَبُو الزِّنَادِ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((قَالَ سُلَيْمَانُ لأَطُوفَنَّ اللَّيْلَةَ عَلَى تِسْعِينَ امْرَأَةً كُلُّهُنَّ تَأْتِي بِفَارِسٍ يُجَاهِدُ فِي سَبِيلِ اللهِ فَقَالَ لَهُ صَاحِبُهُ : إِنْ شَاءَ اللهُ، فَلَمْ يَقُلْ : إِنْ شَاءَ

اللهِ، فَطَافَ عَلَيْهِنَّ جَمِيعًا فَلَمْ تَحْمِلْ مِنْهُنَّ إِلاَّ امْرَأَةٌ وَاحِدَةٌ، جَاءَتْ بِشِقِّ رَجُلٍ، وَايْمُ الَّذِي نَفْسُ مُحَمَّدٍ بِيَدِهِ لَوْ قَالَ إِنْ شَاءَ اللهُ : لَجَاهَدُوا فِي سَبِيلِ اللهِ فُرْسَانًا أَجْمَعُونَ)).

लेकिन एक औरत के सिवा किसी को ह़मल नहीं हुआ और उससे भी नाक़िस़ बच्चा पैदा हुआ और उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मुह़म्मद (ﷺ) की जान है! अगर उन्होंने इंशाअल्लाह कह दिया होता तो (तमाम बीवियों के यहाँ बच्चे पैदा होते) और सब घोड़ों पर सवार होकर अल्लाह के रास्ते में जिहाद करने वाले होते।

ह़ज़रात अंबिया-ए-किराम अ़लैहिमुस्सलाम अगरचे मा'सूम होते हैं मगर सह्व और निस्यान (भूल-चूक) इंसानी फ़ित़रत है उससे अंबिया की शान में कोई फ़र्क़ नहीं आ सकता।

٦٦٤٠- حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ، حَدَّثَنَا أَبُو الأَحْوَصِ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ قَالَ: أُهْدِيَ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ سَرَقَةٌ مِنْ حَرِيرٍ، فَجَعَلَ النَّاسُ يَتَدَاوَلُونَهَا بَيْنَهُمْ وَيَعْجَبُونَ مِنْ حُسْنِهَا وَلِينِهَا فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((أَتَعْجَبُونَ مِنْهَا؟)) قَالُوا : نَعَمْ يَا رَسُولَ اللهِ قَالَ: ((وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لَمَنَادِيلُ سَعْدٍ فِي الْجَنَّةِ خَيْرٌ مِنْهَا)). لَمْ يَقُلْ شُعْبَةُ وَإِسْرَائِيلُ عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ. [راجع: ٣٢٤٩]

6640. हमसे मुह़म्मद बिन सलाम ने बयान किया, कहा हमसे अबुल अह़वस़ ने बयान किया, उनसे अबू इस्ह़ाक़ ने, उनसे बराअ बिन आ़ज़िब (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में रेशम का एक टुकड़ा हदिया के तौर पर आया तो लोग उसे दस्त बदस्त अपने हाथों में लेने लगे और उसकी ख़ूबसूरती और नर्मी पर ह़ैरत करने लगे। आँह़ज़रत (ﷺ) ने उस पर फ़र्माया कि तुम्हें इस पर ह़ैरत है? स़ह़ाबा ने अ़र्ज़ किया, जी हाँ! या रसूलल्लाह (ﷺ)! आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है, सअ़द (रज़ि.) के रूमाल जन्नत में इससे भी अच्छे हैं। शुअ़बा और इस्राईल ने अबू इस्ह़ाक़ से अल्फ़ाज़ उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है, का ज़िक्र किया। (राजेअ़ : 3249)

ह़ज़रत सअ़द बिन मुआ़ज़ अंसारी अश्हली (रज़ि.) औस में से हैं मदीना में उ़क़्बा ऊला और षानिया के दरम्यान ईमान लाए थे।

٦٦٤١- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ يُونُسَ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، حَدَّثَنِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ أَنَّ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: إِنَّ هِنْدَ بِنْتَ عُتْبَةَ بْنِ رَبِيعَةَ قَالَتْ: يَا رَسُولَ اللهِ مَا كَانَ مِمَّا عَلَى ظَهْرِ الأَرْضِ أَهْلُ أَخْبَاءٍ - أَوْ خِبَاءٍ - أَحَبَّ إِلَيَّ مِنْ أَنْ يَذِلُّوا مِنْ أَهْلِ أَخْبَائِكَ - أَوْ خِبَائِكَ - شَكَّ يَحْيَى، ثُمَّ مَا أَصْبَحَ الْيَوْمَ أَهْلُ أَخْبَاءٍ - أَوْ خِبَاءٍ -

6641. हमसे यह़्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने, उन्होंने यूनुस से, उन्होंने इब्ने शिहाब से, कहा मुझसे उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने बयान किया कि ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने कहा कि हिन्द बिन्ते उ़त्बा बिन रबीआ़ (मुआ़विया रज़ि. की माँ) ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! सारी ज़मीन पर जितने डेरे वाले हैं (या'नी अ़रब लोग जो अकष़र डेरों और ख़ैमों में रहा करते थे) उनमें किसी का ज़लील व ख़्वार होना मुझको इतना पसंद नहीं था जितना आपका। यह़्या बिन बुकैर रावी को शक है (कि डेरे का लफ़्ज़ ब स़ैग़ा मुफ़रद कहा या ब स़ैग़ा जमा) अब कोई डेरा वाला या डेरे वाले उनको इ़ज़्ज़त और आबरू ह़ासिल होना मुझको आपके डेरे वालों से ज़्यादा पसंद

أَحَبَّ إِلَيَّ مِنْ أَنْ يَعِزُّوا مِنْ أَهْلِ أَخْبَائِكَ – أَوْ خِبَائِكَ – قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((وَأَيْضًا وَالَّذِي نَفْسُ مُحَمَّدٍ بِيَدِهِ)) قَالَتْ يَا رَسُولَ اللهِ إِنَّ أَبَا سُفْيَانَ رَجُلٌ مِسِّيكٌ فَهَلْ عَلَيَّ حَرَجٌ أَنْ أُطْعِمَ مِنَ الَّذِي لَهُ، قَالَ : ((لاَ إِلاَّ بِالْمَعْرُوفِ)).

[راجع: ٢٢١١]

नहीं है (या'नी अब मैं आपकी और मुसलमानों की सबसे ज़्यादा ख़ैरख़्वाह हूँ) आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, अभी क्या है तू और भी ज़्यादा ख़ैरख़्वाह बनेगी। क़सम है उसकी जिसके हाथ में मुहम्मद की जान है। फिर हिन्द कहने लगी या रसूलल्लाह! अबू सुफ़यान बख़ील आदमी है मुझ पर गुनाह तो नहीं होगा अगर मैं उसके माल में से (अपने बाल-बच्चों को खिलाऊँ) आपने फ़र्माया नहीं अगर तू दस्तूर के मुवाफ़िक़ खर्च करे। (राजेअ: 2211)

तश्रीह: हज़रत हिन्द का बाप उत्बा जंगे बद्र में हज़रत अमीर हम्ज़ा (रज़ि.) के हाथ से मारा गया था। लिहाज़ा हिन्द को आँहज़रत (ﷺ) से सख़्त अदावत थी। यहाँ तक कि जब हज़रत अमीर हम्ज़ा उहुद की जंग में शहीद हुए तो हिन्द ने उनका जिगर निकालकर चबाया बाद उसके जब मक्का फ़तह हुआ तो इस्लाम लाई।

٦٦٤٢– حَدَّثَنَا أ ... بْنُ عُثْمَانَ، حَدَّثَنَا شُرَيْحُ بْنُ مَسْلَمَةَ، حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ قَالَ: سَمِعْتُ عَمْرَو بْنَ مَيْمُونٍ قَالَ: حَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْعُودٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: بَيْنَمَا رَسُولُ اللهِ ﷺ مُضِيفٌ ظَهْرَهُ إِلَى قُبَّةٍ مِنْ أَدَمٍ يَمَانٍ إِذْ قَالَ لأَصْحَابِهِ: ((أَتَرْضَوْنَ أَنْ تَكُونُوا رُبُعَ أَهْلِ الْجَنَّةِ؟)) قَالُوا: بَلَى. قَالَ: ((أَفَلَمْ تَرْضَوْا أَنْ تَكُونُوا ثُلُثَ أَهْلِ الْجَنَّةِ؟)) قَالُوا: بَلَى. قَالَ : ((فَوَ الَّذِي نَفْسُ مُحَمَّدٍ بِيَدِهِ إِنِّي لأَرْجُو أَنْ تَكُونُوا نِصْفَ أَهْلِ الْجَنَّةِ)). [راجع: ٦٥٢٨]

6642. मुझसे अहमद बिन उ़ष्मान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे शुरैह बिन मस्लमा ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इब्राहीम ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने बयान किया, उनसे अबू इस्हाक़ ने, कहा कि मैंने अ़म्र बिन मैमून से सुना, कहा कि मुझसे अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने बयान किया कि एक मौक़े पर रसूलुल्लाह (ﷺ) जब यमनी चमड़े के ख़ैमे से पुश्त लगाए हुए बैठे थे तो आपने अपने सहाबा से फ़र्माया क्या तुम इस पर ख़ुश हो कि तुम अहले जन्नत के एक चौथाई रहो? उन्हों ने अ़र्ज़ किया, क्यूँ नहीं। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया। क्या तुम इस पर ख़ुश नहीं हो कि तुम अहले जन्नत के एक तिहाई हिस्सा हो जाओ। सहाबा ने अ़र्ज़ किया क्यूँ नहीं। आँहज़रत (ﷺ) ने उस पर फ़र्माया, पस उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है मुझे उम्मीद है कि जन्नत में आधे तुम ही होओगे। (राजेअ: 6528)

٦٦٤٣– حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْلَمَةَ، عَنْ مَالِكٍ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ أَنَّ رَجُلاً سَمِعَ رَجُلاً يَقْرَأُ: ﴿قُلْ هُوَ اللهُ أَحَدٌ﴾ يُرَدِّدُهَا فَلَمَّا أَصْبَحَ جَاءَ

6643. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मस्लमा ने बयान किया, उनसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुर्रहमान बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुर्रहमान ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने बयान किया और उनसे अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने बयान किया कि एक सहाबी ने सुना कि एक दूसरे सहाबी सूरह कुल हुवल्लाह बार बार पढ़ते हैं जब सुबह हुई तो वो रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास आए और आँहज़रत (ﷺ) से इसका ज़िक्र किया

إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ فَذَكَرَ ذَلِكَ لَهُ وَكَأَنَّ الرَّجُلَ يَتَقَالُّهَا فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ إِنَّهَا لَتَعْدِلُ ثُلُثَ الْقُرْآنِ)). [راجع: ٥٠١٣]

वो सहाबी उस सूरत को कम समझते थे लेकिन आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है ये क़ुर्आन मजीद के एक तिहाई हिस्से के बराबर हैं।

(राजेअ: 5013)

٦٦٤٤- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ، أَخْبَرَنَا حَبَّانُ، حَدَّثَنَا هَمَّامٌ، حَدَّثَنَا قَتَادَةُ، حَدَّثَنَا أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ رضي الله عَنْهُ أَنَّهُ سَمِعَ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((أَتِمُّوا الرُّكُوعَ وَالسُّجُودَ، فَوَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ إِنِّي لأَرَاكُمْ مِنْ بَعْدِ ظَهْرِي إِذَا مَا رَكَعْتُمْ وَإِذَا مَا سَجَدْتُمْ)). [راجع: ٤١٩]

6644. मुझसे इस्हाक़ ने बयान किया, कहा हमको ह़िब्बान ने ख़बर दी, कहा हमसे हम्माम ने बयान किया, कहा हमसे क़तादा ने बयान किया, कहा हमसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से सुना। आप फ़र्मा रहे थे कि रुकूअ और सज्दा पूरे तौर पर अदा किया करो। अल्लाह की क़सम! जिसके हाथ मे मेरी जान है मैं अपनी कमर के पीछे से तुमको देख लेता हूँ जब रुकूअ और सज्दा करते हो। (राजेअ: 419)

ह़दीष़ में आपकी क़सम मज़्कूर है यही बाब से मुताबक़त है।

٦٦٤٥- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ، حَدَّثَنَا وَهْبُ بْنُ جَرِيرٍ، أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ، عَنْ هِشَامِ بْنِ زَيْدٍ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ أَنَّ امْرَأَةً مِنَ الأَنْصَارِ أَتَتِ النَّبِيَّ ﷺ مَعَهَا أَوْلاَدٌ لَهَا فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ إِنَّكُمْ لأَحَبُّ النَّاسِ إِلَيَّ)) قَالَهَا ثَلاَثَ مِرَارٍ. [راجع: ٣٧٨٦]

6645. हमसे इस्हाक़ ने बयान किया, कहा हमसे वहब बिन जरीर ने बयान किया, कहा हमको शुअबा ने ख़बर दी हिशाम बिन ज़ैद से और उन्हें अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि अंसारी ख़ातून नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुईं, उनके साथ उनके बच्चे भी थे। आँहज़रत (ﷺ) ने उनसे फ़र्माया कि उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है तुम लोग भी मुझे तमाम लोगों में सबसे ज़्यादा अज़ीज़ हो। ये अल्फ़ाज़ आँहज़रत (ﷺ) तीन बार फ़र्माए। (राजेअ: 3786)

तश्रीह़ : अंसारी लोगों ने काम ही ऐसे किये कि रसूले करीम (ﷺ) अंसार से बहुत ज़्यादा ख़ुलूस बरतते थे। अंसार ही ने आपको मदीना में मदऊ किया और पूरी वफ़ादारी के साथ क़ौल व क़रार पूरा किया। आपके साथ होकर इस्लाम के दुश्मनों से लड़े। इशाअत व सतूते इस्लाम में अंसार का बड़ा मुक़ाम है। (रज़ियल्लाहु अन्हुम)

٤- باب لاَ تَحْلِفُوا بِآبَائِكُمْ

बाब 4 : अपने बाप दादाओं की क़सम न खाओ

٦٦٤٦- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْلَمَةَ، عَنْ مَالِكٍ، عَنْ نَافِعٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ أَدْرَكَ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ وَهُوَ يَسِيرُ

6646. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मस्लमा ने बयान किया, उनसे मालिक ने, उनसे नाफ़ेअ ने, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूले करीम (ﷺ) उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) के पास आए तो वो सवारों की एक जमाअत के साथ चल रहे थे और अपने बाप की क़सम खा रहे थे। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, ख़बरदार! तह़क़ीक़ अल्लाह

فِي رَكْبٍ يَحْلِفُ بِأَبِيهِ فَقَالَ : ((أَلاَ إِنَّ اللهَ يَنْهَاكُمْ أَنْ تَحْلِفُوا بِآبَائِكُمْ، مَنْ كَانَ حَالِفًا فَلْيَحْلِفْ بِاللهِ أَوْ لِيَصْمُتْ)).

[راجع: ٢٦٧٩]

तआला ने तुम्हें बाप दादों की क़सम खाने से मना किया है, जिसे क़सम खानी है उसे (बशर्ते सिदक़) चाहिये कि अल्लाह ही की क़सम खाए वरना चुप रहे। (राजेअ : 2679)

तश्रीह : हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) अमीरुल मोमिनीन का लक़ब फ़ारूक़ और कुन्नियत अबू हफ़्सा है। निस्बतन वो अदवी और क़ुरैशी हैं। उन्होंने 6 नबवी में इस्लाम क़ुबूल किया और कुछ लोगों ने लिखा है कि नबुव्वत के पाँचवे साल इस्लाम क़ुबूल किया जबकि चालीस मर्द और ग्यारह औरतें मुसलमान हो चुकी थीं और कुछ लोगों ने लिखा है कि मर्दों की चालीस ता'दाद हज़रत उमर (रज़ि.) के इस्लाम लाने से पूरी हुई। उनके इस्लाम लाने से इस्लाम को बड़ा ग़ल्बा नसीब हुआ। इसी वास्ते इनको फ़ारूक़ कहा गया। हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि मैंने उमर फ़ारूक़ (रज़ि.) से पूछा कि आपका नाम फ़ारूक़ कब से हुआ तो उन्होंने जवाब दिया कि मुझसे तीन दिन पहले हज़रत हम्ज़ा (रज़ि.) ईमान लाए। उसके बाद अल्लाह तआला ने मेरा सीना खोल दिया तो मैंने अपनी ज़ुबान से कहा, अल्लाह ही है, उसके अलावा कोई भी बन्दगी के लायक़ नहीं, उसके नेक नाम हैं और ज़मीन में कोई ज़ात मेरे नज़दीक हज़रत मुहम्मद (ﷺ) की ज़ात से ज़्यादा महबूब नहीं। हज़रत उमर (रज़ि.) फ़र्माते हैं फिर मैंने सवाल किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) कहाँ हैं, तो मेरी बहन ने जवाब दिया कि वो अरक़म के मकान में हैं, तो मैं अरक़म के मकान के पास गया। जहाँ हम्ज़ा और आपके अस्हाब हवेली में बैठे हुए थे और हुज़ूर (ﷺ) घर में थे तो जब मैंने दस्तक दी तो लोग निकले, तो हज़रत हम्ज़ा (रज़ि.) ने कहा कि तुम्हारा क्या हाल है तो मैंने जवाब दिया कि उमर बिन ख़त्ताब आया है। तो आँहज़रत (ﷺ) बाहर तशरीफ़ लाए और मेरा दामन खींचा और पूछा कि तू बाज़ आने वाला नहीं है तो मैंने कलिमा पढ़ा, **अश्हदु अल्ला इलाहा इल्लल्लाहु वहदहू ला शरीक लहू व अश्हदु अन्ना मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू** तो सब हवेली वालों ने अल्लाहु अकबर का नारा बुलंद किया जिसको मस्जिद वालों ने सुन लिया।

हज़रत उमर (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि मैंने हुज़ूर (ﷺ) से पूछा कि क्या हम हक़ पर नहीं हैं, ज़िंदा रहें या मर जाएँ। तो हुज़ूर (ﷺ) ने जवाब दिया कि उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है, बेशक तुम दीने हक़ पर हो। ज़िंदा रहो या मर जाओ। तो मैंने कहा कि हम छुपकर क्यूँ रहें, क़सम है उस ज़ात की जिसने आपको नबी बनाकर भेजा है, हम ज़रूर बाहर निकलें। चुनाँचे हमने हुज़ूर (ﷺ) को बाहर निकलने के लिये कहा और आपको दो सफ़ों में ले लिया एक सफ़ में मैं और दूसरी सफ़ में हज़रत हम्ज़ा थे। इसी तरह हम मस्जिद में पहुँचे तो हम लोगों को देखकर क़ुरैश ने कहा कि अभी एक ग़म ख़त्म नहीं हुआ कि दूसरा ग़म सामने आ गया। उसी दिन से इस्लाम को ग़ल्बा नसीब हुआ और लोग मुझको फ़ारूक़ कहने लगे। इसलिये कि मेरे सबब से अल्लाह ने हक़ को बातिल से जुदा कर दिया।

दाऊद बिन हुसैन और ज़ुहरी फ़र्माते हैं कि जब हज़रत उमर (रज़ि.) मुसलमान हुए तो हज़रत जिब्रईल (अलैहि.) उतरे और हुज़ूर (ﷺ) से फ़र्माया कि हज़रत उमर (रज़ि.) के इस्लाम लाने से आसमान वालों को ख़ुशी हुई। और हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) फ़र्माते हैं कि अल्लाह की क़सम! मैं हज़रत उमर (रज़ि.) के इल्म से ख़ूब वाक़िफ़ हूँ, अगर उनका इल्म तराज़ू के एक पल्ले में रखा जाए और तमाम मख़्लूक़ात का इल्म दूसरे पल्ले में तो हज़रत उमर (रज़ि.) का पल्ला भारी हो जाए और उन्होंने कहा कि जब हज़रत उमर (रज़ि.) की वफ़ात हुई तो गोया वो इल्म का एक बड़ा हिस्सा अपने साथ ले गये।

हज़रत उमर (रज़ि.) नबी करीम (ﷺ) के साथ तमाम जंगों में हाज़िर रहे और वो सबसे पहले ख़लीफ़ा हैं जिनको अमीरुल मोमिनीन कहा गया। इनकी ख़िलाफ़त हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) की वफ़ात के बाद ही क़ायम हुई। इसलिये कि सिद्दीक़े अकबर (रज़ि.) ने इन्हीं के नाम की वसिय्यत कर गये थे और उनको मुग़ीरह बिन शुअबा के ग़ुलाम अबू लूलू ने बुध के दिन शहीद किया। 26 ज़िलहिज्ज 23 हिजरी को और वो इतवार के रोज़ मुहर्रम के पहले अशरे 24 हिजरी में दारे आख़िरत को तशरीफ़ ले गये। (रज़ियल्लाहु अन्हु)

6647. हमसे सईद बिन उ़फ़ैर ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने वहब ने बयान किया, उनसे यूनुस ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे सालिम ने कि इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने कहा कि मैंने उ़मर (रज़ि.) से सुना कि नबी करीम (ﷺ) ने मुझसे फ़र्माया था कि अल्लाह तआला ने तुम्हें बाप दादाओं की क़सम खाने से मना किया है। ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया वल्लाह! फिर मैंने उनकी आँह़ज़रत (ﷺ) से मुमानअ़त सुनने के बाद कभी क़सम नहीं खाई न अपनी त़रफ़ से ग़ैरुल्लाह की क़सम खाई न किसी दूसरे की ज़ुबान से नक़ल की। मुजाहिद ने कहा सूरह अह़क़ाफ़ में जो अष़ारतिम मिन इल्म है इसका मा'नी ये है कि इल्म की कोई बात नक़ल करता हो। यूनुस के साथ इस ह़दीष़ को अ़क़ील और मुह़म्मद बिन वलीद ज़ुबैदी और इस्ह़ाक बिन यह्या कल्बी ने भी ज़ुह्री से रिवायत किया और सुफ़यान बिन उ़यैना और मअ़मर ने इसको ज़ुह्री से रिवायत किया, उन्होंने सालिम से, उन्होंने इब्ने उ़मर (रज़ि.) से, उन्होंने आँह़ज़रत (ﷺ) से कि आपने ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) को ग़ैरुल्लाह की क़सम खाते सुना। रिवायत में लफ़्ज़ अष़ारतु की तफ़्सीर आ़ष़िरन की मुनासबत से बयान कर दी क्योंकि दोनों का माद्दा एक ही है।

٦٦٤٧- حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ عُفَيْرٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ، عَنْ يُونُسَ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: قَالَ سَالِمٌ قَالَ ابْنُ عُمَرَ: سَمِعْتُ عُمَرَ يَقُولُ: قَالَ لِي رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((إِنَّ اللهَ يَنْهَاكُمْ أَنْ تَحْلِفُوا بِآبَائِكُمْ)). قَالَ عُمَرُ : فَوَاللهِ مَا حَلَفْتُ بِهَا مُنْذُ سَمِعْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ذَاكِرًا وَلاَ آثِرًا. قَالَ مُجَاهِدٌ: ﴿أَوْ أَثَارَةٍ مِنْ عِلْمٍ﴾ يَأْثُرُ عِلْمًا. تَابَعَهُ عُقَيْلٌ وَالزُّبَيْدِيُّ وَإِسْحَاقُ الْكَلْبِيُّ عَنِ الزُّهْرِيِّ وَقَالَ ابْنُ عُيَيْنَةَ، وَمَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ سَالِمٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ سَمِعَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عُمَرَ.

6648. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन मुस्लिम ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन दीनार ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया अपने बाप दादाओं की क़सम न खाओ। (राजेअ़ : 2679)

٦٦٤٨- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ مُسْلِمٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ دِينَارٍ قَالَ: سَمِعْتُ عَبْدَ اللهِ بْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا يَقُولُ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((لاَ تَحْلِفُوا بِآبَائِكُمْ)).

[راجع: ٢٦٧٩]

6649. हमसे क़ुतैबा ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल वह्हाब ने, उनसे अय्यूब ने, उनसे अबू क़िलाबा ने और क़ासिम तैमी ने और उनसे ज़ह्दम ने बयान किया कि उन क़बाइल जरम और अश्अ़र के बीच भाईचारा था। हम अबू मूसा अश्अ़री (रज़ि.) की ख़िदमत में मौजूद थे तो उनके लिये खाना लाया गया। उसमें मुर्ग़ी भी थी। उनके पास बनी तैमिल्लाह एक सुर्ख़ रंग का आदमी भी मौजूद था। ग़ालिबन वो ग़ुलामों में से था। अबू मूसा अश्अ़री (रज़ि.) ने उसे खाने पर

٦٦٤٩- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ، عَنْ أَيُّوبَ، عَنْ أَبِي قِلاَبَةَ وَالْقَاسِمِ التَّمِيمِيِّ، عَنْ زَهْدَمٍ قَالَ : كَانَ بَيْنَ هَذَا الْحَيِّ مِنْ جَرْمٍ وَبَيْنَ الأَشْعَرِيِّينَ وُدٌّ وَإِخَاءٌ فَكُنَّا عِنْدَ أَبِي مُوسَى الأَشْعَرِيِّ، فَقُرِّبَ إِلَيْهِ طَعَامٌ فِيهِ لَحْمُ

دَجَاجٍ، وَعِنْدَهُ رَجُلٌ مِنْ بَنِي تَيْمِ اللهِ أَحْمَرُ كَأَنَّهُ مِنَ الْمَوَالِي فَدَعَاهُ إِلَى الطَّعَامِ فَقَالَ: إِنِّي رَأَيْتُهُ يَأْكُلُ شَيْئًا فَقَذِرْتُهُ، فَحَلَفْتُ أَنْ لاَ آكُلَهُ فَقَالَ: قُمْ فَلأُحَدِّثَنَّكَ عَنْ ذَاكَ، إِنِّي أَتَيْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي نَفَرٍ مِنَ الأَشْعَرِيِّينَ نَسْتَحْمِلُهُ، فَقَالَ: ((وَاللهِ مَا أَحْمِلُكُمْ وَمَا عِنْدِي مَا أَحْمِلُكُمْ))، فَأُتِيَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِنَهْبِ إِبِلٍ فَسَأَلَ عَنَّا فَقَالَ: ((أَيْنَ النَّفَرُ الأَشْعَرِيُّونَ؟)) فَأَمَرَ لَنَا بِخَمْسِ ذَوْدٍ غُرِّ الذُّرَى، فَلَمَّا انْطَلَقْنَا قُلْنَا: مَا صَنَعْنَا حَلَفَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لاَ يَحْمِلُنَا وَمَا عِنْدَهُ مَا يَحْمِلُنَا، ثُمَّ حَمَلَنَا تَغَفَّلْنَا رَسُولَ اللهِ ﷺ يَمِينَهُ، وَاللهِ لاَ نُفْلِحُ أَبَدًا فَرَجَعْنَا إِلَيْهِ فَقُلْنَا لَهُ إِنَّا أَتَيْنَاكَ لِتَحْمِلَنَا فَحَلَفْتَ أَنْ لاَ تَحْمِلَنَا وَمَا عِنْدَكَ مَا تَحْمِلُنَا، فَقَالَ: ((إِنِّي لَسْتُ أَنَا حَمَلْتُكُمْ، وَلَكِنَّ اللهَ حَمَلَكُمْ، وَاللهِ لاَ أَحْلِفُ عَلَى يَمِينٍ فَأَرَى غَيْرَهَا خَيْرًا مِنْهَا إِلاَّ أَتَيْتُ الَّذِي هُوَ خَيْرٌ وَتَحَلَّلْتُهَا)).

[راجع: ٣١٣٣]

बुलाया तो उसने कहा कि मैंने मुर्ग़ी को गंदगी खाते देखा तो मुझे घिन आई और फिर मैंने क़सम खा ली कि अब मैं इसका गोश्त नहीं खाऊँगा। अबू मूसा अश्अरी (रज़ि.) ने कहा कि खड़े हो जाओ तो मैं तुम्हें इसके बारे मे एक ह़दीष़ सुनाऊँ। मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास क़बीला अश्अर के चंद लोगों के साथ आया और हमने आँह़ज़रत (ﷺ) से सवारी का जानवर मांगा। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अल्लाह की क़सम मैं तुम्हें सवारी नहीं दे सकता और न मेरे पास ऐसा कोई जानवर है जो तुम्हें सवारी के लिये दे सकूँ, फिर आँह़ज़रत (ﷺ) के पास कुछ माले ग़नीमत के ऊँट आए तो आँह़ज़रत (ﷺ) ने पूछा कि अश्अरी लोग कहाँ हैं फिर आपने हमको पाँच उम्दह क़िस्म के ऊँट दिये जाने का हुक्म फ़र्माया। जब हम उनको लेकर चले तो हमने कहा कि ये हमने क्या किया रसूलल्लाह (ﷺ) तो क़सम खा चुके थे कि हमको सवारी नहीं देंगे और दरह़क़ीक़त आप (ﷺ) के पास उस वक़्त सवारी मौजूद भी न थी फिर आपने हमको सवार करा दिया। हमने रसूलुल्लाह (ﷺ) को आपकी क़सम से ग़ाफ़िल कर दिया। क़सम अल्लाह की हम इस ह़रकत के बाद कभी फ़लाह़ नहीं पा सकेंगे। पस हम आपकी त़रफ़ लौटकर आए और आपसे हमने तफ़्सीले बाला को अ़र्ज़ किया कि हम आपके पास आए थे। ताकि आप हमको सवारी पर सवार करा दें पस आपने क़सम खाा ली थी कि आप हमको सवारी नहीं कराएँगे और दरह़क़ीक़त उस वक़्त आपके पास सवारी मौजूद भी न थी। आपने ये सब सुनकर फ़र्माया कि मैंने तुमको सवार नहीं कराया बल्कि अल्लाह ने तुमको सवार करा दिया। अल्लाह की क़सम जब मैं कोई क़सम खा लेता हूँ बाद में उससे बेहतर और मामला देखता हूँ तो मैं वही करता हूँ जो बेहतर होता है और उस क़सम का कफ़्फ़ारा अदा कर देता हूँ। (राजेअ : 3133)

मा'लूम हुआ कि ग़ैर मुफ़ीद क़सम को कफ़्फ़ारा अदा करके तोड़ देना सुन्नते नबवी है।

٥- باب لاَ يُحْلَفُ بِاللاَّتِ وَالْعُزَّى،

बाब 5 : लात उ़ज़्ज़ा और बुतों की क़सम

وَلاَ بِالطَّوَاغِيتِ

न खाए

٦٦٥٠- حَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ، حَدَّثَنَا هِشَامُ بْنُ يُوسُفَ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ حُمَيْدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((مَنْ حَلَفَ فَقَالَ فِي حَلِفِهِ بِاللاَّتِ وَالْعُزَّى فَلْيَقُلْ: لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ، وَمَنْ قَالَ لِصَاحِبِهِ: تَعَالَ أُقَامِرْكَ فَلْيَتَصَدَّقْ)). [راجع: ٤٨٦٠]

6650. मुझसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे हिशाम बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको मअ़मर ने ख़बर दी, उन्होंने कहा हमसे ज़ुहरी ने बयान किया, उन्हें हुमैद बिन अ़ब्दुर्रहमान ने और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जिसने क़सम खाई और कहा कि लात व उ़ज़्ज़ा की क़सम, तो उसे फिर कलिमा ला इलाहा इल्लल्लाह कह लेना चाहिये और जो शख़्स अपने साथी से कहे कि आओ जुआ खेलें तो उसे चाहिये कि (उसके कफ़्फ़ारे में) सदक़ा करे। (राजेअ़ : 7860)

तश्रीह : हर चंद ग़ैरुल्लाह की क़सम खाना मुत्लक़न मना है, मगर बुतों, देवताओं या पीरों वलियों की क़सम खाना क़त्अ़न हराम है। अगर कोई क़सम खा ले तो ऐसे शख़्स को फिर कलिमा-ए-तौह़ीद पढ़कर मुसलमान होना चाहिये।

٢٦- باب مَنْ حَلَفَ عَلَى الشَّيْءِ وَإِنْ لَمْ يُحَلَّفْ

बाब 26 : बिन क़सम दिये क़सम खाना कैसा है

٦٦٥١- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ اصْطَنَعَ خَاتَمًا مِنْ ذَهَبٍ وَكَانَ يَلْبَسُهُ فَيَجْعَلُ فَصَّهُ فِي بَاطِنِ كَفِّهِ، فَصَنَعَ النَّاسُ ثُمَّ إِنَّهُ جَلَسَ عَلَى الْمِنْبَرِ فَنَزَعَهُ فَقَالَ: ((إِنِّي كُنْتُ أَلْبَسُ هَذَا الْخَاتَمَ وَأَجْعَلُ فَصَّهُ مِنْ دَاخِلٍ)) فَرَمَى بِهِ ثُمَّ قَالَ: ((وَاللهِ لاَ أَلْبَسُهُ أَبَدًا)) فَنَبَذَ النَّاسُ خَوَاتِيمَهُمْ. [راجع: ٥٨٦٥]

6651. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे लैष बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ़ ने, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने सोने की एक अंगूठी बनवाई और आँहज़रत (ﷺ) उसे पहनते थे, उसका नगीना हथैली के हिस्से की तरफ़ रखते थे। फिर लोगों ने भी ऐसी अंगूठियाँ बनवा लीं उसके बाद एक दिन आँहज़रत (ﷺ) मिम्बर पर बैठे और अपनी अंगूठी उतार दी और फ़र्माया कि मैं इसे पहनता था और इसका नगीना अंदर की जानिब रखता था, फिर आप (ﷺ) ने उसे उतारकर फेंक दिया और फ़र्माया कि अल्लाह की क़सम! मैं अब इसे कभी नहीं पहनूँगा। पस लोगों ने भी अपनी अंगूठियाँ उतारकर फेंक दीं।

(राजेअ़ : 5865)

मा'लूम हुआ कि किसी ग़ैर शरई चीज़ के छोड़ देने पर क़सम खाना जाइज़ है कि अब मैं उसे हाथ नहीं लगाऊँगा जैसा कि हदीष़ से ज़ाहिर है।

٧- باب مَنْ حَلَفَ بِمِلَّةٍ سِوَى الإِسْلاَمِ

बाब 7 : उस शख़्स के बारे में जिसने इस्लाम के सिवा और किसी मज़हब पर क़सम खाई

وَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((مَنْ حَلَفَ بِاللاَّتِ

और रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि जिसने लात और उ़ज़्ज़ा

की (इत्तिफ़ाक़न बग़ैर क़स्द और अ़क़ीदा के) क़सम खा ली उसे बतौरे कफ़्फ़ारा कलिमा तौहीद ला इलाहा इल्लल्लाह पढ़ लेना चाहिये (ऐसे भूल चूक में क़सम खाने वाले को) आपने कुफ़्र की त़रफ़ मन्सूब नहीं फ़र्माया।

6652. हमसे मुअ़ल्ला बिन असद ने बयान किया, कहा हमसे वुहैब ने बयान किया, उन्होंने अय्यूब से रिवायत किया, उन्होंने अबू क़िलाबा से, उन्होंने ष़ाबित बिन ज़िहाक से, उन्होंने कहा कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जो इस्लाम के सिवा किसी और मज़हब पर क़सम खाए पस वो ऐसा ही है जैसी कि उसने क़सम खाई है और जो शख़्स अपने नफ़्स को किसी चीज़ से हलाक करे वो दोज़ख़ में उसी चीज़ से अ़ज़ाब दिया जाता रहेगा और मोमिन पर ला'नत भेजना उसको क़त्ल करने के बराबर है और जिसने किसी मोमिन पर कुफ़्र का इल्ज़ाम लगाया पस वो भी उसके क़त्ल करने के बराबर है। (राजेअ़ : 1363)

बाब 8 : यूँ कहना मना है कि जो अल्लाह चाहे और आप चाहें (वो होगा)

और क्या कोई शख़्स यूँ कह सकता है कि मुझको अल्लाह का आसरा है फिर आपका।

6653. और अ़म्र बिन आ़सिम ने कहा हमसे हम्माम बिन यह्या ने बयान किया, कहा हमसे इस्हाक़ बिन अ़ब्दुल्लाह ने, कहा हमसे अ़ब्दुर्रहमान बिन अबी अ़म्र ने, उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया, उन्होने आँहज़रत (ﷺ) से सुना, आप फ़र्माते थे बनी इस्राईल में तीन शख़्स थे अल्लाह ने उनको आज़माना चाहा (फिर सारा क़िस़्सा बयान किया) फ़रिश्ते को कोढ़ी के पास भेजा वो उससे कहने लगा मेरी रोज़ी के सारे ज़रिये कट गये हैं अब अल्लाह ही का आसरा है फिर तेरा (या अब अल्लाह ही की मदद दरकार है फिर तेरी) फिर पूरी ह़दीष़ को ज़िक्र किया। (राजेअ़ : 3464)

وَالْعُزَّى فَلْيَقُلْ: لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ)) وَلَمْ يَنْسُبْهُ إِلَى الْكُفْرِ.

٦٦٥٢- حَدَّثَنَا مُعَلَّى بْنُ أَسَدٍ، قَالَ حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ عَنْ أَيُّوبَ، عَنْ أَبِي قِلاَبَةَ عَنْ ثَابِتِ بْنِ الضَّحَّاكِ قَالَ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ ((مَنْ حَلَفَ بِغَيْرِ مِلَّةِ الإِسْلاَمِ فَهُوَ كَمَا قَالَ، وَمَنْ قَتَلَ نَفْسَهُ بِشَيْءٍ عُذِّبَ بِهِ فِي نَارِ جَهَنَّمَ، وَلَعْنُ الْمُؤْمِنِ كَقَتْلِهِ وَمَنْ رَمَى مُؤْمِنًا بِكُفْرٍ، فَهُوَ كَقَتْلِهِ)).

[راجع: ١٣٦٣]

٨- باب لاَ يَقُولُ مَا شَاءَ اللهُ وَشِئْتَ،

وَهَلْ يَقُولُ أَنَا بِاللهِ ثُمَّ بِكَ؟

٦٦٥٣- وَقَالَ عَمْرُو بْنُ عَاصِمٍ: حَدَّثَنَا هَمَّامٌ، حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي طَلْحَةَ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ أَبِي عَمْرَةَ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ حَدَّثَهُ أَنَّهُ سَمِعَ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((إِنَّ ثَلاَثَةً فِي بَنِي إِسْرَائِيلَ أَرَادَ اللهُ أَنْ يَبْتَلِيَهُمْ، فَبَعَثَ مَلَكًا فَأَتَى الأَبْرَصَ فَقَالَ: تَقَطَّعَتْ بِي الْحِبَالُ فَلاَ بَلاَغَ لِي إِلاَّ بِاللهِ ثُمَّ بِكَ)) فَذَكَرَ الْحَدِيثَ.

[راجع: ٣٤٦٤]

तश्रीह : इमाम बुख़ारी (रह़.) पहले मत़लब के लिये कोई ह़दीष़ नहीं लाए ह़ालाँकि इस बाब में स़रीह़ ह़दीष़ें वारिद हैं क्योंकि वो उनकी शर्त़ पर न होंगी वो ह़दीष़ सुनाई। इब्ने माजा वग़ैरह में है कि कोई यूँ न कहे कि जो अल्लाह चाहे और आप चाहें बल्कि यूँ कहे कि जो अल्लाह अकेला चाहे वो होगा। बाब के दूसरे ह़िस़्से का मत़लब ह़दीष़ के आख़िरी जुम्ले से निकलता है।

बाब 9

٩- باب قَوْلِ اللهِ تَعَالَى :
﴿وَأَقْسَمُوا بِاللهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ﴾ وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: قَالَ أَبُو بَكْرٍ: فَوَاللهِ يَا رَسُولَ اللهِ لَتُحَدِّثَنِّي بِالَّذِي أَخْطَأْتُ فِي الرُّؤْيَا قَالَ : ((لاَ تُقْسِمْ)).

अल्लाह पाक का सूरह नूर में इर्शाद। ये मुनाफ़िक़ अल्लाह की बड़ी पक्की क़समें खाते हैं और इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा कि अबूबक्र स़िद्दीक़ (रज़ि.) ने कहा अल्लाह की क़सम या रसूलल्लाह! मुझसे बयान फ़र्माइये मैंने ता'बीर देने में क्या ग़लती की। आपने फ़र्माया क़सम मत खा।

तश्रीह : ये ह़दीष़ लाकर ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) ने इसका रद्द किया जो कहता है कि क़सम देने से क़सम मुनअ़क़िद हो जाती है क्योंकि अगर क़सम मुनअ़क़िद हो जाती तो आँह़ज़रत (ﷺ) ज़रूर बयान करते कि अबूबक्र (रज़ि.) ने फ़लाँ फ़लाँ बात में ग़लती की है इसलिये कि आपने क़सम को सच्चा करने का हुक्म दिया है।

٦٦٥٤- حَدَّثَنَا قَبِيصَةُ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ أَشْعَثَ، عَنْ مُعَاوِيَةَ بْنِ سُوَيْدِ بْنِ مُقَرِّنٍ، عَنِ الْبَرَاءِ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ ح وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ أَشْعَثَ، عَنْ مُعَاوِيَةَ بْنِ سُوَيْدِ بْنِ مُقَرِّنٍ، عَنِ الْبَرَاءِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : أَمَرَنَا النَّبِيُّ ﷺ بِإِبْرَارِ الْمُقْسِمِ.
[راجع: ١٢٣٩]

6654. हमसे क़ुबैस़ा बिन उ़क़्बा ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ष़ौरी ने, उन्होंने अश्अ़ष़ बिन अबी शअ़शाअ से, उन्होंने मुआ़विया बिन सुवैद बिन मुक़र्रिन से, उन्होंने बराअ बिन आ़ज़िब से, उन्होंने आँह़ज़रत (ﷺ) से (दूसरी सनद) इमाम बुख़ारी रह़. ने कहा और मुझसे मुह़म्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे ग़ुन्दर मुह़म्मद बिन जा'फ़र ने, कहा हमसे शुअ़बा ने, उन्होंने अश्अ़ष़ से, उन्होंने मुआ़विया बिन सुवैद बिन मुक़र्रिन से, उन्होंने बराअ से, उन्होंने कहा कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने क़सम खाने वाले को सच्चा करने का हुक्म दिया। (राजेअ़ : 1239)

या'नी जो बात वो चाहे उसको पूरा करे ताकि उसकी क़सम सच्ची हो।

٦٦٥٥- حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ عُمَرَ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، أَخْبَرَنَا عَاصِمٌ الأَحْوَلُ، سَمِعْتُ أَبَا عُثْمَانَ يُحَدِّثُ عَنْ أُسَامَةَ أَنَّ ابْنَةً لِرَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَرْسَلَتْ إِلَيْهِ وَمَعَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أُسَامَةُ بْنُ زَيْدٍ وَسَعْدٌ وَأُبَيٌّ، أَنَّ ابْنِي قَدِ احْتُضِرَ فَاشْهَدْنَا، فَأَرْسَلَ يَقْرَأُ السَّلاَمَ وَيَقُولُ: ((إِنَّ لِلَّهِ مَا أَخَذَ وَمَا أَعْطَى وَكُلُّ شَيْءٍ عِنْدَهُ مُسَمًّى، فَلْتَصْبِرْ وَتَحْتَسِبْ)) فَأَرْسَلَتْ إِلَيْهِ تُقْسِمُ عَلَيْهِ فَقَامَ وَقُمْنَا مَعَهُ

6655. हमसे ह़फ़्स़ बिन उ़मर ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने, कहा हमको आ़स़िम अह़वल ने ख़बर दी, कहा मैंने अबू उ़ष़्मान से सुना, वो उसामा से नक़ल करते थे कि आँह़ज़रत (ﷺ) की एक स़ाहबज़ादी (ह़ज़रत ज़ैनब रज़ि.) ने आपको बुला भेजा उस वक़्त आपके पास उसामा बिन ज़ैद और सअ़द बिन उ़बादह और उबई बिन कअ़ब (रज़ि.) भी बैठे थे। स़ाहबज़ादी स़ाहिबा ने कहला भेजा कि उनका बच्चा मरने के क़रीब है आप तशरीफ़ लाइये। आपने उनके जवाब में यूँ कहला भेजा मेरा सलाम कहो और कहो सब अल्लाह का माल है जो उसने ले लिया और जो उसने इनायत फ़र्माया और हर चीज़ का उसके पास वक़्त मुक़र्रर है, स़ब्र करो और अल्लाह से ष़वाब की उम्मीद रखो। स़ाहबज़ादी स़ाहिबा ने क़सम देकर फिर कहला भेजा कि नहीं आप ज़रूर तशरीफ़ लाइये। उस

वक़्त आप उठे, हम लोग भी साथ उठे जब आप साहबज़ादी साहिबा के घर पर पहुँचे और वहाँ जाकर बैठे तो बच्चे को उठाकर आपके पास लाए। आपने उसे गोद में बिठा लिया वो दम तोड़ रहा था। ये हाल पर मलाल देखकर आपकी आँखों से आंसू बह निकले। सअ़द बिन उ़बादह (रज़ि.) ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! ये रोना कैसा है? आपने फ़र्माया ये रोना रहम की वजह से है और अल्लाह अपने जिस बन्दे के दिल में चाहता है रहम रखता है या ये है कि अल्लाह अपने उन ही बन्दों पर रहम करेगा जो दूसरों पर रहम करते हैं। (राजेअ़ : 1284)

فَلَمَّا قَعَدَ رُفِعَ إِلَيْهِ فَأَقْعَدَهُ فِي حَجْرِهِ وَنَفْسُ الصَّبِيِّ تَقَعْقَعُ فَفَاضَتْ عَيْنَا رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ سَعْدٌ: مَا هَذَا يَا رَسُولَ اللهِ؟ قَالَ: ((هَذَا رَحْمَةٌ يَضَعُهَا اللهُ فِي قُلُوبِ مَنْ يَشَاءُ مِنْ عِبَادِهِ، وَإِنَّمَا يَرْحَمُ اللهُ مِنْ عِبَادِهِ الرُّحَمَاءَ)). [راجع: ١٢٨٤]

इस ह़दीष़ में क़सम देने का ज़िक्र है यही बाब से मुताबक़त है।

6656. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, उन्होंने कहा मुझसे इमाम मालिक ने, उन्होंने इब्ने शिहाब से रिवायत किया, उन्होंने सईद बिन मुसय्यब से रिवायत किया, उन्होंने ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत किया कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया जिस मुसलमान के तीन बच्चे मर जाएँ तो उसको दोज़ख़ की आग नहीं छुएगी मगर स़िर्फ़ क़सम उतारने के लिये। (राजेअ़ : 1251)

٦٦٥٦- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، قَالَ حَدَّثَنِي مَالِكٌ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنِ ابْنِ الْمُسَيَّبِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((لاَ يَمُوتُ لأَحَدٍ مِنَ الْمُسْلِمِينَ ثَلاَثَةٌ مِنَ الْوَلَدِ تَمَسُّهُ النَّارُ إِلاَّ تَحِلَّةَ الْقَسَمِ)). [راجع: ١٢٥١]

क़सम से मुराद अल्लाह का ये फ़रमूदा है, व इन्ना मिन्कुम इल्ला वारिदुहा या'नी तुममें से कोई ऐसा नहीं है जो दोज़ख़ पर से होकर न जाए।

6657. हमसे मुह़म्मद बिन मुष़न्ना ने बयान किया, कहा मुझसे ग़ुन्दर ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे मअ़बद बिन ख़ालिद ने, कहा मैंने हारिष़ा बिन वहब से सुना, कहा मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना, आप फ़र्माते थे कि मैं तुमको बतलाऊँ बहिश्ती कौन लोग हैं। हर एक ग़रीब नातवाँ जो अगर अल्लाह के भरोसे पर क़सम खा बैठे तो अल्लाह उसको सच्चा करे (उसकी क़सम पूरी कर दे) और दोज़ख़ी कौन लोग हैं? हर एक मोटा, लड़ाका, मग़रूर, फ़सादी। (राजेअ़ : 4918)

٦٦٥٧- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنِي غُنْدَرٌ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ مَعْبَدِ بْنِ خَالِدٍ سَمِعْتُ حَارِثَةَ بْنَ وَهْبٍ سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((أَلاَ أَدُلُّكُمْ عَلَى أَهْلِ الْجَنَّةِ، كُلُّ ضَعِيفٍ مُتَضَعِّفٍ لَوْ أَقْسَمَ عَلَى اللهِ لأَبَرَّهُ وَأَهْلِ النَّارِ كُلُّ جَوَّاظٍ عُتُلٍّ مُسْتَكْبِرٍ)). [راجع: ٤٩١٨]

बाब 10 : अगर किसी ने कहा कि मैं अल्लाह को गवाह करता हूँ या अल्लाह के नाम के साथ गवाही देता हूँ

١٠- باب إِذَا قَالَ : أَشْهَدُ بِاللهِ أَوْ شَهِدْتُ بِاللهِ

तो ये क़सम होगी या नहीं?

6658. हमसे सअ़द बिन ह़फ़्स़ ने बयान किया, कहा हमसे

٦٦٥٨- حَدَّثَنَا سَعْدُ بْنُ حَفْصٍ، حَدَّثَنَا

شَيْبَانُ، عَنْ مَنْصُورٍ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ عَبِيدَةَ، عَنْ عَبْدِ اللهِ قَالَ: سُئِلَ النَّبِيُّ ﷺ أَيُّ النَّاسِ خَيْرٌ؟ قَالَ: ((قَرْنِي ثُمَّ الَّذِينَ يَلُونَهُمْ، ثُمَّ الَّذِينَ يَلُونَهُمْ، ثُمَّ يَجِيءُ قَوْمٌ تَسْبِقُ شَهَادَةُ أَحَدِهِمْ يَمِينَهُ، وَيَمِينُهُ شَهَادَتَهُ)) قَالَ إِبْرَاهِيمُ : وَكَانَ أَصْحَابُنَا يَنْهَوْنَا وَنَحْنُ غِلْمَانٌ أَنْ نَحْلِفَ بِالشَّهَادَةِ وَالْعَهْدِ. [راجع: ٢٦٥٢]

शैबान ने बयान किया, उनसे मंसूर ने, उनसे इब्राहीम ने, उनसे उबैदह ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) से पूछा गया कि कौन लोग अच्छे हैं? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मेरा ज़माना, फिर वो लोग जो उससे क़रीब होंगे फिर वो लोग जो उससे क़रीब होंगे। उसके बाद एक ऐसी क़ौम पैदा होगी जिसकी गवाही क़सम से पहले ज़ुबान पर आ जाया करेगी और क़सम गवाही से पहले। इब्राहीम ने कहा कि हमारे असातिज़ा जब हम कम उ़म्र थे तो हमें क़सम खाने से मना किया करते थे कि हम गवाही या अ़हद में क़सम खाएँ। (राजेअ़ : 2652)

तश्रीह : मत़लब ये है कि गवाही देने में उनको कोई बाक न होगा न झूठ बोलने से डरेंगे। जल्दी में कभी पहले क़सम खा लेंगे फिर गवाही देंगे फिर क़सम खाएँगे। इसलिये बुज़ुर्गाने सलफ़े सालेहीन अपने तलामिज़ा को गवाही देने और क़सम खाने से मना फ़र्माया करते थे। बल्कि अश्हदु बिल्लाह या अ़ला अ़हदिल्लाह जैसे कलिमात मुँह से निकलाने से भी मना करते थे ताकि मौक़ा बे मौक़ा क़सम खाने की आ़दत न हो जाए।

बाब 11 : जो शख़्स अ़ला अ़हदिल्लाह कहे तो क्या हुक्म है

١١ - باب عَهْدِ اللهِ عَزَّ وَجَلَّ

या'नी अल्लाह का अ़हद मुझ पर है मैं फ़लाँ काम करूँगा। निय्यत करने पर ये भी क़सम खाना ही है। आयत में आगे लफ़्ज़ **यश्तरूना बिअ़हदिल्लाह** (आले इमरान : 77) से ह़ज़रत इमाम ने बाब का मत़लब निकाला है यहाँ भी अ़हदिल्लाह से अल्लाह की क़सम खाना मुराद है।

٦٦٥٩- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عَدِيٍّ، عَنْ شُعْبَةَ، عَنْ سُلَيْمَانَ وَمَنْصُورٍ عَنْ أَبِي وَائِلٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((مَنْ حَلَفَ عَلَى يَمِينٍ كَاذِبَةٍ لِيَقْتَطِعَ بِهَا مَالَ رَجُلٍ مُسْلِمٍ - أَوْ قَالَ - أَخِيهِ لَقِيَ اللهَ وَهُوَ عَلَيْهِ غَضْبَانُ)). فَأَنْزَلَ اللهُ تَصْدِيقَهُ ﴿إِنَّ الَّذِينَ يَشْتَرُونَ بِعَهْدِ اللهِ﴾ [آل عمران : ٧٧]. [راجع: ٢٣٥٦]

6659. मुझसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, उन्होने कहा हमसे मुहम्मद बिन अबी अ़दी ने बयान किया, उनसे शुअ़बा ने, उनसे सुलैमान व मंसूर ने बयान किया, उनसे अबू वाइल ने बयान किया, और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जिसने झूठी क़सम इस मक़्सद से खाई कि किसी मुसलमान का माल उसके ज़रिये नाजाइज़ त़रीक़े पर ह़ासिल करे तो वो अल्लाह तआ़ला से इस ह़ाल में मिलेगा कि वो उस पर ग़ज़बनाक होगा। फिर अल्लाह तआ़ला ने उसकी तस्दीक़ नाज़िल की (क़ुर्आन मजीद में कि) बिलाशुब्हा वो लोग जो अल्लाह के अ़हद के ज़रिये ख़रीदते हैं। (राजेअ़ : 2356)

٦٦٦٠- قَالَ سُلَيْمَانُ فِي حَدِيثِهِ فَمَرَّ الأَشْعَثُ بْنُ قَيْسٍ، فَقَالَ: مَا يُحَدِّثُكُمْ عَبْدُ اللهِ قَالُوا لَهُ. فَقَالَ الأَشْعَثُ: نَزَلَتْ فِيَّ

6660. सुलैमान ने बयान किया कि फिर अश्अ़ष बिन क़ैस (रज़ि.) वहाँ से गुज़रे और पूछा कि अ़ब्दुल्लाह तुमसे क्या बयान कर रहे थे। हमने उनसे बयान किया तो अश्अ़ष (रज़ि.) ने कहा कि ये आयत मेरे और मेरे एक साथी के बारे

में नाज़िल हुई थी। एक कुँए के सिलसिले में हम दोनों का झगड़ा था। (राजेअ : 2357)

وَفِي صَاحِبٍ لِي فِي بِئْرٍ كَانَتْ بَيْنَنَا. [راجع: ٢٣٥٧]

बाब 12 : अल्लाह तआला की इ़ज़्ज़त, उसकी सिफ़ात और उसके कलिमात की क़सम खाना

١٢- باب الْحَلِفِ بِعِزَّةِ اللهِ وَصِفَاتِهِ وَكَلِمَاتِهِ

और इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) कहा करते थे (ऐ अल्लाह!) मैं तेरी इ़ज़्ज़त की पनाह लेता हूँ। और अबू हुरैरह (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से बयान किया कि एक शख़्स जन्नत और दोज़ख़ के दरम्यान बाक़ी रह जाएगा और अ़र्ज़ करेगा, ऐ मेरे रब! मेरा चेह्रा दोज़ख़ से दूसरी त़रफ़ फेर दे, हर्गिज़ नहीं, तेरी इ़ज़्ज़त की क़सम, मैं कुछ और तुझसे नहीं मानूँगा। अबू सईद (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने कहा कि अल्लाह तआला ने फ़र्माया कि तेरे लिये ये है और उसके दस गुना और ज़्यादा। अय्यूब नबी ने कहा कि, और तेरी इ़ज़्ज़त की क़सम, तेरी बरकत से मैं बेपरवाह नहीं हो सकता।

وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَقُولُ: ((أَعُوذُ بِعِزَّتِكَ)) وَقَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ: عَنِ النَّبِيِّ ﷺ ((يَبْقَى رَجُلٌ بَيْنَ الْجَنَّةِ وَالنَّارِ فَيَقُولُ: يَا رَبِّ اصْرِفْ وَجْهِي عَنِ النَّارِ، لاَ وَعِزَّتِكَ لاَ أَسْأَلُكَ غَيْرَهَا)) وَقَالَ أَبُو سَعِيدٍ: قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((قَالَ اللهُ لَكَ ذَلِكَ وَعَشَرَةُ أَمْثَالِهِ)) وَقَالَ أَيُّوبُ: ((وَعِزَّتِكَ لاَ غِنَى لِي عَنْ بَرَكَتِكَ)).

ये उस वक़्त का ज़िक्र है जब ह़ज़रत अय्यूब (अ़लैहि.) पर अल्लाह ने दौलत की बारिश की और वो उसे समेटने लगे थे तो अल्लाह ने फ़र्माया था कि ऐ अय्यूब! अब तुम दौलत समेटने लगे तो उस पर ह़ज़रत अय्यूब (अ़लैहि.) ने कहा था जो यहाँ मज़्कूर है। लफ़्ज़ **बिइ़ज़्ज़तिक** से बाब का मत़लब षाबित हुआ।

6661. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा हमसे शैबान ने बयान किया, कहा हमसे क़तादा ने बयान किया, उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, जहन्नम बराबर यही कहती रहेगी कि क्या कुछ और है क्या कुछ और है? आख़िर अल्लाह तबारक व तआला अपना क़दम उसमें रख देगा तो वो कह उठेगी बस बस मैं भर गई, तेरी इ़ज़्ज़त की क़सम! और उसका कुछ ह़िस्सा कुछ को खाने लगेगा। इस रिवायत को शुअ़बा ने क़तादा से नक़ल किया। (राजेअ : 4848)

٦٦٦١- حَدَّثَنَا آدَمُ، حَدَّثَنَا شَيْبَانُ، حَدَّثَنَا قَتَادَةُ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لاَ تَزَالُ جَهَنَّمُ تَقُولُ: هَلْ مِنْ مَزِيدٍ؟ حَتَّى يَضَعَ رَبُّ الْعِزَّةِ فِيهَا قَدَمَهُ فَتَقُولُ: قَطْ قَطْ وَعِزَّتِكَ، وَيُزْوَى بَعْضُهَا إِلَى بَعْضٍ)). رَوَاهُ شُعْبَةُ عَنْ قَتَادَةَ. [راجع: ٤٨٤٨]

तश्रीह : रिवायत में क़दम का लफ़्ज़ आया है जिस पर ईमान लाना फ़र्ज़ है और इसकी ह़क़ीक़त के अंदर बह़्ष करना बिदअ़त है और ह़क़ीक़त को इल्मे इलाही के ह़वाला कर देना काफ़ी है। सलफ़े स़ालेह़ीन का यही अ़क़ीदा ह। अल्लाह पाक हर तश्बीह से मुनज़्ज़ह (पाक) है। क़ुर्आन मजीद में स़ाफ़ इर्शाद है। **लैस कमिष्लिही शैउन** (अश्शूरा : 11) पस यही कहना मुनासिब **आमन्ना बिल्लाहि कमा हुवा बिअस्माइही व स़िफ़ातिही बिला तावीलिन व तक्ईफ़िन**। सनद में मज़्कूर ह़ज़रत क़तादा बिन नोअ़मान अंसारी अ़क़्बी बद्री हैं। बाद की सब जंगों में शरीक हुए। 23 हिजरी में बउम्र 65 साल वफ़ात पाई ह़ज़रत उ़मर फ़ारूक़ (रज़ि.) ने आपका जनाज़ा पढ़ाया। फ़ुज़ला-ए-स़ह़ाबा में से थे रज़ियल्लाहु अ़न्हु व अरज़ाहु आमीन।

बाब 13 : कोई शख़्स कहे कि लअम्रुल्लाह या'नी अल्लाह की बक़ा की क़सम खाना. इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने लअम्रुका के बारे में कहा कि इससे लअयशुक मुराद है

١٣- باب قَوْلِ الرَّجُلِ : لَعَمْرُ اللهِ
قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: لَعَمْرُكَ لَعَيْشُكَ.

तशरीह : लअम्रुक इन्नहुम लफ़ी सक्रतिहिम यअमहून (अल ह़िज्र : 72) में लअम्रुका से मुराद आँहज़रत (ﷺ) की ज़िंदगी है। अल्लाह पाक ने क़ौमे-लूत की हालते बदकारी को आप (ﷺ) की उम्र की क़सम खाकर बयान फ़र्माया है। हज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) ने क़तादा की तदलीस का शुब्हा दूर करने के लिये सईद की रिवायत को बयान फ़र्माया है क्योंकि हज़रत शुअबा उन ही लोगों से रिवायत करते थे जिनके सिमाअ का हाल उन पर खुल जाता था।

6662. हमसे उवैसी ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम ने बयान किया, उनसे स़ालेह़ ने, उनसे इब्ने शिहाब ने (दूसरी सनद) और हमसे ह़ज्जाज ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन उमर नुमैरी ने बयान किया, कहा हमसे यूनुस ने बयान किया, कहा कि मैंने ज़ुहरी से सुना, कहा कि मैंने उ़र्वा बिन ज़ुबैर, सईद बिन मुसय्यब, अ़ल्क़मा बिन वक़्क़ास़ और उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) से नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा मुत्तहिरा ह़ज़रत आ़इशा स़िद्दीक़ा (रज़ि.) की बात के बारे में सुना कि जब तोह्मत लगाने वालों ने उन पर तोह्मत लगाई थी और अल्लाह तआ़ला ने उनको उससे बरी क़रार दिया था। और हर शख़्स ने मुझसे पूरी बात का कोई एक हिस़्सा ही बयान किया। फिर आँह़ज़रत (ﷺ) खड़े हुए और अ़ब्दुल्लाह बिन उबई के बारे में मदद चाही। फिर उसैद बिन हुज़ैर (रज़ि.) खड़े हुए और सअ़द बिन उ़बादह (रज़ि.) से कहा कि अल्लाह की क़सम! (लअम्रुल्लाह) हम ज़रूर उसे क़त्ल कर देंगे।

मुफ़स़्स़ल ह़दीस़ पीछे गुज़र चुकी है। (राजेअ : 2593)

٦٦٦٢- حَدَّثَنَا الأُوَيْسِيُّ، حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ، عَنْ صَالِحٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ ح وَحَدَّثَنَا حَجَّاجٌ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عُمَرَ النُّمَيْرِيُّ، حَدَّثَنَا يُونُسُ قَالَ: سَمِعْتُ الزُّهْرِيَّ قَالَ: سَمِعْتُ عُرْوَةَ بْنَ الزُّبَيْرِ وَسَعِيدَ بْنَ الْمُسَيَّبِ وَعَلْقَمَةَ بْنَ وَقَّاصٍ وَعُبَيْدَ اللهِ بْنَ عَبْدِ اللهِ، عَنْ حَدِيثِ عَائِشَةَ زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ حِينَ قَالَ لَهَا أَهْلُ الإِفْكِ مَا قَالُوا فَبَرَّأَهَا اللهُ وَكُلٌّ حَدَّثَنِي طَائِفَةً مِنَ الْحَدِيثِ فَقَامَ النَّبِيُّ ﷺ فَاسْتَعْذَرَ مِنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ أُبَيٍّ فَقَامَ أُسَيْدُ بْنُ حُضَيْرٍ فَقَالَ لِسَعْدِ بْنِ عُبَادَةَ : لَعَمْرُ اللهِ لَنَقْتُلَنَّهُ. [راجع: ٢٥٩٣]

बाब 14 : सूरह बक़रः में अल्लाह तआ़ला का फ़र्मान कि वो तुम्हारी लग़्व क़समों के बारे में तुमसे पकड़ नहीं करेगा

बल्कि उन क़समों के बारे में करेगा जिनका तुम्हारे दिलों ने इरादा किया होगा और अल्लाह बड़ा ही मग़्फ़िरत करने वाला बहुत बुर्दबार है।

١٤- باب
﴿لاَ يُؤَاخِذُكُمُ اللهُ بِاللَّغْوِ فِي أَيْمَانِكُمْ وَلَكِنْ يُؤَاخِذُكُمْ بِمَا كَسَبَتْ قُلُوبُكُمْ وَاللهُ غَفُورٌ حَلِيمٌ﴾ [البقرة : ٢٢٥]

6663. मुझसे मुहम्मद बिन मुस़न्ना ने बयान किया, कहा हमसे यह्या क़त्तान ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन उ़र्वा ने, कहा कि मुझे मेरे वालिद ने ख़बर दी, उन्हें ह़ज़रत आ़इशा

٦٦٦٣- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا يَحْيَى، عَنْ هِشَامٍ قَالَ : أَخْبَرَنِي أَبِي عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا ﴿لاَ

﴿يُؤَاخِذُكُمُ اللهُ بِاللَّغْوِ﴾ [البقرة: ٢٢٥] قَالَ: قَالَتْ: أُنزِلَتْ فِي قَوْلِهِ: لَا وَاللهِ وَبَلَى وَاللهِ. [راجع: ٤٦١٣]

(रज़ि.) ने कि आयत, अल्लाह तआला तुमसे लग़्व क़समों के बारे में पकड़ नहीं करेगा। रावी ने बयान किया कि हज़रत उम्मुल मोमिनीन ने कहा कि ये आयत ला वल्लाहि व बला वल्लाह। (बेसाख़्ता जो क़समें आदत बनाई जाती हैं) के बारे में नाज़िल हुई थी। (राजेअ : 4623)

तश्रीह : अकषर लोगों का तकिय-ए-कलाम ही क़सम खाना बन जाता है। ऐसी आदत अच्छी नहीं है ताहम लग़्व क़समों का कोई कफ़्फ़ारा नहीं है जैसा कि आयते कुर्आनी का मफ़्हूम है।

١٥- باب إِذَا حَنِثَ نَاسِيًا فِي الأَيْمَانِ

बाब 15 : अगर क़सम खाने के बाद भूले से उसको तोड़ डाले तो कफ़्फ़ारा लाज़िम होगा या नहीं

अहले हदीष का क़ौल ये है कि कफ़्फ़ारा वाजिब न होगा। इमाम बुख़ारी (रह.) का भी मैलान इसी तरफ़ है।

وَقَوْلُ اللهِ تَعَالَى: ﴿وَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ فِيمَا أَخْطَأْتُمْ بِهِ﴾ [الأحزاب : ٥] وَقَالَ: ﴿لاَ تُؤَاخِذْنِي بِمَا نَسِيتُ﴾ [الكهف: ٧٣]

और अल्लाह अज़्ज़ व जल ने फ़र्माया कि, तुम पर उस क़सम के बारे में कोई गुनाह नहीं जो ग़लती से तुम खा बैठो। और फ़र्माया कि भूलचूक में मुझ पर मुवाख़िज़ा न करो। (अल कहफ़ : 73)

ये हज़रत मूसा (अलैहि.) ने हज़रत ख़िज़्र (अलैहि.) से कहा था जबकि हज़रत मूसा ने उन पर ए'तिराज़ किया था इससे मा'लूम हुआ कि भूल चूक पहली शरीअतों में भी माफ़ थी।

٦٦٦٤- حَدَّثَنَا خَلاَّدُ بْنُ يَحْيَى، حَدَّثَنَا مِسْعَرٌ، حَدَّثَنَا قَتَادَةُ، حَدَّثَنَا زُرَارَةُ بْنُ أَوْفَى، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ يَرْفَعُهُ قَالَ: ((إِنَّ اللهَ تَجَاوَزَ لأُمَّتِي عَمَّا وَسْوَسَتْ أَوْ حَدَّثَتْ بِهِ أَنْفُسَهَا مَا لَمْ تَعْمَلْ بِهِ أَوْ تَكَلَّمْ)). [راجع: ٢٥٢٨]

6664. हमसे ख़ल्लाद बिन यह्या ने बयान किया, कहा हमसे मिस्अर बिन कुदाम ने बयान किया, कहा हमसे क़तादा ने बयान किया, कहा हमसे ज़ुरारह बिन औफ़ा ने बयान किया, उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से कि अल्लाह तआला ने मेरी उम्मत की उन ग़ल्तियों को मुआफ़ किया है जिनका सिर्फ़ दिल में वस्वसा गुज़रे या दिल में उसके करने की ख़्वाहिश पैदा हो, मगर उसके मुताबिक़ अमल न हो और न बात की हो। (राजेअ : 2528)

क़ल्बी वसाविस जो यूँ ही सादिर होकर ख़ुद ही फ़रामोश होते रहते हैं। अल्लाह पाक ने उन सबको मुआफ़ किया है ऐसे वसाविस का आना भी फ़ित्रते इंसानी में दाख़िल है।

٦٦٦٥- حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ الْهَيْثَمِ أَوْ مُحَمَّدٌ عَنْهُ، عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ قَالَ: سَمِعْتُ ابْنَ شِهَابٍ يَقُولُ: حَدَّثَنِي عِيسَى بْنُ طَلْحَةَ، أَنَّ عَبْدَ اللهِ بْنَ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ حَدَّثَهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ بَيْنَمَا هُوَ يَخْطُبُ يَوْمَ النَّحْرِ إِذْ قَامَ إِلَيْهِ رَجُلٌ فَقَالَ: كُنْتُ

6665. हमसे उ़ष्मान बिन हैष़म ने बयान किया, या हमसे मुहम्मद बिन यह्या ज़ह्ली ने उ़ष्मान बिन हैष़म से बयान किया, उनसे इब्ने जुरैज ने कहा कि मैंने इब्ने शिहाब से सुना, कहा कि मुझसे ईसा बिन त़लहा ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) (हज्जतुल वदाअ़ में) क़ुर्बानी के दिन ख़ुत्बा दे रहे थे कि एक सहाबी खड़े हुए

أَحْسِبُ يَا رَسُولَ اللهِ ﷺ كَذَا وَكَذَا قَبْلَ كَذَا وَكَذَا ثُمَّ قَامَ آخَرُ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ كُنْتُ أَحْسِبُ كَذَا وَكَذَا لِهَؤُلاَءِ الثَّلاَثِ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((افْعَلْ وَلاَ حَرَجَ لَهُنَّ كُلِّهِنَّ يَوْمَئِذٍ فَمَا سُئِلَ يَوْمَئِذٍ عَنْ شَيْءٍ إِلاَّ قَالَ : افْعَلْ افْعَلْ وَلاَ حَرَجَ)). [راجع: ٨٣]

और अ़र्ज़ किया, या रसूलल्लाह! मैं फ़लाँ फ़लाँ अरकान को फ़लाँ फ़लाँ अरकान से पहले ख़्याल करता था (इसलिये ग़लती से इनको आगे-पीछे अदा किया) उसके बाद दूसरे स़ाहब खड़े हुए और अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! मैं फ़लाँ फ़लाँ) अरकाने हज्ज के बारे में यूँ ही ख़्याल करता था उनका इशारा (हलक़, रमी और नह्र) की त़रफ़ था। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, यूँ ही कर लो (तक़्दीम व ताख़ीर करने में) आज इनमें से किसी काम में कोई हर्ज नहीं है। चुनाँचे उस दिन आँहज़रत (ﷺ) से जिस मसले में भी पूछा गया तो आपने यही फ़र्माया कि कर लो कोई हर्ज नहीं। (राजेअ़ : 83)

तश्रीह : ये आपने महज़ भूल-चूक की बिना पर फ़र्माया था वरना जान-बूझकर ऐसा करना दुरुस्त नहीं है। ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) ने इससे ये निकाला कि ह़ज्ज के कामों में भूल-चूक पर आँह़ज़रत (ﷺ) ने किसी कफ़्फ़ारे का हुक्म नहीं दिया न फ़िदये का तो इसी त़रह क़सम भी अगर चूक से तोड़ डाले तो कफ़्फ़ारा लाज़िम न होगा (वह़ीदी)। सनद में ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स सह्मी क़ुरैशी मज़्कूर हुए हैं जो बड़े ज़बरदस्त आ़बिद, आ़लिम, ह़ाफ़िज़, क़ारी-ए-क़ुर्आन थे। इन्होंने आँह़ज़रत (ﷺ) से आपकी अह़ादीष़ लिखने की इजाज़त मांगी थी और इनको इजाज़त दी गई। चुनाँचे ये अह़ादीष़े नबवी के अव्वलीन जामेअ़ हैं। रात को चराग़ बुझाकर नमाज़ में खड़े होते और बहुत ही ज़्यादा रोते। चुनाँचे इनकी आँखें ख़राब हो गई थीं। जंगे ह़र्रा के दिनों में ज़िलह़िज्ज 63 हिजरी में वफ़ात पाई रज़ियल्लाहु अ़न्हु व अर्ज़ाहु आमीन।

इस ह़दीष़ की मुत़ाबक़त बाब का तर्जुमा से मुश्किल है। मगर शायद इमाम बुख़ारी (रह़.) ने ये रिवायत लाकर इसके दूसरे त़रीक़ की त़रफ़ इशारा किया है। उसमें यूँ है कि तीसरी बार वो शख़्स़ कहने लगा क़सम उस परवरदिगार की जिसने सच्चाई के साथ आपको भेजा मैं तो इससे अच्छी नमाज़ नहीं पढ़ सकता ऐसी क़सम भी आयत **ला युआख़िज़ुकुमुल्लाहु बिल्लग़्वि फ़ी अ़यमानिकुम** में दाख़िल है।

٦٦٦٦- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ، حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرٍ، عَنْ عَبْدِ الْعَزِيزِ بْنِ رُفَيْعٍ، عَنْ عَطَاءٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَجُلٌ لِلنَّبِيِّ ﷺ زُرْتُ قَبْلَ أَنْ أَرْمِيَ قَالَ: ((لاَ حَرَجَ)) قَالَ آخَرُ: حَلَقْتُ قَبْلَ أَنْ أَذْبَحَ قَالَ: ((لاَ حَرَجَ)) قَالَ آخَرُ : ذَبَحْتُ قَبْلَ أَنْ أَرْمِيَ قَالَ : ((لاَ حَرَجَ)). [راجع: ٨٤]

6666. हमसे अह़मद बिन यूनुस ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अबूबक्र बिन अ़याश ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन रुफ़ैअ़ ने बयान किया, उनसे अ़त़ा बिन अबी रिबाह़ ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि एक स़ह़ाबी ने नबी करीम (ﷺ) से कहा, मैंने रमी करने से पहले त़वाफ़े ज़ियारत कर लिया है। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि कोई ह़र्ज नहीं। तीसरे ने कहा कि मैंने रमी करने से पहले ही ज़िब्ह़ कर लिया। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कोई ह़र्ज नहीं। (राजेअ़ : 84)

तश्रीह : ये ह़ज्जतुल विदाअ़ की बातें हैं। इनसे दीन के आसान होने की त़रफ़ इशारा है और उन उ़लमा-ए-किराम के लिये क़ाबिले तवज्जह है जो ज़रा-ज़रा सी बातों में न स़िर्फ़ लोगों से गिरफ़्त करते बल्कि फ़िस्क़ और कुफ़्र के तीर चलाने लग जाते हैं। आज के दौरे नाज़ुक में बहुत दूर-अंदेश निगाहों की ज़रूरत है। अल्लाह पाक उ़लमा-ए-इस्लाम को ये मर्तबा अ़त़ा करे। (आमीन)

٦٦٦٧- حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ،

6667. मुझसे इस्ह़ाक़ बिन मंस़ूर ने बयान किया, कहा हमसे

अबू उसामा ने बयान किया, कहा हमसे ड़बैदुल्लाह बिन ड़मर ने बयान किया, उनसे सईद बिन अबी सईद ने और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि एक सहाबी मस्जिदे नबवी में नमाज़ पढ़ने के लिये आए। आँहज़रत (ﷺ) मस्जिद के एक किनारे तशरीफ़ रखते थे। फिर वो सहाबी आए और सलाम किया तो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि जा फिर नमाज़ पढ़, इसलिये कि तूने नमाज़ नहीं पढ़ी। वो वापस गये और फिर नमाज़ पढ़कर आए और सलाम किया। आँहज़रत (ﷺ) ने उस मर्तबा भी उनसे यही फ़माया कि वापस जा और नमाज़ पढ़ क्योंकि तूने नमाज़ नहीं पढ़ी। आख़िर तीसरी मर्तबा में वो सहाबी बोले कि फिर मुझे नमाज़ का तरीक़ा सिखा दीजिए। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि जब तुम नमाज़ के लिये खड़े हुआ करो तो पहले पूरी तरह वुज़ू कर लिया करो, फिर क़िब्ला रू होकर तक्बीर कहो और जो कुछ क़ुर्आन मजीद तुम्हें याद है और तुम आसानी के साथ पढ़ सकते हो उसे पढ़ा करो, फिर रुकूअ करो और सुकून के साथ रुकूअ कर चुको तो अपना सर उठाओ और जब सीधे खड़े हो जाओ तो सज्दा करो, जब सज्दे की हालत में अच्छी तरह हो जाओ तो सज्दे से सर उठाओ, यहाँ तक कि सीधे हो जाओ और इत्मीनान से बैठ जाओ, फिर सज्दा करो और जब इत्मीनान से सज्दा कर लो तो सर उठाओ यहाँ तक कि सीधे खड़े हो जाओ, ये अमल तुम अपनी पूरी नमाज़ में करो। (राजेअ : 757)

حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ عُمَرَ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ أَبِي سَعِيدٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَجُلاً دَخَلَ الْمَسْجِدَ يُصَلِّي وَرَسُولُ اللهِ ﷺ فِي نَاحِيَةِ الْمَسْجِدِ فَجَاءَ فَسَلَّمَ عَلَيْهِ فَقَالَ لَهُ: ((ارْجِعْ فَصَلِّ فَإِنَّكَ لَمْ تُصَلِّ)) فَرَجَعَ فَصَلَّى ثُمَّ سَلَّمَ فَقَالَ: ((وَعَلَيْكَ ارْجِعْ فَصَلِّ فَإِنَّكَ لَمْ تُصَلِّ)) قَالَ فِي الثَّالِثَةِ: فَأَعْلِمْنِي قَالَ: ((إِذَا قُمْتَ إِلَى الصَّلاَةِ فَأَسْبِغِ الْوُضُوءَ، ثُمَّ اسْتَقْبِلِ الْقِبْلَةَ فَكَبِّرْ، وَاقْرَأْ بِمَا تَيَسَّرَ مَعَكَ مِنَ الْقُرْآنِ، ثُمَّ ارْكَعْ حَتَّى تَطْمَئِنَّ رَاكِعًا، ثُمَّ ارْفَعْ رَأْسَكَ حَتَّى تَعْتَدِلَ قَائِمًا، ثُمَّ اسْجُدْ حَتَّى تَطْمَئِنَّ سَاجِدًا، ثُمَّ ارْفَعْ حَتَّى تَسْتَوِيَ وَتَطْمَئِنَّ جَالِسًا، ثُمَّ اسْجُدْ حَتَّى تَطْمَئِنَّ سَاجِدًا ثُمَّ ارْفَعْ حَتَّى تَسْتَوِيَ قَائِمًا ثُمَّ افْعَلْ ذَلِكَ فِي صَلاَتِكَ كُلِّهَا)).

[راجع: ٧٥٧]

तश्रीह : इस हदीष़ से मा'लूम हुआ कि नमाज़ दरहक़ीक़त वही सहीह है जो रुकूअ, सज्दा, क़याम, जलसा, क़ौमा वग़ैरह अरकान को ठीक तौर पर अदा करके पढ़ी जाए जो नमाज़ी महज़ मुर्ग़ की ठोंग लगा लेते हैं उनको नमाज़ का चोर कहा गया है और ऐसे नमाज़ियों की नमाज़ उनके मुँह पर मारी जाती है बल्कि वो नमाज़ उस नमाज़ी के हक़ में बद्दुआ करती है। हदीष़ और बाब में मुताबक़त ये है कि भूल-चूक माफ़ी के क़ाबिल नहीं है। ख़ास़ तौर पर नमाज़ में ऐसी भूल-चूक बहुत ज़्यादा ख़तरनाक है।

6668. हमसे फ़रवा बिन अबी मग़रा ने बयान किया, कहा हमसे अली बिन मिस्हर ने, उनसे हिशाम बिन उ़र्वा ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि जब उहुद की लड़ाई में मुश्रिक शिकस्त खा गये और अपनी शिकस्त उनमें मशहूर हो गई तो इब्लीस ने चीख़कर कहा (मुसलमानों से) कि ऐ अल्लाह के बन्दों! पीछे दुश्मन है चुनाँचे आगे के लोग पीछे की तरफ़ पिल पड़े और पीछे वाले

٦٦٦٨- حَدَّثَنَا فَرْوَةُ بْنُ أَبِي الْمَغْرَاءِ، حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ مُسْهِرٍ، عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ، عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: هُزِمَ الْمُشْرِكُونَ يَوْمَ أُحُدٍ هَزِيمَةً تُعْرَفُ فِيهِمْ، فَصَرَخَ إِبْلِيسُ أَيْ

عِبَادَ اللهِ أُخْرَاكُمْ فَرَجَعَتْ أُولاَهُمْ فَاجْتَلَدَتْ هِيَ وَأُخْرَاهُمْ فَنَظَرَ حُذَيْفَةُ بْنُ الْيَمَانِ فَإِذَا هُوَ بِأَبِيهِ فَقَالَ: أَبِي أَبِي قَالَتْ فَوَ اللهِ مَا انْحَجَزُوا حَتَّى قَتَلُوهُ فَقَالَ حُذَيْفَةُ: غَفَرَ اللهُ لَكُمْ، قَالَ عُرْوَةُ: فَوَ اللهِ مَا زَالَتْ فِي حُذَيْفَةَ مِنْهَا بَقِيَّةٌ حَتَّى لَقِيَ اللهَ. [راجع: ٣٢٩٠]

(मुसलमानों ही से) लड़ पड़े। उस हालत में हुज़ैफ़ह बिन अल यमान (रज़ि.) ने देखा कि लोग उनके मुसलमान वालिद को बेख़बरी में मार रहे हैं तो उन्होंने मुसलमानों से कहा कि ये तो मेरे वालिद हैं जो मुसलमान हैं, मेरे वालिद! आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि अल्लाह की क़सम! लोग फिर भी पार नहीं आए और आख़िर उन्हें क़त्ल ही कर डाला। हुज़ैफ़ह ने कहा, अल्लाह तुम्हारी मग़्फ़िरत करे। उर्वा ने बयान किया कि हुज़ैफ़ह (रज़ि.) को अपने वालिद की इस तरह शहादत का आख़िर वक़्त तक रंज और अफ़सोस ही रहा यहाँ तक कि वो अल्लाह से जा मिले। (राजेअ : 3290)

तश्रीह : जंगे उहुद में इब्लीस मल्ऊन ने धोखा दिया पीछे से मुसलमान ही आ रहे थे मगर उनको काफ़िर बतलाकर आगे वाले मुसलमानों को उनसे डराया वो घबराहट में अपने ही लोगों पर पलट पड़े और हज़रत हुज़ैफ़ह के वालिद यमान को शहीद कर दिया। इस रिवायत की मुताबक़त बाब से यूँ है कि हज़रत आइशा (रज़ि.) ने क़सम खाकर कहा। कुछ ने ये मुताबक़त बतलाई है कि आँहज़रत (ﷺ) ने उन मुसलमानों से कुछ नहीं कहा जिन्होंने हुज़ैफ़ह के बाप को भूल से मार दिया था तो इस तरह भूल-चूक से अगर क़सम तोड़ दे तो कफ़्फ़ारा वाजिब न होगा। हज़रत हुज़ैफ़ह को रसूले करीम (ﷺ) का ख़ास राज़दाँ कहा गया है। शहादते उष्मान के चालीस दिन बाद 35 हिजरी में मदयन में इनका इंतिक़ाल हुआ। रज़ियल्लाहु अन्हु व अर्ज़ाहु

एक रिवायत में बक़ियतुन ख़ैर का लफ़्ज़ है तो तर्जुमा ये होगा कि हुज़ैफ़ह पर मरते दम तक उस ख़ैरो-बरकत का अषर रहा या'नी उस दुआ का जो उन्होंने मुसलमानों के लिये की थी कि अल्लाह तुमको बख़्शे इस रिवायत की मुताबक़त बाब से यूँ है कि हज़रत आइशा (रज़ि.) ने क़सम खाकर कहा, **फ़वल्लाह मा ज़ाल्लतुन फ़ी हुज़ैफ़ह।**

٦٦٦٩- حَدَّثَنِي يُوسُفُ بْنُ مُوسَى، حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، قَالَ حَدَّثَنِي عَوْفٌ، عَنْ خِلاَسٍ وَمُحَمَّدٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((مَنْ أَكَلَ نَاسِيًا وَهُوَ صَائِمٌ، فَلْيُتِمَّ صَوْمَهُ فَإِنَّمَا أَطْعَمَهُ اللهُ وَسَقَاهُ)). [راجع: ١٩٣٣]

6669. मुझसे यूसुफ़ बिन मूसा ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे औफ़ अअराबी ने बयान किया, उनसे ख़िलास बिन अम्र बिन मुहम्मद बिन सीरीन ने कहा कि हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जिसने रोज़ा रखा हो और भूलकर खा लिया हो तो उसे अपना रोज़ा पूरा कर लेना चाहिये क्योंकि उसे अल्लाह ने खिलाया पिलाया है। (राजेअ : 1933)

इस हदीष की मुताबक़त इस तरह पर है कि भूलकर खा पी लेने से जब रोज़ा नहीं टूटता तो इसी क़यास पर भूलकर क़सम के ख़िलाफ़ करने से क़सम भी नहीं टूटेगी।

٦٦٧٠- حَدَّثَنَا آدَمُ بْنُ أَبِي إِيَاسٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي ذِئْبٍ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ بُحَيْنَةَ قَالَ:

6676. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे मुहम्मद बिन अब्दुर्रहमान बिन अबी ज़िब ने बयान किया, उनसे ज़ुहरी ने बयान किया, उनसे अअरज ने और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन बुहैना (रज़ि.) ने बयान किया

कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हमें नमाज़ पढ़ाई और पहली दो रकअ़ात के बाद बैठने से पहले ही उठ गये और नमाज़ पूरी कर ली। जब नमाज़ पढ़ चुके तो लोगों ने आँहज़रत (ﷺ) के सलाम का इंतिज़ार किया। फिर आँहज़रत (ﷺ) ने तक्बीर कही और सलाम फेरने से पहले सज्दा किया, फिर सज्दे से सर उठाया और दोबारा तक्बीर कहकर सज्दा किया। फिर सज्दे से सर उठाया और सलाम फेरा। (राजेअ़ : 829)

صَلَّى بِنَا رَسُولُ اللهِ ﷺ فَقَامَ فِي الرَّكْعَتَيْنِ الأُولَيَيْنِ قَبْلَ أَنْ يَجْلِسَ فَمَضَى فِي صَلاَتِهِ، فَلَمَّا قَضَى صَلاَتَهُ انْتَظَرَ النَّاسُ تَسْلِيمَهُ فَكَبَّرَ وَسَجَدَ قَبْلَ أَنْ يُسَلِّمَ، ثُمَّ رَفَعَ رَأْسَهُ ثُمَّ كَبَّرَ وَسَجَدَ ثُمَّ رَفَعَ رَأْسَهُ وَسَلَّمَ. [راجع: ٨٢٩]

तश्रीह: नमाज़ में ऐसी मज़्कूरा भूल-चूक का कफ़्फ़ारा सज्दा-ए-सह्व करना है। इस ह़दीष़ में सज्दा-ए-सह्व अदा करने की वही तरकीब बयान हुई है जो अहले ह़दीष़ का मा'मूल है और इसी को तरजीह ह़ासिल है।

6671. मुझसे इस्ह़ाक़ बिन इब्राहीम ने बयान किया, उन्होंने अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अ़ब्दुस्समद से सुना, कहा हमसे मंसूर बिन मुअ़तमिर ने बयान किया, उनसे इब्राहीम नख़ई ने, उनसे अ़ल्क़मा ने और उनसे इब्ने मसऊ़द (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने उन्हें ज़ुह्र की नमाज़ पढ़ाई और नमाज़ में कोई चीज़ ज़्यादा या कम कर दी। मंसूर ने बयान किया कि मुझे मा'लूम नहीं इब्राहीम को शुब्हा हुआ था या अ़ल्क़मा को। बयान किया कि फिर आँहज़रत (ﷺ) से कहा गया कि या रसूलल्लाह! नमाज़ में कुछ कमी कर दी गई है या आप भूल गये हैं? आँहज़रत (ﷺ) ने पूछा, क्या बात है? लोगों ने कहा कि आपने इस इस त़रह नमाज़ पढ़ाई है। बयान किया कि फिर आँहज़रत (ﷺ) ने उनके साथ दो सज्दे (सह्व के) किये और फ़र्माया ये दो सज्दे उस शख़्स के लिये हैं जिसे यक़ीन न हो कि उसने अपनी नमाज़ में कमी या ज़्यादती कर दी है उसे चाहिये कि स़हीह बात तक पहुँचने के लिये ज़हन पर ज़ोर डाले और जो बाक़ी रह गया हो उसे पूरा करे फिर दो सज्दे (सह्व के) कर ले। (राजेअ़ : 401)

٦٦٧١- حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، سَمِعَ عَبْدَ الْعَزِيزِ بْنَ عَبْدِ الصَّمَدِ، حَدَّثَنَا مَنْصُورٌ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ عَلْقَمَةَ عَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ نَبِيَّ اللهِ ﷺ صَلَّى بِهِمْ صَلاَةَ الظُّهْرِ فَزَادَ أَوْ نَقَصَ مِنْهَا قَالَ مَنْصُورٌ: لاَ أَدْرِي إِبْرَاهِيمُ وَهِمَ أَمْ عَلْقَمَةُ، قَالَ: قِيلَ يَا رَسُولَ اللهِ أَقَصُرَتِ الصَّلاَةُ أَمْ نَسِيتَ؟ قَالَ : ((وَمَا ذَاكَ؟)) قَالُوا: صَلَّيْتَ كَذَا وَكَذَا قَالَ: فَسَجَدَ بِهِمْ سَجْدَتَيْنِ ثُمَّ قَالَ: ((هَاتَانِ السَّجْدَتَانِ لِمَنْ لاَ يَدْرِي زَادَ فِي صَلاَتِهِ أَمْ نَقَصَ فَيَتَحَرَّى الصَّوَابَ فَيُتِمُّ مَا بَقِيَ ثُمَّ يَسْجُدُ سَجْدَتَيْنِ)). [راجع: ٤٠١]

6672. हमसे ह़ज़रत इमाम ह़ुमैदी ने बयान किया, कहा हमसे ह़ज़रत सुफ़यान बिन उ़यय़ना ने बयान किया, कहा हमसे अ़म्र बिन दीनार ने बयान किया, कहा मुझको सईद बिन जुबैर ने ख़बर दी, कहा कि मैंने ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से पूछा तो उन्होंने बयान किया कि हमसे उबय बिन कअ़ब (रज़ि.) ने बयान किया, उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना, आयत ला तुआख़िज़्नी बिमा नसीतु वला तुरहिक़्नी मिन अम्रि उ़सरा के बारे में कि पहली मर्तबा ए'तिराज़ मूसा (अ़लैहि.) से भूलकर

٦٦٧٢- حَدَّثَنَا الْحُمَيْدِيُّ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ دِينَارٍ، أَخْبَرَنَا سَعِيدُ بْنُ جُبَيْرٍ، قَالَ: قُلْتُ لاِبْنِ عَبَّاسٍ فَقَالَ: حَدَّثَنَا أُبَيُّ بْنُ كَعْبٍ أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللهِ ﷺ ﴿لاَ تُؤَاخِذْنِي بِمَا نَسِيتُ، وَلاَ تُرْهِقْنِي مِنْ أَمْرِي عُسْرًا﴾ قَالَ:

((كَانَتِ الأُولَى مِنْ مُوسَى نِسْيَانًا)).

[راجع: ٧٤]

हुआ था। (राजेअ : 74)

٦٦٧٣- قال أبو عَبْدِ الله : كَتَبَ إِلَيَّ مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا مُعَاذُ بْنُ مُعَاذٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ عَوْنٍ، عَنِ الشَّعْبِيِّ قَالَ : قَالَ الْبَرَاءُ بْنُ عَازِبٍ وَكَانَ عِنْدَهُمْ ضَيْفٌ لَهُمْ فَأَمَرَ أَهْلَهُ أَنْ يَذْبَحُوا قَبْلَ أَنْ يَرْجِعَ لِيَأْكُلَ ضَيْفُهُمْ، فَذَبَحُوا قَبْلَ الصَّلاَةِ، فَذَكَرُوا ذَلِكَ لِلنَّبِيِّ ﷺ فَأَمَرَهُ أَنْ يُعِيدَ الذَّبْحَ فَقَالَ: يَا رَسُولَ الله عِنْدِي عَنَاقٌ جَذَعٌ عَنَاقُ لَبَنٍ، هِيَ خَيْرٌ مِنْ شَاتَيْ لَحْمٍ، وَكَانَ ابْنُ عَوْنٍ يَقِفُ فِي هَذَا الْمَكَانِ عَنْ حَدِيثِ الشَّعْبِيِّ، وَيُحَدِّثُ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ سِيرِينَ بِمِثْلِ هَذَا الْحَدِيثِ وَيَقِفُ فِي هَذَا الْمَكَانِ وَيَقُولُ: لاَ أَدْرِي أَبَلَغَتِ الرُّخْصَةُ غَيْرَهُ أَمْ لاَ. رَوَاهُ أَيُّوبُ، عَنِ ابْنِ سِيرِينَ، عَنْ أَنَسٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ.[راجع: ٩٥١]

6673. अबू अ़ब्दुल्लाह (ह़ज़रत इमाम बुख़ारी रह़.) ने कहा कि मुह़म्मद बिन बश्शार ने मुझे लिखा कि हमसे मुआ़ज़ बिन मुआ़ज़ ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने औ़न ने बयान किया, उनसे शअ़बी ने बयान किया, कि ह़ज़रत बराअ बिन आ़ज़िब (रज़ि.) ने बयान किया, उनके यहाँ कुछ उनके मेह्मान ठहरे हुए थे तो उन्होंने अपने घरवालों से कहा कि उनके वापस आने से पहले जानवर ज़िब्ह़ कर लें ताकि उनके मेह्मान खाएँ, चुनाँचे उन्होंने नमाज़े ईदुल अज़्हा से पहले जानवर ज़िब्ह़ कर लिया। फिर आँह़ज़रत (ﷺ) से इसका ज़िक्र किया तो आपने हुक्म दिया कि नमाज़ के बाद दोबारा ज़िब्ह़ करें। बराअ (रज़ि.) ने अ़र्ज किया, या रसूलल्लाह! मेरे पास एक साल से ज़्यादा दूध वाली बकरी है जो दो बकरियों के गोश्त से बढ़कर है। इब्ने औ़फ़ शअ़बी की ह़दीष़ के उस मक़ाम पर ठहर जाते थे और मुह़म्मद बिन सीरीन से इसी ह़दीष़ की त़रह ह़दीष़ बयान करते थे और उस मुक़ाम पर रुककर कहते थे कि मुझे मा'लूम नहीं, ये रुख़्सत दूसरे लोगों के लिये भी है या सिर्फ़ बराअ (रज़ि.) के लिये ही थी। इसकी रिवायत अय्यूब ने इब्ने सीरीन से की है, उनसे अनस (रज़ि.) ने और उनसे नबी करीम (ﷺ) ने। (राजेअ : 951)

तश्रीह : सईद बिन जुबैर (रज़ि.) ने ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) के सामने नौफ़ बक्काली का क़ौल नक़ल किया था कि वो ख़िज़्र वाले मूसा को इस्राईली मूसा नहीं बल्कि और कोई दूसरा मूसा कहते हैं। इस पर ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने नौफ़ बक्काली के क़ौल की तर्दीद करते हुए ह़ज़रत उबइ बिन कअ़ब की ये रिवायत नक़ल करके बतलाया कि वो मूसा इस्राईली मूसा ही थे, जिनको इस शर्त़ का ख़्याल नहीं रहा था जो वो ख़िज़्र से कर चुके थे उस लफ़्ज़ **ला तुआख़िज़्नी अल्अख़** उन्होंने कहे। वजहे मुनासबत वही है कि सह्व और निस्यान को ह़ज़रत मूसा ने मुवाख़िज़ा के क़ाबिल नहीं समझा ह़ज़रत ख़िज़्र ने भी उस निस्यान को माफ़ ही कर दिया था। ह़ज़रत अनस बिन मालिक ख़ज़रजी ख़ादिम दस साल की उ़म्र में ख़िदमते नबवी में आए और आख़िर तक ख़ास़ ख़िदमात का शर्फ़ ह़ास़िल हुआ। अ़हदे फ़ारूक़ी में बस़रा में मुबल्लिग़े इस्लाम की ह़ैषियत से मुक़ीम हुए और 91 हिजरी में बउ़म्र 103 साल बस़रा ही में इंतिक़ाल हुआ। मरते वक़्त सौ के क़रीब औलाद छोड़कर गये उनकी माँ का नाम उम्मे सुलैम बिन्ते मल्ह़ान है।

٦٦٧٤- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنِ الأَسْوَدِ بْنِ قَيْسٍ قَالَ : سَمِعْتُ جُنْدَبًا قَالَ : شَهِدْتُ النَّبِيَّ ﷺ صَلَّى يَوْمَ عِيدٍ، ثُمَّ خَطَبَ ثُمَّ قَالَ: (مَنْ

6674. हमसे सुलैमान बिन ह़र्ब ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने, उनसे अस्वद बिन क़ैस ने कहा कि मैंने जुन्दब (रज़ि .) से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैं उस वक़्त तक मौजूद था जब रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ईद की नमाज़ पढ़ाई फिर ख़ुत़्बा दिया और फ़र्माया कि जिसने नमाज़ से पहले ज़िब्ह़ कर

لیا هو उसे चाहिये कि उसकी जगह दूसरा जानवर ज़िब्ह करे और जिसने अभी ज़िब्ह न किया हो उसे चाहिये कि अल्लाह का नाम लेकर जानवर ज़िब्ह करे। (राजेअ़ : 985)

ذَبَحَ فَلْيُبَدِّلْ مَكَانَهَا؟ وَمَنْ لَمْ يَكُنْ ذَبَحَ فَلْيَذْبَحْ بِسْمِ اللهِ)). [راجع: ٩٨٥]

इस हदीष़ से साफ़ ज़ाहिर है कि कुर्बानी का जानवर नमाज़े ईद पढ़कर ही ज़िब्ह करना चाहिये वरना वो बजाय कुर्बानी के मा'मूली ज़बीहा होगा।

बाब 16 : क़समों का बयान

١٦- باب الْيَمِينِ الْغَمُوسِ

और अल्लाह ने सूरह नहल में फ़र्माया कि, अपनी क़समों को आपस में फ़साद की बुनियाद न बनाओ, इसलिये कि इस्लाम पर लोगों का क़दम जमे और फिर उखड़ जाए और अल्लाह की राह से रोकने के बदले तुमको दोज़ख़ का अ़ज़ाब चखना पड़े तुमको सख़्त सज़ा दी जाए। इस आयत में जो दख़ला का लफ़्ज़ है उसके मा'नी दग़ा और फ़रेब के हैं। ग़म्स के मा'नी डुबो देना।

﴿وَلاَ تَتَّخِذُوا أَيْمَانَكُمْ دَخَلاً بَيْنَكُمْ فَتَزِلَّ قَدَمٌ بَعْدَ ثُبُوتِهَا وَتَذُوقُوا السُّوءَ بِمَا صَدَدْتُمْ عَنْ سَبِيلِ اللهِ وَلَكُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ﴾ [النحل : ٩٤] دَخَلاً مَكْرًا وَخِيَانَةً.

ये क़सम भी क़सम खाने वाले को दोज़ख़ की आग मे डुबो देगी। आयत की मुनासबत बाब से ये है कि मक्र व फ़रेब की क़सम पर उसमें सख़्त वईद है ऐसा ही यमीने ग़मूस क़सम में भी समझना चाहिये यमीने ग़मूस दोज़ख़ में डुबो देने वाली क़सम को कहते हैं।

6675. हमसे मुहम्मद बिन मुक़ातिल ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको नज़्र ने ख़बर दी, कहा हमको शुअ़बा ने ख़बर दी, कहा हमसे फ़रास ने बयान किया, कहा कि मैंने शअ़बी से सुना, उन्होंने अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र से कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, कबीरा गुनाह अल्लाह के साथ शरीक करना, वालिदैन की नाफ़र्मानी करना, किसी की नाहक़ जान लेना और यमीने ग़मूस। क़स्दन झूठी क़सम खाने को कहते हैं। (दीगर मक़ामात : 6870, 6920)

٦٦٧٥- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مُقَاتِلٍ، أَخْبَرَنَا النَّضْرُ، أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ، حَدَّثَنَا فِرَاسٌ قَالَ: سَمِعْتُ الشَّعْبِيَّ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((الْكَبَائِرُ الإِشْرَاكُ بِاللهِ، وَعُقُوقُ الْوَالِدَيْنِ، وَقَتْلُ النَّفْسِ، وَالْيَمِينُ الْغَمُوسُ)).

[طرفاه في : ٦٨٧٠، ٦٩٢٠].

बाब 17 : अल्लाह तआ़ला का सूरह आले इमरान में फ़र्माना जो लोग अल्लाह का नाम

١٧- باب قَوْلِ اللهِ تَعَالَى:

लेकर अ़हद करके क़समें खाकर अपनी क़समों के बदले में थोड़ी पूँजी (दुनिया की मोल लेते हैं) यही वो लोग हैं, जिनका आख़िरत मे कोई हि़स्सा नेक नहीं होगा। (सूरह आले इमरान : 77)

और अल्लाह उनसे बात भी नहीं करेगा और न क़यामत के दिन उनकी तरफ़ रहमत की नज़र ही करेगा और न उन्हें पाक करेगा और उन्हें दर्दनाक अ़ज़ाब होगा और अल्लाह तआ़ला का सूरह

﴿إِنَّ الَّذِينَ يَشْتَرُونَ بِعَهْدِ اللهِ وَأَيْمَانِهِمْ ثَمَنًا قَلِيلاً أُولَئِكَ لاَ خَلاَقَ لَهُمْ فِي الآخِرَةِ وَلاَ يُكَلِّمُهُمُ اللهُ وَلاَ يَنْظُرُ إِلَيْهِمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَلاَ يُزَكِّيهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ﴾ [آل عمران: ٧٧]. وَقَوْلِهِ جَلَّ ذِكْرُهُ: ﴿وَلاَ تَجْعَلُوا اللهَ عُرْضَةً لأَيْمَانِكُمْ أَنْ تَبَرُّوا وَتَتَّقُوا وَتُصْلِحُوا بَيْنَ النَّاسِ وَاللهُ سَمِيعٌ عَلِيمٌ﴾ وَقَوْلِهِ جَلَّ

ذِكْرُهُ: ﴿وَلاَ تَشْتَرُوا بِعَهْدِ اللهِ ثَمَنًا قَلِيلاً إِنَّ مَا عِنْدَ اللهِ هُوَ خَيْرٌ لَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُونَ﴾ [النحل : ٩٥] ﴿وَأَوْفُوا بِعَهْدِ اللهِ إِذَا عَاهَدْتُمْ وَلاَ تَنْقُضُوا الأَيْمَانَ بَعْدَ تَوْكِيدِهَا وَقَدْ جَعَلْتُمُ اللهَ عَلَيْكُمْ كَفِيلاً﴾ [النحل : ٩١].

बक़रः में इर्शाद, और अल्लाह को क़समें खाकर नेकी और परहेज़गारी और लोगों में मेल करा देने की रोक न बनाओ और अल्लाह सुनता जानता है और सूरह नह्ल में फ़र्माया अल्लाह का अ़हद करके दुनिया का थोड़ा सा मोल मत लो। अल्लाह के पास जो कुछ ष़वाब और अज्र है वो तुम्हारे लिये बेहतर है अगर तुम समझो और उसी सूरत में फ़र्माया और अल्लाह का नाम लेकर जो अ़हद करो उसको पूरा करो और क़समों को पक्का करने के बाद फिर न तोड़ो (कैसे तोड़ोगे) तुम अल्लाह की ज़मानत अपनी बात पर दे चुके हो? (सूरह नह्ल : 91)

या'नी अल्लाह को गवाह बना चुके हो।

٦٦٧٦- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي وَائِلٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((مَنْ حَلَفَ عَلَى يَمِينِ صَبْرٍ يَقْتَطِعُ بِهَا مَالَ امْرِىءٍ مُسْلِمٍ لَقِيَ اللهَ وَهُوَ عَلَيْهِ غَضْبَانُ)) فَأَنْزَلَ اللهُ تَصْدِيقَ ذَلِكَ ﴿إِنَّ الَّذِينَ يَشْتَرُونَ بِعَهْدِ اللهِ وَأَيْمَانِهِمْ ثَمَنًا قَلِيلاً﴾ [آل عمران: ٧٧] إِلَى آخِرِ الآيَةِ.[راجع: ٢٣٥٦]

6676. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अबू अ़वाना ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे अबू वाइल ने और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, जिसने झूठी क़सम इस त़ौर पर खाई कि उसके ज़रिये किसी मुसलमान का माल नाजाइज़ त़रीक़े से ह़ासिल करे तो वो अल्लाह तआ़ला से इस ह़ाल में मिलेगा कि अल्लाह उस पर निहायत ही ग़ुस्सा होगा। फिर अल्लाह तआ़ला ने उसकी तस्दीक़ वह्य के ज़रिये नाज़िल की कि, बिला शुब्हा वो लोग जो अल्लाह के अ़हद और अपनी क़समों के बदले मा'मूली दुनिया की पूँजी ख़रीदते हैं (आले इमरान : 77) आख़िर आयत तक। (राजेअ : 2356)

٦٦٧٧- فَدَخَلَ الأَشْعَثُ بْنُ قَيْسٍ فَقَالَ: مَا حَدَّثَكُمْ أَبُو عَبْدِ الرَّحْمَنِ فَقَالُوا: كَذَا وَكَذَا، قَالَ لِي أُنْزِلَتْ كَانَتْ لِي بِئْرٌ فِي أَرْضِ ابْنِ عَمٍّ لِي فَأَتَيْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: ((بَيِّنَتُكَ أَوْ يَمِينُهُ)) فَقُلْتُ: إِذًا يَحْلِفُ عَلَيْهَا يَا رَسُولَ اللهِ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((مَنْ حَلَفَ عَلَى يَمِينِ صَبْرٍ وَهُوَ فِيهَا فَاجِرٌ يَقْتَطِعُ بِهَا مَالَ امْرِىءٍ مُسْلِمٍ، لَقِيَ اللهَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَهُوَ عَلَيْهِ غَضْبَانُ)).

6677. ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह ये ह़दीष़ बयान कर चुके थे, इतने में अश्अ़ष़ बिन क़ैस (रज़ि.) आए और पूछा कि अबू अ़ब्दुर्रहमान! मैंने तुम लोगों से क्या ह़दीष़ बयान की है? लोगों ने कहा, इस इस मज़्मून की। उन्होंने कहा कि अजी! ये आयत तो मेरे ही बारे में नाज़िल हुई थी मेरे एक चचाज़ाद भाई की ज़मीन में मेरा एक कुआ था उसके झगड़े के सिलसिले में मैं आँह़ज़रत (ﷺ) के पास आया तो आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुम अपने गवाह लाओ वरना मुद्दआ़ अ़लह से क़सम ली जाएगी। मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! फिर वो तो झूठी क़सम खा लेगा। आपने फ़र्माया कि जिसने झूठी क़सम बदनिय्यती के साथ इसलिये खाई कि उसके ज़रिये किसी मुसलमान का माल हड़प कर जाए तो क़यामत के दिन अल्लाह से इस ह़ाल में मिलेगा कि वो अल्लाह

उस पर इंतिहाई ग़ज़बनाक होगा। (राजेअ : 2357)

[راجع: ٢٣٥٧]

बाब 18 : मिल्क हासिल होने से पहले या गुनाह की बात के लिये या ग़ुस्से की हालत में क़सम खाने का क्या हुक्म है?

١٨- باب الْيَمِينِ فِيمَا لاَ يَمْلِكُ وَفِي الْمَعْصِيَةِ، وَفِي الْغَضَبِ

तश्रीह : मिल्क हासिल होने से पहले इसकी मिषाल ये है कि मषलन कोई क़सम खा ले मैं लौण्डी को आज़ाद नहीं करने का या अपनी औरत को तलाक़ नहीं देने का और अभी उसके पास न कोई लौण्डी हो न कोई औरत निकाह में हो उसके बाद लौण्डी ख़रीदे या किसी औरत से निकाह करे फिर लौण्डी को आज़ाद करे या औरत को तलाक़ दे तो क़सम का कफ़्फ़ारा लाज़िम न होगा। इसी तरह अगर कोई किसी औरत की निस्बत कहे अगर मैं उससे निकाह करूँ तो उस पर तलाक़ है या अगर मैं ये लौण्डी ख़रीदूँ तो वो आज़ाद है फिर उस औरत से निकाह करे या वो लौण्डी ख़रीदे तो न तलाक़ पड़ेगी न लौण्डी आज़ाद होगी। अहले हदीष का यही क़ौल है लेकिन हनफ़िया ने इसके ख़िलाफ़ कहा है (मौलाना वहीदुज़्ज़माँ मरहूम) हदीषे बाब में सवारियाँ न देने की क़सम का ज़िक्र है। उस वक़्त वो सवारियाँ आपके मिल्क में न थीं जब मिल्क में आईं उस वक़्त देने से न क़सम टूटी न कफ़्फ़ारा लाज़िम हुआ ये हदीष ग़ुस्से में क़सम खा लेने की भी मिषाल हो सकती है। (वहीदी)

6678. मुझसे मुहम्मद बिन अलाअ ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, उनसे बुरैद ने, उनसे अबू बुर्दा ने और उनसे हज़रत अबू मूसा (रज़ि.) ने बयान किया कि मेरे साथियों ने मुझे नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में सवारी के जानवर मांगने के लिये भेजा तो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अल्लाह की क़सम! मैं तुम्हारे लिये कोई सवारी का जानवर नहीं दे सकता (क्योंकि मौजूद नहीं हैं) जब मैं आपके सामने आया तो आप कुछ नाराज़ थे। फिर जब दोबारा आया तो आपने फ़र्माया कि अपने साथियों के पास जाओ और कह कि अल्लाह तआला ने या (ये कहा कि) रसूलुल्लाह (ﷺ) ने तुम्हारे लिये सवारी का इंतिज़ाम कर दिया। (राजेअ : 3133)

٦٦٧٨- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلاَءِ، حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، عَنْ بُرَيْدٍ، عَنْ أَبِي بُرْدَةَ، عَنْ أَبِي مُوسَى قَالَ: أَرْسَلَنِي أَصْحَابِي إِلَى النَّبِيِّ ﷺ أَسْأَلُهُ الْحُمْلاَنَ فَقَالَ: ((وَاللهِ لاَ أَحْمِلُكُمْ عَلَى شَيْءٍ)) وَوَافَقْتُهُ وَهُوَ غَضْبَانُ، فَلَمَّا أَتَيْتُهُ قَالَ: ((انْطَلِقْ إِلَى أَصْحَابِكَ فَقُلْ: إِنَّ اللهَ أَوْ إِنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَحْمِلُكُمْ)). [راجع: ٣١٣٣]

बाद में इंतिज़ाम हो जाने पर आपने अपनी क़सम को तोड़ दिया और उसका कफ़्फ़ारा अदा कर दिया। बाब और हदीष में मुताबक़त ज़ाहिर है। हज़रत अबू मूसा अब्दुल्लाह बिन क़ैस अश्अरी (रज़ि.) मक्का में इस्लाम लाए, हब्शा की तरफ़ हिजरत की और अहले सफ़ीना के साथ हब्शा से वापस हुए। 20 हिजरी में हज़रत फ़ारूक़ (रज़ि.) ने उनको बसरा का हाकिम बना दिया। 52 हिजरी में वफ़ात हुई। रज़ियल्लाहु अन्हु व अर्ज़ाहू।

6679. हमसे अब्दुल अज़ीज़ ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम ने बयान किया, उनसे सालेह ने, उनसे इब्ने शिहाब ने (दूसरी सनद) और हमसे हज्जाज ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल्लाह बिन उमर नुमैरी ने बयान किया, कहा हमसे यूनुस बिन यज़ीद ऐली ने बयान किया, कहा कि मैंने ज़ुहरी से सुना, कहा कि मैंने उर्वा बिन ज़ुबैर, सईद बिन मुसय्यब, अल्क़मा बिन वक़्क़ास और उबैदुल्लाह बिन अब्दुल्लाह बिन उत्बा (रज़ि.) से सुना नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा मुतहहरा हज़रत

٦٦٧٩- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ، حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ، عَنْ صَالِحٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ ح. وَحَدَّثَنَا الْحَجَّاجُ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عُمَرَ النُّمَيْرِيُّ، حَدَّثَنَا يُونُسُ بْنُ يَزِيدَ الأَيْلِيُّ قَالَ: سَمِعْتُ الزُّهْرِيَّ قَالَ: سَمِعْتُ عُرْوَةَ بْنَ الزُّبَيْرِ وَسَعِيدَ بْنَ الْمُسَيَّبِ وَعَلْقَمَةَ بْنَ

وَقَّاصٍ وَعُبَيْدَ اللهِ بْنَ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُتْبَةَ عَنْ حَدِيثِ عَائِشَةَ زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ، حِينَ قَالَ لَهَا أَهْلُ الإِفْكِ مَا قَالُوا فَبَرَّأَهَا اللهُ مِمَّا قَالُوا كُلٌّ حَدَّثَنِي طَائِفَةً مِنَ الْحَدِيثِ فَأَنْزَلَ اللهُ: ﴿إِنَّ الَّذِينَ جَاؤُوا بِالإِفْكِ﴾ [النور: ١١] الْعَشْرَ الآيَاتِ كُلَّهَا فِي بَرَاءَتِي فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ الصِّدِّيقُ: وَكَانَ يُنْفِقُ عَلَى مِسْطَحٍ لِقَرَابَتِهِ مِنْهُ وَاللهِ لاَ أُنْفِقُ عَلَى مِسْطَحٍ شَيْئًا أَبَدًا بَعْدَ الَّذِي قَالَ لِعَائِشَةَ: فَأَنْزَلَ اللهُ: ﴿وَلاَ يَأْتَلِ أُولُوا الْفَضْلِ مِنْكُمْ وَالسَّعَةِ أَنْ يُؤْتُوا أُولِي الْقُرْبَى﴾ [النور: ٢٢] الآيَةَ. قَالَ أَبُو بَكْرٍ: بَلَى وَاللهِ إِنِّي لأُحِبُّ أَنْ يَغْفِرَ اللهُ لِي، فَرَجَعَ إِلَى مِسْطَحٍ النَّفَقَةَ الَّتِي كَانَ يُنْفِقُ عَلَيْهِ، وَقَالَ وَاللهِ لاَ أَنْزِعُهَا عَنْهُ أَبَدًا.

[راجع: ٢٥٩٣]

आइशा (रज़ि.) पर बोहतान की बात के बारे में, जब उन पर इत्तेहाम लगाने वालों ने इत्तेहाम लगाया था और अल्लाह तआला ने उनको उस इत्तेहाम से बरी क़रार दिया था, उन सब लोगों ने मुझसे इस क़िस्से का कोई एक टुकड़ा बयान किया (इस हदीष में ये भी है कि) फिर अल्लाह तआला ने ये आयत नाज़िल की कि, बिला शुब्हा जिन लोगों ने झूठी तोहमत लगाई है, दस आयतों तक। जो सबकी सब मेरी पाकी बयान करने के लिये नाज़िल हुई थीं। हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) मिस्तह (रज़ि.) के साथ क़राबत की वजह से उनका ख़र्च अपने ज़िम्मे लिये हुए थे, कहा कि अल्लाह की क़सम! अब कभी मिस्तह पर कोई चीज़ एक पैसा ख़र्च नहीं करूँगा। उसके बाद कि उसने आइशा (रज़ि.) पर इस तरह की झूठी तोहमत लगाई है। इस पर अल्लाह तआला ने ये आयत नाज़िल की। वला यअतलि ऊलुल फ़ज़्लि मिन्कुम वस्सअति अय्युअतू ऊलिल क़ुरबा (सूरह नूर : 22) अबूबक्र (रज़ि.) ने उस पर कहा, क्यूँ नहीं, अल्लाह की क़सम! मैं तो यही पसंद करता हूँ कि अल्लाह मेरी मग़्फ़िरत कर दे। चुनाँचे उन्होंने फिर मिस्तह को वो ख़र्च देना शुरू कर दिया जो उससे पहले उन्हें दिया करते थे और कहा कि अल्लाह की क़सम! मैं अब ख़र्च देने को कभी नहीं रोकूँगा। (राजेअ : 2593)

तश्रीह : हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने अपनी क़सम को कफ़्फ़ारा अदा करके तोड़ दिया। बाब से यही मुताबक़त है। हज़रत मिस्तह बिन अषाषा क़ुरैशी मुत्तलिबी हैं । 34 हिजरी में बउम्र 56 साल वफ़ात पाई। सुब्हानल्लाह, ईमानदारी और तक़्वा हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) पर ख़त्म था बावजूद ये कि मिस्तह ने ऐसा बड़ा क़ुसूर किया था कि उनकी प्यारी बेटी पर जो ख़ुद मिस्तह की भी भतीजी होती थीं इस क़िस्म का तूफ़ान जोड़ा और क़त्अे नज़र इस सुलूक के जो हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) उनसे किया करते थे और क़त्ऐ नज़र एहसान फ़रामोशी के उन्होंने क़राबत का भी कुछ लिहाज़ न किया। हज़रत आइशा (रज़ि.) की बदनामी ख़ुद मिस्तह की भी ज़िल्लत और ख़्वारी थी मगर वो शैतान के चकमे में आ गये । शैतान इसी तरह आदमी को ज़लील करता है, उसकी अक़्ल और फ़हम भी सलब हो जाती है। अगर कोई दूसरा आदमी होता तो मिस्तह ने ये हरकत ऐसी की थी कि सारी उम्र सुलूक करना तो दूर उनकी सूरत भी देखना पसंद नहीं करता मगर आख़िर में हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) की अल्लाह तर्सी और मेहरबानी और शफ़क़त पर क़ुर्बान कि उन्होंने मिस्तह का मा'मूल बदस्तूर जारी कर दिया और उनके क़ुसूर से चश्मपोशी की। बाब का तर्जुमा यहीं से निकलता है क्योंकि हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) ने एक नेकी की बात या'नी अज़ीज़ों से सुलूक तर्क करने पर क़सम खाई थी तो उस क़सम को तोड़ डालने का हुक्म हुआ फिर कोई गुनाह करने पर क़सम खाए उसको तो बतरीक़े औला ये क़सम तोड़ डालना ज़रूरी होगा। ये ग़ुस्से में क़सम खाने की भी मिषाल हो सकती है क्योंकि हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) ने पहले ग़ुस्से ही में क़सम खा ली थी कि मैं मिस्तह से सुलूक न करूँगा। (तक़रीर मौलाना वहीदुज़्ज़माँ मरहूम)।

٦٦٨٠- حَدَّثَنَا أَبُو مَعْمَرٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ

6680. हमसे अबू मअमर ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल

الْوَارِثِ، حَدَّثَنَا أَيُّوبُ، عَنِ الْقَاسِمِ، عَنْ زَهْدَمٍ قَالَ: كُنَّا عِنْدَ أَبِي مُوسَى الأَشْعَرِيِّ فَقَالَ: أَتَيْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ فِي نَفَرٍ مِنَ الأَشْعَرِيِّينَ فَوَافَقْتُهُ وَهُوَ غَضْبَانُ فَاسْتَحْمَلْنَاهُ فَحَلَفَ أَنْ لاَ يَحْمِلَنَا ثُمَّ قَالَ: ((وَاللهِ إِنْ شَاءَ اللهُ لاَ أَحْلِفُ عَلَى يَمِينٍ، فَأَرَى غَيْرَهَا خَيْرًا مِنْهَا إِلاَّ أَتَيْتُ الَّذِي هُوَ خَيْرٌ وَتَحَلَّلْتُهَا)). [راجع: ٣١٣٣]

वारिष़ ने, कहा हमसे अय्यूब ने बयान किया, उनसे क़ासिम ने, उनसे ज़ह्दम ने बयान किया कि हम अबू मूसा (रज़ि.) के पास थे तो उन्होंने बयान किया कि मैं क़बीला अश्अर के चंद साथियों के साथ आँहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ जब मैं आपके पास आया तो आप ग़ुस्से में थे फिर हमने आपसे सवारी का जानवर मांगा तो आपने क़सम खा ली कि आप हमारे लिये उसका इंतिज़ाम नहीं कर सकते। उसके बाद फ़र्माया, वल्लाह! अल्लाह ने चाहा तो मैं कभी भी अगर कोई क़सम खा लूँगा और उसके सिवा दूसरी चीज़ में भलाई देखूँगा तो वही करूँगा जिसमें भलाई होगी और क़सम तोड़ दूँगा। (राजेअ: 3133)

मा'लूम हुआ कि क़सम पर जमे रहना अम्रे महमूद (अच्छा काम) नहीं है।

١٩- باب إِذَا قَالَ وَاللهِ لاَ أَتَكَلَّمُ الْيَوْمَ فَصَلَّى أَوْ قَرَأَ أَوْ سَبَّحَ أَوْ كَبَّرَ أَوْ حَمِدَ أَوْ هَلَّلَ فَهُوَ عَلَى نِيَّتِهِ وَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((أَفْضَلُ الْكَلاَمِ أَرْبَعٌ: سُبْحَانَ اللهِ، وَالْحَمْدُ للهِ، وَلاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ، وَاللهُ أَكْبَرُ)) قَالَ أَبُو سُفْيَانَ: كَتَبَ النَّبِيُّ ﷺ إِلَى هِرَقْلَ: ((تَعَالَوْا إِلَى كَلِمَةٍ سَوَاءٍ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ))، وَقَالَ مُجَاهِدٌ: ((كَلِمَةَ التَّقْوَى لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ)).

बाब 19 : जब किसी ने कहा कि वल्लाह, मैं आज बात नहीं करूँगा

फिर उसने नमाज़ पढ़ी, क़ुर्आन मजीद की तिलावत की, तस्बीह की, हम्द या ला इलाहा इल्लल्लाह कहा तो उसका हुक्म उसकी निय्यत के मुवाफ़िक़ होगा। और नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि अफ़ज़ल कलाम चार हैं , सुब्हानल्लाह, अल्हम्दुलिल्लाह, ला इलाहा इल्लल्लाह, अल्लाहु अकबर। और अबू सुफ़यान ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने हिरक़्ल को लिखा था आ जाओ उस कलिमे की तरफ़ जो हमारे और तुम्हारे दरम्यान बराबर माना जाता है। मुजाहिद ने कहा कि, कलिमतुत्तक़्वा ला इलाहा इल्लल्लाह है।

तश्रीह : जुम्हूर का क़ौल है कि मुत्लक़न हानिष़ न होगा इसलिये कि बात करना उ़र्फ़ में उसको कहते हैं कि दुनिया की बात किसी आदमी से करे और क़ुर्आन में है कि ह़ज़रत मरयम (अ़लैहस्सलाम) ने रोज़ा रखा था कि मैं आज किसी से बात नहीं करूँगी बावजूद ये कि वो इ़बादत ही में मशग़ूल रहीं। गोया कलिमाते मज़्कूरा भी कलाम के हुक्म में आते हैं लेकिन उ़र्फ़े आ़म में उन पर कलाम का लफ़्ज़ नहीं बोला जाता। इसलिये अगर क़सम खाते वक़्त उनको भी शामिल रखने की निय्यत की हो तो उनके करने से भी क़सम टूट जाएगी वरना नहीं।

٦٦٨١- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: أَخْبَرَنِي سَعِيدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: لَمَّا حَضَرَتْ أَبَا طَالِبٍ الْوَفَاةُ جَاءَهُ رَسُولُ اللهِ ﷺ فَقَالَ: ((قُلْ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ كَلِمَةً أُحَاجُّ

6681. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको शुऐ़ब ने ख़बर दी, उनसे ज़ुह्री ने बयान किया, उन्हें सईद बिन मुसय्यब ने ख़बर दी, उनके वालिद (ह़ज़रत मुसय्यब रज़ि.) ने बयान किया कि जब जनाब अबू त़ालिब की मौत का वक़्त क़रीब हुआ तो रसूलुल्लाह (ﷺ) उनके पास आए और कहा कि आप कह दीजिए कि ला इलाहा इल्लल्लाह तो मैं आपके लिये अल्लाह के यहाँ झगड़ सकूँगा।

(राजेअ: 1360)

لَكَ بِهَا عِنْدَ اللهِ)). [راجع: ١٣٦٠]

ताकि अल्लाह आपको बख़्शा दे मगर अबू तालिब उसके लिये भी तैयार न हो सके उनका नाम अब्दे मुनाफ़ था और ये अब्दुल मुत्तलिब के बेटे और हज़रत अली (रज़ि.) के वालिद थे।

6682. हमसे क़ुतैबा बिन सअद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे मुहम्मद बिन फ़ुज़ैल ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अम्मारा बिन क़अक़ाअ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अबू ज़ुरआ ने बयान किया और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया दो कलिमे जो ज़ुबान पर हल्के हैं लेकिन तराज़ू पर (आख़िरत में) भारी हैं और अल्लाह रहमान के यहाँ पसंदीदा हैं वो ये हैं सुब्हानल्लाह व बिहम्दिही व सुब्हानल्लाहिल अज़ीम। (राजेअ: 6406)

٦٦٨٢- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ فُضَيْلٍ، حَدَّثَنَا عُمَارَةُ بْنُ الْقَعْقَاعِ، عَنْ أَبِي زُرْعَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((كَلِمَتَانِ خَفِيفَتَانِ عَلَى اللِّسَانِ ثَقِيلَتَانِ فِي الْمِيزَانِ، حَبِيبَتَانِ إِلَى الرَّحْمَنِ: سُبْحَانَ اللهِ وَبِحَمْدِهِ. سُبْحَانَ اللهِ الْعَظِيمِ)). [راجع: ٦٤٠٦]

इन कलिमात के मुँह पर लाने से क़सम नहीं टूटेगी। हज़रत इमाम का यहाँ ये हदीष लाने से यही मक़्सद है।

6683. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल वाहिद ने बयान किया, कहा हमसे आ'मश ने बयान किया, उनसे शक़ीक़ ने और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, और मैंने (इसी पर क़यास करते हुए) दूसरा कलिमा कहा (कि आँहज़रत ﷺ ने फ़र्माया कि) जो शख़्स इस हाल में मर जाएगा कि अल्लाह के साथ किसी को शरीक ठहराता होगा तो वो जहन्नम में जाएगा और मैंने दूसरी बात कही कि, जो शख़्स इस हाल में मर जाएगा कि अल्लाह के साथ किसी को शरीक न ठहराता होगा वो जन्नत में जाएगा। (राजेअ: 1238)

٦٦٨٣- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ، حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، عَنْ شَقِيقٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((كَلِمَةً)) وَقُلْتُ: أُخْرَى، ((مَنْ مَاتَ يَجْعَلُ للهِ نِدًّا أُدْخِلَ النَّارَ)) وَقُلْتُ أُخْرَى: ((مَنْ مَاتَ لاَ يَجْعَلُ للهِ نِدًّا أُدْخِلَ الْجَنَّةَ)). [راجع: ١٢٣٨]

मक़्सद ये है कि इन कलिमात से हानिष न होगा।

बाब 20 : जिसने क़सम खाई कि अपनी बीवी के पास एक महीने तक नहीं जाएगा और महीना 29 दिन का हुआ और वो अपनी औरत के पास गया तो वो हानिष न होगा

٢٠- باب مَنْ حَلَفَ أَنْ لاَ يَدْخُلَ عَلَى أَهْلِهِ شَهْرًا، وَكَانَ الشَّهْرُ تِسْعًا وَعِشْرِينَ

6684. हमसे अब्दुल अज़ीज़ बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुलैमान बिन बिलाल ने बयान किया, उनसे हुमैद ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अपनी बीवियों के साथ ईलाअ किया (या'नी क़सम

٦٦٨٤- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ بِلاَلٍ، عَنْ حُمَيْدٍ، عَنْ أَنَسٍ قَالَ: آلَى رَسُولُ اللهِ ﷺ مِنْ نِسَائِهِ

وَكَانَتِ انْفَكَّتْ رِجْلُهُ فَأَقَامَ فِي مَشْرُبَةٍ تِسْعًا وَعِشْرِينَ لَيْلَةً ثُمَّ نَزَلَ فَقَالُوا: يَا رَسُولَ اللهِ آلَيْتَ شَهْرًا فَقَالَ: ((إِنَّ الشَّهْرَ يَكُونُ تِسْعًا وَعِشْرِينَ)).

[راجع: ٣٧٨]

खाई कि आप उनके यहाँ एक महीना तक नहीं जाएँगे) और आँहज़रत (ﷺ) के पैर में मोच आ गई थी। चुनाँचे आँहज़रत (ﷺ) अपने बालाख़ाने में उन्तीस दिन तक क़याम पज़ीर रहे। फिर वहाँ से उतरे लोगों ने कहा कि या रसूलल्लाह! आपने ईलाअ एक महीने के लिये किया था? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि ये महीना उन्तीस दिन का है। (राजेअ : 378)

٢١- باب

إِنْ حَلَفَ أَنْ لاَ يَشْرَبَ نَبِيذًا فَشَرِبَ طِلاَءً أَوْ سَكَرًا أَوْ عَصِيرًا لَمْ يَحْنَثْ فِي قَوْلِ بَعْضِ النَّاسِ وَلَيْسَتْ هَذِهِ بِأَنْبِذَةٍ عِنْدَهُ

बाब 21 : अगर किसी ने क़सम खाई कि नबीज़ नहीं पियेगा फिर क़सम के बाद

उसने अंगूर का पका हुआ या मीठा पानी या कोई नशाआवर चीज़ या अंगूर से निचोड़ा हुआ पानी पिया तो कुछ लोगों के क़ौल के मुताबिक़ उसकी क़सम नहीं टूटेगी, क्योंकि ये चीज़ें उनकी राय में, नबीज़ नहीं हैं।

तश्रीह : नबीज़ खजूर के निचोड़े हुए पानी को कहते हैं। दीगर मज़्कूरा चीज़ें नबीज़ नहीं हैं इसलिये उसका क़सम खाना टूट न सकेगा मगर नशाआवर चीज़ का पीना क़त्अन इसलिये ह़राम है कि वो भी शराब में दाख़िल है। नबीज़ का भी यही हुक्म है जो नशाआवर होती है। अ़रब लोगों में नबीज़ के दो मा'नी हैं एक तो हर क़िस्म की शराब जिसमें नशा हो और दूसरी खजूर या अंगूर को पानी में भिगोकर उसका मीठा शरबत बनाना जिसमें नशा नहीं होता और जिसे तुलाअ कहते हैं। अंगूर के शीरे को जो पकाया जाए ह़नफ़िया कहते हैं जब एक तिहाई जल जाए अगर दो तिहाई जल जाए तो वो मुष़ल्लष़ है आधा जल जाए तो वो मुन्सफ़ है थोड़ा सा जले तो वो बाज़ोक़ या'नी बादा है। सकर कहते हैं अंगूर की शराब को। अ़सीर कहते हैं अंगूर या खजूर के शीरे को। ह़ाफ़िज़ ने कहा तुलाअ को इतना पकाएँ कि वो जम जाए तो उसको दबिस और रब कहते हैं उस वक़्त उसको नबीज़ नहीं कहेंगे। अगर पतला रहे तो अल्बत्ता नबीज़ कहेंगे उ़र्फ़ में। ख़ैर ये तो हुआ अब इमाम बुख़ारी (रह़.) का मतलब ये मा'लूम होता है कि ह़नफ़िया का क़ौल स़ह़ीह़ है। नबीज़ न पीने की क़सम खाए तो तुलाअ या सकर या अ़सीर पीने से ह़ानिष़ न होगा क्योंकि इन तीनों के अलग अलग नाम ज़ुबान अ़रब में हैं और नबीज़ या नक़ीअ़ तो उसी को कहते हैं जो खजूर या अंगूर को पानी में भिगो दें उसका शरबत लें और सहल और सौदा की ह़दीष़ से इस मतलब पर इस्तिदलाल किया क्योंकि सहल की ह़दीष़ में नक़ीअ़ से और सौदा की ह़दीष़ में नबीज़ से यही मुराद है इसलिये कि तुलाअ और सकर वग़ैरह तो ह़लाल नहीं हैं। आँह़ज़रत इनका इस्ते'माल कैसे फ़र्माते। मेर (मौलाना वह़ीदुज़्ज़माँ के) नज़दीक इमाम बुख़ारी (रह़.) का स़ह़ीह़ मतलब यही मा'लूम होता है कि उन्होंने ये अह़ादीष़ लाकर ह़नफ़िया के क़ौल की ताईद की है। इब्ने बत्ताल वग़ैरह कई ग़ैर शारेह़ीन ने ये कहा कि इमाम बुख़ारी (रह़.) को ह़नफ़िया का रद्द मंज़ूर है। ह़ाफ़िज़ ने इसकी तौजोह यूँ की कि सहल की ह़दीष़ से ये निकलता है कि जो खजूर या अंगूर अभी थोड़े अ़र्से से भिगोए जाएँ तो उसके पानी को नबीज़ कहते हैं गो उसका पीना दुरुस्त है और सौदा की ह़दीष़ से भी इसकी ताईद होती है मगर ये तौजोह मेरी (मौलाना वह़ीदुज़्ज़माँ) समझ में नहीं आती इसलिये कि सहल और सौदा की अह़ादीष़ में ये स़राह़त कहाँ है कि तुलाअ या सकर को भी नबीज़ कहते हैं। फिर ह़नफ़िया का रद्द क्यूँकर होगा। ह़ाफ़िज़ ने कहा अकष़र उ़लमा का क़ौल ये है कि ऐसी क़िस्म में जिस शराब को उ़र्फ़ में नबीज़ कहते हैं उसके पीने से क़सम टूट जाएगी अल्बत्ता अगर किसी ख़ास़ शराब की निय्यत करे तो उसकी निय्यत के मुवाफ़िक़ हुक्म होगा। (वह़ीदी)

٦٦٨٥- حَدَّثَنَا عَلِيٌّ سَمِعَ عَبْدَ الْعَزِيزِ بْنَ أَبِي حَازِمٍ، أَخْبَرَنِي أَبِي عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ، أَنَّ أَبَا أُسَيْدٍ صَاحِبَ النَّبِيِّ ﷺ

6685. मुझसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, उन्होंने अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अबी ह़ाज़िम से सुना, कहा मुझको मेरे वालिद ने ख़बर दी, उन्हें ह़ज़रत सहल बिन सअ़द (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) के स़ह़ाबी अबू उसैद (रज़ि.)

ने निकाह किया और आँहज़रत (ﷺ) को अपनी शादी के मौक़े पर बुलाया। दुल्हन ही उनकी मेज़बानी का काम कर रही थी। फिर हज़रत सहल (रज़ि.) ने लोगों से पूछा, तुम्हें मा'लूम है, मैंने आँहज़रत (ﷺ) को क्या पिलाया था? कहा कि रात में आँहज़रत (ﷺ) के लिये मैंने खजूर एक बड़े प्याले में भिगो दी थी और सुबह के वक़्त उसका पानी आँहज़रत (ﷺ) को पिलाया था। (राजेअ : 5176)

أَعْرَسَ فَدَعَا النَّبِيَّ ﷺ لِعُرْسِهِ فَكَانَتِ الْعَرُوسُ خَادِمَهُمْ فَقَالَ سَهْلٌ لِلْقَوْمِ : هَلْ تَدْرُونَ مَا سَقَتْهُ؟ قَالَ: أَنْقَعَتْ لَهُ تَمْرًا فِي تَوْرٍ مِنَ اللَّيْلِ حَتَّى أَصْبَحَ عَلَيْهِ فَسَقَتْهُ إِيَّاهُ. [راجع: ٥١٧٦]

बाब और हदीष़ में मुताबक़त ज़ाहिर है। हज़रत सहल बिन सअद साएदी वफ़ाते नबवी के वक़्त 15 साल के थे। 91 हिजरी में मदीना में वफ़ात पाई। मदीना में फ़ौत होने वाले ये आख़िरी सहाबी हैं।

6686. हमसे मुहम्मद बिन मुक़ातिल ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, कहा हमको इस्माईल बिन अबी ख़ालिद ने ख़बर दी, उन्हें शअ़बी ने, उन्हें इक्रिमा ने और उन्हें हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) की बीवी साहिबा हज़रत सौदा (रज़ि.) ने बयान किया कि उनकी एक बकरी मर गई तो उसके चमड़े को हमने दबाग़त दे दिया। फिर हम उसकी मश्क में नबीज़ बनाते रहे यहाँ तक कि वो पुरानी हो गई।

٦٦٨٦- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مُقَاتِلٍ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ، أَخْبَرَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ أَبِي خَالِدٍ، عَنِ الشَّعْبِيِّ، عَنْ عِكْرِمَةَ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنْ سَوْدَةَ زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَتْ: مَاتَتْ لَنَا شَاةٌ فَدَبَغْنَا مَسْكَهَا ثُمَّ مَا زِلْنَا نَنْبِذُ فِيهِ حَتَّى صَارَتْ شَنًّا.

बहरहाल नबीज़ का इस्ते'माल षाबित हुआ। हज़रत सौदा हज़रत ख़दीजा (रज़ि.) की वफ़ात के बाद आपके निकाह में आईं 54 हिजरी में वफ़ात हुई।

बाब 22 : जब किसी ने क़सम खाई कि सालन नहीं खाएगा

फिर उसने रोटी खजूर के साथ खाई या किसी और सालन के तौर पर इस्ते'माल हो सकने वाली चीज़ खाई (तो उसको सालन ही माना जाएगा)

٢٢- بَابُ إِذَا حَلَفَ أَنْ لاَ يَأْتَدِمَ فَأَكَلَ تَمْرًا بِخُبْزٍ، وَمَا يَكُونُ مِنَ الأُدْمِ

6687. हमसे मुहम्मद बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुर्रहमान बिन आ़बिस ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे हज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि आले मुहम्मद (ﷺ) कभी पे दर पे तीन दिन तक सालन के साथ गेहूँ की रोटी नहीं खा सके यहाँ तक कि आँहज़रत (ﷺ) अल्लाह से जा मिले और इब्ने कष़ीर ने बयान किया कि हमको सुफ़यान ने ख़बर दी कि हमसे अ़ब्दुर्रहमान ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने और उनसे हज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने यही हदीष़ बयान की। (राजेअ : 5423)

٦٦٨٧- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَابِسٍ عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: مَا شَبِعَ آلُ مُحَمَّدٍ ﷺ مِنْ خُبْزِ بُرٍّ مَأْدُومٍ ثَلاَثَةَ أَيَّامٍ حَتَّى لَحِقَ بِاللهِ. وَقَالَ ابْنُ كَثِيرٍ أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ عَنْ أَبِيهِ أَنَّهُ قَالَ لِعَائِشَةَ بِهَذَا. [راجع: ٥٤٢٣]

इस सनद के बयान करने से ये ग़र्ज़ है कि आ़बिस की मुलाक़ात हज़रत आ़इशा (रज़ि.) से षाबित हो जाए क्योंकि अगली

रिवायत अ़न अ़न के साथ है।

6688. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, उनसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे इस्हाक़ बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अबी त़लह़ा ने बयान किया, उन्होंने ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि ह़ज़रत अबू त़लह़ा (रज़ि.) ने (अपनी बीवी) उम्मे सुलैम (रज़ि.) से कहा कि मैं सुनकर आ रहा हूँ आँह़ज़रत (ﷺ) की आवाज़ (फ़ाक़ों की वजह से) कमज़ोर पड़ गई है और मैंने आवाज़ से आपके फ़ाक़ा का अंदाज़ा लगाया है, क्या तुम्हारे पास खाने की कोई चीज़ है? उन्होंने कहा कि हाँ। चुनाँचे उन्होंने जौ की चंद रोटियाँ निकालीं और एक ओढ़नी लेकर रोटी को उसके एक कोने से लपेट दिया और उसे आँह़ज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में भिजवाया। मैं लेकर गया तो मैंने देखा कि आँह़ज़रत (ﷺ) मस्जिद में तशरीफ़ रखते हैं और आपके साथ कुछ लोग हैं, मैं उनके पास जाकर खड़े हो गया तो आँह़ज़रत (ﷺ) ने पूछा, क्या तुम्हें अबू त़लह़ा ने भेजा है? मैंने अ़र्ज़ किया, जी हाँ। फिर आँह़ज़रत (ﷺ) ने उन लोगों से कहा जो साथ थे कि उठो और चलो, मैं उनके आगे आगे चल रहा था। आख़िर में ह़ज़रत अबू त़लह़ा (रज़ि.) के यहाँ पहुँचा और उनको ख़बर दी। अबू त़लह़ा ने कहा उम्मे सुलैम! जनाबे रसूलुल्लाह (ﷺ) तशरीफ़ लाए हैं और हमारे पास तो कोई ऐसा खाना नहीं है जो सबको पेश किया जा सके? उन्होंने कहा कि अल्लाह और उसके रसूल को ज़्यादा इल्म है। फिर ह़ज़रत अबू त़लह़ा (रज़ि.) बाहर निकले और आँह़ज़रत (ﷺ) से मिले, उसके बाद आँह़ज़रत (ﷺ) और अबू त़लह़ा घर की त़रफ़ बढ़े और अंदर गये। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, उम्मे सुलैम! जो कुछ तुम्हारे पास है मेरे पास लाओ। वो यही रोटियाँ लाईं। रावी ने बयान किया कि फिर आँह़ज़रत (ﷺ) के हुक्म से उन रोटियों को चूरा कर दिया गया और उम्मे सुलैम (रज़ि.) ने अपनी एक (घी की) कुप्पी को निचोड़ा गोया यही सालन था। उसके बाद आँह़ज़रत (ﷺ) ने जैसा कि अल्लाह ने चाहा दुआ पढ़ी और

٦٦٨٨- حدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، عَنْ مَالِكٍ، عَنْ إِسْحَاقَ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي طَلْحَةَ أَنَّهُ سَمِعَ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ قَالَ : قَالَ أَبُو طَلْحَةَ لأُمِّ سُلَيْمٍ لَقَدْ سَمِعْتُ صَوْتَ رَسُولِ اللهِ ﷺ ضَعِيفًا أَعْرِفُ فِيهِ الْجُوعَ، فَهَلْ عِنْدَكِ مِنْ شَيْءٍ؟ فَقَالَتْ : نَعَمْ. فَأَخْرَجَتْ أَقْرَاصًا مِنْ شَعِيرٍ، ثُمَّ أَخَذَتْ خِمَارًا لَهَا فَلَفَّتِ الْخُبْزَ بِبَعْضِهِ ثُمَّ أَرْسَلَتْنِي إِلَى رَسُولِ اللهِ ، فَذَهَبْتُ فَوَجَدْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ فِي الْمَسْجِدِ وَمَعَهُ النَّاسُ، فَقُمْتُ عَلَيْهِمْ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((أَأَرْسَلَكَ أَبُو طَلْحَةَ)) فَقُلْتُ: نَعَمْ. فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ، لِمَنْ مَعَهُ قُومُوا فَانطلقُوا وانطَلَقْتُ بَيْنَ أَيْدِيهِم حَتَّى جِئْتُ أَبَا طَلْحَةَ فَاخبرتُهُ فقال ابُوطلحة : يَا أُمَّ سُلَيْمٍ قَدْ جَاءَ رَسُولُ اللهِ ﷺ وليس عندنا مِنَ الطعام مَا نُطْعِمُهُمْ، فَقَالَتِ: اللهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ فَانطَلَقَ أَبُو طَلْحَةَ حَتَّى لَقِيَ رَسُولَ اللهِ ﷺ فَأَقْبَلَ رَسُولُ اللهِ ﷺ وَأَبُو طَلْحَةَ مَعَهُ حَتَّى دَخَلاَ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((هَلُمِّي يَا أُمَّ سُلَيْمٍ مَا عِنْدَكِ؟)) فَأَتَتْ بِذَلِكَ الْخُبْزِ قَالَ فَأَمَرَ رَسُولُ اللهِ ﷺ بِذَلِكَ الْخُبْزِ فَفُتَّ وَعَصَرَتْ أُمُّ سُلَيْمٍ عُكَّةً لَهَا فَأَدَمَتْهُ ثُمَّ قَالَ فِيهِ رَسُولُ اللهِ ﷺ مَا شَاءَ اللهُ أَنْ يَقُولَ ثُمَّ قَالَ: ((ائْذَنْ لِعَشَرَةٍ)) فَأَذِنَ لَهُمْ فَأَكَلُوا حَتَّى شَبِعُوا ثُمَّ خَرَجُوا

ثُمَّ قَالَ: ((ائْذَنْ لِعَشَرَةٍ)) فَأَذِنَ لَهُمْ فَأَكَلَ الْقَوْمُ كُلُّهُمْ وَشَبِعُوا وَالْقَوْمُ سَبْعُونَ أَوْ ثَمَانُونَ رَجُلاً.

फ़र्माया कि दस दस आदमियों को अंदर बुलाओ उन्हें बुलाया गया और इस त़रह़ सब लोगों ने खाया और ख़ूब सैर हो गये। हाज़िरीन की ता'दाद सत्तर या अस्सी आदमी की थी।

तश्रीह: घी को बत़ौरे सालन इस्ते'माल किया गया है यही बाब और ह़दीष़ में मुत़ाबक़त है जिसमें एक मुअजिज़-ए-नबवी का बयान है। ये भी मा'लूम हुआ कि बड़े लोगों को ख़ुद खाने से पहले अपने दीगर मुता'ल्लिक़ीन का भी फ़िक्र करना ज़रूरी है बल्कि उन सबको पहले खिलाना और बाद में ख़ुद खाना ताकि कोई भी भूखा न रह जाए। अल्लाह पाक आजकल के नामो-निहाद पीरों मुर्शिदों को नीज़ उलमा को सबको इन अख़्लाक़े ह़सना की तौफ़ीक़ बख़्शे, आमीन।

बाब 23 : क़समों में निय्यत का ए'तिबार होगा

٢٣- باب النِّيَّةِ فِي الأَيْمَانِ

जैसा कि ह़दीष़ इन्नमल आ'मालु बिन्नियात

6689. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अ़ब्दुल वह्हाब ने बयान किया, उन्होंने कहा मैंने यह्या बिन सईद से सुना, उन्होंने कहा कि मुझसे मुह़म्मद बिन इब्राहीम ने बयान किया, उन्होंने अ़ल्क़मा बिन वक़्क़ास़ लैष़ी से सुना, उन्होंने कहा कि मैंने ह़ज़रत उ़मर बिन ख़त़्त़ाब (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना कि बिला शुब्हा अ़मल का दारोमदार निय्यत पर है और इंसान को वही मिलेगा जिसकी वो निय्यत करेगा पस जिसकी हिजरत अल्लाह और उसके रसूल के लिये होगी तो वाक़ई वो उन्हीं के लिये होगी और जिसकी हिजरत दुनिया ह़ासिल करने के लिये या किसी औ़रत से शादी करने के लिये होगी तो उसकी हिजरत उसी के लिये होगी जिसके लिये उसने हिजरत की। (राजेअ़ : 1)

٦٦٨٩- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ، قَالَ: سَمِعْتُ يَحْيَى بْنَ سَعِيدٍ يَقُولُ: أَخْبَرَنِي مُحَمَّدُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ أَنَّهُ سَمِعَ عَلْقَمَةَ بْنَ وَقَّاصٍ اللَّيْثِيَّ يَقُولُ: سَمِعْتُ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُولُ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((إِنَّمَا الأَعْمَالُ بِالنِّيَّةِ، وَإِنَّمَا لامْرِىءٍ مَا نَوَى، فَمَنْ كَانَتْ هِجْرَتُهُ إِلَى اللهِ وَرَسُولِهِ فَهِجْرَتُهُ إِلَى اللهِ وَرَسُولِهِ، وَمَنْ كَانَتْ هِجْرَتُهُ إِلَى دُنْيَا يُصِيبُهَا أَوِ امْرَأَةٍ يَتَزَوَّجُهَا فَهِجْرَتُهُ إِلَى مَا هَاجَرَ إِلَيْهِ)).

[راجع: ١]

ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) का मंशा ये ष़ाबित करना है कि क़सम खाने पर उसकी पुख़्तगी या बरअक्स का फ़ैसला करना ख़ुद क़सम खाने वाले की सोच समझ पर मौक़ूफ़ है उसकी जैसी निय्यत होगी वही हुक्म लगाया जाएगा।

बाब 24 : जब कोई शख़्स़ अपना माल नज़्र या तौबा के त़ौर पर ख़ैरात कर दे

٢٤- باب إِذَا أَهْدَى مَالَهُ عَلَى وَجْهِ النَّذْرِ وَالتَّوْبَةِ

6690. हमसे अह़मद बिन स़ालेह़ ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने वहब ने बयान किया, कहा मुझको यूनुस ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने शिहाब ने, कहा मुझे अ़ब्दुर्रह़मान बिन अ़ब्दुल्लाह बिन कअ़ब बिन मालिक ने ख़बर दी, जब ह़ज़रत कअ़ब

٦٦٩٠- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ صَالِحٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي يُونُسُ، عَنِ ابْنِ

شِهَابٍ، أَخْبَرَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ كَعْبِ بْنِ مَالِكٍ وَكَانَ قَائِدَ كَعْبٍ مِنْ بَنِيهِ حِينَ عَمِيَ قَالَ: سَمِعْتُ كَعْبَ بْنَ مَالِكٍ فِي حَدِيثِهِ: ﴿وَعَلَى الثَّلَاثَةِ الَّذِينَ خُلِّفُوا﴾ [التوبة : ١١٨] فَقَالَ فِي آخِرِ حَدِيثِهِ : إِنَّ مِنْ تَوْبَتِي أَنْ أَنْخَلِعَ مِنْ مَالِي صَدَقَةً إِلَى اللهِ وَرَسُولِهِ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((أَمْسِكْ عَلَيْكَ بَعْضَ مَالِكَ فَهُوَ خَيْرٌ لَكَ)). [راجع: ٢٧٥٧]

(रज़ि.) नाबीना हो गये थे तो उनकी औलाद में एक यही कहीं आने जाने में उनके साथ रहते थे। उन्होंने बयान किया कि मैंने हज़रत कअ़ब बिन मालिक (रज़ि.) से उनके वाक़िया और आयत व अ़लष़्ष़लाष़तिल्लज़ीना ख़ुल्लिफ़ू के सिलसिले में सुना, उन्होंने अपनी ह़दीष़ के आख़िर में कहा कि (मैंने आँह़ज़रत ﷺ के सामने ये पेशकश की कि) अपनी तौबा की ख़ुशी मे मैं अपना माल अल्लाह और उसके रसूल के दीन की ख़िदमत में स़दक़ा कर दूँ। आँह़ज़रत (ﷺ) ने इस पर फ़र्माया कि अपना कुछ माल अपने पास ही रखो, ये तुम्हारे लिये बेहतर है। (राजेअ़ : 2757)

तश्रीह : आयते शरीफ़ा, **व अ़लष़्ष़लाष़तिल्लज़ीन ख़ुल्लिफ़ू अल्अख़** (सूरह तौबा : 118) में उन तीन स़ह़ाबियों का ज़िक्र है जो जंगे तबूक़ में पीछे रह गये थे और रसूले करीम (ﷺ) ने उनसे सख़्त बाज़पुर्स की थी वो तीन ह़ज़रत कअ़ब बिन मालिक और हिलाल बिन उमय्या और मुरारह बिन रबीअ़ हैं। पिछले दो ने तो मअ़ज़रत वग़ैरह करके छुटकारा ह़ासिल कर लिया था मगर ह़ज़रत कअ़ब बिन मालिक ने अपने क़ुसूर का ए'तिराफ़ किया और कोई मअ़ज़रत करना मुनासिब न जाना। आख़िर रसूले करीम (ﷺ) ने वह्ये इलाही के इंतिज़ार में उनसे बोलना वग़ैरह बंद कर दिया आख़िर बहुत काफ़ी दिनों बाद उनकी तौबा की कुबूलियत की बशारत मिली और उनको मुबारकबाद दी गई। अंसारी ख़ज़रजी हैं दूसरी बेअ़ते उ़क़्बा में ये शरीक थे, 77 साल की उ़म्र पाकर 50 हिजरी में जबकि बस़ारत चली गई थी उनका इंतिक़ाल हुआ। रज़ियल्लाहु अ़न्हु व अर्ज़ाहु (आमीन)।

٢٥- باب إِذَا حَرَّمَ طَعَامَهُ

बाब 25 : अगर कोई शख़्स अपना खाना अपने ऊपर ह़राम कर ले

وَقَوْلِهِ تَعَالَى: ﴿يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ لِمَ تُحَرِّمُ مَا أَحَلَّ اللهُ لَكَ تَبْتَغِي مَرْضَاةَ أَزْوَاجِكَ وَاللهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ قَدْ فَرَضَ اللهُ لَكُمْ تَحِلَّةَ أَيْمَانِكُمْ﴾ [التحريم : ٢،١] وَقَوْلُهُ ﴿لَا تُحَرِّمُوا طَيِّبَاتِ مَا أَحَلَّ اللهُ لَكُمْ﴾ [المائدة : ٧٨].

और अल्लाह तआ़ला ने सूरह तह़रीम में फ़र्माया ऐ नबी! आप क्यूँ उस चीज़ को ह़राम करते हैं जिसको अल्लाह ने आपके लिये ह़लाल की है, आप अपनी बीवियों की ख़ुशी चाहते हैं और अल्लाह बड़ा मग़्फ़िरत करने वाला बहुत रह़म करने वाला है। अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारे लिये अपनी क़समों को खोल डालना मुक़र्रर कर दिया है। और सूरह माइदह में फ़र्माया, ह़राम न करो उन पाकीज़ा चीज़ों को जो अल्लाह ने तुम्हारे लिये ह़लाल की हैं। (अल माइदह : 78)

ऐसे मौक़ों पर क़समों का तोड़ डालना ज़रूरी है मगर कफ़्फ़ारा अदा करना भी ज़रूरी है।

٦٦٩١- حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ مُحَمَّدٍ، حَدَّثَنَا الْحَجَّاجُ، عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ قَالَ: زَعَمَ عَطَاءٌ أَنَّهُ سَمِعَ عُبَيْدَ بْنَ عُمَيْرٍ يَقُولُ سَمِعْتُ عَائِشَةَ تَزْعُمُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ

6691. हमसे ह़सन बिन मुह़म्मद ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने जुरैज ने बयान किया कि अ़ता कहते थे कि उन्होंने उ़बैद बिन उ़मैर से सुना, कहा मैंने ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) से सुना, वो कहती थीं कि नबी करीम (ﷺ) (उम्मुल मोमिनीन) ह़ज़रत ज़ैनब बिन्ते जह़श (रज़ि.) के यहाँ रुकते थे और शहद पीते थे।

يَمْكُثُ عِنْدَ زَيْنَبَ بِنْتِ جَحْشٍ وَيَشْرَبُ عِنْدَهَا عَسَلاً، فَتَوَاصَيْتُ أَنَا وَحَفْصَةُ أَنْ أَيَّتَنَا دَخَلَ عَلَيْهَا النَّبِيُّ ﷺ فَلْتَقُلْ: إِنِّي أَجِدُ مِنْكَ رِيحَ مَغَافِيرَ، أَكَلْتَ مَغَافِيرَ؟ فَدَخَلَ عَلَى إِحْدَاهُمَا فَقَالَتْ: ذَلِكَ لَهُ، فَقَالَ : ((لاَ بَلْ شَرِبْتُ عَسَلاً عِنْدَ زَيْنَبَ بِنْتِ جَحْشٍ وَلَنْ أَعُودَ لَهُ)) فَنَزَلَتْ : ﴿يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ لِمَ تُحَرِّمُ مَا أَحَلَّ اللهُ لَكَ﴾ [التحريم:١] ﴿إِنْ تَتُوبَا إِلَى اللهِ﴾ [التحريم: ٤] لِعَائِشَةَ وَحَفْصَةَ ﴿وَإِذْ أَسَرَّ النَّبِيُّ إِلَى بَعْضِ أَزْوَاجِهِ حَدِيثًا﴾ [التحريم ٣] لِقَوْلِهِ : ((بَلْ شَرِبْتُ عَسَلاً)). وَقَالَ لِي إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى، عَنْ هِشَامٍ ((وَلَنْ أَعُودَ لَهُ وَقَدْ حَلَفْتُ فَلاَ تُخْبِرِي بِذَلِكَ أَحَدًا)). [راجع: ٤٩١٢]

फिर मैंने और (उम्मुल मोमिनीन) ह़फ़्सा (रज़ि.) ने अ़हद किया कि हममें से जिसके पास भी आँह़ज़रत (ﷺ) आएं तो वो कहे कि आँह़ज़रत (ﷺ) के मुँह से मग़ाफ़ीर की बू आती है, आपने मग़ाफ़ीर तो नहीं खाई है? चुनाँचे आँह़ज़रत (ﷺ) जब एक के यहाँ तशरीफ़ लाए तो उन्होंने यही बात आपसे पूछी। आपने फ़र्माया कि नहीं, बल्कि मैंने शहद पिया है ज़ैनब बिन्ते जह़श के यहाँ और अब कभी नहीं पिऊँगा (क्योंकि आँह़ज़रत (ﷺ)) को यक़ीन हो गया कि वाक़ई उसमें मग़ाफ़ीर की बू आती है) उस पर ये आयत नाज़िल हुई। ऐ नबी! आप ऐसी चीज़ क्यूँ ह़राम करते हैं जो अल्लाह ने आपके लिये ह़लाल की है, इन् ततूबा इलल्लाह) में आ़इशा और ह़फ़्सा (रज़ि.) की त़रफ़ इशारा है और वइज़ असर्रन्नबिय्यु इला बअ़ज़ि अज़्वाजिही ह़दीषा (अत्तह़रीम : 3) से इशारा आँह़ज़रत (ﷺ) के उस इर्शाद की त़रफ़ है कि, नहीं! मैंने शहद पिया है और मुझसे इब्राहीम बिन मूसा ने हिशाम से बयान किया कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया था कि अब कभी में शहद नहीं पिऊँगा मैंने क़सम खा ली है तुम उसकी किसी को ख़बर न करना (फिर आपने उस क़सम को तोड़ दिया)। (राजेअ़ :4912)

तश्रीह़ : ह़फ़्सा बिन्ते उ़मर (रज़ि.) के शौहर अव्वल हुज़ाफ़ह सहमी (रज़ि.) जंगे बद्र के बाद फ़ौत हो गये थे। 3 हिजरी में उनका निकाहे षानी रसूले करीम (ﷺ) से हुआ। बहुत ही नेक ख़ातून थीं। नमाज़ रोज़ा का बहुत एह्तिमाम करने वाली 45 हिजरी माहे शाबान में इंतिक़ाल हुआ। रज़ियल्लाहु अ़न्हा।

٢٦- باب الْوَفَاءِ بِالنَّذْرِ

وَقَوْلِهِ تَعَالَى: ﴿يُوفُونَ بِالنَّذْرِ﴾ [الإنسان : ٧].

बाब 26 : मन्नत, नज़्र पूरी करना वाजिब है और अल्लाह तआ़ला का सूरह दहर में इर्शाद वो जो अपनी मन्नत, नज़्र पूरी करते हैं

٦٦٩٢- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ صَالِحٍ، حَدَّثَنَا فُلَيْحُ بْنُ سُلَيْمَانَ، حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ الْحَارِثِ أَنَّهُ سَمِعَ ابْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا يَقُولُ : أَوَ لَمْ يُنْهَوْا عَنِ النَّذْرِ؟ إِنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: ((إِنَّ النَّذْرَ لاَ يُقَدِّمُ شَيْئًا وَلاَ يُؤَخِّرُ، وَإِنَّمَا يُسْتَخْرَجُ بِالنَّذْرِ مِنَ

6692. हमसे यह़्या बिन स़ालेह़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे फ़ुलैह़ बिन सुलैमान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सईद बिन अल ह़ारिष ने बयान किया, उन्होंने ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) से सुना, उन्होंने कहा, क्या लोगों को नज़्र से मना नहीं किया गया है? नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि नज़्र किसी चीज़ को न आगे कर सकती है न पीछे, अल्बत्ता उसके ज़रिये बख़ील का माल निकाला जा सकता है।

(राजेअ़ : 6608)

6693. हमसे ख़ल्लाद बिन यह्या ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे मंसूर ने, उन्होंने कहा हमको अ़ब्दुल्लाह बिन मुर्रह ने ख़बर दी, और उन्हें अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने नज़्र से मना फ़र्माया था और फ़र्माया था कि वो किसी चीज़ को वापस नहीं कर सकती। अल्बत्ता उसके ज़रिये बख़ील का माल निकाला जा सकता है। (राजेअ़ : 6608)

6694. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको शुऐ़ब ने ख़बर दी, कहा हमसे अबुज़्ज़िनाद ने बयान किया, उनसे अअ़रज ने बयान किया, और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया नज़्र इंसान को कोई ऐसी चीज़ नहीं देती जो उसके मुक़द्दर में न हो, अल्बत्ता अल्लाह तआ़ला उसके ज़रिये बख़ील से उसका माल निकलवाता है और इस त़रह वो चीज़ें स़दक़ा कर देता है जिसकी उससे पहले उसकी उम्मीद नहीं की जा सकती थी। (राजेअ़ : 6609)

الْبَخِيلِ)). [راجع: ٦٦٠٨]

٦٦٩٣- حَدَّثَنَا خَلاَّدُ بْنُ يَحْيَى، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ مَنْصُورٍ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُرَّةَ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ: نَهَى النَّبِيُّ ﷺ عَنِ النَّذْرِ وَقَالَ: ((إِنَّهُ لاَ يَرُدُّ شَيْئًا وَلَكِنَّهُ يُسْتَخْرَجُ بِهِ مِنَ الْبَخِيلِ)).

[راجع: ٦٦٠٨]

٦٦٩٤- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، حَدَّثَنَا أَبُو الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لاَ يَأْتِي ابْنَ آدَمَ النَّذْرُ بِشَيْءٍ لَمْ يَكُنْ قُدِّرَ لَهُ، وَلَكِنْ يُلْقِيهِ النَّذْرُ إِلَى الْقَدَرِ قَدْ قُدِّرَ لَهُ فَيَسْتَخْرِجُ اللهُ بِهِ مِنَ الْبَخِيلِ فَيُؤْتِي عَلَيْهِ مَا لَمْ يَكُنْ يُؤْتِي عَلَيْهِ مِنْ قَبْلُ)).

[راجع: ٦٦٠٩]

बाब 27 : उस शख़्स़ का गुनाह जो नज़्र पूरी न करे

٢٧- باب إِثْمِ مَنْ لاَ يَفِي بِالنَّذْرِ

6695. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, उनसे यह्या ने, उनसे शुअ़बा ने बयान किया, कहा मुझसे अबू ह़म्ज़ा ने बयान किया, कहा हमसे ज़ह्दम बिन मुज़र्रिब ने बयान किया, कहा कि मैंने इमरान बिन हुस़ैन से सुना, वो नबी करीम (ﷺ) से बयान करते थे कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया तुममें सबसे बेहतर मेरा ज़माना है, उसके बाद उनका जो उसके क़रीब होंगे। उसके बाद वो जो उससे क़रीब होंगे। इमरान ने बयान किया कि मुझे याद नहीं आँह़ज़रत (ﷺ) ने अपने ज़माने के बाद दो का ज़िक्र किया या तीन का (फ़र्माया कि) फिर एक ऐसी क़ौम आएगी जो नज़्र मानेगी और उसे पूरा नहीं करेगी, ख़यानत करेगी और उन पर ए'तिमाद नहीं रहेगा। वो गवाही देने के लिये तैयार रहेंगे जबकि उनसे गवाही के लिये कहा भी नहीं जाएगा और उनमें मोटापा

٦٦٩٥- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، عَنْ يَحْيَى، عَنْ شُعْبَةَ، قَالَ حَدَّثَنِي أَبُو جَمْرَةَ، حَدَّثَنَا زَهْدَمُ بْنُ مُضَرِّبٍ قَالَ : سَمِعْتُ عِمْرَانَ بْنَ حُصَيْنٍ، يُحَدِّثُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((خَيْرُكُمْ قَرْنِي ثُمَّ الَّذِينَ يَلُونَهُمْ، ثُمَّ الَّذِينَ يَلُونَهُمْ)) قَالَ عِمْرَانُ: لاَ أَدْرِي ذَكَرَ ثِنْتَيْنِ أَوْ ثَلاَثًا بَعْدَ قَرْنِهِ : ((ثُمَّ يَجِيءُ قَوْمٌ يَنْذُرُونَ وَلاَ يَفُونَ، وَيَخُونُونَ وَلاَ يُؤْتَمَنُونَ، وَيَشْهَدُونَ وَلاَ يُسْتَشْهَدُونَ، وَيَظْهَرُ فِيهِمُ السِّمَنُ)).

आम हो जाएगा। (राजेअ : 2651)

[راجع: ٢٦٥١]

बाब 28 : उसी नज़्र को पूरा करना लाज़िम है

٢٨- باب النَّذْرِ فِي الطَّاعَةِ

जो इबादत और इताअत के काम के लिये की जाए न कि गुनाह के लिये और अल्लाह ने फ़र्माया जो तुम अल्लाह की राह में ख़र्च करो या शैतान की राह में, अल्लाह को इसकी ख़बर है इसी तरह जो नज़्र तुम मानो आख़िर आयत तक (अल बक़रः : 270)

﴿وَمَا أَنْفَقْتُمْ مِنْ نَفَقَةٍ أَوْ نَذَرْتُمْ مِنْ نَذْرٍ فَإِنَّ اللهَ يَعْلَمُهُ وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ أَنْصَارٍ﴾ [البقرة : ٢٧٠].

6696. हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, कहा हमसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे तलहा बिन अब्दुल मलिक ने, उनसे क़ासिम ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, जिसने इसकी नज़्र मानी हो कि अल्लाह की इताअत करेगा तो उसे इताअत करनी चाहिये लेकिन जिसने अल्लाह की मअसियत की नज़्र मानी हो उसे न करनी चाहिये। (दीगर मक़ाम : 6700)

٦٦٩٦- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ، حَدَّثَنَا مَالِكٌ، عَنْ طَلْحَةَ بْنِ عَبْدِ الْمَلِكِ، عَنِ الْقَاسِمِ، عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((مَنْ نَذَرَ أَنْ يُطِيعَ اللهَ فَلْيُطِعْهُ وَمَنْ نَذَرَ أَنْ يَعْصِيَهُ فَلاَ يَعْصِهِ)).

[طرفه في : ٦٧٠٠].

बाब 29 : जब किसी ने जाहिलियत में (इस्लाम लाने से पहले) किसी शख़्स से बात न करने की नज़्र मानी हो या क़सम खाई हो फिर इस्लाम लाया हो?

٢٩- باب إِذَا نَذَرَ أَوْ حَلَفَ أَنْ لاَ يُكَلِّمَ إِنْسَانًا فِي الْجَاهِلِيَّةِ ثُمَّ أَسْلَمَ

6697. हमसे अबुल हसन मुहम्मद बिन मुक़ातिल ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको अब्दुल्लाह ने ख़बर दी, उन्होंने कहा हमको उबैदुल्लाह बिन उमर ने ख़बर दी, उन्हें नाफ़ेअ ने, उन्हें हज़रत इब्ने उमर (रज़ि.) ने कि हज़रत उमर (रज़ि.) ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह! मैंने जाहिलियत में नज़्र मानी थी कि मस्जिदे हराम में एक रात का ए'तिकाफ़ करूँगा ? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अपनी नज़्र पूरी कर। (राजेअ : 2032)

٦٦٩٧- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مُقَاتِلٍ أَبُو الْحَسَنِ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ، أَخْبَرَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ عُمَرَ، عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ أَنَّ عُمَرَ قَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ إِنِّي نَذَرْتُ فِي الْجَاهِلِيَّةِ أَنْ أَعْتَكِفَ لَيْلَةً فِي الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ قَالَ : ((أَوْفِ بِنَذْرِكَ)). [راجع: ٢٠٣٢]

बाब 30 : जो मर गया और उस पर कोई नज़्र बाक़ी रह गई

٣٠- باب مَنْ مَاتَ وَعَلَيْهِ نَذْرٌ

इब्ने उमर (रज़ि.) ने एक औरत से, जिसकी माँ ने क़ुबा में नमाज़ पढ़ने की नज़्र मानी थी, कहा कि उसकी तरफ़ से तुम पढ़ लो। हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने भी यही कहा था।

وَأَمَرَ ابْنُ عُمَرَ امْرَأَةً جَعَلَتْ أُمُّهَا عَلَى نَفْسِهَا صَلاَةً بِقُبَاءٍ فَقَالَ: صَلِّي عَنْهَا، وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ نَحْوَهُ.

तश्रीह : नसाई ने इब्ने अब्बास (रज़ि.) से यूँ निकाला कि कोई किसी की तरफ़ से नमाज़ न पढ़े न रोज़े रखे। अब इन दोनों क़ौलों में यूँ तत्बीक़ दी गई है कि ज़िन्दा, ज़िन्दा की तरफ़ से नमाज़ रोज़ा नही कर सकता मुर्दा की तरफ़ से कर सकता है। (वहीदी)

6698. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उनसे ज़ुह्री ने, उन्हें उबैदुल्लाह बिन अब्दुल्लाह ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने ख़बर दी, उन्हें सअद बिन उबादह (रज़ि.) ने ख़बर दी कि उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से एक नज़्र के बारे में पूछा जो उनकी वालिदा के ज़िम्मे बाक़ी थी और उनकी मौत नज़्र पूरी करने से पहले हो गई थी। आँहज़रत (ﷺ) ने उन्हें फ़त्वा उसका दिया कि नज़्र वो अपनी माँ की तरफ़ से पूरी कर दें। चुनाँचे बाद में यही तरीक़-ए-मस्नूना क़रार पाया। (राजेअ : 2761)

٦٦٩٨- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: أَخْبَرَنِي عُبَيْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ اللهِ أَنَّ عَبْدَ اللهِ بْنَ عَبَّاسٍ أَخْبَرَهُ أَنَّ سَعْدَ بْنَ عُبَادَةَ الأَنْصَارِيَّ اسْتَفْتَى النَّبِيَّ ﷺ فِي نَذْرٍ كَانَ عَلَى أُمِّهِ فَتُوُفِّيَتْ قَبْلَ أَنْ تَقْضِيَهُ، فَأَفْتَاهُ أَنْ يَقْضِيَهُ عَنْهَا فَكَانَتْ سُنَّةً بَعْدُ.[راجع: ٢٧٦١]

6699. हमसे आदम ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे अबू बिश्र ने, कहा कि मैंने सईद बिन जुबैर से सुना, उनसे हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि एक साहब रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में आए और अर्ज़ किया कि मेरी बहन ने नज़्र मानी थी कि हज्ज करेंगी लेकिन अब उनका इंतिक़ाल हो चुका है? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया अगर उन पर कोई क़र्ज़ होता तो क्या तुम उसे अदा करते? उन्होंने अर्ज़ की, ज़रूर अदा करते। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया फिर अल्लाह का क़र्ज़ भी अदा करो क्योंकि वो उसका ज़्यादा मुस्तहिक़ है कि उसका क़र्ज़ पूरा अदा किया जाए। (राजेअ : 1852)

٦٦٩٩- حَدَّثَنَا آدَمُ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ أَبِي بِشْرٍ قَالَ : سَمِعْتُ سَعِيدَ بْنَ جُبَيْرٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: أَتَى رَجُلٌ النَّبِيَّ ﷺ فَقَالَ لَهُ: إِنَّ أُخْتِي نَذَرَتْ أَنْ تَحُجَّ، وَإِنَّهَا مَاتَتْ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لَوْ كَانَ عَلَيْهَا دَيْنٌ أَكُنْتَ قَاضِيَهُ؟)) قَالَ نَعَمْ. قَالَ ((فَاقْضِ اللهَ فَهُوَ أَحَقُّ بِالْقَضَاءِ)). [راجع: ١٨٥٢]

बाब 31 : ऐसी चीज़ की नज़्र जो उसकी मिल्कियत में नहीं है और या गुनाह की

٣١- باب النَّذْرِ فِيمَا لاَ يَمْلِكُ وَفِي مَعْصِيَةٍ

तश्रीह : हज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) ने इस बाब में जो अह़ादीष़ बयान की हैं। उनसे बाब का तर्जुमा का जुज़ ष़ानी या'नी गुनाह की नज़्र का हुक्म मफ़्हूम होता है मगर जुज़ अव्वल या'नी नज़्र फ़ीमा ला यम्लिकु का हुक्म नहीं निकलता उसका जवाब यूँ हो सकता है कि नज़्र मअ़सियत का हुक्म निकलने से नज़्र फ़ीमा ला यम्लिकु का भी हुक्म निकल आया क्यों कि दूसरे की मुल्क में तसर्रुफ़ करना भी मअ़सियत में दाख़िल है।

6700. हमसे अबू आसिम ने बयान किया, उनसे इमाम मालिक ने, उनसे तलहा बिन अब्दुल मलिक ने, उनसे क़ासिम ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जिसने अल्लाह की इताअत की नज़्र मानी हो उसे चाहिये कि इताअत करे और जिसने गुनाह करने की नज़्र मानी हो पस वो गुनाह न करे। (राजेअ : 6696)

٦٧٠٠- حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ، عَنْ مَالِكٍ، عَنْ طَلْحَةَ بْنِ عَبْدِ الْمَلِكِ، عَنِ الْقَاسِمِ، عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((مَنْ نَذَرَ أَنْ يُطِيعَ اللهَ فَلْيُطِعْهُ، وَمَنْ نَذَرَ أَنْ يَعْصِيَهُ فَلاَ يَعْصِهِ)).

[راجع: ٦٦٩٦]

बल्कि ऐसी नज़्र पूरी न करे वफ़ादारी का यही तक़ाज़ा है।

6701. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या ने बयान किया, उनसे हुमैद ने, उनसे षाबित ने और उनसे हज़रत अनस (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया अल्लाह तआला इससे बेपरवाह है कि ये शख़्स अपनी जान को अ़ज़ाब में डाले। आँहज़रत (ﷺ) ने उसे देखा कि वो अपने दो बेटों के बीच चल रहा था और फ़राज़ी ने बयान किया, उनसे हुमैद ने, उनसे षाबित ने बयान किया और उनसे हज़रत अनस (रज़ि.) ने। (राजेअ़ : 1865)

٦٧٠١- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا يَحْيَى، عَنْ حُمَيْدٍ، عَنْ ثَابِتٍ، عَنْ أَنَسٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((إِنَّ اللهَ لَغَنِيٌّ عَنْ تَعْذِيبِ هَذَا نَفْسَهُ)). وَرَآهُ يَمْشِي بَيْنَ ابْنَيْهِ. وَقَالَ الْفَزَارِيُّ: عَنْ حُمَيْدٍ حَدَّثَنِي ثَابِتٌ عَنْ أَنَسٍ.
[راجع: ١٨٦٥]

ऐसी नाजाइज़ नज़्र मानना जो हद्दे-एतिदाल से बाहर हो उसे तोड़ देने का हुक्म है उस शख़्स के पैर फ़ालिजज़दा थे और उसने हज्ज करने के लिये अपने दो बच्चों के कँधों के सहारे चलकर हज्ज करने की नज़्र मानी थी आप (ﷺ) ने उसे इस तरह चलने से मना फ़र्मा दिया।

6702. हमसे अबू आ़सिम ने बयान किया, उनसे इब्ने जुरैज ने, उनसे सुलैमान अह्वल ने, उनसे ताउस ने, उनसे हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने एक शख़्स को देखा कि वो का'बा का तवाफ़ लगाम या उसके सिवा किसी और चीज़ के ज़रिये कर रहा था तो आँहज़रत (ﷺ) ने उसे काट दिया। (राजेअ़ : 1620)

٦٧٠٢- حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ، عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ، عَنْ سُلَيْمَانَ الأَحْوَلِ، عَنْ طَاوُسٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ. أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ رَأَى رَجُلاً يَطُوفُ بِالْكَعْبَةِ بِزِمَامٍ أَوْ غَيْرِهِ فَقَطَعَهُ.
[راجع: ١٦٢٠]

6703. हमसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमको हिशाम ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने जुरैज ने ख़बर दी, कहा कि मुझे सुलैमान अह्वल ने ख़बर दी, उन्हें ताउस ने ख़बर दी और उन्हें हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) गुज़रे तो का'बा का एक शख़्स इस तरह तवाफ़ कर रहा था कि दूसरा शख़्स उसकी नाक में रस्सी बाँधकर उसके आगे से उसकी रहनुमाई कर रहा था। आँहज़रत (ﷺ) ने वो रस्सी अपने हाथ से काट दी, फिर हुक्म दिया कि हाथ से उसकी रहनुमाई करे। (राजेअ़ : 1620)

٦٧٠٣- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى، أَخْبَرَنَا هِشَامٌ، أَنَّ ابْنَ جُرَيْجٍ أَخْبَرَهُمْ قَالَ أَخْبَرَنِي سُلَيْمَانُ الأَحْوَلُ أَنَّ طَاوُسًا أَخْبَرَهُ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ مَرَّ وَهُوَ يَطُوفُ بِالْكَعْبَةِ بِإِنْسَانٍ يَقُودُ إِنْسَانًا بِخِزَامَةٍ فِي أَنْفِهِ فَقَطَعَهَا النَّبِيُّ ﷺ بِيَدِهِ ثُمَّ أَمَرَهُ أَنْ يَقُودَهُ بِيَدِهِ.
[راجع: ١٦٢٠]

ग़ालिबन वो शख़्स नाबीना बूढ़ा रहा होगा। ये तकलीफ़ मा ला युताक़ (ताक़त के बाहर) है जो किसी तरह भी मुनासिब नहीं है।

6704. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे वुहैब ने, कहा हमसे अय्यूब ने, उनसे इक्रिमा ने और उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ख़ुत्बा दे रहे थे कि एक शख़्स को खड़े देखा। आँहज़रत (ﷺ) ने उसके बारे में पूछा तो लोगों ने बताया कि ये अबू इस्राईल नामी हैं। उन्होंने नज़्र मानी है कि खड़े ही रहेंगे, बैठेंगे नहीं, न

٦٧٠٤- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ، حَدَّثَنَا أَيُّوبُ، عَنْ عِكْرِمَةَ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ بَيْنَا النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَخْطُبُ إِذَا هُوَ بِرَجُلٍ قَائِمٍ فَسَأَلَ عَنْهُ فَقَالُوا: أَبُو إِسْرَائِيلَ نَذَرَ أَنْ

يَقُومَ وَلاَ يَقْعُدَ وَلاَ يَسْتَظِلَّ وَلاَ يَتَكَلَّمَ وَيَصُومَ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((مُرْهُ فَلْيَتَكَلَّمْ وَلْيَسْتَظِلَّ وَلْيَقْعُدْ وَلْيُتِمَّ صَوْمَهُ)). قَالَ عَبْدُ الْوَهَّابِ : حَدَّثَنَا أَيُّوبُ : عَنْ عِكْرِمَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ.

किसी चीज़ के साये में बैठेंगे और न किसी से बातचीत करेंगे और रोज़ा रखेंगे। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि उनसे कहो कि बात करें, साये के नीचे बैठें उठें और अपना रोज़ा पूरा कर लें। अ़ब्दुल वह्हाब ने बयान किया कि हमसे अय्यूब ने बयान किया, उनसे इक्रिमा ने और उनसे नबी करीम (ﷺ) ने।

आँहज़रत (ﷺ) ने उस शख़्स की उन ग़लत क़समों को तुड़वा दिया।

٣٢- باب مَنْ نَذَرَ أَنْ يَصُومَ أَيَّامًا فَوَافَقَ النَّحْرَ أَوِ الْفِطْرَ

बाब 32 : जिसने कुछ ख़ास़ दिनों में रोज़ा रखने की नज़्र मानी हो फिर इत्तिफ़ाक़ से उन दिनों में बक़र ईद या ईद हो गई तो उस दिन रोज़ा न रखे। (जुम्हूर का यही क़ौल है)

٦٧٠٥- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ أَبِي بَكْرٍ الْمُقَدَّمِيُّ، حَدَّثَنَا فُضَيْلُ بْنُ سُلَيْمَانَ، حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ عُقْبَةَ، حَدَّثَنَا حَكِيمُ بْنُ أَبِي حُرَّةَ الأَسْلَمِيُّ أَنَّهُ سَمِعَ عَبْدَ اللهِ بْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا سُئِلَ عَنْ رَجُلٍ نَذَرَ أَنْ لاَ يَأْتِيَ عَلَيْهِ يَوْمٌ إِلاَّ صَامَ فَوَافَقَ يَوْمَ أَضْحَى أَوْ فِطْرٍ فَقَالَ : ﴿لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِي رَسُولِ اللهِ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ﴾ لَمْ يَكُنْ يَصُومُ يَوْمَ الأَضْحَى وَالْفِطْرِ، وَلاَ يَرَى صِيَامَهُمَا. [راجع: ١٩٩٤]

6705. हमसे मुहम्मद बिन अबूबक्र मुक़द्दमी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे फ़ुज़ैल बिन सुलैमान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे मूसा बिन उ़क़्बा ने बयान किया, कहा हमसे ह़कीम बिन अबी हुर्रह असलमी ने बयान किया, उन्होंने अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) से सुना, उनसे ऐसे शख़्स के बारे में पूछा गया जिसने नज़्र मानी हो कि कुछ मख़्सूस़ दिनों में रोज़े रखेगा। फिर इत्तिफ़ाक़ से उन्हीं दिनों में बक़र ईद या ईद के दिन पड़ गये हों? ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने कहा कि तुम्हारे लिये रसूलुल्लाह (ﷺ) की ज़िंदगी बेहतरीन नमूना है। आँहज़रत (ﷺ) बक़र ईद और ईद के दिन रोज़े नहीं रखते थे और न उन दिनों में रोज़े को जाइज़ समझते थे।

(राजेअ़ : 1994)

٦٧٠٦- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْلَمَةَ، حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ، عَنْ يُونُسَ، عَنْ زِيَادِ بْنِ جُبَيْرٍ قَالَ : كُنْتُ مَعَ ابْنِ عُمَرَ فَسَأَلَهُ رَجُلٌ فَقَالَ: نَذَرْتُ أَنْ أَصُومَ كُلَّ يَوْمِ ثُلاَثَاءَ، أَوْ أَرْبِعَاءَ مَا عِشْتُ فَوَافَقْتُ هَذَا الْيَوْمَ يَوْمَ النَّحْرِ فَقَالَ: أَمَرَ اللهُ بِوَفَاءِ

6706. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मस्लमा ने बयान किया, कहा हमसे यज़ीद बिन ज़ुरैअ़ ने बयान किया, उनसे यूनुस ने, उनसे ज़ियाद बिन जुबैर ने बयान किया कि मैं ह़ज़रत इब्ने उ़मर (रज़ि.) के साथ था एक शख़्स ने उनसे पूछा कि मैंने नज़्र मानी है कि हर मंगल या बुध के दिन रोज़ा रखूँगा। इत्तिफ़ाक़ से उसी दिन की बक़र ईद पड़ गई है? ह़ज़रत इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने कहा कि अल्लाह तआ़ला नज़्र पूरी करने का हुक्म दिया है

النّذرِ، وَنُهينَا أَنْ نَصُومَ يَوْمَ النَّحرِ فَأَعَادَ عَلَيْهِ فَقَالَ مِثْلَهُ، لاَ يَزِيدُ عَلَيْهِ.د

[راجع: ١٩٩٤]

और हमें बक़र ईद के दिन रोज़ा रखने की मुमानअत की गई है उस शख़्स ने दोबारा अपना सवाल दोहराया तो आपने फिर उससे सिर्फ़ इतनी ही बात कही उस पर कोई ज़्यादती नहीं की। (राजेअ : 1994)

बेहतरीन दलील पेश की कि सच्चे मुसलमानों के लिये उस्व-ए-नबवी से बढ़कर और कोई दलील नहीं हो सकती।

٣٣- باب هَلْ يَدْخُلُ فِي الأَيْمَانِ وَالنُّذُورِ الأَرْضُ وَالْغَنَمُ وَالزُّرُوعُ وَالأَمْتِعَةُ؟

बाब 33 : क्या क़समों और नज़्रों में ज़मीन, बकरियाँ, खेती और सामान भी आते हैं?

وَقَالَ ابْنُ عُمَرَ: قَالَ عُمَرُ لِلنَّبِيِّ ﷺ: أَصَبْتُ أَرْضًا لَمْ أُصِبْ مَالاً قَطُّ، أَنْفَسَ مِنْهُ؟ قَالَ: ((إِنْ شِئْتَ حَبَسْتَ أَصْلَهَا وَتَصَدَّقْتَ بِهَا)) وَقَالَ أَبُو طَلْحَةَ لِلنَّبِيِّ ﷺ: أَحَبُّ أَمْوَالِي إِلَيَّ بَيْرُحَاءَ لِحَائِطٍ لَهُ مُسْتَقْبِلَةَ الْمَسْجِدِ.

हज़रत उमर (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से कहा कि मुझे ऐसी ज़मीन मिल गई है कि कभी इससे उम्दह माल नहीं मिला था। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अगर चाहो तो असल ज़मीन अपने पास रखो और उसकी पैदावार सदक़ा कर दो। हज़रत अबू तलहा (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से अर्ज़ की, बीरे हाअ नामी बाग़ मुझे अपने तमाम अम्वाल में सबसे ज़्यादा पसंदीदा है। ये मस्जिदे नबवी के सामने एक बाग़ था।

हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने इसी को तरजीह दी है कि दाख़िल होंगे हज़रत अबू तलहा ने बाग़ को माल कहा।

٦٧٠٧- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، قَالَ حَدَّثَنِي مَالِكٌ، عَنْ ثَوْرِ بْنِ زَيْدٍ الدِّيلِيِّ، عَنْ أَبِي الْغَيْثِ مَوْلَى ابْنِ مُطِيعٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: خَرَجْنَا مَعَ رَسُولِ اللهِ ﷺ يَوْمَ خَيْبَرَ، فَلَمْ نَغْنَمْ ذَهَبًا وَلاَ فِضَّةً إِلاَّ الأَمْوَالَ وَالثِّيَابَ وَالْمَتَاعَ، فَأَهْدَى رَجُلٌ مِنْ بَنِي الضُّبَيْبِ يُقَالُ لَهُ : رِفَاعَةُ بْنُ زَيْدٍ لِرَسُولِ اللهِ ﷺ غُلاَمًا يُقَالُ لَهُ : مِدْعَمٌ، فَوَجَّهَ رَسُولُ اللهِ ﷺ إِلَى وَادِي الْقُرَى، حَتَّى إِذَا كَانَ بِوَادِي الْقُرَى بَيْنَمَا مِدْعَمٌ يَحُطُّ رَحْلاً لِرَسُولِ اللهِ ﷺ إِذَا سَهْمٌ عَائِرٌ فَقَتَلَهُ، فَقَالَ النَّاسُ : هَنِيئًا لَهُ الْجَنَّةُ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((كَلاَّ وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ إِنَّ الشَّمْلَةَ الَّتِي أَخَذَهَا يَوْمَ خَيْبَرَ مِنَ

6707. हमसे इस्माईल ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे ष़ौर बिन ज़ैद दैली ने बयान किया, उनसे इब्ने मुतीअ के ग़ुलाम अबुल ग़ैष़ ने बयान किया, उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि हम नबी करीम (ﷺ) के साथ ख़ैबर की लड़ाई के लिये निकले। उस लड़ाई में हमें सोना चाँदी ग़नीमत में नहीं मिला था बल्कि दूसरे अम्वाल, कपड़े और सामान मिला था। फिर बनी ख़ुबैब के एक शख़्स रफ़ाआ बिन ज़ैद नामी ने आँहज़रत (ﷺ) को एक ग़ुलाम हदिया में दिया ग़ुलाम का नाम मिदअम था। फिर आँहज़रत (ﷺ) वादी-ए-क़ुरा की तरफ़ मुतवज्जह हुए और जब आप वादियुल क़ुरा में पहुँच गये तो मिदअम को जबकि वो आँहज़रत (ﷺ) का कजावा दुरुस्त कर रहा था। एक अंजान तीर आकर लगा और उसकी मौत हो गई। लोगों ने कहा कि जन्नत उसे मुबारक हो, लेकिन आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि हर्गिज़ नहीं, उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है वो कम्बल जो उसने तक़्सीम से पहले ख़ैबर के माले ग़नीमत में से चुरा लिया था, वो उस पर आग का अंगारा बनकर भड़क रहा है। जब लोगों ने ये बात सुनी तो एक शख़्स चप्पल का तस्मा या दो तस्मे लेकर आँहज़रत (ﷺ) की

الْمَغَانِمِ لَمْ تُصِبْهَا الْمَقَاسِمُ، لَتَشْتَعِلُ عَلَيْهِ نَارًا)) فَلَمَّا سَمِعَ ذَلِكَ النَّاسُ جَاءَ رَجُلٌ بِشِرَاكٍ أَوْ شِرَاكَيْنِ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: ((شِرَاكٌ مِنْ نَارٍ أَوْ شِرَاكَانِ مِنْ نَارٍ)).

[راجع: ٤٢٣٤]

ख़िदमत में ह़ाज़िर हुआ, आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, कि ये आग का तस्मा है या तस्मे आग के हैं। (राजेअ़ : 4234)

रिवायत में ऊँट बकरियों वग़ैरह़ को भी लफ़्ज़े सामान अम्वाल से ता'बीर किया गया है इसी से बाब का मत़लब निकला और ये भी निकला कि ख़यानत और चोरी ऐसे गुनाह हैं जिनकी मुजाहिद के लिये भी बख़्शिश नहीं है।

84. किताब कफ़्फ़ारतुल अयमान

किताब क़समों के कफ़्फ़ारा के बयान में

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

तश्रीह : लफ़्ज़ ऐमान के बारे में ह़ाफ़िज़ स़ाह़ब लिखते हैं, **अल अयमानु बिफ़त्ह़ि हम्ज़ति जम्इ यमीन व अस्लुल यमीनि फ़िल्लुग़ति अल्यदुल युमना व उत़्लिक़त अलल ह़ल्फ़ि लिअन्नहुम कानू इज़ा तह़ालफ़ू अख़ज़ कुल्लुन बियमीनि स़ाहिबिही** या'नी लफ़्ज़े यमीन लुग़त में दाएं हाथ को कहते हैं और इस लफ़्ज़ का इत़्लाक़ क़सम पर होता है। इसलिये कि अहले अ़रब जब किसी मामले में बाहमी ह़लफ़िया मुआहिदा करते तो हर शख़्स़ अपने साथ का दायाँ हाथ पकड़ता और क़सम खाकर वा'दा पुख़्ता करता। इसलिये यमीन का लफ़्ज़ क़सम पर इस्ते'माल होने लगा। ये भी कहा गया है कि चूँकि दायाँ हाथ त़ाक़त के लिह़ाज़ से जिसे पकड़े उसकी ह़िफ़ाज़त की शान रखना है पस क़सम का लफ़्ज़ भी यमीन पर बोला जाने लगा, इसलिये कि उससे जिस चीज़ पर क़सम खाई जाए वो चीज़ फिर मह़फ़ूज़ हो जाती है। लफ़्ज़े कफ़्फ़ारा के ज़ैल ह़ाफ़िज़ स़ाह़ब फ़र्माते हैं, **व सुम्मियत कफ़्फ़ारतुन लिअन्नहा तक्फ़िरूज़म्ब अय तस्तिरूहू व मिन्हु क़ील लिज़्ज़ारिइ काफ़िरुन लिअन्नहू युग़ित़्तल बिज़्र व अस़्लुल कुफ़्रि व अस्सतरु युक़ालु कफ़रतिश्शम्सु सतरत्हा व युसम्मस्सहाबुल्लज़ी यस्तिरुश्शम्स काफ़िर लिअन्नहू यस्तिरुल अश्याअ अ़निल उ़यूनि व तक्फ़ुरूर्रजुलि बिस्सलाहि इज़ा तुस्तर बिही** (फ़त्ह़) कफ़्फ़ारा गुनाहों पर पर्दा डाल देता है। काश्तकार को काफ़िर इसलिये बोला जाता है कि वो बीज को ज़मीन में छुप देता है। लफ़्ज़ कुफ़्र दरअस़ल पर्दा करने को, छुपा देने को कहते हैं। जैसे कहा जाता है कि सूरज ने तारों को छुपा दिया और बादल जो सूरज को छुपा देता है इस पर भी लफ़्ज़ काफ़िर बोला जाता है और रात को भी काफ़िर कहते हैं क्योंकि वो आँखों से हर चीज़ पर पर्दा डाल देती है और आदमी जब हथियारों से ढाँक दिया जाता है तो उस पर भी लफ़्ज़ काफ़िर बोला जाता है। ख़ुलास़ा ये कि कफ़्फ़ारा उन अ़मलों पर बोला जाता है जिनके करने से गुनाहों पर माफ़ी का पर्दा पड़ जाता है। (फ़त्ह़)

बाब 1 : और सूरह माइदह में अल्लाह तआला का फ़र्मान

١- باب قَوْلِ اللهِ تَعَالَى : ﴿فَكَفَّارَتُهُ إِطْعَامُ عَشَرَةِ مَسَاكِينَ﴾ [المائدة: ٨٩] وَمَا أَمَرَ النَّبِيُّ ﷺ حِينَ نَزَلَتْ: ﴿فَفِدْيَةٌ مِنْ صِيَامٍ أَوْ صَدَقَةٍ أَوْ نُسُكٍ﴾ [البقرة : ١٩٦] وَيُذْكَرُ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ وَعَطَاءٍ وَعِكْرِمَةَ، مَا كَانَ فِي الْقُرْآنِ أَوْ أَوْ فَصَاحِبُهُ بِالْخِيَارِ وَقَدْ خَيَّرَ النَّبِيُّ ﷺ كَعْبًا فِي الْفِدْيَةِ.

पस क़सम का कफ़्फ़ारा दस मिस्कीनों को खाना खिलाना है, और ये कि जब ये आयत नाज़िल हुई तो नबी करीम (ﷺ) ने हुक्म दिया कि फिर रोज़े या सदक़ा या क़ुर्बानी का फ़िदया देना है और इब्ने अब्बास (रज़ि.) और अता और इक्रिमा से मन्क़ूल है कि क़ुर्आन मजीद में जहाँ अव, अव (बमा'नी या) का लफ़्ज़ आता है तो उसमें इख़्तियार बताना मक़्सूद होता है और नबी करीम (ﷺ) ने कअब (रज़ि.) को फिदया के मामला में इख़्तियार दिया था (कि मिस्कीनों को खाना खिलाएँ या एक बकरे का सदक़ा करें)।

٦٧٠٨- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ، حَدَّثَنَا أَبُو شِهَابٍ، عَنِ ابْنِ عَوْنٍ، عَنْ مُجَاهِدٍ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي لَيْلَى، عَنْ كَعْبِ بْنِ عُجْرَةَ قَالَ: أَتَيْتُهُ، يَعْنِي النَّبِيَّ ﷺ فَقَالَ: ((ادْنُ)) فَدَنَوْتُ فَقَالَ: ((أَيُؤْذِيكَ هَوَامُّكَ؟)) قُلْتُ : نَعَمْ، قَالَ: ﴿فِدْيَةٌ مِنْ صِيَامٍ أَوْ صَدَقَةٍ أَوْ نُسُكٍ﴾ [البقرة: ١٩٦]. وَأَخْبَرَنِي ابْنُ عَوْنٍ عَنْ أَيُّوبَ قَالَ: الصِّيَامُ ثَلاَثَةُ أَيَّامٍ وَالنُّسُكُ شَاةٌ، وَالْمَسَاكِينُ سِتَّةٌ. [راجع: ١٨١٤]

6708. हमसे अहमद बिन यूनुस ने बयान किया, कहा हमसे अबू शिहाब अब्दुल्लाह बिन नाफ़ेअ ने बयान किया, उनसे इब्ने औन ने, उनसे मुजाहिद ने, उनसे अब्दुर्रहमान बिन अबी लैला ने, उनसे कअब बिन उज्रह (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि क़रीब हो जा, मैं क़रीब हुआ तो आपने पूछा क्या तुम्हारे सर के कपड़े तकलीफ़ दे रहे हैं? मैंने अर्ज़ किया, जी हाँ! आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया। फिर रोज़े सदक़ा या क़ुर्बानी का फ़िदया दे दे। और मुझे इब्ने औन ने ख़बर दी, उनसे अय्यूब ने बयान किया कि रोज़े तीन दिन के होंगे और क़ुर्बानी एक बकरी की और (खाने के लिये) छः मिस्कीन होंगे। (राजेअ : 1814)

तश्रीह : कअब बिन उज्रह की हदीष़ हज्ज के फ़िदये के बारे में है उसको क़सम के फ़िदये से कोई ता'ल्लुक़ न था मगर इमाम बुख़ारी (रह.) इस बाब में उसको इसलिये लाए कि जैसे हज्ज के फ़िदये में इख़्तियार है तीनों में से जो चाहे वो करे ऐसे ही क़सम के कफ़्फ़ारा में भी क़सम खाने वाले को इख़्तियार है कि तीनों कफ़्फ़ारों में से जो क़ुर्आन में मज़्कूर हैं जो कफ़्फ़ारा चाहे अदा करे।

बाब 2 : सूरह तहरीम में अल्लाह तआला का फ़र्मान, और अल्लाह तआला ने तुम्हारी क़समों का कफ़्फ़ारा मुक़र्रर किया हुआ है और अल्लाह तआला तुम्हारा कारसाज़ है और वो बड़ा जानने वाला बड़ी हिक्मत वाला है. और मालदार और मुहताज पर कफ़्फ़ारा कब वाजिब होता है?

٢- باب قَوْلِهِ تَعَالَى : ﴿قَدْ فَرَضَ اللهُ لَكُمْ تَحِلَّةَ أَيْمَانِكُمْ وَاللهُ مَوْلاَكُمْ وَهُوَ الْعَلِيمُ الْحَكِيمُ﴾ [التحريم: ٢] مَتَى تَجِبُ الْكَفَّارَةُ عَلَى الْغَنِيِّ وَالْفَقِيرِ؟

जो ह़दीष़ इमाम बुख़ारी (रह़.) ने इस बाब में बयान की है वो रमज़ान के कफ़्फ़ारे के बयान में है मगर क़सम के कफ़्फ़ारे को इसी पर क़यास किया है।

6709. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे ह़ज़रत सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, उनसे ज़ुह्‌री ने बयान किया, कहा कि मैंने उनकी ज़ुबान से सुना वो हुमैद बिन अ़ब्दुर्रह़मान से बयान करते थे, उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि एक शख़्स़ नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुआ और अ़र्ज़ किया, मैं तो तबाह हो गया। आँह़ज़रत (ﷺ) ने पूछा, क्या बात है? अ़र्ज़ किया कि मैंने रमज़ान में अपनी बीवी से हमबिस्तरी कर ली। आँह़ज़रत (ﷺ) ने पूछा, क्या तुम एक ग़ुलाम आज़ाद कर सकते हो? उन्होंने कहा कि नहीं। आँह़ज़रत (ﷺ) ने पूछा, क्या दो महीने लगातार रोज़े रख सकता है। उन्होंने अ़र्ज़ किया कि नहीं। आँह़ज़रत (ﷺ) ने पूछा, क्या साठ मिस्कीनों को खाना खिला सकता है? उन्होंने कहा कि नहीं। उस पर आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि बैठ जा। वो स़ाह़ब बैठ गया। फिर आँह़ज़रत (ﷺ) के पास एक टोकरा लाया गया जिसमें खजूरें थीं (अ़र्क़ एक बड़ा पैमाना है) आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि ले जा और इसे पूरा स़दक़ा कर दे। उन्होंने पूछा, क्या अपने से ज़्यादा मोह्‌ताज पर (स़दक़ा कर दूँ?) उस पर आँह़ज़रत (ﷺ) हंस दिये और आपके सामने के दांत दिखाई देने लगे और फिर आपने फ़र्माया कि अपने बच्चों ही को खिला देना। (राजेअ़: 1936)

٦٧٠٩- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ : سَمِعْتُهُ مِنْ فِيهِ، عَنْ حُمَيْدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ : هَلَكْتُ قَالَ ﷺ: ((مَا شَأْنُكَ؟)) قَالَ : وَقَعْتُ عَلَى امْرَأَتِي فِي رَمَضَانَ قَالَ ((تَسْتَطِيعُ تُعْتِقُ رَقَبَةً؟)) قَالَ : لاَ، قَالَ: ((فَهَلْ تَسْتَطِيعُ أَنْ تَصُومَ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ؟)) قَالَ: لاَ. قَالَ: ((فَهَلْ تَسْتَطِيعُ أَنْ تُطْعِمَ سِتِّينَ مِسْكِينًا؟)) قَالَ : لاَ. قَالَ ((اجْلِسْ)) فَجَلَسَ فَأُتِيَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِعَرَقٍ فِيهِ تَمْرٌ، وَالْعَرَقُ: الْمِكْتَلُ الضَّخْمُ قَالَ : ((خُذْ هَذَا فَتَصَدَّقْ بِهِ)) قَالَ: أَعَلَى أَفْقَرَ مِنَّا؟ فَضَحِكَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَتَّى بَدَتْ نَوَاجِذُهُ قَالَ : ((أَطْعِمْهُ عِيَالَكَ)).

[راجع: ١٩٣٦]

बाब 3 : जिसने कफ़्फ़ारा के अदा करने के लिये किसी तंगदस्त की मदद की

٣- باب مَنْ أَعَانَ الْمُعْسِرَ فِي الْكَفَّارَةِ

उसको बहुत ही ज़्यादा ष़वाब मिलेगा।

6710. हमसे मुह़म्मद बिन मह़बूब बस़री ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल वाह़िद बिन ज़ियाद ने बयान किया, कहा हमसे मअ़मर बिन राशिद ने, उनसे ज़ुह्‌री ने, उनसे हुमैद बिन अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि एक स़ाह़ब रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ की, मैं तो तबाह हो गया। आँह़ज़रत

٦٧١٠- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مَحْبُوبٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ، حَدَّثَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ حُمَيْدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ فَقَالَ: هَلَكْتُ فَقَالَ: ((مَا ذَاكَ؟))

(ﷺ) ने पूछा क्या बात है? उन्होंने कहा कि रमज़ान में अपनी बीवी से सुहबत कर ली। आँहज़रत (ﷺ) ने पूछा कोई गुलाम है? उन्होंने कहा कि नहीं। पूछा, लगातार रोज़े रख सकते हो? उन्होंने कहा कि नहीं। पूछा, साठ मिस्कीनों को खाना खिला सकते हो? उन्होंने कहा कि नहीं। रावी ने बयान किया कि फिर एक अंसारी सहाबी अ़र्क़ ले कर हाजिर हुए, अ़र्क़ एक पैमाना है, उसमें खजूरें थीं, आँहज़रत (ﷺ)ने फ़र्माया कि इसे ले जा और सदक़ा कर दे। उन्होंने पूछा या रसूलल्लाह! क्या मैं अपने से ज़्यादा जरूरतमंद पर सदक़ा करूँ। उस ज़ात की क़सम जिसने आपको हक़ के साथ भेजा है। इन दोनों मैदानों के बीच कोई घराना हमसे ज़्यादा मोहताज नहीं है फिर आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि जा और अपने घरवालों ही को खिला दे। (राजेअ : 1936)

قَالَ: وَقَعْتُ بِأَهْلِي فِي رَمَضَانَ قَالَ: ((تَجِدُ رَقَبَةً؟)) قَالَ: لاَ. قَالَ: ((هَلْ تَسْتَطِيعُ أَنْ تَصُومَ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ؟)) قَالَ: لاَ. قَالَ: ((فَهَلْ تَسْتَطِيعُ أَنْ تُطْعِمَ سِتِّينَ مِسْكِينًا؟)). قَالَ: لاَ. قَالَ: فَجَاءَ رَجُلٌ مِنَ الأَنْصَارِ بِعَرَقٍ، وَالْعَرَقُ: الْمِكْتَلُ فِيهِ تَمْرٌ فَقَالَ: ((اذْهَبْ بِهَذَا فَتَصَدَّقْ بِهِ)) قَالَ: عَلَى أَحْوَجَ مِنَّا يَا رَسُولَ اللهِ؟ وَالَّذِي بَعَثَكَ بِالْحَقِّ مَا بَيْنَ لاَبَتَيْهَا أَهْلُ بَيْتٍ أَحْوَجَ مِنَّا، ثُمَّ قَالَ: ((اذْهَبْ فَأَطْعِمْهُ أَهْلَكَ)).

[راجع: ١٩٣٦]

तश्रीह : इस ह़दीष़ को लाकर ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) ने ये षाबित किया कि कफ़्फ़ारा हर शख़्स़ पर वाजिब है गो वो मोह्ताज ही क्यूँ न हो। ये शख़्स़ बहुत मुह्ताज था मगर आँह़ज़रत (ﷺ) ने ये नहीं फ़र्माया कि तुझको कफ़्फ़ारा माफ़ है बल्कि कफ़्फ़ारा देने में उसकी मदद फ़र्माई। अ़र्क़ वो टोकरा जिसमें पन्द्रह स़ाअ़ खजूर समा जाती हैं।

बाब 4 : कफ़्फ़ारा में दस मिस्कीनों को खाना दिया जाए ख़्वाह वो क़रीब के रिश्तेदार हों या दूर के बल्कि क़रीब वालों को खिलाने में षवाब और भी ज़्यादा है

٤- باب يُعْطِي فِي الْكَفَّارَةِ عَشَرَةَ مَسَاكِينَ قَرِيبًا كَانَ أَوْ بَعِيدًا

6711. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मस्लमा ने बयान किया, कहा हमसे ह़ज़रत सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, उनसे ज़ुह्री ने, उनसे हुमैद बिन अ़ब्दुर्रहमान ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि एक स़ाहब नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ किया कि मैं तो तबाह हो गया। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, क्या बात है? कहा कि मैंने रमज़ान में अपनी बीवी से सुह़बत कर ली है। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया क्या तुम्हारे पास कोई गुलाम है जिसे आज़ाद कर सको? उन्होंने कहा नहीं। दरयाफ़्त फ़र्माया, क्या लगातार दो महीने तुम रोज़े रख सकते हो? कहा कि नहीं, पूछा क्या साठ मिस्कीनों को खाना खिला सकते हो? अ़र्ज़ किया कि उसके

٦٧١١- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْلَمَةَ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ حُمَيْدٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ : جَاءَ رَجُلٌ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: هَلَكْتُ قَالَ: ((وَمَا شَأْنُكَ؟)) قَالَ : وَقَعْتُ عَلَى امْرَأَتِي فِي رَمَضَانَ قَالَ ((هَلْ تَجِدُ مَا تُعْتِقُ رَقَبَةً؟)) قَالَ : لاَ. قَالَ ((فَهَلْ تَسْتَطِيعُ أَنْ تَصُومَ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ؟))

قَالَ: لاَ. قَالَ: ((فَهَلْ تَسْتَطِيعُ أَنْ تُطْعِمَ سِتِّينَ مِسْكِينًا؟)) قَالَ : لاَ أَجِدُ فَأُتِيَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِعَرَقٍ فِيهِ تَمْرٌ فَقَالَ: ((خُذْ هَذَا فَتَصَدَّقْ بِهِ)) فَقَالَ : أَعَلَى أَفْقَرَ مِنَّا؟ مَا بَيْنَ لاَبَتَيْهَا أَفْقَرُ مِنَّا، ثُمَّ قَالَ : ((خُذْهُ فَأَطْعِمْهُ أَهْلَكَ)).

[راجع: ١٩٣٦]

लिये भी मेरे पास कुछ नहीं है। उसके बाद आँहज़रत (ﷺ) के पास एक टोकरा लाया गया जिसमें खजूरें थीं। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया इसे ले जा और सदक़ा कर। उन्होंने पूछा कि अपने से ज़्यादा मोह्ताज पर? इन दोनों मैदानों के बीच हमसे ज़्यादा मोह्ताज कोई नहीं है। आख़िर आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अच्छा इसे ले जा और अपने घरवालों को खिला दे। (राजेअ: 1936)

घरवालों में दूर और नज़दीक के सब रिश्तेदार आ गये गो ये ह़दीष़ रमज़ान के कफ़्फ़ारा के बाब में है मगर क़सम के कफ़्फ़ारे को भी इसी पर क़यास किया।

٥- باب صَاعِ الْمَدِينَةِ وَمُدِّ النَّبِيِّ ﷺ وَبَرَكَتِهِ وَمَا تَوَارَثَ أَهْلُ الْمَدِينَةِ مِنْ ذَلِكَ قَرْنًا بَعْدَ قَرْنٍ

बाब 5 : मदीना मुनव्वरह का स़ाअ़ (एक पैमाना) और नबी करीम (ﷺ) का मुद्द (एक पैमाना) और उसम बरकत, और बाद में भी अहले मदीना को नस्लन बाद नस्ल जो स़ाअ़ और मुद्द वरषे में मिला उसका बयान

तशरीह : मदीना वालों का मुद्द एक रत़ल और तिहाई रत़ल था और यही आँहज़रत (ﷺ) का मुद्द भी था और स़ाअ़ चार मुद्द का था या'नी पाँच रत़ल और एक तिहाई रत़ल का था। हर रत़ल एक सौ अठ्ठाइस दिरम और 4/7. एक का स़ाअ़ के छः सौ पचासी और 57 दिरम हुए। तमाम अहले ह़दीष़ सलफ़ और ख़लफ़ का स़ाअ़ और मुद्द में उसी पर अ़मल रहा है क्योंकि शरीअ़त सारी मदीनतुल मुनव्वरह से जारी हुई और मदीना में जो रिवाज था उसी पर सब अह़्काम लिये जाएँगे। लेकिन ह़ज़रत इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह़.) ने स़ाअ़ आठ रत़ल और मुद्द दो रत़ल का रखा है। कूफ़ा वालों में इसी का रिवाज था मगर हमको कूफ़ा वालों से क्या ग़र्ज़, हमारे रसूले पाक (ﷺ) मदनी थे हमको मदीना वालों का चाल चालन पसंद है और उसी का हमको इत्तिबाअ़ करना है। ह़ज़रत इमाम अबू यूसुफ़ जो ह़ज़रत इमाम ह़नीफ़ा (रह़.) के शागिर्द थे उनसे हारून रशीद के सामने इमाम मालिक ने स़ाअ़ और मुद्द के बारे में बह़ष़ की, आख़िर में ह़ज़रत इमाम अबू यूसुफ़ ने अहले कूफ़ा का क़ौल तर्क करके मदीना वालों का क़ौल इख़्तियार किया। इंस़ाफ़ पसंदी इसी का नाम है। इमाम मुह़म्मद जो ह़ज़रत इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह़.) के दूसरे शागिर्द हैं। उन्होंने भी किताबुल ह़ज्ज में ह़ज़रत इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह़.) के बहुत से अक़्वाल छोड़कर अहले मदीना के साथ इत्तिफ़ाक़ किया है जगह जगह लिखते हैं, **क़ौलु अहलिल मदीनति फ़ी ज़ालिक अह़ब्बु इलय्य मिन क़ौलि अबी ह़नीफ़त** सच्चे ह़नफ़ी ये ह़ज़रात थे जो ह़ज़रत इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह़.) की हिदायत के मुवाफ़िक़ चलते थे उनका यही इर्शाद है कि क़ुर्आन व ह़दीष़ स़ह़ीह़ की पैरवी करो और मेरा जो क़ौल ह़दीष़ स़ह़ीह़ के ख़िलाफ़ पाओ उसे छोड़ दो। अगर हमारे मुअ़ज़्ज़ ह़नफ़ी ह़ज़रात आज भी ह़ज़रत इमाम की उस पाकीज़ा हिदायत पर अ़मल पैरा हो जाएँ तो सारे झगड़े ख़त्म होकर मुसलमानों में आपसी इत्तिफ़ाक़ हो सकता है। अल्लाह तौफ़ीक़ बख़्शे, आमीन।

साइब ने जिस वक़्त ये ह़दीष़ बयान की उस वक़्त मुद्द चार रत़ल का था उस पर एक तिहाई और बढ़ाई जाए तो पाँच रत़ल और एक तिहाई रत़ल हुआ। आँहज़रत (ﷺ) का स़ाअ़ इतना ही था। मा'लूम नहीं कि ह़ज़रत उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ के ज़माने में स़ाअ़ कितना बढ़ गया था। बाद के ज़मानों में बनी उमय्या ने मुद्द की मिक़्दार बढ़ा दी एक मुद्द दो रत़ल का हो गया और स़ाअ़ आठ रत़ल का। कूफ़ियों ने नबी (ﷺ) का स़ाअ़ छोड़कर बनू उमय्या की पैरवी की उनमें वही स़ाअ़ आज तक मुरव्वज (प्रचलित) है मगर ये स़ाअ़े मस्नूना नहीं है। **दुऊ कुल्ल फ़िअलिन इन्द फ़िअलि मुह़म्मद (ﷺ)।**

6712. हमसे उ़स्मान बिन अबी शैबा ने बयान किया, कहा हमसे क़ासिम बिन मालिक मुज़नी ने बयान किया, कहा हमसे जुऐ़द बिन अ़ब्दुर्रह़मान ने बयान किया, उनसे ह़ज़रत साइब बिन यज़ीद (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) के ज़माने में एक स़ाअ़ तुम्हारे ज़माने के मुद्द से एक मुद्द और तिहाई के बराबर होता था। बाद में ह़ज़रत उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ के ज़माने में उसमें ज़्यादती की गई। (राजेअ़ : 1859)

٦٧١٢- حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا الْقَاسِمُ بْنُ مَالِكٍ الْمُزَنِيُّ، حَدَّثَنَا الْجُعَيْدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنِ السَّائِبِ بْنِ يَزِيدَ قَالَ: كَانَ الصَّاعُ عَلَى عَهْدِ النَّبِيِّ ﷺ مُدًّا وَثُلُثًا بِمُدِّكُمُ الْيَوْمَ، فَزِيدَ فِيهِ زَمَنَ عُمَرَ بْنِ عَبْدِ الْعَزِيزِ .[راجع: ١٨٥٩]

मगर रसूलुल्लाह (ﷺ) के ज़माने का स़ाअ़ ही लिया जाएगा

6713. हमसे मुंज़िर बिन वलीद जारूदी ने बयान किया, कहा हमसे अबू क़ुतैबा सल्म शुऐ़री ने बयान किया, कहा हमसे इमाम मालिक ने, उनसे नाफ़ेअ़ ने बयान किया कि इब्ने उ़मर (रज़ि.) रमज़ान का फ़ित्रा न नबी करीम (ﷺ) ही के पहले मुद्द के वज़न से देते थे और क़सम का कफ़्फ़ारा भी आँह़ज़रत (ﷺ) के मुद्द से ही देते थे। अबू क़ुतैबा ने इसी सनद से बयान किया कि हमसे इमाम मालिक ने बयान किया कि हमारे मुद्द तुम्हारे मुद्द से बड़ा है और हमारे नज़दीक तरजीह़ स़िर्फ़ आँह़ज़रत (ﷺ) ही के मुद्द को है। और मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया कि अगर ऐसा कोई ह़ाकिम आया जो आँह़ज़रत (ﷺ) के मुद्द से छोटा मुद्द मुक़र्रर कर दे तो तुम किस हिसाब से (स़दक़ा फ़ित्र वग़ैरह) निकालोगे? मैंने अ़र्ज़ किया कि ऐसी स़ूरत में हम आँह़ज़रत (ﷺ) ही के मुद्द के ह़िसाब से फ़ित्रा निकाला करेंगे? उन्होंने कहा कि क्या तुम देखते नहीं कि मामला हमेशा आँह़ज़रत (ﷺ) ही के मुद्द की त़रफ़ लौटता है?

٦٧١٣- حَدَّثَنَا مُنْذِرُ بْنُ الْوَلِيدِ الْجَارُودِيُّ، حَدَّثَنَا أَبُو قُتَيْبَةَ وَهْوَ سَلْمٌ، حَدَّثَنَا مَالِكٌ عَنْ نَافِعٍ قَالَ: كَانَ ابْنُ عُمَرَ يُعْطِي زَكَاةَ رَمَضَانَ بِمُدِّ النَّبِيِّ ﷺ الْمُدِّ الأَوَّلِ وَفِي كَفَّارَةِ الْيَمِينِ بِمُدِّ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ أَبُو قُتَيْبَةَ: قَالَ لَنَا مَالِكٌ : مُدُّنَا أَعْظَمُ مِنْ مُدِّكُمْ، وَلاَ نَرَى الْفَضْلَ إِلاَّ فِي مُدِّ النَّبِيِّ ﷺ وَقَالَ لِي مَالِكٌ : لَوْ جَاءَكُمْ أَمِيرٌ فَضَرَبَ مُدًّا أَصْغَرَ مِنْ مُدِّ النَّبِيِّ ﷺ بِأَيِّ شَيْءٍ كُنْتُمْ تُعْطُونَ؟ قُلْتُ: كُنَّا نُعْطِي بِمُدِّ النَّبِيِّ ﷺ، قَالَ: أَفَلاَ تَرَى أَنَّ الأَمْرَ إِنَّمَا يَعُودُ إِلَى مُدِّ النَّبِيِّ ﷺ؟.

इसीलिये कूफ़ी मुद्द और स़ाअ़ नाक़ाबिले ए'तिबार हैं।

6714. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमें इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें इस्हाक़ बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अबी त़लह़ा ने और उनसे ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, ऐ अल्लाह! इनके कील (पैमाने) में इनके स़ाअ़ और इनके मुद्द में बरकत अ़ता फ़र्मा। (राजेअ़ : 2130)

٦٧١٤- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ، أَخْبَرَنَا مَالِكٌ، عَنْ إِسْحَاقَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي طَلْحَةَ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((اللَّهُمَّ بَارِكْ لَهُمْ فِي مِكْيَالِهِمْ وَصَاعِهِمْ وَمُدِّهِمْ)). [راجع: ٢١٣٠]

बाब 6 : सूरह माइदह में अल्लाह तआ़ला का इर्शाद,

٦- باب قَوْلِ اللَّهِ تَعَالَى: ﴿أَوْ

या'नी क़सम क कफ़्फ़ारा में एक गुलाम की आज़ादी, और किस तरह के गुलाम की आज़ादी अफ़ज़ल है

﴿تَحْرِيرُ رَقَبَةٍ﴾ [المائدة : ٨٩] وَأَيُّ الرِّقَابِ أَزْكَى؟

तश्रीह : क़सम के कफ़्फ़ारे में अल्लाह पाक ने ये क़ैद नहीं लगाई कि बुर्दा मोमिन हो जैसे क़त्ल के कफ़्फ़ारे में लगाई है तो हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा (रह़.) ने मोमिन काफ़िर हर तरह का बुर्दा कफ़्फ़ारे में आज़ाद करना दुरुस्त रखा है, हज़रत इमाम शाफ़िई (रह़.) कहते हैं कि हर कफ़्फ़ारे में ख़्वाह वो क़सम का हो या ज़िहार का या रमज़ान का मोमिन बुर्दा आज़ाद करना ज़रूरी है।

6715. हमसे मुहम्मद बिन अ़ब्दुर्रहीम ने बयान किया, कहा हमसे दाऊद बिन रशीद ने बयान किया, कहा हमसे वलीद बिन मुस्लिम ने बयान किया, उनसे अबू ग़स्सान मुहम्मद बिन मुत़र्रिफ़ ने, उनसे ज़ैद बिन असलम ने, उनसे हज़रत ज़ैनुल आ़बेदीन अ़ली बिन हुसैन ने, उनसे सईद इब्ने मरजाना ने और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जिसने किसी मुसलमान गुलाम को आज़ाद किया तो अल्लाह तआ़ला उसके एक एक टुकड़े के बदले आज़ाद करने वाले का एक एक टुकड़ा जहन्नम से आज़ाद करेगा। यहाँ तक कि गुलाम की शर्मगाह के बदले आज़ाद करने वाले की शर्मगाह भी दोज़ख़ से आज़ाद हो जाएगी। (राजेअ़ : 2517)

٦٧١٥- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحِيمِ، حَدَّثَنَا دَاوُدُ بْنُ رُشَيْدٍ، حَدَّثَنَا الْوَلِيدُ بْنُ مُسْلِمٍ عَنْ أَبِي غَسَّانَ مُحَمَّدِ بْنِ مُطَرِّفٍ، عَنْ زَيْدِ بْنِ أَسْلَمَ، عَنْ عَلِيِّ بْنِ حُسَيْنٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ مَرْجَانَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((مَنْ أَعْتَقَ رَقَبَةً مُسْلِمَةً أَعْتَقَ اللهُ بِكُلِّ عُضْوٍ مِنْهُ عُضْوًا مِنَ النَّارِ حَتَّى فَرْجَهُ بِفَرْجِهِ)).

[راجع: ٢٥١٧]

बाब 7 : कफ़्फ़ारा में मुदब्बर, उम्मुल वलद और मकातब और वलदुज़्ज़िना का आज़ाद करना दुरुस्त है और त़ाउस ने कहा कि मुदब्बर और उम्मुल वलद का आज़ाद करना काफ़ी होगा

٧- باب عِتْقِ الْمُدَبَّرِ وَأُمِّ الْوَلَدِ وَالْمُكَاتَبِ فِي الْكَفَّارَةِ وَعِتْقِ وَلَدِ الزِّنَا وَقَالَ طَاوُسٌ : يُجْزِىءُ الْمُدَبَّرُ وَأُمُّ الْوَلَدِ

तश्रीह : मुदब्बर उस गुलाम को कहते हैं जिसके मालिक ने ये कह दिया हो कि मेरी मौत के बाद गुलाम आज़ाद है। उम्मुल वलद वो लौण्डी जिसके पेट से मालिक को कोई बच्चा हो। ऐसी कनीज़ मालिक की मौत के बाद शरीअ़त की रू से ख़ुद ब ख़ुद आज़ाद हो जाती है। मुकातब वो गुलाम है जिसने अपने मालिक से किसी मुक़र्रर मुद्दत में एक ख़ास रक़म की अदायगी का मुआ़हिदा लिख दिया हो कि उस मुद्दत में अगर वो रक़म अदा कर देगा तो आज़ाद हो जाएगा इन तमाम सूरतों में गुलाम, मुकम्मल गुलाम नहीं है और न उसे आज़ाद ही कहा जाता है। मुसन्निफ़ ने बह़ष ये की है कि क्या उस सूरत में भी कफ़्फ़ारा में उनकी आज़ादी एक गुलाम की आज़ादी के हुक्म में मानी जा सकती है?

6716. हमसे अबुन नोअ़मान ने बयान किया, कहा हमको हम्माद बिन ज़ैद ने ख़बर दी, उन्हें अ़म्र बिन दीनार ने और उनसे हज़रत जाबिर (रज़ि.) ने कि क़बीला अंस़ार के एक स़ाहब ने अपने गुलाम को मुदब्बर बना लिया और उनके पास उस गुलाम के सिवा और कोई माल नहीं था। जब उसकी ख़बर

٦٧١٦- حَدَّثَنَا أَبُو النُّعْمَانِ، أَخْبَرَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، عَنْ عَمْرٍو، عَنْ جَابِرٍ أَنَّ رَجُلاً مِنَ الأَنْصَارِ دَبَّرَ مَمْلُوكًا لَهُ، وَلَمْ يَكُنْ لَهُ مَالٌ غَيْرُهُ فَبَلَغَ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ

عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ ((مَنْ يَشْتَرِيهِ مِنِّي؟)) فَاشْتَرَاهُ نُعَيْمُ بْنُ النَّحَّامِ بِثَمَانِمِائَةِ دِرْهَمٍ، فَسَمِعْتُ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ يَقُولُ: عَبْدًا قِبْطِيًّا مَاتَ عَامَ أَوَّلَ.
[راجع: ٢١٤١]

नबी करीम (ﷺ) को मिली तो आपने पूछा कि मुझसे इस ग़ुलाम को कौन ख़रीदता है। नुऐम बिन निह़ाम (रज़ि.) ने आठ सौ दिरहम में आँह़ज़रत (ﷺ) से उसे ख़रीद लिया। मैंने ह़ज़रत जाबिर (रज़ि.) को ये कहते सुना कि वो एक क़िब्त़ी ग़ुलाम था और पहले ही साल मर गया। आँह़ज़रत (ﷺ) ने उसे नीलाम करके उस रक़म से उसे मुकम्मल आज़ाद करा दिया। (राजेअ: 2141)

बाब और ह़दीष़ में मुत़ाबक़त ज़ाहिर है।

٩ - باب إِذَا أَعْتَقَ فِي الْكَفَّارَةِ لِمَنْ يَكُونُ وَلاَؤُهُ؟

बाब 9 : जब कफ़्फ़ारा में ग़ुलाम आज़ाद करेगा तो उसकी वलाअ किसे ह़ासिल होगी?

٦٧١٧- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنِ الْحَكَمِ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنِ الأَسْوَدِ عَنْ عَائِشَةَ أَنَّهَا أَرَادَتْ أَنْ تَشْتَرِيَ بَرِيرَةَ فَاشْتَرَطُوا عَلَيْهَا الْوَلاَءَ، فَذَكَرَتْ ذَلِكَ لِلنَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: ((اشْتَرِيهَا إِنَّمَا الْوَلاَءُ لِمَنْ أَعْتَقَ)).[راجع: ٤٥٦]

6717. हमसे सुलैमान बिन ह़र्ब ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे ह़कम बिन उ़तैबा ने, उनसे इब्राहीम नख़ई ने,उनसे अस्वद बिन यज़ीद ने, और उनसे आ़इशा (रज़ि.) ने कि उन्होंने बरीरह (रज़ि.) को (आज़ाद करने के लिये) ख़रीदना चाहा, तो उनके पहले मालिकों ने अपने लिये वलाअ की शर्त़ लगाई। मैंने उसका ज़िक्र नबी करीम (ﷺ) से किया तो आपने फ़र्माया ख़रीद लो, वलाअ तो उसी से होती है जो आज़ाद करता है। (राजेअ: 456)

١٠ - باب الاِسْتِثْنَاءِ فِي الأَيْمَانِ

बाब 10 : अगर कोई शख़्स क़सम में इंशाअल्लाह कह ले

٦٧١٨- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، عَنْ غَيْلاَنَ بْنِ جَرِيرٍ، عَنْ أَبِي بُرْدَةَ بْنِ أَبِي مُوسَى، عَنْ أَبِي مُوسَى الأَشْعَرِيِّ قَالَ: أَتَيْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي رَهْطٍ مِنَ الأَشْعَرِيِّينَ أَسْتَحْمِلُهُ فَقَالَ: ((وَاللهِ لاَ أَحْمِلُكُمْ مَا عِنْدِي مَا أَحْمِلُكُمْ)) ثُمَّ لَبِثْنَا مَا شَاءَ اللهُ فَأُتِيَ بِإِبِلٍ فَأَمَرَ لَنَا بِثَلاَثَةِ ذَوْدٍ، فَلَمَّا انْطَلَقْنَا قَالَ بَعْضُنَا لِبَعْضٍ: لاَ يُبَارِكُ اللهُ لَنَا أَتَيْنَا رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَسْتَحْمِلُهُ فَحَلَفَ أَنْ لاَ يَحْمِلَنَا فَحَمَلَنَا

6718. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे ह़म्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे ग़ीलान बिन जरीर ने, उनसे अबूबुर्दा बिन अबी मूसा ने और उनसे ह़ज़रत अबू मूसा अश्अ़री (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में क़बीला अश्अ़र के चंद लोगों के साथ ह़ाज़िर हुआ और आपसे सवारी के लिये जानवर मांगे। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अल्लाह की क़सम! मैं तुम्हें सवारी के जानवर नहीं दे सकता। फिर जब तक अल्लाह तआ़ला ने चाहा हम ठहरे रहे और जब कुछ ऊँट आए तो तीन ऊँट हमें दिये जाने का हुक्म फ़र्माया। जब हम उन्हें लेकर चले तो हममें से कुछ ने अपने साथियों से कहा कि हमें अल्लाह इसमें बरकत नहीं देगा। हम आँह़ज़रत (ﷺ) के पास सवारी के जानवर मांगने आए थे तो आपने क़सम खा ली थी कि हमें सवारी के जानवर नहीं दे

सकते और आपने इनायत फ़र्माए हैं। हज़रत अबू मूसा (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर हम आँहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और आपसे इसका ज़िक्र किया तो आपने फ़र्माया कि मैंने तुम्हारे लिये जानवर का इंतिज़ाम नहीं किया है बल्कि अल्लाह तआला ने किया है, अल्लाह की क़सम! अगर अल्लाह ने चाहा तो जब भी मैं कोई क़सम खा लूँगा और फिर उसके सिवा और किसी चीज़ में अच्छाई होगी तो मैं अपनी क़सम का कफ़्फ़ारा दे दूँगा और वही काम करूँगा जिसमें अच्छाई होगी। (राजेअ : 3133)

فَقَالَ أَبُو مُوسَى: فَأَتَيْنَا النَّبِيَّ ﷺ فَذَكَرْنَا ذَلِكَ لَهُ فَقَالَ: ((مَا أَنَا حَمَلْتُكُمْ بَلِ اللهُ حَمَلَكُمْ، إِنِّي وَاللهِ إِنْ شَاءَ اللهُ لاَ أَحْلِفُ عَلَى يَمِينٍ فَأَرَى غَيْرَهَا خَيْرًا مِنْهَا، إِلاَّ كَفَّرْتُ عَنْ يَمِينِي وَأَتَيْتُ الَّذِي هُوَ خَيْرٌ)). [راجع: ٣١٣٣]

6719. हमसे अबुन नोअ़मान ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उन्होंने (इस रिवायत में ये तर्तीब इसी तरह) बयान की कि मैं क़सम का कफ़्फ़ारा अदा कर दूँगा और वो काम करूँगा जिसमें अच्छाई होगी या (इस तरह आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि) मैं काम वो करूँगा जिसमें अच्छाई होगी और कफ़्फ़ारा अदा कर दूँगा। (राजेअ : 3133)

٦٧١٩ - حَدَّثَنَا أَبُو النُّعْمَانِ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، وَقَالَ : إِلاَّ كَفَّرْتُ يَمِينِي وَأَتَيْتُ الَّذِي هُوَ خَيْرٌ أَوْ أَتَيْتُ الَّذِي هُوَ خَيْرٌ وَكَفَّرْتُ. [راجع: ٣١٣٣]

6720. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन जुहैर ने, उनसे ताउस ने, उन्होने हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि सुलैमान (अ.) ने कहा था कि आज रात में अपनी निन्नान्वे बीवियों के पास जाऊँगा और हर बीवी एक बच्चा जनेगी जो अल्लाह के रास्ते में जिहाद करेंगे। उनके साथी सुफ़यान या'नी फ़रिश्ते ने उनसे कहा, इंशाअल्लाह तो कहो लेकिन आप भूल गये और फिर तमाम बीवियों के पास गये लेकिन एक बीवी के सिवा जिसके यहाँ नातमाम बच्चा हुआ था, किसी बीवी के यहाँ भी बच्चा नहीं हुआ। हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) रिवायत करते हुए कहते थे कि अगर उन्होंने इंशाअल्लाह कह दिया होता तो उनकी क़सम बेकार न जाती और अपनी ज़रूरत को पा लेते और एक मर्तबा उन्होंने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने कहा कि अगर उन्होंने इस्तिष्ना कर दिया होता और हमसे अबुज़्ज़िनाद ने अअ़रज से हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) की हदीष़ की तरह बयान किया।

٦٧٢٠ - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ هِشَامِ بْنِ حُجَيْرٍ، عَنْ طَاوُسٍ سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ قَالَ : سُلَيْمَانُ لأَطُوفَنَّ اللَّيْلَةَ عَلَى تِسْعِينَ امْرَأَةً، كُلٌّ تَلِدُ غُلاَمًا يُقَاتِلُ فِي سَبِيلِ اللهِ فَقَالَ لَهُ صَاحِبُهُ : قَالَ سُفْيَانُ : يَعْنِي الْمَلَكَ، قُلْ : إِنْ شَاءَ اللهُ فَنَسِيَ، فَطَافَ بِهِنَّ فَلَمْ تَأْتِ امْرَأَةٌ مِنْهُنَّ بِوَلَدٍ إِلاَّ وَاحِدَةٌ بِشِقِّ غُلاَمٍ، فَقَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ . يَرْوِيهِ قَالَ : لَوْ قَالَ إِنْ شَاءَ اللهُ لَمْ يَحْنَثْ وَكَانَ دَرَكًا فِي حَاجَتِهِ وَقَالَ مَرَّةً: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((لَوِ اسْتَثْنَى)) وَحَدَّثَنَا أَبُو الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ مِثْلَ حَدِيثِ أَبِي هُرَيْرَةَ.

बाब 11 : क़सम का कफ़्फ़ारा, क़सम तोड़ने से

١١ - باب الْكَفَّارَةِ قَبْلَ الْحِنْثِ

وَبَعْدَهُ

पहले और उसके बाद दोनों तरह दे सकता है

٦٧٢١- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ حُجْرٍ، حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ أَيُّوبَ، عَنِ الْقَاسِمِ التَّمِيمِيِّ، عَنْ زَهْدَمٍ الْجَرْمِيِّ قَالَ كُنَّا عِنْدَ أَبِي مُوسَى وَكَانَ بَيْنَنَا وَبَيْنَ هَذَا الْحَيِّ مِنْ جَرْمٍ إِخَاءٌ وَمَعْرُوفٌ قَالَ: فَقُدِّمَ طَعَامٌ قَالَ : وَقُدِّمَ فِي طَعَامِهِ لَحْمُ دَجَاجٍ قَالَ: وَفِي الْقَوْمِ رَجُلٌ مِنْ بَنِي تَيْمِ اللهِ أَحْمَرُ، كَأَنَّهُ مَوْلًى قَالَ : فَلَمْ يَدْنُ فَقَالَ لَهُ أَبُو مُوسَى: ادْنُ فَإِنِّي قَدْ رَأَيْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَأْكُلُ مِنْهُ، قَالَ : إِنِّي رَأَيْتُهُ يَأْكُلُ شَيْئًا قَذِرْتُهُ فَحَلَفْتُ أَنْ لاَ أَطْعَمَهُ أَبَدًا، فَقَالَ: ادْنُ أُخْبِرْكَ عَنْ ذَلِكَ، أَتَيْنَا رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي رَهْطٍ مِنَ الأَشْعَرِيِّينَ أَسْتَحْمِلُهُ وَهُوَ يَقْسِمُ نَعَمًا مِنْ نَعَمِ الصَّدَقَةِ، قَالَ أَيُّوبُ: أَحْسِبُهُ قَالَ وَهُوَ غَضْبَانُ، قَالَ: ((وَاللهِ لاَ أَحْمِلُكُمْ، وَمَا عِنْدِي مَا أَحْمِلُكُمْ)) قَالَ: فَانْطَلَقْنَا فَأُتِيَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِنَهْبِ إِبِلٍ فَقِيلَ: ((أَيْنَ هَؤُلاَءِ الأَشْعَرِيُّونَ)) فَأَتَيْنَا فَأَمَرَ لَنَا بِخَمْسِ ذَوْدٍ غُرِّ الذُّرَى قَالَ: فَانْدَفَعْنَا فَقُلْتُ لأَصْحَابِي: أَتَيْنَا رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَسْتَحْمِلُهُ فَحَلَفَ أَنْ لاَ يَحْمِلَنَا ثُمَّ أَرْسَلَ إِلَيْنَا فَحَمَلَنَا نَسِيَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَمِينَهُ

6721. हमसे अली बिन हुज्र ने बयान किया, कहा हमसे इस्माईल बिन इब्राहीम ने बयान किया, उनसे अय्यूब सुख़्तियानी ने, उनसे क़ासिम तमीमी ने, उनसे ज़ह्दम जर्मी ने बयान किया कि हम ह़ज़रत अबू मूसा अश्अ़री (रज़ि.) के पास थे और हमारे क़बीला और उस क़बीला जर्म में भाई-चारगी और बाहमी हुस्न मामला की रविश थी। रावी ने बयान किया कि फिर खाना लाया गया और खाने में मुर्ग़ी का गोश्त भी था। रावी ने बयान किया कि ह़ाज़िरीन में बनी तैमुल्लाह का एक शख़्स सुर्ख़ रंग का भी था जैसे मौला हो। बयान किया कि वो शख़्स खाने पर नहीं आया तो ह़ज़रत अबू मूसा (रज़ि.) ने उससे कहा कि शरीक हो जाओ, मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को इसका गोश्त खाते देखा है। उस शख़्स ने कहा कि मैंने इसे गदंगी खाते देखा था जबसे इससे घिन आने लगी और उसी वक़्त मैंने क़सम खा ली कि कभी इसका गोश्त नहीं खाऊँगा। ह़ज़रत अबू मूसा (रज़ि.) ने कहा क़रीब आओ मैं तुम्हें इसके बारे में बताऊँगा। हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के यहाँ अश्अ़रियों की एक जमाअ़त के साथ आए और मैं ने आँह़ज़रत (ﷺ) से सवारी का जानवर मांगा। आँह़ज़रत (ﷺ) उस वक़्त सदक़े के ऊँटों में से ऊँट तक़्सीम कर रहे थे। अय्यूब ने बयान किया कि मेरा ख़्याल है कि अबू मूसा (रज़ि.) ने कहा कि आँह़ज़रत (ﷺ) उस वक़्त ग़ुस्से में थे। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अल्लाह की क़सम! मैं तुम्हारी सवारी के जानवर नहीं दे सकता और न मेरे पास कोई ऐसी चीज़ है जो सवारी के लिये मैं तुम्हें दे सकूँ। बयान किया कि फिर हम वापस आ गये फिर आँह़ज़रत (ﷺ) के पास ग़नीमत के ऊँट आए तो पूछा गया कि अश्अ़रियों की जमाअ़त कहाँ है? हम ह़ाज़िर हुए तो आँह़ज़रत (ﷺ) ने हमें पाँच उम्दह ऊँट दिये जाने का हुक्म दिया। बयान किया कि हम वहाँ से रवाना हुए तो मैंने अपने साथियों से कहा कि हम पहले आँह़ज़रत (ﷺ) के पास सवारी के लिये आए थे तो आपने क़सम खा ली थी कि सवारी का इंतिज़ाम नहीं कर सकते। फिर हमें बुला भेजा और सवारी के जानवर इनायत फ़र्माए। आँह़ज़रत (ﷺ) अपनी क़सम भूल गये होंगे। वल्लाह! अगर हमने आँह़ज़रत (ﷺ) को आपकी क़सम के बारे

में ग़फ़लत में रखा तो हम कभी कामयाब नहीं होंगे। चलो! हम सब आपके पास वापस चलें और आपको आपकी क़सम याद दिलाएँ। चुनाँचे हम वापस आए और अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह! हम पहले आए थे और आपसे सवारी का जानवर मांगा था तो आपने क़सम खा ली थी कि आप इसका इंतिज़ाम नहीं कर सकते, हमने समझा कि आप अपनी क़सम भूल गये। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि जाओ, तुम्हें अल्लाह ने सवारी दी है, वल्लाह! अगर अल्लाह ने चाहा तो मैं जब भी कोई क़सम खा लूँगा और फिर दूसरी चीज़ को उसके मुक़ाबिल बेहतर समझूँगा तो वही करूँगा जो बेहतर होगा और अपनी क़सम तोड़ दूँगा। (राजेअ : 3133)

وَاللهِ لَئِنْ تَغَفَّلْنَا رَسُولَ اللهِ يَمِينَهُ لاَ نُفْلِحُ أَبَدًا ارْجِعُوا بِنَا إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ فَلْنُذَكِّرْهُ يَمِينَهُ، فَرَجَعْنَا فَقُلْنَا يَا رَسُولَ اللهِ أَتَيْنَاكَ نَسْتَحْمِلُكَ فَحَلَفْتَ أَنْ لاَ تَحْمِلَنَا، ثُمَّ حَمَلْتَنَا فَظَنَنَّا أَوْ فَعَرَفْنَا أَنَّكَ نَسِيتَ يَمِينَكَ قَالَ: ((انْطَلِقُوا فَإِنَّمَا حَمَلَكُمُ اللهُ إِنِّي وَاللهِ إِنْ شَاءَ اللهُ لاَ أَحْلِفُ عَلَى يَمِينٍ فَأَرَى غَيْرَهَا خَيْرًا مِنْهَا، إِلاَّ أَتَيْتُ الَّذِي هُوَ خَيْرٌ وَتَحَلَّلْتُهَا)).

[راجع: ٣١٣٣]

इस रिवायत की मुताबअ़त ह़म्माद बिन ज़ैद ने अय्यूब से की, उनसे अबू क़िलाबा और क़ासिम बिन आ़स़िम कुलैबी ने।

تَابَعَهُ حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، عَنْ أَيُّوبَ، عَنْ أَبِي قِلاَبَةَ وَالْقَاسِمِ بْنِ عَاصِمٍ الْكُلَيْبِيِّ.

हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल वह्हाब ने बयान किया, उनसे अय्यूब ने, उनसे अबू क़िलाबा और क़ासिम तमीमी ने और उनसे ज़ह्दम ने यही ह़दीष़ नक़ल की।

....- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ، عَنْ أَيُّوبَ، عَنْ أَبِي قِلاَبَةَ وَالْقَاسِمِ التَّيْمِيِّ عَنْ زَهْدَمٍ بِهَذَا.

हमसे अबू मअ़मर ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल वारिष़ ने बयान किया, कहा हमसे अय्यूब ने, उनसे क़ासिम ने, और उनसे ज़ह्दम ने यही ह़दीष़ बयान की।

....- حَدَّثَنَا أَبُو مَعْمَرٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ، حَدَّثَنَا أَيُّوبُ، عَنِ الْقَاسِمِ، عَنْ زَهْدَمٍ بِهَذَا.

6722. मुझसे मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे उ़ष्मान बिन उ़मर बिन फ़ारिस ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको अ़ब्दुल्लाह बिन औ़न ने ख़बर दी, उन्हें इमाम ह़सन बस़री ने, उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुर्रह़मान बिन समुरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कभी तुम हुकूमत का ओ़ह्दा त़लब न करना क्योंकि अगर बिला मांगे तुम्हें ये मिल जाएगा तो उसमें तुम्हारी मिन्जानिब अल्लाह मदद की जाएगी, लेकिन अगर मांगने पर मिला तो सारा बोझ तुम्हीं पर डाल दिया जाएगा और अगर तुम कोई क़सम खा लो और उसके सिवा कोई और बात बेहतर नज़र आए तो वही

٦٧٢٢- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ عُمَرَ بْنِ فَارِسٍ، أَخْبَرَنَا ابْنُ عَوْنٍ عَنِ الْحَسَنِ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ سَمُرَةَ قَالَ : قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((لاَ تَسْأَلِ الإِمَارَةَ فَإِنَّكَ إِنْ أُعْطِيتَهَا عَنْ غَيْرِ مَسْأَلَةٍ، أُعِنْتَ عَلَيْهَا، وَإِنْ أُعْطِيتَهَا عَنْ مَسْأَلَةٍ وُكِلْتَ إِلَيْهَا، وَإِذَا حَلَفْتَ عَلَى يَمِينٍ فَرَأَيْتَ غَيْرَهَا خَيْرًا مِنْهَا، فَأْتِ

الَّذِي هُوَ خَيْرٌ وَكَفِّرْ عَنْ يَمِينِكَ)). تَابَعَهُ أَشْهَلُ عَنِ ابْنِ عَوْنٍ. وَتَابَعَهُ يُونُسُ وَسِمَاكُ بْنُ عَطِيَّةَ، وَسِمَاكُ بْنُ حَرْبٍ، وَحُمَيْدٌ وَقَتَادَةُ، وَمَنْصُورٌ وَهِشَامٌ، وَالرَّبِيعُ. [راجع: ٦٦٢٢]

करो जो बेहतर हो और क़सम का कफ़्फ़ारा अदा कर दो। उ़ष्मान बिन उ़मर के साथ इस ह़दीष़ को अश्हल बिन ह़ातिम ने भी अ़ब्दुल्लाह बिन औ़न से रिवायत किया, उसको अबू अ़वाना और ह़ाकिम ने वस्ल किया और अ़ब्दुल्लाह बिन औ़न के साथ इस ह़दीष़ को यूनुस और सिमाक बिन अ़तिया और सिमाक बिन ह़र्ब और ह़ुमैद और क़तादा और मंसूर और हिशाम और रबीअ़ ने भी रिवायत किया। (राजेअ़ : 6622)

85. किताबुल फ़राइज़

किताब फ़राइज़ या'नी तर्का के ह़ुसूल के बयान में

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

﴿يُوصِيكُمُ اللَّهُ فِي أَوْلَادِكُمْ لِلذَّكَرِ مِثْلُ حَظِّ الْأُنْثَيَيْنِ فَإِنْ كُنَّ نِسَاءً فَوْقَ اثْنَتَيْنِ فَلَهُنَّ ثُلُثَا مَا تَرَكَ وَإِنْ كَانَتْ وَاحِدَةً فَلَهَا النِّصْفُ وَلِأَبَوَيْهِ لِكُلِّ وَاحِدٍ مِنْهُمَا السُّدُسُ مِمَّا تَرَكَ إِنْ كَانَ لَهُ وَلَدٌ فَإِنْ لَمْ يَكُنْ لَهُ وَلَدٌ وَوَرِثَهُ أَبَوَاهُ فَلِأُمِّهِ الثُّلُثُ فَإِنْ كَانَ لَهُ إِخْوَةٌ فَلِأُمِّهِ السُّدُسُ مِنْ بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُوصِي بِهَا أَوْ دَيْنٍ آبَاؤُكُمْ وَأَبْنَاؤُكُمْ لَا تَدْرُونَ أَيُّهُمْ أَقْرَبُ لَكُمْ نَفْعًا فَرِيضَةً مِنَ اللَّهِ إِنَّ اللَّهَ كَانَ عَلِيمًا حَكِيمًا. وَلَكُمْ نِصْفُ مَا تَرَكَ

बाब और अल्लाह ने फ़र्माया, अल्लाह पाक तुम्हारी औलाद के मुक़द्दमे में तुमको ये हुक्म देता है कि मर्द बच्चे को दोहरा ह़िस़्सा और बेटी को इकहरा ह़िस़्सा मिलेगा। अगर मय्यत का बेटा न हो निरी बेटियाँ हों दो या दो से ज़ाइद तो उनको दो तिहाई तर्का मिलेगा। अगर मय्यत की एक बेटी हो तो उसको आधा तर्का मिलेगा और मय्यत के माँ-बाप हर एक को तर्का में से छठा छठा ह़िस़्सा मिलेगा अगर मय्यत की औलाद हो (बेटा या बेटी, पोता या पोती) अगर औलाद न हो और स़िर्फ़ माँ बाप ही उसके वारिष़ हों तो माँ को तिहाई ह़िस़्सा (बाक़ी सब बाप को मिलेगा) अगर माँ-बाप के सिवा मय्यत के कुछ भाई-बहन हों तब माँ को छठा ह़िस़्सा मिलेगा ये सारे ह़िस़्से मय्यत की वस़िय्यत और क़र्ज़ अदा करने के बाद अदा किये जाएँगे (मगर वस़िय्यत मय्यत के तिहाई माल तक जहाँ तक पूरी हो सके पूरी करेंगे। बाक़ी दो तिहाई वारिष़ों का ह़क़ है और क़र्ज़ की अदायगी सारे माल से की जाएगी अगर कल माल क़र्ज़ में

أَزْوَاجُكُمْ إِنْ لَمْ يَكُنْ لَهُنَّ وَلَدٌ فَإِنْ كَانَ لَهُنَّ وَلَدٌ فَلَكُمُ الرُّبُعُ مِمَّا تَرَكْنَ مِنْ بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُوصِينَ بِهَا أَوْ دَيْنٍ وَلَهُنَّ الرُّبُعُ مِمَّا تَرَكْتُمْ إِنْ لَمْ يَكُنْ لَكُمْ وَلَدٌ فَإِنْ كَانَ لَكُمْ وَلَدٌ فَلَهُنَّ الثُّمُنُ مِمَّا تَرَكْتُمْ مِنْ بَعْدِ وَصِيَّةٍ تُوصُونَ بِهَا أَوْ دَيْنٍ وَإِنْ كَانَ رَجُلٌ يُورَثُ كَلَالَةً أَوِ امْرَأَةٌ وَلَهُ أَخٌ أَوْ أُخْتٌ فَلِكُلِّ وَاحِدٍ مِنْهُمَا السُّدُسُ فَإِنْ كَانُوا أَكْثَرَ مِنْ ذَٰلِكَ فَهُمْ شُرَكَاءُ فِي الثُّلُثِ مِنْ بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُوصَىٰ بِهَا أَوْ دَيْنٍ غَيْرَ مُضَارٍّ وَصِيَّةً مِنَ اللَّهِ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَلِيمٌ﴾ [النساء: ١١-١٢].

चला जाए तो वारिषों को कुछ न मिलेगा) तुम क्या जानो बाप या बेटों में से तुमको किससे ज़्यादा फ़ायदा पहुँच सकता है (इसलिये अपनी राय को दख़ल न दो) ये हिस्से अल्लाह के मुक़र्रर किये हुए हैं (वो अपनी मस्लिहत को ख़ूब जानता है) क्योंकि अल्लाह बड़े इल्म और हिक्मत वाला है और तुम्हारी बीवियाँ जो माल अस्बाब छोड़ जाएँ अगर उसकी औलाद न हो (न बेटा न बेटी) तब तो तुमको आधा तर्का मिलेगा। अगर औलाद हो तो चौथाई ये भी वसिय्यत और क़र्ज़ अदा करने के बाद मिलेगा। इसी तरह तुम जो माल व अस्बाब छोड़ जाओ और तुम्हारी औलाद बेटा या बेटी कोई न हो तो तुम्हारी बीवियों को उसमे से चौथाई मिलेगा अगर औलाद हो तो आठवाँ हिस्सा ये भी वसिय्यत और क़र्ज़ा अदा करने के बाद और अगर कोई मर्द या औरत मर जाए और वो कलाला हो (न उसका बाप हो न बेटा) बल्कि माँ जाए एक भाई या बहन हो (या'नी अख़्याफ़ी) तो हर एक को छठा हिस्सा मिलेगा। अगर उसी तरह कई अख़्याइ भाई बहन हों तो सब मिलकर एक तिहाई पाएँगे ये भी वसिय्यत और क़र्ज़ अदा करने के बाद बशर्ते कि मय्यत ने वारिषों को नुक़्सान पहुँचाने के लिये वसिय्यत न की हो। या'नी षुलुष माल से ज़्यादा की) ये सारा फ़र्मान है अल्लाह पाक का और अल्लाह हर एक का हाल ख़ूब जानता है वो बड़े तहम्मुल वाला है (जल्दी अ़ज़ाब नहीं करता)।

किताब अल्फ़राइज़ जम्उ फ़रीज़तिन कहदीक़तिन व हदाइक़ वल फ़रीज़तु फ़िअलितुन बिमअना मफ़रूज़ तुन माख़ूजतिन मिनल फ़र्ज़ि व हुवल क़त्उ युक़ालु फ़रज्तु लिफ़ुलानिन कज़ा अय क़तअतु लहू शैअम्मिनल मालि कालहुल ख़त्ताबी व ख़ुस्सतिल मवारीषु बिस्मिल फ़राइज़ि मिन क़ौलि तआला नसीबम मफ़रूज़ा... औ मअलूमन औ मक़्तूअन अन ग़ैरिहिम (ख़ुलासा फ़त्हुल बारी) लफ़्ज़े फ़राइज़ फ़रीज़ा की जमा है जैसे हदीक़ा की जमा हदाइक़ है और लफ़्ज़ फ़रीज़ा बमा'नी मफ़रूज़ा है जो फ़र्ज़ से माख़ूज़ है जिसके मा'नी काटने के हैं जैसा कि कहा जाता है कि मैंने इतना माल फ़लाँ के लिये काटकर अलग रख दिया। मवारीष को नाम फ़राइज़ से ख़ास किया गया है जैसा कि आयत में है। नसीबा मफ़रूज़ा हिस्सा मुक़र्रर किया हुआ या'नी उनके ग़ैर से काटा हुआ।

किताबुल फ़राइज़ में तर्का के मसाइल बयान किये जाते हैं जो तर्का से हक़दारों को हिस्से मिलते हैं। फ़राइज़ का का मुस्तक़िल इल्म है जिसकी तफ़्सीलात बहुत हैं ये इल्म हर किसी को नहीं आता उसमें इल्मे रियाज़ी हिसाब की काफ़ी ज़रूरत पड़ती है। हमारी जमाअत में हज़रत मौलाना अब्दुर्रहमान बजवावी इल्मे फ़राइज़ के इमाम थे। आपने फ़तावा षनाइया हिस्सा दौम में किताबुल फ़राइज़ पर एक जामेअ मुक़द्दमा तहरीर फ़र्माया है। ग़फ़रल्लाहु लहू (आमीन)

बाक़ी सब बाप को मिलेगा। भाई बहनों को कुछ नहीं मिलेगा। बाप के होते हुए भाई बहन तर्का से महरूम हैं लेकिन माँ का हिस्सा कम कर देते हैं या'नी उनके वजूद से माँ का तिहाई हिस्सा कम होकर छठा रह जाता है।

6723. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन मुंकदिर ने, उन्होंने जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैं बीमार पड़ा तो ह़ज़रत रसूले करीम (ﷺ) और ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) मेरी ए़यादत के लिये तशरीफ़ लाए, दोनों ह़ज़रात पैदल चलकर आए थे। दोनों ह़ज़रात जब आए तो मुझ पर ग़शी त़ारी थी, आँह़ज़रत (ﷺ) ने वुज़ू किया और वुज़ू का पानी मेरे ऊपर छिड़का मुझे होश हुआ तो मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! अपने माल की (तक़्सीम) किस त़रह़ करूँ? या अपने माल का किस त़रह़ फ़ैसला करूँ? आँह़ज़रत (ﷺ) ने मुझे कोई जवाब नहीं दिया, यहाँ तक कि मीराष़ की आयतें नाज़िल हुईं। (राजेअ़ : 194)

٦٧٢٣- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ الْمُنْكَدِرِ. سَمِعَ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ يَقُولُ : مَرِضْتُ فَعَادَنِي رَسُولُ اللهِ ﷺ وَأَبُو بَكْرٍ وَهُمَا مَاشِيَانِ، فَأَتَانِي وَقَدْ أُغْمِيَ عَلَيَّ فَتَوَضَّأَ رَسُولُ اللهِ ﷺ فَصَبَّ عَلَيَّ وَضُوءَهُ، فَأَفَقْتُ فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ كَيْفَ أَصْنَعُ فِي مَالِي كَيْفَ أَقْضِي فِي مَالِي؟ فَلَمْ يُجِبْنِي بِشَيْءٍ حَتَّى نَزَلَتْ آيَةُ الْمَوَارِيثِ.
[راجع: ١٩٤]

बाब 2 : फ़राइज़ का इ़ल्म सीखना

٢- باب تَعْلِيمِ الْفَرَائِضِ

उ़क़्बा बिन आ़मिर ने कहा कि दीन का इ़ल्म सीखो उससे पहले कि अटकल-पच्ची करने वाले पैदा हों या'नी जो राय और क़यास से फ़त्वा दें, ह़दीष़ और क़ुर्आन से जाहिल हों।

وَقَالَ عُقْبَةُ بْنُ عَامِرٍ، تَعَلَّمُوا قَبْلَ الظَّانِّينَ. يَعْنِي الَّذِينَ يَتَكَلَّمُونَ بِالظَّنِّ

तशरीह : उ़क़्बा के क़ौल में गो फ़राइज़ की तख़्सीस़ नहीं मगर वो इ़ल्मे फ़राइज़ को भी शामिल है। इमाम अह़मद और तिर्मिज़ी ने इब्ने मसऊ़द (रज़ि.) से मर्फ़ूअ़न निकाला। फ़राइज़ का इ़ल्म सीखो और सिखाओ क्योंकि मैं दुनिया से जाने वाला हूँ और वो ज़माना क़रीब है कि ये इ़ल्म दुनिया से उठ जाएगा। दो आदमी तर्का के बारे में झगड़ा करेंगे कोई फ़ैसला करने वाला उनको न मिलेगा। तिर्मिज़ी में भी एक ऐसी ही ह़दीष़ मरवी है, **व क़ौलुहू क़बलज़्ज़ानीन फ़ीहि इश्आरून बिअन्न अहल ज़ालिकल अ़स्रि कानू यक़िफ़ून इन्दन्नुसूसि व ला यताजवज़ूनहा व इन नुक़िल अन बअ़ज़िहिमुल फ़त्वा बिर्राय फ़हुव क़लीलुन बिन्निस्बति व फ़ीहि इन्ज़ारून बिवुक़ूइ मा ह़स़ल मिन कष़्रतिल क़ाइलीन बिर्राय व क़ील रआहु क़ब्ल इन्दिरासिल इ़ल्मि व हुदूषु मंय्यतकल्लमु बिमुक्तज़ा ज़न्निही ग़ैर मुस्तनदिन इला इ़ल्मिन क़ाल इब्नुल्मुनीर व इन्नमा ख़स्स्ल बुख़ारी क़ौल उ़क़्बा बिल्फ़राइज़ि लिअन्नहा अदख़ल फ़ीहि मिन ग़ैरिहा लिअन्नल फ़राइज़ अल्ग़ालिबु अ़लैहिल जअ़बदु वल्ख़िसामु वुजूहुर्राय वल्ख़ौज़ि फ़ीहा बिज़्ज़न्नि लिइन्ज़िबातिल लहू बिख़िलाफ़ि ग़ैरिहा मिन अब्वाबिल्इ़ल्मि फ़इन्न लिर्राय मजालन वल्इन्ज़िबातु फ़ीहा मुम्किनुन ग़ालिबन व यूख़जु मिन हाज़त्तक़्रीरि मुनासबतुल ह़दीष़ि लमर्फ़ूअ.** (फ़त्हुल बारी)। लफ़्ज़ क़ब्लज़्ज़ान्नीन में इधर इशारा करना है कि सलफ़े सालिह़ीन के ज़माने में लोग नुसूस़ के आगे ठहर जाते थे और उनसे आगे तजावुज़ (उल्लंघन) नहीं करते थे। अगर उनमें से किसी से कोई फ़त्वा राय से नक़ल है तो वो बहुत ही क़लील (थोड़ा) है। उसमें बकष़्रत राय से फ़त्वा देने वालों को डराना भी है ये भी कहा गया है कि ये इ़ल्म के ह़ासिल न होने से पहले की बात है और ऐसे लोगों के पैदा होने की त़रफ़ इशारा है कि जो मह़ज़ अपने ज़न्न (गुमान) से कलाम करेंगे और इ़ल्म की कोई सनद उनके पास न होगी। ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) ने उ़क़्बा के क़ौल को ख़ास़ मसाइले फ़राइज़ के साथ ख़ास़ किया है इसलिये कि इस इ़ल्मे फ़राइज़ में ग़ालिब त़ौर पर ये मुख़्तलिफ़ क़िस्म की राय, क़ियास व ज़न्न को दख़ल नहीं हो सकता इसलिये कि इसका कोई मुदव्विनशुदा ज़ाब्ता नहीं है। बख़िलाफ़े इ़ल्म के दूसरे शुअ़बों के कि उनमें राय क़ियास को दख़ल है। इस तक़रीर से ह़दीष़े मर्फ़ूअ़ की मुनासबत निकलती है। ह़दीष़े ज़ैल मुराद है।

6724. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे वुहैब ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन त़ाउस ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया बदगुमानी से बचते रहो, क्योंकि गुमान (बदज़नी) सबसे झूठी बात है। आपस में एक-दूसरे की बुराई की तलाश में न लगे रहो न एक-दूसरे से बुग़्ज़ रखो और न पीठ पीछे किसी की बुराई करो बल्कि अल्लाह के बन्दे भाई-भाई बनकर रहो। (राजेअ़ : 5143)

٦٧٢٤- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ، حَدَّثَنَا ابْنُ طَاوُسٍ، عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِيَّاكُمْ وَالظَّنَّ، فَإِنَّ الظَّنَّ أَكْذَبُ الْحَدِيثِ، وَلاَ تَجَسَّسُوا، وَلاَ تَبَاغَضُوا وَلاَ تَدَابَرُوا وَكُونُوا عِبَادَ اللهِ إِخْوَانًا)).

[راجع: ٥١٤٣]

तश्रीह़ : इस ह़दीष़ की मुत़ाबक़त बाब का तर्जुमा से इस त़रह़ पर है कि जब आदमी को क़ुर्आन व ह़दीष़ का इ़ल्म न होगा तो अपने गुमान से फ़ैसला करेगा हुक्म देगा इसमें इ़ल्मे फ़राइज़ भी आ गया।

बाब 3 : नबी करीम ने फ़र्माया कि हमारा कोई वारिष़ नहीं होता, जो कुछ हम छोड़ें वो सब स़दक़ा है

٣- باب قَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ: ((لاَ نُورَثُ مَا تَرَكْنَا صَدَقَةٌ))

6725. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुह़म्मद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे हिशाम बिन उ़र्वा ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको मअ़मर ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुह्री ने, उन्हें उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने और उनसे उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि ह़ज़रत फ़ात़िमा और अ़ब्बास (अ़लैहिस्सलाम) ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) के पास आँह़ज़रत (ﷺ) की त़रफ़ से अपनी मीराष़ का मुत़ालबा करने आए, ये फ़िदक की ज़मीन का मुत़ालबा कर रहे थे और ख़ैबर में भी ह़िस्से का। (राजेअ़ : 3092)

٦٧٢٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ، حَدَّثَنَا هِشَامٌ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ عَائِشَةَ أَنَّ فَاطِمَةَ وَالْعَبَّاسَ عَلَيْهِمَا السَّلاَمُ أَتَيَا أَبَا بَكْرٍ يَلْتَمِسَانِ مِيرَاثَهُمَا مِنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ، وَهُمَا حِينَئِذٍ يَطْلُبَانِ أَرْضَيْهِمَا مِنْ فَدَكٍ وَسَهْمَهُمَا مِنْ خَيْبَرَ. [راجع: ٣٠٩٢]

6726. ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने उनसे कहा कि मैंने आँह़ज़रत (ﷺ) से सुना है आपने फ़र्माया था कि हमारा कोई वारिष़ नहीं होता जो कुछ हम छोड़ें वो सब स़दक़ा है, बिला शुब्हा आले मुह़म्मद उसी माल में से अपना ख़र्च पूरा करेगी। ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने कहा, वल्लाह! मैं कोई ऐसी बात नहीं होने दूँगा बल्कि जिसे मैंने आँह़ज़रत (ﷺ) को करते देखा होगा वो मैं भी करूँगा। बयान किया कि इस पर ह़ज़रत फ़ात़िमा (रज़ि.) ने उनसे ता'ल्लुक़ काट लिया और अपनी मौत तक उनसे कलाम नहीं किया। (राजेअ़ : 3093)

٦٧٢٦- فَقَالَ لَهُمَا أَبُو بَكْرٍ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((لاَ نُورَثُ مَا تَرَكْنَا صَدَقَةٌ، إِنَّمَا يَأْكُلُ آلُ مُحَمَّدٍ مِنْ هَذَا الْمَالِ)) قَالَ أَبُو بَكْرٍ: وَاللهِ لاَ أَدَعُ أَمْرًا رَأَيْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَصْنَعُهُ فِيهِ إِلاَّ صَنَعْتُهُ قَالَ: فَهَجَرَتْهُ فَاطِمَةُ فَلَمْ تُكَلِّمْهُ حَتَّى مَاتَتْ. [راجع: ٣٠٩٣]

शरह़ वह़ीदी में है कि बाद में ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने उनको राज़ी कर लिया था।

6727. हमसे इस्माईल बिन अबान ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, उन्हें यूनुस ने, उन्हें ज़ुह्री ने, उन्हें उ़र्वा ने और उनसे ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया हमारी विराष़त नहीं होती हम जो कुछ भी छोड़ें वो स़दक़ा है। (राजेअ़ : 4034)

٦٧٢٧- حدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ أَبَانَ، أَخْبَرَنَا ابْنُ الْمُبَارَكِ، عَنْ يُونُسَ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: ((لاَ نُورَثُ مَا تَرَكْنَا صَدَقَةٌ)).

[راجع: ٤٠٣٤]

6728. हमसे यह़्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे अ़क़ील ने, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया कि मुझे मालिक बिन औस बिन ह़दष़ान ने ख़बर दी कि मुह़म्मद बिन जुबैर बिन मुत़्इम ने मुझे मालिक बिन औस की इस ह़दीष़ का एक ह़िस्सा ज़िक्र किया था। फिर मैं ख़ुद मालिक बिन औस के पास गया और उनसे ये ह़दीष़ पूछी तो उन्होंने बयान किया कि मैं उ़मर (रज़ि.) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुआ फिर उनके ह़ाजिब यरफ़ा ने जाकर उनसे कहा कि उ़ष़्मान, अ़ब्दुर्रहमान बिन ज़ुबैर और सअ़द आपके पास आना चाहते हैं? उन्होंने कहा कि अच्छा आने दो। चुनाँचे उन्हें अंदर आने की इजाज़त दी। फिर कहा, क्या आप अ़ली व अ़ब्बास (रज़ि.) को भी आने की इजाज़त देंगे? कहा कि हाँ आने दो। चुनाँचे अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा कि अमीरुल मोमिनीन मेरे और अ़ली (रज़ि.) के दरम्यान फ़ैसला कर दीजिए। उ़मर (रज़ि.) ने कहा मैं तुम्हें अल्लाह की क़सम देता हूँ जिसके हुक्म से आसमान और ज़मीन क़ायम हैं। क्या तुम्हें मा'लूम है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया था कि हमारी विराष़त तक़्सीम नहीं होती जो कुछ हम छोड़ें वो सब अल्लाह की राह में स़दक़ा है? इससे मुराद आँह़ज़रत (ﷺ) की ख़ुद अपनी ही ज़ात थी। तमाम ह़ाज़िरीन बोले कि हाँ! आँह़ज़रत (ﷺ) ने ये इर्शाद फ़र्माया था। फिर ह़ज़रत उ़मर, ह़ज़रत अ़ली और ह़ज़रत अ़ब्बास (रज़ि.) की तरफ़ मुतवज्जह हुए और पूछा, क्या तुम्हें मा'लूम है कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने ये फ़र्माया था? उन्होंने भी तस़्दीक़ की कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने ये इर्शाद फ़र्माया था। उ़मर (रज़ि.) ने फ़र्माया फिर मैं अब आप लोगों से इस मामले में बातचीत करूँगा। अल्लाह तआ़ला ने उस फ़ै के मामले में से आँह़ज़रत (ﷺ) के लिये कुछ ह़िस्से मख़्सूस कर दिये जो आपके सिवा किसी और को नहीं मिलता था। चुनाँचे

٦٧٢٨- حدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ عُقَيْلٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ : أَخْبَرَنِي مَالِكُ بْنُ أَوسِ بْنِ الْحَدَثَانِ وَكَانَ مُحَمَّدُ بْنُ جُبَيْرِ بْنِ مُطْعِمٍ ذَكَرَ لِي مِنْ حَدِيثِهِ ذَلِكَ، فَانْطَلَقْتُ حَتَّى دَخَلْتُ عَلَيْهِ فَسَأَلْتُهُ فَقَالَ : انْطَلَقْتُ حَتَّى أَدْخُلَ عَلَى عُمَرَ، فَأَتَاهُ حَاجِبُهُ يَرْفَأُ فَقَالَ: هَلْ لَكَ فِي عُثْمَانَ وَعَبْدِ الرَّحْمَنِ وَالزُّبَيْرِ وَسَعْدٍ؟ قَالَ نَعَمْ، فَأَذِنَ لَهُمْ ثُمَّ قَالَ : هَلْ لَكَ فِي عَلِيٍّ وَعَبَّاسٍ؟ قَالَ : نَعَمْ. قَالَ عَبَّاسٌ : يَا أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ اقْضِ بَيْنِي وَبَيْنَ هَذَا؟ قَالَ: أَنْشُدُكُمْ بِاللهِ الَّذِي بِإِذْنِهِ تَقُومُ السَّمَاءُ وَالأَرْضُ، هَلْ تَعْلَمُونَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((لاَ نُورَثُ مَا تَرَكْنَا صَدَقَةٌ)) يُرِيدُ رَسُولُ اللهِ ﷺ نَفْسَهُ فَقَالَ: الرَّهْطُ قَدْ قَالَ ذَلِكَ، فَأَقْبَلَ عَلَى عَلِيٍّ وَعَبَّاسٍ فَقَالَ : هَلْ تَعْلَمَانِ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ ذَلِكَ؟ قَالاَ : قَدْ قَالَ ذَلِكَ، قَالَ عُمَرُ فَإِنِّي أُحَدِّثُكُمْ عَنْ هَذَا الأَمْرِ إِنَّ اللهَ قَدْ كَانَ خَصَّ رَسُولَهُ ﷺ فِي هَذَا الْفَيْءِ بِشَيْءٍ لَمْ يُعْطِهِ أَحَدًا غَيْرَهُ فَقَالَ عَزَّ وَجَلَّ ﴿مَا أَفَاءَ اللهُ عَلَى رَسُولِهِ - إِلَى قَوْلِهِ -

﴿قَدِيْرٌ﴾ [الحشر: ٧] فَكَانَتْ خَالِصَةً لِرَسُولِ اللهِ ﷺ وَاللهِ مَا احْتَازَهَا دُونَكُمْ وَلاَ اسْتَأْثَرَ بِهَا عَلَيْكُمْ، لَقَدْ أَعْطَاكُمُوهُ وَبَثَّهَا حَتَّى بَقِيَ مِنْهَا هَذَا الْمَالُ فَكَانَ النَّبِيُّ ﷺ يُنْفِقُ عَلَى أَهْلِهِ مِنْ هَذَا الْمَالِ نَفَقَةَ سَنَتِهِ، ثُمَّ يَأْخُذُ مَا بَقِيَ فَيَجْعَلُهُ مَجْعَلَ مَالِ اللهِ، فَفَعَلَ بِذَاكَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ حَيَاتَهُ أَنْشُدُكُمْ بِاللهِ هَلْ تَعْلَمُونَ ذَلِكَ؟ قَالُوا: نَعَمْ، ثُمَّ قَالَ لِعَلِيٍّ وَعَبَّاسٍ: أَنْشُدُكُمَا بِاللهِ هَلْ تَعْلَمَانِ ذَلِكَ؟ قَالاَ: نَعَمْ. فَتَوَفَّى اللهُ نَبِيَّهُ ﷺ فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ: أَنَا وَلِيُّ رَسُولِ اللهِ ﷺ فَقَبَضَهَا، فَعَمِلَ بِمَا عَمِلَ بِهِ رَسُولُ اللهِ ﷺ ثُمَّ تَوَفَّى اللهُ أَبَا بَكْرٍ فَقُلْتُ: أَنَا وَلِيُّ وَلِيِّ رَسُولِ اللهِ ﷺ فَقَبَضْتُهَا سَنَتَيْنِ أَعْمَلُ فِيهَا مَا عَمِلَ رَسُولُ اللهِ ﷺ وَأَبُو بَكْرٍ، ثُمَّ جِئْتُمَانِي وَكَلِمَتُكُمَا وَاحِدَةٌ وَأَمْرُكُمَا جَمِيعٌ جِئْتَنِي تَسْأَلُنِي نَصِيبَكَ مِنِ ابْنِ أَخِيكَ وَأَتَانِي هَذَا يَسْأَلُنِي نَصِيبَ امْرَأَتِهِ مِنْ أَبِيهَا فَقُلْتُ: إِنْ شِئْتُمَا دَفَعْتُهَا إِلَيْكُمَا بِذَلِكَ فَتَلْتَمِسَانِ مِنِّي قَضَاءً غَيْرَ ذَلِكَ، فَوَاللهِ الَّذِي بِإِذْنِهِ تَقُومُ السَّمَاءُ وَالأَرْضُ لاَ أَقْضِي فِيهَا قَضَاءً غَيْرَ ذَلِكَ حَتَّى تَقُومَ السَّاعَةُ، فَإِنْ عَجَزْتُمَا فَادْفَعَاهَا إِلَيَّ فَأَنَا أَكْفِيكُمَاهَا.

[راجع: ٢٩٠٤]

अल्लाह तआला ने फ़र्माया था कि मा अफ़ाअल्लाहु अला रसूलिही इर्शाद क़दीर तक (अल.हश्र : 7)। तो ये ख़ास आँहज़रत (ﷺ) का हिस्सा था। अल्लाह की क़सम! आँहज़रत (ﷺ) ने उसे तुम्हारे लिये ही मख़्सूस किया था और तुम्हारे सिवा किसी को इस पर तरजीह नहीं दी थी, तुम्हीं को उसमें से देते थे और तक़्सीम करते थे। आख़िर उसमें से ये माल बाक़ी रह गया और आँहज़रत (ﷺ) उसमें से अपने घरवालों के लिये साल भर का ख़र्चा लेते थे, उसके बाद जो कुछ बाक़ी बचता उसे उन मसारिफ़ में ख़र्च करते जो अल्लाह के मुक़र्ररकर्दा हैं। आँहज़रत (ﷺ) का ये तर्ज़े अमल आपकी ज़िंदगी भर रहा। मैं आपको अल्लाह की क़सम देकर कहता हूँ, क्या आप लोगों को मा'लूम है? लोगों ने कहा कि हाँ। फिर आपने अली और अब्बास (रज़ि.) से पूछा, मैं अल्लाह की क़सम देकर पूछता हूँ क्या आप लोगों को मा'लूम है? उन्होंने भी कहा कि हाँ। फिर आँहज़रत (ﷺ) की वफ़ात हो गई और अबूबक्र (रज़ि.) ने कहा कि अब मैं आँहज़रत (ﷺ) का नाइब हूँ चुनाँचे उन्होंने उस पर क़ब्ज़े में रखकर उस तर्ज़े अमल को जारी रखा जो आँहज़रत (ﷺ) का उसमें था। अल्लाह तआला ने अबूबक्र (रज़ि.) को भी वफ़ात दी तो मैंने कहा कि मैं आँहज़रत (ﷺ) के नाइब का नाइब हूँ। मैं भी दो साल से इस पर क़ाबिज़ हूँ और इस माल में वही करता हूँ जो रसूले करीम (ﷺ) और अबूबक्र (रज़ि.) ने किया। फिर आप दोनों मेरे पास आए हो। आप दोनों की बात एक है और मामला भी एक ही है। आप (अब्बास रज़ि.) मेरे पास अपने भतीजे की मीराष़ से अपना हिस्सा लेने आए हो और आप (अली रज़ि.) अपनी बीवी का हिस्सा लेने आए हो जो उनके वालिद की तरफ़ से उन्हें मिलता। मैं कहता हूँ कि अगर आप दोनों चाहते हैं तो मैं उसे आपको दे सकता हूँ लेकिन आप लोग उसके सिवा कोई और फ़ैसला चाहते हैं तो उस ज़ात की क़सम! जिसके हुक्म से आसमान और ज़मीन क़ायम हैं, मैं इस माल में इसके सिवा और कोई फ़ैसला नहीं कर सकता, क़यामत तक, अगर आप इसके मुताबिक़ अमल नहीं कर सकते तो वो जायदाद मुझे वापस कर दीजिए मैं उसका भी बन्दोबस्त कर लूँगा।

(राजेअ : 2904)

तश्रीह : हुआ ये था कि ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने ये सब जायदाद जो ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने अपनी ख़िलाफ़त में ह़ज़रत फ़ात़िमा और ह़ज़रत अ़ब्बास (रज़ि.) को नहीं दी थी। ह़ज़रत अ़ब्बास और ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) के ह़वाले कर दी थी इस शर्त़ पर कि वो इस जायदाद को उन्हीं कामों में ख़र्च करेंगे जिनमें आँह़ज़रत (ﷺ) ख़र्च किया करते थे या'नी ये सुपुर्दगी मह़ज़ इंतिज़ाम के त़ौर पर थी न बत़ौर तमल्लुक और तक़्सीम के। इस ह़दीष़ में उसी की बाबत क़ज़िया मज़्कूर है। ह़ज़रत फ़ात़िमा (रज़ि.) ने ह़दीष़, **ला नरिषु वला नूरोषु मा तरक्ना स़दक़ा** ख़ुद रसूले करीम (ﷺ) से नहीं सुनी थी। इसीलिये वो आ़म क़ानून फ़राइज़ के मुत़ाबिक़ तर्का की त़लबगार हुईं। मगर फ़र्माने नबवी बरह़क़ था। इसीलिये उनको ये तर्का तक़्सीम नहीं किया गया जिस पर वो ख़फ़ा हो गई थीं। दूसरी रिवायत में यूँ है कि बाद में ह़ज़रत स़िद्दीक़े अकबर (रज़ि .) ने ह़ज़रत फ़ात़िमा (रज़ि.) को राज़ी कर लिया था (देखो शरह़ वह़ीदी पारा 27 पेज नं. 92)। (ह़क़ीक़त ये है ह़ज़रत फ़ात़िमा रज़ि. अबूबक्र स़िद्दीक़ रज़ि. से नाराज़ ही नहीं हुई थीं बल्कि उन्हें जब ह़दीष़ सुनाई गई तो वो ख़ामोशी के साथ वापस चली गईं और वफ़ात तक अबूबक्र से उस विराष़त के सिलसिले में कोई बातचीत नहीं की। **फ़मा तकल्लम्त बअ़दहू** अ़ब्दुर्रशीद तौंस्वी)

6729. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, कहा मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे अबुज़्ज़िनाद ने, उनसे अअ़रज ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया मेरा वरष़ा दीनार की शक्ल में तक़्सीम नहीं होगा। मैंने अपनी बीवियों के ख़र्चे और अपने आ़मिलो की उज्रत के बाद जो कुछ छोड़ा है वो सब स़दक़ा है। (राजेअ़ : 2776)

٦٧٢٩- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، قَالَ حَدَّثَنِي مَالِكٌ، عَنْ أَبِي الزِّنَادِ عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((لاَ يَقْتَسِمُ وَرَثَتِي دِينَارًا مَا تَرَكْتُ بَعْدَ نَفَقَةِ نِسَائِي وَمُؤُونَةِ عَامِلِي فَهُوَ صَدَقَةٌ)).

[راجع: ٢٧٧٦]

6730. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मस्लमा क़अ़म्बी ने बयान किया, उनसे इमाम मालिक ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने कि जब रसूले करीम (ﷺ) की वफ़ात हुई तो आपकी बीवियों ने चाहा कि ह़ज़रत उ़ष़्मान (रज़ि.) को ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) के पास भेजें, अपनी मीराष़ त़लब करने के लिये। फिर ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने याद दिलाया। क्या आँह़ज़रत (ﷺ) ने नहीं फ़र्माया था कि हमारी विराष़त तक़्सीम नहीं होती, हम जो कुछ छोड़ जाएँ वो सब स़दक़ा है। (राजेअ़ : 4034)

٦٧٣٠- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْلَمَةَ، عَنْ مَالِكٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ عُرْوَةَ. عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّ أَزْوَاجَ النَّبِيِّ ﷺ حِينَ تُوُفِّيَ رَسُولُ اللهِ ﷺ أَرَدْنَ أَنْ يَبْعَثْنَ عُثْمَانَ إِلَى أَبِي بَكْرٍ يَسْأَلْنَهُ مِيرَاثَهُنَّ فَقَالَتْ عَائِشَةُ : أَلَيْسَ قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((لاَ نُورَثُ مَا تَرَكْنَا صَدَقَةٌ؟)).

[راجع: ٤٠٣٤]

बाब 4 : नबी करीम (ﷺ) का इर्शाद कि जिसने माल छोड़ा वो उसके बाल-बच्चों व अहले ख़ाना के लिये है

٤- باب قَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ: ((مَنْ تَرَكَ مَالاً فَلأَهْلِهِ))

6731. हमसे अ़ब्दान ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, कहा हमको यूनुस बिन यज़ीद ऐली ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने शिहाब ने, कहा मुझसे अबू सलमा बिन

٦٧٣١- حَدَّثَنَا عَبْدَانُ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ، أَخْبَرَنَا يُونُسُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، حَدَّثَنِي

أَبُو سَلَمَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((أَنَا أَوْلَى بِالْمُؤْمِنِينَ مِنْ أَنْفُسِهِمْ، فَمَنْ مَاتَ وَعَلَيْهِ دَيْنٌ وَلَمْ يَتْرُكْ وَفَاءً فَعَلَيْنَا قَضَاؤُهُ، وَمَنْ تَرَكَ مَالاً فَلِوَرَثَتِهِ)). [راجع: ٢٢٩٨]

अ़ब्दुर्रहमान ने बयान किया और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया मैं मोमिनों का ख़ुद उनसे ज़्यादा हक़दार हूँ। पस उनमें से जो कोई क़र्ज़दार मरेगा और अदायगी के लिये कुछ न छोड़ेगा तो हम पर उसकी अदायगी की ज़िम्मेदारी है और जिसने कोई माल छोड़ा होगा वो उसके वारिषों का हिस्सा है। (राजेअ : 2298)

आप (ﷺ) उम्मत के लिये बाप के दर्जे में थे इसलिये आपने ये इर्शाद फ़र्माया और इसीलिये आप अपने ज़िम्मे ले लेते और अदा फ़र्मा देते आपका यही तर्ज़े अ़मल रहा। (ﷺ)

٥- باب مِيرَاثِ الْوَلَدِ مِنْ أَبِيهِ وَأُمِّهِ

وَقَالَ زَيْدُ بْنُ ثَابِتٍ، إِذَا تَرَكَ رَجُلٌ أَوِ امْرَأَةٌ بِنْتًا فَلَهَا النِّصْفُ، وَإِنْ كَانَتَا اثْنَتَيْنِ أَوْ أَكْثَرَ فَلَهُنَّ الثُّلُثَانِ، وَإِنْ كَانَ مَعَهُنَّ ذَكَرٌ بُدِئَ بِمَنْ شَرِكَهُمْ فَيُؤْتَى فَرِيضَتَهُ فَمَا بَقِيَ فَلِلذَّكَرِ مِثْلُ حَظِّ الأُنْثَيَيْنِ.

बाब 5 : लड़के की मीराष़ उसके बाप और माँ की तरफ़ से क्या होगी?

और ज़ैद बिन ष़ाबित ने कहा कि जब किसी मर्द या औरत न कोई लड़की छोड़ी हो तो उसका हिस्सा आधा होता है और अगर दो लड़कियाँ हों या ज़्यादा हों तो उन्हें दो तिहाई हिस्से मिलेगा और अगर उनके साथ कोई (उनका भाई) लड़का भी हो तो पहले विराष़त के और शरिका को दिया जाएगा और जो बाक़ी रहेगा उसमें से लड़के को दो लड़कियों के बराबर हिस्सा दिया जाएगा।

٦٧٣٢- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ، حَدَّثَنَا ابْنُ طَاوُسٍ، عَنْ أَبِيهِ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((أَلْحِقُوا الْفَرَائِضَ بِأَهْلِهَا فَمَا بَقِيَ فَهُوَ لأَوْلَى رَجُلٍ ذَكَرٍ)).

[أطرافه في: ٦٧٣٥، ٦٧٣٧، ٦٧٤٦].

6732. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे वुहैब ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल्लाह इब्ने ताउस ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने और उनसे ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया मीराष़ उसके हक़दारों तक पहुँचा दो और जो कुछ बाक़ी बचे वो सबसे ज़्यादा क़रीबी मर्दे अ़ज़ीज़ का हिस्सा है। (दीगर मक़ामात : 6735, 6737, 6746)

٦- باب مِيرَاثِ الْبَنَاتِ

बाब 6 : लड़कियों की मीराष़ का बयान

٦٧٣٣- حَدَّثَنَا الْحُمَيْدِيُّ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، حَدَّثَنَا الزُّهْرِيُّ أَخْبَرَنِي عَامِرُ بْنُ سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ، عَنْ أَبِيهِ قَالَ: مَرِضْتُ بِمَكَّةَ مَرَضًا فَأَشْفَيْتُ مِنْهُ عَلَى الْمَوْتِ فَأَتَانِي النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَعُودُنِي فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ إِنَّ لِي مَالاً كَثِيرًا وَلَيْسَ يَرِثُنِي إِلاَّ ابْنَتِي

6733. हमसे इमाम हुमैदी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, कहा हमसे ज़ुह्री ने बयान किया, कहा मुझको आ़मिर बिन सअ़द बिन अबी वक़्क़ास़ ने ख़बर दी और उनसे उनके वालिद ने बयान किया कि मैं मक्का मुकर्रमा में (हज्जतुल विदाअ़ में) बीमार पड़ गया और मौत के क़रीब पहुँच गया। फिर आँह़ज़रत (ﷺ) मेरी एयादत केलिये तशरीफ़ लाए तो मैंने अ़र्ज़ किया, या रसूलल्लाह! मेरे पास बहुत ज़्यादा माल है और एक लड़की के सिवा उसका कोई वारिष़ नहीं तो क्या मुझे

أَفَأَتَصَدَّقُ بِثُلُثَيْ مَالِي؟ قَالَ ((لاَ))، قَالَ: قُلْتُ فَالشَّطْرُ قَالَ: ((لاَ)). قُلْتُ: الثُّلُثُ قَالَ: ((الثُّلُثُ كَبِيرٌ إِنَّكَ إِنْ تَرَكْتَ وَلَدَكَ أَغْنِيَاءَ خَيْرٌ مِنْ أَنْ تَتْرُكَهُمْ عَالَةً يَتَكَفَّفُونَ النَّاسَ، وَإِنَّكَ لَنْ تُنْفِقَ نَفَقَةً إِلاَّ أُجِرْتَ عَلَيْهَا، حَتَّى اللُّقْمَةَ تَرْفَعُهَا إِلَى فِي امْرَأَتِكَ)) فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ أُخَلَّفُ عَنْ هِجْرَتِي فَقَالَ: ((لَنْ تُخَلَّفَ بَعْدِي فَتَعْمَلَ عَمَلاً تُرِيدُ بِهِ وَجْهَ اللهِ إِلاَّ ازْدَدْتَ بِهِ رِفْعَةً وَدَرَجَةً، وَلَعَلَّ أَنْ تُخَلَّفَ بَعْدِي حَتَّى يَنْتَفِعَ بِكَ أَقْوَامٌ وَيُضَرَّ بِكَ آخَرُونَ، لَكِنِ الْبَائِسُ سَعْدُ بْنُ خَوْلَةَ)) يَرْثِي لَهُ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ مَاتَ بِمَكَّةَ. قَالَ سُفْيَانُ: وَسَعْدُ بْنُ خَوْلَةَ رَجُلٌ مِنْ بَنِي عَامِرِ بْنِ لُؤَيٍّ.

अपने माल के दो तिहाई हिस्से का सदक़ा कर देना चाहिये? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि नहीं। बयान किया कि मैंने अ़र्ज़ किया फिर आधे का कर दूँ? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि नहीं। मैंने अ़र्ज़ किया एक तिहाई का? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि हाँ, तिहाई भी बहुत है, अगर तुम अपने बच्चों को मालदार छोड़ो तो ये उससे बेहतर है कि उन्हें तंगदस्त छोड़ो और वो लोगों के सामने हाथ फैलाते फिरें और तुम जो ख़र्च भी करोगे उस पर तुम्हें ष़वाब मिलेगा यहाँ तक कि उस लुक़्मे पर भी ष़वाब मिलेगा जो तुम अपनी बीवी के मुँह में रखोगे। फिर मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! क्या मैं अपनी हिजरत में पीछे रह जाऊँगा? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अगर मेरे बाद तुम पीछे रह भी गये तब भी जो अ़मल तुम करोगे और उससे अल्लाह की ख़ुशनूदी मक़्सूद होगी तो उसके ज़रिये दर्जा व मर्तबा बुलंद होगा और ग़ालिबन तुम मेरे बाद ज़िंदा रहोगे और तुमसे बहुत से लोगों को फ़ायदा पहुँचेगा और बहुतों को नुक़्सान पहुँचेगा। क़ाबिले अफ़सोस तो सअ़द इब्ने ख़ौला हैं। आँहज़रत (ﷺ) ने उनके बारे में इसलिये अफ़सोस का इज़्हार किया कि (हिजरत के बाद इत्तिफ़ाक़ से) उनकी वफ़ात मक्का मुकर्रमा में ही हो गई। सुफ़यान ने बयान किया कि सअ़द इब्ने ख़ौला (रज़ि.) बनी आ़मिर बिन लुइ के एक आदमी थे।

आँहज़रत (ﷺ) ने सअ़द बिन अबी वक़्क़ास के लिये जैसा फ़र्माया था वैसा ही हुआ, वो वफ़ाते नबवी के बाद काफ़ी दिनों तक ज़िंदा रहे और तारीख़े इस्लाम में एक अ़ज़ीम मुजाहिद और फ़ातेह (विजेता) की हैषियत से नामवर हुए जैसा कि इतिहास की किताबों में तफ़्सीलात मौजूद हैं। कुछ ऊपर 70 साल की उम्र में 55 हिजरी में इंतिक़ाल फ़र्माया।

٦٧٣٤- حَدَّثَنَا مَحْمُودٌ، حَدَّثَنَا أَبُو النَّضْرِ، حَدَّثَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ شَيْبَانُ، عَنْ أَشْعَثَ، عَنِ الأَسْوَدِ بْنِ يَزِيدَ قَالَ: أَتَانَا مُعَاذُ بْنُ جَبَلٍ بِالْيَمَنِ مُعَلِّمًا وَأَمِيرًا، فَسَأَلْنَاهُ عَنْ رَجُلٍ تُوُفِّيَ وَتَرَكَ ابْنَتَهُ أُخْتَهُ فَأَعْطَى الابْنَةَ النِّصْفَ وَالأُخْتَ النِّصْفَ.

[طرفه في : ٦٧٤١].

6734. मुझसे महमूद बिन ग़ीलान ने बयान किया, कहा हमसे अबुन् नज़्र ने बयान किया, कहा हमसे अबू मुआ़विया शैबान ने बयान किया, उनसे अश्अ़ष़ बिन अबी शअ़्शाअ ने, उनसे अस्वद बिन यज़ीद ने बयान किया कि हज़रत मुआ़ज़ बिन जबल (रज़ि.) हमारे यहाँ यमन में मुअ़ल्लिम व अमीर बनकर तशरीफ़ लाए। हमने उनसे एक ऐसे शख़्स के तर्के के बारे में पूछा जिसकी वफ़ात हुई हो और उसने एक बेटी और एक बहन छोड़ी हो और उसने अपनी बेटी को आधा और बहन को भी आधा दिया हो। (दीगर मक़ाम : 6741)

٧- باب مِيرَاثِ ابْنِ الابْنِ إِذَا لَمْ يَكُنِ ابْنٌ

बाब 7 : अगर किसी के लड़का न हो तो पोते की मीराष़ का बयान?

ज़ैद बिन ष़ाबित ने कहा कि बेटों की औलाद बेटों के दर्जे में है अगर मरने वाले का कोई बेटा न हो। ऐसी सूरत में पोते बेटों की तरह और पोतियाँ बेटियों की तरह होंगी। उन्हें उसी तरह विराष़त मिलेगी जिस तरह बेटों और बेटियों को मिलती है और उनकी वजह से बहुत से अ़ज़ीज़ व अक़ारिब उसी तरह विराष़त के ह़क़ से मह़रूम हो जाएँगे जिस तरह बेटों और बेटियों की मौजूदगी मे मह़रूम हो जाते हैं, अल्बत्ता अगर बेटा मौजूद हो तो पोता विराष़त में कुछ नहीं पाएगा।

وَقَالَ زَيْدٌ :وَ وَلَدُ الأَبْنَاءِ بِمَنْزِلَةِ الْوَلَدِ، إِذَا لَمْ يَكُنْ دُونَهُمْ ذَكَرٌ ذَكَرُهُمْ كَذَكَرِهِمْ، وَأُنْثَاهُمْ كَأُنْثَاهُمْ يَرِثُونَ كَمَا يَرِثُونَ، وَيَحْجُبُونَ كَمَا يَحْجُبُونَ وَلاَ يَرِثُ وَلَدُ الابْنِ مَعَ الابْنِ.

इस सूरत में दादा उसके लिये ह़स्बे शरीअ़त वसिय्यत करेगा। उस सूरत में उसे तर्का में से मिल जाएगा।

6735. हमसे मुस्लिम बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे वुहैब ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल्लाह इब्ने ताउस ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया पहले मीराष़ उनके वारिष़ों तक पहुँचा दो और जो बाक़ी रह जाए वो उसको मिलेगा जो मर्द मय्यत का बहुत नज़दीकी रिश्तेदार हो। (राजेअ़ : 6732)

٦٧٣٥- حَدَّثَنَا مُسْلِمُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ، حَدَّثَنَا ابْنُ طَاوُسٍ، عَنْ أَبِيهِ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ : قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((أَلْحِقُوا الْفَرَائِضَ بِأَهْلِهَا فَمَا بَقِيَ فَهُوَ لأَوْلَى رَجُلٍ ذَكَرٍ)). [راجع: ٦٧٣٢]

तश्रीह : मष़लन बेटा हो तो पोते को कुछ न मिलेगा, पोता हो तो पड़पोते को कुछ न मिलेगा। अगर कोई मय्यत शौहर और बाप और बेटी और पोता छोड़ जाए तो शौहर को चौथाई बाप का छठा हिस़्सा बेटी को आधा हिस़्सा देकर बक़िया माल पोता-पोती में तक़्सीम होगा। **लिज़्ज़िकरि मिष़्लु ह़ज़्ज़ल उन्ष़ययनि।** (सूरह निसा : 11)

बाब 8 : अगर बेटी की मौजूदगी में पोती भी हो

٨- باب مِيرَاثِ ابْنَةِ ابْنٍ مَعَ ابْنَةٍ

6736. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने, कहा हमसे अबू क़ैस अ़ब्दुर्रह़मान बिन ष़रवान ने, उन्होंने हुज़ैल बिन शुरह़बील से सुना, बयान किया कि अबू मूसा (रज़ि.) से बेटी, पोती और बहन की मीराष़ के बारे में पूछा गया तो उन्होने कहा कि बेटी को आधा मिलेगा और बहन को आधा मिलेगा और तू इब्ने मसऊ़द (रज़ि.) के यहाँ जा, शायद वो भी यही बताएँगे। फिर इब्ने मसऊ़द (रज़ि.) से पूछा गया और अबू मूसा (रज़ि.) की बात भी पहुँचाई गई तो उन्होंने कहा कि मैं अगर ऐसा फ़त्वा दूँ तो गुमराह हो चुका और ठीक रास्ते से भटक गया। मैं तो इसमें वही फ़ैस़ला करूँगा जो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने किया था कि बेटी को आधा मिलेगा, पोती को छठा हिस़्सा मिलेगा, इस तरह दो तिहाई पूरी हो जाएगी और फिर जो बाक़ी बचेगा वो बहन को मिलेगा। हम फिर अबू मूसा (रज़ि.) के पास आए और इब्ने

٦٧٣٦- حَدَّثَنَا آدَمُ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، حَدَّثَنَا أَبُو قَيْسٍ، سَمِعْتُ هُزَيْلَ بْنَ شُرَحْبِيلَ قَالَ: سُئِلَ أَبُو مُوسَى عَنِ ابْنَةٍ وَابْنَةِ ابْنٍ وَأُخْتٍ فَقَالَ : لِلابْنَةِ النِّصْفُ، وَلِلأُخْتِ النِّصْفُ، وَأْتِ ابْنَ مَسْعُودٍ فَسَيُتَابِعُنِي فَسُئِلَ ابْنُ مَسْعُودٍ وَأُخْبِرَ بِقَوْلِ أَبِي مُوسَى فَقَالَ: لَقَدْ ضَلَلْتُ إِذًا، وَمَا أَنَا مِنَ الْمُهْتَدِينَ أَقْضِي فِيهَا بِمَا قَضَى النَّبِيُّ ﷺ لِلابْنَةِ النِّصْفُ، وَلابْنَةِ الابْنِ السُّدُسُ تَكْمِلَةَ الثُّلُثَيْنِ، وَمَا بَقِيَ

فَلِلأُخْتِ، فَأَتَيْنَا أَبَا مُوسَى فَأَخْبَرْنَاهُ بِقَوْلِ ابْنِ مَسْعُودٍ فَقَالَ: لاَ تَسْأَلُونِي مَا دَامَ هَذَا الْحَبْرُ فِيكُمْ.[طرفه في : ٦٧٤٢].

मसऊद (रज़ि.) की बातचीत उन तक पहुँचाई तो उन्होंने कहा कि जब तक ये आलिम तुममें मौजूद हैं मुझसे मसाइल न पूछा करो। (दीगर मक़ाम : 6742)

तश्रीह : ह़ज़रत सलमान फ़ारसी भी इस मसले में यही हुक्म देते थे जो अबू मूसा (रज़ि.) से मरवी था कहते हैं कि उसके बाद अबू मूसा ने अपने क़ौल से रुजूअ कर लिया था। यहाँ से मुक़ल्लिदीने जामेदीन को सबक़ लेना चाहिये कि ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने जब ह़दीष़ बयान की तो ह़ज़रत अबू मूसा ने अपने क़यास और राय को छोड़ दिया बल्कि ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) के सामने अपने को नाक़ाबिले फ़त्वा क़रार दिया। ईमानदारी और इंस़ाफ़ परवरी उसी का नाम है। **दुऊ़ कुल्ल क़ौलिन इन्द क़ौलि मुह़म्मद (ﷺ)**

٩- باب مِيرَاثِ الْجَدِّ مَعَ الأَبِ وَالإِخْوَةِ

बाब 9 : बाप या भाईयों की मौजूदगी में दादा की मीराष़ का बयान

وَقَالَ أَبُو بَكْرٍ وَابْنُ عَبَّاسٍ وَابْنُ الزُّبَيْرِ: الْجَدُّ أَبٌ وَقَرَأَ ابْنُ عَبَّاسٍ: ﴿يَا بَنِي آدَمَ﴾ ﴿وَاتَّبَعْتُ مِلَّةَ آبَائِي إِبْرَاهِيمَ وَإِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ﴾ [يوسف : ٣٨] وَلَمْ يُذْكَرْ أَنَّ أَحَدًا خَالَفَ أَبَا بَكْرٍ فِي زَمَانِهِ وَأَصْحَابُ النَّبِيِّ ﷺ مُتَوَافِرُونَ وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: يَرِثُنِي ابْنُ ابْنِي دُونَ إِخْوَتِي، وَلاَ أَرِثُ أَنَا ابْنَ ابْنِي وَيُذْكَرُ عَنْ عُمَرَ وَعَلِيٍّ، وَابْنِ مَسْعُودٍ وَزَيْدٍ أَقَاوِيلُ مُخْتَلِفَةٌ.

अबूबक्र, इब्ने अ़ब्बास और इब्ने ज़ुबैर (रज़ि.) ने फ़र्माया कि दादा, बाप की त़रह है? और ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने ये आयत पढ़ी, ऐ आदम के बेटों! और मैंने इत्तिबाअ़ की है अपने आबा इब्राहीम, इस्ह़ाक़ और यअ़क़ूब की मिल्लत की, और इसका ज़िक्र नहीं मिलता कि किसी ने ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) से आपके ज़माने में इख़्तिलाफ़ किया हो ह़ालाँकि रसूलुल्लाह (ﷺ) के स़ह़ाबा की ता'दाद उस ज़माने में बहुत थी और ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा कि मेरे वारिष़ मेरे पोते होंगे, भाई नहीं होंगे और मैं अपने पोतों का वारिष़ नहीं होऊँगा। उ़मर, अ़ली, इब्ने मसऊ़द और ज़ैद (रज़ियल्लाहु अ़न्हुम) से मुख़्तलिफ़ अक़्वाल मन्क़ूल हैं।

तश्रीह : इस पर इत्तिफ़ाक़ है कि बाप के होते दादा को कुछ नहीं मिलता। अकष़र उ़लमा के नज़दीक दादा सब बातों में बाप की त़रह है। जब मय्यत का बाप मौजूद न हो और दादा मौजूद हो। मगर चंद बातों में फ़र्क़ है एक ये कि बाप से ह़क़ीक़ी और अ़ल्लाती भाई मह़रूम होते हैं और दादा से मह़रूम नहीं होते। दूसरे ये कि शौहर या बीवी और बाप के साथ माँ को बचे हुए माल का तिहाई मिलता है। तीसरे ये कि दादी को बाप के होते कुछ नहीं मिलता मगर दादा के होते हुए वो वारिष़ होती है। क़स्तलानी वग़ैरह।

ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) कहते हैं, दादा को एक एक, दो भाईयों के साथ मुक़ासमा (बंटवारा) होगा अगर उससे ज़्यादा हों तो दादा को तिहाई माल दिया जाएगा और औलाद के साथ दादा को छठा ह़िस्सा मिलेगा। ये दारमी ने निकाला और एक रिवायत में है कि दादा के बाब में ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने मुख़्तलिफ़ फ़ैसले किये हैं और इब्ने अबी शैबा और मुह़म्मद बिन नस्र ने ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) से निकाला कि दादा को छः भाइयों के साथ एक भाई के मिष़्ल ह़िस्सा दिलाया और अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) से दारमी ने निकाला कि उन्होंने मय्यत के माल में से शौहर को आधा ह़िस्सा और माँ को बचे हुए का तिहाई ह़िस्सा या'नी कुल माल का सुदुस और भाई को एक ह़िस्सा और दादा को एक ह़िस्सा दिलाया और ज़ैद बिन ष़ाबित से अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने निकाला कि दो तिहाई माल में दादा को भाइयों के साथ शरीक करते जब तिहाई माल तक पहुँच जाता तो दादा को एक तिहाई दिलाते और बाक़ी बचा भाइयों को और अ़ल्लाती भाई के साथ दादा का मुक़ासमा करते लेकिन फिर

वो माल ह़क़ीक़ी भाई को दिला देते और माँ के साथ अख़्याफ़ी भाई को कुछ न दिलाते। क़स्तलानी ने कहा दूसरे फ़ुक़हा ने ज़ैद के ख़िलाफ़ किया है उन्होंने कहा ह़क़ीक़ी भाई के होते अ़ल्लाती को कुछ न मिलेगा तो मुक़ासमा की क्या ज़रूरत है? (वह़ीदी)

٦٧٣٧- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ، عَنِ ابْنِ طَاوُسٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((أَلْحِقُوا الْفَرَائِضَ بِأَهْلِهَا، فَمَا بَقِيَ فَلأَوْلَى رَجُلٍ ذَكَرٍ)). [راجع: ٦٧٣٢]

6737. हमसे सुलैमान बिन ह़र्ब ने बयान किया, कहा हमसे वुहैब ने बयान किया, उनसे इब्ने त़ाउस ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया मीराष़ उसके ह़क़दार तक पहुँचा और जो बाक़ी रह जाए वो सबसे क़रीब वाले मर्द को दे दो।
(राजेअ़ : 6732)

٦٧٣٨- حَدَّثَنَا أَبُو مَعْمَرٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ، حَدَّثَنَا أَيُّوبَ، عَنْ عِكْرِمَةَ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: أَمَّا الَّذِي قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((لَوْ كُنْتُ مُتَّخِذًا مِنْ هَذِهِ الأُمَّةِ خَلِيلاً لاَتَّخَذْتُهُ، وَلَكِنْ أُخُوَّةُ الإِسْلاَمِ أَفْضَلُ - أَوْ قَالَ خَيْرٌ - فَإِنَّهُ أَنْزَلَهُ أَبًا - أَوْ قَالَ: قَضَاهُ أَبًا)). [راجع: ٤٦٧]

6738. हमसे अबू मअ़मर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अ़ब्दुल वारिष़ ने बयान किया, उन्होने कहा हमसे अय्यूब ने बयान किया, उनसे इक्रिमा ने और उनसे ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने जो ये फ़र्माया है कि अगर मैं इस उम्मत के किसी आदमी को ख़लील बनाता तो उनको (अबूबक्र रज़ि. को) ख़लील बनाता, लेकिन इस्लाम का ता'ल्लुक़ ही सबसे बेहतर है तो उसमें आँह़ज़रत (ﷺ) ने दादा को बाप के दर्जे में रखा है। (राजेअ़ : 467)

١٠- باب مِيرَاثِ الزَّوْجِ مَعَ الْوَلَدِ وَغَيْرِهِ

बाब 10 : औलाद के साथ शौहर को क्या मिलेगा?

٦٧٣٩- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ، عَنْ وَرْقَاءَ، عَنِ ابْنِ أَبِي نَجِيحٍ، عَنْ عَطَاءٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: كَانَ الْمَالُ لِلْوَلَدِ وَكَانَتِ الْوَصِيَّةُ لِلْوَالِدَيْنِ، فَنَسَخَ اللهُ مِنْ ذَلِكَ مَا أَحَبَّ فَجَعَلَ لِلذَّكَرِ مِثْلَ حَظِّ الأُنْثَيَيْنِ وَجَعَلَ لِلأَبَوَيْنِ لِكُلِّ وَاحِدٍ مِنْهُمَا السُّدُسَ، وَجَعَلَ لِلْمَرْأَةِ الثُّمُنَ وَالرُّبُعَ وَلِلزَّوْجِ الشَّطْرَ وَالرُّبُعَ. [راجع: ٢٧٤٧]

6739.हमसे मुह़म्मद बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उनसे वरक़ा ने बयान किया, उनसे इब्ने अबी नजीह़ ने बयान किया, उनसे अ़त़ा ने और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि पहले माल की औलाद मुस्तह़िक़ थी और वालिदैन को वस़िय्यत का ह़क़ था। फिर अल्लाह तआ़ला ने उसमें से जो चाहा मन्सूख़ कर दिया और लड़कों को लड़कियों के दुगुना ह़क़ दिया और वालिदैन को और उनमें से हर एक को छठे हिस़्से का मुस्तह़िक़ क़रार दिया और बीवी को आठवीं और चौथे हिस़्से का ह़क़दार क़रार दिया और शौहर को आधे या चौथाई का ह़क़दार क़रार दिया। (राजेअ़ : 2747)

बाब 11 : बीवी और शौहर को औलाद वग़ैरह के साथ क्या मिलेगा

١١- باب مِيرَاثِ الْمَرْأَةِ وَالزَّوْجِ مَعَ الْوَلَدِ وَغَيْرِهِ

6740. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे इब्नुल मुसय्यब ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने बनी लह़यान की एक औरत मलिया बिन्ते उ़वैमिर के बच्चे के बारे में जो एक औरत की मार से मुर्दा पैदा हुआ था कि मारने वाली औरत को ख़ूँबहा के त़ौर पर एक ग़ुलाम या लौण्डी अदा करने का हुक्म फ़र्माया था। फिर वो औरत बच्चा गिराने वाली जिसके बारे में आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़ैस़ला दिया था मर गई तो आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़ैस़ला दिया कि उसकी मीराष़ उसके लड़कों और शौहर को दे दी जाए और ये दियत अदा करने का हुक्म उसके कुंबा वालों को दिया था। (राजेअ : 5758)

٦٧٤٠- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنِ ابْنِ الْمُسَيَّبِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّهُ قَالَ: قَضَى رَسُولُ اللَّهِ ﷺ فِي جَنِينِ امْرَأَةٍ مِنْ بَنِي لَحْيَانَ سَقَطَ مَيِّتًا بِغُرَّةٍ عَبْدٍ أَوْ أَمَةٍ ثُمَّ إِنَّ الْمَرْأَةَ الَّتِي قَضَى عَلَيْهَا بِالْغُرَّةِ تُوُفِّيَتْ فَقَضَى رَسُولُ اللَّهِ ﷺ بِأَنَّ مِيرَاثَهَا لِبَنِيهَا وَزَوْجِهَا وَأَنَّ الْعَقْلَ عَلَى عَصَبَتِهَا.
[راجع: ٥٧٥٨]

तश्रीह : मारने वाली औरत उम्मे अ़क़ीक़ा बिन्ते मरवह़ थी, ख़त़ा या शिब्हे अ़मद की दियत कुंबेवालों पर होती है इसलिये दियत अदा करने का हुक्म कुंबेवालों को दिया। बाब का तर्जुमा इससे निकला कि आपने तर्का औरत के शौहर और बेटों को दिलाया तो मा'लूम हुआ कि शौहर औलाद के साथ वारिष़ होता है और जब शौहर औलाद के साथ अपनी औरत का वारिष़ हुआ तो औरत भी औलाद के साथ अपने शौहर की वारिष़ होगी। (अल्ह़म्दु लिल्लाह आज मस्जिदे अहले ह़दीष़ रानी बनूर में नज़रे ष़ानी का काम यहाँ तक पूरा किया गया। यौमे जुम्आ 13 शव्वाल 1396हिजरी)

बाब 12 : बेटियों की मौजूदगी मे बहनें अ़सबा हो जाती हैं

١٢- باب مِيرَاثِ الأَخَوَاتِ مَعَ الْبَنَاتِ عَصَبَةً

6741. हमसे बिश्र बिन ख़ालिद ने बयान किया, कहा हमसे मुह़म्मद बिन जा'फ़र ने बयान किया, उनसे शुअ़बा बिन ह़ज्जाज ने, उनसे सुलैमान आ'मश ने,उनसे इब्राहीम नख़ई ने और उनसे अस्वद बिन यज़ीद ने बयान किया कि ह़ज़रत मुआ़ज़ बिन जबल (रज़ि.) ने रसूले करीम (ﷺ) के ज़माने में हमारे दरम्यान ये फ़ैस़ला किया था कि आधा बेटी को मिलेगा और आधा बहन को। फिर सुलैमान ने जो इस ह़दीष़ को रिवायत किया तो इतना ही कहा कि मुआ़ज़ ने हम कुंबा वालों को ये हुक्म दिया था ये नहीं कहा कि आँह़ज़रत (ﷺ) के ज़माने में। (राजेअ़ : 6734)

٦٧٤١- حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ خَالِدٍ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، عَنْ شُعْبَةَ، عَنْ سُلَيْمَانَ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنِ الأَسْوَدِ قَالَ: قَضَى فِينَا مُعَاذُ بْنُ جَبَلٍ عَلَى عَهْدِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ النِّصْفُ لِلاِبْنَةِ، وَالنِّصْفُ لِلأُخْتِ ثُمَّ قَالَ سُلَيْمَانُ: قَضَى فِينَا وَلَمْ يَذْكُرْ عَلَى عَهْدِ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ.
[راجع: ٦٧٣٤]

6742. हमसे अ़म्र बिन अ़ब्बास ने बयान किया, कहा हमसे

٦٧٤٢- حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عَبَّاسٍ، حَدَّثَنَا

अ़ब्दुर्रहमान बिन मह्दी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ष़ौरी ने बयान किया, उनसे अबू क़ैस (अ़ब्दुर्रहमान बिन ग़ज़्वान) ने, उनसे हुज़ैल बिन शुरहबील ने बयान किया और उनसे हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं नबी करीम (ﷺ) के फ़ैसले के मुताबिक़ इसका फ़ैसला करूँगा। लड़की को आधा, पोती को छठा और जो बाक़ी बचे बहनों का हिस्सा है। (राजेअ़ : 6736)

عَبْدُ الرَّحْمَنِ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ أَبِي قَيْسٍ، عَنْ هُزَيْلٍ قَالَ: قَالَ عَبْدُ اللهِ: لأَقْضِيَنَّ فِيهَا بِقَضَاءِ النَّبِيِّ ﷺ أَوْ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لِلابْنَةِ النِّصْفُ، وَلابْنَةِ الابْنِ السُّدُسُ، وَمَا بَقِيَ فَلِلأُخْتِ)).

[راجع: ٦٧٣٦]

बाब 13 : बहनों और भाइयों को क्या मिलेगा

١٣- باب مِيرَاثِ الأَخَوَاتِ وَالإِخْوَةِ

6743. हमसे अ़ब्दान अ़ब्दुल्लाह बिन उ़ष्मान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, कहा हमको शुअ़बा बिन हज्जाज ने ख़बर दी, उनसे मुहम्मद बिन मुंकदिर ने बयान किया, उन्होंने हज़रत जाबिर (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) मेरे घर तशरीफ़ लाए और मैं बीमार था। आँहज़रत (ﷺ) से अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! मेरी बहनें हैं? उस पर मीराष़ की आयत नाज़िल हुई। (राजेअ़ : 194)

٦٧٤٣- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عُثْمَانَ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ، أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ الْمُنْكَدِرِ قَالَ: سَمِعْتُ جَابِرًا رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ دَخَلَ عَلَيَّ النَّبِيُّ ﷺ وَأَنَا مَرِيضٌ، فَدَعَا بِوَضُوءٍ فَتَوَضَّأَ، ثُمَّ نَضَحَ عَلَيَّ مِنْ وَضُوئِهِ، فَأَفَقْتُ فَقُلْتُ : يَا رَسُولَ اللهِ إِنَّمَا لِي أَخَوَاتٌ فَنَزَلَتْ آيَةُ الْفَرَائِضِ. [راجع: ١٩٤]

बाब 14 सूरह निसा में अल्लाह का ये फ़र्मान कि लोग वराष़त के बारे में आपसे फ़त्वा पूछते हैं

١٤- باب

आप कह दीजिए कि अल्लाह तआ़ला तुम्हें कलाला के बारे में ये हुक्म देता है कि अगर कोई शख़्स मर जाए और उसके कोई औलाद न हो और उसकी बहनें हों तो बहन को तर्का का आधा मिलेगा। उसी तरह ये शख़्स अपनी बहन का वारिष़ होगा अगर उसका कोई बेटा न हो। फिर अगर बहनें दो हों तो वो दो तिहाई तर्का से पाएँगी और अगर भाई-बहन सब मिले-जुले हों तो मर्द को दोहरा हिस्सा और औ़रत को इकहरा हिस्सा मिलेगा। अल्लाह तआ़ला तुम्हारे लिये बयान करता है कि कहीं तुम गुमराह न हो जाओ और अल्लाह हर चीज़ को जानने वाला है। (सूरह निसा : 176)

﴿يَسْتَفْتُونَكَ قُلِ اللهُ يُفْتِيكُمْ فِي الْكَلَالَةِ إِنِ امْرُؤٌ هَلَكَ لَيْسَ لَهُ وَلَدٌ وَلَهُ أُخْتٌ فَلَهَا نِصْفُ مَا تَرَكَ وَهُوَ يَرِثُهَا إِنْ لَمْ يَكُنْ لَهَا وَلَدٌ فَإِنْ كَانَتَا اثْنَتَيْنِ فَلَهُمَا الثُّلُثَانِ مِمَّا تَرَكَ وَإِنْ كَانُوا إِخْوَةً رِجَالاً وَنِسَاءً فَلِلذَّكَرِ مِثْلُ حَظِّ الأُنْثَيَيْنِ يُبَيِّنُ اللهُ لَكُمْ أَنْ تَضِلُّوا وَاللهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ﴾ [النساء : ١٧٦].

6744. हमसे उ़बैदुल्लाह बिन मूसा ने बयान किया, उनसे इस्राईल ने, उनसे अबू इस्हाक़ ने, उनसे बराअ (रज़ि.) ने

٦٧٤٤- حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ مُوسَى، عَنْ إِسْرَائِيلَ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنِ الْبَرَاءِ

رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: آخِرُ آيَةٍ نَزَلَتْ خَاتِمَةُ سُورَةِ النِّسَاءِ: ﴿يَسْتَفْتُونَكَ قُلِ اللهُ يُفْتِيكُمْ فِي الْكَلاَلَةِ﴾. [راجع: ٤٣٦٤]

बयान किया कि आख़िरी आयत (मीराष़ की) सूरह निसा के आख़िर की आयतें नाज़िल हुईं कि, आपसे फ़त्वा पूछते हैं, कह दीजिए कि अल्लाह तआला तुम्हें कलाला के बारे में फ़त्वा देता है। (राजेअ : 4364)

١٥ - باب ابْنَيْ عَمٍّ أَحَدُهُمَا أَخٌ لِلأُمِّ، وَالآخَرُ زَوْجٌ

बाब 15 : अगर कोई औरत मर जाए

وَقَالَ عَلِيٌّ: لِلزَّوْجِ النِّصْفُ وَلِلأَخِ مِنَ الأُمِّ السُّدُسُ، وَمَا بَقِيَ بَيْنَهُمَا نِصْفَانِ.

और अपने दो चचाज़ाद भाई छोड़ जाए एक तो उनमें से उसका अख़्याफ़ी भाई हो, दूसरा उसका शौहर का। हज़रत अली (रज़ि.) ने कहा शौहर को आधा हिस्सा मिलेगा और अख़्याफ़ी भाई को छठा हिस्सा (बमोजिब फ़र्ज़ के) फिर जो माल बच रहेगा या'नी एक तिहाई वो दोनों में बराबर तक़्सीम होगा (क्योंकि दोनों अ़सबा हैं)

٦٧٤٥- حَدَّثَنَا مَحْمُودٌ، أَخْبَرَنَا عُبَيْدُ اللهِ، عَنْ إِسْرَائِيلَ، عَنْ أَبِي حَصِينٍ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((أَنَا أَوْلَى بِالْمُؤْمِنِينَ مِنْ أَنْفُسِهِمْ، فَمَنْ مَاتَ وَتَرَكَ مَالاً فَمَالُهُ لِمَوَالِي الْعَصَبَةِ، وَمَنْ تَرَكَ كَلاًّ أَوْ ضَيَاعًا فَأَنَا وَلِيُّهُ فَلأُدْعَى لَهُ)). [راجع: ٢٢٩٦]

6745. हमसे महमूद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको इस्राईल ने ख़बर दी, उन्हें अबू हुसैन ने, उन्हें अबू सालेह ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया मैं मुसलमानों का ख़ुद उनकी ज़ात से भी ज़्यादा वली हूं। पस जो शख़्स मर जाए और माल छोड़ जाए तो वो उसके वारिषों का हक़ है और जिसने बीवी बच्चे छोड़े हों या क़र्ज़ हो, तो मैं उनका वली हूँ इनके लिये मुझसे मांगा जाए। (राजेअ : 2296)

٦٧٤٦- حَدَّثَنَا أُمَيَّةُ بْنُ بِسْطَامٍ، حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ، عَنْ رَوْحٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ طَاوُسٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((أَلْحِقُوا الْفَرَائِضَ بِأَهْلِهَا فَمَا تَرَكَتِ الْفَرَائِضُ، فَلأَوْلَى رَجُلٍ ذَكَرٍ)). [راجع: ٦٧٣٢]

6746. हमसे उमय्या बिन बिस्ताम ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे यज़ीद बिन ज़ुरैअ ने बयान किया, उनसे रौह ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन ताउस ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया मीराष़ उसके वारिषों तक पहुँचा दो और जो कुछ उसमें से बच रहे वो क़रीबी अ़ज़ीज़ मर्द का हक़ है। (राजेअ : 6732)

١٦ - باب ذَوِي الأَرْحَامِ

बाब 16 : ज़विल अरहाम

या'नी रिश्तेदारों के बयान में जो न अ़सबा हैं न ज़विल फ़ुरूज़ हैं जैसे मामूँ, ख़ाला, नाना, नवासा, भांजा।

٦٧٤٧- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، قَالَ قُلْتُ لأَبِي أُسَامَةَ حَدَّثَكُمْ إِدْرِيسُ، حَدَّثَنَا

6747. मुझसे इस्हाक़ बिन इब्राहीम ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने अबू उसामा से पूछा कि आपसे इदरीस ने बयान किया था, उनसे तलहा ने बयान किया, उनसे सईद बिन जुबैर

طَلْحَةَ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ: ﴿وَلِكُلٍّ جَعَلْنَا مَوَالِيَ﴾ ﴿وَالَّذِينَ عَقَدَتْ أَيْمَانُكُمْ﴾ [النساء : ٣٣] قَالَ: كَانَ الْمُهَاجِرُونَ حِينَ قَدِمُوا الْمَدِينَةَ يَرِثُ الأَنْصَارِيُّ الْمُهَاجِرِيَّ دُونَ ذَوِي رَحِمِهِ لِلأُخُوَّةِ الَّتِي آخَى النَّبِيُّ ﷺ بَيْنَهُمْ فَلَمَّا نَزَلَتْ: ﴿وَلِكُلٍّ جَعَلْنَا مَوَالِيَ﴾ قَالَ نَسَخَتْهَا ﴿وَالَّذِينَ عَقَدَتْ أَيْمَانُكُمْ﴾.

[راجع: ٢٢٩٢]

ने बयान किया और उनसे हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने वलिकुल्लि जअ़ल्ना मवालिय और वल्लज़ीन अ़क़दत अयमानुकुम के बारे में बतलाया कि मुहाजिरीन जब मदीना आए तो ज़विल अरहाम के अ़लावा अंसार व मुहाजिरीन भी एक-दूसरे की विराषत पाते थे उस भाईचारगी की वजह से जो नबी करीम (ﷺ) ने उनके दरम्यान कराई थी, फिर जब आयत जअ़ल्ना मवालिय नाज़िल हुई तो फ़र्माया कि उसने वल्लज़ीन अ़क़दत अयमानुकुम को मन्सूख़ कर दिया। (राजेअ़ : 2292)

١٧- باب مِيرَاثِ الْمُلاَعَنَةِ

बाब 17 : लिआ़न करने वाली औरत अपने बच्चे की वारिष़ होगी

लेकिन उसका शौहर बच्चे के माल का वारिष़ न होगा।

٦٧٤٨- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ قَزَعَةَ، حَدَّثَنَا مَالِكٌ، عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَجُلاً لاَعَنَ امْرَأَتَهُ فِي زَمَنِ النَّبِيِّ ﷺ وَانْتَفَى مِنْ وَلَدِهَا فَفَرَّقَ النَّبِيُّ ﷺ بَيْنَهُمَا وَأَلْحَقَ الْوَلَدَ بِالْمَرْأَةِ.

[راجع: ٤٧٤٨]

6748. मुझसे यह्या बिन क़ज़अ़ा ने बयान किया, कहा हमसे मालिक ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ़ ने और उनसे इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने कि एक शख़्स ने अपनी बीवी से नबी करीम (ﷺ) के ज़माने में लिआ़न किया और उसके बच्चा को अपना बच्चा मानने से इंकार कर दिया तो आँहज़रत (ﷺ) ने दोनों के दरम्यान जुदाई करा दी और बच्चा औरत को दे दिया। (राजेअ़ : 4748)

١٨- باب الْوَلَدُ لِلْفِرَاشِ حُرَّةً كَانَتْ أَوْ أَمَةً

बाब 18 : बच्चा उसी का कहलाएगा जिसकी बीवी या लौण्डी से वो पैदा हो

और ज़िना करने वाले पर पत्थर पड़ेंगे।

٦٧٤٩- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ، أَخْبَرَنَا مَالِكٌ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: كَانَ عُتْبَةُ عَهِدَ إِلَى أَخِيهِ سَعْدٍ أَنَّ ابْنَ وَلِيدَةِ زَمْعَةَ مِنِّي فَاقْبِضْهُ إِلَيْكَ، فَلَمَّا كَانَ عَامَ الْفَتْحِ أَخَذَهُ سَعْدٌ فَقَالَ: ابْنُ أَخِي

6749. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने शिहाब ने, उन्हें उ़र्वा ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि उ़त्बा अपने भाई सअ़द (रज़ि.) को वसिय्यत कर गया था कि ज़म्आ़ की कनीज़ का लड़का मेरा है और उसे अपनी परवरिश में ले लेना। फ़तहे मक्का के साल सअ़द (रज़ि.) ने उसे लेना चाहा और कहा कि मेरे भाई का लड़का है और उसने मुझे उसके बारे में वसिय्यत की थी। उस पर अ़ब्द बिन ज़म्आ़ (रज़ि.) खड़े हुए और कहा कि ये मेरा भाई है और मेरे बाप की लौण्डी

का लड़का है, उसके बिस्तर पर पैदा हुआ है। आख़िर ये दोनों ये मामला रसूले करीम (ﷺ) के पास ले गये तो सअद (रज़ि.) ने कहा, या रसूलल्लाह! ये मेरे भाई का लड़का है उसने उसके बारे में मुझे वसिय्यत की थी। अहद बिन ज़म्आ ने कहा कि मेरा भाई है मेरे बाप की बांदी का लड़का और मेरे बाप के बिस्तर पर पैदा हुआ है। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, अब्द बिन ज़म्आ! ये तुम्हारे पास रहेगा, लड़का बिस्तर का हक़ है और ज़ानी के हिस्से में पत्थर हैं। फिर सौदा बिन्ते ज़म्आ (रज़ि.) से कहा कि उस लड़के से पर्दा किया कर क्योंकि उत्बा के साथ उसकी शबाहत आप (ﷺ) ने देख ली थी। चुनाँचे फिर उस लड़के ने उम्मुल मोमिनीन को अपनी वफ़ात तक नहीं देखा। (राजेअ : 6053)

عَهِدَ إِلَيَّ فِيهِ، فَقَامَ عَبْدُ بْنُ زَمْعَةَ فَقَالَ: أَخِي وَابْنُ وَلِيدَةِ أَبِي وُلِدَ عَلَى فِرَاشِهِ فَتَسَاوَقَا إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ سَعْدٌ: يَا رَسُولَ اللهِ ابْنُ أَخِي قَدْ كَانَ عَهِدَ إِلَيَّ فِيهِ، فَقَالَ عَبْدُ بْنُ زَمْعَةَ: أَخِي وَابْنُ وَلِيدَةِ أَبِي وُلِدَ عَلَى فِرَاشِهِ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((هُوَ لَكَ يَا عَبْدُ بْنَ زَمْعَةَ، الْوَلَدُ لِلْفِرَاشِ، وَلِلْعَاهِرِ الْحَجَرُ))، ثُمَّ قَالَ لِسَوْدَةَ بِنْتِ زَمْعَةَ: ((احْتَجِبِي مِنْهُ)) لِمَا رَأَى مِنْ شَبَهِهِ بِعُتْبَةَ فَمَا رَآهَا حَتَّى لَقِيَ اللهَ.

[راجع: ٦٠٥٣]

6750. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा उनसे यह्या ने, उनसे शुअबा ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन ज़ियाद ने बयान किया, उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, लड़का बिस्तर वाले का हक़ होता है। (दीगर मक़ाम : 6818)

٦٧٥٠- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا يَحْيَى، عَنْ شُعْبَةَ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ زِيَادٍ أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: قَالَ: ((الْوَلَدُ لِصَاحِبِ الْفِرَاشِ)).[طرفه في : ٦٨١٨].

बाब 19 : गुलाम लौण्डी का तर्का वही लेगा जो उसे आज़ाद करे

١٩- باب الْوَلاَءُ لِمَنْ أَعْتَقَ وَمِيرَاثُ اللَّقِيطِ

और जो लड़का रास्त में पड़ा हुआ मिले उसका वारिष कौन होगा उसका बयान। हज़रत उमर (रज़ि.) ने कहा कि जो लड़का पड़ा हुआ मिले और उसके माँ-बाप न मा'लूम हों तो वो आज़ाद होगा।

وَقَالَ عُمَرُ : اللَّقِيطُ حُرٌّ.

6751. हमसे हफ़्स बिन उमर ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे हकम ने, उनसे इब्राहीम ने, उनसे अस्वद ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने बरीरह (रज़ि.) को ख़रीदना चाहा तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि उन्हें ख़रीद ले, वलाअ तो उसके साथ क़ायम होती है जो आज़ाद कर दे और बरीरह (रज़ि.) को एक बकरी मिली, तो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि ये उनके लिये सदक़ा थी लेकिन हमारे लिये हदिया है। हकम ने बयान किया कि उनके शौहर आज़ाद थे। हकम का क़ौल मुर्सलन मन्क़ूल

٦٧٥١- حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ عُمَرَ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنِ الْحَكَمِ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنِ الأَسْوَدِ، عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: اشْتَرَيْتُ بَرِيرَةَ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((اشْتَرِيهَا فَإِنَّ الْوَلاَءَ لِمَنْ أَعْتَقَ)) وَأُهْدِيَ لَهَا شَاةٌ فَقَالَ ((هُوَ لَهَا صَدَقَةٌ، وَلَنَا هَدِيَّةٌ)) قَالَ الْحَكَمُ وَكَانَ زَوْجُهَا حُرًّا، وَقَوْلُ الْحَكَمِ مُرْسَلٌ

है। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा कि मैंने उन्हें ग़ुलाम देखा था। (राजेअ़ : 456)

وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ : رَأَيْتُهُ عَبْدًا.

[راجع: ٤٥٦]

6752. हमसे इस्माईल बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे मालिक ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ़ ने और उनसे इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने कहा कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, वलाअ उसी के साथ क़ायम होती है जो आज़ाद कर दे। (राजेअ़ : 2156)

٦٧٥٢- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ عَبْدِ اللهِ قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكٌ، عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((إِنَّمَا الْوَلاَءُ لِمَنْ أَعْتَقَ)).[راجع: ٢١٥٦]

बाब 20 : साइबा वो ग़ुलाम या लौण्डी जिसको मालिक आज़ाद कर दे और कह दे कि तेरी वलाअ का हक़ किसी को न मिलेगा

٢٠- باب مِيرَاثِ السَّائِبَةِ

ये माख़ूज़ है इस साइबा जानवर से जिसे मुश्रिकीन अपने बुतों के नाम पर छोड़ दिया करते थे उसे हिन्दी में साँड कहते हैं।

6753. हमसे क़बीसा बिन उ़क़्बा ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे अबू क़ैस ने, उनसे हुज़ैल ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह ने, हज़रत अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने फ़र्माया मुसलमान साइबा नहीं बनाते और दौरे जाहिलियत में मुश्किरीन साइबा बनाते थे।

٦٧٥٣- حَدَّثَنَا قَبِيصَةُ بْنُ عُقْبَةَ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ أَبِي قَيْسٍ، عَنْ هُزَيْلٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ قَالَ: إِنَّ أَهْلَ الإِسْلاَمِ لاَ يُسَيِّبُونَ، وَإِنَّ أَهْلَ الْجَاهِلِيَّةِ كَانُوا يُسَيِّبُونَ.

6754. हमसे मूसा ने बयान किया, कहा हमसे अबू अ़वाना ने बयान किया, उनसे मंसूर ने, उनसे इब्राहीम ने, उनसे अस्वद ने और उनसे आ़इशा (रज़ि.) ने कि बरीरह (रज़ि.) को उन्होंने आज़ाद करने की ग़र्ज़ से ख़रीदना चाहा, लेकिन उनके मालिकों ने अपने लिये उनकी वलाअ की शर्त लगा दी है। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि उन्हें आज़ाद कर दे, वलाअ तो आज़ाद करने वाले के साथ क़ायम होती है। बयान किया कि फिर मैंने उन्हें ख़रीदा और आज़ाद कर दिया और मैंने बरीरह को इख़्तियार दिया (कि चाहें तो शौहर के साथ रह सकती हैं वरना अलग भी हो सकती हैं) तो उन्होंने शौहर से अ़लैहिदगी को पसंद किया और कहा कि मुझे इतना इतना माल भी दिया जाए तो मैं पहले शौहर के साथ नहीं रहूँगी। अस्वद ने बयान किया कि उनके शौहर आज़ाद थे। अस्वद का क़ौल मुन्क़तअ़ है और इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) का क़ौल सहीह है कि मैंने उन्हें ग़ुलाम देखा। (राजेअ़ : 456)

٦٧٥٤- حَدَّثَنَا مُوسَى، حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ، عَنْ مَنْصُورٍ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنِ الأَسْوَدِ أَنَّ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا اشْتَرَتْ بَرِيرَةَ لِتُعْتِقَهَا وَاشْتَرَطَ أَهْلُهَا وَلاَءَهَا فَقَالَتْ: يَا رَسُولَ اللهِ إِنِّي اشْتَرَيْتُ بَرِيرَةَ لأُعْتِقَهَا، وَإِنَّ أَهْلَهَا يَشْتَرِطُونَ وَلاَءَهَا فَقَالَ: ((أَعْتِقِيهَا فَإِنَّمَا الْوَلاَءُ لِمَنْ أَعْتَقَ)) أَوْ قَالَ: ((أَعْطَى الثَّمَنَ)) قَالَ فَاشْتَرَيْتُهَا فَأَعْتَقْتُهَا قَالَ: فَاخْتَرْتُهَا فَاخْتَارَتْ نَفْسَهَا وَقَالَتْ: لَوْ أُعْطِيتُ كَذَا وَكَذَا مَا كُنْتُ مَعَهُ، قَالَ الأَسْوَدُ: وَكَانَ زَوْجُهَا حُرًّا. قَوْلُ الأَسْوَدِ: مُنْقَطِعٌ، وَقَوْلُ ابْنِ عَبَّاسٍ رَأَيْتُهُ

عَبْدًا أَصَحَّ. [راجع: ٤٥٦]

बाब 21 : जो ग़ुलाम अपने अस़ली मालिकों को छोड़कर दूसरों को मालिक बनाए (उनसे मवालात करे) उसके गुनाह का बयान

٢١- باب إِثْمِ مَنْ تَبَرَّأَ مِنْ مَوَالِيهِ

6755. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे जरीर ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे इब्राहीम तैमी ने, उनसे उनके वालिद ने बयान किया कि ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) ने बतलाया कि हमारे पास कोई किताब नहीं है जिसे हम पढ़ें, सिवा अल्लाह की किताब क़ुर्आन के और उसके अ़लावा ये स़हीफ़ा भी है। बयान किया कि फिर वो स़हीफ़ा निकाला तो उसमें ज़ख़्मों (के क़िस़ास़) और ऊँटों की ज़कात के मसाइल थे। रावी ने बयान किया कि उसमे ये भी था कि अ़ेर से स़ौर तक मदीना ह़रम है जिसने इस दीन में कोई नई बात पैदा की या नई बात करने वाले को पनाह दी तो उस पर अल्लाह और फ़रिश्तों और इंसानों सबकी ला'नत है और क़यामत के दिन उसका कोई नेक अ़मल मक़्बूल न होगा और जिसने अपने मालिकों की इजाज़त के बग़ैर दूसरे लोगों से मवालात क़ायम कर ली तो उस पर फ़रिश्तों और इंसानों सबकी ला'नत है, क़यामत के दिन उसका कोई नेक अ़मल मक़्बूल न होगा और मुसलमानों का ज़िम्मे (क़ौल व क़रार, किसी को पनाह देना वग़ैरह) एक है। एक अदना मुसलमान के पनाह देने को भी क़ायम रखने की कोशिश की जाएगी। पस जिसने किसी मुसलमान की दी हुई पनाह को तोड़ा, उस पर अल्लाह की, फ़रिश्तों और इंसानों सबकी ला'नत है क़यामत के दिन उसका कोई नेक अ़मल क़ुबूल नहीं किया जाएगा।

(राजेअ़ : 111)

٦٧٥٥- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ التَّيْمِيِّ، عَنْ أَبِيهِ قَالَ: قَالَ عَلِيٌّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ مَا عِنْدَنَا كِتَابٌ نَقْرَؤُهُ إِلاَّ كِتَابُ اللهِ غَيْرَ هَذِهِ الصَّحِيفَةِ قَالَ: فَأَخْرَجَهَا فَإِذَا فِيهَا أَشْيَاءُ مِنَ الْجِرَاحَاتِ وَأَسْنَانِ الإِبِلِ قَالَ: وَفِيهَا الْمَدِينَةُ حَرَمٌ مَا بَيْنَ عَيْرٍ إِلَى ثَوْرٍ، فَمَنْ أَحْدَثَ فِيهَا حَدَثًا أَوْ آوَى مُحْدِثًا فَعَلَيْهِ لَعْنَةُ اللهِ وَالْمَلاَئِكَةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ، لاَ يُقْبَلُ مِنْهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ صَرْفٌ وَلاَ عَدْلٌ، وَمَنْ وَالَى قَوْمًا بِغَيْرِ إِذْنِ مَوَالِيهِ فَعَلَيْهِ لَعْنَةُ اللهِ وَالْمَلاَئِكَةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ، لاَ يُقْبَلُ مِنْهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ صَرْفٌ وَلاَ عَدْلٌ، وَذِمَّةُ الْمُسْلِمِينَ وَاحِدَةٌ يَسْعَى بِهَا أَدْنَاهُمْ، فَمَنْ أَخْفَرَ مُسْلِمًا فَعَلَيْهِ لَعْنَةُ اللهِ وَالْمَلاَئِكَةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ، لاَ يُقْبَلُ مِنْهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ صَرْفٌ وَلاَ عَدْلٌ.

[راجع: ١١١]

6756. हमसे अबू नुऐ़म ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन दीनार ने और उनसे इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने वलाअ के ता'ल्लुक़ को बेचने, उसको हिबा करने से मना किया है। (राजेअ़ : 2535)

٦٧٥٦- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ دِينَارٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: نَهَى النَّبِيُّ ﷺ عَنْ بَيْعِ الْوَلاَءِ وَعَنْ هِبَتِهِ. [راجع: ٢٥٣٥]

बाब 22 : जब कोई किसी मुसलमान के हाथ पर इस्लाम लाए तो वो उसका वारिस़ होता है

٢٢- باب إِذَا أَسْلَمَ عَلَى يَدَيْهِ

या नहीं और इमाम हसन बसरी उसके साथ वलाअ के ता'ल्लुक़ को दुरुस्त नहीं समझते थे और नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि वलाअ उसके साथ क़ायम होगी जो आज़ाद करे और तमीम बिन औस दारी से मन्क़ूल है, उन्होंने मर्फ़ूअन रिवायत की कि वो ज़िंदगी और मौत दोनों हालतों में सब लोगों से ज़्यादा उस पर हक़ रखता है लेकिन उस हदीष़ की सेहत में इख़्तिलाफ़ है।

وَكَانَ الْحَسَنُ لاَ يَرَى لَهُ وِلاَيَةً. وَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((الْوَلاَءُ لِمَنْ أَعْتَقَ)) وَيُذْكَرُ عَنْ تَمِيمٍ الدَّارِيِّ رَفَعَهُ قَالَ : هُوَ أَوْلَى النَّاسِ بِمَحْيَاهُ وَمَمَاتِهِ، وَاخْتَلَفُوا فِي صِحَّةِ هَذَا الْخَبَرِ.

6757. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, उनसे इमाम मालिक (रह.) ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ ने, उनसे इब्ने उमर (रज़ि.) ने कि उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा (रज़ि.) ने एक कनीज़ को आज़ाद करने के लिये ख़रीदना चाहा तो कनीज़ के मालिकों ने कहा कि हम बेच सकते हैं लेकिन वलाअ हमारे साथ होगी। उम्मुल मोमिनीन ने उसका ज़िक्र रसूलुल्लाह (ﷺ) से किया तो आपने फ़र्माया इस शर्त को मानेअ न बनने दो, वलाअ हमेशा उसी के साथ क़ायम होती है जो आज़ाद करे। (राजेअ : 2156)

٦٧٥٧- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، عَنْ مَالِكٍ، عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ أَنَّ عَائِشَةَ أُمَّ الْمُؤْمِنِينَ أَرَادَتْ أَنْ تَشْتَرِيَ جَارِيَةً تُعْتِقُهَا فَقَالَ أَهْلُهَا: نَبِيعُكِهَا عَلَى أَنَّ وَلاَءَهَا لَنَا، فَذَكَرَتْ لِرَسُولِ اللهِ ﷺ فَقَالَ ((لاَ يَمْنَعُكِ ذَلِكِ، فَإِنَّمَا الْوَلاَءُ لِمَنْ أَعْتَقَ)). [راجع: ٢١٥٦]

6758. हमसे मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमको जरीर ने ख़बर दी, उन्हें मंसूर ने, उन्हें इब्राहीम ने, उन्हें अस्वद ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने बरीरह को ख़रीदना चाहा तो उनके मालिकों ने शर्त लगाई कि वलाअ उनके साथ क़ायम होगी। मैंने उसका तज़्किरा नबी करीम (ﷺ) से किया तो आपने फ़र्माया कि उन्हें आज़ाद कर दो, वलाअ क़ीमत अदा करने वाले ही के साथ क़ायम होती है। बयान किया कि फिर मैंने आज़ाद कर दिया। फिर उन्हें आँहज़रत (ﷺ) ने बुलाया और उनके शौहर के मामले में इख़्तियार दिया। उन्होंने कहा कि अगर मुझे ये ये चीज़ें भी वो दे दे तो मैं उसके साथ रात गुज़ारने के लिये तैयार नहीं। चुनाँचे उन्होंने शौहर से आज़ादी को पसंद किया। (राजेअ : 456)

٦٧٥٨- حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ، أَخْبَرَنَا جَرِيرٌ، عَنْ مَنْصُورٍ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنِ الأَسْوَدِ، عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: اشْتَرَيْتُ بَرِيرَةَ فَاشْتَرَطَ أَهْلُهَا وَلاَءَهَا، فَذَكَرْتُ ذَلِكَ لِلنَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: ((أَعْتِقِيهَا فَإِنَّ الْوَلاَءَ لِمَنْ أَعْطَى الْوَرِقَ)) قَالَتْ: فَأَعْتَقْتُهَا قَالَتْ: فَدَعَاهَا رَسُولُ اللهِ ﷺ فَخَيَّرَهَا مِنْ زَوْجِهَا فَقَالَتْ: لَوْ أَعْطَانِي كَذَا وَكَذَا مَا بِتُّ عِنْدَهُ فَاخْتَارَتْ نَفْسَهَا. [راجع: ٤٥٦]

बाब 23 : वलाअ का ता'ल्लुक़ औरत के साथ क़ायम हो सकता है

٢٣- باب مَا يَرِثُ النِّسَاءُ مِنَ الْوَلاَءِ

6759. हमसे हफ़्स बिन उमर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे हम्माम ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ ने और उनसे

٦٧٥٩- حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ عُمَرَ، حَدَّثَنَا هَمَّامٌ، عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ

अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि आइशा (रज़ि.) ने बरीरह (रज़ि.) को ख़रीदना चाहा और रसूलुल्लाह (ﷺ) से कहा कि ये लोग वलाअ की शर्त लगाते हैं। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि ख़रीद लो, वलाअ तो उसी के साथ क़ायम होती है जो आज़ाद करे (आज़ाद कराए)। (राजेअ़ : 2156)

عَنْهُمَا قَالَ: أَرَادَتْ عَائِشَةُ أَنْ تَشْتَرِيَ بَرِيرَةَ فَقَالَتْ لِلنَّبِيِّ ﷺ: ((إِنَّهُمْ يَشْتَرِطُونَ الْوَلاَءَ؟)) فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((اشْتَرِيهَا فَإِنَّمَا الْوَلاَءُ لِمَنْ أَعْتَقَ)). [راجع: ٢١٥٦]

6760. हमसे इब्ने सलाम ने बयान किया, कहा हमको वकीअ़ ने ख़बर दी, उन्हें सुफ़यान ने, उन्हें मंसूर ने, उन्हें इब्राहीम ने, उन्हें अस्वद ने, और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि वला उसके साथ क़ायम होगी जो क़ीमत दे और एहसान करे। (आज़ाद करके)। (राजेअ़ : 456)

٦٧٦٠- حَدَّثَنَا ابْنُ سَلاَمٍ، أَخْبَرَنَا وَكِيعٌ، عَنْ سُفْيَانَ، عَنْ مَنْصُورٍ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنِ الأَسْوَدِ عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((الْوَلاَءُ لِمَنْ أَعْطَى الْوَرِقَ وَوَلِيَ النِّعْمَةَ)). [راجع: ٤٥٦]

बाब 24 : जो शख़्स किसी क़ौम का ग़ुलाम हो आज़ाद किया गया वो उसी क़ौम में शुमार होगा. इसी तरह किसी क़ौम का भांजा भी उसी क़ौम में दाख़िल होगा

٢٤- باب مَوْلَى الْقَوْمِ مِنْ أَنْفُسِهِمْ وَابْنُ الأُخْتِ مِنْهُمْ

6761. हमसे आदम ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे मुआ़विया बिन क़ुर्रह और क़तादा ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया किसी घराने का ग़ुलाम उसी का फ़र्द होता है, अव कमा क़ाल।

٦٧٦١- حَدَّثَنَا آدَمُ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، حَدَّثَنَا مُعَاوِيَةُ بْنُ قُرَّةَ وَقَتَادَةُ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((مَوْلَى الْقَوْمِ مِنْ أَنْفُسِهِمْ)) أَوْ كَمَا قَالَ.

6762. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे क़तादा ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया किसी घराने का भांजा उसका एक फ़र्द है (मिन्हुम या मिन अन्फ़ुसिहिम के अल्फ़ाज़ फ़र्माए)। (राजेअ़ : 3146)

٦٧٦٢- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ ((ابْنُ أُخْتِ الْقَوْمِ مِنْهُمْ أَوْ مِنْ أَنْفُسِهِمْ)). [راجع: ٣١٤٦]

बाब 25 : अगर कोई वारिष़ काफ़िरों के हाथ क़ैद हो गया हो तो उसको

٢٥- باب مِيرَاثِ الأَسِيرِ

तर्का में से हिस़्सा मिलेगा या नहीं इमाम बुख़ारी (रह.) ने कहा कि शुरैह क़ाज़ी क़ैदी को तर्का दिलाते थे और कहते थे कि वो तो और ज़्यादा मुह्ताज है। और ह़ज़रत उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ ने कहा कि क़ैदी की वसिय्यत और उसकी आज़ादी और जो कुछ वो अपने माल में तस़र्रुफ़ करता है वो नाफ़िज़ होगी जब तक वो

قَالَ: وَكَانَ شُرَيْحٌ يُوَرِّثُ الأَسِيرَ فِي أَيْدِي الْعَدُوِّ وَيَقُولُ: هُوَ أَحْوَجُ إِلَيْهِ وَقَالَ عُمَرُ بْنُ عَبْدِ الْعَزِيزِ: أَجِزْ وَصِيَّةَ الأَسِيرِ وَعَتَاقَهُ، وَمَا صَنَعَ فِي مَالِهِ مَا لَمْ يَتَغَيَّرْ عَنْ دِينِهِ، فَإِنَّمَا هُوَ مَالُهُ يَصْنَعُ فِيهِ مَا يَشَاءُ.

अपने दीन से नहीं फिरता क्योंकि वो माल उसी का माल रहता है वो उसमे जिस तरह चाहे तसर्रुफ़ कर सकता है।

क़ैद होने से मिल्कियत ज़ाइल नहीं होगी।

٦٧٦٣- حدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ عَدِيٍّ، عَنْ أَبِي حَازِمٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((مَنْ تَرَكَ مَالاً فَلِوَرَثَتِهِ، وَمَنْ تَرَكَ كَلاًّ فَإِلَيْنَا)). [راجع: ٢٢٩٨]

6763. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे अदी ने, उनसे अबू हाज़िम ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जिसने माल छोड़ा (अपनी मौत के बाद) वो उसके वारिष़ा का है और जिसने क़र्ज़ छोड़ा है वो हमारे ज़िम्मे है। (राजेअ : 2298)

ये अन्नबिय्यु औला बिल मोमिनीन मिन अन्फ़ुसिहिम के तहत आपने फ़र्माया।

٢٦- باب لاَ يَرِثُ الْمُسْلِمُ الْكَافِرَ وَلاَ الْكَافِرُ الْمُسْلِمَ وَإِذَا أَسْلَمَ قَبْلَ أَنْ يُقْسَمَ الْمِيرَاثُ فَلاَ مِيرَاثَ لَهُ.

बाब 26 : मुसलमान काफ़िर का वारिष़ नहीं हो सकता और न काफ़िर मुसलमान का और अगर मीराष़ की तक़्सीम से पहले इस्लाम लाया तब भी मीराष़ में उसका हक़ नहीं होगा

जबकि मौरिष़ के मरते वक़्त वो काफ़िर हो।

٦٧٦٤- حدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ، عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ عَلِيِّ بْنِ حُسَيْنٍ، عَنْ عُمَرَ بْنِ عُثْمَانَ، عَنْ أُسَامَةَ بْنِ زَيْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ ((لاَ يَرِثُ الْمُسْلِمُ الْكَافِرَ، وَلاَ الْكَافِرُ الْمُسْلِمَ)). [راجع: ١٥٨٨]

6764. हमसे अबू आसिम ने बयान किया, उनसे इब्ने जुरैज ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उनसे अली बिन हुसैन ने बयान किया, उनसे उमर बिन उष़्मान ने बयान किया और उनसे उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया मुसलमान बाप काफ़िर बेटे का वारिष़ नहीं होता और न काफिर बेटा मुसलमान बाप का। (राजेअ : 1588)

٢٧- باب مِيرَاثِ الْعَبْدِ النَّصْرَانِيِّ وَمُكَاتَبِ النَّصْرَانِيِّ، وَإِثْمِ مَنِ انْتَفَى مِنْ وَلَدِهِ

बाब 27

अगर किसी का ग़ुलाम नस़रानी हो या मुकातब नस़रानी हो वो मर जाए तो उसका माल उसके मालिक को मिलेगा। न बतरीक़ वराष़त बल्कि बवजह ग़ुलामी और मम्लूकियत और जो शख़्स बिला वजह अपने बच्चे को कहे कि ये मेरा बच्चा नहीं, उसका गुनाह

٢٨- باب مَنِ ادَّعَى أَخًا أَوِ ابْنَ أَخٍ.

बाब 28 : जो किसी शख़्स को अपना भाई या भतीजा होने का दा'वा करे

٦٧٦٥- حدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّهَا قَالَتْ:

6765. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे लैष़ ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे उर्वा ने

और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि सअद बिन अबी वक़्क़ास और अब्द बिन ज़म्आ (रज़ि.) का एक लड़के के बारे में झगड़ा हुआ। सअद (रज़ि.) ने कहा या रसूलल्लाह! ये मेरे भाई उत्बा बिन अबी वक़्क़ास का लड़का है, उसने मुझे वसिय्यत की थी कि ये उसका लड़का है आप उसकी मुशाबिहत उसमें देखिए और अब्द बिन ज़म्आ ने कहा कि मेरा भाई है या रसूलल्लाह! मेरे वालिद के बिस्तर पर उनकी लौण्डी से पैदा हुआ है। आँहज़रत (ﷺ) ने लड़के की सूरत देखी तो उसकी उत्बा के साथ साफ़ मुशाबिहत वाज़ेह थी, लेकिन आपने फ़र्माया, अब्द! लड़का बिस्तर वाले का होता है और ज़ानी के हिस्से में पत्थर हैं और ऐ सौदा बिन्ते ज़म्आ! (उम्मुल मोमिनीन रज़ि.) इस लड़के से पर्दा किया कर चुनाँचे फिर उस लड़के ने उम्मुल मोमिनीन को नहीं देखा। (राजेअ 2053)

اخْتَصَمَ سَعْدُ بْنُ أَبِي وَقَّاصٍ وَعَبْدُ بْنُ زَمْعَةَ فِي غُلاَمٍ فَقَالَ سَعْدٌ : هَذَا يَا رَسُولَ اللهِ ﷺ ابْنُ أَخِي عُتْبَةَ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ عَهِدَ إِلَيَّ أَنَّهُ ابْنُهُ انْظُرْ إِلَى شَبَهِهِ وَقَالَ عَبْدُ بْنُ زَمْعَةَ: هَذَا أَخِي يَا رَسُولَ اللهِ وُلِدَ عَلَى فِرَاشِ أَبِي مِنْ وَلِيدَتِهِ، فَنَظَرَ رَسُولُ اللهِ ﷺ إِلَى شَبَهِهِ فَرَأَى شَبَهًا بَيِّنًا بِعُتْبَةَ، فَقَالَ ((هُوَ لَكَ يَا عَبْدُ، الْوَلَدُ لِلْفِرَاشِ، وَلِلْعَاهِرِ الْحَجَرُ وَاحْتَجِبِي مِنْهُ يَا سَوْدَةُ بِنْتَ زَمْعَةَ)) قَالَتْ : فَلَمْ يَرَ سَوْدَةَ قَطُّ.

[راجع: ٢٠٥٣]

बाब 29 : जिसने अपने बाप के सिवा किसी और का बेटा होने का दा'वा किया, उसके गुनाह का बयान

٢٩- باب مَنْ ادَّعَى إِلَى غَيْرِ أَبِيهِ.

6766. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे ख़ालिद ने बयान किया, ये इब्ने अब्दुल्लाह हैं, कहा हमसे ख़ालिद ने बयान किया, उनसे अबू उ़स्मान ने और उनसे सअद (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना; आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि जिसने अपने बाप के सिवा किसी और के बेटे होने का दा'वा किया ये जानते हुए कि वो उसका बाप नहीं है तो जन्नत उस पर हराम है। (राजेअ : 4326)

٦٧٦٦- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا خَالِدٌ هُوَ ابْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا خَالِدٌ، عَنْ أَبِي عُثْمَانَ، عَنْ سَعْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((مَنِ ادَّعَى غَيْرَ أَبِيهِ وَهُوَ يَعْلَمُ أَنَّهُ غَيْرُ أَبِيهِ، فَالْجَنَّةُ عَلَيْهِ حَرَامٌ)). [راجع: ٤٣٢٦]

6767. फिर मैंने इसका तज़्किरा अबूबक्र (रज़ि.) से किया तो उन्होंने कहा इस हदीस़ को आँहज़रत (ﷺ) से मेरे दोनों कानों ने भी सुना है और मेरे दिल ने इसको महफ़ूज़ रखा है। (राजेअ : 4327)

٦٧٦٧- فَذَكَرْتُهُ لأَبِي بَكْرَةَ فَقَالَ : وَأَنَا سَمِعَتْهُ أُذُنَايَ وَوَعَاهُ قَلْبِي مِنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ. [راجع: ٤٣٢٧]

6768. हमसे अस्बग़ बिन फ़रज ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने वहब ने बयान किया, कहा कि मुझको अ़म्र ने ख़बर दी, उन्हें जा'फ़र बिन रबीआ ने, उन्हें इराक ने और उन्हें अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया अपने बाप का कोई इंकार न करे क्योंकि जो अपने बाप से मुँह मोड़ता है (और

٦٧٦٨- حَدَّثَنَا أَصْبَغُ بْنُ الْفَرَجِ، حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي عَمْرٌو عَنْ جَعْفَرِ بْنِ رَبِيعَةَ، عَنْ عِرَاكٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((لاَ تَرْغَبُوا عَنْ آبَائِكُمْ،

अपने को दूसरे का बेटा ज़ाहिर करता है तो) ये कुफ़्र है।

فَمَنْ رَغِبَ عَنْ أَبِيهِ فَهُوَ كُفْرٌ)).

बाब 30 : किसी औरत का दा'वा करना कि ये बच्चा मेरा है

٣٠- باب إِذَا ادَّعَتِ الْمَرْأَةُ ابْنًا

6769. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, कहा कि हमसे अबुज़्ज़िनाद ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुर्रहमान ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, दो औरतें थीं और उनके साथ उनके दो बच्चे भी थे, फिर भेड़िया आया और एक बच्चे को उठाकर ले गया उसने अपनी साथी औरत से कहा कि भेड़िया तेरे बच्चे को ले गया है, दूसरी औरत ने कहा कि वो तो तेरा बच्चा ले गया है। वो दोनों औरतें अपना मुक़द्दमा दाऊद (अ.) के पास लाईं तो आपने फ़ैसला बड़ी के हक़ में कर दिया। वो दोनों निकलकर सुलैमान बिन दाऊद (अ.) के पास गईं और उन्हें वाक़िया की ख़बर दी। सुलैमान (अ.) ने कहा कि छुरी लाओ मैं लड़के के दो टुकड़े करके दोनों को एक एक दूँगा। उस पर छोटी औरत बोल उठी कि ऐसा न कीजिए आप पर अल्लाह रहम करे, ये बड़ी ही का लड़का है लेकिन आप (अ.) ने फ़ैसला छोटी औरत के हक़ में किया। अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा कि वल्लाह! मैंने सिक्कीन (छुरी) का लफ़्ज़ सबसे पहली मर्तबा (आँहज़रत ﷺ की ज़ुबान से) उस दिन सुना था और हम उसके लिये (अपने क़बीले में) मुदया का लफ़्ज़ बोलते थे। (राजेअ : 3427)

٦٧٦٩- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، حَدَّثَنَا أَبُو الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ : ((كَانَتِ امْرَأَتَانِ مَعَهُمَا ابْنَاهُمَا، جَاءَ الذِّئْبُ فَذَهَبَ بِابْنِ إِحْدَاهُمَا فَقَالَتْ لِصَاحِبَتِهَا: إِنَّمَا ذَهَبَ بِابْنِكِ وَقَالَتِ الأُخْرَى: إِنَّمَا ذَهَبَ بِابْنِكِ فَتَحَاكَمَتَا إِلَى دَاوُدَ عَلَيْهِ السَّلاَمُ، فَقَضَى بِهِ لِلْكُبْرَى، فَخَرَجَتَا عَلَى سُلَيْمَانَ بْنِ دَاوُدَ عَلَيْهِمَا السَّلاَمُ فَأَخْبَرَتَاهُ فَقَالَ: ائْتُونِي بِالسِّكِّينِ أَشُقُّهُ بَيْنَهُمَا فَقَالَتِ الصُّغْرَى: لاَ تَفْعَلْ يَرْحَمُكَ اللهُ هُوَ ابْنُهَا، فَقَضَى بِهِ لِلصُّغْرَى)) قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ: وَاللهِ إِنْ سَمِعْتُ بِالسِّكِّينِ قَطُّ، إِلاَّ يَوْمَئِذٍ وَمَا كُنَّا نَقُولُ : إِلاَّ الْمُدْيَةَ.

[راجع: ٣٤٢٧]

अबू हुरैरह (रज़ि.) के क़बीले में छुरी के लिये सिक्कीन का लफ़्ज़ इस्ते'माल नहीं होता था। हज़रत सुलैमान (अलैहि.) का फ़ैसला तक़ाज़-ए-फ़ित्रत के मुताबिक़ था। बच्चा दरहक़ीक़त छोटी ही का था तब ही उसके ख़ून ने जोश मारा।

बाब 31 : क़याफ़ा शनास का बयान

٣١- باب الْقَائِفِ

वुहल्लज़ी यअरिफ़ुश्शिब्ह व युमय्यिज़ुल अष्र लिअन्नहू यकिफुल अश्याअ अंय्यत्बअहा कअन्नहू मक्लूबुन मिनलकाफ़ी. (फ़त्ह)

6770. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे उ़र्वा ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) मेरे यहाँ एक मर्तबा बहुत ख़ुश ख़ुश तशरीफ़ लाए। आपका चेहरा मुबारक चमक रहा था। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया तुमने नहीं देखा, मुजज़्ज़िज़ (एक क़याफ़ा शनास) ने अभी ज़ैद बिन हारिष़

٦٧٧٠- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: إِنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ دَخَلَ عَلَيَّ مَسْرُورًا تَبْرُقُ أَسَارِيرُ وَجْهِهِ فَقَالَ ((أَلَمْ تَرَىْ أَنَّ مُجَزِّزًا نَظَرَ

और उसामा बिन ज़ैद(रज़ि.) के (सिर्फ़ पैर देखे) और कहा कि ये पैर एक-दूसरे से ता'ल्लुक़ रखते हैं। (राजेअ : 3555)

آنِفًا إِلَى زَيْدِ بْنِ حَارِثَةَ وَأُسَامَةَ بْنِ زَيْدٍ فَقَالَ إِنَّ هَذِهِ الأَقْدَامَ بَعْضُهَا مِنْ بَعْضٍ)). [راجع: ٣٥٥٥]

6771. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, उन्हों ने कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे ज़ुहरी ने बयान किया, उनसे उर्वा ने और उनसे उम्मुल मोमिनीन आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि एक दिन रसूलुल्लाह (ﷺ) मेरे यहाँ तशरीफ़ लाए, आप बहुत ख़ुश थे और फ़र्माया, आइशा! तुमने देखा नहीं, मुजज़्ज़िज़ अल मुद्लिजी आया और उसने उसामा और ज़ैद (रज़ि.) को देखा, दोनों के जिस्म पर एक चादर थी, जिसने दोनों के सरों को ढक लिया था और उनके सिर्फ़ पैर खुले हुए थे तो उसने कहा कि ये पैर एक-दूसरे से ता'ल्लुक़ रखते हैं। (राजेअ : 3555)

٦٧٧١- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ عُرْوَةَ عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: دَخَلَ عَلَيَّ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ ذَاتَ يَوْمٍ وَهُوَ مَسْرُورٌ فَقَالَ: ((يَا عَائِشَةُ أَلَمْ تَرَيْ أَنَّ مُجَزِّزًا الْمُدْلِجِيَّ دَخَلَ عَلَيَّ فَرَأَى أُسَامَةَ وَزَيْدًا وَعَلَيْهِمَا قَطِيفَةٌ قَدْ غَطَّيَا رُؤُوسَهُمَا وَبَدَتْ أَقْدَامُهُمَا؟ فَقَالَ: إِنَّ هَذِهِ الأَقْدَامَ بَعْضُهَا مِنْ بَعْضٍ)). [راجع: ٣٥٥٥]

तश्रीह : ये शख़्स क़याफ़ा शनास था। उसने उन दोनों के पैरों ही से पहचान लिया कि ये दोनों बाप बेटे हैं कुछ लोग इस बारे में शक करने वाले भी थे उनकी इससे तर्दीद हो गई। आपको इससे ख़ुशी हासिल हुई कुछ दफ़ा क़याफ़ा शनास का अंदाज़ा बिलकुल सहीह हो जाता है।

86. किताबुल हुदूद

किताब हद और सज़ा के बयान में

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

इसके ज़ैल हाफ़िज़ साहब फ़र्माते हैं । **किताबुल हुदूदि जमउ हद्दिन वल्मज़्कूर फ़ीहि हुना हदुज़्ज़िना वल्ख़म्र वस्सरक़ा** या'नी लफ़्ज़, हुदूद हद की जमा है। यहाँ ज़िनाकारी, शराब नोशी और चोरी वग़ैरह की हदें बयान की गईं हैं। कुछ उलमा ने हद को सत्रह गुनाहों पर वाजिब माना है। जैसे मुर्तद होना, ज़िना करना, शराब पीना, चोरी करना, नाहक़ किसी पर ज़िना की तोहमत लगाना, ग़ैर फ़ितरी जिंसी ता'ल्लुक़ बनाना, अगरचे अपनी ही औरत के साथ क्यूँ न हो और सुस्ती से नमाज़ छोड़ देना, बिला शरई उज़्र के रमज़ान का रोज़ा तोड़ देना, जादू करना, औरत का किसी जानवर बन्दर वग़ैरह

से वती करना वग़ैरह वग़ैरह। **व अस्लुल हद्दि मा यहजिज़ु बैन शैऐनि फ़यनउ इख़्तिलातहुमा** या'नी हद की असल ये है कि जो दो चीज़ों के बीच हाइल होकर उनके इख़्तिलात को रोक दे जैसे दो घरों के बीच हद्दे फ़ासिल। ज़ानी वग़ैरह की हद को हद इसलिये कहा गया कि वो ज़ानी वग़ैरह को इस हरकत से रोक देती है। इस किताब में ज़िना और चोरी वग़ैरह की रिवायात में जो ईमान की नफ़ी आई है उसके बारे में हाफ़िज़ साहब फ़र्माते हैं, **वस्सहीहुल्लज़ी क़ालहुल मुहक़्क़िक़ून अन्न मअनाहू ला यफ़्अ लु हाज़िहिल मआसी व हुव कामिलुल ईमान व इन्नमा तावल्नाहू लिहदीषि अबी ज़र्रिन मन क़ाल ला इलाहा इल्लल्लाहु व इन ज़ना व इन सरक़** या'नी मुहक़्क़िक़ीन उलमा ने उसके मा'नी ये बताए हैं कि वो शख़्स कामिलुल ईमान नहीं रहता, ये तावील हदीषे अबू ज़र्र की बिना पर है जिसमें है कि जिसने **ला इलाहा इल्लल्लाह** कहा वो जन्नत में जाएगा अगरचे ज़िना करे या चोरी करे। और हदीषे उबादह में ज़िना और चोरी के बारे में यूँ है कि जो शख़्स उन गुनाहों को करेगा दुनिया में उस पर हद क़ायम हो गई तो वो उसके लिये कफ़्फ़ारा हो जाएगी वरना वो अल्लाह की मर्ज़ी पर है चाहे मुआफ़ कर दे चाहे उसे अ़ज़ाब करे। इर्शादे बारी है, **इन्नल्लाह ला यग़्फ़िरु अय्युंश्रक बिही व यग़्फ़िरू मा दून ज़ालिक लिमय्यंशाउ** (अन्निसा : 48) इसीलिये अहले सुन्नत का इज्तिमाई अक़ीदा है कि कबाइर के मुर्तकिब को काफ़िर नहीं कहा जा सकता हाँ शिर्क करने से वो काफ़िर हो जाता है। मज़ीद तफ़्सील के लिये फ़त्हुल बारी का मुतालआ किया जाए।

बाब 1 : ज़िना और शराबनोशी के बयान में

١- باب لايشرب الخمر

हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा ज़िना करते वक़्त ईमान का नूर उठा लिया जाता है

وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: يُنْزَعُ مِنْهُ نُورُ الإِيمَانِ فِي الزِّنَا

6772. मुझसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे लैष़ ने बयान किया, उनसे अ़क़ील ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उनसे अबूबक्र बिन अ़ब्दुर्रहमान ने बयान किया और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया जब भी ज़िना करने वाला ज़िना करता है तो वो मोमिन नहीं रहता, जब भी कोई शराब पीने वाला शराब पीता है तो वो मोमिन नहीं रहता, जब भी कोई चोरी करने वाला चोरी करता है तो वो मोमिन नहीं रहता, जब भी कोई लौटने वाला लौटता है कि लोग नज़रें उठा उठाकर उसे देखने लगते हैं तो वो मोमिन नहीं रहता। और इब्ने शिहाब से रिवायत है, उनसे सईद बिन मुसय्यब और अबू सलमा ने बयान किया, उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से इसी तरह सिवा लफ़्ज़ नुह्बह के। (राजेअ : 2475)

٦٧٧٢- حَدَّثَنِي يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ عُقَيْلٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ أَبِي بَكْرِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((لاَ يَزْنِي الزَّانِي حِينَ يَزْنِي وَهُوَ مُؤْمِنٌ، وَلاَ يَشْرَبُ الْخَمْرَ حِينَ يَشْرَبُ وَهُوَ مُؤْمِنٌ، وَلاَ يَسْرِقُ حِينَ يَسْرِقُ وَهُوَ مُؤْمِنٌ، وَلاَ يَنْتَهِبُ نُهْبَةً يَرْفَعُ النَّاسُ إِلَيْهِ فِيهَا أَبْصَارَهُمْ وَهُوَ مُؤْمِنٌ)). وَعَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ وَأَبِي سَلَمَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ بِمِثْلِهِ إِلاَّ النُّهْبَةَ. [راجع: ٢٤٧٥]

बाब 2 : शराब पीने वालों को मारने के बयान में

٢- باب مَا جَاءَ فِي ضَرْبِ شَارِبِ الْخَمْرِ

6773. हमसे हफ़्स बिन उमर ने बयान किया, उन्होंने कहा

٦٧٧٣- حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ عُمَرَ، حَدَّثَنَا

هِشَامٌ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسٍ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ ح وَحَدَّثَنَا آدَمُ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، حَدَّثَنَا قَتَادَةُ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ ضَرَبَ فِي الْخَمْرِ بِالْجَرِيدِ وَالنِّعَالِ الزِّنَا وَشُرْبُ الْخَمْرِ. وَجَلَدَ أَبُو بَكْرٍ أَرْبَعِينَ.[طرفه في : ٦٧٧٦].

हमसे हिशाम ने बयान किया, उनसे क़तादा ने बयान किया, उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया, नबी करीम (ﷺ) से (दूसरी सनद) हमसे आदम ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, कहा हमसे क़तादा ने बयान किया, उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने शराब पीने पर छड़ी और जूते से मारा था और अबूबक्र (रज़ि.) ने चालीस कोड़े मारे। (दीगर मक़ाम : 6776)

٣- باب مَنْ أَمَرَ بِضَرْبِ الْحَدِّ فِي الْبَيْتِ

बाब 3 : जिसने घर में हद मारने का हुक्म दिया

٦٧٧٤- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ، عَنْ أَيُّوبَ، عَنِ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ، عَنْ عُقْبَةَ بْنِ الْحَارِثِ، قَالَ: جِيءَ بِالنُّعَيْمَانِ أَوْ بِابْنِ النُّعَيْمَانِ شَارِبًا فَأَمَرَ النَّبِيُّ ﷺ مَنْ كَانَ بِالْبَيْتِ أَنْ يَضْرِبُوهُ قَالَ: فَضَرَبُوهُ فَكُنْتُ أَنَا فِيمَنْ ضَرَبَهُ بِالنِّعَالِ.

[راجع: ٢٣١٦]

6774. हमसे क़ुतैबा ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल वह्हाब ने बयान किया, उनसे अय्यूब ने, उनसे इब्ने अबी मुलैका ने, उनसे उ़क़्बा बिन हारिष़ (रज़ि.) ने बयान किया कि नुऐमान या इब्नुन नुऐमान को शराब के नशे में लाया गया तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने घर में मौजूद लोगों को हुक्म दिया कि उन्हें मारें। उन्होंने मारा। उ़क़्बा कहते हैं मैं भी उन लोगों में था जिन्होंने उसको जूतों से मारा। (राजेअ : 2316)

शराबी के लिये यही सज़ा काफ़ी है कि सब अहले ख़ाना उसे मारें फिर भी वो बाज़ न आए तो उसका मामला बहुत संगीन बन जाता है।

٥- باب الضَّرْبِ بِالْجَرِيدِ وَالنِّعَالِ

बाब 5 : शराब में छड़ी और जूते से मारना

٦٧٧٥- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا وُهَيْبُ بْنُ خَالِدٍ، عَنْ أَيُّوبَ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ، عَنْ عُقْبَةَ بْنِ الْحَارِثِ أَنَّ النَّبِيَّ أُتِيَ بِنُعَيْمَانَ أَوْ بِابْنِ نُعَيْمَانَ وَهُوَ سَكْرَانُ فَشَقَّ عَلَيْهِ، وَأَمَرَ مَنْ فِي الْبَيْتِ أَنْ يَضْرِبُوهُ، فَضَرَبُوهُ بِالْجَرِيدِ وَالنِّعَالِ وَكُنْتُ فِيمَنْ ضَرَبَهُ.

[راجع: ٢٣١٦]

6775. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, कहा हमसे वुहैब बिन ख़ालिद ने बयान किया, उनसे अय्यूब ने, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन अबी मुलैका ने और उनसे उ़क़्बा बिन हारिष़ (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) के पास नुऐमान या इब्नुन नुऐमान को लाया गया, वो नशे में था। आँहज़रत (ﷺ) पर ये नागवार गुज़रा और आपने घर में मौजूद लोगों को हुक्म दिया कि उन्हें मारें। चुनाँचे लोगों ने उन्हें लकड़ी और जूतों से मारा और मैं भी उन लोगों में था जिन्होंने उसे मारा था। (राजेअ : 2316)

बाब और हदीष़ में मुताबक़त ज़ाहिर है।

6776. हमसे मुस्लिम ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम ने बयान किया, कहा हमसे क़तादा ने बयान किया, उनसे अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने शराब पीने पर छड़ी और जूतों से मारा था और अबूबक्र (रज़ि.) ने चालीस कोड़े लगवाए थे। (राजेअ : 6773)

٦٧٧٦- حَدَّثَنَا مُسْلِمٌ، حَدَّثَنَا هِشَامٌ، حَدَّثَنَا قَتَادَةُ، عَنْ أَنَسٍ قَالَ جَلَدَ النَّبِيُّ ﷺ فِي الْخَمْرِ بِالْجَرِيدِ وَالنِّعَالِ، وَجَلَدَ أَبُوبَكْرٍ أَرْبَعِينَ. [راجع: ٦٧٧٣]

6777. हमसे क़ुतैबा ने बयान किया, उनसे अबू ज़मरह ने बयान किया, उनसे अनस ने बयान किया, उनसे यज़ीद बिन अल्हाद ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन इब्राहीम ने बयान किया, उनसे अबू सलमा ने बयान किया और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) के पास एक शख़्स को लाया गया जो शराब पिये हुए था तो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, कि उसे मारो। अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि हममें कुछ वो थे जिन्होंने उसे हाथ से मारा कुछ ने जूते से मारा और कुछ ने अपने कपड़े से मारा। जब मार चुके तो किसी ने कहा कि अल्लाह तुझे रुस्वा करे। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि इस तरह के जुम्ले न कहो, इसके मामले में शैतान की मदद न करो। (दीगर मक़ाम : 6781)

٦٧٧٧- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، حَدَّثَنَا أَبُو ضَمْرَةَ أَنَسٌ، عَنْ يَزِيدَ بْنِ الْهَادِ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: أُتِيَ النَّبِيُّ ﷺ بِرَجُلٍ قَدْ شَرِبَ قَالَ: ((اضْرِبُوهُ)) قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: فَمِنَّا الضَّارِبُ بِيَدِهِ وَالضَّارِبُ بِنَعْلِهِ وَالضَّارِبُ بِثَوْبِهِ فَلَمَّا انْصَرَفَ قَالَ بَعْضُ الْقَوْمِ: أَخْزَاكَ اللهُ قَالَ: لاَ تَقُولُوا هَكَذَا لاَ تُعِينُوا عَلَيْهِ الشَّيْطَانَ. [طرفه في : ٦٧٨١]

मा'लूम हुआ कि गुनहगार की मज़म्मत में हद से आगे बढ़ना अच्छी बात नहीं है।

6778. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुल वह्हाब ने बयान किया, उन्होने कहा हमसे ख़ालिद बिन अल हारिष़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे अबू हुसैन ने, उन्होंने कहा कि मैंने उ़मैर बिन सईद नख़ई से सुना, कहा कि मैंने अ़ली बिन अबी तालिब (रज़ि.) से सुना, उन्होंने कहा कि मैं नहीं पसंद करूँगा कि हद में किसी को ऐसी सज़ा दूँ कि वो मर जाए और फिर मुझे उसका रंज हो, सिवा शराबी के कि अगर ये मर जाए तो मैं उसकी दियत अदा कर दूँगा क्योंकि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उसकी कोई हद मुक़र्रर नहीं की थी।

٦٧٧٨- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ الْوَهَّابِ، حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ الْحَارِثِ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، حَدَّثَنَا أَبُو حَصِينٍ سَمِعْتُ عُمَيْرَ بْنَ سَعِيدٍ النَّخَعِيَّ قَالَ: سَمِعْتُ عَلِيَّ بْنَ أَبِي طَالِبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: مَا كُنْتُ لأُقِيمَ حَدًّا عَلَى أَحَدٍ، فَيَمُوتَ فَأَجِدَ فِي نَفْسِي إِلاَّ صَاحِبَ الْخَمْرِ، فَإِنَّهُ لَوْ مَاتَ وَدَيْتُهُ وَذَلِكَ، أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ لَمْ يَسُنَّهُ.

6779. हमसे मक्की बिन इब्राहीम ने बयान किया, उनसे जुऐद ने, उनसे यज़ीद बिन ख़ुसैफ़ा ने, उनसे साइब बिन यज़ीद ने बयान किया, कि रसूलुल्लाह (ﷺ) और अबूबक्र (रज़ि.) और फिर उ़मर (रज़ि.) के इब्तिदाई दौरे ख़िलाफ़त में शराब पीने वाला हमारे पास लाया जाता तो हम अपने हाथ, जूते और

٦٧٧٩- حَدَّثَنَا مَكِّيُّ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، عَنِ الْجُعَيْدِ، عَنْ يَزِيدَ بْنِ خُصَيْفَةَ، عَنِ السَّائِبِ بْنِ يَزِيدَ قَالَ: كُنَّا نُؤْتَى بِالشَّارِبِ عَلَى عَهْدِ رَسُولِ اللهِ ﷺ وَإِمْرَةِ أَبِي بَكْرٍ

وَصَدْرًا مِنْ خِلاَفَةِ عُمَرَ، فَنَقُومُ إِلَيْهِ بِأَيْدِينَا وَنِعَالِنَا وَأَرْدِيَتِنَا، حَتَّى كَانَ آخِرُ إِمْرَةِ عُمَرَ فَجَلَدَ أَرْبَعِينَ حَتَّى إِذَا عَتَوْا وَفَسَقُوا جَلَدَ ثَمَانِينَ.

चादरें लेकर खड़े हो जाते (और उसे मारते) आख़िर ड़मर (रज़ि.) ने अपने आख़िरी दौरे ख़िलाफ़त में शराब पीने वालों को चालीस कोड़े मारे और जब उन लोगों ने मज़ीद सरकशी की और फ़िस्क़ व फ़िजूर किया तो अस्सी कोड़े मारे।

पस शराबी की आख़िरी सज़ा अस्सी कोड़े मारना है।

٦- باب مَا يُكْرَهُ مِنْ لَعْنِ شَارِبِ الْخَمْرِ، وَأَنَّهُ لَيْسَ بِخَارِجٍ مِنَ الْمِلَّةِ

बाब 6 : शराब पीने वाला इस्लाम से निकल नहीं जाता न उस पर ला'नत करनी चाहिये

٦٧٨٠- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ، حَدَّثَنِي اللَّيْثُ، حَدَّثَنِي خَالِدُ بْنُ يَزِيدَ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ أَبِي هِلاَلٍ، عَنْ زَيْدِ بْنِ أَسْلَمَ، عَنْ أَبِيهِ عَنْ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ أَنَّ رَجُلاً كَانَ عَلَى عَهْدِ النَّبِيِّ ﷺ كَانَ اسْمُهُ عَبْدَ اللهِ، وَكَانَ يُلَقَّبُ حِمَارًا وَكَانَ يُضْحِكُ رَسُولَ اللهِ ﷺ،وَكَانَ النَّبِيُّ ﷺ قَدْ جَلَدَهُ فِي الشَّرَابِ فَأُتِيَ بِهِ يَوْمًا فَأَمَرَ بِهِ فَجُلِدَ فَقَالَ رَجُلٌ مِنَ الْقَوْمِ: اللَّهُمَّ الْعَنْهُ مَا أَكْثَرَ مَا يُؤْتَى بِهِ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لاَ تَلْعَنُوهُ فَوَ اللهِ مَا عَلِمْتُ أَنَّهُ يُحِبُّ اللهَ وَرَسُولَهُ)).

6780. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा कि मुझसे लैष़ ने बयान किया, कहा कि मुझसे ख़ालिद बिन यज़ीद ने बयान किया, उनसे सईद बिन अबी हिलाल ने, उनसे ज़ैद बिन असलम ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे ड़मर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) के ज़माने में एक शख़्स, जिसका नाम अ़ब्दुल्लाह था और ह़िमार (गधे) के लक़ब से पुकारे जाते थे, वो आँह़ज़रत (ﷺ) को हंसाते थे और आँह़ज़रत (ﷺ) ने उन्हें शराब पीने पर मारा था तो उन्हें एक दिन लाया गया और आँह़ज़रत (ﷺ) ने उनके लिये हुक्म दिया और उन्हें मारा गया। ह़ाज़िरीन में एक स़ाह़ब ने कहा अल्लाह, इस पर ला'नत करे! कितनी मर्तबा कहा जा चुका है। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि इस पर ला'नत न करो वल्लाह! मैंने इसके बारे में यही जाना है कि ये अल्लाह और उसके रसूल से मुह़ब्बत करता है।

शराब पीने वाले मुसलमान को भी आपने किस नज़रे मुह़ब्बत से देखा ये इस ह़दीष़ से ज़ाहिर है।

٦٧٨١- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا أَنَسُ بْنُ عِيَاضٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ الْهَادِ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ : أُتِيَ النَّبِيُّ ﷺ بِسَكْرَانَ فَأَمَرَ بِضَرْبِهِ، فَمِنَّا مَنْ يَضْرِبُهُ بِيَدِهِ وَمِنَّا مَنْ يَضْرِبُهُ بِنَعْلِهِ، وَمِنَّا مَنْ يَضْرِبُهُ بِثَوْبِهِ. فَلَمَّا انْصَرَفَ قَالَ رَجُلٌ: مَا لَهُ أَخْزَاهُ اللهُ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ

6781. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अनस बिन अयाज़ ने बयान किया, उनसे इब्नुल हाद ने बयान किया, उनसे मुह़म्मद बिन इब्राहीम ने, उनसे अबू सलमा ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) के पास एक शख़्स नश की हालत में लाया गया तो आँह़ज़रत (ﷺ) ने उन्हें मारने का हुक्म दिया। हममें कुछ ने उन्हें हाथ से मारा, कुछ ने जूते से मारा और कुछ ने कपड़े से मारा। जब मार चुके तो एक शख़्स ने कहा, क्या हो गया है इसे, अल्लाह इसे रुस्वा करे। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया,

कि अपने भाई के ख़िलाफ़ शैतान की मदद न करो। (राजेअ : 6777)

ﷺ: ((لَا تَكُونُوا عَوْنَ الشَّيْطَانِ عَلَى أَخِيكُمْ)). [راجع: ٦٧٧٧]

अल्लाह की हद को बख़ुशी बर्दाश्त करना ही इस गुनहगार के मोमिन होने की दलील है पस हद क़ायम करने के बाद उस पर लअ़न तअ़न करना मना है।

बाब 7 : चोर जब चोरी करता है

٧- باب السَّارِقِ حِينَ يَسْرِقُ

6782. हमसे अ़म्र बिन अली ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन दाऊद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे फ़ुज़ैल बिन ग़ज़्वान ने बयान किया, उनसे इक्रिमा ने और उनसे हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जब ज़िना करने वाला ज़िना करता है तो वो मोमिन नहीं रहता और इसी तरह जब चोर चोरी करता है तो वो मोमिन नहीं रहता। (दीगर मक़ाम : 6809)

٦٧٨٢- حَدَّثَنِي عَمْرُو بْنُ عَلِيٍّ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ دَاوُدَ، حَدَّثَنَا فُضَيْلُ بْنُ غَزْوَانَ عَنْ عِكْرِمَةَ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((لَا يَزْنِي الزَّانِي حِينَ يَزْنِي وَهُوَ مُؤْمِنٌ، وَلَا يَسْرِقُ حِينَ يَسْرِقُ وَهُوَ مُؤْمِنٌ)). [طرفه في : ٦٨٠٩].

बाद में सच्ची तौबा करने और इस्लामी हद कुबूल करने के बाद उसमें ईमान लौटकर आ जाता है।

बाब 8 : चोर का नाम लिये बग़ैर उस पर ला'नत भेजना दुरुस्त है

٧- باب السَّارِقِ حِينَ يَسْرِقُ

6783. हमसे उ़मर बिन हफ़्स बिन ग़याष़ ने बयान किया, उन्होंने कहा मुझसे मेरे वालिद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे आ'मश ने बयान किया, कहा कि मैंने अबू स़ालेह से सुना, उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि अल्लाह ने चोर पर ला'नत भेजी कि वो एक अण्डा चुराता है और उसका हाथ काट लिया जाता है। एक रस्सी चुराता है उसका हाथ काट लिया जाता है। आ'मश ने कहा कि लोग ख़्याल करते थे कि अण्डे से मुराद लोहे का अण्डा है और रस्सी से मुराद ऐसी रस्सी समझते थे जो कई दिरहम की हो। (दीगर मक़ाम : 6799)

٦٧٨٢- حَدَّثَنِي عَمْرُو بْنُ عَلِيٍّ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ دَاوُدَ، حَدَّثَنَا فُضَيْلُ بْنُ غَزْوَانَ عَنْ عِكْرِمَةَ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((لَا يَزْنِي الزَّانِي حِينَ يَزْنِي وَهُوَ مُؤْمِنٌ، وَلَا يَسْرِقُ حِينَ يَسْرِقُ وَهُوَ مُؤْمِنٌ)). [طرفه في : ٦٨٠٩].

लोहे के अण्डे से अण्डे जैसा लोहे का गोला मुराद है जिसकी क़ीमत कम से कम तीन दिरहम हो।

बाब 9 : हद क़ायम होने से गुनाह का कफ़्फ़ारा हो जाता है

٩- باب الْحُدُودُ كَفَّارَةٌ

6784. हमसे मुहम्मद बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने उ़यैना ने बयान किया, उनसे ज़ुहरी ने, उनसे अबू इदरीस ख़ौलानी ने और उनसे से उ़बादह बिन स़ामित (रज़ि.)

٦٧٨٤- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ، حَدَّثَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ أَبِي

إِدْرِيسَ الْخَوْلاَنِيِّ، عَنْ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كُنَّا عِنْدَ النَّبِيِّ ﷺ فِي مَجْلِسٍ فَقَالَ: ((بَايِعُونِي عَلَى أَنْ لاَ تُشْرِكُوا بِاللهِ شَيْئًا، وَلاَ تَسْرِقُوا وَلاَ تَزْنُوا)). وَقَرَأَ هَذِهِ الآيَةَ كُلَّهَا. ((فَمَنْ وَفَى مِنْكُمْ فَأَجْرُهُ عَلَى اللهِ، وَمَنْ أَصَابَ مِنْ ذَلِكَ شَيْئًا فَعُوقِبَ بِهِ فَهُوَ كَفَّارَتُهُ، وَمَنْ أَصَابَ مِنْ ذَلِكَ شَيْئًا فَسَتَرَهُ اللهُ عَلَيْهِ، إِنْ شَاءَ غَفَرَ لَهُ وَإِنْ شَاءَ عَذَّبَهُ)).

[راجع: ٨١]

ने बयान किया कि हम नबी करीम (ﷺ) के यहाँ एक मज्लिस में बैठे थे तो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मुझसे अहद करो अल्लाह के साथ कोई शरीक नहीं ठहराओगे, चोरी नहीं करोगे और ज़िना नहीं करोगे और आपने ये आयत पूरी पढ़ी पस तुममें से जो शख़्स इस अहद को पूरा करेगा उसका षवाब अल्लाह के यहाँ है और जो शख़्स उनमें से ग़लती कर गुज़रा और उस पर उसे सज़ा हुई तो वो उसका कफ़्फ़ारा है और जो शख़्स उनमें से कोई ग़लती कर गुज़रा और अल्लाह तआला ने उसकी पर्दा पोशी कर दी तो अगर अल्लाह चाहेगा तो उसे माफ़ कर देगा और अगर चाहेगा तो उस पर अज़ाब देगा। (राजेअ : 81)

١٠ - باب ظَهْرُ الْمُؤْمِنِ حِمًى، إِلاَّ فِي حَدٍّ أَوْ حَقٍّ

बाब 10 : मुसलमान की पीठ महफ़ूज़ है हाँ जब कोई हद का काम करे तो उसकी पीठ पर मार लगा सकते हैं

٦٧٨٥ - حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا عَاصِمُ بْنُ عَلِيٍّ، حَدَّثَنَا عَاصِمُ بْنُ مُحَمَّدٍ، عَنْ وَاقِدِ بْنِ مُحَمَّدٍ سَمِعْتُ أَبِي قَالَ عَبْدُ اللهِ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ فِي حَجَّةِ الْوَدَاعِ: ((أَلاَ أَيُّ شَهْرٍ تَعْلَمُونَهُ أَعْظَمَ حُرْمَةً؟)) قَالُوا: أَلاَ شَهْرُنَا هَذَا؟ قَالَ: ((أَلاَ أَيُّ بَلَدٍ تَعْلَمُونَهُ أَعْظَمَ حُرْمَةً؟)) قَالُوا: أَلاَ بَلَدُنَا هَذَا؟ قَالَ: ((أَلاَ أَيُّ يَوْمٍ تَعْلَمُونَهُ أَعْظَمَ حُرْمَةً؟)) قَالُوا: أَلاَ يَوْمُنَا هَذَا؟ قَالَ: ((فَإِنَّ اللهَ تَبَارَكَ وَتَعَالَى قَدْ حَرَّمَ دِمَاءَكُمْ وَأَمْوَالَكُمْ وَأَعْرَاضَكُمْ إِلاَّ بِحَقِّهَا كَحُرْمَةِ يَوْمِكُمْ هَذَا، فِي بَلَدِكُمْ هَذَا فِي شَهْرِكُمْ هَذَا، أَلاَ هَلْ بَلَّغْتُ؟)) ثَلاَثًا كُلُّ ذَلِكَ يُجِيبُونَهُ أَلاَ نَعَمْ.

6785. मुझसे मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे आसिम बिन अली ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे आसिम बिन मुहम्मद ने बयान किया, उनसे वाक़िद बिन मुहम्मद ने बयान किया, उन्होंने अपने वालिद से सुना कि अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने कहा रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हज्जतुल वदाअ के मौक़े पर फ़र्माया, हाँ! तुम लोग किस चीज़ को सबसे ज़्यादा हुर्मत वाली समझते हो? लोगों ने कहा कि अपने इसी महीने को। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, हाँ! किस शहर को तुम सबसे ज़्यादा हुर्मत वाला समझते हो? लोगों ने जवाब दिया कि अपने इसी शहर को। आँहज़रत (ﷺ) ने पूछा, हाँ! किस दिन को तुम सबसे ज़्यादा हुर्मत वाला ख़्याल करते हो? लोगों ने कहा कि अपने इसी दिन को। आँहज़रत (ﷺ) ने अब फ़र्माया कि फिर बिला शुब्हा अल्लाह तआला ने तुम्हारे ख़ून, तुम्हारे माल और तुम्हारी इज़्ज़तों को हुर्मत वाला क़रार दिया है, सिवा उसके हक़ के, जैसा कि इस दिन की हुर्मत इस शहर और इस महीने में है। हाँ! क्या मैंने तुम्हें पहुँचा दिया। तीन मर्तबा आपने फ़र्माया और हर मर्तबा सहाबा ने जवाब दिया कि हाँ! पहुँचा दिया। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, अफ़सोस! मेरे बाद तुम काफ़िर न

قَالَ: ((وَيْحَكُمْ -أَوْ وَيْلَكُمْ- لاَ تَرْجِعُنَّ بَعْدِي كُفَّارًا يَضْرِبُ بَعْضُكُمْ رِقَابَ بَعْضٍ)). [راجع: ١٧٤٢]

बन जाना कि एक-दूसरे की गर्दन मारने लगो।
(राजेअ़ : 1742)

इस ह़दीष़ से ज़ाहिर है कि मुसलमान का अल्लाह के नज़दीक कितना बड़ा मुक़ाम है। जिसका लिह़ाज़ रखना हर मुसलमान का अहम फ़रीज़ा है।

١١- باب إِقَامَةِ الْحُدُودِ وَالاِنْتِقَامِ لِحُرُمَاتِ اللهِ

बाब 11 : हुदूद क़ायम करना और अल्लाह की हुर्मतों को जो कोई तोड़े उससे बदला लेना

٦٧٨٦- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ عُقَيْلٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: مَا خُيِّرَ النَّبِيُّ ﷺ بَيْنَ أَمْرَيْنِ إِلاَّ اخْتَارَ أَيْسَرَهُمَا مَا لَمْ يَكُنْ إِثْمٌ، فَإِذَا كَانَ الإِثْمُ كَانَ أَبْعَدَهُمَا مِنْهُ، وَاللهِ مَا انْتَقَمَ لِنَفْسِهِ فِي شَيْءٍ يُؤْتَى إِلَيْهِ قَطُّ، حَتَّى تُنْتَهَكَ حُرُمَاتُ اللهِ فَيَنْتَقِمُ لِلَّهِ. [راجع: ٣٥٦٠]

6786. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ ने, उनसे अ़क़ील ने, उनसे शिहाब ने, उनसे उ़र्वा ने और उनसे आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) को जब भी दो चीज़ों में से एक का इख़्तियार करने का हुक्म दिया गया तो आपने उनमे से आसान ही को पसंद किया, बशर्तेकि उसमें गुनाह का कोई पहलू न हो, अगर उसमें गुनाह का कोई पहलू होता तो आप उससे सबसे ज़्यादा दूर होते। अल्लाह की क़सम! आँह़ज़रत (ﷺ) ने कभी अपने ज़ाती मामले में किसी से बदला नहीं लिया अल्बत्ता जब अल्लाह की हुर्मतों को तोड़ा जाता तो आप अल्लाह के लिये बदला लेते थे। (राजेअ़ : 3560)

١٢- باب إِقَامَةِ الْحُدُودِ عَلَى الشَّرِيفِ وَالْوَضِيعِ

बाब 12 : कोई बुलंद मर्तबा शख़्स़ हो या कम मर्तबा सब पर बराबर ह़द क़ायम करना

ये नहीं कि अशराफ़ (ऊँचे दर्जे के लोगों) को छोड़ दिया जाए।

٦٧٨٧- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ عَائِشَةَ أَنَّ أُسَامَةَ كَلَّمَ النَّبِيَّ ﷺ فِي امْرَأَةٍ فَقَالَ: ((إِنَّمَا هَلَكَ مَنْ كَانَ قَبْلَكُمْ، أَنَّهُمْ كَانُوا يُقِيمُونَ الْحَدَّ عَلَى الْوَضِيعِ، وَيَتْرُكُونَ الشَّرِيفَ وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لَوْ فَاطِمَةُ فَعَلَتْ ذَلِكَ، لَقَطَعْتُ يَدَهَا)). [راجع: ٢٦٤٨]

6787. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे उ़र्वा ने और उनसे आ़इशा (रज़ि.) ने कि उसामा (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से एक औ़रत की (जिस पर ह़द का मुक़द्दमा होने वाला था) सिफ़ारिश की तो आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुमसे पहले के लोग इसलिये हलाक हो गये कि वो कमज़ोरों पर तो ह़द क़ायम करते और बुलंद मर्तबा लोगों को छोड़ देते थे। उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है। अगर (मेरी बेटी) फ़ातिमा (रज़ि.) ने भी (चोरी) की होती तो मैं उसका भी हाथ काट लेता। (राजेअ़ : 2648)

इस्लामी हुदूद का अज्र बहरहाल हमेशा के लिये है बशर्ते कि इस्लामी स्टेट में इस्लामी अदालत में हो।

बाब 13 : जब हद्दी मुक़द्दमा हाकिम के पास पहुँच जाए फिर सिफ़ारिश करना मना है

١٣- باب كَرَاهِيَةِ الشَّفَاعَةِ فِي الْحَدِّ إِذَا رُفِعَ إِلَى السُّلْطَانِ

बल्कि गुनाहे अ़ज़ीम है।

6788. हमसे सईद बिन सुलैमान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे लैष़ ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उनसे उ़र्वा ने बयान किया और उनसे आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि एक मख़्ज़ूमी औ़रत का मामला जिसने चोरी की थी, क़ुरैश के लोगों के लिये अहमियत इख़्तियार कर गया और उन्होंने कहा कि आँहज़रत (ﷺ) से इस मामले में कौन बात कर सकता है उसामा (रज़ि.) के सिवा, जो आँहज़रत (ﷺ) को बहुत प्यारे हैं और कोई आपसे सिफ़ारिश की हिम्मत नहीं कर सकता? चुनाँचे उसामा (रज़ि.) ने आँहज़रत (ﷺ) से बात की तो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, क्या तुम अल्लाह की हदों में सिफ़ारिश करने आए हो। फिर आप खड़े हुए और ख़ुत्बा दिया और फ़र्माया ऐ लोगों! तुमसे पहले के लोग इसलिये गुमराह हो गये कि जब उनमें कोई बड़ा आदमी चोरी करता तो उसे छोड़ देते लेकिन अगर कमज़ोर चोरी करता तो उस पर हद क़ायम करते थे और अल्लाह की क़सम! अगर फ़ातिमा बिन्ते मुहम्मद (ﷺ) ने भी चोरी की होती तो मुहम्मद (ﷺ) उसका हाथ ज़रूर काट डालते। (राजेअ़ : 2648)

٦٧٨٨- حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ سُلَيْمَانَ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّ قُرَيْشًا أَهَمَّتْهُمُ الْمَرْأَةُ الْمَخْزُومِيَّةُ الَّتِي سَرَقَتْ فَقَالُوا: مَنْ يُكَلِّمُ رَسُولَ اللهِ ﷺ وَمَنْ يَجْتَرِىءُ عَلَيْهِ إِلاَّ أُسَامَةُ حِبُّ رَسُولِ اللهِ ﷺ؟ فَكَلَّمَ رَسُولَ اللهِ ﷺ فَقَالَ: ((أَتَشْفَعُ فِي حَدٍّ مِنْ حُدُودِ اللهِ؟)) ثُمَّ قَامَ فَخَطَبَ فَقَالَ: ((يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّمَا ضَلَّ مَنْ قَبْلَكُمْ، أَنَّهُمْ كَانُوا إِذَا سَرَقَ الشَّرِيفُ تَرَكُوهُ، وَإِذَا سَرَقَ الضَّعِيفُ فِيهِمْ أَقَامُوا عَلَيْهِ الْحَدَّ، وَايْمُ اللهِ لَوْ أَنَّ فَاطِمَةَ بِنْتَ مُحَمَّدٍ سَرَقَتْ لَقَطَعَ مُحَمَّدٌ يَدَهَا)). [راجع: ٢٦٤٨]

इस सिफ़ारिश पर आपने हज़रत उसामा को तम्बीह फ़र्माई।

बाब 14 : अल्लाह तआ़ला ने सूरह माइदह में फ़र्माया और चोर मर्द और चोर औ़रत का हाथ काटो

١٤- باب قَوْلِ اللهِ تَعَالَى ﴿وَالسَّارِقُ وَالسَّارِقَةُ فَاقْطَعُوا أَيْدِيَهُمَا﴾

(कितनी मालियत पर हाथ काटा जाए हज़रत अ़ली रज़ि. ने पहुँचे से हाथ कटवाया था। और क़तादा ने कहा अगर किसी औ़रत ने चोरी की और ग़लती से उसका बायाँ हाथ काट डाला गया तो बस अब दाहिना हाथ न काटा जाएगा।)

وَفِي كَمْ يُقْطَعُ؟ وَقَطَعَ عَلِيٌّ مِنَ الْكَفِّ. وَقَالَ قَتَادَةُ: فِي امْرَأَةٍ سَرَقَتْ فَقُطِعَتْ شِمَالُهَا لَيْسَ إِلاَّ ذَلِكَ.

इस बाब में ये बयान है कि कितनी मालियत पर हाथ काटा जाए। बयान की गई अहादीष़ से मा'लूम होता कि कम अज़्कम तीन दिरहम की मालियत पर हाथ काटा जाएगा।

6789. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मस्लमा ने बयान किया, कहा

٦٧٨٩- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْلَمَةَ،

हमसे इब्राहीम बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उनसे अ़म्र ने बयान किया और उनसे उम्मुल मोमिनीन आ़इशा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, चौथाई दीनार या उससे ज़्यादा पर हाथ काट लिया जाएगा। इस रिवायत की मुताबअ़त अ़ब्दुर्रहमान बिन ख़ालिद ज़ुह्री के भतीजे और मअ़मर ने ज़ुह्री के वास्ते से की। (दीगर मक़ामात : 6790, 6791)

حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ عَمْرَةَ، عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((تُقْطَعُ الْيَدُ فِي رُبْعِ دِينَارٍ فَصَاعِدًا)). تَابَعَهُ عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ خَالِدٍ وَابْنُ أَخِي الزُّهْرِيِّ وَمَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ.

[طرفاه في : ٦٧٩٠، ٦٧٩١].

6790. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, उनसे इब्ने वहब ने बयान किया, उनसे यूनुस ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने, उनसे अ़म्रह ने और उनसे उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, चोर का हाथ एक चौथाई दीनार पर काट लिया जाएगा। (राजेअ़ : 6789)

٦٧٩٠- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ أَبِي أُوَيْسٍ، عَنِ ابْنِ وَهْبٍ، عَنْ يُونُسَ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ، وَعَمْرَةَ عَنْ عَائِشَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((تُقْطَعُ يَدُ السَّارِقِ فِي رُبْعِ دِينَارٍ)). [راجع: ٦٧٨٩]

6791. हमसे इमरान बिन मैसरह ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अ़ब्दुल वारिस़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे हुसैन ने बयान किया, उनसे यह्या ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन अ़ब्दुर्रहमान अंस़ारी ने बयान किया, उनसे अ़म्र बिन्ते अ़ब्दुर्रहमान ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया चौथाई दीनार पर हाथ काटा जाएगा। (राजेअ़ : 6789)

٦٧٩١- حَدَّثَنَا عِمْرَانُ بْنُ مَيْسَرَةَ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ، حَدَّثَنَا الْحُسَيْنُ، عَنْ يَحْيَى، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الأَنْصَارِيِّ، عَنْ عَمْرَةَ بِنْتِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ حَدَّثَتْهُ أَنَّ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا حَدَّثَتْهُمْ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ : ((تُقْطَعُ اليد فِي رُبْعِ دِينَارٍ)). [راجع: ٦٧٨٩]

6792. हमसे उ़स्मान बिन अबी शैबा ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दह ने बयान किया, उनसे हिशाम ने, उनसे उनके वालिद ने बयान किया और उन्हें ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने ख़बर दी कि नबी करीम (ﷺ) के ज़माने में चोर का हाथ बग़ैर लकड़ी के चमड़े की ढाल या आ़म ढाल की चोरी पर ही काटा जाता था।

٦٧٩٢- حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا عَبْدَةُ : عَنْ هِشَامٍ، عَنْ أَبِيهِ قَالَ: أَخْبَرَتْنِي عَائِشَةُ أَنَّ يَدَ السَّارِقِ لَمْ تُقْطَعْ عَلَى عَهْدِ النَّبِيِّ ﷺ إِلاَّ فِي ثَمَنِ مِجَنٍّ حَجَفَةٍ أَوْ تُرْسٍ.

हमसे उ़स्मान ने बयान किया, कहा हमसे हुमैद बिन अ़ब्दुर रहमान ने बयान किया, उनसे हिशाम ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने, उनसे आ़इशा (रज़ि.) ने इसी त़रह।

....- حَدَّثَنَا عُثْمَانُ، حَدَّثَنَا حُمَيْدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، حَدَّثَنَا هِشَامٌ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ مِثْلَهُ. [طرفاه في : ٦٧٩٣، ٦٧٩٤].

6793. हमसे मुहम्मद बिन मुक़ातिल ने बयान किया, उन्होंने

٦٧٩٣- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مُقَاتِلٍ، أَخْبَرَنَا

कहा हमको अ़ब्दुल्लाह ने ख़बर दी, उन्होंने कहा हमको हिशाम बिन उ़र्वा ने ख़बर दी, उन्हें उनके वालिद ने और उनसे आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि चोर का हाथ बग़ैर लकड़ी के चमड़े की ढाल या आ़म ढाल की क़ीमत से कम पर नहीं काटा जाता था। ये दोनों ढाल क़ीमत से मिलती थीं। इसकी रिवायत वकीअ़ और इब्ने इदरीस ने हिशाम के वास्ते से की, इनसे इनकी वालिदा ने मुर्सलन। (राजेअ़ : 6792)

عَبْدُ اللهِ، أَخْبَرَنَا هِشَامُ بْنُ عُرْوَةَ، عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: لَمْ تَكُنْ تُقْطَعُ يَدُ السَّارِقِ فِي أَدْنَى مِنْ حَجَفَةٍ، أَوْ تُرْسٍ كُلُّ وَاحِدٍ مِنْهُمَا ذُو ثَمَنٍ. رَوَاهُ وَكِيعٌ وَابْنُ إِدْرِيسَ، عَنْ هِشَامٍ، عَنْ أَبِيهِ مُرْسَلاً.
[راجع: ٦٧٩٢]

6794. मुझसे यूसुफ़ बिन मूसा ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, उन्होंने कहा हिशाम बिन उ़र्वा ने, हमको उनके वालिद (उ़र्वा बिन ज़ुबैर) ने ख़बर दी, उन्होंन आ़इशा (रज़ि.) से, उन्होंने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) के ज़माने में चोर का हाथ ढाल की क़ीमत से कम पर नहीं काटा जाता था। लकड़ी के चमड़े की ढाल हो या आ़म ढाल, ये दोनों चीज़ें क़ीमत वाली थीं। (राजेअ़ : 6792)

٦٧٩٤- حَدَّثَنِي يُوسُفُ بْنُ مُوسَى، حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ قَالَ هِشَامُ بْنُ عُرْوَةَ أَخْبَرَنَا عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: لَمْ تُقْطَعْ يَدُ سَارِقٍ عَلَى عَهْدِ النَّبِيِّ ﷺ فِي أَدْنَى مِنْ ثَمَنِ الْمِجَنِّ تُرْسٍ أَوْ حَجَفَةٍ وَكَانَ كُلُّ وَاحِدٍ مِنْهُمَا ذَا ثَمَنٍ. [راجع: ٦٧٩٢]

6795. हमसे इस्माईल ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे मालिक बिन अनस ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) के आज़ादकर्दा गुलाम नाफ़ेअ़ ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने एक ढाल पर हाथ काटा था जिसकी क़ीमत तीन दिरहम थी। (दीगर मक़ामात : 7696, 6797, 6798)

٦٧٩٥- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، حَدَّثَنِي مَالِكُ بْنُ أَنَسٍ، عَنْ نَافِعٍ مَوْلَى عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَطَعَ فِي مِجَنٍّ ثَمَنُهُ ثَلاَثَةُ دَرَاهِمَ.
[أطرافه في : ٧٦٩٦، ٦٧٩٧، ٦٧٩٨].

मा'लूम हुआ कि कम अज़्कम बारह आना की मालियत की चीज़ पर हाथ काटा जाएगा और ऐसे उमूर इमामे वक़्त या इस्लामी अ़दालत के मुक़द्दमे की पोज़ीशन समझने पर मौक़ूफ़ हैं। **वल्लाहु आ़लम बिस्सवाब**। (बारह आना मौलाना मौसूफ़ शायद अपने वक़्त के हिसाब से कहते हैं जब सिक्के चाँदी के होते थे अब रुपये के हिसाब से ये मिक़्दार नहीं है, तौस्वी)

6796. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे जुवैरिया ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ़ ने, उनसे इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने एक ढाल की चोरी पर हाथ काटा था जिसकी क़ीमत तीन दिरहम थी। (राजेअ़ : 6795)

٦٧٩٦- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا جُوَيْرِيَةُ، عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: قَطَعَ النَّبِيُّ ﷺ فِي مِجَنٍّ ثَلاَثَةُ دَرَاهِمَ.[راجع: ٦٧٩٥]

6797. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या ने

٦٧٩٧- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا يَحْيَى،

बयान किया, उनसे उ़बैदुल्लाह ने बयान किया, कहा मुझसे नाफ़ेअ़ ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने कहा कि नबी करीम (ﷺ) ने एक ढाल पर हाथ काटा था जिसकी क़ीमत तीन दिरहम थी। (राजेअ़ : 6795)

عَنْ عُبَيْدِ اللهِ قَالَ: حَدَّثَنِي نَافِعٌ، عَنْ عَبْدِ اللهِ قَالَ: قَطَعَ النَّبِيُّ ﷺ فِي مِجَنٍّ ثَمَنُهُ ثَلاَثَةُ دَرَاهِمَ. [راجع: ٦٧٩٥]

6798. मुझसे इब्राहीम बिन मुंज़िर ने बयान किया, कहा हमसे अबू ज़म्रह ने बयान किया, कहा हमसे मूसा बिन उ़क़्बा ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ़ ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने एक चोर का हाथ एक ढाल पर काटा था जिसकी क़ीमत तीन दिरहम थी, इस रिवायत की मुताबअ़त मुहम्मद बिन इस्हाक़ ने की और लैष़ ने बयान किया कि मुझसे नाफ़ेअ़ ने (ष़मनुहु के बजाय) लफ़्ज़ क़ीमतुहु कहा। (राजेअ़ : 6795)

٦٧٩٨- حَدَّثَنِي إِبْرَاهِيمُ بْنُ الْمُنْذِرِ، حَدَّثَنَا أَبُو ضَمْرَةَ، حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ عُقْبَةَ، عَنْ نَافِعٍ أَنَّ عَبْدَ اللهِ بْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَطَعَ النَّبِيُّ ﷺ يَدَ سَارِقٍ فِي مِجَنٍّ ثَمَنُهُ ثَلاَثَةُ دَرَاهِمَ. تَابَعَهُ مُحَمَّدُ بْنُ إِسْحَاقَ وَقَالَ اللَّيْثُ: حَدَّثَنِي نَافِعٌ قِيمَتُهُ.

[راجع: ٦٧٩٥]

6799. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अ़ब्दुल वाहिद ने बयान किया, उन्होने कहा हमसे आ'मश ने बयान किया, कहा कि मैंने अबू स़ालेह से सुना, कहा कि मैंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया अल्लाह तआ़ला ने चोर पर ला'नत की है कि एक अण्डा चुराता है और उसका हाथ काटा जाता है। एक रस्सी चुराता है और उसका हाथ काटा जाता है। (राजेअ़ : 6783)

٦٧٩٩- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ، حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ قَالَ : سَمِعْتُ أَبَا صَالِحٍ قَالَ : سَمِعْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((لَعَنَ اللهُ السَّارِقَ يَسْرِقُ الْبَيْضَةَ، فَتُقْطَعُ يَدُهُ وَيَسْرِقُ الْحَبْلَ فَتُقْطَعُ يَدُهُ)).

[راجع: ٦٧٨٣]

बाब 15 : चोर की तौबा का बयान

١٥- باب تَوْبَةِ السَّارِقِ

6800. हमसे इस्माईल बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा कि मुझसे इब्ने वहब ने बयान किया, उनसे यूनुस ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे उ़र्वा ने और उनसे ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने एक औ़रत का हाथ कटवाया। आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि वो औ़रत बाद में भी आती थी और मैं उसकी ज़रूरतें हुज़ूरे अकरम (ﷺ) के सामने रखती थी। उस औ़रत ने तौबा कर ली थी और ह़सन तौबा का षुबूत दिया था। (राजेअ़ : 2648)

٦٨٠٠- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ عَبْدِ اللهِ قَالَ: حَدَّثَنِي ابْنُ وَهْبٍ، عَنْ يُونُسَ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ عَائِشَةَ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَطَعَ يَدَ امْرَأَةٍ. قَالَتْ عَائِشَةُ: وَكَانَتْ تَأْتِي بَعْدَ ذَلِكَ فَأَرْفَعُ حَاجَتَهَا إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَتَابَتْ وَحَسُنَتْ تَوْبَتُهَا.

[راجع: ٢٦٤٨]

6801. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद अल जअ़फ़ी ने बयान

٦٨٠١- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ

الْجُعْفِيُّ حَدَّثَنَا هِشَامُ بْنُ يُوسُفَ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ أَبِي إِدْرِيسَ، عَنْ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: بَايَعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ فِي رَهْطٍ فَقَالَ: ((أُبَايِعُكُمْ عَلَى أَنْ لاَ تُشْرِكُوا بِاللهِ شَيْئًا، وَلاَ تَسْرِقُوا، وَلاَ تَقْتُلُوا أَوْلاَدَكُمْ وَلاَ تَأْتُوا بِبُهْتَانٍ تَفْتَرُونَهُ بَيْنَ أَيْدِيكُمْ وَأَرْجُلِكُمْ، وَلاَ تَعْصُونِي فِي مَعْرُوفٍ فَمَنْ وَفَى مِنْكُمْ فَأَجْرُهُ عَلَى اللهِ، وَمَنْ أَصَابَ مِنْ ذَلِكَ شَيْئًا فَأُخِذَ بِهِ فِي الدُّنْيَا، فَهُوَ كَفَّارَةٌ لَهُ وَطَهُورٌ، وَمَنْ سَتَرَهُ اللهُ فَذَلِكَ إِلَى اللهِ إِنْ شَاءَ عَذَّبَهُ، وَإِنْ شَاءَ غَفَرَ لَهُ)). قَالَ أَبُو عَبْدِ اللهِ: إِذَا تَابَ السَّارِقُ بَعْدَ مَا قُطِعَ يَدُهُ قُبِلَتْ شَهَادَتُهُ، وَكُلُّ مَحْدُودٍ كَذَلِكَ إِذَا تَابَ قُبِلَتْ شَهَادَتُهُ. [راجع: ١٨]

किया, उन्होंने कहा हमसे हिशाम बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको मअ़मर ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुह्री ने, उन्हें अबू इदरीस ने और उनसे उ़बादह बिन स़ामित (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से एक जमाअ़त के साथ बेअ़त की थी। आँह़ज़रत (ﷺ) ने उस पर फ़र्माया कि मैं तुमसे अ़हद लेता हूँ कि तुम अल्लाह का किसी को शरीक नहीं ठहराओगे, तुम चोरी नहीं करोगे, अपनी औलाद की जान नहीं लोगे, अपने दिल से गढ़कर किसी पर तोह्मत नहीं लगाओगे और नेक कामों में मेरी नाफ़र्मानी न करोगे। पस तुममें से कोई वादे पूरा करेगा उसका स़वाब अल्लाह के ऊपर लाज़िम है और जो कोई उनमे से कुछ ग़लती कर गुज़रेगा और दुनिया में ही उसे उसकी सज़ा मिल जाएगी तो ये उसका कफ़्फ़ारा होगी और उसे पाक करने वाली होगी और जिसकी ग़लती को अल्लाह छुपा लेगा तो उसका मामला अल्लाह के साथ है, चाहे तो उसे अ़ज़ाब दे और चाहे तो उसकी मग़्फ़िरत कर दे। अबू अ़ब्दुल्लाह इमाम बुख़ारी (रह़.) ने कहा कि हाथ कटने के बाद अगर चोर ने तौबा कर ली तो उसकी गवाही क़ुबूल होगी। यही ह़ाल हर उस शख़्स़ का है जिस पर ह़द जारी की गई हो कि अगर वो तौबा कर लेगा। तो उसकी गवाही क़ुबूल की जाएगी।

(राजेअ़ : 18)

ह़ज़रत उ़बादह बिन स़ामित अंस़ारी सालमी नक़ीबे अंस़ार हैं। उ़क़्बा की दोनों बेअ़तों में शरीक हुए और जंगे बद्र और तमाम लड़ाइयों में शामिल हुए। ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने उनको शाम में क़ाज़ी और मुअ़ल्लिम बनाकर भेजा। फिर फ़िलिस्तीन में जाकर रहने लगे और बैतुल मक़्दिस में 72 साल उ़म्र पाकर 34 हिजरी में इंतिक़ाल फ़र्माया। **रज़ियल्लाहु अ़न्हु व अर्ज़ाहु आमीन।**

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

अट्ठाईसवां पारा

87. किताबुल मुहारिबीन मिन अहलिल कुफ़्र वर्रद्द

किताब उन काफ़िरों और मुर्तदों के बयान में जो मुसलमान से लड़ते हैं

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

١- باب وَقَوْلِ اللهِ تَعَالَى : ﴿إِنَّمَا جَزَاءُ الَّذِينَ يُحَارِبُونَ اللهَ وَرَسُولَهُ وَيَسْعَوْنَ فِي الأَرْضِ فَسَادًا أَنْ يُقَتَّلُوا أَوْ يُصَلَّبُوا أَنْ تُقَطَّعَ أَيْدِيهِمْ وَأَرْجُلُهُمْ مِنْ خِلاَفٍ أَوْ يُنْفَوْا مِنَ الأَرْضِ﴾

बाब 1 : और अल्लाह ने (सूरह माइदह : 33) में फ़र्माया कि जो लोग अल्लाह और रसूल से जंग लड़ते और मुल्क में फ़साद फैलाते रहते हैं उनकी सज़ा यही है कि वो क़त्ल किये जाएँ या सूली दिये जाएँ या उनके हाथ और पैर उल्टे और सीधे या'नी दाएँ बाएँ से काटे जाएँ या जला वतन या क़ैद किये जाएँ।

तश्रीह : क़बीला उकल और उ़रैना के चंद डाकू क़िस्म के लोग थे जो आँह़ज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में आकर बज़ाहिर मुसलमान हो गये और मदीना में चंद दिन क़याम के बाद अपनी त़बीयत की नासाज़गारी का गिला करने लगे। आँह़ज़रत (ﷺ) ग़ैबदाँ नहीं थे कि किसी शख़्स़ के दिल का ह़ाल मा'लूम फ़र्मा लें। आपने उनकी ज़ाहिरी बातों पर यक़ीन फ़र्माकर उनको अपने जंगल के ऊँटों के रेवड़ में भेज दिया कि वहाँ रहकर ऊँटों का दूध और पेशाब पिया करें कि उनका पेट दुरुस्त हो जाए वो जलंधर के मरीज़ थे। चुनाँचे वो वहाँ चले गये और ख़ूब ठाठ से दूध पी पीकर तन्दरुस्त हो गये। एक मौक़ा देखकर ऊँटों के चरवाहों को बड़ी बेदर्दी से क़त्ल कर दिया, उनके हाथ–पैर काट डाले, उनकी आँखों में काँटे गाड़कर ऊँटों को लेकर भाग गये। रसूले करीम (ﷺ) को जब ये ख़बर मिली तो आपने उनके तआक़ुब (पीछा करने) में चंद सवार दौड़ाए और वो गिरफ़्तार किये गये और दरबारे रिसालत में लाए गये। चुनाँचे जैसा उन्होंने किया था वही सज़ा उनके लिये तज्वीज़ हुई कि उनको क़त्ल किया गया, उनके हाथ-पैर काटे गये और उनकी आँखों में काँटे गाड़े गये और वो चटियल मैदान में तड़प तड़पकर वासिले जहन्नम हुए। आयते करीमा, **इन्नमा जज़ाउल्लज़ीन युहारिबूनल्लाह व रसूलहू अल्अख़** (अल माइदह : 33)

उन ही ज़ालिमों के बारे में नाज़िल हुई है।

हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने आयते कुर्आनी और अहादीषे ज़ैल से षाबित किया तो जो लोग काफिर और मुर्तद होकर मुसलमानों से लड़ें, फ़साद फैलाएँ, बदअम्नी करें , उनको इस्लामी क़वानीन के तहत हाकिमे वक़्त सख़्त से सख़्त सज़ा देने का मजाज़ है। अगर ऐसे मुफ़सिदीन को ज़रा भी रिआयत दी गई तो मुल्क में और भी सख़्ततरीन बदअमनी हो सकती है। इसलिये फ़ित्ना का दरवाज़ा बन्द करने के लिये ये सज़ाएँ दी जानी ज़रूरी हैं । शारेहीन लिखते हैं कि मुर्तदों ने चोरी का इर्तिकाब किया और चरवाहे को न सिर्फ़ क़त्ल किया बल्कि उसके हाथ पैर काट दिये थे। इसलिये क़िसास में उनको भी इसी तरह की सज़ा दी गई लेकिन ये मदीना मुनव्वरह में आँहज़रत (ﷺ) के क़याम का इब्तिदाई ज़माना था। बअदहू इस्लाम में इस तरह की सज़ा मना कर दी गई। क़ातिल जिस तरह भी क़त्ल करे बदला में क़त्ल ही किया जाएगा, उसके हाथ पैर काटकर मुषला नहीं किया जाएगा। अल्हम्दुलिल्लाह कि महज़ अल्लाह की मदद और तौफ़ीक़ से आज पारा 28 की तस्वीद का काम शुरू कर रहा हूँ। बड़ी कठिन मंज़िल है, सफ़र बहुत ही दुश्वार है, क़दम क़दम पर लग़्ज़िशों के ख़तरात हैं फिर भी अल्लाह पाक से उम्मीद है कि वो रहनुमाई फ़र्माकर ग़ैब से रूहानी मदद करेगा और मिष्ले साबिक़ इस पारे को भी तक्मील तक पहुँचाएगा और मुझको इस क़दर मुहलत देगा कि मैं इस प्यारी किताब को जिसे अल्लाह के महबूब रसूल (ﷺ) ने अपनी किताब क़रार दिया है इसे पूरे तौर पर उर्दू का जामा पहनाकर इशाअत में लाकर तमाम अहले इस्लाम के लिये मश्अले हिदायत के तौर पर पेश कर सकूँ। **वमा तौफ़ीक़ी इल्ला बिल्लाहिल अलिय्यिल अज़ीम व सल्लल्लाहु अला ख़ैर ख़ल्क़िही मुहम्मद व अला आलिही व अस्हाबिही अज्मईन** मुहर्रम 1396 हिजरी।

٦٨٠٢- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا الْوَلِيدُ بْنُ مُسْلِمٍ، حَدَّثَنَا الأَوْزَاعِيُّ، حَدَّثَنِي يَحْيَى بْنُ أَبِي كَثِيرٍ قَالَ حَدَّثَنِي أَبُو قِلاَبَةَ الْجَرْمِيُّ، عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَدِمَ عَلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَفَرٌ مِنْ عُكْلٍ فَأَسْلَمُوا، فَاجْتَوَوُا الْمَدِينَةَ فَأَمَرَهُمْ أَنْ يَأْتُوا إِبِلَ الصَّدَقَةِ فَيَشْرَبُوا مِنْ أَبْوَالِهَا وَأَلْبَانِهَا، فَفَعَلُوا فَصَحُّوا فَارْتَدُّوا وَقَتَلُوا رُعَاتَهَا وَاسْتَاقُوا فَبَعَثَ فِي آثَارِهِمْ فَأُتِيَ بِهِمْ فَقَطَعَ أَيْدِيَهُمْ وَأَرْجُلَهُمْ وَسَمَلَ أَعْيُنَهُمْ ثُمَّ لَمْ يَحْسِمْهُمْ حَتَّى مَاتُوا.

[راجع: ٢٣٣]

6802. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे वलीद बिन मुस्लिम ने बयान किया, कहा हमसे इमाम औज़ाई ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन अबी कषीर ने बयान किया, कहा कि मुझसे अबू क़िलाबा जरमी ने बयान किया, उनसे हज़रत अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) के पास क़बीला उक्ल के चंद लोग आए और इस्लाम क़ुबूल किया लेकिन मदीना की आबो हवा उन्हें मुवाफ़िक़ नहीं आई (उनके पेट फूल गये) तो आँहज़रत (ﷺ) ने उनसे फ़र्माया कि सदक़ा के ऊँटों के रेवड़ में जाएँ और उनका पेशाब और दूध मिलाकर पियें। उन्होंने उसके मुताबिक़ अमल किया और तन्दुरुस्त हो गये लेकिन उसके बाद वो मुर्तद हो गये और उन ऊँटों के चरवाहों को क़त्ल करके ऊँट हाँक कर ले गये। आँहज़रत (ﷺ) ने उनकी तलाश में सवार भेजे और उन्हें पकड़कर लाया गया फिर उनके हाथ पैर काट दिये गये और उनकी आँखें फोड़ दी गईं (क्योंकि उन्होंने इस्लामी चरवाहे के साथ ऐसा ही बर्ताव किया था) और उनके ज़ख़्मों पर दाग़ नहीं लगवाया गया यहाँ तक कि वो मर गये। (राजेअ : 233)

अरब में हाथ पैर काटकर जलते तैल में दाग़ दिया करते थे इस तरह ख़ून बंद हो जाता था मगर उनको बग़ैर दाग़ दिये छोड़ दिया गया और ये तड़प तड़पकर मर गये। (कज़ालिक जज़ाउज़्ज़ालिमीन)

बाब 2 : नबी करीम (ﷺ) ने उन मुर्तदों डाकुओं के (ज़ख़्मों पर) दाग़ नहीं लगवाया, यहाँ तक कि वो मर गये

٢- باب لَمْ يَحْسِمِ النَّبِيُّ ﷺ الْمُحَارِبِينَ مِنْ أَهْلِ الرِّدَّةِ حَتَّى هَلَكُوا

जिनका ज़िक्र ऊपर हो चुका है।

6803. हमसे अबू यअ़ला मुहम्मद बिन सल्त ने बयान किया, कहा हमसे वलीद ने बयान किया, कहा मुझसे औज़ाई ने बयान किया, उनसे यह्या ने, उनसे अबू क़िलाबा ने और उनसे ह़ज़रत अनस (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने उ़रैनियों के (हाथ-पैर) कटवा दिये लेकिन उन पर दाग़ नहीं लगवाया। यहाँ तक कि वो मर गये। (राजेअ़ : 233)

٦٨٠٣- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الصَّلْتِ أَبُو يَعْلَى، حَدَّثَنَا الْوَلِيدُ، حَدَّثَنِي الأَوْزَاعِيُّ، عَنْ يَحْيَى، عَنْ أَبِي قِلاَبَةَ، عَنْ أَنَسٍ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَطَعَ الْعُرَنِيِّينَ وَلَمْ يَحْسِمْهُمْ حَتَّى مَاتُوا. [راجع: ٢٣٣]

मज़्कूरा बाला डाकू मुराद हैं।

बाब 3 : मुर्तद लड़ने वालों को पानी भी न देना यहाँ तक कि प्यास से वो मर जाएँ

٣- باب لَمْ يُسْقَ الْمُرْتَدُّونَ الْمُحَارِبُونَ حَتَّى مَاتُوا

6804. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, उनसे वुहैब बिन ख़ालिद ने बयान किया, उनसे अय्यूब सुख़्तियानी ने, उनसे अबू क़िलाबा ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि क़बीला उ़क्ल के कुछ लोग नबी करीम (ﷺ) के पास सन 6 हिजरी में आए और ये लोगा मस्जिद के साइबान में ठहरे। मदीना मुनव्वरह की आबो हवा उन्हें मुवाफ़िक़ नहीं आई। उन्होंने कहा, या रसूलल्लाह! हमारे लिये दूध कहीं से मुहय्या कर दें, आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि ये तो मेरे पास नहीं है। अल्बत्ता तुम लोग हमारे ऊँटों में चले जाओ। चुनाँचे वो आए और उनका दूध और पेशाब पिया और स़ेह़तमंद होकर मोटे ताज़े हो गये। फिर उन्होंने चरवाहे को क़त्ल कर दिया और ऊँटों को हाँककर ले गये। इतने में आँह़ज़रत (ﷺ) के पास फ़रियादी पहुँचा और आँह़ज़रत (ﷺ) ने उनकी तलाश में सवार भेजे। अभी धूप ज़्यादा फैली भी नहीं थी कि उन्हें पकड़कर लाया गया फिर आँह़ज़रत (ﷺ) के हुक्म से सलाइयाँ गर्म की गईं और उनकी आँखों में फेर दी गईं और उनके हाथ पैर काट दिये गये और उनके (ज़ख़्म से ख़ून को रोकने के लिये) उन्हें दाग़ा भी नहीं गया। उसके बाद वो ह़र्रा (मदीना की पथरीली ज़मीन) में डाल दिये गये, वो पानी मांगते थे लेकिन

٦٨٠٤- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، عَنْ وُهَيْبٍ، عَنْ أَيُّوبَ، عَنْ أَبِي قِلاَبَةَ، عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَدِمَ رَهْطٌ مِنْ عُكْلٍ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ كَانُوا فِي الصُّفَّةِ فَاجْتَوَوُا الْمَدِينَةَ فَقَالُوا: يَا رَسُولَ اللهِ أَبْغِنَا رِسْلاً فَقَالَ: ((مَا أَجِدُ لَكُمْ إِلاَّ أَنْ تَلْحَقُوا بِإِبِلِ رَسُولِ اللهِ ﷺ)) فَأَتَوْهَا فَشَرِبُوا مِنْ أَلْبَانِهَا وَأَبْوَالِهَا حَتَّى صَحُّوا وَسَمِنُوا وَقَتَلُوا الرَّاعِيَ وَاسْتَاقُوا الذَّوْدَ فَأَتَى النَّبِيَّ ﷺ الصَّرِيخُ فَبَعَثَ الطَّلَبَ فِي آثَارِهِمْ فَمَا تَرَجَّلَ النَّهَارُ حَتَّى أُتِيَ بِهِمْ، فَأَمَرَ بِمَسَامِيرَ فَأُحْمِيَتْ فَكَحَلَهُمْ بِهَا، وَقَطَعَ أَيْدِيَهُمْ وَأَرْجُلَهُمْ وَمَا حَسَمَهُمْ، ثُمَّ أُلْقُوا فِي الْحَرَّةِ يَسْتَسْقُونَ فَمَا سُقُوا حَتَّى مَاتُوا. قَالَ أَبُو قِلاَبَةَ: سَرَقُوا وَقَتَلُوا

وَحَارَبُوا اللهَ وَرَسُولَهُ. [راجع: ٢٣٣]

उन्हें पानी नहीं दिया गया यहाँ तक कि वो मर गये। अबू क़िलाबा ने कहा कि ये इस वजह से किया गया था कि उन्होंने चोरी की थी, क़त्ल किया था और अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) से ग़द्दाराना लड़ाई लड़ी थी। (राजेअ : 233)

٤- باب سَمْرِ النَّبِيِّ ﷺ أَعْيُنَ الْمُحَارِبِينَ

बाब 4 : नबी (ﷺ) का मुर्तदीन लड़ने वालों की आँखों में सिलाई फिरवाना

٦٨٠٥- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، عَنْ أَيُّوبَ، عَنْ أَبِي قِلاَبَةَ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ أَنَّ رَهْطًا مِنْ عُكْلٍ - أَوْ قَالَ عُرَيْنَةَ - وَلاَ أَعْلَمُهُ إِلاَّ قَالَ: مِنْ عُكْلٍ قَدِمُوا الْمَدِينَةَ فَأَمَرَ لَهُمُ النَّبِيُّ ﷺ بِلِقَاحٍ، وَأَمَرَهُمْ أَنْ يَخْرُجُوا فَيَشْرَبُوا مِنْ أَبْوَالِهَا وَأَلْبَانِهَا، فَشَرِبُوا حَتَّى إِذَا بَرَؤُوا قَتَلُوا الرَّاعِيَ، وَاسْتَاقُوا النَّعَمَ فَبَلَغَ النَّبِيَّ ﷺ غُدْوَةً، فَبَعَثَ الطَّلَبَ فِي إِثْرِهِمْ، فَمَا ارْتَفَعَ النَّهَارُ حَتَّى جِيءَ بِهِمْ فَأَمَرَ بِهِمْ فَقَطَعَ أَيْدِيَهُمْ وَأَرْجُلَهُمْ، وَسَمَرَ أَعْيُنَهُمْ فَأُلْقُوا بِالْحَرَّةِ يَسْتَسْقُونَ فَلاَ يُسْقَوْنَ. [راجع: ٢٣٣]

6805. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अय्यूब सुख़्तियानी ने, उनसे अबू क़िलाबा ने और उनसे ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि क़बीला उ़क्ल या उ़रैना के चंद लोग मैं समझता हूँ उ़क्ल का लफ़्ज़ कहा, मदीना आए और आँह़ज़रत (ﷺ) ने उनके लिये दूध देने वाली ऊँटनियों का इंतिज़ाम कर दिया और फ़र्माया कि वो ऊँटों के गल्ले में जाएँ और उनका पेशाब पियें चुनाँचे उन्होंने पिया और जब वो तन्दुरुस्त हो गये तो चरवाहे को क़त्ल कर दिया और ऊँटों को हाँककर ले गये। आँह़ज़रत (ﷺ) के पास ये ख़बर सुबह के वक़्त पहुँची तो आपने उनके पीछे सवार दौड़ाए। अभी धूप ज़्यादा फैली भी नहीं थी कि वो पकड़कर लाए गए। चुनाँचे आँह़ज़रत (ﷺ) के हुक्म से उनके भी हाथ पैर काट दिये गये और उनकी भी आँखों में सलाई फेर दी गई और उन्हें ह़र्रा में डाल दिया गया। वो पानी मांगते थे लेकिन उन्हें पानी नहीं दिया जाता था। (राजेअ : 233)

قَالَ أَبُو قِلاَبَةَ : هَؤُلاَءِ قَوْمٌ سَرَقُوا وَقَتَلُوا وَكَفَرُوا بَعْدَ إِيمَانِهِمْ وَحَارَبُوا اللهَ وَرَسُولَهُ.

अबू क़िलाबा ने कहा कि ये वो लोग थे जिन्होंने चोरी की थी, क़त्ल किया था, ईमान के बाद कुफ़्र इख़्तियार किया था और अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) से ग़द्दाराना लड़ाई लड़ी थी।

बल्कि नमकहरामी की और चरवाहे का मुष़ला कर डाला और ऊँटनियों को लेकर चलते बने। इसीलिये उनके साथ भी ऐसा बर्ताव किया गया। वाक़िया एक ही है मगर मुज्तहिदे आ़ज़म ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) ने इससे कई एक सियासी मसाइल का इस्तिम्बात़ किया है एक मुज्तहिद की शान यही होती है, कोई शक नहीं कि ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) एक मुज्तहिदे आ़ज़म थे, इस्लाम के नियाज़ थे, क़ुर्आन व ह़दीष़ के ह़कीम ह़ाज़िक़ थे। मुआनिदीन (बुराई करने वाले) आपकी शान में कुछ भी तन्क़ीस़ करें आपकी ख़ुदादाद अ़ज़्मत पर कुछ अष़र न पड़ा है न पड़ेगा।

٥- باب فَضْلِ مَنْ

बाब 5 : जिसने फ़वाह़िश (ज़िनाकारी अग़लाम बाज़ी

वग़ैरह) को छोड़ दिया उसकी फ़ज़ीलत का बयान

تَرْكَ الْفَوَاحِشَ

6806. हमसे मुहम्मद बिन सलाम ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बरदी, उन्हें उ़बैदुल्लाह बिन उ़मर उ़मरी ने, उन्हें ख़ुबैब बिन अ़ब्दुर्रहमान ने, उन्हें हफ़्स़ बिन आ़स़िम ने और उन्हें हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया सात आदमी ऐसे हैं जिन्हें अल्लाह तआ़ला क़यामत के दिन अपने अ़र्श के नीचे साया देगा जबकि उसके अ़र्श के साये के सिवा और कोई साया नहीं होगा। आ़दिल हाकिम, नौजवान जिसने अल्लाह की इ़बादत में जवानी गुज़ारी, ऐसा शख़्स़ जिसने अल्लाह को तन्हाई में याद किया और उनकी आँखों से आंसू निकल पड़े, वो शख़्स़ जिसका दिल मस्जिद में लगा रहता है। वो दो आदमी जो अल्लाह के लिये मुहब्बत करते हैं। वो शख़्स़ जिसे किसी बुलंद मर्तबा और ख़ूबसूरत औ़रत ने अपनी तरफ़ बुलाया और उसने जवाब दिया कि मैं अल्लाह से डरता हूँ और वो शख़्स़ जिसने इतना पोशीदा स़दक़ा किया कि उसके बाएँ हाथ को भी पता न चल सका कि दाएँ ने कितना स़दक़ा किया है। (राजेअ़ : 660)

٦٨٠٦- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سَلاَمٍ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ، عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ، عَنْ خُبَيْبِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ حَفْصِ بْنِ عَاصِمٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((سَبْعَةٌ يُظِلُّهُمُ اللهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فِي ظِلِّهِ يَوْمَ لاَ ظِلَّ إِلاَّ ظِلُّهُ: إِمَامٌ عَادِلٌ: وَشَابٌّ نَشَأَ فِي عِبَادَةِ اللهِ، وَرَجُلٌ ذَكَرَ اللهَ فِي خَلاَءٍ فَفَاضَتْ عَيْنَاهُ، وَرَجُلٌ قَلْبُهُ مُعَلَّقٌ فِي الْمَسْجِدِ، وَرَجُلاَنِ تَحَابَّا فِي اللهِ، وَرَجُلٌ دَعَتْهُ امْرَأَةٌ ذَاتُ مَنْصِبٍ وَجَمَالٍ إِلَى نَفْسِهَا قَالَ: إِنِّي أَخَافُ اللهَ، وَرَجُلٌ تَصَدَّقَ بِصَدَقَةٍ فَأَخْفَاهَا حَتَّى لاَ تَعْلَمَ شِمَالُهُ مَا صَنَعَتْ يَمِينُهُ)).

[راجع: ٦٦٠]

तशरीह : आख़िरत के दर्जे हास़िल करने और दीन व दुनिया की सआ़दतें पाने के लिये ये ह़दीष़ हर मोमिन मुसलमान को हर वक़्त याद रखने के क़ाबिल है। अ़र्शे इलाही का साया पाने वालों की फेहरिस्त बहुत काफ़ी लम्बी-चौड़ी है। अल्लाह पाक ने हर मोमिन मुसलमान को रोज़े महशर में अपनी ज़िल्ले आतिफ़त मे जगह नस़ीब फ़र्माए, ख़ास़ तौर पर बुख़ारी शरीफ़ पढ़ने और अ़मल करने वालों को और उसके तमाम मुआ़विनीने किराम को ये नेअ़मत अ़ता करे और मुझ नाचीज़ और ख़ास़कर मेरे अहलो-अ़याल व तमाम मुता'ल्लिक़ीन को ये सआ़दत बख़्शे। आमीन या रब्बल आ़लमीन।

6807. हमसे मुहम्मद बिन अबीबक्र ने बयान किया, कहा हमसे उ़मर बिन अ़ली ने बयान किया। (दूसरी सनद इमाम बुख़ारी रह ने कहा) और मुझसे ख़लीफ़ा बिन ह़य्यात ने बयान किया, उनसे उ़मर बिन अ़ली ने, उनसे अबू हाज़िम सलमा बिन दीनार ने बयान किया, उनसे सहल बिन सअ़द साएदी ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जिसने मुझे अपने दोनों पैरों के बीच (या'नी शर्मगाह) की और अपने दोनों जबड़ों के बीच (या'नी ज़ुबान) की ज़मानत दे दी तो मैं उसे जन्नत में जाने का भरोसा दिलाता हूँ। (राजेअ़ : 6474)

٦٨٠٧- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ أَبِي بَكْرٍ، حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ عَلِيٍّ ح وَحَدَّثَنِي خَلِيفَةُ، حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ عَلِيٍّ، حَدَّثَنَا أَبُو حَازِمٍ، عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ السَّاعِدِيِّ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((مَنْ تَوَكَّلَ لِي مَا بَيْنَ رِجْلَيْهِ وَمَا بَيْنَ لَحْيَيْهِ، تَوَكَّلْتُ لَهُ بِالْجَنَّةِ)).

[راجع: ٦٤٧٤]

बाब 6 : ज़िना के गुनाह का बयान

٦- باب إِثْمِ الزُّنَاةِ

और अल्लाह तआला ने सूरह फ़ुर्क़ान में इर्शाद फ़र्माया, और वो लोग ज़िना नहीं करते, और सूरह बनी इस्राईल में फ़र्माया, और ज़िना के क़रीब न जाओ कि वो बेहयाई का काम है और इसका रास्ता बुरा है।

قَوْلُ اللهِ تَعَالَى: ﴿وَلاَ يَزْنُونَ﴾. ﴿وَلاَ تَقْرَبُوا الزِّنَا إِنَّهُ كَانَ فَاحِشَةً وَسَاءَ سَبِيلاً﴾.

6808. हमें दाऊद बिन शबीब ने ख़बर दी, कहा हमसे हम्माम ने बयान किया, उनसे क़तादा ने, कहा हमको हज़रत अनस (रज़ि.) ने ख़बर दी है कि मैं तुमसे एक ऐसी हदीष बयान करूँगा कि मेरे बाद कोई उसे नहीं बयान करेगा। मैंने ये हदीष नबी करीम (ﷺ) से सुनी है। मैंने आँहज़रत (ﷺ) को ये कहते सुना कि क़यामत उस वक़्त तक क़ायम नहीं होगी या यूँ फ़र्माया कि क़यामत की निशानियों में से ये है कि इल्मे दीन दुनिया से उठ जाएगा और जहालत फैल जाएगी, शराब बकष़रत पी जाने लगेगी और ज़िना फैल जाएगा। मर्द कम हो जाएँगे और औरतों की कष़रत होगी। हालत यहाँ तक पहुँच जाएगी कि पचास औरतों पर एक ही ख़बर लेने वाला मर्द रह जाएगा। (राजेअ: 80)

٦٨٠٨- أخبرنا دَاوُدُ بْنُ شَبِيبٍ، حَدَّثَنَا هَمَّامٌ، عَنْ قَتَادَةَ، أَخْبَرَنَا أَنَسٌ قَالَ: لأُحَدِّثَنَّكُمْ حَدِيثًا لاَ يُحَدِّثُكُمُوهُ أَحَدٌ بَعْدِي سَمِعْتُهُ مِنَ النَّبِيِّ ﷺ سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((لاَ تَقُومُ السَّاعَةُ - وَإِمَّا قَالَ - مِنْ أَشْرَاطِ السَّاعَةِ أَنْ يُرْفَعَ الْعِلْمُ وَيَظْهَرَ الْجَهْلُ، وَيُشْرَبَ الْخَمْرُ، وَيَظْهَرَ الزِّنَا وَيَقِلَّ الرِّجَالُ وَيَكْثُرَ النِّسَاءُ، حَتَّى يَكُونَ لِلْخَمْسِينَ امْرَأَةً الْقَيِّمُ الْوَاحِدُ)).

[راجع: ٨٠]

हदीष में ज़िक्र की गईं निशानियाँ बहुत सी ज़ाहिर हो चुकी हैं, वमा अमरस्साअह इल्ला कलम्हिल बस़र.

6809. हमसे मुहम्मद बिन मुष़न्ना ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको इस्हाक़ बिन यूसुफ़ ने ख़बर दी, कहा हमको फ़ुज़ैल बिन ग़ज़्वान ने ख़बर दी, उन्हें इक्रिमा ने और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया बन्दा जब ज़िना करता है तो वो मोमिन नहीं रहता। बन्दा जब चोरी करता है तो वो मोमिन नहीं रहता और बन्दा जब शराब पीता है तो वो मोमिन नहीं रहता और जब वो क़त्ले नाहक़ करता है तो वो मोमिन नहीं रहता। इक्रिमा ने कहा कि मैंने हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) से पूछा कि ईमान उससे किस तरह निकाल लिया जाता है? आप (रज़ि.) ने फ़र्माया कि वो इस तरह और उस वक़्त आपने अपनी उँगलियों को दूसरे हाथ की उँगलियों में डालकर फिर अलग कर लिया फिर अगर वो तौबा कर लेता है तो ईमान उसके पास लौट आता है। इस तरह और आपने अपनी उँगलियों को दूसरे हाथ की उँगलियों में डाला। (राजेअ: 6772)

٦٨٠٩- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، أَخْبَرَنَا إِسْحَاقُ بْنُ يُوسُفَ، أَخْبَرَنَا الْفُضَيْلُ بْنُ غَزْوَانَ، عَنْ عِكْرِمَةَ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((لاَ يَزْنِي الْعَبْدُ حِينَ يَزْنِي وَهُوَ مُؤْمِنٌ، وَلاَ يَسْرِقُ حِينَ يَسْرِقُ وَهُوَ مُؤْمِنٌ، وَلاَ يَشْرَبُ حِينَ يَشْرَبُ وَهُوَ مُؤْمِنٌ، وَلاَ يَقْتُلُ وَهُوَ مُؤْمِنٌ)). قَالَ عِكْرِمَةُ: قُلْتُ لاِبْنِ عَبَّاسٍ: كَيْفَ يُنْزَعُ مِنْهُ الإِيمَانُ؟ قَالَ: هَكَذَا وَشَبَّكَ بَيْنَ أَصَابِعِهِ، ثُمَّ أَخْرَجَهَا فَإِنْ تَابَ عَادَ إِلَيْهِ هَكَذَا وَشَبَّكَ بَيْنَ أَصَابِعِهِ.

[راجع: ٦٧٧٢]

ये कबीरा गुनाह हैं जिनसे तौबा किये बग़ैर मरने वाला ईमान से महरूम होकर मरता है जिसमें ईमान की रमक़ भी होगी वो ज़रूर तौबा करके मरेगा।

6810. हमसे आदम ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे आ'मश ने बयान किया, उनसे ज़क्वान ने बयान किया, और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि ज़िना करने वाला जब ज़िना करता है तो वो मोमिन नहीं रहता। वो चोर जब चोरी करता है तो वो मोमिन नहीं रहता। शराबी जब शराब पीता है तो वो मोमिन नहीं रहता। फिर उन सब आदमियों के लिये तौबा का दरवाज़ा बहरहाल खुला हुआ है। (राजेअ़ : 2475)

٦٨١٠- حَدَّثَنَا آدَمُ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ ذَكْوَانَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لاَ يَزْنِي الزَّانِي حِينَ يَزْنِي وَهْوَ مُؤْمِنٌ، وَلاَ يَسْرِقُ حِينَ يَسْرِقُ وَهْوَ مُؤْمِنٌ، وَلاَ يَشْرَبُ حِينَ يَشْرَبُهَا وَهْوَ مُؤْمِنٌ، وَالتَّوْبَةُ مَعْرُوضَةٌ بَعْدُ)). [راجع: ٢٤٧٥]

मगर तौबा की तौफ़ीक़ भी क़िस्मत वालों को मिलती है तौबा से पुख़्ता तौबा मुराद है, न कि रस्मी तौबा।

6811. हमसे अ़म्र बिन अ़ली ने बयान किया, कहा हमसे यह्या ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, कहा कि मुझसे मंसूर और सुलैमान ने बयान किया, उनसे अबू वाइल ने, उनसे अबू मैसरह ने और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने पूछा या रसूलल्लाह! कौनसा गुनाह सबसे बड़ा है। फ़र्माया ये कि तुम अल्लाह का किसी को शरीक बनाओ, ह़ालाँकि उसी ने तुम्हें पैदा किया है। मैंने पूछा उसके बाद? फ़र्माया ये कि तुम अपनी औलाद को उस ख़तरे से मार डालो कि वो तुम्हारे खाने में तुम्हारे साथ शरीक होगी। मैंने पूछा उसके बाद? फ़र्माया ये कि तुम अपने पड़ौसी की बीवी से ज़िना करो। यह्या ने बयान किया, उनसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे वासिल ने बयान किया, उनसे अबू वाइल ने और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने कि मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! फिर इसी ह़दीष़ की त़रह बयान किया। अ़म्र ने कहा कि फिर मैंने इस ह़दीष़ का ज़िक्र अ़ब्दुर्रह़मान बिन मह्दी से किया और उन्होंने हमसे ये ह़दीष़ सुफ़यान ष़ौरी से बयान की। उनसे अअ़मश, मंसूर और वासिल ने, उनसे अबू वाइल ने और उनसे अबू मैसरह ने। अ़ब्दुर्रह़मान बिन मह्दी ने कहा कि तुम इस सनद को जाने भी दो। (राजेअ़ : 4477)

٦٨١١- حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عَلِيٍّ، حَدَّثَنَا يَحْيَى، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، قَالَ حَدَّثَنِي مَنْصُورٌ وَسُلَيْمَانُ عَنْ أَبِي وَائِلٍ، عَنْ أَبِي مَيْسَرَةَ، عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قُلْتُ يَا رَسُولَ اللهِ أَيُّ الذَّنْبِ أَعْظَمُ؟ قَالَ: ((أَنْ تَجْعَلَ للهِ نِدًّا، وَهْوَ خَلَقَكَ)) قُلْتُ: ثُمَّ أَيٌّ؟ قَالَ: ((أَنْ تَقْتُلَ وَلَدَكَ مِنْ أَجْلِ أَنْ يَطْعَمَ مَعَكَ)) قُلْتُ: ثُمَّ أَيٌّ؟ قَالَ: ((أَنْ تُزَانِيَ حَلِيلَةَ جَارِكَ)). قَالَ يَحْيَى: وَحَدَّثَنَا سُفْيَانُ، حَدَّثَنِي وَاصِلٌ، عَنْ أَبِي وَائِلٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ مِثْلَهُ، قَالَ عَمْرٌو: فَذَكَرْتُهُ لِعَبْدِ الرَّحْمَنِ، وَكَانَ حَدَّثَنَا عَنْ سُفْيَانَ، عَنِ الأَعْمَشِ وَمَنْصُورٍ، وَوَاصِلٍ عَنْ أَبِي وَائِلٍ عَنْ أَبِي مَيْسَرَةَ قَالَ: دَعْهُ دَعْهُ.

[راجع: ٤٤٧٧]

जिसमें अबू वाइल और अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) के बीच में अबू मैसरह का वास्ता नहीं है। इन तमाम रिवायात में कुछ कबीरा गुनाहों का ज़िक्र है जो बहुत बड़े गुनाह हैं मगर तौबा का दरवाज़ा सबके लिये खुला हुआ है बशर्तेकि ह़क़ीक़ी तौबा हो।

बाब 7 : मुह़्सन (शादीशुदा को ज़िना की इल्लत में) संगसार करना और इमाम ह़सन बस़री ने कहा अगर कोई शख़्स अपनी बहन से ज़िना करे तो उस पर ज़िना की ह़द पड़ेगी

٧- باب رَجْمِ الْمُحْصَنِ

وَقَالَ الْحَسَنُ : مَنْ زَنَى بِأُخْتِهِ حَدُّهُ حَدُّ الزَّانِي.

ये इस्लाम की वो सजाएं हैं जिनके आधार पर दुनिया में अमन की बुनियाद है।

6812. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, कहा हमसे सलमा बिन कुहैल ने बयान किया, कहा कि मैंने शअ़बी से सुना, उन्होंने ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) से बयान किया कि जब उन्होंने जुम्आ के दिन औ़रत को रजम किया तो कहा कि मैंने उसका रजम रसूलुल्लाह (ﷺ) की सुन्नत के मुताबिक़ किया है।

٦٨١٢- حَدَّثَنَا آدَمُ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، حَدَّثَنَا سَلَمَةُ بْنُ كُهَيْلٍ، قَالَ: سَمِعْتُ الشَّعْبِيَّ يُحَدِّثُ عَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ حِينَ رَجَمَ الْمَرْأَةَ يَوْمَ الْجُمُعَةِ وَقَالَ : قَدْ رَجَمْتُهَا بِسُنَّةِ رَسُولِ اللهِ ﷺ.

6813. मुझसे इस्ह़ाक़ वास्त़ी ने बयान किया, कहा हमसे ख़ालिद त़िह़ान ने बयान किया, उनसे शैबानी ने कहा मैंने ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा (रज़ि.) से पूछा। क्या रसूलल्लाह (ﷺ) ने किसी को रजम किया था। उन्होंने कहा कि हाँ मैंने पूछा सूरह नूर से पहले या उसके बाद कहा कि ये मुझे मा'लूम नहीं। (अम्र नामा'लूम के लिये इज़्हारे ला इल्मी कर देना भी अम्रे मह़मूद है) (दीगर मक़ाम : 6840)

٦٨١٣- حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ، حَدَّثَنَا خَالِدٌ، عَنِ الشَّيْبَانِيِّ قَالَ: سَأَلْتُ عَبْدَ اللهِ بْنَ أَبِي أَوْفَى هَلْ رَجَمَ رَسُولُ اللهِ ﷺ قَالَ: نَعَمْ قُلْتُ : قَبْلَ سُورَةِ النُّورِ أَمْ بَعْدُ؟ قَالَ: لاَ أَدْرِي. [طرفه في : ٦٨٤٠].

या'नी क़ानूने रजम त़रीक़-ए-मुह़म्मदी है जो इस बुराई को ख़त्म करने के लिये अचूक तीर है।

6814. हमसे मुह़म्मद बिन मुक़ातिल ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, कहा हमको यूनुस ने ख़बर दी, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, कहा कि मुझसे अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रह़मान ने बयान किया, उनसे ह़ज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह अंस़ारी (रज़ि.) ने कि क़बीला असलम के एक स़ाह़ब माइज़ नामी रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में आए और कहा कि मैंने ज़िना किया है। फिर उन्होंने अपने ज़िना का चार मर्तबा इक़रार किया तो आँह़ज़रत (ﷺ) ने उनके रजम का हुक्म दिया और उन्हें रजम किया गया, वो शादीशुदा थे। (राजेअ़ : 5270)

٦٨١٤- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مُقَاتِلٍ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ، أَخْبَرَنَا يُونُسُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ حَدَّثَنِي أَبُو سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ الأَنْصَارِيِّ، أَنَّ رَجُلاً مِنْ أَسْلَمَ أَتَى رَسُولَ اللهِ ﷺ فَحَدَّثَهُ أَنَّهُ قَدْ زَنَى فَشَهِدَ عَلَى نَفْسِهِ أَرْبَعَ شَهَادَاتٍ، فَأَمَرَ بِهِ رَسُولُ اللهِ ﷺ فَرُجِمَ وَكَانَ قَدْ أُحْصِنَ. [راجع: ٥٢٧٠]

ये उनके कामिल ईमान की दलील है कि ख़ुद ह़द पाने के लिये तैयार हो गये।

बाब 8 : पागल मर्द या औरत को रजम नहीं किया जाएगा और हज़रत अली (रज़ि.) ने हज़रत उमर (रज़ि.) से कहा, क्या आपको मा'लूम नहीं

कि पागल से ष़वाब या अ़ज़ाब लिखने वाली क़लम उठा ली गई है यहाँ तक कि उसे होश हो जाए। बच्चे से भी क़लम उठा ली गई है यहाँ तक कि बालिग़ हो जाए। सोने वाला भी मरफ़ूउ़ल क़लम है यहाँ तक कि वो बेदार हो जाए या'नी दिमाग़ और होश दुरुस्त कर ले।

٨- باب لاَ يُرْجَمُ الْمَجْنُونُ وَالْمَجْنُونَةُ

وَقَالَ عَلِيٌّ لِعُمَرَ: أَمَا عَلِمْتَ أَنَّ الْقَلَمَ رُفِعَ عَنِ الْمَجْنُونِ حَتَّى يُفِيقَ وَعَنِ الصَّبِيِّ حَتَّى يُدْرِكَ وَعَنِ النَّائِمِ حَتَّى يَسْتَيْقِظَ؟

तश्रीह : मरफ़ूउ़ल क़लम का मत़लब ये है कि उनसे माफ़ी है। एक ज़ानिया ह़ामिला औरत को ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने रजम करना चाहा था, उस वक़्त ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) ने ये फ़र्माया।

6815. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ ने बयान किया, उनसे अ़क़ील ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे अबू सलमा और सईद बिन मुसय्यब ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि एक स़ाहब माइज़ बिन मालिक असलमी रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में आए, उस वक़्त आँह़ज़रत (ﷺ) मस्जिद में थे, उन्होंने आपको आवाज़ दी और कहा कि या रसूलल्लाह! मैंने ज़िना कर लिया है। आँह़ज़रत (ﷺ) ने उनकी त़रफ़ से मुँह फेर लिया। उन्होंने ये बात चार दफ़ा दोहराई जब चार बार उन्होंने उस गुनाह की अपने ऊपर शहादत दी तो आँह़ज़रत (ﷺ) ने उन्हें बुलाया और पूछा क्या तुम दीवाने हो। उन्होंने कहा कि नहीं। आपने पूछा फिर क्या तुम शादी शुदा हो? उन्होंने कहा हाँ। उस पर आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि इन्हें ले जाओ और रजम कर दो। (राजेअ़ : 5271)

٦٨١٥- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ عُقَيْلٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، وَسَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: أَتَى رَجُلٌ رَسُولَ اللهِ ﷺ وَهُوَ فِي الْمَسْجِدِ فَنَادَاهُ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ ﷺ إِنِّي زَنَيْتُ فَأَعْرَضَ عَنْهُ حَتَّى رَدَّدَ عَلَيْهِ أَرْبَعَ مَرَّاتٍ، فَلَمَّا شَهِدَ عَلَى نَفْسِهِ أَرْبَعَ شَهَادَاتٍ دَعَاهُ النَّبِيُّ ﷺ فَقَالَ: ((أَبِكَ جُنُونٌ؟)) قَالَ: لاَ. قَالَ: ((فَهَلْ أَحْصَنْتَ؟)) قَالَ: نَعَمْ. فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((اذْهَبُوا بِهِ فَارْجُمُوهُ)). [راجع: ٥٢٧١]

6816. इब्ने शिहाब ने बयान किया कि फिर मुझे उन्होंने ख़बर दी, जिन्होंने ह़ज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) से सुना था कि उन्होंने कहा कि रजम करने वालों में मैं भी था, हमने उन्हें आबादी से बाहर ईदगाह के पास रजम किया था जब उन पर पत्थर पड़े तो वो भाग पड़े लेकिन हमने उन्हें ह़र्रा के पास पकड़ा और रजम कर दिया। (राजेअ़ : 5270)

٦٨١٦- قَالَ ابْنُ شِهَابٍ : فَأَخْبَرَنِي مَنْ سَمِعَ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ قَالَ: فَكُنْتُ فِيمَنْ رَجَمَهُ فَرَجَمْنَاهُ بِالْمُصَلَّى، فَلَمَّا أَذْلَقَتْهُ الْحِجَارَةُ هَرَبَ فَأَدْرَكْنَاهُ بِالْحَرَّةِ فَرَجَمْنَاهُ. [راجع: ٥٢٧٠]

तश्रीह : एक रिवायत में यूँ है कि आँह़ज़रत (ﷺ) को जब उसकी ख़बर लगी तो आपने फ़र्माया तुमने उसे छोड़ क्यूँ न दिया शायद वो तौबा करता और उसका क़ुसूर माफ़ कर देता। उसको अबू दाऊद ने रिवायत किया और ह़ाकिम और तिर्मिज़ी ने स़ह़ीह़ कहा।

इस हदीष़ से मा'लूम हुआ कि इक़रार करने वाला अगर रजम के वक़्त भागे तो उससे रजम साक़ित हो जाएगा।

बाब 9 : ज़िना करने वाले के लिये पत्थरों की सज़ा है

٩- باب لِلْعَاهِرِ الْحَجَرُ

6817. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे उ़र्वा ने और उनसे ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि सअ़द बिन अबी वक़्क़ास़ और अ़ब्द बिन ज़म्आ (रज़ि.) ने आपस में (एक बच्चे अ़ब्दुर्रहमान नामी में) इख़्तिलाफ़ किया तो नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया अ़ब्द बिन ज़म्आ! बच्चा तू ले ले बच्चा उसी को मिलेगा जिस की बीवी या लौण्डी के पेट से वो पैदा हो और सौदा! तुम इससे पर्दा किया करो। ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने कहा कि क़ुतैबा ने लैष़ से इस ज़्यादती के साथ बयान किया कि ज़ानी के हिस्से में पत्थर की सज़ा है।(राजेअ़ : 2053)

٦٨١٧- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ : اخْتَصَمَ سَعْدٌ وَابْنُ زَمْعَةَ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((هُوَ لَكَ يَا عَبْدُ بْنَ زَمْعَةَ الْوَلَدُ لِلْفِرَاشِ، وَاحْتَجِبِي مِنْهُ يَا سَوْدَةُ)). زَادَ لَنَا قُتَيْبَةُ عَنِ اللَّيْثِ ((وَلِلْعَاهِرِ الْحَجَرُ)).
[راجع: ٢٠٥٣]

6818. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन ज़ियाद ने बयान किया, कहा कि मैंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया लड़का उसी को मिलता है जिसकी बीवी या लौण्डी के पेट से हुआ हो और हरामकार के लिये सिर्फ़ पत्थर हैं। (राजेअ़ : 6750)

٦٨١٨- حَدَّثَنَا آدَمُ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ زِيَادٍ قَالَ : سَمِعْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((الْوَلَدُ لِلْفِرَاشِ وَلِلْعَاهِرِ الْحَجَرُ)). [راجع: ٦٧٥٠]

ये इस्लाम का अ़दालती फ़ैस़ला है जिसका अष़र बच्चे की पूरी ज़िंदगी ह़क़ हुक़ूक़ तौरियत वग़ैरह पर पड़ता है।

बाब 10 : बलात़ में रजम करना

١٠- باب الرَّجْمِ فِي الْبَلاَطِ

मस्जिदे नबवी के सामने एक पत्थरों का फ़र्श था, उसी का नाम बलात़ था अब तो बफ़ज़्लिही अल्लाह तआ़ला चारों त़रफ़ दूर दूर तक फ़र्श ही फ़र्श बना हुआ है जो बेहतरीन पत्थरों का फ़र्श है।

6819. हमसे मुहम्मद बिन उ़ष़्मान ने बयान किया, कहा हमसे ख़ालिद बिन मुख़लद ने बयान किया, उनसे सुलैमान बिन बिलाल ने, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन दीनार ने बयान किया और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास एक यहूदी मर्द और एक यहूदी औरत को लाया गया, जिन्होंने ज़िना किया था। आँह़ज़रत (ﷺ) ने उनसे पूछा कि तुम्हारी किताब तौरात में इसकी सज़ा क्या है? उन्होंने कहा कि हमारे उ़लमा ने (इसकी सज़ा) चेहरे को स्याह करना और गधे पर उल्टा सवार करना तज्वीज़ की हुई है। इस पर ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम (रज़ि.) ने कहा या रसूलल्लाह! इनसे तौरात मंगवाइये। जब तौरात लाई गई तो उनमें से एक ने

٦٨١٩- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عُثْمَانَ، حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ مَخْلَدٍ، عَنْ سُلَيْمَانَ، حَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ دِينَارٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: أُتِيَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِيَهُودِيٍّ وَيَهُودِيَّةٍ قَدْ أَحْدَثَا جَمِيعًا، فَقَالَ لَهُمْ: ((مَا تَجِدُونَ فِي كِتَابِكُمْ؟)) قَالُوا: إِنَّ أَحْبَارَنَا أَحْدَثُوا تَحْمِيمَ الْوَجْهِ وَالتَّجْبِيَةَ قَالَ عَبْدُ اللهِ بْنُ سَلاَمٍ : ادْعُهُمْ يَا رَسُولَ اللهِ بِالتَّوْرَاةِ،

रजम वाली आयत पर अपना हाथ रख लिया और उससे आगे और पीछे की आयतें पढ़ने लगा। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम (रज़ि.) ने उससे कहा कि अपना हाथ हटाओ (और जब उसने अपना हाथ हटाया तो) आयते रजम उसके हाथ के नीचे थी। आँहज़रत (ﷺ) ने उन दोनों के बारे में हुक्म दिया और उन्हें रजम कर दिया गया। हज़रत इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि उन्हें बलात (मस्जिदे नबवी के क़रीब एक जगह) में रजम किया गया। मैंने देखा कि यहूदी औरत को मर्द बचाने के लिए उस पर झुक झुक पड़ता था। (राजेअ़ : 1329)

فَأُتِيَ بِهَا فَوَضَعَ أَحَدُهُمْ يَدَهُ عَلَى آيَةِ الرَّجْمِ وَجَعَلَ يَقْرَأُ مَا قَبْلَهَا وَمَا بَعْدَهَا فَقَالَ لَهُ ابْنُ سَلاَمٍ: ارْفَعْ يَدَكَ فَإِذَا آيَةُ الرَّجْمِ تَحْتَ يَدِهِ فَأَمَرَ بِهِمَا رَسُولُ اللهِ ﷺ فَرُجِمَا. قَالَ ابْنُ عُمَرَ فَرُجِمَا عِنْدَ الْبَلاَطِ فَرَأَيْتُ الْيَهُودِيَّ أَجْنَأَ عَلَيْهَا. [راجع: ١٣٢٩]

ष़ाबित हुआ कि मुस्लिम स्टेट में यहूदियों और ईसाइयों के फ़ैसले उनकी शरीअ़त के मुताबिक़ किये जाएँगे बशर्ते कि इस्लाम ही के मुवाफ़िक़ हों।

बाब 11 : ईदगाह में रजम करना (ईदगाह के पास या ख़ुद ईदगाह में)

١١- باب الرَّجْمِ بِالْمُصَلَّى

6820. मुझसे महमूद ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुर् रज़्ज़ाक़ ने बयान किया, कहा हमको मअ़मर ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुहरी ने, उन्हें अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रहमान ने और उन्हें हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने कि क़बीला असलम के एक स़ाहब (माइज़ बिन मालिक) नबी करीम (ﷺ) के पास आए और ज़िना का इक़रार किया। लेकिन आँहज़रत (ﷺ) ने उनकी त़रफ़ से अपना मुँह फेर लिया। फिर जब उन्होने चार मर्तबा अपने लिये गवाही दी तो आँहज़रत (ﷺ) ने उनसे पूछा क्या तुम दीवाने हो गये हो? उन्होने कहा कि नहीं। फिर आपने पूछा, क्या तुम्हारा निकाह हो चुका है? उन्होंने कहा कि हाँ। चुनाँचे आपके हुक्म से उन्हें ईदगाह में रजम किया गया। जब उन पर पत्थर पड़े तो वो भाग पड़े लेकिन उन्हें पकड़ लिया गया और रजम किया गया यहाँ तक कि वो मर गये। फिर आँहज़रत (ﷺ) ने उनके ह़क़ में कलिमा ख़ैर फ़र्माया और उनका जनाज़ा अदा किया और उनकी ता'रीफ़ की जिसके वो मुस्तह़िक़ थे। (राजेअ़ : 5270)

٦٨٢٠- حَدَّثَنِي مَحْمُودٌ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ جَابِرٍ أَنَّ رَجُلاً مِنْ أَسْلَمَ جَاءَ النَّبِيَّ ﷺ فَاعْتَرَفَ بِالزِّنَا فَأَعْرَضَ عَنْهُ النَّبِيُّ ﷺ حَتَّى شَهِدَ عَلَى نَفْسِهِ أَرْبَعَ مَرَّاتٍ قَالَ لَهُ النَّبِيُّ ﷺ: ((أَبِكَ جُنُونٌ؟)) قَالَ : لاَ. قَالَ : ((أَحْصَنْتَ)) قَالَ : نَعَمْ. فَأَمَرَ بِهِ فَرُجِمَ بِالْمُصَلَّى فَلَمَّا أَذْلَقَتْهُ الْحِجَارَةُ فَرَّ، فَأُدْرِكَ فَرُجِمَ حَتَّى مَاتَ فَقَالَ لَهُ النَّبِيُّ ﷺ خَيْرًا وَصَلَّى عَلَيْهِ. لَمْ يَقُلْ يُونُسُ وَابْنُ جُرَيْجٍ عَنِ الزُّهْرِيِّ فَصَلَّى عَلَيْهِ. [راجع: ٥٢٧٠]

बाब 12 : जिसने कोई ऐसा गुनाह किया जिस पर ह़द नहीं है (मष़लन अजनबी औरत को बोसा दिया या उससे मसास किया) और फिर

इसकी ख़बर इमाम को दी तो अगर उसने तौबा कर ली और

١٢- باب مَنْ أَصَابَ ذَنْبًا دُونَ الْحَدِّ فَأَخْبَرَ الإِمَامَ

فَلاَ عُقُوبَةَ عَلَيْهِ بَعْدَ التَّوْبَةِ إِذَا جَاءَ مُسْتَفْتِيًا قَالَ عَطَاءٌ : لَمْ يُعَاقِبْهُ النَّبِيُّ ﷺ،

وَقَالَ ابْنُ جُرَيْجٍ: وَلَمْ يُعَاقِبِ الَّذِي جَامَعَ فِي رَمَضَانَ، وَلَمْ يُعَاقِبْ عُمَرُ صَاحِبَ الظَّبْيِ. وَفِيهِ عَنْ أَبِي عُثْمَانَ عَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ.

फ़त्वा पूछने आया तो उसे अब तौबा के बाद कोई सज़ा नहीं दी जाएगी। अ़ता ने कहा कि ऐसी सूरत में नबी करीम (ﷺ) ने उसे कोई सज़ा नहीं दी थी। इब्ने जुरैज ने कहा कि आँहज़रत (ﷺ) ने उस शख़्स को कोई सज़ा नहीं दी थी जिन्होंने रमज़ान में बीवी से सुहबत कर ली थी। इसी तरह हज़रत उमर (रज़ि.) ने (हालते एहराम मे) हिरन का शिकार करने वाले को सज़ा नहीं दी और इस बाब में अबू उ़ष्मान की रिवायत हज़रत इब्ने मसऊद (रज़ि.) से बहवाला नबी करीम (ﷺ) मरवी है।

ये अह्काम इमामे वक़्त की राय और जराइम की नोइयतों पर मौक़ूफ़ हैं जो ह़द्दी जराइम हैं। वो अपने क़ानून के अंदर ही फ़ैसले होंगे।

٦٨٢١- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ حُمَيْدِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَجُلاً وَقَعَ بِامْرَأَتِهِ فِي رَمَضَانَ فَاسْتَفْتَى رَسُولَ اللهِ ﷺ فَقَالَ: ((هَلْ تَجِدُ رَقَبَةً؟)) قَالَ: لاَ. قَالَ: ((هَلْ تَسْتَطِيعُ صِيَامَ شَهْرَيْنِ؟)) قَالَ: لاَ. قَالَ: ((فَأَطْعِمْ سِتِّينَ مِسْكِينًا)). [راجع: ١٩٣٦]

6821. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, उनसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे हुमैद बिन अ़ब्दुर्रहमान ने और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि एक स़ाहब ने रमज़ान में अपनी बीवी से हमबिस्तरी कर ली और फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) से उसका हुक्म पूछा तो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया क्या तुम्हारे पास कोई ग़ुलाम है? उन्होंने कहा कि नहीं। उस पर आँहज़रत (ﷺ) ने पूछा, दो महीने रोज़े रखने की तुममें त़ाक़त है? उन्होंने कहा कि नहीं। आँहज़रत (ﷺ) ने उस पर कहा कि फिर साठ मिस्कीनों को खाना खिलाओ। (राजेअ़: 1936)

٦٨٢٢- وقال اللَّيْثُ: عَنْ عمرو بْنِ الْحَارِثِ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ الْقَاسِمِ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ جَعْفَرِ بْنِ الزُّبَيْرِ، عَنْ عَبَّادِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ الزُّبَيْرِ، عَنْ عَائِشَةَ أَتَى رَجُلٌ النَّبِيَّ ﷺ فِي الْمَسْجِدِ قَالَ: احْتَرَقْتُ قَالَ: ((مِمَّ ذَاكَ؟)) قَالَ: وَقَعْتُ بِامْرَأَتِي فِي رَمَضَانَ قَالَ لَهُ: ((تَصَدَّقْ)) قَالَ: مَا عِنْدِي شَيْءٌ فَجَلَسَ وَأَتَاهُ إِنْسَانٌ يَسُوقُ حِمَارًا وَمَعَهُ طَعَامٌ قَالَ عَبْدُ الرَّحْمَنِ: مَا أَدْرِي مَا هُوَ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: ((أَيْنَ الْمُحْتَرِقُ؟)) فَقَالَ: هَا أَنَا ذَا قَالَ: ((خُذْ

6822. और लैष़ ने बयान किया, उनसे अ़म्र बिन हारिष़ ने, उनसे अ़ब्दुर्रहमान बिन क़ासिम ने, उनसे मुहम्मद बिन जा'फ़र बिन ज़ुबैर ने, उनसे अ़ब्बाद बिन अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कि एक स़ाहब नबी करीम (ﷺ) के पास मस्जिद में आए और अ़र्ज़ किया मैं तो दोज़ख़ का मुस्तहिक़ हो गया। आँहज़रत (ﷺ) ने पूछा क्या बात हुई? कहा कि मैंने अपनी बीवी से रमज़ान में जिमाअ़ कर लिया है। आँहज़रत (ﷺ) ने उनसे कहा कि फिर स़दक़ा कर। उन्होंने कहा कि मेरे पास कुछ भी नहीं। फिर वो बैठ गया और उसके बाद एक स़ाहब गधा हाँकते लाए जिस पर खाने की चीज़ रखी थी। अ़ब्दुर्रहमान ने बयान किया कि मुझे मा'लूम नहीं कि वो क्या चीज़ थी। (दूसरी रिवायत में यूँ है कि खजूर लदी हुई थी) उसे आँहज़रत (ﷺ) के पास लाया जा रहा था। आँहज़रत (ﷺ) ने पूछा कि आग में जलने वाले स़ाहब कहाँ हैं? वो स़ाहब बोले कि

मैं हाज़िर हूँ। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि इसे ले और सदक़ा कर दे। उन्होंने पूछा क्या अपने से ज़्यादा मुहताज को दूँ? मेरे घरवालों के लिये तो ख़ुद कोई खाने की चीज़ नहीं है। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि फिर तुम ही खा लो। हज़रत अबू अब्दुल्लाह इमाम बुख़ारी (रह.) ने कहा कि पहली हदीष़ ज़्यादा वाज़ेह है जिसमें अत्इम अह्लक के अल्फ़ाज़ हैं। (राजेअ : 1935) .

هذا فتصدَّقْ به)) قال: على أحوجَ مني ما لأهلي طعامٌ قال: ((فكلوه)). قال أبو عبدِ الله: الحديثُ الأوّلُ أبينُ قولُهُ أطعِمْ أهلَكَ.

[راجع: ١٩٣٥]

बाब और हदीष़ में मुताबक़त ज़ाहिर है।

बाब 13 : जब कोई शख़्स हद्दी गुनाह का इक़रार ग़ैर वाज़ेह तौर पर करे तो क्या इमाम को उसकी पर्दापोशी करनी चाहिये

١٣- باب إذا أقرَّ بالحدّ ولمْ يُبيِّنْ هلْ لِلإمامِ أنْ يسترَ عليهِ؟

6823. मुझसे अब्दुल क़ुद्दूस बिन मुहम्मद ने बयान किया, उनसे अम्र बिन आसिम किलाबी ने बयान किया, उनसे हम्माम बिन यह्या ने बयान किया, उनसे इस्हाक़ बिन अब्दुल्लाह बिन अबी तलहा ने बयान किया, उनसे हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं नबी करीम (ﷺ) के पास था कि एक साहब कअब बिन अम्र आए और कहा या रसूलल्लाह! मुझ पर हद वाजिब हो गई है आप मुझ पर हद जारी कीजिए। बयान किया आँहज़रत (ﷺ) ने उससे कुछ नहीं पूछा। बयान किया कि फिर नमाज़ का वक़्त हो गया और उन साहब ने भी आँहज़रत (ﷺ) के साथ नमाज़ पढ़ी। जब आँहुज़ूर नमाज़ पढ़ चुके तो वो फिर आँहज़रत (ﷺ) के पास आकर खड़े हो गये और कहा या रसूलल्लाह! मुझ पर हद वाजिब हो गई है आप किताबुल्लाह के हुक्म के मुताबिक़ मुझ पर हद जारी कीजिए। आँहज़रत (ﷺ) ने उस पर फ़र्माया। क्या तुमने अभी हमारे साथ नमाज़ नहीं पढ़ी है। उन्होंने कहा कि हाँ। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि फिर अल्लाह ने तेरा गुनाह माफ़ कर दिया या फ़र्माया कि तेरी ग़लती या हद (माफ़ कर दी)।

٦٨٢٣- حدَّثني عبدُ القُدُّوسِ بنُ مُحمَّدٍ، حدَّثني عمرُو بنُ عاصمٍ الكِلابيُّ، حدَّثنا همَّامُ بنُ يحيى، حدَّثنا إسحاقُ بنُ عبدِ الله بنِ أبي طلحةَ. عنْ أنسِ بنِ مالكٍ رضيَ الله عنهُ قال: كنتُ عندَ النَّبيِّ ﷺ فجاءَهُ رجلٌ فقال: يا رسولَ الله إنِّي أصبتُ حدًّا فأقِمْهُ عليَّ قال: ولمْ يسألْهُ عنهُ قال: وحضرتِ الصَّلاةُ فصلَّى مع النَّبيِّ ﷺ فلمَّا قضى النَّبيُّ ﷺ الصَّلاةَ قام إليهِ الرَّجلُ فقال: يا رسولَ الله إنِّي أصبتُ حدًّا فأقِمْ فيَّ كتابَ الله. قال: ((أليسَ قدْ صلَّيتَ معنا؟)) قال: نعمْ. قال: ((فإنَّ الله قدْ غفرَ لكَ ذنبَكَ - أوْ قال - حدَّكَ)).

ग़ैर वाज़ेह इक़रार पर आपने उसको ये बशारत पेश की आज भी ये बशारत क़ायम है। अगर कोई शख़्स इमाम के सामने गोल मोल बयान करे कि मैंने हद्दी जुर्म किया है तो इमाम उसकी पर्दापोशी कर सकता है।

तश्रीह : कुछ ने इस हदीष़ से ये दलील ली है कि अगर कोई हद्दी गुनाह करके तौबा करता हुआ इमाम या हाकिम के सामने आए तो उस पर से हद साक़ित हो जाती है।

बाब 14 : क्या इमाम ज़िना का इक़रार करने

١٤- باب هلْ يقولُ الإمامُ لِلمُقِرِّ :

वाले से ये कहे कि शायद तूने छुआ हो या आँख से इशारा किया हो

لَعَلَّكَ لَمَسْتَ أَوْ غَمَزْتَ؟

6824. मुझसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद जअ़फ़ी ने बयान किया, कहा हमसे वहब बिन जरीर ने बयान किया, कहा हमसे हमारे वालिद ने कहा कि मैंने यअ़ला बिन हकीम से सुना, उन्होंने इक्रिमा से और उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि जब ह़ज़रत माइज़ बिन मालिक (रज़ि.) नबी करीम (ﷺ) के पास आए तो आँह़ज़रत (ﷺ) ने उनसे फ़र्माया कि ग़ालिबन तूने बोसा दिया होगा या इशारा किया होगा या देखा होगा। उन्होंने कहा कि नहीं या रसूलल्लाह! आँह़ज़रत (ﷺ) ने उस पर फ़र्माया क्या फिर तूने हमबिस्तरी ही कर ली है? इस मर्तबा आपने किनाया से काम नहीं लिया। बयान किया कि उसके बाद आँह़ज़रत (ﷺ) ने उन्हें रजम का हुक्म दिया।

٦٨٢٤- حَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ الْجُعْفِيُّ، حَدَّثَنَا وَهْبُ بْنُ جَرِيرٍ، حَدَّثَنَا أَبِي قَالَ: سَمِعْتُ يَعْلَى بْنَ حَكِيمٍ، عَنْ عِكْرِمَةَ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: لَمَّا أَتَى مَاعِزُ بْنُ مَالِكٍ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ لَهُ: ((لَعَلَّكَ قَبَّلْتَ أَوْ غَمَزْتَ أَوْ نَظَرْتَ؟)) قَالَ: لاَ يَا رَسُولَ اللهِ قَالَ: ((أَنِكْتَهَا؟)) لاَ يَكْنِي قَالَ: فَعِنْدَ ذَلِكَ أَمَرَ بِرَجْمِهِ.

बाब 15 : ज़िना का इक़रार करने वाले से इमाम का पूछना कि क्या तुम शादीशुदा हो?

١٥- باب سُؤَالِ الإِمَامِ الْمُقِرَّ هَلْ أَحْصَنْتَ؟

6825. हमसे सईद बिन उ़फ़ैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, कहा मुझसे अ़ब्दुर्रहमान बिन ख़ालिद ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे इब्नुल मुसय्यब और अबू सलमा ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास एक स़ाहब आए। आँह़ज़रत (ﷺ) उस वक़्त मस्जिद में बैठे हुए थे। उन्होंने आवाज़ दी या रसूलल्लाह! मैंने ज़िना किया है। ख़ुद अपने बारे में वो कह रहे थे। आँह़ज़रत (ﷺ) ने उनकी त़रफ़ से अपना चेहरा फेर लिया। लेकिन वो स़ाहब भी हटकर उसी त़रफ़ खड़े हो गये जिधर आप (ﷺ) ने अपना चेहरा फेरा था और अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! मैंने ज़िना किया है। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फिर अपना चेहरा फेर लिया और वो भी दोबारा उस त़रफ़ आ गये जिधर आँह़ज़रत (ﷺ) ने अपना चेहरा फेरा था और इस त़रह जब उसने चार मर्तबा अपने गुनाह का इक़रार कर लिया तो आँह़ज़रत (ﷺ) ने उसको बुलाया और पूछा क्या तुम पागल हो? उन्होंने कहा कि नहीं या रसूलल्लाह! आँह़ज़रत (ﷺ) ने पूछा तुमने शादी कर ली है? उन्होंने कहा कि हाँ या रसूलल्लाह (ﷺ)! आँह़ज़रत ने स़हाबा से फ़र्माया कि इन्हें ले जाओ और

٦٨٢٥- حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ عُفَيْرٍ، قَالَ: حَدَّثَنِي اللَّيْثُ، حَدَّثَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ خَالِدٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنِ ابْنِ الْمُسَيَّبِ، وَأَبِي سَلَمَةَ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ قَالَ: أَتَى رَسُولَ اللهِ ﷺ رَجُلٌ مِنَ النَّاسِ وَهُوَ فِي الْمَسْجِدِ، فَنَادَاهُ يَا رَسُولَ اللهِ إِنِّي زَنَيْتُ يُرِيدُ نَفْسَهُ، فَأَعْرَضَ عَنْهُ النَّبِيُّ ﷺ فَتَنَحَّى لِشِقِّ وَجْهِهِ الَّذِي أَعْرَضَ قِبَلَهُ، فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ إِنِّي زَنَيْتُ، فَأَعْرَضَ عَنْهُ فَجَاءَ لِشِقِّ وَجْهِ النَّبِيِّ ﷺ الَّذِي أَعْرَضَ عَنْهُ، فَلَمَّا شَهِدَ عَلَى نَفْسِهِ أَرْبَعَ شَهَادَاتٍ دَعَاهُ النَّبِيُّ ﷺ فَقَالَ: ((أَبِكَ جُنُونٌ؟)) قَالَ: لاَ يَا رَسُولَ اللهِ فَقَالَ: ((أَحْصَنْتَ؟)) قَالَ: نَعَمْ يَا رَسُولَ

रजम कर दो। (राजेअ : 5271)

الله قَالَ: ((اذْهَبُوا فَارْجُمُوهُ)).

[راجع: ٥٢٧١]

6826. इब्ने शिहाब ने बयान किया कि जिन्होंने ह़ज़रत जाबिर (रज़ि.) से ह़दीष़ सुनी थी उन्होंने मुझे ख़बर दी कि ह़ज़रत जाबिर (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं भी उन लोगों में शामिल था जिन्होंने उन्हें रजम किया था जब उन पर पत्थर पड़े तो वो भागने लगे। लेकिन हमने उन्हें ह़र्रा (ह़र्रा मदीना की पथरीली ज़मीन) में जा पकड़ा और उन्हें रजम कर दिया। (राजेअ : 5270)

٦٨٢٦- قال ابْنُ شِهَابٍ: أَخْبَرَنِي مَنْ سَمِعَ جَابِرًا قَالَ: فَكُنْتُ فِيمَنْ رَجَمَهُ فَرَجَمْنَاهُ بِالْمُصَلَّى، فَلَمَّا أَذْلَقَتْهُ الْحِجَارَةُ جَمَزَ حَتَّى أَدْرَكْنَاهُ بِالْحَرَّةِ فَرَجَمْنَاهُ.

[راجع: ٥٢٧٠]

बाब और ह़दीष़ में मुताबक़त ज़ाहिर है कि ह़ज़रत माइ़ज़ असलमी (रज़ि.) ही मुराद हैं। इस ह़दीष़ से ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) ने बहुत से मसाइल का इस्तिम्बात़ किया है। ता'ज्जुब है उन मुआनिदीन पर जो इतने बड़े मुज्तहिद को दर्जा इज्तिहाद से गिराकर अपने अंदरूनी इ़नाद का मुज़ाहिरा करते रहते हैं।

बाब 16 : ज़िना का इक़रार करना

١٦- باب الاِعْتِرَافِ بِالزِّنَا

6827, 28. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, कहा कि हमने उसे ज़ुह्री से (सुनकर) याद किया, उन्होंने बयान किया कि मुझे उ़बैदुल्लाह ने ख़बर दी, उन्होंने ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) और ज़ैद बिन ख़ालिद (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि हम नबी करीम (ﷺ) के पास थे तो एक स़ाह़ब खड़े हुए और कहा मैं आपको अल्लाह की क़सम देता हूँ आप हमारे बीच अल्लाह की किताब से फ़ैस़ला कर दें। उस पर उसका मुक़ाबिल भी खड़ा हो गया और वो पहले से ज़्यादा समझदार था, फिर उसने कहा कि वाक़ई आप हमारे बीच किताबुल्लाह से ही फ़ैस़ला कीजिये और मुझे भी बातचीत की इजाज़त दीजिए। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि कहो। उस शख़्स़ ने कहा कि मेरा बेटा इस शख़्स़ के यहाँ मज़दूरी पर काम करता था, फिर उसने उसकी औ़रत से ज़िना कर लिया, मैंने उसके फ़िदये में इसे सौ बकरी और एक ख़ादिम दिया, फिर मैंने कुछ इल्म वालों से पूछा तो उन्होंने मुझे बताया कि मेरे लड़के पर सौ कोड़े और एक साल शहर बदर होने की ह़द वाजिब है। आँह़ज़रत (ﷺ) ने उस पर फ़र्माया कि उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है मैं तुम्हारे बीच किताबुल्लाह ही के मुत़ाबिक़ फ़ैस़ला करूँगा। सौ बकरियाँ और ख़ादिम तुम्हें वापस होंगे

٦٨٢٧، ٦٨٢٨- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، قَالَ: حَفِظْنَاهُ مِنْ فِيِّ الزُّهْرِيِّ قَالَ : أَخْبَرَنِي عُبَيْدُ اللهِ، أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ وَزَيْدَ بْنَ خَالِدٍ قَالاَ: كُنَّا عِنْدَ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَامَ رَجُلٌ فَقَالَ: أَنْشُدُكَ اللهَ إِلاَّ مَا قَضَيْتَ بَيْنَنَا بِكِتَابِ اللهِ فَقَامَ خَصْمُهُ، وَكَانَ أَفْقَهَ مِنْهُ فَقَالَ: اقْضِ بَيْنَنَا بِكِتَابِ اللهِ وَائْذَنْ لِي قَالَ: ((قُلْ)) قَالَ : إِنَّ ابْنِي كَانَ عَسِيفًا عَلَى هذَا، فَزَنَى بِامْرَأَتِهِ فَافْتَدَيْتُ مِنْهُ بِمِائَةِ شَاةٍ وَخَادِمٍ، ثُمَّ سَأَلْتُ رِجَالاً مِنْ أَهْلِ الْعِلْمِ، فَأَخْبَرُونِي أَنَّ عَلَى ابْنِي جَلْدَ مِائَةٍ وَتَغْرِيبَ عَامٍ، وَعَلَى امْرَأَتِهِ الرَّجْمَ فَقَالَ النَّبِيُّ: ((وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ، لأَقْضِيَنَّ بَيْنَكُمَا بِكِتَابِ اللهِ جَلَّ ذِكْرُهُ، الْمِائَةُ شَاةٍ وَالْخَادِمُ رَدٌّ عَلَيْكَ، وَعَلَى

और तुम्हारे बेटे को सौ कोड़े लगाए जाएँगे और एक साल के लिये उसे जलावतन किया जाएगा और ऐ उनैस! सुबह को इसकी औरत के पास जाना अगर वो (ज़िना का) इक़रार कर ले तो उसे रजम कर दो। चुनाँचे वो सुबह को उसके पास गये और उसने इक़रार कर लिया और उन्होंने रजम कर दिया। अली बिन अब्दुल्लाह मदीनी कहते हैं मैंने सुफ़यान बिन उयैना से पूछा जिस शख़्स का बेटा था उसने यूँ नहीं कहा कि उन आलिमों ने मुझसे बयान किया कि तेरे बेटे पर रजम है। उन्होने कहा कि मुझको इसमें शक है कि ज़ुहरी से मैंने सुना है या नहीं, इसलिये मैंने इसको कभी बयान किया कभी नहीं बयान किया बल्कि सुकूत किया। (राजेअ : 2314, 2315)

ابنِكَ . جَلْدُ مِائَةٍ وَتَغْرِيبُ عَامٍ، وَاغْدُ يَا أُنَيْسُ عَلَى امْرَأَةِ هَذَا، فَإِنِ اعْتَرَفَتْ فَارْجُمْهَا)) فَغَدَا عَلَيْهَا فَاعْتَرَفَتْ فَرَجَمَهَا. قُلْتُ لِسُفْيَانَ، لَمْ يَقُلْ فَأَخْبَرُونِي أَنَّ عَلَى ابْنِي الرَّجْمَ فَقَالَ : أَشُكُّ فِيهَا مِنَ الزُّهْرِيِّ فَرُبَّمَا قُلْتُهَا وَرُبَّمَا سَكَتُّ. [راجع: ٢٣١٤، ٢٣١٥]

6829. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे ज़ुहरी ने, उनसे उबैदुल्लाह ने और उनसे हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि हज़रत उमर (रज़ि.) ने कहा मैं डरता हूँ कि कहीं ज़्यादा वक़्त गुज़र जाए और कोई शख़्स ये कहने लगे कि किताबुल्लाह में तो रजम का हुक्म हमें कहीं नहीं मिलता और इस तरह वो अल्लाह के एक फ़रीज़े को छोड़कर गुमराह हों जिसे अल्लाह तआला ने नाज़िल किया है। आगाह हो जाओ कि रजम का हुक्म उस शख़्स के लिये फ़र्ज़ है जिसने शादीशुदा होने के बावजूद ज़िना किया हो बशर्ते कि सहीह शरई गवाहियों से षाबित हो जाए या हमल हो या कोई ख़ुद इक़रार करे। सुफ़यान ने बयान किया कि मैंने इसी तरह याद किया था आगाह हो जाओ कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने रजम किया था और आपके बाद हमने रजम किया था। (राजेअ :2462)

٦٨٢٩- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ عُبَيْدِ اللهِ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ عُمَرُ لَقَدْ خَشِيتُ أَنْ يَطُولَ بِالنَّاسِ زَمَانٌ حَتَّى يَقُولَ قَائِلٌ: لاَ نَجِدُ الرَّجْمَ فِي كِتَابِ اللهِ فَيَضِلُّوا بِتَرْكِ فَرِيضَةٍ أَنْزَلَهَا اللهُ أَلاَ وَإِنَّ الرَّجْمَ حَقٌّ عَلَى مَنْ زَنَى وَقَدْ أَحْصَنَ، إِذَا قَامَتِ الْبَيِّنَةُ أَوْ كَانَ الْحَمْلُ أَوِ الاِعْتِرَافُ قَالَ سُفْيَانُ: كَذَا حَفِظْتُ أَلاَ وَقَدْ رَجَمَ رَسُولُ اللهِ ﷺ وَرَجَمْنَا بَعْدَهُ. [راجع: ٢٤٦٢]

आयते रजम की तिलावत मन्सूख़ हो गई मगर इसका हुक्म क़यामत तक के लिये बाक़ी और वाजिबुल अमल है, कोई इसका इंकार करे तो वो गुमराह क़रार पाएगा।

बाब 17 : अगर कोई औरत ज़िना से हामिला पाई जाए और वो शादीशुदा हो तो उसे रजम करेंगे

١٧- باب رَجْمِ الْحُبْلَى مِنَ الزِّنَا إِذَا أَحْصَنَتْ

मगर ये रजम बच्चा जनने के बाद होगा क्योंकि हालते हमल में रजम करना जाइज़ नहीं, इसी तरह कोड़े मारने हों या क़िसास लेना हो तो ये भी वजऐ हमल के बाद होगा

6820. हमसे अब्दुल अज़ीज़ बिन अब्दुल्लाह उवैसी ने बयान

٦٨٣٠- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللهِ،

किया, कहा हमसे इब्राहीम बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे स़ालेह़ बिन कैसान ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़त्बा बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने और उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं कई मुहाजिरीन को (क़ुर्आन मजीद) पढ़ाया करता था। ह़ज़रत अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ (रज़ि.) भी उनमें से एक थे। अभी मैं मिना में उनके मकान पर था और वो ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) के आख़िरी ह़ज्ज में (सन 23 हिजरी) उनके साथ थे कि वो मेरे पास लौटकर आए और कहा कि काश! तुम उस शख़्स को देखते जो आज अमीरुल मोमिनीन के पास आया था। उसने कहा कि ऐ अमीरुल मोमिनीन! क्या आप फ़लाँ स़ाह़ब से ये पूछताछ करेंगे जो ये कहते हैं कि अगर उ़मर का इंतिक़ाल हो गया तो मैं फ़लाँ स़ाह़ब त़लह़ा बिन उ़बैदुल्लाह से बेअ़त करूँगा क्योंकि वल्लाह ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) की बग़ैर सोचे समझे बेअ़त तो अचानक हो गई और फिर वो मुकम्मल हो गई थी। उस पर ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) बहुत ग़ुस्स़ा हुए और कहा मैं इंशाअल्लाह शाम में लोगों से ख़ित़ाब करूँगा और उन्हें उन लोगों से डराऊँगा जो ज़बरदस्ती से दख़ल दर मा'कूलात करना चाहते हैं। ह़ज़रत अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ (रज़ि.) ने कहा कि इस पर मैंने अ़र्ज़ किया या अमीरल मोमिनीन! ऐसा न कीजिए। ह़ज्ज के मौसम में कम समझी और बुरे भले हर क़िस्म के लोग जमा हैं और जब आप ख़ित़ाब के लिये खड़े होंगे तो आपके क़रीब यही लोग ज़्यादा होंगे और मुझे डर है कि आप खड़े होकर कोई बात कहें और वो चारों त़रफ़ फैल जाए, लेकिन फैलाने वाले उसे स़ह़ीह़ त़ौर पर याद न रख सकेंगे और उसके ग़लत़ मआ़नी फैलाने लगेंगे, इसलिये मदीना मुनव्वरह पहुँचने तक का और इंतिज़ार कर लीजिये क्योंकि वो हिजरत और सुन्नत का मुक़ाम है। वहाँ आपको ख़ालिस़ दीनी समझ बूझ रखने वाले और शरीफ़ लोग मिलेंगे, वहाँ आप जो कुछ कहना चाहते हैं ए'तिमाद के साथ ही फ़र्मा सकेंगे और इ़ल्म वाले आपकी बातों को याद भी रखेंगे और जो स़ह़ीह़ मत़लब है वही बयान करेंगे। ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने कहा हाँ अच्छा अल्लाह की क़सम मैं मदीना मुनव्वरह पहुँचते ही सबसे पहले लोगों को इसी

حَدَّثَنِي إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ، عَنْ صَالِحٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُتْبَةَ بْنِ مَسْعُودٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: كُنْتُ أُقْرِىءُ رِجَالاً مِنَ الْمُهَاجِرِينَ مِنْهُمْ عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ عَوْفٍ فَبَيْنَمَا أَنَا فِي مَنْزِلِهِ بِمِنًى وَهُوَ عِنْدَ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ فِي آخِرِ حَجَّةٍ حَجَّهَا إِذْ رَجَعَ إِلَيَّ عَبْدُ الرَّحْمَنِ فَقَالَ: لَوْ رَأَيْتَ رَجُلاً أَتَى أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ الْيَوْمَ فَقَالَ: يَا أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ هَلْ لَكَ فِي فُلاَنٍ يَقُولُ لَوْ قَدْ مَاتَ عُمَرُ لَقَدْ بَايَعْتُ فُلاَنًا فَوَ اللهِ مَا كَانَتْ بَيْعَةُ أَبِي بَكْرٍ إِلاَّ فَلْتَةً فَتَمَّتْ، فَغَضِبَ عُمَرُ ثُمَّ قَالَ: إِنِّي إِنْ شَاءَ اللهُ لَقَائِمٌ الْعَشِيَّةَ فِي النَّاسِ فَمُحَذِّرُهُمْ هَؤُلاَءِ الَّذِينَ يُرِيدُونَ أَنْ يَغْصِبُوهُمْ أُمُورَهُمْ قَالَ عَبْدُ الرَّحْمَنِ: فَقُلْتُ يَا أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ لاَ تَفْعَلْ فَإِنَّ الْمَوْسِمَ يَجْمَعُ رَعَاعَ النَّاسِ وَغَوْغَاءَهُمْ، فَإِنَّهُمْ هُمُ الَّذِينَ يَغْلِبُونَ عَلَى قُرْبِكَ، حِينَ تَقُومُ فِي النَّاسِ وَأَنَا أَخْشَى أَنْ تَقُومَ فَتَقُولَ مَقَالَةً يُطَيِّرُهَا عَنْكَ كُلُّ مُطَيِّرٍ، وَأَنْ لاَ يَعُوهَا وَأَنْ، لاَ يَضَعُوهَا عَلَى مَوَاضِعِهَا، فَأَمْهِلْ حَتَّى تَقْدَمَ الْمَدِينَةَ فَإِنَّهَا دَارُ الْهِجْرَةِ وَالسُّنَّةِ، فَتَخْلُصَ بِأَهْلِ الْفِقْهِ وَأَشْرَافِ النَّاسِ فَتَقُولَ: مَا قُلْتَ مُتَمَكِّنًا فَيَعِي أَهْلُ الْعِلْمِ مَقَالَتَكَ وَيَضَعُونَهَا عَلَى مَوَاضِعِهَا فَقَالَ عُمَرُ: أَمَا وَاللهِ إِنْ شَاءَ اللهُ لأَقُومَنَّ بِذَلِكَ أَوَّلَ مَقَامٍ أَقُومُهُ

मज़्मून का ख़ुत्बा दूँगा। हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर हम ज़िल्हिज्ज के महीने के आख़िर में मदीना मुनव्वरह पहुँचे। जुम्अ़े के दिन सूरज ढलते ही हमने (मस्जिदे नबवी) पहुँचने में जल्दी की और मैंने देखा कि सईद बिन ज़ैद बिन अ़म्र बिन नुफ़ैल मिम्बर की जड़ के पास बैठे हुए थे। मैं भी उनके पास बैठ गया। मेरा टख़्ना उनके टख़्ने से लगा हुआ था। थोड़ी ही देर में हज़रत उ़मर (रज़ि.) भी बाहर निकले, जब मैंने उन्हें आते देखा तो सईद बिन ज़ैद बिन अ़म्र बिन नुफ़ैल (रज़ि.) से मैंने कहा कि आज हज़रत उ़मर (रज़ि.) ऐसी बात कहेंगे जो उन्होंने इससे पहले ख़लीफ़ा बनाए जाने के बाद कभी नहीं कही थी। लेकिन उन्होंने उसको न माना और कहा कि मैं तो नहीं समझता कि आप कोई ऐसी बात कहें जो पहले कभी नहीं कही थी। फिर हज़रत उ़मर (रज़ि.) मिम्बर पर बैठे और जब मुअज़्ज़िन अज़ान देकर ख़ामोश हुआ तो आप खड़े हुए और अल्लाह तआ़ला की ष़ना उसकी शान के मुताबिक़ करने के बाद फ़र्माया अम्मबअ़द! आज मैं तुमसे एक ऐसी बात कहूँगा जिसका कहना मेरी तक़्दीर में लिखा हुआ था, मुझको नहीं मा'लूम कि शायद मेरी ये बातचीत मौत के क़रीब की आख़िरी बातचीत हो। पस जो कोई इसे समझे और महफ़ूज़ रखे उसे चाहिये कि इस बात को उस जगह तक पहुँचा दे जहाँ तक उसकी सवारी उसे ले जा सकती है और जिसे डर हो कि उसने बात नहीं समझी है तो उसके लिये जाइज़ नहीं है कि मेरी तरफ़ ग़लत बात मन्सूब करे। बिला शुब्हा अल्लाह तआ़ला ने मुहम्मद (ﷺ) को हक़ के साथ मब्ऊ़ष किया और आप पर किताब नाज़िल की, किताबुल्लाह की सूरत में जो कुछ आप पर नाज़िल हुआ, उनमे आयते रजम भी थी। हमने उसे पढ़ा था समझा था और याद रखा था। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ख़ुद (अपने ज़माने में) रजम कराया। फिर आपके बाद हमने भी रजम किया लेकिन मुझे डर है कि अगर वक़्त यूँ ही आगे बढ़ता रहा तो कहीं कोई ये न दा'वा कर बैठे कि रजम की आयत हम किताबुल्लाह में नहीं पाते और इस तरह वो उस फ़रीज़े को छोड़कर गुमराह हों जिसे अल्लाह तआ़ला ने नाज़िल किया था। यक़ीनन रजम का हुक्म किताबुल्लाह से उस शख़्स के लिये ष़ाबित है जिसने शादी होने के बाद ज़िना किया हो। ख़्वाह मर्द

بِالْمَدِينَةِ، قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: فَقَدِمْنَا الْمَدِينَةَ فِي عَقِبِ ذِي الْحِجَّةِ فَلَمَّا كَانَ يَوْمُ الْجُمُعَةِ عَجَّلْنَا الرَّوَاحَ حِينَ زَاغَتِ الشَّمْسُ، حَتَّى أَجِدَ سَعِيدَ بْنَ زَيْدِ بْنِ عَمْرِو بْنِ نُفَيْلٍ جَالِسًا إِلَى رُكْنِ الْمِنْبَرِ فَجَلَسْتُ حَوْلَهُ تَمَسُّ رُكْبَتِي رُكْبَتَهُ، فَلَمْ أَنْشَبْ أَنْ خَرَجَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ فَلَمَّا رَأَيْتُهُ مُقْبِلاً قُلْتُ لِسَعِيدِ بْنِ زَيْدِ بْنِ عَمْرِو بْنِ نُفَيْلٍ: لَيَقُولَنَّ الْعَشِيَّةَ مَقَالَةً لَمْ يَقُلْهَا مُنْذُ اسْتُخْلِفَ فَأَنْكَرَ عَلَيَّ وَقَالَ: مَا عَسَيْتَ أَنْ يَقُولَ: مَا لَمْ يَقُلْ قَبْلَهُ فَجَلَسَ عُمَرُ عَلَى الْمِنْبَرِ، فَلَمَّا سَكَتَ الْمُؤَذِّنُونَ قَامَ فَأَثْنَى عَلَى اللهِ بِمَا هُوَ أَهْلُهُ ثُمَّ قَالَ: أَمَّا بَعْدُ فَإِنِّي قَائِلٌ لَكُمْ مَقَالَةً قَدْ قُدِّرَ لِي أَنْ أَقُولَهَا لاَ أَدْرِي لَعَلَّهَا بَيْنَ يَدَيْ أَجَلِي فَمَنْ عَقَلَهَا وَوَعَاهَا فَلْيُحَدِّثْ بِهَا حَيْثُ انْتَهَتْ بِهِ رَاحِلَتُهُ، وَمَنْ خَشِيَ أَنْ لاَ يَعْقِلَهَا فَلاَ أُحِلُّ لأَحَدٍ أَنْ يَكْذِبَ عَلَيَّ: إِنَّ اللهَ بَعَثَ مُحَمَّدًا ﷺ بِالْحَقِّ وَأَنْزَلَ عَلَيْهِ الْكِتَابَ فَكَانَ مِمَّا أَنْزَلَ اللهُ آيَةُ الرَّجْمِ فَقَرَأْنَاهَا وَعَقَلْنَاهَا وَوَعَيْنَاهَا، رَجَمَ رَسُولُ اللهِ ﷺ وَرَجَمْنَا بَعْدَهُ، فَأَخْشَى إِنْ طَالَ بِالنَّاسِ زَمَانٌ أَنْ يَقُولَ قَائِلٌ: وَاللهِ مَا نَجِدُ آيَةَ الرَّجْمِ فِي كِتَابِ اللهِ فَيَضِلُّوا بِتَرْكِ فَرِيضَةٍ أَنْزَلَهَا اللهُ، وَالرَّجْمُ فِي كِتَابِ اللهِ حَقٌّ عَلَى مَنْ زَنَى، إِذَا أُحْصِنَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَاءِ، إِذَا قَامَتِ الْبَيِّنَةُ أَوْ

كَانَ الْحَبَلُ أَوِ الاِعْتِرَافُ ثُمَّ إِنَّا كُنَّا نَقْرَأُ فِيمَا نَقْرَأُ مِنْ كِتَابِ اللهِ أَنْ لاَ تَرْغَبُوا عَنْ آبَائِكُمْ فَإِنَّهُ كُفْرٌ بِكُمْ أَنْ تَرْغَبُوا عَنْ آبَائِكُمْ أَوْ إِنَّ كُفْرًا بِكُمْ أَنْ تَرْغَبُوا عَنْ آبَائِكُمْ أَلاَ ثُمَّ إِنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: لاَ تُطْرُونِي كَمَا أُطْرِيَ عِيسَى بْنُ مَرْيَمَ وَقُولُوا عَبْدُ اللهِ وَرَسُولُهُ ثُمَّ إِنَّهُ بَلَغَنِي أَنَّ قَائِلاً مِنْكُمْ يَقُولُ: وَاللهِ لَوْ مَاتَ عُمَرُ بَايَعْتُ فُلاَنًا فَلاَ يَغْتَرَّنَّ امْرُؤٌ أَنْ يَقُولَ: إِنَّمَا كَانَتْ بَيْعَةُ أَبِي بَكْرٍ فَلْتَةً، وَتَمَّتْ أَلاَ وَإِنَّهَا قَدْ كَانَتْ كَذَلِكَ، وَلَكِنَّ اللهَ وَقَى شَرَّهَا وَلَيْسَ مِنْكُمْ مَنْ تُقْطَعُ الأَعْنَاقُ إِلَيْهِ مِثْلُ أَبِي بَكْرٍ مَنْ بَايَعَ رَجُلاً عَنْ غَيْرِ مَشُورَةٍ مِنَ الْمُسْلِمِينَ، فَلاَ يُبَايَعُ هُوَ وَلاَ الَّذِي بَايَعَهُ تَغِرَّةً أَنْ يُقْتَلاَ وَإِنَّهُ قَدْ كَانَ مِنْ خَبَرِنَا حِينَ تَوَفَّى اللهُ نَبِيَّهُ ﷺ أَنَّ الأَنْصَارَ، خَالَفُونَا وَاجْتَمَعُوا بِأَسْرِهِمْ فِي سَقِيفَةِ بَنِي سَاعِدَةَ، وَخَالَفَ عَنَّا عَلِيٌّ وَالزُّبَيْرُ وَمَنْ مَعَهُمَا وَاجْتَمَعَ الْمُهَاجِرُونَ إِلَى أَبِي بَكْرٍ فَقُلْتُ لأَبِي بَكْرٍ: يَا أَبَا بَكْرٍ انْطَلِقْ بِنَا إِلَى إِخْوَانِنَا هَؤُلاَءِ مِنَ الأَنْصَارِ، فَانْطَلَقْنَا نُرِيدُهُمْ فَلَمَّا دَنَوْنَا مِنْهُمْ لَقِيَنَا رَجُلاَنِ مِنْهُمْ صَالِحَانِ فَذَكَرَا مَا تَمَالَى عَلَيْهِ الْقَوْمُ فَقَالاَ: أَيْنَ تُرِيدُونَ يَا مَعْشَرَ الْمُهَاجِرِينَ؟ فَقُلْنَا: نُرِيدُ إِخْوَانَنَا هَؤُلاَءِ مِنَ الأَنْصَارِ، فَقَالاَ: لاَ عَلَيْكُمْ أَنْ لاَ تَقْرَبُوهُمُ اقْضُوا أَمْرَكُمْ فَقُلْتُ: وَاللهِ لَنَأْتِيَنَّهُمْ فَانْطَلَقْنَا

हों या औरतें, बशर्तेकि गवाही मुकम्मल हो जाए या ह़मल ज़ाहिर हो या वो ख़ुद इक़रार कर ले फिर किताबुल्लाह की आयतों में हम ये भी पढ़ते थे कि अपने ह़क़ीक़ी बाप दादों के सिवा दूसरों की त़रफ़ अपने आपको मन्सूब न करो क्योंकि ये तुम्हारा कुफ़्र और इंकार है कि तुम अपने अ़सल बाप दादों के सिवा दूसरों की त़रफ़ अपनी निस्बत करो। हाँ और सुन लो कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ये भी फ़र्माया था कि मेरी ता'रीफ़ ह़द से बढ़ाकर न करना जिस त़रह ईसा इब्ने मरयम (अ़लैहि.) की ह़द से बढ़ाकर ता'रीफ़ें की गईं (उनको अल्लाह का बेटा बना दिया गया) बल्कि (मेरे लिये स़िर्फ़ ये कहा करो कि) मैं अल्लाह का बन्दा और उसका रसूल हूँ और मुझे ये भी मा'लूम हुआ है कि तुममें से किसी ने यूँ कहा है कि वल्लाह! अगर उ़मर का इंतिक़ाल हो गया तो मैं फ़लाँ से बेअ़त करूँगा देखो तुममें से किसी को ये धोखा न हो कि ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) की बेअ़त तो अचानक हो गई थी और फिर वो चली गइ। बात ये है कि बेशक ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) की बेअ़त नागाह हुई और अल्लाह ने नागहानी बेअ़त में जो बुराई हुई है उससे तुमको बचाए रखा उसकी वजह ये हुई कि तुमको अल्लाह तआ़ला ने उसके शर्र से मह़फ़ूज़ रखा और तुममें कोई शख़्स़ ऐसा नहीं जो अबूबक्र (रज़ि.) जैसा मुत्तक़ी, अल्लाह वाला हो। तुममें कौन है जिससे मिलने के लिये ऊँट चलाए जाते हों। देखो! ख़्याल रखो कोई शख़्स़ किसी से बग़ैर मुसलमानों के स़लाह़ मश्विरा और इत्तिफ़ाक़ और ग़ल्बा आराइ के बग़ैर बेअ़त न करे जो कोई ऐसा करेगा उसका नतीजा यही होगा कि बेअ़त करने वाला और बेअ़त लेने वाला दोनों अपनी जान गंवा देंगे और सुन लो बिला शुब्हा जिस वक़्त ह़ुज़ूरे अकरम (ﷺ) की वफ़ात हुई तो अबूबक्र (रज़ि.) हममें से सबसे बेहतर थे अल्बत्ता अंस़ार ने हमारी मुख़ालफ़त की थी और वो सब लोग सक़ीफ़ा बनी साएदा में जमा हो गये थे। इसी त़रह अ़ली और ज़ुबैर (रज़ि.) और उनके साथियों ने भी हमारी मुख़ालफ़त की थी और बाक़ी मुहाजिरीन अबूबक्र (रज़ि.) के पास जमा हो गये थे। उस वक़्त मैंने अबूबक्र (रज़ि.) से कहा ऐ अबूबक्र! हमें अपने उन अंस़ार भाइयों के पास ले चलिये। चुनाँचे हम

उनसे मुलाक़ात के इरादे से चल पड़े। जब हम उनके क़रीब पहुँचे तो हमारी उन्हीं में के दो नेक लोगों से मुलाक़ात हुई और उन्होंने हमसे बयान किया कि अंसारी आदमियों ने ये बात ठहराई है कि (सअ़द बिन उ़बादह को ख़लीफ़ा बनाएँ) और उन्होंने पूछा। हज़राते मुहाजिरीन आप लोग कहाँ जा रहे हैं। हमने कहा कि हम अपने उन अंसार भाईयों के पास जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि आप लोग हर्गिज़ वहाँ न जाएँ बल्कि ख़ुद जो करना है कर डालो लेकिन मैंने कहा कि अल्लाह की क़सम! हम ज़रूर जाएँगे। चुनाँचे हम आगे बढ़े और अंसार के पास सक़ीफ़ बनी साएदा में पहुँचे मज्लिस में एक साहब (सरदारे ख़ज़रज) चादर अपने सारे जिस्म पर लपेटे बीच में बैठे थे। मैंने पूछा कि ये कौन साहब हैं तो लोगों ने बताया कि सअ़द बिन उ़बादह (रज़ि.) हैं। मैंने पूछा कि इन्हें क्या हो गया है? लोगों ने बताया कि बुख़ार आ रहा है। फिर हमारे थोड़ी देर तक बैठने के बाद उनके ख़तीब ने कलिमा शहादत पढ़ा और अल्लाह तआ़ला की शान के मुताबिक़ ता'रीफ़ की। फिर कहा अम्मा बअ़द! हम अल्लाह के दीन के मददगार (अंसार) और इस्लाम के लश्कर हैं और तुम ऐ गिरोहे मुहाजिरीन! कम ता'दाद में हो। तुम्हारी ये थोड़ी सी ता'दाद अपनी क़ौम क़ुरैश से निकलकर हम लोगों में आ रहे हो। तुम लोग ये चाहते हो कि हमारी बैख़ कनी करो और हमको ख़िलाफ़त से महरूम करके आप ख़लीफ़ा बन बैठो ये कभी नहीं हो सकता। जब वो ख़ुत्बा पूरा कर चुके तो मैंने बोलना चाहा। मैंने एक उ़म्दह तक़रीर अपने ज़हन में तर्तीब दे रखी थी। मेरी बड़ी ख़्वाहिश थी मक़्क़ा हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) के बात करने से पहले ही मैं उसको शुरू कर दूँ और अंसार की तक़रीर से जो अबूबक्र (रज़ि.) को ग़ुस्सा पैदा हुआ है उसको दूर कर दूँ जब मैंने बात करनी चाही तो अबूबक्र (रज़ि.) ने कहा ज़रा ठहरो मैंने उनको नाराज़ करना बुरा जाना। आख़िर उन्होंने ही तक़रीर शुरू की और अल्लाह की क़सम! वो मुझसे ज़्यादा अ़क़्लमंद और मुझसे ज़्यादा संजीदा और मतीन थे। मैंने जो तक़रीर अपने दिल में सोच ली थी उसमें से उन्होंने कोई बात नहीं छोड़ी। फ़िल बदीहा वही कही बल्कि उससे भी बेहतर फिर वो ख़ामोश हो गये। अबूबक्र

حَتّٰى أَتَيْنَاهُمْ فِي سَقِيفَةِ بَنِي سَاعِدَةَ، فَإِذَا رَجُلٌ مُزَمَّلٌ بَيْنَ ظَهْرَانَيْهِمْ فَقُلْتُ: مَنْ هَذَا؟ قَالُوا : هَذَا سَعْدُ بْنُ عُبَادَةَ فَقُلْتُ: مَا لَهُ؟ قَالُوا: يُوعَكُ، فَلَمَّا جَلَسْنَا قَلِيلاً تَشَهَّدَ خَطِيبُهُمْ فَأَثْنَى عَلَى اللهِ بِمَا هُوَ أَهْلُهُ، ثُمَّ قَالَ : أَمَّا بَعْدُ فَنَحْنُ أَنْصَارُ اللهِ وَكَتِيبَةُ الإِسْلاَمِ، وَأَنْتُمْ مَعْشَرَ الْمُهَاجِرِينَ رَهْطٌ وَقَدْ دَفَّتْ دَافَّةٌ مِنْ قَوْمِكُمْ، فَإِذَا هُمْ يُرِيدُونَ أَنْ يَخْتَزِلُونَا مِنْ أَصْلِنَا، وَأَنْ يَحْضُنُونَا مِنَ الأَمْرِ فَلَمَّا سَكَتَ أَرَدْتُ أَنْ أَتَكَلَّمَ وَكُنْتُ زَوَّرْتُ مَقَالَةً أَعْجَبَتْنِي أُرِيدُ أَنْ أُقَدِّمَهَا بَيْنَ يَدَيْ أَبِي بَكْرٍ، وَكُنْتُ أُدَارِي مِنْهُ بَعْضَ الْحَدِّ فَلَمَّا أَرَدْتُ أَنْ أَتَكَلَّمَ قَالَ أَبُو بَكْرٍ: عَلَى رِسْلِكَ فَكَرِهْتُ أَنْ أُغْضِبَهُ، فَتَكَلَّمَ أَبُو بَكْرٍ فَكَانَ هُوَ أَحْلَمَ مِنِّي وَأَوْقَرَ، وَاللهِ مَا تَرَكَ مِنْ كَلِمَةٍ أَعْجَبَتْنِي فِي تَزْوِيرِي إِلاَّ قَالَ فِي بَدِيهَتِهِ مِثْلَهَا، أَوْ أَفْضَلَ مِنْهَا حَتّٰى سَكَتَ فَقَالَ: مَا ذَكَرْتُمْ فِيكُمْ مِنْ خَيْرٍ فَأَنْتُمْ لَهُ أَهْلٌ وَلَنْ يُعْرَفَ هَذَا الأَمْرُ إِلاَّ لِهَذَا الْحَيِّ مِنْ قُرَيْشٍ هُمْ أَوْسَطُ الْعَرَبِ نَسَبًا وَدَارًا وَقَدْ رَضِيتُ لَكُمْ أَحَدَ هَذَيْنِ الرَّجُلَيْنِ فَبَايِعُوا أَيَّهُمَا شِئْتُمْ، فَأَخَذَ بِيَدِي وَبِيَدِ أَبِي عُبَيْدَةَ بْنِ الْجَرَّاحِ وَهُوَ جَالِسٌ بَيْنَنَا، فَلَمْ أَكْرَهْ مِمَّا قَالَ غَيْرَهَا : كَانَ وَاللهِ أَنْ أُقَدَّمَ فَتُضْرَبَ عُنُقِي لاَ يُقَرِّبُنِي ذَلِكَ مِنْ إِثْمٍ أَحَبَّ إِلَيَّ مِنْ أَنْ أَتَأَمَّرَ عَلَى قَوْمٍ فِيهِمْ أَبُو

बَكْرٍ اللَّهُمَّ إِلاَّ أَنْ تُسَوِّلَ إِلَيَّ نَفْسِي عِنْدَ الْمَوْتِ شَيْئًا لاَ أَجِدُهُ الآنَ فَقَالَ قَائِلٌ: الأَنْصَارِ أَنَا جُذَيْلُهَا الْمُحَكَّكُ وَعُذَيْقُهَا الْمُرَجَّبُ مِنَّا أَمِيرٌ وَمِنْكُمْ أَمِيرٌ يَا مَعْشَرَ قُرَيْشٍ فَكَثُرَ اللَّغَطُ وَارْتَفَعَتِ الأَصْوَاتُ حَتَّى فَرِقْتُ مِنَ الاِخْتِلاَفِ فَقُلْتُ: ابْسُطْ يَدَكَ يَا أَبَا بَكْرٍ فَبَسَطَ يَدَهُ، فَبَايَعْتُهُ وَبَايَعَهُ الْمُهَاجِرُونَ ثُمَّ بَايَعَتْهُ الأَنْصَارُ وَنَزَوْنَا عَلَى سَعْدِ بْنِ عُبَادَةَ فَقَالَ قَائِلٌ مِنْهُمْ: قَتَلْتُمْ سَعْدَ بْنَ عُبَادَةَ فَقُلْتُ: قَتَلَ اللهُ سَعْدَ بْنَ عُبَادَةَ، قَالَ عُمَرُ: وَإِنَّا وَاللهِ مَا وَجَدْنَا فِيمَا حَضَرْنَا مِنْ أَمْرٍ أَقْوَى مِنْ مُبَايَعَةِ أَبِي بَكْرٍ خَشِينَا إِنْ فَارَقْنَا الْقَوْمَ وَلَمْ تَكُنْ بَيْعَةٌ أَنْ يُبَايِعُوا رَجُلاً مِنْهُمْ بَعْدَنَا، فَإِمَّا بَايَعْنَاهُمْ عَلَى مَا لاَ نَرْضَى وَإِمَّا نُخَالِفُهُمْ فَيَكُونُ فَسَادٌ فَمَنْ بَايَعَ رَجُلاً عَلَى غَيْرِ مَشُورَةٍ مِنَ الْمُسْلِمِينَ فَلاَ يُتَابَعُ هُوَ وَلاَ الَّذِي بَايَعَهُ تَغِرَّةً أَنْ يُقْتَلاَ.

[راجع: ٢٤٦٢]

(रज़ि.) की तक़रीर का ख़ुलासा ये था कि अंसारी भाईयों! तुमने जो अपनी फ़ज़ीलत और बुज़ुर्गी बयान की है वो सब दुरुस्त है और तुम बेशक इसके सज़ावार हो मगर ख़िलाफ़त क़ुरैश के सिवा और किसी ख़ानदान वालों के लिये नहीं हो सकती क्योंकि क़ुरैश अज़्रूए नसब और अज़्रूए ख़ानदान तमाम अ़रब की क़ौमों में बढ़ चढ़कर हैं अब तुम लोग ऐसा करो कि इन दो आदमियों मे से किसी से बेअ़त कर लो। अबूबक्र ने मेरा और अबू उ़बैदह बिन जर्राह का हाथ थामा वो बीच में बैठे हुए थे, उनकी सारी बातचीत में सिर्फ़ यही एक बात मुझसे मेरे सिवा हुई। वल्लाह! मैं आगे कर दिया जाता और बेगुनाह मेरी गर्दन मार दी जाती तो ये मुझे उससे ज़्यादा पसंद था कि मुझे एक ऐसी क़ौम का अमीर बनाया जाता जिसमें अबूबक्र (रज़ि.) ख़ुद मौजूद हों। मेरा अब तक यही ख़्याल है ये और बात है कि वक़्त पर नफ़्स मुझको बहका दे और मैं कोई दूसरा ख़्याल करूँ जो अब नहीं करना। फिर अंसार में से एक कहने वाला हुबाब बिन मुंज़िर यूँ कहने लगा सुनो! सुनो! मैं एक लकड़ी हूँ कि जिससे ऊँट अपना बदन रगड़कर खुजली की तकलीफ़ दूर करते हैं और मैं वो बाड़ हूँ जो दरख़्तों के आसपास ह़िफ़ाज़त के लिये लगाई जाती है। मैं एक उ़म्दह तदबीर बताता हूँ ऐसा करो दो ख़लीफ़ा रहें (दोनों मिलकर काम करें) एक हमारी क़ौम का और एक क़ुरैश वालों का। मुहाजिरीन क़ौम का अब ख़ूब शोरो गुल होने लगा कोई कुछ कहता कोई कुछ कहता। मैं डर गया कि कहीं मुसलमानों में फूट न पड़ जाए आख़िर मैं कह उठा अबूबक्र (रज़ि.)! अपना हाथ बढ़ाओ, उन्होंने हाथ बढ़ाया मैंने उनसे बेअ़त की और मुहाजिरीन जितने वहाँ मौजूद थे उन्होंने भी बेअ़त कर ली फिर अंसारियों ने भी बेअ़त कर ली (चलो झगड़ा तमाम हुआ जो मंज़ूरे इलाही था वही ज़ाहिर हुआ) उसके बाद हम ह़ज़रत सअ़द बिन उ़बादह की त़रफ़ बढ़े (उन्होंने बेअ़त नहीं की) एक शख़्स अंसार में से कहने लगा भाईयों! बेचारे सअ़द बिन उ़बादह का तुमने ख़ून कर डाला। मैंने कहा अल्लाह इसका ख़ून करेगा। ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने उस ख़ुत्बे में ये भी फ़र्माया उस वक़्त हमको ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) की ख़िलाफ़त से ज़्यादा कोई चीज़ ज़रूरी

मा'लूम नहीं होती क्योंकि हमको डर पैदा हुआ कहीं ऐसा न हो हम लोगों से अलग रहे और अभी उन्होंने किसी से बेअ़त न की हो वो किसी और शख़्स से बेअ़त कर बैठें तब दो सूरतों से ख़ाली नहीं होता या तो हम भी जबरन व क़हरन उसी से बेअ़त कर लेते या लोगों की मुख़ालफ़त करते तो आपस में फ़साद पैदा होता (फूट पड़ जाती) देखो! फिर यही कहता हूँ जो शख़्स किसी शख़्स से बिन सोचे समझे, बिन सलाह व मश्विरे बेअ़त कर ले तो दूसरे लोग बेअ़त करने वाले की पैरवी न करे, न उसकी जिससे बेअ़त की गई है क्योकि वो दोनों अपनी जान गंवाएँगे। (राजेअ़ : 2462)

तश्रीह : इस लम्बी ह़दीष़ में बहुत सी बातें क़ाबिले ग़ौर हैं। ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) के इंतिक़ाल पर दूसरे से बेअ़त का ज़िक्र करने वाला शख़्स कौन था? उसके बारे में बलाज़री के अन्साब से मा'लूम होता है कि वो शख़्स ह़ज़रत ज़ुबैर (रज़ि.) थे। उन्होंने ये कहा था कि ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) के गुज़र जाने पर हम ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) से बेअ़त करेंगे। यही सह़ीह़ है। मौलाना वह़ीदुज़्ज़माँ मरहूम की तह़क़ीक़ यही है। ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने मदीना में आकर जो ख़ुत्बा दिया उसमें आपने अपनी वफ़ात का भी ज़िक्र किया ये उनकी करामत थी उनको मा'लूम हो गया था कि अब मौत नज़दीक आ पहुँची है। इस ख़ुत्बे के बाद ही अभी ज़िलह़िज्ज का महीना ख़त्म भी नहीं हुआ था कि अबू लू लू मजूसी ने आपको शहीद कर डाला। कुछ रिवायतों मे यूँ है कि ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने कहा मैंने एक ख़्वाब देखा है मैं समझता हूँ कि मेरी मौत आ पहुँची है। उन्होंने देखा कि एक मुर्ग़ उनकों चोंचे मार रहा है। मिना में उस कहने वाले के जवाब में आपने तफ़्सील से अपने ख़ुत्बे में इज़्हारे ख़्याल किया और कहा कि देखो! बग़ैर सलाह मश्विरा के कोई शख़्स इमाम न बन बैठे, वरना उनकी जान को ख़तरा होगा। इससे ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) का मत़लब ये था कि ख़िलाफ़त और बेअ़त हमेशा सोच समझकर मुसलमानों के सलाह व मश्विरे से होनी चाहिये और अगर कोई ह़ज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) की नज़ीर देकर उनकी बेअ़त दफ़अ़तन हुई थी बावजूद उसके उससे कोई बुराई पैदा नहीं हुई तो उसकी बेवक़ूफ़ी है क्योंकि ये एक इत्तिफ़ाक़ी बात थी कि ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) अफ़ज़ल तरीन उम्मत और ख़िलाफ़त के अहल थे। इत्तिफ़ाक़ से उन ही से बेअ़त भी हो गई हर वक़्त ऐसा नहीं हो सकता सुब्ह़ानल्लाह! ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) का इर्शाद ह़क़ बजानिब है बग़ैर सलाह व मश्विरा के इमाम बन जाने वालों का अंजाम अक्षर ऐसा ही होता है। उन ह़ालात में ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने अपने बारे में और ह़ज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) के बारे में जिन ख़्यालात का इज़्हार फ़र्माया उनका मत़लब ये था कि मैं मरते दम तक इसी ख़्याल पर क़ायम हूँ कि ह़ज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) पर मैं मुक़द्दम नहीं हो सकता और जिन लोगों में ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) मौजूद हों मैं उनका सरदार नहीं बन सकता। अब तक तो मैं इसी ए'तिक़ाद पर मज़बूत हूँ लेकिन आइन्दा अगर शैत़ान या नफ़्स मुझको बहका दे और कोई दूसरा ख़्याल मेरे दिल में डाल दे तो ये और बात है। आफ़रीं सद आफ़रीं। ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) की नर्मी और इंकिसार और ह़क़ीक़तफ़हमी पर कि उन्होंने हर बात में ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) को अपने से बुलंद व बाला समझा। रज़ियल्लाहु अ़न्हुम अज्मईन। अंसारी ख़त़ीब ने जो कुछ कहा उसका मत़लब अपने तईं उसके उन ख़्यालात का इज़्हार करना था कि मैं बड़ा साइबुर्राय और अ़क़्लमंद और मुर्जए क़ौम हूँ लोग हर झगड़े और क़ज़िये में मेरी त़रफ़ रुजूअ़ होते हैं और मैं ऐसी उ़म्दह राय देता हूँ कि जो किसी को नहीं सूझती गोया तनाज़ोअ़ और झगड़े की खुजली मेरे पास आकर और मुझसे राय लेकर दूर करते हैं और तबाही और बर्बादी के डर मे मेरी पनाह लेते हैं मैं उनकी बाड़ हो जाता हूँ ह़वादिष़ और बलाओं की आँधियों से उनको बचाता हूँ, अपनी इतनी ता'रीफ़ के बाद उसने दो ख़लीफ़ा मुक़र्रर करने की तज्वीज़ पेश की जो सरासर ग़लत़ थी और इस्लाम के लिये

सख़्त नुक़्सान वो उसे ताईदे इलाही समझना चाहिये कि फ़ौरन ही सब ह़ाज़िरीने अंसार और मुहाजिरीन ने ह़ज़रत सि़द्दीक़े अकबर (रज़ि.) पर इत्तिफ़ाक़े राय करके मुसलमानों को मुंतशिर होने से बचा लिया। ह़ज़रत सअ़द बिन ड़बादह (रज़ि.) ने ह़ज़रत सि़द्दीक़े अकबर (रज़ि.) से बेअ़त न की और नाराज़ होकर मुल्के शाम को चले गये वहाँ अचानक उनका इंतिक़ाल हो गया। इंतिख़ाबे ख़लीफ़ा के मसले को तज्हीज़ व तक्फ़ीन (कफ़न-दफ़न) पर भी मुक़द्दम रखा, उसी वक़्त से ड़मूमन ये रिवाज हो गया कि जब कोई ख़लीफ़ा या बादशाह मर जाता है तो पहले उसका जानशीन मुंतख़ब करके बाद में उसकी तज्हीज़ व तक्फ़ीन का काम किया जाता है। ह़दीष़ में ज़िम्नी त़ौर पर जअ़ली ज़ानिया के रजम का भी ज़िक्र है। बाब से यही मुत़ाबक़त ज़ाहिर है।

बाब 18 : इस बयान में कि ग़ैर शादीशुदा मर्द व औरत को कोड़े मारे जाएँ

١٨- باب الْبِكْرَانِ يُجْلَدَانِ وَيُنْفَيَانِ

और दोनों का देश निकाला कर दिया जाए जैसा कि सूरह नूर में अल्लाह तआ़ला ने फ़र्माया, ज़िना करने वाली औरत और ज़िना करने वाला मर्द पस तुम उनमें से हर एक को सौ कोड़े मारो और तुम लोगों को उन दोनों पर अल्लाह के मामले में ज़रा शफ़क़त न आने पाए, अगर तुम अल्लाह तआ़ला और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हो और चाहिये कि दोनों की सज़ा के वक़्त मुसलमानों की एक जमाअ़त ह़ाज़िर रहे। याद रखो ज़िनाकार मर्द निकाह़ भी किसी से नहीं करता सिवाए ज़िनाकार औरत या मुश्रिका औरत के और ज़िनाकर औरत के साथ भी कोई निकाह़ नहीं करता सिवाए ज़ानी या मुश्रिक मर्द के और अहले ईमान पर ये ह़राम कर दिया गया है। (सूरह नूर : 2,3) और सुफ़यान बिन ड़ययना ने आयत वला ताख़ुज़ुकुम बिहिमा राफ़त फ़ी दीनिल्लाह की तफ़्सीर में कहा कि उनको ह़द लगाने में रह़म मत करो।

﴿الزَّانِيَةُ وَالزَّانِي فَاجْلِدُوا كُلَّ وَاحِدٍ مِنْهُمَا مِائَةَ جَلْدَةٍ وَلاَ تَأْخُذْكُمْ بِهِمَا رَأْفَةٌ فِي دِينِ اللهِ إِنْ كُنْتُمْ تُؤْمِنُونَ بِاللهِ وَالْيَوْمِ الآخِرِ وَلْيَشْهَدْ عَذَابَهُمَا طَائِفَةٌ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ. الزَّانِي لاَ يَنْكِحُ إِلاَّ زَانِيَةً أَوْ مُشْرِكَةً وَالزَّانِيَةُ لاَ يَنْكِحُهَا إِلاَّ زَانٍ أَوْ مُشْرِكٌ وَحُرِّمَ ذَلِكَ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ﴾ [النور : ٢-٣].
قَالَ ابْنُ عُيَيْنَةَ : رَأْفَةٌ : إِقَامَةُ الْحُدُودِ.

6831. हमसे मालिक बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन सलमा ने बयान किया, कहा हमको इब्ने शिहाब ने ख़बर दी, उन्हें ड़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह बिन ड़त्बा ने और उनसे ज़ैद बिन ख़ालिद जुहनी ने बयान किया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना, आँह़ज़रत (ﷺ) उन लोगों के बारे में हुक्म दे रहे थे जो ग़ैर शादीशुदा हों और ज़िना किया हो कि सौ कोड़े मारे जाएँ और साल भर के लिये जलावत़न कर दिया जाए। (राजेअ़ : 2314)

٦٨٣١- حَدَّثَنَا مَالِكُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ، أَخْبَرَنَا ابْنُ شِهَابٍ، عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُتْبَةَ، عَنْ زَيْدِ بْنِ خَالِدٍ الْجُهَنِيِّ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَأْمُرُ فِيمَنْ زَنَى وَلَمْ يُحْصَنْ : جَلْدَ مِائَةٍ وَتَغْرِيبَ عَامٍ. [راجع: ٢٣١٤]

6832. इब्ने शिहाब ने बयान किया कि मुझे ड़र्वा बिन ज़ुबैर (रज़ि.) ने ख़बर दी कि ह़ज़रत ड़मर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) ने जला वत़न किया था फिर यही त़रीक़ा क़ायम हो गया।

٦٨٣٢- قَالَ ابْنُ شِهَابٍ: وَأَخْبَرَنِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ أَنَّ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ غَرَّبَ، ثُمَّ لَمْ تَزَلْ تِلْكَ السُّنَّةَ.

तश्रीह : इन अह़ादीष़ से ह़नफ़िया का मज़हब रद्द होता है जो उनके लिये जलावत़नी की सज़ाएँ न मानते और कहते हैं कि क़ुर्आन में सिर्फ़ सौ कोड़े मज़्कूर हैं। हम कहते हैं कि जिनसे तुमको क़ुर्आन मजीद पहुँचा उन्हीं ने ज़ानी को जला वत़न किया और ह़दीष़ भी क़ुर्आन की त़रह़ वाजिबुल अ़मल है।

6833. हमसे यह़्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे अ़क़ील ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे सईद बिन मुसय्यब ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ऐसे शख़्स के बारे में जिसने ज़िना किया था और वो ग़ैर शादीशुदा था ह़द क़ायम करने के साथ एक साल तक शहर बाहर करने का फ़ैसला किया था। (राजेअ : 2315)

٦٨٣٣- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ عُقَيْلٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَضَى فِيمَنْ زَنَى وَلَمْ يُحْصَنْ بِنَفْيِ عَامٍ بِإِقَامَةِ الْحَدِّ عَلَيْهِ. [راجع: ٢٣١٥]

बाब 19 : बदकारों और मुख़न्नष़ों को शहर से बाहर करना

١٩- باب نَفْيِ أَهْلِ الْمَعَاصِي وَالْمُخَنَّثِينَ

6834. हमसे मुस्लिम बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम दस्तवाई ने बयान किया, कहा हमसे यह़्या बिन अबी कष़ीर ने बयान किया, उनसे इक्रिमा ने और उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने उन मर्दों पर ला'नत की है जो मुख़न्नष़ बनते हैं और उन औ़रतों पर ला'नत की है जो मर्द बनें और आपने फ़र्माया कि उन्हें अपने घरों से निकाल दो और आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़लाँ को घर से निकाला था और ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने फ़लाँ को निकाला था।

٦٨٣٤- حَدَّثَنَا مُسْلِمُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، حَدَّثَنَا هِشَامٌ، حَدَّثَنَا يَحْيَى، عَنْ عِكْرِمَةَ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: لَعَنَ النَّبِيُّ ﷺ الْمُخَنَّثِينَ مِنَ الرِّجَالِ وَالْمُتَرَجِّلاَتِ مِنَ النِّسَاءِ وَقَالَ: أَخْرِجُوهُمْ مِنْ بُيُوتِكُمْ وَأَخْرَجَ فُلاَنًا وَأَخْرَجَ عُمَرُ فُلاَنًا.

अंजशा नामी मुख़न्नष़ को आँह़ज़रत (ﷺ) ने घर से निकाला था। नफ़ी के ज़ैल ह़क़ीक़ी मुख़न्नष़ नहीं आते बल्कि बनावटी मुख़न्नष़ आते हैं या वो मुख़न्नष़ जो फ़ाह़िशाना अल्फ़ाज़ या ह़रकात का इर्तिकाब करें, फ़फ़हम वला तकुम्मिनल क़ासिरीन।

बाब 20 : जो शख़्स ह़ाकिमे इस्लाम के पास न हो (कहीं और हो) लेकिन उसको ह़द लगाने के लिये हुक्म दिया जाए

٢٠- باب مَنْ أَمَرَ غَيْرَ الإِمَامِ بِإِقَامَةِ الْحَدِّ غَائِبًا عَنْهُ

6835,36. हमसे आ़सिम बिन अ़ली ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने अबी ज़िब ने बयान किया, उनसे ज़ुहरी ने, उनसे उ़बैदुल्लाह ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) और ज़ैद बिन ख़ालिद (रज़ि.) ने कि एक देहाती नबी करीम (ﷺ) के पास आए। आँह़ज़रत (ﷺ) बैठे हुए थे। उन्होंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! हमारे बीच किताबुल्लाह के मुत़ाबिक़ फ़ैसला कर दीजिए। इस पर दूसरे ने खड़े होकर कहा कि इन्होंने स़ह़ीह़ कहा

٦٨٣٥، ٦٨٣٦- حَدَّثَنَا عَاصِمُ بْنُ عَلِيٍّ، حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي ذِئْبٍ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ عُبَيْدِ اللهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، وَزَيْدِ بْنِ خَالِدٍ أَنَّ رَجُلاً مِنَ الأَعْرَابِ جَاءَ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ وَهُوَ جَالِسٌ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ اقْضِ بَيْنَنَا بِكِتَابِ اللهِ فَقَامَ خَصْمُهُ فَقَالَ

या रसूलल्लाह! इनका किताबुल्लाह के मुत़ाबिक़ फ़ैसला करें, मेरा लड़का इनके यहाँ मज़दूर था, और फिर उसने इनकी बीवी के साथ ज़िना कर लिया। लोगों ने मुझे बताया कि मेरे लड़के को रजम किया जाएगा। चुनाँचे मैंने सौ बकरियों और एक कनीज़ का फ़िदया दिया। फिर मैंने अहले इल्म से पूछा तो उनका ख़्याल है कि मेरे लड़के पर सौ कोड़े और एक साल की जलावत़नी लाज़मी है। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ मे मेरी जान है मैं तुम दोनों का फ़ैसला किताबुल्लाह के मुत़ाबिक़ करूँगा। बकरियाँ और कनीज़ तुम्हें वापस मिलेंगी और तुम्हारे लड़के को सौ कोड़े और एक साल की जलावत़नी की सज़ा मिलेगी और उनैस! सुबह उस औ़रत के पास जाओ (और अगर वो इक़रार करे तो) उसे रजम कर दो। चुनाँचे उन्होंने उसे रजम किया। (राजेअ़ : 2314, 2315)

صَدَقَ اقْضِ لَهُ يَا رَسُولَ اللهِ بِكِتَابِ اللهِ إِنَّ ابْنِي كَانَ عَسِيفًا عَلَى هَذَا فَزَنَى بِامْرَأَتِهِ فَأَخْبَرُونِي أَنَّ عَلَى ابْنِي الرَّجْمَ فَافْتَدَيْتُ بِمِائَةٍ مِنَ الْغَنَمِ وَوَلِيدَةٍ ثُمَّ سَأَلْتُ أَهْلَ الْعِلْمِ فَزَعَمُوا أَنَّ مَا عَلَى ابْنِي جَلْدُ مِائَةٍ وَتَغْرِيبُ عَامٍ فَقَالَ: ((وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لأَقْضِيَنَّ بَيْنَكُمَا بِكِتَابِ اللهِ، أَمَّا الْغَنَمُ وَالْوَلِيدَةُ فَرَدٌّ عَلَيْكَ، وَعَلَى ابْنِكَ جَلْدُ مِائَةٍ وَتَغْرِيبُ عَامٍ وَأَمَّا أَنْتَ يَا أُنَيْسُ فَاغْدُ عَلَى امْرَأَةِ هَذَا فَارْجُمْهَا)) فَغَدَا أُنَيْسٌ فَرَجَمَهَا.[راجع: ٢٣١٤، ٢٣١٥]

वो औ़रत कहीं और जगह थी आपने उसे रजम करने के लिए उनैस (रज़ि.) को भेजा। इसी से बाब का मत़लब निकला। क़स्त़लानी (रह़.) ने कहा कि आपने जो उनैस को फ़रीक़े ष़ानी की बीवी के पास भेजा वो ज़िना की ह़द मारने के लिये नहीं भेजा क्योंकि ज़िना की ह़द लगाने के लिए तजस्सुस करना या ढूँढ़ना भी दुरुस्त नहीं है अगर कोई ख़ुद से आकर भी ज़िना का इक़रार करे उसके लिये भी तफ़्तीश करना मुस्तह़ब है या'नी यूँ कहना कि शायद तूने बोसा दिया होगा या मसास किया होगा बल्कि आपने उनैस को स़िर्फ़ इसलिये भेजा कि उस औ़रत को ख़बर कर दें कि फ़लाँ शख़्स़ ने तुझ पर ज़िना की तोह्मत लगाई है अब वो ह़द्दे क़ज़फ़ का मुत़ालबा करती है या माफ़ करती है। जब उनैस उसके पास पहुँचे तो उस औ़रत ने स़ाफ़ त़ौर पर ज़िना का इक़बाल किया। इस इक़बाल पर उनैस (रज़ि.) ने उसको ह़द लगाई और रजम किया।

बाब 21 : इस बारे में कि अल्लाह तआ़ला का

٢١- باب قَوْلِ اللهِ تَعَالَى

फ़र्मान, और तुममे से जो कोई त़ाक़त न रखता हो कि आज़ाद मुसलमान औ़रतों में से निकाह़ कर सके तो वो तुम्हारी आपस की मुसलमान लौण्डियों में से जो तुम्हारी शरई मिल्कियत में हों निकाह़ करे और अल्लाह तुम्हारे ईमान से ख़ूब वाक़िफ़ है।

﴿وَمَنْ لَمْ يَسْتَطِعْ مِنْكُمْ طَوْلاً أَنْ يَنْكِحَ الْمُحْصَنَاتِ الْمُؤْمِنَاتِ فَمِمَّا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ مِنْ فَتَيَاتِكُمُ الْمُؤْمِنَاتِ وَاللهُ

तुम सब आपस में एक हो सो उन लौण्डियों के मालिकों की इजाज़त से उनसे निकाह कर लिया करो और उनके मेहर उन्हें दे दिया करो दस्तूर के मुवाफ़िक़ इस तरह की वो क़ैदे निकाह में लाई जाएँ न कि मस्ती निकालने वालियाँ हों और न चोरी छुपे आशनाई करने वालियाँ हों फिर जब वो लौण्डी क़ैद में आ जाएँ और फिर अगर वो बेहयाई का काम करें तो उनके लिये इस सज़ा का आधा है जो आज़ाद औरतों के लिये है। ये इजाज़त उसके लिये है जो तुममें से बदकारी का डर रखता हो और अगर तुम सब्र से काम लो तो तुम्हारे हक़ में कहीं बेहतर है और अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला और बड़ा मेहरबान है। (सूरह निसा : 25)

أَعْلَمُ بِإِيمَانِكُمْ بَعْضُكُمْ مِنْ بَعْضٍ فَانْكِحُوهُنَّ بِإِذْنِ أَهْلِهِنَّ وَآتُوهُنَّ أُجُورَهُنَّ بِالْمَعْرُوفِ مُحْصَنَاتٍ غَيْرَ مُسَافِحَاتٍ وَلَا مُتَّخِذَاتِ أَخْدَانٍ فَإِذَا أُحْصِنَّ فَإِنْ أَتَيْنَ بِفَاحِشَةٍ فَعَلَيْهِنَّ نِصْفُ مَا عَلَى الْمُحْصَنَاتِ مِنَ الْعَذَابِ ذَلِكَ لِمَنْ خَشِيَ الْعَنَتَ مِنْكُمْ وَأَنْ تَصْبِرُوا خَيْرٌ لَكُمْ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ﴾ [النساء : ٢٥].

तश्रीह : जुर्म की सूरत मे सौ कोड़ों के बदले पचास कोड़े पड़ेंगे रजम न होंगी। हाफ़िज़ ने कहा उलमा का इसमें इख़्तिलाफ़ है कि लौण्डी का एहसान क्या है? कुछ ने कहा निकाह करना, कुछ ने कहा आज़ाद होना; पहले क़ौल पर अगर निकाह से पहले लौण्डी ज़िना कराये तो उस पर हद वाजिब न होगी। इब्ने अब्बास (रज़ि.) और एक जमाअते ताबेईन का यही क़ौल है और अक्षर उलमा के नज़दीक निकाह से पहले भी अगर लौण्डी ज़िना कराये तो उस पर पचास कोड़े पड़ेंगे और आयत में हिसान की क़ैद लगानी इससे ये ग़र्ज़ है कि लौण्डी गो मुहसिना हो फिर वो रजम नहीं हो सकती क्योंकि रजम में निस्फ़ सज़ा मुम्किन नहीं कुछ नुस्ख़ों में यहाँ इतनी इबारत और है। **ग़ैर मुसाफ़िहातिन ज़वानी व ला मुत्तख़िज़ातिन मुहस्सिलातिन** पहले का मा'नी हराम कराने वालियाँ और दूसरे का मा'नी आशना बनाने वालियाँ।

बाब 22 : जब कोई कनीज़ ज़िना कराये

٢٢- باب إِذَا زَنَتِ الأَمَةُ

6837,38. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमको इमाम मालिक ने ख़बरदी, उन्हें इब्ने शिहाब ने, उन्हें उबैदुल्लाह बिन अब्दुल्लाह ने और उन्हें अबू हुरैरह (रज़ि.) और ज़ैद बिन ख़ालिद (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) से उस कनीज़ के बारे में पूछा गया जो ग़ैर शादीशुदा हो और ज़िना करा लिया तो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अगर वो ज़िना कराए तो उसे कोड़े मारो। अगर फिर ज़िना कराये तो फिर कोड़े मारो। अगर फिर ज़िना कराये तो फिर कोड़े मारो और उसे बेच डालो ख़्वाह एक रस्सी ही क़ीमत में मिले। इब्ने शिहाब ने बयान किया कि मुझे यक़ीन नहीं कि तीसरी मर्तबा (कोड़े लगाने के हुक्म) के बाद ये फ़र्माया या चौथी मर्तबा के बाद। (राजेअ : 2152, 2154)

٦٨٣٧، ٦٨٣٨- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ يُوسُفَ، أَخْبَرَنَا مَالِكٌ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ وَزَيْدِ بْنِ خَالِدٍ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ سُئِلَ عَنِ الأَمَةِ إِذَا زَنَتْ وَلَمْ تُحْصَنْ قَالَ: ((إِذَا زَنَتْ فَاجْلِدُوهَا ثُمَّ إِنْ زَنَتْ فَاجْلِدُوهَا ثُمَّ إِنْ زَنَتْ فَاجْلِدُوهَا ثُمَّ بِيعُوهَا وَلَوْ بِضَفِيرٍ)). قَالَ ابْنُ شِهَابٍ لاَ أَدْرِي بَعْدَ الثَّالِثَةِ أَوِ الرَّابِعَةِ. [راجع: ٢١٥٢، ٢١٥٤]

बाब 23 : लौण्डी को शरई सज़ा देने के बाद फिर मलामत न करे न लौण्डी जलावतन की जाए

٢٣- باب لاَ يُثَرَّبُ عَلَى الأَمَةِ إِذَا زَنَتْ وَلاَ تُنْفَى

6839. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे सईद मक़्बरी ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने, उन्होंने ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) को ये कहते हुए सुना कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि अगर कनीज़ ज़िना कराये और उसका ज़िना खुल जाए तो उसे कोड़े मारने चाहिये लेकिन ला'नत मलामत न करनी चाहिये। फिर अगर वो दोबारा ज़िना करे तो फिर चाहिये कि कोड़े मारे लेकिन मलामत न करे फिर अगर तीसरी मर्तबा ज़िना कराये तो बेच दे ख़्वाह बालों की एक रस्सी ही क़ीमत पर हो। इस रिवायत की मुताबअ़त इस्माईल बिन उमय्या ने सईद से की, उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने और उनसे नबी करीम (ﷺ) ने।

٦٨٣٩- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ سَعِيدٍ الْمَقْبُرِيِّ، عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّهُ سَمِعَهُ يَقُولُ : قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِذَا زَنَتِ الأَمَةُ فَتَبَيَّنَ زِنَاهَا فَلْيَجْلِدْهَا وَلاَ يُثَرِّبْ، ثُمَّ إِنْ زَنَتْ فَلْيَجْلِدْهَا وَلاَ يُثَرِّبْ، ثُمَّ إِنْ زَنَتِ الثَّالِثَةَ فَلْيَبِعْهَا وَلَوْ بِحَبْلٍ مِنْ شَعَرٍ)). تَابَعَهُ إِسْمَاعِيلُ بْنُ أُمَيَّةَ، عَنْ سَعِيدٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ.

बाब 24 : ज़िम्मियों के अह़काम और अगर शादी के बाद उन्होंने ज़िना किया और इमाम के सामने पेश हुए तो उसके अह़काम का बयान

٢٤- باب أَحْكَامِ أَهْلِ الذِّمَّةِ وَإِحْصَانِهِمْ إِذَا زَنَوْا وَرُفِعُوا إِلَى الإِمَامِ

6840. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल वाह़िद बिन ज़ियाद ने बयान किया, कहा हमसे शैबानी ने बयान किया कि मैंने ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा (रज़ि.) से रजम के बारे में पूछा तो उन्होंने बतलाया कि नबी करीम (ﷺ) ने रजम किया था। मैंने पूछा सूरह नूर से पहले या उसके बाद। उन्होंने बतलाया कि मुझे मा'लूम नहीं। इस रिवायत की मुताबअ़त अ़ली बिन मिस्हर, ख़ालिद बिन अ़ब्दुल्लाह मुह़ारिबी और उ़बैदह बिन हुमैद ने शैबानी से की है और कुछ ने (सूरह नूर के बजाय) सूरह माइदह का ज़िक्र किया है लेकिन पहली रिवायत सह़ीह़ है। (राजेअ़ : 8613)

٦٨٤٠- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ، حَدَّثَنَا الشَّيْبَانِيُّ قَالَ: سَأَلْتُ عَبْدَ اللهِ بْنَ أَبِي أَوْفَى عَنِ الرَّجْمِ فَقَالَ: رَجَمَ النَّبِيُّ ﷺ فَقُلْتُ: أَقَبْلَ النُّورِ أَمْ بَعْدَهُ؟ قَالَ: لاَ أَدْرِي. تَابَعَهُ عَلِيُّ بْنُ مُسْهِرٍ وَخَالِدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ وَالْمُحَارِبِيُّ وَعُبَيْدَةُ بْنُ حُمَيْدٍ عَنِ الشَّيْبَانِيِّ. وَقَالَ بَعْضُهُمْ : الْمَائِدَةُ وَالأَوَّلُ أَصَحُّ. [راجع: ٨٦١٣]

तश्रीह़ : बज़ाहिर इस ह़दीष़ की मुताबक़त बाब का तर्जुमा से मुश्किल है मगर ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) ने अपनी आदत के मुताबिक़ इस ह़दीष़ के दूसरे त़रीक़ की त़रफ़ इशारा किया है जिसे इमाम अह़मद और त़बरानी वग़ैरह ने ज़िक्र किया है उसमें यूँ है कि अच्छी त़रह मा'लूम न हो तो यूँ कहे मैं नहीं जानता और उसमें कोई ऐ़ब नहीं है और जो कोई इसे ऐ़ब समझकर साइल की हर बात का जवाब दिया करे वो अह़मक़ है आ़लिम नहीं है। (वह़ीदी)

6841. हमसे इस्माईल बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ़ ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने कि यहूदी रसूलुल्लाह (ﷺ) के

٦٨٤١- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنِي مَالِكٌ، عَنْ نَافِعٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ

عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّهُ قَالَ: إِنَّ الْيَهُودَ جَاؤُوا إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ فَذَكَرُوا لَهُ أَنَّ رَجُلاً مِنْهُمْ وَامْرَأَةً زَنَيَا فَقَالَ لَهُمْ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((مَا تَجِدُونَ فِي التَّوْرَاةِ فِي شَأْنِ الرَّجْمِ؟)) فَقَالُوا: نَفْضَحُهُمْ وَيُجْلَدُونَ قَالَ عَبْدُ اللهِ بْنُ سَلاَمٍ: كَذَبْتُمْ إِنَّ فِيهَا الرَّجْمَ فَأَتَوْا بِالتَّوْرَاةِ فَنَشَرُوهَا فَوَضَعَ أَحَدُهُمْ يَدَهُ عَلَى آيَةِ الرَّجْمِ، فَقَرَأَ مَا قَبْلَهَا وَمَا بَعْدَهَا فَقَالَ لَهُ عَبْدُ اللهِ بْنُ سَلاَمٍ: ارْفَعْ يَدَكَ فَرَفَعَ يَدَهُ فَإِذَا فِيهَا آيَةُ الرَّجْمِ قَالُوا: صَدَقَ يَا مُحَمَّدُ فِيهَا آيَةُ الرَّجْمِ فَأَمَرَ بِهِمَا رَسُولُ اللهِ ﷺ فَرُجِمَا فَرَأَيْتُ الرَّجُلَ يَحْنِي عَلَى الْمَرْأَةِ يَقِيهَا الْحِجَارَةَ. [راجع: ١٣٢٩]

पास आए और कहा कि उनमें से एक मर्द और एक औरत ने ज़िनाकारी की है। आँहज़रत (ﷺ) ने उनसे पूछा कि तौरात में रजम के बारे में क्या हुक्म है? उन्होंने कहा कि हम उन्हें रुस्वा करते हैं और कोड़े लगाते हैं। हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम (रज़ि.) ने उस पर कहा कि तुम झूठे हो उसमें रजम का हुक्म मौजूद है चुनाँचे वो तौरात लाए और खोला। लेकिन उनमें के एक शख़्स ने अपना हाथ आयते रजम पर रख दिया और उससे पहले और बाद का हिस्सा पढ़ दिया। हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम (रज़ि.) ने उससे कहा कि अपना हाथ उठाओ। उसने अपना हाथ उठाया तो उसके नीचे रजम की आयत मौजूद थी। फिर उन्होंने कहा ऐ मुहम्मद! आपने सच फ़र्माया इसमें रजम की आयत मौजूद है। चुनाँचे आँहज़रत (ﷺ) ने हुक्म दिया और दोनों रजम किये गये। मैंने देखा कि मर्द औरत को पत्थरों से बचाने की कोशिश में उस पर झुका रहा था। (राजेअ : 1329)

यहूद का इस तरह तहरीफ़ करना आम मा'मूल बन गया था। सद अफ़सोस कि उम्मते मुस्लिमा में भी ये बुराई पैदा हो गई है, इल्ला माशाअल्लाह।

٢٥- باب إِذَا رَمَى امْرَأَتَهُ أَوِ امْرَأَةَ غَيْرِهِ بِالزِّنَا عِنْدَ الْحَاكِمِ وَالنَّاسِ هَلْ عَلَى الْحَاكِمِ أَنْ يَبْعَثَ إِلَيْهَا فَيَسْأَلَهَا عَمَّا رُمِيَتْ بِهِ؟

बाब 25 : अगर हाकिम के सामने कोई शख़्स अपनी औरत को या किसी दूसरे की औरत को ज़िना की तोहमत लगाए तो क्या हाकिम को ये लाज़िम है कि किसी शख़्स को औरत के पास भेजकर उस तोहमत का हाल मा'लूम कराए

तश्रीह : बाब की हदीष़ में दूसरे की औरत को ज़िना की तोहमत लगाने का ज़िक्र है लेकिन अपनी औरत को तोहमत लगाना उसी से निकला कि उस वक़्त औरत का शौहर भी हाज़िर था उसने उस वाक़िये का इंकार नहीं किया गोया उसने भी अपनी औरत पर तोहमत लगाई।

٦٨٤٢، ٦٨٤٣- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ، أَخْبَرَنَا مَالِكٌ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُتْبَةَ بْنِ مَسْعُودٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ وَزَيْدِ بْنِ خَالِدٍ أَنَّهُمَا أَخْبَرَاهُ أَنَّ رَجُلَيْنِ اخْتَصَمَا إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ فَقَالَ أَحَدُهُمَا: اقْضِ بَيْنَنَا

6842,43. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने शिहाब ने, उन्हें उबैदुल्लाह बिन अब्दुल्लाह बिन उत्बा बिन मसऊद (रज़ि.) ने और उन्हें अबू हुरैरह (रज़ि.) और ज़ैद बिन ख़ालिद (रज़ि.) ने ख़बर दी कि दो आदमी अपना मुक़द्दमा रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास लाए और उनमें से एक ने कहा कि हमारा फ़ैसला किताबुल्लाह के मुताबिक़ कर दीजिए और दूसरे ने जो ज़्यादा समझदार थे कहा

बिकिताबिल्लाहि, व क़ालल्-आख़रु व हुव अफ़्क़हुहुमा: ... (Arabic) بِكِتَابِ اللهِ، وَقَالَ الآخَرُ وَهُوَ أَفْقَهُهُمَا: أَجَلْ يَا رَسُولَ اللهِ فَاقْضِ بَيْنَنَا بِكِتَابِ اللهِ وَائْذَنْ لِي أَنْ أَتَكَلَّمَ قَالَ: ((تَكَلَّمْ)) قَالَ: إِنَّ ابْنِي كَانَ عَسِيفًا عَلَى هَذَا، قَالَ مَالِكٌ وَالْعَسِيفُ: الأَجِيرُ فَزَنَى بِامْرَأَتِهِ فَأَخْبَرُونِي أَنَّ عَلَى ابْنِي الرَّجْمَ، فَافْتَدَيْتُ مِنْهُ بِمِائَةِ شَاةٍ وَبِجَارِيَةٍ لِي ثُمَّ إِنِّي سَأَلْتُ أَهْلَ الْعِلْمِ، فَأَخْبَرُونِي أَنَّ مَا عَلَى ابْنِي جَلْدُ مِائَةٍ وَتَغْرِيبُ عَامٍ، وَإِنَّمَا الرَّجْمُ عَلَى امْرَأَتِهِ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((أَمَا وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لأَقْضِيَنَّ بَيْنَكُمَا بِكِتَابِ اللهِ، أَمَّا غَنَمُكَ وَجَارِيَتُكَ فَرَدٌّ عَلَيْكَ)) وَجَلَدَ ابْنَهُ مِائَةً وَغَرَّبَهُ عَامًا وَأَمَرَ أُنَيْسًا الأَسْلَمِيَّ أَنْ يَأْتِيَ امْرَأَةَ الآخَرِ فَإِنِ اعْتَرَفَتْ فَارْجُمْهَا فَاعْتَرَفَتْ فَرَجَمَهَا. [راجع: ٢٣١٤، ٢٣١٥]

कि हाँ! या रसूलल्लाह! हमारा फ़ैसला किताबुल्लाह के मुताबिक़ कर दीजिए और मुझे अर्ज़ करने की इजाज़त दीजिए। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि कहो। उन्होंने कहा कि मेरा बेटा इन साहब के यहाँ मज़दूर था। मालिक ने बयान किया कि असीफ़ मज़दूर को कहते हैं और उसने उनकी बीवी के साथ ज़िना कर लिया। लोगों ने मुझसे कहा कि मेरे बेटे की सज़ा रजम है। चुनाँचे मैंने उसके फ़िदये में सौ बकरियाँ और एक लौण्डी दे दी फिर जब मैंने इल्म वालों से पूछा ता उन्होंने बताया कि मेरे लड़के की सज़ा सौ कोड़े और एक साल के लिये मुल्क बदर करना है। रजम तो सिर्फ़ उस औरत को किया जाएगा इसलिये कि वो शादीशुदा है। रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है तुम्हारा फ़ैसला किताबुल्लाह के मुताबिक़ करूँगा। तुम्हारी बकरियाँ और तुम्हारी लौण्डी तुम्हें वापस हैं फिर उनके बेटे को सौ कोड़े लगवाए और एक साल के लिये शहर बदर किया और उनैस असलमी (रज़ि .) को हुक्म दिया उस मज़्कूरा औरत के पास जाएँ अगर वो इक़रार कर ले तो उसे रजम कर दें चुनाँचे उसने इक़रार किया और वो रजम कर दी गई। (राजेअ : 2314, 2315)

आँहज़रत ने उनैस को भेजकर उस औरत का हाल मा'लूम कराया। यही बाब से मुताबक़त है।

٢٦- باب مَنْ أَدَّبَ أَهْلَهُ أَوْ غَيْرَهُ دُونَ إِذْنِ السُّلْطَانِ

बाब 26 : हाकिम की इजाज़त के बग़ैर अगर कोई शख़्स अपने घरवालों या किसी और को तम्बीह करे

وَقَالَ أَبُو سَعِيدٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: إِذَا صَلَّى فَأَرَادَ أَحَدٌ أَنْ يَمُرَّ بَيْنَ يَدَيْهِ فَلْيَدْفَعْهُ فَإِنْ أَبَى فَلْيُقَاتِلْهُ وَفَعَلَهُ أَبُو سَعِيدٍ.

और अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से बयान किया कि अगर कोई नमाज़ पढ़ रहा हो और दूसरा उसके सामने से गुज़रे तो उसे रोकना चाहिये और अगर वो न माने तो उससे लड़े वो शैतान है और अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ऐसे एक शख़्स से लड़ चुके हैं।

जो नमाज़ मे उनके आगे से गुज़र रहा था। अबू सईद (रज़ि.) ने उसको एक मार लगाई फिर मरवान के पास मुक़द्दमा गया। इससे इमाम बुख़ारी (रह.) ने ये निकाला कि जब ग़ैर शख़्स को बिना इमाम की इजाज़त के मारना और धकेल देना दुरुस्त हुआ तो आदमी अपने गुलाम या लौण्डी को बतरीक़े औला ज़िना की हृद लगा सकता है।

٦٨٤٤- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، حَدَّثَنِي مَالِكٌ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ الْقَاسِمِ، عَنْ

6844. हमसे इस्माईल ने बयान किया, उन्होंने कहा मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे अब्दुर्रहमान बिन

أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: جَاءَ أَبُو بَكْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ وَرَسُولُ اللهِ ﷺ وَاضِعٌ رَأْسَهُ عَلَى فَخِذِي فَقَالَ: حَبَسْتِ رَسُولَ اللهِ ﷺ وَالنَّاسَ وَلَيْسُوا عَلَى مَاءٍ فَعَاتَبَنِي وَجَعَلَ يَطْعَنُ بِيَدِهِ فِي خَاصِرَتِي وَلاَ يَمْنَعُنِي مِنَ التَّحَرُّكِ إِلاَّ مَكَانُ رَسُولِ اللهِ ﷺ فَأَنْزَلَ اللهُ آيَةَ التَّيَمُّمِ.[راجع: ٣٣٤]

क़ासिम ने बयान किया, उनसे उनके वालिद (क़ासिम बिन मुहम्मद) ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि अबूबक्र (रज़ि.) ने कहा तुम्हारी वजह से आँह़ज़रत (ﷺ) और सब लोगों को रुकना पड़ा जबकि यहाँ पानी भी नहीं है। चुनाँचे वो मुझ पर सख़्त नाराज़ हुए और अपने हाथ से मेरी कोख में मुक्का मारने लगे मगर मैंने अपने जिस्म में किसी क़िस्म की ह़रकत इसलिये नहीं होने दी कि आँह़ज़रत (ﷺ) आराम फ़र्मा रहे थे फिर अल्लाह तआ़ला ने तयम्मुम की आयत नाजिल की। (राजेअ़ : 334)

इससे घरवालों को किसी ग़लती पर तम्बीह करना ष़ाबित हुआ।

٦٨٤٥- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سُلَيْمَانَ، حَدَّثَنِي ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي عَمْرٌو أَنَّ عَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنَ الْقَاسِمِ حَدَّثَهُ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: أَقْبَلَ أَبُو بَكْرٍ فَلَكَزَنِي لَكْزَةً شَدِيدَةً، وَقَالَ: حَبَسْتِ النَّاسَ فِي قِلاَدَةٍ فَبِي الْمَوْتُ لِمَكَانِ رَسُولِ اللهِ ﷺ وَقَدْ أَوْجَعَنِي نَحْوَهُ. لَكَزَ وَوَكَزَ: وَاحِدٌ. [راجع: ٣٣٤]

6845. हमसे यह़्या बिन सुलैमान ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने वहब ने बयान किया, उन्हें अ़म्र ने ख़बर दी, उनसे अ़ब्दुर् रह़मान बिन क़ासिम ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने और उनसे ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि अबूबक्र (रज़ि.) आए और ज़ोर से मेरे एक सख़्त घूँसा लगाया और कहा तूने एक हार के लिये सब लोगों को रोक दिया। मैं उससे मरने के क़रीब हो गई इस क़दर मुझको दर्द हुआ लेकिन क्या कर सकती थी क्योंकि आँह़ज़रत (ﷺ) का सरे मुबारक मेरी रान पर था। लकज़ और वकज़ का एक ही मत़लब हैं। (राजेअ़ : 334)

बाब और ह़दीष़ में मुत़ाबक़त यूँ है कि इस क़दर मार से भी ता'ज़ीर (सज़ा) जाइज़ है।

बाब 27 : उस मर्द के बारे में जिसने अपनी बीवी के साथ किसी ग़ैर मर्द को देखा और उसे क़त्ल कर दिया। उसके बारे में क्या हुक्म है?

٢٧- باب مَنْ رَأَى مَعَ امْرَأَتِهِ رَجُلاً فَقَتَلَهُ

तश्रीह : ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) ने इसको गोलमोल रखा है कोई हुक्म बयान नहीं फ़र्माया। इस मसले में इख़्तिलाफ़ है। जुम्हूर उ़लमा ने कहा कि उस पर क़िस़ास़ लाज़िम होगा और इमाम अह़मद और इस्ह़ाक़ ने कहा कि अगर गवाह क़ायम करे कि उसकी बीवी फ़ेले शनीअ़ा करा रही थी तब तो उस पर से क़िस़ास़ साक़ित होगा और शाफ़िई ने कहा कि अल्लाह के नज़दीक वो क़त्ल करने से गुनहगार न होगा अगर ज़िना करने वाला मुह़स़िन हो लेकिन ज़ाहिरे शरअ़ में उस पर क़िस़ास़ होगा। मैं (वह़ीदुज़्ज़माँ) कहता हूँ कि इस ज़माने में ह़ज़रत इमाम अह़मद और इस्ह़ाक़ का क़ौल मुनासिब है कि अगर वो गवाहों से ये ष़ाबित कर दे कि ये मर्द उसकी औ़रत से बदकारी कर रहा था या ऐसी ह़ालत में मारे कि दोनों उस फ़ेअ़ल में मस़रूफ़ हों तब तो क़िस़ास़ साक़ित होना चाहिये और इश्तिआ़ले त़बअ़ में क़ातिल से क़िस़ास़ न लिया जाना क़ानून है। इसका भी मंशा यही है लेकिन ह़नफ़िया और जुम्हूरे उ़लमा क़िस़ास़ वाजिब जानते हैं। (वह़ीदी)

6846. हमसे मूसा ने बयान किया, उनसे अबू अवाना ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल मलिक ने बयान किया, उनसे मुग़ीरह के कातिब वर्राद ने, उनसे मुग़ीरह (रज़ि.) ने बयान किया कि सअद बिन उबादह (रज़ि.) ने कहा कि अगर मैं अपनी बीवी के साथ किसी ग़ैर मर्द को देख लूँ तो सीधी तलवार की धार से उसे मार डालूँ। ये बात नबी करीम (ﷺ) तक पहुँची तो आपने फ़र्माया क्या तुम्हें सअद की ग़ैरत पर हैरत है। मैं उनसे भी बढ़कर ग़ैरतमंद हूँ और अल्लाह मुझसे भी ज़्यादा ग़ैरतमंद है। (दीगर मक़ाम : 7416)

٦٨٤٦- حَدَّثَنَا مُوسَى، حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْمَلِكِ، عَنْ وَرَّادٍ، كَاتِبِ الْمُغِيرَةِ عَنِ الْمُغِيرَةِ قَالَ: قَالَ سَعْدُ بْنُ عُبَادَةَ لَوْ رَأَيْتُ رَجُلاً مَعَ امْرَأَتِي لَضَرَبْتُهُ بِالسَّيْفِ غَيْرَ مُصَفَّحٍ، فَبَلَغَ ذَلِكَ النَّبِيَّ ﷺ فَقَالَ: ((أَتَعْجَبُونَ مِنْ غَيْرَةِ سَعْدٍ، لأَنَا أَغْيَرُ مِنْهُ وَا للهُ أَغْيَرُ مِنِّي)).

[طرفه في : ٧٤١٦].

तशरीह : बज़ाहिर इमाम बुख़ारी (रह़.) का रुझान ये मा'लूम होता है कि उस ग़ैरत में आकर अगर वो उस ज़ानी को क़त्ल कर दे तो अल्लाह के नज़दीक माख़ूज़ न होगा। **वल्लाहु आलम बिस्सवाब।**

सनद में ह़ज़रत सअद बिन उबादह (रज़ि.) का ज़िक्र आया है, उनकी कुन्नियत अबू षाबित है, अंसारी हैं, साएदी खज़रजी। बारह नक़ीबों में से जो बेअते उक़्बा ऊला में ख़िदमते नबवी में मदीना से इस्लाम क़ुबूल करने के लिये ह़ाज़िर हुए थे। अंसार में उनको दर्जा-ए-सआदत ह़ासिल था। अहदे फ़ारूक़ी पर ढाई साल गुज़रने पर शाम के शहर हौज़ान में जिन्नात के हाथ से शहीद हुए।

बाब 28 : इशारे किनाए के तौर पर कोई बात कहना

٢٨- باب مَا جَاءَ فِي التَّعْرِيضِ

इसको तअरीज़ कहते हैं।

6847. हमसे इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे शिहाब ने, उनसे सईद बिन मुसय्यब ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास एक देहाती आया और कहा कि या रसूलल्लाह! मेरी बीवी ने काला लड़का जना है। आँह़ज़रत (ﷺ) ने पूछा, तुम्हारे पास ऊँट हैं? उन्होंने कहा कि हाँ। आपने पूछा उनके रंग कैसे हैं ? उन्होंने कहा कि सुर्ख़। आँह़ज़रत (ﷺ) पूछा उनमें कोई ख़ाकी रंग का भी है? उन्होंने कहा हाँ। आँह़ज़रत (ﷺ) ने पूछा फिर ये कहाँ से आ गया? उन्होंने कहा मेरा ख़याल है कि किसी रग ने ये रंग खींच लिया जिसकी वजह से ऐसा ऊँट पैदा हुआ। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया ऐसा भी मुम्किन है कि तेरे बेटे का रंग भी किसी रग ने खींच लिया हो। (राजेअ : 5307)

٦٨٤٧- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، حَدَّثَنِي مَالِكٌ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ ا للهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ ا للهِ ﷺ جَاءَهُ أَعْرَابِيٌّ فَقَالَ: يَا رَسُولَ ا للهِ إِنَّ امْرَأَتِي وَلَدَتْ غُلاَمًا أَسْوَدَ فَقَالَ: ((هَلْ لَكَ مِنْ إِبِلٍ؟)) قَالَ: نَعَمْ. قَالَ: ((مَا أَلْوَانُهَا؟)) قَالَ: حُمْرٌ قَالَ: ((فِيهَا أَوْرَقُ؟)) قَالَ: نَعَمْ قَالَ: ((فَأَنَّى كَانَ ذَلِكَ؟)) قَالَ: أُرَاهُ عِرْقٌ نَزَعَهُ قَالَ: ((فَلَعَلَّ ابْنَكَ هَذَا نَزَعَهُ عِرْقٌ)).

[راجع: ٥٣٠٧]

तशरीह : ह़कीमों ने लिखा है कि रंग के इख़्तिलाफ़ से ये नहीं कह सकते कि वो बच्चा उस मर्द का नहीं है। इसलिये कि कुछ औक़ात माँ-बाप दोनों गोरे होते हैं मगर लड़का साँवला पैदा होता है और इसकी वजह ये होती है कि माँ ह़मल की

हालत में किसी साँवले मर्द को या काली चीज़ को देखती रहती है। उसका रंग बच्चे का रंग पर अष़र करता है अल्बत्ता बदन के हिस्सों में मुनासबत माँ बाप से ज़रूर होती है मगर वो भी ऐसी मख़्लूत कि जिसको क़याफ़ा का इल्म न हो वो नहीं समझ सकता। इस हदीष़ से ये निकला कि तअरीज़ के तौर पर क़ज़फ़ करने में हद नहीं पड़ती। इमाम शाफ़िई और इमाम बुख़ारी (रह.) का यही क़ौल है वरना आँहज़रत (ﷺ) उसको हद लगाते। मर्द ने अपनी औरत के बारे में जो कहा यही तअरीज़ की मिष़ाल है। उसने स़ाफ़ यूँ नहीं कहा कि लड़का हराम का है मगर मतलब यही है कि वो लड़का मेरे नुत्फ़े से नहीं है क्योंकि मैं गोरा हूँ मेरा लड़का होता तो मेरी तरह गोरा ही होता। आँहज़रत (ﷺ) ने उसके जवाब मे यही हिक्मत की बात बताई और उस मर्द की तशफ़्फ़ी हो गई।

बाब 29 : तम्बीह और तअ़ज़ीर या'नी हद से कम सज़ा कितनी होनी चाहिये

٢٩- باب كَمِ التَّعْزِيرُ وَالأَدَبُ؟

6848. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे यज़ीद बिन अबी हबीब ने बयान किया, उनसे बुकैर बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, उनसे सुलैमान बिन यसार ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुर्रहमान बिन जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, हुदूदुल्लाह में किसी मुक़र्रर हद के सिवा किसी और सज़ा में दस कोड़े से ज़्यादा बतौरे तअ़ज़ीर व सज़ा न मारे जाएँ। (दीगर मक़ामात : 6849, 6850)

٦٨٤٨- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، حَدَّثَنِي يَزِيدُ بْنُ أَبِي حَبِيبٍ، عَنْ بُكَيْرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ، عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ يَسَارٍ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ، عَنْ أَبِي بُرْدَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَقُولُ: ((لاَ يُجْلَدُ فَوْقَ عَشْرِ جَلَدَاتٍ إِلاَّ فِي حَدٍّ مِنْ حُدُودِ اللهِ)).[طرفاه في: ٦٨٤٩، ٦٨٥٠].

6849. हमसे अ़म्र बिन अ़ली ने बयान किया, उन्हों ने कहा हमसे फ़ुज़ैल बिन सुलैमान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे मुस्लिम बिन अबी मरयम ने बयान किया, कहा मुझसे अ़ब्दुर्रहमान बिन जाबिर ने उन स़हाबी से बयान किया जिन्होंने नबी करीम (ﷺ) से सुना था कि आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया अल्लाह तआ़ला की हुदूद में से किसी हद के सिवा मुज्रिम को दस कोड़े से ज़्यादा की सज़ा न दी जाए। (राजेअ़ : 6848)

٦٨٤٩- حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عَلِيٍّ، حَدَّثَنَا فُضَيْلُ بْنُ سُلَيْمَانَ، حَدَّثَنَا مُسْلِمُ بْنُ أَبِي مَرْيَمَ، حَدَّثَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ جَابِرٍ عَمَّنْ سَمِعَ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: ((لاَ عُقُوبَةَ فَوْقَ عَشْرِ ضَرَبَاتٍ، إِلاَّ فِي حَدٍّ مِنْ حُدُودِ اللهِ)). [راجع: ٦٨٤٨]

हद्दी सज़ाओं के अ़लावा ये इख़्तियारी सज़ा है।

6850. हमसे यह्या बिन सुलैमान ने बयान किया, उन्होंने कहा मुझसे इब्ने वहब ने बयान किया, उन्होंने कहा मुझको अ़म्र ने ख़बर दी, उनसे बुकैर ने बयान किया कि मैं सुलैमान बिन यसार के पास बैठा हुआ था कि अ़ब्दुर्रहमान बिन जाबिर आए और सुलैमान बिन यसार से बयान किया फिर सुलैमान बिन यसार हमारी तरफ़ मुतवज्जह हुए और उन्होंने कहा कि मुझसे अ़ब्दुर्रहमान बिन जाबिर ने बयान किया है कि उनसे

٦٨٥٠- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سُلَيْمَانَ، حَدَّثَنِي ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي عَمْرٌو أَنَّ بُكَيْرًا حَدَّثَهُ قَالَ: بَيْنَمَا أَنَا جَالِسٌ عِنْدَ سُلَيْمَانَ بْنِ يَسَارٍ، إِذْ جَاءَ عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ جَابِرٍ، فَحَدَّثَ سُلَيْمَانَ بْنَ يَسَارٍ، ثُمَّ

أَقْبَلَ علينا سُلَيْمَانُ بْنُ يَسَارٍ فَقَالَ: حَدَّثَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ جَابِرٍ أَنَّ أَبَاهُ حَدَّثَهُ أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا بُرْدَةَ الأَنْصَارِيَّ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((لاَ تَجْلِدُوا فَوْقَ عَشْرَةِ أَسْوَاطٍ إِلاَّ فِي حَدٍّ مِنْ حُدُودِ اللهِ)).

[راجع: ٦٨٤٨]

उनके वालिद ने बयान किया और उन्होंने अबू बुर्दा अंसारी (रज़ि.) से सुना। उन्होंने बयान किया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना, आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि हुदूदुल्लाह में से किसी हद के सिवा किसी सज़ा के लिये दस कोड़े से ज़्यादा की सज़ा न दो। (राजेअ : 6848)

तश्रीह : हमारे इमाम अहमद बिन हंबल और तमाम अहले हदीष़ के नज़दीक तअ़ज़ीर में दस कोड़े से ज़्यादा नहीं मारना चाहिये और हनफ़िया ने इसमें इख़्तिलाफ़ किया है। उन्होंने कहा कि कम से कम जो हद है या'नी चालीस कोड़े गुलाम के लिये उससे एक कम तक या'नी 39 कोड़े तक तअ़ज़ीर हो सकती है। हमारी दलील वो अहादीष़ हैं जो हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने यहाँ ज़िक्र की हैं और हनफ़िया को भी इस मसले में अपने इमाम का क़ौल तर्क करना चाहिये और सहीह हदीष़ पर अमल करना चाहिये उनके इमाम ने ऐसी ही वसिय्यत की है। हज़रत अबू बुर्दा अंसारी (रज़ि.) उक़्बा ष़ानिया की बेअ़त में सत्तर अंसारियों के साथ शामिल थे। जंगे बद्र और बाद की सब जंगों में शिर्कत की, हज़रत बराअ बिन आ़ज़िब (रज़ि.) के मामू बअ़हदे हज़रत मुआ़विया बग़ैर औलाद के फ़ौत हो गये। नाम हानी बिन नय्यार है रज़ियल्लाहु अन्हु व अर्ज़ाहू।

٦٨٥١- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ عُقَيْلٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، حَدَّثَنَا أَبُو سَلَمَةَ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: نَهَى رَسُولُ اللهِ ﷺ عَنِ الْوِصَالِ فَقَالَ لَهُ رِجَالٌ مِنَ الْمُسْلِمِينَ: فَإِنَّكَ يَا رَسُولَ اللهِ تُوَاصِلُ، فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((أَيُّكُمْ مِثْلِي إِنِّي أَبِيتُ يُطْعِمُنِي رَبِّي وَيَسْقِينِ)) فَلَمَّا أَبَوْا أَنْ يَنْتَهُوا عَنِ الْوِصَالِ وَاصَلَ بِهِمْ يَوْمًا، ثُمَّ يَوْمًا، ثُمَّ رَأَوُا الْهِلاَلَ فَقَالَ: ((لَوْ تَأَخَّرَ لَزِدْتُكُمْ)) كَالْمُنَكِّلِ بِهِمْ حِينَ أَبَوْا. تَابَعَهُ شُعَيْبٌ، وَيَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ وَ يُونُسُ عَنِ الزُّهْرِيِّ. وَقَالَ عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ خَالِدٍ: عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ سَعِيدٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ. [راجع: ١٩٦٥]

6851. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे अ़क़ील ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे अबू सलमा ने बयान किया और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने विसाल (मुसलसल इफ़्तार के बग़ैर कई दिन के रोज़े रखने) से मना फ़र्माया तो कुछ सहाबा ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह! आप ख़ुद तो विसाल करते हैं। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुममें से कौन मुझ जैसा है? मेरा तो हाल ये है कि मुझे मेरा रब खिलाता है और पिलाता है लेकिन विसाल करने से सहाबा नहीं रुके तो आँहज़रत (ﷺ) ने उनके साथ एक दिन के बाद दूसरे दिन का विसाल किया फिर उसके बाद लोगों ने चाँद देख लिया। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अगर (ईद का) चाँद न दिखाई देता तो मैं और विसाल करता। ये आपने तम्बीहन फ़र्माया था क्योंकि विसाल करने पर मुस़िर (अड़े हुए थे) थे। इस रिवायत की मुताबअ़त शुऐ़ब, यह्या बिन सईद और यूनुस ने ज़ुह्री से की है और अ़ब्दुर्रहमान बिन ख़ालिद फ़ह्मी ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे सईद बिन मुसय्यब ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से बयान किया।

(राजेअ : 1965)

तश्रीह : यहीं से बाब का तर्जुमा निकलता है कि आपने उनको सज़ा देने के त़ौर पर एक दिन भूखा रखा फिर दूसरे दिन भूखा रखा। इत्तिफ़ाक़ से चाँद हो गया वरना आप और रोज़े रखते जाते कि देखें कहाँ तक ये लोग स़ब्र करते हैं। इससे स़ह़ाबा पर हुक्म उ़दूली का इल्ज़ाम ष़ाबित होता है। इसका जवाब ये है कि आपका हुक्म फ़र्माना बत़ौरे हुक्म के न था वरना स़ह़ाबा उसके ख़िलाफ़ कभी न करते बल्कि उन पर शफ़क़त और मेहरबानी के त़ौर पर था। जब उन्होंने ये आसानी पसंद न की तो आपने फ़र्माया, अच्छा यूँ ही सही अब देखें कितने दिन तक तुम विस़ाल कर सकते हो। इस ह़दीष़ से ये निकला कि इमाम या ह़ाकिम क़ौल या फ़ेल से या जिस त़रह चाहे मुज्रिम को तअ़ज़ीर दे सकता है। इस त़रह़ माली नुक़्स़ान देकर या'नी जुर्माना वग़ैरह करके। हमारे इमाम इब्ने क़य्यिम ने अपनी किताबुल क़ज़ा में इसकी बहुत सी दलीलें बयान की हैं कि तअ़ज़ीर बिल माल हमारी शरीअ़त मे दुरुस्त है मगर कुछ लोगों ने इसका इंकार किया है जो उनकी ग़लती है। ह़ज़रत सईद बिन मुसय्यब क़ुरैशी मख़्ज़ूमी मदनी हैं। ख़िलाफ़ते फ़ारूक़ी में पैदा हुए फ़िक़्ह व ह़दीष़ के इमाम, ज़ुहद और इ़बादत में यक्ता-ए-रोज़गार हैं। मक्हूल ने कहा कि मैं बहुत से शहरों में घूमा मगर सईद से बड़ा आ़लिम मैंने नहीं पाया उ़म्र भर में चालीस बार ह़ज्ज किया। सन 93 हिजरी में फ़ौत हुए, रह़िमहुल्लाह अ़लैहि।

6852. मुझसे अ़य्याश बिन वलीद ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल आ़ला ने बयान किया, कहा हमसे मअ़मर ने बयान किया, उनसे ज़ुह्री ने, उनसे ह़ज़रत सालिम ने, उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के ज़माने में इस पर मार पड़ती कि जब अनाज के ढेरियों ही ख़रीदें बिन नापे और तौले और उसको उसी जगह दूसरे के हाथ बेच डालें, हाँ वो अनाज उठाकर अपने ठिकाने ले जाएँ फिर बेचें तो कुछ सज़ा न होती। (राजेअ़ : 2123)

٦٨٥٢- حَدَّثَنِي عَيَّاشُ بْنُ الْوَلِيدِ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الأَعْلَى، حَدَّثَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ سَالِمٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ أَنَّهُمْ كَانُوا يُضْرَبُونَ عَلَى عَهْدِ رَسُولِ اللهِ ﷺ إِذَا اشْتَرَوْا طَعَامًا جِزَافًا أَنْ يَبِيعُوهُ فِي مَكَانِهِمْ حَتَّى يُؤْوُوهُ إِلَى رِحَالِهِمْ. [راجع: ٢١٢٣]

6853. हमसे अ़ब्दान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, उन्होंने कहा हमको यूनुस ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुह्री ने, उन्हें उ़र्वा ने ख़बर दी और उनसे ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अपने ज़ाती मामले में कभी किसी से बदला नहीं लिया हाँ! जब अल्लाह की क़ायम की हुई ह़द को तोड़ा जाता तो आप फिर बदला लेते थे। (राजेअ़ : 3560)

٦٨٥٣- حَدَّثَنَا عَبْدَانُ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ، أَخْبَرَنَا يُونُسُ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ، عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: مَا انْتَقَمَ رَسُولُ اللهِ ﷺ لِنَفْسِهِ فِي شَيْءٍ يُؤْتَى إِلَيْهِ حَتَّى يُنْتَهَكَ مِنْ حُرُمَاتِ اللهِ فَيَنْتَقِمَ لِلَّهِ. [راجع: ٣٥٦٠]

ये उ़र्वा बिन ज़ुबैर बिन अ़वाम हैं क़ुरैशी असदी सन 22 हिजरी में पैदा हुए। ये मदीना के सात फ़ुक़हा में शामिल हैं इब्ने शिहाब ने कहा कि उ़र्वा इ़ल्म के ऐसे दरिया हैं जो कम ही नहीं होता।

बाब 30 : अगर किसी शख़्स़ की बेह़याई और बेशर्मी और आलूदगी पर गवाह न हों फिर क़राइन से ये अम्र खुल जाए

٣٠- باب مَنْ أَظْهَرَ الْفَاحِشَةَ وَاللَّطْخَ وَالتُّهْمَةَ بِغَيْرِ بَيِّنَةٍ

तश्रीह : या'नी वो बात बहुत मशहूर हो जाए फिर क़ायदे का ष़ुबूत भी हो। मत़लब इमाम बुख़ारी (रह़.) का ये है कि उसी ह़ालत में उसको सज़ा देना दुरुस्त नहीं है क्योंकि ये मसला क़ानून और शरअ़ दोनों में मुसल्लम है कि शुब्हा का

फ़ायदा मुज्रिम को मिलता है और जब तक मुज्रिम का बाज़ाब्ता षुबूत न हो सज़ा नहीं दी जा सकती।

6854. हमसे अ़ली ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ष़ौरी ने बयान किया, उनसे ज़ुह्री ने बयान किया और उनसे सहल बिन सअ़्द (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने दो लिआ़न करने वाले मियाँ बीवी को देखा था। उस वक़्त मेरी उ़म्र पन्द्रह साल थी आँह़ज़रत (ﷺ) ने दोनों के बीच जुदाई करा दी थी। शौहर ने कहा था कि अगर अब भी मैं (अपनी बीवी को) अपने साथ रखूँ तो इसका मत़लब ये है कि मैं झूठा हूँ। सुफ़यान ने बयान किया कि मैंने ज़ुह्री से ये रिवायत मह़फ़ूज़ रखी है कि, अगर उस औ़रत के ऐसो ऐसा बच्चा पैदा हुआ तो शौहर सच्चा है और अगर उसके ऐसा बच्चा पैदा हुआ जैसे छिपकली होती है तो शौहर झूठा हैं, और मैंने ज़ुह्री से सुना, उन्होंने बयान किया कि उस औ़रत ने उस आदमी के हमशक्ल बच्चा जना जो मेरी त़रह़ का था। (राजेअ़ : 423)

٦٨٥٤- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، قَالَ الزُّهْرِيُّ : عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ قَالَ: شَهِدْتُ الْمُتَلاَعِنَيْنِ وَأَنَا ابْنُ خَمْسَ عَشْرَةَ، فَرَّقَ بَيْنَهُمَا فَقَالَ زَوْجُهَا: كَذَبْتُ عَلَيْهَا إِنْ أَمْسَكْتُهَا. قَالَ: فَحَفِظْتُ ذَاكَ مِنَ الزُّهْرِيِّ، إِنْ جَاءَتْ بِهِ كَذَا وَكَذَا فَهُوَ، وَإِنْ جَاءَتْ بِهِ كَذَا وَكَذَا كَأَنَّهُ وَحَرَةٌ فَهُوَ، وَسَمِعْتُ الزُّهْرِيَّ يَقُولُ: جَاءَتْ بِهِ لِلَّذِي يُكْرَهُ. [راجع: ٤٢٣]

या'नी उस मर्द की त़रह़ जिससे तोह्मत लगाई थी बावजूद इसके आँह़ज़रत (ﷺ) ने उस औ़रत को रजम नहीं किया तो मा'लूम हुआ कि क़राइन पर कोई हुक्म नहीं दिया जा सकता जब तक बाज़ाब्ता षुबूत न हो।

6855. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, कहा हमसे अबुज़्ज़िनाद ने बयान किया, उनसे क़ासिम बिन मुहम्मद ने बयान किया, कि ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने दो लिआ़न करने वालों का ज़िक्र किया तो ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन शद्दाद (रज़ि.) ने कहा कि ये वही थी जिसके बारे में रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया था कि अगर मैं किसी औ़रत को बिला गवाही रजम कर सकता (तो इसे ज़रूर करता) इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा कि नहीं ये वो औ़रत नहीं थी जो (फ़िस्क़ व फ़िजूर) ज़ाहिर किया करती थी। (राजेअ़ : 5310)

٦٨٥٥- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، حَدَّثَنَا أَبُو الزِّنَادِ، عَنِ الْقَاسِمِ بْنِ مُحَمَّدٍقَالَ: ذَكَرَ ابْنُ عَبَّاسٍ الْمُتَلاَعِنَيْنِ فَقَالَ عَبْدُ اللهِ بْنُ شَدَّادٍ: هِيَ الَّتِي قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((لَوْ كُنْتُ رَاجِمًا امْرَأَةً عَنْ غَيْرِ بَيِّنَةٍ)) قَالَ: لاَ تِلْكَ امْرَأَةٌ أَعْلَنَتْ. [راجع: ٥٣١٠]

तश्रीह : यहाँ रिवायत में ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) का नाम नामी आया है जो मशहूरतरीन स़ह़ाबी हैं। इनकी माँ का नाम लुबाबा बिन्ते ह़ारिष़ है हिजरत से तीन साल पहले पैदा हुए वफ़ाते नबवी के वक़्त इनकी उ़म्र पन्द्रह साल की थी। आँह़ज़रत (ﷺ) ने इनके लिये इ़ल्म व ह़िक्मत की दुआ़ की जिसके नतीजे मे ये उस वक़्त के रब्बानी आ़लिम क़रार पाए। उम्मत में सबसे ज़्यादा ह़सीन, सबसे बढ़कर फ़सीह़, ह़दीष़ के सबसे बड़े आ़लिम ह़ज़रत उ़मर फ़ारूक़ (रज़ि.) इनको बड़े-बड़े स़ह़ाबा की मौजूदगी मे अपने पास बिठाते और इनसे मश्विरा लेते और इनकी राय को तरजीह़ देते थे। आख़िर उ़म्र में नाबीना हो गये थे। गोरा रंग, क़द लम्बा, जिस्म ख़ूबसूरत। ग़ैरतमंद थे और दाढ़ी को मेहन्दी का ख़िज़ाब लगाया करते थे। इकहत्तर (71) साल की उ़म्र में बअ़हदे ख़िलाफ़ते इब्ने ज़ुबैर 68 हिजरी में वफ़ात पाई। (رضي الله عنه)

6856. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने

٦٨٥٦- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ،

حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ الْقَاسِمِ، عَنِ الْقَاسِمِ بْنِ مُحَمَّدٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا ذُكِرَ التَّلاَعُنُ عِنْدَ النَّبِيِّ ﷺ. فَقَالَ عَاصِمُ بْنُ عَدِيٍّ: فِي ذَلِكَ قَوْلاً ثُمَّ انْصَرَفَ، فَأَتَاهُ رَجُلٌ مِنْ قَوْمِهِ يَشْكُو أَنَّهُ وَجَدَ مَعَ أَهْلِهِ رَجُلاً فَقَالَ عَاصِمٌ : مَا ابْتُلِيتُ بِهَذَا إِلاَّ لِقَوْلِي فَذَهَبَ بِهِ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ، فَأَخْبَرَهُ بِالَّذِي وَجَدَ عَلَيْهِ امْرَأَتَهُ وَكَانَ ذَلِكَ الرَّجُلُ مُصْفَرًّا قَلِيلَ اللَّحْمِ، سَبْطَ الشَّعَرِ، وَكَانَ الَّذِي ادَّعَى عَلَيْهِ أَنَّهُ وَجَدَهُ عِنْدَ أَهْلِهِ آدَمَ خَدْلاً كَثِيرَ اللَّحْمِ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((اللَّهُمَّ بَيِّنْ)) فَوَضَعَتْ شَبِيهًا بِالرَّجُلِ الَّذِي ذَكَرَ زَوْجُهَا أَنَّهُ وَجَدَهُ عِنْدَهَا فَلاَعَنَ النَّبِيُّ ﷺ بَيْنَهُمَا فَقَالَ رَجُلٌ لاِبْنِ عَبَّاسٍ فِي الْمَجْلِسِ: هِيَ الَّتِي قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لَوْ رَجَمْتُ أَحَدًا بِغَيْرِ بَيِّنَةٍ، رَجَمْتُ هَذِهِ)) فَقَالَ: لاَ، تِلْكَ امْرَأَةٌ كَانَتْ تُظْهِرُ فِي الإِسْلاَمِ السُّوءَ.

[راجع: ٥٣١٠]

कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे यह़्या बिन सईद ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुर्रह़मान बिन क़ासिम ने बयान किया, उनसे क़ासिम बिन मुह़म्मद ने और उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) की मज्लिस में लिआ़न का ज़िक्र आया तो आ़सिम बिन अ़दी (रज़ि.) ने उस पर एक बात कही फिर वो वापस आए। उसके बाद उनकी क़ौम के एक स़ाह़ब ये शिकायत लेकर उनके पास आए कि उन्होंने अपनी बीवी के साथ ग़ैर मर्द को देखा है। आ़सिम (रज़ि.) ने इस पर कहा कि मैं अपनी इस बात की वजह से आज़माइश में डाला गया हूँ। फिर आप उन स़ाह़ब को लेकर नबी करीम (ﷺ) की मज्लिस में तशरीफ़ लाए और आँह़ज़रत (ﷺ) को इसकी ख़बर दी जिस ह़ालत मे उन्होंने अपनी बीवी को पाया। वो स़ाह़ब ज़र्द रंग, कम गोश्त, सीधे बालों वाले थे। फिर आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि ऐ अल्लाह! इस मामले को ज़ाहिर कर दे। चुनाँचे उस औ़रत के यहाँ उसी शख़्स़ की शक्ल का बच्चा पैदा हुआ जिसके बारे में शौहर ने कहा था कि उसे उन्होंने अपनी बीवी के साथ देखा है फिर आँह़ज़रत (ﷺ) ने दोनों के बीच लिआ़न कराया। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से मज्लिस में एक स़ाह़ब ने कहा कि ये वही था जिसके बारे में आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया था कि अगर मैं किसी को बिला गवाही के रजम कर सकता तो इसे रजम करता। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा कि नहीं ये तो वो औ़रत थी जो इस्लाम लाने के बाद बुराईयाँ ऐ़लानिया करती थी।
(राजेअ़: 5310)

٣١- باب رَمْيِ الْمُحْصَنَاتِ

बाब 31 : पाकदामन औ़रतों पर तोह्मत लगाना गुनाह है

وَقَوْلِ اللهِ عَزَّ وَجَلَّ: ﴿وَالَّذِينَ يَرْمُونَ الْمُحْصَنَاتِ ثُمَّ لَمْ يَأْتُوا بِأَرْبَعَةِ شُهَدَاءَ فَاجْلِدُوهُمْ ثَمَانِينَ جَلْدَةً وَلاَ تَقْبَلُوا لَهُمْ شَهَادَةً أَبَدًا وَأُولَئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ إِلاَّ الَّذِينَ تَابُوا مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ وَأَصْلَحُوا فَإِنَّ

और अल्लाह पाक ने सूरह नूर में फ़र्माया जो लोग पाक दामन आज़ाद लोगों को तोह्मत लगाते हैं फिर चार गवाह रुइयत के नहीं लाते तो उनको अस्सी कोड़े लगाओ और आइन्दा उनकी गवाही कभी भी मंज़ूर न करो यही बदकार लोग हैं हाँ जो उनमें से उसके बाद तौबा कर लें और नेक चलन हो जाएँ तो बेशक अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है। इस सूरत में मज़ीद फ़र्माया

कि बेशक जो लोग पाक दामन आज़ाद भोली भाली ईमानदार औरतों पर तोह्मत लगाते हैं वो दुनिया और आख़िरत दोनों जगह मल्ऊन होंगे और उनको मल्ऊन होने के सिवा बड़ा अ़ज़ाब भी होगा। इस सूरत में फ़र्माया, और जो लोग अपनी बीवियों पर तोह्मत लगाएँ और उनके अपने सिवा उनके पास गवाह भी कोई न हो तो.. आख़िर आयत तक। (सूरह नूर : 6)

اللهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ﴾ [النور ٤-٥] ﴿إِنَّ الَّذِينَ يَرْمُونَ الْمُحْصَنَاتِ الْغَافِلاَتِ الْمُؤْمِنَاتِ لُعِنُوا فِي الدُّنْيَا وَالآخِرَةِ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ﴾ [النور: ٢٣] وَقَوْلُ اللهِ: ﴿وَالَّذِينَ يَرْمُونَ أَزْوَاجَهُمْ وَ لَمْ يَكُنْ﴾ [النور : ٦] الآيَةَ.

6857. हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सुलैमान बिन बिलाल ने बयान किया, उनसे ष़ौर बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अबुल ग़ैष़ सालिम ने बयान किया, और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, सात मुह्लिक गुनाहों से बचो। स़ह़ाबा ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! वो क्या क्या हैं? आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया अल्लाह के साथ शिर्क करना, जादू करना, नाहक़ किसी की जान लेना, जो अल्लाह ने ह़राम किया है, सूद खाना, यतीम का माल खाना, जंग के दिन पीठ फेरना और पाक दामन ग़ाफ़िल मोमिन औ़रतों पर तोह्मत लगाना। (राजेअ़ : 2766)

٦٨٥٧- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ، عَنْ ثَوْرِ بْنِ زَيْدٍ، عَنْ أَبِي الْغَيْثِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((اجْتَنِبُوا السَّبْعَ الْمُوبِقَاتِ)) قَالُوا يَا رَسُولَ اللهِ وَمَا هُنَّ؟ قَالَ: ((الشِّرْكُ بِاللهِ، وَالسِّحْرُ، وَقَتْلُ النَّفْسِ الَّتِي حَرَّمَ اللهُ إِلاَّ بِالْحَقِّ، وَأَكْلُ الرِّبَا، وَأَكْلُ مَالِ الْيَتِيمِ، وَالتَّوَلِّي يَوْمَ الزَّحْفِ، وَقَذْفُ الْمُحْصَنَاتِ الْمُؤْمِنَاتِ الْغَافِلاَتِ)).

[راجع: ٢٧٦٦]

तश्रीह़ : ह़ाफ़िज़ ने कहा इस ह़दीष़ में कबीरा गुनाह सात ही मज़्कूर हैं लेकिन दूसरी अह़ादीष़ से और भी कबीरा गुनाह ष़ाबित हैं जैसे हिजरत करके फिर तोड़ डालना, ज़िनाकारी, चोरी, झूठी क़सम, वालिदैन की नाफ़र्मानी, ह़रम में बेहुर्मती, शराबख़ोरी, झूठी गवाही, चुग़लख़ोरी, पेशाब से एह़तियात न करना, माले ग़नीमत में ख़यानत करना, इमाम से बग़ावत करना, जमाअ़त से अलग हो जाना। क़स्तलानी ने कहा झूठ बोलना, अल्लाह के अ़ज़ाब से निडर हो जाना, ग़ीबत करना, अल्लाह की रह्मत से नाउम्मीद हो जाना, शैख़ैन ह़ज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ व ह़ज़रत उ़मर फ़ारूक़ (रज़ि.) को बुरा कहना, अ़हदशिकनी करना। उन सबको कबीरा गुनाहों में शामिल किया गया है। कबीरा गुनाहों की ता'रीफ़ में इख़्तिलाफ़ किया गया है। कुछ ने कहा जिन पर कोई ह़द मुक़र्रर की गई हो। कुछ ने कहा वो गुनाह जिन पर क़ुर्आन व ह़दीष़ में वईद आई हो वो सब गुनाहे कबीरा हैं। सबसे बड़ा कबीरा गुनाह शिर्क है जिसका मुर्तकिब बग़ैर तौबा मरने वाला हमेशा हमेश दोज़ख़ में रहेगा जबकि दूसरे कबीरा गुनाहों के लिये कभी न कभी बख़्शिश की भी उम्मीद रखी जा सकती है।

बाब 32 : ग़ुलामों पर नाहक़ तोह्मत लगाना बड़ा गुनाह है

٣٢ - باب قَذْفِ الْعَبِيدِ

6858. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन सईद क़त्तान ने बयान किया, उनसे फ़ुज़ैल बिन ग़ज़्वान ने, उनसे अ़ब्दुर्रह्मान बिन अबी नुअ़मि ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने अबुल क़ासिम (ﷺ) से

٦٨٥٨- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، عَنْ فُضَيْلِ بْنِ غَزْوَانَ، عَنِ ابْنِ أَبِي نُعْمٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ

قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا الْقَاسِمِ ﷺ يَقُولُ: ((مَنْ قَذَفَ مَمْلُوكَهُ وَهُوَ بَرِيءٌ مِمَّا قَالَ: جُلِدَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ، إِلاَّ أَنْ يَكُونَ كَمَا قَالَ)).

सुना, आपने फ़र्माया कि जिसने अपने गुलाम पर तोह्मत लगाई हालाँकि ग़ुलाम इस तोह्मत से बरी था तो क़यामत के दिन उसे कोड़े लगाए जाएँगे, सिवा इसके कि उसकी बात सहीह हो।

٣٣- باب هَلْ يَأْمُرُ الإِمَامُ رَجُلاً فَيَضْرِبُ الْحَدَّ غَائِبًا عَنْهُ وَقَدْ فَعَلَهُ عُمَرُ

बाब 33 : अगर इमाम किसी शख़्स को हुक्म करे कि जा फ़लाँ शख़्स को हद लगा जो ग़ायब हो (या'नी इमाम के पास मौजूद न हो)

हज़रत उमर (रज़ि.) ने ऐसा किया है।

٦٨٥٩، ٦٨٦٠- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ، حَدَّثَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ عُبَيْدِ اللَّهِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُتْبَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ وَزَيْدِ بْنِ خَالِدٍ الْجُهَنِيِّ قَالاَ: جَاءَ رَجُلٌ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: أَنْشُدُكَ اللَّهَ إِلاَّ قَضَيْتَ بَيْنَنَا بِكِتَابِ اللَّهِ، فَقَامَ خَصْمُهُ وَكَانَ أَفْقَهَ مِنْهُ، فَقَالَ: صَدَقَ اقْضِ بَيْنَنَا بِكِتَابِ اللَّهِ وَائْذَنْ لِي يَا رَسُولَ اللَّهِ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((قُلْ)) فَقَالَ: إِنَّ ابْنِي كَانَ عَسِيفًا فِي أَهْلِ هَذَا فَزَنَى بِامْرَأَتِهِ فَافْتَدَيْتُ مِنْهُ بِمِائَةِ شَاةٍ وَخَادِمٍ، وَإِنِّي سَأَلْتُ رِجَالاً مِنْ أَهْلِ الْعِلْمِ فَأَخْبَرُونِي أَنَّ عَلَى ابْنِي جَلْدَ مِائَةٍ وَتَغْرِيبَ عَامٍ وَأَنَّ عَلَى امْرَأَةِ هَذَا الرَّجْمَ فَقَالَ: ((وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لأَقْضِيَنَّ بَيْنَكُمَا بِكِتَابِ اللَّهِ، الْمِائَةُ وَالْخَادِمُ رَدٌّ عَلَيْكَ، وَعَلَى ابْنِكَ جَلْدُ مِائَةٍ وَتَغْرِيبُ عَامٍ، وَيَا أُنَيْسُ اغْدُ عَلَى امْرَأَةِ هَذَا فَسَلْهَا، فَإِنِ اعْتَرَفَتْ فَارْجُمْهَا)). فَاعْتَرَفَتْ فَرَجَمَهَا.[راجع: ٢٣١٤، ٢٣١٥]

6759,60. हमसे मुहम्मद बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सुफ़यान बिन उयय्ना ने बयान किया, उनसे ज़ुह्री ने बयान किया, उनसे उबैदुल्लाह बिन अब्दुल्लाह बिन उत्बा ने बयान किया, उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) और ज़ैद बिन ख़ालिद (रज़ि.) ने बयान किया कि एक आदमी रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में आया और कहा कि मैं आपको अल्लाह की क़सम देता हूँ आप हमारे बीच किताबुल्लाह से फ़ैसला कर दीजिए। इस पर फ़रीक़े मुख़ालिफ़ खड़ा हुआ, ये ज़्यादा समझदार था और कहा कि इन्होंने सच कहा। हमारा फ़ैसला किताबुल्लाह के मुताबिक़ कीजिए और या रसूलल्लाह! मुझे (बातचीत की) इजाज़त दीजिए। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, कहिए। उन्होंने कहा कि मेरा लड़का इनके यहाँ मज़दूरी करता था फिर उसने इनकी बीवी के साथ ज़िना कर लिया। मैंने उसके फ़िदये मे एक सौ बकरियाँ और एक ख़ादिम दिया फिर मैंने अहले इल्म से पूछा तो उन्होंने मुझे बताया कि मेरे बेटे को सौ कोड़े और एक साल जलावतनी की सज़ा मिलनी चाहिये और इसकी बीवी को रजम किया जाएगा। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है, मैं तुम्हारा फ़ैसला किताबुल्लाह के मुताबिक़ ही करूँगा। सौ बकरियाँ और ख़ादिम तुम्हें वापस मिलेंगे और तुम्हारे बेटे को सौ कोड़े और एक साल जलावतनी की सज़ा दी जाएगी और ऐ उनैस! इसकी औरत के पास सुबह जाना और उससे पूछना अगर वो ज़िना का इक़रार कर ले तो उसे रजम करना। उस औरत ने इक़रार कर लिया और वो रजम कर दी गई।

(राजेअ: 2314, 2315)

88. किताबुद्दियात

किताब दियतों के बयान में

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

तश्रीह : हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने इस बाब में जान-बूझकर किये गये क़त्ल का भी बयान किया है जिसमे क़िसास लाज़िम होता है। इसकी वजह ये है कि क़त्ले अमद में भी जब वारिष़ क़िसास माफ़ कर दें और दियत पर राज़ी हो जाएँ तो दियत दिलाई जाती है।

बाब 1 : अल्लाह तआ़ला ने सूरह निसा में फ़र्माया, और जो शख़्स किसी मुसलमान को जान बूझकर क़त्ल कर दे उसकी सज़ा जहन्नम है. (निसा 93)

١ باب قَوْلِ اللهِ تَعَالَى : ﴿وَمَنْ يَقْتُلْ مُؤْمِنًا مُتَعَمِّدًا فَجَزَاؤُهُ جَهَنَّمُ﴾ [النساء : ٩٣].

तश्रीह : अहले सुन्नत का इस पर इत्तिफ़ाक़ है कि ख़लूद से इस आयत में बहुत दिनों तक रहना मुराद है न कि हमेशा रहना क्योंकि हमेशा तो दोज़ख़ में वही रहगा जो काफ़िर मरेगा। कुछ ने कहा कि जो मुसलमान को इस्लाम की वजह से मारेगा इस आयत में वही मुराद है ऐसा शख़्स तो काफ़िर ही होगा और वो हमेशा ही दोज़ख़ में रहेगा उससे नहीं निकल सकता।

6861. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे जरीर बिन अ़ब्दुल ह़मीद ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे अबू वाइल ने, उनसे अ़म्र बिन शुरह़बील ने बयान किया, उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने बयान किया कि एक स़ाहब या'नी ख़ुद आपने कहा या रसूलल्लाह (ﷺ)! अल्लाह के नज़दीक कौनसा गुनाह सबसे बड़ा है? आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया ये कि तुम अल्लाह का किसी को शरीक ठहराओ जबकि उसने तुम्हें पैदा किया है। पूछा फिर कौन? आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया फिर ये कि तुम अपने लड़के को इस डर से मार डालो कि वो तुम्हारे साथ खाना खाएगा। पूछा फिर कौन? फ़र्माया फिर ये कि तुम अपने पड़ौसी की बीवी से ज़िना करो। फिर अल्लाह तआ़ला ने इसकी तस्दीक़ में

٦٨٦١ - حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي وَائِلٍ، عَنْ عَمْرِو بْنِ شُرَحْبِيلَ قَالَ : قَالَ عَبْدُ اللهِ قَالَ رَجُلٌ: يَا رَسُولَ اللهِ أَيُّ الذَّنْبِ أَكْبَرُ عِنْدَ اللهِ؟ قَالَ: ((أَنْ تَدْعُوَ للهِ نِدًّا وَهُوَ خَلَقَكَ)) قَالَ: ثُمَّ أَيٌّ؟ قَالَ : ((ثُمَّ أَنْ تَقْتُلَ وَلَدَكَ أَنْ يَطْعَمَ مَعَكَ)) قَالَ: ثُمَّ أَيٌّ؟ قَالَ : ((ثُمَّ أَنْ تُزَانِيَ بِحَلِيلَةِ جَارِكَ)) فَأَنْزَلَ اللهُ عَزَّ وَجَلَّ تَصْدِيقَهَا ﴿وَالَّذِينَ

﴿لَا يَدْعُوْنَ مَعَ اللهِ إِلٰهًا آخَرَ وَلَا يَقْتُلُوْنَ النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللهُ إِلَّا بِالْحَقِّ وَلَا يَزْنُوْنَ وَمَنْ يَفْعَلْ ذٰلِكَ يَلْقَ أَثَامًا﴾.
[راجع: ٤٤٧٧]

आयत नाज़िल की, और वो लोग जो अल्लाह के साथ किसी दूसरे मा'बूद को नहीं पुकारते और न किसी ऐसे इंसान की नाहक़ जान लेते हैं जिसे अल्लाह ने हराम किया है और न ज़िना करते हैं और जो कोई ऐसा करेगा, आख़िर आयत तक। (राजेअ: 4477)

तश्रीह : अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) हज़्ली हैं इस्लाम में नम्बर छः पर हैं। आँहज़रत (ﷺ) के ख़ासुल ख़ास ख़ादिम हैं सफ़र व हज़र में। दो बार हब्शा की तरफ़ हिजरत की और तीसरी दफ़ा मदीना में दाइमी हिजरत की और ख़ास तौर पर जंगे बद्र और उहुद, ख़ंदक़, हुदैबिया, ख़ैबर और फ़तहे मक्का में रसूलुल्लाह (ﷺ) के हम-रिकाब थे। आप पस्त क़द, लाग़र जिस्म, गन्दुमी रंग और सर पर कानों तक निहायत नर्म व ख़ूबसूरत ज़ुल्फ़ थे और इल्म और फ़ज़्ल में बहुत बढ़े हुए थे। इसलिये ख़िलाफ़ते फ़ारूक़ी में कूफ़ा के क़ाज़ी मुक़र्रर हुए। बाद में मदीना आ गये और सन 33 हिजरी में मदीना ही में साठ बरस से कुछ ज़्यादा उम्र पाकर वफ़ात पाई और बक़ीउल ग़रक़द में दफ़न हुए। रज़ियल्लाहु अन्हु व अर्ज़ाहु, आमीन।

٦٨٦٢- حَدَّثَنَا عَلِيٌّ، حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ سَعِيْدِ بْنِ عَمْرِو بْنِ سَعِيْدِ بْنِ الْعَاصِ، عَنْ أَبِيْهِ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: ((لَنْ يَزَالَ الْمُؤْمِنُ فِي فُسْحَةٍ مِنْ دِيْنِهِ، مَا لَمْ يُصِبْ دَمًا حَرَامًا)).[طرفه في : ٦٨٦٣].

6862. हमसे अली बिन जअदि ने बयान किया, कहा हमसे इस्हाक़ बिन सईद बिन अम्र बिन सअद बिन आस (रज़ि.) ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने और उनसे इब्ने उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया मोमिन उस वक़्त तक अपने दीन के बारे में बराबर कुशादा रहता है (उसे हर वक़्त मग़्फ़िरत की उम्मीद रहती है) जब तक नाहक़ ख़ून न करे जहाँ नाहक़ किया तो मग़्फ़िरत का दरवाज़ा तंग हो जाता है। (दीगर मक़ाम : 6863)

٦٨٦٣- حَدَّثَنِي أَحْمَدُ بْنُ يَعْقُوْبَ، حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ سَمِعْتُ أَبِي يُحَدِّثُ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ قَالَ : إِنَّ مِنْ وَرَطَاتِ الأُمُوْرِ الَّتِي لَا مَخْرَجَ لِمَنْ أَوْقَعَ نَفْسَهُ فِيْهَا سَفْكَ الدَّمِ الْحَرَامِ بِغَيْرِ حِلِّهِ.
[راجع: ٦٨٦٢]

6863. मुझसे अहमद बिन यअक़ूब ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इस्हाक़ ने बयान किया, उन्होंने कहा मैंने अपने वालिद से सुना, वो हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) से बयान करते थे कि हलाकत का भंवर जिसमें गिरने के बाद फिर निकलने की उम्मीद नहीं है वो नाहक़ ख़ून करना है जिसको अल्लाह तआला ने हराम किया है। (राजेअ : 6862)

٦٨٦٤- حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ مُوْسَى، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي وَائِلٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((أَوَّلُ مَا يُقْضَى بَيْنَ النَّاسِ فِي الدِّمَاءِ)).[راجع: ٦٥٣٣]

6864. हमसे उबैदुल्लाह बिन मूसा ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे अबू वाइल ने और उनसे अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया सबसे पहले (क़यामत के दिन) लोगों के दरम्यान ख़ून ख़राबे के फ़ैसले किये जाएँगे। (राजेअ : 6533)

तश्रीह : पहले हज़रत ख़ातूने जन्नत अपने दोनों साहबज़ादों हज़रत हसन और हज़रत हुसैन (रज़ि.) के ख़ून का दा'वा करेंगी जैसा कि दूसरी रिवायत में है। ये उसके ख़िलाफ़ नहीं है कि सबसे पहले नमाज़ की पुर्सिश (पूछताछ) होगी क्योंकि नमाज़ हुक़ूक़ुल्लाह में से है और ख़ून हुक़ूक़ुल इबाद में से है। मतलब ये है कि हुक़ूक़ुल्लाह में सबसे पहले नमाज़ की पुर्सिश होगी और हुक़ूक़ुल इबाद में पहले नाहक़ ख़ून की पुर्सिश है। ख़ूने नाहक़ किसी मुस्लिम का हो या ग़ैर मुस्लिम का,

दोनों का एक ही हुक्म है। इससे इस्लाम की इंसानियत परवरी पर जो रोशनी पड़ती है वो साफ़ ज़ाहिर और बहुत ही वाज़ेह है।

6865. हमसे अब्दान ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने बयान किया, कहा हमको यूनुस ने ख़बर दी, उनसे ज़ुहरी ने, कहा मुझसे अता बिन यज़ीद ने बयान किया, उनसे उबैदुल्लाह बिन अदी ने बयान किया, उनसे बनी ज़ुहरा के हलीफ़ मिक़्दाद बिन अम्र किन्दी (रज़ि.) ने बयान किया वो बद्र की लड़ाई में नबी करीम (ﷺ) के साथ शरीक थे कि आपने पूछा या रसूलल्लाह! अगर जंग के दौरान मेरी किसी काफ़िर से मुठभेड़ हो जाए और हम एक-दूसरे को क़त्ल करने की कोशिश करने लगें फिर वो मेरे हाथ पर अपनी तलवार मारकर उसे काट दे और उसके बाद किसी पेड़ की आड़ लेकर कहे कि मैं अल्लाह पर ईमान लाया तो क्या मैं उसे उसके इस इक़रार के बाद क़त्ल कर सकता हूँ? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि उसे क़त्ल न करना। उन्होंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! उसने तो मेरा हाथ भी काट डाला और ये इक़रार उस वक़्त किया जब उसे यक़ीन हो गया कि अब मैं उसे क़त्ल ही कर दूँगा? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया उसे क़त्ल न करना क्योंकि अगर तुमने उसे इस्लाम लाने के बाद क़त्ल कर दिया तो वो तुम्हारे मर्तबे में होगा जो तुम्हारा उसे क़त्ल करने से पहले था या'नी (मा'सूम मा'लूमुद्दम) और तुम उसके मर्तबे में होगे जो उसका उस कलिमे के इक़रार से पहले था जो उसने अब किया है (या'नी ज़ालिम मुबाहुद्दम) (राजेअ : 419)

٦٨٦٥- حَدَّثَنَا عَبْدَانُ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ، حَدَّثَنَا يُونُسُ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، حَدَّثَنَا عَطَاءُ بْنُ يَزِيدَ أَنَّ عُبَيْدَ اللهِ بْنَ عَدِيٍّ حَدَّثَهُ أَنَّ الْمِقْدَادَ بْنَ عَمْرٍو الْكِنْدِيَّ حَلِيفَ بَنِي زُهْرَةَ حَدَّثَهُ، وَكَانَ شَهِدَ بَدْرًا مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنَّهُ قَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ إِنْ لَقِيتُ كَافِرًا فَاقْتَتَلْنَا فَضَرَبَ يَدِي بِالسَّيْفِ فَقَطَعَهَا، ثُمَّ لاَذَ بِشَجَرَةٍ وَقَالَ: أَسْلَمْتُ لِلَّهِ أَأَقْتُلُهُ بَعْدَ أَنْ قَالَهَا؟ قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((لاَ تَقْتُلْهُ)) قَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ فَإِنَّهُ طَرَحَ إِحْدَى يَدَيَّ ثُمَّ قَالَ ذَلِكَ بَعْدَ مَا قَطَعَهَا أَأَقْتُلُهُ؟ قَالَ: ((لاَ تَقْتُلْهُ فَإِنْ قَتَلْتَهُ، فَإِنَّهُ بِمَنْزِلَتِكَ قَبْلَ أَنْ تَقْتُلَهُ، وَأَنْتَ بِمَنْزِلَتِهِ قَبْلَ أَنْ يَقُولَ كَلِمَتَهُ الَّتِي قَالَ)).

[راجع: ٤١٩]

6866. और हबीब बिन अबी अम्र ने बयान किया, उनसे सईद बिन जुबैर ने और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी (ﷺ) ने हज़रत मिक़्दाद (रज़ि.) से फ़र्माया था कि अगर कोई मुसलमान काफ़िरों के साथ रहता हो फिर वो डर के मारे अपना ईमान छुपाता हो, अगर वो अपना ईमान ज़ाहिर कर दे और तू उसको मार डाले ये क्यूँकर दुरुस्त होगा ख़ुद तू भी तो मक्का में पहले अपना ईमान छुपाता था।

٦٨٦٦- وَقَالَ حَبِيبُ بْنُ أَبِي عَمْرَةَ: عَنْ سَعِيدٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ لِلْمِقْدَادِ ((إِذَا كَانَ رَجُلٌ مُؤْمِنٌ يُخْفِي إِيمَانَهُ مَعَ قَوْمٍ كُفَّارٍ فَأَظْهَرَ إِيمَانَهُ فَقَتَلْتَهُ فَكَذَلِكَ كُنْتَ أَنْتَ تُخْفِي إِيمَانَكَ بِمَكَّةَ مِنْ قَبْلُ)).

बाब 2 : सूरह माइदह में फ़र्मान कि जिसने मरते को बचा लिया उसने गोया सब लोगों की जान बचा ली

٢- باب قَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿وَمَنْ أَحْيَاهَا﴾

قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ : مَنْ حَرَّمَ قَتْلَهَا إِلاَّ بِحَقٍّ فَكَأَنَّمَا أَحْيَا النَّاسَ جَمِيعًا.

इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा कि मन अह़याहा का मा'नी ये है जिसने नाह़क़ ख़ून करना ह़राम रखा गोया उसने इस अ़मल से तमाम लोगों को ज़िन्दा रखा।

इसलिये ये नाह़क़ ख़ून एक करे या तमाम करें गुनाह में बराबर हैं और जिसने नाह़क़ ख़ून से परहेज़ किया तो गोया सब लोगों की जान बचा ली।

٦٨٦٧- حَدَّثَنَا قَبِيصَةُ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مُرَّةَ، عَنْ مَسْرُوقٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((لاَ تُقْتَلُ نَفْسٌ إِلاَّ كَانَ عَلَى ابْنِ آدَمَ الأَوَّلِ كِفْلٌ مِنْهَا)). [راجع: ٣٣٣٥]

6867. हमसे क़बीसा ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे अ़ब्दुल्लाह इब्ने मुर्रह ने, उनसे मसरूक़ ने और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जो जान नाह़क़ क़त्ल की जाए उसके (गुनाह का) एक ह़िस्सा आदम (अ़लैहि.) के पहले बेटे (क़ाबील पर) पड़ता है। (राजेअ़ : 3335)

क्योंकि उसने दुनिया मे नाह़क़ ख़ून की बुनियाद डाली और जो कोई बुरा त़रीक़ा क़ायम करे तो क़यामत तक जो कोई उस पर अ़मल करता रहेगा उसके गुनाह का एक ह़िस्सा उसके क़ायम करने वाले पर पड़ता रहेगा जैसा कि दूसरी ह़दीष़ में है बिदअ़ात ईजाद करने वालों का भी यही ह़ाल होगा।

٦٨٦٨- حَدَّثَنَا أَبُو الْوَلِيدِ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ وَاقِدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ: أَخْبَرَنِي عَنْ أَبِيهِ، سَمِعَ عَبْدَ اللهِ بْنَ عُمَرَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((لاَ تَرْجِعُوا بَعْدِي كُفَّارًا، يَضْرِبُ بَعْضُكُمْ رِقَابَ بَعْضٍ)). [راجع: ١٧٤٢]

6868. हमसे अबुल वलीद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उन्हें वाक़िद बिन अ़ब्दुल्लाह ने ख़बर दी, उन्होंने कहा मुझको मेरे वालिद ने और उन्होंने अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) से बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, मेरे बाद काफ़िर न बन जाना कि तुममें से कुछ कुछ की गर्दन मारने लग जाओ। (राजेअ़ : 1742)

मा'लूम हुआ कि मुसलमान का क़त्ले नाह़क़ आदमी को कुफ़्र के क़रीब कर देता है या वो क़त्ल मुराद है जो ह़लाल जानकर हो, उससे तो काफ़िर ही हो जाएगा।

٦٨٦٩- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ عَلِيِّ بْنِ مُدْرِكٍ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا زُرْعَةَ بْنَ عَمْرِو بْنِ جَرِيرٍ، عَنْ جَرِيرٍ قَالَ: لِي النَّبِيُّ ﷺ فِي حَجَّةِ الْوَدَاعِ اسْتَنْصِتِ النَّاسَ: ((لاَ تَرْجِعُوا بَعْدِي كُفَّارًا يَضْرِبُ بَعْضُكُمْ رِقَابَ بَعْضٍ)). رَوَاهُ أَبُو بَكْرَةَ وَابْنُ عَبَّاسٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ. [راجع: ١٢١]

6869. हमसे मुह़म्मद बिन बश्शार ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे गुन्दर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे अ़ली बिन मुदरक ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने अबू ज़रअ़ा बिन अ़म्र बिन जरीर से सुना, उनसे जरीर बिन अ़ब्दुल्लाह बजली (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने ह़ज्जतुल वदाअ़ के दिन फ़र्माया, लोगों को ख़ामोश करा दो। (फिर फ़र्माया) तुम मेरे बाद काफ़िर न बन जाना कि तुममें से कुछ कुछ की गर्दन मारने लगे। इस ह़दीष़ की रिवायत अबूबक्र और इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से की है। (राजेअ़ : 121)

नाह़क़ मुसलमान का ख़ून करना बहुत ही बड़ा गुनाह है जिसका आँह़ज़रत (ﷺ) ने कुफ़्र से ता'बीर फ़र्माया मगर स़द

अफ़सोस कि क़र्ने अव्वल ही से दुश्मनाने इस्लाम ने साज़िश करके मुसलमानों को आपसी तौर पर ऐसा लड़ाया कि उम्मत आज तक उसका ख़मियाज़ा भुगत रही है। **फ़ल्यब्कू अलल इस्लाम मन काना।**

6870. मुझसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे मुहम्मद बिन जा'फ़र ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे फ़रास ने, उनसे शअबी ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने बयान किया, कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कबीरा गुनाह अल्लाह के साथ किसी को शरीक ठहराना, वालिदैन की नाफ़र्मानी करना या फ़र्माया कि नाहक़ दूसरे का माल लेने के लिये झूठी क़सम खाना हैं। शक शुअबा को था और मुआज़ ने बयान किया, उनसे शुअबा ने बयान किया, कहा कि कबीरा गुनाह अल्लाह के साथ किसी को शरीक ठहराना, किसी का माल नाहक़ लेने के लिये झूठी क़सम खाना और वालिदैन की नाफ़र्मानी करना कहा कि किसी की जान लेना। (राजेअ : 6675)

٦٨٧٠- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ فِرَاسٍ، عَنِ الشَّعْبِيِّ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((الْكَبَائِرُ الإِشْرَاكُ بِاللهِ، وَعُقُوقُ الْوَالِدَيْنِ - أَوْ قَالَ - الْيَمِينُ الْغَمُوسُ)) شَكَّ شُعْبَةُ، وَقَالَ مُعَاذٌ : حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ: ((الْكَبَائِرُ الإِشْرَاكُ بِاللهِ، وَالْيَمِينُ الْغَمُوسُ، وَعُقُوقُ الْوَالِدَيْنِ - أَوْ قَالَ - وَقَتْلُ النَّفْسِ)).
[راجع: ٦٦٧٥]

ये सारे कबीरा गुनाह हैं जिनसे तौबा किये बग़ैर मर जाना दोज़ख़ में दाख़िल होना है। बाब और अहादीष़ में मुताबक़त ज़ाहिर है।

6871. हमसे इस्हाक़ बिन मंसूर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अ़ब्दुस्समद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे उबैदुल्लाह बिन अबीबक्र (रज़ि.) ने बयान किया, उन्होंने ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) से सुना कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया गुनाहे कबीरा। और हमसे अम्र ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे अबूबक्र ने और उनसे ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया सबसे बड़े गुनाह अल्लाह के साथ किसी को शरीक ठहराना, किसी की नाहक़ जान लेना, वालिदैन की नाफ़र्मानी करना और झूठ बोलना हैं या फ़र्माया कि झूठी गवाही देना।

٦٨٧١- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الصَّمَدِ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ أَبِي بَكْرٍ سَمِعَ أَنَسًا رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((الْكَبَائِرُ)) وَحَدَّثَنَا عَمْرٌو، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنِ ابْنِ أَبِي بَكْرٍ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((أَكْبَرُ الْكَبَائِرِ الإِشْرَاكُ بِاللهِ، وَقَتْلُ النَّفْسِ، وَعُقُوقُ الْوَالِدَيْنِ، وَقَوْلُ الزُّورِ - أَوْ قَالَ - وَشَهَادَةُ الزُّورِ)).

तश्रीह : इनमें शिर्क ऐसा गुनाह है कि जो बग़ैर तौबा किये मरेगा वो हमेशा के लिये जहन्नमी हो गया। जन्नत उसके लिये क़ुरआन हराम है। बुतपरस्ती हो या क़ब्रपरस्ती दोनों की यही सज़ा है। दूसरे गुनाह ऐसे हैं जिनका मुर्तकिब अल्लाह की मशिय्यत पर है वो चाहे अ़ज़ाब दे चाहे बख़्श दे। आयते शरीफ़ा, **इन्नल्लाह ला यग़्फ़िरु अय्युंशरक बिही अल्अख़,** में ये मज़्मून मज़्कूर है।

6872. हमसे अ़म्र बिन ज़ुरारह ने बयान किया, कहा हमसे हुशैम ने बयान किया, कहा हमसे हुसैन ने बयान किया, कहा हमसे अबू ज़ब्यान ने बयान किया, कहा कि मैंने उसामा बिन

٦٨٧٢- حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ زُرَارَةَ، حَدَّثَنَا هُشَيْمٌ، حَدَّثَنَا حُصَيْنٌ، حَدَّثَنَا أَبُو ظَبْيَانَ

قَالَ: سَمِعْتُ أُسَامَةَ بْنَ زَيْدِ بْنِ حَارِثَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا يُحَدِّثُ قَالَ: بَعَثَنَا رَسُولُ اللهِ ﷺ إِلَى الْحُرَقَةِ مِنْ جُهَيْنَةَ قَالَ فَصَبَّحْنَا الْقَوْمَ فَهَزَمْنَاهُمْ قَالَ: وَلَحِقْتُ أَنَا وَرَجُلٌ مِنَ الأَنْصَارِ رَجُلاً مِنْهُمْ، قَالَ: فَلَمَّا غَشِينَاهُ قَالَ: لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ قَالَ: فَكَفَّ عَنْهُ الأَنْصَارِيُّ فَطَعَنْتُهُ بِرُمْحِي حَتَّى قَتَلْتُهُ، قَالَ: فَلَمَّا قَدِمْنَا بَلَغَ ذَلِكَ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: فَقَالَ لِي: ((يَا أُسَامَةُ أَقَتَلْتَهُ بَعْدَمَا قَالَ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ؟)) قَالَ: قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ إِنَّمَا كَانَ مُتَعَوِّذًا، قَالَ: ((أَقَتَلْتَهُ بَعْدَ أَنْ قَالَ: لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ؟)) قَالَ: فَمَا زَالَ يُكَرِّرُهَا عَلَيَّ حَتَّى تَمَنَّيْتُ أَنِّي لَمْ أَكُنْ أَسْلَمْتُ قَبْلَ ذَلِكَ الْيَوْمِ.

[راجع: ٤٢٦٩]

ज़ैद बिन हारिषा (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान करते हुए कहा कि हमें रसूलुल्लाह (ﷺ) ने क़बीला जुहैना की एक शाख़ की तरफ़ (मुहिम पर) भेजा। बयान किया कि फिर हमने उन लोगों को सुबह के वक़्त जा लिया और उन्हें शिकस्त दे दी। रावी ने बयान किया कि मैं और क़बीला अंसार के एक साहब क़बीला जुहैना के एक शख़्स तक पहुँचे और जब हमने उसे घेर लिया तो उसने कहा कि, ला इलाहा इल्लल्लाह अंसारी सहाबी ने तो (ये सुनते ही) हाथ रोक लिया लेकिन मैंने अपने नेज़े से उसे क़त्ल कर दिया। रावी ने बयान किया कि जब हम वापस आए तो उस वाक़िया की ख़बर नबी करीम (ﷺ) को मिली। बयान किया कि फिर आँहज़रत (ﷺ) ने मुझसे फ़र्माया, उसामा! क्या तुमने कलिमा ला इलाहा इल्लल्लाह का इक़रार करने के बाद उसको क़त्ल कर डाला। मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! उसने सिर्फ़ जान बचाने के लिये उसका इक़रार किया था। आँहज़रत (ﷺ) ने फिर फ़र्माया तुमने उसे ला इलाहा इल्लल्लाह का इक़रार करने के बाद क़त्ल कर डाला। बयान किया आँहज़रत (ﷺ) उस जुम्ले को इतनी दफ़ा दोहराते रहे कि मेरे दिल में ये ख़्वाहिश पैदा हो गई कि काश! मैं उससे पहले मुसलमान न हुआ होता। (राजेअ : 4269)

तश्रीह : उसी दिन मुसलमान हुआ होता कि अगले गुनाह मेरे ऊपर न रहते। दूसरी रिवायत में यूँ है कि क्या तू ने उसका दिल चीरकर देख लिया था। मतलब ये है कि दिल का हाल अल्लाह को मा'लूम है, जब उसने ज़ुबान से कलिमा तौहीद पढ़ा तो उसको छोड़ देना था, मुसलमान समझता था। इस हदीष से कलिमा तौहीद पढ़ने वाले का मुक़ाम समझा जा सकता है काश! हमारे वो उलमा-ए-किराम व वाऐज़ीन हज़रात जो बात बात पर तीर कुफ़्र चलाते रहते हैं और अपने मुख़ालिफ़ को फ़ौरन काफ़िर बेईमान कह डालते हैं काश! इस हदीष पर ग़ौर कर सकें और अपने तर्ज़े अमल पर नज़रे षानी कर सकें, लेकिन,

बड़ी मुश्किल से होता है चमन में दीदावर पैदा

٦٨٧٣- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، حَدَّثَنَا يَزِيدُ، عَنْ أَبِي الْخَيْرِ، عَنِ الصُّنَابِحِيِّ، عَنْ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: إِنِّي مِنَ النُّقَبَاءِ الَّذِينَ بَايَعُوا رَسُولَ اللهِ ﷺ، بَايَعْنَاهُ عَلَى أَنْ لاَ نُشْرِكَ بِاللهِ شَيْئًا، وَلاَ

6873. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमसे लैष बिन सअ़द ने बयान किया, कहा हमसे यज़ीद ने बयान किया, उनसे अबुल ख़ैर ने, उनसे सनाबिही ने और उनसे उ़बादह बिन सामित (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं उन नक़ीबों में से था जिन्होंने (मिना मे लैलतुल उ़क़्बा के मौक़े पर) रसूलुल्लाह (ﷺ) से बेअ़त की थी। हमने उसकी बेअ़त (अ़हद) की थी कि हम अल्लाह के साथ किसी को शरीक नहीं ठहराएँगे, हम चोरी नहीं करेंगे, ज़िना नहीं करेंगे, किसी की नाहक़ जान नहीं लेंगे, जो

نَزْنِي، وَلاَ نَسْرِقَ، وَلاَ نَقْتُلَ النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللهُ، وَلاَ نَنْتَهِبَ وَلاَ نَعْصِيَ بِالْجَنَّةِ إِنْ فَعَلْنَا فَإِنْ غَشِينَا مِنْ ذَلِكَ شَيْئًا كَانَ قَضَاءُ ذَلِكَ إِلَى اللهِ.

[راجع: ١٨]

अल्लाह ने ह़राम की है, हम लूटमार नहीं करेंगे और आप (ﷺ) की नाफ़र्मानी नहीं करेंगे और ये कि अगर हमने इस पर अ़मल किया तो हमें जन्नत मिलेगी और अगर हमने इनमें से किसी त़रह का गुनाह किया तो उसका फ़ैसला अल्लाह तबारक व तआ़ला के यहाँ होगा। (राजेअ़ : 18)

जो बेहतरीन फ़ैसला करने वाला है।

٦٨٧٤- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا جُوَيْرِيَةُ، عَنْ نَافِعٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((مَنْ حَمَلَ عَلَيْنَا السِّلاَحَ فَلَيْسَ مِنَّا)). رَوَاهُ أَبُو مُوسَى عَنِ النَّبِيِّ ﷺ.

[طرفه في: ٧٠٧٠]

6874. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे जुवैरिया ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ़ ने बयान किया और उनसे अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जिसने हम पर हथियार उठाया वो हममें से नहीं है। ह़ज़रत मूसा (रज़ि.) ने भी नबी करीम (ﷺ) से ये ह़दीष़ रिवायत की है। (दीगर मक़ाम : 7070)

अगर मुबाह़ समझकर उठाता है तो काफ़िर होगा और जो मुबाह़ नहीं समझता तो काफ़िर नहीं हुआ मगर काफ़िरों जैसा काम किया इसलिये तग़लीज़न फ़र्माया कि वो मुसलमान नहीं है बल्कि काफ़िर है।

٦٨٧٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ الْمُبَارَكِ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، حَدَّثَنَا أَيُّوبُ وَ يُونُسُ عَنِ الْحَسَنِ، عَنِ الأَحْنَفِ بْنِ قَيْسٍ قَالَ : ذَهَبْتُ لأَنْصُرَ هَذَا الرَّجُلَ فَلَقِيَنِي أَبُو بَكْرَةَ فَقَالَ: أَيْنَ تُرِيدُ : قُلْتُ : أَنْصُرُ هَذَا الرَّجُلَ قَالَ: ارْجِعْ فَإِنِّي سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((إِذَا الْتَقَى الْمُسْلِمَانِ بِسَيْفَيْهِمَا فَالْقَاتِلُ وَالْمَقْتُولُ فِي النَّارِ)) قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ هَذَا الْقَاتِلُ فَمَا بَالُ الْمَقْتُولِ؟ قَالَ : ((إِنَّهُ كَانَ حَرِيصًا عَلَى قَتْلِ صَاحِبِهِ)).[راجع: ٣١]

6875. हमसे अ़ब्दुर्रह़मान बिन मुबारक ने बयान किया, कहा हमसे ह़म्माद बिन ज़ैद ने, कहा हमसे अय्यूब और यूनुस ने, उनसे इमाम ह़सन बस़री ने, उनसे अह़नफ़ बिन क़ैस ने कि मैं उन स़ाह़ब (अ़ली बिन अबी त़ालिब रज़ि.) की जंगे जमल में मदद के लिये तैयार था कि अबू बक्रा (रज़ि.) से मेरी मुलाक़ात हुई। उन्होंने पूछा, कहाँ का इरादा है? मैंने कहा कि उन स़ाह़ब की मदद के लिये जाना चाहता हूँ। उन्होंने फ़र्माया कि वापस चले जाओ मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना है आँह़ज़रत (ﷺ) फ़र्माते थे कि जब दो मुसलमान तलवार खींचकर एक-दूसरे से भिड़ जाएँ तो क़ातिल और मक़्तूल दोनों दोज़ख़ में जाते हैं। मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! एक तो क़ातिल था लेकिन मक़्तूल को सज़ा क्यूँ मिलेगी? आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया वो भी अपने क़ातिल के क़त्ल पर आमादा था। (राजेअ़ : 31)

तश्रीह़ : मगर इत्तिफ़ाक़ से ये मौक़ा उसको न मिला ख़ुद मारा गया। ह़दीष़ का मत़लब ये है कि जब बिला वजहे शरई एक मुसलमान दूसरे मुसलमान को मारने की निय्यत करे।

बाब 3 : अल्लाह तआला ने सूरह बक़र: में फ़र्माया, ऐ ईमानवालों! तुममें जो लोग

क़त्ल किये जाएँ उनका क़िसास फ़र्ज़ किया गया है। आज़ाद के बदले मे आज़ाद और ग़ुलाम के बदले में ग़ुलाम और औरत के बदले में औरत। हाँ! जिस किसी को उसके फ़रीक़े मुक़ाबिल की तरफ़ से क़िसास का कोई हिस्सा माफ़ कर दिया जाए सौ मुतालबा मा'कूल और नर्म तरीक़ पर करना चाहिये और दियत को उस फ़रीक़ के पास ख़ूबी से पहुँचा देना चाहिये। ये तुम्हारे परवरदिगार की तरफ़ से रिआयत और मेहरबानी है सो जो कोई इसके बाद भी ज़्यादती करे उसके लिये आख़िरत में दर्दनाक अज़ाब है। (अल बक़र: : 178)

٣- باب قَوْلِ اللهِ تَعَالَى :

﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِصَاصُ فِي الْقَتْلَى الْحُرُّ بِالْحُرِّ وَالْعَبْدُ بِالْعَبْدِ وَالأُنْثَى بِالأُنْثَى فَمَنْ عُفِيَ لَهُ مِنْ أَخِيهِ شَيْءٌ فَاتِّبَاعٌ بِالْمَعْرُوفِ وَأَدَاءٌ إِلَيْهِ بِإِحْسَانٍ ذَلِكَ تَخْفِيفٌ مِنْ رَبِّكُمْ وَرَحْمَةٌ فَمَنِ اعْتَدَى بَعْدَ ذَلِكَ فَلَهُ عَذَابٌ أَلِيمٌ﴾ [البقرة : ١٧٨].

बाब 4 : हाकिम का क़ातिल से पूछगछ करना यहाँ तक कि वो इक़रार कर ले और हुदूद में इक़रार (इष्बाते जुर्म के लिये) काफ़ी ह

6876. हमसे हज्जाज बिन मिन्हाल ने बयान किया, कहा हमसे हम्माम बिन यह्या ने बयान किया, उनसे क़तादा ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि एक यहूदी ने एक लड़की का सर दो पत्थरों के बीच में रखकर कुचल दिया फिर उस लड़की से पूछा गया कि ये किसने किया है? फ़लाँ ने फ़लाँ ने? आख़िर जब उस यहूदी का नाम लिया गया (तो लड़की ने सर के इशारे से हाँ कहा) फिर यहूदी को नबी करीम (ﷺ) के यहाँ लाया और उससे पूछगछ की जाती रही यहाँ तक कि उसने जुर्म का इक़रार कर लिया चुनाँचे उसका सर भी पत्थरों से कुचला गया। (राजेअ : 2413)

٤- باب سُؤَالِ الْقَاتِلِ حَتَّى يُقِرَّ وَالإِقْرَارِ فِي الْحُدُودِ

٦٨٧٦- حَدَّثَنَا حَجَّاجُ بْنُ مِنْهَالٍ، حَدَّثَنَا هَمَّامٌ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رضي الله عَنْهُ أَنَّ يَهُودِيًّا رَضَّ رَأْسَ جَارِيَةٍ بَيْنَ حَجَرَيْنِ فَقِيلَ لَهَا: مَنْ فَعَلَ بِكِ هَذَا أَفُلاَنٌ أَوْ فُلاَنٌ؟ حَتَّى سُمِّيَ الْيَهُودِيُّ فَأُتِيَ بِهِ النَّبِيُّ ﷺ فَلَمْ يَزَلْ بِهِ حَتَّى أَقَرَّ فَرُضَّ رَأْسُهُ بِالْحِجَارَةِ.

[راجع: ٢٤١٣]

तश्रीह : इस हदीष से हनफ़िया का रद्द हुआ जो कहते हैं कि क़िसास हमेशा तलवार ही से लिया जाएगा और ये भी षाबित हुआ कि मर्द औरत के बदले क़त्ल किया जाएगा। कुछ लोगों ने इससे दलील ली है कि इज्माअ का मुंकिर काफ़िर है मगर ये सह़ीह़ नहीं है। ऐसी इज्माई बात का मुंकिर काफ़िर है जिसका वजूब शरीअत से तवातरन षाबित हो लेकिन जिस मसले का षुबूत हदीष सह़ीह़ मुतवातिर या आयते क़ुर्आन से षाबित न हो और उसमें कोई इज्माअ का ख़िलाफ़ करे तो वो काफ़िर न होगा। क़ाज़ी अयाज़ ने कहा जो आलिम की हदूष का मुंकिर हो और उसे क़दीम कहे वो काफ़िर है और जमाअत के छोड़ने में बाग़ी और रहज़न और उस क़ौल से मुड़ने वाले और इमामे बरहक़ से मुख़ालफ़त करने वाले भी आ गये उनका भी क़त्ल दुरुस्त है।

बाब 5 : जब किसी ने पत्थर या डंडे से किसी को क़त्ल किया

٥- باب إِذَا قَتَلَ بِحَجَرٍ أَوْ بِعَصًا

इमाम बुख़ारी (रह़.) ने बाब का तर्जुमा गोल रखा क्योंकि इसमें इख़्तिलाफ़ है कि इस सूरत में क़ातिल को भी पत्थर या

लकड़ी से क़त्ल करेंगे या तलवार से। ह़नफ़िया कहते हैं कि हमेशा क़िसास़ तलवार से लिया जाएगा और जुम्हूर उ़लमा कहते हैं कि जिस त़रह़ क़ातिल ने क़त्ल किया है उस त़रह़ भी क़िसास़ ले सकते हैं।

٦٨٧٧- حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ، قَالَ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ إِدْرِيسَ، عَنْ شُعْبَةَ، عَنْ هِشَامِ بْنِ زَيْدِ بْنِ أَنَسٍ عَنْ جَدِّهِ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ قَالَ: خَرَجَتْ جَارِيَةٌ عَلَيْهَا أَوْضَاحٌ بِالْمَدِينَةِ قَالَ: فَرَمَاهَا يَهُودِيٌّ بِحَجَرٍ قَالَ: فَجِيءَ بِهَا إِلَى النَّبِيِّ ﷺ وَبِهَا رَمَقٌ فَقَالَ لَهَا رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((فُلاَنٌ قَتَلَكِ؟)) فَرَفَعَتْ رَأْسَهَا فَأَعَادَ عَلَيْهَا قَالَ: ((فُلاَنٌ قَتَلَكِ)) فَرَفَعَتْ رَأْسَهَا فَقَالَ لَهَا فِي الثَّالِثَةِ: ((فُلاَنٌ قَتَلَكِ؟)) فَخَفَضَتْ رَأْسَهَا فَدَعَا بِهِ رَسُولُ اللهِ ﷺ فَقَتَلَهُ بَيْنَ الْحَجَرَيْنِ. [راجع: ٢٤١٣]

6877. हमसे मुह़म्मद ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुल्लाह बिन इदरीस ने ख़बर दी, उन्हें शुअ़बा ने, उन्हें हिशाम बिन ज़ैद बिन अनस ने, उनसे उनके दादा अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि मदीना मुनव्वरह़ में एक लड़की चाँदी के ज़ेवर पहने बाहर निकली। रावी ने बयान किया कि फिर उसे एक यहूदी ने पत्थर से मार दिया। जब उसे नबी करीम (ﷺ) के पास लाया गया तो अभी उसमें जान बाक़ी थी। आँह़ज़रत (ﷺ) ने पूछा तुम्हें फ़लाँ ने मारा है? उस पर लड़की ने अपना सर (इंकार के लिये) उठाया फिर आँह़ज़रत (ﷺ) ने पूछा तुम्हें फ़लाँ ने मारा है? लड़की ने उस पर भी सर उठाया। तीसरी मर्तबा आँह़ज़रत (ﷺ) ने पूछा फ़लाँ ने तुम्हें मारा है? उस पर लड़की ने अपना सर नीचे की त़रफ़ झुका लिया (इक़रार करते हुए झुका लिया) चुनाँचे आँह़ज़रत (ﷺ) ने उस शख़्स़ को बुलाया तब आप (ﷺ) ने दो पत्थरों से कुचल कर उसको क़त्ल कराया। (राजेअ़ : 2413)

٦- باب قَوْلِ اللهِ تَعَالَى:
﴿أَنَّ النَّفْسَ بِالنَّفْسِ وَالْعَيْنَ بِالْعَيْنِ وَالأَنْفَ بِالأَنْفِ وَالأُذُنَ بِالأُذُنِ وَالسِّنَّ بِالسِّنِّ، وَالْجُرُوحَ قِصَاصٌ فَمَنْ تَصَدَّقَ بِهِ فَهُوَ كَفَّارَةٌ لَهُ، وَمَنْ لَمْ يَحْكُمْ بِمَا أَنْزَلَ اللهُ فَأُولَئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ﴾ [المائدة: ٤٥].

बाब 6 : अल्लाह तआ़ला ने सूरह माइदह़ में फ़र्माया कि

जान का बदला जान है और आँख का बदला आँख और नाक का बदला नाक और कान का बदला कान और दांत का बदला दांत और ज़ख़्मों में क़िसास़ है, सो कोई उसे माफ़ कर दे तो वो उसकी त़रफ़ से कफ़्फ़ारा हो जाएगा और जो कोई अल्लाह के नाज़िल किये हुए अह़काम के मुवाफ़िक़ फ़ैसला न करे तो वो ज़ालिम हैं। (अल माइदह़ : 45)

٦٨٧٨- حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مُرَّةَ، عَنْ مَسْرُوقٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((لاَ يَحِلُّ دَمُ امْرِىءٍ مُسْلِمٍ يَشْهَدُ أَنْ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ وَأَنِّي رَسُولُ اللهِ إِلاَّ بِإِحْدَى ثَلاَثٍ: النَّفْسُ بِالنَّفْسِ، وَالثَّيِّبُ الزَّانِي، وَالْمَارِقُ مِنَ الدِّينِ التَّارِكُ الْجَمَاعَةَ)).

6878. हमसे उ़मर बिन ह़फ़्स़ ने बयान किया, कहा हमसे मेरे वालिद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे आ'मश ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुर्रह़ ने बयान किया, उनसे मसरूक़ ने बयान किया और उनसे अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया किसी मुसलमान का ख़ून जो कलिमा ला इलाहा इल्लल्लाह मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह का मानने वाला हो ह़लाल नहीं है अल्बत्ता तीन सूरतों में जाइज़ है। जान के बदले जान लेने वाला, शादी शुदा होकर ज़िना करने वाला और इस्लाम से निकल जाने वाला (मुर्तद) जमाअ़त को छोड़ देने वाला।

बाब 7 : पत्थर से क़िसास़ लेने का बयान

٧- باب مَنْ أَقَادَ بِالْحَجَرِ

6879. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन जा'फ़र ने बयान किया, उनसे शुअबा ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन ज़ैद और उनसे हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि एक यहूदी ने एक लड़की को उसके चाँदी के ज़ेवर के लालच में मार डाला था। उसने लड़की को पत्थर से मारा फिर लड़की नबी करीम (ﷺ) के पास लाई गई तो उसके जिस्म में जान बाक़ी थी। आँहज़रत (ﷺ) ने पूछा क्या तुम्हें फ़लाँ ने मारा है? उसने सर के इशारे से इंकार किया। आँहज़रत (ﷺ) ने दोबारा पूछा, क्या तुम्हें फ़लाँ ने मारा है? इस मर्तबा भी उसने सर के इशारे से इंकार किया। आँहज़रत (ﷺ) ने जब तीसरी बार पूछा तो उसने सर के इशारे से इक़रार किया। चुनाँचे आँहज़रत (ﷺ) ने यहूदी को दो पत्थरों में कुचलकर क़त्ल कर दिया। (राजेअ : 2413).

٦٨٧٩- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ هِشَامِ بْنِ زَيْدٍ، عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ يَهُودِيًّا قَتَلَ جَارِيَةً عَلَى أَوْضَاحٍ لَهَا، فَقَتَلَهَا بِحَجَرٍ فَجِيءَ بِهَا إِلَى النَّبِيِّ ﷺ وَبِهَا رَمَقٌ فَقَالَ: ((أَقَتَلَكِ؟)) فُلاَنٌ فَأَشَارَتْ بِرَأْسِهَا أَنْ لاَ، ثُمَّ قَالَ الثَّانِيَةَ: فَأَشَارَتْ بِرَأْسِهَا أَنْ لاَ، ثُمَّ سَأَلَهَا الثَّالِثَةَ فَأَشَارَتْ بِرَأْسِهَا أَنْ نَعَمْ، فَقَتَلَهُ النَّبِيُّ ﷺ بِحَجَرَيْنِ. [راجع: ٢٤١٣]

बाब 8 : जिसका कोई क़त्ल कर दिया गया हो उसे दो चीज़ों में एक का इख़्तियार है

٨- باب مَنْ قُتِلَ لَهُ قَتِيلٌ فَهُوَ بِخَيْرِ النَّظَرَيْنِ

क़िसास़ या दियत जो बेहतर समझे इख़्तियार करे।

6880. हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, कहा हमसे शैबान नह्वी ने, उनसे यह्या ने, उनसे अबू सलमा ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि क़बीला ख़ुज़ाआ के लोगों ने एक आदमी को क़त्ल कर दिया था। और अ़ब्दुल्लाह बिन रजाअ ने कहा, उनसे हर्ब बिन शद्दाद ने, उनसे यह्या बिन अबी कष़ीर ने, उनसे अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रहमान ने बयान किया और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि फ़तह मक्का के मौक़े पर क़बीला ख़ुज़ाआ ने बनो लैष़ के एक शख़्स़ (इब्ने अष्वअ) को अपने जाहिलियत के मक़्तूल के बदले में क़त्ल कर दिया था। उस पर रसूलुल्लाह (ﷺ) खड़े हुए और फ़र्माया अल्लाह तआला ने मक्का मुकर्रमा से हाथियों के (शाहे यमन अबरहू के) लश्कर को रोक दिया था लेकिन उसने अपने रसूल और मोमिनों को उस पर ग़ल्बा दिया। हाँ! ये मुझसे पहले किसी के लिये हलाल नहीं हुआ था और न मेरे बाद किसी के लिये हलाल होगा और मेरे लिये भी दिन को सिर्फ़ एक साअ़त (घड़ी) के लिये। अब इस

٦٨٨٠- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ، حَدَّثَنَا شَيْبَانُ، عَنْ يَحْيَى، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ خُزَاعَةَ قَتَلُوا رَجُلاً. وَقَالَ عَبْدُ اللهِ بْنُ رَجَاءٍ : حَدَّثَنَا حَرْبٌ، عَنْ يَحْيَى، حَدَّثَنَا أَبُو سَلَمَةَ حَدَّثَنَا أَبُو هُرَيْرَةَ أَنَّهُ عَامَ فَتْحِ مَكَّةَ قَتَلَتْ خُزَاعَةُ رَجُلاً مِنْ بَنِي لَيْثٍ بِقَتِيلٍ لَهُمْ فِي الْجَاهِلِيَّةِ فَقَامَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: ((إِنَّ اللهَ حَبَسَ عَنْ مَكَّةَ الْفِيلَ، وَسَلَّطَ عَلَيْهِمْ رَسُولَهُ وَالْمُؤْمِنِينَ أَلاَ وَإِنَّهَا لَمْ تَحِلَّ لأَحَدٍ قَبْلِي وَلاَ تَحِلُّ لأَحَدٍ مِنْ بَعْدِي، أَلاَ وَإِنَّمَا

أُحِلَّتْ لِي سَاعَةً مِنْ نَهَارٍ، أَلاَ وَإِنَّهَا سَاعَتِي هَذِهِ حَرَامٌ لاَ يُخْتَلَى شَوْكُهَا، وَلاَ يُعْضَدُ شَجَرُهَا وَلاَ يَلْتَقِطُ سَاقِطَتَهَا إِلاَّ مُنْشِدٌ وَمَنْ قُتِلَ لَهُ قَتِيلٌ فَهُوَ بِخَيْرِ النَّظَرَيْنِ، إِمَّا يُودَى وَإِمَّا يُقَادُ)) فَقَامَ رَجُلٌ مِنْ أَهْلِ الْيَمَنِ يُقَالُ لَهُ أَبُو شَاهٍ فَقَالَ: اكْتُبْ لِي يَا رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((اكْتُبُوا لأَبِي شَاهٍ)) ثُمَّ قَامَ رَجُلٌ مِنْ قُرَيْشٍ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ إِلاَّ الإِذْخِرَ فَإِنَّمَا نَجْعَلُهُ فِي بُيُوتِنَا وَقُبُورِنَا فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((إِلاَّ الإِذْخِرَ)).

وَتَابَعَهُ عُبَيْدُ اللهِ عَنْ شَيْبَانَ فِي الْفِيلِ قَالَ بَعْضُهُمْ عَنْ أَبِي نُعَيْمٍ : الْقَتْلَ وَقَالَ عُبَيْدُ اللهِ: إِمَّا أَنْ يُقَادَ أَهْلُ الْقَتِيلِ.

[راجع: ١١٢]

वक़्त से इसकी हुर्मत फिर क़ायम हो गई। (सुन लो) इसका कांटा न उखाड़ा जाए, इसका पेड़ न तराशा जाए और सिवा इसके जो ऐलान करने का इरादा रखता है कोई भी यहाँ की गिरी हुई चीज़ न उठाये और देखो जिसका कोई अ़ज़ीज़ क़त्ल कर दिया जाए तो उसे दो बातों में इख़्तियार है या उसे उसका ख़ूबहा दिया जाए या क़िस़ास़ दिया जाए। ये वा'ज़ सुनकर उस पर एक यमनी स़ाहब अबू शाह नामी खड़े हुए और कहा या रसूलल्लाह! इस वा'ज़ को मेरे लिये लिखवा दीजिए। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया ये वा'ज़ अबू शाह के लिये लिख दो। उसके बाद क़ुरैश के एक स़ाहब अ़ब्बास (रज़ि.) खड़े हुए और कहा या रसूलल्लाह (ﷺ)! इज़्ख़र घास की इजाज़त फ़र्मा दीजिए क्योंकि हम उसे अपने घरों में और अपनी क़ब्रों में बिछाते हैं। चुनाँचे आँह़ज़रत (ﷺ) ने इज़्ख़र घास उखाड़ने की इजाज़त दे दी। और इस रिवायत की मुताबअ़त उ़बैदुल्लाह ने शैबान के वास्ते से हाथियों के वाक़िये के ज़िक्र के सिलसिले में की। कुछ ने अबू नुऐ़म के ह़वाले से अल क़त्ल का लफ़्ज़ रिवायत किया है और उ़बैदुल्लाह ने बयान किया कि या मक़्तूल के घर वाला को क़िस़ास़ दिया जाए। (राजेअ़ : 112)

ह़र्ब बिन शद्दाद के साथ इस ह़दीष़ को उ़बैदुल्लाह बिन मूसा ने भी शैबान से रिवायत किया। उसमें भी हाथी का ज़िक्र है। कुछ लोगों ने अबू नुऐ़म से फ़ील के बदले क़त्ल का लफ़्ज़ रिवायत किया है और उ़बैदुल्लाह बिन मूसा ने अपनी रिवायत में रवाहु मुस्लिम) व इम्मा युक़ादु के बदले यूँ कहा इम्मा अंय्युअ़तद्दियतु व इम्मा अंय्युक़ाद अहलुल कतील।

٦٨٨١- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ عَمْرٍو، عَنْ مُجَاهِدٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ : كَانَتْ فِي بَنِي إِسْرَائِيلَ قِصَاصٌ وَلَمْ تَكُنْ فِيهِمُ الدِّيَةُ، فَقَالَ اللهُ لِهَذِهِ الأُمَّةِ: ﴿كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِصَاصُ فِي الْقَتْلَى﴾ [البقرة : ١٧٨] إِلَى ﴿فَمَنْ عُفِيَ لَهُ مِنْ أَخِيهِ شَيْءٌ﴾. قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: فَالْعَفْوُ أَنْ يَقْبَلَ

6881. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, उनसे अ़म्र बिन दीनार ने बयान किया, उनसे मुजाहिद बिन जुबैर ने बयान किया, और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि बनी इस्राईल में सिर्फ़ क़िस़ास़ का रिवाज था, दियत की स़ूरत नहीं थी। फिर इस उम्मत के लिये ये हुक्म नाज़िल हुआ कि कुतिब अ़लैकुमुल क़िस़ास़ु फ़िल्क़त्ल अल्अख़ (सूरह बक़रः : 178) इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा फ़मन उ़फ़िय लहू से यही मुराद है कि मक़्तूल के वारिष़ क़त्ले अ़मदः में दियत पर राज़ी हो जाएँ और इत्तिबाअ़ बिल मअ़रूफ़ से ये मुराद है कि मक़्तूल के वारिष़ दस्तूर के मुवाफ़िक़ क़ातिल

الدِّيَةَ فِي الْعَمْدِ قَالَ: ﴿فَاتِّبَاعٌ بِالْمَعْرُوفِ﴾ أَنْ يَطْلُبَ بِمَعْرُوفٍ وَيُؤَدِّيَ بِإِحْسَانٍ. [راجع: ٤٤٩٨]

से दियत का तक़ाज़ा करते व आदाउ इलैहि बिइह्सान से ये मुराद है कि क़ातिल अच्छी तरह ख़ुशदिली से दियत अदा करे। (राजेअ: 4498)

٩- باب مَنْ طَلَبَ دَمَ امْرِىءٍ بِغَيْرِ حَقٍّ

बाब 9 : जो कोई नाह़क़ किसी का ख़ून करने की फ़िक्र में हो उसका गुनाह

٦٨٨٢- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي حُسَيْنٍ، حَدَّثَنَا نَافِعُ بْنُ جُبَيْرٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: ((أَبْغَضُ النَّاسِ إِلَى اللهِ ثَلاَثَةٌ: مُلْحِدٌ فِي الْحَرَمِ، وَمُبْتَغٍ فِي الإِسْلاَمِ سُنَّةَ الْجَاهِلِيَّةِ، وَمُطَّلِبُ دَمِ امْرِىءٍ بِغَيْرِ حَقٍّ لِيُهَرِيقَ دَمَهُ)).

6882. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उन्हें अ़ब्दुल्लाह बिन अबी हुसैन ने, उनसे नाफ़ेअ़ बिन जुबैर ने बयान किया और उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि अल्लाह तआ़ला के नज़दीक लोगों (मुसलमानों) में सबसे ज़्यादा मब्ग़ूज़ तीन त़रह के लोग हैं। ह़रम में ज़्यादती करने वाला, दूसरा जो इस्लाम में जाहिलियत की रस्मों पर चलने का ख़्वाहिशमंद हो, तीसरे वो शख़्स जो किसी आदमी का नाह़क़ ख़ून करने के लिये उसके पीछे लगे।

١٠- باب الْعَفْوِ فِي الْخَطَأِ بَعْدَ الْمَوْتِ

बाब 10 : क़त्ले ख़त़ा में मक़्तूल की मौत के बाद उसके वारिष़ का माफ़ करना

٦٨٨٣- حَدَّثَنَا فَرْوَةُ، حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ مُسْهِرٍ، عَنْ هِشَامٍ، عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ هُزِمَ الْمُشْرِكُونَ يَوْمَ أُحُدٍ. وَحَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا أَبُو مَرْوَانَ يَحْيَى بْنُ أَبِي زَكَرِيَّا، عَنْ هِشَامٍ، عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: صَرَخَ إِبْلِيسُ يَوْمَ أُحُدٍ فِي النَّاسِ يَا عِبَادَ اللهِ أُخْرَاكُمْ فَرَجَعَتْ أُولاَهُمْ عَلَى أُخْرَاهُمْ حَتَّى قَتَلُوا الْيَمَانَ فَقَالَ حُذَيْفَةُ: أَبِي أَبِي فَقَتَلُوهُ؟ فَقَالَ حُذَيْفَةُ: غَفَرَ اللهُ لَكُمْ قَالَ: وَقَدْ كَانَ انْهَزَمَ مِنْهُمْ قَوْمٌ حَتَّى لَحِقُوا بِالطَّائِفِ.

6883. हमसे फ़र्वा बिन अबिल मग़रा ने बयान किया, कहा हमसे अ़ली बिन मिस्हर ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन ड़र्वा ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने कि मुश्रिकीन ने उहुद की लड़ाई में पहले शिकस्त खाई थी (दूसरी सनद) इमाम बुख़ारी (रह.) ने कहा मुझसे मुहम्मद बिन ह़र्ब ने बयान किया, उनसे अबू मरवान यह्या इब्ने अबी ज़करिया ने बयान किया, उनसे हिशाम ने, उनसे ड़र्वा ने और उनसे ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि इब्लीस उहुद की लड़ाई में लोगों में चीखा। ऐ अल्लाह के बन्दों! अपने पीछे वालों से, मगर ये सुनते ही आगे के मुसलमान पीछे की त़रफ़ पलट पड़े यहाँ तक कि मुसलमानों ने (ग़लत़ी में) हुज़ैफ़ह के वालिद ह़ज़रत यमान (रज़ि.) को क़त्ल कर दिया। उस पर हुज़ैफ़ह (रज़ि.) ने कहा कि ये मेरे वालिद हैं, मेरे वालिद! लेकिन उन्हें क़त्ल ही कर डाला। फिर हुज़ैफ़ह (रज़ि.) ने कहा अल्लाह तुम्हारी मग़्फ़िरत करे। बयान किया कि

मुश्रिकीन में की एक जमाअत मैदान से भागकर ताइफ़ तक पहुँच गई थी। (राजेअ : 3290)

[راجع: ٣٢٩٠]

बाब का तर्जुमा उससे निकला कि मुसलमानों ने ख़ता से हुज़ैफ़ह (रज़ि.) के वालिद मुसलमान को मार डाला और हुज़ैफ़ह (रज़ि.) ने माफ़ कर दिया कि दियत का मुतालबा नहीं चाहते हैं लेकिन आँहज़रत (ﷺ) ने अपने पास से दियत दिलाई।

बाब 11 : अल्लाह तआला ने सूरह निसा में फ़र्माया, और ये किसी मोमिन के लिये मुनासिब नहीं कि वो किसी मोमिन को नाहक़ क़त्ल कर दे

١١- باب قَوْلِ اللهِ تَعَالَى :

बजुज़ इसके कि ग़लती से ऐसा हो जाए और जो कोई किसी मोमिन को ग़लती से क़त्ल कर डाले तो एक मुसलमान ग़ुलाम का आज़ाद करना उस पर वाजिब है और दियत भी जो उसके अज़ीज़ों के हवाले की जाए सिवा उसके कि वो लोग ख़ुद ही उसे माफ़ कर दें तो अगर वो ऐसी क़ौम में हो जो तुम्हारी दुश्मन है इस हाल में कि वो बज़ाते ख़ुद मोमिन है तो एक मुसलमान ग़ुलाम का आज़ाद करना वाजिब है और अगर ऐसी क़ौम में से हो कि तुम्हारे और उनके बीच मुआहिदा है तो दियत वाजिब है जो उसके अज़ीज़ों के हवाले की जाए और एक मुस्लिम ग़ुलाम का आज़ाद करना भी। फिर जिसको ये न मयस्सर हों उस पर दो महीने के लगातार रोज़े रखना वाजिब है, ये तौबा अल्लाह तआला की तरफ़ से है और अल्लाह बड़ा इल्म वाला है, बड़ा हिक्मत वाला है। (सूरह निसा : 92)

﴿وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ أَنْ يَقْتُلَ مُؤْمِنًا إِلاَّ خَطَأً وَمَنْ قَتَلَ مُؤْمِنًا خَطَأً فَتَحْرِيرُ رَقَبَةٍ مُؤْمِنَةٍ وَدِيَةٌ مُسَلَّمَةٌ إِلَى أَهْلِهِ إِلاَّ أَنْ يَصَّدَّقُوا فَإِنْ كَانَ مِنْ قَوْمٍ عَدُوٍّ لَكُمْ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَتَحْرِيرُ رَقَبَةٍ مُؤْمِنَةٍ وَإِنْ كَانَ مِنْ قَوْمٍ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ مِيثَاقٌ فَدِيَةٌ مُسَلَّمَةٌ إِلَى أَهْلِهِ وَتَحْرِيرُ رَقَبَةٍ مُؤْمِنَةٍ فَمَنْ لَمْ يَجِدْ فَصِيَامُ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ تَوْبَةً مِنَ اللهِ وَكَانَ اللهُ عَلِيمًا حَكِيمًا﴾ [النساء: ٩٢].

बाब 12 : जब क़ातिल एक मर्तबा क़त्ल का इक़रार कर ले तो उसे क़त्ल कर दिया जाएगा

١٢- باب إِذَا أَقَرَّ بِالْقَتْلِ مَرَّةً قُتِلَ بِهِ

6884. मुझसे इस्हाक़ ने बयान किया, कहा हमको हिब्बान बिन हिलाल ने ख़बर दी, कहा हमसे हम्माम बिन यह्या ने बयान किया, कहा हमसे क़तादा ने बयान किया और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि एक यहूदी ने एक लड़की का सर दो पत्थरों के बीच कुचल दिया था। उस लड़की से पूछा गया कि ये तुम्हारे साथ किसने किया? क्या फ़लाँ ने किया है? फ़लाँ ने किया है? आख़िर जब उस यहूदी का नाम लिया गया तो उसने अपने सर के इशारे से (हाँ) कहा फिर यहूदी लाया गया और उसने इक़रार कर लिया चुनाँचे नबी करीम (ﷺ) के हुक्म से उसका भी सर पत्थर से कुचल दिया गया। हम्माम ने दो पत्थरों का ज़िक्र किया। (राजेअ : 2413)

٦٨٨٤- حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ، أَخْبَرَنَا حَبَّانُ، حَدَّثَنَا هَمَّامٌ، حَدَّثَنَا قَتَادَةُ، حَدَّثَنَا أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ أَنَّ يَهُودِيًّا رَضَّ رَأْسَ جَارِيَةٍ بَيْنَ حَجَرَيْنِ فَقِيلَ لَهَا: مَنْ فَعَلَ بِكِ هَذَا أَفُلاَنٌ أَفُلاَنٌ؟ حَتَّى سُمِّيَ الْيَهُودِيُّ فَأَوْمَأَتْ بِرَأْسِهَا فَجِيءَ بِالْيَهُودِيِّ فَاعْتَرَفَ فَأَمَرَ بِهِ النَّبِيُّ ﷺ فَرُضَّ رَأْسُهُ بِالْحِجَارَةِ وَقَدْ قَالَ هَمَّامٌ : بِحَجَرَيْنِ.

[راجع: ٢٤١٣]

बाब 13 : औरत के बदले में मर्द का क़त्ल करना जो औरत का क़ातिल हो

١٣- باب قَتْلِ الرَّجُلِ بِالْمَرْأَةِ

6885. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे यज़ीद बिन ज़ुरैअ ने बयान किया, कहा हमसे सईद ने बयान किया, उनसे क़तादा ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने एक यहूदी को एक लड़की के बदले मे क़त्ल करा दिया था। यहूदी ने उस लड़की को चाँदी के ज़ेवरात के लालच में क़त्ल कर दिया था। (राजेअ : 2413)

٦٨٨٥- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ، حَدَّثَنَا سَعِيدٌ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَتَلَ يَهُودِيًّا بِجَارِيَةٍ قَتَلَهَا عَلَى أَوْضَاحٍ لَهَا. [راجع: ٢٤١٣]

बाब 14 : मर्दों और औरतों के बीच ज़ख़्मों में भी क़िसास लिया जाएगा

١٤- باب الْقِصَاصُ بَيْنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَاءِ فِي الْجِرَاحَاتِ

अहले इल्म ने कहा है कि मर्द को औरत के बदला में क़त्ल किया जाएगा। हज़रत उमर (रज़ि.) ने कहा कि औरत से मर्द के क़त्ल मिष्ले अमद या उससे कम दूसरे ज़ख़्मों का क़िसास लिया जाए। यही क़ौल उमर बिन अब्दुल अज़ीज़, इब्राहीम, अबुज़्ज़िनाद का अपने असातिज़ा से मन्क़ूल है। और रबीअ की बहन ने नबी करीम (ﷺ) के ज़माने में एक शख़्स को ज़ख़्मी कर दिया था तो आँहज़रत (ﷺ) ने क़िसास का फ़ैसला फ़र्माया था।

وَقَالَ أَهْلُ الْعِلْمِ: يُقْتَلُ الرَّجُلُ بِالْمَرْأَةِ وَيُذْكَرُ عَنْ عُمَرَ تُقَادُ الْمَرْأَةُ مِنَ الرَّجُلِ فِي كُلِّ عَمْدٍ يَبْلُغُ نَفْسَهُ فَمَا دُونَهَا مِنَ الْجِرَاحِ وَبِهِ قَالَ عُمَرُ بْنُ عَبْدِ الْعَزِيزِ وَإِبْرَاهِيمُ وَأَبُو الزِّنَادِ عَنْ أَصْحَابِهِ وَجَرَحَتْ أُخْتُ الرُّبَيِّعِ إِنْسَانًا فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((الْقِصَاصُ)).

6886. हमसे उमर बिन अली फ़लास ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन सईद क़त्तान ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ष़ौरी ने बयान किया उनसे मूसा बिन अबी आइशा ने बयान किया, उनसे उबैदुल्लाह बिन अब्दुल्लाह ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) के चेहरे मे (मर्ज़ुल वफ़ात के मौक़े पर) आपकी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ हमने दवा डाली। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, कि मेरे हलक़ में दवा न डालो लेकिन हमने समझा कि मरीज़ होने की वजह से दवा पीने से नफ़रत कर रहे हैं लेकिन जब आपको होश हुआ तो फ़र्माया कि तुम जितने लोग घर में हो सबके हलक़ में ज़बरदस्ती दवा डाली जाए सिवा हज़रत अब्बास (रज़ि.) के कि वो उस वक़्त मौजूद नहीं थे। (राजेअ : 4458)

٦٨٨٦- حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عَلِيٍّ، حَدَّثَنَا يَحْيَى، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ أَبِي عَائِشَةَ، عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ عَبْدِ اللهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: لَدَدْنَا النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي مَرَضِهِ فَقَالَ: ((لاَ تَلُدُّونِي)) فَقُلْنَا: كَرَاهِيَةُ الْمَرِيضِ لِلدَّوَاءِ فَلَمَّا أَفَاقَ قَالَ: ((لاَ يَبْقَى أَحَدٌ مِنْكُمْ إِلاَّ لُدَّ غَيْرَ الْعَبَّاسِ فَإِنَّهُ لَمْ يَشْهَدْكُمْ)).
[راجع: ٤٤٥٨]

बाब 15 : जिसने अपना हक़ या क़िसास

١٥- باب مَنْ أَخَذَ حَقَّهُ أَوِ اقْتَصَّ

सुल्तान की इजाज़त के बग़ैर ले लिया

دُونِ السُّلْطَانِ

6887. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, कहा हमसे अबुज़्ज़िनाद ने बयान किया, उनसे अअ़रज ने बयान किया, उन्होंने हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना, बयान किया कि उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना, आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि हम आख़िरी उम्मत हैं लेकिन (क़यामत के दिन) सबसे आगे रहने वाले हैं। (राजेअ़ : 238)

٦٨٨٧- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، حَدَّثَنَا أَبُو الزِّنَادِ أَنَّ الأَعْرَجَ حَدَّثَهُ أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ يَقُولُ: إِنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((نَحْنُ الآخِرُونَ السَّابِقُونَ)). [راجع: ٢٣٨]

6888. और उसी इस्नाद के साथ (रिवायत है कि आँहज़रत ﷺ ने फ़र्माया) अगर कोई शख़्स तेरे घर में (किसी सूराख़ या जंगले वग़ैरह से) तुमसे इजाज़त लिये बग़ैर झांक रहा हो और तुम उसे कंकरी मारो जिससे उसकी आँख फूट जाए तो तुम पर कोई सज़ा नहीं है। (दीगर मक़ाम : 6902)

٦٨٨٨- وَبِإِسْنَادِهِ ((لَوِ اطَّلَعَ فِي بَيْتِكَ أَحَدٌ، وَلَمْ تَأْذَنْ لَهُ خَذَفْتَهُ بِحَصَاةٍ فَفَقَأْتَ عَيْنَهُ مَا كَانَ عَلَيْكَ مِنْ جُنَاحٍ)). [طرفه في : ٦٩٠٢].

न गुनाह होगा न दुनिया की कोई सज़ा लागू होगी।

6889. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या ने बयान किया, उनसे हुमैद ने कि एक साहब नबी करीम (ﷺ) के घर में झांक रहे थे तो आँहज़रत (ﷺ) ने उनकी तरफ़ तीर का फल बढ़ाया था। मैंने पूछा कि ये हदीष़ तुमसे किसने बयान की है? तो उन्होंने बयान किया हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने। (राजेअ़ : 6242)

٦٨٨٩- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا يَحْيَى، عَنْ حُمَيْدٍ أَنَّ رَجُلاً اطَّلَعَ فِي بَيْتِ النَّبِيِّ ﷺ فَسَدَّدَ إِلَيْهِ مِشْقَصًا فَقُلْتُ مَنْ حَدَّثَكَ بِهَذَا؟ قَالَ : أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ. [راجع: ٦٢٤٢]

बाब 16 : जब कोई हुजूम में मर जाए या मारा जाए तो उसका क्या हुक्म है?

١٦- باب إِذَا مَاتَ فِي الزِّحَامِ أَوْ قُتِلَ

6890. मुझसे इस्हाक़ बिन मंसूर ने बयान किया, कहा हमको अबू उसामा ने ख़बर दी, उन्हें हिशाम ने ख़बर दी, कहा हमको हमारे वालिद ने और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि उहुद की लड़ाई में मुश्रिकीन को पहले शिकस्त हो गई थी लेकिन इब्लीस ने चिल्लाकर कहा ऐ अल्लाह के बन्दा! पीछे की तरफ़ वालों से बचो! चुनाँचे आगे के लोग पलट पड़े और आगे वाले पीछे वालों से (जो मुसलमान ही थे) भिड़ गये। अचानक हुज़ैफ़ह (रज़ि.) ने देखा तो उनके वालिद यमान (रज़ि.) थे। हुज़ैफ़ह (रज़ि.) ने कहा अल्लाह के बन्दा! ये तो मेरे वालिद हैं, मेरे वालिद हैं, मेरे वालिद। बयान किया कि अल्लाह की क़सम

٦٨٩٠- حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ، أَخْبَرَنَا أَبُو أُسَامَةَ قَالَ هِشَامٌ: أَخْبَرَنَا عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ : لَمَّا كَانَ يَوْمُ أُحُدٍ هُزِمَ الْمُشْرِكُونَ. فَصَاحَ إِبْلِيسُ أَيْ عِبَادَ اللهِ أُخْرَاكُمْ، فَرَجَعَتْ أُولاَهُمْ فَاجْتَلَدَتْ هِيَ وَأُخْرَاهُمْ فَنَظَرَ حُذَيْفَةُ فَإِذَا هُوَ بِأَبِيهِ الْيَمَانِ فَقَالَ: أَيْ عِبَادَ اللهِ أَبِي أَبِي قَالَتْ: فَوَ اللهِ مَا احْتَجَزُوا حَتَّى

मुसलमान उन्हें क़त्ल करके ही हटे। उस पर हुज़ैफ़ह (रज़ि.) ने कहा अल्लाह तुम्हारी मग़्फ़िरत करे। उर्वा ने बयान किया कि इस वाक़िये का सदमा हज़रत हुज़ैफ़ह (रज़ि.) को आख़िर वक़्त तक रहा। (राजेअ : 3290)

قَتَلُوهُ فَقَالَ حُذَيْفَةُ : غَفَرَ اللهُ لَكُمْ. قَالَ عُرْوَةُ: فَمَا زَالَتْ فِي حُذَيْفَةَ مِنْهُ بَقِيَّةٌ حَتَّى لَحِقَ بِاللهِ. [راجع: ٣٢٩٠]

बाब 17 : अगर किसी ने ग़लती से अपने आप ही को मार डाला तो उसकी कोई दियत नहीं है

١٧- باب إِذَا قَتَلَ نَفْسَهُ خَطَأً فَلاَ دِيَةَ لَهُ

6891. हमसे मक्की बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे यज़ीद बिन अबी उबैद ने, और उनसे सलमा (रज़ि.) ने बयान किया कि हम नबी करीम (ﷺ) के साथ ख़ैबर की तरफ़ निकले। जमाअत के एक साहब ने कहा, आमिर! हमें अपनी हदी सुनाइये। उन्होंने हदी ख़्वानी शुरू की तो नबी करीम (ﷺ) ने पूछा कि कौन साहब गा-गाकर ऊँटों को हाँक रहे हैं? लोगों ने कहा कि आमिर हैं। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, अल्लाह उन पर रहम करे। सहाबा ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! आपने हमें आमिर से फ़ायदा क्यूँ नहीं उठा ने दिया। चुनाँचे आमिर (रज़ि.) उसी रात को अपनी ही तलवार से शहीद हो गये। लोगों ने कहा कि उनके आमाल बर्बाद हो गये, उन्होंने ख़ुदकुशी कर ली (क्योंकि एक यहूदी पर हमला करते वक़्त ख़ुद अपनी तलवार से ज़ख़्मी हो गये थे) जब मैं वापस आया और मैंने देखा कि लोग आपस में कह रहे हैं कि आमिर के आमाल बर्बाद हो गये तो मैं आँहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के नबी! आप पर मेरे बाप और माँ फ़िदा हों, ये लोग कहते हैं कि आमिर के सारे अमल बर्बाद हुए। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया जो शख़्स ये कहता है ग़लत कहता है। आमिर को दोहरा अज्र मिलेगा वो (अल्लाह के रास्ते में) मशक़्क़त उठाने वाले और जिहाद करने वाले थे और किस क़त्ल का अज्र उससे बढ़कर होगा? (राजेअ : 2477)

٦٨٩١- حَدَّثَنَا الْمَكِّيُّ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ أَبِي عُبَيْدٍ، عَنْ سَلَمَةَ قَالَ: خَرَجْنَا مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِلَى خَيْبَرَ فَقَالَ رَجُلٌ مِنْهُمْ : أَسْمِعْنَا يَا عَامِرُ مِنْ هُنَيْهَاتِكَ فَحَدَا بِهِمْ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((مَنِ السَّائِقُ؟)) قَالُوا: عَامِرٌ فَقَالَ: ((رَحِمَهُ اللهُ)) فَقَالُوا: يَا رَسُولَ اللهِ هَلاَّ أَمْتَعْتَنَا بِهِ فَأُصِيبَ صَبِيحَةَ لَيْلَتِهِ فَقَالَ الْقَوْمُ: حَبِطَ عَمَلُهُ قَتَلَ نَفْسَهُ، فَلَمَّا رَجَعْتُ وَهُمْ يَتَحَدَّثُونَ أَنَّ عَامِرًا حَبِطَ عَمَلُهُ، فَجِئْتُ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقُلْتُ: يَا نَبِيَّ اللهِ ﷺ فِدَاكَ أَبِي وَأُمِّي زَعَمُوا أَنَّ عَامِرًا حَبِطَ عَمَلُهُ، فَقَالَ ((كَذَبَ مَنْ قَالَهَا، إِنَّ لَهُ لأَجْرَيْنِ اثْنَيْنِ إِنَّهُ لَجَاهِدٌ مُجَاهِدٌ وَأَيُّ قَتْلٍ يَزِيدُهُ عَلَيْهِ)).

[راجع: ٢٤٧٧]

बाब 18 : जब किसी ने किसी को दांत से काटा और काटने वाले का दांत टूट गया तो उसकी कोई दियत नहीं है

١٨- باب إِذَا عَضَّ رَجُلاً فَوَقَعَتْ ثَنَايَاهُ

6892. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, कहा हमसे क़तादा ने बयान किया कि मैंने ज़ुरारह बिन अबी औफ़ा से सुना, उनसे इमरान

٦٨٩٢- حَدَّثَنَا آدَمُ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، حَدَّثَنَا قَتَادَةُ قَالَ : سَمِعْتُ زُرَارَةَ بْنَ أَوْفَى

बिन हुसैन (रज़ि.) ने कि एक शख़्स ने एक शख़्स के हाथ में दांत से काटा तो उसने अपना हाथ काटने वाले के मुँह में से खींच लिया जिससे उसके आगे के दो दांत टूट गये फिर दोनों अपना झगड़ा नबी करीम (ﷺ) के पास लाए तो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुम अपने ही भाई को इस तरह दांत से काटते हो जैसे ऊँट काटता है तुम्हें दियत नहीं मिलेगी।

عَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ أَنَّ رَجُلاً عَضَّ يَدَ رَجُلٍ فَنَزَعَ يَدَهُ مِنْ فَمِهِ فَوَقَعَتْ ثَنِيَّتَاهُ، فَاخْتَصَمُوا إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: ((يَعَضُّ أَحَدُكُمْ أَخَاهُ كَمَا يَعَضُّ الْفَحْلُ لاَ دِيَةَ لَكَ)).

6893. हमसे अबू आसिम ने बयान किया, उनसे इब्ने जुरैज ने, उनसे अता ने, उनसे सफ़्वान बिन यअ़ला ने और उनसे उनके वालिद ने कि मैं एक ग़ज़्वा में बाहर था और एक शख़्स ने दांत से काट लिया था जिसकी वजह से उसके आगे के दांत टूट गये थे फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उस मुक़द्दमे को बातिल क़रार देकर उसकी दियत नहीं दिलाई। (राजेअ़ : 1847)

٦٨٩٣- حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ، عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ، عَنْ عَطَاءٍ، عَنْ صَفْوَانَ بْنِ يَعْلَى، عَنْ أَبِيهِ قَالَ : خَرَجْتُ فِي غَزْوَةٍ فَعَضَّ رَجُلٌ فَانْتَزَعَ ثَنِيَّتَهُ فَأَبْطَلَهَا النَّبِيُّ ﷺ.
[راجع: ١٨٤٧]

बाब 19 : दांत के बदले दांत

١٩- باب السِّنُّ بِالسِّنِّ

6894. हमसे मुहम्मद बिन अ़ब्दुल्लाह अंसारी ने बयान किया, कहा हमसे हुमैद तवील ने बयान किया, उनसे अनस (रज़ि.) ने कि नज़्र की बेटी ने एक लड़की को तमाँचा मारा था और उसके दांत टूट गये थे। लोग नबी करीम (ﷺ) के पास मुक़द्दमा लाए तो आँहज़रत (ﷺ) ने क़िसास का हुक्म दिया।

٦٨٩٤- حَدَّثَنَا الأَنْصَارِيُّ، حَدَّثَنَا حُمَيْدٌ، عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ ابْنَةَ النَّضْرِ لَطَمَتْ جَارِيَةً فَكَسَرَتْ ثَنِيَّتَهَا فَأَتَوُا النَّبِيَّ ﷺ فَأَمَرَ بِالْقِصَاصِ.

बाब 20 : उँगलियों की दियत का बयान

٢٠- باب دِيَةِ الأَصَابِعِ

6895. हमसे आदम ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे क़तादा ने, उनसे इक्रिमा ने और उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया ये और ये बराबर या'नी छुँगलिया और अंगूठा दियत में बराबर हैं।

٦٨٩٥- حَدَّثَنَا آدَمُ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ عِكْرِمَةَ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((هَذِهِ وَهَذِهِ سَوَاءٌ يَعْنِي الْخِنْصَرَ وَالإِبْهَامَ)).

6896. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने अबी अ़दी ने बयान किया, उनसे शुअ़बा ने, उनसे क़तादा ने, उनसे इक्रिमा ने और उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से इसी तरह सुना।

٦٨٩٦- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي عَدِيٍّ، عَنْ شُعْبَةَ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ عِكْرِمَةَ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ : سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ نَحْوَهُ.

बाब 21 : अगर कई आदमी एक शख़्स को कत्ल कर दें तो क्या क़िसास में

٢١- باب إِذَا أَصَابَ قَوْمٌ مِنْ رَجُلٍ

هَلْ يُعَاقَبُ أَوْ يُقْتَصُّ مِنْهُمْ كُلِّهِمْ؟ وَقَالَ مُطَرِّفٌ عَنِ الشَّعْبِيِّ فِي رَجُلَيْنِ شَهِدَا عَلَى رَجُلٍ أَنَّهُ سَرَقَ فَقَطَعَهُ عَلِيٌّ ثُمَّ جَاءَا بِآخَرَ وَقَالاَ: أَخْطَأْنَا فَأَبْطَلَ شَهَادَتَهُمَا وَأُخِذَا بِدِيَةِ الأَوَّلِ وَقَالَ : لَوْ عَلِمْتُ أَنَّكُمَا تَعَمَّدْتُمَا لَقَطَعْتُكُمَا.

सबको क़त्ल किया जाएगा या क़िसास़ लिया जाएगा? और मुत़र्रिफ़ ने शअ़बी से बयान किया कि दो आदमियों ने एक शख़्स़ के बारे में गवाही दी कि उसने चोरी की है तो अ़ली (रज़ि.) ने उसका हाथ काट दिया। उसके बाद वही दोनों एक-दूसरे शख़्स़ को लाए और कहा कि हमसे ग़लती हो गई थी (अस़ल में चोर ये था) तो अ़ली (रज़ि.) ने उनकी शहादत को बात़िल क़रार दिया और उनसे पहले का (जिसका हाथ काट दिया गया था) ख़ूँबहा लिया और कहा कि अगर मुझे यक़ीन होता कि तुम लोगों ने जान बूझकर ऐसा किया है तो मैं तुम दोनों का हाथ काट देता।

٦٨٩٦- وَقَالَ لِي ابْنُ بَشَّارٍ: حَدَّثَنَا يَحْيَى، عُبَيْدِ اللهِ، عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ غُلاَمًا قُتِلَ غِيْلَةً فَقَالَ عُمَرُ: لَوِ اشْتَرَكَ فِيهَا أَهْلُ صَنْعَاءَ لَقَتَلْتُهُمْ، وَقَالَ مُغِيرَةُ بْنُ حَكِيمٍ عَنْ أَبِيهِ : إِنَّ أَرْبَعَةً قَتَلُوا صَبِيًّا فَقَالَ عُمَرُ: مِثْلَهُ وَأَقَادَ أَبُو بَكْرٍ وَابْنُ الزُّبَيْرِ وَعَلِيٌّ وَسُوَيْدُ بْنُ مُقَرِّنٍ مِنْ لَطْمَةٍ وَأَقَادَ عُمَرُ مِنْ ضَرْبَةٍ بِالدِّرَّةِ وَأَقَادَ عَلِيٌّ مِنْ ثَلاَثَةِ أَسْوَاطٍ، وَاقْتَصَّ شُرَيْحٌ مِنْ سَوْطٍ وَخُمُوشٍ.

6896. और मुझसे इब्ने बश्शार ने बयान किया, उनसे यह्या ने, उनसे उ़बैदुल्लाह ने, उनसे नाफ़ेअ़ ने और उनसे इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने कि एक लड़के उस़ैल नामी को धोखे से क़त्ल कर दिया गया था। उ़मर (रज़ि.) ने कहा कि सारे अहले स़न्आ (यमन के लोग) उसके क़त्ल में शरीक होते तो मैं सबको क़त्ल करा देता। और मुग़ीरह बिन ह़कीम ने अपने वालिद से बयान किया कि चार आदमियों ने एक बच्चे को क़त्ल कर दिया था तो उ़मर (रज़ि.) ने ये बात फ़र्माई थी। अबूबक्र, इब्ने ज़ुबैर, अ़ली और सूवैद बिन मुक़र्रिन ने चांटे का बदला दिलवाया था और उ़मर (रज़ि.) ने दर्रे की जो मार एक शख़्स़ को हुई थी उसका बदला लेने के लिये फ़र्माया और अ़ली (रज़ि.) ने तीन कोड़ों का क़िसास़ लेने का हुक्म दिया और शुरैह ने कोड़े और ख़राश लगाने की सज़ा दी थी।

٦٨٩٧- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا يَحْيَى، عَنْ سُفْيَانَ، حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ أَبِي عَائِشَةَ، عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ عَبْدِ اللهِ قَالَ: قَالَتْ عَائِشَةُ لَدَدْنَا رَسُولَ اللهِ ﷺ فِي مَرَضِهِ، وَجَعَلَ يُشِيرُ إِلَيْنَا لاَ تَلُدُّونِي قَالَ: فَقُلْنَا كَرَاهِيَةُ الْمَرِيضِ بِالدَّوَاءِ، فَلَمَّا أَفَاقَ قَالَ : ((أَلَمْ أَنْهَكُمْ أَنْ تَلُدُّونِي؟)) قَالَ: قُلْنَا كَرَاهِيَةٌ لِلدَّوَاءِ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((لاَ يَبْقَى مِنْكُمْ أَحَدٌ إِلاَّ لُدَّ، وَأَنَا أَنْظُرُ إِلاَّ

6897. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या ने, उनसे सुफ़यान ने, उनसे मूसा बिन अबी आ़इशा (रज़ि.) उनसे उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह ने कि आ़इशा (रज़ि.) ने कहा, हमने नबी करीम (ﷺ) के मर्ज़ में आपके मुँह में ज़बरदस्ती दवा डाली। हालाँकि आँह़ज़रत (ﷺ) इशारा करते रहे कि दवा न डाली जाए लेकिन हमने समझा कि मरीज़ को दवा से जो नफ़रत होती है (उसकी वजह से आँह़ज़रत ﷺ फ़र्मा रहे हैं) फिर जब आपको इफ़ाक़ा हुआ तो फ़र्माया। मैंने तुम्हें नहीं कहा था कि दवा न डालो। बयान किया कि हमने अ़र्ज़ किया कि आपने दवा से नागवारी की वजह से ऐसा किया होगा? उस पर आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुममें से हर एक के मुँह में दवा

डाली जाए और मैं देखता रहूँगा सिवाए अ़ब्बास (रज़ि.) के क्योंकि वो उस वक़्त वहाँ मौजूद ही न थे। (राजेअ़ : 4458)

बाब 22 : क़सामा का बयान

और अश्अ़ष़ बिन क़ैस ने कहा कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया तुम अपने दो गवाह लाओ वरना इस (मुद्दआ़ अ़लह) की क़सम (पर फ़ैसला होगा) इब्ने अबी मुलैका ने बयान किया क़सामा में मुआ़विया (रज़ि.) ने क़िसास़ नहीं लिया (स़िर्फ़ दियत दिलाई) और उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ ने अ़दी बिन अरत़ात को जिन्हें उन्होंने बस़रा का अमीर बनाया था एक मक़्तूल के बारे में जो तल बेचने वालों के मुहल्ले के एक घर के पास पाया गया था लिखा कि अगर मक़्तूल के औलिया के पास कोई गवाही हो (तो फ़ैस़ला किया जा सकता है) वरना ख़ल्क़ुल्लाह पर ज़ुल्म न करो क्योंकि ऐसे मामले का जिस पर गवाह न हों क़यामत तक फ़ैस़ला नहीं हो सकता।

6898. हमसे अबू नुऐ़म ने बयान किया, कहा हमसे सई़द बिन उ़बैद ने बयान किया, उनसे बशीर बिन यसार ने, वो कहते थे कि क़बीला अंस़ार के एक स़ाहब सहल बिन अबी ह़ष़्मा ने उन्हें ख़बर दी कि उनकी क़ौम के कुछ लोग ख़ैबर गये और (अपने अपने कामों के लिये) मुख़्तलिफ़ जगहों में अलग अलग गये फिर अपने में के एक शख़्स़ को मक़्तूल पाया। जिन्हें वो मक़्तूल मिले थे, उनसे उन लोगों ने कहा कि हमारे साथी को तुमने क़त्ल किया है। उन्होंने कहा कि न हमने क़त्ल किया और न हमें क़ातिल का पता मा'लूम है? फिर ये लोग नबी करीम (ﷺ) के पास गये और कहा या रसूलल्लाह! हम ख़ैबर गये और फिर हमने वहाँ अपने एक साथी को मक़्तूल पाया। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुममें जो बड़ा है वो बात करे। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि क़ातिल के ख़िलाफ़ गवाही लाओ। उन्होंने कहा कि हमारे पास कोई गवाही नहीं है। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि फिर ये (यहूदी) क़सम खाएँगे (और उनकी क़सम पर फ़ैस़ला होगा) उन्होंने कहा कि यहूदियों की क़समों का कोई ए'तिबार नहीं। आँह़ज़रत (ﷺ) ने उसे पसंद नहीं फ़र्माया कि मक़्तूल का ख़ून रायगाँ जाए चुनाँचे आपने स़दक़ा के ऊँटों में

الْعَبَّاسَ فَإِنَّهُ لَمْ يَشْهَدْكُمْ)).

[راجع: ٤٤٥٨]

٢٢- باب الْقَسَامَةِ

وَقَالَ الأَشْعَثُ بْنُ قَيْسٍ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ ((شَاهِدَاكَ أَوْ يَمِينُهُ)) وَقَالَ ابْنُ أَبِي مُلَيْكَةَ: لَمْ يُقِدْ بِهَا مُعَاوِيَةُ وَكَتَبَ عُمَرُ بْنُ عَبْدِ الْعَزِيزِ إِلَى عَدِيِّ بْنِ أَرْطَاةَ وَكَانَ أَمَّرَهُ عَلَى الْبَصْرَةِ فِي قَتِيلٍ وُجِدَ عِنْدَ بَيْتٍ مِنْ بُيُوتِ السَّمَّانِينَ إِنْ وَجَدَ أَصْحَابُهُ بَيِّنَةً، وَإِلاَّ فَلاَ تَظْلِمِ النَّاسَ، فَإِنَّ هَذَا لاَ يُقْضَى فِيهِ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ.

٦٨٩٨- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ، حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ عُبَيْدٍ، عَنْ بُشَيْرِ بْنِ يَسَارٍ زَعَمَ أَنَّ رَجُلاً مِنَ الأَنْصَارِ يُقَالُ لَهُ: سَهْلُ بْنُ أَبِي حَثْمَةَ أَخْبَرَهُ أَنَّ نَفَرًا مِنْ قَوْمِهِ انْطَلَقُوا إِلَى خَيْبَرَ فَتَفَرَّقُوا فِيهَا، وَوَجَدُوا أَحَدَهُمْ قَتِيلاً، وَقَالُوا لِلَّذِي وُجِدَ فِيهِمْ: قَتَلْتُمْ صَاحِبَنَا، قَالُوا : مَا قَتَلْنَا وَلاَ عَلِمْنَا قَاتِلاً، فَانْطَلَقُوا إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقَالُوا: يَا رَسُولَ اللَّهِ انْطَلَقْنَا إِلَى خَيْبَرَ فَوَجَدْنَا أَحَدَنَا قَتِيلاً فَقَالَ: ((الْكُبْرَ الْكُبْرَ)) فَقَالَ لَهُمْ: ((تَأْتُونَ بِالْبَيِّنَةِ عَلَى مَنْ قَتَلَهُ)) قَالُوا: مَا لَنَا بَيِّنَةٌ قَالَ: ((فَيَحْلِفُونَ)). قَالُوا: لاَ نَرْضَى بِأَيْمَانِ الْيَهُودِ، فَكَرِهَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ يُبْطِلَ دَمَهُ فَوَدَاهُ مِائَةً مِنْ إِبِلِ الصَّدَقَةِ.

से सौ ऊँट (ख़ुद ही) दियत में दिये। (राजेअ : 2702)

[راجع: ٢٧٠٢]

6899. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे अबू बिश्र इस्माईल बिन इब्राहीम असदी ने बयान किया, कहा हमसे हज्जाज बिन अबी उ़ष्मान ने बयान किया, उनसे आले अबू क़िलाबा के ग़ुलाम अबू रजाअ ने बयान किया, उनसे कहा कि मुझसे अबू क़िलाबा ने बयान किया कि उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ ने एक दिन दरबारे आ़म किया और सबको इजाज़त दी। लोग दाख़िल हुए तो उन्हों ने पूछा क़सामा के बारे में में तुम्हारा क्या ख़्याल है? किसी ने कहा कि क़सामा के ज़रिये क़िस़ास़ लेना हक़ है और ख़ुलफ़ा ने इसके ज़रिये क़िस़ास़ लिया है। उस पर उन्होंने मुझसे पूछा अबू क़िलाबा तुम्हारी क्या राय है? और मुझे अ़वाम के साथ ला खड़ा कर दिया। मैंने अ़र्ज़ किया अमीरुल मोमिनीन! आपके पास अ़रब के सरदार और शरीफ़ लोग रहते हैं आपकी क्या राय होगी अगर उनमें से पचास आदमी किसी दमिश्क़ के शादीशुदा शख़्स़ के बारे में ज़िना की गवाही दें जबकि उन लोगों ने उस शख़्स़ को देखा भी न हो क्या आप उनकी गवाही पर उस शख़्स़ को रजम कर देंगे। अमीरुल मोमिनीन ने फ़र्माया कि नहीं। फिर मैंने कहा आपका क्या ख़्याल है अगर इन्हीं (अशराफ़े अ़रब) में से पचास अफ़राद हिम्स़ के किसी शख़्स़ के बारे में चोरी की गवाही दें उसके बग़ैर देखे तो क्या आप उसका हाथ काट देंगे? फ़र्माया कि नहीं। फिर मैंने कहा, पस अल्लाह की क़सम! कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने कभी किसी को तीन हालतों के सिवा क़त्ल नहीं कराया। एक वो शख़्स़ जिसने किसी को ज़ुल्मन क़त्ल किया हो और उसके बदले में क़त्ल किया गया हो। दूसरा वो शख़्स़ जिसने शादी के बाद ज़िना किया हो। तीसरा वो शख़्स़ जिसने अल्लाह और उसके रसूल से जंग की हो और इस्लाम से फिर गया हो। लोगों ने उस पर कहा, क्या अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने ये ह़दीष़ नहीं बयान की है कि नबी करीम (ﷺ) ने चोरी के मामले में हाथ पैर काट दिये थे और आँखों में सलाई फिरवाई थी और फिर उन्हें धूप में डलवा दिया था। मैंने कहा कि मैं आप लोगों को ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) की ह़दीष़ सुनाता हूँ। मुझसे ह़ज़रत अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि क़बीला उ़क्ल के आठ अफ़राद

٦٨٩٩- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا أَبُو بِشْرٍ إِسْمَاعِيلُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ الأَسَدِيُّ، حَدَّثَنَا الْحَجَّاجُ بْنُ أَبِي عُثْمَانَ، حَدَّثَنِي أَبُو رَجَاءٍ مِنْ آلِ أَبِي قِلاَبَةَ، حَدَّثَنِي أَبُو قِلاَبَةَ أَنَّ عُمَرَ بْنَ عَبْدِ الْعَزِيزِ أَبْرَزَ سَرِيرَهُ يَوْمًا لِلنَّاسِ، ثُمَّ أَذِنَ لَهُمْ فَدَخَلُوا فَقَالَ: مَا تَقُولُونَ فِي الْقَسَامَةِ؟ قَالَ: نَقُولُ الْقَسَامَةُ الْقَوَدُ بِهَا حَقٌّ، وَقَدْ أَقَادَتْ بِهَا الْخُلَفَاءُ قَالَ لِي: مَا تَقُولُ يَا أَبَا قِلاَبَةَ وَنَصَبَنِي لِلنَّاسِ؟ فَقُلْتُ: يَا أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ عِنْدَكَ رُؤُوسُ الأَجْنَادِ وَأَشْرَافُ الْعَرَبِ، أَرَأَيْتَ لَوْ أَنَّ خَمْسِينَ مِنْهُمْ شَهِدُوا عَلَى رَجُلٍ مُحْصَنٍ بِدِمَشْقَ أَنَّهُ قَدْ زَنَى لَمْ يَرَوْهُ أَكُنْتَ تَرْجُمُهُ؟ قَالَ: ((لاَ)) قُلْتُ: أَرَأَيْتَ لَوْ أَنَّ خَمْسِينَ مِنْهُمْ شَهِدُوا عَلَى رَجُلٍ بِحِمْصَ أَنَّهُ سَرَقَ أَكُنْتَ تَقْطَعُهُ وَلَمْ يَرَوْهُ؟ قَالَ: ((لاَ)) قُلْتُ: فَوَ اللَّهِ مَا قَتَلَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ أَحَدًا قَطُّ، إِلاَّ فِي إِحْدَى ثَلاَثِ خِصَالٍ رَجُلٌ قَتَلَ بِجَرِيرَةِ نَفْسِهِ فَقُتِلَ، أَوْ رَجُلٌ زَنَى بَعْدَ إِحْصَانٍ، أَوْ رَجُلٌ حَارَبَ اللَّهَ وَرَسُولَهُ وَارْتَدَّ عَنِ الإِسْلاَمِ. فَقَالَ الْقَوْمُ : أَوَ لَيْسَ قَدْ حَدَّثَ أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَطَعَ فِي السَّرَقِ، وَسَمَرَ الأَعْيُنَ ثُمَّ نَبَذَهُمْ فِي الشَّمْسِ؟ فَقُلْتُ : أَنَا أُحَدِّثُكُمْ حَدِيثَ أَنَسٍ، حَدَّثَنِي أَنَسٌ أَنَّ نَفَرًا مِنْ عُكْلٍ ثَمَانِيَةً قَدِمُوا عَلَى

आँहज़रत (ﷺ) के पास आये और आपसे इस्लाम पर बेअ़त की, फिर मदीना मुनव्वरह की आबो हवा उन्हे नामुवाफ़िक़ हुई और वो बीमार पड़ गये तो उन्होंने आँहज़रत (ﷺ) से इसकी शिकायत की। आँहज़रत (ﷺ) ने उनसे फ़र्माया कि फिर क्यूँ नहीं तुम हमारे चरवाहे के साथ उसके ऊँटों में चले जाते और ऊँटों का दूध और पेशाब पीते। उन्होंने अ़र्ज़ किया क्यूँ नहीं। चुनाँचे वो निकल गये और ऊँटों का दूध और पेशाब पिया और स़ेहतमंद हो गये फिर उन्होंने आँहज़रत (ﷺ) के चरवाहे को क़त्ल कर दिया और ऊँट हाँककर ले गये। इसकी ख़बर जब आँहज़रत (ﷺ) को पहुँची तो आपने उनकी तलाश में आदमी भेजे, फिर वो पकड़े गये और लाये गये। आँहज़रत (ﷺ) ने हुक्म दिया और उनके भी हाथ और पैर काट दिये गये और उनकी आँखों में सलाई फेर दी गई फिर उन्हें धूप में डलवा दिया और आख़िर वो मर गये। मैंने कहा कि उनके अ़मल से बढ़कर और क्या जुर्म हो सकता है इस्लाम से फिर गये और क़त्ल किया और चोरी की। अ़म्बसा बिन सईद ने कहा मैंने आज जैसी बात कभी नहीं सुनी थी। मैंने कहा अ़म्बसा! क्या तुम मेरी ह़दीष़ रद्द करते हो? उन्होंने कहा कि नहीं आपने ये ह़दीष़ वाक़िया के मुताबिक़ बयान कर दी है, वल्लाह! अहले शाम के साथ उस वक़्त तक ख़ैरो–भलाई रहेगी जब तक ये शैख़ (अबू क़िलाबा) उनमें मौजूद रहेंगे। मैंने कहा कि इस क़सामा के सिलसिले मे आँहज़रत (ﷺ) की एक सुन्नत है। अंस़ार के कुछ लोग आपके पास आए और आँहज़रत (ﷺ) से बात की फिर उनमें से एक स़ाहब उनके सामने ही निकले (ख़ैबर के इरादे से) और वहाँ क़त्ल कर दिये गये। उसके बाद दूसरे स़हाबा भी गये और देखा कि उनके साथी ख़ून में तड़प रहे हैं। उन लोगों ने वापस आकर आँहज़रत (ﷺ) को उसकी ख़बर दी और कहा या रसूलल्लाह! हमारे साथ बातचीत कर रहे थे और अचानक वो हमें (ख़ैबर में) ख़ून मे तड़पते मिले फिर आँहज़रत (ﷺ) निकले और पूछा कि तुम्हारा किस पर शुब्हा है कि उन्होंने उनको क़त्ल किया है। स़हाबा ने कहा कि हम समझते हैं कि यहूदियों ने ही क़त्ल किया है फिर आपने यहूदियों को बुला भेजा और उनसे पूछा क्या तुमने उन्हें क़त्ल किया है? उन्होंने इंकार कर दिया तो आपने फ़र्माया क्या तुम मान जाओगे अगर पचास यहूदी उसकी क़सम खा लें कि उन्होंने मक़्तूल को

رَسُولَ اللهِ ﷺ فَبَايَعُوهُ عَلَى الإِسْلاَمِ فَاسْتَوْخَمُوا الأَرْضَ فَسَقِمَتْ أَجْسَامُهُمْ، فَشَكَوْا ذَلِكَ إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ قَالَ ((أَفَلاَ تَخْرُجُونَ مَعَ رَاعِينَا فِي إِبِلِهِ فَتُصِيبُونَ مِنْ أَلْبَانِهَا وَأَبْوَالِهَا)). قَالُوا: بَلَى، فَخَرَجُوا فَشَرِبُوا مِنْ أَلْبَانِهَا وَأَبْوَالِهَا فَصَحُّوا فَقَتَلُوا رَاعِيَ رَسُولِ اللهِ ﷺ وَأَطْرَدُوا النَّعَمَ، فَبَلَغَ ذَلِكَ رَسُولَ اللهِ ﷺ فَأَرْسَلَ فِي آثَارِهِمْ فَأُدْرِكُوا فَجِيءَ بِهِمْ فَأَمَرَ بِهِمْ فَقُطِّعَتْ أَيْدِيهِمْ وَأَرْجُلُهُمْ وَسَمَرَ أَعْيُنَهُمْ ثُمَّ نَبَذَهُمْ فِي الشَّمْسِ، حَتَّى مَاتُوا. قُلْتُ وَأَيُّ شَيْءٍ أَشَدُّ مِمَّا صَنَعَ هَؤُلاَءِ؟ ارْتَدُّوا عَنِ الإِسْلاَمِ، وَقَتَلُوا وَسَرَقُوا فَقَالَ عَنْبَسَةُ بْنُ سَعِيدٍ : وَاللهِ إِنْ سَمِعْتُ كَالْيَوْمِ قَطُّ فَقُلْتُ: أَتَرُدُّ عَلَيَّ حَدِيثِي يَا عَنْبَسَةُ قَالَ: لاَ، وَلَكِنْ جِئْتَ بِالْحَدِيثِ عَلَى وَجْهِهِ وَاللهِ لاَ يَزَالُ هَذَا الْجُنْدُ بِخَيْرٍ مَا عَاشَ هَذَا الشَّيْخُ بَيْنَ أَظْهُرِهِمْ قُلْتُ : وَقَدْ كَانَ فِي هَذَا سُنَّةٌ مِنْ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ دَخَلَ عَلَيْهِ نَفَرٌ مِنَ الأَنْصَارِ فَتَحَدَّثُوا عِنْدَهُ، فَخَرَجَ رَجُلٌ مِنْهُمْ بَيْنَ أَيْدِيهِمْ فَقُتِلَ فَخَرَجُوا بَعْدَهُ فَإِذَا هُمْ بِصَاحِبِهِمْ يَتَشَحَّطُ فِي الدَّمِ، فَرَجَعُوا إِلَى رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالُوا: يَا رَسُولَ اللهِ صَاحِبُنَا كَانَ يَتَحَدَّثُ مَعَنَا فَخَرَجَ بَيْنَ أَيْدِينَا فَإِذَا نَحْنُ بِهِ يَتَشَحَّطُ فِي الدَّمِ،

فَخَرَجَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: ((بِمَنْ تَظُنُّونَ أَوْ تَرَوْنَ قَتَلَهُ؟)) قَالُوا: نَرَى أَنَّ الْيَهُودَ قَتَلَتْهُ، فَأَرْسَلَ إِلَى الْيَهُودِ فَدَعَاهُمْ فَقَالَ: ((أَنْتُمْ قَتَلْتُمْ هَذَا؟)) قَالُوا: لاَ. قَالَ ((أَتَرْضَوْنَ نَفَلَ خَمْسِينَ مِنَ الْيَهُودِ مَا قَتَلُوهُ؟)) فَقَالُوا: مَا يُبَالُونَ أَنْ يَقْتُلُونَا أَجْمَعِينَ، ثُمَّ يَحْلِفُونَ قَالَ: ((أَفَتَسْتَحِقُّونَ الدِّيَةَ بِأَيْمَانِ خَمْسِينَ مِنْكُمْ؟)) قَالُوا: مَا كُنَّا لِنَحْلِفَ فَوَدَاهُ مِنْ عِنْدِهِ قُلْتُ: وَقَدْ كَانَتْ هُذَيْلٌ خَلَعُوا خَلِيعًا لَهُمْ فِي الْجَاهِلِيَّةِ، فَطَرَقَ أَهْلَ بَيْتٍ مِنَ الْيَمَنِ بِالْبَطْحَاءِ فَانْتَبَهَ لَهُ رَجُلٌ مِنْهُمْ، فَحَذَفَهُ بِالسَّيْفِ فَقَتَلَهُ فَجَاءَتْ هُذَيْلٌ فَأَخَذُوا الْيَمَانِيَ فَرَفَعُوهُ إِلَى عُمَرَ بِالْمَوْسِمِ، وَقَالُوا: قُتِلَ صَاحِبُنَا فَقَالَ: إِنَّهُمْ قَدْ خَلَعُوهُ، فَقَالَ: يُقْسِمُ خَمْسُونَ مِنْ هُذَيْلٍ مَا خَلَعُوهُ، قَالَ: فَأَقْسَمَ مِنْهُمْ تِسْعَةٌ وَأَرْبَعُونَ رَجُلاً، وَقَدِمَ رَجُلٌ مِنْهُمْ مِنَ الشَّامِ، فَسَأَلُوهُ أَنْ يُقْسِمَ فَافْتَدَى يَمِينَهُ مِنْهُمْ بِأَلْفِ دِرْهَمٍ فَأَدْخَلُوا مَكَانَهُ رَجُلاً آخَرَ، فَدَفَعَهُ إِلَى أَخِي الْمَقْتُولِ، فَقُرِنَتْ يَدُهُ بِيَدِهِ، قَالُوا: فَانْطَلَقْنَا وَالْخَمْسُونَ الَّذِينَ أَقْسَمُوا حَتَّى إِذَا كَانُوا بِنَخْلَةَ أَخَذَتْهُمُ السَّمَاءُ. فَدَخَلُوا فِي غَارٍ فِي الْجَبَلِ فَانْهَجَمَ الْغَارُ عَلَى الْخَمْسِينَ الَّذِينَ أَقْسَمُوا، فَمَاتُوا جَمِيعًا وَأَفْلَتَ الْقَرِينَانِ وَاتَّبَعَهُمَا حَجَرٌ، فَكَسَرَ

क़त्ल नहीं किया है। स़हाबा ने अ़र्ज़ किया ये लोग ज़रा भली परवाह नहीं करेंगे कि हम सबको क़त्ल करने के बाद फिर क़सम खा लें (कि क़त्ल इन्होंने नहीं किया है) आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया तो फिर तुममें से पचास आदमी क़सम खा लें और ख़ूँबहा के मुस्तह़िक़ हो जाएँ। स़हाबा ने अ़र्ज़ किया, हम भी क़सम खाने के लिये तैयार नहीं हैं। चुनाँचे आँह़ज़रत (ﷺ) ने उन्हें अपने पास से ख़ूँबहा दिया (अबू क़िलाबा ने कहा कि) मैंने कहा कि ज़माना जाहिलियत में क़बीला हुज़ैल के लोगों ने अपने एक आदमी को अपने में से निकाल दिया था फिर वो शख़्स बत़्हा में यमन के एक शख़्स के घर रात को आया। इतने में उनमें से कोई शख़्स बेदार हो गया और उसने उस पर तलवार से ह़मला करके क़त्ल कर दिया। उसके बाद हुज़ैल के लोग आए और उन्होंने यमनी को (जिसने क़त्ल किया था) पकड़कर ह़जरत उ़मर (रज़ि.) के पास ले गये ह़ज्ज के ज़माने में और कहा कि उसने हमारे आदमी को क़त्ल कर दिया है। यमनी ने कहा कि उन्होंने उसे अपनी बिरादरी से निकाल दिया था। ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने फ़र्माया कि अब हुज़ैल के पचास आदमी इसकी क़सम खाएँ कि उन्होंने उसे निकाला नहीं था। बयान किया कि फिर उनमे से 49 आदमियों ने क़सम खाई फिर उन्हें के क़बीला का एक शख़्स शाम से आया तो उन्होंने उससे भी मुत़ालबा किया कि वो क़सम खाए लेकिन उसने अपनी क़सम के बदले में एक ह़ज़ार दिरहम देकर अपना पीछा क़सम से छुड़ा लिया। हुज़ैलियों ने उसकी जगह एक-दूसरे आदमी को तैयार कर लिया फिर वो मक़्तूल के भाई के पास गया और अपना हाथ उसके हाथ से मिलाया। उन्होंने बयान किया कि फिर हम पचास जिन्होंने क़सम खाई थी रवाना हुए। जब मक़ाम मुहल्ला पर पहुँचे तो बारिश ने उन्हें आ लिया। सब लोग पहाड़ के एक ग़ार में घुस गये और ग़ार उन पचासों के ऊपर गिर पड़ा। जिन्होंने क़सम खाई थी और सबके सब मर गये। अल्बत्ता दोनों हाथ मिलाने वाले बच गये। लेकिन उनके पीछे से एक पत्थर लुढ़क कर गिरा और उससे मक़्तूल के भाई की टांग टूट गई उसके बाद वो एक साल और ज़िन्दा रहा फिर मर गया। मैने कहा कि अ़ब्दुल मलिक बिन मरवान ने क़सामा पर एक शख़्स से क़िस़ास़ ली थी फिर उसे अपने किये हुए पर

رَجُلَ أَخِي الْمَقْتُولِ، فَعَاشَ حَوْلاً ثُمَّ مَاتَ، قُلْتُ: وَقَدْ كَانَ عَبْدُ الْمَلِكِ بْنُ مَرْوَانَ أَقَادَ رَجُلاً بِالْقَسَامَةِ، ثُمَّ نَدِمَ بَعْدَ مَا صَنَعَ، فَأَمَرَ بِالْخَمْسِينَ الَّذِينَ أَقْسَمُوا، فَمُحُوا مِنَ الدِّيوَانِ وَسَيَّرَهُمْ إِلَى الشَّامِ. [راجع: ٢٣٣]

नदामत हुई और उसने उन पचासों के बारे में जिन्होंने क़सम खाई थी हुक्म दिया और उनके नाम रजिस्टर से काट दिये गये फिर उन्होंने शाम भेज दिया। (राजेअ : 233)

٢٣- باب مَنْ اطَّلَعَ فِي بَيْتِ قَوْمٍ فَفَقَئُوا عَيْنَهُ فَلاَ دِيَةَ لَهُ

बाब 23 : जिसने किसी के घर में झांका और उन्होंने झांकने वाले की आँख फोड़ दी तो उस पर दियत वाजिब नहीं होगी

٦٩٠٠- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ أَبِي بَكْرِ بْنِ أَنَسٍ، عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَجُلاً اطَّلَعَ مِنْ جُحْرٍ فِي حُجَرِ النَّبِيِّ ﷺ فَقَامَ إِلَيْهِ بِمِشْقَصٍ أَوْ بِمَشَاقِصَ وَجَعَلَ يَخْتِلُهُ لِيَطْعُنَهُ. [راجع: ٦٢٥٢]

6900. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे ह़म्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे उ़बैदुल्लाह बिन अबीबक्र बिन अनस ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि एक आदमी नबी करीम (ﷺ) के एक हुज्रे में झांकने लगे तो आँह़ज़रत (ﷺ) तीर का फल लेकर उठे और चाहते थे कि ग़फ़लत में उसको मार दें। (राजेअ : 6252)

٦٩٠١- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا لَيْثٌ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ أَنَّ سَهْلَ بْنَ سَعْدٍ السَّاعِدِيَّ أَخْبَرَهُ أَنَّ رَجُلاً اطَّلَعَ فِي جُحْرٍ فِي بَابِ رَسُولِ اللهِ ﷺ وَمَعَ رَسُولِ اللهِ ﷺ مِدْرًى يَحُكُّ بِهِ رَأْسَهُ، فَلَمَّا رَآهُ رَسُولُ اللهِ ﷺ قَالَ: ((لَوْ أَعْلَمُ أَنْ تَنْتَظِرَنِي لَطَعَنْتُ بِهِ فِي عَيْنَيْكَ)) قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِنَّمَا جُعِلَ الإِذْنُ مِنْ قِبَلِ الْبَصَرِ)). [راجع: ٥٩٢٤]

6901. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया और उन्हें सहल बिन सअ़द साएदी (रज़ि.) ने ख़बर दी कि एक आदमी नबी करीम (ﷺ) के दरवाज़े के एक सूराख़ से अंदर झाँकने लगे। उस वक़्त आँह़ज़रत (ﷺ) के पास लोहे का कँघा था जिससे आप सर झाड़ रहे थे। जब आपने उसे देखा तो फ़र्माया कि अगर मुझे मा'लूम होता कि तुम मेरा इंतिज़ार कर रहे हो तो मैं उसे तुम्हारी आँख में चुभो देता। फिर आपने फ़र्माया कि (घर के अंदर आने का) इज़्न लेने का हुक्म दिया गया है वो इसीलिये तो है कि नज़र न पड़े। (राजेअ : 5924)

तश्रीह : इस ह़दीष़ से मा'लूम हुआ कि बग़ैर इजाज़त के किसी के घर में झांकना और दाख़िल होना मना है अगर इजाज़त हो तो फिर कोई ह़र्ज नहीं है। सलाम करके अपने घर में या ग़ैर के घर में दाख़िल होना चाहिये।

٦٩٠٢- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا

6902. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा

हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे अबुज़्ज़िनाद ने, उनसे अअ़रज ने, उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि अबुल क़ासिम (ﷺ) ने फ़र्माया, अगर कोई शख़्स़ तुम्हारी इजाज़त के बग़ैर तुम्हें (जबकि तुम घर के अंदर हो) झांककर देखे और तुम उसे कंकरी मार दो जिससे उसकी आँख फूट जाए तो तुम पर कोई गुनाह नहीं है। (राजेअ़ : 6888)

سُفْيَانُ، حَدَّثَنَا أَبُو الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ أَبُو الْقَاسِمِ ﷺ ((لَوْ أَنَّ امْرَأً اطَّلَعَ عَلَيْكَ بِغَيْرِ إِذْنٍ فَخَذَفْتَهُ بِحَصَاةٍ فَفَقَأْتَ عَيْنَهُ لَمْ يَكُنْ عَلَيْكَ جُنَاحٌ)). [راجع: ٦٨٨٨]

और न उस पर दियत ही दी जाएगी।

बाब 24 : आ़क़िला का बयान

٢٤- بَابُ الْعَاقِلَةِ

हर आदमी का आ़क़िला वो लोग हैं जो उसकी त़रफ़ से दियत अदा करते हैं या'नी उसकी ददिहाल वाले।

6903. हमसे स़दक़ा बिन फ़ज़ल ने बयान किया, कहा हमको इब्ने उ़ययना ने ख़बर दी, उनसे मुत़र्रिफ़ ने बयान किया, कहा कि मैंने शअ़बी से सुना, कहा कि मैंने अबू जुहैफ़ह से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैंने ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) से पूछा, क्या आपके पास कोई ऐसी ख़ास़ चीज़ भी है जो क़ुर्आन मजीद में नहीं है और एक मर्तबा उन्होंने इस त़रह़ बयान किया कि जो लोगों के पास नहीं है। इस पर उन्होंने कहा कि उस ज़ात की क़सम! जिसने दाने से कोंपल को फाड़कर निकाला है और मख़्लूक़ को पैदा किया। हमारे पास क़ुर्आन मजीद के सिवा और कुछ नहीं है। सिवा इस समझ के जो किसी शख़्स़ को उसकी किताब में दी जाए और जो कुछ इस स़ह़ीफ़े में है। मैंने पूछा स़ह़ीफ़ा में किया है? फ़र्माया ख़ूँबहा (दियत) के बारे में अह़काम और क़ैदी के छुड़ाने का हुक्म और ये कि कोई मुसलमान किसी काफ़िर के बदले में क़त्ल नहीं किया जाएगा। (राजेअ़ : 111)

٦٩٠٣- حَدَّثَنَا صَدَقَةُ بْنُ الْفَضْلِ، أَخْبَرَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ، حَدَّثَنَا مُطَرِّفٌ قَالَ: سَمِعْتُ الشَّعْبِيَّ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا جُحَيْفَةَ، قَالَ: سَأَلْتُ عَلِيًّا رَضِيَ اللهُ عَنْهُ هَلْ عِنْدَكُمْ شَيْءٌ مَا لَيْسَ فِي الْقُرْآنِ؟ وَقَالَ مَرَّةً : مَا لَيْسَ عِنْدَ النَّاسِ فَقَالَ : وَالَّذِي فَلَقَ الْحَبَّ وَبَرَأَ النَّسَمَةَ مَا عِنْدَنَا إِلاَّ مَا فِي الْقُرْآنِ، إِلاَّ فَهْمًا يُعْطَى رَجُلٌ فِي كِتَابِهِ وَمَا فِي الصَّحِيفَةِ قُلْتُ: وَمَا فِي الصَّحِيفَةِ؟ قَالَ: الْعَقْلُ وَفَكَاكُ الأَسِيرِ وَأَنْ لاَ يُقْتَلَ مُسْلِمٌ بِكَافِرٍ.

[راجع: ١١١]

बाब 25 : औ़रत के पेट का बच्चा जो अभी पैदा न हुआ हो

٢٥- بَابُ جَنِينِ الْمَرْأَةِ

6904. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, (दूसरी सनद) इमाम बुख़ारी (रह़.) ने कहा कि और हमसे इस्माईल ने बयान किया, उनसे इमाम मालिक ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रह़मान ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि क़बीला हुज़ैल की दो औ़रतों ने एक दूसरी को (पत्थर से) मारा जिससे एक के पेट का बच्चा (जनीन) गिर

٦٩٠٤- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ، أَخْبَرَنَا مَالِكٌ، ح وَحَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، حَدَّثَنَا مَالِكٌ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ إِنَّ امْرَأَتَيْنِ مِنْ هُذَيْلٍ رَمَتْ إِحْدَاهُمَا الأُخْرَى فَطَرَحَتْ جَنِينَهَا، فَقَضَى

رَسُولُ اللهِ ﷺ فِيهَا بِغُرَّةٍ عَبْدٍ أَوْ أَمَةٍ.

[راجع: ٥٧٥٨]

गया फिर उसमें रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उसे एक ग़ुलाम या कनीज़ देने का फ़ैसला किया। (राजेअ : 5758)

٦٩٠٥- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ، حَدَّثَنَا هِشَامٌ، عَنْ أَبِيهِ عَنِ الْمُغِيرَةِ بْنِ شُعْبَةَ عَنْ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّهُ اسْتَشَارَهُمْ فِي إِمْلاَصِ الْمَرْأَةِ فَقَالَ الْمُغِيرَةُ: قَضَى النَّبِيُّ ﷺ بِالْغُرَّةِ عَبْدٍ أَوْ أَمَةٍ.

6905. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे वुहैब ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने, उनसे मुग़ीरह बिन शुअबा (रज़ि.) ने कि ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने उनसे एक औ़रत के ह़मल गिरा देने के ख़ूँबहा के सिलसिले में मश्विरा किया तो ह़ज़रत मुग़ीरह (रज़ि.) ने कहा कि नबी करीम (ﷺ) ने ग़ुलाम या कनीज़ का इस सिलसिले में फ़ैसला किया था।

٦٩٠٦- فَشَهِدَ مُحَمَّدُ بْنُ مَسْلَمَةَ أَنَّهُ شَهِدَ النَّبِيَّ ﷺ قَضَى بِهِ.

6906. फिर ह़ज़रत मुह़म्मद बिन मस्लमा (रज़ि.) ने भी गवाही दी कि जब आँह़ज़रत (ﷺ) ने उसका फ़ैसला किया था तो वो मौजूद थे।

٦٩٠٧- حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ مُوسَى، عَنْ هِشَامٍ، عَنْ أَبِيهِ أَنَّ عُمَرَ نَشَدَ النَّاسَ مَنْ سَمِعَ النَّبِيَّ قَضَى فِي السِّقْطِ وَقَالَ الْمُغِيرَةُ : أَنَا سَمِعْتُهُ قَضَى فِيهِ بِغُرَّةٍ عَبْدٍ أَوْ أَمَةٍ. [راجع: ٦٩٠٥]

6907. हमसे उ़बैदुल्लाह बिन मूसा ने बयान किया, उनसे हिशाम ने, उनसे उनके वालिद ने कि ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने लोगों से क़सम देकर पूछा कि किसने नबी करीम (ﷺ) से ह़मल गिरने के सिलसिले में फ़ैसला सुना है? मुग़ीरह (रज़ि.) ने कहा कि मैंने आँह़ज़रत (ﷺ) से सुना है, आपने उसमें एक ग़ुलाम या कनीज़ देने का फ़ैसला किया था।(राजेअ : 6905)

٦٩٠٨- قَالَ: ائْتِ مَنْ يَشْهَدُ مَعَكَ عَلَى هَذَا فَقَالَ، مُحَمَّدُ بْنُ مَسْلَمَةَ: أَنَا أَشْهَدُ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ بِمِثْلِ هَذَا.

[راجع: ٦٩٠٦]

6908. उ़मर (रज़ि.) ने कहा कि इस पर अपना कोई गवाह लाओ। चुनाँचे मुह़म्मद बिन मस्लमा (रज़ि.) ने कहा कि मैं गवाही देता हूँ कि नबी करीम (ﷺ) ने ये फ़ैसला किया था। (राजेअ : 6906)

٦٩٠٨م- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سَابِقٍ، حَدَّثَنَا زَائِدَةُ، حَدَّثَنَا هِشَامُ بْنُ عُرْوَةَ، عَنْ أَبِيهِ أَنَّهُ سَمِعَ الْمُغِيرَةَ بْنَ شُعْبَةَ يُحَدِّثُ عَنْ عُمَرَ أَنَّهُ اسْتَشَارَهُمْ فِي إِمْلاَصِ الْمَرْأَةِ مِثْلَهُ.

[راجع: ٦٩٠٥]

6908. मुझसे मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे मुह़म्मद बिन साबिक़ ने बयान किया, कहा हमसे ज़ायदा ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम बिन उ़र्वा ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने, उन्होंने मुग़ीरह बिन शुअबा (रज़ि.) से सुना, वो ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) से बयान करते थे कि अमीरुल मोमिनीन ने उनसे औ़रत के ह़मल गिरा देने के (ख़ूँबहा के सिलसिले में) उनसे इसी त़रह़ मश्विरा किया था आख़िर तक। (राजेअ : 6905)

٢٦- باب جَنِينِ الْمَرْأَةِ وَأَنَّ الْعَقْلَ

बाब 26 : पेट के बच्चे का बयान और अगर

कोई औरत ख़ून करे तो उसकी दियत ददिहाल वालों पर होगी न कि उसकी औलाद पर

عَلَى الْوَالِدِ وَعَصَبَةِ الْوَالِدِ لاَ عَلَى الْوَلَدِ

6909. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे सईद बिन मुसय्यब ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने बनी लह़्यान की एक औरत के जनीन (के गिरने) पर एक ग़ुलाम या कनीज़ का फ़ैसला किया था फिर वो औरत जिसके बारे में आँह़ज़रत (ﷺ) ने दियत देने का फ़ैसला किया था उसका इंतिक़ाल हो गया तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़ैसला किया कि इसकी मीराष़ उसके लड़कों और उसके शौहर को मिलेगी और दियत उसके ददिहाल वालों को देनी होगी। (राजेअ़ : 5758)

٦٩٠٩- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَضَى فِي جَنِينِ امْرَأَةٍ مِنْ بَنِي لِحْيَانَ بِغُرَّةٍ عَبْدٍ أَوْ أَمَةٍ، ثُمَّ إِنَّ الْمَرْأَةَ الَّتِي قَضَى عَلَيْهَا بِالْغُرَّةِ تُوُفِّيَتْ، فَقَضَى رَسُولُ اللهِ ﷺ أَنَّ مِيرَاثَهَا لِبَنِيهَا وَزَوْجِهَا وَأَنَّ الْعَقْلَ عَلَى عَصَبَتِهَا.

[راجع: ٥٧٥٨]

6910. हमसे अह़मद बिन स़ालेह़ ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने वहब ने बयान किया, कहा हमसे यूनुस ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे इब्नुल मुसय्यब और अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रह़मान ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि बनी हुज़ल की दो औरतें आपस में लड़ीं और एक ने दूसरी औरत पर पत्थर फेंक मारा जिससे वो औरत अपने पेट के बच्चे (जनीन) समेत मर गई। फिर (मक़्तूला के रिश्तेदार) मुक़द्दमा रसूलुल्लाह (ﷺ) के दरबार में ले गये। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़ैसला किया कि पेट के बच्चे का ख़ूँबहा एक ग़ुलाम या कनीज़ देनी होगी और औरत के ख़ूँबहा को क़ातिल औरत के आ़क़िला (औरत के बाप की त़रफ़ से रिश्तेदार अ़स़बा) के ज़िम्मे वाजिब क़रार दिया। (राजेअ़ : 5758)

٦٩١٠- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ صَالِحٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ، حَدَّثَنَا يُونُسُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنِ ابْنِ الْمُسَيَّبِ وَأَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: اقْتَتَلَتِ امْرَأَتَانِ مِنْ هُذَيْلٍ فَرَمَتْ إِحْدَاهُمَا الأُخْرَى بِحَجَرٍ فَقَتَلَتْهَا وَمَا فِي بَطْنِهَا فَاخْتَصَمُوا إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقَضَى أَنَّ دِيَةَ جَنِينِهَا غُرَّةٌ: عَبْدٌ أَوْ وَلِيدَةٌ، وَقَضَى دِيَةَ الْمَرْأَةِ عَلَى عَاقِلَتِهَا.

[راجع: ٥٧٥٨]

बाब 27 : जिसने किसी ग़ुलाम या बच्चे को काम के लिये आ़रियतन मांग लिया

٢٧- باب مَنِ اسْتَعَانَ عَبْدًا أَوْ صَبِيًّا وَيُذْكَرُ أَنَّ أُمَّ سُلَيْمٍ بَعَثَتْ إِلَى مُعَلِّمِ الْكُتَّابِ ابْعَثْ إِلَيَّ غِلْمَانًا يَنْفُشُونَ صُوفًا وَلاَ تَبْعَثْ إِلَيَّ حُرًّا.

जैसा कि ह़ज़रत उम्मे सुलैम (रज़ि.) ने मदरसा के मुअ़ल्लिम को लिख भेजा था कि मेरे पास ऊन स़ाफ़ करने के लिये कुछ ग़ुलाम बच्चे भेज दो और किसी आज़ाद को न भेजना।

6911. मुझसे ड़मर बिन ज़ुरारह ने बयान किया, कहा हमको इस्माईल बिन इब्राहीम ने ख़बर दी, उन्हें अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ ने

٦٩١١- حَدَّثَنِي عَمْرُو بْنُ زُرَارَةَ، أَخْبَرَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ عَبْدِ

الْعَزِيزِ، عَنْ أَنَسٍ قَالَ: لَمَّا قَدِمَ رَسُولُ اللهِ ﷺ الْمَدِينَةَ أَخَذَ أَبُو طَلْحَةَ بِيَدِي فَانْطَلَقَ بِي إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ إِنَّ أَنَسًا غُلاَمٌ كَيِّسٌ فَلْيَخْدُمْكَ، قَالَ فَخَدَمْتُهُ فِي الْحَضَرِ وَالسَّفَرِ، فَوَاللهِ مَا قَالَ لِي لِشَيْءٍ صَنَعْتُهُ لِمَ صَنَعْتَ هَذَا هَكَذَا وَلاَ لِشَيْءٍ لَمْ أَصْنَعْهُ لِمَ لَمْ تَصْنَعْ هَذَا هَكَذَا؟. [راجع: ٢٧٦٨]

और उनसे ह़ज़रत अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) मदीना तशरीफ़ लाए तो ह़ज़रत त़लह़ा (रज़ि.) मेरा हाथ पकड़कर आँह़ज़रत (ﷺ) के पास लाए और कहा या रसूलल्लाह! अनस समझदार लड़का है और ये आपकी ख़िदमत करेगा। ह़ज़रत अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर मैंने आँह़ज़रत (ﷺ) की ख़िदमत सफ़र में भी की और घर पर भी। वल्लाह! आँहुज़ूर (ﷺ) ने कभी मुझसे किसी चीज़ के बारे में जो मैंने कर दिया हो ये नहीं फ़र्माया कि ये काम तुमने इस त़रह़ क्यूँ किया और न किसी ऐसी चीज़ के बारे में जिसे मैंने न किया हो आपने ये नहीं फ़र्माया कि ये काम तुमने इस त़रह़ क्यूँ नहीं किया। (राजेअ़ : 2768)

٢٨- باب الْمَعْدِنُ جُبَارٌ وَالْبِئْرُ جُبَارٌ

बाब 28 : खान में दबकर और कुएँ में गिरकर मरने वाले की दियत नहीं है

٦٩١٢- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، حَدَّثَنَا ابْنُ شِهَابٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ وَأَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((الْعَجْمَاءُ جَرْحُهَا جُبَارٌ، وَالْبِئْرُ جُبَارٌ، وَالْمَعْدِنُ جُبَارٌ، وَفِي الرِّكَازِ الْخُمُسُ)). [راجع: ١٤٩٩]

6912. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे लैष़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उनसे सईद बिन मुसय्यब और अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रह़मान ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया चौपाए अगर किसी को ज़ख़्मी कर दें तो उनका ख़ूबहा नहीं, कुएँ में गिरने का कोई ख़ूँबहा नहीं, कान में दबने का कोई ख़ूबहा नहीं और दफ़ीना में पाँचवाँ ह़िस्सा है। (राजेअ़ : 1499)

٢٩- باب الْعَجْمَاءُ جُبَارٌ

बाब 29 : चौपायों का नुक़्सान करना इसका कुछ तावान नहीं

وَقَالَ ابْنُ سِيرِينَ: كَانُوا لاَ يُضَمِّنُونَ مِنَ النَّفْحَةِ، وَيُضَمِّنُونَ مِنْ رَدِّ الْعِنَانِ. وَقَالَ حَمَّادٌ: لاَ تُضْمَنُ النَّفْحَةُ إِلاَّ أَنْ يَنْخُسَ إِنْسَانٌ الدَّابَّةَ، وَقَالَ شُرَيْحٌ : لاَ يُضْمَنُ مَا عَاقَبَتْ أَنْ يَضْرِبَهَا فَتَضْرِبَ بِرِجْلِهَا، وَقَالَ الْحَكَمُ وَحَمَّادٌ: إِذَا سَاقَ الْمُكَارِي حِمَارًا عَلَيْهِ امْرَأَةٌ فَتَخِرُّ لاَ شَيْءَ عَلَيْهِ، وَقَالَ الشَّعْبِيُّ : إِذَا سَاقَ دَابَّةً فَأَتْعَبَهَا فَهُوَ

और इब्ने सीरीन ने बयान किया कि उ़लमा जानवर के लात मार देने पर तावान नहीं दिलाते थे लेकिन अगर कोई लात मोड़ते वक़्त जानवर को ज़ख़्मी कर देता तो सवार से तावान दिलाते थे और ह़म्माद ने कहा कि लात मारने पर तावान नहीं होता लेकिन अगर कोई शख़्स़ किसी जानवर को उक्साए (और उसकी वजह से जानवर किसी दूसरे को लात मारे) तो उक्साने वाले पर तावान होगा। शुरैह़ ने कहा कि इस सूरत में तावान नहीं होगा जबकि बदला लिया हो कि पहले उसने जानवर को मारा और फिर जानवर ने उसे लात से मारा। ह़कम

ضَامِنٌ لِمَا أَصَابَتْ وَإِنْ كَانَ خَلْفَهَا مُتَرَسِّلاً لَمْ يَضْمَنْ.

ने कहा अगर कोई मज़दूर किसी गधे को हाँक रहा हो जिस पर औरत सवार हो फिर वो औरत गिर जाए तो मज़दूर पर कोई तावान नहीं और शअबी ने कहा कि जब कोई जानवर हाँक रहा हो और फिर उसे थका दे तो उसकी वजह से अगर जानवर को कोई नुक़्सान पहुँचा तो हाँकने वाला ज़ामिन होगा और अगर जानवर के पीछे रहकर उसको (मा'मूली तौर से) आहिस्तगी से हाँक रहा हो तो हाँकने वाला ज़ामिन न होगा।

तश्रीह : क्योंकि उसका कोई क़ुसूर नहीं य इत्तिफ़ाक़ी वारदात है जिसका कोई तदारुक नहीं हो सकता। मा'लूम हुआ कि अगर कोई बेतहाशा जानवर या गाड़ी को सख़्त भगाए और आम रास्ते में और उससे किसी को कोई नुक़्सान पहुँचे तो तावान देना होगा क़ानून में भी ये फ़ेअल दाख़िले जुर्म है।

٦٩١٣- حَدَّثَنَا مُسْلِمٌ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ زِيَادٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: ((الْعَجْمَاءُ عَقْلُهَا جُبَارٌ، وَالْبِئْرُ جُبَارٌ، وَالْمَعْدِنُ جُبَارٌ، وَفِي الرِّكَازِ الْخُمُسُ)).

[راجع: ١٤٩٩]

6913. हमसे मुस्लिम बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने, उन्होंने मुहम्मद बिन ज़ियाद से, उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से, उन्होंने आँहज़रत (ﷺ) से, आपने फ़र्माया बेज़ुबान जानवर किसी को ज़ख़्मी करे तो उसकी दियत कुछ नहीं है, इसी तरह खान में काम करने से कोई नुक़्सान पहुँचे, इसी तरह कुएँ में काम करने से और जो काफ़िरों का माल गड़ा हुआ मिले उसमें से पाँचवाँ हिस्सा सरकार में लिया जाएगा। (राजेअ: 1499)

٣٠- باب إِثْمِ مَنْ قَتَلَ ذِمِّيًّا بِغَيْرِ جُرْمٍ

बाब 30 : अगर कोई ज़िम्मी काफ़िर को बेगुनाह मार डाले तो कितना बड़ा गुनाह होगा

٦٩١٤- حَدَّثَنَا قَيْسُ بْنُ حَفْصٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ، حَدَّثَنَا الْحَسَنُ، حَدَّثَنَا مُجَاهِدٌ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((مَنْ قَتَلَ نَفْسًا مُعَاهَدًا لَمْ يَرِحْ رَائِحَةَ الْجَنَّةِ، وَإِنَّ رِيحَهَا لَيُوجَدُ مِنْ مَسِيرَةِ أَرْبَعِينَ عَامًا)).

[راجع: ٣١٦٦]

6914. हमसे क़ैस बिन हफ़्स ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल वाहिद बिन ज़ियाद ने, कहा हमसे हसन बिन अम्र फ़ुक़ैमी ने, कहा हमसे मुजाहिद ने, उन्हों ने अब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़ि.) से, उन्होंने आँहज़रत (ﷺ) से, आपने फ़र्माया जो शख़्स ऐसी जान को मार डाले जिससे अहद कर चुका हो (उसकी अमान दे चुका हो) जैसे ज़िम्मी काफ़िर को तो वो जन्नत की ख़ुश्बू भी न सूँघेगा (उसमें दाख़िल होना तो दूर की बात है) हालाँकि बहिश्त की ख़ुश्बू चालीस साल की राह से मा'लूम होती है। (राजेअ: 3166)

तश्रीह : इसमें वे सब काफ़िर आ गये जिनको दारुल इस्लाम में अमान दिया गया हो ख़्वाह बादशाहे इस्लाम की तरफ़ से जिज़्या या सुलह पर या किसी मुसलमान ने उसको अमान दी हो लेकिन अगर ये बात न हो तो उस काफ़िर की जान लेना या उसका माल लूटना शरअ़े इस्लाम की रू से दुरुस्त है। मषलन वो काफ़िर जो दारुल इस्लाम से बाहर सरहद पर रहते हों, उनकी सरहद में जाकर उनको या उनकी काफ़िर रइयत को लूटना मारना हलाल है। इस्माईली की रिवायत में यूँ है कि बहिश्त की ख़ुश्बू सत्तर बरस की राह से मा'लूम होती है और तबरानी की एक रिवायत में सौ बरस मज़्कूर हैं। दूसरी

रिवायत में पाँच सौ बरस और फ़िरदौस दैलमी की रिवायत में हज़ार बरस मज़्कूर हैं और ये तआरुज़ नहीं इसलिये कि हज़ार बरस की राह से बहिश्त की ख़ुश्बू महसूस होती है तो पाँच सौ या सत्तर या चालीस बरस की राह से और ज़्यादा महसूस होगी।

बाब 31 : मुसलमान को (ज़िम्मी) काफ़िर के बदले क़त्ल न करेंगे

٣١- باب لاَ يُقْتَلُ الْمُسْلِمِ بِالْكَافِرِ

6915. हमसे अहमद बिन यूनुस ने बयान किया, कहा हमसे ज़ुहैर बिन मुआविया ने, कहा हमसे मुतर्रिफ़ बिन तुरैफ़ ने, उनसे आमिर शअबी ने बयान किया अबू जुहैफ़ह से रिवायत करके, कहा मैंने अली (रज़ि.) से कहा। (दूसरी सनद) इमाम बुख़ारी (रह.) ने कहा और हमसे सदक़ा बिन फ़ज़ल ने, कहा हमको सुफ़यान बिन उयय्ना ने ख़बर दी, कहा हमसे मुतर्रिफ़ बिन तुरैफ़ ने बयान किया, कहा मैंने आमिर शअबी से सुना, वो बयान करते थे मैंने अबू जुहैफ़ह से सुना, उन्होंने कहा मैंने अली (रज़ि.) से पूछा क्या तुम्हारे पास और भी कुछ आयतें या सूरतें हैं जो इस क़ुर्आन में नहीं है (या'नी मशहूर मुस्हफ़ में) और कभी सुफ़यान बिन उयय्ना ने यूँ कहा जो आम लोगों के पास नहीं हैं। हज़रत अली (रज़ि.) ने कहा क़सम उस अल्लाह की जिसने दाना चीरकर उगाया और जान को पैदा किया हमारे पास इस क़ुर्आन के सिवा और कुछ नहीं है। अल्बत्ता एक समझ है जो अल्लाह तआला अपनी किताब की जिसको चाहता है इनायत करता है और वो जो इस वरक़ में लिखा हुआ है। अबू जुहैफ़ह ने कहा इस वरक़ में क्या लिखा है? उन्होंने कहा दियत और क़ैदी छुड़ाने के अहकाम और ये मसला कि मुसलमान काफ़िर के बदले क़त्ल न किया जाए। (राजेअ : 111)

٦٩١٥- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ، حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ، حَدَّثَنَا مُطَرِّفٌ أَنَّ عَامِرًا حَدَّثَهُمْ عَنْ أَبِي جُحَيْفَةَ قَالَ: قُلْتُ لِعَلِيٍّ: ح وَحَدَّثَنَا صَدَقَةُ بْنُ الْفَضْلِ، أَخْبَرَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ، حَدَّثَنَا مُطَرِّفٌ قَالَ: سَمِعْتُ الشَّعْبِيَّ يُحَدِّثُ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا جُحَيْفَةَ قَالَ: سَأَلْتُ عَلِيًّا رَضِيَ اللهُ عَنْهُ هَلْ عِنْدَكُمْ شَيْءٌ مِمَّا لَيْسَ فِي الْقُرْآنِ؟ وَقَالَ ابْنُ عُيَيْنَةَ: مَرَّةً مَا لَيْسَ عِنْدَ النَّاسِ فَقَالَ وَالَّذِي فَلَقَ الْحَبَّةَ وَبَرَأَ النَّسَمَةَ، مَا عِنْدَنَا إِلاَّ مَا فِي الْقُرْآنِ، إِلاَّ فَهْمًا يُعْطَى رَجُلٌ فِي كِتَابِهِ، وَمَا فِي الصَّحِيفَةِ قُلْتُ: وَمَا فِي الصَّحِيفَةِ قَالَ: الْعَقْلُ، وَفَكَاكُ الأَسِيرِ، وَأَنْ لاَ يُقْتَلَ مُسْلِمٌ بِكَافِرٍ.

[راجع: ١١١]

तश्रीह : हनफ़िया ने इस सहीह हदीष़ को जो अहले बैते रिसालत से मरवी है छोड़कर एक ज़ईफ़ हदीष़ से दलील ली है जिसको दारे क़ुत्नी और बैहक़ी ने इब्ने उमर (रज़ि.) से निकाला कि आँहज़रत (ﷺ) ने एक मुसलमान को काफ़िर के बदले क़त्ल कराया हालाँकि दारे क़ुत्नी ने ख़ुद सराहत कर दी है कि इसका रावी इब्राहीम ज़ईफ़ है और बैहक़ी ने कहा कि ये हदीष़ रावी की ग़लती है और बहालते इंफ़िराद ऐसी रिवायत हुज्जत नहीं। ख़ुसूसन जबकि मुर्सलन भी हो और मुख़ालिफ़ भी हो। अहादीषे सहीहा के हाफ़िज़ ने कहा अगर तस्लीम भी कर लें कि ये वाक़िया सहीह निहायत है ये हदीष़ उस हदीष़ से मन्सूख़ न होगी क्योंकि ये हदीष़ **ला युक़्तलु मुस्लिमुन बिकाफ़िरिन** आपने फ़त्हे मक्का के दिन फ़र्माई।

बाब 32 : अगर मुसलमान ने ग़ुस्से में यहूदी को तमाँचा (थप्पड़) लगाया (तो क़िसास न लिया जाएगा) इसको हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने आँहज़रत (ﷺ) से रिवायत किया

٣٢- باب إِذَا لَطَمَ الْمُسْلِمُ يَهُودِيًّا عِنْدَ الْغَضَبِ

رَوَاهُ أَبُو هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ.

तश्रीह : इस बाब के लाने से इमाम बुख़ारी (रह़.) की ग़र्ज़ अगले बाब के मत़लब को तक़्वियत देना है कि जब थप्पड़ में मुसलमान और काफ़िर में क़िसास़ न लिया गया तो क़त्ल में भी क़िसास़ न लिया जाएगा मगर ये हुज्जत उन्हीं लोगों के मुक़ाबले में पूरी होगी जो थप्पड़ में क़िसास़ तज्वीज़ करते हैं।

६٩١٦– حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ عَمْرِو بْنِ يَحْيَى، عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((لاَ تُخَيِّرُوا بَيْنَ

6916. हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान स़ौरी ने, उन्होंने अ़म्र बिन यह़्या ने, उन्होंने अपने वालिद से, उन्होंने अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) से, उन्होंने आँह़ज़रत (ﷺ) से आपने फ़र्माया देखो और पैग़म्बरों से मुझको फ़ज़ीलत मत दो। (राजेअ़ : 2412)

तश्रीह : या'नी इस त़रह़ से कि दूसरे पैग़म्बरों की तौहीन या तह़क़ीर निकले या इस त़रह़ से कि लोगों में झगड़ा फ़साद पैदा हो ह़ालाँकि इस रिवायत में त़माचे का ज़िक्र नहीं है मगर आगे की रिवायत में मौजूद है ये रिवायत उसकी मुख़्तस़र है।

٦٩١٧– حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ عَمْرِو بْنِ يَحْيَى الْمَازِنِيِّ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ مِنَ الْيَهُودِ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَدْ لُطِمَ وَجْهُهُ فَقَالَ: يَا مُحَمَّدُ إِنَّ رَجُلاً مِنْ أَصْحَابِكَ مِنَ الأَنْصَارِ لَطَمَ وَجْهِي قَالَ: ((ادْعُوهُ)) فَدَعَوْهُ قَالَ: ((لِمَ لَطَمْتَ وَجْهَهُ؟)) قَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ إِنِّي مَرَرْتُ بِالْيَهُودِ فَسَمِعْتُهُ يَقُولُ: وَالَّذِي اصْطَفَى مُوسَى عَلَى الْبَشَرِ، قَالَ: قُلْتُ وَعَلَى مُحَمَّدٍ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: فَأَخَذَتْنِي غَضْبَةٌ فَلَطَمْتُهُ قَالَ: ((لاَ تُخَيِّرُونِي مِنْ بَيْنِ الأَنْبِيَاءِ، فَإِنَّ النَّاسَ يَصْعَقُونَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ، فَأَكُونُ أَوَّلَ مَنْ يُفِيقُ، فَإِذَا أَنَا بِمُوسَى آخِذٌ بِقَائِمَةٍ مِنْ قَوَائِمِ الْعَرْشِ، فَلاَ أَدْرِي أَفَاقَ قَبْلِي أَمْ جُزِيَ بِصَعْقَةِ الطُّورِ)).

[راجع: ٢٤١٢]

6917. हमसे मुह़म्मद बिन यूसुफ़ बैकुन्दी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़यैना ने, उन्होंने अ़म्र बिन यह़्या माज़िनी ने, उन्होंने अपने वालिद (यह़्या बिन अ़म्मारा बिन अबी ह़सन माज़िनी) से, उन्होंने अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) से, उन्होंने कहा यहूद में से एक शख़्स़ आँह़ज़रत (ﷺ) के पास आया, उसको किसी ने त़माचा लगाया था। कहने लगा ऐ मुह़म्मद! (ﷺ) तुम्हारे अस़्ह़ाब में से एक अंस़ारी शख़्स़ (नाम नामा'लूम) ने मुझको त़माचा मारा। आपने लोगों से फ़र्माया उसको बुलाओ तो उन्होंने बुलाया (वो ह़ाज़िर हुआ) आपने पूछा तूने उसके मुँह पर त़माचा क्यूँ मारा? वो कहने गला या रसूलल्लाह (ﷺ)! ऐसा हुआ कि मैं यहूदियों पर से गुज़रा, मैंने सुना ये यहूदी यूँ क़सम खा रहा था क़सम उस परवरदिगार की जिसने मूसा (अ़लैहि.) को सारे आदमियों में से चुन लिया। मैंने कहा क्या मुह़म्मद (ﷺ) से भी वो अफ़ज़ल हैं और उस वक़्त मुझको ग़ुस़्सा आ गया। मैंने एक त़माचा लगा दिया (ग़ुस़्से में ये ख़त़ा मुझसे हो गई) आपने फ़र्माया (देखो ख़्याल रखो) और पैग़म्बरों पर मुझको फ़ज़ीलत न दो क़यामत के दिन ऐसा होगा सब लोग (हैबते ख़ुदावन्दी से) बेहोश हो जाएँगे फिर मैं सबसे पहले होश में आऊँगा, क्या देखूँगा मूसा (अ़लैहि.) (मुझसे भी पहले) अ़र्श का एक कोना थामे खड़े हैं, अब ये मैं नहीं जानता कि वो मुझसे पहले होश में आ जाएँगे या कोहे तूर पर जो (दुनिया में) बेहोश हो चुके थे उसके बदल वो आख़िरत में बेहोश ही न होंगे। (राजेअ़ : 2412)

तश्रीह : ह़ज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) को कष़रत से अह़ादीष़ याद थीं। उनकी मरवियात की ता'दाद 1170 है। आपकी वफ़ात जुम्अे के दिन सन 74 हिजरी में हुई। जन्नतुल बक़ीअ में दफ़न किये गये।

89. किताब इस्तिताबतुल मुर्तद्दीन

किताब बाग़ियों और मुर्तदों से तौबा कराने का बयान

بِسۡمِ اللهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

١-باب قَالَ اللهُ تَعَالَى: ﴿إِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيمٌ﴾ [لقمان :١٣] ﴿لَئِنْ أَشْرَكْتَ لَيَحْبَطَنَّ عَمَلُكَ وَلَتَكُونَنَّ مِنَ الْخَاسِرِينَ﴾ [الزمر: ٦٥]

बाब 1 : अल्लाह तआला ने सूरह लुक़्मान में फ़र्माया, शिर्क बड़ा गुनाह है, और सूरह ज़ुमर में फ़र्माया, ऐ पैग़म्बर! अगर तू भी शिर्क करे तो तेरे सारे नेक आमाल अकारत हो जाएँगे और घाटा उठाने वालों (या'नी काफ़िरों और मुश्रिकों) में शरीक हो जाएगा। (सूरह ज़ुमर : 65)

तश्रीह : ह़ालाँकि पैग़म्बरों से शिर्क नहीं हो सकता मगर ये बरसबीले फ़र्ज़ और तक़्दीर फ़र्माया और इससे उम्मत को डराना मंज़ूर है कि शिर्क ऐसा सख़्त गुनाह है कि अगर आँह़ज़रत (ﷺ) से भी सरज़द हो जाए जो सारे जहाँ से ज़्यादा अल्लाह के मुक़र्रब और मह़बूब बन्दे हैं तो सारी इ़ज़्ज़त छिन जाए और राँद-ए-दरगाह हो जाएँ मआ़ज़ल्लाह फिर दूसरे लोगों का क्या ठिकाना है। मोमिन को चाहिये कि जो बात बिल इत्तिफ़ाक़ शिर्क है इससे और जिस बात के शिर्क होने में इख़्तिलाफ़ है उससे बचा रहे ऐसा न हो कि वो शिर्क हो और उसके इर्तिकाब से तबाह हो जाए तमाम आमाले ख़ैर बर्बाद हो जाएँ।

٦٩١٨- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، أَخْبَرَنَا جَرِيرٌ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنْ عَلْقَمَةَ، عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: لَمَّا نَزَلَتْ هَذِهِ الآيَةُ: ﴿الَّذِينَ آمَنُوا وَلَمْ يَلْبِسُوا إِيمَانَهُم بِظُلْمٍ﴾ [الانعام : ٨٢] شَقَّ ذَلِكَ عَلَى أَصْحَابِ النَّبِيِّ

6918. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको जरीर बिन अ़ब्दुल ह़मीद ने, उन्होंने आ'मश से, उन्होंने इब्राहीम नख़ई से, उन्होंने अ़ल्क़मा से, उन्होंने अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) से, उन्होंने कहा जब (सूरह अन्आम की) ये आयत उतरी, जो लोग ईमान लाए और उन्होंने ईमान को गुनाह से आलूद नहीं किया (या'नी ज़ुल्म से) तो आँह़ज़रत (ﷺ) के स़ह़ाबा को बहुत गिराँ गुज़री वो कहने लगे भला हममें से कौन ऐसा है जिसने ईमान के साथ कोई ज़ुल्म (या'नी गुनाह) न

ﷺ وَقَالُوا: أَيُّنَا لَمْ يَلْبِسْ إِيمَانَهُ بِظُلْمٍ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِنَّهُ لَيْسَ بِذَاكَ أَلاَ تَسْمَعُونَ إِلَى قَوْلِ لُقْمَانَ : ﴿إِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيمٌ﴾)). [راجع: ٣٢]

किया हो। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया इस आयत में ज़ुल्म से गुनाह मुराद नहीं है (बल्कि शिर्क मुराद है) क्या तुमने हज़रत लुक़्मान (अलैहि.) का क़ौल नहीं सुना शिर्क बड़ा ज़ुल्म है। (राजेअ: 32)

तश्रीह : मा'लूम हुआ कि शिर्क सिर्फ़ यही नहीं है कि आदमी बेईमान हो अल्लाह का मुंकिर हो या दो ख़ुदाओं का क़ाइल हो बल्कि कभी ईमान के साथ भी आदमी शिर्क में आलूदा हो जाता है जैसे दूसरी आयत में **व मा यूमिनु अक्सरुहुम बिल्लाहि इल्ला व हुम मुश्रिकून** (यूसुफ़ : 106)। क़ाज़ी अयाज़ ने कहा ईमान का शिर्क से आलूदा करना ये है कि अल्लाह का क़ाइल हो (उसकी तौहीद मानता हो) मगर इबादत में औरों को भी शरीक करे। मुतर्जिम कहता है जैसे हमारे ज़माने के क़ब्रपरस्तों का हाल है अल्लाह को मानते हैं फिर अल्लाह के साथ औरों की भी इबादत करते हैं, उनकी नज़्र व नियाज़ मन्नत मानते हैं, उनके नाम पर जानवर काटते हैं, दुख, बीमारी में उनको पुकारते हैं, उनको मुश्किलकुशा और हाजत रवा समझते हैं, उनकी क़ब्रों पर जाकर सज्दा और तवाफ़ करते हैं, उनसे वुस्अते रिज़्क़ या औलाद या शिफ़ा तलब करते हैं। ये सब लोग फ़िल हक़ीक़त मुश्रिक हैं। गो नाम के मुसलमान कहलाएँ तो क्या होता है। ऐसा ज़ाहिरी बराये नाम इस्लाम आख़िरत में कुछ काम नहीं आएगा। अरब के मुश्रिक भी अल्लाह को मानते थे, ख़ालिक़े आसमान व ज़मीन उसी को जानते थे मगर ग़ैरुल्लाह की इबादत और ता'ज़ीम की वजह से अल्लाह तआला ने उनको मुश्रिक क़रार दिया। अगर तुम क़ुर्आन शरीफ़ का तर्जुमा ख़ूब समझकर पढ़ो तो शिर्क का मतलब अच्छी तरह समझ लोगे मगर अफ़सोस तो ये है कि तुम सारी उम्र में एक बार भी क़ुर्आन अव्वल से लेकर आख़िर तक समझकर नहीं पढ़ते, सिर्फ़ उसके अल्फ़ाज़ रट लेते हैं उससे काम नहीं चलता।

٦٩١٩- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ الْمُفَضَّلِ، حَدَّثَنَا الْجُرَيْرِيُّ، ح وَحَدَّثَنِي قَيْسُ بْنُ حَفْصٍ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، أَخْبَرَنَا سَعِيدٌ الْجُرَيْرِيُّ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ أَبِي بَكْرَةَ، عَنْ أَبِيهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((أَكْبَرُ الْكَبَائِرِ الإِشْرَاكُ بِاللهِ، وَعُقُوقُ الْوَالِدَيْنِ، وَشَهَادَةُ الزُّورِ، ثَلاَثًا - أَوْ - قَوْلُ الزُّورِ)) فَمَا زَالَ يُكَرِّرُهَا حَتَّى قُلْنَا لَيْتَهُ سَكَتَ. [راجع: ١٢٦٤٤]

6919. हमसे मुसद्दद बिन मुस्रहिद ने बयान किया, कहा हमसे बिश्र बिन मुफ़ज़्ज़ल ने, कहा हमसे सईद बिन अयास जरीरी ने। (दूसरी सनद) इमाम बुख़ारी (रह.) ने कहा और मुझसे क़ैस बिन हफ़्स ने बयान किया, कहा हमसे इस्माईल बिन इब्राहीम ने, कहा हमको सईद जरीरी ने ख़बर दी, कहा हमसे अब्दुर्रहमान बिन अबीबक्र ने बयान किया, उन्होंने अपने वालिद (अबूबक्र सहाबी) से, उन्होंने कहा कि आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया बड़े से बड़ा गुनाह अल्लाह तआला के साथ शिर्क करना है और माँ बाप को सताना (उनकी नाफ़र्मानी करना) और झूठी गवाही देना, झूठी गवाही देना। तीन बार यही फ़र्माया या यूँ फ़र्माया और झूठ बोलना बराबर बार बार आप यही फ़र्माते रहे यहाँ तक कि हमने आरज़ू की कि काश! आप ख़ामोश हो रहते। (राजेअ : 12644)

٦٩٢٠- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ الْحُسَيْنِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ، أَخْبَرَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ مُوسَى، أَخْبَرَنَا شَيْبَانُ، عَنْ فِرَاسٍ، عَنِ الشَّعْبِيِّ،

6920. हमसे मुहम्मद बिन हुसैन बिन इब्राहीम ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे उबैदुल्लाह बिन मूसा कूफ़ी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको शैबान नह्वी ने ख़बर दी, उन्होंने फ़राश बिन यह्या से, उन्होंने आमिर शअबी से, उन्होंने

عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَمْرٍو رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: جَاءَ أَعْرَابِيٌّ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ مَا الْكَبَائِرُ؟ قَالَ: ((الإِشْرَاكُ بِاللهِ)) قَالَ: ثُمَّ مَاذَا؟ قَالَ: ((ثُمَّ عُقُوقُ الْوَالِدَيْنِ)) قَالَ: ثُمَّ مَاذَا؟ قَالَ: ((الْيَمِينُ الْغَمُوسُ)) قُلْتُ: وَمَا الْيَمِينُ الْغَمُوسُ؟ قَالَ: ((الَّذِي يَقْتَطِعُ مَالَ امْرِىءٍ مُسْلِمٍ هُوَ فِيهَا كَاذِبٌ)). [راجع: ٦٦٧٥]

अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स (रज़ि.) से, उन्होंने कहा एक गंवार (नाम मा'लूम) आँहज़रत (ﷺ) के पास आया कहने लगा या रसूलल्लाह! बड़े बड़े गुनाह कौन हैं? आपने फ़र्माया अल्लाह के साथ शिर्क करना। उसने पूछा फिर कौनसा गुनाह? आपने फ़र्माया माँ बाप को सताना। पूछा फिर कौनसा गुनाह? आपने फ़र्माया ग़मूस क़सम खाना। अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र (रज़ि.) ने कहा मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! ग़मूस क़सम क्या है? आपने फ़र्माया जान बूझकर किसी मुसलमान का माल मार लेने के लिये झूठी क़सम खाना। (राजेअ़ : 6675)

٦٩٢١- حَدَّثَنَا خَلاَّدُ بْنُ يَحْيَى، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ مَنْصُورٍ وَالأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي وَائِلٍ عَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ قَالَ رَجُلٌ يَا رَسُولَ اللهِ أَنُؤَاخَذُ بِمَا عَمِلْنَا فِي الْجَاهِلِيَّةِ؟ قَالَ: ((مَنْ أَحْسَنَ فِي الإِسْلاَمِ لَمْ يُؤَاخَذْ بِمَا عَمِلَ فِي الْجَاهِلِيَّةِ، وَمَنْ أَسَاءَ فِي الإِسْلاَمِ أُخِذَ بِالأَوَّلِ وَالآخِرِ)).

6921. हमसे ख़ल्लाद बिन यह्या ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ष़ौरी ने, उन्होंने मंसूर और आ'मश से, उन्होंने अबू वाइल से, उन्होंने हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) से, उन्होंने कहा एक शख़्स (नाम नामा'लूम) ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! हमने जो गुनाह (इस्लाम लाने से पहले) जाहिलियत के ज़माने में किये हैं क्या उनका मुवाख़िज़ा हमसे होगा? आपने फ़र्माया जो शख़्स इस्लाम की हालत में नेक आ़माल करता रहा इससे जाहिलियत के गुनाहों का मुवाख़िज़ा न होगा (अल्लाह तआ़ला माफ़ कर देगा) और जो शख़्स मुसलमान होकर भी बुरे काम करता रहा उससे दोनों ज़मानों के गुनाहों का मुवाख़िज़ा होगा।

मा'लूम ये हुआ कि इस्लाम जाहिलियत के तमाम बुरे कामों को मिटाता है। इस्लाम लाने के बाद जाहिलियत का काम न करे।

٢- باب حُكْمِ الْمُرْتَدِّ وَالْمُرْتَدَّةِ

बाब 2 : मुर्तद मर्द और औ़रत का हुक्म

وَقَالَ ابْنُ عُمَرَ وَالزُّهْرِيُّ وَإِبْرَاهِيمُ : تُقْتَلُ الْمُرْتَدَّةُ وَاسْتِتَابَتِهِمْ وَقَالَ اللهُ تَعَالَى: ﴿كَيْفَ يَهْدِي اللهُ قَوْمًا كَفَرُوا بَعْدَ إِيمَانِهِمْ وَشَهِدُوا أَنَّ الرَّسُولَ حَقٌّ وَجَاءَهُمُ الْبَيِّنَاتُ وَاللهُ لاَ يَهْدِى الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ أُولَئِكَ جَزَاؤُهُمْ أَنَّ عَلَيْهِمْ لَعْنَةَ اللهِ وَالْمَلاَئِكَةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ خَالِدِينَ فِيهَا لاَ يُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَلاَ هُمْ

और अ़ब्दुल्लाह बिन ड़मर और ज़ुह्री और इब्राहीम नख़ई ने कहा मुर्तद औ़रत क़त्ल की जाए। इस बाब मे ये बयान है कि मुर्तदों से तौबा ली जाए और अल्लाह तआ़ला ने (सूरह आले इमरान) में फ़र्माया, अल्लाह तआ़ला ऐसे लोगों को क्यूँ हिदायत करने लगा जो ईमान लाकर फिर काफ़िर बन गये। हालाँकि (पहले) ये गवाही दे चुके थे कि हज़रत मुहम्मद (ﷺ) सच्चे पैग़म्बर हैं और उनकी पैग़म्बरी की खुली खुली दलीलें उनके पास आ चुकीं और अल्लाह तआ़ला ऐसे हठधर्म लोगों को राह पर नहीं लाता। उन लोगों की सज़ा ये है कि उन पर अल्लाह और फ़रिश्तों की और सब लोगों की फटकार

يُنظَرُونَ إِلاَّ الَّذِينَ تَابُوا مِنْ بَعْدِ ذَٰلِكَ وَأَصْلَحُوا فَإِنَّ اللهَ غَفُورٌ رَحِيمٌ إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بَعْدَ إِيمَانِهِمْ ثُمَّ ازْدَادُوا كُفْرًا لَنْ تُقْبَلَ تَوْبَتُهُمْ وَأُولَئِكَ هُمُ الضَّالُّونَ﴾ [آل عمران: ٨٦-٩٠] وَقَالَ: ﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِنْ تُطِيعُوا فَرِيقًا مِنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَابَ يَرُدُّوكُمْ بَعْدَ إِيمَانِكُمْ كَافِرِينَ﴾ [آل عمران : ١٠٠] وَقَالَ : ﴿إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا ثُمَّ كَفَرُوا ثُمَّ آمَنُوا ثُمَّ كَفَرُوا ثُمَّ ازْدَادُوا كُفْرًا لَمْ يَكُنِ اللهُ لِيَغْفِرَ لَهُمْ وَلاَ لِيَهْدِيَهُمْ سَبِيلاً﴾ [النساء : ١٣٧] وَقَالَ: ﴿مَنْ يَرْتَدَّ مِنْكُمْ عَنْ دِينِهِ فَسَوْفَ يَأْتِي اللهُ بِقَوْمٍ يُحِبُّهُمْ وَيُحِبُّونَهُ أَذِلَّةٍ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ أَعِزَّةٍ عَلَى الْكَافِرِينَ﴾ [المائدة : ٥٤] ﴿وَلَكِنْ مَنْ شَرَحَ بِالْكُفْرِ صَدْرًا فَعَلَيْهِمْ غَضَبٌ مِنَ اللهِ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمُ اسْتَحَبُّوا الْحَيَاةَ الدُّنْيَا عَلَى الآخِرَةِ وَأَنَّ اللهَ لاَ يَهْدِي الْقَوْمَ الْكَافِرِينَ أُولَئِكَ الَّذِينَ طَبَعَ اللهُ عَلَى قُلُوبِهِمْ وَسَمْعِهِمْ وَأَبْصَارِهِمْ وَأُولَئِكَ هُمُ الْغَافِلُونَ لاَ جَرَمَ﴾ [النحل ١٠٦-١٠٩] يَقُولُ حَقًّا ﴿أَنَّهُمْ فِي الآخِرَةِ هُمُ الْخَاسِرُونَ﴾ إِلَى قَوْلِهِ: ﴿ ثُمَّ إِنَّ رَبَّكَ مِنْ بَعْدِهَا لَغَفُورٌ رَحِيمٌ. وَلاَ يَزَالُونَ يُقَاتِلُونَكُمْ حَتَّى يَرُدُّوكُمْ عَنْ دِينِكُمْ إِنِ اسْتَطَاعُوا وَمَنْ يَرْتَدِدْ مِنْكُمْ عَنْ دِينِهِ فَيَمُتْ وَهُوَ كَافِرٌ

पड़ेगी। उसी फटकार की वजह से हमेशा अ़ज़ाब मे पड़े रहेंगे कभी उनका अ़ज़ाब हल्का न होगा न उनको मुह्लत मिलेगी अल्बत्ता जिन लोगों ने ऐसा करने के बाद तौबा की अपनी ह़ालत दुरुस्त कर ली तो अल्लाह उनका क़ुसूर बख़्शने वाला मेहरबान है बेशक जो लोग ईमान लाए फिर दोबारा काफ़िर हो गये फिर उनका कुफ़्र बढ़ता गया उनकी तो तौबा भी क़ुबूल न होगी और यही लोग तो (परे सिरे के) गुमराह हैं और फ़र्माया, मुसलमानों! अगर तुम अहले किताब के किसी गिरोह का कहा मानोगे तो वो ईमान लाए पीछे तुमको काफ़िर बना छोड़ेंगे और सूरह निसा के 20वें रुकूअ में फ़र्माया जो लोग इस्लाम लाए फिर काफ़िर बन बैठे फिर इस्लाम लाए फिर काफ़िर बन बैठे फिर कुफ़्र बढ़ाते चले गये उनको तो अल्लाह तआ़ला न बख़्शेगा न कभी उनको राहे रास्त पर लाएगा और सूरह माइदह के आठवें रुकूअ में फ़र्माया जो कोई तुममें अपने दीन से फिर जाए तो अल्लाह तआ़ला को कुछ परवाह नहीं वो ऐसे लोगों को ह़ाज़िर कर देगा जिनको वो चाहता है और वो उसको चाहते हैं मुसलमानों पर नर्मदिल काफ़िरों पर कड़े अख़ीर आयत तक और सूरह नह़ल 14वें रुकूअ में फ़र्माया लेकिन जो लोग ईमान लाए फिर जी खोलकर या'नी ख़ुशी और रग़बत से कुफ़्र इख़्तियार करें उन पर तो अल्लाह का ग़ज़ब उतरेगा और उनको बड़ा अ़ज़ाब होगा इसकी वजह ये है कि ऐसे लोगों ने दुनिया की ज़िंदगी के मज़ों को आख़िरत से ज़्यादा पसंद किया और ये भी है कि अल्लाह तआ़ला काफ़िर लोगों को राह पर नहीं लाता। यही लोग तो वो हैं जिनके दिलों और कानों और आँखों पर अल्लाह ने मुह्र लगा दी है वो अल्लाह से बिल्कुल ग़ाफ़िल हो गये हैं तो आख़िरत में चार व नाचार ये लोग टोटा उठाएँगे अख़ीर आयत इन्न रब्बक मिन् बअ़दिहा ल ग़फ़ूरुर्रहीम तक और सूरह बक़र: 27वें रुकूअ में फ़र्माया ये काफ़िर तो सदा तुमसे लड़ते रहेंगे जब तक उनका बस चले तो वो अपने दीन से तुमको फेर दें (मुर्तद बना दें) और तुममें जो लोग तेरे दीन (इस्लाम) से फिर जाएँ और मरते वक़्त काफ़िर मरें उनके सारे नेक आमाल दुनिया और आख़िरत में गये गुज़रे। वो दोज़ख़ी हैं हमेशा दोज़ख़ ही में रहेंगे। (इमाम

فَأُولَٰئِكَ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَأُولَٰئِكَ أَصْحَابُ النَّارِ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ﴾ [البقرة : ٢١٧].

बुख़ारी रह. ने यहाँ उन सब आयात को जमा कर दिया जो मुर्तदों के बाब में क़ुर्आन मजीद में आई थीं।) (अल बक़रः : 217)

तश्रीह : इब्ने मुंज़िर ने कहा जुम्हूर उलमा का ये क़ौल है कि मुर्तद मर्द हो या औरत क़त्ल किया जाए या'नी जब उसके शुब्हे का जवाब दिया जाए उस पर भी वो मुसलमान न हो कुफ़्र पर क़ायम रहे। हज़रत अली (रज़ि.) से मन्क़ूल है कि औरत को लौण्डी बना लें। हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ ने कहा जलावतन की जाए। ष़ौरी ने कहा क़ैद की जाए। इमाम अबू हनीफ़ा ने कहा अगर वो आज़ाद हो तो क़ैद की जाए अगर लौण्डी हो तो उसके मालिक को हुक्म दिया जाए वो उसको जबरन मुसलमान करे। इब्ने उमर (रज़ि.) के अष़र को इब्ने अबी शैबा ने और ज़ुह्री और इब्राहीम के अष़रों को अब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने वस्ल किया और इमाम अबू हनीफ़ा ने आसिम से, उन्होंने अबू रुज़ैन से, उन्होंने इब्ने अब्बास (रज़ि.) से यूँ रिवायत की कि औरतें अगर मुर्तद हो जाएँ तो उनको क़त्ल नहीं करेंगे। उसको इब्ने अबी शैबा ने और दारे क़ुत्नी ने निकाला और दारे क़ुत्नी ने जाबिर से निकाला कि एक औरत मुर्तद हो गई थी तो आँहज़रत (ﷺ) ने उसके क़त्ल का हुक्म दिया। हाफ़िज़ ने कहा इमाम अबू हनीफ़ा ने जो रिवायत की (अव्वल तो वो मौक़ूफ़ है दूसरे) एक जमाअत हुफ़्फ़ाज़े हदीष़ ने उनके अल्फ़ाज़ से इख़्तिलाफ़ किया। मैं कहता हूँ जब मर्फ़ूअ हदीष़ वारिद है तो उसके ख़िलाफ़ ऐसी मौक़ूफ़ रिवायतें वो भी ज़ईफ़ हुज्जत नहीं हो सकतीं और सहीह हदीष़ **मन बद्दल दीनहू फ़क़्तुलूहु** आम है मर्द और औरत दोनों को शामिल है और अब इब्ने शैबा और सईद बिन मंसूर ने इब्राहीम नख़ई से जो अबू हनीफ़ा (रह.) के उस्ताज़ुल उस्ताज़ हैं यूँ रिवायत की है कि मुर्तद मर्द और औरत से तौबा कराई जाए अगर तौबा करें तो ठीक वरना क़त्ल किये जाएँ।

٦٩٢٢- حَدَّثَنَا أَبُو النُّعْمَانِ مُحَمَّدُ بْنُ الْفَضْلِ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، عَنْ أَيُّوبَ، عَنْ عِكْرِمَةَ قَالَ: أُتِيَ عَلِيٌّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ بِزَنَادِقَةٍ فَأَحْرَقَهُمْ فَبَلَغَ ذَلِكَ ابْنَ عَبَّاسٍ فَقَالَ: لَوْ كُنْتُ أَنَا لَمْ أُحْرِقْهُمْ لِنَهْيِ رَسُولِ اللهِ ﷺ: ((لاَ تُعَذِّبُوا بِعَذَابِ اللهِ)) وَلَقَتَلْتُهُمْ لِقَوْلِ رَسُولِ اللهِ ﷺ: ((مَنْ بَدَّلَ دِينَهُ فَاقْتُلُوهُ)). [راجع: ٣٠١٧]

6922. हमसे अबुन नोअमान मुहम्मद बिन फ़ज़ल सदूसी ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने, उन्होंने अय्यूब सुख़्तियानी से, उन्होंने इक्रिमा से, उन्होंने कहा अली (रज़ि.) के पास कुछ बेदीन लोग लाए गये। आपने उनको जलवा दिया ये ख़बर इब्ने अब्बास (रज़ि.) को पहुँची तो उन्होंने कहा अगर मैं हाकिम होता तो उनको कभी नहीं जलवाता (दूसरी तरह से सज़ा देता) क्योंकि आँहज़रत (ﷺ) ने आग में जलाने से मना किया है। आप (ﷺ) ने फ़र्माया आग अल्लाह का अज़ाब है तुम अल्लाह के अज़ाब से किसी को मत अज़ाब दो मैं उनको क़त्ल करवा डालता क्योंकि आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया है जो शख़्स अपना दीन बदल डाले इस्लाम से फिर जाए उसको क़त्ल कर डालो। (राजेअ : 3017)

तश्रीह : ऐसे मज़्कूरा लोगों को अरबी में ज़िन्दीक़ कहते हैं जैसे नचरी, तबई, दहरी वग़ैरह जो अल्लाह के क़ाइल नहीं हैं या जो शरीअत और दीन को मज़ाक़ समझते हैं जहाँ जैसा मौक़ा हुआ वैसे बन गये। मुसलमानों में मुसलमान, हिन्दुओं मे हिन्दू, नसारा में नसरानी। कुछ ने कहा ये लोग जो हज़रत अली (रज़ि.) के सामने लाये गये थे सबाई फ़िर्क़े के थे जिनका रईस अब्दुल्लाह बिन सबा एक यहूदी था जो बज़ाहिर मुसलमान हो गया था लेकिन दिल में मुसलमानों को तबाह व बर्बाद और गुमराह करना उसको मंज़ूर था उसने उन लोगों को ये समझाया कि हजरत अली (रज़ि.) अल्लाह के अवतार हैं जैसे हिन्दू मुश्रिक समझते हैं कि अल्लाह तआला दुनिया में आदमी या जानवर के भेस में आता है और उसको अवतार कहते हैं। हज़रत अली (रज़ि.) जब उन लोगों के ए'तिक़ाद पर मुत्तलअ हुए तो उनको गिरफ़्तार किया और आग में जलवा दिया। **लअनहुमुल्लाह।**

6923. हमसे मुसद्दद बिन मुस्रहिद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन सईद क़त्तान ने, उन्होंने क़ुर्रह बिन ख़ालिद से, कहा मुझसे हुमैद बिन हिलाल ने बयान किया, कहा हमसे अबू बुर्दा (रज़ि.) ने, उन्होंने अबू मूसा अश्अरी से, उन्होंने कहा मैं आँहज़रत (ﷺ) के पास आया मेरे साथ अश्अर क़बीले के दो शख़्स थे (नाम नामा'लूम) एक मेरे दाहिने तरफ़ था, दूसरा बाईं तरफ़। उस वक़्त आँहज़रत (ﷺ) मिस्वाक कर रहे थे। दोनों ने आँहज़रत (ﷺ) से ख़िदमत की दरख़्वास्त की या'नी हुकूमत और ओहदे की। आपने फ़र्माया, अबू मूसा या अ़ब्दुल्लाह बिन क़ैस! (रावी को शक है) मैंने उसी वक़्त अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! उस परवरदिगार की क़सम! जिसने आपको सच्चा पैग़म्बर बनाकर भेजा। उन्होंने अपने दिल की बात मुझसे नहीं कही थी और मुझको मा'लूम नहीं था कि ये दोनों शख़्स ख़िदमत चाहते हैं। अबू मूसा कहते हैं जैसे मैं इस वक़्त आपकी मिस्वाक को देख रहा हूँ वो आपके होंठ के नीचे उठी हुई थी। आपने फ़र्माया जो कोई हमसे ख़िदमत की दरख़्वास्त करता है हम उसको ख़िदमत नहीं देते। लेकिन अबू मूसा या अ़ब्दुल्लाह बिन क़ैस! तू यमन की हुकूमत पर जा (ख़ैर अबू मूसा रवाना हुए) उसके बाद आपने मुआ़ज़ बिन जबल को भी उनके पीछे रवाना किया। जब मुआ़ज़ (रज़ि.) यमन में अबू मूसा (रज़ि.) के पास पहुँचे तो अबू मूसा (रज़ि.) ने उनके बैठने के लिये गद्दा बिछवाया और कहने लगे सवारी से उतरो गद्दे पर बैठो। उस वक़्त उनके पास एक शख़्स था (नाम नामा'लूम) जिसकी मश्कें कसी हुई थीं। मुआ़ज़ (रज़ि.) ने अबू मूसा (रज़ि.) से पूछा ये कौन शख़्स है? उन्होंने कहा ये यहूदी था फिर मुसलमान हुआ अब फिर यहूदी हो गया है और अबू मूसा (रज़ि.) ने मुआ़ज़ (रज़ि.) से कहा अजी तुम सवारी पर से उतरकर बैठो तो। उन्होंने कहा मैं नहीं बैठता जब तक अल्लाह और उसके रसूल के हुक्म के मुवाफ़िक़ ये क़त्ल न किया जाएगा तीन बार यही कहा। आख़िर अबू मूसा (रज़ि.) ने हुक्म दिया वो क़त्ल किया गया। फिर मुआ़ज़ (रज़ि.) बैठे। अब दोनों ने रात की इबादत (तहज्जुद गुज़ारी) का ज़िक्र निकाला। मुआ़ज़ (रज़ि.) ने कहा मैं तो रात को इबादत भी करता हूँ और सोता भी हूँ और मुझे उम्मीद है कि सोने में भी मुझको वही स़वाब मिलेगा जो नमाज़ पढ़ने और इबादत करने

٦٩٢٣- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا يَحْيَى، عَنْ قُرَّةَ بْنِ خَالِدٍ، حَدَّثَنِي حُمَيْدُ بْنُ هِلاَلٍ، حَدَّثَنَا أَبُو بُرْدَةَ عَنْ أَبِي مُوسَى قَالَ: أَقْبَلْتُ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَ مَعِي رَجُلاَنِ مِنَ الأَشْعَرِيِّيْنَ أَحَدُهُمَا عَنْ يَمِينِي وَالآخَرُ عَنْ يَسَارِي وَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَسْتَاكُ فَكِلاَهُمَا سَأَلَ فَقَالَ: ((يَا أَبَا مُوسَى أَوْ يَا عَبْدَ اللهِ بْنَ قَيْسٍ)) قَالَ: قُلْتُ وَالَّذِي بَعَثَكَ بِالْحَقِّ مَا أَطْلَعَانِي عَلَى مَا فِي أَنْفُسِهِمَا وَمَا شَعَرْتُ أَنَّهُمَا يَطْلُبَانِ الْعَمَلَ فَكَأَنِّي أَنْظُرُ إِلَى سِوَاكِهِ تَحْتَ شَفَتِهِ قَلَصَتْ فَقَالَ: ((لَنْ أَوْ لاَ نَسْتَعْمِلُ عَلَى عَمَلِنَا مَنْ أَرَادَهُ، وَلَكِنِ اذْهَبْ أَنْتَ يَا أَبَا مُوسَى، أَوْ يَا عَبْدَ اللهِ بْنَ قَيْسٍ إِلَى الْيَمَنِ)) ثُمَّ أَتْبَعَهُ مُعَاذَ بْنَ جَبَلٍ فَلَمَّا قَدِمَ عَلَيْهِ أَلْقَى لَهُ وِسَادَةً قَالَ: انْزِلْ وَإِذَا رَجُلٌ عِنْدَهُ مُوثَقٌ قَالَ: مَا هَذَا؟ قَالَ: كَانَ يَهُودِيًّا فَأَسْلَمَ، ثُمَّ تَهَوَّدَ قَالَ: اجْلِسْ قَالَ لاَ أَجْلِسُ حَتَّى يُقْتَلَ قَضَاءُ اللهِ وَرَسُولِهِ ثَلاَثَ مَرَّاتٍ، فَأَمَرَ بِهِ فَقُتِلَ ثُمَّ تَذَاكَرَا قِيَامَ اللَّيْلِ فَقَالَ أَحَدُهُمَا: أَمَّا أَنَا فَأَقُومُ وَأَنَامُ وَأَرْجُو فِي نَوْمَتِي مَا أَرْجُوا فِي قَوْمَتِي.

[راجع: ٢٢٦١]

में। (राजेअ : 2261)

तश्रीह : क्योंकि दरख़्वास्त करने से मा'लूम होता है चखने की निय्यत है वरना सरकारी ख़िदमत एक बला है परहेज़गार और अक़्लमंद आदमी हमेशा इससे भागता रहता है। ख़ुसूसन तहसील या अदालत की ख़िदमात उनमें अकषर ज़ुल्म व जबर और ख़िलाफ़े शरअ काम करना होता है उन दोनों को तो मैं कोई ख़िदमत नही देने का। आपने विलायते यमन के दो हिस्से करके एक हिस्सा की हुकूमत अबू मूसा (रज़ि.) और दूसरी की मुआज़ (रज़ि.) को दी।

बाब 3 : जो शख़्स इस्लाम के फ़र्ज़ अदा करने से इंकार करे और जो शख़्स मुर्तद हो जाए उसका क़त्ल करना

٣- باب قَتْلِ مَنْ أَبَى قَبُولَ الْفَرَائِضِ وَمَا نُسِبُوا إِلَى الرِّدَّةِ

तश्रीह : मषलन ज़कात देने से इंकार करे तो उससे जबरन ज़कात वसूल की जाए अगर न दे और लड़े तो उससे लड़ना चाहिये यहाँ तक कि ज़कात देना क़ुबूल कर ले। इमाम मालिक ने मौता में कहा हमारे नज़दीक हुक्म ये है कि जो कोई किसी फ़र्ज़ ज़कात से बाज़ रहे और मुसलमान उससे न ले सकें तो वाजिब है उस पर जिहाद करना। इब्ने ख़ुज़ैमा की रिवायत में यूँ है कि अकषर अरब के क़बीले काफ़िर हो गये। शरहे मिश्कात में है कि मुराद ग़त्फ़ान और फ़ुज़ारेह और बनी सुलैम और बनी यरबूअ और बनी तमीम के कुछ क़बाइल हैं इन लोगों ने ज़कात देने से इंकार किया आख़िर हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने इनसे लड़ने का इरादा किया क्योंकि नमाज़ बदन का हक़ है और ज़कात माल का हक़ है। मा'लूम हुआ कि हज़रत उमर (रज़ि.) भी नमाज़ के मुंकिर से लड़ना दुरुस्त जानते थे लेकिन ज़कात में उनको शुब्हा हुआ तो हज़रत सिद्दीक़ (रज़ि.) ने बयान कर दिया कि नमाज़ और ज़कात दोनों का हुक्म एक है, दोनों इस्लाम के फ़राइज़ हैं। गोया हज़रत उमर (रज़ि.) का इज्तिहाद हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) के इज्तिहाद के मुताबिक़ हो गया ये नहीं कि हज़रत उमर (रज़ि.) ने उनकी तक़्लीद की।

6924. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष बिन सअद ने, उन्होंने अक़ील से, उन्होंने इब्ने शिहाब से, उन्होंने कहा मुझको उबैदुल्लाह बिन अब्दुल्लाह बिन उत्बा ने ख़बर दी कि हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा जब आँहज़रत (ﷺ) की वफ़ात हो गई और हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) ख़लीफ़ा हुए और अरब के कुछ लोग काफ़िर बन गये तो हज़रत उमर (रज़ि.) ने उनसे कहा तुम उन लोगों से कैसे लड़ोगे आँहज़रत (ﷺ) ने तो ये फ़र्माया है मुझको लोगों से लड़ने का उस वक़्त तक हुक्म हुआ जब तक वो ला इलाहा इल्लल्लाह न कहें फिर जिसने ला इलाहा इल्लल्लाह कह लिया उसने अपने माल और अपनी जान को मुझसे बचा लिया अल्बत्ता किसी हक़ के बदल उसकी जान या माल को नुक़्सान पहुँचाया जाए तो ये और बात है। अब उसके दिल में क्या है उसका हिसाब लेने वाला अल्लाह है। (राजेअ : 1399)

٦٩٢٤- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ عُقَيْلٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ أَخْبَرَنِي عُبَيْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُتْبَةَ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ قَالَ: لَمَّا تُوُفِّيَ النَّبِيُّ ﷺ وَاسْتُخْلِفَ أَبُو بَكْرٍ وَكَفَرَ مَنْ كَفَرَ مِنَ الْعَرَبِ، قَالَ: عُمَرُ: يَا أَبَا بَكْرٍ كَيْفَ تُقَاتِلُ النَّاسَ وَقَدْ قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((أُمِرْتُ أَنْ أُقَاتِلَ النَّاسَ حَتَّى يَقُولُوا: لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ، فَمَنْ قَالَ: لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ عَصَمَ مِنِّي مَالَهُ وَنَفْسَهُ، إِلاَّ بِحَقِّهِ وَحِسَابُهُ عَلَى اللهِ)). [راجع: ١٣٩٩]

6925. हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) ने कहा मैं तो अल्लाह

٦٩٢٥- قَالَ أَبُو بَكْرٍ: وَاللهِ لأُقَاتِلَنَّ مَنْ

فَرَّقَ بَيْنَ الصَّلاَةِ وَالزَّكَاةِ، فَإِنَّ الزَّكَاةَ حَقُّ الْمَالِ، وَاللهِ لَوْ مَنَعُونِي عَنَاقًا كَانُوا يُؤَدُّونَهَا إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ لَقَاتَلْتُهُمْ عَلَى مَنْعِهَا قَالَ عُمَرُ: فَوَاللهِ مَا هُوَ إِلاَّ أَنْ رَأَيْتُ أَنْ قَدْ شَرَحَ اللهُ صَدْرَ أَبِي بَكْرٍ لِلْقِتَالِ فَعَرَفْتُ أَنَّهُ الْحَقُّ.

[راجع: ١٤٠٠]

की क़सम उस शख़्स से लड़ूँगा जो नमाज़ और ज़कात में फ़र्क़ करे, इसलिये कि ज़कात माल का हक़ है (जैसे नमाज़ जिस्म का हक़ है) अल्लाह की क़सम अगर ये लोग मुझको एक बकरी का बच्चा न देंगे जो आँहज़रत (ﷺ) को दिया करते थे तो मैं उसके न देने पर उनसे लड़ूँगा। हज़रत उमर (रज़ि.) ने कहा क़सम अल्लाह की उसके बाद मैं समझ गया कि अबूबक्र (रज़ि.) के दिल में जो लड़ाई का इरादा हुआ है ये अल्लाह ने उनके दिल में डाला है और मैं पहचान गया कि अबूबक्र (रज़ि.) की राय हक़ है। (राजेअ : 1400)

٤- باب إِذَا عَرَّضَ الذِّمِّيُّ وَغَيْرُهُ بِسَبِّ النَّبِيِّ ﷺ

وَلَمْ يُصَرِّحْ نَحْوَ قَوْلِهِ السَّامُ عَلَيْكَ.

बाब 4 : अगर ज़िम्मी काफ़िर इशारे किनाये में आँहज़रत (ﷺ) को बुरा कहे साफ़ न कहे जैसे यहूद आँहज़रत (ﷺ) के ज़माने में (अस्सलामु अलैकुम के बदले) अस्सामु अलैक कहा करते थे

٦٩٢٦- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مُقَاتِلٍ أَبُو الْحَسَنِ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ، أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ، عَنْ هِشَامِ بْنِ زَيْدِ بْنِ أَنَسٍ قَالَ: سَمِعْتُ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ يَقُولُ: مَرَّ يَهُودِيٌّ بِرَسُولِ اللهِ ﷺ فَقَالَ: السَّامُ عَلَيْكَ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((وَعَلَيْكَ)) فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ ((أَتَدْرُونَ مَا يَقُولُ: قَالَ السَّامُ عَلَيْكَ)) قَالُوا: يَا رَسُولَ اللهِ أَلاَ نَقْتُلُهُ قَالَ: ((لاَ إِذَا سَلَّمَ عَلَيْكُمْ أَهْلُ الْكِتَابِ فَقُولُوا: وَعَلَيْكُمْ)). [راجع: ٦٢٥٨]

6926. हमसे मुहम्मद बिन मुक़ातिल अबुल हसन मरवज़ी ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, कहा हमको शुअ़बा बिन हज्जाज ने, उन्होंने हिशाम बिन ज़ैद बिन अनस से, वो कहते थे मैंने अपने दादा अनस बिन मालिक (रज़ि.) से सुना, वो कहते थे एक यहूदी आँहज़रत (ﷺ) पर गुज़रा कहने लगा अस्सामु अ़लैक या'नी तुम मरो। आँहज़रत (ﷺ) ने जवाब में सिर्फ़ व अ़लैक कहा (तू भी मरेगा) फिर आपने स़हाबा (रज़ि.) से फ़र्माया तुमको मा'लूम हुआ, उसने क्या कहा? उसने अस्साम अ़लैक कहा। स़हाबा ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! (हुक्म हो तो) उसको मार डालें। आपने फ़र्माया नहीं। जब किताब वाले यहूद और नस़ारा तुमको सलाम करें तो तुम भी यही कहा करो व अलैकुम। (राजेअ : 6258)

٦٩٢٧- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ، عَنِ ابْنِ عُيَيْنَةَ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتِ: اسْتَأْذَنَ رَهْطٌ مِنَ الْيَهُودِ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقَالُوا السَّامُ عَلَيْكَ فَقُلْتُ : بَلْ عَلَيْكُمُ السَّامُ وَاللَّعْنَةُ، فَقَالَ: ((يَا عَائِشَةُ إِنَّ اللهَ رَفِيقٌ، يُحِبُّ

6927. हमसे अबू नुऐ़म ने बयान किया, उन्होंने सुफ़यान बिन उ़यैना से, उन्होंने ज़ुह्री से, उन्होंने उ़र्वा से, उन्होंने हज़रत आइशा (रज़ि.) से, उन्होंने कहा यहूद में से चंद लोगों ने आँहज़रत (ﷺ) के पास आने की इजाज़त चाही जब आए तो कहने लगे अस्सामु अ़लैक। मैंने जवाब में यूँ कहा अ़लैकस्साम वल्ला'नत। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, ऐ आइशा! अल्लाह तआ़ला नर्मी करता है और हर काम में नर्मी

को पसंद करता है। मैंने कहा या रसूलल्लाह! क्या आपने इनका कहना नहीं सुना आपने फ़र्माया मैंने भी तो जवाब दे दिया व अ़लैकुम। (राजेअ़ : 2935)

الرِّفْقَ فِي الأَمْرِ كُلِّهِ)) قُلْتُ: أَوَ لَمْ تَسْمَعْ مَا قَالُوا؟ قَالَ: ((قُلْتُ: وَعَلَيْكُمْ)). [راجع: ٢٩٣٥]

6928. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे यह्या बिन सईद क़त्तान ने, उन्होंने सुफ़यान बिन उ़ययना और इमाम मालिक से, उनसे दोनों ने कहा हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन दीनार ने बयान किया, कहा मैंने अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) से सुना, वो कहते थे आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया यहूदी लोग जब तुम मुसलमानों में से किसी को सलाम करते हैं तो साम अ़लैक कहते हैं तुम भी जवाब में अ़लैक कहा करो। (राजेअ़ : 6257)

٦٩٢٨ - حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، عَنْ سُفْيَانَ وَمَالِكِ بْنِ أَنَسٍ قَالاَ : حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ دِينَارٍ قَالَ: سَمِعْتُ ابْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا يَقُولُ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِنَّ الْيَهُودَ إِذَا سَلَّمُوا عَلَى أَحَدِكُمْ إِنَّمَا يَقُولُونَ: سَامٌ عَلَيْكَ فَقُلْ : عَلَيْكَ)). [راجع: ٦٢٥٧]

बाब 5

٥ - باب

6929. हमसे उ़मर बिन ह़फ़्स़ बिन ग़यास़ ने बयान किया, कहा हमसे वालिद ने, कहा हमसे आ'मश ने, कहा मुझसे शक़ीक़ इब्ने सलमा ने कि ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने कहा जैसे मैं (इस वक़्त) आँहज़रत (ﷺ) को देख रहा हूँ आप एक पैग़म्बर (ह़ज़रत नूह़ अ.) की ह़िकायत बयान कर रहे थे उनकी क़ौम वालों ने उनको इतना मारा कि लहू लुहान कर दिया वो अपने मुँह से ख़ून पोंछते थे और यूँ दुआ़ करते जाते परवरदिगार मेरी क़ौम वालों को बख़्श दे वो नादान हैं। (राजेअ़ : 3477)

٦٩٢٩ - حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ قَالَ : حَدَّثَنِي شَقِيقٌ قَالَ: قَالَ عَبْدُ اللهِ كَأَنِّي أَنْظُرُ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ يَحْكِي نَبِيًّا مِنَ الأَنْبِيَاءِ ضَرَبَهُ قَوْمُهُ، فَأَدْمَوْهُ فَهُوَ يَمْسَحُ الدَّمَ عَنْ وَجْهِهِ وَيَقُولُ: ((رَبِّ اغْفِرْ لِقَوْمِي فَإِنَّهُمْ لاَ يَعْلَمُونَ)). [راجع: ٣٤٧٧]

तश्रीह : कुछ ने कहा ये आँहज़रत (ﷺ) ने ख़ुद अपनी ह़िकायत की। उहुद के दिन मुश्रिकों ने आपके चेहरे और सर पर पत्थर मारे लहूलुहान कर दिया एक दांत भी आपका शहीद कर डाला लेकिन आप यही दुआ़ करते रहे। या अल्लाह! मेरी क़ौम वालों को बख़्श दे वो नादान हैं। सुब्ह़ानल्लाह! कोई क़ौमी जोश और मुह़ब्बत पैग़म्बरों से सीखे न कि इस ज़माने के लीडरों से जो क़ौम क़ौम पुकारते फिरते हैं लेकिन दिल में ज़रा भी क़ौम की मुह़ब्बत नहीं है। अपना घर भरना चाहते हैं। इस ह़दीस़ से इमाम बुख़ारी (रह़.) ने बाब का मत़लब यूँ निकाला कि जब पैग़म्बर स़ाह़ब ने उस शख़्स़ के लिये बद्दुआ़ भी न की जिसने आपको ज़ख़्मी किया था तो इशारा और किनाया से बुरा कहने वाला क्यूँकर क़ाबिले क़त्ल होगा?

बाब 6 : ख़ारजियों और बेदीनों से उन पर दलील क़ायम करके लड़ना

٦ - باب قَتْلِ الْخَوَارِجِ وَالْمُلْحِدِينَ بَعْدَ إِقَامَةِ الْحُجَّةِ عَلَيْهِمْ

अल्लाह तआ़ला ने फ़र्माया, अल्लाह तआ़ला ऐसा नहीं करता कि किसी क़ौम को हिदायत करने के बाद (या'नी ईमान की तौफ़ीक़ देने के बाद) उनसे मुवाख़िज़ा करे जब तक उनसे

وَقَوْلُ اللهِ تَعَالَى: ﴿وَمَا كَانَ اللهُ لِيُضِلَّ قَوْمًا بَعْدَ إِذْ هَدَاهُمْ حَتَّى يُبَيِّنَ لَهُمْ مَا

يَتَّقُونَ﴾ [التوبة : ١١٥] وَكَانَ ابْنُ عُمَرَ يَرَاهُمْ شِرَارَ خَلْقِ اللهِ، وَقَالَ: إِنَّهُمْ انْطَلَقُوا إِلَى آيَاتٍ نَزَلَتْ فِي الْكُفَّارِ فَجَعَلُوهَا عَلَى الْمُؤْمِنِينَ.

बयान न करे कि फ़लाँ फ़लाँ कामों से बचे रहो और ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (उसको त़बरी ने वस्ल किया) ख़ारजी लोगों को बदतरीन ख़ल्कुल्लाह समझते थे, कहते थे उन्होंने क्या किया जो आयतें काफ़िरों के बाब में उतरी थीं उनको मुसलमानों पर चस्पा कर दिया।

तश्रीह : फिर बयान करने के बाद अगर वो उस काम के मुर्तकिब हों तो बेशक उनसे मुवाख़िज़ा होगा। इस आयत को लाकर इमाम बुख़ारी (रह़.) ने ये षाबित किया कि ख़ारजी या राफ़ज़ी वग़ैरह लोगों से अगर ह़ाकिम इस्लाम लड़ाई करे तो पहले उनका शुब्हा दूर कर दे उनको समझा दे। अगर उस पर भी न मानें तो उनसे जंग करे। आयत से ये भी निकला कि शरीअ़त में जिस बात से मना नहीं किया गया अगर कोई उसको करे तो वो गुमराह नहीं कहा जाएगा न उससे मुवाख़िज़ा होगा। इमाम मुस्लिम ने ह़ज़रत अबू ज़र्र (रज़ि.) से रिवायत किया है कि ख़ारजी तमाम ख़ल्क़ और तमाम मख़्लूक़ात में बदतर हैं और बज़्ज़ार ने मर्फ़ूअ़न ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) से निकाला। आँह़ज़रत (ﷺ) ने ख़ारजियों का ज़िक्र किया फ़र्माया वो मेरी उम्मत के बुरे लोग हैं उनको मेरी उम्मत के अच्छे लोग क़त्ल करेंगे। ख़ारजी एक मशहूर फ़िर्क़ा है जिसकी इब्तिदा ह़ज़रत उ़ष्मान (रज़ि.) के अख़ीर ख़िलाफ़त से हुई। ये लोग ज़ाहिर में बड़े आबिद ज़ाहिद और क़ारी क़ुर्आन थे मगर दिल में ज़रा भी क़ुर्आन का नूर न था। ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) ख़लीफ़ा हुए तो शुरू शुरू में ये लोग ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) के साथ रहे जब जंगे सिफ़्फ़ीन हो चुकी और तह़कीम की राय क़रार पाई उस वक़्त ये लोग ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) से भी अलग हो गये। उनको बुरा कहने लगे कि उन्होंने तह़कीय कैसे क़ुबूल की। ह़ालाँकि अल्लाह तआ़ला ने फ़र्माया, **इनिल हुक्म इल्ला लिल्लाह** (अल्अन्आम : 57) उनका सरदार अ़ब्दुल्लाह बिन कव्वा था। ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) ने ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) को उनके समझाने के लिये भेजा और ख़ुद भी समझाया मगर उन्होंने न माना। आख़िर ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) ने उनको नहरवान में क़त्ल किया चंद लोग बचकर भाग निकले। उन्हीं में से एक अ़ब्दुर्रह़मान बिन मुलज्जम मल्ऊ़न था जिसने ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) को शहीद किया। ये कमबख़्त ख़्वारिज ह़ज़रत अ़ली, ह़ज़रत उ़ष्मान, ह़ज़रत त़लह़ा, ह़ज़रत ज़ुबैर और ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) की तक्फ़ीर करते हैं और कबीरा गुनाह करने वाले की निस्बत कहते हैं कि वो काफ़िर है हमेशा दोज़ख़ में रहेगा और हैज़ की ह़ालत में औ़रत पर नमाज़ की क़ज़ा करना वाजिब जानते हैं। ग़र्ज़ ये सारी गुमराही उनकी उसी वजह से हुई कि क़ुर्आन की तफ़्सीर अपने दिल से करने लगे और स़ह़ाबा और सलफ़े स़ालिह़ीन की तफ़्सीर का ख़्याल न रखा जो आयतें काफ़िरों के बाब में थीं वो मोमिनों के शान में कर दीं।

٦٩٣٠- حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصِ بْنِ غِيَاثٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، حَدَّثَنَا خَيْثَمَةُ، حَدَّثَنَا سُوَيْدُ بْنُ غَفَلَةَ قَالَ عَلِيٌّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: إِذَا حَدَّثْتُكُمْ عَنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ حَدِيثًا فَوَ اللهِ لأَنْ أَخِرَّ مِنَ السَّمَاءِ أَحَبُّ إِلَيَّ مِنْ أَنْ أَكْذِبَ عَلَيْهِ، وَإِذَا حَدَّثْتُكُمْ فِيمَا بَيْنِي وَبَيْنَكُمْ فَإِنَّ الْحَرْبَ خَدْعَةٌ، وَإِنِّي سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((سَيَخْرُجُ قَوْمٌ فِي آخِرِ الزَّمَانِ حُدَّاثُ الأَسْنَانِ سُفَهَاءُ الأَحْلاَمِ يَقُولُونَ :

6930. हमसे उ़मर बिन ह़फ़्स़ बिन ग़याष ने बयान किया, कहा हमसे वालिद ने, कहा हमसे आ'मश ने, कहा हमसे ख़ुष़ैमा बिन अ़ब्दुर्रह़मान ने, कहा हमसे सुवैद बिन ग़फ़ला ने कि ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) ने कहा जब मैं तुमसे आँह़ज़रत (ﷺ) की कोई ह़दीष़ बयान करूँ तो क़सम अल्लाह की अगर मैं आसमान से नीचे गिर पड़ूँ ये मुझको उससे अच्छा लगता है कि मैं आँह़ज़रत (ﷺ) पर झूठ बाँधू। हाँ! जब मुझमें तुममें आपस में बातचीत हो तो उसमें बनाकर बात कहने में कोई क़बाह़त नहीं क्योंकि (आँह़ज़रत ﷺ ने फ़र्माया है) लड़ाई तदबीर और मक्र का नाम है। देखो मैंने आँह़ज़रत (ﷺ) से सुना है आप फ़र्माते थे अख़ीर ज़माना क़रीब है जब ऐसे लोग मुसलमानों मे निकलेंगे जो नौउ़म्र बेवक़ूफ़ होंगे (उनकी अ़क़्ल में फ़ितूर होगा) ज़ाहिर में तो सारी ख़ल्क़ के कलामों में जो बेहतर है

(या'नी हदीष़ शरीफ़) वो पढ़ेंगे मगर दर ह़क़ीक़त ईमान का नूर उनके हलक़ तले नहीं उतरेगा, वो दीन से इस त़रह बाहर हो जाएँगे जैसे तीर शिकार के जानवर से पार निकल जाता है। (उसमें कुछ लगा नहीं रहता) तुम उन लोगों को जहाँ पाना बेताम्मुल क़त्ल करना, उनको जहाँ पाओ क़त्ल करने में क़यामत के दिन ष़वाब मिलेगा। (राजेअ़ : 3611)

مِنْ خَيْرِ قَوْلِ الْبَرِيَّةِ، لاَ يُجَاوِزُ إِيمَانُهُمْ حَنَاجِرَهُمْ يَمْرُقُونَ مِنَ الدِّينِ كَمَا يَمْرُقُ السَّهْمُ مِنَ الرَّمِيَّةِ، فَأَيْنَمَا لَقِيتُمُوهُمْ فَاقْتُلُوهُمْ فَإِنَّ فِي قَتْلِهِمْ أَجْرًا لِمَنْ قَتَلَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ)).

[راجع: ٣٦١١]

6931. हमसे मुहम्मद बिन मुष़न्ना ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अ़ब्दुल वह्हाब ने बयान किया, कहा मैंने यह्या बिन सईद अंसारी से सुना, कहा मुझको मुहम्मद बिन इब्राहीम तैमी ने ख़बर दी, उन्होने अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रहमान और अ़त़ा बिन यसार से, वो दोनों ह़ज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) के पास आए और उनसे पूछा क्या तुमने हरूरिया के बाब में कुछ आँह़ज़रत (ﷺ) से सुना है? उन्होंने कहा हरूरिया (दरूरिया) तो मैं जानता नहीं मगर मैंने आँह़ज़रत (ﷺ) से ये सुना है आप फ़र्माते थे इस उम्मत में और यूँ नहीं फ़र्माया इस उम्मत में से कुछ लोग ऐसे पैदा होंगे कि तुम अपनी नमाज़ को उनकी नमाज़ के सामने ह़क़ीर जानोगे और क़ुर्आन की तिलावत भी करेंगे मगर क़ुर्आन उनके ह़ल्क़ों से नीचे नहीं उतरेगा। वो दीन से इस त़रह निकल जाएँगे जैसे तीर जानवर में से पार निकल जाता है और फिर तीर फेंकने वाला अपने तीर को देखता है उसके बाद जड़ में (जो कमान से लगी रहती है) उसको शक होता है शायद उसमें ख़ून लगा हो मगर वो भी साफ़। (राजेअ़ : 3344)

٦٩٣١- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ، قَالَ: سَمِعْتُ يَحْيَى بْنَ سَعِيدٍ أَخْبَرَنِي مُحَمَّدُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ وَعَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ أَنَّهُمَا أَتَيَا أَبَا سَعِيدٍ الْخُدْرِيَّ فَسَأَلاَهُ عَنِ الْحَرُورِيَّةِ أَسَمِعْتَ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ لاَ أَدْرِي مَا الْحَرُورِيَّةُ سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((يَخْرُجُ فِي هَذِهِ الأُمَّةِ - وَلَمْ يَقُلْ مِنْهَا- قَوْمٌ تَحْقِرُونَ صَلاَتَكُمْ مَعَ صَلاَتِهِمْ، يَقْرَؤُونَ الْقُرْآنَ لاَ يُجَاوِزُ حُلُوقَهُمْ - أَوْ حَنَاجِرَهُمْ - يَمْرُقُونَ مِنَ الدِّينِ مُرُوقَ السَّهْمِ مِنَ الرَّمِيَّةِ، فَيَنْظُرُ الرَّامِي إِلَى سَهْمِهِ إِلَى نَصْلِهِ إِلَى رِصَافِهِ فَيَتَمَارَى فِي الْفُوقَةِ هَلْ عَلِقَ بِهَا مِنَ الدَّمِ شَيْءٌ؟)).

[راجع: ٣٣٤٤]

इस हदीष़ से साफ़ निकलता है कि ख़ारजी लोगों में ज़रा भी ईमान नहीं है।

6932. हमसे यह्या बिन सुलैमान ने बयान किया, कहा मुझसे इब्ने वहब ने, कहा कि मुझसे उ़मर बिन मुहम्मद बिन ज़ैद बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर ने, कहा उनसे उनके वालिद ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने और उन्होंने हरूरिया का ज़िक्र किया और कहा कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया था कि वो इस्लाम से इस त़रह बाहर हो जाएँगे जिस त़रह तीर कमान

٦٩٣٢- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سُلَيْمَانَ، حَدَّثَنِي ابْنُ وَهْبٍ، قَالَ حَدَّثَنِي عُمَرُ أَنَّ أَبَاهُ حَدَّثَهُ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ وَذَكَرَ الْحَرُورِيَّةَ فَقَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((يَمْرُقُونَ مِنَ الإِسْلاَمِ مُرُوقَ السَّهْمِ مِنَ الرَّمِيَّةِ)).

से बाहर हो जाता है।

हरूर नामी बस्ती की तरफ़ निस्बत है जहाँ से ख़ारजियों का रईस नज्दा आमिरी निकला था।

बाब 7 : दिल मिलाने के लिये किसी मस्लिहत से कि लोगों को नफ़रत न पैदा हो ख़ारजियों को न क़त्ल करना

٧- باب مَنْ تَرَكَ قِتَالَ الْخَوَارِجِ لِلتَّأَلُّفِ وَأَنْ لاَ يَنْفِرَ النَّاسُ عَنْهُ

6933. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मुस्नदी ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमको मअ़मर ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुहरी ने, उन्हें अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ ने और उनसे अबू सईद (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) तक़्सीम फ़र्मा रहे थे कि अ़ब्दुल्लाह बिन ज़िल ख़ुवैसिरा तमीमी आया और कहा या रसूलल्लाह! इंसाफ़ कीजिए। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, अफ़सोस! अगर मैं इंसाफ़ नहीं करूँगा तो और कौन करेगा? उस पर हज़रत उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) ने कहा मुझे इजाज़त दीजिये कि मैं उसकी गर्दन मार दूँ। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, कि नहीं उसके कुछ ऐसे साथी होंगे कि उनकी नमाज़ और रोज़े के सामने तुम अपनी नमाज़ और रोज़े को हक़ीर समझोगे लेकिन वो दीन से इस तरह बाहर हो जाएँगे जिस तरह तीर जानवर में से बाहर निकल जाता है। तीर के पर को देखा जाए लेकिन उस पर कोई निशान नहीं फिर उस पैकान को देखा जाए और वहाँ भी कोई निशान नहीं फिर उसके लकड़ी को देखा जाए और वहाँ भी कोई निशान नहीं क्योंकि वो (जानवर के जिस्म पर तीर चलाया गया था) लीद गोबर और ख़ून सबसे आगे (बेदाग़) निकल गया (इसी तरह वो लोग इस्लाम से साफ़ निकल जाएँगे) उनकी निशानी एक मर्द होगा जिसका एक हाथ औ़रत की छाती की तरह या यूँ फ़र्माया कि गोश्त के थुलथुल करते लोथड़े की तरह होगा। ये लोग मुसलमानों की फूट के ज़माने में पैदा होंगे। हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने कहा कि मैं गवाही देता हूँ कि मैंने ये हदीष नबी करीम (ﷺ) से सुनी है और मैं गवाही देता हूँ कि हज़रत अ़ली (रज़ि.) ने नहरवान में उनसे जंग की थी और मैं उस जंग में उनके साथ था और उनके पास उन लोगों के एक शख़्स को क़ैदी बनाकर लाया गया तो उसमें वही तमाम चीज़ें थीं जो नबी करीम (ﷺ)

٦٩٣٣- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ، حَدَّثَنَا هِشَامٌ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ قَالَ: بَيْنَا النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقْسِمُ جَاءَ عَبْدُ اللهِ بْنُ ذِي الْخُوَيْصِرَةِ التَّمِيمِيُّ فَقَالَ: اعْدِلْ يَا رَسُولَ اللهِ فَقَالَ: ((وَيْلَكَ مَنْ يَعْدِلُ إِذَا لَمْ أَعْدِلْ)) قَالَ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ: دَعْنِي أَضْرِبْ عُنُقَهُ قَالَ: ((دَعْهُ فَإِنَّ لَهُ أَصْحَابًا يَحْقِرُ أَحَدُكُمْ صَلاَتَهُ مَعَ صَلاَتِهِ، وَصِيَامَهُ مَعَ صِيَامِهِ، يَمْرُقُونَ مِنَ الدِّينِ كَمَا يَمْرُقُ السَّهْمُ مِنَ الرَّمِيَّةِ، يُنْظَرُ فِي قُذَذِهِ فَلاَ يُوجَدُ فِيهِ شَيْءٌ، ثُمَّ يُنْظَرُ فِي نَصْلِهِ فَلاَ يُوجَدُ فِيهِ شَيْءٌ، ثُمَّ يُنْظَرُ فِي رِصَافِهِ فَلاَ يُوجَدُ فِيهِ شَيْءٌ، ثُمَّ يُنْظَرُ فِي نَضِيِّهِ فَلاَ يُوجَدُ فِيهِ شَيْءٌ، قَدْ سَبَقَ الْفَرْثَ وَالدَّمَ آيَتُهُمْ رَجُلٌ إِحْدَى يَدَيْهِ - أَوْ قَالَ ثَدْيَيْهِ - مِثْلُ ثَدْيِ الْمَرْأَةِ- أَوْ قَالَ مِثْلُ الْبَضْعَةِ تَدَرْدَرُ - يَخْرُجُونَ عَلَى حِينِ فُرْقَةٍ مِنَ النَّاسِ)) قَالَ أَبُو سَعِيدٍ: أَشْهَدُ سَمِعْتُ مِنَ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَأَشْهَدُ أَنَّ عَلِيًّا قَتَلَهُمْ وَأَنَا مَعَهُ جِيءَ بِالرَّجُلِ عَلَى النَّعْتِ الَّذِي نَعَتَهُ النَّبِيُّ

صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: فَنَزَلَتْ فِيهِ: ﴿وَمِنْهُمْ مَنْ يَلْمِزُكَ فِي الصَّدَقَاتِ﴾ [التوبة : ٥٨].

ने बयान फ़र्माई थीं। रावी ने बयान किया कि फिर क़ुर्आन मजीद की ये आयत नाज़िल हुई कि, उनमें से कुछ वो हैं जो आपके सदक़ात की तक़्सीम में ऐब पकड़ते हैं। (सूरह तौबा : 58)

٦٩٣٤- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ، حَدَّثَنَا الشَّيْبَانِيُّ، حَدَّثَنَا يُسَيْرُ بْنُ عَمْرٍو قَالَ: قُلْتُ لِسَهْلِ بْنِ حُنَيْفٍ هَلْ سَمِعْتَ النَّبِيَّ يَقُولُ فِي الْخَوَارِجِ شَيْئًا؟ قَالَ: سَمِعْتُهُ يَقُولُ وَأَهْوَى بِيَدِهِ قِبَلَ الْعِرَاقِ: ((يَخْرُجُ مِنْهُ قَوْمٌ يَقْرَؤُونَ الْقُرْآنَ لاَ يُجَاوِزُ تَرَاقِيَهُمْ، يَمْرُقُونَ مِنَ الإِسْلاَمِ مُرُوقَ السَّهْمِ مِنَ الرَّمِيَّةِ)). [راجع: ٣٣٤٤]

6934. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल वाहिद बिन ज़ियाद ने, कहा हमसे सलमान शैबानी ने, कहा हमसे यसीर बिन अ़म्र ने बयान किया कि मैंने सहल बिन हनीफ़ (बद्री सहाबी) (रज़ि.) से पूछा क्या तुमने नबी करीम (ﷺ) को ख़वारिज के सिलसिले में कुछ फ़र्माते हुए सुना है, उन्होंने बयान किया कि मैंने आँहज़रत (ﷺ) को ये कहते सुना है और आपने इराक़ की तरफ़ हाथ से इशारा फ़र्माया था कि इधर से एक जमाअ़त निकलेगी ये लोग क़ुर्आन मजीद पढ़ेंगे लेकिन क़ुर्आन मजीद उनके हलक़ों से नीचे नहीं उतरेगा। वो इस्लाम से इस तरह बाहर हो जाएँगे जैसे तीर शिकार के जानवर से बाहर निकल जाता है। (राजेअ़ : 3344)

तश्रीह : इमाम मुस्लिम ने हज़रत अबू ज़र्र से रिवायत किया ख़ारजी तमाम मख़्लूक़ात में बदतर हैं और बज़्ज़ार ने मर्फ़ूअ़न निकाला आँहज़रत (ﷺ) ने ख़ारजियों का ज़िक्र किया। फ़र्माया, मेरी उम्मत में बदतरीन लोग होंगे उनको मेरी उम्मत के अच्छे लोग क़त्ल करेंगे। ख़ारजी एक मशहूर फ़िर्क़ा है जिसकी इब्तिदा हज़रत उ़ष्मान (रज़ि.) के आख़िरी ज़मान-ए-ख़िलाफ़त से हुई। ये लोग ज़ाहिर में बड़े आ़बिद, ज़ाहिद और क़ुर्आन के क़ारी थे मगर दिल में ज़रा भी क़ुर्आन का नूर न था। हज़रत अ़ली (रज़ि.) ख़लीफ़ा हुए तो ये लोग शुरू शुरू में हज़रत अ़ली (रज़ि.) के साथ रहे जब जंगे सिफ़्फ़ीन हो चुकी और तहकीम की राय क़रार पाई उस वक़्त ये लोग हज़रत अ़ली (रज़ि.) से भी अलग हो गये। उनको बुरा कहने लगे कि उन्होंने तहकीम कैसे कुबूल की। हालाँकि अल्लाह ने फ़र्माया, **इनिल हुक्मु इल्ला लिल्लाह** (अल अन्आम : 57) उनका सरदार अ़ब्दुल्लाह बिन कव्वा था। हज़रत अ़ली (रज़ि.) ने उनको समझाने के लिये हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) को भेजा और ख़ुद भी समझाया मगर उन्होंने न माना। आख़िर हज़रत अ़ली (रज़ि.) ने नहरवान की जंग में उनको क़त्ल किया चंद लोग बचकर भाग निकले। उन्हीं में एक अ़ब्दुर्रहमान बिन मुलज्जम था जिसने हज़रत अ़ली (रज़ि.) को शहीद किया। ये ख़ारजी कमबख़्त हज़रत अ़ली, हज़रत उ़ष्मान, हज़रत आइशा और हज़रत तलहा और हज़रत ज़ुबैर (रज़ि.) की तक्फ़ीर करते थे और कबीरा गुनाह करने वाले को हमेशा के लिये दोज़ख़ी कहते थे और हैज़ की हालत में औरत पर नमाज़ की क़ज़ाई वाजिब जानते हैं। क़ुर्आन की तफ़्सीर अपने दिल से करते हैं और जो आयत काफ़िरों के बाब में थीं वो मोमिनों पर चस्पा करते हैं। लफ़्ज़ ख़ारजी के मुरादी मा'नी बाग़ी के हैं या'नी हज़रत अ़ली (रज़ि.) पर बग़ावत करने वाले ये दरहक़ीक़त राफ़्ज़ियों के मुक़ाबले पर पैदा होकर उम्मत के इंतिशार दर इंतिशार के मौजिब बने **ख़ज़लहुमुल्लाहु अज्मईन** उन तमाम झगड़ों से बचकर सिराते मुस्तक़ीम पर चलने वाला गिरोह अहले सुन्नत वल जमाअ़त का गिरोह है जो हज़रत अ़ली (रज़ि.) और हज़रत मुआ़विया (रज़ि.) दोनों की इ़ज़्ज़त करता है और उन सबकी बख़्शिश के लिये दुआ़गो है। **तिल्क उम्मतुन क़द ख़लत लहा मा कसबत व लकुम मा कसब्तुम** (अल बक़रः : 134)

बाब 8 : नबी करीम (ﷺ) का इर्शाद कि क़यामत उस वक़्त तक क़ायम नहीं होगी जब तक दो ऐसी जमाअतें आपस में जंग न कर लें जिनका दा'वा एक ही होगा

٨- باب قَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ: ((لاَ تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى تَقْتَتِلَ فِئَتَانِ دَعْوَتُهُمَا وَاحِدَةٌ))

6935. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, कहा हमसे अबुज़्ज़िनाद ने बयान किया, उनसे अअ़रज ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया क़यामत उस वक़्त तक क़ायम नहीं होगी जब तक दो ऐसे गिरोह आपस में जंग न करें जिनका दा'वा एक ही हो। (राजेअ़ : 85)

٦٩٣٥- حَدَّثَنَا عَلِيٌّ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، حَدَّثَنَا أَبُو الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((لاَ تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى تَقْتَتِلَ فِئَتَانِ دَعْوَاهُمَا وَاحِدَةٌ)).[راجع: ٨٥]

मुराद ह़ज़रत मुआ़विया (रज़ि.) और ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) के गिरोह हैं कि ये दोनों इस्लाम के मुद्दई थे और हर एक अपने को ह़क़ समझता था। चुनाँचे ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) से मन्क़ूल है कि उन्होंने ह़ज़रत मुआ़विया (रज़ि.) के गिरोह की बाबत फ़र्माया था, **इख़्वानुना बग़ौ अ़लैना** हमारे भाई हैं जो हम पर चढ़ आये हैं। **क़द ग़फ़र लहुम अज्मईन, आमीन।**

बाब 9 : तावील करने वालों के बारे में बयान

٩- باب مَا جَاءَ فِي الْمُتَأَوِّلِينَ

6936. और ह ज़रत अबू अ़ब्दुल्लाह बिन इमाम बुख़ारी (रह.) ने बयान किया, उनसे लष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे यूनुस ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उन्होंने कहा मुझको उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने ख़बर दी, उन्हें मिस्वर बिन मख़रमा और अ़ब्दुर्रह़मान बिन अ़ब्दुल क़ारी ने ख़बर दी, उन दोनों ह़ज़रत उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैंने हिशाम बिन ह़कीम को नबी अकरम (ﷺ) की ज़िंदगी मे सूरह फ़ुर्क़ान पढ़ते सुना जब ग़ौर से सुना तो वो बहुत सी ऐसी क़िरातों के साथ पढ़ रहे थे जिसने आँह़ज़रत (ﷺ) ने मुझे नहीं पढ़ाया था। क़रीब था कि नमाज़ ही में, मैं उन पर ह़मला कर देता लेकिन मैंने इंतिज़ार किया और जब उन्होंने सलाम फेरा तो उनकी चादर से या (उन्होंने ये कहा कि) अपनी चादर से मैंने उनकी गर्दन में फंदा डाल दिया और उनसे पूछा कि इस त़रह़ तुम्हें किसने पढ़ाया है? उन्होंने कहा कि मुझे इस त़रह़ रसूलुल्लाह (ﷺ) ने पढ़ाया है। मैंने उनसे कहा कि झूठ बोलते हो, वल्लाह! ये सूरत मुझे भी आँह़ज़रत (ﷺ) ने पढ़ाई है जो मैंने तुम्हें अभी पढ़ते सुना है। चुनाँचे मैं उन्हें खींचता

٦٩٣٦- قَالَ أَبُو عَبْدِ اللهِ: وَقَالَ اللَّيْثُ: حَدَّثَنِي يُونُسُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ أَنَّ الْمِسْوَرَ بْنَ مَخْرَمَةَ وَعَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنَ عَبْدٍ الْقَارِيَّ أَخْبَرَاهُ أَنَّهُمَا سَمِعَا عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ يَقُولُ: سَمِعْتُ هِشَامَ بْنَ حَكِيمٍ يَقْرَأُ سُورَةَ الْفُرْقَانِ فِي حَيَاةِ رَسُولِ اللهِ ﷺ فَاسْتَمَعْتُ لِقِرَاءَتِهِ فَإِذَا هُوَ يَقْرَؤُهَا عَلَى حُرُوفٍ كَثِيرَةٍ، لَمْ يُقْرِئْنِيهَا رَسُولُ اللهِ ﷺ كَذَلِكَ فَكِدْتُ أُسَاوِرُهُ فِي الصَّلاَةِ، فَانْتَظَرْتُهُ حَتَّى سَلَّمَ ثُمَّ لَبَّبْتُهُ بِرِدَائِهِ أَوْ بِرِدَائِي فَقُلْتُ: مَنْ أَقْرَأَكَ هَذِهِ السُّورَةَ قَالَ: أَقْرَأَنِيهَا رَسُولُ اللهِ ﷺ قُلْتُ لَهُ: كَذَبْتَ فَوَاللهِ إِنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ أَقْرَأَنِي

हुआ आँहज़रत (ﷺ) के पास लाया और अर्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! मैंने इसे सूरह फ़ुर्क़ान और तरह पर पढ़ते सुना है जिस तरह आपने मुझे नहीं पढ़ाई थी। आपने मुझे भी सूरह फ़ुर्क़ान पढ़ाई है। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि उमर! उन्हें छोड़ दो। हिशाम सूरत पढ़ो। उन्होंने इसी तरह पढ़कर सुनाया जिस तरह मैंने उन्हें पढ़ते सुना था। आँहज़रत (ﷺ) ने उस पर फ़र्माया कि इसी तरह नाज़िल हुई थी फिर आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया उमर! अब तुम पढ़ो। मैंने पढ़ा तो आपने फ़र्माया इसी तरह नाज़िल हुई थी फिर फ़र्माया ये क़ुर्आन सात क़िरातों में नाज़िल हुई थी फिर फ़र्माया ये क़ुर्आन सात क़िरातों में नाज़िल हुआ है पस तुम्हें जिस तरह आसानी हो पढ़ो। (राजेअ: 2419)

هَذِهِ السُّورَةَ الَّتِي سَمِعْتُكَ تَقْرَؤُهَا فَانْطَلَقْتُ أَقُودُهُ إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ فَقُلْتُ لَهُ: يَا رَسُولَ اللهِ ﷺ إِنِّي سَمِعْتُ هَذَا يَقْرَأُ بِسُورَةِ الْفُرْقَانِ عَلَى حُرُوفٍ لَمْ تُقْرِئْنِيهَا وَأَنْتَ أَقْرَأْتَنِي سُورَةَ الْفُرْقَانِ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((أَرْسِلْهُ يَا عُمَرُ اقْرَأْ يَا هِشَامُ)) فَقَرَأَ عَلَيْهِ الْقِرَاءَةَ الَّتِي سَمِعْتُهُ يَقْرَؤُهَا قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((هَكَذَا أُنْزِلَتْ)) ثُمَّ قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ ((اقْرَأْ يَا عُمَرُ)) فَقَرَأْتُ فَقَالَ: ((هَكَذَا أُنْزِلَتْ)) ثُمَّ قَالَ: ((إِنَّ هَذَا الْقُرْآنَ أُنْزِلَ عَلَى سَبْعَةِ أَحْرُفٍ فَاقْرَؤُوا مَا تَيَسَّرَ مِنْهُ)).

[راجع: ٢٤١٩]

तश्रीह: बाब की मुताबक़त इस तरह पर है कि हज़रत उमर (रज़ि.) के हिशाम के गले में जो चादर डाली उनको खींचते हुए लाए। आँहज़रत (ﷺ) ने उस पर कोई मुवाख़िज़ा नहीं किया क्योंकि हज़रत उमर (रज़ि.) अपने नज़दीक ये समझे कि वो एक नाजाइज़ क़िरात करने वाले हैं गोया तावील करने वाले ठहरे। **अल मुज्तहिदु क़द युख़्ती व युसीबु।**

6937. हमसे इस्हाक़ बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमको वकीअ ने ख़बर दी (दूसरी सनद) हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने कहा, हमसे यह्या ने बयान किया, कहा हमसे वकीअ ने बयान किया, कहा हमसे आ'मश ने, उनसे इब्राहीम ने, उनसे अल्क़मा ने और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने बयान किया कि जब ये आयत नाज़िल हुई, वो लोग जो ईमान ले आए और अपने ईमान के साथ ज़ुल्म को नहीं मिलाया तो सहाबा को ये मामला बहुत मुश्किल नज़र आया और उन्होंने कहा हममें कौन होगा जो ज़ुल्म न करता हो? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया इसका मतलब वो नहीं है जो तुम समझते हो बल्कि उसका मतलब हज़रत लुक़्मान (अलैहि.) के उस इर्शाद में है जो उन्होंने अपने लड़के से कहा था कि, ऐ बेटे! अल्लाह के साथ किसी को शरीक न ठहराना। बिला शुब्हा शिर्क करना बहुत बड़ा ज़ुल्म है। (सूरह लुक़्मान : 13)। (राजेअ: 32)

٦٩٣٧- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، أَخْبَرَنَا وَكِيعٌ ح حَدَّثَنَا يَحْيَى، حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ عَلْقَمَةَ، عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: لَمَّا نَزَلَتْ هَذِهِ الآيَةُ: ﴿الَّذِينَ آمَنُوا وَلَمْ يَلْبِسُوا إِيمَانَهُمْ بِظُلْمٍ﴾ شَقَّ ذَلِكَ عَلَى أَصْحَابِ النَّبِيِّ ﷺ وَقَالُوا: أَيُّنَا لَمْ يَظْلِمْ نَفْسَهُ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((لَيْسَ كَمَا تَظُنُّونَ إِنَّمَا هُوَ كَمَا قَالَ لُقْمَانُ لاِبْنِهِ: ﴿يَا بُنَيَّ لاَ تُشْرِكْ بِاللهِ إِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيمٌ﴾)) [لقمان : ١٣].[راجع: ٣٢]

तश्रीह : बाब का तर्जुमा की मुताबक़त इस तरह है कि आँहज़रत (ﷺ) ने ज़ुल्म की तावील शिर्क से की, क्योंकि ज़ुल्म के ज़ाहिरी मा'नी तो गुनाह है जो हर गुनाह को शामिल है और ये तावील ख़ुद शारेअ़ ने बयान की तो ऐसी तावील बिल इत्तिफ़ाक़ मक़्बूल है। क़स्तलानी (रह.) ने कहा कि मुताबक़त इस तरह है कि आँहज़रत (ﷺ) ने सहाबा से कोई मुवाख़िज़ा नहीं किया जब उन्होंने ज़ुल्म की तावील मुत्लक़ गुनाह से की बल्कि उनको दूसरा सहीह मा'नी बतला दिया और उनकी तावील को भी क़ायम रखा।

6938. हमसे अ़ब्दान ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, कहा हमको मअ़मर ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुह्री ने, उन्हें महमूद बिन रबीअ़ ने ख़बर दी, कहा कि मैंने इ़त्बान बिन मालिक (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि सुबह के वक़्त नबी करीम (ﷺ) मेरे यहाँ तशरीफ़ लाए फिर एक साहब ने पूछा कि मालिक बिन दख़्शन कहाँ हैं? हमारे क़बीला के एक शख़्स ने जवाब दिया कि वो मुनाफ़िक़ है, अल्लाह और उसके रसूल से उसे मुहब्बत नहीं है। आँहज़रत (ﷺ) ने उस पर फ़र्माया क्या तुम ऐसा नहीं समझते कि वो कलिमा ला इलाहा इल्लल्लाह का इक़रार करता है और उसका मक़्सद उससे अल्लाह तआ़ला की रज़ा है। उस सहाबी ने कहा कि हाँ ये तो है। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि फिर जो बन्दा भी क़यामत के दिन इस कलिमे को लेकर आएगा, अल्लाह तआ़ला उस पर जहन्नम को हराम कर देगा। (राजेअ़ : 424)

٦٩٣٨ - حَدَّثَنَا عَبْدَانُ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، أَخْبَرَنِي مَحْمُودُ بْنُ الرَّبِيعِ قَالَ: سَمِعْتُ عِتْبَانَ بْنَ مَالِكٍ يَقُولُ: غَدَا عَلَيَّ رَسُولُ اللهِ ﷺ فَقَالَ رَجُلٌ: أَيْنَ مَالِكُ بْنُ الدُّخْشُنِ؟ فَقَالَ رَجُلٌ مِنَّا: ذَلِكَ مُنَافِقٌ لاَ يُحِبُّ اللهَ وَرَسُولَهُ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((أَلاَ تَقُولُوهُ يَقُولُ: لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ يَبْتَغِي بِذَلِكَ وَجْهَ اللهِ)) قَالَ: بَلَى قَالَ: ((فَإِنَّهُ لاَ يُوَافِي عَبْدٌ يَوْمَ الْقِيَامَةِ بِهِ إِلاَّ حَرَّمَ اللهُ عَلَيْهِ النَّارَ)).
[راجع: ٤٢٤]

बाब की मुनासबत ये है कि आँहज़रत (ﷺ) ने उन लोगों पर मुवाख़िज़ा नहीं किया जिन्होंने मालिक को मुनाफ़िक़ कहा था इसलिये कि वो तावील करने वाले थे या'नी मालिक के हालात को देखकर उसे मुनाफ़िक़ समझते थे तो उनका गुमान ग़लत हुआ।

6939. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अबू अ़वाना वज़्ज़ाह शुक्री ने बयान किया, उनसे हुसैन बिन अ़ब्दुर्रहमान सुलमी ने, उनसे फ़लाँ शख़्स (सईद बिन उ़बैदह) ने कि अबू अ़ब्दुर्रहमान और हिब्बान बिन अ़तिया का आपस में इख़्तिलाफ़ हुआ। अबू अ़ब्दुर्रहमान ने हिब्बान से कहा कि आपको मा'लूम है कि आपके साथी ख़ून बहाने में किस क़दर जरी हो गये हैं। उनका इशारा अ़ली (रज़ि.) की तरफ़ था इस पर हिब्बान ने कहा उन्होंने क्या किया है तेरा बाप नहीं। अबू अ़ब्दुल्लाह ने कहा कि अ़ली कहते थे कि मुझे, ज़ुबैर और अबू मर्षद (रज़ि.) को रसूले करीम (ﷺ) ने भेजा और हम सब घोड़ों पर सवार थे आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि जाओ और जब रौज़ा ख़ाख़ पर पहुँचो (जो मदीना से बारह मील की दूरी पर एक जगह है) अबू सलमा ने बयान किया कि अबू अ़वाना ने

٦٩٣٩ - حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ، عَنْ حُصَيْنٍ، عَنْ فُلاَنٍ قَالَ: تَنَازَعَ أَبُو عَبْدِ الرَّحْمَنِ، وَحِبَّانُ بْنُ عَطِيَّةَ فَقَالَ أَبُو عَبْدِ الرَّحْمَنِ لِحِبَّانَ: لَقَدْ عَلِمْتُ الَّذِي جَرَّأَ صَاحِبَكَ عَلَى الدِّمَاءِ يَعْنِي عَلِيًّا قَالَ: مَا هُوَ لاَ أَبَا لَكَ، قَالَ شَيْءٌ سَمِعْتُهُ يَقُولُهُ: قَالَ: مَا هُوَ؟ قَالَ: بَعَثَنِي رَسُولُ اللهِ ﷺ وَالزُّبَيْرَ وَأَبَا مَرْثَدٍ، وَكُلُّنَا فَارِسٌ قَالَ: ((انْطَلِقُوا حَتَّى تَأْتُوا رَوْضَةَ خَاخٍ)) قَالَ أَبُو سَلَمَةَ : هَكَذَا قَالَ

ख़ाख़ के बदले हाज कहा है। तो वहाँ तुम्हें एक औरत (सारा नामी) मिलेगी और उसके पास हातिब बिन अबी बल्तआ का एक ख़त है जो मुश्रिकीने मक्का को लिखा गया है तुम वो ख़त मेरे पास लाओ। चुनाँचे हम अपने घोड़ों पर दौड़े और हमने उसे वहीं पकड़ा जहाँ आँहज़रत (ﷺ) ने बताया था। वो औरत अपने ऊँट पर सवार जा रही थी हातिब बिन अबी बल्तआ (रज़ि.) ने अहले मक्का को आँहज़रत (ﷺ) की मक्का को आने की ख़बर दी थी। हमने उस औरत से कहा कि तुम्हारे पास वो ख़त कहाँ है उसने कहा कि मेरे पास तो कोई ख़त नहीं है हमने उसका ऊँट बिठा दिया और उसके कजावे की तलाशी ली लेकिन उसमें कोई ख़त नहीं मिला। मेरे साथी ने कहा कि इसके पास कोई ख़त नहीं मा'लूम होता। रावी ने बयान किया कि हमें यक़ीन है कि आँहज़रत (ﷺ) ने ग़लत बात नहीं फ़र्माई फिर अली (रज़ि.) ने क़सम खाई कि उस ज़ात की क़सम जिसकी क़सम खाई जाती है ख़त निकाल दे वरना मैं तुझे नंगा करूँगा। अब वो औरत अपने नाफ़े की तरफ़ झुकी उसने एक चादर कमर पर बाँध रखी थी और ख़त निकाला। उसके बाद ये लोग ख़त आँहज़रत (ﷺ) के पास लाए। उमर (रज़ि.) ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! इसने अल्लाह और उसके रसूल और मुसलमानों के साथ ख़यानत की है, मुझे इजाज़त दीजिए कि मैं इसकी गर्दन मार दूँ। लेकिन आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, ऐ हातिब! तुमने ऐसा क्यूँ किया? हातिब (रज़ि.) ने कहा या रसूलल्लाह! भला क्या मुझसे ये मुम्किन है कि मैं अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान न रखूँ मेरा मतलब इस ख़त के लिखने से सिर्फ़ ये था कि मेरा एक एहसान मक्का वालों पर हो जाए जिसकी वजह से मैं अपनी जायदाद और बाल बच्चों को (उनके हाथ से) बचा लूँ। बात ये है कि आपके अस्हाब में कोई ऐसा नहीं जिसके मक्का में उनकी क़ौम में के ऐसे लोग न हों जिसकी वजह से अल्लाह उनके बच्चों और जायदाद पर कोई आफ़त नहीं आने देता। मगर मेरा वहाँ कोई नहीं है। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि हातिब ने सच कहा है भलाई के सिवा इनके बारे में और कुछ न कहो। बयान किया कि उमर (रज़ि.) ने दोबारा कहा कि या रसूलल्लाह (ﷺ)! इसने अल्लाह और उसके रसूल और मोमिनों के साथ ख़यानत की है। मुझे

أَبُو عَوَانَةَ حَاجٍ ((فَإِنَّ فِيهَا امْرَأَةً مَعَهَا صَحِيفَةٌ. مِنْ حَاطِبِ بْنِ أَبِي بَلْتَعَةَ إِلَى الْمُشْرِكِينَ فَائْتُونِي بِهَا)) فَانْطَلَقْنَا عَلَى أَفْرَاسِنَا حَتَّى أَدْرَكْنَاهَا حَيْثُ قَالَ لَنَا رَسُولُ اللهِ ﷺ تَسِيرُ عَلَى بَعِيرٍ لَهَا وَكَانَ كَتَبَ إِلَى أَهْلِ مَكَّةَ بِمَسِيرِ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِلَيْهِمْ فَقُلْنَا: أَيْنَ الْكِتَابُ الَّذِي مَعَكِ؟ قَالَتْ: مَا مَعِي كِتَابٌ، فَأَنَخْنَا بِهَا بَعِيرَهَا فَابْتَغَيْنَا فِي رَحْلِهَا فَمَا وَجَدْنَا شَيْئًا فَقَالَ صَاحِبِي: مَا نَرَى مَعَهَا كِتَابًا قَالَ: فَقُلْتُ لَقَدْ عَلِمْنَا مَا كَذَبَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ثُمَّ حَلَفَ عَلِيٌّ وَالَّذِي يُحْلَفُ بِهِ لَتُخْرِجَنَّ الْكِتَابَ أَوْ لأُجَرِّدَنَّكِ، فَأَهْوَتْ إِلَى حُجْزَتِهَا وَهْيَ مُحْتَجِزَةٌ بِكِسَاءٍ، فَأَخْرَجَتِ الصَّحِيفَةَ، فَأَتَوْا بِهَا رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ عُمَرُ: يَا رَسُولَ اللهِ قَدْ خَانَ اللهَ وَرَسُولَهُ وَالْمُؤْمِنِينَ دَعْنِي فَأَضْرِبَ عُنُقَهُ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((يَا حَاطِبُ مَا حَمَلَكَ عَلَى مَا صَنَعْتَ؟)) قَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ مَا لِي أَنْ لاَ أَكُونَ مُؤْمِنًا بِاللهِ وَرَسُولِهِ، وَلَكِنِّي أَرَدْتُ أَنْ يَكُونَ لِي عِنْدَ الْقَوْمِ يَدٌ يُدْفَعُ بِهَا عَنْ أَهْلِي وَمَالِي، وَلَيْسَ مِنْ أَصْحَابِكَ أَحَدٌ إِلاَّ لَهُ هُنَالِكَ مِنْ قَوْمِهِ مَنْ يَدْفَعُ اللهُ بِهِ عَنْ أَهْلِهِ وَمَالِهِ. قَالَ: ((صَدَقَ لاَ تَقُولُوا لَهُ إِلاَّ خَيْرًا)) قَالَ: فَعَادَ عُمَرُ فَقَالَ : يَا

رَسُولَ اللهِ قَدْ خَانَ اللهَ وَرَسُولَهُ وَالْمُؤْمِنِينَ دَعْنِي فَلأَضْرِبَ عُنُقَهُ قَالَ: ((أَوَلَيْسَ مِنْ أَهْلِ بَدْرٍ؟ وَمَا يُدْرِيكَ لَعَلَّ اللهَ اطَّلَعَ عَلَيْهِمْ فَقَالَ: اعْمَلُوا مَا شِئْتُمْ فَقَدْ أَوْجَبْتُ لَكُمُ الْجَنَّةَ)) فَاغْرَوْرَقَتْ عَيْنَاهُ فَقَالَ: اللهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ. قَالَ أَبُو عَبْدِ اللهِ: خَاخٍ أَصَحُّ، وَلَكِنْ كَذَلِكَ قَالَ أَبُو عَوَانَةَ: حَاجٍ وَحَاجٌ تَصْحِيفٌ، وَهُوَ مَوْضِعٌ وَهُشَيْمٌ يَقُولُ: خَاخٍ

[راجع: ٣٠٠٧]

इजाज़त दीजिए कि मैं इसकी गर्दन मार दूँ। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया क्या ये जंगे बद्र में शरीक होने वालों में से नहीं हैं? तुम्हें क्या मा'लूम अल्लाह तआला इनके आमाल से वाक़िफ़ था और फिर फ़र्माया कि जो चाहो करो मैंने जन्नत तुम्हारे लिये लिख दी है उस पर उमर (रज़ि.) की आँखों में (ख़ुशी से) आँसू भर आए और अर्ज़ किया अल्लाह और उसके रसूल ही को हक़ीक़त का ज़्यादा इल्म है। अबू अब्दुल्लाह (हज़रत इमाम बुख़ारी रह.) ने कहा कि ख़ाख़ ज़्यादा सहीह है लेकिन अबू अवाना ने हाज ही बयान किया है और लफ़्ज़ हाज बदला हुआ है ये एक जगह का नाम है और हुशैम ने ख़ाख़ बयान किया है। (राजेअ : 3007)

तश्रीह : ये हदीष़ कई बार ऊपर गुज़र चुकी है। बाब का मतलब इस तरह निकला कि हज़रत उमर (रज़ि.) ने अपने नज़दीक हज़रत हातिब (रज़ि.) को ख़ाइन समझा एक रिवायत की बिना पर उनको मुनाफ़िक़ भी कहा मगर चूँकि हज़रत उमर (रज़ि.) के ऐसा ख़्याल करने की एक वजह थी या'नी उनका ख़त पकड़ा जाना जिसमें अपनी क़ौम का नुक़्सान था तो गोया वो तावील करने वाले थे और इसीलिये आँहज़रत (ﷺ) ने उनसे कोई मुवाख़िज़ा नहीं किया। अब ये ए'तिराज़ होता है कि एक बार जब आँहज़रत (ﷺ) ने हातिब की निस्बत ये फ़र्माया कि वो सच्चा है तो फिर दोबारा हज़रत उमर (रज़ि.) ने उनको मार डालने की इजाज़त क्यूँकर चाही? उसका जवाब ये है कि हज़रत उमर की राय मुल्की और शरई क़ानून ज़ाहिरी पर थी जो शख़्स अपने बादशाह या अपनी क़ौम का राज़ दुश्मनों पर ज़ाहिर करे उसकी सज़ा मौत है और एक बार आँहज़रत (ﷺ) के फ़र्माने से कि वो सच्चा है उनकी पूरी तशफ़्फ़ी नहीं हुई क्योंकि सच्चा होने की सूरत में भी उनका बहाना इस क़ाबिल न था कि उस जुर्म की सज़ा से वो बरी हो जाते जब आँहज़रत (ﷺ) ने दोबारा ये फ़र्माया कि अल्लाह ने बद्र वालों के सब क़ुसूर माफ़ कर दिये हैं तो हज़रत उमर (रज़ि.) को तसल्ली हो गई और अपना ख़्याल उन्होंने छोड़ दिया इससे बद्री सहाबा के जन्नती होने का इष्बात हुआ। लफ़्ज़ **ला अबन लक** अरबों के मुहावरे में उस वक़्त बोला जाता है जब कोई शख़्स एक अजीब बात कहता है मतलब ये होता है कि तेरा कोई अदब सिखाने वाला बाप न था जब ही तू बेअदब रह गया। अबू अब्दुर्रहमान उष्मानी थे और हिब्बान बिन अतिया हज़रत अली (रज़ि.) के तरफ़दार थे अबू अब्दुर्रहमान का ये कहना हज़रत अली (रज़ि.) की निस्बत सहीह न था कि वो बिना शरई वजह के मुसलमानों की ख़ूँरेज़ी करते हैं उन्होंने जो कुछ कहा हुक्म शरअ के तहत कहा। अबू अब्दुर्रहमान को ये बदगुमानी यूँ हुई कि हज़रत अली (रज़ि.) के सामने रसूले करीम (ﷺ) ने ये बशारत सुनाई थी कि जंगे बद्र में शिर्कत करने वाले बख़्शे हुए हैं अल्लाह पाक ने बद्रियों से फ़र्मा दिया कि **इअमलू मा शिअतुम फ़क़द औजब्तु लकुमुल् जन्नत** तुम जो चाहो अमल करो मैं तुम्हारे लिये जन्नत वाजिब कर चुका हूँ। चूँकि हज़रत अली (रज़ि.) भी बद्री हैं इसलिये अब वो इस बशारत ख़ुदाई के पेशे नज़र ख़ूँरेज़ी करने में जरी हो गये हैं। अबू अब्दुर्रहमान का ये गुमान सहीह न था नाहक़ ख़ूँरेज़ी करना हज़रत अली (रज़ि.) से बिलकुल बईद था। जो कुछ उन्होंने क्या शरीअत के तहत किया; यूँ बशरी लग़्ज़िश दीगर बात है। हज़रत अली (रज़ि.) अबू तालिब के बेटे हैं, नौजवानों में अव्वलीन इस्लाम क़ुबूल करने वाले हैं। उम्र दस साल या पन्द्रह साल की थी। जंगे तबूक के सिवा सब जंगों में शरीक हुए। गन्दुमो रंग, बड़ी बड़ी आँखों वाले, दरम्याने क़द, बहुत बाल वाले, चौड़ी दाढ़ी वाले, सर के अगले हिस्से में बाल न थे। जुम्आ के दिन 18 ज़िलहिज्ज 35 हिजरी को ख़लीफ़ा हुए। यही शहादत उष्मान (रज़ि.) का दिन है। एक ख़ारजी अब्दुर्रहमान बिन मुलज्जम मुरादी ने 18 रमज़ान बवक़्ते सुबह बरोज़ जुम्आ 40 हिजरी में आपको शहीद किया। ज़ख़्मी होने के बाद तीन रात ज़िन्दा रहे, 63 साल की उम्र पाई। हज़रत हसन (रज़ि.) और हज़रत हुसैन (रज़ि.) और हज़रत अब्दुल्लाह बिन जा'फ़र (रज़ि.) ने नहलाया

और हज़रत हसन ने नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई। सुबह के वक़्त दफ़न किये गये। मुद्दते ख़िलाफ़त चार साल नौ माह और कुछ दिन है। हज़रत अली (रज़ि.) ख़लीफ़ा राबेअ़ बरहक़ हैं। बहुत ही बड़े दानिशमंद इस्लाम के जनरल, बहादुर और स़ाहिबे मनाक़िब कस़ीरा हैं। आपकी मुहब्बत ईमान का हिस़्सा है, तीनों ख़िलाफ़तों में इनका बड़ा मुक़ाम रहा। बहुत स़ाइबुर्राय और आलिम व फ़ाज़िल थे। स़द अफ़सोस कि आपकी ज़ाते गिरामी को आड़ बनाकर एक यहूदी अ़ब्दुल्लाह बिन सबा ने उम्मते मुस्लिमा में ख़ाना जंगी व फ़ित्ना फ़साद को जगह दी। ये महज़ मुसलमानों को धोखा देने के लिये बज़ाहिर मुसलमान हो गया था। उसने ये फ़ित्ना खड़ा किया कि ख़िलाफ़त के वस़ी हज़रत अली (रज़ि.) हैं, हज़रत उ़ष्मान नाहक़ ख़लीफ़ा बन बैठे हैं। रसूले करीम (ﷺ) ख़िलाफ़त के लिये हज़रत अली (रज़ि.) को अपना वस़ी बना गये हैं, लिहाज़ा खिलाफ़त स़िर्फ़ हज़रत अली ही का हक़ है। अ़ब्दुल्लाह बिन सबा ने ये ऐसी मनघड़ंत बात ईजाद की थी जिसका रसूले करीम (ﷺ) और बाद में ख़िलाफ़ते स़िद्दीक़ी व फ़ारूक़ी व उ़ष्मानी में कोई ज़िक्र नहीं था। मगर नाम चूँकि हज़रत अली (रज़ि.) जैसे आली मन्क़बत का था इसलिये कितने सादा लाह लोगों पर उस यहूदी का ये जादू चल गया। हज़रत उ़ष्मान ग़नी (रज़ि.) की शहादत का दर्दनाक वाक़िया इसी फ़ित्ने की बिना पर हुआ। आप बयासी साल की उ़म्र में 18 ज़िलहिज्ज 35 हिजरी को जबकि आप क़ुर्आन शरीफ़ की आयत, **फ़सयक्फ़ीकहुमुल्लाह** पर पहुँचे थे कि निहायत बेदर्दी से शहीद किये गये और आपके ख़ून की धार क़ुर्आन पाक के वरक़ पर उसी आयत की जगह जाकर पड़ी रज़ियल्लाहु अ़न्हु। अल्हम्दुलिल्लाह हरमैन शरीफ़ैन के सफ़र में तीन बार आपकी क़ब्र पर दुआ-ए-मस्नून पढ़ने की सआ़दत हास़िल हुई है। अल्लाह पाक क़यामत के दिन इन सब बुज़ुर्गों की ज़ियारत नस़ीब करे आमीन। शहादते हज़रत उ़ष्मान ग़नी (रज़ि.) से उम्मत का निज़ाम ऐसा मुंतशिर हुआ जो आज तक क़ायम है और शायद क़यामत तक भी न ख़त्म हो। **फ़ल्यब्कि अलल्इस्लाम मन कान बाकियन।**

९०. किताबुल इक्राह

किताब ज़बरदस्ती काम कराने के बयान में

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

किसी अच्छे काम को छुड़ाने या बुरे काम को कराने के लिये किसी कमज़ोर व ग़रीब पर ज़बरदस्ती करना ही इक्राह है।

तश्रीह : इस्लाम में किसी को ज़बरदस्ती मुसलमान बनाना भी जाइज़ नहीं है तो ज़ाहिर है कि इक्राह इस्लाम में किसी सूरत में जाइज़ नहीं है कुछ कामों में इकराह को नाफ़िज़ क़रार देते हैं उन्हीं की तर्दीद यहाँ मक़्सूद है और यही अहादीषे मुन्दर्जा का ख़ुलास़ा है। आज आज़ादी के दौर में इस बाब को ख़ास़ नज़र से मुतालआ की शदीद ज़रूरत है।

وَقَوْلِ اللّٰهِ تَعَالَى: ﴿إِلَّا مَنْ أُكْرِهَ وَقَلْبُهُ مُطْمَئِنٌّ بِالْإِيمَانِ وَلَكِنْ مَنْ شَرَحَ بِالْكُفْرِ صَدْرًا فَعَلَيْهِمْ غَضَبٌ مِنَ اللّٰهِ وَلَهُمْ

बाब अल्लाह तआ़ला ने फ़र्माया मगर उस पर गुनाह नहीं कि जिस पर ज़बरदस्ती की जाए यहाँ तक कि उसका दिल ईमान पर मुत्मइन हो लेकिन जिसका दिल कुफ़्र ही के लिये खुल जाए तो ऐसे लोगों पर अल्लाह का ग़ज़ब होगा और उनके लिये अ़ज़ाब

عَذَابٌ عَظِيمٌ﴾ [النحل: ١٠٦] وَقَالَ: ﴿إِلاَّ أَنْ تَتَّقُوا مِنْهُمْ تُقَاةً﴾ وَهِيَ تَقِيَّةٌ وَقَالَ: ﴿إِنَّ الَّذِينَ تَوَفَّاهُمُ الْمَلاَئِكَةُ ظَالِمِي أَنْفُسِهِمْ﴾ [النساء: ٩٧] قَالُوا: فِيمَ كُنْتُمْ؟ قَالُوا: كُنَّا مُسْتَضْعَفِينَ فِي الأَرْضِ إِلَى قَوْلِهِ: ﴿وَاجْعَلْ لَنَا مِنْ لَدُنْكَ نَصِيرًا﴾ [النساء: ٧٥] فَعَذَرَ اللهُ الْمُسْتَضْعَفِينَ الَّذِينَ لاَ يَمْتَنِعُونَ مِنْ تَرْكِ مَا أَمَرَ اللهُ بِهِ وَالْمُكْرَهُ لاَ يَكُونُ إِلاَّ مُسْتَضْعَفًا غَيْرَ مُمْتَنِعٍ مِنْ فِعْلِ مَا أُمِرَ بِهِ. وَقَالَ الْحَسَنُ: التَّقِيَّةُ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: فِيمَنْ يُكْرِهُهُ اللُّصُوصُ فَيُطَلِّقُ لَيْسَ بِشَيْءٍ وَبِهِ قَالَ ابْنُ عُمَرَ، وَابْنُ الزُّبَيْرِ وَالشَّعْبِيُّ وَالْحَسَنُ وَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((الأَعْمَالُ بِالنِّيَّةِ)).

दर्दनाक होगा और सूरह आले इमरान में फ़र्माया या'नी यहाँ ये हो सकता है कि तुम काफ़िरों से अपने को बचाने के लिये कुछ बचाव कर लो। ज़ाहिर में उनके दोस्त बन जाओ या'नी तक़िया करो। और सूरह निसा में फ़र्माया बेशक उन लोगों की जान जिन्होंने अपने ऊपर ज़ुल्म कर रखा है जब फ़रिश्ते क़ब्ज़ करते हैं तो उनसे कहेंगे कि तुम किस काम में थे वो बोलेंगे कि हम उस मुल्क में बेबस थे और हमारे लिये अपने क़ुदरत से कोई हिमायती खड़ा कर दे... आख़िर आयत तक। इमाम बुख़ारी (रह.) ने कहा इस आयत में अल्लाह तआला ने उन कमज़ोर लोगों को अल्लाह के अहकाम न बजा लाने से मअज़ूर रखा और जिसके साथ ज़बरदस्ती की जाए वो भी कमज़ार ही होता है क्योंकि अल्लाह तआला ने जिस काम से मना किया है वो उसके करने पर मजबूर किया जाए। और इमाम हसन बसरी (रह.) ने कहा कि तक़िया का जवाज़ क़यामत तक के लिये है और इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा कि जिसके साथ चोरों ने ज़बरदस्ती की हो (कि वो अपनी बीवी को तलाक़ दे दे) और फिर उसने तलाक़ दे दी तो वो तलाक़ वाक़ेअ नहीं होगी यही क़ौल इब्ने ज़ुबैर, शअबी, और हसन का भी है और नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि आमाल निय्यत पर मौक़ूफ़ हैं।

इस हदीष से भी इमाम बुख़ारी (रह.) ने ये दलील ली कि जिस शख़्स से ज़बरदस्ती तलाक़ ली जाए तो तलाक़ वाक़ेअ न होगी क्योंकि उसकी निय्यत तलाक़ की न थी। मा'लूम हुआ कि ज़बरदस्ती करना इस्लाम में जाइज़ नहीं है। राफ़िज़ियों जैसा तक़िया बतौरे शिआर जाइज़ नहीं है।

٦٩٤٠- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ خَالِدِ بْنِ يَزِيدَ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ أَبِي هِلاَلٍ، عَنْ هِلاَلِ بْنِ أُسَامَةَ أَنَّ أَبَا سَلَمَةَ بْنَ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَخْبَرَهُ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ يَدْعُو فِي الصَّلاَةِ: ((اللَّهُمَّ أَنْجِ عَيَّاشَ بْنَ أَبِي رَبِيعَةَ، وَسَلَمَةَ بْنَ هِشَامٍ وَالْوَلِيدَ، اللَّهُمَّ أَنْجِ الْمُسْتَضْعَفِينَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ، اللَّهُمَّ اشْدُدْ وَطْأَتَكَ عَلَى مُضَرَ وَابْعَثْ عَلَيْهِمْ سِنِينَ كَسِنِي يُوسُفَ)). [راجع: ٧٩٧]

4940. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे लैष बिन सअद ने बयान किया, उनसे ख़ालिद बिन यज़ीद ने बयान किया, उनसे सईद बिन अबी हिलाल बिन उसामा ने, उन्हें अबू सलमा बिन अब्दुर्रहमान ने ख़बर दी और उन्हें हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) नमाज़ में दुआ करते थे कि ऐ अल्लाह अय्याश बिन अबी रबीआ, सलमा बिन हिशाम और वलीद बिन वलीद (रज़ि.) को नजात दे। ऐ अल्लाह बेबस मुसलमानों को नजात दे। ऐ अल्लाह क़बीला मुज़र के लोगों को सख़्ती के साथ पीस डाल। और उन पर ऐसी क़हतसाली भेज जैसी हज़रत यूसुफ़ (अ.) के ज़माने में आई थी। (राजेअ : 797)

इस ह़दीष़ से बाब का मत़लब यूँ निकला कि कमज़ोर मुसलमान मक्का के काफ़िरों में गिरफ़्तार थे। उनके ज़ोर ज़बरदस्ती से उनके कुफ़्र के कामों में शरीक रहते होंगे लेकिन आपने दुआ़ में उनको मोमिन फ़र्माया कि इकराह की ह़ालत में मजबूरी अल्लाह के नज़दीक क़ुबूल है।

बाब 1 : जिसने कुफ़्र पर मार खाने, क़त्ल किये जाने और ज़िल्लत को इख़्तियार किया

١- باب مَنِ اخْتَارَ الضَّرْبَ وَالْقَتْلَ وَالْهَوَانَ عَلَى الْكُفْرِ

6941. हमसे मुह़म्मद बिन ह़ौशब त़ाइफ़ी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अय्यूब ने बयान किया, उनसे अबू क़िलाबा ने बयान किया, और उनसे ह़ज़रत अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया तीन ख़ुसूसियतें ऐसी हैं कि जिसमें पाई जाएगी वो ईमान की मिठास पा लेगा अव्वल ये है कि अल्लाह और उसके रसूल उसे सबसे ज़्यादा अ़ज़ीज़ हों। दूसरे ये कि वो किसी शख़्स़ से मुह़ब्बत स़िर्फ़ अल्लाह ही के लिये करे तीसरे ये कि उसे कुफ़्र की त़रफ़ लौटकर जाना इतना नागवार हो जैसे आग में फेंक दिया जाना। (राजेअ़ : 16)

٦٩٤١- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ حَوْشَبٍ الطَّائِفِيُّ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ، حَدَّثَنَا أَيُّوبُ، عَنْ أَبِي قِلاَبَةَ، عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((ثَلاَثٌ مَنْ كُنَّ فِيهِ وَجَدَ حَلاَوَةَ الإِيمَانِ أَنْ يَكُونَ اللهُ وَرَسُولُهُ أَحَبَّ إِلَيْهِ مِمَّا سِوَاهُمَا، وَأَنْ يُحِبَّ الْمَرْءَ لاَ يُحِبُّهُ إِلاَّ للهِ، وَأَنْ يَكْرَهَ أَنْ يَعُودَ فِي الْكُفْرِ كَمَا يَكْرَهُ أَنْ يُقْذَفَ فِي النَّارِ)).[راجع: ١٦]

तश्रीह : इससे बाब का मत़लब यूँ निकला कि क़त्ल और ज़र्ब सब उससे आसान है कि आदमी आग में जलाया जाए और मारपीट या ज़िल्लत या क़त्ल को आसान समझेगा लेकिन कुफ़्र को गवारा न करेगा। कुछ ने कहा कि क़त्ल का जब डर हो तो कलिमा-ए-कुफ़्र मुँह से निकाल देना और जान बचाना बेहतर है मगर स़ह़ीह़ यही है कि स़ब्र करना बेहतर है जैसा कि ह़ज़रत बिलाल (रज़ि.) के वाक़िया से ज़ाहिर है। बाक़ी तक़िया करना उस वक़्त हमारी शरीअ़त में जाइज़ है जब आदमी को अपनी जान या माल जाने का डर हो फिर भी तक़िया न करे तो बेहतर है। राफ़्ज़ियों का तक़िया बुज़दिली और बेशर्मी की बात है वो तक़िया को जा व बेजा अपना शिआ़र बनाए हुए हैं। **इन्ना लिल्लाह**

6942. हमसे सईद बिन सुलैमान ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्बाद ने, उनसे इस्माईल ने, उन्होंने क़ैस से सुना, उन्होंने सईद बिन ज़ैद (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैंने अपने आपको इस ह़ाल में पाया कि इस्लाम लाने की वजह से (मक्का मुअ़ज़्ज़मा में) उ़मर (रज़ि.) ने मुझे बाँध दिया था और अब जो कुछ तुमने उ़ष़्मान (रज़ि.) के साथ किया है उस पर अगर उहुद पहाड़ टुकड़े टुकड़े हो जाए तो उसे ऐसा होना ही चाहिये। (राजेअ़ : 3862)

٦٩٤٢- حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ سُلَيْمَانَ، حَدَّثَنَا عَبَّادٌ، عَنْ إِسْمَاعِيلَ سَمِعْتُ قَيْسًا سَمِعْتُ سَعِيدَ بْنَ زَيْدٍ يَقُولُ: لَقَدْ رَأَيْتُنِي وَإِنَّ عُمَرَ مُوثِقِي عَلَى الإِسْلاَمِ وَلَوِ انْقَضَّ أُحُدٌ مِمَّا فَعَلْتُمْ بِعُثْمَانَ كَانَ مَحْقُوقًا أَنْ يَنْقَضَّ. [راجع: ٣٨٦٢]

बाब का मत़लब यूँ निकला ह़ज़रत सईद बिन ज़ैद (रज़ि.) और उनकी बीवी ने ज़िल्लत व ख़्वारी मारपीट गवारा की लेकिन इस्लाम से न फिरे और ह़ज़रत उ़ष़्मान (रज़ि.) ने क़त्ल गवारा किया मगर बाग़ियों का कहना न माना तो कुफ़्र पर बत़रीक़े औला वो क़त्ल हो जाना गवारा करते। शहादते ह़ज़रत उ़ष़्मान (रज़ि.) का कुछ ज़िक्र पीछे लिखा जा चुका है ह़ज़रत सईद बिन ज़ैद ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) के बहनोई थे। बहन पर ग़ुस़्स़ा करके उसी नेक ख़ातून की क़िराते क़ुर्आन सुनकर उनका दिल

मोम हो गया। सच है,

नमी दानी की सौज़ क़िरात तो दिगर गूँ कर्द तक़्दीर उम्र रा

6943. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या ने बयान किया, उनसे इस्माईल ने, कहा हमसे क़ैस ने बयान किया, उनसे ख़ब्बाब बिन अरत (रज़ि.) ने कि हमने रसूलुल्लाह (ﷺ) से अपना हाले ज़ार बयान किया आँहज़रत (ﷺ) उस वक़्त का'बा के साये में अपनी चादर पर बैठे हुए थे हमने अर्ज़ किया क्यूँ नहीं आप हमारे लिये अल्लाह तआला से मदद मांगते और अल्लाह तआला से दुआ करते। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया। तुमसे पहले बहुत से नबियों और उन पर ईमान लाने वालों का हाल ये हुआ कि उनमें से किसी एक को पकड़ लिया जाता और गढ़ा खोदकर उसमे उन्हें डाल दिया जाता फिर आरा लाया जाता और उनके सर पर रखकर दो टुकड़े कर दिये जाते और लोहे के कँघे उनके गोश्त और हड्डियों में धंसा दिये जाते लेकिन ये आज़माइश भी उन्हें अपने दीन से नहीं रोक सकती थीं अल्लाह की क़सम! इस इस्लाम का काम मुकम्मल होगा और एक सवार सन्आ से हज़रे मौत तक अकेला सफ़र करेगा और उसे अल्लाह के सिवा और किसी का डर नहीं होगा और बकरियों पर सिवा भेड़िये के डर के (और किसी लूट वग़ैरह का कोई डर न होगा) लेकिन तुम लोग जल्दी करते हो। (राजेअ : 3612)

٦٩٤٣- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا يَحْيَى، عَنْ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا قَيْسٌ، عَنْ خَبَّابِ بْنِ الأَرَتِّ قَالَ: شَكَوْنَا إِلَى رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ مُتَوَسِّدٌ بُرْدَةً لَهُ فِي ظِلِّ الكَعْبَةِ فَقُلْنَا ((أَلاَ تَسْتَنْصِرُ لَنَا أَلاَ تَدْعُو لَنَا فَقَالَ: قَدْ كَانَ مَنْ قَبْلَكُمْ يُؤْخَذُ الرَّجُلُ فَيُحْفَرُ لَهُ فِي الأَرْضِ، فَيُجْعَلُ فِيهَا فَيُجَاءُ بِالْمِيشَارِ فَيُوضَعُ عَلَى رَأْسِهِ فَيُجْعَلُ نِصْفَيْنِ وَيُمْشَطُ بِأَمْشَاطِ الْحَدِيدِ مَا دُونَ لَحْمِهِ وَعَظْمِهِ، فَمَا يَصُدُّهُ ذَلِكَ عَنْ دِينِهِ، وَاللهِ لَيُتِمَّنَّ هَذَا الأَمْرُ حَتَّى يَسِيرَ الرَّاكِبُ مِنْ صَنْعَاءَ إِلَى حَضْرَمَوْتَ لاَ يَخَافُ إِلاَّ اللهَ وَالذِّئْبَ عَلَى غَنَمِهِ، وَلَكِنَّكُمْ تَسْتَعْجِلُونَ)).

[راجع: ٣٦١٢]

तशरीह : आपकी ये बशारत पूरी हुई सारा अरब काफ़िरों से साफ़ हो गया बाब का तर्जुमा इससे निकला कि ख़ब्बाब ने कुफ़्फ़ार की तकलीफ़ों पर सब्र किया सिर्फ़ शिकवा किया मगर इस्लाम पर क़ायम रहे। आपने ख़ब्बाब की दरख़्वास्त पर फ़ौरन बद्दुआ न की बल्कि सब्र की तल्क़ीन की अंबिया की यही शान होती है। आख़िर आपकी पेशीनगोई हर्फ़ ब हर्फ़ सहीह षाबित हुई और आज इस चौदहवीं सदी के ख़ात्मे पर अरब का मुल्क अमन का एक मिषाली गहवारा बना हुआ है। ये इस्लाम की बरकत है। अल्लाह इस हुकूमते सऊदिया को हमेशा क़ायम दायम रखे आमीन।

बाब 2 : जिसके साथ ज़बरदस्ती की जाए या इसी तरह किसी शख़्स का बेचना हक़ वग़ैरह को मजबूरी से कोई बेच-खोच का या और मामला करे

٢- باب فِي بَيْعِ الْمُكْرَهِ وَنَحْوِهِ فِي الْحَقِّ وَغَيْرِهِ

इमाम बुख़ारी (रह.) ने मुज़्तर की बैअ जाइज़ रखी है और बाब की हदीष से इस पर सनद ली। मुज़्तर से मुराद वो है जो मुफ़्लिस होकर अपना माल बेचे जैसे बाब की हदीष से मा'लूम होता है।

6944. हमसे अब्दुल अज़ीज़ बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, उन्होंने हमसे लैष बिन सअद ने बयान किया, उनसे सईद मक़्बरी ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने बयान किया

٦٩٤٤- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ سَعِيدٍ الْمَقْبُرِيِّ عَنْ

أبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: بَيْنَمَا نَحْنُ فِي الْمَسْجِدِ إِذْ خَرَجَ عَلَيْنَا رَسُولُ اللهِ ﷺ فَقَالَ: ((انْطَلِقُوا إِلَى يَهُودَ)) فَخَرَجْنَا مَعَهُ حَتَّى جِئْنَا بَيْتَ الْمِدْرَاسِ فَقَامَ النَّبِيُّ ﷺ فَنَادَاهُمْ: ((يَا مَعْشَرَ يَهُودَ أَسْلِمُوا تَسْلَمُوا)) فَقَالُوا: قَدْ بَلَّغْتَ يَا أَبَا الْقَاسِمِ فَقَالَ: ((ذَلِكَ أُرِيدُ)) ثُمَّ قَالَهَا الثَّانِيَةَ: فَقَالُوا قَدْ بَلَّغْتَ يَا أَبَا الْقَاسِمِ ثُمَّ قَالَ الثَّالِثَةَ فَقَالَ: ((اعْلَمُوا أَنَّ الأَرْضَ للهِ وَرَسُولِهِ، وَإِنِّي أُرِيدُ أَنْ أُجْلِيَكُمْ فَمَنْ وَجَدَ مِنْكُمْ بِمَالِهِ شَيْئًا فَلْيَبِعْهُ، وَإِلاَّ فَاعْلَمُوا أَنَّمَا الأَرْضُ للهِ وَرَسُولِهِ)). [راجع: ٣١٦٧]

और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि हम मस्जिद में थे कि रसूलुल्लाह (ﷺ) हमारे पास तशरीफ़ लाए और फ़र्माया कि यहूदियों के पास चलो। हम आँह़ज़रत (ﷺ) के साथ रवाना हुए और जब हम बैतुल मिदरास के पास पहुँचे तो आँह़ज़रत (ﷺ) ने उन्हें आवाज़ दी ऐ क़ौमे यहूद! इस्लाम लाओ तुम मह़फ़ूज़ हो जाओगे। यहूदियों ने कहा अबुल क़ासिम! आपने पहुँचा दिया। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मेरा भी यही मक़्सद है फिर आपने दोबारा यही फ़र्माया और यहूदियों ने कहा कि अबुल क़ासिम! आपने पहुँचा दिया आँह़ज़रत (ﷺ) ने तीसरी मर्तबा यही फ़र्माया। और फिर फ़र्माया तुम्हे मा'लूम होना चाहिये कि ज़मीन अल्लाह और उसके रसूल की है और मैं तुम्हें जलावत़न करता हूँ। पस तुममें से जिसके पास माल हो उसे चाहिये कि जलावत़न होने से पहले उसे बेच दे वरना जान लो कि ज़मीन अल्लाह और उसके रसूल की है। (राजेअ़ : 3167)

यहूदे मदीना की रोज़ रोज़ की शरारतों की बिना पर आपने उनको ये ऐलान दिया था। वो उस वक़्त ह़र्बी काफ़िर थे। आपने उनको अपने अम्वाल बेचने का इख़्तियार दिया ऐसी सूरत में बेअ़ का जवाज़ ष़ाबित होता है। बाब से यही मुत़ाबक़त है।

٣- باب لاَ يَجُوزُ نِكَاحُ الْمُكْرَهِ

﴿وَلاَ تُكْرِهُوا فَتَيَاتِكُمْ عَلَى الْبِغَاءِ، إِنْ أَرَدْنَ تَحَصُّنًا لِتَبْتَغُوا عَرَضَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَمَنْ يُكْرِهْهُنَّ فَإِنَّ اللهَ مِنْ بَعْدِ إِكْرَاهِهِنَّ غَفُورٌ رَحِيمٌ﴾ [النور : ٣٣].

बाब 3 : जिसके साथ ज़बरदस्ती की जाए उसका निकाह

जाइज़ नहीं और अल्लाह ने सूरह नूर में फ़र्माया तुम अपनी लौण्डियों को बदकारी पर मजबूर न करो जो पाक दामन रहना चाहती हैं ताकि तुम उसके ज़रिये दुनिया की ज़िंदगी का सामान जमा करो और जो कोई उन पर जब्र करेगा तो बिला शुब्हा अल्लाह तआला उनके गुनाह का बख़्शने वाला मेहरबान है। (सूरह नूर : 33)

या'नी जब लौण्डी का मालिक ज़बरदस्ती उससे ज़िना कराये तो सारा गुनाह मालिक के सर पर रहेगा। ग़र्ज़ इमाम बुख़ारी (रह़.) की ये है कि जब लौण्डी के ख़िलाफ़ मर्ज़ी चलना मना हो तो आज़ाद शख़्स की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ चलना ज़बरदस्ती उसको निकाह़ पर मजबूर करना ह़ालाँकि वो निकाह़ से बचना चाहे तो ये क्यूँकर जाइज़ होगा?

٦٩٤٥- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ قَزَعَةَ، حَدَّثَنَا مَالِكٌ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ الْقَاسِمِ، عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ وَمُجَمِّعٍ ابْنَيْ يَزِيدَ بْنِ جَارِيَةَ الأَنْصَارِيِّ، عَنْ خَنْسَاءَ بِنْتِ

6945. हमसे यह़्या बिन क़ज़आ़ ने बयान किया, कहा हमसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुर्रह़मान बिन क़ासिम ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे यज़ीद बिन हारिष़ा अंस़ारी के दो स़ाहबज़ादों अ़ब्दुर्रह़मान और मजमअ़ ने और उनसे ख़न्सा बिन्ते ख़िज़ाम अंस़ारिया ने कि उनके

خِذَامٍ الأَنْصَارِيَّةِ أَنَّ أَبَاهَا زَوَّجَهَا وَهِيَ ثَيِّبٌ، فَكَرِهَتْ ذَلِكَ فَأَتَتِ النَّبِيَّ ﷺ فَرَدَّ نِكَاحَهَا.
[راجع: ٥١٣٨]

वालिद ने उनकी शादी कर दी उनकी एक शादी उससे पहले हो चुकी थी (और अब बेवा थीं) उस निकाह को उन्होंने नापसंद किया और नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर होकर (अपनी नापसंदीदगी ज़ाहिर कर दी) तो आँहज़रत (ﷺ) ने उस निकाह को फ़स्ख़ कर दिया। (राजेअ : 5138)

तश्रीह : इमाम बुख़ारी (रह.) ने इससे ये दलील ली कि मुकरिह (ना पसंद करने वाले) का निकाह सहीह नहीं। हनफ़िया कहते हैं कि उनका निकाह सहीह हुआ ही न था क्योंकि वो ष़य्यिबा बालिग़ा थीं उनकी इजाज़त और रज़ा भी ज़रूरी थी हम कहते हैं कि हदीष़ में **फ़रद्द निकाहुहा** है अगर निकाह सहीह ही न होता तो आप फ़र्मा देते कि निकाह ही नहीं हुआ और हदीष़ में यूँ होता, **फ़ब्तल निकाहहा** और हनफ़िया कहते हैं कि अगर किसी ने जबर से एक औरत से निकाह किया दस हज़ार दिरहम महर मुक़र्रर किया, हालाँकि उसका महरे मिष़्ल एक हज़ार था तो एक हज़ार लाज़िम होंगे नौ हज़ार बातिल हो जाएँगे। हम कहते हैं कि इकराह की वजह से जैसे महर की ज़्यादती बातिल कहते हो वैसे ही असल निकाह को भी बातिल करो। (वहीदी)

٦٩٤٦- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ، عَنِ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ، عَنْ أَبِي عَمْرٍو وَهُوَ ذَكْوَانُ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: قُلْتُ يَا رَسُولَ اللهِ يُسْتَأْمَرُ النِّسَاءُ فِي أَبْضَاعِهِنَّ قَالَ: ((نَعَمْ)) قُلْتُ: فَإِنَّ الْبِكْرَ تُسْتَأْمَرُ فَتَسْتَحِي فَتَسْكُتُ قَالَ: ((سُكَاتُهَا إِذْنُهَا)).
[راجع: ٥١٣٧]

6946. हमसे मुहम्मद बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे इब्ने जुरैज ने, उनसे इब्ने अबी मुलैका ने, उनसे अबू अम्र ने जिनका नाम ज़क्वान है और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! क्या औरतों से उनके निकाह के सिलसिले में इजाज़त ली जाएगी? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि हाँ। मैंने अर्ज़ किया लेकिन कुँवारी से अगर इजाज़त ली जाएगी? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि हाँ। मैंने अर्ज़ किया लेकिन कुँवारी लड़की से अगर इजाज़त ली जाएगी तो वो शर्म की वजह से चुप साध लेगी। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि उसकी ख़ामोशी ही इजाज़त है। (राजेअ : 5137)

कुँवारी लड़की से भी इजाज़त की ज़रूरत है फिर ज़बरदस्ती निकाह कैसे हो सकता है यही ष़ाबित करना है।

٤- باب إِذَا أُكْرِهَ حَتَّى وَهَبَ عَبْدًا أَوْ بَاعَهُ لَمْ يَجُزْ

बाब 4 : अगर किसी को मजबूर किया गया और आख़िर उसने गुलाम हिबा किया या बेचा तो न हिबा सहीह होगा न बेअ़ सहीह होगी

وَقَالَ بَعْضُ النَّاسِ : فَإِنْ نَذَرَ الْمُشْتَرِي فِيهِ نَذْرًا، فَهُوَ جَائِزٌ بِزَعْمِهِ وَكَذَلِكَ إِنْ دَبَّرَهُ.

और कुछ लोगों ने कहा अगर मकरह से कोई चीज़ ख़रीदे और ख़रीदने वाला उसमें कोई नज़्र करे या कोई गुलाम मुकरिह से ख़रीदे और ख़रीदने वाला उसको मुदब्बर कर दे तो ये मुदब्बर करना दुरुस्त होगा।

मुदब्बर के मा'नी कुछ रक़म पर गुलाम से मामला तै करके उसे अपने पीछे आज़ाद कर देना हैं।

٦٩٤٧- حَدَّثَنَا أَبُو النُّعْمَانِ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، عَنْ عَمْرِو بْنِ دِينَارٍ، عَنْ جَابِرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَجُلاً مِنَ الأَنْصَارِ دَبَّرَ مَمْلُوكًا وَلَمْ يَكُنْ لَهُ مَالٌ غَيْرُهُ، فَبَلَغَ

6947. हमसे अबुन नोअ़मान ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अ़म्र बिन दीनार ने, और उनसे हज़रत जाबिर (रज़ि.) ने कि एक अंसारी सहाबी ने किसी गुलाम को मुदब्बर बनाया और उनके पास उसके सिवा

ذٰلِكَ رَسُولَ اللهِ ﷺ فَقَالَ: ((مَنْ يَشْتَرِيهِ مِنِّي)) فَاشْتَرَاهُ نُعَيْمُ بْنُ النَّحَّامِ بِثَمَانِمِائَةِ دِرْهَمٍ قَالَ : فَسَمِعْتُ جَابِرًا يَقُولُ : عَبْدًا قِبْطِيًّا مَاتَ عَامَ أَوَّلَ. [راجع: ٢١٤١]

और कोई माल नहीं था रसूलुल्लाह (ﷺ) को जब उसकी ख़बर मिली तो पूछा। उसे मुझसे कौन ख़रीदेगा चुनाँचे नुऐम बिन नह्हाम (रज़ि.) ने आठ सौ दिरहम में ख़रीद लिया। बयान किया कि फिर मैंने हज़रत जाबिर (रज़ि.) से सुना उन्होंने बयान किया कि वो एक क़िब्ती गुलाम था और पहले ही साल मर गया। (राजेअ : 2141)

तश्रीह : इस हदीष़ से इमाम बुख़ारी (रह.) ने बाब का मतलब यूँ निकाला कि जब गुलाम का मुदब्बर करना आँहज़रत (ﷺ) ने लग़्व कर दिया हालाँकि उसके मालिक ने अपनी ख़ुशी से उसको मुदब्बर किया था और वजह ये हुई कि वारिष़ों के लिये और कोई माल उस शख़्स के पास न था तो गोया वारिष़ों की नाराज़ी की वजह से जिनकी मिल्क उस गुलाम के बारे में भी नहीं हुई थी तदबीर नाजाइज़ ठहरी। पस वो तदबीर या बेअ क्यों जाइज़ हो सकती है जिसमें ख़ुद मालिक नाराज़ हुआ और वो जबर से की जाए? मुहलिब ने कहा इस पर उलमा का इज्माअ है कि मुकरिह का बेअ और हिबा स़हीह़ नहीं है लेकिन हनफ़िया ने ये कहा है कि अगर मकरह से ख़रीदे गुलाम या लौण्डी कोई आज़ाद कर दे या मुदब्बर कर दे तो ख़रीददार (ये तसर्रुफ़ जाइज़ होगा, इमाम बुख़ारी रह. के एअराज़ का) हासिल ये है कि हनफ़िया के कलाम में मुनाक़ज़ा है अगर मुकरिह की बेअ स़हीह़ और मुफ़ीद मिल्क है तो सब तसर्रुफ़ात ख़रीददार के दुरुस्त होने चाहियें अगर स़हीह़ और मुफ़ीद मिल्क नहीं है तब न नज़्र स़हीह़ होनी चाहिये न मुदब्बर करना और नज़्र और तदबीर की सेहत का क़ाइल होना और फिर मुकरिह की बेअ स़हीह़ न समझना दोनों में मुनाक़िज़ा है। (वहीदी)

٥- باب مِنَ الإِكْرَاهِ كَرْهٌ وَكُرْهٌ وَاحِدٌ

बाब 5 : इकराह की बुराई का बयान

करहुन और कुरहुन के मा'नी एक ही हैं।

तश्रीह : अकष़र उलमा का यही क़ौल है कुछ ने कहा करहन बफ़त्ह़ा काफ़ ये है कि कोई दूसरा शख़्स ज़बरदस्ती करे और कुरहुन बज़म्मा काफ़ ये है कि आप ही ख़ुद एक काम को नापसंद करता हो और करे। (इस आयत से औरतों पर इकराह और ज़बरदस्ती करने की मुमानिअत निकली बाब की मुनासबत ज़ाहिर है।

٦٩٤٨- حَدَّثَنَا حُسَيْنُ بْنُ مَنْصُورٍ، حَدَّثَنَا أَسْبَاطُ بْنُ مُحَمَّدٍ، حَدَّثَنَا الشَّيْبَانِيُّ سُلَيْمَانُ بْنُ فَيْرُوزٍ، عَنْ عِكْرِمَةَ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ الشَّيْبَانِيُّ: وَحَدَّثَنِي عَطَاءٌ أَبُو الْحَسَنِ السُّوَائِيُّ وَلاَ أَظُنُّهُ إِلاَّ ذَكَرَهُ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا ﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لاَ يَحِلُّ لَكُمْ أَنْ تَرِثُوا النِّسَاءَ كَرْهًا﴾ الآيَةَ. قَالَ: كَانُوا إِذَا مَاتَ الرَّجُلُ كَانَ أَوْلِيَاؤُهُ أَحَقَّ بِامْرَأَتِهِ إِنْ شَاءَ بَعْضُهُمْ تَزَوَّجَهَا وَإِنْ شَاؤُوا زَوَّجُوهَا، وَإِنْ شَاؤُوا لَمْ يُزَوِّجُوهَا، فَهُمْ أَحَقُّ بِهَا

6948. हमसे हुसैन बिन मंसूर ने बयान किया, कहा हमसे अस्बात़ बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे शैबानी सुलैमान बिन फ़ीरोज़ ने बयान किया, उनसे इक्रिमा ने और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने शैबानी ने कहा कि मुझसे अ़ता अबुल हसन सवाई ने बयान किया और मेरा यही ख़्याल है कि उन्होंने ये हदीष़ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से बयान की। सूरह माइदह की आयत या अय्युहल्लज़ीन आमनू ला यहिल्लु लकुम अन तरिषुन्निसाअ करहा.... बयान किया कि जब कोई शख़्स (ज़माना जाहिलियत में) मर जाता तो उसके वारिष़ उसकी औरत के ह़क़दार बनते अगर उनमें से कोई चाहता तो उससे शादी कर लेता और अगर चाहता तो शादी न करता इस तरह मरने वाले के वारिष़ उस औरत पर औरत के वारिष़ों से ज़्यादा हक़ रखते। उस पर ये आयत नाज़िल हुई (बेवा औरत इद्दत गुज़ारने के बाद मुख़्तार है वो जिससे चाहे

مِنْ أَهْلِهَا فَنَزَلَتْ هَذِهِ الآيَةَ بِذَلِكَ.
[راجع: ٤٥٧٩]

शादी करे उस पर ज़बरदस्ती करना हर्गिज़ जाइज़ नहीं है। (राजेअ: 4579)

٦- باب إِذَا اسْتُكْرِهَتِ الْمَرْأَةُ عَلَى الزِّنَا فَلاَ حَدَّ عَلَيْهَا

बाब 6 : जब औरत से ज़बरदस्ती ज़िना किया गया हो तो उस पर हद नहीं है

لِقَوْلِهِ تَعَالَى: ﴿وَمَنْ يُكْرِهْهُنَّ فَإِنَّ اللهَ مِنْ بَعْدِ إِكْرَاهِهِنَّ غَفُورٌ رَحِيمٌ﴾ [النور: ٣٣].

अल्लाह तआला ने सूरह नूर में फ़र्माया और जो कोई उनके साथ ज़बरदस्ती करे तो अल्लाह तआला उनके साथ उस ज़बरदस्ती के बाद माफ़ करने वाला, रहम करने वाला है। (नूर : 33)

٦٩٤٩- وَقَالَ اللَّيْثُ : حَدَّثَنِي نَافِعٌ أَنَّ صَفِيَّةَ ابْنَةَ أَبِي عُبَيْدٍ أَخْبَرَتْهُ أَنَّ عَبْدًا مِنْ رَقِيقِ الإِمَارَةِ وَقَعَ عَلَى وَلِيدَةٍ مِنَ الْخُمُسِ، فَاسْتَكْرَهَهَا حَتَّى اقْتَضَّهَا، فَجَلَدَهُ عُمَرُ الْحَدَّ وَنَفَاهُ، وَلَمْ يَجْلِدِ الْوَلِيدَةَ مِنْ أَجْلِ أَنَّهُ اسْتَكْرَهَهَا قَالَ الزُّهْرِيُّ : فِي الأَمَةِ الْبِكْرِ يَفْتَرِعُهَا الْحُرُّ يُقِيمُ ذَلِكَ الْحَكَمُ مِنَ الأَمَةِ الْعَذْرَاءِ بِقَدْرِ قِيمَتِهَا، وَيُجْلَدُ وَلَيْسَ فِي الأَمَةِ الثَّيِّبِ فِي قَضَاءِ الأَئِمَّةِ غُرْمٌ وَلَكِنْ عَلَيْهِ الْحَدُّ.

6949. और लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया कि मुझसे नाफ़ेअ़ ने बयान किया, उन्हें स़फ़िया बिन्ते अबी उ़बैद ने ख़बर दी कि हुकूमत के ग़ुलामों में से एक ने हिस़्स़ा ख़ुमुस की एक बांदी से सुह़बत कर ली और उसके साथ ज़बरदस्ती करके उसकी बुकारत तोड़ दी तो ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने ग़ुलाम पर ह़द जारी कराई और उसे शहर बदर भी कर दिया लेकिन बांदी पर ह़द नहीं जारी की क्योंकि ग़ुलाम ने उसके साथ ज़बरदस्ती की थी। ज़ुह्‌री ने ऐसी कुँवारी बांदी के बारे में कहा जिसके साथ किसी आज़ाद ने हमबिस्तरी कर ली हो कि ह़ाकिम कुँवारी बांदी में उसकी वजह से उस शख़्स़ से इतने दाम भर ले जितने बुकारत जाते रहने की वजह से उसके दाम कम हो गये हैं और उसको कोड़े भी लगाए अगर आज़ाद मर्द ष़य्यिबा लौण्डी से ज़िना करे तब ख़रीदे। इमामों ने ये हुक्म नहीं दिया है कि उसको कुछ माली तावान देना पड़ेगा बल्कि सिर्फ़ ह़द लगाई जाएगी।

٦٩٥٠- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، حَدَّثَنَا أَبُو الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((هَاجَرَ إِبْرَاهِيمُ بِسَارَةَ دَخَلَ بِهَا قَرْيَةً فِيهَا مَلِكٌ مِنَ الْمُلُوكِ - أَوْ جَبَّارٌ مِنَ الْجَبَابِرَةِ - فَأَرْسَلَ إِلَيْهِ أَنْ أَرْسِلْ إِلَيَّ بِهَا، فَأَرْسَلَ بِهَا فَقَامَ إِلَيْهَا فَقَامَتْ تَوَضَّأُ

6950. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमसे शुऐ़ब ने बयान किया, उनसे अबुज़्ज़िनाद ने, उनसे अअ़रज ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया। इब्राहीम (अ़.) ने सारा (अ़.) को साथ लेकर हिजरत की तो एक ऐसी बस्ती में पहुँचे जिसमें बादशाहों में से एक बादशाह या ज़ालिमों में से एक ज़ालिम रहता था उस ज़ालिम ने इब्राहीम अ़. के पास ये हुक्म भेज कि सारा अ़. को उसके पास भेजें आपने सारा (अ़.) को भेजा दिया वो ज़ालिम उनके पास आया तो वो वुज़ू करके नमाज़ पढ़ रही थीं उन्होंने

وَتُصَلِّي فَقَالَتِ : اللَّهُمَّ إِنْ كُنْتُ آمَنْتُ بِكَ وَبِرَسُولِكَ، فَلاَ تُسَلِّطْ عَلَيَّ الكَافِرَ فَغُطَّ حَتَّى رَكَضَ بِرِجْلِهِ)).

[راجع: ٢٢١٧]

दुआ की कि ऐ अल्लाह! अगर मैं तुझ पर और तेरे रसूल पर ईमान रखती हूँ तो तू मुझ पर काफ़िर को न मुसल्लत़ कर फिर ऐसा हुआ कि वो कमबख़्त बादशाह अचानक ख़र्राटे लेने लगा और गिरकर पैर हिलाने लगा। (राजेअ : 2217)

तश्रीह़ : जैसे किसी का गला घोंटो तो वो ज़ोर ज़ोर से सांस की आवाज़ निकालने लगता है। ये अल्लाह तआला का अ़ज़ाब था जो उस ज़ालिम बादशाह पर नाज़िल हुआ मुनासबत बाब से ये है कि ऐसे इकराह के वक़्त जब ख़ुलासी की कोई सूरत नज़र न आए तो ऐसी ह़ालत में ऐसी ख़ल्वत क़ाबिले मलामत न होगी न ह़द वाजिब होगी यही बाब का तर्जुमा है बाद में उस बादशाह का दिल इतना मोम हो गया कि अपनी बेटी हाजरा (अ.) नामी को ह़ज़रत इब्राहीम (अ.) के ह़रम में दाख़िल कर दिया यही हाजरा हैं जिनके बत़्न से ह़ज़रत इस्माईल (अ.) पैदा हुए। ह़ज़रत इब्राहीम के ख़ानदान का क्या कहना है, ह़ज्ज और मक्का मुकर्रमा और का'बा मुक़द्दस ये सब आप ही के ख़ानदान की यादगारें हैं। (ﷺ) अ़लैहिम अ़ज्मईन।

٧- باب يَمِينِ الرَّجُلِ لِصَاحِبِهِ أَنَّهُ أَخُوهُ إِذَا خَافَ عَلَيْهِ القَتْلَ أَوْ نَحْوَهُ وَكَذَلِكَ كُلُّ مُكْرَهٍ يَخَافُ فَإِنَّهُ يَذُبُّ عَنْهُ الظَّالِمَ وَيُقَاتِلُ دُونَهُ وَلاَ يَخْذُلُهُ، فَإِنْ قَاتَلَ دُونَ الْمَظْلُومِ فَلاَ قَوَدَ عَلَيْهِ وَلاَ قِصَاصَ، وَإِنْ قِيلَ لَهُ لَتَشْرَبَنَّ الخَمْرَ، أَوْ لَتَأْكُلَنَّ المَيْتَةَ أَوْ لَتَبِيعَنَّ عَبْدَكَ، أَوْ تُقِرُّ بِدَيْنٍ أَوْ تَهَبُ هِبَةً أَوْ تَحُلُّ عُقْدَةً، أَوْ لَنَقْتُلَنَّ أَبَاكَ أَوْ أَخَاكَ فِي الإِسْلاَمِ وَسِعَهُ ذَلِكَ لِقَوْلِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((الْمُسْلِمُ أَخُو الْمُسْلِمِ)). وَقَالَ بَعْضُ النَّاسِ: لَوْ قِيلَ لَهُ لَتَشْرَبَنَّ الخَمْرَ أَوْ لَتَأْكُلَنَّ المَيْتَةَ أَوْ لَنَقْتُلَنَّ ابْنَكَ، أَوْ أَبَاكَ أَوْ ذَا رَحِمٍ مُحَرَّمٍ، لَمْ يَسَعْهُ لأَنَّ هَذَا لَيْسَ بِمُضْطَرٍّ ثُمَّ نَاقَضَ فَقَالَ: إِنْ قِيلَ لَهُ لَنَقْتُلَنَّ أَبَاكَ، أَوِ ابْنَكَ أَوْ لَتَبِيعَنَّ هَذَا العَبْدَ، أَوْ تُقِرُّ بِدَيْنٍ أَوْ تَهَبُ يَلْزَمُهُ فِي القِيَاسِ، وَلَكِنَّا نَسْتَحْسِنُ وَنَقُولُ : البَيْعُ وَالْهِبَةُ، وَكُلُّ

बाब 7 : अगर कोई शख़्स दूसरे मुसलमान को अपना भाई कहे और उस पर क़सम खाई इस डर से कि अगर क़सम न खाएगा तो कोई ज़ालिम उसको मार डालेगा या कोई और सज़ा देगा उसी त़रह़ हर शख़्स जिस पर ज़बरदस्ती की जाए और वो डरता हो तो हर मुसलमान पर लाज़िम है कि उसकी मदद करे ज़ालिम का ज़ुल्म उस पर से दूर करे उसके बचाने के लिये जंग करे उसको दुश्मन के हाथ में छोड़ न दे फिर अगर उसने मज़्लूम की ह़िमायत में जंग की और उसके बचाने की ग़र्ज़ से ज़ालिम को मार ही डाला तो उस पर क़िस़ास़ लाज़िम न होगा (न दियत लाज़िम होगी) और अगर किसी शख़्स से यूँ कहा जाए तू शराब पी ले या मुरदार खा ले या अपना गुलाम बेच दे या इतने क़र्ज़ का इक़रार करे (या उसकी दस्तावेज़ लिख दे) या फ़लाँ चीज़ हिबा कर दे या कोई अ़क़्द तोड़ डाल नहीं तो हम तेरी दीनी बाप या भाई को मार डालेंगे तो उसको ये काम करने दुरुस्त हो जाएँगे क्योंकि आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया मुसलमान दूसरे मुसलमान का भाई है और कुछ लोग कहते हैं कि अगर उससे यूँ कहा जाए तू शराब पी ले या मुरदार खा ले नहीं तो हम तेरे बेटे या बाप या मह़रम रिश्तेदार भाई चचा मामूँ वग़ैरह को मार डालेंगे तो उसको ये काम करने दुरुस्त न होंगे न वो मुज़्तर कहलाएगा फिर उन कुछ लोगों ने अपने क़ौल का दूसरे मसले में ख़िलाफ़ किया। कहते हैं कि किसी शख़्स से यूँ कहा जाए हम तेरे बाप या बेटे को मार डालते हैं नहीं तो तू अपना ये गुलाम बेच डाल या इतने क़र्ज़ का इक़रार कर ले या फ़लाँ

عُقْدَةٍ فِي ذَٰلِكَ بَاطِلٌ، فَرَّقُوا بَيْنَ كُلِّ ذِي رَحِمٍ مُحَرَّمٍ، وَغَيْرِهِ بِغَيْرِ كِتَابٍ وَلاَ سُنَّةٍ وَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ((قَالَ إِبْرَاهِيمُ لاِمْرَأَتِهِ هَذِهِ أُخْتِي)) وَذَلِكَ فِي اللهِ وَقَالَ النَّخَعِيُّ: إِذَا كَانَ الْمُسْتَحْلِفُ ظَالِمًا فَنِيَّةُ الْحَالِفِ وَإِنْ كَانَ مَظْلُومًا فَنِيَّةُ الْمُسْتَحْلِفِ.

चीज़ हिबा कर दे तो क़यास ये है कि ये सब मामले सहीह और नाफ़िज़ होंगे मगर हम उस मसले में इस्तिहसान पर अमल करते हैं और ये कहते हैं कि ऐसी हालत में बेअ और हिबा और हर एक अक़्द इक़रार वग़ैरह बातिल होगा उन कुछ लोगों ने नातेदार और ग़ैर नातेदार मे भी फ़र्क़ किया है जिस पर कुर्आन व हदीष़ से कोई दलील नहीं है और आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया हज़रत इब्राहीम (अ.) ने अपनी बीवी सारा को फ़र्माया ये मेरी बहन है अल्लाह की राह में दीन की रू से और इब्राहीम नख़ई ने कहा अगर क़सम लेने वाला ज़ालिम हो तो क़सम खाने वाले की निय्यत मुअतबर होगी और अगर क़सम लेने वाला मज़्लूम हो तो उसकी निय्यत मुअतबर होगी।

तश्रीह : फ़ुक़हा-ए-हनफ़िया ने एक इस्तिहसान निकाला है, क़यासे ख़फ़ी जिसकी शरीअत में कोई अस़्ल नहीं है वो जिस मसला में ऐसे ही क़वाइद और उसूले मौज़ूआ का ख़िलाफ़ करना चाहते हैं तो कहते हैं क्या करें क़यास तो यही चाहता था कि उन उसूल और क़वाइद के मुताबिक़ हुक्म दिया जाए मगर इस्तिहसान की रू से हमने इस मसले में ये हुक्म दिया है। हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने उन लोगों के बारे में बतलाना चाहा है कि आप ही तो एक क़ायदा मुक़र्रर करते हैं फिर जब चाहें आप ही इस्तिहसान का बहाना करके उस क़ायदे को तोड़ डालते हैं ये तो मनमानी कार्रवाई हुई न शरीअत की पैरवी हुई न क़ानून की और ऐनी ने जो इस्तिहसान के जवाज़ पर आयत, **फ़यत्तिबुऊन अहसनहू** और हदीष़ **मा रअहुल मुस्लिमून हसना** से दलील ली ये इस्तिदलाल फ़ासिद है क्योंकि आयत में **यस्तमिऊनल क़ौल** से कुर्आन मजीद मुराद है और **मा रअहुल मुस्लिमून हसना** ये हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) का क़ौल है मर्फ़ूअन षाबित नहीं है और हदीषे मौक़ूफ़ कोई हुज्जत नहीं है। अलावा इसके मुस्लिमून से इस क़ौल में जमीउल मुस्लिमीन मुराद हैं या सहाबा और ताबेईन वरना ऐनी के क़ौल पर ये लाज़िम आएगा कि तमाम अहले बिदआत और फ़ुस्साक़ और फ़ुज्जार जिस बात को अच्छा सहीह समझें वो अल्लाह के नज़दीक भी अच्छी हो उसके सिवा हम ये कहेंगे कि उसी क़ौल में ये भी है कि जिस चीज़ को मुसलमान बुरा समझें वो अल्लाह के नज़दीक भी बुरी है और अहले हदीष़ का गिरोह फ़ुक़हा के इस्तिहसान को बुरा समझता है तो वो अल्लाह के नज़दीक भी बुरा हुआ बल्कि वो इस्तिब्हान या इस्तिक़्बाह हुआ, **ला हौल व ला कुव्वत इल्ला बिल्लाह**।(वहीदी)

٦٩٥١- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ عُقَيْلٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ أَنَّ سَالِمًا أَخْبَرَهُ أَنَّ عَبْدَ اللهِ بْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَخْبَرَهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ ((الْمُسْلِمُ أَخُو الْمُسْلِمِ لاَ يَظْلِمُهُ وَلاَ يُسْلِمُهُ، وَمَنْ كَانَ فِي حَاجَةِ أَخِيهِ كَانَ اللهُ فِي حَاجَتِهِ)). [راجع: ٢٢٤٢]

6951. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे अ़क़ील ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उन्हें सालिम ने ख़बर दी और उन्हें हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने ख़बर दी कि रसूलुल्लाह (ﷺ)ने फ़र्माया मुसलमान मुसलमान का भाई है न उस पर ज़ुल्म करे और न उसे (किसी ज़ालिम के) सुपुर्द करे। और जो शख़्स अपने किसी भाई की ज़रूरत पूरी करने में लगा होगा अल्लाह तआला उसकी ज़रूरत और हाजत पूरी करेगा। (राजेअ : 2242)

इसी हदीष़ की रू से अहले अल्लाह ने दूसरे हाजतमंदों के लिये जहाँ तक उनसे हो सका, कोशिश की है। अल्लाह रब्बुल

आलमीन बुख़ारी शरीफ़ मुतालआ करने वाले हर भाई बहन को इस ह़दीष़ ह़दीष़ शरीफ़ पर अमल की तौफ़ीक़ बख़्शे, आमीन।

6952. हमसे मुहम्मद बिन अ़ब्दुर्रहीम ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सईद बिन सुलैमान वास्ती ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे हुशैम ने बयान किया, कहा हमको उ़बैदुल्लाह बिन अबीबक्र बिन अनस ने ख़बर दी और उनसे ह़ज़रत अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया अपने भाई की मदद करो। ख़्वाह वो ज़ालिम हो या मज़्लूम। एक सहाबी (रज़ि.) ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! जब वो मज़्लूम हो तो मैं उसकी मदद करूँगा लेकिन आप का क्या ख़्याल है जब वो ज़ालिम होगा फिर मैं उसकी मदद कैसे करूँ? आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि उस वक़्त तुम उसे ज़ुल्म से रोकना क्योंकि यही उसकी मदद है। (राजेअ़ : 2443)

٦٩٥٢- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحِيمِ، حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ سُلَيْمَانَ، حَدَّثَنَا هُشَيْمٌ، أَخْبَرَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ أَبِي بَكْرِ بْنِ أَنَسٍ، عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((انْصُرْ أَخَاكَ ظَالِمًا أَوْ مَظْلُومًا)) فَقَالَ رَجُلٌ: يَا رَسُولَ اللهِ أَنْصُرُهُ إِذَا كَانَ مَظْلُومًا أَفَرَأَيْتَ إِذَا كَانَ ظَالِمًا كَيْفَ أَنْصُرُهُ قَالَ: ((تَحْجِزُهُ أَوْ تَمْنَعُهُ مِنَ الظُّلْمِ فَإِنَّ ذَلِكَ نَصْرُهُ)). [راجع: ٢٤٤٣]

इन तमाम अह़ादीष़ में मुख़्तलिफ़ त़रीक़ों से इकराह का ज़िक्र पाया जाता है इसलिये ह़ज़रत मुज्तहिद आ़ज़म उनको यहाँ लाए दुनिया में मुसलमान के सामने कभी न कभी इकराह की सूरत पेश आ सकती है और आजकल तो क़दम क़दम पर हर मुसलमान के सामने ये सूरते ह़ाल दरपेश है लिहाज़ा सोच समझकर उस नाज़ुक सूरत से गुज़रना हर मुसलमान के लिये ज़रूरी है, **वमा तौफ़ीक़ी इल्ला बिल्लाह**। किताबुल इकराह ख़त्म हुई। अब किताबुल ह़ियल को ख़ूब ग़ौर से मुतालआ़ करें।

91. किताबुल ह़ियल

किताब शरई हीलों के बयान में

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

तश्रीह : ह़ीला कहते हैं एक छुपी हुई तदबीर से अपना मक़्सूद ह़ासिल करने को। अगर ह़ीला करके ह़क़ का इब्त़ाल या बात़िल का इष़्बात किया जाए तब तो ये ह़ीला ह़राम होगा। और अगर ह़क़ का इष़्बात और बात़िल का इब्त़ाल किया जाए तो वो वाजिब या मुस्तह़ब होगा और अगर किसी आफ़त से बचने के लिये किया जाए तो मुबाह़ होगा अगर तर्के मुस्तह़ब के लिये किया जाए तो मकरूह होगा। अब उ़लमा में इख़्तिलाफ़ है कि पहली क़सम का ह़ीला करना स़ह़ीह़ है या ग़ैर स़ह़ीह़ और नाफ़िज़ है या ग़ैर नाफ़िज़ और ऐसा ह़ीला करने से आदमी गुनहगार होगा या नहीं? जो लोग स़ह़ीह़ और जाइज़ कहते हैं वो ह़ज़रत अय्यूब (अ़लैहिस्सलाम) के क़िस़्स़े से हुज्जत लेते हैं कि उन्होंने सौ लकड़ियों के बदल सौ झाड़ू के तिनके

लेकर मार दिये और क़सम पूरी कर ली और उस ह़दीष़ से कि आँहज़रत (ﷺ) ने एक नातवाँ शख़्स़ के लिये जिसने ज़िनाकारी की थी ये हुक्म दिया कि खजूर की डाली लेकर जिसमें सौ शाख़ें हों एक ही बार उसको मार दो और इस ह़दीष़ से कि रद्दी खजूर के बदल बेचकर फिर रुपया के बदल उम्दह खजूर ले ले। जो लोग नाजाइज़ कहते हैं वो अस्ह़ाबे सब्त और यहूद की ह़दीष़ से कि चर्बी उन पर ह़राम कर दी गई थी तो बेचकर उसकी क़ीमत खाई और नजिश की ह़दीष़ **लअनल्लाहु मुहल्लिल वल्मुहलल लहू** से दलील लेते हैं और ह़नफ़िया के यहाँ बहुत से शरई ह़ीले मन्क़ूल हैं बल्कि ह़ज़रत इमाम अबू यूसुफ़ (रह़.) ने उन ह़ीलों में एक ख़ास़ किताब लिखी है। ताहम मुह़क़्क़िक़ीन इंसाफ़पसंद ह़नफ़ी उ़लमा-ए-किराम कहते हैं कि सिर्फ़ वही ह़ीले जाइज़ हैं जो अह़क़ाक़ ह़क़ के क़स्द से किये जाएँ। मौलाना वह़ीदुज़्ज़माँ मरहूम कहते हैं कि क़ौले मुह़क़्क़क़ इस बाब में ये है कि ज़रूरते शरई से या किसी मुसलमान की जान और इ़ज़्ज़त बचाने के लिये ह़ीले करना दुरुस्त है, लेकिन जहाँ ये बात न हो बल्कि स़िर्फ़ अपना फ़ायदा करना मंज़ूर हो और दूसरे मुसलमान भाई का उससे नुक़्स़ान होता हो तो ऐसा ह़ीला करना नाजाइज़ और ह़राम है। जैसे एक बख़ील की नक़ल है कि वो साल भर की ज़कात बहुत से रुपये अशरफ़िया निकालकर एक मिट्टी के घड़े में भरता और ऊपर से अनाज वग़ैरह डालकर एक फ़क़ीर को दे देता फिर वो घड़ा क़ीमत देकर उस फ़क़ीर से ख़रीद लेता वो ये समझता कि उसमें अनाज ही अनाज है और अनाज के नरख़ से थोड़ी सी ज़ाइद क़ीमत पर उन्हीं के हाथ बेच डालता ऐसा ह़ीला करना बिल इत्तिफ़ाक़ ह़राम और नाजाइज़ है। इस किताब में जाइज़ और नाजाइज़ ह़ीलों पर बहुत ही लत़ीफ़ इशारात हैं जिनको बनज़्रे ग़ौर व बनज़रे इंस़ाफ़ मुत़ालअ़ा करने की ज़रूरत है। **अल्लाहुम्म अरिनल ह़क़्क़ ह़क़्क़न, आमीन।**

बाब 1 : ह़ीले छोड़ने का बयान

١- باب فِي تَرْكِ الْحِيَلِ

क्योंकि ये ह़दीष़ है कि हर शख़्स़ को वही मिलेगा जिसकी वो निय्यत करे क़सम वग़ैरह में ये ह़दीष़ इ़बादात और मामलात सबको शामिल है।

وَإِنَّ لِكُلِّ امْرِىءٍ مَا نَوَى فِي الأَيْمَانِ وَغَيْرِهَا

6953. हमसे अबुन नोअ़मान ने बयान किया, कहा हमसे ह़म्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे यह़्या बिन सईद अंस़ारी ने, उनसे मुह़म्मद बिन इब्राहीम तैमी ने, उनसे अ़ल्क़मा बिन वक़्क़ास़ लैष़ी ने बयान किया कि मैंने ह़ज़रत उ़मर बिन ख़त़्त़ाब (रज़ि.) से ख़ुत़्बा में सुना उन्होंने कहा कि मैंने नबी करीम (ﷺ) को ये फ़र्माते हुए सुना था ऐ लोगों! आमाल का दारोमदार निय्यतों पर है और हर शख़्स़ को वही मिलेगा जिसकी वो निय्यत करेगा पस जिसकी हिजरत अल्लाह और उसके रसूल की त़रफ़ हो उसे हिजरत (का ष़वाब मिलेगा) और जिसकी हिजरत का मक़्स़द दुनिया होगी कि जिसे वो ह़ासिल कर ले या कोई औरत होगी जिससे वो शादी कर ले तो उसकी हिजरत उसी के लिये होगी जिसके लिये उसने हिजरत की है। (राजेअ़ : 1)

٦٩٥٣- حَدَّثَنَا أَبُو النُّعْمَانِ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ عَلْقَمَةَ بْنِ وَقَّاصٍ قَالَ: سَمِعْتُ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَخْطُبُ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ ((يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّمَا الأَعْمَالُ بِالنِّيَّةِ، وَإِنَّمَا لاِمْرِىءٍ مَا نَوَى، فَمَنْ كَانَتْ هِجْرَتُهُ إِلَى اللهِ وَرَسُولِهِ فَهِجْرَتُهُ إِلَى اللهِ وَرَسُولِهِ، وَمَنْ هَاجَرَ إِلَى دُنْيَا يُصِيبُهَا أَوِ امْرَأَةٍ يَتَزَوَّجُهَا فَهِجْرَتُهُ إِلَى مَا هَاجَرَ إِلَيْهِ)).

[راجع: ١]

इस ह़दीष़ से इमाम बुख़ारी (रह़.) ने ह़ीलों के अ़दमे जवाज़ पर दलील ली है क्योंकि ह़ीला करने वालों की निय्यत दूसरी होती है इसलिये ह़ीला उनके लिये कुछ मुफ़ीद नहीं हो सकता।

बाब 2 : नमाज़ के ख़त्म करने में हीले का बयान

٢- باب فِي الصَّلاَةِ

6954. मुझसे इस्हाक़ ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने बयान किया, उनसे मअ़मर ने, उनसे हम्माम ने, उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया अल्लाह तआ़ला तुममें से किसी ऐसे शख़्स की नमाज़ क़ुबूल नहीं करता जिसे वुज़ू की ज़रूरत हो यहाँ तक कि वो वुज़ू कर ले। (राजेअ़ : 135)

٦٩٥٤- حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، عَنْ مَعْمَرٍ، عَنْ هَمَّامٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((لاَ يَقْبَلُ اللهُ صَلاَةَ أَحَدِكُمْ إِذَا أَحْدَثَ حَتَّى يَتَوَضَّأَ)).

[راجع: ١٣٥]

तश्रीह : इस ह़दीष़ को लाकर इमाम बुख़ारी (रह़.) ने उन लोगों का रद्द किया जो कहते हैं अगर आख़िर क़अ़दा करके आदमी गूज़ लगाए तो नमाज़ पूरी हो जाएगी गोया ये नमाज़ पूरी करने का हीला है। अहले ह़दीष़ कहते हैं कि नमाज़ स़ह़ीह़ नहीं होगी क्योंकि सलाम फेरना भी नमाज़ का एक रुक्न है स़ह़ीह़ ह़दीष़ में आया है कि **तह़लीलुहा अत्तस्लीम** तो गोया ऐसा हुआ कि नमाज़ के अंदर ह़दष़ हुआ और ऐसी नमाज़ बाब की ह़दीष़ की रू से स़ह़ीह़ नहीं है।

बाब 3 : ज़कात में हीला करने का बयान आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया ज़कात के डर से जो माल इकट्ठा हो उसे जुदा जुदा न करें और जो जुदा जुदा हो उसे इकट्ठा न करें

٣- باب فِي الزَّكَاةِ وَأَنْ لاَ يُفَرَّقَ بَيْنَ مُجْتَمِعٍ، وَلاَ يُجْمَعَ بَيْنَ مُتَفَرِّقٍ خَشْيَةَ الصَّدَقَةِ

6955. हमसे मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह अंस़ारी ने बयान किया, कहा हमसे हमारे वालिद ने बयान किया, कहा हमसे ष़ुमामा बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अनस ने बयान किया, और उनसे ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने उन्हें (ज़कात) का हुक्मनामा लिखकर भेजा जो रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्ज़ क़रार दिया था कि मुतफ़र्रिक़ स़दक़ा को एक जगह जमा न किया जाए और न मुज्तमअ़ स़दक़ा को मुतफ़र्रिक़ किया जाए ज़कात के डर से। (राजेअ़ : 1448)

٦٩٥٥- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ الأَنْصَارِيُّ، حَدَّثَنَا أَبِي حَدَّثَنَا ثُمَامَةُ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَنَسٍ أَنَّ أَنَسًا حَدَّثَهُ أَنَّ أَبَا بَكْرٍ كَتَبَ لَهُ فَرِيضَةَ الصَّدَقَةِ الَّتِي فَرَضَ رَسُولُ اللهِ ﷺ وَلاَ يُجْمَعُ بَيْنَ مُتَفَرِّقٍ، وَلاَ يُفَرَّقُ بَيْنَ مُجْتَمِعٍ خَشْيَةَ الصَّدَقَةِ.

[راجع: ١٤٤٨]

उसमें ये भी था कि जो माल जुदा जुदा दो मालिकों का हो वो इकट्ठा न करें और जो माल इकट्ठा हो (एक ही मालिक का) वो जुदा जुदा न किया जाए।

तश्रीह : कुछ रिवायात में ग़नम और इबिल के लफ़्ज़ भी आते हैं या'नी बकरी या ऊँट में से ज़कात लेते वक़्त उनकी पुरानी ह़ालत को बाक़ी रखा जाए अस़ल में जिस हिसाब से ज़कात ली जाती है उसके पेशेनज़र कुछ औक़ात अगर जानवर मुख़्तलिफ़ लोगों के हैं और अलग अलग रहते हैं तो कुछ सूरतों में ज़कात उन पर ज़्यादा हो सकती है और उन्हें इकट्ठा करने से ज़कात में कमी हो सकती है। उसके बरख़िलाफ़ यक्जा होने मे ज़कात में इज़ाफ़ा हो जाता है और मुतफ़र्रिक़ करने में कमी हो सकती है। इस ह़दीष़ में उस कमी और ज़्यादती की बिना पर रोका गया है।

6956. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे

٦٩٥٦- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ

इस्माईल बिन जा'फ़र ने बयान किया, उनसे अबू सुहैल नाफ़ेअ ने, उनसे उनके वालिद मालिक बिन अबी आमिर ने, और उनसे तलहा बिन उबैदुल्लाह (रज़ि.) ने कि एक देहाती (तमाम बिन षअल्बा) रसूले करीम (ﷺ) की ख़िदमत में इस हाल में हाज़िर हुआ कि उसके सर के बाल परेशान थे और अर्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! मुझे बताइये कि अल्लाह तआला ने मुझ पर कितनी नमाज़ें फ़र्ज़ की हैं? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि पाँच वक़्त की नमाज़ें। सिवा उन नमाज़ों के जो तुम नफ़्ली रखो। उसने पूछा मुझे बताइये कि अल्लाह तआला ने ज़कात कितनी फ़र्ज़ की है? बयान किया कि उस पर आँहज़रत (ﷺ) ने ज़कात के मसाइल बयान किये। फिर उस देहाती ने कहा उस ज़ात की क़सम जिसने आपको ये इज़्ज़त बख़्शी है जो अल्लाह तआला ने मुझ पर फ़र्ज़ किया है उसमें न मैं किसी क़िस्म की ज़्यादती करूँगा और न कमी। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अगर उसने सहीह कहा है तो ये कामयाब हुआ या (आपने ये फ़र्माया कि) अगर उसने सहीह कहा है तो जन्नत में जाएगा और कुछ लोगों ने कहा कि एक सौ बीस ऊँटों में दो हिस्से तीन तीन बरस की दो ऊँटनियाँ जो चौथे बरस में लगी हों ज़कात में लाज़िम आती हैं पस मगर किसी ने उन ऊँटों को अमदन तल्फ़ कर डाला (मषलन ज़िब्ह कर दिया) या और कोई हीला किया तो उसके ऊपर से ज़कात साक़ित होगी। (राजेअ: 46)

بْنُ جَعْفَرٍ، عَنْ أَبِي سُهَيْلٍ، عَنْ أَبِيهِ عَنْ طَلْحَةَ بْنِ عُبَيْدِ اللهِ أَنَّ أَعْرَابِيًّا جَاءَ إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ ثَائِرَ الرَّأْسِ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ أَخْبِرْنِي مَاذَا فَرَضَ اللهُ عَلَيَّ مِنَ الصَّلاَةِ. فَقَالَ: ((الصَّلَوَاتِ الْخَمْسَ إِلاَّ أَنْ تَطَوَّعَ شَيْئًا)) فَقَالَ: أَخْبِرْنِي بِمَا فَرَضَ اللهُ عَلَيَّ مِنَ الصِّيَامِ؟ فَقَالَ: ((شَهْرَ رَمَضَانَ إِلاَّ أَنْ تَطَوَّعَ شَيْئًا)) قَالَ: أَخْبِرْنِي بِمَا فَرَضَ اللهُ عَلَيَّ مِنَ الزَّكَاةِ؟ قَالَ: فَأَخْبَرَهُ رَسُولُ اللهِ ﷺ شَرَائِعَ الإِسْلاَمِ قَالَ وَالَّذِي أَكْرَمَكَ لاَ أَتَطَوَّعُ شَيْئًا وَلاَ أَنْقُصُ مِمَّا فَرَضَ اللهُ عَلَيَّ شَيْئًا فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((أَفْلَحَ إِنْ صَدَقَ - أَوْ دَخَلَ الْجَنَّةَ - إِنْ صَدَقَ)). وَقَالَ بَعْضُ النَّاسِ فِي عِشْرِينَ وَمِائَةِ بَعِيرٍ حِقَّتَانِ فَإِنْ أَهْلَكَهَا مُتَعَمِّدًا أَوْ وَهَبَهَا أَوِ احْتَالَ فِيهَا فِرَارًا مِنَ الزَّكَاةِ، فَلاَ شَيْءَ عَلَيْهِ.

[راجع: ٤٦]

तश्रीह : अहले हदीष कहते हैं कि जो कोई ज़कात से बचने के लिये इस क़िस्म के हीले करेगा तो ज़कात उस पर से साक़ित न होगी। हनफ़िया ने एक और अजीब हीला लिखा है या'नी अगर किसी औरत को उसका शौहर न छोड़ता हो और वो उसके हाथ से तंग हो तो शौहर के बेटे से अगर ज़िना कराये तो शौहर पर हराम हो जाएगी। इमाम शाफ़िई (रहि.) का मुनाज़िरा इस मसले में इमाम मुहम्मद से बहुत मशहूर है। अहले हदीष के नज़दीक ये हीला चल नहीं सकता क्योंकि उनके नज़दीक मुसाहिरत का रिश्ता ज़िना से क़ायम नहीं हो सकता।

6957. मुझसे इस्हाक़ ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुर्रज़ाक़ ने बयान किया, कहा हमसे मअमर ने बयान किया, उनसे हम्माम ने और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया क़यामत के दिन तुममें से किसी का ख़ज़ाना चितकबरे अज़दहा बनकर आएगा

٦٩٥٧- حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، حَدَّثَنَا مَعْمَرٌ، عَنْ هَمَّامٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((يَكُونُ كَنْزُ أَحَدِكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ

शुजाअन अक्रअ़ ...

شُجَاعًا أَقْرَعَ، يَفِرُّ مِنْهُ صَاحِبُهُ فَيَطْلُبُهُ، وَيَقُولُ: أَنَا كَنْزُكَ قَالَ: وَاللهِ لَنْ يَزَالَ يَطْلُبُهُ حَتَّى يَبْسُطَ يَدَهُ فَيُلْقِمَهَا فَاهُ)).

[راجع: ١٤٠٣]

उसका मालिक उससे भागेगा लेकिन वो उसे तलाश कर रहा होगा और कहेगा कि मैं तुम्हारा ख़ज़ाना हूँ। फ़र्माया, वल्लाह! वो मुसलसल तलाश करता रहेगा यहाँ तक कि वो शख़्स अपना हाथ फैला देगा और अज़्दहा उसे लुक़्मा बनाएगा। (राजेअ: 1403)

٦٩٥٨- وَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِذَا مَا رَبُّ النَّعَمِ لَمْ يُعْطِ حَقَّهَا تُسَلَّطُ عَلَيْهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ تَخْبِطُ وَجْهَهُ بِأَخْفَافِهَا)). وَقَالَ بَعْضُ النَّاسِ فِي رَجُلٍ لَهُ إِبِلٌ فَخَافَ أَنْ تَجِبَ عَلَيْهِ الصَّدَقَةُ فَبَاعَهَا بِإِبِلٍ مِثْلِهَا، أَوْ بِغَنَمٍ أَوْ بِبَقَرٍ أَوْ بِدَرَاهِمَ فِرَارًا مِنَ الصَّدَقَةِ بِيَوْمٍ احْتِيَالاً، فَلاَ بَأْسَ عَلَيْهِ وَهُوَ يَقُولُ: إِنْ زَكَّى إِبِلَهُ قَبْلَ أَنْ يَحُولَ الْحَوْلُ بِيَوْمٍ أَوْ بِسَنَةٍ جَازَتْ عَنْهُ. [راجع: ١٤٠٢]

6958. और रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, जानवरों के मालिक जिन्होंने उनका शरई ह़क़ अदा नहीं किया होगा क़यामत के दिन उन पर वो जानवर ग़ालिब कर दिये जाएँगे और वो अपनी खुरों से उसके चेहरे को नोचेंगे और कुछ लोगों ने ये कह दिया कि अगर एक शख़्स के पास ऊँट हैं और उसे ख़तरा है कि ज़कात उस पर वाजिब हो जाएगी और इसलिये वो किसी दिन ज़कात से बचने के लिये ह़ीले के तौर पर उसी जैसे ऊँट या बकरी या गाय या दिरहम के बदले में बेच दे तो उस पर कोई ज़कात नहीं और फिर उसका ये भी कहना है कि अगर वो अपने ऊँट की ज़कात साल पूरे होने से एक दिन या एक साल पहले दे दे तो ज़कात अदा हो जाती है। (राजेअ: 1402)

तश्रीह: इस ह़दीष़ को इमाम बुख़ारी (रह.) इसलिये लाए कि ज़कात न देने वाले की सज़ा इसमें मज़्कूर है और ये आम है इसको भी शामिल है जो कोई ह़ीले निकालकर ज़कात अपने ऊपर से साक़ित कर दे।

ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) का मत़लब कुछ लोगों का तनाक़ुज़ ष़ाबित करना है कि आप ही तो ज़कात का देना साल गुज़रने से पहले दुरुस्त जानते हैं उससे ये निकलता है कि ज़कात का वजूब साल गुज़रने से पहले ही हो जाता है गो वजूब अदा साल गुज़रने पर होता है जब साल से पहले ही ज़कात का वजूब हो गया तो अब माल का बदल डालना उसके लिये क्यूँकर ज़कात को साक़ित कर देगा। अहले ह़दीष़ का ये क़ौल है कि उन सब सूरतों में उसके ज़िम्मे से ज़कात साक़ित न होगी और ऐसे ह़ीले बहाने करने को अहले ह़दीष़ क़त्अन ह़राम कहते हैं।

٦٩٥٩- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا لَيْثٌ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ عُتْبَةَ بْنِ مَسْعُودٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: اسْتَفْتَى سَعْدُ بْنُ عُبَادَةَ الأَنْصَارِيُّ رَسُولَ اللهِ ﷺ فِي نَذْرٍ كَانَ عَلَى أُمِّهِ تُوُفِّيَتْ قَبْلَ أَنْ تَقْضِيَهُ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((اقْضِهِ عَنْهَا)). وَقَالَ بَعْضُ النَّاسِ، إِذَا بَلَغَتِ الإِبِلُ عِشْرِينَ فَفِيهَا أَرْبَعُ شِيَاهٍ، فَإِنْ

6959. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे उ़बैदुल्लाह बिन उ़त्बा ने, और उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि सअ़द बिन उ़बादह अंसारी (रज़ि.) ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से एक नज़्र के बारे में सवाल किया जो उनकी वालिदा पर थी और उनकी वफ़ात नज़्र पूरी करने से पहले ही हो गई थी आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि तू उनकी तरफ़ से पूरी कर। उसके बावजूद कुछ लोग ये कहते हैं कि जब ऊँट की ता'दाद बीस हो जाए तो उसमें चार बकरियाँ लाज़िम हैं। पस अगर साल पूरा होने से पहले ऊँट को हिबा कर दे या उसे

وَهَبَهَا قَبْلَ الْحَوْلِ، أَوْ بَاعَهَا فِرَارًا وَاحْتِيَالاً لإِسْقَاطِ الزَّكَاةِ فَلاَ شَيْءَ عَلَيْهِ، وَكَذَلِكَ إِنْ أَتْلَفَهَا فَمَاتَ فَلاَ شَيْءَ فِي مَالِهِ. [راجع: ٢٧٦١]

बेच दे। ज़कात से बचने या ह़ीला के त़ौर पर ताकि ज़कात उस पर ख़त्म हो जाए तो उस पर कोई चीज़ वाजिब नहीं होगी। यही ह़ाल उस सूरत में है अगर उसने ज़ाये कर दिया और फिर मर गया तो उसके माल पर कुछ वाजिब नहीं होगा। (राजेअ : 2761)

इस ह़दीष़ से इमाम बुख़ारी (रह़.) ने ये निकाला कि जब मर जाने से सुन्नत साक़ित न हुई और वली को उसके अदा करने का हुक्म दिया गया तो ज़कात बत़रीक़े औला मरने से या ह़ीला करने से साक़ित न होगी और यही बात दुरुस्त है। ह़नफ़िया का कहना ये है कि स़ाह़िबे ज़कात के मरने से वारिष़ों पर लाज़िम नहीं कि उसके ज़िम्मे जो ज़कात वाजिब थी वो उसके कुल में से अदा करें। ह़नफ़िया का ये मसला स़रीह़ ह़ज़रत सअ़द की ह़दीष़ के ख़िलाफ़ है क्योंकि ह़ज़रत सअ़द की माँ मर गई थीं मगर जो उनके ज़िम्मे नज़्र रह गई थीं आँह़ज़रत (ﷺ) ने ह़ज़रत सअ़द (रज़ि.) को उसके अदा करने का हुक्म फ़र्माया। यही हुक्म ज़कात में भी होना चाहिये।

٤- باب

बाब 4

٦٩٦٠- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، عَنْ عُبَيْدِ اللهِ، قَالَ حَدَّثَنِي نَافِعٌ، عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ نَهَى عَنِ الشِّغَارِ قُلْتُ لِنَافِعٍ: مَا الشِّغَارُ؟ قَالَ : يَنْكِحُ ابْنَةَ الرَّجُلِ وَيُنْكِحُهُ ابْنَتَهُ بِغَيْرِ صَدَاقٍ، وَيَنْكِحُ أُخْتَ الرَّجُلِ وَيُنْكِحُهُ أُخْتَهُ بِغَيْرِ صَدَاقٍ. وَقَالَ بَعْضُ النَّاسِ: إِنِ احْتَالَ حَتَّى تَزَوَّجَ عَلَى الشِّغَارِ فَهُوَ جَائِزٌ، وَالشَّرْطُ بَاطِلٌ. وَقَالَ فِي الْمُتْعَةِ : النِّكَاحُ فَاسِدٌ وَالشَّرْطُ بَاطِلٌ، وقَالَ بَعْضُهُمْ: الْمُتْعَةُ وَالشِّغَارُ جَائِزٌ وَالشَّرْطُ : بَاطِلٌ. [راجع: ٥١١٢]

6960. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे यह़्या बिन सईद क़त्त़ान ने बयान किया, उनसे उ़बैदुल्लाह ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे नाफ़ेअ़ ने बयान किया, और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने शिग़ार से मना फ़र्माया। मैंने नाफ़ेअ़ से पूछा, शिग़ार क्या है? उन्होंने कहा ये कि कोई शख़्स़ बग़ैर महर किसी की लड़की से निकाह़ करता है या उससे बग़ैर महर के अपनी लड़की का निकाह़ करता है पस उसके सिवा कोई महर मुक़र्रर न हो और कुछ लोगों ने कहा अगर किसी ने ह़ीला करके निकाह़े शिग़ार कर लिया तो निकाह़ का अ़क़्द दुरुस्त होगा और शर्त़ लग़्व होगी (और हर एक को महर मिष़्ले औ़रत का अदा करना होगा) और हाँ कुछ लोगों ने मुत्अ़ा में कहा है कि वहाँ निकाह़ भी फ़ासिद है और शर्त़ भी बात़िल है और कुछ ह़नफ़िया ये कहते हैं कि मुत्अ़ा और शिग़ार दोनों जाइज़ होंगे। और शर्त़ बात़िल होगी। (राजेअ़ : 5112)

٦٩٦١- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا يَحْيَى، عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ، حَدَّثَنَا الزُّهْرِيُّ عَنِ الْحَسَنِ وَعَبْدِ اللهِ ابْنَيْ مُحَمَّدِ بْنِ عَلِيٍّ، عَنْ أَبِيهِمَا أَنَّ عَلِيًّا رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قِيلَ لَهُ إِنَّ ابْنَ عَبَّاسٍ لاَ يَرَى بِمُتْعَةِ النِّسَاءِ

6961. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे यह़्या क़त्त़ान ने बयान किया, उनसे उ़बैदुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया, उन्होंने कहा कि हमसे ज़ुह्री ने बयान किया, उनसे ह़सन और अ़ब्दुल्लाह बिन मुह़म्मद बिन अ़ली ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने कि ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) से कहा गया कि ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) औ़रतों के मुत्अ़ा में कोई ह़र्ज नहीं समझते उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह

بَأْسًا فَقَالَ : إِنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ نَهَى عَنْهَا يَوْمَ خَيْبَرَ وَعَنْ لُحُومِ الْحُمُرِ الإِنْسِيَّةِ. وَقَالَ بَعْضُ النَّاسِ : إِنِ احْتَالَ حَتَّى تَمَتَّعَ فَالنِّكَاحُ فَاسِدٌ وَقَالَ بَعْضُهُمْ: النِّكَاحُ جَائِزٌ وَالشَّرْطُ بَاطِلٌ. [راجع: ٤٢١٦]

(ﷺ) ने ख़ैबर की लड़ाई के मौक़े पर मुत्आ से और पालतू गधों के गोश्त से मना कर दिया था और कुछ लोग कहते हैं कि अगर किसी ने हीले से मुत्आ कर लिया तो निकाह फ़ासिद है और कुछ लोगों ने कहा कि निकाह जाइज़ हो जाएगा और मीआद की शर्त बातिल हो जाएगी। (राजेअ : 4216)

तश्रीह : इस हदीष़ को हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) इसलिये लाए कि मुत्आ के बाब में जो मुमानअत आई है वो उस लफ़्ज़ से है कि **नहा अनिल मुत्अति** और शिग़ार की भी मुमानअत उसी लफ़्ज़ से है फिर एक अक़्द को सहीह कहना और दूसरे को बातिल कहना जैसा कि कुछ लोग ने इख़्तियार किया है क्यूँकर सहीह हो सकता है? हाफ़िज़ ने कहा कि दोनों में हनफ़िया ये फ़र्क़ करते हैं कि शिग़ार अपनी अस्ल से मशरूअ है लेकिन अपनी सिफ़त से फ़ासिद है और मुत्आ अपनी अस्ल ही से ग़ैर मशरूअ है। शिग़ार ये है कि एक आदमी दूसरे की बेटी से इस शर्त पर निकाह करे कि अपनी बेटी उसको ब्याह देगा। बस यही दोनों का महर है और कोई महर न हो। हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) कहते हैं कि किसी ने हीले से निकाह शिग़ार कर लिया तो निकाह का अक़्द दुरुस्त हो जाएगा और शर्त लग़्व होगी हर एक को महर मिष्ल औरत का अदा करना होगा और उन ही इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) ने मुत्आ में ये कहा है कि वही निकाह भी फ़ासिद है और शर्त भी बातिल है वहाँ यूँ नहीं कहा कि निकाह सहीह है और शर्त बातिल और महर मिष्ल लाज़िम होगा बज़ाहिर ये तरजीह बिला मरज्जह है क्योंकि मुत्आ और शिग़ार दोनों की मुमानअत यक्साँ हदीष़ से षाबित है बल्कि मुत्आ तो पहले कुछ हालात की बिना पर हलाल हुआ मगर शिग़ार कभी हलाल नहीं हुआ अब मुत्आ क़यामत तक के लिये क़त्अन हराम है। शिग़ार ये है कि बिला महर आपस में औरतों का तबादला करना, किसी को बिला महर बेटी देना और उसकी बेटी भी बिला महर लेना और इस तबादले ही को महर जानना कि अगर वो उसकी बेटी को छोड़ेगा तो वो दूसरा भी छोड़ देगा उसको शुब्हा का निकाह कहते हैं, ये क़त्अन हराम है।

٥- باب مَا يُكْرَهُ مِنَ الاحْتِيَالِ فِي الْبُيُوعِ، وَلاَ يُمْنَعُ فَضْلُ الْمَاءِ لِيُمْنَعَ بِهِ فَضْلُ الْكَلإِ

बाब 5 : ख़रीद व फ़रोख़्त में हीला और फ़रेब करना मना है और किसी को नहीं चाहिये कि ज़रूरत से ज़्यादा जो पानी हो उसको रोक रखे ताकि उसकी वजह से घास भी रुकी रहे।

٦٩٦٢- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ حَدَّثَنَا مَالِكٌ، عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((لاَ يُمْنَعُ فَضْلُ الْمَاءِ لِيُمْنَعَ بِهِ فَضْلُ الْكَلإِ)). [راجع: ٢٣٥٣]

6962. हमसे इस्माईल ने बयान किया, कि हमसे इमाम मालिक ने, उनसे अबुज़्ज़िनाद ने, उनसे अअरज ने और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया बचा हुआ बे ज़रूरत पानी इसलिये न रोका जाए कि उसकी वजह से बची हुई घास भी बची रहे (इसमें भी हीला साज़ी से रोका गया है)। (राजेअ : 2353)

٦- باب مَا يُكْرَهُ مِنَ التَّنَاجُشِ

बाब 6 : नजिश की कराहियत (या'नी किसी चीज़ का ख़रीदना मंज़ूर न हो मगर दूसरे ख़रीददार को बहकाने के लिये उसकी क़ीमत बढ़ाना

٦٩٦٣- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، عَنْ

6963. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे

مَالِكٌ، عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ نَهَى عَنِ النَّجْشِ.[راجع: ٢١٤٢]

इमाम मालिक ने उनसे नाफ़ेअ ने और उनसे इब्ने उमर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने बेअ़े नजिश से मना फ़र्माया। (राजेअ : 2142)

या'नी महज़ झूठ बोलकर भाव बढ़ाना और ग्राहकों को धोखा देना जैसा कि नीलाम करने वाले ऐजेण्ट बना लेते हैं और वो लोगों को फ़रेब देने के लिये भाव बढ़ाते रहते हैं। ये धोखादेही बहुत बुरी है। कितने ग़रीब उस धोखे में आकर लुट जाते हैं। लिहाज़ा ऐसी हीलासाज़ी से बहुत ही ज़्यादा बचने की कोशिश करना चाहिये।

٧- باب مَا يُنْهَى مِنَ الْخِدَاعِ فِي الْبُيُوعِ

बाब 7 : ख़रीद व फ़रोख़्त में धोखा देने की मुमानअ़त

وَقَالَ أَيُّوبُ: يُخَادِعُونَ اللهَ كَمَا يُخَادِعُونَ آدَمِيًّا، لَوْ أَتَوُا الأَمْرَ عِيَانًا كَانَ أَهْوَنَ عَلَيَّ.

और अय्यूब ने कहा, वो कमबख़्त अल्लाह को इस तरह धोखा देते हैं जिस तरह किसी आदमी को (ख़रीद व फ़रोख़्त में) धोखा देते हैं अगर वो साफ़ साफ़ खोलकर कह दें कि कि हम इतना नफ़ा लेंगे तो ये तेरे नज़दीक आसान है।

٦٩٦٤- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، حَدَّثَنَا مَالِكٌ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ دِينَارٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَجُلاً ذَكَرَ لِلنَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ يُخْدَعُ فِي الْبُيُوعِ فَقَالَ : إِذَا بَايَعْتَ فَقُلْ: لاَ خِلاَبَةَ. [راجع: ٢١١٧]

6964. हमसे इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन दीनार ने और उनसे हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने कि एक सहाबी ने नबी करीम (ﷺ) से अ़र्ज़ किया कि वो ख़रीद व फ़रोख़्त में धोखा खा जाते हैं। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि जब तुम कुछ ख़रीदा करो तो कह दिया करो कि इसमें कोई धोखा न होना चाहिये। (राजेअ : 2117)

अगर धोखा निकला तो वो माल सब का सब वापस करने का मिजाज़ है।

٨- باب مَا يُنْهَى مِنَ الاحْتِيَالِ لِلْوَلِيِّ فِي الْيَتِيمَةِ الْمَرْغُوبَةِ وَأَنْ لاَ يُكَمِّلَ صَدَاقَهَا

बाब 8 : यतीम लड़की से जो मरग़ूबा हो उसके वली फ़रेब देकर या'नी महरे मिस्ल से कम महर मुक़र्रर करके निकाह करे तो ये मना है

٦٩٦٥- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ، حَدَّثَنَا شُعَيْبٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ : كَانَ عُرْوَةُ يُحَدِّثُ أَنَّهُ سَأَلَ عَائِشَةَ ﴿وَإِنْ خِفْتُمْ أَنْ لاَ تُقْسِطُوا فِي الْيَتَامَى فَانْكِحُوا مَا طَابَ لَكُمْ مِنَ النِّسَاءِ﴾ [النساء : ٣] قَالَتْ: هِيَ الْيَتِيمَةُ فِي حَجْرِ وَلِيِّهَا. فَيَرْغَبُ فِي مَالِهَا وَجَمَالِهَا فَيُرِيدُ أَنْ يَتَزَوَّجَهَا بِأَدْنَى

6965. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उनसे ज़ुहरी ने कि उर्वा उनसे बयान करते थे कि हज़रत आइशा (रज़ि.) ने आयत, और अगर तुम्हें डर हो कि तुम यतीमों के बारे में इंसाफ़ नहीं कर सकोगे तो फिर दूसरी औरतों से निकाह करो जो तुम्हें पसंद हों, आपने कहा कि इस आयत में ऐसी यतीम लड़की का ज़िक्र है जो अपने वली की परवरिश में हो और वली लड़की के माल और उसके हुस्न से रग़बत रखता हो और चाहता हो कि औरतों (के महर वग़ैरह के बारे में) जो सबसे मा'मूली तरीक़ा है उसके मुताबिक़ उससे

مِنْ سُنَّةِ نِسَائِهَا فَنُهُوا عَنْ نِكَاحِهِنَّ إِلاَّ أَنْ يُقْسِطُوا لَهُنَّ فِي إِكْمَالِ الصَّدَاقِ، ثُمَّ اسْتَفْتَى النَّاسُ رَسُولَ اللهِ ﷺ بَعْدُ فَأَنْزَلَ اللهُ: ﴿وَيَسْتَفْتُونَكَ فِي النِّسَاءِ﴾ [النساء: ١٢٧] فَذَكَرَ الْحَدِيثَ.

[راجع: ٢٤٩٤]

निकाह करे तो ऐसे वलियों को उन लड़कियों के निकाह से मना किया गया है। सिवा उस सूरत के कि वली महर को पूरा करने में इंसाफ़ से काम ले। फिर लोगों ने आँहज़रत (ﷺ) से उसके बाद मसला पूछा तो अल्लाह तआला ने ये आयत नाज़िल की व यस्तफ़्तूनक फ़िन्निसाइ और लोग आपसे औरतों के बारे में मसला पूछते हैं और उस वाक़िया का ज़िक्र किया। (राजेअ: 2494)

तश्रीह : आदमियों को अपने ज़ेरे तर्बियत यतीम बच्चियों से ज़ालिमाना तरीक़ पर निकाह कर लेने से मना किया गया। ऐसे में अगर वो निकाह करेगा तो अहले ज़ाहिर के नज़दीक वो निकाह सहीह न होगा और जुम्हूर के नज़दीक सहीह हो जाएगा मगर उसको महरे मिस्ल देना पड़ेगा।

٩- باب إِذَا غَصَبَ جَارِيَةً فَزَعَمَ أَنَّهَا مَاتَتْ

فَقُضِيَ بِقِيمَةِ الْجَارِيَةِ الْمَيِّتَةِ ثُمَّ وَجَدَهَا صَاحِبُهَا فَهِيَ لَهُ وَيَرُدُّ الْقِيمَةَ وَلاَ تَكُونُ الْقِيمَةُ ثَمَنًا.

وَقَالَ بَعْضُ النَّاسِ: الْجَارِيَةُ لِلْغَاصِبِ لأَخْذِهِ الْقِيمَةَ وَفِي هَذَا احْتِيَالٌ لِمَنِ اشْتَهَى جَارِيَةَ رَجُلٍ لاَ يَبِيعُهَا فَغَصَبَهَا وَاعْتَلَّ بِأَنَّهَا مَاتَتْ حَتَّى يَأْخُذَ رَبُّهَا قِيمَتَهَا فَيَطِيبُ لِلْغَاصِبِ جَارِيَةُ غَيْرِهِ قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((أَمْوَالُكُمْ عَلَيْكُمْ حَرَامٌ وَلِكُلِّ غَادِرٍ لِوَاءٌ يَوْمَ الْقِيَامَةِ)).

बाब 9 : बाब जब किसी शख़्स ने दूसरे की लौण्डी ज़बरदस्ती छीन ली अब लौण्डी के मालिक ने उस पर दा'वा किया तो छीनने वाले ने ये कहा कि वो लौण्डी मर गई। हाकिम ने उससे क़ीमत दिला दी अब उसके बाद मालिक को वो लौण्डी ज़िन्दा मिल गई तो वो अपनी लौण्डी ले लेगा और छीनने वाले ने जो क़ीमत दी थी वो उसको वापस कर देगा ये न होगा कि जो क़ीमत छीनने वाले ने दी वो लौण्डी का मोल हो जाए, वो लौण्डी छीनने वाले की मिल्क हो जाए।

कुछ लोगों ने कहा कि वो लौण्डी छीनने वाले की मिल्क हो जाएगी क्योंकि मालिक उस लौण्डी का मोल उससे ले चुका है ये फ़त्वा दिया है गोया जिस लौण्डी की आदमी को ख़्वाहिश हो उसके हासिल कर लेने की एक तदबीर है कि वो जिसकी चाहेगा उसकी लौण्डी जबरन छीन लेगा जब मालिक दा'वा करेगा तो कह देगा कि वो मर गई और क़ीमत मालिक के पल्ले मे डाल देगा उसके बाद बेफ़िक्री से पराई लौण्डी से मज़े उड़ाता रहेगा क्योंकि उसके ख़याले बातिल में वो लौण्डी उसके लिये हलाल हो गई हालाँकि आँहज़रत (ﷺ) फ़र्माते हैं एक-दूसरे के माल तुम पर हराम हैं और फ़र्माते हैं क़यामत के दिन हर दग़ाबाज़ के लिये एक झण्डा खड़ा किया जाएगा (ताकि सबको उसकी दग़ाबाज़ी का हाल मा'लूम हो जाए)।

٦٩٦٦- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ دِينَارٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ

6966. हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह बिन दीनार ने, और उनसे

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने बयान किया, कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया हर धोखा देने वाले के लिये क़यामत के दिन एक झण्डा होगा जिसके ज़रिये वो पहचाना जाएगा। (राजेअ: 3188)

عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ ((لِكُلِّ غَادِرٍ لِوَاءٌ يَوْمَ الْقِيَامَةِ يُعْرَفُ بِهِ)). [راجع: ٣١٨٨]

तश्रीह: जिससे लोग पहचान लेंगे कि ये दुनिया में दग़ाबाज़ी किया करता था (ख़ुद आगे फ़र्माते हैं कि मैं तुममें का एक बशर हूँ तुममें कोई ज़ुबान दराज़ होता है मैं अगर उसके बयान पर उसके भाई का हक़ उसको दिला दूँ तो दोज़ख़ का एक टुकड़ा दिलाता हूँ जब आपके फ़ैसले से दूसरे का माल हलाल न हो तो किसी क़ाज़ी का फ़ैसला मौजिबे हिल्लत क्यूँकर हो सकता है।

बाब 10

١٠- باب

6967. हमसे मुहम्मद बिन कष़ीर ने बयान किया, उनसे सुफ़यान ने, उनसे हिशाम ने, उनसे उर्वा ने, उनसे ज़ैनब बिन्ते उम्मे सलमा ने और उनसे उम्मे सलमा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया मैं तुम्हारा ही जैसा इंसान हूँ और कुछ औक़ात जब तुम बाहमी झगड़ा लाते हो तो मुम्किन है कि तुममें से कुछ अपने फ़रीक़े मुख़ालिफ़ के मुक़ाबले में अपना मुक़द्दमा पेश करने में ज़्यादा चालाकी से बोलने वाला हो और इस तरह मैं उसके मुताबिक़ फ़ैसला कर दूँ जो मैं तुमसे सुनता हूँ। पस जिस शख़्स के लिये भी उसके भाई के हक़ में से किसी चीज़ का फ़ैसला कर दूँ तो वो उसे न ले क्योंकि इस तरह मैं उसे जहन्नम का एक टुकड़ा देता हूँ। (राजेअ: 2458)

٦٩٦٧- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ، عَنْ سُفْيَانَ، عَنْ هِشَامٍ، عَنْ عُرْوَةَ عَنْ زَيْنَبَ ابْنَةِ أُمِّ سَلَمَةَ عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ، وَإِنَّكُمْ تَخْتَصِمُونَ وَلَعَلَّ بَعْضَكُمْ أَنْ يَكُونَ أَلْحَنَ بِحُجَّتِهِ مِنْ بَعْضٍ وَأَقْضِيَ لَهُ عَلَى نَحْوِ مَا أَسْمَعُ، فَمَنْ قَضَيْتُ لَهُ مِنْ حَقِّ أَخِيهِ شَيْئًا فَلاَ يَأْخُذْ، فَإِنَّمَا أَقْطَعُ لَهُ قِطْعَةً مِنَ النَّارِ)). [راجع: ٢٤٥٨]

वो फ़ुक़हा-ए-इस्लाम ग़ौर करें जो क़ाज़ी का फ़ैसला ज़ाहिरन व बातिनन नाफ़िज़ समझते हैं अगरचे वो कितना ही ग़लत और ज़ुल्म व जोर से भरपूर हो जैसे किसी की औरत ज़बरदस्ती पकड़कर उसका किसी क़ाज़ी के यहाँ दा'वा कर दे, उस पर अपनी सफ़ाई में दो झूठे गवाह पेश कर दे और क़ाज़ी मान ले तो ऐसे मुक़द्दमात के क़ाज़ी के ग़लत फ़ैसले सहीह न होंगे ख़्वाह कितने ही क़ाज़ी उसे मान लें और ग़ासिब के हक़ में फ़ैसला दे दें मगर झूठ झूठ रहेगा।

बाब 11 : निकाह पर झूठी गवाही गुज़र जाए तो क्या हुक्म है

١١- باب فِي النِّكَاحِ

क्या वो औरत उस दा'वा करने वाले पर जो जानता है कि ये दा'वा झूठा है, हलाल हो जाएगी?

6968. हमसे मुस्लिम बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन अबी कष़ीर ने बयान किया, उनसे अबू सलमा ने और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया। किसी कुँवारी लड़की का निकाह उस वक़्त तक न किया जाए जब तक उसकी इजाज़त न ले ली जाए और किसी बेवा का निकाह उस वक़्त तक

٦٩٦٨- حَدَّثَنَا مُسْلِمُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، حَدَّثَنَا هِشَامٌ، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ أَبِي كَثِيرٍ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: ((لاَ تُنْكَحُ الْبِكْرُ حَتَّى تُسْتَأْذَنَ وَلاَ الثَّيِّبُ حَتَّى

न किया जाए जब तक उसका हुक्म न मा'लूम कर लिया जाए। पूछा गया या रसूलल्लाह! उसकी (कुँवारी की) इजाज़त की क्या सूरत है? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि उसकी ख़ामोशी इजाज़त है। उसके बावजूद कुछ लोग कहते हैं कि अगर कुँवारी लड़की से इजाज़त न ली गई और न उसने निकाह किया। लेकिन किसी शख़्स ने हीला करके दो झूठे गवाह खड़े कर दिये कि उसने लड़की से निकाह किया है उसकी मर्ज़ी से और क़ाज़ी ने भी उसके निकाह का फ़ैसला कर दिया। हालाँकि शौहर जानता है कि वो झूठा है कि गवाही झूठी थी उसके बावजूद उस लड़की से सुहबत करने में उसके लिये कोई हर्ज नहीं है बल्कि ये निकाह सहीह होगा। (राजेअ : 5136)

تُسْتَأْمَرَ)) فَقِيلَ: يَا رَسُولَ اللهِ كَيْفَ إِذْنُهَا؟ قَالَ: ((إِذَا سَكَتَتْ)). وَقَالَ بَعْضُ النَّاسِ إِنْ لَمْ تُسْتَأْذَنِ الْبِكْرُ وَلَمْ تَزَوَّجْ فَاحْتَالَ رَجُلٌ فَأَقَامَ شَاهِدَيْ زُورٍ أَنَّهُ تَزَوَّجَهَا بِرِضَاهَا، فَأَثْبَتَ الْقَاضِي نِكَاحَهَا وَالزَّوْجُ يَعْلَمُ أَنَّ الشَّهَادَةَ بَاطِلَةٌ فَلاَ بَأْسَ أَنْ يَطَأَهَا. وَهُوَ تَزْوِيجٌ صَحِيحٌ. [راجع: ٥١٣٦]

6969. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने, कहा हमसे यह्या बिन सईद ने, उनसे क़ासिम ने कि जा'फ़र (रज़ि.) की औलाद में से एक ख़ातून को उसका ख़तरा हुआ कि उनका वली (जिनकी वो ज़ेरे परवरिश थीं) उनका निकाह कर देगा। हालाँकि वो उस निकाह को नापसंद करती थीं। चुनाँचे उन्होंने क़बीला अंसार के दो शुयूख़ अब्दुर्रहमान और मज्मअ़ को जो जारिया के बेटे थे कहला भेजा उन्होंने तसल्ली दी कि कोई डर न करें क्योंकि ख़न्सा बिन्ते ख़िज़ाम (रज़ि.) का निकाह उनके वालिद ने उनकी नापसंदीदगी के बावजूद कर दिया था तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उस निकाह को रद्द कर दिया था। सुफ़यान ने बयान किया कि मैंने अब्दुर्रहमान को अपने वालिद से ये कहते हुए सुना है कि ख़न्सा (रज़ि.) आख़िर हदीष़ तक बयान किया। (राजेअ : 5138)

٦٩٦٩- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، عَنِ الْقَاسِمِ أَنَّ امْرَأَةً مِنْ وَلَدِ جَعْفَرٍ تَخَوَّفَتْ أَنْ يُزَوِّجَهَا وَلِيُّهَا وَهِيَ كَارِهَةٌ، فَأَرْسَلَتْ إِلَى شَيْخَيْنِ مِنَ الأَنْصَارِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ وَمُجَمِّعٍ ابْنَيْ جَارِيَةَ قَالاَ: فَلاَ تَخْشَيْنَ فَإِنَّ خَنْسَاءَ بِنْتَ خِذَامٍ أَنْكَحَهَا أَبُوهَا وَهِيَ كَارِهَةٌ فَرَدَّ النَّبِيُّ ﷺ ذَلِكَ. قَالَ سُفْيَانُ وَأَمَّا عَبْدُ الرَّحْمَنِ فَسَمِعْتُهُ يَقُولُ عَنْ أَبِيهِ إِنَّ خَنْسَاءَ. [راجع: ٥١٣٨]

बचपन में जिन बच्चियों का निकाह कर दिया जाए और जवान होकर वो उसको नापसंद करें तो उनका भी निकाह रद्द कर दिया जाएगा।

6970. हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, कहा हमसे शैबान ने बयान किया, उनसे यह्या ने, उनसे अबू सलमा ने और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया किसी बेवा से उस वक़्त तक शादी न की जाए जब तक उसका हुक्म न मा'लूम कर लिया जाए और किसी कुँवारी से उस वक़्त तक निकाह न किया जाए जब तक उसकी इजाज़त न ले ली जाए। सहाबा ने पूछा उसकी इजाज़त का क्या तरीक़ा है? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, ये कि वो ख़ामोश हो जाए। फिर भी कुछ लोग कहते हैं कि अगर किसी शख़्स ने दो

٦٩٧٠- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ، حَدَّثَنَا شَيْبَانُ، عَنْ يَحْيَى عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((لاَ تُنْكَحُ الأَيِّمُ حَتَّى تُسْتَأْمَرَ، وَلاَ تُنْكَحُ الْبِكْرُ حَتَّى تُسْتَأْذَنَ)) قَالُوا: كَيْفَ إِذْنُهَا قَالَ: ((أَنْ تَسْكُتَ)). وَقَالَ بَعْضُ النَّاسِ: إِنِ احْتَالَ إِنْسَانٌ بِشَاهِدَيْ

زُورٍ عَلَى تَزْوِيجِ امْرَأَةٍ ثَيِّبٍ بِأَمْرِهَا، فَأَثْبَتَ الْقَاضِي نِكَاحَهَا إِيَّاهُ وَالزَّوْجُ يَعْلَمُ أَنَّهُ لَمْ يَتَزَوَّجْهَا قَطُّ، فَإِنَّهُ يَسَعُهُ هَذَا النِّكَاحُ وَلاَ بَأْسَ بِالْمُقَامِ لَهُ مَعَهَا.
[راجع: ٥١٣٦]

झूठे गवाहों के ज़रिये हीला किया (और ये झूठ गढ़ा) कि किसी बेवा औरत से उसने उसकी इजाज़त से निकाह किया है और क़ाज़ी ने भी उस मर्द से उसके निकाह का फ़ैसला कर दिया जबकि उस मर्द को ख़ूब ख़बर है कि उसने उस औरत से निकाह नहीं किया है तो ये निकाह जाइज़ है और उसके लिये उस औरत के साथ रहना जाइज़ हो जाएगा। (राजेअ : 5136)

ऐसे झूठ और हीले पर उसके जवाज़ का फ़ैसला देने वाले क़ाज़ी साहब अल्लाह के नज़दीक सख़्ततरीन सज़ा के हक़दार होंगे। अल्लाह ऐसे हीलों से हमें बचाए, आमीन।

٦٩٧١- حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ، عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ، عَنِ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ عَنْ ذَكْوَانَ، عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((الْبِكْرُ تُسْتَأْذَنُ)) قُلْتُ إِنَّ الْبِكْرَ تَسْتَحْيِي؟ قَالَ: ((إِذْنُهَا صُمَاتُهَا)). وَقَالَ بَعْضُ النَّاسِ: إِنْ هَوِيَ رَجُلٌ جَارِيَةً يَتِيمَةً أَوْ بِكْرًا، فَأَبَتْ فَاحْتَالَ فَجَاءَ بِشَاهِدَيْ زُورٍ عَلَى أَنَّهُ تَزَوَّجَهَا، فَأَدْرَكَتْ فَرَضِيَتِ الْيَتِيمَةُ فَقَبِلَ الْقَاضِي شَهَادَةَ الزُّورِ وَالزَّوْجُ يَعْلَمُ بِبُطْلاَنِ ذَلِكَ حَلَّ لَهُ الْوَطْءُ.
[راجع: ٥١٣٧]

6971. हमसे अबू आसिम ज़िहाक बिन मुख़लद ने बयान किया, उनसे इब्ने जुरैज ने, उनसे इब्ने अबी मुलैका ने, उनसे ज़क्वान ने, और उनसे हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया। कुँवारी लड़की से इजाज़त ली जाएगी। मैंने पूछा कि कुँवारी लड़की शर्माएगी, आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि उसकी ख़ामोशी ही इजाज़त है और कुछ लोगों का कहना है कि कोई शख़्स अगर किसी यतीम लड़की या कुँवारी लड़की से निकाह का ख़्वाहिशमंद हो। लेकिन लड़की राज़ी न हो उस पर उसने हीला किया और दो झूठे गवाहों की गवाही उसकी दिलाई कि उसने उस लड़की से शादी कर ली है फिर जब वो लड़की जवान हुई और उस निकाह से वो भी राज़ी हो गई और क़ाज़ी ने उस झूठी शहादत को क़ुबूल कर लिया हालाँकि वो भी जानता है कि ये सारा ही झूठ और फ़रेब है तब भी उससे जिमाअ करना जाइज़ है।
(राजेअ : 5137)

तशरीह : ऊपर बयान की गई इन तमाम अहादीष़ से हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने बअ़ज़ुन्नास के एक निहायत ही खुले हुए ग़लत फ़ैसले की तर्दीद फ़र्माई है जैसा कि रिवायात के ज़ैल में तशरीह है फ़ुक़हा की ऐसी ही हीलाबाज़ियों की क़लई खोलना यहाँ किताबुल हियल का मक़्सद है जैसा कि बनज़रे इंसाफ़ मुतालआ करने वालों पर ज़ाहिर होगा शैख़ सअ़दी ने ऐसे ही फ़ुक़हा-ए-किराम के बारे में कहा है,

फ़क़िहाने तरीक़ जदल साख़्तंद   लम ला नुसल्लिम दरान्दाख़्तन्द

कितने ही उलमा-ए-अहनाफ़ हक़पसंद ऐसे भी हैं जो इन हीले साज़ियों को तस्लीम नहीं करते वो यक़ीनन उनसे मुस्तष़्ना हैं, **जज़ाहुमुल्लाहु अहसनुल जज़ाअ।**

बाब 12 : औरत का अपने शौहर या सौकनों के

١٢- باب مَا يُكْرَهُ مِنَ احْتِيَالِ

साथ हीला करने की मुमानअत

الْمَرْأَةِ مَعَ الزَّوْجِ وَالضَّرَائِرِ

और जो इस बाब में अल्लाह तआला ने नबी करीम (ﷺ) पर नाज़िल किया उसका बयान

وَمَا نَزَلَ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ فِي ذَلِكَ.

आयते करीमा, **या अय्युहन्नबिय्यु लिमा तुहर्रिमु मा अहल्लल्लाहु लक तब्तग़ी मर्ज़ाति अज़्वाजिक** मुराद है या'नी ऐ नबी जो चीज़ आपके लिये हलाल है आपने उसे अपने ऊपर क्यूँ हराम किया आप अपनी बीवियों की रज़ामंदी ढूँढ़ते हैं। ये आयत वाक़िया ज़ैल ही के बारे में नाज़िल हुई तफ़्सीले हदीष बाब में आ रही है।

٦٩٧٢- حَدَّثَنَا عُبَيْدُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، عَنْ هِشَامٍ، عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: كَانَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُحِبُّ الْحَلْوَاءَ وَيُحِبُّ الْعَسَلَ، وَكَانَ إِذَا صَلَّى الْعَصْرَ أَجَازَ عَلَى نِسَائِهِ فَيَدْنُو مِنْهُنَّ، فَدَخَلَ عَلَى حَفْصَةَ فَاحْتَبَسَ عِنْدَهَا، أَكْثَرَ مِمَّا كَانَ يَحْتَبِسُ فَسَأَلْتُ عَنْ ذَلِكَ فَقَالَ لِي: أَهْدَتِ امْرَأَةٌ مِنْ قَوْمِهَا عُكَّةَ عَسَلٍ، فَسَقَتْ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ مِنْهُ شَرْبَةً، فَقُلْتُ: أَمَا وَاللَّهِ لَنَحْتَالَنَّ لَهُ فَذَكَرْتُ ذَلِكَ لِسَوْدَةَ قُلْتُ: إِذَا دَخَلَ عَلَيْكِ فَإِنَّهُ سَيَدْنُو مِنْكِ فَقُولِي لَهُ يَا رَسُولَ اللَّهِ أَكَلْتَ مَغَافِيرَ، فَإِنَّهُ سَيَقُولُ: لاَ، فَقُولِي لَهُ مَا هَذِهِ الرِّيحُ؟ وَكَانَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ يَشْتَدُّ عَلَيْهِ أَنْ يُوجَدَ مِنْهُ الرِّيحُ فَإِنَّهُ سَيَقُولُ: سَقَتْنِي حَفْصَةُ شَرْبَةَ عَسَلٍ فَقُولِي لَهُ : جَرَسَتْ نَحْلُهُ الْعُرْفُطَ، وَسَأَقُولُ: ذَلِكَ وَقُولِيهِ أَنْتِ يَا صَفِيَّةُ، فَلَمَّا دَخَلَ عَلَى سَوْدَةَ قَالَتْ: تَقُولُ : سَوْدَةُ وَالَّذِي لاَ إِلَهَ إِلاَّ هُوَ لَقَدْ كِدْتُ أَنْ أُبَادِرَهُ بِالَّذِي قُلْتِ لِي وَإِنَّهُ لَعَلَى الْبَابِ فَرَقًا مِنْكِ، فَلَمَّا دَنَا رَسُولُ اللَّهِ ﷺ قُلْتُ:

6972. हमसे उबैद बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने, उनसे हिशाम ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) हलवा और शहद पसंद करते थे और अस्र की नमाज़ से फ़ारिग़ होने के बाद अपनी अज़्वाज से (उनमे से किसी के हुज्रे में जाने के लिये) इजाज़त लेते थे और उनके पास जाते थे। एक मर्तबा आप हफ़्सा (रज़ि.) के घर गये और उनके यहाँ उससे ज़्यादा देर तक ठहरे रहे जितनी देर तक ठहरने का आपका मा'मूल था। मैंने उसके बारे में आँहज़रत (ﷺ) से पूछा तो आपने फ़र्माया कि उनकी क़ौम की एक ख़ातून ने शहद की एक कुप्पी उन्हें हदिये की थी और उन्होंने आँहज़रत (ﷺ) को उसका शरबत पिलाया था। मैंने उस पर कहा कि अब मैं भी आँहज़रत (ﷺ) के साथ एक हीला करूँगी चुनाँचे मैंने उसका ज़िक्र सौदा (रज़ि.) से किया और कहा जब आँहज़रत (ﷺ) आपके यहाँ आएं तो आपके क़रीब भी आएँगे उस वक़्त तुम आपसे कहना कि या रसूलल्लाह! शायद आपने मग़ाफ़ीर खाया है? उस पर आप जवाब देंगे कि नहीं। तुम कहना कि फिर ये बू किस चीज़ की है? आँहज़रत (ﷺ) को ये बात बहुत नागवार थी कि आपके जिस्म के किसी हिस्से से बू आए। चुनाँचे आँहज़रत (ﷺ) उसका जवाब ये देंगे कि हफ़्सा ने मुझे शहद का शरबत पिलाया था। उस पर कहना कि शहद की मक्खियों ने ग़रफ़्त का रस चूसा होगा और मैं भी आँहज़रत (ﷺ) से यही बात कहूँगी और सफ़िया तुम भी आँहज़रत (ﷺ) से ये कहना चुनाँचे जब आँहज़रत (ﷺ) सौदा के यहाँ तशरीफ़ ले गये तो उनका बयान है कि उस ज़ात की क़सम! जिसके सिवा कोई मा'बूद नहीं कि तुम्हारे डर से क़रीब था कि मैं उस वक़्त आँहज़रत (ﷺ) से ये बात जल्दी में कह देती जबकि आप दरवाज़े ही पर थे। आख़िर जब आँहज़रत (ﷺ) क़रीब आए तो मैंने अर्ज़

किया या रसूलल्लाह! आपने मग़ाफ़ीर खाया है? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि नहीं। मैंने कहा फिर बू कैसी है? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि हफ़्सा ने मुझे शहद का शरबत पिलाया है मैने कहा उस शहद की मक्खियों ने गरफ़्त का रस चूसा होगा और सफ़िया (रज़ि.) के पास जब आप तशरीफ़ ले गये तो उन्होंने भी यही कहा। उसके बाद जब फिर हफ़्सा (रज़ि.) के पास आप गये तो उन्होंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! वो शहद मैं फिर आपको पिलाऊँगी। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि उसकी ज़रूरत नहीं है। बयान किया है कि उस पर सौदा (रज़ि.) बोलीं। सुब्हानल्लाह! ये हमने क्या किया गोया शहद आप पर हराम कर दिया। मैंने कहा चुप रहो। (राजेअ़ : 4912)

يَا رَسُولَ اللهِ أَكَلْتَ مَغَافِيرَ؟ قَالَ: ((لاَ)) قُلْتُ: فَمَا هَذِهِ الرِّيحُ؟ قَالَ: ((سَقَتْنِي حَفْصَةُ شَرْبَةَ عَسَلٍ)) قُلْتُ: جَرَسَتْ نَحْلُهُ الْعُرْفُطَ، فَلَمَّا دَخَلَ عَلَيَّ قُلْتُ لَهُ مِثْلَ ذَلِكَ، وَدَخَلَ عَلَى صَفِيَّةَ فَقَالَتْ لَهُ مِثْلَ ذَلِكَ، فَلَمَّا دَخَلَ عَلَى حَفْصَةَ قَالَتْ لَهُ: يَا رَسُولَ اللهِ أَلاَ أَسْقِيكَ مِنْهُ؟ قَالَ: ((لاَ حَاجَةَ لِي بِهِ)) قَالَتْ: تَقُولُ سَوْدَةُ: سُبْحَانَ اللهِ لَقَدْ حَرَمْنَاهُ قَالَتْ : قُلْتُ لَهَا اسْكُتِي.

[راجع: ٤٩١٢]

कहीं आँहज़रत (ﷺ) सुन न लें या हमारी ये बात ज़ाहिर न हो जाए। मगर अल्लाह पाक ने क़ुर्आन मजीद में इस सारी बातचीत का पर्दा चाक कर दिया जिसका मतलब ये है कि हीलासाज़ी करना बहरहाल जाइज़ नहीं है। काश किताबुलहियल के मुसन्निफ़ीन इस हक़ीक़त पर ग़ौर कर सकते? नबी (ﷺ) की बीवियाँ बिला शुब्हा उम्महातुल मोमिनीन हैं मगर औरत ज़ात थीं जिनमें कमज़ोरियों का होना फ़ित्री बात है। ग़लती का उनको एहसास हुआ, यही उनकी मग़्फ़िरत की दलील है। अल्लाह उन सब पर हमारी तरफ़ से सलाम और अपनी रहमत नाज़िल फ़र्माए, आमीन।

बाब 13 : ताऊ़न से भागने के लिये हीला करना मना है

١٣- باب مَا يُكْرَهُ مِنَ الاحْتِيَالِ فِي الْفِرَارِ مِنَ الطَّاعُونِ

6973. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मस्लमा क़अ़म्बी ने बयान किया, कहा हमसे इमाम मालिक ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे अ़ब्दुल्लाह इब्ने आ़मिर बिन रबीआ़ ने कि हज़रत उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) (सन 18 हिजरी माह रबीउ़स्सानी में) शाम तशरीफ़ ले गये। जब मुक़ामे सर्ग़ पर पहुँचे तो उनको ये ख़बर मिली कि शाम वबाई बीमारी की लपेट में है। फिर हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ (रज़ि.) ने उन्हें ख़बर दी कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया था कि जब तुम्हें मा'लूम हो कि किसी सरज़मीन में वबा फैली हुई है तो उसमें दाख़िल मत हो, लेकिन अगर किसी जगह वबा फूट पड़े और तुम वहीं मौजूद हो तो वबा से भागने के लिये तुम वहाँ से निकलो भी मत। चुनाँचे हज़रत उ़मर (रज़ि.) मक़ामे सर्ग़ से वापस आ गये। (राजेअ़ : 5729)

٦٩٧٣- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْلَمَةَ، عَنْ مَالِكٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَامِرِ بْنِ رَبِيعَةَ أَنَّ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ خَرَجَ إِلَى الشَّأْمِ فَلَمَّا جَاءَ سَرْغَ بَلَغَهُ أَنَّ الْوَبَاءَ وَقَعَ بِالشَّامِ فَأَخْبَرَهُ عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ عَوْفٍ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((إِذَا سَمِعْتُمْ بِهِ بِأَرْضٍ فَلاَ تَقْدَمُوا عَلَيْهِ، وَإِذَا وَقَعَ بِأَرْضٍ وَأَنْتُمْ بِهَا فَلاَ تَخْرُجُوا فِرَارًا مِنْهُ)) فَرَجَعَ عُمَرُ مِنْ سَرْغَ.

[راجع: ٥٧٢٩]

وَعَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ سَالِمِ بْنِ عَبْدِ اللهِ أَنَّ عُمَرَ إِنَّمَا انْصَرَفَ مِنْ حَدِيثِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ.

और इब्ने शिहाब से रिवायत है, उनसे सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह ने कि ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.), ह़ज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ (रज़ि.) की ह़दीष़ सुनकर वापस हो गये थे।

ये ताऊ़ने अ़म्वास का ज़िक्र है बाब और ह़दीष़ में मुताबक़त ज़ाहिर है

٦٩٧٤- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ، حَدَّثَنَا شُعَيْبٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ حَدَّثَنَا عَامِرُ بْنُ سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ أَنَّهُ سَمِعَ أُسَامَةَ بْنَ زَيْدٍ يُحَدِّثُ سَعْدًا أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ ذَكَرَ الْوَجَعَ فَقَالَ: ((رِجْزٌ -أَوْ عَذَابٌ- عُذِّبَ بِهِ بَعْضُ الأُمَمِ ثُمَّ بَقِيَ مِنْهُ بَقِيَّةٌ، فَتَذْهَبُ الْمَرَّةَ وَتَأْتِي الأُخْرَى، فَمَنْ سَمِعَ بِهِ بِأَرْضٍ فَلاَ يَقْدَمَنَّ عَلَيْهِ، وَمَنْ كَانَ بِأَرْضٍ وَقَعَ بِهَا فَلاَ يَخْرُجْ فِرَارًا مِنْهُ)).

[راجع: ٣٤٧٣]

6974. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमसे शुऐ़ब ने बयान किया, उनसे ज़ुह्री ने, उनसे आ़मिर इब्ने सअ़द बिन अबी वक़्क़ास़ ने कि उन्होंने ह़ज़रत उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) से सुना, वो ह़ज़रत सअ़द बिन अबी वक़्क़ास़ (रज़ि.) से ह़दीष़ नक़ल कर रहे थे कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ताऊ़न का ज़िक्र किया और फ़र्माया कि ये एक अ़ज़ाब है जिसके ज़रिये कुछ उम्मतों को अ़ज़ाब दिया गया था उसके बाद उसका कुछ हिस़्सा बाक़ी रह गया है और वो कभी चला जाता है और कभी वापस आ जाता है। पस जो शख़्स़ किसी सरज़मीन पर इसके फैलने के बारे में सुने तो वहाँ न जाए लेकिन अगर कोई किसी जगह और वहाँ ये वबा फूट पड़े तो वहाँ से भागे भी नहीं।

(राजेअ़: 3473)

तश्रीह: उसका अस़ल सबब कुछ समझ में नहीं आता। यूनानी लोग जदवार ख़त़ाई से, डॉक्टर लोग वरम पर बर्फ़ का टुकड़ा रखकर और बदवी लोग दाग़ देकर उसका इलाज करते हैं मगर मौत से शाज़ व नादिर ही बचते हैं। इसलिये मुक़ामे ताऊ़न से भागना गोया मौत से भागना है जो अपने वक़्त पर ज़रूर आकर रहेगी। मौलाना वह़ीदुज़्ज़माँ मरहूम फ़र्माते हैं कि घर या मुहल्ले बदल लेना बस्ती छोड़कर पहाड़ पर चले जाना ताकि साफ़ आबो हवा मिल सके फ़रार में दाख़िल नहीं है, वल्लाहु आलम बिस़्स़वाब।

١٤- باب فِي الْهِبَةِ وَالشُّفْعَةِ

बाब 14 : हिबा फेर लेने या शुफ़आ का ह़क़ साक़ित करने के लिये ह़ीला

وَقَالَ بَعْضُ النَّاسِ: إِنْ وَهَبَ هِبَةً أَلْفَ دِرْهَمٍ أَوْ أَكْثَرَ حَتَّى مَكَثَ عِنْدَهُ سِنِينَ، وَاحْتَالَ فِي ذَلِكَ ثُمَّ رَجَعَ الْوَاهِبُ فِيهَا، فَلاَ زَكَاةَ عَلَى وَاحِدٍ مِنْهُمَا فَخَالَفَ الرَّسُولَ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي الْهِبَةِ وَأَسْقَطَ الزَّكَاةَ.

करना मकरूह है और कुछ लोगों ने कहा कि अगर किसी शख़्स़ ने दूसरे को हज़ार दिरहम या उससे ज़्यादा हिबा किये और ये दिरहम मौहूब के पास बरसों रह चुके फिर वाहिब ने ह़ीला करके उनको ले लिया। हिबा में रुजूअ़ कर लिया। उनमें से किसी पर ज़कात लाज़िम न होगी और उन लोगों ने आँह़ज़रत (ﷺ) की ह़दीष़ का ख़िलाफ़ किया जो हिबा में वारिद है और बावजूद साल गुज़रने के उसमें ज़कात साक़ित है।

٦٩٧٥- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ أَيُّوبَ السَّخْتِيَانِيِّ، عَنْ عِكْرِمَةَ عَنِ

6975. हमसे अबू नुऐ़म ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे अय्यूब सुख़्तियानी ने, उनसे इक्रिमा ने

ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((الْعَائِدُ فِي هِبَتِهِ كَالْكَلْبِ يَعُودُ فِي قَيْئِهِ، لَيْسَ لَنَا مَثَلُ السَّوْءِ)). [راجع: ٢٥٨٩]

और उनसे ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया अपने हिबा को वापस लेने वाला उस कुत्ते की त़रह़ है जो अपनी क़ै को ख़ुद चाट जाता है, हमारे लिये बुरी मिष़ाल मुनासिब नहीं। (राजेअ़ : 2589)

तश्रीह : इस ह़दीष़ से ये निकला कि मौहूब लहू का क़ब्ज़ा हो जाने के बाद फिर हिबा में रुजूअ़ करना ह़राम और नाजाइज़ है और जब रुजूअ़ नाजाइज़ हुआ तो मौहूब लहू पर एक साल गुज़रने के बाद ज़कात वाजिब होगी। अहले ह़दीष़ का यही क़ौल है और इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह़.) के नज़दीक जब रुजूअ़ जाइज़ हुआ गो मकरूह उनके नज़दीक भी है तो न वाहिब पर ज़कात होगी न मौहूब लहू पर और ये ह़ीला करके दोनों ज़कात से मह़फ़ूज़ रह सकते हैं ।

٦٩٧٦- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ، حَدَّثَنَا هِشَامُ بْنُ يُوسُفَ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ قَالَ: إِنَّمَا جَعَلَ النَّبِيُّ ﷺ الشُّفْعَةَ فِي كُلِّ مَا لَمْ يُقْسَمْ فَإِذَا وَقَعَتِ الْحُدُودُ وَصُرِّفَتِ الطُّرُقُ فَلاَ شُفْعَةَ.
وَقَالَ بَعْضُ النَّاسِ: الشُّفْعَةُ لِلْجِوَارِ ثُمَّ عَمَدَ إِلَى مَا شَدَّدَهُ فَأَبْطَلَهُ وَقَالَ: إِنِ اشْتَرَى دَارًا فَخَافَ أَنْ يَأْخُذَ الْجَارُ بِالشُّفْعَةِ فَاشْتَرَى سَهْمًا مِنْ مِائَةِ سَهْمٍ، ثُمَّ اشْتَرَى الْبَاقِيَ وَكَانَ لِلْجَارِ الشُّفْعَةُ فِي السَّهْمِ الأَوَّلِ وَلاَ شُفْعَةَ لَهُ فِي بَاقِي الدَّارِ وَلَهُ أَنْ يَحْتَالَ فِي ذَلِكَ.[راجع: ٢٢١٣]

6976. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे हिशाम बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको मअ़मर ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुह्री ने, उन्हें अबू सलमा ने और उनसे ह़ज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने शुफ़्आ का हुक्म हर उस चीज़ में दिया था जो तक़्सीम न हो सकती हो। पस जब ह़दबन्दी हो जाए और रास्ते अलग अलग कर दिये जाएँ तो फिर शुफ़्आ नहीं और कुछ लोग कहते हैं कि शुफ़्आ का ह़क़ पड़ौसी को भी होता है फिर ख़ुद ही अपनी बात को ग़लत़ क़रार दिया और कहा कि अगर किसी ने कोई घर ख़रीदा और उसे ख़त़रा है कि उसका पड़ौसी ह़क़्क़े शुफ़्आ की बिना पर उससे घर ले लेगा तो उसने उसके सौ ह़िस्से करके एक ह़िस्सा उसमें से पहले ख़रीद लिया और बाक़ी ह़िस्से बाद में ख़रीदे तो ऐसी सूरत में पहले ह़िस्से में तो पड़ौसी को शुफ़्आ का ह़क़ होगा। घर के बाक़ी ह़िस्सों में उसे ये ह़क़ नहीं होगा और उसके लिये जाइज़ है कि ये ह़ीला करे। (राजेअ़ : 2213)

तश्रीह : क्योंकि ख़रीददार उस घर का शरीक है और शरीक का ह़क़ पड़ौसी पर मुक़द्दम है और उन लोगों ने ख़रीददार के लिये इस क़िस्म का ह़ीला जाइज़ रखा ह़ालाँकि उसमें एक मुसलमान का ह़क़ तलफ़ करना है और उन फ़ुक़हा पर तअ़ज्जुब है जो ऐसे ह़ीले करना जाइज़ रखते हैं ।

٦٩٧٧- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ بْنِ مَيْسَرَةَ سَمِعْتُ عَمْرَو بْنَ الشَّرِيدِ قَالَ: جَاءَ الْمِسْوَرُ بْنُ مَخْرَمَةَ فَوَضَعَ يَدَهُ عَلَى مَنْكِبِي، فَانْطَلَقْتُ

6977. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, उनसे इब्राहीम बिन मैसरह ने बयान किया, उन्होंने अ़म्र बिन शरीद से सुना, उन्होने बयान किया कि मिस्वर बिन मख़रमा (रज़ि.) आए और उन्होंने मेरे मूँढ़े पर अपना हाथ रखा फिर मैं

مَعَهُ إِلَى سَعْدٍ فَقَالَ أَبُو رَافِعٍ لِلْمِسْوَرِ: أَلاَ تَأْمُرُ هَذَا أَنْ يَشْتَرِيَ مِنِّي بَيْتِي الَّذِي فِي دَارِي فَقَالَ: لاَ أَزِيدُهُ عَلَى أَرْبَعِمِائَةٍ إِمَّا مُقَطَّعَةٍ وَإِمَّا مُنَجَّمَةٍ قَالَ: أُعْطِيتُ خَمْسَمِائَةٍ نَقْدًا فَمَنَعْتُهُ، وَلَوْ لاَ أَنِّي سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((الْجَارُ أَحَقُّ بِصَقَبِهِ مَا بِعْتُكَهُ -أَوْ قَالَ- مَا أَعْطَيْتُكَهُ)) قُلْتُ : لِسُفْيَانَ: إِنَّ مَعْمَرًا لَمْ يَقُلْ هَكَذَا قَالَ : لَكِنَّهُ قَالَ لِي هَكَذَا. [راجع: ٢٢٥٨]

उनके साथ सअद बिन अबी वक़्क़ास (रज़ि) के यहाँ गया तो अबू राफ़ेअ ने उस पर कहा कि उसका चार सौ से ज़्यादा नहीं दे सकता और वो भी क़िस्तों में दूँगा। उस पर उन्होंने जवाब दिया कि मुझे तो इसके पाँच सौ नक़द मिल रहे थे और मैंने इंकार कर दिया। अगर मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से ये न सुना होता कि पड़ौसी ज़्यादा मुस्तहिक़ है तो मैं इसे तुम्हें न बेचता। अली बिन अब्दुल्लाह मदीनी ने कहा कि मैंने सुफ़यान बिन उयय्ना से उस पर पूछा कि मअमर ने इस तरह नहीं बयान किया है। सुफ़यान ने कहा लेकिन मुझसे तो इब्राहीम बिन मैसरह ने ये हदीष इसी तरह नक़ल की है। (राजेअ : 2258)

وَقَالَ بَعْضُ النَّاسِ: إِذَا أَرَادَ أَنْ يَبِيعَ الشُّفْعَةَ، فَلَهُ أَنْ يَحْتَالَ حَتَّى يُبْطِلَ الشُّفْعَةَ، فَيَهَبُ الْبَائِعُ لِلْمُشْتَرِي الدَّارَ وَيَحُدُّهَا وَيَدْفَعُهَا إِلَيْهِ وَيُعَوِّضُهُ الْمُشْتَرِي أَلْفَ دِرْهَمٍ فَلاَ يَكُونُ لِلشَّفِيعِ فِيهَا شُفْعَةٌ.

और कुछ लोग कहते हैं कि अगर कोई शख़्स चाहे कि शफ़ीअ को हक़्क़े शुफ़्आ न दे तो उसे हीला करने की इजाज़त है और हीला ये है कि जायदाद मालिक ख़रीददार को वो जायदाद हिबा कर दे फिर ख़रीददार या'नी मौहूब लहू उस हिबा के मुआवज़े में शफ़ीअ को शुफ़्आ का हक़ न रहेगा।

तश्रीह : क्योंकि शुफ़्आ बेअ में होता है न कि हिबा में। हम कहते हैं कि हिबा बिल इवज़ भी बेअ के हुक्म में है तो शफ़ीअ का हक़्क़े शुफ़्आ क़ायम रहना चाहिये और ऐसा हीला करना बिलकुल नाजाइज़ है। उसमें मालिक की ह क़ तल्फ़ी का इरादा करना है। हमें चाहिये कि ऐसे हिबा से जिसमें किसी का नुक़्सान नज़र आ रहा है और ऐसे नाजाइज़ हीलों से दूर रहें और इस हदीष पर अमल करें जो बिलकुल वाज़ेह और साफ़ है।

٦٩٧٨- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ بْنِ مَيْسَرَةَ، عَنْ عَمْرِو بْنِ الشَّرِيدِ، عَنْ أَبِي رَافِعٍ أَنَّ سَعْدًا سَاوَمَهُ بَيْتًا بِأَرْبَعِمِائَةِ مِثْقَالٍ فَقَالَ: لَوْ لاَ أَنِّي سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((الْجَارُ أَحَقُّ بِصَقَبِهِ)) لَمَا أَعْطَيْتُكَ. وَقَالَ بَعْضُ النَّاسِ : إِنِ اشْتَرَى نَصِيبَ دَارٍ فَأَرَادَ أَنْ يُبْطِلَ الشُّفْعَةَ وَهَبَ لاِبْنِهِ الصَّغِيرِ وَلاَ يَكُونُ عَلَيْهِ يَمِينٌ.

[راجع: ٢٢٥٨]

6978. हमसे मुहम्मद बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे इब्राहीम बिन मैसरह ने बयान किया, उनसे अम्र बिन शरीद ने, उनसे अबू राफ़ेअ ने कि हज़रत सअद (रज़ि.) ने उनके एक घर की चार सौ मिष्क़ाल क़ीमत लगाई तो उन्होंने कहा कि अगर मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को ये कहते हुए सुना होता कि पड़ौसी अपने पड़ौस का ज़्यादा मुस्तहिक़ है तो मैं उसे तुम्हें न देता और कुछ लोग कहते हैं कि अगर किसी ने किसी घर का हिस्सा ख़रीदा और चाहा कि उसका हक़्क़े शुफ़्आ बातिल कर दे तो उसे उस घर काससे अपने छोटे बेटे को हिबा कर देना चाहिये। अब नाबालिग़ पर क़सम भी नहीं होगी। (राजेअ : 2258)

और इस हीले से आसानी से हक़्क़े शुफ़आ ख़त्म हो जाएगा क्योंकि नाबालिग़ पर क़सम भी न आएगी।

बाब 15 : आमिल का ताहफ़ा लेने के लिये हीले करना

١٥- باب احْتِيَالِ الْعَامِلِ لِيُهْدَى لَهُ

6979. हमसे उबैद बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, उनसे हिशाम ने, उनसे उनके वालिद उर्वा ने और उनसे अबू हुमैद साएदी (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने एक शख़्स को बनी सुलैम के सदक़ात की वसूली के लिये आमिल बनाया उनका नाम इब्नुल लुतबिय्या था फिर जब ये आमिल वापस आया और आँहज़रत (ﷺ) ने उनका हिसाब लिया, उसने सरकारी माल अलग किया और कुछ माल की निस्बत कहने लगा कि ये (मुझे) तोहफ़े में मिला है। आँहज़रत (ﷺ) ने उस पर फ़र्माया फिर क्यूँ न तुम अपने माँ बाप के घर बैठे रहे अगर तुम सच्चे हो तो वहीं ये तोहफ़ा तुम्हारे पास आ जाता। उसके बाद आँहज़रत (ﷺ) ने हमें ख़ुत्बा दिया और अल्लाह की हम्दो सना के बाद फ़र्माया, अम्माबअद! मैं तुममें से किसी एक को उस काम पर आमिल बनाता हूँ जिसका अल्लाह ने मुझे वाली बनाया है फिर वो शख़्स आता है और कहता है कि ये तुम्हारा माल है और ये तोहफ़ा है जो मुझे दिया गया था। उसे अपने माँ बाप के घर बैठा रहना चाहिये था ताकि उसका तोहफ़ा वहीं पहुँच जाता। अल्लाह की क़सम! तुममें से जो भी हक़ के सिवा कोई चीज़ लेगा वो अल्लाह तआला से इस हाल में मिलेगा कि उस चीज़ को उठाए हुए होगा। मैं तुममें हर उस शख़्स को पहचान लूँगा जो अल्लाह से इस हाल में मिलेगा कि ऊँट उठाए होगा जो बिलबिला रहा होगा या गाय उठाए होगा जो अपनी आवाज़ निकाल रही होगी या बकरी उठाए होगा जो अपनी आवाज़ निकाल रही होगी। फिर आपने अपना हाथ उठाया यहाँ तक कि आपके बग़ल की सफ़ेदी दिखाई देने लगी और फ़र्माया ऐ अल्लाह! क्या मैंने पहुँचा दिया? ये फ़र्माते हुए आँहज़रत (ﷺ) को मेरी आँखों ने देखा और कानों ने सुना। (राजेअ : 925)

٦٩٧٩- حَدَّثَنَا عُبَيْدُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ عَنْ هِشَامٍ، عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي حُمَيْدٍ السَّاعِدِيِّ قَالَ: اسْتَعْمَلَ رَسُولُ اللهِ ﷺ رَجُلاً عَلَى صَدَقَاتِ بَنِي سُلَيْمٍ يُدْعَى ابْنَ اللُّتْبِيَّةِ، فَلَمَّا جَاءَ حَاسَبَهُ قَالَ: هَذَا مَالُكُمْ وَهَذَا هَدِيَّةٌ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((فَهَلاَّ جَلَسْتَ فِي بَيْتِ أَبِيكَ وَأُمِّكَ حَتَّى تَأْتِيَكَ هَدِيَّتُكَ، إِنْ كُنْتَ صَادِقًا)) ثُمَّ خَطَبَنَا فَحَمِدَ اللهَ وَأَثْنَى عَلَيْهِ ثُمَّ قَالَ : ((أَمَّا بَعْدُ فَإِنِّي اسْتَعْمِلُ الرَّجُلَ مِنْكُمْ عَلَى الْعَمَلِ مِمَّا وَلاَّنِي اللهُ، فَيَأْتِي فَيَقُولُ: هَذَا مَالُكُمْ وَهَذَا هَدِيَّةٌ أُهْدِيَتْ لِي أَفَلاَ جَلَسَ فِي بَيْتِ أَبِيهِ وَأُمِّهِ حَتَّى تَأْتِيَهُ هَدِيَّتُهُ، وَاللهِ لاَ يَأْخُذُ أَحَدٌ مِنْكُمْ شَيْئًا بِغَيْرِ حَقِّهِ، إِلاَّ لَقِيَ اللهَ يَحْمِلُهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَلأَعْرِفَنَّ أَحَدًا مِنْكُمْ لَقِيَ اللهَ يَحْمِلُ بَعِيرًا لَهُ رُغَاءٌ، أَوْ بَقَرَةً لَهَا خُوَارٌ، أَوْ شَاةً تَيْعَرُ))، ثُمَّ رَفَعَ يَدَيْهِ حَتَّى رُؤِيَ بَيَاضُ إِبْطِهِ يَقُولُ: ((اللَّهُمَّ هَلْ بَلَّغْتُ؟)) بَصُرَ عَيْنِي وَسَمِعَ أُذُنِي.

[راجع: ٩٢٥]

तश्रीह : आमिलीन के लिये जो इस्लामी हुकूमत की तरफ़ से सरकारी अम्वाल की तहसील के लिये मुक़र्रर होते हैं कोई हीला ऐसा नहीं कि वो लोगों से तोहफ़ा तहाइफ़ भी वसूल कर सकें वो जो कुछ भी लेंगे वो सब हुकूमते इस्लामी के बैतुलमाल ही का हक़ होगा। मदरसों के सफ़ीरों को भी जो मुशाहिरा पर काम करते हैं ये हदीष़ ज़हननशीन रखनी चाहिये। वबिल्लाहित्तौफ़ीक़।

6980. हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान

٦٩٨٠- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ،

عَنْ إِبْرَاهِيمَ بْنِ مَيْسَرَةَ، عَنْ عَمْرِو بْنِ الشَّرِيدِ، عَنْ أَبِي رَافِعٍ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((الْجَارُ أَحَقُّ بِصَقَبِهِ)). [راجع: ٢٢٥٨]

وَقَالَ بَعْضُ النَّاسِ: إِنِ اشْتَرَى دَارًا بِعِشْرِينَ أَلْفَ دِرْهَمٍ، فَلاَ بَأْسَ أَنْ يَحْتَالَ حَتَّى يَشْتَرِيَ الدَّارَ بِعِشْرِينَ أَلْفَ دِرْهَمٍ، وَيَنْقُدَهُ تِسْعَةَ آلاَفِ دِرْهَمٍ وَتِسْعَمِائَةِ دِرْهَمٍ، وَتِسْعَةً وَتِسْعِينَ وَيَنْقُدَهُ دِينَارًا بِمَا بَقِيَ مِنَ الْعِشْرِينَ أَلْفَ، فَإِنْ طَلَبَ الشَّفِيعُ أَخَذَهَا بِعِشْرِينَ أَلْفَ دِرْهَمٍ، وَإِلاَّ فَلاَ سَبِيلَ لَهُ عَلَى الدَّارِ، فَإِنِ اسْتُحِقَّتِ الدَّارُ رَجَعَ الْمُشْتَرِي عَلَى الْبَائِعِ بِمَا دَفَعَ إِلَيْهِ، وَهُوَ تِسْعَةُ آلاَفِ دِرْهَمٍ وَتِسْعُمِائَةٍ وَتِسْعَةٌ وَتِسْعُونَ دِرْهَمًا وَدِينَارٌ لأَنَّ الْبَيْعَ حِينَ اسْتُحِقَّ انْتَقَضَ الصَّرْفُ فِي الدِّينَارِ، فَإِنْ وَجَدَ بِهَذِهِ الدَّارِ عَيْبًا وَلَمْ تُسْتَحَقَّ فَإِنَّهُ يَرُدُّهَا عَلَيْهِ بِعِشْرِينَ أَلْفَ دِرْهَمٍ قَالَ: فَأَجَازَ هَذَا الْخِدَاعَ بَيْنَ الْمُسْلِمِينَ وَقَالَ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((بَيْعُ الْمُسْلِمِ لاَ دَاءَ وَلاَ خِبْثَةَ وَلاَ غَائِلَةَ)).

ष़ौरी ने बयान किया, उनसे इब्राहीम बिन मैसरह ने, उनसे अम्र बिन शुरैद ने और उनसे ह़ज़रत अबू राफ़ेअ (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया पड़ोसी अपने पड़ौसी का ज़्यादा ह़क़दार है। (राजेअ : 2258)

और कुछ लोगों ने कहा अगर किसी शख़्स ने एक घर बीस हज़ार दिरहम में ख़रीदा (तो शुफ़्आ का ह़क़ साक़ित करने के लिये) ये ह़ीला करने में कोई क़बाहत नहीं कि मालिक मकान को नौ हज़ार नौ सौ निन्नानवे (9999) दिरहम नक़द अदा करे अब बीस हज़ार पूरा करने में जो बाक़ी रहे या'नी दस हज़ार और एक दिरहम, उसके बदले मालिक मकान को एक दीनार (अशरफ़ी) दे दे। उस सूरत में अगर शफ़ीअ उस मकान को लेना चाहेगा तो उसको बीस हज़ार दिरहम पर लेना होगा वरना वो उस घर को नहीं ले सकता। ऐसी सूरत में अगर बैअ के बाद ये घर (बायेअ के सिवा) और किसी का निकला तो ख़रीददार बायेअ से वही क़ीमत फेर लेगा जो उसने दी है या'नी (9999) दिरहम और एक दीनार (बीस हज़ार दिरहम नहीं फेर सकता) क्योंकि जब वो घर किसी और का निकला तो अब वो बैअ स़िर्फ़ जो बायेअ और मुश्तरी के बीच में हो गई थी बात़िल हो गई (तो अस़ल दीनार फिरना लाज़िम होगा न कि उसकी क़ीमत (या'नी दस हज़ार और एक दिरहम)। अगर उस घर में कोई ऐब निकला लेकिन वो बायेअ के सिवा किसी और की मिल्क नहीं निकला तो ख़रीददार उस घर को बायेअ को वापस और बीस हज़ार दिरहम में उससे ले सकता है। ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने कहा तो उन लोगों ने मुसलमानों के आपस में मक्र व फ़रेब को जाइज़ रखा और आँह़ज़रत (ﷺ) ने तो फ़र्माया है मुसलमान की बैअ में जो मुसलमान के साथ हो न ऐब होना चाहिये या'नी (बीमारी) न ख़बाष़त न कोई आफ़त।

तश्रीह: ये ह़दीष़ किताबुल बुयूअ में अला बिन ख़ालिद की रिवायत से गुज़र चुकी है। इमाम बुख़ारी ने इस मसले में उन कुछ लोगों पर दो ए'तिराज़ किये हैं एक तो मुसलमानों के आपस में फ़रेब और दग़ाबाज़ी को जाइज़ रखना दूसरे तरजीह़ बिला मुरज्जह कि इस्तिह़क़ाक़ की सूरत में तो मुश्तरी स़िर्फ़ 9999 दिरहम और एक दीनार फेर सकता है और ऐब की सूरत में पूरे बीस हज़ार फेर सकता है। ह़ालाँकि बीस हज़ार उसने दिये ही नहीं। स़ह़ीह़ मज़हब इस मसले में अहले ह़दीष़ का है कि मुश्तरी ऐब या इस्तिह़क़ाक़ दोनों सूरतों में बायेअ से वही ष़मन फेर लेगा जो उसने बायेअ को दिया है या'नी 9999 दिरहम और एक दीनार और शफ़ीअ भी इस क़दर रक़म देकर उस जायदाद को मुश्तरी से ले सकता है।

6981. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या ने बयान किया, उनसे सुफ़यान ने, उनसे इब्राहीम बिन मैसरह ने बयान किया, उनसे अ़म्र बिन शुरैद ने कि अबू राफ़ेअ़ (रज़ि.) ने सअ़द बिन मालिक (रज़ि.) को एक घर चार सौ मिष्क़ाल में बेचा और कहा कि अगर मैंने नबी करीम (ﷺ) से ये न सुना होता कि पड़ौसी ह़क़्क़े पड़ौस का ज़्यादा ह़क़दार है तो मैं आपको ये घर न देता (और किसी के हाथ बेच डालता)। (राजेअ़ : 2258)

٦٩٨١- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا يَحْيَى، عَنْ قَالَ سُفْيَانُ، حَدَّثَنِي إِبْرَاهِيمُ بْنُ مَيْسَرَةَ، عَنْ عَمْرِو بْنِ الشَّرِيدِ، أَنَّ أَبَا رَافِعٍ سَاوَمَ سَعْدَ بْنَ مَالِكٍ بَيْتًا بِأَرْبَعِمِائَةِ مِثْقَالٍ وَقَالَ: لَوْ لاَ أَنِّي سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((الْجَارُ أَحَقُّ بِصَقَبِهِ)). مَا أَعْطَيْتُكَ. [راجع: ٢٢٥٨]

ह़ज़रत अबू राफ़ेअ़ ने ह़क़्क़े जवार की अदायगी में किसी ह़ीले बहाने को आड़ नहीं बनाया। स़ह़ाबा किराम और जुम्ला सलफ़ सालिह़ीन का यही त़र्ज़े अ़मल था वो ह़ीलों बहानों की तलाश नहीं करते और अह़कामे शरअ़ को बजा लाना अपनी सआ़दत जानते थे। किताबुल ह़ियल को इसी आगाही के लिये इस ह़दीष़ पर ख़त्म किया गया है।

92. किताबुत्तअ़बीर

किताब ख़्वाबों की ता'बीर के बयान में

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

तशरीह : ख़्वाब दो क़िस्म के होते हैं एक तो वो मामला जो रूह़ को मा'लूम होता है, ब-सबबे इत्तिस़ाल आ़लमे मल्कूत के, इसको रूया कहते हैं। दूसरे शैत़ानी ख़्याल और वस्वसे जो अकष़र ब-सबबे फ़साद मअ़दा और इम्तिला के हुआ करते हैं। इनको अ़रबी में ह़लम कहते हैं जैसे एक ह़दीष़ में आया है कि रूया अल्लाह की त़रफ़ से है और ह़लम शैत़ान की त़रफ़ से। हमारे ज़माने में कुछ बेवक़ूफ़ों ने हर त़रह़ के ख़्वाबों को बेअस़ल ख़्यालात क़रार दिया है। उनको तजुर्बा नहीं है क्योंकि वो दिन रात दुनिया के ऐशो इशरत में मश्ग़ूल रहते हैं। ख़ूब डटकर खाते पीते हैं उनके ख़्वाब कहाँ से सच्चे होने लगे आदमी जैसी रास्ती और पाकीज़गी और तक़्वा और तहारत का इल्तिज़ाम करता जाता है वैसे ही उसके ख़्वाब सच्चे और क़ाबिले ए'तिमाद होते जाते हैं और झूठे शख़्स़ के ख़्वाब अकष़र झूठे ही होते हैं।

बाब 1 : और रसूलुल्लाह (ﷺ) पर वह्य की इब्तिदा सच्चे ख़्वाब के ज़रिये हुई

١ - باب وَأَوَّلُ مَا بُدِىءَ بِهِ رَسُولُ اللهِ ﷺ مِنَ الْوَحْيِ الرُّؤْيَا الصَّالِحَةُ

6982. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, उन्होने कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे अ़क़ील बिन ख़ालिद ने बयान किया, और उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया (दूसरी सनद इमाम बुख़ारी रह. ने कहा) कि मुझसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मुस्नदी ने बयान किया, उन्होंने कहा मुझसे अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने बयान किया, उनसे मअ़मर ने बयान किया, उनसे ज़ुह्री ने कहा कि मुझे उ़र्वा ने ख़बर दी और उनसे ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) पर वह्य की इब्तिदा सोने की हालत में सच्चे ख़्वाब के ज़रिये हुई। चुनाँचे आँह़ज़रत (ﷺ) जो ख़्वाब भी देखते तो वो सुब्ह की रोशनी की तरह सामने आ जाता और आँह़ज़रत (ﷺ) ग़ारे ह़िरा में चले जाते और उसमें तन्हा अल्लाह की याद करते थे। चंद मुक़र्ररा दिनों के लिये (यहाँ आते) और उन दिनों का तौशा भी साथ लाते। फिर ह़ज़रत ख़दीजा (रज़ि.) के पास वापस तशरीफ़ ले जाते और वो फिर उतना ही तौशा आपके साथ कर देतीं यहाँ तक कि ह़क़ आपके पास अचानक आ गया और आप ग़ारे ह़िरा में थे। चुनाँचे उसमें फ़रिश्ता आपके पास आया और कहा कि पढ़िये। आँह़ज़रत (ﷺ) ने उससे फ़र्माया कि मैं पढ़ा हुआ नहीं हूँ। आख़िर उसने मुझे पकड़ लिया और ज़ोर से दबाया और ख़ूब दबाया जिसकी वजह से मुझको बहुत तकलीफ़ हुई। फिर उसने मुझे छोड़ दिया और कहा कि पढ़िये। आप (ﷺ) ने फिर वही जवाब दिया कि मैं पढ़ा हुआ नहीं हूँ। उसने मुझे ऐसा दबाया कि मैं बेक़ाबू हो गया या उन्होने अपना ज़ोर ख़त्म कर दिया और फिर छोड़कर उसने मुझसे कहा कि पढ़िये, अपने रब के नाम से जिसने पैदा किया है। अल्फ़ाज़ मालम यअ़लम तक। फिर जब आप (ﷺ) ह़ज़रत ख़दीजा (रज़ि.) के पास आए तो आपके मूँढ़ों के गोश्त (डर के मारे) फड़क रहे थे। जब घर में आप (ﷺ) दाख़िल हुए तो फ़र्माया कि मुझे चादर ओढ़ा दो, मुझे चादर ओढ़ा दो चुनाँचे आपको चादर ओढ़ा दी गई और जब आप (ﷺ) का डर दूर हुआ तो फ़र्माया कि ख़दीजा (रज़ि.) मेरा हाल क्या हो गया है? फिर आप (ﷺ) ने अपना सारा हाल बयान किया और फ़र्माया कि मुझे अपनी जान का डर है। लेकिन ह़ज़रत ख़दीजा (रज़ि.) ने कहा अल्लाह की

٦٩٨٢- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ عُقَيْلٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، وَحَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، حَدَّثَنَا مَعْمَرٌ قَالَ الزُّهْرِيُّ فَأَخْبَرَنِي عُرْوَةُ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّهَا قَالَتْ: أَوَّلُ مَا بُدِئَ بِهِ رَسُولُ اللهِ ﷺ مِنَ الْوَحْيِ الرُّؤْيَا الصَّادِقَةُ فِي النَّوْمِ، فَكَانَ لاَ يَرَى رُؤْيَا إِلاَّ جَاءَتْ مِثْلَ فَلَقِ الصُّبْحِ، فَكَانَ يَأْتِي حِرَاءَ فَيَتَحَنَّثُ فِيهِ وَهُوَ التَّعَبُّدُ اللَّيَالِيَ ذَوَاتِ الْعَدَدِ وَيَتَزَوَّدُ لِذَلِكَ، ثُمَّ يَرْجِعُ إِلَى خَدِيجَةَ فَتُزَوِّدُهُ لِمِثْلِهَا حَتَّى فَجِئَهُ الْحَقُّ وَهُوَ فِي غَارِ حِرَاءٍ، فَجَاءَهُ الْمَلَكُ فِيهِ فَقَالَ: ((اقْرَأْ فَقَالَ لَهُ النَّبِيُّ ﷺ: فَقُلْتُ مَا أَنَا بِقَارِئٍ فَأَخَذَنِي فَغَطَّنِي حَتَّى بَلَغَ مِنِّي الْجَهْدَ ثُمَّ أَرْسَلَنِي فَقَالَ: اقْرَأْ فَقُلْتُ: مَا أَنَا بِقَارِئٍ، فَأَخَذَنِي فَغَطَّنِي الثَّانِيَةَ حَتَّى بَلَغَ مِنِّي الْجَهْدَ، ثُمَّ أَرْسَلَنِي فَقَالَ: اقْرَأْ فَقُلْتُ: مَا أَنَا بِقَارِئٍ فَغَطَّنِي الثَّالِثَةَ حَتَّى بَلَغَ مِنِّي الْجَهْدَ ثُمَّ أَرْسَلَنِي فَقَالَ: ﴿اقْرَأْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِي خَلَقَ - حَتَّى بَلَغَ - مَا لَمْ يَعْلَمْ﴾)) فَرَجَعَ بِهَا تَرْجُفُ بَوَادِرُهُ حَتَّى دَخَلَ عَلَى خَدِيجَةَ فَقَالَ: ((زَمِّلُونِي زَمِّلُونِي)) فَزَمَّلُوهُ حَتَّى ذَهَبَ عَنْهُ الرَّوْعُ فَقَالَ: ((يَا خَدِيجَةُ مَا لِي)) وَأَخْبَرَهَا الْخَبَرَ وَقَالَ: ((قَدْ خَشِيتُ عَلَى نَفْسِي)) فَقَالَتْ لَهُ: كَلاَّ أَبْشِرْ، فَوَاللهِ لاَ يُخْزِيكَ

क़सम! ऐसा हर्गिज़ नहीं हो सकता, आप ख़ुश रहिये अल्लाह तआला आपको कभी रुस्वा नहीं करेगा। आप तो सिलह रहमी करते हैं, बात सच्ची बोलते हैं, नादारों का बोझ उठाते हैं, मेहमान नवाज़ी करते हैं और हक़ की वजह से पेश आने वाली मुसीबतों पर लोगों की मदद करते हैं। फिर आप (ﷺ) को हज़रत ख़दीजा (रज़ि.) वरक़ा बिन नाफ़ल बिन असद बिन अब्दुल उ़ज़्ज़ा बिन क़ुसई केपास लाईं जो हज़रत ख़दीजा (रज़ि.) के वालिद ख़ुवैलिद के भाई के बेटे थे। जो ज़माना-ए-जाहिलियत में ईसाई हो गये थे और अरबी लिख लेते थे और वो जितना अल्लाह तआला चाहता अरबी में इंजील का तर्जुमा लिखा करते थे, वो उस वक़्त बहुत बूढ़े हो गये थे और बीनाई भी जाती रही थी। उनसे हज़रत ख़दीजा (रज़ि.) ने कहा भाई! अपने भतीजे की बात सुनो। वरक़ा ने पूछा भतीजे तुम क्या देखते हो? आँहज़रत (ﷺ) ने जो देखा था वो सुनाया तो वरक़ा ने कहा कि ये तो वही फ़रिश्ता (जिब्रईल अलैहिस्सलाम) है जो मूसा (अलैहि.) पर आया था। काश! मैं उस वक़्त जवान होता जब तुम्हें तुम्हारी क़ौम निकाल देगी और ज़िन्दा रहता। आँहज़रत (ﷺ) ने पूछा क्या ये मुझे निकालेंगे? वरक़ा ने कहा कि हाँ। जब भी कोई नबी व रसूल वो पैग़ाम लेकर आया जिसे लेकर आप आए हैं तो उसके साथ दुश्मनी की गई और अगर मैंने तुम्हारे वो दिन पा लिये तो मैं तुम्हारी भरपूर मदद करूँगा लेकिन कुछ ही दिनों बाद वरक़ा का इंतिक़ाल हो गया और वह्य का सिलसिला कट गया और आँहज़रत (ﷺ) को उसकी वजह से इतना ग़म था कि आपने कई मर्तबा पहाड़ की बुलंद चोटी से अपने आपको गिरा देना चाहा लेकिन जब भी आप किसी पहाड़ की चोटी पर चढ़ते ताकि उस पर से अपने आपको गिरा दें तो जिब्रईल (अलैहि.) आपके सामने आ गये और कहा कि या मुहम्मद! आप यक़ीनन अल्लाह के रसूल हैं। उससे आँहज़रत (ﷺ) को सुकून होता और आप वापस आ जाते लेकिन जब वह्य ज़्यादा दिनों तक रुकी रही तो आपने एक मर्तबा और ऐसा इरादा किया लेकिन जब पहाड़ की बात फिर कही। हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा सूरह अन्आम में

الله أَبَدًا إِنَّكَ لَتَصِلُ الرَّحِمَ وَتَصْدُقُ الْحَدِيثَ وَتَحْمِلُ الْكَلَّ وَتَقْرِي الضَّيْفَ، وَتُعِينُ عَلَى نَوَائِبِ الْحَقِّ، ثُمَّ انْطَلَقَتْ بِهِ خَدِيجَةُ حَتَّى أَتَتْ بِهِ وَرَقَةَ بْنَ نَوْفَلِ بْنِ أَسَدِ بْنِ عَبْدِ الْعُزَّى بْنِ قُصَيٍّ وَهُوَ ابْنُ عَمِّ خَدِيجَةَ أَخُو أَبِيهَا، وَكَانَ امْرَأً تَنَصَّرَ فِي الْجَاهِلِيَّةِ وَكَانَ يَكْتُبُ الْكِتَابَ الْعَرَبِيَّ فَيَكْتُبُ بِالْعَرَبِيَّةِ مِنَ الإِنْجِيلِ مَا شَاءَ الله أَنْ يَكْتُبَ، وَكَانَ شَيْخًا كَبِيرًا قَدْ عَمِيَ فَقَالَتْ لَهُ خَدِيجَةُ : أَيِ ابْنَ عَمِّ اسْمَعْ مِنَ ابْنِ أَخِيكَ فَقَالَ لَهُ وَرَقَةُ : ابْنَ أَخِي مَاذَا تَرَى؟ فَأَخْبَرَهُ النَّبِيُّ ﷺ مَا رَأَى فَقَالَ وَرَقَةُ: هَذَا النَّامُوسُ الَّذِي أُنْزِلَ عَلَى مُوسَى، يَا لَيْتَنِي فِيهَا جَذَعًا أَكُونُ حَيًّا حِينَ يُخْرِجُكَ قَوْمُكَ، فَقَالَ رَسُولُ الله ﷺ: ((أَوَ مُخْرِجِيَّ هُمْ؟)) فَقَالَ وَرَقَةُ نَعَمْ لَمْ يَأْتِ رَجُلٌ قَطُّ بِمَا جِئْتَ بِهِ إِلاَّ عُودِيَ وَإِنْ يُدْرِكْنِي يَوْمُكَ أَنْصُرْكَ نَصْرًا مُؤَزَّرًا، ثُمَّ لَمْ يَنْشَبْ وَرَقَةُ أَنْ تُوُفِّيَ وَفَتَرَ الْوَحْيُ فَتْرَةً حَتَّى حَزِنَ النَّبِيُّ ﷺ فِيمَا بَلَغَنَا حُزْنًا غَدَا مِنْهُ مِرَارًا كَيْ يَتَرَدَّى مِنْ رُؤُوسِ شَوَاهِقِ الْجِبَالِ فَكُلَّمَا أَوْفَى بِذِرْوَةِ جَبَلٍ لِكَيْ يُلْقِيَ مِنْهُ نَفْسَهُ تَبَدَّى لَهُ جِبْرِيلُ فَقَالَ : يَا مُحَمَّدُ إِنَّكَ رَسُولُ الله حَقًّا، فَيَسْكُنُ لِذَلِكَ جَأْشُهُ وَتَقِرُّ نَفْسُهُ، فَيَرْجِعُ فَإِذَا طَالَتْ عَلَيْهِ فَتْرَةُ الْوَحْيِ غَدَا لِمِثْلِ ذَلِكَ فَإِذَا أَوْفَى بِذِرْوَةِ جَبَلٍ تَبَدَّى

لَهُ جِبْرِيلُ فَقَالَ لَهُ مِثْلَ ذَلِكَ. قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: فَالِقُ الإِصْبَاحِ ضَوْءُ الشَّمْسِ بِالنَّهَارِ وَضَوْءُ القَمَرِ بِاللَّيْلِ. [راجع: ٣]

लफ़्ज़ फ़ालिक़ुल इस्बाह से मुराद दिन में सूरज की रोशनी और रात में चाँद की रोशनी है। (राजेअ : 3)

यहाँ इमाम बुख़ारी (रह़.) इस ह़दीष़ को इसलिये लाए कि इसमें ये ज़िक्र है कि आपके ख़्वाब सच्चे ही हुआ करते थे। मज़हबी किताबों के दूसरी ज़ुबानों में तराजिम का सिलसिला लम्बी मुद्दत से जारी है जैसा कि ह़ज़रत वरक़ा के ह़ाल से ज़ाहिर है। उनको जन्नत में अच्छी ह़ालत में देखा गया था जो उस मुलाक़ात और उनके ईमान की बरकत थी, जो उनको ह़ासिल हुई।

٢- باب رُؤْيَا الصَّالِحِينَ

बाब 2 : स़ालिह़ीन के ख़्वाबों का बयान

وَقَوْلِهِ تَعَالَى: ﴿لَقَدْ صَدَقَ اللَّهُ رَسُولَهُ الرُّؤْيَا بِالْحَقِّ لَتَدْخُلُنَّ الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ إِنْ شَاءَ اللَّهُ آمِنِينَ مُحَلِّقِينَ رُؤُوسَكُمْ وَمُقَصِّرِينَ لاَ تَخَافُونَ فَعَلِمَ مَا لَمْ تَعْلَمُوا فَجَعَلَ مِنْ دُونِ ذَلِكَ فَتْحًا قَرِيبًا﴾ [الفتح: ٢٧].

और अल्लाह तआला ने सूरह इन्ना फ़तह़ना में फ़र्माया कि बिला शुब्हा अल्लाह तआला ने अपने रसूल का ख़्वाब सच कर दिखाया कि, यक़ीनन तुम मस्जिदे ह़राम में दाख़िल होओगे अगर अल्लाह ने चाहा अमन के साथ कुछ लोग अपने सर के बालों को मुँडवाएँगे या कुछ कतरवाएँगे और तुम्हें किसी का डर न होगा। लेकिन अल्लाह तआला को वो बात मा'लूम थी जो तुम्हें मा'लूम नहीं है फिर अल्लाह ने सरे दस्त तुमको एक फ़तह़ (फ़तहे ख़ैबर) करा दी। (सूरह फ़तह़ : 27)

तश्रीह़ : हुआ ये था कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने हुदैबिया में ये ख़्वाब देखा कि मुसलमान लोग मक्का में दाख़िल हुए हैं, कोई ह़लक़ करा रहा है, कोई क़सर, जब काफ़िरों ने आपको मक्का में न जाने दिया और क़ुर्बानी के जानवर वहीं हुदैबिया में ज़िबह कर दिये गये तो स़ह़ाबा ने कहा अगर नहीं तो आइन्दा साल पूरा होगा और परवरदिगार को अपनी मस्लिह़त ख़ूब मा'लूम है। मक्का में दाख़िल होने से पहले मुसलमानों को एक फ़तह़ करा देता उसको मुनासिब मा'लूम हुआ और वो फ़तह़ यही सुलह़ हुदैबिया है या फ़तहे ख़ैबर। ग़र्ज़ स़ह़ाबा ये समझे कि हर ख़्वाब की ता'बीर फ़ौरन ज़ाहिर होना ज़रूरी है, ये उनकी ग़लती थी। कुछ ख़्वाबों की ता'बीर सालहा साल के बाद ज़ाहिर होती है जिस त़रह़ कि ह़ज़रत यूसुफ़ (अलैहि.) ने ख़्वाब देखा था उसकी ता'बीर साठ साल बाद ज़ाहिर हुई।

٦٩٨٣- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ مَسْلَمَةَ، عَنْ مَالِكٍ، عَنْ إِسْحَاقَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي طَلْحَةَ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ: ((الرُّؤْيَا الْحَسَنَةُ مِنَ الرَّجُلِ الصَّالِحِ جُزْءٌ مِنْ سِتَّةٍ وَأَرْبَعِينَ جُزْءًا مِنَ النُّبُوَّةِ)). [طرفه في : ٦٩٩٤].

6983. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुस्लिम क़अ़म्बी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे इस्ह़ाक़ बिन अबी त़लह़ा ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया किसी नेक आदमी का अच्छा ख़्वाब नुबुव्वत का छियालीसवाँ ह़िस्सा है।

(दीगर मक़ाम : 6994)

तश्रीह़ : इन 46 ह़िस्सों का इ़ल्म अल्लाह ही को है मुम्किन है अल्लाह ने अपने रसूले पाक को भी उनसे आगाह कर दिया हो। उन ह़िस्सों की ता'दाद के बारे में मुख़्तलिफ़ रिवायात हैं जिनसे ज़्यादा से ज़्यादा नेक ख़्वाब की फ़ज़ीलत मुराद है।

बाब 3 : अच्छा ख़्वाब अल्लाह की तरफ़ से होता है

٣- باب الرُّؤْيَا مِنَ اللهِ

कुर्आनी आयत लहुमुल बुशरा फ़िल हयातिद्दन्या में ऐसी ही बशारतों पर इशारा है।

6984. हमसे अहमद बिन यूनुस ने बयान किया, कहा हमसे ज़ुहैर ने बयान किया, कहा हमसे यह्या ने जो सईद के बेटे हैं, कहा कि मैंने हज़रत अबू सलमा (रज़ि.) से सुना, कहा कि मैंने अबू क़तादा (रज़ि.) से सुना कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया (अच्छे) ख़्वाब अल्लाह की तरफ़ से होते हैं और बुरे ख़्वाब शैतान की तरफ़ से होते हैं। (राजेअ : 3292)

٦٩٨٤- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ، حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ، حَدَّثَنَا يَحْيَى هُوَ ابْنُ سَعِيدٍ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا سَلَمَةَ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا قَتَادَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((الرُّؤْيَا مِنَ اللهِ، وَالْحُلُمُ مِنَ الشَّيْطَانِ)). [راجع: ٣٢٩٢]

शैतान इंसान का बहरहाल दुश्मन है वो ख़्वाब में भी डराता है।

6985. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमसे लैष बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे इब्नुल हाद ने, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन ख़ब्बाब ने और उनसे हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने कि उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को ये फ़र्माते हुए सुना कि जब तुममें से कोई ऐसा ख़्वाब देखे जिसे वो पसंद करता हो तो वो अल्लाह की तरफ़ से होता है। उस पर अल्लाह की हम्द करे और उसे बता देना चाहिये लेकिन अगर कोई उसके सिवा कोई ऐसा ख़्वाब देखता है जो उसे नापसंद है तो ये शैतान की तरफ़ से होता है। पस उसके शर्र से पनाह मांगे और किसी से ऐसे ख़्वाब का ज़िक्र न करे। ये ख़्वाब उसे कुछ नुक़्सान नहीं पहुँचा सकेगा।

٦٩٨٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، حَدَّثَنِي ابْنُ الْهَادِ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ خَبَّابٍ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ أَنَّهُ سَمِعَ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((إِذَا رَأَى أَحَدُكُمْ رُؤْيَا يُحِبُّهَا فَإِنَّمَا هِيَ مِنَ اللهِ فَلْيَحْمَدِ اللهَ عَلَيْهَا، وَلْيُحَدِّثْ بِهَا وَإِذَا رَأَى غَيْرَ ذَلِكَ مِمَّا يَكْرَهُ فَإِنَّمَا هِيَ مِنَ الشَّيْطَانِ فَلْيَسْتَعِذْ مِنْ شَرِّهَا وَلاَ يَذْكُرْهَا لأَحَدٍ فَإِنَّهَا لاَ تَضُرُّهُ)).

बाब 4 : अच्छा ख़्वाब नुबुव्वत के 46 हिस्सों में से एक हिस्सा है

٤- باب الرُّؤْيَا الصَّالِحَةُ جُزْءٌ مِنْ سِتَّةٍ وَأَرْبَعِينَ جُزْءًا مِنَ النُّبُوَّةِ

तश्रीह : क़ौलुहू मिनन्नबुव्वति क़ाल बअ़ज़ुश्शुर्राहि कज़ा मर्र फ़ी जमीइत्तरीक़ि व लैस फ़ी शैइम्मिन्हा बिलफ़्ज़िम्मिनर्रिसालति बदलुम्मिनन्नुबुव्वति क़ाल व कानस्सिर्रू फ़ीहि अन्नर्रिसालत तज़ीदु अलन्नुबुव्वति बितब्लीग़िल अहकामि लिल मुकल्लफ़ीन बिख़िलाफ़िन्नुब्वतिल मुजर्रदति फ़इन्नहा इत्तिलाउ बअ़ज़िल मुग़ीबाति व क़द युक़र्रिरू बअ़ज़ुल अंबिया शरीअ़तम मिन क़ब्लिही वला याती बिहुक्मिन जदीदिन मुख़ालिफ़ुल लिमन क़ब्लहू फ़यूख़ज़ु मिन ज़ालिक तर्जीहुल क़ौलि बिअन्न मन राअन्नबिय्य (ﷺ) फ़िल्मनामि फ़अमरहू बिहुक्मिन युख़ालिफ़ु हुक्मुश्शर्हिल मुस्तक़र्रि फ़िज़्ज़ाहिरि अन्नहू ला यकूनु मश्रूअ़न फ़ी हक़्क़िही व ला फ़ी हक़्क़ि ग़ैरिही इला आख़िरीही. (फ़त्ह) लफ़्ज़ मिन नुबुव्वत के बारे में कुछ शारेहीन का क़ौल है तमाम तुरूक़ मे यही लफ़्ज़ वारिद है और उसके बदल मिनर्रिसालत का लफ़्ज़ मन्क़ूल नहीं है उसमें भेद ये है कि मक़ामे रिसालत नुबुव्वत से बढ़कर है रिसालत का मफ़्हूम मुकल्लिफ़ीन के लिये अहकामे शरइया की तब्लीग़ लाज़िम है बख़िलाफ़े नुबुव्वत के जिसके मा'नी सिर्फ़ कुछ ग़ैबी चीज़ों की अल्लाह की तरफ़ से ख़बर मिल जाना है। कुछ अंबिया अपने पहले के रसूलों की शरीअ़त को क़ायम करते हैं और कोई नया हुक्म नहीं लाते जो उसके पहले वाले रसूल के ख़िलाफ़ हो। इससे ये निकाला गया है कि कोई शख़्स ख़्वाब में बात रसूले करीम (ﷺ) ही से सुने जो शरीअ़त के हुक्मे ज़ाहिर के ख़िलाफ़ पड़ती हो तो वो उसके हक़ में और दूसरे पैग़म्बर के हक़ में मशरूअ़

नहीं होगा यहाँ तक कि वो उसकी तब्लीग़ का भी मुकल्लफ़ हो ऐसा नहीं है।

6986. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यह्या बिन अबी कषीर ने बयान किया और उनकी ता'रीफ़ की कि मैंने उनसे यमामा में मुलाक़ात की थी, उनसे उनके वालिद ने, उनसे अबू सलमा (रज़ि.) और उनसे अबू क़तादा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, अच्छा ख़्वाब अल्लाह की तरफ़ से होता है और बुरा ख़्वाब शैतान की तरफ़ से। पस अगर कोई बुरा ख़्वाब देखे तो उसे उससे अल्लाह की पनाह मांगनी चाहिये और बाएँ तरफ़ थूकना चाहिये ये ख़्वाब उसे कोई नुक़्सान नहीं पहुँचा सकेगा और अ़ब्दुल्लाह बिन यह्या से उनके वालिद ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन अबी क़तादा ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने नबी करीम (ﷺ) से इसी तरह बयान किया। (राजेअ : 3292)

٦٩٨٦- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يَحْيَى بْنِ أَبِي كَثِيرٍ وَأَثْنَى عَلَيْهِ خَيْرًا، لَقِيتُهُ بِالْيَمَامَةِ عَنْ أَبِيهِ، حَدَّثَنَا أَبُو سَلَمَةَ، عَنْ أَبِي قَتَادَةَ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((الرُّؤْيَا الصَّالِحَةُ مِنَ اللهِ، وَالْحُلْمُ مِنَ الشَّيْطَانِ فَإِذَا حَلِمَ أَحَدُكُمْ فَلْيَتَعَوَّذْ مِنْهُ وَلْيَبْصُقْ عَنْ شِمَالِهِ فَإِنَّهَا لاَ تَضُرُّهُ)). وَعَنْ أَبِيهِ حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ أَبِي قَتَادَةَ عَنْ أَبِيهِ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ مِثْلَهُ. [راجع: ٣٢٩٢]

तश्रीह : इस ह़दीष़ को इस बाब में लाने की वजह ज़ाहिर नहीं हुई। ज़रकशी ने ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) पर ए'तिराज़ किया है कि ये ह़दीष़ इस बाब से ग़ैर मुता'ल्लिक़ है। मैं कहता हूँ ज़रकशी ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) की तरह दिक़्क़ते नज़र कहाँ से लाते, इसीलिये ए'तिराज़ कर बैठे। इमाम बुख़ारी (रह़.) शुरू में ये ह़दीष़ इसलिये लाए कि आगे की ह़दीष़ में जिस ख़्वाब की निस्बत ये बयान हुआ है कि वो नुबुव्वत के 46 ह़िस़्स़ों में से एक ह़िस़्स़ा है, इससे मुराद अच्छा ख़्वाब है जो अल्लाह की तरफ़ से होता है क्योंकि जो ख़्वाब शैतान की तरफ़ से हो वो नुबुव्वत का जुज़ नहीं हो सकता। ख़्वाब को मुस्लिम की रिवायत में नुबुव्वत के 45 ह़िस़्स़ों में से एक ह़िस़्स़ा और एक रिवायत में सत्तर ह़िस़्स़ों मे से एक ह़िस़्स़ा और तबरानी की रिवायत 76 ह़िस़्स़ों में से एक ह़िस़्स़ा, इब्ने अ़ब्दुल बर्र की रिवायत 26 ह़िस़्स़ों में से एक ह़िस़्स़ा, तबरी की रिवायत में 44 ह़िस़्स़ों में से एक ह़िस़्स़ा मज़्कूर है। ये इख़्तिलाफ़ इस वजह से है कि रोज़ रोज़ आँह़ज़रत (ﷺ) के उ़लूमे नुबुव्वत में तरक़्क़ी होती जाती और नुबुव्वत के नये नये ह़िस़्स़े मा'लूम होते जाते जितना जितना इ़ल्म बढ़ताा जाता उतने ही ह़िस़्स़ों में इज़ाफ़ा हो जाता। क़स्तलानी ने कहा 46 ह़िस़्स़ों की रिवायत ही ज़्यादा मशहूर है। (वह़ीदी)

6987. हमसे मुह़म्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे ग़ुन्दर ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे क़तादा ने, उनसे ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने और उनसे ह़ज़रत उ़बादह बिन स़ामित (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया मोमिन का ख़्वाब नुबुव्वत के 46 ह़िस़्स़ों में से एक ह़िस़्स़ा होता है।

٦٩٨٧- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، عَنْ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((رُؤْيَا الْمُؤْمِنِ جُزْءٌ مِنْ سِتَّةٍ وَأَرْبَعِينَ جُزْءًا مِنَ النُّبُوَّةِ)).

6988. हमसे यह्या बिन क़ज़आ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इब्राहीम बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे ज़ुह्री ने बयान किया, उनसे सईद बिन मुसय्यब ने बयान किया, और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूले

٦٩٨٨- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ قَزَعَةَ، حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ

عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((رُؤْيَا الْمُؤْمِنِ جُزْءٌ مِنْ سِتَّةٍ وَأَرْبَعِينَ جُزْءًا مِنَ النُّبُوَّةِ)). رَوَاهُ ثَابِتٌ وَحُمَيْدٌ وَإِسْحَاقُ بْنُ عَبْدِ اللهِ وَشُعَيْبٌ عَنْ أَنَسٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ.

[طرفه في : ٧٠١٧].

करीम (ﷺ) ने फ़र्माया मोमिन का ख़्वाब नुबुव्वत के 4 6 हिस्सों में से एक हिस्सा होता है। इसकी रिवायत षाबित, हुमैद, इस्हाक़ बिन अ़ब्दुल्लाह और शुऐ़ब ने ह़ज़रत अनस (रज़ि.) से की, उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से। (दीगर मक़ाम : 7017)

٦٩٨٩- حَدَّثَنِي إِبْرَاهِيمُ بْنُ حَمْزَةَ، حَدَّثَنِي ابْنُ أَبِي حَازِمٍ وَالدَّرَاوَرْدِيُّ، عَنْ يَزِيدَ بْنِ عَبْدِ اللهِ خَبَّابٍ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((الرُّؤْيَا الصَّالِحَةُ جُزْءٌ مِنْ سِتَّةٍ وَأَرْبَعِينَ جُزْءًا مِنَ النُّبُوَّةِ)).

6989. हमसे इब्राहीम बिन हम्ज़ा ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इब्राहीम बिन अबी हाज़िम और अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ दरावर्दी ने बयान किया, उनसे यज़ीद बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन ख़ब्बाब ने, उनसे ह़ज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने बयान किया कि उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को ये फ़र्माते हुए सुना कि नेक ख़्वाब नुबुव्वत के 46 हिस्सों में से एक हिस्सा है।

٥- باب الْمُبَشِّرَاتِ

बाब 5 : मुबश्शिरात का बयान

अच्छे ख़्वाब जो अल्लाह की त़रफ़ से ख़ुशख़बरियाँ होते हैं।

٦٩٩٠- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، حَدَّثَنِي سَعِيدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((لَمْ يَبْقَ مِنَ النُّبُوَّةِ إِلاَّ الْمُبَشِّرَاتُ)) قَالُوا: وَمَا الْمُبَشِّرَاتُ؟ قَالَ: ((الرُّؤْيَا الصَّالِحَةُ)).

6990. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको शुऐ़ब ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुह्री ने, कहा मुझसे सईद बिन मुसय्यब ने बयान किया, उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना, आपने फ़र्माया कि नुबुव्वत में से सिर्फ़ अब मुबश्शिरात बाक़ी रह गई हैं। स़हाबा ने पूछा कि मुबश्शिरात क्या हैं? आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अच्छे ख़्वाब।

जिनके ज़रिये बशारतें मिलती हैं। औलिया अल्लाह के बारे में आयत, **लहुमुल बुश्रा फ़िल ह़यातिद्दुनिया** में उन ही मुबश्शिरात का ज़िक्र है। जिस दिन से ख़िदमते क़ुर्आन मजीद व बुख़ारी शरीफ़ का काम शुरू किया है बहुत से मुबश्शिरात अल्लाह ने ख़्वाब में दिखलाए हैं।

٦- باب رُؤْيَا يُوسُفَ

बाब 6 : ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लैहि.) के ख़्वाब का बयान

وَقَوْلِهِ تَعَالَى: ﴿إِذْ قَالَ يُوسُفُ لأَبِيهِ: يَا أَبَتِ إِنِّي رَأَيْتُ أَحَدَ عَشَرَ كَوْكَبًا وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ رَأَيْتُهُمْ لِي سَاجِدِينَ. قَالَ يَا بُنَيَّ لاَ تَقْصُصْ رُؤْيَاكَ عَلَى إِخْوَتِكَ فَيَكِيدُوا لَكَ كَيْدًا إِنَّ الشَّيْطَانَ لِلإِنْسَانِ

और अल्लाह तआ़ला ने सूरह यूसुफ़ में फ़र्माया, जब ह़ज़रत यूसुफ़ ने अपने वालिद से कहा कि या अब्बू! मैंने ग्यारह सितारों और सूरज और चाँद को (ख़्वाब में) देखा। देखता हूँ कि वो मेरे आगे सज्दा कर रहे हैं। वो बोले, मेरे प्यारे बेटे! अपने इस ख़्वाब को अपने भाईयों के सामने बयान न करना वरना वो तुम्हारी दुश्मनी में तुमको तकलीफ़ देने के लिये कोई चाल चलेंगे। बेशक शैत़ान तो इंसान का खुला दुश्मन है और

عَدُوٌّ مُبِينٌ. وَكَذَلِكَ يَجْتَبِيكَ رَبُّكَ وَيُعَلِّمُكَ مِنْ تَأْوِيلِ الأَحَادِيثِ وَيُتِمُّ نِعْمَتَهُ عَلَيْكَ وَعَلَى آلِ يَعْقُوبَ كَمَا أَتَمَّهَا عَلَى أَبَوَيْكَ مِنْ قَبْلُ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْحَاقَ إِنَّ رَبَّكَ عَلِيمٌ حَكِيمٌ﴾ [يوسف : ٤-٦] وَقَوْلِهِ تَعَالَى: ﴿يَا أَبَتِ هَذَا تَأْوِيلُ رُؤْيَايَ مِنْ قَبْلُ قَدْ جَعَلَهَا رَبِّي حَقًّا وَقَدْ أَحْسَنَ بِي إِذْ أَخْرَجَنِي مِنَ السِّجْنِ وَجَاءَ بِكُمْ مِنَ الْبَدْوِ مِنْ بَعْدِ أَنْ نَزَغَ الشَّيْطَانُ بَيْنِي وَبَيْنَ إِخْوَتِي إِنَّ رَبِّي لَطِيفٌ لِمَا يَشَاءُ إِنَّهُ هُوَ الْعَلِيمُ الْحَكِيمُ. رَبِّ قَدْ آتَيْتَنِي مِنَ الْمُلْكِ وَعَلَّمْتَنِي مِنْ تَأْوِيلِ الأَحَادِيثِ فَاطِرَ السَّمَاوَاتِ وَالأَرْضِ أَنْتَ وَلِيِّي فِي الدُّنْيَا وَالآخِرَةِ تَوَفَّنِي مُسْلِمًا وَأَلْحِقْنِي بِالصَّالِحِينَ﴾ [يوسف: ١٠٠-١٠١] فَاطِرٌ وَالْبَدِيعُ وَالْمُبْدِعُ وَالْبَارِئُ وَالْخَالِقُ وَاحِدٌ مِنَ الْبَدْءِ بَادِئَةٌ.

इसी त़रह़ तुम्हारा परवरदिगार तुम्हें मेरी औलाद में से चुन लेगा और तुम्हें ख़्वाबों की ता'बीर सिखाएगा और जैसे उसने अपना एह़सान मुझ पर और तेरे दादा पर पहले पूरा किया इसी त़रह़ तुझ पर और यअ़क़ूब की औलाद पर अपना अह़सान पूरा करेगा (पैग़म्बरी अ़त़ा करेगा) बेशक तुम्हारा परवरदिगार बड़ा इल्म वाला है बड़ा ह़िक्मत वाला है। और अल्लाह तआ़ला ने सूरह यूसुफ़ में फ़र्माया, और यूसुफ़ (अ़लैहि.) ने कहा, ऐ मेरे अब्बू! ये मेरे पहले ख़्वाब की ता'बीर है उसे मेरे परवरदिगार ने सच कर दिखाया और उसी ने मेरे साथ कैसा एह़सान उस वक़्त किया जब मुझे क़ैदख़ाने से निकाला और आप सबको जंगल से ले आया बाद उसके कि शैत़ान ने मेरे और मेरे भाईयों के बीच फ़साद डलवा दिया था बेशक मेरा परवरदिगार जो चाहता है उसकी उ़म्दह तदबीर कर देता है। बेशक वही है इल्म वाला ह़िक्मत वाला। ऐ रब! तूने मुझे हुकूमत भी दी और ख़्वाबों की ता'बीर का इल्म भी दिया। ऐ आसमानों और ज़मीन के ख़ालिक़! तू ही मेरा कारसाज़ दुनिया व आख़िरत में है। मुझे दुनिया से अपना फ़र्मांबरदार उठा और मुझे स़ालिह़ीन में मिला दे। (यूसुफ़ः 100, 101) फ़ात़िर बदीअ़ मुब्तदिअ़ बारी व ख़ालिक़ हम मा'नी हैं, बदअ बादिया से है, या'नी जंगल और देहात।

٧- باب رُؤْيَا إِبْرَاهِيمَ

बाब 7 : ह़ज़रत इब्राहीम (अ़.) के ख़्वाब का बयान

وَقَوْلِهِ تَعَالَى: ﴿فَلَمَّا بَلَغَ مَعَهُ السَّعْيَ قَالَ يَا بُنَيَّ إِنِّي أَرَى فِي الْمَنَامِ أَنِّي أَذْبَحُكَ فَانْظُرْ مَاذَا تَرَى قَالَ: يَا أَبَتِ افْعَلْ مَا تُؤْمَرُ سَتَجِدُنِي إِنْ شَاءَ اللهُ مِنَ الصَّابِرِينَ. فَلَمَّا أَسْلَمَا وَتَلَّهُ لِلْجَبِينِ وَنَادَيْنَاهُ أَنْ يَا إِبْرَاهِيمُ قَدْ صَدَّقْتَ الرُّؤْيَا إِنَّا كَذَلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ﴾ [الصافات ١٠٢-١٠٥] قَالَ مُجَاهِدٌ : أَسْلَمَا سَلَّمَا مَا أُمِرَا

और अल्लाह तआ़ला ने सूरह वस्स़ाफ़्फ़ात में फ़र्माया, पस जब इस्माईल इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) के साथ चलने फिरने के क़ाबिल हुए तो इब्राहीम ने कहा ऐ मेरे बेटे! मैं ख़्वाब में देखता हूँ कि मैं तुम्हें ज़िब्ह़ कर रहा हूँ पस तुम्हारी क्या राय है? इस्माईल ने जवाब दिया मेरे वालिद! आप कीजिए उसके मुत़ाबिक़ जो आपको हुक्म दिया जाता है, अल्लाह ने चाहा तो आप मुझे स़ब्र करने वालों में से पाएँगे। पस जबकि वो दोनों तैयार हो गये और उसे पेशानी के बल पछाड़ा और मैंने उसे आवाज़ दी कि ऐ इब्राहीम! तूने अपने ख़्वाब को सचकर दिखाया बिला शुब्हा मैं इसी त़रह़ एह़सान करने वालों को बदला देता हूं। मुजाहिद ने

कहा कि असलमा का मतलब ये है कि दोनों झुक गये उस हुक्म के सामने जो उन्हें दिया गया था। वतल्लहु या'नी उनका मुँह ज़मीन से लगा दिया, औंधा लिटा दिया।

بِهِ وَتَلَّهُ وَضَعَ وَجْهَهُ بِالأَرْضِ.

बाब 8 : ख़्वाब का तवारुद या'नी एक ही ख़्वाब कई आदमी देखें

٨- باب التَّوَاطُؤِ عَلَى الرُّؤْيَا

6991. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे अ़क़ील ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उनसे सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह ने, उनसे इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने कि कुछ लोगों को ख़्वाब में शबे क़द्र (रमज़ान की) सात आख़िरी तारीख़ों में दिखाई गई और कुछ लोगों को दिखाई गई कि वो आख़िरी दस तारीख़ों में होगी तो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि उसे आख़िरी सात तारीखों में तलाश करो। (राजेअ़ : 1158)

٦٩٩١- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ عُقَيْلٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ سَالِمِ بْنِ عَبْدِ اللهِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ أُنَاسًا أُرُوا لَيْلَةَ الْقَدْرِ فِي السَّبْعِ الأَوَاخِرِ وَأَنَّ أُنَاسًا أُرُوهَا فِي الْعَشْرِ الأَوَاخِرِ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((الْتَمِسُوهَا فِي السَّبْعِ الأَوَاخِرِ)). [راجع: ١١٥٨]

बाब 9 : क़ैदियों और अहले शिर्क व फ़साद के ख़्वाब का बयान

٩- باب رُؤْيَا أَهْلِ السُّجُونِ وَالْفَسَادِ وَالشِّرْكِ

अल्लाह तआ़ला ने फ़र्माया कि, और (यूसुफ़) के साथ जैलख़ान में दो और जवान क़ैदी दाख़िल हुए। उनमें से एक ने कहा कि मैं ख़्वाब में क्या देखता हूँ कि मैं अंगूर का शीरा निचोड़ रहा हूँ और दूसरे ने कहा कि मैं क्या देखता हूँ कि अपने सर पर खान में रोटियाँ उठाए हुए हूँ, उसमें से परिन्दे नोच नोचकर खा रहे हैं। आप हमको उनकी ता'बीर बताइये, बेशक हम तो आपको बुज़ुर्गों में से पाते हैं? वो बोले जो खाना तुम दोनों के खाने के लिये आता है वो अभी आने न पाएगा कि मैं इसकी ता'बीर तुमसे बयान कर दूँगा। उससे पहले कि खाना तुम दोनों के पास आए ये उसमें से है जिसकी मेरे परवरदिगार में मुझे ता'लीम दी है मैं तो उन लोगों का मज़हब पहले ही से छोड़े हुए हूँ जो अल्लाह पर ईमान नहीं रखते और आख़िरत के वो इंकारी हैं और मैंने तो अपने बुज़ुर्गों इब्राहीम और यअ़क़ूब और इस्हाक़ का दीन इख़्तियार कर रखा है। हमको किसी तरह लायक़ नहीं कि अल्लाह के साथ हम किसी को भी शरीक क़रार दें। ये अल्लाह का फ़ज़्ल है हमारे ऊपर और तमाम लोगों के ऊपर लेकिन अकष़र लोग

لِقَوْلِهِ تَعَالَى: ﴿وَدَخَلَ مَعَهُ السِّجْنَ فَتَيَانِ قَالَ أَحَدُهُمَا: إِنِّي أَرَانِي أَعْصِرُ خَمْرًا وَقَالَ الآخَرُ: إِنِّي أَرَانِي أَحْمِلُ فَوْقَ رَأْسِي خُبْزًا تَأْكُلُ الطَّيْرُ مِنْهُ نَبِّئْنَا بِتَأْوِيلِهِ إِنَّا نَرَاكَ مِنَ الْمُحْسِنِينَ قَالَ: لاَ يَأْتِيكُمَا طَعَامٌ تُرْزَقَانِهِ إِلاَّ نَبَّأْتُكُمَا بِتَأْوِيلِهِ قَبْلَ أَنْ يَأْتِيَكُمَا ذَلِكُمَا مِمَّا عَلَّمَنِي رَبِّي إِنِّي تَرَكْتُ مِلَّةَ قَوْمٍ لاَ يُؤْمِنُونَ بِاللهِ وَهُمْ بِالآخِرَةِ هُمْ كَافِرُونَ وَاتَّبَعْتُ مِلَّةَ آبَائِي إِبْرَاهِيمَ وَإِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ مَا كَانَ لَنَا أَنْ نُشْرِكَ بِاللهِ مِنْ شَيْءٍ ذَلِكَ مِنْ فَضْلِ اللهِ عَلَيْنَا وَعَلَى النَّاسِ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لاَ يَشْكُرُونَ يَا صَاحِبَيِ السِّجْنِ أَأَرْبَابٌ

مُتَفَرِّقُونَ﴾ [يوسف: ٣٦- ٣٩]وَقَالَ الْفُضَيْلُ لِبَعْضِ الأَتْبَاعِ: يَا عَبْدَ اللهِ ﴿أَأَرْبَابٌ مُتَفَرِّقُونَ خَيْرٌ أَمِ اللهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ مَا تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِهِ إِلاَّ أَسْمَاءً سَمَّيْتُمُوهَا أَنْتُمْ وَآبَاؤُكُمْ مَا أَنْزَلَ اللهُ بِهَا مِنْ سُلْطَانٍ إِنِ الْحُكْمُ إِلاَّ للهِ أَمَرَ أَنْ لاَ تَعْبُدُوا إِلاَّ إِيَّاهُ ذَلِكَ الدِّينُ الْقَيِّمُ وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لاَ يَعْلَمُونَ يَا صَاحِبَيِ السِّجْنِ أَمَّا أَحَدُكُمَا فَيَسْقِي رَبَّهُ خَمْرًا وَأَمَّا الآخَرُ فَيُصْلَبُ فَتَأْكُلُ الطَّيْرُ مِنْ رَأْسِهِ قُضِيَ الأَمْرُ الَّذِي فِيهِ تَسْتَفْتِيَانِ وَقَالَ لِلَّذِي ظَنَّ أَنَّهُ نَاجٍ مِنْهُمَا اذْكُرْنِي عِنْدَ رَبِّكَ فَأَنْسَاهُ الشَّيْطَانُ ذِكْرَ رَبِّهِ فَلَبِثَ فِي السِّجْنِ بِضْعَ سِنِينَ وَقَالَ الْمَلِكُ إِنِّي أَرَى سَبْعَ بَقَرَاتٍ سِمَانٍ يَأْكُلُهُنَّ سَبْعٌ عِجَافٌ وَسَبْعَ سُنْبُلاَتٍ خُضْرٍ وَأُخَرَ يَابِسَاتٍ يَا أَيُّهَا الْمَلأُ أَفْتُونِي فِي رُؤْيَايَ إِنْ كُنْتُمْ لِلرُّؤْيَا تَعْبُرُونَ قَالُوا: أَضْغَاثُ أَحْلاَمٍ وَمَا نَحْنُ بِتَأْوِيلِ الأَحْلاَمِ بِعَالِمِينَ وَقَالَ الَّذِي نَجَا مِنْهُمَا وَادَّكَرَ بَعْدَ أُمَّةٍ أَنَا أُنَبِّئُكُمْ بِتَأْوِيلِهِ فَأَرْسِلُونِ يُوسُفُ أَيُّهَا الصِّدِّيقُ أَفْتِنَا فِي سَبْعِ بَقَرَاتٍ سِمَانٍ يَأْكُلُهُنَّ سَبْعٌ عِجَافٌ وَسَبْعِ سُنْبُلاَتٍ خُضْرٍ وَأُخَرَ يَابِسَاتٍ لَعَلِّي أَرْجِعُ إِلَى النَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَعْلَمُونَ قَالَ: تَزْرَعُونَ سَبْعَ سِنِينَ دَأَبًا فَمَا حَصَدْتُمْ فَذَرُوهُ فِي سُنْبُلِهِ إِلاَّ قَلِيلاً مِمَّا تَأْكُلُونَ ثُمَّ يَأْتِي مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ سَبْعٌ شِدَادٌ يَأْكُلْنَ مَا

इस नेअ़मत का शुक्र अदा नहीं करते। ऐ मेरे क़ैदी भाईयों! जुदा जुदा बहुत से मा'बूद अच्छे या अल्लाह! अकेला अच्छा जो सब पर ग़ालिब है? तुम लोग तो उसे छोड़कर बस चंद फ़र्ज़ी ख़ुदाओं की इबादत करते हो जिनके नाम तुमने और तुम्हारे बाप दादाओं ने रख लिये हैं। अल्लाह ने कोई भी दलील इस पर नहीं उतारी। हुक्म सिर्फ़ अल्लाह ही का है। उसी ने हुक्म दिया है कि सिवा उसके किसी की पूजापाठ न करो। यही दीन सीधा है लेकिन अकषर लोग इल्म नहीं रखता। ऐ मेरे दोस्तों! तुममें से एक तो अपने आक़ा को शराब मुलाज़िम बनकर पिलाया करेगा और रहा दूसरा तो उसे सूली दी जाएगी। फिर उसके सर को परिन्दे खाएँगे। वो काम उसी तरह लिखा जा चुका है जिसकी बाबत तुम दोनों पूछ रहे हो और दोनों में से जिसके बारे में रिहाई का यक़ीन था उससे कहा कि मेरा भी ज़िक्र अपने आक़ा के सामने कर देना लेकिन उसे अपने आक़ा से ज़िक्र करना शैतान ने भुला दिया तो वो जैलख़ान में कई साल तक रहे और बादशाह ने कहा कि मैं ख़्वाब में क्या देखता हूँ कि सात मोटी गायें हैं और उन्हें खाए जाती हैं सात दुबली गायें और सात बालियाँ सब्ज़ हैं और सात ही ख़ुश्क। ऐ सरदारों! मुझे इस ख़्वाब की ता'बीर बताओ अगर तुम ख़्वाब की ता'बीर दे लेते हो। उन्होंने कहा कि ये तो परेशान ख़्वाब हैं और हम परेशान ख़्वाबों की ता'बीर के माहिर नहीं हैं और दो क़ैदियों में से जिसको रिहाई मिल गई थी वो बोला और उसे एक मुद्दत के बाद याद पड़ा कि मैं अभी इसकी ता'बीर लाए देता हूँ, ज़रा मुझे जाने दीजिए। ऐ यूसुफ़! ऐ ख़्वाबों की सच्ची ता'बीर देने वाले! हम लोगों को मतलब तो बताइये इस ख़्वाब का कि सात गायें मोटी हैं और उन्हें सात दुबली गायें खाए जाती हैं और सात बालियाँ सब्ज़ (हरी) हैं और सात ही और ख़ुश्क ताकि मैं लोगों के पास जाऊँ कि उनको भी मा'लूम हो जाए। (यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने) कहा तुम सात साल बराबर काश्तकारी किये जाओ फिर जो फ़सल काटो उसे उसकी बालों ही मे लगा रहने दो बजुज़ थोड़ी मिक़्दार के कि उसी को खाओ फिर उसके बाद सात साल सख़्त आएँगे कि उस ज़ख़ीर को खा जाएँगे जो तुमने जमा कर रखा है बजुज़ उस थोड़ी मिक़्दार के जो तुम बीज के लिये रख छोड़ोगे फिर

उसके बाद एक साल आएगा जिसमे लोगों के लिये ख़ूब बारिश होगी और उसमें वो शीरा भी निचोड़ेंगे और बादशाह ने कहा कि यूसुफ़ को मेरे पास तो लाओ फिर जब क़ासिद उनके पास पहुँचा तो (यूसफ़ अ. ने) कहा कि अपने आक़ा के पास वापस जाओ। वद्दकर ज़कर से इफ़्तिआल के वज़न पर है। उम्मत (बिसकून मीम) बमा'नी क़र्न या'नी ज़माना है और कुछ ने उम्मत (मीम के नस़ब केसाथ) पढ़ा है और इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा कि यअसिरून का मा'नी अंगूर निचोड़ेंगे और तैल निकालेंगे। तुहस़िनून अय तहरुसून या'नी हिफ़ाज़त करोगे।

قَدَّمْتُمْ لَهُنَّ إِلاَّ قَلِيلاً مِمَّا تُحْصِنُونَ ثُمَّ يَأْتِي مِنْ بَعْدِ ذَلِكَ عَامٌ فِيهِ يُغَاثُ النَّاسُ وَفِيهِ يَعْصِرُونَ وَقَالَ الْمَلِكُ: ائْتُونِي بِهِ فَلَمَّا جَاءَهُ الرَّسُولُ قَالَ: ارْجِعْ إِلَى رَبِّكَ﴾ [يوسف : ٤٩-٥٠]
وَادَّكَرَ: افْتَعَلَ مِنْ ذَكَرَ. أُمَّةٍ قَرْنٍ وَيُقْرَأ: أَمَهٍ نِسْيَانٍ، وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: يَعْصِرُونَ الأَعْنَابَ وَالدُّهْنَ. تُحْصِنُونَ : تَحْرُسُونَ.

तश्रीह : अल्लाह पाक ने ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लैहि.) को ख़्वाबों की ता'बीर का मुअजिज़ा अ़ता फ़र्माया था उनके ह़ालात के लिये सूरह यूसुफ़ का बग़ौर मुतालआ करने वालों को बहुत से सबक़ ह़ासिल हो सकते हैं और ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लैहि.) की इन्क़िलाबी ज़िंदगी वजहे बस़ीरत बन सकती है। बचपन में बिरादरों की बेवफ़ाई का शिकार होना, मिस्र में जाकर गुलाम बनकर फ़रोख़्त होना और अ़ज़ीज़े मिस्र के घर जाकर एक और कड़ी आज़माइश से गुज़रना फिर वहाँ इक़्तिदार का मिलना और ख़ानदान को मिस्र बुलाना तमाम काम बहुत ही ग़ौरतलब ह़ालात हैं।

6992. हमसे अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे जुवैरिया ने बयान किया, उनसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे ज़ुह्री ने बयान किया, उन्हें सईद बिन मुसय्यब और अबू उ़बैदह ने ख़बरदी और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया अगर मैं इतने दिनों क़ैद में रहता जितने दिनो यूसुफ़ (अलैहि.) क़ैद रहे और फिर मेरे पास क़ासिद बुलाने आता तो मैं उसकी दा'वत क़ुबूल कर लेता। (राजेअ़ : 3372)

٦٩٩٢- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ، حَدَّثَنَا جُوَيْرِيَةُ، عَنْ مَالِكٍ، عَنِ الزُّهْرِيِّ أَنَّ سَعِيدَ بْنَ الْمُسَيَّبِ وَأَبَا عُبَيْدٍ أَخْبَرَاهُ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((لَوْ لَبِثْتُ فِي السِّجْنِ مَا لَبِثَ يُوسُفُ ثُمَّ أَتَانِي الدَّاعِيَ لأَجَبْتُهُ)). [راجع: ٣٣٧٢]

मगर ह़ज़रत यूसुफ़ (अ़लैहि.) का जिगर व ह़ौसला था कि इतनी मुद्दत के बाद भी मामले की स़फ़ाई तक जैल से निकलना पसंद नहीं किया।

बाब 10 : नबी करीम (ﷺ) को ख़्वाब में देखना

١٠- باب مَنْ رَأَى النَّبِيَّ ﷺ فِي الْمَنَامِ

6993. हमसे अ़ब्दान ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुल्लाह ने ख़बर दी, उन्हें यूनुस ने, उन्हें ज़ुह्री ने, कहा मुझसे अबू सलमा ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना, आपने फ़र्माया कि जिसने मुझे ख़्वाब में देखा तो किसी दिन मुझे बेदारी में भी देखेगा और

٦٩٩٣- حَدَّثَنَا عَبْدَانُ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ، عَنْ يُونُسَ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، حَدَّثَنِي أَبُو سَلَمَةَ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ

ﷺ يَقُولُ: ((مَنْ رَآنِي فِي الْمَنَامِ فَسَيَرَانِي فِي الْيَقَظَةِ، وَلاَ يَتَمَثَّلُ الشَّيْطَانُ بِي)). قَالَ أَبُو عَبْدِ اللهِ : قَالَ ابْنُ سِيرِينَ إِذَا رَآهُ فِي صُورَتِهِ. [راجع: ١١٠]

शैतान मेरी सूरत में नहीं आ सकता। अबू अ़ब्दुल्लाह (ह़ज़रत इमाम बुख़ारी रह.) ने कहा कि इब्ने सीरीन ने बयान किया कि जब आँह़ज़रत (ﷺ) को कोई शख़्स आपकी सूरत में देखे। (राजेअ़ : 110)

तो वो आँह़ज़रत (ﷺ) ही होंगे।

٦٩٩٤- حَدَّثَنَا مُعَلَّى بْنُ أَسَدٍ عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ مُخْتَارٍ، حَدَّثَنَا ثَابِتٌ الْبُنَانِيُّ، عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((مَنْ رَآنِي فِي الْمَنَامِ فَقَدْ رَآنِي، فَإِنَّ الشَّيْطَانَ لاَ يَتَمَثَّلُ بِي وَرُؤْيَا الْمُؤْمِنِ جُزْءٌ مِنْ سِتَّةٍ وَأَرْبَعِينَ جُزْءًا مِنَ النُّبُوَّةِ)). [راجع: ٦٩٨٣]

6994. हमसे मुअ़ल्ला बिन असद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन मुख़्तार ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे ष़ाबित बिनानी ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जिसने मुझे ख़्वाब में देखा तो उसने वाक़ई देखा क्योंकि शैत़ान मेरी सूरत में नहीं आ सकता और मोमिन का ख़्वाब नुबुव्वत के 46 ह़िस्सों में से एक जुज़ होता है। (राजेअ़ : 6983)

٦٩٩٥- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ أَبِي جَعْفَرٍ أَخْبَرَنِي أَبُو سَلَمَةَ عَنْ أَبِي قَتَادَةَ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ ((الرُّؤْيَا الصَّالِحَةُ مِنَ اللهِ، وَالْحُلْمُ مِنَ الشَّيْطَانِ، فَمَنْ رَأَى شَيْئًا يَكْرَهُهُ فَلْيَنْفِثْ عَنْ شِمَالِهِ ثَلاَثًا وَلْيَتَعَوَّذْ مِنَ الشَّيْطَانِ فَإِنَّهَا لاَ تَضُرُّهُ وَإِنَّ الشَّيْطَانَ لاَ يَتَرَايَا بِي)). [راجع: ٣٢٩٢]

6995. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे उ़बैदुल्लाह बिन अबी जा'फ़र ने, कहा मुझको ह़ज़रत अबू सलमा (रज़ि.) ने ख़बर दी और उनसे अबू क़तादा (रज़ि.) ने बयान किया नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, स़ालेह़ ख़्वाब अल्लाह की त़रफ़ से होते हैं और बुरे ख़्वाब शैत़ान की त़रफ़ से पस जो शख़्स कोई बुरा ख़्वाब देखे तो अपने बाएँ त़रफ़ करवट लेकर तीन मर्तबा थू थू करे और शैत़ान से अल्लाह की पनाह मांगे वो बुरा ख़्वाब उसको नुक़्सान नहीं देगा और शैत़ान कभी मेरी शक्ल में नहीं आ सकता। (राजेअ़ : 3292)

٦٩٩٦- حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ خَلِيٍّ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنِي الزُّبَيْدِيُّ، عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ أَبُو سَلَمَةَ: قَالَ أَبُو قَتَادَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((مَنْ رَآنِي فَقَدْ رَأَى الْحَقَّ))، تَابَعَهُ يُونُسُ وَابْنُ أَخِي الزُّهْرِيِّ. [راجع: ٣٢٩٢]

6996. हमसे ख़ालिद बिन ख़ली ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे मुह़म्मद बिन ह़र्ब ने बयान किया, उन्होंने कहा मुझसे ज़ुबैदी ने बयान किया, उनसे ज़ुह्री ने बयान किया, उनसे ह़ज़रत अबू सलमा (रज़ि.) ने औरउनसे ह़ज़रत अबू क़तादा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जिसने मुझे देखा उसने ह़क़ देखा। इस रिवायत की मुताबअ़त यूनुस ने और ज़ुह्री के भतीजे ने की। (राजेअ़ : 3292)

٦٩٩٧- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ،

6997. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने

कहा हमसे लैष़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इब्नुल हाद ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन ख़ब्बाब ने बयान किया, उनसे हज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने बयान किया, उन्होंने नबी करीम (ﷺ) को ये कहते सुना कि जिसने मुझे देखा उसने ह़क़ देखा क्योंकि शैतान मुझ जैसा नहीं बन सकता।

حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، حَدَّثَنِي ابْنُ الْهَادِ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ خَبَّابٍ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ سَمِعَ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((مَنْ رَآنِي فَقَدْ رَأَى الْحَقَّ، فَإِنَّ الشَّيْطَانَ لاَ يَتَكَوَّنُنِي)).

ख़्वाब में आँह़ज़रत (ﷺ) की ज़ियारत का हो जाना बड़ी ख़ुशनसीबी है, मुबारकबादी हो उनको जिनको ये रूहानी मुबारका ह़ासिल हो। **अल्लाहुम्मर्ज़ुक़्ना शफ़ाअ़त यौमुल क़ियामह आमीन या रब्बल आ़लमीन।**

बाब 11 : रात के ख़्वाब का बयान

١١- باب رُؤْيَا اللَّيْلِ

इस ह़दीष़ को समुरह ने रिवायत किया है।

رَوَاهُ سَمُرَةُ.

तश्रीह : ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) का मत़लब इस बाब से ये है कि रात और दिन दोनों का ख़्वाब मुअ़तबर और बराबर है। इमाम बुख़ारी (रह़.) ने ह़ज़रत अबू सईद की ह़दीष़ की त़रफ़ इशारा किया है कि रात का ख़्वाब ज़्यादा सच्चा होता है, वल्लाहु आलम बिस्सवाब। मफ़ातीहुल क़लिम का मत़लब ये हुआ कि बातों में अल्फ़ाज़ मुख़्तसर और मआ़नी बेइंतिहा होते हैं। कुछ रिवायतों में जवामेउ़ल कलिम के लफ़्ज़ हैं इससे मुराद वो मुल्क हैं जहाँ इस्लाम की हुकूमत पहुँची और मुसलमानों ने उनको फ़त्ह़ किया। ये ह़दीष़ आपकी नुबुव्वत की मुकम्मल दलील है कि ऐसी पेशीनगोई पैग़म्बर के सिवा और कोई नहीं कर सकता तन्क़िलूनहा का मत़लब अब तुम इन कुंजियों को ले रहे हो।

6998. हमसे अह़मद बिन मिक़्दाम ने बयान किया, कहा हमसे मुह़म्मद बिन अ़ब्दुर्रह़मान त़फ़ावी ने बयान किया, उनसे अय्यूब ने बयान किया, उनसे मुह़म्मद ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया मुझे मफ़ातीहुल कलिम दिये गये हैं और रुअ़ब के ज़रिये मेरी मदद की गई है और गुज़िश्ता रात मैं सोया हुआ था कि ज़मीन के ख़ज़ानों की चाबियाँ मेरे पास लाई गईं और मेरे सामने उन्हें रख दिया गया। ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा कि आँह़ज़रत (ﷺ) तो इस दुनिया से तशरीफ़ ले गये और तुम इन ख़ज़ानों की चाबियों को उलट पलट कर रहे हो या निकाल रहे हो या लूट रहे हो। (राजेअ़ : 2977)

٦٩٩٨- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ الْمِقْدَامِ الْعِجْلِيُّ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ الطُّفَاوِيُّ، حَدَّثَنَا أَيُّوبُ، عَنْ مُحَمَّدٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((أُعْطِيتُ مَفَاتِيحَ الْكَلِمِ، وَنُصِرْتُ بِالرُّعْبِ، وَبَيْنَمَا أَنَا نَائِمٌ الْبَارِحَةَ إِذْ أُتِيتُ بِمَفَاتِيحِ خَزَائِنِ الأَرْضِ، حَتَّى وُضِعَتْ فِي يَدِي)) قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ: فَذَهَبَ رَسُولُ اللهِ ﷺ وَأَنْتُمْ تَنْتَقِلُونَهَا. [راجع: ٢٩٧٧]

तश्रीह : कुछ नुस्ख़ो में **तन्तक़्लूनहा** कुछ में **तन्तत्लूनहा** कुछ में **तन्तफ़्लूनहा** है इसलिये ये तीन तर्जुमे तर्तीब से लिख दिये गये हैं। फ़ुतूहाते इस्लामी में जिस क़दर ख़ज़ाने मुसलमानों को ह़ासिल हुए। ये पेशीनगोई ह़र्फ़ ब ह़र्फ़ स़ह़ीह़ ष़ाबित हुई। (वह़ीदी)

6999. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मस्लमा ने बयान किया, कहा हमसे इमाम मालिक ने, उनसे नाफ़ेअ़ ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, रात मुझे का'बा के पास (ख़्वाब में) दिखाया गया। मैंने एक गन्दुमी रंग

٦٩٩٩- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْلَمَةَ، عَنْ مَالِكٍ، عَنْ نَافِعٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُولَ اللهِ

ﷺ قَالَ: ((أَرَانِي اللَّيْلَةَ عِنْدَ الْكَعْبَةِ، فَرَأَيْتُ رَجُلاً آدَمَ كَأَحْسَنِ مَا أَنْتَ رَاءٍ مِنْ أُدْمِ الرِّجَالِ، لَهُ لِمَّةٌ كَأَحْسَنِ مَا أَنْتَ رَاءٍ مِنَ اللِّمَمِ قَدْ رَجَّلَهَا تَقْطُرُ مَاءً مُتَّكِئًا عَلَى رَجُلَيْنِ أَوْ عَلَى عَوَاتِقِ رَجُلَيْنِ يَطُوفُ بِالْبَيْتِ فَسَأَلْتُ مَنْ هَذَا فَقِيلَ الْمَسِيحُ ابْنُ مَرْيَمَ ثُمَّ: إِذَا أَنَا بِرَجُلٍ جَعْدٍ قَطَطٍ أَعْوَرِ الْعَيْنِ الْيُمْنَى كَأَنَّهَا عِنَبَةٌ طَافِيَةٌ، فَسَأَلْتُ مَنْ هَذَا؟ فَقِيلَ: الْمَسِيحُ الدَّجَّالُ)). [راجع: ٣٤٤٠]

के आदमी को देखा वो गन्दुमी रंग के किसी सबसे ख़ूबसूरत आदमी की त़रह़ थे, उनके लम्बे ख़ूबसूरत बाल थे, उन सबसे ख़ूबसूरत बालों की त़रह़ जो तुम देख सके होगे। उनमें उन्होंने कँघा किया हुआ था और पानी उनसे टपक रहा था और वो दो आदमियों के सहारे या (ये फ़रमाया कि) दो आदमियों के शानों के सहारे बैतुल्लाह का त़वाफ़ कर रहे थे। मैंने पूछा कि ये कौन स़ाह़ब हैं। मुझे बताया गया कि ये मसीह़ इब्ने मरयम (अ़.) हैं। फिर अचानक मैंने एक घुँघराले बाल वाले आदमी को देखा जिसकी एक आँख काफ़ी बड़ी थी और अंगूर के दाने की त़रह़ उठी हुई थी। मैंने पूछा, ये कौन है? मुझे बताया गया कि ये मसीह़ दज्जाल है। (राजेअ़ : 3440)

आ़लमे रुअया की बात है ये ज़रूरी नहीं है न यहाँ मज़्कूर है कि दज्जाल को आपने कहाँ किस ह़ालत में देखा? ह़ज़रत ईसा (अ़लैहि.) की बाबत स़ाफ़ मौजूद है कि उनको बैतुल्लाह में बह़ालते त़वाफ़ देखा मगर दज्जाल के लिये वज़ाह़त नहीं है लिहाज़ा आगे ख़ामोशी बेहतर है, **ला तुक़द्दिमू बैन यदयिल्लाहि व रसूलिही** (हुजुरात : 1)।

٧٠٠٠- حَدَّثَنَا يَحْيَى، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ يُونُسَ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ عَبْدِ اللهِ أَنَّ ابْنَ عَبَّاسٍ كَانَ يُحَدِّثُ أَنَّ رَجُلاً أَتَى رَسُولَ اللهِ ﷺ فَقَالَ إِنِّي أُرِيتُ اللَّيْلَةَ فِي الْمَنَامِ وَسَاقَ الْحَدِيثَ. وَتَابَعَهُ سُلَيْمَانُ بْنُ كَثِيرٍ وَابْنُ أَخِي الزُّهْرِيِّ، وَسُفْيَانُ بْنُ حُسَيْنٍ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ عُبَيْدِ اللهِ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ. وَقَالَ الزُّبَيْدِيُّ: عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ أَنَّ ابْنَ عَبَّاسٍ أَوْ أَبَا هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ. وَقَالَ شُعَيْبٌ: وَإِسْحَاقُ بْنُ يَحْيَى، عَنِ الزُّهْرِيِّ كَانَ أَبُو هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يُحَدِّثُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ. وَكَانَ مَعْمَرٌ لاَ يُسْنِدُهُ حَتَّى كَانَ

7000. हमसे यह़्या ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे यूनुस ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उनसे उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह ने कि ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि एक स़ाह़ब रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में आए और कहा कि मैंने रात में ख़्वाब देखा है और उन्होंने वाक़िया बयान किया और इस रिवायत की मुताबअ़त सुलैमान बिन कष़ीर, ज़ुह्री के भतीजे और सुफ़यान बिन हुसैन ने ज़ुह्री से की, उनसे उ़बैदुल्लाह ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से रिवायत किया, और ज़ुबैदी ने ज़ुह्री से बयान किया, उनसे उ़बैदुल्लाह और उनसे इब्ने अ़ब्बास और अबू हुरैरह (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से और शुऐ़ब और इस्ह़ाक़ बिन यह़्या ने ज़ुह्री से बयान किया कि ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) नबी करीम (ﷺ) से बयान करते थे और मअ़मर ने उसे मुत्तस़लन नहीं बयान किया

लेकिन बाद में मुत्तसलन बयान करने लगे थे।

بَعْدَهُ.

पूरा वाक़िया आगे बाब मल्लम यररूया लिअव्वलि आबिरिन अल्अख़ में मज़्कूर है।

बाब 12 : दिन के ख़्वाब का बयान

١٢- باب الرُّؤْيَا بِالنَّهَارِ

और इब्ने औन ने इब्ने सीरीन से नक़ल किया कि दिन के ख़्वाब भी रात के ख़्वाब की तरह हैं।

وَقَالَ ابْنُ عَوْنٍ : عَنِ ابْنِ سِيرِينَ رُؤْيَا النَّهَارِ مِثْلُ رُؤْيَا اللَّيْلِ.

7001. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें इस्हाक़ बिन अब्दुल्लाह बिन अबी तलहा ने और उन्होंने हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) से सुना कि रसूलुल्लाह (ﷺ) हज़रत उम्मे हराम बिन्ते मिल्हान (रज़ि.) के यहाँ तशरीफ़ ले जाया करते थे, वो हज़रत उबादह बिन सामित के निकाह में थीं। एक दिन आप उनके यहाँ गये तो उन्होंने आपके सामने खाने की चीज़ पेश की और आपका सर झाड़ने लगीं। इस अर्से में आँहज़रत (ﷺ) सो गये फिर बेदार हुए तो आप मुस्कुरा रहे थे। (राजेअ : 2788)

٧٠٠١- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ، أَخْبَرَنَا مَالِكٌ، عَنْ إِسْحَاقَ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي طَلْحَةَ أَنَّهُ سَمِعَ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ يَقُولُ: كَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ يَدْخُلُ عَلَى أُمِّ حَرَامٍ بِنْتِ مِلْحَانَ، وَكَانَتْ تَحْتَ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ فَدَخَلَ عَلَيْهَا يَوْمًا فَأَطْعَمَتْهُ وَجَعَلَتْ تَفْلِي رَأْسَهُ، فَنَامَ رَسُولُ اللهِ ﷺ ثُمَّ اسْتَيْقَظَ وَهُوَ يَضْحَكُ.[راجع: ٢٧٨٨]

7002. उन्होंने कहा कि मैंने उस पर पूछा या रसूलल्लाह! आप क्यूँ हंस रहे हैं? आपने फ़र्माया कि मेरी उम्मत के कुछ लोग मेरे सामने अल्लाह के रास्ते में ग़ज़्वा करते हुए पेश किये गये, उस दरिया की पीठ पर, वो इस तरह सवार हैं जैसे बादशाह तख़्त पर होते हैं। इस्हाक़ को शक था (हदीष के अल्फ़ाज़ मलूकुल असिर्रह थे या मिष्लुल मलूकुल असिर्रह उन्होंने कहा कि मैंने उस पर अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! दुआ कीजिए कि अल्लाह मुझे भी उनमें से कर दे। चुनाँचे आँहज़रत (ﷺ) ने उनके लिये दुआ की फिर आपने सरे मुबारक रखा (और सो गये) फिर बेदार हुए तो मुस्कुरा रहे थे। मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! आप क्यूँ हंस रहे हैं? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मेरी उम्मत के कुछ लोग मेरे सामने अल्लाह के रास्ते में ग़ज़्वा करते पेश किये गये। जिस तरह आँहज़रत (ﷺ) ने पहली बार फ़र्माया था। बयान किया कि मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! अल्लाह से दुआ कर दें कि मुझे भी उनमें कर दे। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुम सबसे पहले लोगों में होगी

٧٠٠٢- قَالَتْ : فَقُلْتُ مَا يُضْحِكُكَ يَا رَسُولَ اللهِ؟ قَالَ: ((نَاسٌ مِنْ أُمَّتِي عُرِضُوا عَلَيَّ غُزَاةً فِي سَبِيلِ اللهِ، يَرْكَبُونَ ثَبَجَ هَذَا الْبَحْرِ مُلُوكًا عَلَى الأَسِرَّةِ - أَوْ مِثْلَ الْمُلُوكِ عَلَى الأَسِرَّةِ -)) شَكَّ إِسْحَاقُ قَالَتْ: فَقُلْتُ يَا رَسُولَ اللهِ ادْعُ اللهَ أَنْ يَجْعَلَنِي مِنْهُمْ فَدَعَا لَهَا رَسُولُ اللهِ ﷺ، ثُمَّ وَضَعَ رَأْسَهُ ثُمَّ اسْتَيْقَظَ وَهُوَ يَضْحَكُ فَقُلْتُ: مَا يُضْحِكُكَ يَا رَسُولَ اللهِ؟ قَالَ: ((نَاسٌ مِنْ أُمَّتِي عُرِضُوا عَلَيَّ غُزَاةً فِي سَبِيلِ اللهِ)) كَمَا قَالَ فِي الأُولَى قَالَتْ : فَقُلْتُ يَا رَسُولَ اللهِ ادْعُ اللهَ أَنْ يَجْعَلَنِي مِنْهُمْ قَالَ: ((أَنْتِ مِنَ الأَوَّلِينَ)) فَرَكِبَتِ الْبَحْرَ فِي زَمَانِ مُعَاوِيَةَ بْنِ أَبِي سُفْيَانَ

فَصُرِعَتْ عَنْ دَابَّتِهَا حِينَ خَرَجَتْ مِنَ الْبَحْرِ فَهَلَكَتْ.

[راجع: ٢٧٨٩]

। चुनाँचे उम्मे ह़राम (रज़ि.) मुआ़विया (रज़ि.) के ज़माने में समुन्दरी सफ़र पर गईं और जब समुन्दर से बाहर आईं तो सवारी से गिरकर शहीद हो गईं। (राजेअ़ : 2789)

तशरीह : आँह़ज़रत (ﷺ) की नुबुव्वत की अहम दलील एक ये ह़दीष़ भी है किसी शख़्स के ह़ालात की ऐसी स़ह़ीह़ पेशीनगोई करना बजुज़ पैग़म्बर के और किसी से नहीं हो सकता। इब्ने तीन ने कहा, कुछ ने इस ह़दीष़ से दलील ली है कि ह़ज़रत मुआ़विया (रज़ि.) की ख़िलाफ़त भी स़ह़ीह़ थी।

बाब 13 : औरतों के ख़्वाब का बयान

١٣- باب رُؤْيَا النِّسَاء

कहते हैं कि औरतें अगर ऐसा ख़्वाब देखें जो उनके मुनासिब ह़ाल न हो तो वो ख़्वाब उनके शौहरों के लिये होगा। इब्ने क़त़्त़ान ने कहा कि औरत का नेक ख़्वाब भी नुबुव्वत के 46 ह़िस्सों में से एक ह़िस्सा है।

٧٠٠٣- حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ عُفَيْرٍ، حَدَّثَنِي اللَّيْثُ، حَدَّثَنِي عُقَيْلٌ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ أَخْبَرَنِي خَارِجَةُ بْنُ زَيْدِ بْنِ ثَابِتٍ أَنَّ أُمَّ الْعَلاَءِ امْرَأَةٌ مِنَ الأَنْصَارِ بَايَعَتْ رَسُولَ اللهِ ﷺ أَخْبَرَتْهُ أَنَّهُمُ اقْتَسَمُوا الْمُهَاجِرِينَ قُرْعَةً قَالَتْ: فَطَارَ لَنَا عُثْمَانُ بْنُ مَظْعُونٍ وَأَنْزَلْنَاهُ فِي أَبْيَاتِنَا فَوَجِعَ وَجَعَهُ الَّذِي تُوُفِّيَ فِيهِ، فَلَمَّا تُوُفِّيَ غُسِّلَ وَكُفِّنَ فِي أَثْوَابِهِ دَخَلَ رَسُولُ اللهِ ﷺ فَقُلْتُ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْكَ أَبَا السَّائِبِ فَشَهَادَتِي عَلَيْكَ لَقَدْ أَكْرَمَكَ اللهُ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((وَمَا يُدْرِيكِ أَنَّ اللهَ أَكْرَمَهُ)) فَقُلْتُ: بِأَبِي أَنْتَ يَا رَسُولَ اللهِ فَمَنْ يُكْرِمُهُ اللهُ؟ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((أَمَّا هُوَ فَوَ اللهِ لَقَدْ جَاءَهُ الْيَقِينُ وَاللهِ إِنِّي لأَرْجُو لَهُ الْخَيْرَ، وَوَاللهِ مَا أَدْرِي وَأَنَا رَسُولُ اللهِ مَاذَا يُفْعَلُ بِي؟)) فَقَالَتْ: وَاللهِ لاَ أُزَكِّي بَعْدَهُ أَحَدًا أَبَدًا.

7003. हमसे सईद बिन उ़फ़ैर ने बयान किया, कहा मुझसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, कहा मुझसे अ़क़ील ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उन्हें ख़ारिजा बिन ष़ाबित ने ख़बर दी, उन्हें उम्मे अ़ला (रज़ि.) ने कि एक अंसारी औरत, जिन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से बेअ़त की थी उसने ख़बर दी कि उन्होंने मुहाजिरीन के साथ भाईचारे का सिलसिला क़ायम करने के लिये क़ुर्आअंदाज़ी की तो हमारा क़ुर्आ उ़ष़्मान बिन मज़ऊन (रज़ि.) के नाम निकला। फिर हमने उन्हें अपने घर में ठहराया। उसके बाद उन्हें एक बीमारी हो गई जिसमें उनकी वफ़ात हो गई। जब उनकी वफ़ात हो गई तो उन्हें ग़ुस्ल दिया गया और उनके कपड़ों का कफ़न दिया गया तो रसूलुल्लाह (ﷺ) तशरीफ़ लाए। मैंने कहा अबू साइब (उ़ष़्मान रज़ि.) तुम पर अल्लाह की रह़मत हो, तुम्हारे बारे में मेरी गवाही है कि तुम्हें अल्लाह ने इ़ज़्ज़त बख़्शी है? आँह़ज़रत (ﷺ) ने इस पर फ़र्माया तुम्हें कैसे मा'लूम हुआ कि अल्लाह ने इन्हें इ़ज़्ज़त बख़्शी है। मैंने अ़र्ज़ किया, मेरे माँ बाप आप पर क़ुर्बान हों या रसूलल्लाह! फिर अल्लाह किसे इ़ज़्ज़त बख़्शेगा? आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया जहाँ तक इनका ता'ल्लुक़ है तो यक़ीनी चीज़ (मौत) इन पर आ चुकी हैऔर अल्लाह की क़सम! मैं भी इनके लिये भलाई की उम्मीद रखता हूँ और अल्लाह की क़सम! मैं रसूलुल्लाह होने के बावजूद यक़ीनी त़ौर पर नहीं जानता कि मेरे साथ क्या किया जाएगा? उन्होंने उसके बाद कहा कि अल्लाह की क़सम!इसके बाद मैं कभी किसी की बरात नहीं करूँगी। (राजेअ़ : 1243)

[راجع: ١٢٤٣]

तश्रीह : शायद ये ह़दीष़ आपने उस वक़्त फ़र्माई हो जब सूरह.फ़तह़ की आयत, **लियग़्फ़िर लकल्लाहु मा तक़द्दम मिन् ज़म्बिक वमा तअख़्ख़र...** (सूरह फ़तह़ : 42) हुई हो या आपने तफ़्सीली ह़ालात मा'लूम होने की नफ़ी की हो और इज्मालन अपनी नजात का यक़ीन हो जैसे आयत, **व इन अदरी मा युफ़्अलु बी वला बिकुम** (अल अह़क़ाफ़ : 9) में मज़्कूर हुआ। पादरियों का यहाँ ए'तिराज़ करना लग़्व है। बन्दा कैसा ही मक़्बूल और बड़ा दर्जे का हो लेकिन बन्दा है ह़क़ तआला की ह़म्दियत के आगे वो काँपता रहता है, नज़दीकियाँ राबेश बुवद ह़ैरानी।

7004. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी और उन्हें ज़ुहरी ने यही ह़दीष़ बयान की और बयान किया कि (आँह़ज़रत ﷺ ने फ़र्माया कि) मैं नहीं जानता कि मेरे साथ क्या किया जाएगा? उन्होंने बयान किया कि उसका मुझे रंज हुआ (कि ह़ज़रत उ़ष़्मान रज़ि. के बारे में कोई बात यक़ीन के साथ मा'लूम नहीं है) चुनाँचे मैं सो गई और मैंने ख़्वाब में देखा कि ह़ज़रत उ़ष़्मान (रज़ि.) के लिये एक जारी चश्मा है। मैंने इसकी ख़बर आँह़ज़रत (ﷺ) को दी तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि ये उनका नेक अ़मल है। (राजेअ़ : 1243)

٧٠٠٤- حدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ بِهَذَا وَقَالَ : مَا أَدْرِي مَا يُفْعَلُ بِهِ، قَالَتْ : وَأَحْزَنَنِي فَنِمْتُ فَرَأَيْتُ لِعُثْمَانَ عَيْنًا تَجْرِي، فَأَخْبَرْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: ((ذَلِكَ عَمَلُهُ)).

[راجع: ١٢٤٣]

कहते हैं वो एक स़ालेह़ बेटा साइब नामी छोड़ गये थे जो बद्र में शरीक हुए या अल्लाह की राह में उनका चौकी पर पहरा देना मुराद है। अल्लाह तआला की राह में ये नेक अ़मल क़यामत तक बढ़ता ही चला जाएगा।

बाब 14 : बुरा ख़्वाब शैत़ान की त़रफ़ से होता है

पस अगर कोई बुरा ख़्वाब देखे तो बाईं त़रफ़ थूक दे और अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल की पनाह त़लब करे, यानि अऊ़ज़ुबिल्लाह मिनश्शैत़ानिर्रजीम पढ़े।

١٤- باب الْحُلْمُ مِنَ الشَّيْطَانِ

فَإِذَا حَلَمَ فَلْيَبْصُقْ عَنْ يَسَارِهِ وَلْيَسْتَعِذْ بِاللهِ عَزَّ وَجَلَّ.

7005. हमसे यह़्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ ने बयान किया, उनसे अ़क़ील ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे अबू सलमा ने और उनसे ह़ज़रत अबू क़तादा अंस़ारी (रज़ि.) ने जो नबी करीम (ﷺ) के स़ह़ाबी और आपके शहसवारों में से थे। उन्होंने बयान किया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना, आपने फ़र्माया कि अच्छे ख़्वाब अल्लाह की त़रफ़ से होते हैं और बुरे शैत़ान की त़रफ़ से पस तुममें जो कोई बुरा ख़्वाब देखे जो उसे नापसंद हो तो उसे चाहिये कि अपने बाईं त़रफ़ थूके और उससे अल्लाह की पनाह मांगे वो उसे

٧٠٠٥- حدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ عُقَيْلٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ أَنَّ أَبَا قَتَادَةَ الأَنْصَارِيَّ وَكَانَ مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ ﷺ وَفُرْسَانِهِ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((الرُّؤْيَا مِنَ اللهِ، وَالْحُلْمُ مِنَ الشَّيْطَانِ، فَإِذَا حَلَمَ أَحَدُكُمُ الْحُلْمَ يَكْرَهُهُ فَلْيَبْصُقْ عَنْ يَسَارِهِ، وَلْيَسْتَعِذْ بِاللهِ مِنْهُ فَلَنْ يَضُرَّهُ)).

हर्गिज़ नुक़्सान नहीं पहुँचा सकेगा। (राजेअ : 3292)

[راجع: ٣٢٩٢]

बाब 15 : दूध को ख़्वाब में देखना

١٥- باب اللَّبَنِ

7006. हमसे अब्दान ने बयान किया, कहा हमको यूनुस ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुहरी ने, उन्हें हम्ज़ा इब्ने अब्दुल्लाह ने ख़बर दी, उनसे हज़रत इब्ने उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना, आपने फ़र्माया कि मैं सोया हुआ था कि मेरे पास दूध का एक प्याला लाया गया और मैंने उसका दूध पिया। यहाँ तक कि उसकी सैराबी का अषर मैंने अपने नाख़ून में ज़ाहिर होता देखा। उसके बाद मैंने उसका बचा हुआ दे दिया। आपका इशारा हज़रत उमर (रज़ि.) की तरफ़ था। सहाबा ने पूछा आपने इसकी ता'बीर क्या ली या रसूलल्लाह! आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि इल्म। (राजेअ : 82)

٧٠٠٦- حَدَّثَنَا عَبْدَانُ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ أَخْبَرَنَا يُونُسُ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، أَخْبَرَنِي حَمْزَةُ بْنُ عَبْدِ اللهِ أَنَّ ابْنَ عُمَرَ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((بَيْنَا أَنَا نَائِمٌ أُتِيتُ بِقَدَحِ لَبَنٍ، فَشَرِبْتُ مِنْهُ حَتَّى إِنِّي لأَرَى الرِّيَّ يَخْرُجُ مِنْ أَظْفَارِي، ثُمَّ أَعْطَيْتُ فَضْلِي يَعْنِي عُمَرَ)) قَالُوا: فَمَا أَوَّلْتَهُ يَا رَسُولَ اللهِ؟ قَالَ : ((الْعِلْمَ)).

[راجع: ٨٢]

दूध पीने की ता'बीर हमेशा इल्म व सआदत से होती है, अल्लाहुम मर्ज़ुक़्नस्सआदत आमीन।

बाब 16 : जब दूध किसी के आज़ा व नाख़ुनों से फूट निकले तो क्या ता'बीर है?

١٦- باب إِذَا جَرَى اللَّبَنُ فِي أَطْرَافِهِ أَوْ أَظَافِيرِهِ

7007. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, उनसे यअक़ूब बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा उनसे मेरे वालिद इब्राहीम बिन सअद ने बयान किया, उनसे सालेह ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे हम्ज़ा बिन अब्दुल्लाह बिन उमर ने बयान किया और उन्होंने अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) से सुना, कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, मैं सोया हुआ था कि मेरे पास दूध का एक प्याला लाया गया और मैंने उसमें से पिया, यहाँ तक कि मैंने सैराबी का अषर अपने अत्राफ़ में नुमायाँ देखा। फिर मैंने उसका बचा हुआ हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) को दिया जो सहाबा वहाँ मौजूद थे, उन्होंने पूछा कि या रसूलल्लाह! आपने इसकी ता'बीर क्या ली? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि इल्म मुराद है। (राजेअ : 82)

٧٠٠٧- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، حَدَّثَنَا أَبِي عَنْ صَالِحٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، حَدَّثَنِي حَمْزَةُ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ أَنَّهُ سَمِعَ عَبْدَ اللهِ بْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا يَقُولُ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((بَيْنَا أَنَا نَائِمٌ أُتِيتُ بِقَدَحِ لَبَنٍ، فَشَرِبْتُ مِنْهُ حَتَّى إِنِّي لأَرَى الرِّيَّ يَخْرُجُ مِنْ أَطْرَافِي، فَأَعْطَيْتُ فَضْلِي عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ)) فَقَالَ مَنْ حَوْلَهُ : فَمَا أَوَّلْتَ ذَلِكَ يَا رَسُولَ اللهِ؟ قَالَ: ((الْعِلْمَ)). [راجع: ٨٢]

तश्रीह : इस हदीष में हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ि.) की बहुत बड़ी फ़ज़ीलत निकली, हक़ीक़त में हज़रत उमर (रज़ि.) तमाम उलूम ख़ुसूसन सियासत में और तदबीरों में अपनी नज़ीर नहीं रखते थे।

बाब 17 : ख़्वाब में क़मीस़ कुर्ता देखना

١٧- باب القَمِيصِ فِي المَنَامِ

7008. हमसे अली बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, उनसे यअ़क़ूब बिन इब्राहीम ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने, उनसे स़ालेह़ ने, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उनसे अबू उमामा बिन सहल ने बयान किया, उन्होंने अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) को बयान करते सुना कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया मैं सोया हुआ था कि मैंने देखा कि लोग मेरे सामने पेश किये जा रहे हैं वो क़मीस़ पहने हुए हैं। उनमें कुछ की क़मीस़ तो स़िर्फ़ सीने तक की है और कुछ की उससे बड़ी है और आँहज़रत (ﷺ) ह़ज़रत उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) के पास से गुज़रे तो उनकी क़मीस़ ज़मीन से घिसट रही थी। स़ह़ाबा ने पूछा या रसूलल्लाह! आपने उसकी क्या ता'बीर ली? आँहुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि दीन। (राजेअ़ : 23)

٧٠٠٨- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، حَدَّثَنِي أَبِي، عَنْ صَالِحٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، قَالَ حَدَّثَنِي أَبُو أُمَامَةَ بْنُ سَهْلٍ أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا سَعِيدٍ الْخُدْرِيَّ يَقُولُ : قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((بَيْنَمَا أَنَا نَائِمٌ رَأَيْتُ النَّاسَ يُعْرَضُونَ عَلَيَّ وَعَلَيْهِمْ قُمُصٌ مِنْهَا مَا يَبْلُغُ الثُّدِيَّ وَمِنْهَا مَا يَبْلُغُ دُونَ ذَلِكَ، وَمَرَّ عَلَيَّ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ وَعَلَيْهِ قَمِيصٌ يَجُرُّهُ)) قَالُوا مَا أَوَّلْتَ يَا رَسُولَ اللهِ؟ قَالَ: ((الدِّينَ)).

[راجع: ٢٣]

बाब 18 : ख़्वाब में कुर्ते का घसीटना

١٨- باب جَرِّ القَمِيصِ فِي المَنَامِ

तश्रीह़ : जर्रुल क़मीस़ फ़िल मनामि क़ालू वज्हु तअ़बीरिल क़मीस़ बिद्दीन अन्नल क़मीस़ यस्तिल औ़रत फ़िद्दुन्या वद्दीनु यस्तिरूहा फ़िल आख़िरति व यह़जिबुहा अन कुल्लि मक्रूहिन वल अस़्लु फ़ीहि क़ौलिही तआ़ला व लिबासुत्तक़्वा ज़ालिक ख़ैरुल आयति वल्अ़रबु तक्नी अ़निल फ़ज़्लि वल इफ़ाफ़ि बिल क़मीस़ व मिन्हु क़ौलुहू (ﷺ) लिउ़स़्मान इन्नल्लाह सयुलबिसुक क़मीस़न फ़ला तख़लअहू वत्तफ़क़ अहलुत तअ़बीर अ़ला अन्नल क़मीस़ युअ़ब्बरू बिद्दीन व अन्न तूलहू युदुल्लु अ़ला बक़ाइ आस़ारि स़ालिहातिही मिम्बअ़दिही व फ़िल ह़दीस़ि अन्न अहलद्दीनि यतफ़ाज़लून फ़िद्दीनि बिलक़िल्लति वल कस़्रति व बिल कुव्वति वज़्ज़ुअ़फ़ि (फ़त्हुल बारी) मुख़्तस़र मफ़्हूम ये कि ख़्वाब में क़मीस़ को पहनकर खींचना उसकी ता'बीर दीन के साथ है, इसलिये कि क़मीस़ दुनिया में बदन को ढाँप लेती है और दीन आख़िरत में हर तकलीफ़ देने वाली चीज़ से बचा लेगा अल्लाह पाक ने क़ुर्आन मजीद में फ़र्माया है कि तक़्वा का लिबास ख़ैर ही ख़ैर है और अ़रब लोग फ़ज़्ल और पाकदामनी को क़मीस़ से ता'बीर किया करते थे। ह़ज़रत उ़स़्मान ग़नी (रज़ि.) से आप (ﷺ) ने ऐसा ही फ़र्माया था कि अल्लाह पाक तुमको एक क़मीस़ (मुराद ख़िलाफ़त) पहनाएगा और क़मीस़ का त़वील होना उसके मरने के बाद उसके नेक आस़ार के बक़ा की दलील है और ह़दीस़ में है कि दीनदार लोग दीन में क़िल्लत और कस़रत और ज़ुअ़फ़ और कुव्वत की बिना पर कमो-बेश होते हैं।

7009. हमसे सईद बिन उ़फ़ैर ने बयान किया, कहा मुझसे लैस़ बिन सअ़द ने बयान किया, कहा मुझसे अ़क़ील ने बयान किया, कहा उनसे इब्ने शिहाब ने, कहा मुझको अबू उमामा बिन सहल ने ख़बर दी और उनसे ह़ज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना,

٧٠٠٩- حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ عُفَيْرٍ، حَدَّثَنِي اللَّيْثُ، حَدَّثَنِي عُقَيْلٌ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، أَخْبَرَنِي أَبُو أُمَامَةَ بْنُ سَهْلٍ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّهُ قَالَ: سَمِعْتُ

رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((بَيْنَا أَنَا نَائِمٌ رَأَيْتُ النَّاسَ عُرِضُوا عَلَيَّ، وَعَلَيْهِمْ قُمُصٌ فَمِنْهَا مَا يَبْلُغُ الثُّدِيَّ، وَمِنْهَا مَا يَبْلُغُ دُونَ ذَلِكَ، وَعُرِضَ عَلَيَّ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ وَعَلَيْهِ قَمِيصٌ يَجْتَرُّهُ)) قَالُوا : مَا أَوَّلْتَهُ يَا رَسُولَ اللهِ قَالَ : ((الدِّينَ)).[راجع: ٢٣]

आपने फ़र्माया कि मैं सोया हुआ था कि मैंने लोगों को अपने सामने पेश होते देखा। वो क़मीस़ पहने हुए थे, उनमें कुछ की क़मीस़ तो सीने तक की थी और कुछ की उससे बड़ी थी और मेरे सामने ह़ज़रत ड़मर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) पेश किये गये तो उनकी क़मीस़ (ज़मीन से) घिसट रही थी। स़हाबा ने पूछा या रसूलल्लाह! आप (ﷺ) ने इसकी ता'बीर क्या ली? आपने फ़र्माया कि दीन इसकी ता'बीर है। (राजेअ : 23)

कुर्ता बदन को छुपाता है गर्मी सर्दी से बचाता है दीन भी रूह की हिफ़ाज़त करता है. उसे बुराई से बचाता है।

١٩- باب الْخُضْرِ فِي الْمَنَامِ، وَالرَّوْضَةِ الْخَضْرَاءِ

बाब 19 : ख़्वाब में सब्ज़ा या हरा भरा बाग़ देखना

٧٠١٠- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ الْجُعْفِيُّ، حَدَّثَنَا حَرَمِيُّ بْنُ عُمَارَةَ، حَدَّثَنَا قُرَّةُ بْنُ خَالِدٍ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ سِيرِينَ قَالَ قَالَ قَيْسُ بْنُ عُبَادٍ: كُنْتُ فِي حَلْقَةٍ فِيهَا سَعْدُ بْنُ مَالِكٍ وَابْنُ عُمَرَ فَمَرَّ عَبْدُ اللهِ بْنُ سَلاَمٍ فَقَالُوا: هَذَا رَجُلٌ مِنْ أَهْلِ الْجَنَّةِ؟ فَقُلْتُ لَهُ: إِنَّهُمْ قَالُوا: كَذَا وَكَذَا قَالَ: سُبْحَانَ اللهِ مَا كَانَ يَنْبَغِي لَهُمْ أَنْ يَقُولُوا: مَا لَيْسَ لَهُمْ بِهِ عِلْمٌ، إِنَّمَا رَأَيْتُ كَأَنَّمَا عَمُودٌ وُضِعَ فِي رَوْضَةٍ خَضْرَاءَ، فَنُصِبَ فِيهَا وَفِي رَأْسِهَا عُرْوَةٌ وَفِي أَسْفَلِهَا مِنْصَفٌ وَالْمِنْصَفُ وَالْوَصِيفُ فَقِيلَ: ارْقَهْ فَرَقِيتُ حَتَّى أَخَذْتُ بِالْعُرْوَةِ فَقَصَصْتُهَا عَلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ ((يَمُوتُ عَبْدُ اللهِ وَهُوَ آخِذٌ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقَى)). [راجع: ٣٨١٣]

7010. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद जुअफ़ी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे हुर्मी बिन अ़म्मारा ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे क़ुर्रह बिन ख़ालिद ने बयान किया, उनसे मुह़म्मद बिन सीरीन ने बयान किया, उनसे क़ैस बिन अ़ब्बाद ने बयान किया कि मैं एक ह़ल्क़ा में बैठा था जिसमें ह़ज़रत सअ़द बिन मालिक और ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ड़मर (रज़ि.) बैठे हुए थे। वहाँ से ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम (रज़ि.) गुज़रे तो लोगों ने कहा कि ये अहले जन्नत में से हैं। मैंने उनसे कहा कि वो इस त़रह की बात कह रहे हैं। आपने फ़र्माया, सुब्ह़ानल्लाह! उनके लिये मुनासिब नहीं कि वो ऐसी बात कहें जिसका इ़ल्म उन्हें नहीं है। मैंने ख़्वाब में देखा था कि एक सुतून एक हरे भरे बाग़ में नस़ब किया हुआ है। उस सुतून के ऊपर के सिरे पर एक ह़ल्क़ा (ड़र्वा) लगा हुआ था और नीचे मुन्सिफ़ था। मुन्सिफ़ से मुराद ख़ादिम है फिर कहा गया कि उस पर चढ़ जाओ, मैं चढ़ गया और मैंने ह़ल्क़ा पकड़ा लिया, फिर मैंने उसका तज्किरा रसूलुल्लाह (ﷺ) से किया तो आपने फ़र्माया कि अ़ब्दुल्लाह का जब इंतिक़ाल होगा तो वो अल अ़रवतल् वुस़्क़ा को पकड़े हुए होंगे। (राजेअ : 3813)

या'नी इस्लाम पर उनका ख़ात्मा होगा, बाग़ से मुराद इस्लाम है, कुण्डा से भी दीने इस्लाम मुराद है।

बाब 20 : ख़्वाब में औरत का चेहरा खोलना

٢٠- باب كَشْفِ الْمَرْأَةِ فِي الْمَنَامِ

7011. हमसे उ़बैदुल्लाह बिन इस्माईल ने बयान किया, उनसे अबू उसामा ने बयान किया, उनसे हिशाम ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, मुझे तुम ख़्वाब में दो मर्तबा दिखाई गईं। एक शख़्स़ तुम्हें रेशम के एक टुकड़े में उठाए लिये जा रहा था, उसने मुझसे कहा कि ये आपकी बीवी हैं, इनके (चेहरे से) पर्दा हटाओ। मैंने पर्दा उठाया कि वो तुम ही थीं। मैंने सोचा कि अगर ये ख़्वाब अल्लाह की त़रफ से है तो वो ख़ुद ही अंजाम तक पहुँचाएगा। (राजेअ़ : 3895)

٧٠١١- حَدَّثَنَا عُبَيْدُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، عَنْ هِشَامٍ، عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((أُرِيتُكِ فِي الْمَنَامِ مَرَّتَيْنِ إِذَا رَجُلٌ يَحْمِلُكِ فِي سَرَقَةِ حَرِيرٍ فَيَقُولُ: هَذِهِ امْرَأَتُكَ فَاكْشِفْهَا فَإِذَا هِيَ أَنْتِ، فَأَقُولُ: إِنْ يَكُنْ هَذَا مِنْ عِنْدِ اللهِ يُمْضِهِ)). [راجع: ٣٨٩٥]

यही मर्ज़ी है तो ज़रूर पूरी होकर रहेगी।

बाब 21 : ख़्वाब में रेशम के कपड़े का देखना

٢١- باب ثِيَابِ الْحَرِيرِ فِي الْمَنَامِ

7012. हमसे मुह़म्मद ने बयान किया, कहा हमको अबू मुआ़विया ने ख़बर दी, कहा हमको हिशाम ने ख़बर दी, उन्हें उनके वालिद ने और उनसे ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया तुमसे शादी करने से पहले मुझे तुम दो मर्तबा दिखाई गईं, मैंने देखा कि एक फ़रिश्ता तुम्हें रेशम के एक टुकड़े में उठाए हुए है। मैंने उससे कहा कि खोलो उसने खोला तो वो तुम थीं। मैंने कहा कि अगर ये अल्लाह के पास से है तो वो ख़ुद ही इसे अंजाम तक पहुँचाएगा। फिर मैंने तुम्हें देखा कि फ़रिश्ता तुम्हें रेशम के एक टुकड़े में उठाए हुए है। मैंने कहा खोलो! उसने खोला उसमें तुम थीं। फिर मैंने कहा ये तो अल्लाह की त़रफ़ से है जो ज़रूर पूरा होगा। (राजेअ़ : 3895)

٧٠١٢- حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ، أَخْبَرَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، أَخْبَرَنَا هِشَامٌ، عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((أُرِيتُكِ قَبْلَ أَنْ أَتَزَوَّجَكِ مَرَّتَيْنِ، رَأَيْتُ الْمَلَكَ يَحْمِلُكِ فِي سَرَقَةٍ مِنْ حَرِيرٍ فَقُلْتُ لَهُ: اكْشِفْ فَكَشَفَ فَإِذَا هِيَ أَنْتِ، فَقُلْتُ: إِنْ يَكُنْ هَذَا مِنْ عِنْدِ اللهِ يُمْضِهِ. ثُمَّ أُرِيتُكِ يَحْمِلُكِ فِي سَرَقَةٍ مِنْ حَرِيرٍ فَقُلْتُ: اكْشِفْ فَكَشَفَ فَإِذَا هِيَ أَنْتِ، فَقُلْتُ: إِنْ يَكُ هَذَا مِنْ عِنْدِ اللهِ يُمْضِهِ)). [راجع: ٣٨٩٥]

बाब 22 : हाथ में कुंजियाँ ख़्वाब में देखना

٢٢- باب الْمَفَاتِيحِ فِي الْيَدِ

7013. हमसे सईद बिन उ़फ़ैर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे लैष़ ने बयान किया, उनसे अ़क़ील ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उन्हें सईद बिन मुसय्यब ने ख़बर दी और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया

٧٠١٣- حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ عُفَيْرٍ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، حَدَّثَنِي عُقَيْلٌ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ أَخْبَرَنِي سَعِيدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ

कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना, आपने फ़र्माया कि मैं जवामिउ़ल कलम के साथ मब्ऊ़ष किया गया हूँ और मेरी मदद रौब के ज़रिये की गई है और मैं सोया हुआ था कि ज़मीन के ख़ज़ानों की चाबियाँ मेरे पास लाई गईं और मेरे हाथ में उन्हें रख दिया गया। और मुह़म्मद ने बयान किया कि मुझ तक ये बात पहुँची है कि जवामिउ़ल कलम से मुराद ये है कि बहुत से उमूर जो आँह़ज़रत (ﷺ) से पहले किताबों में लिखे हुए थे उनको अल्लाह तआ़ला ने एक या दो उमूर या उसी जैसे में जमा कर दिया है। (राजेअ़ : 2977)

قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((بُعِثْتُ بِجَوَامِعِ الْكَلِمِ، وَنُصِرْتُ بِالرُّعْبِ، وَبَيْنَا أَنَا نَائِمٌ أُتِيتُ بِمَفَاتِيحِ خَزَائِنِ الأَرْضِ، فَوُضِعَتْ فِي يَدِي قَالَ مُحَمَّدٌ، وَبَلَغَنِي أَنَّ جَوَامِعَ الْكَلِمِ أَنَّ اللهَ يَجْمَعُ الأُمُورَ الْكَثِيرَةَ الَّتِي كَانَتْ تُكْتَبُ فِي الْكُتُبِ قَبْلَهُ فِي الأَمْرِ الْوَاحِدِ، وَالأَمْرَيْنِ أَوْ نَحْوِ ذَلِكَ)). [راجع: ٢٩٧٧]

बाब 23 : कुण्डे या ह़ल्क़े को ख़्वाब में पकड़कर उससे लटक जाना

٢٣- باب التَّعْلِيقِ بِالْعُرْوَةِ وَالْحَلْقَةِ

7014. मुझसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुह़म्मद ने बयान किया, कहा हमसे अज़्हर ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने औ़न ने (दूसरी सनद) ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) ने कहा कि और मुझसे ख़लीफ़ा ने बयान किया, उनसे मुआ़ज़ ने बयान किया, उनसे इब्ने औ़न ने बयान किया, उनसे मुह़म्मद ने, उनसे क़ैस बिन अ़ब्बाद ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने (ख़्वाब) देखा कि गोया मैं एक बाग़ में हूँ और बाग़ के बीच में एक सुतून है जिसके ऊपर के सिरे पर एक ह़ल्क़ा है। कहा गया कि उस पर चढ़ जाओ। मैंने कहा कि मैं उसकी त़ाक़त नहीं रखता। फिर मेरे पास ख़ादिम आया और उसने मेरे कपड़े चढ़ा दिये फिर मैं ऊपर चढ़ गया और मैंने ह़ल्क़ा पकड़ लिया, अभी मैं उसे पकड़े ही हुए था कि आँख खुल गई। फिर मैंने उसका ज़िक्र नबी करीम (ﷺ) से किया तो आपने फ़र्माया कि वो बाग़ इस्लाम का बाग़ था और सुतून इस्लाम का सुतून था और वो ह़ल्क़ा उ़र्वतिल वुष्क़ा था। तुम हमेशा इस्लाम पर मज़बूती से जमे रहोगे यहाँ तक कि तुम्हारी वफ़ात हो जाएगी। (राजेअ़ : 3813)

٧٠١٤- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ، حَدَّثَنَا أَزْهَرُ، عَنِ ابْنِ عَوْنٍ ح وَحَدَّثَنِي خَلِيفَةُ، حَدَّثَنَا مُعَاذٌ، حَدَّثَنَا ابْنُ عَوْنٍ، عَنْ مُحَمَّدٍ، حَدَّثَنَا قَيْسُ بْنُ عُبَادٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ سَلاَمٍ قَالَ: رَأَيْتُ كَأَنِّي فِي رَوْضَةٍ وَوَسَطَ الرَّوْضَةِ عَمُودٌ فِي أَعْلَى الْعَمُودِ عُرْوَةٌ فَقِيلَ ارْقَهْ، قُلْتُ: لاَ أَسْتَطِيعُ فَأَتَانِي وَصِيفٌ فَرَفَعَ ثِيَابِي فَرَقِيتُ فَاسْتَمْسَكْتُ بِالْعُرْوَةِ فَانْتَبَهْتُ وَأَنَا مُسْتَمْسِكٌ بِهَا، فَقَصَصْتُهَا عَلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: ((تِلْكَ الرَّوْضَةُ رَوْضَةُ الإِسْلاَمِ، وَذَلِكَ الْعَمُودُ عَمُودُ الإِسْلاَمِ، وَتِلْكَ الْعُرْوَةُ الْعُرْوَةُ الْوُثْقَى، لاَ تَزَالُ مُسْتَمْسِكًا بِالإِسْلاَمِ حَتَّى تَمُوتَ)). [راجع: ٣٨١٣]

बाब 24 : ख़्वाब में डेरे का सुतून तकिया के नीचे देखना

٢٤- باب عَمُودِ الْفُسْطَاطِ تَحْتَ وِسَادَتِهِ

बाब 25 : ख़्वाब में रंगीन रेशमी कपड़ा देखना

٢٥- باب الإِسْتَبْرَقِ وَدُخُولِ

और बहिश्त में दाख़िल होना

الجنة في المنام

7015. हमसे मुअ़ल्ला बिन असद ने बयान किया, कहा हमसे वुहैब ने बयान किया, उनसे अय्यूब ने, उनसे नाफ़ेअ़ ने और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने ख़्वाब में देखा कि गोया मेरे हाथ में रेशम का एक टुकड़ा है और मैं जन्नत में जिस जगह जाना चाहता हूँ वो मुझे उड़ाकर वहाँ पहुँचा देता है। मैंने इसका ज़िक्र ह़ज़रत ह़फ़्सा (रज़ि.) से किया। (राजेअ़ : 440)

٧٠١٥- حدثنا معلى بن اسد، حدثنا وهيب، عن ايوب، عن نافع، عن ابن عمر رضي الله عنهما قال: رأيت في المنام كأن في يدي سرقة من حرير لا أهوى بها إلى مكان في الجنة، إلا طارت بي إليه فقصصتها على حفصة.

[راجع: ٤٤٠]

7016. और ह़ज़रत ह़फ़्सा (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से उस ख़्वाब का ज़िक्र किया। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुम्हारा भाई मर्द नेक है या फ़र्माया कि अ़ब्दुल्लाह नेक आदमी है। (राजेअ़ : 1122)

٧٠١٦- فقصتها حفصة على النبي ﷺ فقال: ((إن أخاك رجل صالح - أو قال - إن عبد الله رجل صالح)).

[راجع: ١١٢٢]

ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) के जन्नती होने पर इशारा है जो आयत, लहुमुल बुश्रा के तह़त बशारते इलाही है, रज़ियल्लाहु अ़न्हु व अर्ज़ाहू।

बाब 26 : ख़्वाब में पैर में बेड़ियाँ देखना

٢٦- باب القيد في المنام

7017. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन स़बाह़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे मुअ़तमिर ने बयान किया, उन्होंने कहा मैंने औ़फ़ से सुना, उनसे मुह़म्मद बिन सीरीन ने बयान किया, उन्होंने ह़ज़रत (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया जब क़यामत क़रीब होगी तो मोमिन का ख़्वाब झूठा नहीं होगा और मोमिन का ख़्वाब नुबुव्वत के छियालीस ह़िस्सों में से एक ह़िस्सा है। मुह़म्मद बिन सीरीन (रह़.) (जो कि इल्मे ता'बीर के बहुत बड़े आ़लिम थे) ने कहा नुबुव्वत का ह़िस्सा झूठ नहीं हो सकता। ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) कहते थे कि ख़्वाब तीन त़रह के हैं । दिल के ख़्यालात, शैत़ान का डराना और अल्लाह की त़रफ़ से ख़ुशख़बरी। पस अगर कोई शख़्स कोई ख़्वाब में बुरी चीज़ देखता है तो उसे चाहिये कि उसका ज़िक्र किसी से न करे और खड़ा होकर नमाज़ पढ़ने लगे मुह़म्मद बिन सीरीन ने कहा कि ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ख़्वाब मे त़ौक़ को नापसंद करते थे और क़ैद देखने का अच्छा समझते थे और कहा गया है कि क़ैद से मुराद दीन में स़ाबित

٧٠١٧- حدثنا عبد الله بن صباح، حدثنا معتمر قال: سمعت عوفا قال: حدثنا محمد بن سيرين أنه سمع أبا هريرة يقول: قال رسول الله ﷺ: ((إذا اقترب الزمان لم تكد تكذب رؤيا المؤمن، ورؤيا المؤمن جزء من ستة وأربعين جزءا من النبوة، وما كان من النبوة فإنه لا يكذب)) قال: محمد، وأنا أقول هذه قال: وكان يقال: الرؤيا ثلاث حديث النفس وتخويف الشيطان وبشرى من الله، فمن رأى شيئا يكرهه فلا يقصه على أحد، وليقم فليصل قال:

क़दमी है। और क़तादा, यूनुस, हिशाम और अबू हिलाल ने इब्ने सीरीन से नक़ल किया है, उन्होंने ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से, उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से। और कुछ ने ये सारी रिवायत ह़दीष़ में शुमार की है लेकिन अ़ौफ़ की रिवायत ज़्यादा वाज़ेह है और यूनुस ने कहा कि क़ैद के बारे में रिवायत को मैं नबी करीम (ﷺ) की ह़दीष़ ही समझता हूँ। अबू अ़ब्दुल्लाह ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) ने कहा कि तौक़ हमेशा गर्दनों ही में होते हैं।

وَكَانَ يَكْرَهُ الغُلَّ فِي النَّوْمِ، وَكَانَ يُعْجِبُهُمُ القَيْدُ وَيُقَالُ: القَيْدُ ثَبَاتٌ فِي الدِّينِ. وَرَوَى قَتَادَةُ وَيُونُسُ وَهِشَامٌ وَأَبُو هِلاَلٍ عَنِ ابْنِ سِيرِينَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ وَأَدْرَجَهُ بَعْضُهُمْ كُلَّهُ فِي الحَدِيثِ وَحَدِيثُ عَوْفٍ أَبْيَنُ وَقَالَ يُونُسُ: لاَ أَحْسِبُهُ إِلاَّ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ فِي القَيْدِ قَالَ أَبُو عَبْدِ اللهِ: لاَ تَكُونُ الأَغْلاَلُ إِلاَّ فِي الأَعْنَاقِ.

और बेड़ियाँ हाथों में। आयत, ग़ुल्लत अ़यदीहिम में हाथों की बेड़ियाँ मज़्कूर हैं।

बाब 27 : ख़्वाब में पानी का बहता चश्मा देखना

٢٧- باب العَيْنِ الجَارِيَةِ فِي المَنَامِ

7018. हमसे अ़ब्दान ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुल्लाह ने ख़बर दी, कहा हमको मअ़मर ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुहरी ने, उन्हें ख़ारिजा बिन ज़ैद बिन ष़ाबित ने और उनसे ह़ज़रत उम्मे अ़ला (रज़ि.) ने बयान किया जो उन्हीं में से एक ख़ातून हैं कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से बेअ़त की थी। उन्होंने बयान किया कि जब अंसार ने मुहाजिरीन के क़याम के लिये क़ुर्आअंदाज़ी की तो ह़ज़रत उ़ष्मान बिन मज़्ऊन (रज़ि.) का नाम हमारे यहाँ ठहरने के लिये निकला। फिर वो बीमार पड़े, हमने उनकी तीमारदारी की लेकिन उनकी वफ़ात हो गई। फिर हमने उन्हें उनके कपड़ों में लपेट दिया। उसके बाद आँह़ज़रत (ﷺ) हमारे घर तशरीफ़ लाए तो मैंने कहा अबू साइब! तुम पर अल्लाह की रह़मतें हों, मेरी गवाही है कि तुम्हें अल्लाह तआ़ला इ़ज़्ज़त बख़्शी है। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, तुम्हें ये कैसे मा'लूम हुआ? मैंने अ़र्ज़ किया अल्लाह की क़सम! मुझे मा'लूम नहीं है। आँह़ज़रत (ﷺ) ने उसके बाद फ़र्माया कि जहाँ तक इनका ता'ल्लुक़ है तो यक़ीनी बात (मौत) इन तक पहुँच चुकी है और मैं अल्लाह से इनके लिए ख़ैर की उम्मीद रखता हूँ लेकिन अल्लाह की क़सम! मैं रसूलुल्लाह हूँ और इसके बावजूद मुझे मा'लूम नहीं कि मेरे साथ क्या मामला किया जाएगा? उम्मे अ़ला ने कहा कि वल्लाह! इसके बाद मैं किसी इंसान की पाकी नहीं बयान करूँगी। उन्होंने बयान किया मैंने ह़ज़रत

٧٠١٨- حَدَّثَنَا عَبْدَانُ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ خَارِجَةَ بْنِ زَيْدِ بْنِ ثَابِتٍ عَنْ أُمِّ العَلاَءِ وَهِيَ امْرَأَةٌ مِنْ نِسَائِهِمْ بَايَعَتْ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَتْ: طَارَ لَنَا عُثْمَانُ بْنُ مَظْعُونٍ فِي السُّكْنَى حِينَ اقْتَرَعَتِ الأَنْصَارُ عَلَى سُكْنَى المُهَاجِرِينَ، فَاشْتَكَى فَمَرَّضْنَاهُ حَتَّى تُوُفِّيَ، ثُمَّ جَعَلْنَاهُ فِي أَثْوَابِهِ فَدَخَلَ عَلَيْنَا رَسُولُ اللهِ ﷺ فَقُلْتُ: رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْكَ أَبَا السَّائِبِ فَشَهَادَتِي عَلَيْكَ لَقَدْ أَكْرَمَكَ اللهُ قَالَ: ((وَمَا يُدْرِيكِ؟)) قُلْتُ: لاَ أَدْرِي وَاللهِ قَالَ : ((أَمَّا هُوَ فَقَدْ جَاءَهُ اليَقِينُ، إِنِّي لأَرْجُو لَهُ الخَيْرَ مِنَ اللهِ، وَاللهِ مَا أَدْرِي وَأَنَا رَسُولُ اللهِ ﷺ مَا يُفْعَلُ بِي وَلاَ بِكُمْ)). قَالَتْ أُمُّ العَلاَءِ: فَوَاللهِ لاَ أُزَكِّي أَحَدًا بَعْدَهُ، قَالَتْ: وَرَأَيْتُ

لِعُثْمَانَ فِي النَّوْمِ عَيْنًا تَجْرِي، فَجِئْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ فَذَكَرْتُ ذَلِكَ لَهُ فَقَالَ: ((ذَاكِ عَمَلُهُ يَجْرِي لَهُ)).
[راجع: ١٢٤٣]

उ़ष्मान (रज़ि.) के लिये ख़्वाब में एक जारी चश्मा देखा था। चुनाँचे मैंने ह़ाज़िर होकर आँह़ज़रत (ﷺ) से उसका ज़िक्र किया तो आपने फ़र्माया कि ये उनका नेक अ़मल है जिसका ष़वाब उनके लिये जारी है। (राजेअ़ : 1243)

तश्रीह़ : कहते हैं कि ये उष्मान बहुत मालदार आदमी थे, ख़्वाब में जो देखा उससे उनके स़दक़-ए-जारिया मुराद हैं। इमाम बुख़ारी (रह़.) ने यहाँ ये बतलाया कि चश्मा (झरना) से नेक अ़मल की ता'बीर होती है जिस त़रह़ लोग यहाँ तक कि जानवर भी चश्मा से फ़ायदा उठाते हैं इसी त़रह़ से एक मुसलमान का नेक अ़मल बहुत सी मख़्लूक़ को फ़ायदा पहुँचाता है। **ख़ैरुन्नासि मंय्यन्फ़उ़न्नास** का यही मत़लब है।

٢٨- باب نَزْعِ الْمَاءِ مِنَ الْبِئْرِ حَتَّى يَرْوَى النَّاسُ
رَوَاهُ أَبُو هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ.

बाब 28 : ख़्वाब में कुँए से पानी खींचना यहाँ तक कि लोग सैराब हो जाएँ, इसको अबू हुरैरह (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से रिवायत किया

٧٠١٩- حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ بْنِ كَثِيرٍ، حَدَّثَنَا شُعَيْبُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا صَخْرُ بْنُ جُوَيْرِيَةَ، حَدَّثَنَا نَافِعٌ أَنَّ ابْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا حَدَّثَهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((بَيْنَا أَنَا عَلَى بِئْرٍ أَنْزِعُ مِنْهَا، إِذْ جَاءَ أَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ فَأَخَذَ أَبُو بَكْرٍ الدَّلْوَ فَنَزَعَ ذَنُوبًا أَوْ ذَنُوبَيْنِ وَفِي نَزْعِهِ ضَعْفٌ فَغَفَرَ اللهُ لَهُ، ثُمَّ أَخَذَهَا ابْنُ الْخَطَّابِ مِنْ يَدِ أَبِي بَكْرٍ فَاسْتَحَالَتْ فِي يَدِهِ غَرْبًا فَلَمْ أَرَ عَبْقَرِيًّا مِنَ النَّاسِ يَفْرِي فَرِيَّهُ حَتَّى ضَرَبَ النَّاسُ بِعَطَنٍ)).
[راجع: ٣٦٣٤]

7019. हमसे यअ़क़ूब बिन इब्राहीम बिन कष़ीर ने बयान किया, कहा हमसे शुऐ़ब बिन ह़र्ब ने बयान किया, कहा हमसे स़ख़र बिन जुवैरिया ने बयान किया, कहा हमसे नाफ़ेअ़ ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया (ख़्वाब में) मैं एक कुँए से पानी खींच रहा था कि ह़ज़रत अबूबक्र और उ़मर (रज़ि.) भी आ गये। अब ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने डोल ले लिया और एक या दो डोल पानी खींचा। उनके खींचने में कमज़ोरी थी। अल्लाह तआ़ला उनकी मग़्फ़िरत फ़र्माए, उसके बाद ह़ज़रत उ़मर बिन ख़त़्त़ाब (रज़ि.) ने उसे ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) के हाथ से ले लिया और वो डोल उनके हाथ में बड़ा डोल बन गया। मैंने ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) जैसा पानी खींचने में किसी को माहिर नहीं देखा। उन्होंने ख़ूब पानी निकाला यहाँ तक कि लोगों ने ऊँटों के लिये पानी से ह़ौज़ भर ले। (राजेअ़ : 3634)

٢٩- باب نَزْعِ الذَّنُوبِ وَالذَّنُوبَيْنِ مِنَ الْبِئْرِ بِضَعْفٍ

बाब 29 : एक या दो डोल पानी कमज़ोरी के साथ खींचना

٧٠٢٠- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ، حَدَّثَنَا

7020. हमसे अह़मद बिन यूनुस ने बयान किया, कहा हमसे

ज़ुहैर ने बयान किया, कहा हमसे मूसा ने बयान किया, उनसे सालिम ने, उनसे उनके वालिद ने कि नबी करीम (ﷺ) ने हज़रत अबूबक्र व उ़मर (रज़ि.) के ख़्वाब के सिलसिले में फ़र्माया कि मैंने लोगों को देखा कि जमा हो गये हैं फिर हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) खड़े हुए और एक या दो डोल पानी खींचा और उनके खींचने में कमज़ोरी थी, अल्लाह उनकी मग़्फ़िरत करे। फिर हज़रत उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) खड़े हुए और वो बड़ा डोल बन गया। मैंने लोगों मे से किसी को इतनी महारत के साथ पानी निकालते नहीं देखा यहाँ तक कि लोगों ने हौज़ भर लिये। (राजेअ़ : 3634)

زُهَيْرٌ، حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ عُقْبَةَ، عَنْ سَالِمٍ، عَنْ أَبِيهِ عَنْ رُؤْيَا النَّبِيِّ ﷺ فِي أَبِي بَكْرٍ وَعُمَرَ قَالَ: ((رَأَيْتُ النَّاسَ اجْتَمَعُوا فَقَامَ أَبُو بَكْرٍ فَنَزَعَ ذَنُوبًا أَوْ ذَنُوبَيْنِ، وَفِي نَزْعِهِ ضَعْفٌ وَاللهُ يَغْفِرُ لَهُ، ثُمَّ قَامَ ابْنُ الْخَطَّابِ فَاسْتَحَالَتْ غَرْبًا فَمَا رَأَيْتُ مِنَ النَّاسِ مَنْ يَفْرِي فَرِيَّهُ حَتَّى ضَرَبَ النَّاسُ بِعَطَنٍ)). [راجع: ٣٦٣٤]

7021. हमसे सईद बिन उ़फ़ैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, कहा कि मुझसे अ़क़ील ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उन्हें सईद ने ख़बर दी, उन्हें हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने ख़बर दी कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया मैं सोया हुआ था कि मैंने अपने आपको एक कुँए पर देखा। उस पर एक डोल था। जितना अल्लाह ने चाहा मैंने उसमें से पानी खींचा, फिर उस डोल को इब्ने अबी क़ुहाफ़ा (रज़ि.) ने ले लिया और उन्होंने भी एक या दो डोल खींचे और उनके खींचने में कमज़ोरी थी, अल्लाह उनकी मग़्फ़िरत करे फिर वो बड़ा डोल बन गया और उसे उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) ने उठा लिया। मैंने किसी माहिर को हज़रत उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) की तरह खींचते नहीं देखा यहाँ तक कि उन्होंने लोगों के लिये ऊँटों के हौज़ भर दिये। लोगों ने अपने ऊँटों को सैराब करके अपने थानों पर ले जाकर बैठा दिया।(राजेअ़ : 3664)

٧٠٢١- حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ عُفَيْرٍ، حَدَّثَنِي اللَّيْثُ، حَدَّثَنِي عُقَيْلٌ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ أَخْبَرَنِي سَعِيدٌ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ أَخْبَرَهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((بَيْنَا أَنَا نَائِمٌ رَأَيْتُنِي عَلَى قَلِيبٍ وَعَلَيْهَا دَلْوٌ، فَنَزَعْتُ مِنْهَا مَا شَاءَ اللهُ ثُمَّ أَخَذَهَا ابْنُ أَبِي قُحَافَةَ، فَنَزَعَ مِنْهَا ذَنُوبًا أَوْ ذَنُوبَيْنِ وَفِي نَزْعِهِ ضَعْفٌ وَاللهُ يَغْفِرُ لَهُ، ثُمَّ اسْتَحَالَتْ غَرْبًا، فَأَخَذَهَا عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ فَلَمْ أَرَ عَبْقَرِيًّا مِنَ النَّاسِ يَنْزِعُ نَزْعَ عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ، حَتَّى ضَرَبَ النَّاسُ بِعَطَنٍ)). [راجع: ٣٦٦٤]

बाब 30 : ख़्वाब में आराम करना राहत लेना

٣٠- باب الاسْتِرَاحَةِ فِي الْمَنَامِ

7022. हमसे इस्हाक़ बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने ख़बर दी, उनसे मअ़मर ने, उनसे हम्माम ने उन्होंने हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया मैं सोया हुआ था कि मैंने ख़्वाब देखा कि मैं हौज़ पर हूँ और लोगों को सैराब कर रहा हूँ फिर मेरे पास हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) आए और मुझे आराम देने के लिये डोल मेरे हाथ से ले लिया फिर उन्होंने दो डोल

٧٠٢٢- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، عَنْ مَعْمَرٍ، عَنْ هَمَّامٍ أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُولُ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((بَيْنَا أَنَا نَائِمٌ رَأَيْتُ أَنِّي عَلَى حَوْضٍ أَسْقِي النَّاسَ، فَأَتَانِي أَبُو

खींचे, उनके खींचने में कमज़ोरी थी, अल्लाह उनकी मग़्फ़िरत करे। फिर हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) आए और उनसे डोल ले लिया और बराबर खींचते रहे यहाँ तक कि लोग सैराब होकर चल दिये और हौज़ से पानी लबालब उबल रहा था। (राजेअ: 3664)

بَكْرٍ فَأَخَذَ الدَّلْوَ مِنْ يَدِي لِيُرِيحَنِي، فَنَزَعَ ذَنُوبَيْنِ وَفِي نَزْعِهِ ضَعْفٌ وَاللهُ يَغْفِرُ لَهُ، فَأَتَى ابْنُ الْخَطَّابِ فَأَخَذَ مِنْهُ فَلَمْ يَزَلْ يَنْزِعُ حَتَّى تَوَلَّى النَّاسُ وَالْحَوْضُ يَتَفَجَّرُ)). [راجع: ٣٦٦٤]

वो हज़रत बहुत क़ाबिले ता'रीफ़ हैं जो ख़्वाब में ही रसूलुल्लाह (ﷺ) को आराम व राहत पहुँचाएँ वो दोनों बुज़ुर्ग कितने ख़ुशनसीब हैं कि क़यामत तक के लिये रसूले करीम (ﷺ) के पहलू में आराम फ़र्मा रहे हैं।

बाब 31 : ख़्वाब में महल देखना

٣١- باب الْقَصْرِ فِي الْمَنَامِ

7023. हमसे सईद बिन उ़फ़ैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष बिन सअ़द ने बयान किया, कहा मुझसे अ़क़ील ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया कि मुझे सईद बिन मुसय्यब ने ख़बर दी और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास बैठे हुए थे कि आपने फ़र्माया मैं सोया हुआ था कि मैंने अपने आपको जन्नत में देखा। मैंने देखा कि जन्नत के महल के एक किनारे एक औरत वुज़ू कर रही है। मैंने पूछा, ये महल किसका है? बताया कि उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़ि .) का। फिर मैंने उनकी ग़ैरत याद की और वहाँ से लौट आया। हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि हज़रत उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) इस पर रो पड़े और अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! मेरे माँ बाप आप (ﷺ) पर क़ुर्बान हों, क्या मैं आप पर ग़ैरत करूँगा? (राजेअ: 3242)

٧٠٢٣- حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ عُفَيْرٍ، حَدَّثَنِي اللَّيْثُ، حَدَّثَنِي عُقَيْلٌ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ أَخْبَرَنِي سَعِيدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ قَالَ: بَيْنَا نَحْنُ جُلُوسٌ عِنْدَ رَسُولِ اللهِ ﷺ قَالَ: ((بَيْنَا أَنَا نَائِمٌ رَأَيْتُنِي فِي الْجَنَّةِ، فَإِذَا امْرَأَةٌ تَتَوَضَّأُ إِلَى جَانِبِ قَصْرٍ قُلْتُ: لِمَنْ هَذَا الْقَصْرُ؟ قَالُوا: لِعُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ فَذَكَرْتُ غَيْرَتَهُ فَوَلَّيْتُ مُدْبِرًا)) قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ : فَبَكَى عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ ثُمَّ قَالَ أَعَلَيْكَ بِأَبِي أَنْتَ وَأُمِّي يَا رَسُولَ اللهِ أَغَارُ؟. [راجع: ٣٢٤٢]

तश्रीह : आप तो तमाम मोमिनीन के वली और मिष्ल वालिद बुज़ुर्गवार के हैं। दूसरे हज़रत उ़मर (रज़ि.) की अ़ज़ीज़ बेटी हफ़्सा (रज़ि.) आपके निकाह में थीं। दामाद अपने बेटे की त़रह अ़ज़ीज़ होता है, उस पर कौन ग़ैरत करे? हज़रत उ़मर (रज़ि.) की उस बीवी का नाम उम्मे सुलैम था, वो उस वक़्त तक ज़िन्दा थीं। बहरहाल ख़्वाब में महल देखना मुबारक है।

7024. हमसे अ़म्र बिन अ़ली ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे मुअ़तमिर बिन सुलैमान ने बयान किया, उनसे उ़बैदुल्लाह बिन उ़मर ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन मुंकदिर ने और उनसे हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया मैं जन्नत में दाख़िल हुआ तो वहाँ एक सोने का महल नज़र आया। मैंने पूछा ये किसका है?

٧٠٢٤- حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عَلِيٍّ، حَدَّثَنَا مُعْتَمِرُ بْنُ سُلَيْمَانَ، حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ عُمَرَ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ الْمُنْكَدِرِ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((دَخَلْتُ الْجَنَّةَ فَإِذَا أَنَا بِقَصْرٍ مِنْ ذَهَبٍ،

فَقُلْتُ: لِمَنْ هَذَا؟ فَقَالُوا: لِرَجُلٍ مِنْ قُرَيْشٍ، فَمَا مَنَعَنِي أَنْ أَدْخُلَهُ يَابْنَ الْخَطَّابِ إِلاَّ مَا أَعْلَمُ مِنْ غَيْرَتِكَ)) قَالَ: وَعَلَيْكَ أَغَارُ يَا رَسُولَ اللهِ؟.

[راجع: ٣٦٧٩]

कहा कि क़ुरैश के एक शख़्स का। ऐ इब्नुल ख़त्ताब! मुझे उसके अंदर जाने से तुम्हारी ग़ैरत ने रोक दिया है जिसे मैं ख़ूब जानता हूँ। हज़रत उमर (रज़ि.) ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! क्या मैं आप पर ग़ैरत करूँगा। (राजेअ : 3679)

٣٢- باب الْوُضُوءِ فِي الْمَنَامِ

बाब 32 : ख़्वाब में किसी को वुज़ू करते देखना

٧٠٢٥- حَدَّثَنِي يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ عُقَيْلٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ أَخْبَرَنِي سَعِيدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ قَالَ: بَيْنَمَا نَحْنُ جُلُوسٌ عِنْدَ رَسُولِ اللهِ ﷺ قَالَ: ((بَيْنَا أَنَا نَائِمٌ رَأَيْتُنِي فِي الْجَنَّةِ، فَإِذَا امْرَأَةٌ تَتَوَضَّأُ إِلَى جَانِبِ قَصْرٍ، فَقُلْتُ: لِمَنْ هَذَا الْقَصْرُ؟ قَالُوا: لِعُمَرَ فَذَكَرْتُ غَيْرَتَهُ فَوَلَّيْتُ مُدْبِرًا)) فَبَكَى عُمَرُ وَقَالَ: عَلَيْكَ بِأَبِي أَنْتَ وَأُمِّي يَا رَسُولَ اللهِ أَغَارُ؟. [راجع: ٣٢٤٢]

7025. मुझसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे अ़क़ील ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उन्हें सईद बिन मुसय्यब ने ख़बर दी और उनसे हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास बैठे हुए थे। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया मैं सोया हुआ था कि मैंने अपने आपको जन्नत में देखा वहाँ एक औरत एक महल के किनारे पर वुज़ू कर रही थी। मैंने पूछा ये महल किसका है? कहा कि हज़रत उमर (रज़ि.) का। फिर मैंने उनकी ग़ैरत याद की और वहाँ से लौटकर चला आया। उस पर हज़रत उमर (रज़ि.) रो दिये और अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! मेरे माँ बाप आप (ﷺ) पर फ़िदा हों, क्या आप पर ग़ैरत करूँगा? (राजेअ : 3242)

आँहज़रत (ﷺ) ने एक औरत को ख़्वाब में वुज़ू करते देखा यही बाब से मुनासबत है वो औरत जिसे इस हालत में देखा जाए बड़ी ही क़िस्मत वाली होती है।

٣٣- باب الطَّوَافِ بِالْكَعْبَةِ فِي الْمَنَامِ

बाब 33 : ख़्वाब में किसी को का'बा का तवाफ़ करते देखना

٧٠٢٦- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، أَخْبَرَنِي سَالِمُ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنُ عُمَرَ أَنَّ أنَّ عبدا الله بن عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ ((بَيْنَا أَنَا نَائِمٌ رَأَيْتُنِي أَطُوفُ بِالْكَعْبَةِ، فَإِذَا رَجُلٌ آدَمُ سَبِطُ الشَّعَرِ بَيْنَ رَجُلَيْنِ يَنْطِفُ

7026. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको शुऐ़ब ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुहरी ने ख़बर दी, उन्हें सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह इब्ने उ़मर ने ख़बर दी, उनसे हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया मैं सोया हुआ था कि मैंने अपने आपको का'बा का तवाफ़ करते देखा। अचानक एक साहब नज़र आए, गन्दुमी (रंग), बाल लटके हुए थे और दो आदमियों के बीच (सहारा लिये हुए थे) उनके सर से पानी टपक रहा था। मैंने पूछा ये कौन है? कहा कि ईसा इब्ने मरयम (अ़लैहि.), फिर मैं मुड़ा तो एक

رَأْسُهُ مَاءً، فَقُلْتُ: مَنْ هَذَا؟ قَالُوا: ابْنُ مَرْيَمَ، فَذَهَبْتُ أَلْتَفِتُ فَإِذَا رَجُلٌ أَحْمَرُ جَسِيمٌ جَعْدُ الرَّأْسِ أَعْوَرُ الْعَيْنِ الْيُمْنَى، كَأَنَّ عَيْنَهُ عِنَبَةٌ طَافِيَةٌ قُلْتُ: مَنْ هَذَا؟ قَالُوا: هَذَا الدَّجَّالُ أَقْرَبُ النَّاسِ بِهِ شَبَهًا ابْنُ قَطَنٍ وَ ابْنُ قَطَنٍ)) رَجُلٌ مِنْ بَنِي الْمُصْطَلِقِ مِنْ خُزَاعَةَ. [راجع: ٣٤٤٠]

दूसरा शख़्स सुर्ख़, भारी जिस्म वाला, घुँघराले बाल वाला और एक आँख से काना जैसे उसकी आँख पर ख़ुश्क अंगूर हो नज़र आया। मैंने पूछा ये कौन हैं? कहा कि ये है दज्जाल। इसकी सूरत अ़ब्दुल उ़ज़्ज़ा बिन क़त़नि से बहुत मिलती थी ये अ़ब्दुल उ़ज़्ज़ा बनी मुस्त़लक़ में था जो ख़ुज़ाआ क़बीला की एक शाख़ है। (राजेअ़ : 3440)

٣٤- باب إِذَا أَعْطَى فَضْلَهُ غَيْرَهُ فِي النَّوْمِ

बाब 34 : जब किसी ने अपना बचा हुआ दूध ख़्वाब में किसी और को दिया

٧٠٢٧- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ عُقَيْلٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ أَخْبَرَنِي حَمْزَةُ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ أَنَّ عَبْدَ اللهِ بْنَ عُمَرَ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((بَيْنَا أَنَا نَائِمٌ أُتِيتُ بِقَدَحِ لَبَنٍ، فَشَرِبْتُ مِنْهُ حَتَّى إِنِّي لأَرَى الرِّيَّ يَجْرِي، ثُمَّ أَعْطَيْتُ فَضْلَهُ عُمَرَ)) قَالُوا: فَمَا أَوَّلْتَهُ يَا رَسُولَ اللهِ؟ قَالَ: ((الْعِلْمَ)). [راجع: ٨٢]

7027. हमसे यह़्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ ने बयान किया, उनसे अ़क़ील ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उन्हें ह़म्ज़ा बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने ख़बर दी कि ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना, आपने बयान किया कि मैं सोया हुआ था कि दूध का एक प्याला मेरे पास लाया गया और उसमें से इतना पिया कि सैराबी को मैंने हर रग व पै में पाया। फिर मैंने अपना बचा हुआ दूध ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) को दे दिया। लोगों ने पूछा कि ऐ अल्लाह के रसूल! आपने इसकी ता'बीर क्या ली? फ़र्माया कि इल्म इसकी ता'बीर है। (राजेअ़ : 26)

मा'लूम हुआ कि ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) इल्मे नबवी के भी पूरे ह़ामिल थे। बहुत ही बुरे हैं वो लोग जो ऐसे फ़िदा-ए-रसूल (ﷺ) की तन्क़ीस़ करे, अल्लाह उनको हिदायत करे, आमीन। ख़्वाब में दूध पीने से उ़लूमे दीन ह़ासिल होना इसकी ता'बीर है।

٣٥- باب الأَمْنِ وَذَهَابِ الرَّوْعِ فِي الْمَنَامِ

बाब 35 : ख़्वाब में आदमी अपने आप को बे-ख़ौफ़ देखे

٧٠٢٨- حَدَّثَنِي عُبَيْدُ اللهِ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا عَفَّانُ بْنُ مُسْلِمٍ، حَدَّثَنَا صَخْرُ بْنُ جُوَيْرِيَةَ، حَدَّثَنَا نَافِعٌ أَنَّ ابْنَ عُمَرَ قَالَ: إِنَّ رِجَالاً مِنْ أَصْحَابِ رَسُولِ اللهِ ﷺ كَانُوا

7028. मुझसे उ़बैदुल्लाह बिन सईद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अ़फ़्फ़ान बिन मुस्लिम ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे स़ख़र बिन जुवैरिया ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे नाफ़ेअ़ ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के स़ह़ाबा में से

يَرَوْنَ الرُّؤْيَا عَلَى عَهْدِ رَسُولِ اللهِ ﷺ فَيَقُصُّونَهَا عَلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ فَيَقُولُ فِيهَا رَسُولُ اللهِ ﷺ مَا شَاءَ اللهُ وَأَنَا غُلاَمٌ حَدِيثُ السِّنِّ وَبَيْتِي الْمَسْجِدُ قَبْلَ أَنْ أَنْكِحَ فَقُلْتُ فِي نَفْسِي: لَوْ كَانَ فِيكَ خَيْرٌ لَرَأَيْتَ مِثْلَ مَا يَرَى هَؤُلاَءِ؟ فَلَمَّا اضْطَجَعْتُ لَيْلَةً قُلْتُ: اللَّهُمَّ إِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ فِيَّ خَيْرًا فَأَرِنِي رُؤْيَا، فَبَيْنَا أَنَا كَذَلِكَ إِذْ جَاءَنِي مَلَكَانِ فِي يَدِ كُلِّ وَاحِدٍ مِنْهُمَا مِقْمَعَةٌ مِنْ حَدِيدٍ، يُقْبِلاَ بِي إِلَى جَهَنَّمَ وَأَنَا بَيْنَهُمَا أَدْعُوا اللهَ اللَّهُمَّ أَعُوذُ بِكَ مِنْ جَهَنَّمَ، ثُمَّ أُرَانِي لَقِيَنِي مَلَكٌ فِي يَدِهِ مِقْمَعَةٌ مِنْ حَدِيدٍ فَقَالَ: لَنْ تُرَاعَ نِعْمَ الرَّجُلُ أَنْتَ لَوْ تُكْثِرُ الصَّلاَةَ، فَانْطَلَقُوا بِي حَتَّى وَقَفُوا بِي عَلَى شَفِيرِ جَهَنَّمَ فَإِذَا هِيَ مَطْوِيَّةٌ كَطَيِّ الْبِئْرِ لَهُ قُرُونٌ كَقُرُونِ الْبِئْرِ بَيْنَ كُلِّ قَرْنَيْنِ مَلَكٌ بِيَدِهِ مِقْمَعَةٌ مِنْ حَدِيدٍ، وَأَرَى فِيهَا رِجَالاً مُعَلَّقِينَ بِالسَّلاَسِلِ رُؤُوسُهُمْ أَسْفَلَهُمْ، عَرَفْتُ فِيهَا رِجَالاً مِنْ قُرَيْشٍ فَانْصَرَفُوا بِي عَنْ ذَاتِ الْيَمِينِ. [راجع: ٤٤٠]

कुछ लोग आँहज़रत (ﷺ) के अ़हद में ख़्वाब देखते थे और उसे आँहज़रत (ﷺ) से बयान करते थे, आँहज़रत (ﷺ) उसकी ता'बीर देते जैसी कि अल्लाह चाहता। मैं उस वक़्त नौ उ़म्र था और मेरा घर मस्जिद थी ये मेरी शादी से पहले की बात है। मैंने अपने दिल में सोचा कि अगर तुझमें कोई ख़ैर होती तो तू भी उन लोगों की त़रह़ ख़्वाब देखता। चुनाँचे जब मैं एक रात लेटा तो मैंने कहा ऐ अल्लाह! अगर तू मेरे अंदर कोई ख़ैर व भलाई जानता है तू मुझे ख़्वाब दिखा। मैं उसी ह़ाल में (सो गया और मैंने देखा कि) मेरे पास दो फ़रिश्ते आए, उनमें से हर एक के हाथ में लोहे का हथौड़ा था और वो मुझे जहन्नम की त़रफ़ ले चले। मैं उन दोनों फ़रिश्तों के बीच में था और अल्लाह से दुआ़ करता जा रहा था कि ऐ अल्लाह मैं जहन्नम से तेरी पनाह चाहता हूँ फिर मुझे दिखाया गया (ख़्वाब ही में) कि मुझसे एक और फ़रिश्ता मिला जिसके हाथ में लोहे का एक हथौड़ा था और उसने कहा डरो नहीं तुम कितने अच्छे आदमी हो अगर तुम नमाज़ ज़्यादा पढ़ते। चुनाँचे वो मुझे लेकर चले और जहन्नम के किनारे पर ले जाकर मुझे खड़ा कर दिया तो जहन्नम एक गोल कुँए की त़रह़ थी और कुँए के मटकों की त़रह़ उसके भी मटके थे और दोनों मटकों के बीच एक फ़रिश्ता था। जिसके हाथ में लोहे का एक हथौड़ा था और मैंने उसमें कुछ लोग देखे जिन्हें ज़ंजीरों में लटका दिया गया था और उनके सर नीचे थे। (और पैर ऊपर) उनमें से कुछ कुरैश के लोगों को मैंने पहचाना। फिर वो मुझे दाँए त़रफ़ लेकर चले। (राजेअ़ : 440)

٧٠٢٩- فَقَصَصْتُهَا عَلَى حَفْصَةَ فَقَصَّتْهَا حَفْصَةُ عَلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِنَّ عَبْدَ اللهِ رَجُلٌ صَالِحٌ)) فَقَالَ نَافِعٌ: لَمْ يَزَلْ بَعْدَ ذَلِكَ يُكْثِرُ الصَّلاَةَ. [راجع: ١١٢٢]

7029. बाद में मैंने उसका ज़िक्र अपनी बहन ह़फ़्स़ा (रज़ि.) से किया और उन्होंने आँहज़रत (ﷺ) से, आँहज़रत (ﷺ) ने ये (सुनकर) फ़र्माया। अ़ब्दुल्लाह नेक मर्द है। (अगर रात को तहज्जुद पढ़ता होता) नाफ़ेअ़ कहते हैं कि अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने जब से ये ख़्वाब देखा वो नफ़्ल नमाज़ बहुत पढ़ा करते थे। मटके जिन पर मूठ की लकड़ियाँ खड़ी करते हैं। (राजेअ़ : 1122)

बाब 36 : ख़्वाब में दाँए तरफ़ ले जाते देखना

٣٦- باب الأَخْذِ عَلَى الْيَمِينِ فِي النَّوْمِ

7030. मुझसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमको मअमर ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुहरी ने, उन्हें सालिम ने, उनसे इब्ने उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं नबी करीम (ﷺ) के ज़माने में नौजवान ग़ैर शादीशुदा था तो मस्जिदे नबवी में सोता था और जो शख़्स भी ख़्वाब देखता वो आँहज़रत (ﷺ) से उसका तज़्किरा करता। मैंने सोचा, ऐ अल्लाह! अगर तेरे नज़दीक मुझमें कोई ख़ैर है तो मुझे भी कोई ख़्वाब दिखा जिसकी आँहज़रत (ﷺ) मुझे ता'बीर दें। फिर मैं सोया और मैंने दो फ़रिश्ते देखे जो मेरे पास आए और मुझे ले चले। फिर उन दोनों से तीसरा फ़रिश्ता भी आ मिला और उसने मुझसे कहा कि डरो नहीं तुम नेक आदमी हो। फिर वो दोनों फ़रिश्ते मुझे जहन्नम की तरफ़ ले गये तो वो कुँए की तरह तह-ब-तह थी और उसमें कुछ लोग थे जिनमें से कुछ को मैंने पहचाना भी। फिर दोनों फ़रिश्ते मुझे दाईं तरफ़ ले चले। जब सुबह हुई तो मैंने उसका तज़्किरा अपनी बहन हज़रत हफ़्सा (रज़ि.) से किया। (राजेअ : 440)

٧٠٣٠- حَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ، حَدَّثَنَا هِشَامُ بْنُ يُوسُفَ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ سَالِمٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: كُنْتُ غُلاَمًا شَابًّا عَزَبًا فِي عَهْدِ النَّبِيِّ ﷺ وَكُنْتُ أَبِيتُ فِي الْمَسْجِدِ، وَكَانَ مَنْ رَأَى مَنَامًا قَصَّهُ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقُلْتُ اللَّهُمَّ إِنْ كَانَ لِي عِنْدَكَ خَيْرٌ فَأَرِنِي مَنَامًا يُعَبِّرُهُ لِي رَسُولُ اللهِ ﷺ، فَنِمْتُ فَرَأَيْتُ مَلَكَيْنِ أَتَيَانِي فَانْطَلَقَا بِي فَلَقِيَهُمَا مَلَكٌ آخَرُ فَقَالَ لِي : لَنْ تُرَاعَ إِنَّكَ رَجُلٌ صَالِحٌ فَانْطَلَقَا بِي إِلَى النَّارِ، فَإِذَا هِيَ مَطْوِيَّةٌ كَطَيِّ الْبِئْرِ، وَإِذَا فِيهَا نَاسٌ قَدْ عَرَفْتُ بَعْضَهُمْ فَأَخَذَا بِي ذَاتَ الْيَمِينِ، فَلَمَّا أَصْبَحْتُ ذَكَرْتُ ذَلِكَ لِحَفْصَةَ.

[راجع: ٤٤٠]

7031. उम्मुल मोमिनीन हज़रत हफ़्सा (रज़ि.) ने जब आँहज़रत (ﷺ) से उस ख़्वाब का ज़िक्र किया तो आपने फ़र्माया कि अब्दुल्लाह नेक मर्द है। काश! वो रात में नमाज़ ज़्यादा पढ़ा करता। ज़ुहरी ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) के इस फ़र्मान के बाद वो रात में नफ़्ली नमाज़ ज़्यादा पढ़ा करते थे। (राजेअ : 1122)

٧٠٣١- فَزَعَمَتْ حَفْصَةُ أَنَّهَا قَصَّتْهَا عَلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ ((إِنَّ عَبْدَ اللهِ رَجُلٌ صَالِحٌ، لَوْ كَانَ يُكْثِرُ الصَّلاَةَ مِنَ اللَّيْلِ)). قَالَ الزُّهْرِيُّ : وَكَانَ عَبْدُ اللهِ بَعْدَ ذَلِكَ يُكْثِرُ الصَّلاَةَ مِنَ اللَّيْلِ. [راجع: ١١٢٢]

तश्रीह : इस हदीष़ से मा'लूम हुआ कि नौजवानी के नेक आ'माल अल्लाह तआला को बहुत ज़्यादा पसंद हैं क्योंकि हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) अभी नौजवान ही थे और फ़रिश्ते उनको नेक आ'माल या'नी नमाज़े नफ़्ल व तहज्जुद की तरफ़ तर्ग़ीब दे रहे थे।

बाब 37 : ख़्वाब में प्याला देखना

٣٧- باب الْقَدَحِ فِي النَّوْمِ

7032. हमसे कुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे

٧٠٣٢- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا

लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे अ़क़ील ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे ह़म्ज़ा बिन अ़ब्दुल्लाह ने और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना आपने फ़र्माया कि मैं सोया हुआ था कि मेरे पास दूध का एक प्याला लाया गया। मैंने उसमें से पिया फिर मैंने अपना बचा हुआ ह़ज़रत उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) को दे दिया। लोगों ने पूछा या रसूलल्लाह! आपने इसकी ता'बीर क्या ली? आँह़ुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि इ़ल्म से ता'बीर ली। (राजेअ़ : 82)

اللَّيْثُ، عَنْ عُقَيْلٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ حَمْزَةَ بْنِ عَبْدِ اللهِ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((بَيْنَا أَنَا نَائِمٌ أُتِيتُ بِقَدَحِ لَبَنٍ، فَشَرِبْتُ مِنْهُ ثُمَّ أَعْطَيْتُ فَضْلِي عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ)) قَالُوا: فَمَا أَوَّلْتَهُ يَا رَسُولَ اللهِ؟ قَالَ: ((الْعِلْمَ)). [راجع: ٨٢]

बाब 38 : जब ख़्वाब में कोई चीज़ उड़ती हुई नज़र आए

٣٨- باب إِذَا طَارَ الشَّيْءُ فِي الْمَنَامِ

7033. मुझसे सईद बिन मुह़म्मद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे यअ़क़ूब बिन इब्राहीम ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे हमारे वालिद ने बयान किया, उनसे स़ालेह ने, उनसे अबू उ़बैदह बिन नशीत़ ने बयान किया, उनसे उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया कि मैंने अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) से नबी करीम (ﷺ) के उस ख़्वाब के बारे में पूछा जो उन्होंने बयान किया था। (राजेअ़ : 3620)

٧٠٣٣- حَدَّثَنِي سَعِيدُ بْنُ مُحَمَّدٍ، حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، حَدَّثَنَا أَبِي، عَنْ صَالِحٍ، عَنْ عُبَيْدَةَ بْنِ نَشِيطٍ قَالَ : قَالَ عُبَيْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ اللهِ سَأَلْتُ عَبْدَ اللهِ بْنَ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنْ رُؤْيَا رَسُولِ اللهِ ﷺ الَّتِي ذَكَرَ. [راجع: ٣٦٢٠]

7034. तो ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा कि मुझसे कहा गया है कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैंने ख़्वाब में देखा कि दो सोने के कंगन मेरे हाथ में रखे गये हैं तो मुझे उससे तकलीफ़ पहुँची और नागवारी हुई फिर मुझे इजाज़त दी गई और मैंने उन पर फूँक मारी और वो दोनों उड़ गये। मैंने इसकी ता'बीर ये ली कि दो झूठे पैदा होंगे। उ़बैदुल्लाह ने बयान किया कि उनमें से एक तो अल अ़नसी था जिसे यमन में फ़ीरोज़ ने क़त्ल किया और दूसरा मुसैलमा। (राजेअ़ : 3621)

٧٠٣٤- فَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: ذُكِرَ لِي أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((بَيْنَا أَنَا نَائِمٌ رَأَيْتُ أَنَّهُ وُضِعَ فِي يَدَيَّ سِوَارَانِ مِنْ ذَهَبٍ، فَفُظِعْتُهُمَا وَكَرِهْتُهُمَا فَأُذِنَ لِي فَنَفَخْتُهُمَا فَطَارَا، فَأَوَّلْتُهُمَا كَذَّابَيْنِ يَخْرُجَانِ)) فَقَالَ عُبَيْدُ اللهِ: أَحَدُهُمَا الْعَنْسِيُّ الَّذِي قَتَلَهُ فَيْرُوزُ بِالْيَمَنِ، وَالآخَرُ مُسَيْلِمَةُ. [راجع: ٣٦٢١]

बाब 39 : जब गाय को ख़्वाब में ज़िब्ह़ होते देखे

٣٩- باب إِذَا رَأَى بَقَرًا تُنْحَرُ

7035. मुझसे मुह़म्मद बिन अ़ला ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, उनसे बुरैदह ने, उनसे उनके दादा अबू बुर्दा ने, उनसे ह़ज़रत अबू मूसा (रज़ि.) ने मेरा ख़्याल है कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया मैंने ख़्वाब में देखा कि मैं

٧٠٣٥- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلاَءِ، حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، عَنْ بُرَيْدٍ عَنْ جَدِّهِ أَبِي بُرْدَةَ عَنْ أَبِي مُوسَى عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ:

मक्का से एक ऐसी ज़मीन की त़रफ़ हिजरत कर रहा हूँ जहाँ खजूरें हैं। मेरा ज़हन उस त़रफ़ गया कि ये जगह यमामा है या हजर। लेकिन बाद में मा'लूम हुआ कि मदीना या'नी यष्रिब है और मैंने ख़्वाब में गाय देखी (ज़िब्ह की हुई) और ये आवाज़ सुनी कि कोई कह रहा है कि और अल्लाह के यहाँ ही ख़ैर है तो इसकी ता'बीर उन मुसलमानों की सूरत में आई जो जंगे उहुद में शहीद हुए और ख़ैर वो है जो अल्लाह तआला ने ख़ैर और सच्चाई के ष़वाब की सूरत में दिया या'नी वो जो हमें अल्लाह तआला ने जंगे बद्र के बाद (दूसरी फ़ुतूहात की सूरत में) दी। (राजेअ : 3622)

((رَأَيْتُ فِي الْمَنَامِ أَنِّي أُهَاجِرُ مِنْ مَكَّةَ إِلَى أَرْضٍ بِهَا نَخْلٌ، فَذَهَبَ وَهَلِي إِلَى أَنَّهَا الْيَمَامَةُ أَوْ هَجَرُ، فَإِذَا هِيَ الْمَدِينَةُ يَثْرِبُ، وَرَأَيْتُ فِيهَا بَقَرًا وَاللَّهُ خَيْرٌ فَإِذَا هُمُ الْمُؤْمِنُونَ يَوْمَ أُحُدٍ وَإِذَا الْخَيْرُ مَا جَاءَ اللَّهُ بِهِ مِنَ الْخَيْرِ، وَثَوَابِ الصِّدْقِ الَّذِي آتَانَا اللَّهُ بَعْدَ يَوْمِ بَدْرٍ)).

[راجع: ٣٦٢٢]

यमामा मक्का और यमन के बीच एक बस्ती है। हजर बह़रीन का पाया तख़्त था या यमन का एक शहर इस रिवायत में गाय के ज़िब्ह होने का ज़िक्र नहीं है। ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) ने इसके दूसरे त़रीक़ की त़रफ़ इशारा किया जो मुस्नदे अह़मद में है। उसमें स़ाफ़ यूँ है, **बक़रुन्नह़र** तो बाब की मुत़ाबक़त हो गई। गाय का इस ह़ाल में ख़्वाब में देखना कुछ बेगुनाह लोगों का दुख में मुब्तला होना मुराद है जैसा कि जंगे उह़ुद में हुआ। ख़ैर से मुराद वो फ़ुतूह़ात हैं जो बाद में मुसलमानों को ह़ासिल हुईं।

बाब 40 : ख़्वाब में फूँक मारते देखना

٤٠- باب النَّفْخِ فِي الْمَنَامِ

7036. मुझसे इस्ह़ाक़ बिन इब्राहीम ह़ंज़ली ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने बयान किया, कहा हमको मअ़मर ने ख़बर दी, उनसे हम्माम बिन मुंबा ने बयान किया कि ये वो ह़दीष़ है जो हमसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान की कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया हम सब उम्मतों से आख़िरी उम्मत और सब उम्मतों से पहली उम्मत हैं। (राजेअ : 238)

٧٠٣٦- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ الْحَنْظَلِيُّ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ. أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنْ هَمَّامِ بْنِ مُنَبِّهٍ قَالَ: هَذَا مَا حَدَّثَنَا بِهِ أَبُو هُرَيْرَةَ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ قَالَ : ((نَحْنُ الآخِرُونَ السَّابِقُونَ)).

[راجع: ٢٣٨]

7037. और आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, मैं सोया हुआ था कि ज़मीन के ख़ज़ाने मेरे पास लाए गये और मेरे हाथ में दो सोने के कंगन रख दिये गये जो मुझे बहुत शाक़ गुज़रे। फिर मुझे वह़्य की गई कि मैं उन पर फूँक मारूँ। मैंने फूँका तो वो उड़ गये। मैंने उनकी ता'बीर दो झूठों से ली जिनके बीच में मैं हूँ एक स़न्आ का और दूसरा यमामा का। (राजेअ : 3621)

٧٠٣٧- وَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((بَيْنَا أَنَا نَائِمٌ إِذْ أُتِيتُ بِخَزَائِنِ الأَرْضِ، فَوُضِعَ فِي يَدَيَّ سِوَارَانِ مِنْ ذَهَبٍ، فَكَبُرَا عَلَيَّ وَأَهَمَّانِي فَأُوحِيَ إِلَيَّ أَنِ انْفُخْهُمَا فَنَفَخْتُهُمَا فَطَارَا، فَأَوَّلْتُهُمَا الْكَذَّابَيْنِ اللَّذَيْنِ أَنَا بَيْنَهُمَا صَاحِبَ صَنْعَاءَ وَصَاحِبَ الْيَمَامَةِ)). [راجع: ٣٦٢١]

तश्रीह : सन्आ में एक शख़्स अस्वद अनसी नामी ने नुबुव्वत का दा'वा किया और यमामा में मुसैलमा कज़्ज़ाब ने भी यही ढोंग रचाया। अल्लाह ने इन दोनों को हलाक कर दिया। लफ़्ज़ **फ़नफ़ख़हू** के ज़ैल में हाफ़िज़ साहब फ़र्माते हैं, **व फ़ी ज़ालिक इशारतुन इला हिकारति अम्रिहिमा लिअन्न शानल्लज़ी यन्फ़ख़ु फ़युज़्हब बिन्नफ़्ख़ि अय्यंकून फ़ी ग़ायतिल हिक़ारति** (फ़त्ह) या'नी आपके फूँक देने में उन दोनों की हिक़ारत पर इशारा है। इसलिये फूँकने की कैफ़ियत में है कि जिस चीज़ को फूँका जाए वो फूँकने से चली जाए वो चीज़ इंतिहाई हक़ीर और कमज़ोर होती है जैसे रेत मिट्टी हाथों के ऊपर से फूँक से उड़ा देते हैं वो सोने के कंगन नज़र आए जो फूँकने से तो फ़ौरन उड़ गये और ख़त्म हो गये। अस्वद अनसी को फ़ीरोज़ ने यमन में ख़त्म किया और मुसैलमा कज़्ज़ाब जंगे यमामा में वह्शी (रज़ि.) के हाथों ख़त्म हुआ। **जाअल हक़्क़ु व ज़हक़ल बातिलु इन्नल बातिल कान ज़हूक़ा।**

बाब 41 : जब किसी ने देखा कि उसने कोई चीज़ किसी ताक़ से निकाली और उसे दूसरी जगह रख दिया

٤١- باب إِذَا رَأَى أَنَّهُ أَخْرَجَ الشَّيْءَ مِنْ كُورَةٍ فَأَسْكَنَهُ مَوْضِعًا آخَرَ.

7038. हमसे इस्माईल बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, उन्हों ने कहा मुझसे मेरे भाई अ़ब्दुल हमीद ने बयान किया, उनसे सुलैमान बिन बिलाल ने बयान किया, उनसे मूसा बिन उ़क़्बा ने बयान किया, उनसे सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, उन्होंने अपने वालिद हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) से कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया मैंने देखा जैसे एक काली औ़रत बिखरे बाल, मदीना से निकली और मह्यआ में जाकर खड़ी हो गई। मह्यआ जुह्फ़ा को कहते हैं। मैंने उसकी ये ता'बीर ली कि मदीना की वबा जुह्फ़ा नामी बस्ती में चली गई। (दीगर मक़ामात : 7039,7040)

٧٠٣٨- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنِي أَخِي عَبْدُ الْحَمِيدِ، عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ بِلاَلٍ، عَنْ مُوسَى بْنِ عُقْبَةَ، عَنْ سَالِمِ بْنِ عَبْدِ اللهِ عَنْ أَبِيهِ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: ((رَأَيْتُ كَأَنَّ امْرَأَةً سَوْدَاءَ ثَائِرَةَ الرَّأْسِ خَرَجَتْ مِنَ الْمَدِينَةِ، حَتَّى قَامَتْ بِمَهْيَعَةَ وَهِيَ الْجُحْفَةُ فَأَوَّلْتُ أَنَّ وَبَاءَ الْمَدِينَةِ نُقِلَ إِلَيْهَا)).[طرفاه في : ٧٠٣٩، ٧٠٤٠].

बाब 42 : स्याह औ़रत को ख़्वाब में देखना

٤٢- باب الْمَرْأَةِ السَّوْدَاءِ

7039. हमसे अबूबक्र मुक़द्दमी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे फ़ुज़ैल बिन सुलैमान ने बयान किया, उनसे मूसा ने बयान किया, उनसे सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया और उनसे हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) के मदीना में ख़्वाब के सिलसिले में कि (आँहज़रत ﷺ ने फ़र्माया) मैंने एक बिखरे बाल वाली, काली औ़रत देखी कि वो मदीना से निकलकर मह्यआ में चली गई। मैंने इसकी ता'बीर ये ली कि मदीना की वबा मह्यआ मुंतक़िल हो गई है। मह्यआ जुह्फ़ा को कहते हैं। (राजेअ़ : 7038)

٧٠٣٩- حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرٍ الْمُقَدَّمِيُّ، حَدَّثَنَا فُضَيْلُ بْنُ سُلَيْمَانَ، حَدَّثَنَا مُوسَى، حَدَّثَنِي سَالِمُ بْنُ عَبْدِ اللهِ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ فِي رُؤْيَا النَّبِيِّ ﷺ فِي الْمَدِينَةِ: ((رَأَيْتُ امْرَأَةً سَوْدَاءَ ثَائِرَةَ الرَّأْسِ خَرَجَتْ مِنَ الْمَدِينَةِ، حَتَّى نَزَلَتْ بِمَهْيَعَةَ فَتَأَوَّلْتُهَا أَنَّ وَبَاءَ الْمَدِينَةِ نُقِلَ إِلَى مَهْيَعَةَ وَهِيَ الْجُحْفَةُ)). [راجع: ٧٠٣٨]

बाब 43 : परागन्दा बाल औ़रत ख़्वाब में देखना

٤٣- باب الْمَرْأَةِ الثَّائِرَةِ الرَّأْسِ

7040. मुझसे इब्राहीम बिन मुंज़िर ने बयान किया, उन्होंने

٧٠٤٠- حَدَّثَنِي إِبْرَاهِيمُ بْنُ الْمُنْذِرِ،

कहा मुझसे अबूबक्र बिन अबी उवैस ने बयान किया, उन्होंने कहा मुझसे सुलैमान ने बयान किया, उनसे मूसा बिन उक़्बा ने बयान किया, उनसे सालिम ने बयान किया, उनसे उनके वालिद हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया मैंने एक परागन्दा बाल काली औ़रत देखी जो मदीना से निकली और मह्यआ़ में जाकर ठहर गई। मैंने इसकी ता'बीर ये ली कि मदीना की वबा मह्यआ़ या'नी जुह़्फ़ा मुंतक़िल हो गई। (राजेअ़ 7038)

حَدَّثَنِي أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي أُوَيْسٍ، حَدَّثَنِي سُلَيْمَانُ، عَنْ مُوسَى بْنِ عُقْبَةَ، عَنْ سَالِمٍ، عَنْ أَبِيهِ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: ((رَأَيْتُ امْرَأَةً سَوْدَاءَ ثَائِرَةَ الرَّأْسِ خَرَجَتْ مِنَ الْمَدِينَةِ حَتَّى قَامَتْ بِمَهْيَعَةَ، فَأَوَّلْتُ أَنَّ وَبَاءَ الْمَدِينَةِ نُقِلَ إِلَى مَهْيَعَةَ وَهِيَ الْجُحْفَةُ)). [راجع: ٧٠٣٨]

तश्रीह: क़ालल मुहल्लिब हाज़िहिर्रूया अल्मुअ़ब्बरतु व हिय मिम्मा ज़ुरिब बिहिल मष़ाल व वज्हुत्तम्ष़ील अन्नहू शक़्क़ मिन इस्मिस्सौदा अस्सूउ वद्दाउ फ़तअव्वल ख़ुरूजहा बिमा जमअ़ इस्मुहा (फ़त्हुल बारी) या'नी मुहल्लिब ने कहा कि ख़्वाब की ता'बीर कर्दा शुदा है। इसमें सूदा नामी स्याह औ़रत को देखा गया जो लफ़्ज़ सूअ या'नी बुराई और दा ब-मा'नी बीमारी है पस उसका नाम ही ऐसा है जिससे ख़ुद ता'बीर ज़ाहिर है। बुरी बीमारी मदीना से निकलकर जुह़्फ़ा नामी बस्ती में चली गई जो मदीना से छः मील दूर है उस बस्ती की आबो हवा आज तक ख़राब और मरतूब है और अल्हम्दु लिल्लाह मदीना मुनव्वरह की आबो हवा बहुत उ़म्दह और स़ेहत बख़्श है।

बाब 44 : जब ख़्वाब में तलवार हिलाए

٤٤- باب إِذَا هَزَّ سَيْفًا فِي الْمَنَامِ

7041. हमसे मुहम्मद बिन अ़ला ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, उनसे बुरैद बिन अ़ब्दुल्लाह इब्ने अबी बुर्दा ने बयान किया, उनसे उनके दादा अबू बुर्दा ने और उनसे हज़रत अबू मूसा (रज़ि.) ने, मुझको यक़ीन है कि नबी करीम (ﷺ) से कि आँहज़रत (ﷺ) ने यूँ फ़र्माया कि मैंने एक तलवार हिलाई तो वो बीच में से टूट गई। इसकी ता'बीर उहुद की जंग में मुसलमानों के शहीद होने की सूरत में सामने आई फिर दोबारा मैंने उसे हिलाया तो वो पहले से भी अच्छी शक्ल में हो गई। इसकी ता'बीर फ़तह और मुसलमानों के इत्तिफ़ाक़ व इज्तिमाअ़ की सूरत में सामने आई। (राजेअ़ : 3622)

٧٠٤١- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلاَءِ، حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ عَنْ بُرَيْدِ بْنِ عَبْدِ اللهِ أَبِي بُرْدَةَ، عَنْ جَدِّهِ أَبِي بُرْدَةَ، عَنْ أَبِي مُوسَى أُرَاهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((رَأَيْتُ فِي رُؤْيَايَ أَنِّي هَزَزْتُ سَيْفًا، فَانْقَطَعَ صَدْرُهُ فَإِذَا هُوَ مَا أُصِيبَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ يَوْمَ أُحُدٍ، ثُمَّ هَزَزْتُهُ أُخْرَى فَعَادَ أَحْسَنَ مَا كَانَ، فَإِذَا هُوَ مَا جَاءَ اللهُ بِهِ مِنَ الْفَتْحِ وَاجْتِمَاعِ الْمُؤْمِنِينَ)). [راجع: ٣٦٢٢]

तश्रीह: मुहल्लिब ने कहा कि इस ख़्वाब में स़ह़ाब-ए-किराम के ह़मलों को तलवार से ता'बीर किया गया और उसके हिलाने से आँहज़रत (ﷺ) का उस्व-ए-जंग मुराद है और टूटने से मुराद वो जानी नुक़्सान जो जंग में पेश आया और जोड़ने से उहुद के बाद मुसलमानों का फिर मुत्तह़िद होकर जंग के लिये तैयार होना और कामयाबी ह़ासिल करना। (फ़त्ह़)

बाब 45 : झूठा ख़्वाब बयान करने की सज़ा

٤٥- باب مَنْ كَذَبَ فِي حُلْمِهِ

7042. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे

٧٠٤٢- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا

سُفْيَانُ، عَنْ أَيُّوبَ، عَنْ عِكْرِمَةَ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: ((مَنْ تَحَلَّمَ بِحُلُمٍ لَمْ يَرَهُ كُلِّفَ أَنْ يَعْقِدَ بَيْنَ شَعِرَتَيْنِ، وَلَنْ يَفْعَلَ وَمَنِ اسْتَمَعَ إِلَى حَدِيثِ قَوْمٍ وَهُمْ لَهُ كَارِهُونَ أَوْ يَفِرُّونَ مِنْهُ صُبَّ فِي أُذُنِهِ الآنُكُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ، وَمَنْ صَوَّرَ صُورَةً عُذِّبَ وَكُلِّفَ أَنْ يَنْفُخَ فِيهَا وَلَيْسَ بِنَافِخٍ)). قَالَ سُفْيَانُ: وَصَلَهُ لَنَا أَيُّوبُ وَقَالَ قُتَيْبَةُ: حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ عِكْرِمَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَوْلَهُ: مَنْ كَذَبَ فِي رُؤْيَاهُ وَقَالَ شُعْبَةُ عَنْ أَبِي هَاشِمٍ الرُّمَّانِيِّ : سَمِعْتُ عِكْرِمَةَ قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ: قَوْلَهُ مَنْ صَوَّرَ وَمَنْ تَحَلَّمَ وَمَنِ اسْتَمَعَ.

सुफ़यान ने, उनसे अय्यूब ने, उनसे इक्रिमा ने, उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जिसने ऐसा ख़्वाब बयान किया जो उसने देखा न हो तो उसे दो जौ के दानों को क़यामत के दिन जोड़ने के लिये कहा जाएगा और वो उसे हर्गिज़ नहीं कर सकेगा (इसलिये मार खाता रहेगा) और जो शख़्स दूसरे लोगों की बात सुनने के लिये कान लगाए जो उसे पसंद नहीं करते या उससे भागते हैं तो क़यामत के दिन उसके कानों में सीसा पिघलाकर डाला जाएगा और जो कोई तस्वीर बनाएगा उसे अ़ज़ाब दिया जाएगा और उस पर ज़ोर दिया जाएगा कि उसमें रूह भी डाले जो वो नहीं कर सकेगा। और सुफ़यान ने कहा कि हमसे अय्यूब ने ये ह़दीष़ मौसूलन बयान की और क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, हमसे अबू अ़वाना ने, उनसे क़तादा ने, उनसे इक्रिमा ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि जो अपने ख़्वाब के सिलसिले में झूठ बोले। और शुअ़बा ने कहा, उनसे अबू हाशिम रुमानी ने, उन्होंने इक्रिमा से सुना और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने (का क़ौल मौक़ूफ़न) जो शख़्स मूरत बनाए, जो शख़्स झूठा ख़्वाब बयान करे, जो शख़्स कान लगाकर दूसरों की बातें सुने।

या'नी यही ह़दीष़ नक़ल की।

٧٠٤٢- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ، حَدَّثَنَا خَالِدٌ، عَنْ خَالِدٍ، عَنْ عِكْرِمَةَ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ : مَنِ اسْتَمَعَ وَمَنْ تَحَلَّمَ وَمَنْ صَوَّرَ نَحْوَهُ. تَابَعَهُ هِشَامٌ عَنْ عِكْرِمَةَ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَوْلَهُ. [راجع: ٢٢٢٥]

हमसे इस्ह़ाक़ वास्त़ी ने बयान किया, कहा हमसे ख़ालिद त़िह़ान ने बयान किया, उनसे ख़ालिद ह़ज़्ज़ाअ ने, उनसे इक्रिमा ने और उनसे ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि जो किसी की बात कान लगाकर सुनने के पीछे लगा और जिसने ग़लत़ ख़्वाब बयान किया और जिसने तस्वीर बनाई (ऐसी ही ह़दीष़ नक़ल की मौक़ूफ़न इब्ने अ़ब्बास से) ख़ालिद ह़ज़्ज़ाअ के साथ इस ह़दीष़ को हिशाम बिन ह़स्सान फ़िरदौसी ने भी इक्रिमा से, उन्होंने इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से मौक़ूफ़न रिवायत किया। (राजेअ़ : 2225)

٧٠٤٣- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ مُسْلِمٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الصَّمَدِ حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ دِينَارٍ مَوْلَى ابْنِ عُمَرَ عَنْ أَبِيهِ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ:

7043. हमसे अ़ली बिन मुस्लिम ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुस्समद ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने उ़मर (रज़ि.) के ग़ुलाम अ़ब्दुर्रह़मान बिन अ़ब्दुल्लाह बिन दीनार ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने और उनसे ह़ज़रत इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया सबसे बदतरीन

झूठ ये है कि इंसान ख़्वाब में ऐसी चीज़ देखने का दा'वा करे जो उसकी आँखों ने न देखी हो।

((مِنْ أَفْرَى الْفِرَى أَنْ يُرِيَ عَيْنَيْهِ مَا لَمْ تَرَ)).

तश्रीह : लफ़्ज़ उफ़रा इस्मे ह़फ़्ज़ील का स़ैग़ा है या'नी बहुत ही बड़ा झूठ। **क़ाल इब्ने बत़्ताल ... मिन्हा** या'नी तअ़ज्जुबख़ेज़ बहुत बड़े झूठ को कहते हैं। ये झूठा ख़्वाब बनाना बहुत ही बड़ा गुनाह है। इससे अल्लाह तआ़ला सब मुसलमानों को मह़फ़ूज़ रखे, आमीन।

बाब 46 : जब कोई बुरा ख़्वाब देखे तो उसकी किसी को ख़बर न दे और न उसका किसी से ज़िक्र करे

٤٦- باب إِذَا رَأَى مَا يَكْرَهُ فَلاَ يُخْبِرُ بِهَا وَلاَ يَذْكُرُهَا

7044. हमसे सई़द बिन रबीअ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुर्रब बिन सई़द ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने अबू सलमा से सुना, उन्होंने कहा कि मैं (बुरे) ख़्वाब देखता था और उसकी वजह से बीमार पड़ जाता था। आख़िर मैंने ह़ज़रत क़तादा (रज़ि.) से सुना। उन्होंने बयान किया कि मैं भी ख़्वाब देखता और मैं भी बीमार पड़ जाता। आख़िर मैंने नबी करीम (ﷺ) को ये फ़र्माते सुना कि अच्छे ख़्वाब अल्लाह की त़रफ़ से होते हैं पस जब कोई अच्छे ख़्वाब देखे तो उसका ज़िक्र स़िर्फ़ उसी से करे जो उसे अ़ज़ीज़ हो और जब बुरा ख़्वाब देखे तो अल्लाह की उस (ख़्वाब) के शर्र से पनाह मांगे और शैत़ान के शर्र से और तीन मर्तबा थू थू कर दे और उसका किसी से ज़िक्र न करे पस वो उसे कोई नुक़्स़ान न पहुँचा सकेगा। (राजेअ़ : 2392)

٧٠٤٤- حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ الرَّبِيعِ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ عَبْدِ رَبِّهِ بْنِ سَعِيدٍ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا سَلَمَةَ يَقُولُ: لَقَدْ كُنْتُ أَرَى الرُّؤْيَا فَتُمْرِضُنِي، حَتَّى سَمِعْتُ أَبَا قَتَادَةَ يَقُولُ : وَأَنَا كُنْتُ لأَرَى الرُّؤْيَا تُمْرِضُنِي حَتَّى سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((الرُّؤْيَا الْحَسَنَةُ مِنَ اللهِ، فَإِذَا رَأَى أَحَدُكُمْ مَا يُحِبُّ فَلاَ يُحَدِّثْ بِهِ إِلاَّ مَنْ يُحِبُّ، وَإِذَا رَأَى مَا يَكْرَهُ فَلْيَتَعَوَّذْ بِاللهِ مِنْ شَرِّهَا، وَمِنْ شَرِّ الشَّيْطَانِ وَلْيَتْفُلْ ثَلاَثًا وَلاَ يُحَدِّثْ بِهَا أَحَدًا فَإِنَّهَا لَنْ تَضُرَّهُ)).

[راجع: ٢٣٩٢]

7045. हमसे इब्राहीम बिन ह़म्ज़ा ने बयान किया, उन्होंने कहा मुझसे इब्ने अबी ह़ाज़िम और दरावर्दी ने बयान किया, उनसे यज़ीद ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन ख़ब्बाब ने और उनसे ह़ज़रत अबू सई़द ख़ुदरी (रज़ि.) ने, उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना, आपने फ़र्माया कि जब तुममें से कोई शख़्स़ ख़्वाब देखे जिसे वो पसंद करता हो तो वो अल्लाह की त़रफ़ से होता है और उस पर उसे अल्लाह की ता'रीफ़ करनी चाहिये और उसे बयान भी करना चाहिये और जब कोई ख़्वाब ऐसा देखे जिसे वो नापसंद करता हो तो वो शैत़ान की त़रफ़ से है और उसे चाहिये कि उसके शर्र से अल्लाह की पनाह मांगे

٧٠٤٥- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ حَمْزَةَ، حَدَّثَنِي ابْنُ أَبِي حَازِمٍ وَالدَّرَاوَرْدِيُّ، عَنْ يَزِيدَ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ خَبَّابٍ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((إِذَا رَأَى أَحَدُكُمُ الرُّؤْيَا يُحِبُّهَا فَإِنَّهَا مِنَ اللهِ، فَلْيَحْمَدِ اللهَ عَلَيْهَا وَلْيُحَدِّثْ بِهَا، وَإِذَا رَأَى غَيْرَ ذَلِكَ مِمَّا يَكْرَهُ فَإِنَّمَا هِيَ مِنَ الشَّيْطَانِ، فَلْيَسْتَعِذْ

مِنْ شَرِّهَا وَلاَ يَذْكُرْهَا لأَحَدٍ فَإِنَّهَا لَنْ تَضُرَّهُ)).

और उसका ज़िक्र किसी से न करे, क्योंकि वो उसे नुक़्सान नहीं पहुँचा सकेगा।

٤٧- باب مَنْ لَمْ يَرَ الرُّؤْيَا لأَوَّلِ عَابِرٍ إِذَا لَمْ يُصِبْ.

बाब 47 : अगर पहली ता'बीर देने वाला ग़लत ता'बीर दे तो उसकी ता'बीर से कुछ न होगा

٧٠٤٦- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ يُونُسَ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُتْبَةَ أَنَّ ابْنَ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا كَانَ يُحَدِّثُ أَنَّ رَجُلاً أَتَى رَسُولَ اللهِ ﷺ فَقَالَ: إِنِّي رَأَيْتُ اللَّيْلَةَ فِي الْمَنَامِ ظُلَّةً تَنْطِفُ السَّمْنَ وَالْعَسَلَ فَأَرَى النَّاسَ يَتَكَفَّفُونَ مِنْهَا، فَالْمُسْتَكْثِرُ وَالْمُسْتَقِلُّ وَإِذَا سَبَبٌ وَاصِلٌ مِنَ الأَرْضِ إِلَى السَّمَاءِ، فَأَرَاكَ أَخَذْتَ بِهِ فَعَلَوْتَ، ثُمَّ أَخَذَ بِهِ رَجُلٌ آخَرُ فَعَلاَ بِهِ، ثُمَّ أَخَذَ بِهِ رَجُلٌ آخَرُ فَعَلاَ بِهِ، ثُمَّ أَخَذَ بِهِ رَجُلٌ آخَرُ فَانْقَطَعَ ثُمَّ وُصِلَ فَقَالَ أَبُوبَكْرٍ يَا رَسُولَ اللهِ بِأَبِي أَنْتَ وَاللهِ لَتَدَعَنِّي فَأَعْبُرَهَا فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((اعْبُرْ)) قَالَ: أَمَّا الظُّلَّةُ فَالإِسْلاَمُ، وَأَمَّا الَّذِي يَنْطُفُ مِنَ الْعَسَلِ وَالسَّمْنِ فَالْقُرْآنُ حَلاَوَتُهُ تَنْطُفُ، فَالْمُسْتَكْثِرُ مِنَ الْقُرْآنِ وَالْمُسْتَقِلُّ وَأَمَّا السَّبَبُ الْوَاصِلُ مِنَ السَّمَاءِ إِلَى الأَرْضِ فَالْحَقُّ الَّذِي أَنْتَ عَلَيْهِ تَأْخُذُ بِهِ، فَيُعْلِيكَ اللهُ ثُمَّ يَأْخُذُ بِهِ رَجُلٌ مِنْ بَعْدِكَ فَيَعْلُو بِهِ، ثُمَّ يَأْخُذُ بِهِ رَجُلٌ آخَرُ فَيَعْلُو بِهِ ثُمَّ يَأْخُذُ بِهِ رَجُلٌ آخَرُ فَيَنْقَطِعُ بِهِ، ثُمَّ يُوصَلُ لَهُ

7046. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे यूनुस ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़त्बा ने, उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) बयान करते थे कि एक शख़्स़ रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास आया और उसने कहा कि रात मैंने ख़्वाब में देखा कि एक अब्र (बादल) का टुकड़ा है जिससे घी और शहद टपक रहा है मैं देखता हूँ कि लोग उन्हें अपने हाथों में ले रहे हैं, कोई ज़्यादा और कोई कम। और एक रस्सी है जो ज़मीन से आसमान तक लटकी हुई है। मैंने देखा कि पहले आप (ﷺ) ने आकर उसे पकड़ा और ऊपर चढ़ गये फिर एक दूसरे स़ाहब ने भी उसे पकड़ा और ऊपर चढ़ गये फिर एक तीसरे स़ाहब ने पकड़ा और वो भी चढ़ गये फिर चौथे स़ाहब ने पकड़ा और वो भी उसके ज़रिये चढ़ गये। फिर वो रस्सी टूट गई, फिर जुड़ गई। ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह (ﷺ)! मेरे माँ बाप आप पर फ़िदा हों; मुझे इजाज़त दीजिये, मैं इसकी ता'बीर बयान कर दूँ। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि बयान करो। उन्होंने कहा, अब्र से मुराद दीने इस्लाम है और जो शहद और घी टपक रहा था वो क़ुर्आन मजीद की शीरीनी है और कुछ क़ुर्आन को ज़्यादा ह़ासिल करने वाले हैं , कुछ कम और आसमान से ज़मीन तक की रस्सी से मुराद वो सच्चा त़रीक़ है जिस पर आप (ﷺ) क़ायम हैं, आप (ﷺ) उसे पकड़े हुए हैं यहाँ तक कि इसके ज़रिये अल्लाह आपको उठा लेगा। फिर आपके बाद एक दूसरे स़ाहब आपके ख़लीफ़ा अव्वल उसे पकड़ेंगे वो भी मरते दम तक उस पर क़ायम रहेंगे। फिर तीसरे स़ाहब पकड़ेंगे उनका भी यही ह़ाल होगा। फिर चौथे स़ाहब पकड़ेंगे तो उनका मामला ख़िलाफ़त का कट जाएगा वो भी ऊपर चढ़ जाएँगे। या रसूलल्लाह! मेरे माँ बाप आप पर क़ुर्बान हों मुझे बताइये क्या मैंने जो ता'बीर दी है वो ग़लत़ है या स़ह़ीह़। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि कुछ ह़िस़्से की स़ह़ीह़

فَيَعْلُو بِهِ فَأَخْبِرْنِي يَا رَسُولَ اللهِ بِأَبِي أَنْتَ أَصَبْتُ أَمْ أَخْطَأْتُ؟ قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((أَصَبْتَ بَعْضًا وَأَخْطَأْتَ بَعْضًا)) قَالَ: فَوَ اللهِ يَا رَسُولَ اللهِ لَتُحَدِّثَنِّي بِالَّذِي أَخْطَأْتُ قَالَ : ((لاَ تُقْسِمْ)).

ता'बीर दी है और कुछ की ग़लत। हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ने अ़र्ज़ किया। पस वल्लाह! आप मेरी ग़लती को ज़ाहिर कर दें। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि क़सम न खाओ।

तश्रीह : इस ख़्वाब की तफ़्सील बयान करने में बड़े बड़े अंदेशे थे। इसलिये आपने चुप्पी मुनासिब समझी। इस ख़्वाब से आपको रंज हुआ कि मेरा एक ख़लीफ़ा मेरा में गिरफ़्तार होगा। सदक़ रसूलुल्लाहि (ﷺ)।

क़ालल मुहल्लिब तौजीहु तअ़बीरि अबा बक्र अन्नज़्ज़िल्लत निअ़मतुम्मिन निअ़मिल्लाह अला अहलिल जन्नति व कज़ालिक कानत अ़ला बनी इस्राईल (फ़त्ह) या'नी मुहल्लिब ने कहा कि हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) की ता'बीर की तौजीह ये है कि साया अल्लाह की बहुत बड़ी नेअ़मत है जैसा कि बनी इस्राईल पर अल्लाह ने बादलों का साया डाला। ऐसा ही अहले जन्नत पर साया होगा। इस्लाम ऐसा ही मुबारक साया है जिसके साये में मुसलमान को तकलीफ़ों से नजात मिलती है और उसको दुनिया और आख़िरत में नेअ़मतों से नवाज़ा जाता है। इसी तरह शहद में शिफ़ा है जैसा कि क़ुर्आन पाक में है। ऐसा ही क़ुर्आन मजीद भी शफ़ा है, **इन्नहू शिफ़ाउव्वंरहमत लिल मोमिनीन** वो सुनने में शहद जैसी हलावत रखता है।

٤٨- باب تَعْبِيرِ الرُّؤْيَا بَعْدَ صَلاَةِ الصُّبْحِ

बाब 48 : सुबह की नमाज़ के बाद ख़्वाब की ता'बीर बयान करना

तश्रीह : इस बाब के लाने से हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) की ग़र्ज़ ये है कि ये जो कुछ लोगों ने कहा है कि औरत से ख़्वाब बयान करना न चाहिये, न सूरज निकलने से पहले। उनका ये कहना बेदलील है। हदीष़ ज़ैल में आपने सूरज निकलने से पहले ख़्वाब सहाबा किराम के सामने बयान किया, यही बाब से मुनासबत है। नीचे बयान की गई हदीष़ में कई दोज़ख़ियों का हाल ज़िक्र हुआ है हर मुसलमान को उनसे इ़बरत लेने की ज़रूरत है। **तअ़बीरुर्रुया बअ़द सलातिस्सुबह फ़ीही इशारतुन इला ज़ुअ़फ़ि मा अख़्रजहू अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ अन मअ़मर अन सईदब्नि अ़ब्दिर्रहमानि अन बअ़ज़ि उ़लमाइहिम क़ाल मन तक़्स्सस रूयाक अ़ला इम्रातिन अन तख़य्यर बिहा हत्ता तत्लुअश्शम्सु.** (फ़त्ह)

٧٠٤٧- حَدَّثَنَا مُؤَمَّلُ بْنُ هِشَامٍ أَبُو هِشَامٍ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، حَدَّثَنَا عَوْفٌ، حَدَّثَنَا أَبُو رَجَاءٍ، حَدَّثَنَا سَمُرَةُ بْنُ جُنْدَبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : كَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ مِمَّا يُكْثِرُ أَنْ يَقُولَ لأَصْحَابِهِ: ((هَلْ رَأَى أَحَدٌ مِنْكُمْ مِنْ رُؤْيَا؟)). قَالَ : فَيَقُصُّ عَلَيْهِ مَنْ شَاءَ اللهُ أَنْ يَقُصَّ، وَإِنَّهُ قَالَ لَنَا ذَاتَ غَدَاةٍ : ((إِنَّهُ أَتَانِي اللَّيْلَةَ آتِيَانِ وَإِنَّهُمَا ابْتَعَثَانِي وَإِنَّهُمَا قَالاَ

7047. मुझसे अबू हिशाम मुअम्मिल बिन हिशाम ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इस्माईल बिन इब्राहीम ने, उन्होंने कहा हमसे औ़फ़ ने, उनसे अबू रजाअ ने, उनसे समुरह बिन जुन्दुब (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) जो बातें सहाबा से अकष़र किया करते थे उनमें ये भी थी कि तुममें से किसी ने कोई ख़्वाब देखा है। बयान किया कि फिर जो चाहता अपना ख़्वाब आँहज़रत (ﷺ) से बयान करता और आँहज़रत (ﷺ) ने एक सुबह को फ़र्माया कि रात मेरे पास दो आने वाले आए और उन्होंने मुझे उठाया और मुझसे कहा कि हमारे साथ चलो। मैं इनके साथ चल दिया। फिर हम एक लेटे हुए शख़्स के पास

آए जिसके पास एक दूसरा शख़्स पत्थर लिये खड़ा था और उसके सर पर पत्थर फेंककर मारता तो उसका सर उससे फट जाता, पत्थर लुढ़ककर दूर चला जाता, लेकिन वो शख़्स पत्थर के पीछे जाता और उसे उठा लाता और उस लेटे हुए शख़्स तक पहुँचने से पहले ही उसका सर ठीक हो जाता जैसा कि पहले था। खड़ा शख़्स फिर उसी तरह पत्थर उस पर मारता और वही सूरतें पेश आतीं जो पहले पेश आई थीं। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैंने उन दोनों से पूछा सुब्हानल्लाह! ये दोनों कौन हैं? फ़र्माया कि मुझसे उन्होंने कहा कि आगे बढ़ो, आगे बढ़ो। फ़र्माया कि फिर हम आगे बढ़े और एक ऐसे शख़्स के पास पहुँचे जो पीठ के बल लेटा हुआ था और एक दूसरा शख़्स उसके पास लोहे का आँकड़ा लिये खड़ा था और ये उसके चेहरे के एक तरफ़ आता और उसके एक जबड़े को गुद्दी तक चीरता और उसकी नाक को गुद्दी तक चीरता और उसकी आँख को गुद्दी तक चीरता। (औफ़ ने) बयान किया कि कुछ दफ़ा अबू रजाअ (रावी हदीष़) ने फ़यशक़्क़ु कहा, (रसूलुल्लाह ﷺ ने) बयान किया कि फिर वो दूसरी जानिब जाता और उधर भी इसी तरह चीरता जिस तरह उसने पहली जानिब किया था। वो अभी दूसरी जानिब से फ़ारिग़ भी न होता था कि पहली जानिब अपनी पहली सहीह हालत में लौट आती। फिर दोबारा वो इसी तरह करता जिस तरह उसने पहली मर्तबा किया था। (इस तरह बराबर हो रहा है) फ़र्माया कि मैंने कहा सुब्हानल्लाह! ये दोनों कौन हैं? उन्होंने कहा कि आगे चलो, आगे चलो (अभी कुछ न पूछो) चुनाँचे हम आगे चले फिर हम एक तन्नूर जैसी चीज़ पर आए। रावी ने बयान किया कि मेरा ख़्याल है कि आप कहा करते थे कि उसमें शोर व आवाज़ थी। कहा कि फिर हमने उसमें झाँका तो उसके अन्दर कुछ नंगे मर्द और औरतें थीं और उनके नीचे से आग की लपट आती थी जब आग उन्हें अपनी लपेट में लेती तो वो चिल्लाने लगते। (रसूलुल्लाह ﷺ ने) फ़र्माया कि मैंने उनसे पूछा ये कौन लोग हैं? उन्होंने कहा कि चलो चलो। फ़र्माया कि हम आगे बढ़े और एक नहर पर आए। मेरा ख़्याल है कि आपने कहा कि वो ख़ून

لِي: انْطَلِقْ وَإِنِّي انْطَلَقْتُ مَعَهُمَا وَإِنَّا أَتَيْنَا عَلَى رَجُلٍ مُضْطَجِعٍ وَإِذَا آخَرُ قَائِمٌ عَلَيْهِ بِصَخْرَةٍ، وَإِذَا هُوَ يَهْوِي بِالصَّخْرَةِ لِرَأْسِهِ فَيَثْلَغُ رَأْسَهُ فَيَتَهَدْهَدُ الْحَجَرُ هَهُنَا، فَيَتْبَعُ الْحَجَرَ فَيَأْخُذُهُ فَلاَ يَرْجِعُ إِلَيْهِ حَتَّى يَصِحَّ رَأْسُهُ كَمَا كَانَ ثُمَّ يَعُودُ عَلَيْهِ فَيَفْعَلُ بِهِ مِثْلَ مَا فَعَلَ الْمَرَّةَ الأُولَى قَالَ قُلْتُ لَهُمَا سُبْحَانَ اللهِ مَا هَذَانِ قَالَ: قَالاَ لِي انْطَلِقْ انْطَلِقْ قَالَ: فَانْطَلَقْنَا فَأَتَيْنَا عَلَى رَجُلٍ مُسْتَلْقٍ لِقَفَاهُ، وَإِذَا آخَرُ قَائِمٌ عَلَيْهِ بِكَلُّوبٍ مِنْ حَدِيدٍ، وَإِذَا هُوَ يَأْتِي أَحَدَ شِقَّيْ وَجْهِهِ فَيُشَرْشِرُ شِدْقَهُ إِلَى قَفَاهُ وَمَنْخِرَهُ إِلَى قَفَاهُ وَعَيْنَهُ إِلَى قَفَاهُ)) قَالَ: وَرُبَّمَا قَالَ أَبُو رَجَاءٍ: فَيَشُقُّ قَالَ: ((ثُمَّ يَتَحَوَّلُ إِلَى الْجَانِبِ الآخَرِ فَيَفْعَلُ بِهِ مِثْلَ مَا فَعَلَ بِالْجَانِبِ الأَوَّلِ، فَمَا يَفْرُغُ مِنْ ذَلِكَ الْجَانِبِ حَتَّى يَصِحَّ ذَلِكَ الْجَانِبُ كَمَا كَانَ ثُمَّ يَعُودُ عَلَيْهِ، فَيَفْعَلُ مِثْلَ مَا فَعَلَ الْمَرَّةَ الأُولَى قَالَ: قُلْتُ سُبْحَانَ اللهِ مَا هَذَانِ؟ قَالَ: قَالاَ لِي انْطَلِقْ انْطَلِقْ، فَانْطَلَقْنَا فَأَتَيْنَا عَلَى مِثْلِ التَّنُّورِ)) قَالَ: فَأَحْسِبُ أَنَّهُ كَانَ يَقُولُ: ((فَإِذَا فِيهِ لَغَطٌ وَأَصْوَاتٌ)). قَالَ: فَاطَّلَعْنَا فِيهِ فَإِذَا فِيهِ رِجَالٌ وَنِسَاءٌ عُرَاةٌ، وَإِذَا هُمْ يَأْتِيهِمْ لَهَبٌ مِنْ أَسْفَلَ مِنْهُمْ، فَإِذَا أَتَاهُمْ ذَلِكَ اللَّهَبُ ضَوْضَوْا قَالَ: قُلْتُ لَهُمَا مَا هَؤُلاَءِ؟ قَالَ: قَالاَ لِي انْطَلِقْ؟ فَانْطَلَقْنَا فَأَتَيْنَا عَلَى نَهَرٍ))

حَسِبْتُ أَنَّهُ كَانَ يَقُولُ : ((أَحْمَرَ مِثْلِ الدَّمِ، وَإِذَا فِي النَّهَرِ رَجُلٌ سَابِحٌ يَسْبَحُ وَإِذَا عَلَى شَطِّ النَّهَرِ رَجُلٌ قَدْ جَمَعَ عِنْدَهُ حِجَارَةً كَثِيرَةً، وَإِذَا ذَلِكَ السَّابِحُ يَسْبَحُ مَا يَسْبَحُ ثُمَّ يَأْتِي ذَلِكَ الَّذِي قَدْ جَمَعَ عِنْدَهُ الْحِجَارَةَ فَيَفْغَرُ لَهُ فَاهُ فَيُلْقِمُهُ حَجَرًا، فَيَنْطَلِقُ يَسْبَحُ ثُمَّ يَرْجِعُ إِلَيْهِ كُلَّمَا رَجَعَ إِلَيْهِ فَغَرَ لَهُ فَاهُ، فَأَلْقَمَهُ حَجَرًا قَالَ : قُلْتُ لَهُمَا مَا هَذَانِ؟ قَالَ: قَالاَ لِي انْطَلِقْ انْطَلِقْ قَالَ فَانْطَلَقْنَا فَأَتَيْنَا عَلَى رَجُلٍ كَرِيهِ الْمَنْظَرِ كَأَكْرَهِ مَا أَنْتَ رَاءٍ رَجُلاً مَرْآةً، وَإِذَا عِنْدَهُ نَارٌ يَحُشُّهَا وَيَسْعَى حَوْلَهَا قَالَ: قُلْتُ لَهُمَا مَا هَذَا؟ قَالَ: قَالاَ لِي انْطَلِقِ انْطَلِقْ قَالَ فَانْطَلَقْنَا فَأَتَيْنَا عَلَى رَوْضَةٍ مُعْتَمَةٍ فِيهَا مِنْ كُلِّ نَوْرِ الرَّبِيعِ وَإِذَا بَيْنَ ظَهْرَيِ الرَّوْضَةِ رَجُلٌ طَوِيلٌ لاَ أَكَادُ أَرَى رَأْسَهُ طُولاً فِي السَّمَاءِ، وَإِذَا حَوْلَ الرَّجُلِ مِنْ أَكْثَرِ وِلْدَانٍ رَأَيْتُهُمْ قَطُّ قَالَ: قُلْتُ لَهُمَا مَا هَذَا مَا هَؤُلاَءِ؟ قَالَ: قَالاَ لِي: انْطَلِقِ انْطَلِقْ فَانْطَلَقْنَا فَانْتَهَيْنَا إِلَى رَوْضَةٍ عَظِيمَةٍ لَمْ أَرَ رَوْضَةً قَطُّ أَعْظَمَ مِنْهَا وَلاَ أَحْسَنَ قَالَ: قَالاَ لِي ارْقَ فِيهَا قَالَ: فَارْتَقَيْنَا فِيهَا فَانْتَهَيْنَا إِلَى مَدِينَةٍ مَبْنِيَّةٍ بِلَبِنِ ذَهَبٍ وَلَبِنِ فِضَّةٍ فَأَتَيْنَا بَابَ الْمَدِينَةِ فَاسْتَفْتَحْنَا فَفُتِحَ لَنَا فَدَخَلْنَاهَا فَتَلَقَّانَا فِيهَا رِجَالٌ شَطْرٌ مِنْ خَلْقِهِمْ كَأَحْسَنِ مَا أَنْتَ رَاءٍ، وَشَطْرٌ كَأَقْبَحِ مَا أَنْتَ رَاءٍ قَالَ : قَالاَ

की तरह लाल थी और उस नहर में एक शख़्स तैर रहा था और नहर के किनारे एक दूसरा शख़्स था जिसने अपने पास बहुत से पत्थर जमा कर रखे थे और ये तैरने वाला तैरता हुआ जब उस शख़्स के पास पहुँचता जिसने पत्थर जमा कर रखे थे तो ये अपना मुँह खोल देता और किनारे का शख़्स उसके मुँह में पत्थर डाल देता वो फिर तैरने लगता और फिर उसके पास लौटकर आता और जब भी उसके पास आता तो अपना मुँह फैला देता और ये उसके मुँह में पत्थर डाल देता। फ़र्माया कि मैंने पूछा ये कौन हैं? फ़र्माया कि उन्होंने कहा कि आगे चलो आगे चलो। फ़र्माया कि फिर हम आगे बढ़े और एक निहायत बदसूरत आदमी के पास पहुँचे जितने बदसूरत तुमने देखे होंगे उनमे सबसे ज़्यादा बदसूरत। उसके पास आग जल रही थी और वो उसे जला रहा था और उसके चारों तरफ़ दौड़ता था (आँहज़रत ﷺ ने) फ़र्माया कि मैंने उनसे कहा कि ये क्या है? फ़र्माया कि उन्होंने मुझसे कहा चलो चलो। हम आगे बढ़े और एक ऐसे बाग़ में पहुँचे जो हरा भरा था और उसमें मौसमे बहार के सब फूल थे। उस बाग़ के बीच में बहुत लम्बा एक शख़्स था, इतना लम्बा था कि मेरे लिये उसका सर देखना दुश्वार था कि वो आसमान से बातें करता था और उस शख़्स के चारों तरफ़ बहुत से बच्चे थे कि इतने कभी नहीं देखे थे (आँहज़रत ﷺ ने) फ़र्माया कि मैंने पूछा ये कौन है, ये बच्चे कौन हैं? फ़र्माया कि उन्होंने मुझसे कहा कि चलो चलो फ़र्माया कि फिर हम आगे बढ़े और एक अज़ीमुश्शान बाग़ तक पहुँचे, मैंने इतना बड़ा और इतना ख़ूबसूरत बाग़ कभी नहीं देखा था। उन दोनों ने कहा कि इस पर चढ़िये, हम उस पर चढ़े तो एक ऐसा शहर दिखाई दिया जो इस तरह बना हुआ था कि उसकी एक ईंट सोने की थी और एक ईंट चाँदी की। हम शहर के दरवाज़े पर आए तो हमने उसे खुलवाया। वो हमारे लिये खोला गया और हम उसमें दाख़िल हुए। हमने उसमें ऐसे लोगों से मुलाक़ात की जिनके जिस्म का आधा हिस्सा तो निहायत ख़ूबसूरत था और दूसरा आधा निहायत बदसूरत। (आँहज़रत ﷺ ने) फ़र्माया कि दोनों साथियों ने उन लोगों से कहा कि जाओ और इस नहर में

कूद जाओ। एक नहर सामने बह रही थी उसका पानी इंतिहाई सफ़ेद था वो लोग गये और उसमें कूद गये और फिर हमारे पास लौटकर आए तो उनका पहला ऐब जा चुका था और अब वो निहायत ख़ूबसूरत हो गये थे (आँहज़रत ﷺ ने) फ़र्माया कि उन दोनों ने कहा कि ये जन्नत अ़द्न है और ये आपकी मंज़िल है। (आँहज़रत ﷺ ने) फ़र्माया कि मेरी नज़र ऊपर की त़रफ़ उठी तो सफ़ेद बादल की त़रह एक महल ऊपर नज़र आया फ़र्माया कि उन्होंने मुझसे कहा कि ये आपकी मंज़िल है। फ़र्माया कि मैंने उनसे कहा अल्लाह तआ़ला तुम्हें बरकत दे। मुझे इसमें दाख़िल होने दो। उन्होंने कहा कि इस वक़्त तो आप नहीं जा सकते लेकिन हाँ आप इसमें ज़रूर जाएँगे। फ़र्माया कि मैंने उनसे कहा कि आज रात मैंने अ़जीब व ग़रीब चीज़ें देखी हैं, ये चीज़ें क्या थीं जो मैंने देखी हैं? फ़र्माया कि उन्होंने मुझसे कहा हम आपको बताएँगे। पहला शख़्स जिसे पास आप गये थे और जिसका सर पत्थर से कुचला जा रहा था ये वो शख़्स है जो क़ुर्आन सीखता था और फिर उसे छोड़ देता और फ़र्ज़ नमाज़ को छोड़कर सो जाता और वो शख़्स जिसके पास आप गये और जिसका जबड़ा गुद्दी तक और नाक गुद्दी तक और आँख गुद्दी तक चीरी जा रही थी। ये वो शख़्स है जो सुबह अपने घर से निकलता और झूठी ख़बर तराशता, जो दुनिया में फैल जाती और वो नंगे मर्द और औ़रतें जो तन्नूर में आपने देखे वो ज़िनाकार मर्द और औ़रतें थीं वो शख़्स जिसके पास आप इस ह़ाल में गये कि वो नहर में तैर रहा था और उसके मुँह में पत्थर दिया जाता था वो सूद खाने वाला है और वो शख़्स जो बदसूरत है और जहन्नम की आग भड़का रहा है और उसके चारों त़रफ़ चल फिर रहा है वो जहन्नम का दारोग़ा मालिक नामी है और वो लम्बा शख़्स जो बाग़ में नज़र आया वो ह़ज़रत इब्राहीम (अ़लैहि.) हैं और जो बच्चे उनके चारों त़रफ़ हैं तो वो बच्चे हैं जो (बचपन ही में) फ़ित़रत पर मर गये हैं। बयान किया कि उस पर कुछ मुसलमानों ने कहा ऐ अल्लाह के रसूल! क्या मुश्रिकीन के बच्चे भी उनमें दाख़िल हैं? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि हाँ मुश्रिकीन के बच्चे भी (उनमें दाख़िल हैं) अब

لَهُمُ اذْهَبُوا فَقَعُوا فِي ذَلِكَ النَّهَرِ، قَالَ : وَإِذَا نَهَرٌ مُعْتَرِضٌ يَجْرِي كَأَنَّ مَاءَهُ الْمَحْضُ فِي الْبَيَاضِ، فَذَهَبُوا فَوَقَعُوا فِيهِ ثُمَّ رَجَعُوا إِلَيْنَا قَدْ ذَهَبَ ذَلِكَ السُّوءُ عَنْهُمْ، فَصَارُوا فِي أَحْسَنِ صُورَةٍ قَالَ : قَالاَ لِي هَذِهِ جَنَّةُ عَدْنٍ، وَهَذَاكَ مَنْزِلُكَ قَالَ : فَسَمَا بَصَرِي صُعُدًا فَإِذَا قَصْرٌ مِثْلُ الرَّبَابَةِ الْبَيْضَاءِ قَالَ: قَالاَ لِي هَذَاكَ مَنْزِلُكَ قَالَ: قُلْتُ لَهُمَا: بَارَكَ اللهُ فِيكُمَا ذَرَانِي فَأَدْخُلَهُ قَالاَ : أَمَّا الآنَ فَلاَ وَأَنْتَ دَاخِلُهُ قَالَ: قُلْتُ لَهُمَا فَإِنِّي قَدْ رَأَيْتُ مُنْذُ اللَّيْلَةِ عَجَبًا فَمَا هَذَا الَّذِي رَأَيْتُ قَالَ : قَالاَ لِي أَمَا إِنَّا سَنُخْبِرُكَ أَمَّا الرَّجُلُ الأَوَّلُ الَّذِي أَتَيْتَ عَلَيْهِ يُثْلَغُ رَأْسُهُ بِالْحَجَرِ فَإِنَّهُ الرَّجُلُ يَأْخُذُ الْقُرْآنَ فَيَرْفُضُهُ وَيَنَامُ عَنِ الصَّلاَةِ الْمَكْتُوبَةِ، وَأَمَّا الرَّجُلُ الَّذِي أَتَيْتَ عَلَيْهِ يُشَرْشَرُ شِدْقُهُ إِلَى قَفَاهُ وَمَنْخِرُهُ إِلَى قَفَاهُ وَعَيْنُهُ إِلَى قَفَاهُ فَإِنَّهُ الرَّجُلُ يَغْدُو مِنْ بَيْتِهِ فَيَكْذِبُ الْكَذْبَةَ تَبْلُغُ الآفَاقَ وَأَمَّا الرِّجَالُ وَالنِّسَاءُ الْعُرَاةُ الَّذِينَ فِي مِثْلِ بِنَاءِ التَّنُّورِ فَإِنَّهُمُ الزُّنَاةُ وَالزَّوَانِي، وَأَمَّا الرَّجُلُ الَّذِي أَتَيْتَ عَلَيْهِ يَسْبَحُ فِي النَّهَرِ وَيُلْقَمُ الْحَجَرَ فَإِنَّهُ آكِلُ الرِّبَا وَأَمَّا الرَّجُلُ الْكَرِيهُ الْمَرْآةِ الَّذِي عِنْدَ النَّارِ، يَحُشُّهَا وَيَسْعَى حَوْلَهَا، فَإِنَّهُ مَالِكٌ خَازِنُ جَهَنَّمَ، وَأَمَّا الرَّجُلُ الطَّوِيلُ الَّذِي فِي الرَّوْضَةِ فَإِنَّهُ إِبْرَاهِيمُ ﷺ، وَأَمَّا الْوِلْدَانُ الَّذِينَ حَوْلَهُ فَكُلُّ

مَوْلُودٍ مَاتَ عَلَى الْفِطْرَةِ)) قَالَ: فَقَالَ بَعْضُ الْمُسْلِمِينَ: يَا رَسُولَ اللهِ وَأَوْلاَدُ الْمُشْرِكِينَ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ ((وَأَوْلاَدُ الْمُشْرِكِينَ۔ وَأَمَّا الْقَوْمُ الَّذِينَ كَانُوا شَطْرٌ مِنْهُمْ حَسَنًا وَشَطْرٌ مِنْهُمْ قَبِيحًا فَإِنَّهُمْ قَوْمٌ خَلَطُوا عَمَلاً صَالِحًا وَآخَرَ سَيِّئًا تَجَاوَزَ اللهُ عَنْهُمْ)).

रहे वो लोग जिनका आधा जिस्म ख़ूबसूरत और आधा बदसूरत था तो ये वो लोग थे जिन्होंने अच्छे अमल के साथ बुरे अमल भी किये। अल्लाह तआला ने उनके गुनाहों को बख़्श दिया।

तश्रीह : नबियों के ख़्वाब भी वह्य का हुक्म रखते हैं। इस अज़ीम ख़्वाब के अंदर आँहज़रत (ﷺ) को बहुत से दोज़ख़ियों के अज़ाब के नज़ारे दिखलाए गये। पहला शख़्स क़ुर्आन शरीफ़ पढ़ा हुआ हाफ़िज़, क़ारी मौलवी था जो नमाज़ की अदायगी में मुस्तैद नहीं था। दूसरा शख़्स झूठी बातें फैलाने वाला, अफ़्वाहें उड़ाने वाला, झूठी अह़ादीष़ बयान करने वाला था। तीसरे ज़िनाकर मर्द और औरतें थीं जो एक तन्नूर (अलाव, भट्टी) की शक्ल में दोज़ख़ के अज़ाब में गिरफ़्तार थे। ख़ून और पीप की नहर में ग़ोता लगाने वाला, सूद ब्याज खाने वाला इंसान था। बदसूरत इंसान दोखज़ की आग को भड़काने वाला दोज़ख़ का दारोग़ा था। अज़ीम तवील बुज़ुर्गतरीन इंसान हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) थे जिनके आसपास मा'सूम बच्चे बच्चियाँ थीं जो बचपन ही में दुनिया से रुख़्सत हो जाते हैं वो सब हज़रत सय्यदना ख़लीलुल्लाह इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) के ज़ेरे साये जन्नत में खेलते पलते हैं। ये सारी ह़दीष़ बड़े ही ग़ौर से मुतालआ करने के क़ाबिल है। अल्लाह पाक हर मुसलमान को इससे इबरत ह़ासिल करने की तौफ़ीक़ बख़्शे। मुश्रिकीन और कुफ़्फ़ार के मा'सूम बच्चों के बारे में इख़्तिलाफ़ है मगर बेहतर है कि इस बारे मे सुकूत इख़्तियार करके मामला अल्लाह के ह़वाले कर दिया जाए ऐसे जुज़्वी इख़्तिलाफ़ को भूल जाना आज वक़्त का अहमतरीन तक़ाज़ा है। इस ह़दीष़ पर पारा नम्बर 28 ख़त्म हो जाता है। सारा पारा अहम मज़ामीन पर मुश्तमिल है जिनकी पूरी तफ़ासील के लिये दफ़ातिर दरकार हैं, जिनमें सियासी, अख़्लाक़ी, समाजी, मज़हबी, फ़िक़्ही बहुत से मज़ामीन शामिल हैं। मुतालआ से ऐसा मा'लूम होता है कि किसी ऊँचे पाया के लायक़तरीन क़ाइद इंसानियत की पाकीज़ा मज्लिस है जिसमें इंसानियत के अहम मसाइल का तज़्किरा मुख़्तलिफ़ उन्वानात से हर वक़्त होता रहता है। आख़िर में ख़्वाबों की ता'बीरात के मसाइल हैं जो इंसान की रूहानी ज़िंदगी से बहुत ज़्यादा ता'ल्लुक़ात रखते हैं। इंसानी तारीख़ में कितने इंसानों के ऐसे ह़ालात मिलते हैं कि महज़ ख़्वाबों के आधार पर उनकी दुनिया अज़ीमतरीन ह़ालात में तब्दील हो गई और ये चीज़ कुछ अहले इस्लाम ही के बारे में नहीं है बल्कि ग़ैरों में भी ख़्वाबों की दुनिया मुसल्लम है यहाँ जो ता'बीरात बयान की गई हैं वो सब ह़क़ाइक़ हैं जिनकी सेह़त में एक ज़र्रा बराबर भी शक व शुब्हा की किसी मोमिन मर्द और औरत के लिये गुंजाइश नहीं है।

या अल्लाह! आज इस पारे 28 की तस्वीद से फ़राग़त ह़ासिल कर रहा हूँ इसमें जहाँ भी क़लम लग़्ज़िश खा गई हो और कोई लफ़्ज़, कोई जुम्ला, कोई मसला, तेरी और तेरे ह़बीब रसूले करीम (ﷺ) की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ क़लम पर आ गया हो मैं निहायत आजिज़ी व इंकिसारी से तेरे दरबारे आलिया में इसकी माफ़ी के लिये दरख़्वास्त पेश करता हूँ। एक निहायत आजिज़, कमज़ोर, मरीज़, गुनहगार, तेरा ह़क़ीरतरीन बन्दा हूँ जिससे क़दम क़दम लग़्ज़िशो का इम्कान है। इसलिये मेरे परवरदिगार! तू उस ग़लती को माफ़ कर दे और तेरे रिसालते मआब (ﷺ) के इर्शादाते आलिया के इस अज़ीम पाकीज़ा ज़ख़ीरे की इस ख़िदमत को क़ुबूले आम अ़ता कर दे और उसे न सिर्फ़ मेरे लिये बल्कि मेरे तमाम मुअज़्ज़ज़ शाइक़ीन और कातिबीन के लिये मेरे माँ बाप और अहलो अयाल के लिये और मेरे सारे मुअज़्ज़ज़ मुआविनीने किराम के लिये इसे ज़ख़ीर-ए-आख़िरत और सदक़ा-ए-जारिया के तौर पर क़ुबूल फ़र्माकर इसे तमाम शाइक़ीने किराम के लिये दोनों जहान की सआदत

(सौभाग्य) का ज़रिया बना। आमीन षुम्म आमीन या रब्बल आलमीन! **सल्लि व सल्लिम अला हबीबिक सय्यिदुल मुर्सलीन व अला आलिही व अस्हाबिही अज्मईन बिरहमतिक या अरहमर्राहिमीन।**

मुहम्मद दाऊद राज़

मुक़ीम मस्जिद अहले हदीष नम्बर 4121 अजमेरी गेट देहली भारत

23/सफ़रुल मुज़फ़्फ़र सन 1397 हिजरी

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

उन्तीसवां पारा

93. किताबुल फ़ितन

किताब फ़ित्नों के बयान में

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

बाब 1 : अल्लाह तआला का सूरह अन्फ़ाल में

ये फ़र्माना कि, डरो उस फ़ित्ने से जो ज़ालिमों पर ख़ास नहीं रहता (बल्कि ज़ालिम व ग़ैर-ज़ालिम, आम व ख़ास सब उसमें पिस जाते हैं) (अन्फ़ाल : 25) **उसका बयान और आँहज़रत (ﷺ) जो अपनी उम्मत को फ़ित्नों से डराते उसका ज़िक्र।**

١ - باب مَا جَاءَ فِي قَوْلِ اللهِ تَعَالَى : ﴿وَاتَّقُوا فِتْنَةً لاَ تُصِيبَنَّ الَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْكُمْ خَاصَّةً﴾ [الأنفال : ٢٥] وَمَا كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يُحَذِّرُ مِنَ الْفِتَنِ.

तश्रीह : फ़ित्ने से मुराद यहाँ हर एक आफ़त है दीनी हो या दुनियावी लुग़त में फ़ित्ना के मा'नी सोने को आग में तपाने के हैं ताकि उसका खरा या खोटापन मा'लूम हो। कभी फ़ित्ना अ़ज़ाब के मा'नी में आता है जैसे इस आयत में **ज़ुक़ू फ़ित्नतकुम** कभी आज़माने के मा'नी में है। यहाँ फ़ित्ने से मुराद गुनाह है जिसकी सज़ा आम होती है मष़लन बुरी बात देखकर ख़ामोश रहना, अम्र बिल मअ़रूफ़ और नही अ़निल मुंकर में सुस्ती और मुदाहिनत करना, फूट, नाइत्तिफ़ाक़ी, बिदअ़त को फैलाना, जिहाद में सुस्ती वग़ैरह। इमाम अहमद और बज़्ज़ार ने मुत्रिफ़ बिन अ़ब्दुल्लाह बिन शैख़ीर से निकाला, मैंने जंग जमल के दिन ज़ुबैर (रज़ि.) से कहा तुम ही लोगों ने तो हज़रत उ़ष़्मान (रज़ि.) को न बचाया वो मारे गये अब उनके ख़ून का दा'वा करने आए हो। ज़ुबैर (रज़ि.) ने कहा हमने आँहज़रत (ﷺ) के ज़माने में ये आयत पढ़ी, **वत्तक़ू फ़ित्नतल ला तुसबिन्नल्लज़ीन मिन्कुम ख़ास्सा** और ये गुमान न था कि हम ही लोग इस फ़ित्ने में मुब्तला होंगे। यहाँ तक जो होना था वो हुआ या'नी इस बला मे हम लोग ख़ुद गिरफ़्तार हुए।

ये अल्लाह पाक का महज़ फ़ज़्लो करम है कि हद से ज़्यादा नामसाइद हालात में भी नज़रे ष़ानी के बाद आज ये पारा कातिब स़ाहब के हवाले कर रहा हूँ। अल्लाह पाक से दुआ है कि वो ख़ैरियत के साथ तक्मीले बुख़ारी शरीफ़ का शर्फ़ अ़ता फ़र्माए और इस ख़िदमते अ़ज़ीम को ज़रिया नजाते उख़रवी बनाए और शफ़ाअ़ते रसूले करीम (ﷺ) से बहरावर करे। **रब्बना ला तुआख़िज़्ना इन नसीना औ अख़्तअ़्ना; आमीन या रब्बल आ़लमीन।**

7048. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया,

٧٠٤٨ - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا

कहा हमसे बिश्र बिन सिर्री ने बयान किया, कहा हमसे नाफ़ेअ बिन उमर ने बयान किया, उनसे इब्ने अबी मुलैका ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया (क़यामत के दिन) मैं हौज़े कौषर पर होऊँगा और अपने पास आने वालों का इंतिज़ार करता रहूँगा फिर (हौज़े कौषर) पर कुछ लोगों को मुझ तक पहुँचने से पहले ही गिरफ़्तार कर लिया जाएगा तो मैं कहूँगा कि ये तो मेरी उम्मत के लोग हैं। जवाब मिलेगा कि आपको मा'लूम नहीं ये लोग उल्टे पैर फिर गये थे। इब्ने अबी मुलैका इस हदीष को रिवायत करते वक़्त दुआ करते, ऐ अल्लाह! हम तेरी पनाह मांगते हैं कि हम उल्टे पैर फिर जाएँ या फ़ित्ने में पड़ जाएँ। (राजेअ: 6593)

بِشْرُ بْنُ السَّرِيِّ، حَدَّثَنَا نَافِعُ بْنُ عُمَرَ عَنِ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ قَالَ: قَالَتْ أَسْمَاءُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((أَنَا عَلَى حَوْضِي أَنْتَظِرُ مَنْ يَرِدُ عَلَيَّ فَيُؤْخَذُ بِنَاسٍ مِنْ دُونِي فَأَقُولُ: أُمَّتِي فَيَقُولُ : لاَ تَدْرِي مَشَوْا عَلَى الْقَهْقَرَى)) قَالَ ابْنُ أَبِي مُلَيْكَةَ: اللَّهُمَّ إِنَّا نَعُوذُ بِكَ أَنْ نَرْجِعَ عَلَى أَعْقَابِنَا أَوْ نُفْتَنَ.
[راجع: ٦٥٩٣]

तश्रीह : इन अहादीष का मुतालआ करने वालों को ग़ौर करना होगा कि वो किसी क़िस्म की बिदअत में मुब्तला होकर शफ़ाअत रसूले करीम (ﷺ) से महरूम न हो जाएँ। बिदअत वो बदतरीन काम है जिससे एक मुसलमान के सारे नेक आ'माल बर्बाद हो जाते हैं और बिदअती हौज़ कौषर और शफ़ाअत नबवी से महरूम होकर ख़ाइब व ख़ासिर हो जाएँगे या अल्लाह! हर बिदअत और हर बुरे काम से बचा, आमीन। या अल्लाह! इस हदीष पर हम भी तेरी पनाह मांगते हैं कि हम उल्टे पैर फिर जाएँ या'नी दीन से बेदीन हो जाएँ या फ़ित्ने में पड़कर हम तबाह हो जाएँ। या अल्लाह! हमारी दुआ क़ुबूल फ़र्मा, आमीन।

7049. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अबू अवाना ने, उनसे अबू वाइल के ग़ुलाम मुग़ीरह इब्ने मिक़्सम ने बयान किया और उनसे अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया मैं हौज़े कौषर पर तुम लोगों का पेश ख़ैमा होऊँगा और तुममें से कुछ लोग मेरी तरफ़ आएँगे जब मैं उन्हें (हौज़ का पानी) देने के लिये झुकूँगा तो उन्हें मेरे सामने से खींच लिया जाएगा। मैं कहूँगा ऐ मेरे रब! ये तो मेरी उम्मत के लोग हैं। अल्लाह तआला फ़र्माएगा आपको मा'लूम नहीं कि उन्होंने आपके बाद दीन मे क्या नई बातें निकाल ली थीं? (राजेअ: 6575)

٧٠٤٩- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ، عَنْ مُغِيرَةَ، عَنْ أَبِي وَائِلٍ قَالَ: قَالَ عَبْدُ اللهِ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((أَنَا فَرَطُكُمْ عَلَى الْحَوْضِ، لَيُرْفَعَنَّ إِلَيَّ رِجَالٌ مِنْكُمْ، حَتَّى إِذَا أَهْوَيْتُ لأُنَاوِلَهُمْ اخْتُلِجُوا دُونِي فَأَقُولُ أَيْ رَبِّ أَصْحَابِي يَقُولُ : لاَ تَدْرِي مَا أَحْدَثُوا بَعْدَكَ)).
[راجع: ٦٥٧٥]

नई बातों से प्रचलित बिदअतें मुराद हैं, जैसे तीजा, चहल्लुम, ता'ज़ियापरस्ती, उर्स, क़व्वाली, वग़ैरह वग़ैरह अल्लाह सब बिदआत से बचाए, आमीन।

7050,51. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे यअक़ूब बिन अब्दुर्रहमान ने बयान किया, उनसे अबू हाज़िम सलमा बिन दीनार ने बयान किया, कहा कि मैंने सहल बिन सअद से सुना, वो कहते थे कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना, आप फ़र्माते थे कि मैं हौज़े कौषर पर तुमसे पहले

٧٠٥٠، ٧٠٥١- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ، حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ أَبِي حَازِمٍ قَالَ : سَمِعْتُ سَهْلَ بْنَ سَعْدٍ يَقُولُ : سَمِعْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ

عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: ((أَنَا فَرَطُكُمْ عَلَى الْحَوْضِ، مَنْ وَرَدَهُ شَرِبَ مِنْهُ وَمَنْ شَرِبَ مِنْهُ لَمْ يَظْمَأْ بَعْدَهُ أَبَدًا، لَيَرِدُنَّ عَلَيَّ أَقْوَامٌ أَعْرِفُهُمْ وَيَعْرِفُونِي، ثُمَّ يُحَالُ بَيْنِي وَبَيْنَهُمْ)) قَالَ أَبُو حَازِمٍ: فَسَمِعَنِي النُّعْمَانُ بْنُ أَبِي عَيَّاشٍ وَأَنَا أُحَدِّثُهُمْ هَذَا فَقَالَ: هَكَذَا سَمِعْتَ سَهْلاً فَقُلْتُ: نَعَمْ. قَالَ: وَأَنَا أَشْهَدُ عَلَى أَبِي سَعِيدِ الْخُدْرِيِّ لَسَمِعْتُهُ يَزِيدُ فِيهِ قَالَ: ((إِنَّهُمْ مِنِّي فَيُقَالُ: إِنَّكَ لاَ تَدْرِي مَا أَحْدَثُوا بَعْدَكَ، فَأَقُولُ: سُحْقًا سُحْقًا لِمَنْ بَدَّلَ بَعْدِي)).

[راجع: ٦٥٨٣، ٨٥٨٤]

रहूँगा जो वहाँ पहुँचेगा तो उसका पानी पियेगा और जो उसका पानी पी लेगा वो उसके बाद कभी प्यासा नहीं होगा। मेरे पास ऐसे लोग भी आएँगे जिन्हें मैं पहचानता होऊँगा और वो मुझे पहचानते होंगे फिर मेरे और उनके बीच पर्दा डाल दिया जाएगा। अबू ह़ाज़िम ने बयान किया कि नोअ़मान बिन अबी अय्याश ने भी सुना कि मैं उनसे ये ह़दीष़ बयान कर रहा हूँ तो उन्होंने कहा कि क्या तूने सहल (रज़ि.) से इसी त़रह़ ये ह़दीष़ सुनी थी? मैंने कहा कि हाँ। उन्होंने कहा कि मैं गवाही देता हूँ कि मैंने अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि) से ये ह़दीष़ इसी त़रह़ सुनी थी। अबू सईद उसमें इतना बढ़ाते थे कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि ये लोग मुझमें से हैं। आँह़ज़रत (ﷺ) से उस वक़्त कहा जाएगा कि आपको मा'लूम नहीं कि आपके बाद इन्होंने क्या तब्दीलियाँ कर दी थीं? मैं कहूँगा कि दूरी हो दूरी हो उनके लिये जिन्होंने मेरे बाद दीन में तब्दीलियाँ कर दी थीं। (राजेअ : 6583, 8584)

तश्रीह़ : या'नी इस्लाम से मुर्तद हो गये। ह़ाफ़िज़ ने कहा इस सूरत मे तो कोई इश्काल न होगा अगर बिदअ़ती या दूसरे गुनहगार मुराद हों तो भी मुम्किन है कि उस वक़्त हौज़ पर आने से रोक दिये जाएँ। मआ़ज़ल्लाह दीन में नई बात या'नी बिदअ़त निकालना कितना बड़ा गुनाह है उन बिदअ़तियों को पहले आँह़ज़रत (ﷺ) के पास लाकर फिर जो हटा लिये जाएँगे, इससे ये मक़्सूद होगा कि उनको और ज़्यादा रंज हो जैसे कहते हैं।

क़िस्मत की बदनसीबी टूटी कहाँ कमन्द   दो चार हाथ जबकि लबे बाम रह गया

या इसलिये कि दूसरे मुसलमान उनका ह़ाल पर इख़्तिलाल अपनी आँखों से देख लें। मुसलमानों! होशियार हो जाओ बिदअ़त से।

٢- باب قَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ: ((سَتَرَوْنَ بَعْدِي أُمُورًا تُنْكِرُونَهَا)) وَقَالَ عَبْدُ اللهِ بْنُ زَيْدٍ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((اصْبِرُوا حَتَّى تَلْقَوْنِي عَلَى الْحَوْضِ)).

बाब 2 : नबी करीम (ﷺ) का फ़र्माना कि मेरे बाद तुम कुछ काम देखोगे

जो तुमको बुरे लगेंगे और अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ैद बिन आ़मिर ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने (अंसार से) ये भी फ़र्माया कि तुम उन कामों पर स़ब्र करना यहाँ तक कि तुम हौज़े कौष़र पर आकर मुझसे मिलो।

कुछ बातें अपनी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ देखोगे उन पर स़ब्र करना और उम्मत में इत्तिफ़ाक़ को क़ायम रखना।

٧٠٥٢- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ الْقَطَّانُ، حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، حَدَّثَنَا زَيْدُ بْنُ وَهْبٍ قَالَ: سَمِعْتُ عَبْدَ اللهِ قَالَ:

7052. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे यह़्या बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे आ'मश ने बयान किया, उनसे ज़ैद बिन वहब ने बयान किया, उन्होंने अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने

قَالَ لَنَا رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِنَّكُمْ سَتَرَوْنَ بَعْدِي أَثَرَةً وَأُمُورًا تُنْكِرُونَهَا)). قَالُوا: فَمَا تَأْمُرُنَا يَا رَسُولَ اللهِ قَالَ: ((أَدُّوا إِلَيْهِمْ حَقَّهُمْ وَسَلُوا اللهَ حَقَّكُمْ)).

[راجع: ٣٦٠٣]

हमसे फ़र्माया, तुम मेरे बाद कुछ काम ऐसे देखोगे जो तुमको बुरे लगेंगे। सहाबा ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! आप इस सिलसिले में क्या हुक्म फ़र्माते हैं? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया उन्हें उनका हक़ अदा करो और अपना हक़ अल्लाह से मांगो। (राजेअ : 3603)

तशरीह : या'नी अल्लाह से दुआ करो कि अल्लाह उनको इंसाफ़ और हक़ पहचानने की तौफ़ीक़ दे। जैसे ष़ौरी की रिवायत में है या अल्लाह! इनके बदल तुम पर दूसरे हाकिम जो आदिल और मुंसिफ़ हों, मुक़र्रर कर। मुस्लिम और तबरानी की रिवायत में यूँ है कि या रसूलल्लाह! हम उनसे लड़ें नहीं। आपने फ़र्माया नहीं जब तक वो नमाज़ पढ़ते रहें। मा'लूम हुआ कि जब मुसलमान हाकिम नमाज़ पढ़ना भी छोड़ दे तो फिर उससे लड़ना और उसका ख़िलाफ़ करना दुरुस्त हो गया। बेनमाज़ी हाकिम की इताअत ज़रूरी नहीं है। इस पर तमाम अहले हदीष़ का इत्तिफ़ाक़ है। हाफ़िज़ ने कहा इसका ये मतलब नहीं है कि वो काफिर हो जाएगा बल्कि मतलब ये है कि जाहिलियत वालों की तरह मरेगा या'नी जैसे जाहिलियत वालों का कोई इमाम नहीं होता। उसी तरह उसका भी न होगा। दूसरी रिवायत में यूँ फ़र्माया है कि जो शख़्स जमाअत से बालिश्त बराबर जुदा हो गया उसने इस्लाम की रस्सी अपनी गर्दन से निकाल डाली। इब्ने बत्ताल ने कहा इस हदीष़ से ये निकला हाकिम गो ज़ालिम या फ़ासिक़ हो उससे बग़ावत करना दुरुस्त नहीं अल्बत्ता अगर सरीह कुफ़्र इख़्तियार करे तब उसकी इताअत जाइज़ नहीं बल्कि जिसको क़ुदरत हो उसको उस पर जिहाद करना वाजिब है। आजकल के कुछ अइम्मा मस्जिद लोगों से अपनी इमामत की बेअत लेकर बेअत न करने वालों को जाहिलियत की मौत का फ़त्वा सुनाते हैं और लोगों से ज़कात वसूल करते हैं। ये सब फ़रेब ख़ूरदा हैं। यहाँ मुराद ख़लीफ़ा इस्लाम है, जो सहीह मा'नों में इस्लामी तौर पर साहिबे इक़्तिदा हो।

٧٠٥٣- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، عَنْ عَبْدِ الْوَارِثِ، عَنِ الْجَعْدِ، عَنْ أَبِي رَجَاءٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((مَنْ كَرِهَ مِنْ أَمِيرِهِ شَيْئًا فَلْيَصْبِرْ، فَإِنَّهُ مَنْ خَرَجَ مِنَ السُّلْطَانِ شِبْرًا مَاتَ مِيتَةً جَاهِلِيَّةً)).

7053. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल वारिष़ बिन सईद ने बयान किया, उनसे जअ़दि सीरफ़ी ने, उनसे अबू रजाअ अ़तारदी ने और उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जो शख़्स अपने अमीर में कोई नापसंद बात देखे तो स़ब्र करे (ख़लीफ़ा) की इताअत से अगर कोई बालिश्त भर भी बाहर निकला तो उसकी मौत जाहिलियत की मौत होगी। (दीगर मक़ामात : 7054, 7143)

ख़लीफ़ा-ए-इस्लाम की इताअत से मक़सद ये है कि मा'मूली बातों को बहाना बनाकर क़ानून शिकनी करके लाक़ानूनियत (अराजकता) न पैदा की जाए वरना अ़हदे जाहिलियत की याद ताज़ा हो जाएगी फ़ित्ना व फ़साद ज़ोर पकड़ जाएगा।

٧٠٥٤- حَدَّثَنَا أَبُو النُّعْمَانِ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، عَنِ الْجَعْدِ أَبِي عُثْمَانَ، حَدَّثَنِي أَبُو رَجَاءٍ الْعُطَارِدِيُّ قَالَ: سَمِعْتُ ابْنَ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((مَنْ رَأَى مِنْ أَمِيرِهِ شَيْئًا يَكْرَهُهُ

7054. हमसे अबूल नोअ़मान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे जअ़दि अबी उ़ष़्मान ने बयान किया, उनसे अबू रजाअ अ़तारदी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से सुना, उनसे नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जिसने अपने अमीर की कोई नापसंद चीज़ देखी तो उसे चाहिये कि स़ब्र करे इसलिये कि जिसने जमाअ़त से एक बालिश्त भर जुदाई इख़्तियार की और

فَلْيَصْبِرْ عَلَيْهِ، فَإِنَّهُ مَنْ فَارَقَ الْجَمَاعَةَ شِبْرًا فَمَاتَ إِلاَّ مَاتَ مِيتَةً جَاهِلِيَّةً)).

[راجع: ٧٠٥٣]

इसी हाल में मरा तो वो जाहिलियत की सी मौत मरेगा।

(राजेअ: 7053)

तश्रीह : इमाम अह़मद की रिवायत में इतना ज़्यादा है गो तुम अपने तईं हुकूमत का ह़क़दार समझो जब भी इस राय पर न चलो बल्कि ह़ाकिमे वक़्त की इत़ाअ़त करो, उसका हुक्म सुनो, यहाँ तक कि अगर अल्लाह को मंज़ूर है तो बिन लड़े भिड़े तुमको हुकूमत मिल जाए। इब्ने ह़िब्बान और इमाम अह़मद की रिवायत मे है गो ये ह़ाकिम तुम्हारा माल खाए, तुम्हारी पीठ पर मार लगाए या'नी तब भी स़ब्र करो। अगर कुफ़्र करे तो उससे लड़ने पर तुमको मुवाख़िज़ा न होगा। दूसरी रिवायत में यूँ है जब तक वो तुमको साफ़ और स़रीह़ गुनाह की बात का हुक्म न दे। तीसरी रिवायत में है जो ह़ाकिम अल्लाह की नाफ़र्मानी करे उसकी इत़ाअ़त नहीं करना चाहिये। इब्ने अबी शैबा की रिवायत में यूँ है तुम पर ऐसे लोग ह़ाकिम होंगे जो तुमको ऐसी बातों का हुक्म करेंगे जिनको तुम नहीं पहचानते और ऐसे काम करेंगे जिनको तुम बुरा जानते हो तो ऐसे ह़ाकिमों की इत़ाअ़त करना तुमको ज़रूरी नहीं ये जो फ़र्माया अल्लाह के पास तुमको दलील मिल जाएगी या'नी उससे लड़ने और उसकी मुख़ालफ़त करने की सनद तुमको मिल जाएगी। इससे ये निकला कि जब तक ह़ाकिम के क़ौल व फ़ेअल की तावील शरई हो सके उस वक़्त तक उससे लड़ना या उस पर ख़ुरूज करना जाइज़ नहीं अल्बत्ता अगर स़ाफ़ व स़रीह़ वो शरअ़ के मुख़ालिफ़ हुक्म दे और क़वाइदे इस्लाम के बरख़िलाफ़ चले जब तू उस पर ए'तिराज़ करना और अगर न माने तो उससे लड़ना दुरुस्त है। दाऊदी ने कहा अगर ज़ालिम ह़ाकिम का मअ़ज़ूल करना बग़ैर फ़ित्ने और फ़साद के मुम्किन हो तब तो वाजिब है कि वो मअ़ज़ूल कर दिया जाए वरना स़ब्र करना चाहिये। कुछ ने कहा इब्तिदा फ़ासिक़ को ह़ाकिम बनाना दुरुस्त नहीं अगर हुकूमत मिलते वक़्त आदिल हो फिर फ़ासिक़ हो जाए उस पर ख़ुरूज करने में उ़लमा का इख़्तिलाफ़ है और स़ह़ीह़ ये है कि ख़ुरूज उस वक़्त तक जाइज़ नहीं जब तक ए'लानिया कुफ़्र न करे, अगर ए'लानिया कुफ़्र की बातें करने लगे उस वक़्त उसको मअ़ज़ूल करना वाजिब है।

٧٠٥٥- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، حَدَّثَنِي ابْنُ وَهْبٍ، عَنْ عَمْرٍو عَنْ بُكَيْرٍ، عَنْ بُسْرِ بْنِ سَعِيدٍ، عَنْ جُنَادَةَ بْنِ أَبِي أُمَيَّةَ قَالَ: دَخَلْنَا عَلَى عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ وَهُوَ مَرِيضٌ فَقُلْنَا: أَصْلَحَكَ اللهُ حَدِّثْ بِحَدِيثٍ يَنْفَعُكَ اللهُ بِهِ سَمِعْتَهُ مِنَ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ دَعَانَا النَّبِيُّ ﷺ فَبَايَعْنَا.

[راجع: ١٨]

7055. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, कहा मुझसे अ़ब्दुल्लाह बिन वहब ने बयान किया, उनसे अ़म्र बिन ह़ारिष़ ने, उनसे बुकैर बिन अ़ब्दुल्लाह ने, उनसे बुस्र बिन सईद ने, उनसे जुनादा बिन अबी उमय्या ने बयान किया कि हम उ़बादह़ बिन स़ामित (रज़ि.) की ख़िदमत में पहुँचे वो मरीज़ थे और हमने अ़र्ज़ किया अल्लाह तआ़ला आपको स़ेहत अ़ता करे कोई ह़दीष़ बयान कीजिए जिसका नफ़ा आपको अल्लाह तआ़ला पहुँचाए। उन्होंने बयान किया कि) मैंने नबी करीम (ﷺ) से लैलतुल उ़क़्बा में सुना है कि आपने हमें बुलाया और हमने आपसे बेअ़त की। (राजेअ़ : 18)

٧٠٥٦- فَقَالَ: فِيمَا أَخَذَ عَلَيْنَا أَنْ بَايَعَنَا عَلَى السَّمْعِ وَالطَّاعَةِ فِي مَنْشَطِنَا وَمَكْرَهِنَا وَعُسْرِنَا وَيُسْرِنَا، وَأَثَرَةٍ عَلَيْنَا وَأَنْ لاَ نُنَازِعَ الأَمْرَ أَهْلَهُ إِلاَّ أَنْ تَرَوْا

7056. उन्होंने बयान किया कि जिन बातों का आँह़ज़रत (ﷺ) ने हम से अ़हद लिया था उनमें ये भी था कि ख़ुशी व नागवारी, तंगी और कुशादगी और अपनी ह़क़ तलफ़ी में भी इत़ाअ़त व फ़र्मांबरदारी करें और ये भी कि हुक्मरानों के साथ हुकूमत के बारे में उस वक़्त तक झगड़ा न करें जब तक उनको ए'लानिया

كُفْرًا بوَاحًا عِنْدَكُمْ مِنَ اللهِ فِيهِ بُرْهَانٌ».
[طرفه في : ٧٢٠٠].

कुफ़्र करते न देख लें अगर वो ए'लानिया कुफ़्र करें तो तुमको अल्लाह के पास दलील मिल जाएगी। (दीगर मक़ाम : 7200)

٧٠٥٧- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَرْعَرَةَ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، عَنْ أُسَيْدِ بْنِ حُضَيْرٍ أَنَّ رَجُلاً أَتَى النَّبِيَّ ﷺ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ اسْتَعْمَلْتَ فُلاَنًا وَلَمْ تَسْتَعْمِلْنِي؟ قَالَ: ((إِنَّكُمْ سَتَرَوْنَ بَعْدِي أُثْرَةً فَاصْبِرُوا حَتَّى تَلْقَوْنِي)). [راجع: ٣٧٩٢]

7057. हमसे मुहम्मद बिन अरअरह ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे क़तादा ने, उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने और उनसे उसैद बिन हुज़ैर (रज़ि.) ने, एक साहब (ख़ुद उसैद) नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! आपने फ़लाँ अम्र बिन आस को हाकिम बना दिया और मुझे नहीं बनाया। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुम लोग अंसारी मेरे बाद अपनी हक़ तलफ़ी देखोगे तो क़यामत तक सब्र करना यहाँ तक कि तुम मुझसे आ मिलो। (राजेअ : 3792)

हज़रत उसैद बिन हुज़ैर अंसारी औसी लैलतुल उक़्बा सानिया में मौजूद थे सन 2 हिजरी में मदीना में फ़ौत हुए।

٣- باب قَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ: ((هَلاَكُ أُمَّتِي عَلَى يَدَيْ أُغَيْلِمَةٍ سُفَهَاءَ))

बाब 3 : नबी करीम (ﷺ) का ये फ़र्माना कि मेरी उम्मत की तबाही चंद बेवक़ूफ़ लड़कों की हुकूमत से होगी

٧٠٥٨- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ يَحْيَى بْنِ سَعِيدِ بْنِ عَمْرِو بْنِ سَعِيدٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي جَدِّي قَالَ كُنْتُ جَالِسًا مَعَ أَبِي هُرَيْرَةَ فِي مَسْجِدِ النَّبِيِّ ﷺ بِالْمَدِينَةِ وَمَعَنَا مَرْوَانُ قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ: سَمِعْتُ الصَّادِقَ الْمَصْدُوقَ يَقُولُ: ((هَلَكَةُ أُمَّتِي عَلَى يَدَيْ غِلْمَةٍ مِنْ قُرَيْشٍ)) فَقَالَ مَرْوَانُ: لَعْنَةُ اللهِ عَلَيْهِمْ غِلْمَةً. فَقَالَ أَبُوهُرَيْرَةَ: لَوْ شِئْتُ أَنْ أَقُولَ بَنِي فُلاَنٍ وَ بَنِي فُلاَنٍ لَفَعَلْتُ، فَكُنْتُ أَخْرُجُ مَعَ جَدِّي إِلَى بَنِي مَرْوَانَ حِينَ مَلَكُوا بِالشَّامِ، فَإِذَا رَآهُمْ غِلْمَانًا أَحْدَاثًا قَالَ لَنَا عَسَى هَؤُلاَءِ أَنْ يَكُونُوا مِنْهُمْ؟ قُلْنَا: أَنْتَ أَعْلَمُ. [راجع: ٣٦٠٤]

7058. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अम्र बिन यह्या बिन सईद ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझे मेरे दादा सईद ने ख़बर दी, कहा कि मैं अबू हुरैरह (रज़ि.) के पास मदीना मुनव्वरह में नबी करीम (ﷺ) की मस्जिद में बैठा था और हमारे साथ मरवान भी था। अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा कि मैंने सादिक़ व मस्दूक़ से सुना है आपने फ़र्माया कि मेरी उम्मत की तबाही क़ुरैश के चंद छोकरों के हाथ से होगी। मरवान ने उस पर कहा उन पर अल्लाह की ला'नत हो। अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा कि अगर मैं उनके ख़ानदान के नाम लेकर बतलाना चाहूँ तो बतला सकता हूँ। फिर जब बनी मरवान शाम की हुकूमत पर क़ाबिज़ हो गये तो मैं अपने दादा के साथ उनकी तरफ़ जाता था जब वहाँ उन्होंने नौजवान लड़कों को देखा तो कहा कि शायद ये उन्ही में से हों। हमने कहा कि आपको ज़्यादा इल्म है। (राजेअ : 3604)

तश्रीह : उन्होंने नाम बनाम ज़ालिम हाकिमों के नाम आँहज़रत (ﷺ) से सुने थे मगर डर की वजह से बयान नहीं कर सकते थे। क़स्तलानी (रह.) ने कहा उस बला से मुराद वो इख़्तिलाफ़ है जो हज़रत उष्मान (रज़ि.) की अख़ीर

ख़िलाफ़त में हुआ या वो जंग जो ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) और मुआ़विया (रज़ि.) में हुई। इब्ने अबी शैबा ने अबू हुरैरह (रज़ि.) से मर्फ़ूअ़न निकाला है कि मैं अल्लाह की पनाह चाहता हूँ छोकरों की हुकूमत से। अगर तुम उनका कहना मानो तो दीन की तबाही है और अगर न मानो तो तुमको तबाह कर दें।

बाब 4 : नबी करीम (ﷺ) का ये फ़र्माना कि एक बला से जो नज़दीक आ गई है अ़रब की ख़राबी होने वाली है

٤- باب قَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ: ((وَيْلٌ لِلْعَرَبِ مِنْ شَرٍّ قَدِ اقْتَرَبَ))

7059. हमसे मालिक बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़यैना ने बयान किया, उन्होंने ज़ुह्री से सुना, उन्होंने उ़र्वा से, उन्होंने ज़ैनब बिन्ते उम्मे सलमा (रज़ि.) से, उन्होंने उम्मे ह़बीबा (रज़ि.) से सुना और उन्होंने ज़ैनब बिन्ते जह़श (रज़ि.) से कि उन्होंने बयान किया नबी करीम (ﷺ) नींद से बेदार हुए तो आपका चेहरा सुर्ख़ था और आप फ़र्मा रहे थे अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं। अ़रबों की तबाही उस बला से होगी जो क़रीब आ लगी है। आज याजूज माजूज की दीवार में से इतना सूराख़ हो गया और सुफ़यान ने नव्वे या सौ के अ़दद के लिये उँगली बाँधी पूछा गया क्या हम उसके बावजूद हलाक हो जाएँगे कि हममें स़ालेह़ीन भी होंगे? फ़र्माया हाँ जब बदकारी बढ़ जाएगी (तो ऐसा ही होगा)। (राजेअ़ : 3346)

٧٠٥٩- حَدَّثَنَا مَالِكُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ، أَنَّهُ سَمِعَ الزُّهْرِيَّ، عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ زَيْنَبَ بِنْتِ أُمِّ سَلَمَةَ، عَنْ أُمِّ حَبِيبَةَ، عَنْ زَيْنَبَ ابْنَةِ جَحْشٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُنَّ أَنَّهَا قَالَتْ: اسْتَيْقَظَ النَّبِيُّ ﷺ مِنَ النَّوْمِ مُحْمَرًّا وَجْهُهُ يَقُولُ: ((لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ وَيْلٌ لِلْعَرَبِ مِنْ شَرٍّ قَدِ اقْتَرَبَ، فُتِحَ الْيَوْمَ مِنْ رَدْمِ يَأْجُوجَ وَمَأْجُوجَ مِثْلُ هَذِهِ)) وَعَقَدَ سُفْيَانُ تِسْعِينَ أَوْ مِائَةً قِيلَ أَنَهْلِكُ وَفِينَا الصَّالِحُونَ؟ قَالَ: ((نَعَمْ إِذَا كَثُرَ الْخَبَثُ)). [راجع: ٣٣٤٦]

तश्रीह़ : नव्वे का इशारा ये है कि दाएँ हाथ के कलिमे की उँगली की नोक उसकी जड़ पर जमाई और सौ का इशारा भी उसके क़रीब क़रीब है। बुराई से मुराद ज़िना या औलादे ज़िना की कष़रत है दीगर फ़िस्क़ व फ़िजूर भी मुराद हैं। याजूज माजूज की सद आँह़ज़रत (ﷺ) के ज़माने में इतनी खुल गई थी तो अब मा'लूम नहीं कितनी खुल गई होगी और मुम्किन है बराबर हो गई हो या पहाड़ों में छुप गई हो और जुग़राफ़िया (भूगोल) वालों की निगाह उस पर न पड़ी हो। ये मौलाना वह़ीदुज़्ज़माँ का ख़्याल है। अपने नज़दीक **वल्लाहु अ़ालमु बिस्स़वाब आमन्ना बिमा क़ाल रसूलुल्लाहि (ﷺ)।**

7060. हमसे अबू नुऐ़म फ़ज़्ल बिन दुकैन ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़यैना ने बयान किया, उनसे ज़ुह्री ने, (दूसरी सनद) इमाम बुख़ारी (रह़.) ने कहा कि और मुझसे मह़मूद बिन ग़ीलान ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने ख़बर दी, उन्हें मअ़मर ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुह्री ने, उन्हें उ़र्वा ने और उनसे उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) मदीना के मह़लों में से एक मह़ल पर चढ़े फिर फ़र्माया कि मैं जो कुछ देखता हूँ तुम भी देखते हो? लोगों ने कहा कि नहीं। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैं फ़ित्नों को देखता हूँ कि वो बारिश के क़त़रों की त़रह तुम्हारे घरों में

٧٠٦٠- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، ح وَحَدَّثَنِي مَحْمُودٌ أَخْبَرَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ أُسَامَةَ بْنِ زَيْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: أَشْرَفَ النَّبِيُّ ﷺ عَلَى أُطُمٍ مِنْ آطَامِ الْمَدِينَةِ فَقَالَ: هَلْ تَرَوْنَ مَا أَرَى؟ قَالُوا: لاَ، قَالَ: ((فَإِنِّي لأَرَى الْفِتَنَ تَقَعُ خِلاَلَ بُيُوتِكُمْ كَوَقْعِ

दाख़िल हो रहे हैं। (राजेअ : 1878)

الْقَطْرِ)). [راجع: ١٨٧٨]

तश्रीह : आँहज़रत (ﷺ) की पेशीनगोई हर्फ़ ब हर्फ़ सहीह षाबित हुई और आपकी जुदाई के बाद जल्द फ़ित्नों के दरवाज़े खुल गये। हज़रत उसामा बिन ज़ैद बिन हारषा क़ज़ाई, उम्मे यमन के बेटे हैं जो आँहज़रत (ﷺ) के वालिद माजिद जनाब अब्दुल्लाह की लौण्डी थीं जिन्होंने आँहज़रत (ﷺ) को गोद में पाला था। उसामा हज़रत के महबूब हज़रत ज़ैद के बेटे थे और ज़ैद भी आपके बहुत महबूब गुलाम थे। वफ़ाते नबवी (ﷺ) के वक़्त उनकी उम्र 20 साल की थी और बाद में ये वादी कुरा में रहने लगे थे शहादते हज़रत उष्मान ग़नी (रज़ि.) के बाद वहीं वफ़ात पाई रज़ियल्लाहु अन्हु व अर्ज़ाहू।

हज़रत ज़ैनब बिन्ते जहश उम्महातुल मोमिनीन से हैं उनकी वालिदा का नाम उमय्या है जो अब्दुल मुत्तलिब की बेटी हैं और आँहज़रत (ﷺ) की फूफी हैं। हज़रत ज़ैनब हज़रत ज़ैद बिन हारिषा (रज़ि.) आँहज़रत (ﷺ) के आज़ादकर्दा गुलाम की बीवी हैं। फिर हज़रत ज़ैद (रज़ि.) ने उनको तलाक़ दे दी और सन 5 हिजरी में ये आँहज़रत (ﷺ) के हरमे मुहतरम में दाख़िल हो गई थीं। कोई औरत दीनदारी में उनसे बेहतर न थी। सबसे ज़्यादा अल्लाह से डरने वाली, सबसे ज़्यादा सच बोलने वाली, सबसे ज़्यादा सख़ावत करने वाली थीं। वफ़ाते नबवी के बाद आपकी बीवियों में सबसे पहले सन 20 या 21 हिजरी में बउम्र 53 साल मदीने में इंतिक़ाल फ़र्माया रज़ियल्लाहु अन्हा व अर्ज़ाहा।

बाब 5 : फ़ित्नों के ज़ाहिर होने का बयान

٥- باب ظُهُورِ الْفِتَنِ

7061. हमसे अय्याश बिन वलीद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको अब्दुल आला ने ख़बर दी, उन्होंने कहा हमसे मअमर ने बयान किया, उनसे ज़ुहरी ने, उनसे सुवैद बिन मुसय्यब ने बयान किया, उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया ज़माना क़रीब होता जाएगा और अमल कम होता जाएगा और लालच दिलों में डाल दी जाएगी और फ़ित्ने ज़ाहिर होने लगेंगे और हिरज की कषरत हो जाएगी। लोगों ने सवाल किया या रसूलल्लाह! ये हिरज क्या चीज़ है? आँहुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि क़त्ल! क़त्ल! और यूनुस और लैष और ज़ुहरी के भतीजे ने बयान किया, उनसे ज़ुहरी ने, उनसे हुमैद ने, उनसे अबू हुरैरह (रज़ि) ने नबी करीम (ﷺ) से।

(राजेअ : 85)

٧٠٦١- حَدَّثَنَا عَيَّاشُ بْنُ الْوَلِيدِ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ الأَعْلَى، حَدَّثَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ سَعِيدٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((يَتَقَارَبُ الزَّمَانُ وَيَنْقُصُ الْعَمَلُ، وَيُلْقَى الشُّحُّ، وَتَظْهَرُ الْفِتَنُ وَيَكْثُرُ الْهَرْجُ)) قَالُوا: يَا رَسُولَ اللهِ أَيُّمَ هُوَ؟ قَالَ: ((الْقَتْلُ الْقَتْلُ)). وَقَالَ شُعَيْبٌ: وَيُونُسُ وَاللَّيْثُ وَابْنُ أَخِي الزُّهْرِيِّ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ حُمَيْدٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ. [راجع: ٨٥]

तश्रीह : लोग ऐश व इश्रत और ग़फ़लत में पड़ जाएँगे, उनको एक साल ऐसा गुज़रेगा जैसे एक माह। एक माह ऐसे जैसे एक हफ़्ता। एक हफ़्ता ऐसे जैसे एक दिन या ये मुराद है कि दिन रात बराबर हो जाएँगे या दिन रात छोटे हो जाएँगे गोया ये भी क़यामत की एक निशानी है या शर्र और फ़साद नज़दीक आ जाएगा कि कोई अल्लाह अल्लाह कहने वाला न रहेगा या दौलत और हुकूमतें जल्द जल्द बदलने और मिटने लगेंगी या उम्रें छोटी हो जाएँगी या ज़माने में से बरकत जाती रहेगी जो काम अगले लोग एक माह में करते थे वो एक साल में भी पूरा न होगा। शुऐब की रिवायत को इमाम बुख़ारी (रह.) ने किताबुल अदब में और यूनुस की रिवायत को इमाम मुस्लिम (रह.) ने सहीह में और लैष की रिवायत को तबरानी ने मुअज्जम औसत में वस्ल किया। मतलब ये है कि इन चारों ने मअमर के ख़िलाफ़ किया। इन्होंने ज़ुहरी का शैख़ इस हदीष में हुमैद को बयान किया और इमाम बुख़ारी (रह.) ने दोनों तरीक़ों को सहीह समझा जब तो एक तरीक़ यहाँ बयान किया और

एक किताबुल अदब मे क्योंकि अन्देशा है ज़ुहरी ने इस ह़दीष़ को सईद बिन मुसय्यब और ह़ुमैद दोनों से सुना हो।

7062, 7063. हमसे उ़बैदुल्लाह बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमसे आ'मश ने, उनसे शक़ीक़ ने बयान किया कि मैं अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) और अबू मूसा (रज़ि.) के साथ था। इन दोनों ह़ज़रात ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया क़यामत के दिन से पहले ऐसे दिन होंगे जिनमें जिहालत उतर पड़ेगी और इल्म उठा लिया जाएगा और हरज बढ़ जाएगा और हरज क़त्ल है।

(दीगर मक़ाम : 7066 वल ह़दीष़ 7063 दीगर मक़ामात : 7064, 7065)

٧٠٦٢، ٧٠٦٣- حدَّثَنَا عُبَيْدُ الله بْنُ مُوسَى، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ شَقِيقٍ قَالَ: كُنْتُ مَعَ عَبْدِ الله وَأَبِي مُوسَى فَقَالاَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِنَّ بَيْنَ يَدَيِ السَّاعَةِ لأَيَّامًا يَنْزِلُ فِيهَا الْجَهْلُ، وَيُرْفَعُ فِيهَا الْعِلْمُ وَيَكْثُرُ فِيهَا الْهَرْجُ، وَالْهَرْجُ الْقَتْلُ)).

[طرفه في: ٧٠٦٦ والحديث: ٧٠٦٣ طرفاه في: ٧٠٦٤، ٧٠٦٥].

7064. हमसे उ़मर बिन ह़फ़्स़ ने बयान किया, उन्हों ने कहा मुझसे मेरे वालिद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे आ'मश ने बयान किया, उनसे शक़ीक़ ने बयान किया कि अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द और अबू मूसा (रज़ि.) बैठे और बातचीत करते रहे फिर अबू मूसा (रज़ि.) ने कहा कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया क़यामत से पहले ऐसे दिन आएँगे जिनमें इल्म उठा लिया जाएगा और जिहालत उतर पड़ेगी और हरज की कष़रत हो जाएगी और हरज क़त्ल है। (राजेअ़ : 7063)

٧٠٦٤- حدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، حَدَّثَنَا شَقِيقٌ قَالَ: جَلَسَ عَبْدُ الله وَأَبُو مُوسَى فَتَحَدَّثَا فَقَالَ أَبُو مُوسَى: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ ((إِنَّ بَيْنَ يَدَيِ السَّاعَةِ أَيَّامًا يُرْفَعُ فِيهَا الْعِلْمُ، وَيَنْزِلُ فِيهَا الْجَهْلُ، وَيَكْثُرُ فِيهَا الْهَرْجُ، وَالْهَرْجُ الْقَتْلُ)). [راجع: ٧٠٦٣]

7065. हमसे क़ुतैबा ने बयान किया, उन्हों ने कहा हमसे जरीर ने बयान किया, उनसे आ'मश ने बयान किया और उनसे अबू वाइल ने बयान किया कि मैं अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) और मूसा (रज़ि.) के साथ बैठा हुआ था तो अबू मूसा (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना इसी त़रह। ह़रज ह़ब्शा की ज़ुबान में क़त्ल को कहते हैं। (राजेअ़ : 7063)

٧٠٦٥- حدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي وَائِلٍ قَالَ: إِنِّي لَجَالِسٌ مَعَ عَبْدِ الله وَأَبِي مُوسَى رَضِيَ الله عَنْهُمَا فَقَالَ أَبُو مُوسَى: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ مِثْلَهُ وَالْهَرْجُ بِلِسَانِ الْحَبَشَةِ. الْقَتْلُ.

[راجع: ٧٠٦٣]

ह़ज़रत अबू मूसा अ़ब्दुल्लाह बिन क़ैस अश्अ़री हैं जो मक्का में इस्लाम लाए और हिजरते ह़ब्शा में शरीक हुए सन 52 हिजरी में वफ़ात पाई रज़ियल्लाहु अ़न्हु व अर्ज़ाहू और ह़ब्शी ज़ुबान में हरज क़त्ल के मा'नी में है।

7066. हमसे मुह़म्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे ग़ुन्दर ने, कहा हमसे शुअ़बा ने, उनसे वास़िल ने, उनसे अबू वाइल ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने और मेरा ख़याल है कि इस ह़दीष़ को उन्होंने मर्फ़ूअ़न बयान

٧٠٦٦- حدَّثَنَا مُحَمَّدٌ، حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ وَاصِلٍ، عَنْ أَبِي عَنْ عَبْدِ الله، وَأَحْسِبُهُ رَفَعَهُ قَالَ: ((بَيْنَ يَدَيِ

किया, कहा कि क़यामत से पहले हरज के दिन होंगे, जिनमें इल्म ख़त्म हो जाएगा और जिहालत ग़ालिब होगी। अबू मूसा (रज़ि.) ने बयान किया कि ह़ब्शी ज़ुबान में हरज बमा'नी क़त्ल है। (राजेअ : 7062)

السَّاعَةِ أَيَّامُ الْهَرْجِ يَزُولُ الْعِلْمُ وَيَظْهَرُ فِيهَا الْجَهْلُ)) قَالَ أَبُو مُوسَى: وَالْهَرْجُ : الْقَتْلُ بِلِسَانِ الْحَبَشَةِ. [راجع: ٧٠٦٢]

7067. और अबू अ़वाना ने बयान किया, उनसे आ़स़िम ने, उनसे अबू वाइल ने और उनसे अबू मूसा अश्अ़री (रज़ि.) ने कि उन्होंने अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) से कहा। आप वो ह़दीष़ जानते हैं जो आँह़ज़रत (ﷺ) ने हरज के दिनों वग़ैरह के बारे में बयान की? इब्ने मसऊ़द (रज़ि.) ने कहा कि मैंने आपको ये फ़र्माते सुना था कि वो बदबख़्ततरीन लोगों में से होंगे जिनकी ज़िंदगी मे क़यामत आएगी।

٧٠٦٧- وَقَالَ أَبُو عَوَانَةَ، عَنْ عَاصِمٍ، عَنْ أَبِي وَائِلٍ، عَنِ الأَشْعَرِيِّ أَنَّهُ قَالَ لِعَبْدِ اللهِ. تَعْلَمُ الأَيَّامَ الَّتِي ذَكَرَ النَّبِيُّ ﷺ أَيَّامَ الْهَرْجِ نَحْوَهُ وَقَالَ ابْنُ مَسْعُودٍ سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((مِنْ شِرَارِ النَّاسِ مَنْ تُدْرِكُهُمُ السَّاعَةُ وَهُمْ أَحْيَاءٌ)).

इल्म दीन का ख़ात्मा क़यामत की अ़लामत है। जब इल्मे दीन उठ जाएगा बुरे ही लोग रह जाएँगे उन ही पर क़यामत क़ायम हो जाएगी।

बाब 6 : हर ज़माने के बाद दूसरे आने वाले ज़माने का उससे बदतर आना

٦- باب لاَ يَأْتِي زَمَانٌ إِلاَّ الَّذِي بَعْدَهُ شَرٌّ مِنْهُ

7068. हमसे मुह़म्मद बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने, उनसे ज़ुबैर बिन अ़दी ने बयान किया कि हम अनस बिन मालिक (रज़ि.) के पास आए और उनसे ह़ज्जाज के त़र्ज़े अ़मल की शिकायत की, उन्होंने कहा कि स़ब्र करो क्योंकि तुम पर जो दौर भी आता है तो उसके बाद आने वाला दौर उससे भी बुरा होगा यहाँ तक कि तुम अपने रबसे जा मिलो। मैंने ये तुम्हारे नबी (ﷺ) से सुना है।

٧٠٦٨- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنِ الزُّبَيْرِ بْنِ عَدِيٍّ قَالَ : أَتَيْنَا أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ فَشَكَوْنَا إِلَيْهِ مَا نَلْقَى مِنَ الْحَجَّاجِ فَقَالَ: ((اصْبِرُوا فَإِنَّهُ لاَ يَأْتِي عَلَيْكُمْ زَمَانٌ إِلاَّ الَّذِي بَعْدَهُ شَرٌّ مِنْهُ، حَتَّى تَلْقَوْا رَبَّكُمْ)). سَمِعْتُهُ مِنْ نَبِيِّكُمْ ﷺ.

तश्रीह : अब ये ए'तिराज़ न होगा कि कभी कभी बाद का ज़माना से बेहतर हो जाता है मष़लन कोई बादशाह आ़दिल और मुत्तबअ़े सुन्नत पैदा हो गया जैसे उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ जिनका ज़माना ह़ज्जाज के बाद था वो निहायत आ़दिल और मुत्तबअ़े सुन्नत थे क्योंकि एक आध शख़्स़ के पैदा होने से उस ज़माने की फ़ज़ीलत अगले ज़माने पर लाज़िम नहीं आती।

7069. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐ़ब ने ख़बरदी, उन्हें ज़ुह्री ने। (दूसरी सनद इमाम बुख़ारी रह. ने कहा) और हमसे इस्माईल ने बयान किया, उनसे उनके भाई ने बयान किया, उनसे सुलैमान ने, उनसे मुह़म्मद बिन अ़तीक़ ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे हिन्द बिन्तुल ह़ारिष़ अल फ़रासिया ने कि नबी करीम (ﷺ) की ज़ौजा मुत्तहिरा उम्मे सलमा (रज़ि.) ने बयान किया कि एक रात रसूलुल्लाह (ﷺ) घबराये हुए बेदार हुए और फ़र्माया अल्लाह की ज़ात पाक

٧٠٦٩- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ ح. وحَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ حَدَّثَنِي أَخِي عَنْ سُلَيْمَانَ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ أَبِي عَتِيقٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ هِنْدَ بِنْتِ الْحَارِثِ الْفِرَاسِيَّةِ أَنَّ أُمَّ سَلَمَةَ زَوْجَ النَّبِيِّ ﷺ قَالَتْ: اسْتَيْقَظَ رَسُولُ

الله ﷺ لَيْلَةً فَزِعًا يَقُولُ: ((سُبْحَانَ الله مَاذَا أَنْزَلَ الله مِنَ الْخَزَائِنِ وَمَاذَا أُنْزِلَ مِنَ الْفِتَنِ، مَنْ يُوقِظُ صَوَاحِبَ الْحُجُرَاتِ يُرِيدُ أَزْوَاجَهُ لِكَيْ يُصَلِّينَ رُبَّ كَاسِيَةٍ فِي الدُّنْيَا عَارِيَةٌ فِي الآخِرَةِ)). [راجع: ١١٥]

है। अल्लाह तआला ने क्या ख़ज़ाने नाज़िल किये हैं और कितने फ़ित्ने उतारे हैं उन हुज्रे वालियों को कोई बेदार क्यूँ न करे आपकी मुराद अज़्वाजे मुतह्हरात से थी ताकि ये नमाज़ पढ़ें। बहुत सी दुनिया में कपड़े बारीक पहनने वालियाँ आख़िरत में नंगी होंगी। (राजेअ़ : 115)

ये वो होंगी जो दुनिया में हद से ज़्यादा बारीक कपड़े पहनती हैं जिसमें अंदर का ज़िस्म साफ़ नज़र आता है ऐसी औरतें क़यामत के दिन नंगी उठेंगी।

٧- باب قَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ: ((مَنْ حَمَلَ عَلَيْنَا السِّلاَحَ فَلَيْسَ مِنَّا)).

बाब 7 : नबी करीम (ﷺ) का ये फ़र्माना कि जो हम मुसलमानों पर हथियार उठाए वो हममें से नहीं है

या'नी मुसलमानों में से नहीं है।

٧٠٧٠- حَدَّثَنَا عَبْدُ الله بْنُ يُوسُفَ، أَخْبَرَنَا مَالِكٌ، عَنْ نَافِعٍ، عَنْ عَبْدِ الله بْنِ عُمَرَ رَضِيَ الله عَنْهُمَا أَنَّ رَسُولَ الله ﷺ قَالَ: ((مَنْ حَمَلَ عَلَيْنَا السِّلاَحَ فَلَيْسَ مِنَّا)). [راجع: ٦٨٧٤]

7070. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्हें इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें नाफ़ेअ़ ने और उन्हें अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया जिसने हम मुसलमानों पर हथियार उठाया वो हमसे नहीं है।

(राजेअ़ : 6874)

٧٠٧١- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلاَءِ، حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، عَنْ بُرَيْدٍ، عَنْ أَبِي بُرْدَةَ، عَنْ أَبِي مُوسَى عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((مَنْ حَمَلَ عَلَيْنَا السِّلاَحَ فَلَيْسَ مِنَّا)).

7071. हमसे मुहम्मद बिन अ़ला ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, उनसे बुरैद ने, उनसे अबू बुर्दा ने और उनसे अबू मूसा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जिसने हम मुसलमानों पर हथियार उठाया वो हमसे नहीं है।

बल्कि काफ़िर है अगर मुसलमान पर हथियार उठाना हलाल जानता है अगर दुरुस्त नहीं जानता तो हमारे तरीक़ सुन्नत पर नहीं है इसलिये क्योंकि एक अम्र हराम का इर्तिकाब करना है।

٧٠٧٢- حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، عَنْ مَعْمَرٍ، عَنْ هَمَّامٍ سَمِعْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((لاَ يُشِيرُ أَحَدُكُمْ عَلَى أَخِيهِ بِالسِّلاَحِ فَإِنَّهُ لاَ يَدْرِي لَعَلَّ الشَّيْطَانَ يَنْزِعُ فِي يَدَيْهِ، فَيَقَعُ فِي حُفْرَةٍ مِنَ النَّارِ)).

7072. हमसे मुहम्मद बिन यह्या ज़हली (या मुहम्मद बिन राफ़ेअ़ ने) बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने ख़बर दी, उन्हें मअ़मर ने, उन्हें हम्माम ने, उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, कोई शख़्स अपने किसी दीनी भाई की तरफ़ हथियार से इशारा न करे, क्योंकि वो नहीं जानता मुम्किन है शैतान उसे उसके हाथ से छुड़वा दे और फिर वो किसी मुसलमान को मारकर उसकी वजह से जहन्नम के गड्ढे में गिर पड़े।

तश्रीह : इस त़रह़ कि दुनिया से दीन के आ़लिम गुज़र जाएँगे और जो लोग बाक़ी रहेंगे वो हमातन दुनिया के कमाने में ग़र्क़ हो जाएँगे, उनको दीनी उ़लूम का बिलकुल शौक़ ही नहीं रहेगा। हमारे ज़माने में ये आष़ार शुरू हो गये हैं। हज़ारों-लाखों मुसलमान अपने बच्चों को सिर्फ़ अंग्रेज़ी ता'लीम दिलाते हैं, क़ुर्आन व ह़दीष़ से बिलकुल अनजान रखते हैं, इल्ला माशाअल्लाह। कुछ कुछ जो दीन के आ़लिम रह गये हैं। क़यामत के क़रीब ये भी न रहेंगे। इल्मे दीन को मह़ज़ बेकार समझकर उसकी तह़सील छोड़ देंगे क्योंकि अच्छे लोग क़यामत से पहले उठ जाएँगे। जैसे इमाम मुस्लिम ने अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत किया कि क़यामत के क़रीब अल्लाह तआ़ला यमन की त़रफ़ से एक हवा भेजेगा जो ह़रीर से ज़्यादा मुलायम होगी उसके लगते ही जिस शख़्स़ के दिल में रत्ती बराबर भी ईमान होगा वो उठ जाएगा। दूसरी ह़दीष़ में है क़यामत तब तक क़ायम न होगी जब तक ज़मीन में अल्लाह अल्लाह कहा जाएगा। अब ये ए'तिराज़ न होगा कि एक ह़दीष़ में है कि क़यामत तक मेरी उम्मत का एक गिरोह ह़क़ पर रहेगा तो इससे ये निकलता है कि क़यामत अच्छे लोगों पर भी क़ायम होगी क्योंकि इस ह़दीष़ में क़यामत तक से ये मुराद है कि उस हवा चलने तक जिसके लगते ही हर एक मोमिन मर जाएगा और कुफ़्फ़ार ही दुनिया में रह जाएँगे उन ही पर क़यामत आएगी, क़स्तलानी।

7073. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, कहा कि मैंने अ़म्र बिन दीनार से कहा अबू मुह़म्मद! तुमने जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) से सुना है कि उन्होंने बयान किया कि एक स़ाह़ब तीर लेकर मस्जिद में से गुज़रे तो उनसे रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि तीर की नोक का ख़्याल रखो। अ़म्र ने कहा हाँ मैंने सुना है। (राजेअ़ : 451)

٧٠٧٣- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، قَالَ : قُلْتُ لِعَمْرٍو يَا أَبَا مُحَمَّدٍ سَمِعْتَ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ يَقُولُ: مَرَّ رَجُلٌ بِسِهَامٍ فِي الْمَسْجِدِ فَقَالَ لَهُ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((أَمْسِكْ بِنِصَالِهَا)) قَالَ : نَعَمْ.
[راجع: ٤٥١]

7074. हमसे अबुन नोअ़मान ने बयान किया, कहा हमसे ह़म्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अ़म्र बिन दीनार ने और उनसे जाबिर (रज़ि.) ने कि एक स़ाह़ब मस्जिद में तीर लेकर गुज़रे जिनके फल बाहर को निकले हुए थे तो उन्हें हुक्म दिया गया कि उनकी नोक का ख़याल रखें कि वो किसी मुसलमान को ज़ख़्मी न कर दें। (राजेअ़ : 451)

٧٠٧٤- حَدَّثَنَا أَبُو النُّعْمَانِ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، عَنْ عَمْرِو بْنِ دِينَارٍ، عَنْ جَابِرٍ أَنَّ رَجُلاً مَرَّ فِي الْمَسْجِدِ بِأَسْهُمٍ قَدْ أَبْدَى نُصُولَهَا فَأُمِرَ أَنْ يَأْخُذَ بِنُصُولِهَا لاَ يَخْدِشُ مُسْلِمًا. [راجع: ٤٥١].

7075. हमसे मुह़म्मद बिन अ़ला ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, उनसे बुरैद ने, उनसे अबू बुर्दा ने और उनसे अबू मूसा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जब तुममें से कोई हमारी मस्जिद में या हमारे बाज़ार में गुज़रे और उसके पास तीर हों तो उसे चाहिये कि उसकी नोक का ख़याल रखे या आपने फ़र्माया कि अपने हाथ से उन्हें थामे रहे कहीं किसी मुसलमान को उससे कोई तकलीफ़ न पहुँचे।

(राजेअ़ : 452)

٧٠٧٥- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلاَءِ، حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، عَنْ بُرَيْدٍ عَنْ أَبِي بُرْدَةَ، عَنْ أَبِي مُوسَى عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((إِذَا مَرَّ أَحَدُكُمْ فِي مَسْجِدِنَا أَوْ فِي سُوقِنَا وَمَعَهُ نَبْلٌ فَلْيُمْسِكْ عَلَى نِصَالِهَا، أَوْ قَالَ فَلْيَقْبِضْ بِكَفِّهِ أَنْ يُصِيبَ أَحَدًا مِنَ الْمُسْلِمِينَ مِنْهَا شَيْءٌ)).[راجع: ٤٥٢]

तश्रीह : उन तमाम अहादीष से ज़ाहिर है कि रसूले करीम (ﷺ) नाहक़ ख़ूँरेज़ी को कितनी बुरी नज़र से देखते हैं कि क़दम क़दम पर इस बारे में इंतिहाई एहतियात को मल्हूज़ ख़ातिर रखने की हिदायत फ़र्मा रहे हैं। मुसलमानों ने भी जिस तरह कुछ अहकाम को मल्हूज़ रखा है, काश! इन अहादीष को भी याद रखते और बाहमी क़त्ल व ग़ारत से परहेज़ करते तो मिल्ली हालात इस क़दर ख़राब न होते मगर सद अफ़सोस कि आज मुसलमान इन ख़ानाजंगियों के नतीजे में सकड़ों टोलियों मे तक़्सीम होकर अपनी ताक़त तार तार कर चुका है। काश! ये लफ़्ज़ किसी भी दिल वाले भाई के दिल में उतर सकें।

बाब 8 : नबी करीम (ﷺ) का ये फ़र्माना कि मेरे बाद एक दूसरे की गर्दन मारकर काफ़िर न बन जाना।

٨- باب قَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ: ((لاَ تَرْجِعُوا بَعْدِي كُفَّارًا يَضْرِبُ بَعْضُكُمْ رِقَابَ بَعْضٍ))

7076. हमसे उमर बिन हफ़्स ने बयान किया, कहा मुझसे मेरे वालिद ने बयान किया, कहा हमसे आ'मश ने बयान किया, उनसे शक़ीक़ ने बयान किया, कहा कि अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया मुसलमान को गाली देना फ़िस्क़ है और उसको क़त्ल करना कुफ़्र है। (राजेअ : 48)

٧٠٧٦- حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصٍ، حَدَّثَنِي أَبِي، حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، حَدَّثَنَا شَقِيقٌ قَالَ: قَالَ عَبْدُ اللهِ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((سِبَابُ الْمُسْلِمِ فُسُوقٌ، وَقِتَالُهُ كُفْرٌ)). [راجع: ٤٨]

तश्रीह : या'नी बिला वजह शरई लड़ना कुफ़्र है या'नी काफ़िरों का सा फ़ेअल है जैसे काफ़िर मुसलमानों से नाहक़ लड़ते हैं ऐसे ही उस शख़्स ने भी किया गोया काफ़िरों की तरह अमल किया। उसका ये मतलब नहीं है कि जो मुसलमान किसी मुसलमान से लड़ा वो काफ़िर हो गया जैसा कि ख़ारजियों का मज़हब है इसलिये कि अल्लाह ने क़ुर्आन में फ़र्माया, **व इन ताइफ़तानि मिनल मोमिनीन इक़्ततलू** (अल हुजुरात : 9) और दोनों गिरोहों को मोमिन क़रार दिया और सहाबा ने आपस में लड़ाइयाँ कीं गो एक तरफ़ वाले ख़ता-ए-इज्तिहादी में थे मगर किसी ने उनको काफ़िर नहीं कहा। ख़ुद हज़रत अली (रज़ि.) ने हज़रत मुआविया (रज़ि.) वालों के हक़ में फ़र्माया, **इख़्वानुना बग़ौ अलैना** ख़ारजी मरदूद मुसलमानों की जमाअत से अलग होकर सारे मुसलमानों को काफ़िर क़रार देने लगे। बस अपने ही तईं मुसलमान समझे और फिर ये लुत्फ़ कि उन ख़ारजियों ही मरदूदों ने मुसलमानों के सरदार जनाब अली मुर्तज़ा (रज़ि.) को क़त्ल किया। हज़रत हुसैन (रज़ि.) को भी उन्होंने ही क़त्ल किया। हज़रत आइशा और हज़रत उष्मान और बड़े-बड़े सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम को काफ़िर क़रार दिया। कहो जब ये लोग काफ़िर हुए तो तुमको इस्लाम कहाँ से नसीब हुआ?

7077. हमसे हज्जाज बिन मिन्हाल ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, कहा मुझको वाक़िद ने ख़बर दी, उन्हें उनके वालिद ने और उन्हें इब्ने उमर (रज़ि.) ने, उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से सुना, आपने फ़र्माया कि मेरे बाद कुफ़्र की तरफ़ न लौट जाना कि एक दूसरे की गर्दन मारने लगो। (राजेअ : 1742)

٧٠٧٧- حَدَّثَنَا حَجَّاجُ بْنُ مِنْهَالٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، أَخْبَرَنِي وَاقِدٌ، عَنْ أَبِيهِ عَنِ ابْنِ عُمَرَ أَنَّهُ سَمِعَ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((لاَ تَرْجِعُوا بَعْدِي كُفَّارًا يَضْرِبُ بَعْضُكُمْ رِقَابَ بَعْضٍ)). [راجع: ١٧٤٢]

7078. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या क़त्तान ने बयान किया, कहा हमसे क़ुर्रह बिन ख़ालिद ने बयान

٧٠٧٨- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا يَحْيَى، حَدَّثَنَا قُرَّةُ بْنُ خَالِدٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ سِيرِينَ،

عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي بَكْرَةَ، عَنْ أَبِي بَكْرَةَ، وَعَنْ رَجُلٍ آخَرَ هُوَ أَفْضَلُ فِي نَفْسِي مِنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي بَكْرَةَ، عَنْ أَبِي بَكْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خَطَبَ النَّاسَ فَقَالَ: ((أَلاَ تَدْرُونَ أَيُّ يَوْمٍ هَذَا؟)) قَالُوا: اللهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ قَالَ: حَتَّى ظَنَنَّا أَنَّهُ سَيُسَمِّيهِ بِغَيْرِ اسْمِهِ فَقَالَ: ((أَلَيْسَ بِيَوْمِ النَّحْرِ)) قُلْنَا: بَلَى. يَا رَسُولَ اللهِ قَالَ: ((أَيُّ بَلَدٍ هَذَا؟)) أَلَيْسَتْ بِالْبَلْدَةِ)) قُلْنَا: بَلَى يَا رَسُولَ اللهِ قَالَ: ((فَإِنَّ دِمَاءَكُمْ وَأَمْوَالَكُمْ وَأَعْرَاضَكُمْ وَأَبْشَارَكُمْ عَلَيْكُمْ حَرَامٌ، كَحُرْمَةِ يَوْمِكُمْ هَذَا فِي شَهْرِكُمْ هَذَا فِي بَلَدِكُمْ هَذَا أَلاَ هَلْ بَلَّغْتُ؟)) قُلْنَا: نَعَمْ. قَالَ: ((اللَّهُمَّ اشْهَدْ، فَلْيُبَلِّغِ الشَّاهِدُ الْغَائِبَ، فَإِنَّهُ رُبَّ مُبَلِّغٍ يُبَلِّغُهُ مَنْ هُوَ أَوْعَى لَهُ))، فَكَانَ كَذَلِكَ قَالَ: ((لاَ تَرْجِعُوا بَعْدِي كُفَّارًا يَضْرِبُ بَعْضُكُمْ رِقَابَ بَعْضٍ)) فَلَمَّا كَانَ يَوْمُ حُرِّقَ ابْنُ الْحَضْرَمِيِّ حِينَ حَرَّقَهُ جَارِيَةُ بْنُ قُدَامَةَ قَالَ: أَشْرِفُوا عَلَى أَبِي بَكْرَةَ فَقَالُوا: هَذَا أَبُو بَكْرَةَ يَرَاكَ قَالَ عَبْدُ الرَّحْمَنِ: فَحَدَّثَتْنِي أُمِّي عَنْ أَبِي بَكْرَةَ أَنَّهُ قَالَ: لَوْ دَخَلُوا عَلَيَّ مَا بَهَشْتُ بِقَصَبَةٍ.

[راجع: ٦٧]

किया, कहा हमसे इब्ने सीरीन ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबीबक्र ने बयान किया और एक दूसरे के शख़्स़ (हुमैद बिन अ़ब्दुर्रह़मान) से भी सुना जो मेरी नज़र में अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबीबक्र से अच्छे हैं और उनसे अबूबक्र (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने लोगों को यौमुन्नह़र में ख़ुत्बा दिया और फ़र्माया तुम्हें मा'लूम है ये कौनसा दिन है? लोगों ने कहा कि अल्लाह और उसके रसूल को ज़्यादा इल्म है। बयान किया कि (उसके बाद आँह़ज़रत ﷺ की खामोशी से) हम ये समझे कि आप उसका कोई और नाम रखेंगे। लेकिन आपने फ़र्माया क्या ये क़ुर्बानी का दिन (यौमुन्नह़र) नहीं है? हमने अ़र्ज़ किया क्यूँ नहीं या रसूलल्लाह! आपने फिर पूछा ये कौनसा शहर है? क्या ये बलद (मक्का मुकर्रमा) नहीं है? हमने अ़र्ज़ किया क्यूँ नहीं या रसूलल्लाह! आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया फिर तुम्हारा ख़ून, तुम्हारे माल, तुम्हारी इ़ज़्ज़त और तुम्हारी खाल तुम पर इसी त़रह़ हुर्मत वाले हैं जिस त़रह़ इस दिन की हुर्मत इस महीने और इस शहर में है। क्या मैंने पहुँचा दिया? हमने कहा जी हाँ। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया ऐ अल्लाह! गवाह रहना। पस मेरा ये पैग़ाम मौजूद लोग ग़ैर मौजूद लोगों को पहुँचा दें क्योंकि बहुत से पहुँचाने वाले इस पैग़ाम को उस तक पहुँचाएँगे जो इसको ज़्यादा मह़फ़ूज़ रखने वाला होगा। चुनाँचे ऐसा ही हुआ और आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया मेरे बाद काफ़िर न हो जाना कि कुछ कुछ की गर्दन मारने लगो। फिर जब वो दिन आया जब अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन ह़ज़रमी को जारिया बिन क़ुदामा ने एक मकान में घेरकर जला दिया तो जारिया ने अपने लश्कर वालों से कहा ज़रा अबूबक्र को तो झाँको वो किस ख़्याल में है। उन्होंने कहा ये अबूबक्र मौजूद हैं तुमको देख रहे हैं। अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबीबक्र कहते हैं मुझसे मेरी वालिदा हाला बिन्ते ग़लीज़ ने कहा कि अबूबक्र ने कहा अगर ये लोग (तीन जारिया के लश्कर वाले) मेरे घर में भी घुस आएं और मुझको मारनें लगें तो भी मैं उन पर एक बांस की छड़ी नहीं चलाऊँगा। (राजेअ़ : 67)

तश्रीह़ : चह जा ये कि हथियार से लड़ूँ क्योंकि अबूबक्र (रज़ि.) आँह़ज़रत (ﷺ) की ये ह़दीष़ सुन चुके थे कि मुसलमान को मारना उससे लड़ना कुफ़्र है। अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र ह़ज़रमी का क़िस्सा ये है कि वो मुआ़विया (रज़ि.) का

भेजा हुआ बस़रा में आया था। उसका मत़लब ये था कि बस़रा वालों को भी अग़वा करके अ़ली (रज़ि.) का मुख़ालिफ़ करा दे। गोया मुआ़विया (रज़ि) की ये सियासी चाल थी। जब अ़ली (रज़ि.) ने ये सुना तो जारिया इब्ने क़ुदामा को उसकी गिरफ़्तारी के लिये रवाना किया। ह़ज़रमी एक मकान में छुप गया। जारिया ने उसको घेर लिया और मकान में आग लगा दी और ह़ज़रमी मकान समेत जलकर खाक हो गया। ये वाक़िया सन 38 हिजरी में हुआ और इब्ने अबी शैबा और त़बरी ने बयान किया निकाला कि अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) जो अ़ली (रज़ि .) की त़रफ़ से बस़रा के ह़ाकिम थे वो वहाँ से निकले और ज़ियाद बिन सुमय्या को अपना ख़लीफ़ा कर गये। उस वक़्त मुआ़विया (रज़ि) ने मौक़ा पाकर अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र ह़ज़रमी को भेजा कि जाकर बस़रा पर क़ब्ज़ा करे, वो बनी तमीम के मुह़ल्ले में उतरा और उ़ष्मान (रज़ि .) की त़रफ़ जो लोग थे वो उसके शरीक हो गये। ज़ियाद ने ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) को इस वाक़िये की ख़बर की और मदद चाही। ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) ने पहले अअ़य्यिन बिन उ़ययना एक शख़्स़ को रवाना किया। लेकिन वो दग़ा से मार डाला गया फिर जारिया बिन क़ुदामा को भेजा, उन्होंने ह़ज़रमी को उसके चालीस या सत्तर साथियों समेत एक मकान में घेर लिया और उसमें आग लगा दी। ह़ज़रमी और उसके साथ सब जलकर खाक हो गये। **(इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राज़िऊन)**

7079. हमसे अह़मद बिन अश्काब ने बयान किया, उन्होने कहा हमसे मुह़म्मद बिन फ़ुज़ैल ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने बयान किया, उनसे इक्रिमा ने बयान किया और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, मेरे बाद काफ़िर न हो जाना कि तुममें कुछ कुछ की गर्दन मारने लगे। (राजेअ़ : 1739)

٧٠٧٩- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ إِشْكَابٍ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ فُضَيْلٍ، عَنْ أَبِيهِ عَنْ عِكْرِمَةَ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لاَ تَرْتَدُّوا بَعْدِي كُفَّارًا يَضْرِبُ بَعْضُكُمْ رِقَابَ بَعْضٍ)). [راجع: ١٧٣٩]

मंशा-ए-नबवी ये था कि आपस में लड़ना झगड़ना मुसलमानों का शैवा नहीं है ये काफ़िरों का त़रीक़ा है पस तुम हर्गिज़ ये शैवा इख़्तियार न करना मगर अफ़सोस कि मुसलमान बहुत जल्द इस पैग़ामे रिसालत को भूल गये। **इन्नालिल्लाह व अस्फ़ा**

7080. हमसे सुलैमान बिन ह़र्ब ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अ़ली बिन मुदरिक ने बयान किया, कहा मैंने अबू ज़रआ बिन अ़मर बिन जरीर से सुना, उनसे उनके दादा जरीर (रज़ि .) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मुझसे ह़ज्जतुल वदाअ़ के मौक़े पर फ़र्माया लोगों को ख़ामोश कर दो फिर आपने फ़र्माया, मेरे बाद काफ़िर न हो जाना कि तुम एक दूसरे की गर्दन मारने लग जाओ। (राजेअ़ : 121)

٧٠٨٠- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ عَلِيِّ بْنِ مُدْرِكٍ سَمِعْتُ أَبَا زُرْعَةَ بْنَ عَمْرِو بْنِ جَرِيرٍ، عَنْ جَدِّهِ جَرِيرٍ قَالَ: قَالَ لِي رَسُولُ اللهِ ﷺ فِي حَجَّةِ الْوَدَاعِ : ((اسْتَنْصِتِ النَّاسَ)) ثُمَّ قَالَ: ((لاَ تَرْجِعُوا بَعْدِي كُفَّارًا يَضْرِبُ بَعْضُكُمْ رِقَابَ بَعْضٍ)). [راجع: ١٢١]

तश्रीह़ : क़ुरूने ख़ैर में इन अह़ादीष़ नबवी को भुला दिया गया और जो भी ख़ानाजंगियाँ हुई हैं वो क़यामत तक आने वाले मुसलमानों के लिए बेह़द अफ़सोसनाक हैं। आज चौदह्वीं स़दी का ख़ात्मा है (इस वक़्त पन्द्रहवीं स़दी चल रही है), मगर उन आपसी खानाजंगियों की याद ताज़ा है बाद में तक़्लीदी मज़ाहिब ने भी आपसी ख़ानाजंगी को बहुत तूल दिया। यहाँ तक कि ख़ान-ए-का'बा को चार ह़िस्सों में तक़्सीम कर लिया गया और अभी तक ये झगड़े बाक़ी हैं। अल्लाह उम्मत को नेक समझ अ़ता करे, आमीन या रब्बल आ़लमीन।

बाब 9 : आँह़ज़रत (ﷺ) का ये फ़र्माना कि एक ऐसा फ़ित्ना

٩- باب تَكُونُ فِتْنَةٌ الْقَاعِدُ فِيهَا

उठेगा जिससे बैठने वाला खड़े रहने वाले से बेहतर होगा

خَيْرٌ مِنَ الْقَائِمِ

7081. हमसे मुहम्मद बिन उ़बैदुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने, उनसे अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रहमान ने कहा कि मुझसे स़ालेह बिन कैसान ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे सईद बिन मुसय्यब ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया अन्क़रीब ऐसे फ़ित्ने बरपा होंगे जिनमें बैठने वाला खड़े रहने वाले से बेहतर होगा और खड़ा रहने वाला चलने वाले से बेहतर होगा और चलने वाला उनमें दौड़ने वाले से बेहतर होगा, जो दूर से उनकी त़रफ़ झांककर भी देखेगा तो वो उनको भी समेट लेंगे। उस वक़्त जिस किसी को कोई पनाह की जगह मिल जाए या बचाव का मक़ाम मिल सके वो उसमें चला जाए।

(राजेअ़ : 3601)

٧٠٨١- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عُبَيْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ، عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ إِبْرَاهِيمُ: وَحَدَّثَنِي صَالِحُ بْنُ كَيْسَانَ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ : قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((سَتَكُونُ فِتَنٌ الْقَاعِدُ فِيهَا خَيْرٌ مِنَ الْقَائِمِ، وَالْقَائِمُ فِيهَا خَيْرٌ مِنَ الْمَاشِي، وَالْمَاشِي فِيهَا خَيْرٌ مِنَ السَّاعِي مَنْ تَشَرَّفَ لَهَا تَسْتَشْرِفْهُ فَمَنْ وَجَدَ فِيهَا مَلْجَأً أَوْ مَعَاذًا فَلْيَعُذْ بِهِ)).

[راجع: ٣٦٠١]

तश्रीह : ताकि उन फ़ित्नों से महफ़ूज़ रहे। मुराद वो फ़ित्ना है जो मुसलमानों में आपस में पैदा हो और ये न मा'लूम हो सके कि ह़क़ किस त़रफ़ है, ऐसे वक़्त में गोशानशीनी बेहतर है। कुछ ने कहा उस शहर से हिजरत कर जाए जहाँ ऐसा फ़ित्ना वाक़ेअ़ हो अगर वो आफ़त में मुब्तला हो जाए और कोई उसको मारने आए तो स़ब्र करे। मारा जाए लेकिन मुसलमान पर हाथ न उठाए। कुछ ने कहा अपनी जान व माल को बचा सकता है। जुम्हूर उ़लमा का यही क़ौल है कि जब कोई गिरोह इमाम से बाग़ी हो जाए तो इमाम के साथ होकर उससे लड़ना जाइज़ है जैसे ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) की ख़िलाफ़त में हुआ और अक्स़र अकाबिरे स़ह़ाबा ने उनके साथ होकर मुआविया (रज़ि.) के बाग़ी गिरोह का मुक़ाबला किया और यही ह़क़ है मगर कुछ स़ह़ाबा जैसे सअ़द और इब्ने उ़मर और अबूबक्र (रज़ि.) दोनों फ़रीक़ से अलग होकर घर में बैठे रहे।

7082. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुहरी ने, उन्हें अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रहमान ने ख़बर दी और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया ऐसे फ़ित्ने बरपा होंगे कि उनमें बैठने वाला खड़े रहने वाले से बेहतर होगा और खड़ा रहने वाला चलने वाले से बेहतर होगा और चलने वाला दौड़ने वाले से बेहतर होगा। अगर कोई उनकी त़रफ़ दूर से भी झांककर देखेगा तो वो उसे भी समेट लेंगे ऐसे वक़्त जो कोई उससे कोई पनाह की जगह पा ले उसे उसकी पनाह ले लेनी चाहिये।

٧٠٨٢- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ أَخْبَرَنِي أَبُو سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((سَتَكُونُ فِتَنٌ الْقَاعِدُ فِيهَا خَيْرٌ مِنَ الْقَائِمِ، وَالْقَائِمُ خَيْرٌ مِنَ الْمَاشِي، وَالْمَاشِي فِيهَا خَيْرٌ مِنَ السَّاعِي، مَنْ تَشَرَّفَ لَهَا تَسْتَشْرِفْهُ فَمَنْ وَجَدَ فِيهَا مَلْجَأً أَوْ مَعَاذًا فَلْيَعُذْ بِهِ)).

(राजेअ : 3601)

[راجع: ٣٦٠١]

बाब 10 : जब दो मुसलमान अपनी तलवारें लेकर एक दूसरे से भिड़ जाएँ तो उनके लिये क्या हुक्म है?

١٠- باب إِذَا الْتَقَى الْمُسْلِمَانِ بِسَيْفَيْهِمَا

7083. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुल वह्हाब ने बयान किया, कहा हमसे ह़म्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे एक शख़्स ने जिसका नाम नहीं बताया, उनसे इमाम ह़सन बस़री (रह़.) ने बयान किया कि मैं एक मर्तबा बाहमी फ़सादात के दिनों में अपने हथियार लगाकर निकला तो अबूबक्र (रज़ि.) से रास्ते में मुलाक़ात हो गई। उन्होंने पूछा कहाँ का जाने का इरादा है? मैंने कहा कि मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) के चचा के लड़के की (जंग जमल व सिफ़्फ़ीन में) मदद करना चाहता हूँ। उन्होंने कहा कि लौट जाओ। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया है कि जब दा मुसलमान अपनी तलवारों को लेकर आमने सामने मुक़ाबला पर आ जाएँ तो दोनों जहन्नमी हैं। पूछा गया ये तो क़ातिल था, मक़्तूल ने क्या किया (कि वो भी नारी हो गया) फ़र्माया कि वो भी अपने मुक़ाबिल को क़त्ल करने का इरादा किये हुए था। ह़म्माद बिन ज़ैद ने कहा कि फिर मैंने ये ह़दीष़ अय्यूब और यूनुस बिन उ़बैद से ज़िक्र की, मेरा मक़्सद था कि ये दोनों भी मुझसे ये ह़दीष़ बयान करें, उन दोनों ने कहा कि इस ह़दीष़ की रिवायत ह़सन बस़री (रह़.) ने अह़नफ़ बिन क़ैस से और उन्होंने अबूबक्र (रज़ि.) से की। (राजेअ : 31)

٧٠٨٣- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ الْوَهَّابِ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ عَنْ رَجُلٍ لَمْ يُسَمِّهِ، عَنِ الْحَسَنِ قَالَ: خَرَجْتُ بِسَلاَحِي لَيَالِي الْفِتْنَةِ فَاسْتَقْبَلَنِي أَبُو بَكْرَةَ فَقَالَ : أَيْنَ تُرِيدُ؟ قُلْتُ : أُرِيدُ نُصْرَةَ ابْنِ عَمِّ رَسُولِ اللهِ ﷺ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِذَا تَوَاجَهَ الْمُسْلِمَانِ بِسَيْفَيْهِمَا فَكِلاَهُمَا مِنْ أَهْلِ النَّارِ)) قِيلَ: فَهَذَا الْقَاتِلُ فَمَا بَالُ الْمَقْتُولِ؟ قَالَ: ((إِنَّهُ أَرَادَ قَتْلَ صَاحِبِهِ)) قَالَ حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ: فَذَكَرْتُ هَذَا الْحَدِيثَ لأَيُّوبَ وَيُونُسَ بْنِ عُبَيْدٍ وَأَنَا أُرِيدُ أَنْ يُحَدِّثَانِي بِهِ فَقَالاَ: إِنَّمَا رَوَى هَذَا الْحَدِيثَ الْحَسَنُ عَنِ الأَحْنَفِ بْنِ قَيْسٍ عَنْ أَبِي بَكْرَةَ. [راجع: ٣١]

हमसे सुलैमान बिन ह़र्ब ने बयान किया, कहा हमसे ह़म्माद बिन ज़ैद ने यही ह़दीष़ बयान की और मुअम्मिल बिन हिशाम ने कहा कि हमसे ह़म्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, कहा हमसे अय्यूब, यूनुस, हिशाम और मुअ़ल्ला बिन ज़ियाद ने इमाम ह़सन बस़री से बयान किया, उनसे अह़नफ़ बिन क़ैस और उनसे अबूबक्र (रज़ि.) ने और उनसे नबी करीम (ﷺ) ने और इसकी रिवायत मअ़मर ने भी अय्यूब से की है और इसकी रिवायत बक्कार बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ ने अपने बाप से की और उनसे अबूबक्र (रज़ि.) ने और गुन्दर ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे मंसूर ने, उनसे रिब्ई बिन ह़िराश ने, उनसे अबूबक्र (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से। और सुफ़यान ष़ौरी ने भी इस ह़दीष़ को मंसूर बिन मुअ़तमिर से

- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ بِهَذَا وَقَالَ مُؤَمَّلٌ : حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، حَدَّثَنَا أَيُّوبُ وَيُونُسُ وَهِشَامٌ وَمُعَلَّى بْنُ زِيَادٍ عَنِ الْحَسَنِ، عَنِ الأَحْنَفِ، عَنْ أَبِي بَكْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ. وَرَوَاهُ مَعْمَرٌ، عَنْ أَيُّوبَ وَرَوَاهُ بَكَّارُ بْنُ عَبْدِ الْعَزِيزِ، عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي بَكْرَةَ. وَقَالَ غُنْدَرٌ : حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ مَنْصُورٍ، عَنْ رِبْعِيِّ بْنِ حِرَاشٍ، عَنْ أَبِي بَكْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ وَلَمْ يَرْفَعْهُ

सुफ़्यानु अन मनसूर. رिवायत किया, फिर ये रिवायत मर्फ़ूअ नहीं है।

سُفْيَانُ عَنْ مَنْصُورٍ.

तश्रीह: बल्कि ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) का क़ौल है जो निसाई में यूँ है, **इज़ा ह़मलर्रजुलानि तुसल्लिमानिस्सलाह अहदुहुमा अलल आख़र फ़आवाहुमा अ़ला अशरफ़ि जहन्नम फ़इज़ा क़तल अहदुहुमा अल आख़र हुमा फ़िन्नार** (तर्जुमा वही है जो मज़्कूर हुआ) हथियार लेकर निकलने वाले अह़नफ़ बिन क़ैस थे न कि ह़ज़रत इमाम ह़सन बस़री। मत़लब ये कि अ़म्र बिन उ़बैद ने ग़लती की जो अह़नफ़ का नाम छोड़ दिया। ये फ़ित्नों का सिलसिला आजकल भी जारी है जो जुम्हूरी दौर की नामोनिहाद आज़ादी में इलेक्शन के दौरान देखा जा सकता है। सनद में जिनका नाम नहीं लिया वो बक़ौल कुछ अ़म्र बिन उ़बैद था। ऐसे लाक़ानूनी दौर में अपनी इ़ज़्ज़त और जान की ह़िफ़ाज़त का यही रास्ता बेहतर है जो ह़दीष़ में बतलाया गया है कि सब मुतफ़र्रिक़ टोलियों से बिलकुल अलग होकर वक़्त गुज़ारें किसी बाहमी झगड़ने वाली टोली में शिर्कत न करें ख़्वाह नतीजा में कितनी ही तकलीफ़ों का सामना हो।

बाब 11 : जब किसी शख़्स़ की इमामत पर ए'तिमाद न हो तो लोग क्या करें?

١١- باب كَيْفَ الأَمْرُ إِذَا لَمْ تَكُنْ جَمَاعَةٌ

7084. हमसे मुह़म्मद बिन मुष़न्ना ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे वलीद बिन मुस्लिम ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इब्ने जाबिर ने बयान किया, उनसे बिस्र बिन उ़बैदुल्लाह ह़ज़रमी ने बयान किया, उन्होंने अबू इदरीस ख़ौलानी से सुना, उन्होंने हुज़ैफ़ह बिन यमान (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि लोग रसूलुल्लाह (ﷺ) से ख़ैर के बारे में पूछा करते थे लेकिन मैं शर्र के बारे में पूछता था। इस डर से कि कहीं मेरी ज़िंदगी में ही शर्र न पैदा हो जाए। मैंने पूछा या रसूलल्लाह! हम जाहिलियत और शर्र के दौर में थे फिर अल्लाह तआला ने हमें इस ख़ैर से नवाज़ा तो क्या उस ख़ैर के बाद फिर शर्र का ज़माना होगा? आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि हाँ। मैंने पूछा क्या उस शर्र के बाद फिर ख़ैर का ज़माना आएगा? आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि हाँ लेकिन उस ख़ैर में कमज़ोरी होगी। मैंने पूछा कि कमज़ोरी क्या होगी? फ़र्माया कि कुछ लोग होंगे जो मेरे त़रीक़े के ख़िलाफ़ चलेंगे, उनकी कुछ बातें अच्छी होंगी लेकिन कुछ में तुम बुराई देखोगे। मैंने पूछा क्या फिर दौरे ख़ैर के बाद दौर शर्र आएगा? फ़र्माया कि हाँ जहन्नम की त़रफ़ बुलाने वाले जहन्नम के दरवाज़ों पर खड़े होंगे, जो उनकी बात मान लेगा वो उसमें उन्हें झटक देंगे। मैंने कहा या रसूलल्लाह! उनकी कुछ स़िफ़त बयान कीजिए। फ़र्माया कि वो हमारे ही जैसे होंगे और हमारी ही ज़ुबान अ़रबी बोलेंगे। मैंने पूछा फिर अगर मैंने वो ज़माना पाया तो आप मुझे उनके बारे में क्या

٧٠٨٤- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا الْوَلِيدُ بْنُ مُسْلِمٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ جَابِرٍ، حَدَّثَنِي بُسْرُ بْنُ عُبَيْدِ اللهِ الْحَضْرَمِيُّ أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا إِدْرِيسَ الْخَوْلاَنِيَّ أَنَّهُ سَمِعَ حُذَيْفَةَ بْنَ الْيَمَانِ يَقُولُ: كَانَ النَّاسُ يَسْأَلُونَ رَسُولَ اللهِ ﷺ عَنِ الْخَيْرِ وَكُنْتُ أَسْأَلُهُ عَنِ الشَّرِّ مَخَافَةَ أَنْ يُدْرِكَنِي فَقُلْتُ يَا رَسُولَ اللهِ إِنَّا كُنَّا فِي جَاهِلِيَّةٍ وَشَرٍّ، فَجَاءَنَا اللهُ بِهَذَا الْخَيْرِ فَهَلْ بَعْدَ هَذَا الْخَيْرِ مِنْ شَرٍّ؟ قَالَ : ((نَعَمْ)). قُلْتُ: هَلْ بَعْدَ ذَلِكَ الشَّرِّ مِنْ خَيْرٍ؟ قَالَ: ((نَعَمْ وَفِيهِ دَخَنٌ)) قُلْتُ: وَمَا دَخَنُهُ؟ قَالَ: ((قَوْمٌ يَهْدُونَ بِغَيْرِ هَدْيِي، تَعْرِفُ مِنْهُمْ وَتُنْكِرُ)) قُلْتُ : فَهَلْ بَعْدَ ذَلِكَ الْخَيْرِ مِنْ شَرٍّ؟ قَالَ : ((نَعَمْ دُعَاةٌ عَلَى أَبْوَابِ جَهَنَّمَ مَنْ أَجَابَهُمْ إِلَيْهَا قَذَفُوهُ فِيهَا)) قُلْتُ يَا رَسُولَ اللهِ صِفْهُمْ لَنَا؟ قَالَ: ((هُمْ مِنْ

हुक्म देते हैं? फ़र्माया कि मुसलमानों की जमाअ़त और उनके इमाम के साथ रहना। मैंने कहा कि अगर मुसलमानों की जमाअ़त न हो और न उनका कोई इमाम हो? फ़र्माया कि फिर उन तमाम लोगों से अलग होकर ख़्वाह तुम्हें जंगल में जाकर पेड़ों की जड़ें चबानी पड़ें यहाँ तक कि इसी हालत में तुम्हारी मौत आ जाए। (राजेअ़ : 3606)

جِلْدَتِنَا، وَيَتَكَلَّمُونَ بِأَلْسِنَتِنَا)) قُلْتُ : فَمَا تَأْمُرُنِي إِنْ أَدْرَكَنِي ذَلِكَ؟ قَالَ: ((تَلْزَمُ جَمَاعَةَ الْمُسْلِمِينَ وَإِمَامَهُمْ)) قُلْتُ: ((فَإِنْ لَمْ يَكُنْ لَهُمْ جَمَاعَةٌ وَلاَ إِمَامٌ؟)) قَالَ: ((فَاعْتَزِلْ تِلْكَ الْفِرَقَ كُلَّهَا، وَلَوْ أَنْ تَعَضَّ بِأَصْلِ شَجَرَةٍ حَتَّى يُدْرِكَكَ الْمَوْتُ وَأَنْتَ عَلَى ذَلِكَ)). [راجع: ٣٦٠٦]

तश्रीह : (1) मुहद्दिषीन ने कहा कि पहली बुराई से वो फ़ित्ने मुराद हैं जो हज़रत उ़ष्मान (रज़ि.) के बाद हुए और दूसरी भलाई से जो उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ का ज़माना था, वो मुराद है और उनके बाद का उस ज़माने में कोई ख़लीफ़ा आदिल होता मुत्तबअ़े सुन्नत, कोई ज़ालिम होता बिदअ़ती जैसे ख़ुलफ़ा-ए-अ़ब्बासिया में मामून रशीद बड़ा ज़ालिम गुज़रा, फिर मुतवक्किल अ़लल्लाह अच्छा था उसने इमाम अहमद को क़ैद से ख़ुलासी दी और मुअ़तज़ला की ख़ूब सरकूबी की। कुछ ने कहा पहली बुराई से हज़रत उ़ष्मान (रज़ि.) का क़त्ल, दूसरी भलाई से हज़रत अ़ली (रज़ि.) का ज़माना मुराद है और धुएँ से ख़ारजियों और राफ़्ज़ियों के पैदा होने की त़रफ़ इशारा है और दूसरी बुराई से बनी उमय्या का ज़माना मुराद है। जब हज़रत अ़ली (रज़ि.) को बरसरे मिम्बर बुरा कहा जाता है, मैं (वहीदुज़्ज़माँ) कहता हूँ आँहज़रत (ﷺ) की मुराद इस हदीष़ से वल्लाहु आलम ये है कि एक ज़माने तक तो जो नक़्शा मेरे ज़माने में है यही चलता रहेगा और भलाई क़ायम रहेगी या'नी किताबो सुन्नत की पैरवी करते रहेंगे जैसे सन 400 हिजरी तक रहा उसके बाद बुराई पैदा होगी या'नी लोग तक़्लीद शख़्सी में गिरफ़्तार होकर किताबो सुन्नत से बिलकुल मुँह मोड़ लेंगे बल्कि क़ुर्आनो हदीष़ की तह़सील भी छोड़ देंगे। क़ुर्आनो हदीष़ के बदले दूसरी किताबें पढ़ने लगेंगे। दीन के मसाइल क़ुर्आनो हदीष़ के बजाय उन किताबों से निकाले जाएँगे।

(2) या'नी उनकी जमाअ़त में जाकर शरीक होना, उनकी ता'दाद बढ़ाना मना है। अबू यअ़ला ने इब्ने मसऊ़द (रज़ि.) से मर्फ़ूअ़न रिवायत की कि जो शख़्स किसी क़ौम की जमाअ़त को बढ़ाए वो उन ही में से है और जो शख़्स किसी क़ौम के कामों से राज़ी हो वो गोया ख़ुद वो काम कर रहा है। इस हदीष़ से अहले बिदआ़त और फ़िस्क़ की मज्लिसों में शरीक और उनका शुमार बढ़ाने की मुमानअ़त निकलती है गोया आदमी उनके ए'तिक़ाद और अ़मल में शरीक न हो जो कोई हाल क़ाल चराग़ा उ़र्स गाने बजाने की महफ़िल में शरीक हो वो भी बिदअ़तियों में गिना जाएगा गो उन कामों को अच्छा न जानता हो। (अज़ वहीदुज़्ज़माँ)

बाब 12 : मुफ़्सिदों और ज़ालिमों की जमाअ़त को बढ़ाना मना है

١٢- باب مَنْ كَرِهَ أَنْ يُكَثِّرَ سَوَادَ الْفِتَنِ وَالظُّلْمِ

फ़सादी और ज़ालिम लोगों की हिमायत करना उनकी ता'दाद में इज़ाफ़ा करना सच्चे मुसलमान के लिये किसी त़रह जाइज़ नहीं है, तश्रीह नम्बर 2 मज़्कूरा बाला इससे मुत्तस़ल जानकर मुतालअ़ा कीजिए।

7085. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यज़ीद ने बयान किया, कहा हमसे हैवा बिन शुरैह वग़ैरह ने बयान किया कि हमसे अबुल अस्वद ने बयान किया, या लैष़ ने अबुल अस्वद से बयान किया कि अहले मदीना का एक लश्कर तैयार किया गया (या'नी

٧٠٨٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يَزِيدَ، حَدَّثَنَا حَيْوَةُ وَغَيْرُهُ قَالَ: حَدَّثَنَا أَبُو الأَسْوَدِ وَقَالَ اللَّيْثُ: عَنْ أَبِي الأَسْوَدِ قَالَ: قُطِعَ

عَلَى أَهْلِ الْمَدِينَةِ بَعْثٌ فَاكْتُتِبْتُ فِيهِ فَلَقِيتُ عِكْرِمَةَ فَأَخْبَرْتُهُ فَنَهَانِي أَشَدَّ النَّهْيِ ثُمَّ قَالَ: أَخْبَرَنِي ابْنُ عَبَّاسٍ أَنَّ أُنَاسًا مِنَ الْمُسْلِمِينَ كَانُوا مَعَ الْمُشْرِكِينَ يُكَثِّرُونَ سَوَادَ الْمُشْرِكِينَ عَلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ فَيَأْتِي السَّهْمُ فَيُرْمَى فَيُصِيبُ أَحَدَهُمْ فَيَقْتُلُهُ أَوْ يَضْرِبُهُ فَيَقْتُلُهُ فَأَنْزَلَ اللهُ تَعَالَى: ﴿إِنَّ الَّذِينَ تَوَفَّاهُمُ الْمَلاَئِكَةُ ظَالِمِي أَنْفُسِهِمْ﴾[النساء : ٩٧]. [راجع٤٥٩٦]

अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) के ज़माने में शाम वालों से मुक़ाबला करने के लिये) और मेरा नाम उसमें लिख दिया गया। फिर मैं इक्रिमा से मिला और मैंने उन्हें ख़बर दी तो उन्होंने मुझे शिर्कत से सख़्ती के साथ मना किया। फिर कहा कि इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने मुझे ख़बर दी है कि कुछ मुसलमान जो मुश्रिकीन के साथ रहते थे वो रसूले करीम (ﷺ) के ख़िलाफ़ (ग़ज़्वात) में मुश्रिकीन की जमाअ़त की ज़्यादती का बाइ़ष़ बनते। फिर कोई तीर आता और उनमें से किसी को लग जाता और क़त्ल कर देता या उन्हें कोई तलवार से क़त्ल कर देता, फिर अल्लाह तआ़ला ने ये आयत नाज़िल की, बिला शक वो लोग जिनको फ़रिश्ते फ़ौत करते हैं इस हाल में कि वो अपनी जानों पर ज़ुल्म करने वाले होते हैं। (सूरह निसा : 97) (राजेअ़ : 4596)

तश्रीह : ह़ज़रत इक्रिमा का मत़लब ये था कि ये मुसलमान, मुसलमानों से लड़ने के लिये नहीं निकलते थे बल्कि काफ़िरों की जमाअ़त बढ़ाने के लिये निकले तब अल्लाह तआ़ला ने उनको ज़ालिम और गुनहगार ठहराया बस इसी क़यास पर जो लश्कर मुसलमानों से लड़ने के लिये निकलेगा या उनके साथ जो निकलेगा गुनहगार होगा गो उसकी निय्यत मुसलमानों से जंग करने की न हो। मन कष़्र सुवादिन क़ौम अल्अख़ का यही मत़लब है।

١٣ - باب إِذَا بَقِيَ فِي حُثَالَةٍ مِنَ النَّاسِ

बाब 13 : जब कोई बुरे लोगों में रह जाए तो क्या करे?

٧٠٨٦ - حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ، أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ، حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، عَنْ زَيْدِ بْنِ وَهْبٍ، حَدَّثَنَا حُذَيْفَةُ قَالَ: حَدَّثَنَا رَسُولُ اللهِ ﷺ حَدِيثَيْنِ رَأَيْتُ أَحَدَهُمَا وَأَنَا أَنْتَظِرُ الآخَرَ حَدَّثَنَا ((أَنَّ الأَمَانَةَ نَزَلَتْ فِي جَذْرِ قُلُوبِ الرِّجَالِ، ثُمَّ عَلِمُوا مِنَ الْقُرْآنِ، ثُمَّ عَلِمُوا مِنَ السُّنَّةِ)). وَحَدَّثَنَا عَنْ رَفْعِهَا قَالَ: ((يَنَامُ الرَّجُلُ النَّوْمَةَ فَتُقْبَضُ الأَمَانَةُ مِنْ قَلْبِهِ، فَيَظَلُّ أَثَرُهَا مِثْلَ أَثَرِ الْوَكْتِ، ثُمَّ يَنَامُ النَّوْمَةَ فَتُقْبَضُ فَيَبْقَى فِيهَا أَثَرُهَا مِثْلَ أَثَرِ الْمَجْلِ كَجَمْرٍ دَحْرَجْتَهُ عَلَى رِجْلِكَ فَنَفِطَ فَتَرَاهُ مُنْتَبِرًا وَلَيْسَ فِيهِ شَيْءٌ وَيُصْبِحُ النَّاسُ يَتَبَايَعُونَ فَلاَ يَكَادُ أَحَدٌ يُؤَدِّي الأَمَانَةَ فَيُقَالُ: إِنَّ فِي بَنِي فُلاَنٍ رَجُلاً

7086. हमसे मुहम्मद बिन कष़ीर ने बयान किया, कहा हमको सुफ़यान ने ख़बर दी, कहा हमसे आ'मश ने बयान किया, उनसे ज़ैद बिन वहब ने बयान किया, उनसे ह़ुज़ैफ़ह ने बयान किया, कहा कि हमसे रसूलुल्लाह (ﷺ) ने दो अहादीष़ फ़र्माई थीं जिनमें से एक तो मैंने देख ली दूसरी का इंतिज़ार है। हमसे आपने फ़र्माया था कि अमानत लोगों के दिलों की जड़ों में नाज़िल हुई थी फिर लोगों ने उसे क़ुर्आन से सीखा, फिर सुन्नत से सीखा और आँह़ज़रत (ﷺ) ने हमसे अमानत के उठ जाने के बारे में फ़र्माया था कि एक शख़्स एक नींद सोयेगा और अमानत उसके दिल से निकाल दी जाएगी और उसका निशान एक धब्बे जितना बाक़ी रह जाएगा, फिर वो एक नींद सोयेगा और फिर अमानत निकाली जाएगी तो उसके दिल में फफोले की त़रह़ उसका निशान बाक़ी रह जाएगा, जैसे तुमने कोई चिंगारी अपने पैर पर गिरा ली हो और उसकी वजह से फफोला पड़ जाए, तुम उसमें सूजन देखोगे लेकिन अंदर कुछ नहीं होगा और लोग ख़रीद व फ़रोख़्त करेंगे लेकिन कोई अमानत अदा करने वाला नहीं होगा। फिर कहा जाएगा कि फ़लाँ क़बीले में एक अमानतदार आदमी

أَمِينًا، وَيُقَالُ لِلرَّجُلِ : مَا أَعْقَلَهُ وَمَا أَظْرَفَهُ وَمَا أَجْلَدَهُ وَمَا فِي قَلْبِهِ مِثْقَالُ حَبَّةِ خَرْدَلٍ مِنْ إِيمَانٍ، وَلَقَدْ أَتَى عَلَيَّ زَمَانٌ وَلاَ أُبَالِي أَيُّكُمْ بَايَعْتُ، لَئِنْ كَانَ مُسْلِمًا رَدَّهُ عَلَى الإِسْلاَمِ وَإِنْ كَانَ نَصْرَانِيًّا رَدَّهُ عَلَيَّ سَاعِيهِ، وَأَمَّا الْيَوْمَ فَمَا كُنْتُ أُبَايِعُ إِلاَّ فُلاَنًا وَفُلاَنًا)).

[راجع: ٦٤٩٧]

है और किसी के बारे में कहा जाएगा कि वो किस क़दर अ़क़्लमंद, कितना ख़ुशतबअ़, कितना दिलावर आदमी है ह़ालाँकि उसके दिल में राई के दाने के बराबर भी ईमान न होगा और मुझ पर एक ज़माना गुज़र गया और मैं उसकी परवाह नहीं करता था कि तुममें से किसके साथ मैं लेन देन करता हूँ अगर वो मुसलमान होता तो उसका इस्लाम उसे मेरे ह़क़ के अदा करने पर मजबूर करता और अगर वो नस़रानी होता तो उसके ह़ाकिम लोग उसको दबाते ईमानदारी पर मजबूर करते। लेकिन आजकल तो मैं स़िर्फ़ फ़लाँ फ़लाँ लोगों से ही लेन देन करता हूँ। (राजेअ़ : 6497)

तश्रीह : ये ख़ैरुल क़ुरून का ह़ाल बयान हो रहा है। आजकल तो अमानत दयानत का जितना भी जनाज़ा निकल जाए कम है। कितने दीन के दावेदार हैं जो अमानत दयानत से बिलकुल कोरे हैं। इस ह़दीष़ से ग़ैर मुस्लिमों के साथ लेन-देन करना भी ष़ाबित हुआ बशर्ते कि किसी ख़त़रे का डर न हो। ह़ुज़ैफ़ह बिन यमान सन 35 हिजरी में मदयन में फ़ौत हुए, शहादते उ़ष्मान (रज़ि.) के चालीस रोज़ बाद आपकी वफ़ात हुई (रज़ियल्लाहु अ़न्हु)।

١٤- بَابُ التَّعَرُّبِ فِي الْفِتْنَةِ

बाब 14 : फ़ित्ना फ़साद के वक़्त जंगल में जा रहना

٧٠٨٧- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا حَاتِمٌ، عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبِي عُبَيْدٍ، عَنْ سَلَمَةَ بْنِ الأَكْوَعِ أَنَّهُ دَخَلَ عَلَى الْحَجَّاجِ فَقَالَ: يَا ابْنَ الأَكْوَعِ ارْتَدَدْتَ عَلَى عَقِبَيْكَ تَعَرَّبْتَ؟ قَالَ: لاَ وَلَكِنْ رَسُولَ اللهِ ﷺ أَذِنَ لِي فِي الْبَدْوِ. وَعَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبِي عُبَيْدٍ قَالَ: لَمَّا قُتِلَ عُثْمَانُ بْنُ عَفَّانَ خَرَجَ سَلَمَةُ بْنُ الأَكْوَعِ إِلَى الرَّبَذَةِ وَتَزَوَّجَ هُنَاكَ امْرَأَةً وَوَلَدَتْ لَهُ أَوْلاَدًا، فَلَمْ يَزَلْ بِهَا حَتَّى أَقْبَلَ قَبْلَ أَنْ يَمُوتَ بِلَيَالٍ فَنَزَلَ الْمَدِينَةَ.

7087. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे ह़ातिम ने बयान किया, उनसे यज़ीद बिन अबी उ़बैद ने बयान किया, उनसे सलमा बिन अक्वा (रज़ि.) ने बयान किया कि वो ह़ज्जाज के यहाँ गये तो उसने कहा कि ऐ इब्नुल अक्वा! तुम गाँव में रहने लगे हो क्या उल्टे पैर फिर गये? कहा कि नहीं बल्कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मुझे जंगल में रहने की इजाज़त दी थी। और यज़ीद बिन अबी उ़बैद से रिवायत है, उन्होंने कहा कि जब ह़ज़रत उ़ष्मान बिन अ़फ़्फ़ान (रज़ि.) शहीद किये गये तो सलमा बिन अक्वा (रज़ि.) रब्ज़ा चले गये और वहाँ एक औ़रत से शादी कर ली और वहाँ उनके बच्चे भी पैदा हुए। वो बराबर वहीं रहे, यहाँ तक कि वफ़ात से चंद दिन पहले मदीना आ गये थे।

ह़दीष़ और बाब में मुत़ाबक़त ज़ाहिर है ह़ज़रत सलमा बिन अक्वा ने 80 साल की उ़म्र में सन 74 हिजरी में वफ़ात पाई। (रज़ियल्लाहु अ़न्हु)

आज भी फ़ित्नों का ज़माना है हर जगह घर घर निफ़ाक़ व शिक़ाक़ है। बाहमी ख़ुलूस़ का पता नहीं। ऐसे ह़ालात में भी सबसे तन्हाई बेहतर है, कुछ मौलाना क़िस्म के लोग, लोगों से बेअ़त लेकर इन अह़ादीष़ को पेश करते हैं, ये उनकी कमअ़क़्ली है। यहाँ बेअ़ते ख़िलाफ़त मुराद है और फ़ित्ने से इस्लामी रियासत का शीराज़ा बिखर जाना मुराद है।

7088. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमको मालिक ने ख़बर दी, उन्हें अ़ब्दुर्रहमान बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अबी स़अ़स़ाअ़ ने, उन्हें उनके वालिद ने और उनसे अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया वो वक़्त क़रीब है कि मुसलमान का बेहतरीन माल वो बकरियाँ होंगी जिन्हें वो लेकर पहाड़ी की चोटियों और बारिश बरसने की जगहों पर चला जाएगा। वो फ़ित्नों से अपने दीन की हिफ़ाज़त के लिये वहाँ भागकर आ जाएगा।

(राजेअ़ : 19)

٧٠٨٨- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ، أَخْبَرَنَا مَالِكٌ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَبْدِ اللهِ أَبِي صَعْصَعَةَ، عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((يُوشِكُ أَنْ يَكُونَ خَيْرَ مَالِ الْمُسْلِمِ غَنَمٌ يَتْبَعُ بِهَا شَعَفَ الْجِبَالِ، وَمَوَاقِعَ الْقَطْرِ يَفِرُّ بِدِينِهِ مِنَ الْفِتَنِ)).

[راجع: ١٩]

फ़ित्नों से बचने की तर्ग़ीब है उस ह़द तक कि अगर बस्ती छोड़कर पहाड़ों में रहकर भी फ़ित्ने से इंसान बच सके तब भी बचना बेहतर है। ये भी बहुत बड़ी नेकी है कि इंसान अपने दीन को किसी भी त़रह़ से बचा सके और तन्हाई में अपना वक़्त काट ले।

बाब 15 : फ़ित्नों से पनाह मांगना

١٥- باب التَّعَوُّذِ مِنَ الْفِتَنِ

7089. हमसे मुआ़ज़ बिन फ़ुज़ाला ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम ने बयान किया, उनसे क़तादा ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) से लोगों ने सवालात किये आख़िर जब लोग बार बार सवाल करने लगे तो आँह़ज़रत (ﷺ) मिम्बर पर एक दिन चढ़े और फ़र्माया कि आज तुम मुझसे जो सवाल भी करोगे मैं तुम्हें उसका जवाब दूँगा। अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर मैं दाएँ बाएँ देखने लगा तो हर शख़्स़ का सर उसके कपड़े में छुपा हुआ था और वो रो रहा था। आख़िर एक शख़्स़ ने खामोशी तोड़ी। उसका जब किसी से झगड़ा होता तो उन्हें उनके बाप के सिवा दूसरे बाप की त़रफ़ पुकारा जाता। उन्होंने कहा या रसूलल्लाह! मेरे वालिद कौन हैं? फ़र्माया तुम्हारे वालिद हु़ज़ाफ़ह हैं। फिर उ़मर (रज़ि.) सामने आए और अ़र्ज़ किया हम अल्लाह से कि वो रब है, इस्लाम से कि वो दीन है, मुह़म्मद (ﷺ) से कि वो रसूल हैं राज़ी हैं और आज़माइश की बुराई से हम अल्लाह की पनाह मांगते हैं। फिर आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैंने ख़ैर व शर्र आज जैसा देखा कभी नहीं देखा था। मेरे सामने जन्नत और दोज़ख़ की सूरत पेश की गई और मैंने उन्हें दीवार के क़रीब देखा। क़तादा ने बयान किया कि ये बात इस आयत के साथ ज़िक्र की जाती है कि ऐ लोगों! जो ईमान लाए हो ऐसी चीज़ों के

٧٠٨٩- حَدَّثَنَا مُعَاذُ بْنُ فَضَالَةَ، حَدَّثَنَا هِشَامٌ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَأَلُوا النَّبِيَّ ﷺ حَتَّى أَحْفَوْهُ بِالْمَسْأَلَةِ فَصَعِدَ النَّبِيُّ ﷺ ذَاتَ يَوْمٍ الْمِنْبَرَ فَقَالَ: ((لاَ تَسْأَلُونِي عَنْ شَيْءٍ إِلاَّ بَيَّنْتُ لَكُمْ)) فَجَعَلْتُ أَنْظُرُ يَمِينًا وَشِمَالاً فَإِذَا كُلُّ رَجُلٍ رَأْسُهُ فِي ثَوْبِهِ يَبْكِي فَأَنْشَأَ رَجُلٌ كَانَ إِذَا لاَحَى يُدْعَى إِلَى غَيْرِ أَبِيهِ فَقَالَ : يَا نَبِيَّ اللهِ مَنْ أَبِي؟ فَقَالَ: ((أَبُوكَ حُذَافَةُ)) ثُمَّ أَنْشَأَ عُمَرُ فَقَالَ : رَضِينَا بِاللهِ رَبًّا وَبِالإِسْلاَمِ دِينًا وَبِمُحَمَّدٍ رَسُولاً، نَعُوذُ بِاللهِ مِنْ سُوءِ الْفِتَنِ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((مَا رَأَيْتُ فِي الْخَيْرِ وَالشَّرِّ كَالْيَوْمِ قَطُّ، إِنَّهُ صُوِّرَتْ لِي الْجَنَّةُ وَالنَّارُ حَتَّى رَأَيْتُهُمَا دُونَ الْحَائِطِ)) قَالَ قَتَادَةُ: يُذْكَرُ هَذَا الْحَدِيثُ عِنْدَ هذه الآيَةِ : ﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ

बारे में सवाल न करो अगर वो ज़ाहिर कर दी जाएँ जो तुम्हें बुरी मा'लूम हों। (सूरह माइदह : 101) (राजेअ़ : 93)

آمَنُوا لَا تَسْأَلُوا عَنْ أَشْيَاءَ إِنْ تُبْدَلَكُمْ تَسُؤْكُمْ﴾ [المائدة: ١٠١]. [راجع: ٩٣]

7090. और अ़ब्बास अन्नर्सी ने बयान किया, उनसे यज़ीद बिन ज़ुरैअ़ ने बयान किया, उनसे सईद ने बयान किया, उनसे क़तादा ने बयान किया और उनसे अनस (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से यही ह़दीष़ बयान की और अनस (रज़ि.) ने कहा हर शख़्स कपड़े में अपना सर लपेटे हुए रो रहा था और फ़ित्ने से अल्लाह की पनाह मांग रहा था यूँ कह रहा था कि मैं अल्लाह की पनाह माँगता हूँ फ़ित्ने की बुराई से। (राजेअ़ : 93)

٧٠٩٠- وَقَالَ عَبَّاسٌ النَّرْسِيُّ: حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ، حَدَّثَنَا سَعِيدٌ، حَدَّثَنَا قَتَادَةُ أَنَّ أَنَسًا حَدَّثَهُمْ أَنَّ نَبِيَّ اللهِ ﷺ بِهَذَا وَقَالَ: كُلُّ رَجُلٍ لاَفًّا رَأْسَهُ فِي ثَوْبِهِ يَبْكِي وَقَالَ عَائِذًا بِاللهِ مِنْ سُوءِ الْفِتَنِ أَوْ قَالَ: أَعُوذُ بِاللهِ مِنْ سُوءِ الْفِتَنِ. [راجع: ٩٣]

70910 और मुझसे ख़लीफ़ा बिन ख़यात़ ने बयान किया, उनसे यज़ीद बिन ज़ुरैअ़ ने बयान किया, उनसे सईद व मुअ़तमिर के वालिद ने क़तादा से और उनसे अनस (रज़ि.) ने बयान किया, फिर यही ह़दीष़ आँह़ज़रत (ﷺ) से नक़ल की, उसमें बजाय सूअ के शर्र का लफ़्ज़ है। (राजेअ़ : 93)

٧٠٩١- وَقَالَ لِي خَلِيفَةُ، حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ، حَدَّثَنَا سَعِيدٌ وَمُعْتَمِرٌ عَنْ أَبِيهِ، عَنْ قَتَادَةَ أَنَّ أَنَسًا حَدَّثَهُمْ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ بِهَذَا وَقَالَ: عَائِذًا بِاللهِ مِنْ شَرِّ الْفِتَنِ. [راجع: ٩٣]

तश्रीह़ : (1) इस रिवायत के लाने से इमाम बुख़ारी का मत़लब ये है कि सईद की रिवायत में ख़ैर या शर्र के साथ मज़्कूर है। जितने सह़ाबा वहाँ मौजूद थे, सब रोने लगे क्योंकि उनको मा'लूम हो गया था कि आँह़ज़रत (ﷺ) ज़्यादा सवालात करने की वजह से बिल्कुल रंजीदा हो गये हैं और आँह़ज़रत (ﷺ) का रंजीदा होना अल्लाह के ग़ज़ब की निशानी है। जब कष़रते सवालात से आपको ग़ुस्सा आया तो ख़्याल करना चाहिये कि जो शख़्स आपके इर्शादात को सुनकर उस पर अ़मल न करे और दूसरे चेले चाटों की बात सुन उस पर आप (ﷺ) का ग़ुस्सा किस क़दर होगा और उसको अल्लाह के ग़ज़ब से कितना डरना चाहिये? मैं ऊपर लिख चुका हूँ कि अहले हिन्द की ग़फ़लत और बेए'तिनाई और ह़दीष़ और क़ुर्आन को छोड़ देने की सज़ा में कई साल से उन पर त़ाऊन की बला नाज़िल हुई है, मा'लूम नहीं आइन्दा और क्या अ़ज़ाब उतरता है। अभी ये पारा ख़त्म नहीं हुआ था या'नी माह स़फ़र सन 1323 हिजरी में पंजाब से ख़बर आई कि वहाँ सख़्त ज़लज़ला हुआ और हज़ारों लाखों मकानात मिट्टी में मिल गये और जो बच रहे हैं उनकी भी ह़ालत बुरी है न रहने को घर न बैठने का ठिकाना। ग़र्ज़ अहले हिन्द किसी त़रह़ ख़्वाब ग़फ़लत से बेदार नहीं होते और तअ़स्सुब और नाह़क़ शनासी नहीं छोड़ते, मा'लूम नहीं आइन्दा और क्या क्या अ़ज़ाब आने वाले हैं। या अल्लाह! सच्चे मुसलमानों पर रह़म कर और उनको उन अ़ज़ाबों से बचा दे आमीन या रब्बल आ़लमीन। मौलाना वह़ीदुज़्ज़माँ मरह़ूम आज से 75 साल पहले की बातें कर रहे हैं मगर आज सन 1398 हिजरी में भी आन्ध्रा प्रदेश और इलाक़ा मैवात में पानी के तूफ़ान ने अ़ज़ाबों की याद ताज़ा कर दी है।

बाब 16 : नबी करीम (ﷺ) का फ़र्माना कि फ़ित्ना मश्रिक़ की त़रफ़ से उठेगा

١٦- باب قَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ: ((الْفِتْنَةُ مِنْ قِبَلِ الْمَشْرِقِ))

7092. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुह़म्मद मुस्नदी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे हिशाम बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने

٧٠٩٢- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ، حَدَّثَنَا هِشَامُ بْنُ يُوسُفَ، عَنْ مَعْمَرٍ، عَنِ

कहा उनसे मअ़मर ने बयान किया, उनसे ज़ुहरी ने बयान किया, उनसे सालिम ने, उनसे उनके वालिद ने कि नबी करीम (ﷺ) मिम्बर के एक तरफ़ खड़े हुए और फ़र्माया फ़ित्ने उधर है, फ़ित्ना उधर है जिधर शैतान की सींग तुलूअ़ होती है या सूरज की सींग फ़र्माया। (राजेअ़ : 3104)

الزُّهْرِيِّ، عَنْ سَالِمٍ، عَنْ أَبِيهِ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ قَامَ إِلَى جَنْبِ الْمِنْبَرِ فَقَالَ: ((الْفِتْنَةُ هَهُنَا، الْفِتْنَةُ هَهُنَا، مِنْ حَيْثُ يَطْلُعُ قَرْنُ الشَّيْطَانِ - أَوْ قَالَ - قَرْنُ الشَّمْسِ)). [راجع:٣١٠٤]

मुराद मश्रिक़ है, शैतान तुलूअ़ और ग़ुरूब के वक़्त अपना सर सूरज पर रख देता है ताकि सूरज परस्तों का सज्दा शैतान के लिये हो।

7093. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ़ ने और उनसे इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने कि उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से सुना। आँहज़रत (ﷺ) मश्रिक़ की तरफ़ रुख़ किये हुए थे और फ़र्मा रहे थे आगाह हो जाओ फ़ित्ना उस तरफ़ है जिधर से शैतान का सींग तुलूअ़ होता है। (राजेअ़ : 3104)

٧٠٩٣- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا لَيْثٌ، عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللهِ ﷺ وَهُوَ مُسْتَقْبِلُ الْمَشْرِقَ يَقُولُ: ((أَلاَ إِنَّ الْفِتْنَةَ هَهُنَا مِنْ حَيْثُ يَطْلُعُ قَرْنُ الشَّيْطَانِ)). [راجع: ٣١٠٤]

मदीना के पूरब की तरफ़ इराक़, अ़रब, ईरान वग़ैरह देश आए हुए हैं। उन ही देशों से बहुत से फ़ित्ने शुरू हुए। तातारियों का फ़ित्ना भी उधर ही से शुरू हुआ, जिन्होंने बहुत से इस्लामी मुल्कों को बर्बाद कर दिया।

7094. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अज़्हर बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे इब्ने औ़न ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ़ ने बयान किया, उनसे हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया ऐ अल्लाह! हमारे मुल्क शाम में हमें बरकत दे, हमारे यमन में हमें बरकत दे। स़हाबा ने अ़र्ज़ किया और हमारे नजद में? आँहज़रत (ﷺ) ने फिर फ़र्माया ऐ अल्लाह! हमारे शाम में बरकत दे, हमें हमारे यमन में बरकत दे। स़हाबा ने अ़र्ज़ की और हमारे नजद में? मेरा गुमान है कि आँहज़रत (ﷺ) ने तीसरी मर्तबा फ़र्माया वहाँ ज़लज़ले और फ़ित्ने हैं और वहाँ शैतान का सींग तुलूअ़ होगा। (राजेअ़ : 1037)

٧٠٩٤- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا أَزْهَرُ بْنُ سَعْدٍ، عَنِ ابْنِ عَوْنٍ، عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ قَالَ: ذَكَرَ النَّبِيُّ ﷺ: ((اللَّهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِي شَأْمِنَا، اللَّهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِي يَمَنِنَا)) قَالُوا: وَفِي نَجْدِنَا قَالَ: ((اللَّهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِي شَأْمِنَا، اللَّهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِي يَمَنِنَا)) قَالُوا: يَا رَسُولَ اللهِ وَفِي نَجْدِنَا فَأَظُنُّهُ قَالَ فِي الثَّالِثَةِ: ((هُنَاكَ الزَّلاَزِلُ وَالْفِتَنُ وَبِهَا يَطْلُعُ قَرْنُ الشَّيْطَانِ)). [راجع: ١٠٣٧]

तश्रीह : या'नी दज्जाल जो मश्रिक़ के मुल्क से आएगा। उसी तरफ़ से याजूज माजूज आएँगे नजद से मुराद वो मुल्क है इराक़ का जो बुलन्दी पर वाक़ेअ़ है। आँहज़रत (ﷺ) ने उसके लिये दुआ नहीं की क्योंकि उधर से बड़ी बड़ी आफ़तों का ज़हूर होने वाला था। हज़रत हुसैन भी उसी सरज़मीन में शहीद हुए। कूफ़ा, बाबिल वग़ैरह ये सब नजद में दाख़िल हैं। कुछ बेवक़ूफ़ों ने नजद के फ़ित्ने से मुहम्मद बिन अ़ब्दुल वह्हाब का निकलना मुराद रखा है, उनको ये मा'लूम नहीं कि मुहम्मद बिन अ़ब्दुल

वह्हाब का निकलना मुराद रखा है, उनको ये मा'लूम नहीं कि मुहम्मद बिन अ़ब्दुल वह्हाब तो मुसलमान और मुवह्हिद थे। वो तो लोगो को तौह़ीद और इत्तिबाअ़ सुन्नत की त़रफ़ बुलात थे और शिर्क व बिदअ़त से मना करते थे, उनका निकलना तो रह़मत था न कि फ़ित्ना और अहले मक्का का जो रिसाला उन्होंने लिखा है उसमें सरासर यही मज़ामीन हैं कि तौह़ीद और इत्तिबाअ़ सुन्नत इख़्तियार करो और शर्ए की बदई उमूर से परहेज़ करो, ऊँची ऊँची क़ब्र मत बनाओ, क़ब्रों पर जाकर नज़्रें मत चढ़ाओ, मन्नतें मत मानो। ये सब उमूर तो निहायत उ़म्दह और सुन्नत नबवी के मुवाफ़िक़ हैं। आँह़ज़रत (ﷺ) और ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) ने भी ऊँची क़ब्रों को गिराने का हुक्म दिया था फिर मुहम्मद बिन अ़ब्दुल वह्हाब ने अगर अपने पैग़म्बर ह़ज़रत मुहम्मद (ﷺ) की पैरवी की तो क्या क़सूर किया? **स़ल्लल्लाहु ह़बीबिही मुह़म्मद व बारिक व सल्लम।**

7095. हमसे इस्ह़ाक़ बिन शाहीन वास्त़ी ने बयान किया, कहा हमसे ख़ल्फ़ बिन अ़ब्दुल्लाह त़िह़ान ने बयान किया, उनसे बयान इब्ने बस़ीर ने, उनसे वबरह बिन अ़ब्दुर्रह़मान ने, उनसे सईद बिन जुबैर ने बयान किया कि अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) हमारे पास बरामद हुए तो हमने उम्मीद की कि वो हमसे कोई अच्छी बात करेंगे। इतने में एक स़ाहब ह़कीम नामी हमसे पहले उनके पास पहुँच गये और पूछा ऐ अबू अ़ब्दुर्रह़मान! हमसे ज़माना-ए-फ़ित्ना में क़िताल के बारे में ह़दीस़ बयान कीजिए। अल्लाह तआ़ला फ़र्माता है तुम उनसे जंग करो यहाँ तक कि फ़ित्ना बाक़ी न रहे। इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने कहा तुम्हें मा'लूम भी है कि फ़ित्ना क्या है? तुम्हारी माँ तुम्हें रोये। मुह़म्मद (ﷺ) फ़ित्ना दूर करने के लिए मुश्रिकीन से जंग करते थे, शिर्क में पड़ना ये फ़ित्ना है। क्या आँह़ज़रत (ﷺ) की लड़ाई तुम लोगों को इस त़रह बादशाहत ह़ास़िल करने के लिए होती थी? (राजेअ़ : 3130)

٧٠٩٥- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ الْوَاسِطِيُّ، حَدَّثَنَا خَلَفٌ، عَنْ بَيَانٍ، عَنْ وَبَرَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ قَالَ : خَرَجَ عَلَيْنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عُمَرَ فَرَجَوْنَا أَنْ يُحَدِّثَنَا حَدِيثًا حَسَنًا قَالَ: فَبَادَرَنَا إِلَيْهِ رَجُلٌ فَقَالَ يَا أَبَا عَبْدِ الرَّحْمَنِ حَدِّثْنَا عَنِ الْقِتَالِ فِي الْفِتْنَةِ وَاللهُ يَقُولُ: ﴿وَقَاتِلُوهُمْ حَتَّى لاَ تَكُونَ فِتْنَةٌ﴾ فَقَالَ: هَلْ تَدْرِي مَا الْفِتْنَةُ ثَكِلَتْكَ أُمُّكَ؟ إِنَّمَا كَانَ مُحَمَّدٌ ﷺ يُقَاتِلُ الْمُشْرِكِينَ، وَكَانَ الدُّخُولُ فِي دِينِهِمْ فِتْنَةً، وَلَيْسَ كَقِتَالِكُمْ عَلَى الْمُلْكِ.
[راجع: ٣١٣٠]

तशरीह़ : अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) का ये ख़्याल था कि जब मुसलमानों में आपस में फ़ित्ना हो तो लड़ना दुरुस्त नहीं। दोनों त़रफ़ वालों से अलग रहकर खामोश घर में बैठना चाहिये। इसीलिये अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) न मुआविया (रज़ि.) के शरीक रहे न ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) के। उस शख़्स ने गोया अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) को जवाब दिया कि अल्लाह तो फ़ित्ना दूर करने का हुक्म देता है और तुम फ़ित्ने में लड़ना मना करते हो आयत, **व क़ातिलूहुम ह़त्ता ला तकून फ़ित्नति** (अल बक़रः : 193) में फ़ित्ने से मुराद शिर्क है या'नी मुश्रिकों से लड़ो ताकि दुनिया में तौह़ीद फैले। इस्लामी लड़ाई स़िर्फ़ तौह़ीद फ़ैलाने के लिये होती है। फ़ित्ने के बारे में लफ़्ज़ मश्रिक़ वाली ह़दीस़ की मज़ीद तशरीह़ पारा 30 के ख़ात्मे पर मुलाह़िज़ा की जाए। (राज़)

बाब 17 : उस फ़ित्ने का बयान जो फ़ित्ना समन्दर की त़रह ठाठें मारकर उठेगा

١٧- باب الْفِتْنَةِ الَّتِي تَمُوجُ كَمَوْجِ الْبَحْرِ

इब्ने उ़ययना ने ख़ल्फ़ बिन ह़ौशब से बयान किया कि सलफ़ फ़ित्ना के वक़्त इन अश्आ़र से मिस़ाल देना पसंद करते थे। जिनमें उमराउल क़ैस ने कहा है,

وَقَالَ ابْنُ عُيَيْنَةَ : عَنْ خَلَفِ بْنِ حَوْشَبٍ كَانُوا يَسْتَحِبُّونَ أَنْ يَتَمَثَّلُوا بِهَذِهِ الأَبْيَاتِ عِنْدَ الْفِتَنِ قَالَ امْرُؤُ الْقَيْسِ :

الْحَرْبُ أَوَّلُ مَا تَكُونُ فَتِيَّةً

تَسْعَى بِزِينَتِهَا لِكُلِّ جَهُولِ
حَتَّى إِذَا اشْتَعَلَتْ وَشَبَّ ضِرَامُهَا
وَلَّتْ عَجُوزًا غَيْرَ ذَاتِ حَلِيلِ
شَمْطَاءَ يُنْكَرُ لَوْنُهَا وَتَغَيَّرَتْ
مَكْرُوهَةً لِلشَّمِّ وَالتَّقْبِيلِ

इब्तिदा में इक जवाँ औरत की सूरत है ये जंग
देखकर नादाँ इसे होते हैं आशिक़ और दंग
जबकि भड़के शोले इसके फैल जाएँ हर तरफ़
तब वो हो जाती है बूढ़ी और बदल जाती है रंग
ऐसी बदसूरत को रखे कौन चूँडा है सफ़ेद
सूँघने और चूमने से इसके सब होते हैं तंग

उमराउल क़ैस के अश्आर का ऊपर लिखा नज़्म वाला तर्जुमा मौलाना वह़ीदुज़्ज़माँ ने किया। जबकि नस्र में तर्जुमा इस त़रह़ है। अव्वल मरह़ला पर जंग एक नौजवान लड़की मा'लूम होती है जो हर नादान के बहकाने के लिये अपनी ज़ेब व ज़ीनत के साथ दौड़ती है। यहाँ तक कि जब लड़ाई भड़क उठती है और उसके शोले बुलंद होने लगते हैं तो एक बेवा बुढ़िया की त़रह़ पीठ फेर लेती है, जिसके बालों में स्याही के साथ सफ़ेदी की मिलावट हो गई हो और उसके रंग को नापसंद किया जाता हो और वो इस त़रह़ बदल गई हो कि उससे बोसा व किनार को नापसंद किया जाता हो।

٧٠٩٦- حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصِ بْنِ غِيَاثٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، حَدَّثَنَا شَقِيقٌ سَمِعْتُ حُذَيْفَةَ يَقُولُ : بَيْنَا نَحْنُ جُلُوسٌ عِنْدَ عُمَرَ إِذْ قَالَ: أَيُّكُمْ يَحْفَظُ قَوْلَ النَّبِيِّ ﷺ فِي الْفِتْنَةِ؟ قَالَ: فِتْنَةُ الرَّجُلِ فِي أَهْلِهِ وَمَالِهِ وَوَلَدِهِ وَجَارِهِ، تُكَفِّرُهَا الصَّلاَةُ وَالصَّدَقَةُ وَالأَمْرُ بِالْمَعْرُوفِ، وَالنَّهْيُ عَنِ الْمُنْكَرِ. قَالَ: لَيْسَ عَنْ هَذَا أَسْأَلُكَ وَلَكِنِ الَّتِي تَمُوجُ كَمَوْجِ الْبَحْرِ؟ قَالَ: لَيْسَ عَلَيْكَ مِنْهَا بَأْسٌ يَا أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ إِنَّ بَيْنَكَ وَبَيْنَهَا بَابًا مُغْلَقًا قَالَ عُمَرُ: أَيُكْسَرُ الْبَابُ أَمْ يُفْتَحُ؟ قَالَ: بَلْ يُكْسَرُ قَالَ عُمَرُ: إِذَنْ لاَ يُغْلَقُ أَبَدًا قُلْتُ: أَجَلْ. قُلْنَا لِحُذَيْفَةَ: أَكَانَ عُمَرُ يَعْلَمُ الْبَابَ؟ قَالَ: نَعَمْ، كَمَا أَعْلَمُ أَنَّ دُونَ غَدٍ لَيْلَةً، وَذَلِكَ أَنِّي حَدَّثْتُهُ حَدِيثًا لَيْسَ بِالأَغَالِيطِ فَهِبْنَا أَنْ نَسْأَلَهُ مِنَ الْبَابِ

7096. हमसे उ़मर बिन ह़फ़्स बिन ग़याष़ ने बयान किया, कहा हमसे हमारे वालिद ने बयान किया, कहा हमसे आ'मश ने बयान किया, उनसे शक़ीक़ ने बयान किया, उन्होंने हुज़ैफ़ह (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि हम ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) की ख़िदमत में बैठे हुए थे कि उन्होंने पूछा तुममें से किसे फ़ित्ने के बारे में नबी करीम (ﷺ) का फ़र्मान याद है? हुज़ैफ़ह (रज़ि.) ने कहा कि इंसान का फ़ित्ना (आज़माइश) उसकी बीवी, उसके माल, उसके बच्चे और पड़ौसी के मामलात में होता है जिसका कफ़्फ़ारा नमाज़, स़दक़ा, अम्र बिल मअ़रूफ़ और नहीं अ़निल मुंकर कर देता है। ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने कहा कि मैं उसके बारे में नहीं पूछता बल्कि उस फ़ित्ने के बारे में पूछता हूँ जो दरिया की त़रह़ ठाठें मारेगा। हुज़ैफ़ा (रज़ि.) ने बयान किया कि अमीरुल मोमिनीन तुम पर उसका कोई ख़तरा नहीं उसके और आपके बीच एक बन्द दरवाज़ा रुकावट है। उ़मर (रज़ि.) ने पूछा क्या वो दरवाज़ा तोड़ दिया जाएगा या खोला जाएगा? बयान किया कि तोड़ दिया जाएगा। उ़मर (रज़ि.) ने उस पर कहा कि फिर तो वो कभी बन्द न हो सकेगा। मैंने कहा जी हाँ। हमने हुज़ैफ़ह (रज़ि.) से पूछा क्या उ़मर (रज़ि.) उस दरवाज़े के बारे में जानते थे? फ़र्माया कि हाँ, जिस त़रह़ मैं जानता हूँ कि कल से पहले रात आएगी क्योंकि मैंने ऐसी बात बयान की थी जो बेबुनियाद नहीं थी। हमें उनसे ये पूछते हुए डर लगा कि वो

فَأَمَرْنَا مَسْرُوقًا فَسَأَلَهُ فَقَالَ: مَنِ الْبَابُ قَالَ : عُمَرُ.

[راجع: ٥٢٥]

दरवाज़ा कौन थे। चुनाँचे हमने मसरूक़ से कहा (कि वो पूछें) जब उन्होंने पूछा कि वो दरवाज़ा कौन थे? तो उन्होंने कहा कि वो दरवाज़ा ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) थे। (राजेअ़ : 525)

तश्रीह़ : तोड़े जाने से उनकी शहादत मुराद है। **इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊ़न।** सुब्ह़ानल्लाह! ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) की ज़ात मुसलमानों की पुश्तपनाह तमाम आफ़तों और बलाओं की रोक थी। जबसे ये ज़ाते मुक़द्दस उठ गई मुसलमान मुसीबत में मुब्तला हो गये। आए दिन एक एक आफ़त एक एक मुसीबत। अगर ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ज़िन्दा होते तो इन जाहिल दुर्वेशों और सूफ़ियों की जो मआ़ज़ल्लाह हर चीज़ को अल्लाह और आ़बिद और मा'बूद को एक समझते हैं, पैग़म्बरों और आसमानी किताबों को झुठलाते हैं और उन बिदअ़ती क़ब्रपरस्तों और पीर परस्तों और उन राफ़िज़ियों और ख़ारजियों, दुश्मनाने स़ह़ाबा व अहले बैत की कुछ दाल गलने पाती कभी नहीं हर्गिज़ नहीं। या अल्लाह! ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) की त़रह़ और एक शख़्स़ को मुसलमानों में भेज दे जो इस्लाम का झण्डा नये सिरे से बुलंद करे और दुश्मनाने इस्लाम का सर नीचा कर दे। आमीन या रब्बल आ़लमीन।

٧٠٩٧- حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ أَبِي مَرْيَمَ، أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، عَنْ شَرِيكِ بْنِ عَبْدِ اللهِ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ، عَنْ أَبِي مُوسَى الأَشْعَرِيِّ قَالَ: خَرَجَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِلَى حَائِطٍ مِنْ حَوَائِطِ الْمَدِينَةِ لِحَاجَتِهِ، وَخَرَجْتُ فِي إِثْرِهِ فَلَمَّا دَخَلَ الْحَائِطَ جَلَسْتُ عَلَى بَابِهِ وَقُلْتُ: لأَكُونَنَّ الْيَوْمَ بَوَّابَ النَّبِيِّ ﷺ وَلَمْ يَأْمُرْنِي فَذَهَبَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَقَضَى حَاجَتَهُ وَجَلَسَ عَلَى قُفِّ الْبِئْرِ فَكَشَفَ عَنْ سَاقَيْهِ وَدَلاَّهُمَا فِي الْبِئْرِ فَجَاءَ أَبُو بَكْرٍ يَسْتَأْذِنُ عَلَيْهِ لِيَدْخُلَ فَقُلْتُ كَمَا أَنْتَ حَتَّى أَسْتَأْذِنَ لَكَ فَوَقَفَ فَجِئْتُ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقُلْتُ: يَا نَبِيَّ اللهِ ﷺ أَبُو بَكْرٍ يَسْتَأْذِنُ عَلَيْكَ فَقَالَ: ((ائْذَنْ لَهُ وَبَشِّرْهُ بِالْجَنَّةِ)) فَدَخَلَ فَجَاءَ عَنْ يَمِينِ النَّبِيِّ ﷺ فَكَشَفَ عَنْ سَاقَيْهِ وَدَلاَّهُمَا فِي الْبِئْرِ فَجَاءَ عُمَرُ فَقُلْتُ: كَمَا أَنْتَ حَتَّى

7097. हमसे सईद बिन अबी मरयम ने बयान किया, कहा हमको मुह़म्मद बिन जा'फ़र ने ख़बर दी, उन्हें शुरैक बिन अ़ब्दुल्लाह ने, उन्हें सईद बिन मुसय्यब ने और उनसे अबू मूसा अश्अ़री (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) मदीना के बाग़ात में किसी बाग़ की त़रफ़ अपनी किसी ज़रूरत के लिये गये, मैं भी आपके पीछे पीछे गया। जब आँह़ज़रत (ﷺ) बाग़ में दाख़िल हुए तो मैं उसके दरवाज़े पर बैठ गया और अपने दिल में कहा कि आज मैं ह़ज़रत का दरबान बनूँगा हालाँकि आपने मुझे इसका हुक्म नहीं दिया था। आप अंदर चले गये और अपनी ह़ाजत पूरी की। फिर आप कुँए की मुँडेर पर बैठ गये और अपनी दोनों पिण्डलियों को खोलकर उन्हें कुँए में लटका लिया। फिर अबूबक्र (रज़ि.) आए और अंदर जाने की इजाज़त चाही। मैंने उनसे कहा कि आप यहीं रहें, मैं आपके लिये इजाज़त लेकर आता हूँ। चुनाँचे वो खड़े रहे और मैंने आँह़ज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर होकर अ़र्ज़ किया ऐ अल्लाह के नबी! अबूबक्र (रज़ि.) आपके पास आने की इजाज़त चाहते हैं। फ़र्माया कि उन्हें इजाज़त दे दो और उन्हें जन्नत की बशारत सुना दो। चुनाँचे वो अंदर आ गये और आँह़ज़रत (ﷺ) की दाईं जानिब आकर उन्होंने भी अपनी पिण्डलियों को खोलकर कुँए में लटका लिया। इतने में उ़मर (रज़ि.) आए। मैंने कहा ठहरो मैं आँह़ज़रत (ﷺ) से इजाज़त ले लूँ (और मैंने अंदर जाकर आप ﷺ से अ़र्ज़ किया) आप (ﷺ) ने फ़र्माया उनको भी इजाज़त दे और बहिश्त की ख़ुशख़बरी

भी। ख़ैर वो भी आए और उसी कुँए की मुँडेर पर आँहज़रत (ﷺ) के बाईं तरफ़ बैठे और अपनी पिण्डलियाँ खोलकर कुँए में लटका दीं। और कुँए की मुँडेर भर गई और वहाँ जगह न रही, फिर उ़स्मान (रज़ि.) आए और मैंने उनसे भी कहा कि यहीं रहिये। यहाँ तक कि आपके लिये आँहज़रत (ﷺ) से इजाज़त मांग लूँ। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि उन्हें इजाज़त दे दो और जन्नत की बशारत दे दो और उसके साथ एक आज़माइश है जो उन्हें पहुँचेगी। फिर वो भी दाख़िल हुए, उनके साथ बैठने के लिये कोई जगह न थी। चुनाँचे वो घूमकर उनके सामने कुँए के किनारे पर आ गये फिर उन्होंने अपनी पिण्डलियाँ खोलकर कुँए में पैर लटका लिये, फिर मेरे दिल में भाई (ग़ालिबन अबू बुर्दा या अबू रहम) की तमन्ना पैदा हुई और मैं दुआ करने लगा कि वो भी आ जाते, इब्नुल मुसय्यब ने बयान किया कि मैंने उससे उन हज़रत की क़ब्रों की ता'बीर ली कि सबकी क़ब्रें एक जगह होंगी लेकिन उ़स्मान (रज़ि.) की अलग बक़ीउ़ल ग़रक़द में है। (राजेअ़ : 3674)

اسْتَأْذِنَ لَكَ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((ائْذَنْ لَهُ وَبَشِّرْهُ بِالْجَنَّةِ)) فَجَاءَ عَنْ يَسَارِ النَّبِيِّ ﷺ فَكَشَفَ عَنْ سَاقَيْهِ فَدَلاَّهُمَا فِي الْبِئْرِ، فَامْتَلأَ الْقُفُّ فَلَمْ يَكُنْ فِيهِ مَجْلِسٌ ثُمَّ جَاءَ عُثْمَانُ فَقُلْتُ: كَمَا أَنْتَ حَتَّى اسْتَأْذِنَ لَكَ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((ائْذَنْ لَهُ وَبَشِّرْهُ بِالْجَنَّةِ مَعَهَا بَلاَءٌ يُصِيبُهُ)) فَدَخَلَ فَلَمْ يَجِدْ مَعَهُمْ مَجْلِسًا فَتَحَوَّلَ حَتَّى جَاءَ مُقَابِلَهُمْ عَلَى شَفَةِ الْبِئْرِ فَكَشَفَ عَنْ سَاقَيْهِ ثُمَّ دَلاَّهُمَا فِي الْبِئْرِ فَجَعَلْتُ أَتَمَنَّى أَخًا لِي وَأَدْعُو اللهَ أَنْ يَأْتِيَ. قَالَ ابْنُ الْمُسَيَّبِ : فَتَأَوَّلْتُ ذَلِكَ قُبُورَهُمْ اجْتَمَعَتْ هَهُنَا وَانْفَرَدَ عُثْمَانُ.

[راجع: ٣٦٧٤]

तश्रीह: हज़रत उ़स्मान (रज़ि.) पर बला से बाग़ियों का बलवा उनको घेर लेना, उनके ज़ुल्म और तअ़द्दी की शिकायतें करना, ख़िलाफ़त से उतार देने की साज़िशें करना मुराद है गो हज़रत उ़मर (रज़ि.) भी शहीद हुए मगर उन पर ये आफ़तें नहीं आईं बल्कि एक ने धोखे से उनको मार डाला वो भी ऐन नमाज़ में। बाब का मतलब यहीं से निकलता है कि आँहज़रत (ﷺ) ने हज़रत उ़स्मान की निस्बत ये फ़र्माया कि एक बला या'नी फ़ित्ने में मुब्तला होंगे और ये फ़ित्ना बहुत बड़ा था उसी की वजह से जंगे जमल और जंगे सिफ़्फ़ीन वाक़ेअ़ हुई जिसमें बहुत से मुसलमान शहीद हुए।

7098. हमसे बिश्र बिन ख़ालिद ने बयान किया, कहा हमको जा'फ़र ने ख़बर दी, उन्हें शुअ़बा ने, उन्हें सुलैमान ने कि मैंने अबू वाइल से सुना, उन्होंने कहा कि उसामा (रज़ि.) से कहा गया कि आप (उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान रज़ि.) से बातचीत क्यूँ नही करते (कि आ़म मुसलमानों की शिकायतों का ख़्याल रखें) उन्होने कहा कि मैंने (ख़ल्वत में) उनसे बातचीत की है लेकिन (फ़ित्ने के) दरवाज़ा को खोले बग़ैर कि इस तरह मैं सबसे पहले उस दरवाज़े को खोलने वाला होऊँगा मैं ऐसा आदमी नहीं हूँ कि किसी शख़्स से जब वो दो आदमियों पर अमीर बना दिया जाए ये कहूँ कि तू सबसे बेहतर है जबकि मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुन चुका हूँ। आपने फ़र्माया कि एक

٧٠٩٨- حَدَّثَنِي بِشْرُ بْنُ خَالِدٍ، أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، عَنْ شُعْبَةَ، عَنْ سُلَيْمَانَ سَمِعْتُ أَبَا وَائِلٍ قَالَ: قِيلَ لأُسَامَةَ أَلاَ تُكَلِّمُ هَذَا؟ قَالَ: قَدْ كَلَّمْتُهُ مَا دُونَ أَنْ أَفْتَحَ بَابًا أَكُونُ أَوَّلَ مَنْ يَفْتَحُهُ وَمَا أَنَا بِالَّذِي أَقُولُ لِرَجُلٍ بَعْدَ أَنْ يَكُونَ أَمِيرًا عَلَى رَجُلَيْنِ أَنْتَ خَيْرٌ بَعْدَ مَا سَمِعْتُ مِنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((يُجَاءُ بِرَجُلٍ فَيُطْرَحُ فِي النَّارِ فَيَطْحَنُ فِيهَا كَطَحْنِ

الْحِمَارِ بِرَحَاهُ فَيُطِيفُ بِهِ أَهْلُ النَّارِ فَيَقُولُونَ أَيْ فُلاَنُ أَلَسْتَ كُنْتَ تَأْمُرُ بِالْمَعْرُوفِ وَتَنْهَى عَنِ الْمُنْكَرِ؟ فَيَقُولُ: إِنِّي كُنْتُ آمُرُ بِالْمَعْرُوفِ وَلاَ أَفْعَلُهُ وَأَنْهَى عَنِ الْمُنْكَرِ وَأَفْعَلُهُ)).

[راجع: ٣٢٦٧]

शख़्स को (क़यामत के दिन) लाया जाएगा और उसे आग में डाल दिया जाएगा। फिर वो उसमें इस तरह चक्की पीसेगा जैसे गधा पीसता है। फिर दोज़ख़ के लोग उसके चारों तरफ़ जमा हो जाएँगे और कहेंगे, ऐ फ़लाँ! क्या तुम नेकियों का हुक्म करते और बुराइयों से रोका नहीं करते थे? वो शख़्स कहेगा कि मैं अच्छी बात के लिये कहता तो ज़रूर था लेकिन ख़ुद नहीं करता था और बुरी बात से रोकता भी था लेकिन ख़ुद करता था। (राजेअ: 3267)

तश्रीह: हज़रत उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) का मतलब ये था कि मेरी निस्बत तुम लोग ये ख़्याल न करना कि मैं उष्मान (रज़ि.) को नेक बात समझाने में मुराहिनत और सुस्ती करता हू और उष्मान (रज़ि.) की इस वजह से कि वो हाकिम हैं ख़्वाह मख़्वाह ख़ुशामद के तौर पर ता'रीफ़ करता हूँ। कुछ ने कहा मतलब ये है कि जो शख़्स दो आदमियों पर भी हाकिम बने मैं उसकी ता'रीफ़ करने वाला नहीं, इसलिये कि हुकूमत बड़े मुवाख़िज़ा की चीज़ है। हाकिम को अदल और इंसाफ़ और रिआया की पूरी ख़बरगीरी का इंतिज़ाम करना चाहिये तो हाकिम शख़्स के लिये यही ग़नीमत है कि हुकूमत की वजह से और मुवाख़िज़ा में गिरफ़्तार न हो, चहजा ये कि भलाई और षवाब हासिल करे। उसामा (रज़ि.) ने उस दोज़ख़ी आदमी से ये हदीष बयान करके लोगों को ये समझाया कि तुम मेरी निस्बत ये गुमान न करना कि मैं उष्मान (रज़ि.) को नेक सलाह देने में कोताही करता हूँ क्या मैं क़यामत के दिन अपना हाल उस शख़्स का सा कर लूँगा जो अंतड़ियों को उठाए हुए गधे की तरह घूमेगा या'नी अगर मैं तुम लोगों को ये कहूँगा कि बुरी बात देखने पर मना किया करो और जो कोई बुरा काम करे उसको समझाकर उसे ऐसे काम से दूर रखा करो और ख़ुद मैं ऐसा न करूँ बल्कि बुरे कामों को देखकर खामोश रह जाऊँ तो मेरा हाल उसी शख़्स का सा होना है।

١٨- باب

बाब 18

٧٠٩٩- حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ الْهَيْثَمِ، حَدَّثَنَا عَوْفٌ، عَنِ الْحَسَنِ عَنْ أَبِي بَكْرَةَ قَالَ: لَقَدْ نَفَعَنِي اللهُ بِكَلِمَةٍ أَيَّامَ الْجَمَلِ لَمَّا بَلَغَ النَّبِيَّ ﷺ أَنَّ فَارِسًا مَلَّكُوا ابْنَةَ كِسْرَى قَالَ: ((لَنْ يُفْلِحَ قَوْمٌ وَلَّوْا أَمْرَهُمُ امْرَأَةً)).

[راجع: ٤٤٢٥]

7099. हमसे उष्मान बिन हैशम ने बयान किया, कहा हमसे औफ़ ने बयान किया, कहा उनसे हसन ने और उनसे अबूबक्र (रज़ि.) ने बयान किया कि जंगे जमल के ज़माने में मुझे एक कलिमा ने फ़ायदा पहुँचाया जब नबी करीम (ﷺ) को मा'लूम हुआ कि फ़ारस की सल्तनत वालों ने बौरान नामी किसरा की बेटी को बादशाह बना लिया है तो आपने फ़र्माया कि वो क़ौम कभी फ़लाह नहीं पाएगी जिसकी हुकूमत एक औरत के हाथ में हो। (राजेअ: 4425)

तश्रीह: जंगे जमल में हज़रत आइशा (रज़ि.) हज़रत अली (रज़ि.) के मुक़ाबिल फ़रीक़ की सरदार थीं, नतीजा नाकामी हुआ। हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) के क़ौल का यही मतलब है। हज़रत आइशा (रज़ि.) को भड़काने वाले चंद मुनाफ़िक़ क़िस्म के फ़सादी लोग थे। जिन्होंने हज़रत उष्मान (रज़ि.) के ख़ून का बदला लेने के बहाने मुसलमानों को आपस में लड़ाना चाहा और हज़रत आइशा (रज़ि.) पर अपना जादू चलाकर उनको फ़ौज का सरदार बना लिया और जंगे जमल वाक़ेअ हुई, जिसमें सरासर मुनाफ़िक़ यहूदी सिफ़त लोगों का हाथ था।

٧١٠٠- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ،

7100. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, उन्होंने

कहा हमसे यह्या बिन आदम ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अबूबक्र बिन अय्याश ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अबू हुसैन ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अबू मरयम अब्दुल्लाह बिन ज़ियाद असदी ने बयान किया कि जब तलहा, ज़ुबैर और आइशा (रज़ि.) बस्रा की तरफ़ रवाना हुए तो अली (रज़ि.) ने अम्मार बिन यासिर और हसन बिन अली (रज़ि.) को भेजा। ये दोनों बुज़ुर्ग हमारे पास कूफ़ा आए और मिम्बर पर चढ़े। हसन बिन अली (रज़ि.) मिम्बर के ऊपर सबसे ऊँची जगह थे और अम्मार बिन यासिर (रज़ि.) उनसे नीचे थे। फिर हम उनके पास जमा हो गये और मैंने अम्मार (रज़ि.) को ये कहते सुना कि आइशा (रज़ि.) बस्रा गई हैं और अल्लाह की क़सम वो दुनिया और आख़िरत में तुम्हारे नबी (ﷺ) की पाक बीवी हैं लेकिन अल्लाह तबारक व तआला ने तुम्हें आज़माया है ताकि जान ले कि तुम उस अल्लाह की इताअत करते हो या हज़रत आइशा (रज़ि.) की।

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ آدَمَ، حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنِ عَيَّاشٍ، حَدَّثَنَا أَبُو حَصِينٍ، حَدَّثَنَا أَبُو مَرْيَمَ عَبْدُ اللهِ بْنُ زِيَادٍ الأَسَدِيُّ قَالَ: لَمَّا صَارَ طَلْحَةُ وَالزُّبَيْرُ وَعَائِشَةُ إِلَى الْبَصْرَةِ بَعَثَ عَلِيٌّ عَمَّارَ بْنَ يَاسِرٍ وَحَسَنَ بْنَ عَلِيٍّ فَقَدِمَا عَلَيْنَا الْكُوفَةَ فَصَعِدَا الْمِنْبَرَ فَكَانَ الْحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ فَوْقَ الْمِنْبَرِ فِي أَعْلاَهُ وَقَامَ عَمَّارٌ أَسْفَلَ مِنَ الْحَسَنِ فَاجْتَمَعْنَا إِلَيْهِ فَسَمِعْتُ عَمَّارًا يَقُولُ: إِنَّ عَائِشَةَ قَدْ سَارَتْ إِلَى الْبَصْرَةِ وَوَاللهِ إِنَّهَا لَزَوْجَةُ نَبِيِّكُمْ ﷺ فِي الدُّنْيَا وَالآخِرَةِ وَلَكِنَّ اللهَ تَبَارَكَ وَتَعَالَى ابْتَلاَكُمْ لِيَعْلَمَ إِيَّاهُ تُطِيعُونَ أَمْ هِيَ.

तश्रीह: अम्मार (रज़ि.) का मतलब ये था कि हज़रत अली (रज़ि.) ख़लीफ़ा-ए-बरहक़ हैं और ख़लीफ़ा की इताअत अल्लाह और रसूल की इताअत है। इस्माईली की रिवायत में यूँ है कि अम्मार (रज़ि.) ने लोगों को हज़रत आइशा (रज़ि.) से लड़ने के लिये बरागीख़्ता किया और हज़रत हसन (रज़ि.) ने हज़रत अली (रज़ि.) की तरफ़ से ये पैग़ाम सुनाया, मैं लोगों को अल्लाह की याद दिलाकर ये कहता हूँ वो भागें नहीं अगर मैं मज़्लूम हूँ तो अल्लाह मेरी मदद करेगा और अगर मैं ज़ालिम हूँ तो अल्लाह मुझको तबाह करेगा। अल्लाह की क़सम! तलहा और ज़ुबैर (रज़ि.) ने ख़ुद मुझसे बेअत की फिर बेअत तोड़कर हज़रत आइशा (रज़ि.) के साथ लड़ने के लिये निकले। अब्दुल्लाह बिन बुदैल कहते हैं जंग शुरू होते वक़्त मैं हज़रत आइशा (रज़ि.) के कजावे के पास आया, मैंने कहा उम्मुल मोमिनीन जब उष्मान (रज़ि.) शहीद हुए तो मैं आपके पास आया, आपने ख़ुद फ़र्माया कि अब अली बिन अबी तालिब (रज़ि.) के साथ रहना और फिर अब आप ख़ुद उससे लड़ना चाहती हैं ये क्या बात है? हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कुछ जवाब न दिया। आख़िर उनके ऊँट की कूँचें काटी गईं फिर मैं और उनके भाई मुहम्मद बिन अबीबक्र दोनों उतरे और कजावे को उठाकर हज़रत अली (रज़ि.) के पास लाए। हज़रत अली (रज़ि.) ने उनको घर में ज़नाना में भेज दिया।

7101. हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इब्ने अबी ग़निया ने बयान किया, उनसे हकम ने बयान किया और उनसे अबू वाइल ने बयान किया कि कूफ़ा में अम्मार (रज़ि.) मिम्बर पर खड़े हुए और आइशा (रज़ि.) और उनकी रवानगी का ज़िक्र किया और कहा कि बिलाशुब्हा वो दुनिया और आख़िरत में तुम्हारे नबी (ﷺ) की ज़ोजा हैं लेकिन तुम उनके बारे में आजमाए गये हो। (राजेअ : 3772)

٧١٠١- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي غَنِيَّةَ، عَنِ الْحَكَمِ، عَنْ أَبِي وَائِلٍ قَامَ عَمَّارٌ عَلَى مِنْبَرِ الْكُوفَةِ فَذَكَرَ عَائِشَةَ وَذَكَرَ مَسِيرَهَا وَقَالَ : إِنَّهَا زَوْجَةُ نَبِيِّكُمْ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي الدُّنْيَا وَالآخِرَةِ، وَلَكِنَّهَا مِمَّا ابْتُلِيتُمْ [راجع: ٣٧٧٢]

हज़रत अम्मार बिन यासिर (रज़ि.) क़दीमुल इस्लाम हैं। 93 साल की उम्र में इंतिक़ाल फ़र्माया रज़ियल्लाहु अन्हु व अरज़ाहू। ये तमाम हज़रात आख़िरत में, **व नज़अना मा फ़ी सुदूरिहिम ....** आयत के मिस्दाक़ होंगे, इंशाअल्लाह।

٧١٠٢، ٧١٠٣، ٧١٠٤- حَدَّثَنَا بَدَلُ بْنُ الْمُحَبَّرِ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، أَخْبَرَنِي عَمْرٌو، سَمِعْتُ أَبَا وَائِلٍ يَقُولُ: دَخَلَ أَبُو مُوسَى وَأَبُو مَسْعُودٍ عَلَى عَمَّارٍ حَيْثُ بَعَثَهُ عَلِيٌّ إِلَى أَهْلِ الْكُوفَةِ يَسْتَنْفِرُهُمْ فَقَالاَ : مَا رَأَيْنَاكَ أَتَيْتَ أَمْرًا أَكْرَهَ عِنْدَنَا مِنْ إِسْرَاعِكَ فِي هَذَا الأَمْرِ مُنْذُ أَسْلَمْتَ فَقَالَ عَمَّارٌ: مَا رَأَيْتُ مِنْكُمَا أَسْلَمْتُمَا أَمْرًا أَكْرَهَ عِنْدِي مِنْ إِبْطَائِكُمَا عَنْ هَذَا الأَمْرِ وَكَسَاهُمَا حُلَّةً، حُلَّةً، ثُمَّ رَاحُوا إِلَى الْمَسْجِدِ.[طرفه في : ٧١٠٦].

[طرفه في : ٧١٠٥].[طرفه في : ٧١٠٧].

7102, 103, 104. हमसे बदल बिन मुहब्बर ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, कहा कि मुझको अ़म्र ने ख़बर दी कि मैंने अबू वाइल से सुना, उन्होंने बयान किया कि अबू मूसा और अबू मसऊ़द (रज़ि.) दोनों अ़म्मार बिन यासिर (रज़ि.) के पास गये जब उन्हें अ़ली (रज़ि.) ने अहले कूफ़ा के पास इसलिये भेजा था कि लोगों को लड़ने के लिये तैयार करें। अबू मूसा और अबू मसऊ़द (रज़ि.) दोनों अ़म्मार (रज़ि.) से कहने लगे जबसे तुम मुसलमान हुए हो हमने कोई बात इससे ज़्यादा बुरी नहीं देखी जो तुम उस काम में जल्दी कर रहे हो। अ़म्मार (रज़ि.) ने जवाब दिया मैंने भी जबसे तुम दोनों मुसलमान हुए हो तुम्हारी कोई बात इससे बुरी नहीं देखी जो तुम उस काम में देर कर रहे हो। अबू मसऊ़द (रज़ि.) ने अ़म्मार (रज़ि.) और अबू मूसा (रज़ि.) दोनों को एक एक कपड़े का नया जोड़ा पहनाया फिर तीनों मिलकर मस्जिद में तशरीफ़ ले गये। (दीगर मक़ामात : 7105, 7107)

٧١٠٥، ٧١٠٦، ٧١٠٧- حَدَّثَنَا عَبْدَانُ، عَنْ أَبِي حَمْزَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ شَقِيقِ بْنِ سَلَمَةَ كُنْتُ جَالِسًا مَعَ أَبِي مَسْعُودٍ وَأَبِي مُوسَى وَعَمَّارٍ فَقَالَ : أَبُو مَسْعُودٍ : مَا مِنْ أَصْحَابِكَ أَحَدٌ إِلاَّ لَوْ شِئْتُ لَقُلْتُ فِيهِ غَيْرَكَ، وَمَا رَأَيْتُ مِنْكَ شَيْئًا مُنْذُ صَحِبْتَ النَّبِيَّ ﷺ أَعْيَبَ عِنْدِي مِنِ اسْتِسْرَاعِكَ فِي هَذَا الأَمْرِ قَالَ عَمَّارٌ يَا أَبَا مَسْعُودٍ وَمَا رَأَيْتُ مِنْكَ وَلاَ مِنْ صَاحِبِكَ هَذَا شَيْئًا مُنْذُ صَحِبْتُمَا النَّبِيَّ ﷺ أَعْيَبَ عِنْدِي مِنْ إِبْطَائِكُمَا فِي هَذَا الأَمْرِ فَقَالَ أَبُو مَسْعُودٍ : وَكَانَ مُوسِرًا يَا غُلاَمُ هَاتِ حُلَّتَيْنِ فَأَعْطَى إِحْدَاهُمَا أَبَا مُوسَى

7105,106,107. हमसे अ़ब्दान ने बयान किया, उनसे अबू हम्ज़ा ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे शक़ीक़ बिन सलमा ने कि मैं अबू मसऊ़द, अबू मूसा और अ़म्मार (रज़ि.) के साथ बैठा हुआ था। अबू मसऊ़द (रज़ि.) ने अ़म्मार (रज़ि.) से कहा हमारे साथ वाले जितने लोग हैं मैं अगर चाहूँ तो तुम्हारे सिवा उनमें से हर एक का कुछ न कुछ ऐ़ब बयान कर सकता हूँ। (लेकिन तुम एक बेऐ़ब हो) और जबसे तुमने आँहज़रत (ﷺ) की सुहबत इख़्तियार की, मैंने कोई ऐ़ब का काम तुम्हारा नहीं देखा, एक यही ऐ़ब का काम देखता हूँ, तुम इस दौर में या'नी लोगों को जंग के लिये उठाने मे जल्दी कर रहे हो। अ़म्मार (रज़ि.) ने कहा अबू मसऊ़द (रज़ि.) तुमसे और तुम्हारे साथी अबू मूसा अश्अ़री से जबसे तुम दोनों ने आँहज़रत (ﷺ) की सुहबत इख़्तियार की है मैंने कोई ऐ़ब का काम उससे ज़्यादा नहीं देखा जो तुम दोनों उस काम में देर कर रहे हो। इस पर अबू मसऊ़द (रज़ि.) ने कहा और वो मालदार आदमी थे कि ऐ ग़ुलाम! दो हुल्ले लाओ। चुनाँचे उन्होंने एक हुल्ला अबू मूसा (रज़ि.) को दिया और दूसरा अ़म्मार (रज़ि.) को और

وَالأُخْرَى عَمَّارًا وَقَالَ : رُوحَا لِيهِ إِلَى الْجُمُعَةِ.
[راجع: ٧١٠٢، ٧١٠٣، ٧١٠٤]

कहा कि आप दोनों भाई कपड़े पहनकर जुम्आ पढ़ने चलें। (राजेअ: 7102,103,104)

तश्रीह: हुआ ये था कि अबू मूसा अश्अरी (रज़ि.) ह़ज़रत उ़ष्मान (रज़ि.) की तरफ़ से कूफ़ा के ह़ाकिम थे। ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) ने उन्हीं को क़ायम रखा। जब ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) एक बड़ी फ़ौज के साथ बस़रा तशरीफ़ ले गईं और त़लह़ा (रज़ि.) और ज़ुबैर (रज़ि.) दोनों ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) की बेअ़त तोड़कर उनके साथ गये तो ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) ने अबू मूसा (रज़ि.) को कहला भेजा कि मुसलमानों को जंग के लिये तैयार रख और ह़क़ की मदद कर। अबू मूसा (रज़ि.) ने साइब बिन मालिक अश्अ़री से राय ली। उन्होंने भी राय दी कि ख़लीफ़ा-ए-वक़्त के हुक्म पर चलना चाहिये लेकिन अबू मूसा (रज़ि.) ने न सुना और उल्टा लोगों से ये कहने लगे कि जंग का इरादा न करो। आख़िर ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) ने क़ुर्ज़ा बिन कअ़ब को कूफ़ा का ह़ाकिम किया और अबू मूसा (रज़ि.) को मअ़ज़ूल किया। उधर त़लह़ा (रज़ि.) और ज़ुबैर (रज़ि.) ने बस़रा जाकर क्या किया कि ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) के नाइब इब्ने ह़नीफ़ा को गिरफ़्तार कर लिया। ये तो ए'लानिया बग़ावत और अ़हदशिकनी ठहरी और ऐसे लोगो से लड़ना बमौजिब नस़्से क़ुर्आनी, **फ़क़ातिलुल लती तब्ग़ी ह़त्ता तफ़िअ इला अम्रिल्लाह** (अल हुजुरात : 9) ज़रूर था और अ़म्मार (रज़ि.) की राय बिलकुल स़ाइब थी कि ख़लीफ़ा-ए-वक़्त की ता'मीले हुक्म में देर न करना चाहिये और आँह़ज़रत (ﷺ) ने ख़ुद अ़ली (रज़ि.) से फ़र्माया था या अ़ली! तुम बेअ़त तोड़ने वालों और बाग़ियों से लड़ोगे। कहते हैं जब जंगे जमल शुरू हुई सन 36 हिजरी 15 जमादिल ऊला को तो एक शख़्स ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) के पास आया कहने लगे तुम उन लोगों से कैसे लड़ते हो उन्होंने कहा मैं ह़क़ पर लड़ता हूँ। वो कहने लगा वो भी यही कहते हैं हम ह़क़ पर लड़ते हैं। अ़ली (रज़ि.) ने कहा, मैं उनसे बेअ़त शिकनी और जमाअ़त को छोड़ देने पर लड़ता हूँ। ग़फ़रल्लाहु लहुम अज्मईन।

١٩– باب إِذَا أَنْزَلَ اللهُ بِقَوْمٍ عَذَابًا

बाब 19 : जब अल्लाह किसी क़ौम पर अ़ज़ाब नाज़िल करता है तो सब क़िस्म के लोग उसमें शामिल हो जाते हैं

٧١٠٨– حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عُثْمَانَ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ، أَخْبَرَنَا يُونُسُ، عَنِ الزُّهْرِيِّ أَخْبَرَنِي حَمْزَةُ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ أَنَّهُ سَمِعَ ابْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا يَقُولُ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِذَا أَنْزَلَ اللهُ بِقَوْمٍ عَذَابًا أَصَابَ الْعَذَابُ مَنْ كَانَ فِيهِمْ ثُمَّ بُعِثُوا عَلَى أَعْمَالِهِمْ)).
[راجع: ٢٧٠٤]

7108. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन उ़ष्मान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, उन्हें यूनुस ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुहरी ने, उन्हें ह़म्ज़ा बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने ख़बर दी और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, जब अल्लाह किसी क़ौम पर अ़ज़ाब नाज़िल करता है तो अ़ज़ाब उन सब लोगों पर आता है जो उस क़ौम में होते हैं फिर उन्हें उनके आ'माल के मुत़ाबिक़ उठाया जाएगा। (राजेअ : 2704)

आयते क़ुर्आनी, **वत्तक़ू फ़ित्नतल ला तुस़ीबन्नल लज़ीन ज़लमू मिन्कुम ख़ास़्स़ा** में इसी ह़क़ीक़त को बयान किया गया है। सच है कि चने के साथ गेहूँ पिस जाता है।

٢٠– باب قَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ لِلْحَسَنِ بْنِ عَلِيٍّ ((إِنَّ ابْنِي هَذَا لَسَيِّدٌ وَلَعَلَّ اللهُ

बाब 20 : नबी करीम (ﷺ) का ह़ज़रत ह़सन (रज़ि.) के बारे में फ़र्माना

मेरा ये बेटा सरदार है और यक़ीनन अल्लाह पाक इसके ज़रिये मुसलमानों की दो जमाअतों में सुलह कराएगा।

أَنْ يُصْلِحَ بِهِ بَيْنَ فِئَتَيْنِ مِنَ الْمُسْلِمِينَ)).

जो आपस में लड़ाई चाहते होंगे मगर उनके इक़्दामे सुलह से वो जंग ख़त्म हो जाएगी। हज़रत हसन (रज़ि.) ने हज़रत मुआविया (रज़ि.) से सुलह करके फ़साद को ख़त्म करा दिया जो बेहद क़ाबिले ता'रीफ़ है।

7109. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, कहा हमसे इस्राईल अबू मूसा ने बयान किया और मेरी उनसे मुलाक़ात कूफ़ा में हुई थी। वो इब्ने शुबरमा के पास आए और कहा कि मुझे ईसा (मंसूर के भाई और कूफ़ा के वाली) के पास ले चलो ताकि मैं उसे नसीहत करूँ। ग़ालिबन इब्ने शुबरमा ने डर महसूस किया और नहीं ले गये। उन्होंने उस पर बयान किया कि हमसे हसन बसरी ने बयान किया कि जब हसन बिन अली अमीर मुआविया (रज़ि.) के ख़िलाफ़ लश्कर लेकर निकले तो अम्र बिन आस ने अमीर मुआविया (रज़ि.) से कहा कि मैं ऐसा लश्कर देखता हूँ जो उस वक़्त तक वापस नहीं जा सकता जब तक अपने मुक़ाबिल को भगा न ले। फिर अमीर मुआविया (रज़ि.) ने कहा कि मुसलमानों के अहलो अयाल का कौन कफ़ील होगा? जवाब दिया कि मैं। फिर अब्दुल्लाह बिन आमिर और अब्दुर्रहमान बिन समुरह ने कहा कि हम अमीर मुआविया (रज़ि.) से मिलते हैं (और उनसे सुलह के लिये कहते हैं) हसन बसरी (रज़ि.) ने कहा कि मैंने अबूबक्र (रज़ि) से सुना, उन्होंने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ख़ुत्बा दे रहे थे कि हसन (रज़ि.) आए तो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मेरा ये बेटा सय्यद है और उम्मीद है कि इसके ज़रिये अल्लाह मुसलमानों की दो जमाअतों में सुलह कराएगा।

٧١٠٩- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، حَدَّثَنَا إِسْرَائِيلُ أَبُو مُوسَى وَلَقِيتُهُ بِالْكُوفَةِ جَاءَ إِلَى ابْنِ شُبْرُمَةَ فَقَالَ: أَدْخِلْنِي عَلَى عِيسَى فَأَعِظَهُ فَكَأَنَّ ابْنَ شُبْرُمَةَ خَافَ عَلَيْهِ فَلَمْ يَفْعَلْ قَالَ: حَدَّثَنَا الْحَسَنُ قَالَ : لَمَّا سَارَ الْحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا إِلَى مُعَاوِيَةَ بِالْكَتَائِبِ قَالَ عَمْرُو بْنُ الْعَاصِ لِمُعَاوِيَةَ: أَرَى كَتِيبَةً لاَ تُوَلِّي حَتَّى تُدْبِرَ أُخْرَاهَا قَالَ مُعَاوِيَةُ: مَنْ لِذَرَارِيِّ الْمُسْلِمِينَ؟ فَقَالَ: أَنَا فَقَالَ عَبْدُ اللهِ بْنُ عَامِرٍ وَ عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ سَمُرَةَ نَلْقَاهُ فَنَقُولُ لَهُ الصُّلْحَ قَالَ الْحَسَنُ: وَلَقَدْ سَمِعْتُ أَبَا بَكْرَةَ قَالَ: بَيْنَا النَّبِيُّ ﷺ يَخْطُبُ جَاءَ الْحَسَنُ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِنَّ ابْنِي هَذَا سَيِّدٌ، وَلَعَلَّ اللهَ أَنْ يُصْلِحَ بِهِ بَيْنَ فِئَتَيْنِ مِنَ الْمُسْلِمِينَ)).

तश्रीह : हज़रत हसन (रज़ि.) के इस इक़्दाम से मुसलमानों में एक बड़ी जंग टल गई जबकि हालात हज़रत हसन (रज़ि.) के लिये साज़गार थे मगर आपने उस ख़ानाजंगी को हुस्ने तदब्बुर से ख़त्म कर दिया। अल्लाह पाक आपकी रूहे पाक पर हज़ारों रहमतें नाज़िल फ़र्माए। इस तरह रसूले करीम (ﷺ) की ये पेशीनगोई सच्ची हो गई जो इस हदीष़ में मज़्कूर है। **अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदिंव व अला आलिही व अस्हाबिही अज्मईन।** फिर ये दोनों हज़रत हसन (रज़ि.) के पास आए और सुलह की तज्वीज़ ठहर गई और उन्होंने सुलह कर ली। हज़रत हसन (रज़ि.) के मुक़द्दम लश्कर के सरदार क़ैस बिन सअद थे। ये दोनों लश्कर कूफ़ा के क़रीब एक दूसरे से मिले। हज़रत हसन (रज़ि.) ने उन लश्करों की ता'दाद पर नज़र डालकर हज़रत मुआविया (रज़ि.) को पुकारा फ़र्माया मैंने अपने परवरदिगार पास जो मिलने वाला है उसको इख़्तियार किया अगर ख़िलाफ़त अल्लाह ने तुम्हारे लिये लिखी है तो मुझको मिलने वाली नहीं और अगर मेरे लिये लिखी है तो मैंने तुमको दे डाली। उस वक़्त हज़रत मुआविया (रज़ि.) के लश्कर वालों ने तक्बीर कही और मुग़ीरह बिन शुअबा (रज़ि.) ने ये हदीष़ सुनाई, **इन्नब्नी हाज़ा सय्यिदुन** अख़ीर तक। फिर हज़रत हसन (रज़ि.) ने ख़ुत्बा सुनाया और

ख़िलाफ़त मुआविया (रज़ि.) के सुपुर्द कर दी, इस शर्त पर कि वो अल्लाह की किताब और सुन्नते रसूलुल्लाह (ﷺ) पर अमल करते रहें। लोग हज़रत हसन (रज़ि .) को कहने लगे **या आरिल मुस्लिमीन** या'नी मुसलमानों के नंग। आपने जवाब दिया **अल आर ख़ैरुम् मिनन्नार**। जो सुलहनामा क़रार पाया था उसमें ये भी शर्त थी कि हज़रत मुआविया (रज़ि.) के बाद फिर ख़िलाफ़त हज़रत हसन को मिलेगी। मुहम्मद बिन क़ुदामा ने ब सनद सहीह और इब्ने अबी ख़ुषैमा ने ऐसा ही रिवायत किया है कि हज़रत हसन (रज़ि.) ने हज़रत मुआविया (रज़ि.) से इसी शर्त पर बेअत की थी।

7110. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने, कहा कि अम्र ने बयान किया, उन्हें मुहम्मद बिन अली ने ख़बर दी, उन्हें उसामा (रज़ि.) के गुलाम हरमला ने ख़बर दी। अम्र ने बयान किया कि मैंने हरमला को देखा था। हरमला ने बयान किया कि मुझे उसामा ने अली (रज़ि.) के पास भेजा और मुझसे कहा, उस वक़्त तुमसे अली (रज़ि.) पूछेंगे कि तुम्हारे साथी (उसामा रज़ि.) जंगे जमल व सिफ़्फ़ीन से क्यूँ पीछे रह गये थे तो उनसे कहना कि उन्होंने आपसे कहा है कि अगर आप शेर के मुँह में हों तब भी मैं उसमें भी आपके साथ रहू लेकिन ये मामला ही ऐसा है या'नी मुसलमानों की आपस की जंग तो (उसमें शिर्कत सहीह) नहीं मा'लूम हुई (हरमला कहते हैं कि) चुनाँचे उन्होंने कोई चीज़ नहीं दी। फिर मैं, हसन, हुसैन और अब्दुल्लाह बिन जा'फ़र (रज़ि.) के पास गया तो उन्होंने मेरी सवारी पर इतना माल लदवा दिया जितना कि ऊँट उठा न सकता था।

٧١١٠- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ : قَالَ عَمْرٌو أَخْبَرَنِي مُحَمَّدُ بْنُ عَلِيٍّ أن حَرْمَلَةَ مَوْلَى أُسَامَةَ أَخْبَرَهُ قَالَ عَمْرٌو: وَقَدْ رَأَيْتُ حَرْمَلَةَ قَالَ: أَرْسَلَنِي أُسَامَةُ إِلَى عَلِيٍّ وَقَالَ: إِنَّهُ سَيَسْأَلُكَ الآنَ فَيَقُولُ :مَا خَلَّفَ صَاحِبَكَ؟ فَقُلْ لَهُ : يَقُولُ لَكَ لَوْ كُنْتَ فِي شِدْقِ الأَسَدِ لأَحْبَبْتُ أَنْ أَكُونَ مَعَكَ فِيهِ، وَلَكِنْ هَذَا أَمْرٌ لَمْ أَرَهُ فَلَمْ يُعْطِنِي شَيْئًا فَذَهَبْتُ إِلَى حَسَنٍ وَحُسَيْنٍ وَابْنِ جَعْفَرٍ فَأَوْقَرُوا لِي رَاحِلَتِي.

तश्रीह : हज़रत उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) हज़रत उम्मे ऐमन के बत्न से पैदा हुए जो आप (ﷺ) के वालिद जनाब अब्दुल्लाह की आज़ादकर्दा लौण्डी थी जिसने आँहज़रत (ﷺ) की परवरिश की थी। हज़रत उसामा आँहज़रत (ﷺ) के महबूबतरीन ख़ादिम थे। वफ़ाते नबवी के वक़्त उनकी उम्र बीस साल की थी। वादियुल क़ुरा में सन 54 हिजरी में शहीद हुए, रज़ियल्लाहु अन्हु व अरज़ाहू।

बाब 21 : कोई शख़्स लोगों के सामने एक बात कहे फिर उसके पास से निकलकर दूसरी बात कहने लगे

तो ये दग़ाबाज़ी है।

٢١- باب إِذَا قَالَ عِنْدَ قَوْمٍ شَيْئًا ثُمَّ خَرَجَ فَقَالَ بِخِلاَفِهِ

7111. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, उन्हों ने कहा हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अय्यूब ने, उनसे नाफ़ेअ ने कि जब अहले मदीना ने यज़ीद बिन मुआविया की बेअत से इंकार किया तो अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने अपने ख़ादिमों और लड़कों को जमा किया और कहा कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना है। आपने फ़र्माया कि हर बहाना करने वाले के लिये क़यामत के दिन एक झण्डा खड़ा किया जाएगा

٧١١١- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، عَنْ أَيُّوبَ، عَنْ نَافِعٍ قَالَ: لَمَّا خَلَعَ أَهْلُ الْمَدِينَةِ يَزِيدَ بْنَ مُعَاوِيَةَ جَمَعَ ابْنُ عُمَرَ حَشَمَهُ وَوَلَدَهُ فَقَالَ: إِنِّي سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((يُنْصَبُ لِكُلِّ غَادِرٍ لِوَاءٌ يَوْمَ الْقِيَامَةِ،

وَإِنَّا قَدْ بَايَعْنَا هَذَا الرَّجُلَ عَلَى بَيْعِ اللهِ وَرَسُولِهِ، وَإِنِّي لاَ أَعْلَمُ غَدْرًا أَعْظَمَ مِنْ أَنْ يُبَايَعَ رَجُلٌ عَلَى بَيْعِ اللهِ وَرَسُولِهِ، ثُمَّ يُنْصَبُ لَهُ الْقِتَالُ وَإِنِّي لاَ أَعْلَمُ أَحَدًا مِنْكُمْ خَلَعَهُ وَلاَ بَايَعَ فِي هَذَا الأَمْرِ إِلاَّ كَانَتِ الْفَيْصَلَ بَيْنِي وَبَيْنَهُ)).

[راجع: ٣١٨٨]

और हमने उस शख़्स (यज़ीद) की बेअ़त अल्लाह और उसके रसूल के नाम पर की है और मेरे इल्म में कोई बहाना इससे बढ़कर नहीं है कि किसी शख़्स से अल्लाह और उसके रसूल के नाम पर बेअ़त की जाए और फिर उससे जंग की जाए और देखो मदीनावालों! तुममें से जो कोई यज़ीद की बेअ़त को तोड़े और दूसरे किसी से बेअ़त करे तो मुझमें और उसमें कोई रिश्ता नहीं रहा, मैं उससे अलग हूँ। (राजेअ़ : 3188)

तश्रीह : हुआ ये था कि पहले पहल मदीना वालों ने यज़ीद का अच्छा समझा तो उससे बेअ़त कर ली थी फिर लोगों को उसके ह़ाल पूछने के बाद यज़ीद के नाइब उ़स्मान बिन मुह़म्मद इब्ने अबी सुफ़यान को मदीना से निकाल दिया और यज़ीद की बेअ़त तोड़ दी।

٧١١٢- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ، حَدَّثَنَا أَبُو شِهَابٍ، عَنْ عَوْفٍ عَنْ أَبِي الْمِنْهَالِ قَالَ: لَمَّا كَانَ ابْنُ زِيَادٍ وَمَرْوَانُ بِالشَّامِ وَوَثَبَ ابْنُ الزُّبَيْرِ بِمَكَّةَ وَوَثَبَ الْقُرَّاءُ بِالْبَصْرَةِ، فَانْطَلَقْتُ مَعَ أَبِي إِلَى أَبِي بَرْزَةَ الأَسْلَمِيِّ حَتَّى دَخَلْنَا عَلَيْهِ فِي دَارِهِ وَهُوَ جَالِسٌ فِي ظِلِّ عُلِّيَّةٍ لَهُ مِنْ قَصَبٍ، فَجَلَسْنَا إِلَيْهِ فَأَنْشَأَ أَبِي يَسْتَطْعِمُهُ الْحَدِيثَ فَقَالَ: يَا أَبَا بَرْزَةَ أَلاَ تَرَى مَا وَقَعَ فِيهِ النَّاسُ؟ فَأَوَّلُ شَيْءٍ سَمِعْتُهُ تَكَلَّمَ بِهِ إِنِّي احْتَسَبْتُ عِنْدَ اللهِ أَنِّي أَصْبَحْتُ سَاخِطًا عَلَى أَحْيَاءِ قُرَيْشٍ إِنَّكُمْ يَا مَعْشَرَ الْعَرَبِ كُنْتُمْ عَلَى الْحَالِ الَّذِي عَلِمْتُمْ مِنَ الذِّلَّةِ وَالْقِلَّةِ وَالضَّلاَلَةِ، وَإِنَّ اللهَ أَنْقَذَكُمْ بِالإِسْلاَمِ وَبِمُحَمَّدٍ ﷺ حَتَّى بَلَغَ بِكُمْ مَا تَرَوْنَ وَهَذِهِ الدُّنْيَا الَّتِي أَفْسَدَتْ بَيْنَكُمْ إِنَّ ذَاكَ الَّذِي بِالشَّامِ وَاللهِ إِنْ يُقَاتِلُ إِلاَّ عَلَى الدُّنْيَا، وَإِنَّ هَؤُلاَءِ الَّذِينَ بَيْنَ أَظْهُرِكُمْ

7112. हमसे अह़मद बिन यूनुस ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे शिहाब ने, बयान किया उनसे औ़फ़ ने बयान किया, उनसे अबी मिन्हाल ने बयान किया कि जब अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ियाद और मरवान शाम में थे और इब्ने ज़ुबैर (रज़ि.) ने मक्का में और ख़्वारिज ने बस़रा में क़ब्ज़ा कर लिया था तो मैं अपने वालिद के साथ ह़ज़रत अबू बर्ज़ा असलमी (रज़ि.) के पास गया। जब हम उनके घर में एक कमरे के साये में बैठे हुए थे जो बांस का बना हुआ था, हम उनके पास बैठ गये और मेरे वालिद उनसे बात करने लगे और कहा ऐ अबू बर्ज़ा! आप नहीं देखते लोग किन बातों में आफ़त और इख़्तिलाफ़ में उलझ गये हैं। मैंने उनकी ज़ुबान से सबसे पहली बात ये सुनी कि मैं जो उन क़ुरैश के लोगों से नाराज़ हूँ तो महज़ अल्लाह की रज़ामन्दी के लिये, अल्लाह मेरा अज्र देने वाला है। अ़रब के लोगों! तुम जानते हो पहले तुम्हारा क्या ह़ाल था तुम गुमराही में गिरफ़्तार थे, अल्लाह ने इस्लाम के ज़रिये और ह़ज़रत मुह़म्मद (ﷺ) के ज़रिये तुमको उस बुरी ह़ालत से नजात दी। यहाँ तक कि तुम इस रुत्बे को पहुँचे। (दुनिया के ह़ाकिम और सरदार बन गये) फिर इसी दुनिया ने तुमको ख़राब कर दिया। देखो! ये शख़्स जो शाम में ह़ाकिम बन बैठा है या'नी मरवान दुनिया के लिये लड़ रहा है। ये लोग जो तुम्हारे सामने हैं (ख़्वारिज) वल्लाह! ये लोग सिर्फ़ दुनिया के लिये लड़ रहे हैं और वो जो मक्का में है अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) वल्लाह! वो भी सिर्फ़ दुनिया के

وَ اللهِ إِنْ يُقَاتِلُونَ إِلاَّ عَلَى دُنْيَا وَإِنَّ ذَاكَ الَّذِي بِمَكَّةَ وَ اللهِ إِنْ يُقَاتِلُ إِلاَّ عَلَى دُنْيَا.
[طرفه في: ٧٢٧١].

लिये लड़ रहे हैं। (दीगर मक़ाम : 7271)

٧١١٣- حَدَّثَنَا آدَمُ بْنُ أَبِي إِيَاسٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ وَاصِلٍ الأَحْدَبِ، عَنْ أَبِي وَائِلٍ، عَنْ حُذَيْفَةَ بْنِ الْيَمَانِ قَالَ: إِنَّ الْمُنَافِقِينَ الْيَوْمَ شَرٌّ مِنْهُمْ عَلَى عَهْدِ النَّبِيِّ ﷺ كَانُوا يَوْمَئِذٍ يُسِرُّونَ وَالْيَوْمَ يَجْهَرُونَ.

7113. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा ने बयान किया, उनसे वासिल अह्दब ने, उनसे अबू वाइल ने और उनसे हुज़ैफ़ह बिन यमान ने बयान किया कि आजकल के मुनाफ़िक़ नबी करीम (ﷺ) के ज़माने के मुनाफ़िक़ीन से बदतर हैं, उस वक़्त छुपाते थे और आज उसका खुल्लम खुल्ला इज़्हार कर रहे हैं।

٧١١٤- حَدَّثَنَا خَلاَّدٌ، حَدَّثَنَا مِسْعَرٌ، عَنْ حَبِيبِ بْنِ أَبِي ثَابِتٍ، عَنْ أَبِي الشَّعْثَاءِ، عَنْ حُذَيْفَةَ قَالَ: إِنَّمَا كَانَ النِّفَاقُ عَلَى عَهْدِ النَّبِيِّ ﷺ فَأَمَّا الْيَوْمَ فَإِنَّمَا هُوَ الْكُفْرُ بَعْدَ الإِيْمَانِ.

7114. हमसे ख़ल्लाद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे मिस्अर ने बयान किया, उनसे ह़बीब बिन अबी ष़ाबित ने बयान किया, उनसे अबुल शअ़शाअ ने बयान किया और उनसे हुज़ैफ़ह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) के ज़माने में निफ़ाक़ था आज तो ईमान के बाद कुफ़्र इख़्तियार करना है।

٢٢- باب لاَ تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى يُغْبَطَ أَهْلُ الْقُبُورِ

बाब 22 : क़यामत क़ायम न होगी यहाँ तक कि लोग क़ब्र वालों पर रश्क न करें

٧١١٥- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، حَدَّثَنِي مَالِكٌ، عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((لاَ تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى يَمُرَّ الرَّجُلُ بِقَبْرِ الرَّجُلِ فَيَقُولُ : يَا لَيْتَنِي مَكَانَهُ)).[راجع: ٨٥]

7115. हमसे इस्माईल ने बयान किया, कहा मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे अबुज़्ज़िनाद ने, उनसे अअ़रज ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया क़यामत क़ायम न होगी यहाँ तक कि एक शख़्स दूसरे की क़ब्र के पास से गुज़रेगा और कहेगा काश! मैं भी इसी की जगह होता। (राजेअ़ : 85)

तश्रीह : ज़माने के ह़ालात इतने ख़राब हो जाएँगे कि लोग ज़िंदगी से तंग आकर मौत की आरज़ू करेंगे। आरज़ू करेंगे काश! हम भी मरकर क़ब्र में गड़ गये होते कि ये आफ़तें और बलाएँ न देखते। कुछ ने कहा ये उस वक़्त होगा जब क़यामत के क़रीब फ़ित्नों की कष़रत होगी, दीन ईमान जाते रहने का डर होगा क्योंकि गुमराह करने वालों का हर त़रफ़ से नरग़ा होगा। ईमानदार मग़्लूब होंगे वही ये आरज़ू करेंगे लेकिन मुस्लिम की रिवायत में यूँ है दुनिया ख़त्म न होगी यहाँ तक कि एक शख़्स क़ब्र पर से गुज़रेगा उस पर लौट जाएगा कहेगा काश! मैं इस क़ब्र वाले की जगह पर होता और ये कहना उसका कुछ दीनदारी की वजह से होगा बल्कि बलाओं और आफ़तों की वजह से। इब्ने मसऊ़द (रज़ि.) ने कहा, एक ज़माना ऐसा आएगा कि अगर मौत बिकती होती तो लोग उसको मोल लेने पर मुस्तैद हो जाते।

٢٣- باب تَغْيِيرِ الزَّمَانِ حَتَّى يَعْبُدُوا

बाब 23 : क़यामत के क़रीब ज़माने का रंग

बदलना और अ़रब में फिर बुतपरस्ती का शुरू होना

الأوثان

7116. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको शुऐब ने ख़बरदी, उनसे ज़ुह्री ने बयान किया, उनसे सईद बिन मुसय्यब ने बयान किया और उन्हें ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने ख़बर दी कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया क़यामत क़ायम नहीं होगी यहाँ तक कि क़बीला दौस की औरतों का ज़ुल ख़ल्सा का (त़वाफ़ करते हुए) खोए से खूब उछलेगा और ज़ु ल ख़ल्सा क़बीला दौस का बुत था जिसको वो ज़माना जाहिलियत में पूजा करते थे।

٧١١٦- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ : قَالَ سَعِيدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ أَخْبَرَنِي أَبُو هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((لاَ تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى تَضْطَرِبَ أَلْيَاتُ نِسَاءِ دَوْسٍ عَلَى ذِي الْخَلَصَةِ، وَذُو الْخَلَصَةِ طَاغِيَةُ دَوْسٍ الَّتِي كَانُوا يَعْبُدُونَ فِي الْجَاهِلِيَّةِ)).

तशरीह़ : कूल्हे मटकाने से मुराद ये है कि उसके गिर्द त़वाफ़ करेंगी मा'लूम हुआ कि का'बा के सिवा और किसी क़ब्र या झण्डे या शद्दे या बुत का त़वाफ़ करना शिर्क है। इस ह़दीष़ से ये भी निकला कि पहले शिर्क और बुतपरस्ती औरतों से निकलेगी क्योंकि औरतें ज़ईफ़ुल ए'तिक़ाद होती हैं, जल्दी से कुफ़्र की बातें इख़्तियार कर लेती हैं, ह़दीष़ से ये भी निकला कि क़यामत तक कुछ न कुछ इस्लाम बाक़ी रहेगा मगर ज़ईफ़ हो जाएगा। जैसे दूसरी ह़दीष़ में है, **बदअल इस्लामु ग़रीबन व सयऊ़दु कमा बदअ।** अ़रब ही के मुल्क से सारे जहान में तौह़ीद फैली है। क़यामत के क़रीब वहाँ भी शिर्क होने लगेगा। दूसरे मुल्कों का क्या कहना वो तो अब भी शिर्क और मुश्रिकों से पटे पड़े हैं। दूसरी रिवायत मे यूँ है कि क़यामत क़ायम न होगी जब तक लात और उ़ज़्ज़ा की फिर से पूजा न शुरू होगी। तीसरी रिवायत में यूँ है यहाँ तक कि मेरी उम्मत के कई क़बीले बुत परस्ती शुरू न कर देंगे। ह़ाकिम की रिवायत में यूँ है यहाँ तक कि बनी आ़मिर की औरतों के मूँढ़े ज़ुल ख़ल्सा के पास न लड़ें और और टक्कर न खाएँ। एक रिवायत में यूँ है यहाँ तक कि मेरी उम्मत के कई क़बीले मुश्रिकों से न मिल जाएँ। मआ़ज़ल्लाह! हमारे पैग़म्बर स़ाह़ब दुनिया में इसीलिये तशरीफ़ लाए थ कि अल्लाह की तौह़ीद जारी करें शिर्क और कुफ़्र और बुतपरस्ती की कमर तोड़ें। बस जो शख़्स़ शिर्क और शिर्क के मक़ामात को मिटाए, बुतों और थानों और झण्डों और क़ब्रों और गुम्बदों को जहाँ पर शिर्क किया जाता है, उनसे दिली नफ़रत करे वही दरह़क़ीक़त पैग़म्बर स़ाह़ब का पैरोकार है और यूँ तो हर कोई दा'वा करता है मैं पैग़म्बर का आशिक़ हूँ, पर ए'लानिया शिर्क होते देखता है और मुँह से एक ह़र्फ़ नहीं निकालता ऐसा ज़ुबानी दा'वा कुछ काम नहीं आएगा।

7117. हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुलैमान ने बयान किया, उनसे अबुल ग़ैष़ ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से फ़र्माया क़यामत उस वक़्त तक क़ायम न होगी यहाँ तक कि क़ह़त़ान का एक शख़्स़ (बादशाह बनकर) निकलेगा और लोगों को अपने डंडे से हाँकेगा। (राजेअ : 3517)

٧١١٧- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنِي سُلَيْمَانُ، عَنْ ثَوْرٍ، عَنْ أَبِي الْغَيْثِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((لاَ تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى يَخْرُجَ رَجُلٌ مِنْ قَحْطَانَ يَسُوقُ النَّاسَ بِعَصَاهُ)).

[راجع: ٣٥١٧]

तशरीह़ : ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) का नाम अ़ब्दुर्रह़मान बिन स़ख़र है। जंगे ख़ैबर में मुसलमान होकर अस्ह़ाबे सुफ़्फ़ा में दाख़िल हुए और सुह़बते नबवी में हमेशा ह़ाज़िर रहे। 78 साल की उ़म्र में 58 हिजरी में इंतिक़ाल फ़र्माया। एक छोटी सी बिल्ली पाल रखी थी, उसी से अबू हुरैरह (रज़ि .) मशहूर हुए रज़ियल्लाहु अ़न्हु व अरज़ाहू। क़यामत के क़रीब

एक ऐसा क़ह्तानी बादशाह होगा।

बाब 24 : मुल्के हिजाज़ से एक आग का निकलना

٢٤- باب خُرُوجِ النَّارِ

और अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया क़यामत की पहली अलामतों मे से एक आग है जो लोगों को पूरब से पश्चिम की तरफ़ हाँककर ले जाएगी।

وَقَالَ أَنَسٌ قَالَ النَّبِيُّ ((أَوَّلُ أَشْرَاطِ السَّاعَةِ نَارٌ تَحْشُرُ النَّاسَ مِنَ الْمَشْرِقِ إِلَى الْمَغْرِبِ)).

7118. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, उन्होंने कहा शुऐब ने ख़बर दी, उन्होंने कहा हमसे ज़ुह्री ने ख़बर दी कि सईद बिन मुसय्यब ने बयान किया कि मुझे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने ख़बर दी कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया क़यामत क़ायम न होगी यहाँ तक कि सरज़मीने हिजाज़ से एक आग निकलेगी और बस़रा में ऊँटों की गर्दनों को रोशन कर देगी।

٧١١٨- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ سَعِيدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ: أَخْبَرَنِي أَبُو هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((لاَ تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى تَخْرُجَ نَارٌ مِنْ أَرْضِ الْحِجَازِ تُضِيءُ أَعْنَاقَ الإِبِلِ بِبُصْرَى)).

ये आग निकल चुकी है जिसकी तफ़्सील हज़रत नवाब सिद्दीक़ हसन ख़ाँ मरहूम ने अपनी किताब इक़्तिराबिस् साअ़त में लिखी है।

7119. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन सईद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे उ़क़्बा बिन ख़ालिद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे उ़बैदुल्लाह ने बयान किया, उनसे ख़ुबैब बिन अ़ब्दुर्रहमान ने बयान किया, उनसे उनके दादा ह़फ़्स बिन आ़सिम ने बयान किया, उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया अन्क़रीब दरियाए फ़रात से सोने का एक ख़ज़ाना निकलेगा पस जो कोई वहाँ मौजूद हो वो उसमें से कुछ न ले।

٧١١٩- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ سَعِيدٍ الْكِنْدِيُّ، حَدَّثَنَا عُقْبَةُ بْنُ خَالِدٍ، حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ، عَنْ خُبَيْبِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ جَدِّهِ حَفْصِ بْنِ عَاصِمٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((يُوشِكُ الْفُرَاتُ أَنْ يَحْسِرَ عَنْ كَنْزٍ مِنْ ذَهَبٍ فَمَنْ حَضَرَهُ فَلاَ يَأْخُذْ مِنْهُ شَيْئًا)).

उ़क़्बा ने बयान किया कि हमसे उ़बैदुल्लाह ने बयान किया, उनसे अबुज़्ज़िनाद ने बयान किया, उनसे अअ़रज ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) ने इसी तरह फ़र्माया। अल्बत्ता उन्होंने ये अल्फ़ाज़ कहे कि (फ़रात से) सोने का एक पहाड़ ज़ाहिर होगा।

قَالَ عُقْبَةُ : وَحَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ حَدَّثَنَا أَبُو الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ مِثْلَهُ إِلاَّ أَنَّهُ قَالَ: ((يَحْسِرُ عَنْ جَبَلٍ مِنْ ذَهَبٍ)).

तो ख़ज़ाने के बदल पहाड़ का लफ़्ज़ है।

बाब 25

٢٥- باب

7120. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन अबी कषीर ने बयान किया, उनसे शुअ़बा ने, उनसे मअ़बद ने

٧١٢٠- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا يَحْيَى، عَنْ شُعْبَةَ، حَدَّثَنَا مَعْبَدٌ سَمِعْتُ حَارِثَةَ بْنَ

बयान किया, उन्होंने ह़ारिषा बिन वहब (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना, आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि स़दक़ा करो क्योंकि अन्क़रीब लोगों पर एक ऐसा ज़माना आएगा जब एक शख़्स़ अपना स़दक़ा लेकर फिरेगा और कोई उसे लेने वाला नहीं मिलेगा। मुसद्दद ने बयान किया कि ह़ारिषा उ़बैदुल्लाह बिन उ़मर के माँ शरीक भाई थे। (राजेअ़ : 1411)

وهْبٍ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((تَصَدَّقُوا فَسَيَأْتِي عَلَى النَّاسِ زَمَانٌ يَمْشِي الرَّجُلُ بِصَدَقَتِهِ فَلاَ يَجِدُ مَنْ يَقْبَلُهَا)) قَالَ مُسَدَّدٌ : حَارِثَةُ أَخُو عُبَيْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ لأُمِّهِ. [راجع: ١٤١١]

कहते हैं कि ये दौर ह़ज़रत उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ के ज़माने में गुज़र चुका है या क़यामत के क़रीब आएगा जब लोग बहुत थोड़े रह जाएँगे।

7121. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐ़ब ने ख़बर दी, कहा हमसे अबुज़्ज़िनाद ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुर्रह़मान ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया क़यामत उस वक़्त तक क़ायम नहीं होगी जब तक दो अ़ज़ीम जमाअ़तें जंग न करेंगी। उन दोनों जमाअ़तों के बीच बड़ी ख़ूँरेज़ी होगी। ह़ालाँकि दोनों का दा'वा एक ही होगा और यहाँ तक कि बहुत से झूठ दज्जाल भेजे जाएँगे। तक़रीबन तीस दज्जाल। उनमें से हर एक दा'वा करेगा कि वो अल्लाह का रसूल है और यहाँ तक कि इल्म उठा लिया जाएगा और ज़लज़लों की कष़रत होगी और ज़माना क़रीब हो जाएगा और फ़ित्ने ज़ाहिर हो जाएँगे और हर्ज बढ़ जाएगा और हर्ज से मुराद क़त्ल है और यहाँ तक कि तुम्हारे पास माल की कष़रत हो जाएगी बल्कि बह पड़ेगा और यहाँ तक कि स़ाह़िबे माल को इसका फ़िक्र दामनगीर होगा कि इसका स़दक़ा क़ुबूल कौन करे और यहाँ तक कि वो पेश करेगा लेकिन जिसके सामने पेश करेगा वो कहेगा कि मुझे इसकी ज़रूरत नहीं है और यहाँ तक कि लोग बड़ी बड़ी इमारतों मे आपस में फ़ख़्र करेंगे। एक से एक बढ़-चढ़कर इमारतें बनाएंगे और यहाँ तक कि एक शख़्स़ दूसरे की क़ब्र से गुज़रेगा और कहेगा कि काश! मैं भी इसी जगह होता और यहाँ तक कि सूरज मग़्रिब से निकलेगा। पस जब वो इस त़रह त़ुलूअ़ होगा और लोग देख लेंगे तो सब ईमान ले आएँगे लेकिन ये वो वक़्त होगा जब किसी ऐसे शख़्स़ को उसका ईमान लाना फ़ायदा न देगा जो पहले से ईमान न लाया हो या उसने अपने ईमान के साथ अच्छे काम न किये हों और क़यामत अचानक इस त़रह क़ायम हो जाएगी कि दो आदमियों ने अपने बीच कपड़ा फैला रखा

٧١٢١- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، حَدَّثَنَا أَبُو الزِّنَادِ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: ((لاَ تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى تَقْتَتِلَ فِئَتَانِ عَظِيمَتَانِ تَكُونُ بَيْنَهُمَا مَقْتَلَةٌ عَظِيمَةٌ دَعْوَتُهُمَا وَاحِدَةٌ وَحَتَّى يُبْعَثَ دَجَّالُونَ كَذَّابُونَ قَرِيبٌ مِنْ ثَلاَثِينَ كُلُّهُمْ يَزْعُمُ أَنَّهُ رَسُولُ اللهِ وَحَتَّى يُقْبَضَ الْعِلْمُ، وَتَكْثُرَ الزَّلاَزِلُ وَيَتَقَارَبَ الزَّمَانُ وَتَظْهَرَ الْفِتَنُ وَيَكْثُرَ الْهَرْجُ وَهُوَ الْقَتْلُ وَحَتَّى يَكْثُرَ فِيكُمُ الْمَالُ، فَيَفِيضَ حَتَّى يُهِمَّ رَبَّ الْمَالِ مَنْ يَقْبَلُ صَدَقَتَهُ، وَحَتَّى يَعْرِضَهُ فَيَقُولُ الَّذِي يَعْرِضُهُ عَلَيْهِ لاَ أَرَبَ لِي بِهِ، وَحَتَّى يَتَطَاوَلَ النَّاسُ فِي الْبُنْيَانِ، وَحَتَّى يَمُرَّ الرَّجُلُ بِقَبْرِ الرَّجُلِ فَيَقُولُ: يَا لَيْتَنِي مَكَانَهُ وَحَتَّى تَطْلُعَ الشَّمْسُ مِنْ مَغْرِبِهَا فَإِذَا طَلَعَتْ وَرَآهَا النَّاسُ يَعْنِي آمَنُوا أَجْمَعُونَ، فَذَلِكَ حِينَ لاَ يَنْفَعُ نَفْسًا إِيمَانُهَا لَمْ تَكُنْ آمَنَتْ مِنْ قَبْلُ أَوْ كَسَبَتْ فِي إِيمَانِهَا خَيْرًا،

होगा और उसे अभी बेच न पाए होंगे न लपेट पाए होंगे और क़यामत इस त़रह़ बरपा हो जाएगी कि एक शख़्स अपनी ऊँटनी का दूध निकालकर वापस हुआ होगा कि उसे खा भी न पाया होगा और क़यामत इस त़रह़ क़ायम हो जाएगी कि वो अपने ह़ौज़ को दुरुस्त कर रहा होगा और उसमें से पानी भी न पिया होगा और क़यामत इस त़रह़ क़ायम हो जाएगी कि उसने अपना लुक़्मा मुँह की त़रफ़ उठाया होगा और अभी उसे खाया भी न होगा। (राजेअ़ : 85)

وَلَتَقُومَنَّ السَّاعَةُ وَقَدْ نَشَرَ الرَّجُلاَنِ ثَوْبَهُمَا بَيْنَهُمَا فَلاَ يَتَبَايَعَانِهِ وَلاَ يَطْوِيَانِهِ، وَلَتَقُومَنَّ السَّاعَةُ وَقَدِ انْصَرَفَ الرَّجُلُ بِلَبَنِ لِقْحَتِهِ فَلاَ يَطْعَمُهُ، وَلَتَقُومَنَّ السَّاعَةُ وَهُوَ يُلِيطُ حَوْضَهُ فَلاَ يَسْقِي فِيهِ، وَلَتَقُومَنَّ السَّاعَةُ وَقَدْ رَفَعَ أُكْلَتَهُ إِلَى فِيهِ فَلاَ يَطْعَمُهَا)).

[راجع: ٨٥]

उनमें बहुत सी अ़लामतें मौजूद हैं और बाक़ी भी क़रीब क़यामत ज़रूर वजूद में आकर रहेंगी।

बाब 27 : दज्जाल का बयान

٢٧- باب ذِكْرِ الدَّجَّالِ

तश्रीह़ : दज्जाल दजल से निकला है जिसके मा'नी ह़क़ को छुपाना और त़मअ़ साज़ी करना, जादू और शअ़बदा बाज़ी करना, हर शख़्स को जिसमें ये सिफ़तें हों दज्जाल कह सकते हैं। चुनाँचे ऊपर गुज़रा कि उम्मत में तीस के क़रीब दज्जाल पैदा होंगे, उनमें से हर एक नुबुव्वत का दा'वा करेगा। हमारे ज़माना में जो एक मिर्ज़ा क़ादियान में पैदा हुआ है वो भी उन तीस में का एक है और बड़ा दज्जाल वो है जो क़यामत के क़रीब ज़ाहिर होगा। अ़जीब अ़जीब शअ़बदे दिखलाएगा। ख़ुदाई का दा'वा करेगा लेकिन मरदूद काना होगा। ये बाब इसी के ह़ालात में है अल्लाह तआ़ला हर मुसलमान को उसके शर्र से मह़फ़ूज़ रखे। एक ह़दीष़ में है जो कोई तुममें से सुने दज्जाल निकला तो उससे दूर रहे या'नी जहाँ तक हो सके उसके पास न जाए। बावजूद इस बात के कि उसके पास रोटियों के पहाड़ पानी की नहरें हों जब भी वो अल्लाह के नज़दीक इस लायक़ न होगा कि लोग उसको अल्लाह समझें क्योंकि वो काना और ऐबदार होगा और उसकी पेशानी पर कुफ़्र का लफ़्ज़ लिखा हुआ होगा जिसको देखकर सब मुसलमान पहचान लेंगे कि ये जाली, मरदूद है। दूसरी ह़दीष़ में है कोई तुममें से मरने तक अपने रब को नहीं देख सकता और दज्जाल को लोग दुनिया में देखेंगे तो मा'लूम हुआ वो झूठा है। इस ह़दीष़ से उन लोगों का रद्द होता है जो कहते हैं दुनिया में बेदारी में अल्लाह तआ़ला का दीदार होता है।

7122. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे यह़्या ने बयान किया, कहा मुझसे इस्माईल ने बयान किया, उनसे क़ैस ने बयान किया, कहा कि मुझसे मुग़ीरह बिन शुअ़बा (रज़ि.) ने कि दज्जाल के बारे में नबी करीम (ﷺ) से जितना मैंने पूछा उतना किसी ने नहीं पूछा और आँह़ज़रत (ﷺ) ने मुझसे फ़र्माया था कि उससे तुम्हें क्या नुक़्सान पहुँचेगा। मैंने अ़र्ज़ किया कि लोग कहते हैं कि उसके साथ रोटी का पहाड़ और पानी की नहरें होंगी। फ़र्माया कि वो अल्लाह पर इससे भी ज़्यादा आसान है। (राजेअ़ : 3057)

٧١٢٢- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا يَحْيَى، حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، حَدَّثَنِي قَيْسٌ قَالَ: قَالَ لِي الْمُغِيرَةُ بْنُ شُعْبَةَ مَا سَأَلَ أَحَدٌ النَّبِيَّ ﷺ عَنِ الدَّجَّالِ مَا سَأَلْتُهُ وَإِنَّهُ قَالَ لِي: ((مَا يَضُرُّكَ مِنْهُ)) قُلْتُ : لأَنَّهُمْ يَقُولُونَ إِنَّ مَعَهُ جَبَلَ خُبْزٍ وَنَهَرَ مَاءٍ قَالَ : ((هُوَ أَهْوَنُ عَلَى اللَّهِ مِنْ ذَلِكَ)).[راجع: ٣٠٥٧]

तश्रीह : हज़रत मुग़ीरह बिन शुअबा ख़ंदक़ के दिन मुसलमान हुए। हज़रत मुआविया (रज़ि.) के बड़े कारकुन थे। सन 56 हिजरी में वफ़ात पाई (रज़ियल्लाहु अन्हु व अरज़ाहू) दज्जाल मौऊद का आना बरहक़ है।

7123. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे वुहैब ने कहा हमसे अय्यूब सुख़्तियानी ने उन्होंने नाफ़ेअ से उन्होंने इब्ने उमर (रज़ि.) से इमाम बुख़ारी (रह.) ने कहा मैं समझता हूँ कि इब्ने उमर (रज़ि.) ने आँहज़रत (ﷺ) से रिवायत की आपने फ़र्माया दज्जाल दाहिनी आँख से काना होगा उसकी आँख क्या है गोया फूला हुआ अंगूर।

٧١٢٣- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ، حَدَّثَنَا أَيُّوبُ، عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ أُرَاهُ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: ((أَعْوَرُ عَيْنِ الْيُمْنَى كَأَنَّهَا عِنَبَةٌ طَافِيَةٌ)).

7124. हमसे सअद बिन हफ़्स ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे शैबान ने बयान किया, उनसे यह्या ने बयान किया, उनसे इस्हाक़ बिन अब्दुल्लाह बिन अबी तलहा ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया दज्जाल आएगा और मदीना के एक किनारे क़याम करेगा। फिर मदीना तीन मर्तबा काँपेगा और उसके नतीजे में हर काफ़िर और मुनाफ़िक़ निकलकर उसकी तरफ़ चला जाएगा। (राजेअ : 1881)

٧١٢٤- حَدَّثَنَا سَعْدُ بْنُ حَفْصٍ، حَدَّثَنَا شَيْبَانُ، عَنْ يَحْيَى، عَنْ إِسْحَاقَ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَبِي طَلْحَةَ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((يَجِيءُ الدَّجَّالُ حَتَّى يَنْزِلَ فِي نَاحِيَةِ الْمَدِينَةِ، ثُمَّ تَرْجُفُ الْمَدِينَةُ ثَلاَثَ رَجَفَاتٍ، فَيَخْرُجُ إِلَيْهِ كُلُّ كَافِرٍ وَمُنَافِقٍ)).[راجع: ١٨٨١]

7125. हमसे अब्दुल अज़ीज़ बिन अब्दुल्लाह उवैसी ने बयान किया, कहा हमसे दादा इब्राहीम बिन अब्दुर्रहमान बिन औफ़ से, उन्होंने अबूबक्र से, उन्होंने आँहज़रत (ﷺ) से आपने फ़र्माया मदीना वालों पर दज्जाल का रौब नहीं पड़ने का उस दिन मदीना के सात दरवाज़े होंगे हर दरवाज़े पर दो फ़रिश्ते (पहरा देते) होंगे। (राजेअ : 1879)

٧١٢٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ عَنْ أَبِي بَكْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ لاَ يَدْخُلُ الْمَدِينَةَ رُعْبُ الْمَسِيحِ الدَّجَّالِ وَلَهَا يَوْمَئِذٍ سَبْعَةُ أَبْوَابٍ عَلَى كُلِّ بَابٍ مَلَكَانِ. [راجع: ١٨٧٩]

तश्रीह : लफ़्ज़ दज्जाल दजल से है जिसके मा'नी झगड़ा फ़साद बरपा करने वाले, लोगों को फ़रेब धोखा में डालने वाले के हैं। बड़ा दज्जाल आख़िर ज़माने में पैदा होगा और छोटे छोटे दज्जाल बकष्रत हर वक़्त पैदा होते रहेंगे जो ग़लत मसाइल के लिये क़ुर्आन को इस्ते'माल करके लोगों को बेदीन करेंगे, क़ब्र-परस्त वग़ैरह बनाते रहेंगे। इस क़िस्म के दज्जाल आजकल भी बहुत हैं।

7126. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन बिश्र ने बयान किया, कहा हमसे मिस्अर ने बयान किया, उनसे सअद बिन इब्राहीम ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने और उनसे अबूबक्र (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया मदीना पर मसीह दज्जाल का रौब नहीं पड़ेगा, उस वक़्त उसके सात दरवाज़े होंगे और हर दरवाज़े पर पहरेदार दो फ़रिश्ते होंगे। अली बिन अब्दुल्लाह ने कहा कि मुहम्मद बिन

٧٠٧٢- حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، عَنْ مَعْمَرٍ، عَنْ هَمَّامٍ سَمِعْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((لاَ يُشِيرُ أَحَدُكُمْ عَلَى أَخِيهِ بِالسِّلاَحِ فَإِنَّهُ لاَ يَدْرِي لَعَلَّ الشَّيْطَانَ يَنْزِعُ فِي يَدَيْهِ، فَيَقَعُ فِي حُفْرَةٍ مِنَ النَّارِ)).

رُعْبُ الْمَسِيحِ، لَهَا يَوْمَئِذٍ سَبْعَةُ أَبْوَابٍ عَلَى كُلِّ بَابٍ مَلَكَانِ)). قَالَ وَقَالَ ابْنُ إِسْحَاقَ : عَنْ صَالِحِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ أَبِيهِ قَالَ : قَدِمْتُ الْبَصْرَةَ فَقَالَ لِي أَبُو بَكْرَةَ : سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ بِهَذَا. [راجع: ١٨٧٩]

इस्हाक़ ने स़ालेह़ बिन इब्राहीम से रिवायत किया, उनसे उनके वालिद इब्राहीम बिन अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ ने बयान किया कि मैं बस़रा गया तो मुझसे अबूबक्र (रज़ि.) ने यही ह़दीष़ बयान की। (राजेअ : 1879)

तश्रीह : इस सनद के लाने से इमाम बुख़ारी (रह़.) की ग़र्ज़ ये है कि इब्राहीम बिन अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ का सिमाअ़ अबूबक्र से ष़ाबित हो जाए क्यों कि कुछ मुह़द्दिष़ीन ने इब्राहीम की रिवायत अबूबक्र से मुंकिर समझी है। इसलिये कि इब्राहीम मदनी हैं और अबूबक्र ह़ज़रत उ़मर (रज़ि) के ज़माने से अपनी वफ़ात तक बस़रा में रहे। आँह़ज़रत (ﷺ) की ये पेशीनगोई बिलकुल सह़ीह़ ष़ाबित हुई। एक रिवायत में है कि दज्जाल दूर से आपका रोज़-ए-मुबारका देखकर कहेगा, अख़ाहू मुह़म्मद का यही सफ़ेद मह़ल है।

٧١٢٧- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ، عَنْ صَالِحٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ سَالِمِ بْنِ عَبْدِ اللهِ أَنَّ عَبْدَ اللهِ بْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَامَ رَسُولُ اللهِ ﷺ فِي النَّاسِ فَأَثْنَى عَلَى اللهِ بِمَا هُوَ أَهْلُهُ ثُمَّ ذَكَرَ الدَّجَّالَ فَقَالَ: ((إِنِّي لأُنْذِرُكُمُوهُ وَمَا مِنْ نَبِيٍّ إِلاَّ وَقَدْ أَنْذَرَهُ قَوْمَهُ، وَلَكِنِّي سَأَقُولُ لَكُمْ فِيهِ قَوْلاً لَمْ يَقُلْهُ نَبِيٌّ لِقَوْمِهِ إِنَّهُ أَعْوَرُ وَإِنَّ اللهَ لَيْسَ بِأَعْوَرَ)). [راجع: ٣٠٥٧]

7127. हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इब्राहीम ने बयान किया, उनसे स़ालेह़ ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उनसे सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) लोगों में खड़े हुए और अल्लाह की ता'रीफ़ उसकी शान के मुताबिक़ बयान की। फिर दज्जाल का ज़िक्र फ़र्माया कि मैं तुम्हें उससे डराता हूँ और कोई नबी ऐसा नहीं गुज़रा जिसने अपनी क़ौम को उससे न डराया हो, अल्बत्ता मैं तुम्हें उसके बारे में एक बात बताता हूँ जो किसी नबी ने अपनी क़ौम को नहीं बताई थी और वो ये कि वो काना होगा और अल्लाह तआ़ला काना नहीं है। (राजेअ : 3057)

तश्रीह : दूसरी रिवायत में है कि ह़ज़रत नूह़ (अ़लैहि.) के बाद जितने पैग़म्बर गुज़रे हैं, सबने अपनी अपनी उम्मत को दज्जाल से डराया है। काना होना बड़ा ऐ़ब है और अल्लाह हर ऐ़ब से पाक है।

٧١٢٨- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ عُقَيْلٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ سَالِمٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((بَيْنَا أَنَا نَائِمٌ أَطُوفُ بِالْكَعْبَةِ، فَإِذَا رَجُلٌ آدَمُ سَبْطُ الشَّعَرِ يَنْطِفُ أَوْ يُهَرَاقُ رَأْسُهُ مَاءً، قُلْتُ: مَنْ هَذَا؟ قَالُوا:

7128. हमसे यह़्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे अ़क़ील ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे सालिम ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया मैं सोया हुआ (ख़्वाब में) का'बा का त़वाफ़ कर रहा था कि एक स़ाह़ब जो गन्दुमी रंग थे और उनके सर के बाल सीधे थे और सर से पानी टपक रहा था (पर मेरी नज़र पड़ी) मैंने पूछा ये कौन हैं? मेरे साथ के लोगों ने बताया कि ये ह़ज़रत ईसा इब्ने

ابْنُ مَرْيَمَ ثُمَّ ذَهَبْتُ، أَلْتَفِتُ فَإِذَا رَجُلٌ جَسِيمٌ أَحْمَرُ جَعْدُ الرَّأْسِ، أَعْوَرُ الْعَيْنِ كَأَنَّ عَيْنَهُ عِنَبَةٌ طَافِيَةٌ قَالُوا : هَذَا الدَّجَّالُ أَقْرَبُ النَّاسِ بِهِ شَبَهًا ابْنُ قَطَنٍ رَجُلٌ مِنْ خُزَاعَةَ)). [راجع: ٣٤٤٠]

मरयम (अ़लैहि.) हैं फिर मैंने मुड़कर देखा तो मोटे शख़्स़ पर नज़र पड़ी जो सुर्ख़ था उसके बाल घुँघराले थे, एक आँख का काना था, उसकी एक आँख अंगूर की त़रह उठी हुई थी। लोगों ने बताया कि ये दज्जाल है। उसकी सूरत अ़ब्दुल उ़ज़्ज़ा बिन क़त़न से बहुत मिलती थी। (राजेअ़ : 3440)

ये एक शख़्स़ था जो अ़हदे जाहिलियत में मर गया था और क़बीला ख़ुज़ाआ़ से था।

٧١٢٩- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ، عَنْ صَالِحٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ عُرْوَةَ أَنَّ عَائِشَةَ قَالَتْ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَسْتَعِيذُ فِي صَلاَتِهِ مِنْ فِتْنَةِ الدَّجَّالِ. [راجع: ٨٣٢]

7129. हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे स़ालेह ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे उ़र्वा ने, और उनसे ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना, आप अपनी नमाज़ में दज्जाल के फ़ित्ने से पनाह मांगते थे। (राजेअ़ : 832)

٧١٣٠- حَدَّثَنَا عَبْدَانُ، أَخْبَرَنِي أَبِي، عَنْ شُعْبَةَ، عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ، عَنْ رِبْعِيٍّ، عَنْ حُذَيْفَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ فِي الدَّجَّالِ: ((إِنَّ مَعَهُ مَاءً وَنَارًا فَنَارُهُ مَاءٌ بَارِدٌ وَمَاؤُهُ نَارٌ)) قَالَ أَبُو مَسْعُودٍ: أَنَا سَمِعْتُهُ مِنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ. [راجع: ٣٤٥٠]

7130. हमसे अ़ब्दान ने बयान किया कि मुझे मेरे वालिद ने ख़बर दी, उन्हें शुअ़बा ने, उन्हें अ़ब्दुल मलिक ने, उन्हें रिब्ई ने और उनसे हुज़ैफ़ह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने दज्जाल के बारे में फ़र्माया कि उसके साथ पानी और आग होगी और उसकी आग, ठण्डा पानी होगी और पानी, आग होगा। अबू मसऊ़द (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने भी ये ह़दीष़ रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुनी है। (राजेअ़ : 3450)

तश्रीह : दूसरी रिवायत में यूँ है तुममें से जो कोई उसका ज़माना पाए तो उसकी आग मे चला जाए। वो निहायत शीरीं ठण्डा उ़म्दह पानी होगी। मत़लब ये है कि दज्जाल एक शअ़बदा बाज़ और साह़िर होगा पानी को आग, आग को पानी करके लोगों को बतलाएगा या अल्लाह तआ़ला उसको ज़लील करने के लिये उल्टा कर देगा, जिन लोगों को वो पानी देगा उनके लिये वो पानी आग हो जाएगा और जिन मुसलमानों को वो मुख़ालिफ़ समझकर आग में डालेगा उनके ह़क़ में आग पानी हो जाएगी। जिन लोगों ने ए'तिराज़ क्या है कि आग और पानी दोनों मुख़्तलिफ़ ह़क़ीक़तें हैं। उनमें इंक़िलाब कैसे होगा दरह़क़ीक़त वो परले सिरे के बेवक़ूफ़ हैं ये इंक़िलाब तो रात दिन दुनिया में हो रहा है। अ़नासिर का कौन व फ़साद बराबर जारी है। कुछ ने कहा मत़लब ये है कि जो कोई दज्जाल का कहना जानेगा वो उसको ठण्डा पानी देगा तो दर ह़क़ीक़त ये ठण्डा पानी आग है या'नी क़यामत में वो दोज़ख़ी होगा और जिसको वो मुख़ालिफ़ समझकर आग में डालेगा उसके ह़क़ में ये आग ठण्डा पानी होगी या'नी क़यामत के दिन वो बहिश्ती होगा उसको बहिश्त का ठण्डा पानी मिलेगा।

٧١٣١- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((مَا بُعِثَ

7131. हमसे सुलैमान बिन ह़र्ब ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे क़तादा ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जो नबी भी मब्ऊ़ष़ किया गया तो उन्होंने अपनी क़ौम को काने

झूठे से डराया। आगाह रहो कि वो काना है और तुम्हारा रब काना नहीं है और उसकी दोनों आँखों के बीच काफ़िर लिखा हुआ है। इस बाब में अबू हुरैरह (रज़ि.) और इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने भी नबी करीम (ﷺ) से ये ह़दीष़ रिवायत की है।
(दीगर मक़ाम : 7408)

نَبِيٌّ إِلاَّ أَنْذَرَ أُمَّتَهُ الأَعْوَرَ الْكَذَّابَ، أَلاَ إِنَّهُ أَعْوَرُ وَإِنَّ رَبَّكُمْ لَيْسَ بِأَعْوَرَ، وَإِنَّ بَيْنَ عَيْنَيْهِ مَكْتُوبٌ كَافِرٌ)). فِيهِ أَبُو هُرَيْرَةَ وَابْنُ عَبَّاسٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ.

[طرفه في: ٧٤٠٨].

तशरीह : ये दोनों अह़ादीष़ ऊपर अह़ादीषुल अंबिया में मौसूलन गुज़र चुकी हैं। दूसरी रिवायत में है कि मोमिन उसको पढ़ लेगा ख़्वाह लिखा पढ़ा हो या न हो और काफ़िर न पढ़ सकेगा गो लिखा पढ़ा हो। ये अल्लाह तआला की क़ुदरत होगी। नववी ने कहा स़ह़ीह़ ये है कि ह़क़ीक़तन ये लफ़्ज़ उसकी पेशानी पर लिखा होगा। कुछ ने उसकी तावील की है और कहा है कि अल्लाह तआ़ला एक मोमिन के दिल में ईमान का ऐसा नूर देगा कि वो दज्जाल को देखते ही पहचान लेगा कि ये काफ़िर जालसाज़ बदमाश है और काफ़िर की अ़क़्ल पर पर्दा डाल देगा वो समझेगा कि दज्जाल सच्चा है। दूसरी रिवायत में है ये शख़्स़ मुसलमान होगा और लोगों से पुकारकर कह देगा मुसलमानों यही वो दज्जाल है जिसकी ख़बर आँह़ज़रत (ﷺ) ने दी थी। एक रिवायत में है कि दज्जाल आरे से उसको चिरवा डालेगा। एक रिवायत में है कि तलवार से दो नीम कर देगा और ये जलाना कुछ दज्जाल का मुअ़जज़ा न होगा क्योंकि अल्लाह तआला ऐसे काफ़िर को मुअ़जज़ा नहीं देता बल्कि अल्लाह का एक फ़ेअल होगा जिसको वो अपने सच्चे बन्दों के आज़माने के लिये दज्जाल के हाथ पर ज़ाहिर करेगा। इस ह़दीष़ से ये भी निकला कि वली की सबसे बड़ी निशानी ये है कि शरीअ़त पर क़ायम हो, अगर कोई शख़्स़ शरीअ़त के खिलाफ़ चलता हो और मुर्दे को भी ज़िन्दा करके दिखलाए जब भी उसको नाइबे दज्जाल समझना चाहिये।

बाब 28 : दज्जाल मदीना के अंदर दाख़िल नहीं हो सकेगा

٢٨- باب لاَ يَدْخُلُ الدَّجَّالُ الْمَدِينَةَ

7132. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुह्री ने, उन्हें उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़त्बा बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने ख़बर दी, उनसे अबू सईद (रज़ि) ने बयान किया कि एक दिन रसूले करीम (ﷺ) ने हमसे दज्जाल के बारे में एक त़वील बयान किया। आँह़ज़रत (ﷺ) के इर्शादात में ये भी था कि आपने फ़र्माया दज्जाल आएगा और उसके लिये नामुम्किन होगा कि मदीना की घाटियों में दाख़िल हो। चुनाँचे वो मदीना मुनव्वरह के क़रीब किसी शौर ज़मीन पर क़याम करेगा। फिर उस दिन उसके पास एक मर्द मोमिन जाएगा और वो अफ़ज़लतरीन लोगों में से होगा और उससे कहेगा कि मैं गवाही देता हूँ इस बात की जो रसूले करीम (ﷺ) ने हमसे बयान किया था। उस पर दज्जाल कहेगा क्या तुम देखते हो अगर मैं इसे क़त्ल कर दूँ और फिर ज़िन्दा कर दूँ तो क्या तुम्हें मेरे मामले में शक व शुब्हा बाक़ी रहेगा? उसके पास वाले लोग कहेंगे कि नहीं। चुनाँचे वो उस स़ाहब को क़त्ल कर देगा और फिर उसे ज़िन्दा कर देगा। अब वो स़ाह़ब कहेंगे कि

٧١٣٢- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، أَخْبَرَنِي عُبَيْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُتْبَةَ بْنِ مَسْعُودٍ أَنَّ أَبَا سَعِيدٍ قَالَ: حَدَّثَنَا رَسُولُ اللهِ ﷺ يَوْمًا حَدِيثًا طَوِيلاً عَنِ الدَّجَّالِ، فَكَانَ فِيمَا يُحَدِّثُنَا بِهِ أَنَّهُ قَالَ : ((يَأْتِي الدَّجَّالُ وَهُوَ مُحَرَّمٌ عَلَيْهِ أَنْ يَدْخُلَ نِقَابَ الْمَدِينَةِ، فَيَنْزِلُ بَعْضَ السِّبَاخِ الَّتِي تَلِي الْمَدِينَةَ، فَيَخْرُجُ إِلَيْهِ يَوْمَئِذٍ رَجُلٌ وَهُوَ خَيْرُ النَّاسِ - أَوْ مِنْ خِيَارِ النَّاسِ - فَيَقُولُ : أَشْهَدُ أَنَّكَ الدَّجَّالُ الَّذِي حَدَّثَنَا رَسُولُ اللهِ ﷺ حَدِيثَهُ فَيَقُولُ الدَّجَّالُ : أَرَأَيْتُمْ إِنْ قَتَلْتُ هَذَا ثُمَّ أَحْيَيْتُهُ هَلْ تَشُكُّونَ فِي الأَمْرِ؟

فَيَقُولُونَ: لاَ فَيَقْتُلُهُ ثُمَّ يُحْيِيهِ فَيَقُولُ: وَاللهِ مَا كُنْتُ فِيكَ أَشَدَّ بَصِيرَةً مِنِّي الْيَوْمَ فَيُرِيدُ الدَّجَّالُ أَنْ يَقْتُلَهُ فَلاَ يُسَلَّطُ عَلَيْهِ)). [راجع: ١٨٨٢]

वल्लाह! आज से ज़्यादा मुझे तेरे मामले में पहले इतनी बसीरत हासिल न थी। इस पर दज्जाल फिर उन्हें क़त्ल करना चाहेगा लेकिन इस मर्तबा उसे मार न सकेगा। (राजेअ : 1882)

उम्मत का ये बेहतरीन शख़्स होगा जिसके ज़रिये से दज्जाल को शिकस्त फ़ाश होगी।

٧١٣٣- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْلَمَةَ، عَنْ مَالِكٍ، عَنْ نُعَيْمِ بْنِ عَبْدِ اللهِ الْمُجْمِرِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((عَلَى أَنْقَابِ الْمَدِينَةِ مَلاَئِكَةٌ لاَ يَدْخُلُهَا الطَّاعُونُ وَلاَ الدَّجَّالُ)). [راجع: ١٨٨٠]

7133. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मस्लमा ने बयान किया, उनसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे नुऐ़म बिन अ़ब्दुल्लाह बिन मुज्मर ने बयान किया और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया मदीना मुनव्वरह के रास्तों पर फ़रिश्ते पहरा देते हैं न यहाँ ताऊ़न आ सकती है और न दज्जाल आ सकता है। (राजेअ : 1880)

٧١٣٤- حَدَّثَنِي يَحْيَى بْنُ مُوسَى، حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ، أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((الْمَدِينَةُ يَأْتِيهَا الدَّجَّالُ فَيَجِدُ الْمَلاَئِكَةَ يَحْرُسُونَهَا، فَلاَ يَقْرَبُهَا الدَّجَّالُ قَالَ وَلاَ الطَّاعُونُ إِنْ شَاءَ اللهُ)). [راجع: ١٨٨١]

7134. मुझसे यह्या बिन मूसा ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे यज़ीद बिन हारून ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको शुअ़बा ने ख़बर दी, उन्हें क़तादा ने, उन्हें अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया दज्जाल मदीना तक आएगा तो यहाँ फ़रिश्तों को उसकी हिफ़ाज़त करते हुए पाएगा चुनाँचे न दज्जाल इसके क़रीब आ सकता है और न ताऊ़न (इंशाअल्लाह)। (राजेअ : 1881)

٢٩- باب يَأْجُوجَ وَمَأْجُوجَ

बाब 29 : याजूज माजूज का बयान

तश्रीह : सहीह ये है कि याजूज माजूज आदमी हैं, याफ़िष़ बिन नूह की औलाद से। कुछ ने कहा वो आदम की औलाद हैं मगर हव्वा की औलाद नहीं। आदम (अ़लैहि.) का नुत्फ़ा मिट्टी में मिल गया था उससे पैदा हुए मगर ये क़ौल महज़ बेदलील है। इब्ने मरदूविया और हाकिम ने हुज़ैफ़ह (रज़ि.) से मर्फ़ूअ़न निकाला कि याजूज माजूज दो क़बीले हैं याफ़िष़ बिन नूह की औलाद से। उनमे कोई शख़्स उस वक़्त तक नहीं मरता जब तक हज़ार औलाद अपनी नहीं देख लेता और इब्ने अबी हातिम ने निकाला आदमियों और जिन्नों के दस हिस्से हैं उनमें नौ हिस्से याजूज माजूज हैं एक हिस्से में बाक़ी लोग। कअ़ब से मन्क़ूल है याजूज माजूज के लोग कई क़िस्म के हैं। कुछ तो शमशाद के पेड़ की तरह लम्बे, कुछ लम्बाई-चौड़ाई दोनों में चार चार हाथ, कुछ इतने बड़े कान रखते हैं कि एक को बिछाते एक को ओढ़ते हैं और हाकिम ने इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से निकाला याजूज माजूज के लोग एक एक बालिश्त दो दो बालिश्त के लोग हैं। बहुत लम्बे, उनमें वो हैं जो तीन बालिश्त के हैं। इब्ने कष़ीर ने कहा इब्ने अबी हातिम ने उनके अश्काल और हालात और क़द व क़ामत और कानों के बाब में अ़जीब अ़जीब अहादीष़ नक़ल की हैं। जिनकी सनदें सहीह नहीं हैं। मैं कहता हूँ जितना सहीह से ष़ाबित है वो इसी क़दर है कि याजूज माजूज दो क़ौमें हैं। आदमियों की क़यामत के क़रीब वो निहायत हुजूम करेंगे और हर बस्ती में घुस आएँगे उसको तबाह और बर्बाद करेंगे, वल्लाहु आलम।

7135. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुह्री ने, (दूसरी सनद) और इमाम बुख़ारी ने कहा कि हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, कहा मुझसे मेरे भाई अ़ब्दुल ह़मीद ने, उनसे सुलैमान बिन बिलाल ने, उनसे मुह़म्मद बिन अबी अ़तीक़ ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने, उनसे ज़ैनब बिन्ते अबी सलमा ने बयान किया, उनसे उम्मे ह़बीबा बिन्ते अबी सुफ़यान (रज़ि.) ने और उनसे ज़ैनब बिन्ते जह़श (रज़ि.) ने कि एक दिन रसूले करीम (ﷺ) उनके पास घबराये हुए दाख़िल हुए, आप फ़र्मा रहे थे कि तबाही है अ़रबों के लिये उस बुराई से क़रीब आ चुकी है। आज याजूज व माजूज की दीवार से इतना खुल गया है और आपने अपने अंगूठे और उसकी क़रीब वाली उंगली को मिलाकर एक ह़ल्क़ा बनाया। इतना सुनकर ज़ैनब बिन जह़श (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! तो क्या हम उसके बावजूद हलाक हो जाएँगे कि हममें नेक स़ालेह़ लोग भी ज़िन्दा होंगे? आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि हाँ जब बदकारी बहुत बढ़ जाएगी। (राजेअ़ : 3346)

٧١٣٥- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ ح وَحَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، حَدَّثَنِي أَخِي عَنْ سُلَيْمَانَ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ أَبِي عَتِيقٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ، أَنَّ زَيْنَبَ ابْنَةَ أَبِي سَلَمَةَ حَدَّثَتْهُ عَنْ أُمِّ حَبِيبَةَ بِنْتِ أَبِي سُفْيَانَ، عَنْ زَيْنَبَ ابْنَةِ جَحْشٍ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ دَخَلَ عَلَيْهَا يَوْمًا فَزِعًا يَقُولُ: ((لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ وَيْلٌ لِلْعَرَبِ مِنْ شَرٍّ اقْتَرَبَ، فُتِحَ الْيَوْمَ مِنْ رَدْمِ يَأْجُوجَ وَمَأْجُوجَ مِثْلُ هَذِهِ)) وَحَلَّقَ بِإِصْبَعَيْهِ الإِبْهَامِ وَالَّتِي تَلِيهَا قَالَتْ زَيْنَبُ ابْنَةُ جَحْشٍ : فَقُلْتُ يَا رَسُولَ اللهِ أَفَنَهْلِكُ وَفِينَا الصَّالِحُونَ؟ قَالَ: ((نَعَمْ إِذَا كَثُرَ الْخَبَثُ)). [راجع: ٣٣٤٦]

7136. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे वुहैब बिन ख़ालिद ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन त़ाउस ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया सद या'नी याजूज माजूज की दीवार इतनी खुल गई है। वुहैब ने नव्वे का इशारा करके बतलाया। (राजेअ़ : 3347)

٧١٣٦- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ، حَدَّثَنَا ابْنُ طَاوُسٍ، عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((يُفْتَحُ الرَّدْمُ رَدْمُ يَأْجُوجَ وَمَأْجُوجَ)) مِثْلُ هَذِهِ وَعَقَدَ وُهَيْبٌ تِسْعِينَ. [راجع: ٣٣٤٧]

तश्रीह : हमारे ज़माने में बहुत से लोग उसमें शुब्हा करते हैं कि जब याजूज माजूज इतनी बड़ी क़ौम है कि उसमें को कोई शख़्स उस वक़्त तक नहीं मरता जब तक हज़ार आदमी अपनी नस्ल के नहीं देख लेता तो ये क़ौम इस वक़्त दुनिया के किस ह़िस्से में आबाद है। अहले जुग़राफ़िया (भू-विज्ञानियों) ने तो सारी ज़मीन को छान डाला है ये मुम्किन है कि कोई छोटा सा जज़ीरा उनकी नज़र से रह गया हो मगर इतना बड़ा मुल्क जिसमें ऐसी बड़ी ता'दाद क़ौम बसती है, नज़र न आना क़यास (कल्पना) से दूर है। दूसरे इस ज़माने में लोग बड़े बड़े ऊँचे पहाड़ों पर चढ़ जाते हैं उनमें ऐसे ऐसे सूराख़ करते हैं जिसमें से रेल चली जाती है तो ये दीवार उनको क्यूँकर रोक सकती है? सख़्त से सख़्त चीज़ दुनिया में फ़ौलाद है उसमें भी आसानी से सूराख़ हो सकता है कितनी ही ऊँची दीवार हो, मशीनों के ज़रिये से उस पर चढ़ सकते हैं। डायनामाइट से उसको दम भर में गिरा सकते हैं। इन शुब्हों का जवाब ये है कि हम ये नहीं कहते कि वो दीवार अब तक मौजूद है और याजूज माजूज को रोके हुए है। अल्बत्ता आँह़ज़रत (ﷺ) के ज़माने तक ज़रूर मौजूद थी और उस वक़्त तक दुनिया में स़नअ़त और आलात का ऐसा रिवाज न था तो याजूज माजूज की वह़शी क़ौमें उस दीवार की वजह से रुकी रहने में कोई तअ़ज्जुब नहीं। रहा ये कि

याजूज माजूज के किसी शख़्स का न मरना जब तक वो हज़ार आदमी अपनी नस्ल से न देख ले। ये भी मुम्किन है कि उसी वक़्त तक का बयान हो जब तक आदमी की उ़म्र हज़ार दो हज़ार साल तक हुआ करती थी न कि हमारे ज़माने का जब उ़म्रे इंसानी की मिक़्दार सौ बरस या एक सौ बीस बरस रह गई है। आख़िर याजूज माजूज भी इंसान हैं हमारी उ़म्रों की त़रह़ उनकी उ़म्रें भी घटी होंगी अब ये जो आष़ार स़ह़ाबा और ताबेईन से मन्क़ूल हैं कि उनके क़द व क़ामत और कान ऐसे हैं, उनकी सनदें स़ह़ीह़ और क़ाबिले ए'तिमाद नहीं हैं और भूगोल वालों ने जिन क़ौमों को देखा है उन्हीं में से दो बड़ी क़ौमें याजूज माजूज हैं।

94. किताबुल अहकाम

किताब ह़ुकूमत और क़ज़ा के बयान में

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

तश्रीह: किताबुल अह़काम के ज़ैल में ह़ज़रत ह़ाफ़िज़ इब्ने ह़जर (रज़ि.) फ़र्माते हैं, **वल अहकामु जम्उ हुक्मिन वल्मुरादु बयानु आदाबिही व शुरूतिही व कजल हाकिम व यतवानलु लफ़्ज़ुल ह़ाकिम अल्ख़लीफ़त वल क़ाज़ी फ़जिक्रूहा यतअ़ल्लकु बिकुल्लिम मिन्हा वलहुक्मुश्शरइय्यु इन्दल उसूलिय्यिन ख़िताबुल्लाहि तआ़ला अल्मुतअ़ल्लिकु बिअफ़आ़लिल मुकल्लफ़ीन बिल इक़्तिज़ाइ वत्तख़्ईरि व माद्दतुल हुक्मि मिनल अह़कामि व हुवल इत्कानु लिश्शैइ व मनअ़हू मिनल ऐ़बि बाबु क़ौलिल्लाहि तआ़ला अतीउल्लाह व अतीउर्रसूल व उलिल अम्रि मिन्कुम फ़ी हाज़ा इशारतुन मिनल मुस़न्निफ़ि इला तर्जीहिल क़ौलिस्स़ाइरि इला अन्नल आयत नज़लत फ़ी ताअ़तिल उ़मराइ ख़िलाल लिमन क़ाल नज़लत फ़िल उ़लमाइ व क़द रज्जह ज़ालिक अयज़न अत्तबरी** (फ़त्ह़ुल बारी) ख़ुलास़ा ये है कि लफ़्ज़ अह़काम हुक्म की जमा है मुराद ह़ुकूमत के आदाब और शराइत़ हैं जो इस किताब में बयान होंगे ऐसा ही लफ़्ज़ ह़ाकिम है जो ख़लीफ़ा और क़ाज़ी दोनों पर मुश्तमिल है। पस उनके बारे में ज़रूरी उमूर यहाँ ज़िक्र किये जाएंगे और हुक्मे शरई उस़ूलियों के नज़दीक मुकल्लिफ़ीन के लिये उमूरे ख़ुदावन्दी हैं जो ज़रूरी हों या मुस्तह़ब और लफ़्ज़ अह़काम का माद्दा लफ़्ज़ हुक्म है और वो किसी कारे ष़वाब को बजा लाना या मम्नूआ़ते शरइया से रुक जाना दोनों पर बोला जाता है।

बाब 1 : अल्लाह तआ़ला ने सूरह निसा में फ़र्माया कि अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल की इत़ाअ़त करो और अपने सरदारों का हुक्म मानो. (सूरह : 59)

١ - باب قَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿أَطِيعُوا اللهَ وَأَطِيعُوا الرَّسُولَ وَأُولِي الأَمْرِ مِنْكُمْ﴾ [النساء : ٥٩].

तश्रीह: इस्लाम का आख़िरी नस़बुल ऐ़न एक ख़ालिस़ अ़द्ल (न्याय), मसावात (बराबरी) व आज़ादी पर मब्नी ह़ुकूमत का क़याम भी है जैसा कि बहुत सी आयाते क़ुर्आनी से ये अम्र ष़ाबित है। चुनाँचे यही हुआ कि रसूले करीम (ﷺ) अपने अ़हदे आख़िर में अ़रब मे एक आज़ाद इस्लामी ह़ुकूमत क़ायम फ़र्माकर दुनिया से रुख़्स़त हुए और बाद में ख़ुलफ़ा-ए-राशिदीन से उसका दायरा अ़रब व अ़जम में दूर दूर तक वसीअ़ होता गया। रसूले करीम (ﷺ) ने इस

सिलसिले की भी बेशतर हिदायात फ़र्माई। ऐसी ही अह़ादीष़ को ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) ने इस किताबुल अह़काम में जमा फ़र्माया है जिसे आयते क़ुर्आनी, **या अय्युहल्लज़ीन आमनू अत़ीउ़ल्लाह व अत़ीउ़र्रसूल व उ़लिल अम्रि मिन्कुम** (सूरह निसा : 59) से शुरू फ़र्माया। अल्लाह और रसूल की इत़ाअ़त के बाद ख़ुलफ़ा-ए-इस्लाम की इत़ाअ़त भी ज़रूरी क़रार दी थी जो क़ौमी व मिल्ली नज़्म व नस्क़ को क़ायम रखने के लिये बेह़द ज़रूरी है साथ ही ये उसूल भी क़रार पाया कि **ला त़ाअ़त लिल मख़्लूक़ि फ़ी मअ़स़ियतिल ख़ालिक़ि** ख़ुलफ़ा-ए-इस्लाम या दीगर अइम्मा-ए-इस्लाम की इत़ाअ़त किताब व सुन्नत की ह़द तक है अगर किसी जगह उसकी इत़ाअ़त में किताबो सुन्नत से टकराव होता हो तो वहाँ बहरह़ाल उनकी फ़र्मांबरदारी को छोड़ना और किताब व सुन्नत को लाज़िम पकड़ना ज़रूरी होगा। ह़ज़रत इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह़.) का इर्शादे गिरामी बिलकुल बजा है कि जब मेरा कोई मसला कोई फ़त्वा क़ुर्आन व ह़दीष़ के ख़िलाफ़ हो तो मेरी बात को छोड़कर क़ुर्आन व ह़दीष़ को लाज़िम पकड़ो। दीगर अइम्मा-ए-किराम के भी ऐसे ही इर्शादात हैं जो किताब हुज्जतुल्लाहिल बालिग़ा और रिसाला इंस़ाफ़ व अ़क़्दुल जय्यिद मुअल्लफ़ात ह़ज़रत हुज्जतुल हिन्द शाह वली उल्लाह मुह़द्दिष़ देहलवी में देखे जा सकते हैं, वबिल्लाहित्तौफ़ीक़।

7137. हमसे अ़ब्दान ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, उन्हें यूनुस ने, उन्हें ज़ुहरी ने, उन्हें अबू सलमा इब्ने अ़ब्दुर्रह़मान ने ख़बर दी और उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) को बयान करते हुए सुना किरसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जिसने मेरी इत़ाअ़त की उसने अल्लाह की इत़ाअ़त की और जिसने मेरी नाफ़र्मानी की उसने अल्लाह की नाफ़र्मानी की और जिसने मेरे (मुक़र्रर किये हुए) अमीर की इत़ाअ़त की उसने मेरी इत़ाअ़त की और जिसने मेरे अमीर की नाफ़र्मानी की उसने मेरी नाफ़र्मानी की। (राजेअ़ : 2957)

٧١٣٧- حَدَّثَنَا عَبْدَانُ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ، عَنْ يُونُسَ، عَنِ الزُّهْرِيِّ أَخْبَرَنِي أَبُو سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُولُ: إِنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((مَنْ أَطَاعَنِي فَقَدْ أَطَاعَ اللهَ، وَمَنْ عَصَانِي فَقَدْ عَصَى اللهَ، وَمَنْ أَطَاعَ أَمِيرِي، فَقَدْ أَطَاعَنِي، وَمَنْ عَصَى أَمِيرِي فَقَدْ عَصَانِي)). [راجع: ٢٩٥٧]

लेकिन अगर अमीर का हुक्म क़ुर्आन व ह़दीष़ के ख़िलाफ़ हो तो उसे छोड़कर क़ुर्आन व ह़दीष़ पर अ़मल करना होगा।

7138. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, कहा मुझको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें अ़ब्दुल्लाह बिन दीनार ने और उन्हें अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, आगाह हो जाओ, तुममें से हर एक निगहबान है और हर एक से उसकी रिआ़या के बारे में सवाल किया जाएगा। पस इमाम (अमीरुल मोमिनीन) लोगों पर निगहबान है और उससे उनके बारे में सवाल होगा और किसी शख़्स़ का ग़ुलाम अपने सरदार के माल का निगहबान है और उससे उसके बारे में सवाल होगा। आगाह हो जाओ कि तुममें से हर एक निगहबान है और हर एक से उसकी रिआ़या के बारे में पुरसिश होगी। (राजेअ़ : 893)

٧١٣٨- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، حَدَّثَنِي مَالِكٌ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ دِينَارٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((أَلاَ كُلُّكُمْ رَاعٍ وَكُلُّكُمْ مَسْؤُولٌ عَنْ رَعِيَّتِهِ، فَالإِمَامُ الَّذِي عَلَى النَّاسِ رَاعٍ وَهُوَ مَسْؤُولٌ عَنْ رَعِيَّتِهِ، وَالرَّجُلُ رَاعٍ عَلَى أَهْلِ بَيْتِهِ وَهُوَ مَسْؤُولٌ عَنْ رَعِيَّتِهِ، وَالْمَرْأَةُ رَاعِيَةٌ عَلَى أَهْلِ بَيْتِ زَوْجِهَا وَوَلَدِهِ وَهِيَ مَسْؤُولَةٌ عَنْهُمْ، وَعَبْدُ الرَّجُلِ رَاعٍ عَلَى مَالِ سَيِّدِهِ وَهُوَ مَسْؤُولٌ عَنْهُ أَلاَ فَكُلُّكُمْ رَاعٍ وَكُلُّكُمْ مَسْؤُولٌ عَنْ

رَعِيَّتِهِ)). [راجع: ٨٩٣]

मक़्सद ये है कि ज़िम्मेदारी का दायरा हुकूमत व ख़िलाफ़त से हटकर हर अदना से अदना ज़िम्मेदार पर भी शामिल है। हर ज़िम्मेदार अपने हल्क़ा का ज़िम्मेदार और मस्ऊल है।

बाब 2 : अमीर और सरदार और ख़लीफ़ा हमेशा क़ुरैश क़बीले से होना चाहिये

٢- باب الأُمَرَاءُ مِنْ قُرَيْشٍ

तश्रीह : ये बाब का तर्जुमा ख़ुद एक ह़दीष़ का लफ़्ज़ है जिसको त़बरानी ने निकाला लेकिन चूँकि वो बुख़ारी (रह़.) की शर्त़ पर न थी इसलिये उसको न ला सके। जुम्हूर उ़लमा-ए-सलफ़ और ख़लफ़ का यही क़ौल है कि इमामत और ख़िलाफ़त के लिये क़ुरैशी होना शर्त़ है और ग़ैर क़ुरैशी की इमामत और ख़िलाफ़त स़ह़ीह़ नहीं है और ह़ज़रत अबूबक्र सि़द्दीक़ (रज़ि.) ने इसी ह़दीष़ से इस्तिदलाल करके अंस़ार के दा'वा को रद्द किया, जब वो कहते थे कि एक अमीर अंस़ार में से रहे एक क़ुरैश मे से और तमाम स़ह़ाबा ने उस पर इत्तिफ़ाक़ किया। गोया स़ह़ाबा का इस पर इज्माअ़ हो गया कि ग़ैर क़ुरैशी के लिये ख़िलाफ़त नहीं हो सकती अल्बत्ता ख़लीफ़ा-ए-वक़्त का वो नाइब रह सकता है जैसे आँह़ज़रत (ﷺ) ने और ख़ुलफ़ा-ए-राशिदीन ने और ख़ुलफ़ा-ए-बनी उमय्या और अ़ब्बासिया ने अपने अपने अ़हद में ग़ैर क़ुरैशी लोगों को अपना नाइब और आ़मिल मुक़र्रर किया है। ह़ाफ़िज़ ने कहा ख़ारजी और मुअ़तज़लियों ने इस मसले में ख़िलाफ़ किया वो ग़ैर क़ुरैशी की इमामत और ख़िलाफ़त जाइज़ रखते हैं। इब्ने त़य्यिब ने कहा उनका क़ौल इल्तिफ़ात के लायक़ नहीं है। जब ह़दीष़ से ष़ाबित है कि क़ुरैश का ह़क़ है और हर क़र्न में मुसलमानों ने इसी उसूल पर अ़मल किया है। क़ाज़ी अ़याज़ ने कहा सब उ़लमा का यही मज़हब है कि इमाम के लिये क़ुरैशी होना शर्त़ है और ये इज्माई मसाइल में से है और ख़ारजी और मुअ़तज़ली ने ये शर्त़ नहीं रखी उनका क़ौल तमाम मुसलमानों के ख़िलाफ़ है।

7139. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको शुऐ़ब ने ख़बर दी, उनसे ज़ुह्री ने बयान किया, उन्होने कहा कि मुह़म्मद बिन जुबैर बिन मुत़्इम बयान करते थे कि मैं क़ुरैश के एक वफ़्द के साथ मुआ़विया (रज़ि.) के पास था कि उन्हें मा'लूम हुआ कि अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स़ (रज़ि.) बयान करते हैं कि अन्क़रीब क़बीला क़ह़त़ान का एक बादशाह होगा। मुआ़विया (रज़ि.) उस पर ग़ुस्सा हुए और खड़े होकर अल्लाह की ता'रीफ़ उसकी शान के मुत़ाबिक़ की फिर फ़र्माया अम्मा बअ़द! मुझे मा'लूम हुआ है कि तुममें से कुछ लोग ऐसी ह़दीष़ बयान करते हैं जो न किताबुल्लाह में है और न रसूलुल्लाह (ﷺ) से मन्क़ूल है, ये तुममें से जाहिल लोग हैं। पस तुम ऐसे ख़्यालात से बचते रहो जो तुम्हें गुमराह कर दें क्योंकि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को ये फ़र्माते सुना है कि ये अम्र (ख़िलाफ़त) क़ुरैश में रहेगा। कोई भी इनसे अगर दुश्मनी करेगा तो अल्लाह उसे रुस्वा कर देगा लेकिन उस वक़्त तक जब तक वो दीन को क़ायम रखेंगे। इस रिवायत की

٧١٣٩- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ : كَانَ مُحَمَّدُ بْنُ جُبَيْرِ بْنِ مُطْعِمٍ يُحَدِّثُ أَنَّهُ بَلَغَ مُعَاوِيَةَ وَهُوَ عِنْدَهُ فِي وَفْدٍ مِنْ قُرَيْشٍ أَنَّ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عَمْرٍو يُحَدِّثُ أَنَّهُ سَيَكُونُ مَلِكٌ مِنْ قَحْطَانَ فَغَضِبَ فَقَامَ فَأَثْنَى عَلَى اللَّهِ بِمَا هُوَ أَهْلُهُ ثُمَّ قَالَ: أَمَّا بَعْدُ فَإِنَّهُ بَلَغَنِي أَنَّ رِجَالاً مِنْكُمْ يُحَدِّثُونَ أَحَادِيثَ لَيْسَتْ فِي كِتَابِ اللَّهِ وَلاَ تُؤْثَرُ عَنْ رَسُولِ اللَّهِ ﷺ وَأُولَئِكَ جُهَّالُكُمْ فَإِيَّاكُمْ وَالأَمَانِيَّ الَّتِي تُضِلُّ أَهْلَهَا، فَإِنِّي سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ: ((إِنَّ هَذَا الأَمْرَ فِي قُرَيْشٍ لاَ يُعَادِيهِمْ أَحَدٌ إِلاَّ كَبَّهُ اللَّهُ عَلَى وَجْهِهِ مَا

أَقَامُوا الدِّينَ)). تَابَعَهُ نُعَيْمٌ عَنِ ابْنِ الْمُبَارَكِ، عَنْ مَعْمَرٍ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ جُبَيْرٍ. [راجع: ٣٥٠٠]

मुताबअ़त नुऐ़म ने इब्नुल मुबारक से की है, उनसे मअ़मर ने, उनसे ज़ुह्री ने और उनसे मुहम्मद बिन जुबैर ने। (राजेअ़ : 3500)

तश्रीह : क़ह्तानी की बाबत हदीष़ मज़्कूर को इसके अ़लावा हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) और हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ड़मर (रज़ि.) ने भी रिवायत किया है। मगर हज़रत मुआविया (रज़ि.) शायद ये समझे कि शुरूआती ज़माना-ए-इस्लाम में शायद ऐसा होगा ये ग़लत है और आँहज़रत (ﷺ) ने इमारत को कुरैश के साथ ख़ास कर दिया है और हदीष़ का मतलब ये है कि कुर्बे क़यामत एक वक़्त ऐसा आएगा जब क़ह्तानी शख़्स बादशाह होगा। अम्रे ख़िलाफ़ते इस्लामी कुरैश के साथ मख़्सूस है जब तक वो दीन को क़ायम रखें।

٧١٤٠- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ، حَدَّثَنَا عَاصِمُ بْنُ مُحَمَّدٍ سَمِعْتُ أَبِي يَقُولُ : قَالَ ابْنُ عُمَرَ قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((لاَ يَزَالُ هَذَا الأَمْرُ فِي قُرَيْشٍ مَا بَقِيَ مِنْهُمُ اثْنَانِ)). [راجع: ٣٥٠١]

7140. हमसे अह़मद बिन यूनुस ने बयान किया, कहा हमसे आ़सिम बिन मुह़म्मद ने बयान किया, कहा मैंने अपने वालिद से सुना, उन्होंने बयान किया कि अ़ब्दुल्लाह बिन ड़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया ये अम्रे ख़िलाफ़त उस वक़्त तक कुरैश में रहेगा जब तक उनमें दो शख़्स भी बाक़ी रहेंगे। (राजेअ़ : 3501)

और जब तक वो दीन को क़ायम रखेंगे। अगर दीन को छोड़ देंगे तो अम्रे ख़िलाफ़त दीगर क़ौमों के ह़वाले हो जाएगा।

٣- باب أَجْرِ مَنْ قَضَى بِالْحِكْمَةِ

لِقَوْلِهِ تَعَالَى : ﴿وَمَنْ لَمْ يَحْكُمْ بِمَا أَنْزَلَ اللهُ فَأُولَئِكَ هُمُ الْفَاسِقُونَ﴾.

बाब 3 : जो शख़्स अल्लाह के हुक्म के मुवाफ़िक़ फ़ैसला करे उसका

ष़वाब क्योंकि अल्लाह ने सूरह माइदह में फ़र्माया है जो लोग अल्लाह के उतारे मुवाफ़िक़ फ़ैसला न करें वही गुनहगार हैं।

मा'लूम हुआ कि जो अल्लाह के उतारे हुए हुक्म के मुवाफ़िक़ फ़ैसला करें उनको ष़वाब मिलेगा।

٧١٤١- حَدَّثَنَا شِهَابُ بْنُ عَبَّادٍ، حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ حُمَيْدٍ، عَنْ إِسْمَاعِيلَ، عَنْ قَيْسٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((لاَ حَسَدَ إِلاَّ فِي اثْنَتَيْنِ، رَجُلٌ آتَاهُ اللهُ مَالاً فَسَلَّطَهُ عَلَى هَلَكَتِهِ فِي الْحَقِّ، وَآخَرُ آتَاهُ اللهُ حِكْمَةً فَهُوَ يَقْضِي بِهَا وَيُعَلِّمُهَا)). [راجع: ٧٣]

7141. हमसे शिहाब बिन अ़ब्बाद ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम बिन हुमैद ने बयान किया, उनसे इस्माईल बिन अबी ख़ालिद ने, उनसे क़ैस बिन अबी हाज़िम ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, रश्क बस दो आदमियों पर ही किया जाना चाहिये। एक वो शख़्स जिसे अल्लाह ने माल दिया और फिर उसने वो ह़क़ के रास्ते में बे दरग़ ख़र्च किया और दूसरा वो जिसे अल्लाह ने ह़िक्मते दीन का इल्म (क़ुर्आन व सुन्नत) का दिया है वो उसके मुवाफ़िक़ फ़ैसला करता है। (राजेअ़ : 73)

तश्रीह : या'नी और लोग रश्क के क़ाबिल ही नहीं हैं ये दो शख़्स अल्बत्ता रश्क के क़ाबिल हैं क्योंकि इन दोनों शख़्सों ने दीन और दुनिया दोनों ह़ासिल कर लिये, दुनिया में नेक नाम हुए और आख़िरत में शादकाम। कुछ बन्दे अल्लाह तआ़ला के ऐसे भी गुज़रे हैं जिनको ये दोनों ने'मतें सरफ़राज़ हुई हैं उन पर बेहद रश्क होता है। नवाब सय्यद मुह़म्मद सिद्दीक़ ह़सन ख़ाँ साहब

को अल्लाह तआला ने दीन का इल्म भी दिया था और दौलत भी इनायत फ़र्माई थी। उन्होंने अपनी दौलत बहुत से नेक कामों में जैसे इशाअत कुतुबे ह़दीष़ वग़ैरह में सर्फ़ की अल्लाह तआला उनके दर्जे बुलन्द करे और उनकी नेकियाँ क़ुबूल फ़र्माएँ, आमीन।

बाब 4 : इमाम और बादशाह इस्लाम की बात सुनन और मानना वाजिब है जब तक वह ख़िलाफ़ शरअ और गुनाह की बात का हुक्म न दे

٤- باب - السَّمْعِ وَالطَّاعَةِ لِلإِمَامِ مَا لَمْ تَكُنْ مَعْصِيَةً

ह़दीष़ का मतलब ये है कि बादशाहे इस्लाम अगर किसी ह़ब्शी गुलाम को भी आमिल मुक़र्रर करे तो उसकी इत़ाअत वाजिब होगी। ह़ब्शी गुलाम का ख़लीफ़ा होना मुराद नहीं है।

7142. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे यह्या ने बयान किया, उनसे शुअबा ने बयान किया, उनसे अबुत तियाह ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया सुनो और इत़ाअत करो, ख़्वाह तुम पर किसी ऐसे ह़ब्शी गुलाम को ही आमिल बनाया जाए जिसका सर मुनक़्क़ा की तरह छोटा हो। (राजेअ : 693)

٧١٤٢- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا يَحْيَى، عَنْ شُعْبَةَ، عَنْ أَبِي التَّيَّاحِ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((اسْمَعُوا وَأَطِيعُوا وَإِنِ اسْتُعْمِلَ عَلَيْكُمْ عَبْدٌ حَبَشِيٌّ كَأَنَّ رَأْسَهُ زَبِيبَةٌ)). [راجع: ٦٩٣]

या'नी अदना से अदना ह़ाकिम की भी इत़ाअत ज़रूरी है बशर्ते कि मअ़सियते इलाही का हुक्म न दे।

7143. हमसे सुलैमान बिन ह़र्ब ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे ह़म्माद ने बयान किया, उनसे जअद ने बयान किया और उनसे अबू रजाअ ने बयान किया और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, जिसने अपने अमीर में कोई बुरा काम देखा तो उसे स़ब्र करना चाहिये क्योंकि कोई अगर जमाअ़त से एक बालिश्त भी जुदा हो तो वो जाहिलियत की मौत मरेगा। (राजेअ : 7053)

٧١٤٣- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، عَنِ الْجَعْدِ، عَنْ أَبِي رَجَاءٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ يَرْوِيهِ قَالَ : قَالَ النَّبِيُّ ﷺ ((مَنْ رَأَى مِنْ أَمِيرِهِ شَيْئًا فَكَرِهَهُ فَلْيَصْبِرْ، فَإِنَّهُ لَيْسَ أَحَدٌ يُفَارِقُ الْجَمَاعَةَ شِبْرًا فَيَمُوتَ إِلاَّ مَاتَ مِيتَةً جَاهِلِيَّةً)). [راجع: ٧٠٥٣]

तश्रीह़ : जमाअ़त से अलग होना इससे ये मुराद है कि ह़ाकिमे इस्लाम से बाग़ी होकर उसकी इत़ाअत से निकल जाए जैसा अ़ली (रज़ि.) की ख़िलाफ़त में ख़ारजियों ने किया था ऐसा करना मिल्ली निज़ाम को तोड़ना और अ़हदे जाहिलियत की सी ख़ुदसरी में गिरफ़्तार होना है जो अहले जाहिलियत का शैवा है। मुसलमान को ऐसी ख़ुदसरी की ह़ालत में मरना अ़हदे जाहिलियत वालों की सी मौत मरना है जो मुसलमान के लिये किसी तरह ज़ैबा नहीं देता।

7144. हमसे मुसद्दद बिन मुस्रहिद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन सईद ने बयान किया, उनसे उ़बैदुल्लाह ने, उनसे नाफ़ेअ ने, और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, मुसलमान के लिये अमीर की बात सुनना और उसकी इत़ाअत करना ज़रूरी है। उन चीज़ों में भी जिन्हें वो पसंद करे और उनमें भी जिन्हें वो नापसंद करे,

٧١٤٤- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، عَنْ عُبَيْدِ اللهِ حَدَّثَنِي نَافِعٌ، عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((السَّمْعُ وَالطَّاعَةُ عَلَى الْمَرْءِ الْمُسْلِمِ فِيمَا أَحَبَّ وَكَرِهَ، مَا لَمْ يُؤْمَرْ

بِمَعْصِيَةٍ، فَإِذَا أُمِرَ بِمَعْصِيَةٍ فَلاَ سَمْعَ وَلاَ طَاعَةَ)). [راجع: ٢٩٥٥]

जब तक उसे मअ़सियत का हुक्म न दिया जाए। फिर जब उसे मअ़सियत का हुक्म दिया जाए तो न सुनना बाक़ी रहता है न इताअ़त करना। (राजेअ़ : 2955)

अमीर हा या इमाम मुज्तहिद ग़लती होने का इम्कान सबसे है, इसलिये ग़लती में उनकी इताअ़त करना जाइज़ नहीं है। इसी से अंधी तक़्लीद की जड़ कटती है। आजकल किसी इमाम मस्जिद का इमाम व ख़लीफ़ा बन बैठना और अपने न मानने वालों को इस ह़दीष़ का मिस्दाक़ ठहराना इस ह़दीष़ का मज़ाक़ उड़ाना है और लिखे न पढ़े नाम मुहम्मद फ़ाज़िल का मिस्दाक़ बनना है जबकि ऐसे इमाम अग़्यार की गुलामी में रहकर ख़लीफ़ा कहलाकर ख़िलाफ़ते इस्लामी का मज़ाक़ उड़ाते हैं।

٧١٤٥- حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصِ بْنِ غِيَاثٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، حَدَّثَنَا سَعْدُ بْنُ عُبَيْدَةَ، عَنْ أَبِي عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: بَعَثَ النَّبِيُّ ﷺ سَرِيَّةً وَأَمَّرَ عَلَيْهِمْ رَجُلاً مِنَ الأَنْصَارِ وَأَمَرَهُمْ أَنْ يُطِيعُوهُ، فَغَضِبَ عَلَيْهِمْ وَقَالَ: أَلَيْسَ قَدْ أَمَرَ النَّبِيُّ ﷺ أَنْ تُطِيعُونِي؟ قَالُوا: بَلَى. قَالَ: عَزَمْتُ عَلَيْكُمْ لَمَا جَمَعْتُمْ حَطَبًا وَأَوْقَدْتُمْ نَارًا ثُمَّ دَخَلْتُمْ فِيهَا، فَجَمَعُوا حَطَبًا فَأَوْقَدُوا فَلَمَّا هَمُّوا بِالدُّخُولِ فَقَامَ يَنْظُرُ بَعْضُهُمْ إِلَى بَعْضٍ فَقَالَ بَعْضُهُمْ: إِنَّمَا تَبِعْنَا النَّبِيَّ ﷺ فِرَارًا مِنَ النَّارِ أَفَنَدْخُلُهَا؟ فَبَيْنَمَا هُمْ كَذَلِكَ إِذْ خَمَدَتِ النَّارُ وَسَكَنَ غَضَبُهُ فَذُكِرَ لِلنَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: ((لَوْ دَخَلُوهَا مَا خَرَجُوا مِنْهَا أَبَدًا، إِنَّمَا الطَّاعَةُ فِي الْمَعْرُوفِ)). [راجع: ٣٣٤٠]

7145. हमसे उ़मर बिन ह़फ़्स़ बिन ग़याष़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे मेरे वालिद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे आ'मश ने बयान किया, उनसे सअ़द बिन उ़बैदह ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुर्रह़मान ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने एक दस्ता भेजा और उस पर अंस़ार के एक शख़्स़ को अमीर बनाया और लोगों को हुक्म दिया कि इनकी इताअ़त करें। फिर अमीर फ़ौज के लोगों पर गुस़्सा हुए और कहा कि क्या आँह़ज़रत (ﷺ) ने तुम्हें मेरी इताअ़त का हुक्म नहीं दिया है? लोगों ने कहा कि ज़रूर दिया है। इस पर उन्होंने कहा कि मैं तुम्हें हुक्म देता हूँ कि लकड़ी जमा करो और उससे आग लगाओ और उसमें कूद पड़ो। लोगो ने लकड़ी जमा की और आग जलाई, जब कूदना चाहा तो एक दूसरे को लोग देखने लगे और उनमें से कुछ ने कहा कि हमने आँह़ज़रत (ﷺ) की फ़र्मांबरदारी आग से बचने के लिये की थी, क्या फिर हम इसमें ख़ुद ही दाख़िल हो जाएँ। इसी दौरान में आग ठण्डी हो गई और अमीर को गुस़्सा भी जाता रहा। फिर आँह़ज़रत (ﷺ) से इसका ज़िक्र किया तो आपने फ़र्माया कि अगर ये लोग उसमे कूद पड़ते तो फिर उसमें से न निकल सकते। इताअ़त सिर्फ़ अच्छी बातों में है। (राजेअ़ : 3340)

ग़लत बातों में इताअ़त जाइज़ नहीं है। ये अमीरे लश्कर ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा सह्मी अंसारी (रज़ि.) थे गुस़्से में उनसे ये बात हुई गुस़्सा ठण्डा होने तक वो आग भी ठण्डी हो गई।

٥- باب مَنْ لَمْ يَسْأَلِ الإِمَارَةَ أَعَانَهُ اللهُ

बाब 5 : जिसे बिन मांगे सरदारी मिले तो अल्लाह उसकी मदद करेगा

उसकी सरदारी नेक नामी से गुज़रेगी और जो शख़्स मांगकर ओहदा ह़ासिल करेगा अल्लाह की मदद उसके शामिले ह़ाल न होगी।

7146. हमसे हज्जाज बिन मिन्हाल ने बयान किया, कहा हमसे जरीर बिन ह़ाज़िम ने बयान किया, उनसे ह़सन ने और उनसे अ़ब्दुर्रह़मान बिन समुरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, ऐ अ़ब्दुर्रह़मान! हुकूमत के त़ालिब न बनना क्योंकि अगर तुम्हें मांगने पर हुकूमत मिली तो तुम उसके ह़वाले कर दिये जाओगे और अगर तुम्हें बिना मांगे मिली तो उसमें तुम्हारी (अल्लाह की त़रफ़ से) मदद की जाएगी और अगर तुमने क़सम खा ली हो फिर उसके सिवा दूसरी चीज़ में भलाई देखो तो अपनी क़सम का कफ़्फ़ारा अदा कर दो और वो काम करो जिसमें भलाई हो। (राजेअ़ :6622)

٧١٤٦- حَدَّثَنَا حَجَّاجُ بْنُ مِنْهَالٍ، حَدَّثَنَا جَرِيرُ بْنُ حَازِمٍ، عَنِ الْحَسَنِ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ سَمُرَةَ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((يَا عَبْدَ الرَّحْمَنِ لاَ تَسْأَلِ الإِمَارَةَ فَإِنَّكَ إِنْ أُعْطِيتَهَا عَنْ مَسْأَلَةٍ وُكِلْتَ إِلَيْهَا، وَإِنْ أُعْطِيتَهَا عَنْ غَيْرِ مَسْأَلَةٍ أُعِنْتَ عَلَيْهَا، وَإِذَا حَلَفْتَ عَلَى يَمِينٍ فَرَأَيْتَ غَيْرَهَا خَيْرًا مِنْهَا فَكَفِّرْ يَمِينَكَ، وَائْتِ الَّذِي هُوَ خَيْرٌ)).[راجع: ٦٦٢٢]

ग़लत़ बात पर ख़्वाह मख़्वाह अड़े रहना कोई दानिशमंदी नहीं है अगर ग़लत़ क़सम की सूरत हो तो उसका कफ़्फ़ारा अदा करना ज़रूरी है।

बाब 6 : जो शख़्स मांगकर हुकूमत या सरदारी ले उसको अल्लाह पाक छोड़ देगा वो जाने उसका काम जाने

٦- باب مَنْ سَأَلَ الإِمَارَةَ وُكِلَ إِلَيْهَا

7147. हमसे अबू मअ़मर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अ़ब्दुल वारिष़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे यूनुस ने बयान किया, उनसे ह़सन ने बयान किया, कहा कि मुझसे अ़ब्दुर्रह़मान बिन समुरह (रज़ि.) ने बयान किया कि उनसे रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, ऐ अ़ब्दुर्रह़मान इब्ने समुरह! हुकूमत त़लब मत करना क्योंकि अगर तुम्हें मांगने पर हुकूमत अमीरी मिली तो तुम उसके ह़वाले कर दिये जाओगे और अगर तुम्हें मांगे बग़ैर मिली तो उसमें तुम्हारी मदद की जाएगी और अगर तुम किसी बात पर क़सम खा लो और फिर उसके सिवा दूसरी चीज़ में भलाई देखो तो वो करो जिसमें भलाई हो और अपनी क़सम का कफ़्फ़ारा अदा कर दो। (राजेअ़ : 6622)

٧١٤٧- حَدَّثَنَا أَبُو مَعْمَرٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ، حَدَّثَنَا يُونُسُ، عَنِ الْحَسَنِ، حَدَّثَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنِ سَمُرَةَ قَالَ : قَالَ لِي رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((يَا عَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنَ سَمُرَةَ لاَ تَسْأَلِ الإِمَارَةَ، فَإِنْ أُعْطِيتَهَا عَنْ مَسْأَلَةٍ وُكِلْتَ إِلَيْهَا وَإِنْ أُعْطِيتَهَا عَنْ غَيْرِ مَسْأَلَةٍ أُعِنْتَ عَلَيْهَا، وَإِذَا حَلَفْتَ عَلَى يَمِينٍ فَرَأَيْتَ غَيْرَهَا خَيْرًا مِنْهَا فَائْتِ الَّذِي هُوَ خَيْرٌ، وَكَفِّرْ عَنْ يَمِينِكَ)).
[راجع: ٦٦٢٢]

तश्रीह़ : इसमें ये भी इशारा है कि ह़ाकिमे आला अपनी हुकूमत में क़ाबिलतरीन अफ़राद को तलाश करके उमूरे हुकूमत उनके ह़वाले करे और जो लोग ख़ुद लालची हों उनको कोई ज़िम्मेदारी का मंस़ब सुपुर्द न करे। ऐसे लोग अदायगी में कामयाब नहीं होंगे, इल्ला माशाअल्लाह

बाब 7 : हुकूमत और सरदारी की ह़िर्स़

٧- باب مَا يُكْرَهُ مِنَ الْحِرْصِ عَلَى

(लालच) करना मना है   الإِمَارَةِ

7148. हमसे अहमद बिन यूनुस ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इब्ने अबी ज़िब ने बयान किया, उनसे सईद मक़्बरी ने बयान किया और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, तुम हुकूमत का लालच करोगे और क़यामत के दिन तुम्हारे लिये बाइष़े नदामत होगी। पस क्या ही बेहतर है दूध पिलाने वाली और क्या ही बुरी है दूध छुड़ाने वाली। और मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन हमरान ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल हमीद ने बयान किया, उनसे सईद मक़्बरी ने, उनसे उ़मर बिन हकम ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने अपना क़ौल (मौक़ूफ़न) नक़ल किया।

٧١٤٨- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ، حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي ذِئْبٍ، عَنْ سَعِيدٍ الْمَقْبُرِيِّ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((إِنَّكُمْ سَتَحْرِصُونَ عَلَى الإِمَارَةِ وَسَتَكُونُ نَدَامَةً يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَنِعْمَ الْمُرْضِعَةُ وَبِئْسَتِ الْفَاطِمَةُ)) وَقَالَ مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ: حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ حُمْرَانَ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْحَمِيدِ، عَنْ سَعِيدٍ الْمَقْبُرِيِّ، عَنْ عُمَرَ بْنِ الْحَكَمِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَوْلَهُ :

तश्रीह : तो इस त़रीक़ में दो बातें अगले त़रीक़ के खिलाफ़ हैं एक तो सईद और अबू हुरैरह (रज़ि.) में उ़मर बिन हकम का वास्ता होना, दूसरे हदीष़ को मौक़ूफ़न नक़ल करना।

सुब्हानल्लाह! आँहज़रत (ﷺ) ने क्या उ़म्दह मिष़ाल दी है। आदमी को हुकूमत और सरदारी मिलते वक़्त बड़ी लज़्ज़त होती है, ख़ूब रुपया कमाता है, मज़े उड़ाता है लेकिन उसको समझ लेना चाहिये कि ये सदा क़ायम रहने वाली चीज़ नहीं, एक दिन छिन जाएगी तो जितना मज़ा उठाया है वो सब किरकिरा हो जाएगा और उस रंज के सामने जो सरदारी और हुकूमत जाते वक़्त होगा ये ख़ुशी कोई चीज़ नहीं है। आ़क़िल को चाहिये कि जिस काम के अंजाम में रंज हो उसको थोड़ी सी लज़्ज़त की वजह से हर्गिज़ इख़्तियार न करे। आ़क़िल वही काम करता है जिसमें रंज और दुख न हो, नर्मी लज़्ज़त ही लज़्ज़त हो गो ये लज़्ज़त मिक़्दार में कम हो लेकिन उस लज़्ज़त से बदर्जा बेहतर है जिसके बाद रंज सहना पड़े, **ला हौल व ला क़ुव्वत इल्ला बिल्लाह।** दुनिया की हुकूमत पर सरदारी और बादशाहत दरहक़ीक़त एक अ़ज़ाबे अलीम है। इसीलिये अ़क़्लमंद बुज़ुर्ग इससे हमेशा भागते रहे। इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) ने मार खाई, क़ैद में रहे, मगर हुकूमत क़ुबूल न की। दूसरी हदीष़ में है जो शख़्स अ़दालत का हाकिम या'नी क़ाज़ी (जज) बनाया गया वो बिन छुरी ज़िब्ह किया गया।

7149. हमसे मुहम्मद बिन अ़ला ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, उनसे बुरैदह ने, उनसे अबू बुर्दा ने और उनसे अबू मूसा (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में अपनी क़ौम के दो आदमियों को लेकर हाज़िर हुआ। उनमें से एक ने कहा कि या रसूलल्लाह! हमें कहीं का हाकिम बना दीजिए और दूसरे ने भी यही ख़्वाहिश ज़ाहिर की। इस पर आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि हम ऐसे शख़्स को ये ज़िम्मेदारी नहीं सौंपते जो इसे त़लब करे और न उसे देते हैं जो इसका हरीस़ (लालची) हो। (राजेअ़ : 2261)

٧١٤٩- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلاَءِ، حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، عَنْ بُرَيْدٍ، عَنْ أَبِي بُرْدَةَ، عَنْ أَبِي مُوسَى رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: دَخَلْتُ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ أَنَا وَرَجُلاَنِ مِنْ قَوْمِي فَقَالَ أَحَدُ الرَّجُلَيْنِ أَمِّرْنَا يَا رَسُولَ اللهِ وَقَالَ الآخَرُ: مِثْلَهُ، فَقَالَ: ((إِنَّا لاَ نُوَلِّي هَذَا مَنْ سَأَلَهُ وَلاَ مَنْ حَرَصَ عَلَيْهِ)).

[راجع: ٢٢٦١]

बाब 8 : जो शख़्स रइयत का हाकिम बने और उनकी ख़ैरख़्वाही न करे उसका अ़ज़ाब

٨- باب مَنِ اسْتُرْعِيَ رَعِيَّةً فَلَمْ يَنْصَحْ

7150. हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अबुल अश्हब ने बयान किया, उनसे हसन ने कि उ़बैदुल्लाह बिन ज़ियाद मअ़क़ल बिन यसार (रज़ि.) की अ़यादत के लिए उस मर्ज़ में आए जिसमें उनका इंतिक़ाल हुआ, तो मअ़क़ल बिन यसार (रज़ि.) ने उनसे कहा कि मैं तुम्हें एक ह़दीष़ सुनाता हूँ जो मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुनी थी। आपने फ़र्माया था, जब अल्लाह तआ़ला किसी बन्दे को किसी रइयत का हाकिम बनाता है और वो ख़ैरख़्वाही के साथ उसकी हिफ़ाज़त नहीं करता है तो वो जन्नत की ख़ुश्बू भी नहीं पाएगा

٧١٥٠- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ، حَدَّثَنَا أَبُو الأَشْهَبِ، عَنِ الْحَسَنِ أَنَّ عُبَيْدَ اللهِ بْنَ زِيَادٍ عَادَ مَعْقِلَ بْنَ يَسَارٍ فِي مَرَضِهِ الَّذِي مَاتَ فِيهِ فَقَالَ لَهُ مَعْقِلٌ: إِنِّي مُحَدِّثُكَ حَدِيثًا سَمِعْتُهُ مِنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((مَا مِنْ عَبْدٍ اسْتَرْعَاهُ اللهُ رَعِيَّةً فَلَمْ يَحُطْهَا بِنَصِيحَةٍ إِلاَّ لَمْ يَجِدْ رَائِحَةَ الْجَنَّةِ)).

तश्रीह : त़बरानी की रिवायत में इतना ज़्यादा है ह़ालाँकि बहिश्त की ख़ुश्बू सत्तर बरस की राह से महसूस होती है। त़बरानी की दूसरी रिवायत में है कि ये उ़बैदुल्लाह बिन ज़ियाद एक ज़ालिम सफ़्फ़ाक छोकरा था जिसको ह़ज़रत मुआविया (रज़ि.) ने ह़ाकिम बनाया था वो बहुत ख़ूँरेज़ी किया करता था आख़िर मअ़क़ल बिन यसार स़ह़ाबी (रज़ि.) ने उसको नसीह़त की कि इन कामों से बाज़ रह अख़ीर तक।

7151. हमसे इस्हाक़ बिन मंसूर ने बयान किया, कहा हमको हुसैन जुअ़फ़ी ने ख़बर दी कि ज़ाइदा ने बयान किया, उनसे हिशाम ने और उनसे ह़सन ने बयान किया कि हम मअ़क़ल बिन यसार (रज़ि.) की एयादत के लिये उनके पास गये फिर उ़बैदुल्लाह भी आए तो मअ़क़ल (रज़ि.) ने उनसे कहा कि मैं तुमसे एक ऐसी ह़दीष़ बयान करता हूँ जिसे मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना था। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अगर कोई शख़्स़ मुसलमानों का ह़ाकिम बनाया गया और उसने उनके मामले में ख़यानत की और उसी ह़ालत में मर गया तो अल्लाह तआ़ला उस पर जन्नत ह़राम कर देता है।

٧١٥١- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ، أَخْبَرَنَا حُسَيْنٌ الْجُعْفِيُّ قَالَ زَائِدَةُ: ذَكَرَهُ عَنْ هِشَامٍ، عَنِ الْحَسَنِ قَالَ : أَتَيْنَا مَعْقِلَ بْنَ يَسَارٍ نَعُودُهُ، فَدَخَلَ عُبَيْدُ اللهِ فَقَالَ لَهُ مَعْقِلٌ: أُحَدِّثُكَ حَدِيثًا سَمِعْتُهُ مِنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ؟ فَقَالَ: ((مَا مِنْ وَالٍ يَلِي رَعِيَّةً مِنَ الْمُسْلِمِينَ فَيَمُوتُ وَهُوَ غَاشٌّ لَهُمْ، إِلاَّ حَرَّمَ اللهُ عَلَيْهِ الْجَنَّةَ)).

ह़ज़रत मअ़क़ल बिन यसार (रज़ि.) मुज़नी अस्ह़ाबे शजरा में से हैं। सन 60 हिजरी में वफ़ात पाई रज़ियल्लाहु अ़न्हु व अर्ज़ाहू।

बाब 9 : जो शख़्स़ अल्लाह के बन्दों को सताए (मुश्किल में फांसे) अल्लाह उसको सताएगा (मुश्किल में फंसाएगा)

٩- باب مَنْ شَاقَّ شَقَّ اللهُ عَلَيْهِ

7152. हमसे इस्ह़ाक़ वास्त़ी ने बयान किया, कहा हमसे ख़ालिद ने, उनसे जरीरी ने, उनसे त़रीफ़ अबू तमीमा ने बयान

٧١٥٢- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ الْوَاسِطِيُّ، حَدَّثَنَا خَالِدٌ، عَنِ الْجُرَيْرِيِّ، عَنْ طَرِيفٍ

أَبِي تَمِيمَةَ قَالَ: شَهِدْتُ صَفْوَانَ وَجُنْدُبًا وَأَصْحَابَهُ وَهُوَ يُوصِيهِمْ فَقَالُوا: هَلْ سَمِعْتَ مِنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ شَيْئًا؟ قَالَ: سَمِعْتُهُ يَقُولُ: ((مَنْ سَمَّعَ سَمَّعَ اللهُ بِهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ، قَالَ : وَمَنْ يُشَاقِقْ يَشْقُقِ اللهُ عَلَيْهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ، فَقَالُوا: أَوْصِنَا فَقَالَ: إِنَّ أَوَّلَ مَا يُنْتِنُ مِنَ الإِنْسَانِ بَطْنُهُ، فَمَنِ اسْتَطَاعَ أَنْ لاَ يَأْكُلَ إِلاَّ طَيِّبًا فَلْيَفْعَلْ، وَمَنِ اسْتَطَاعَ أَنْ لاَ يُحال بَيْنَهُ وَبَيْنَ الْجَنَّةِ بِمِلْءِ كَفِّهِ مِنْ دَمٍ أَهْرَاقَهُ فَلْيَفْعَلْ)). قُلْتُ لأَبِي عَبْدِ اللهِ مَنْ يَقُولُ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ جُنْدُبٌ قَالَ: نَعَمْ جُنْدُبٌ.

[راجع: ٦٤٩٩]

किया कि मैं स़फ़्वान और जुन्दुब और उनके साथियों के पास मौजूद था। स़फ़्वान अपने साथियों (शागिर्दों) को वसिय्यत कर रहे थे, फिर (सफ़्वान और उनके साथियों ने जुन्दुब रज़ि. से) पूछा, क्या आपने रसूलुल्लाह (ﷺ) से कुछ सुना है? उन्होंने बयान किया कि मैंने आँहज़रत (ﷺ) को ये कहते सुना है कि जो लोगों को रियाकारी के तौर पर दिखाने के लिये काम करेगा अल्लाह तआला क़यामत के दिन उसकी रियाकारी का हाल लोगों को सुना देगा और फ़र्माया कि जो लोगों को तकलीफ़ में मुब्तला करेगा अल्लाह तआला क़यामत के दिन उसे तकलीफ़ में मुब्तला करेगा, फिर उन लोगों ने कहा कि हमें कोई वसिय्यत कीजिए। उन्होंने कहा कि सबसे पहले इंसान के जिस्म में उसका पेट सड़ता है पस जो कोई ताक़त रखता हो कि पाक व तय्यब के सिवा और कुछ न खाए तो उसे ऐसा ही करना चाहिये और जो कोई ताक़त रखता हो वो चुल्लू भर लहू बहाकर (या'नी नाहक़ ख़ून करके) अपने तईं बहिश्त में जाने से न रोके। जरीरी कहते हैं कि मैंने अबू अब्दुल्लाह से पूछा, कौन स़ाहब इस हदीस़ में ये कहते हैं कि मैंने रसूलुल्लाहा (ﷺ) से सुना? क्या जुन्दुब कहते हैं? उन्होंने कहा कि हाँ वही कहते हैं। (राजेअ : 6499)

١٠- باب الْقَضَاءِ وَالْفُتْيَا فِي الطَّرِيقِ وَقَضَى يَحْيَى بْنُ يَعْمَرَ فِي الطَّرِيقِ وَقَضَى الشَّعْبِيُّ عَلَى بَابِ دَارِهِ.

बाब 10 : चलते चलते रास्ते में कोई फ़ैसला करना और फ़त्वा देना, यह्या बिन यअमर ने रास्ते में फ़ैसला किया और शअबी ने अपने घर के दरवाज़े पर फ़ैसला किया

٧١٥٣- حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنْ مَنْصُورٍ، عَنْ سَالِمِ بْنِ أَبِي الْجَعْدِ، حَدَّثَنَا أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: بَيْنَمَا أَنَا وَالنَّبِيُّ ﷺ خَارِجَانِ مِنَ الْمَسْجِدِ، فَلَقِيَنَا رَجُلٌ عِنْدَ سُدَّةِ الْمَسْجِدِ فَقَالَ : يَا رَسُولَ اللهِ مَتَى السَّاعَةُ؟ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((مَا أَعْدَدْتَ

7153. हमसे उ़स्मान बिन अबी शैबा ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे जरीर ने बयान किया, उनसे मंसूर ने, उनसे सालिम बिन अबी जअदि ने बयान किया और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कहा कि मैं और नबी करीम (ﷺ) मस्जिद से निकल रहे थे कि एक शख़्स मस्जिद की चौखट पर आकर हमसे मिला और पूछा या रसूलल्लाह! क़यामत कब है? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, तुमने क़यामत के लिये क्या तैयारी की है? उस पर वो शख़्स ख़ामोश सा हो गया, फिर उसने कहा या रसूलल्लाह! मैंने बहुत ज़्यादा रोज़े, नमाज़ और

لَهَا؟)) فَكَأَنَّ الرَّجُلَ اسْتَكَانَ ثُمَّ قَالَ يَا رَسُولَ اللهِ: مَا أَعْدَدْتُ لَهَا كَبِيرَ صِيَامٍ وَلاَ صَلاَةٍ وَلاَ صَدَقَةٍ، وَلَكِنِّي أُحِبُّ اللهَ وَرَسُولَهُ قَالَ: ((أَنْتَ مَعَ مَنْ أَحْبَبْتَ)). [راجع: ٣٦٨٨]

सदक़ा क़यामत के लिये नहीं तैयार किये हैं लेकिन मैं अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) से मुहब्बत रखता हूँ। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया तुम उसके साथ होओगे जिससे तुम मुहब्बत रखते हो। (राजेअ : 3688)

١١- باب مَا ذُكِرَ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ لَمْ يَكُنْ لَهُ بَوَّابٌ

बाब 11 : ये बयान कि नबी करीम (ﷺ) का कोई दरबान नहीं था

٧١٥٤- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ الصَّمَدِ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، حَدَّثَنَا ثَابِتٌ الْبُنَانِيُّ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ يَقُولُ لاِمْرَأَةٍ مِنْ أَهْلِهِ: تَعْرِفِينَ فُلاَنَةَ؟ قَالَتْ: نَعَمْ. قَالَ فَإِنَّ النَّبِيَّ ﷺ مَرَّ بِهَا وَهِيَ تَبْكِي عِنْدَ قَبْرٍ فَقَالَ: ((اتَّقِي اللهَ وَاصْبِرِي)) فَقَالَتْ: إِلَيْكَ عَنِّي فَإِنَّكَ خِلْوٌ مِنْ مُصِيبَتِي قَالَ: فَجَاوَزَهَا وَمَضَى فَمَرَّ بِهَا رَجُلٌ فَقَالَ: مَا قَالَ لَكِ رَسُولُ اللهِ ﷺ، قَالَتْ: مَا عَرَفْتُهُ قَالَ: إِنَّهُ لَرَسُولُ اللهِ ﷺ قَالَ: فَجَاءَتْ إِلَى بَابِهِ فَلَمْ تَجِدْ عَلَيْهِ بَوَّابًا فَقَالَتْ: يَا رَسُولَ اللهِ وَاللهِ مَا عَرَفْتُكَ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِنَّ الصَّبْرَ عِنْدَ أَوَّلِ صَدْمَةٍ)). [راجع: ١٢٥٢]

7154. हमसे इस्हाक़ ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुस्समद ने ख़बर दी, कहा हमसे शुअ़बा ने, कहा हमसे षाबित बिनानी ने बयान किया, उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि वो अपने घर की एक औ़रत से कह रहे थे फ़लानी को पहचानती हो? उन्होंने कहा कि हाँ। बतलाया कि नबी करीम (ﷺ) उसके पास से गुज़रे और वो एक क़ब्र के पास रो रही थी। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया अल्लाह से डर और सब्र कर। उस औ़रत ने जवाब दिया। आप मेरे पास से चले जाओ, मेरी मुसीबत आप पर नहीं पड़ी है। बयान किया कि आँहज़रत (ﷺ) वहाँ से हट गये और चले गये। फिर एक साहब उधर से गुज़रे और उनसे पूछा कि आँहज़रत (ﷺ) ने तुमसे क्या कहा था? उस औ़रत ने कहा कि मैंने उन्हें पहचाना नहीं। उन साहब ने कहा कि वो रसूलुल्लाह (ﷺ) थे। फिर वो औ़रत आँहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुई। उन्होंने आपके यहाँ कोई दरबान नहीं पाया फिर अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! मैंने आपको पहचाना नहीं। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि सब्र तो सदमे के शुरू में ही होता है। (राजेअ : 1252)

रिवायत में आपके यहाँ दरबान न होना मज़्कूर है यही बाब से मुताबक़त है।

١٢- باب الْحَاكِمِ يَحْكُمُ بِالْقَتْلِ عَلَى مَنْ وَجَبَ عَلَيْهِ دُونَ الإِمَامِ الَّذِي فَوْقَهُ

बाब 12 : मातहत हाकिम क़िसास का हुक्म दे सकता है बड़े हाकिम से इजाज़त लेने की ज़रूरत नहीं

तश्रीह : और क़िसास की तरह हद भी है तो हर मुल्क का आमिल हुदूद और क़िसास शरअ के मुवाफ़िक़ जारी कर सकता

है। बड़े बादशाह या ख़लीफ़ा से इजाज़त लेना शर्त नहीं है और हनफ़िया कहते हैं कि आमिलों को ऐसा करना दुरुस्त नहीं बल्कि शहर के सरदार हदें क़ायम करें। इब्ने क़ासिम ने कहा क़िसास़ दारुल ख़ुलफ़ा ही में लिया जाएगा जहाँ ख़लीफ़ा रहता हो या उसकी तहरीरी इजाज़त से और मुक़ामों में। अश्हब ने कहा जिस आमिल या वाली को ख़लीफ़ा इजाज़त दे, हुदूद और क़िसास़ क़ायम करने की वो क़ायम कर सकता है।

٧١٥٥- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ خَالِدٍ الذُّهْلِيُّ، حَدَّثَنَا الأَنْصَارِيُّ مُحَمَّدٌ، حَدَّثَنَا أَبِي عَنْ ثُمَامَةَ، عَنْ أَنَسٍ أَنَّ قَيْسَ بْنَ سَعْدٍ كَانَ يَكُونُ بَيْنَ يَدَيِ النَّبِيِّ ﷺ بِمَنْزِلَةِ صَاحِبِ الشُّرَطِ مِنَ الأَمِيرِ.

7155. हमसे मुहम्मद बिन ख़ालिद ज़ुहली ने बयान किया, कहा हमसे अंसारी मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे हमारे वालिद ने बयान किया, उनसे षुमामा ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि क़ैस बिन सअ़द (रज़ि.) नबी करीम (ﷺ) के साथ इस तरह रहते थे जैसे अमीर के साथ कोतवाल रहता है।

कुछ कोतवाल अच्छे भी होते हैं और हाकिमे आला की तरफ़ से वो मजाज़ भी होते हैं, इसमें यही इर्शाद है।

٧١٥٦- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ خَالِدٍ، عَنْ قُرَّةَ، هُوَ الْقَطَّانُ حَدَّثَنِي حُمَيْدُ بْنُ هِلاَلٍ، حَدَّثَنَا أَبُو بُرْدَةَ، عَنْ أَبِي مُوسَى أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ بَعَثَهُ وَأَتْبَعَهُ بِمُعَاذٍ.

[راجع: ٢٢٦١]

7156. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या ने बयान किया, उनसे क़ुर्रह ने, उनसे हुमैद बिन हिलाल ने, उनसे अबू बुर्दा ने और उनसे अबू मूसा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने उन्हें भेजा था और उनके साथ मुआ़ज़ (रज़ि.) को भी भेजा था। (राजेअ़ : 2261)

ह़ज़रत अबू मूसा अ़ब्दुल्लाह बिन क़ैस अश्अ़री (रज़ि.) मक्का में इस्लाम लाए और हिजरते हब्शा में शरीक हुए फिर अहले सफ़ीना के साथ ख़ैबर में ख़िदमते नबवी में वापस हुए। सन 52 हिजरी में वफ़ात पाई रज़ियल्लाहु अ़न्हु व अरज़ाहू।

٧١٥٧- حَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ الصَّبَّاحِ، حَدَّثَنَا مَحْبُوبُ بْنُ الْحَسَنِ، حَدَّثَنَا خَالِدٌ، عَنْ حُمَيْدِ بْنِ هِلاَلٍ، عَنْ أَبِي بُرْدَةَ عَنْ أَبِي مُوسَى أَنَّ رَجُلاً أَسْلَمَ ثُمَّ تَهَوَّدَ، فَأَتَاهُ مُعَاذُ بْنُ جَبَلٍ وَهُوَ عِنْدَ أَبِي مُوسَى فَقَالَ مَا لِهَذَا؟ قَالَ: أَسْلَمَ ثُمَّ تَهَوَّدَ قَالَ : لاَ أَجْلِسُ حَتَّى أَقْتُلَهُ قَضَاءُ اللهِ وَرَسُولِهِ ﷺ.

[راجع: ٢٢٦١]

7157. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन सब्बाह ने बयान किया, कहा हमसे महबूब बिन हसन ने बयान किया, कहा हमसे ख़ालिद ने बयान किया, उनसे हुमैद बिन हिलाल ने, उनसे अबू बुर्दा ने और उनसे अबू मूसा (रज़ि.) ने कि एक शख़्स इस्लाम लाया फिर यहूदी हो गया फिर मुआ़ज़ बिन जबल (रज़ि.) आए और वो शख़्स अबू मूसा अश्अ़री (रज़ि.) के पास था। उन्होंने पूछा उसका क्या मामला है? अबू मूसा (रज़ि.) ने जवाब दिया कि इस्लाम लाया फिर यहूदी हो गया। फिर उन्होंने कहा कि जब तक मैं उसे क़त्ल न कर लूँ नहीं बैठूँगा। ये अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) का फ़ैसला है। (राजेअ़ : 2261)

ह़ज़रत मुआविया (रज़ि.) ने जो जवाब दिया इसी से बाब का मतलब निकलता है कि शरई हुक्म साफ़ होते हुए उन्होंने अबू मूसा (रज़ि.) से भी इजाज़त लेना ज़रूरी नहीं जाना।

बाब 13 : क़ाज़ी को फ़ैसला या फ़त्वा ग़ुस्से

١٣- باب هَلْ يَقْضِي الْحَاكِمُ أَوْ

की हालत में देना दुरुस्त है या नहीं?

يُفْتِي وَهُوَ غَضْبَانُ؟

7158. हमसे आदम ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल मलिक बिन उ़मैर ने कहा कि मैंने अ़ब्दुर्रहमान इब्ने अबी बक्र से सुना, कहा कि अबूबक्र (रज़ि.) ने अपने लड़के (उ़बैदुल्लाह) को लिखा और वो उस वक़्त बह्रिस्तान में थे कि दो आदमियों के बीच फ़ैसला उस वक़्त न करना जब तुम गुस्से में हो क्योंकि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना है कि कोई ष़ालिष़ दो आदमियों के बीच फ़ैसला उस वक़्त न करे जब वो गुस्से में हो।

٧١٥٨- حَدَّثَنَا آدَمُ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْمَلِكِ بْنُ عُمَيْرٍ، سَمِعْتُ عَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنَ أَبِي بَكْرَةَ قَالَ : كَتَبَ أَبُو بَكْرَةَ إِلَى ابْنِهِ وَكَانَ بِسِجِسْتَانَ بِأَنْ لاَ تَقْضِيَ بَيْنَ اثْنَيْنِ وَأَنْتَ غَضْبَانُ فَإِنِّي سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ : ((لاَ يَقْضِيَنَّ حَكَمٌ بَيْنَ اثْنَيْنِ وَهُوَ غَضْبَانُ)).

जज साहिबान के लिये बहुत बड़ी नसीहत है, गुस्से की हालत में इंसानी होश व हवास मुख़तल हो जाते हैं इसलिये इस हालत में फ़ैसला नहीं देना चाहिये।

7159. हमसे मुहम्मद बिन मुक़ातिल ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुल्लाह ने ख़बर दी, कहा हमको इस्माईल बिन अबी ख़ालिद ने ख़बर दी, उन्हें क़ैस इब्ने अबी हाज़िम ने, उनसे अबू मसऊद अंसारी (रज़ि.) ने बयान किया कि एक आदमी रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास आया और अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! मैं वल्लाह सुबह की जमाअ़त में फ़लाँ (इमाम मुआज़ बिन जबल या उबई बिन कअ़ब रज़ि.) की वजह से शिर्कत नहीं कर पाता क्योंकि वो हमारे साथ उस नमाज़ को बहुत लम्बी कर देते हैं। अबू मसऊद (रज़ि.) ने कहा कि मैंने आँहज़रत (ﷺ) को वा'ज़ व नसीहत के वक़्त उससे ज़्यादा ग़ज़बनाक होता कभी नहीं देखा जैसा कि आप उस दिन थे। फिर आपने फ़र्माया ऐ लोगों! तुममें से कुछ नमाज़ियों को नफ़रत दिलाने वाले हैं, पस तुममें से जो शख़्स भी लोगों को नमाज़ पढ़ाए उसे इख़्तिसार करना चाहिये क्योंकि जमाअ़त मे बूढ़े, बच्चे और ज़रूरतमंद सभी होते हैं। (राजेअ़ : 90)

٧١٥٩- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مُقَاتِلٍ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ، أَخْبَرَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ أَبِي خَالِدٍ، عَنْ قَيْسِ بْنِ أَبِي حَازِمٍ، عَنْ أَبِي مَسْعُودٍ الأَنْصَارِيِّ قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ إِنِّي وَاللهِ لأَتَأَخَّرُ عَنْ صَلاَةِ الْغَدَاةِ مِنْ أَجْلِ فُلاَنٍ مِمَّا يُطِيلُ بِنَا فِيهَا قَالَ : فَمَا رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ قَطُّ أَشَدَّ غَضَبًا فِي مَوْعِظَةٍ مِنْهُ يَوْمَئِذٍ ثُمَّ قَالَ: ((يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّ مِنْكُمْ مُنَفِّرِينَ فَأَيُّكُمْ مَا صَلَّى بِالنَّاسِ فَلْيُوجِزْ، فَإِنَّ فِيهِمُ الْكَبِيرَ وَالضَّعِيفَ وَذَا الْحَاجَةِ)). [راجع: ٩٠]

आँहज़रत (ﷺ) कितने भी ग़ज़बनाक हों आपके होश व हवास क़ायम ही रहते थे। इसलिये इस हालत में आपका ये इर्शाद फ़र्माना बिलकुल बजा था। इससे इमाम को सबक़ लेना चाहिये कि मुक़्तदी का लिहाज़ कितना ज़रूरी है।

7160. हमसे मुहम्मद बिन अबी यअ़क़ूब किरमानी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे हस्सान बिन इब्राहीम ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे यूनुस ने बयान किया, मुहम्मद ने बयान किया कि मुझे सालिम ने ख़बर दी, उन्हें अ़ब्दुल्लाह बिन

٧١٦٠- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ أَبِي يَعْقُوبَ الْكِرْمَانِيُّ، حَدَّثَنَا حَسَّانُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، حَدَّثَنَا يُونُسُ قَالَ مُحَمَّدٌ: أَخْبَرَنِي سَالِمٌ

ड़मर (रज़ि.) ने ख़बर दी कि उन्होंने अपनी बीवी को जबकि वो हालते हैज़ में थीं (आमना बिन्ते ग़िफ़ार) तलाक़ दे दी, फिर ड़मर (रज़ि.) ने उसका तज़्किरा आँहज़रत (ﷺ) से किया तो आप बहुत नाराज़ हुए फिर फ़र्माया उन्हें चाहिये कि वो रुजूअ कर लें और उन्हें अपने पास रखें, यहाँ तक कि जब वो पाक हो जाएँ फिर हाइज़ा हों और फिर पाक हों तब अगर चाहे तो उसे तलाक़ दे दे। (राजेअ : 4908)

أنَّ عَبْدَ اللهِ بْنَ عُمَرَ أَخْبَرَهُ أَنَّهُ طَلَّقَ امْرَأَتَهُ وَهْيَ حَائِضٌ فَذَكَرَ عُمَرُ لِلنَّبِيِّ ﷺ فَتَغَيَّظَ فِيهِ رَسُولُ اللهِ ﷺ ثُمَّ قَالَ: ((لِيُرَاجِعْهَا ثُمَّ يُمْسِكْهَا، حَتَّى تَطْهُرَ ثُمَّ تَحِيضَ فَتَطْهُرَ فَإِنْ بَدَا لَهُ أَنْ يُطَلِّقَهَا فَلْيُطَلِّقْهَا)). [راجع: ٤٩٠٨]

आपने बहालते ख़फ़्गी फ़त्वा दिया। ये आप (ﷺ) की ख़ुसूसियत में से है।

बाब 14 : क़ाज़ी को अपने ज़ाती इल्म की रू से मामलात में हुक्म देना

١٤- باب مَنْ رَأَى لِلْقَاضِي أَنْ يَحْكُمَ بِعِلْمِهِ فِي أَمْرِ النَّاسِ

दुरुस्त है (कि हुदूद और हुक़ूक़ुल्लाह में) ये भी जबकि बदगुमानी और तोहमत का डर न हो। इसकी दलील ये है कि आँहज़रत (ﷺ) ने हिन्द (अबू सुफ़यान की बीवी) को ये हुक्म दिया था कि तू अबू सुफ़यान (रज़ि.) के माल में से इतना ले सकती है जो दस्तूर के मुवाफ़िक़ तुझको और तेरी औलाद को काफ़ी हो और ये उस वक़्त होगा जब मामला मशहूर हो।

إِذَا لَمْ يَخَفِ الظُّنُونَ وَالتُّهَمَةَ كَمَا قَالَ النَّبِيُّ ﷺ لِهِنْدٍ: ((خُذِي مَا يَكْفِيكِ وَوَلَدَكِ بِالْمَعْرُوفِ)) وَذَلِكَ إِذَا كَانَ أَمْرٌ مَشْهُورٌ.

7161. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुहरी ने, उनसे उर्वा ने बयान किया और उनसे आइशा (रज़ि.) ने कि हिन्द बिन उत्बा बिन रबीआ आई और कहा या रसूलल्लाह! रूए ज़मीन का कोई घराना ऐसा नहीं था जिसके बारे में इस दर्जे में ज़िल्लत की ख़्वाहिशमंद हों जितना आपके घराने की ज़िल्लत व रुस्वाई की मैं ख़्वाहिशमंद थी लेकिन अब मेरा ये हाल है कि मैं सबसे ज़्यादा ख़्वाहिशमंद हूँ कि रूए ज़मीन के तमाम घरानों में आपका घराना इज़्ज़त व सरबुलंदी वाला हो। फिर उन्होंने कहा कि अबू सुफ़यान (रज़ि.) बख़ील आदमी हैं, तो क्या मेरे लिये कोई हर्ज है अगर मैं उनके माल में से (उनकी इजाज़त के बग़ैर लेकर) अपने अहलो अयाल को खिलाऊँ? आँहज़रत (ﷺ) ने उनसे फ़र्माया कि तुम्हारे लिये कोई हर्ज नहीं है, अगर तुम उन्हें दस्तूर के मुताबिक़ खिलाओ। (राजेअ : 2211)

٧١٦١- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، حَدَّثَنِي عُرْوَةُ أَنَّ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: جَاءَتْ هِنْدُ بِنْتُ عُتْبَةَ بْنِ رَبِيعَةَ فَقَالَتْ: يَا رَسُولَ اللهِ وَاللهِ مَا كَانَ عَلَى ظَهْرِ الأَرْضِ أَهْلُ خِبَاءٍ أَحَبَّ إِلَيَّ أَنْ يَذِلُّوا مِنْ أَهْلِ خِبَائِكَ، وَمَا أَصْبَحَ الْيَوْمَ عَلَى ظَهْرِ الأَرْضِ أَهْلُ خِبَاءٍ أَحَبَّ إِلَيَّ أَنْ يَعِزُّوا مِنْ أَهْلِ خِبَائِكَ، ثُمَّ قَالَتْ إِنَّ أَبَا سُفْيَانَ رَجُلٌ مِسِّيكٌ فَهَلْ عَلَيَّ مِنْ حَرَجٍ أَنْ أُطْعِمَ الَّذِي لَهُ عِيَالَنَا؟ قَالَ لَهَا: ((لاَ حَرَجَ عَلَيْكِ أَنْ تُطْعِمِيهِمْ مِنْ مَعْرُوفٍ)). [راجع: ٢٢١١]

इस मुक़द्दमे के बारे में आपको ज़ाती इल्म था इसी वुषूक़ पर आपने ये हुक्म दे दिया।

बाब 15 : मुह्री ख़त्त पर गवाही देने का बयान

(कि ये फ़लाँ शख़्स का ख़त्त है) और कौनसी गवाही इस मुक़द्दमे में जाइज़ है और कौनसी नाजाइज़ और ह़ाकिम जो अपने नाइबों को परवाने लिखे। इसी त़रह़ एक मुल्क के क़ाज़ी को, उसका बयान और कुछ लोगों ने कहा ह़ाकिम जो परवाने अपने नाइबों को लिखे उन पर अ़मल हो सकता है। मगर हुदूदे शरइया में नहीं हो सकता (क्योंकि डर है कि परवाना जाली न हो) फिर ख़ुद ही कहते हैं कि क़त्ले ख़त़ा में परवाने पर अ़मल हो सकता है क्योकि वो उसकी राय पर मिष्ल माली दा'वों के हैं ह़ालाँकि क़त्ले ख़त़ा माली दा'वों की त़रह़ नहीं है बल्कि षुबूत के बाद उसकी सज़ा माली होती है तो क़त्ले ख़त़ा और अ़मद दोनों का हुक्म एक रहना चाहिये। (दोनों में परवाने का ए'तिबार न होना चाहिये) और ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने अपने आ़मिलों को हुदूद में परवाने लिखे हैं और उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ ने दांत तोड़ने के मुक़द्दमे में परवाना लिखा और इब्राहीम नख़ई ने कहा एक क़ाज़ी दूसरे काज़ी के ख़त्त पर अ़मल कर ले जब उसकी मुहर और ख़त्त को पहचानता हो तो ये जाइज़ है और शअ़बी मुहरी ख़त्त को जो एक क़ाज़ी की त़रफ़ से आए जाइज़ रखते थे और अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) से भी ऐसा ही मन्क़ूल है और मुआ़विया बिन अ़ब्दुल करीम षक़फ़ी ने कहा मैं अ़ब्दुल मलिक बिन यअ़ला (बस़रा के क़ाज़ी) और अयास बिन मुआ़विया (बस़रा के क़ाज़ी) और ह़सन बस़री और षुमामा बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अनस और बिलाल बिन अबी बुर्दा (बस़रा के क़ाज़ी) और अ़ब्दुल्लाह बिन बुरैदा (मरू के क़ाज़ी) और आ़मिर बिन उ़बैदह (कूफ़ा के क़ाज़ी) और अ़ब्बाद बिन मंस़ूर (बस़रा के क़ाज़ी) इन सबसे मिला हूँ। ये सब एक क़ाज़ी का ख़त्त दूसरे क़ाज़ी के नाम बग़ैर गवाहों के मंज़ूर करते। अगर फ़रीक़े ष़ानी जिसको इस ख़त्त से ज़रर होता है यूँ कहे कि ये ख़त्त जाली है तो उसको हुक्म देंगे कि अच्छा इसका षुबूत दे और क़ाज़ी के ख़त्त पर सबसे पहले इब्ने अबी लैला (कूफ़ा के क़ाज़ी) और सवार बिन अ़ब्दुल्लाह (बस़रा के क़ाज़ी) ने गवाही चाही और हमसे अबू नुऐ़म फ़ज़्ल बिन दुकैन ने कहा, हमसे उ़बैदुल्लाह बिन मुह़रिज़ ने बयान किया कि मैंने मूसा बिन अनस बस़रा के पास इस मुद्दई पर गवाह पेश किये

١٥- باب الشَّهَادَةِ عَلَى الْخَطِّ الْمَخْتُومِ وَمَا يَجُوزُ مِنْ ذَلِكَ وَمَا يَضِيقُ عَلَيْهِمْ وَكِتَابِ الْحَاكِمِ إِلَى عُمَّالِهِ وَالْقَاضِي إِلَى الْقَاضِي.

وَقَالَ بَعْضُ النَّاسِ: كِتَابُ الْحَاكِمِ جَائِزٌ إِلاَّ فِي الْحُدُودِ ثُمَّ قَالَ: إِنْ كَانَ الْقَتْلُ خَطَأً فَهُوَ جَائِزٌ لأَنَّ هَذَا مَالٌ بِزَعْمِهِ وَإِنَّمَا صَارَ مَالاً بَعْدَ أَنْ ثَبَتَ الْقَتْلُ فَالْخَطَأُ وَالْعَمْدُ وَاحِدٌ، وَقَدْ كَتَبَ عُمَرُ إِلَى عَامِلِهِ فِي الْحُدُودِ وَكَتَبَ عُمَرُ بْنُ عَبْدِ الْعَزِيزِ فِي سِنٍّ كُسِرَتْ، وَقَالَ إِبْرَاهِيمُ : كِتَابُ الْقَاضِي إِلَى الْقَاضِي جَائِزٌ، إِذَا عَرَفَ الْكِتَابَ وَالْخَاتَمَ، وَكَانَ الشَّعْبِيُّ يُجِيزُ الْكِتَابَ الْمَخْتُومَ بِمَا فِيهِ مِنَ الْقَاضِي وَيُرْوَى عَنِ ابْنِ عُمَرَ نَحْوُهُ، وَقَالَ مُعَاوِيَةُ بْنُ عَبْدِ الْكَرِيمِ الثَّقَفِيُّ: شَهِدْتُ عَبْدَ الْمَلِكِ بْنَ يَعْلَى قَاضِيَ الْبَصْرَةِ، وَإِيَاسَ بْنَ مُعَاوِيَةَ، وَالْحَسَنَ وَثُمَامَةَ بْنَ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ أَنَسٍ وَبِلاَلَ بْنَ أَبِي بُرْدَةَ وَعَبْدَ اللَّهِ بْنَ بُرَيْدَةَ الأَسْلَمِيَّ وَعَامِرَ بْنَ عَبِيدَةَ وَعَبَّادَ بْنَ مَنْصُورٍ يُجِيزُونَ كُتُبَ الْقُضَاةِ بِغَيْرِ مَحْضَرٍ مِنَ الشُّهُودِ فَإِنْ قَالَ الَّذِي جِيءَ عَلَيْهِ بِالْكِتَابِ إِنَّهُ زُورٌ قِيلَ لَهُ اذْهَبْ فَالْتَمِسِ الْمَخْرَجَ مِنْ ذَلِكَ وَأَوَّلُ مَنْ سَأَلَ عَلَى كِتَابِ الْقَاضِي الْبَيِّنَةَ ابْنُ أَبِي لَيْلَى وَسَوَّارُ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ. وَقَالَ لَنَا

कि फ़लाँ शख़्स पर मेरा हक़ इतना आता है और वो कूफ़ा में है फिर मैं उनका ख़त्त लेकर क़ासिम बिन अ़ब्दुर्रहमान कूफ़ा के क़ाज़ी के पास आया। उन्होंने उसको मंज़ूर किया और इमाम ह़सन बसरी और अबू क़िलाबा ने कहा वसिय्यतनामा पर उस वक़्त तक गवाही करना मकरूह है जब तक उसका मज़्मून न समझ ले ऐसा न हो वो ज़ुल्म और ख़िलाफ़े शरअ़ हो। और आँह़ज़रत (ﷺ) ने ख़ैबर के यहूदियों को ख़त्त भेजा कि या तो उस (शख़्स या'नी अ़ब्दुल्लाह बिन सहल) मक़्तूल की दियत दो जो तुम्हारी बस्ती में मारा गया है वरना जंग के लिये तैयार हो जाओ। और ज़ुहरी ने कहा अगर औरत पर्दे की आड़ में हो और आवाज़ वग़ैरह से तू उसे पहचानता हो तो उस पर गवाही दे सकता है वरना नहीं।

أَبُو نُعَيْمٍ، حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ مُحْرِزٍ جِئْتُ بِكِتَابٍ مِنْ مُوسَى ابْنِ أَنَسٍ قَاضِي الْبَصْرَةِ وَأَقَمْتُ عِنْدَهُ الْبَيِّنَةَ أَنَّ لِي عِنْدَ فُلاَنٍ كَذَا وَكَذَا وَهُوَ بِالْكُوفَةِ وَجِئْتُ بِهِ الْقَاسِمَ بْنَ عَبْدِ الرَّحْمَنِ فَأَجَازَهُ وَكَرِهَ الْحَسَنُ وَأَبُو قِلاَبَةَ أَنْ يَشْهَدَ عَلَى وَصِيَّةٍ حَتَّى يَعْلَمَ مَا فِيهَا لأَنَّهُ لاَ يَدْرِي لَعَلَّ فِيهَا جَوراً وَقَدْ كَتَبَ النَّبِيُّ ﷺ إِلَى أَهْلِ خَيْبَرَ ((إِمَّا أَنْ تَدُوا صَاحِبَكُمْ وَإِمَّا أَنْ تُؤْذِنُوا بِحَرْبٍ)). وَقَالَ الزُّهْرِيُّ: فِي شَهَادَةٍ عَلَى الْمَرْأَةِ مِنْ وَرَاءِ السِّتْرِ إِنْ عَرَفْتَهَا فَاشْهَدْ وَإِلاَّ فَلاَ تَشْهَدْ.

7162. मुझसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे ग़ुन्दर ने बयान किया, उनसे शुअ़बा ने बयान किया, कहा कि मैंने क़तादा से सुना, उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि जब नबी करीम (ﷺ) ने अहले रूम को ख़त्त लिखना चाहा तो सहाबा ने कहा कि रूमी सिर्फ़ मुहर लगा हुआ ख़त्त ही क़ुबूल करते हैं। चुनाँचे आँह़ज़रत (ﷺ) ने चाँदी की एक मुहर बनवाई। गोया मैं उसकी चमक को इस वक़्त भी देख रहा हूँ और उस पर कलिमा मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह नक़्श था। (राजेअ़ : 65)

٧١٦٢- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ قَالَ: سَمِعْتُ قَتَادَةَ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ قَالَ: لَمَّا أَرَادَ النَّبِيُّ ﷺ أَنْ يَكْتُبَ إِلَى الرُّومِ قَالُوا: إِنَّهُمْ لاَ يَقْرَؤُونَ كِتَابًا إِلاَّ مَخْتُومًا فَاتَّخَذَ النَّبِيُّ ﷺ خَاتَمًا مِنْ فِضَّةٍ كَأَنِّي أَنْظُرُ إِلَى وَبِيصِهِ وَنَقْشُهُ مُحَمَّدٌ رَسُولُ اللهِ.[راجع: ٦٥]

इसी ह़दीष़ से इमाम बुख़ारी (रह़.) ने निकाला कि ख़त्त पर अ़मल हो सकता है बिल ख़ुसूस जब वो मख़्तूम हो तो शक की कोई गुंजाइश नहीं है।

बाब 16 : क़ाज़ी बनने के लिये क्या-क्या शर्तें होनी ज़रूरी हैं?

١٦- باب مَتَى يَسْتَوْجِبُ الرَّجُلُ الْقَضَاءَ؟

और इमाम ह़सन बसरी (रह़.) ने कहा कि अल्लाह तआ़ला ने ह़ाकिमों से ये अ़हद लिया है कि ख़्वाहिशाते नफ़्स की पैरवी न करें और लोगों से न डरें और मेरी आयात को मा'मूली क़ीमत के बदले में न बेचें फिर उन्होंने ये आयत पढ़ी, ऐ दाऊद! मैंने तुमको ज़मीन पर ख़लीफ़ा बनाया है पस तुम लोगों में ह़क़ के साथ फ़ैसला करो और ख़्वाहिशे नफ़्सानी की पैरवी न करो कि वो तुमको अल्लाह के रास्ते से गुमराह कर दे। बिला शुब्हा

وَقَالَ الْحَسَنُ: أَخَذَ اللهُ عَلَى الْحُكَّامِ أَنْ لاَ يَتَّبِعُوا الْهَوَى وَلاَ يَخْشَوُا النَّاسَ وَلاَ يَشْتَرُوا بِآيَاتِي ثَمَنًا قَلِيلاً ثُمَّ قَرَأَ: ﴿يَا دَاوُدُ إِنَّا جَعَلْنَاكَ خَلِيفَةً فِي الأَرْضِ فَاحْكُمْ بَيْنَ النَّاسِ بِالْحَقِّ وَلاَ تَتَّبِعِ الْهَوَى فَيُضِلَّكَ عَنْ سَبِيلِ اللهِ إِنَّ الَّذِينَ يَضِلُّونَ

عَنْ سَبِيلِ اللهِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ بِمَا نسوا يَوْمَ الْحِسَابِ﴾ [الصافات: ٢٦] وَقَرَأَ ﴿إِنَّا أَنْزَلْنَا التَّوْرَاةَ فِيهَا هُدىً وَنُورٌ يَحْكُمُ بِهَا النَّبِيُّونَ الَّذِينَ أَسْلَمُوا لِلَّذِينَ هَادُوا وَالرَّبَّانِيُّونَ وَالأَحْبَارُ بِمَا اسْتُحْفِظُوا مِنْ كِتَابِ اللهِ وَكَانُوا عَلَيْهِ شُهَدَاءَ فَلاَ تَخْشَوُا النَّاسَ وَاخْشَوْنِ وَلاَ تَشْتَرُوا بِآيَاتِي ثَمَنًا قليلاً وَمَنْ لَمْ يَحْكُمْ بِمَا أَنْزَلَ اللهُ فَأُولَئِكَ هُمُ الْكَافِرُونَ﴾[المائدة: ٤٤] بِمَا اسْتُحْفِظُوا: اسْتُودِعُوا مِنْ كِتَابِ اللهِ. وَقَرَأَ ﴿وَدَاوُدَ وَسُلَيْمَانَ إِذْ يَحْكُمَانِ فِي الْحَرْثِ إِذْ نَفَشَتْ فِيهِ غَنَمُ الْقَوْمِ. وَكُنَّا لِحُكْمِهِمْ شَاهِدِينَ. فَفَهَّمْنَاهَا سُلَيْمَانَ وَكُلاًّ آتَيْنَا حُكْماً وَعِلْماً﴾ [الأنبياء : ٧٨، ٧٩] فَحَمِدَ سُلَيْمَانَ وَلَمْ يَلُمْ دَاوُدَ وَلَوْ لاَ مَا ذَكَرَ اللهُ مِنْ أَمْرِ هَذَيْنِ لَرَأَيْتُ أَنَّ الْقُضَاةَ هَلَكُوا فَإِنَّهُ أَثْنَى عَلَى هَذَا بِعِلْمِهِ وَعَذَرَ هَذَا بِاجْتِهَادِهِ.

وَقَالَ مُزَاحِمُ بْنُ زُفَرَ : قَالَ لَنَا عُمَرُ بْنُ عَبْدِ الْعَزِيزِ خَمْسٌ إِذَا أَخْطَأَ الْقَاضِي مِنْهُنَّ خَصْلَةً كَانَتْ فِيهِ وَصْمَةٌ أَنْ يَكُونَ فَهِمًا حَلِيمًا عَفِيفًا صَلِيبًا عَالِمًا سَؤُلاً عَنِ الْعِلْمِ.

जो लोग अल्लाह के रास्ते से गुमराह हो जाते हैं उनको क़यामत के दिन सख़्त अ़ज़ाब होगा बवजह उसके जो उन्होंने हुक्मे इलाही को भुला दिया था। और इमाम हसन बस़री ने ये आयत तिलावत की। बिला शुब्हा हमने तौरात नाज़िल की, जिसमें हिदायत और नूर था उसके ज़रिये अंबिया जो अल्लाह के फ़र्मांबरदार थे, फ़ैस़ला करते रहे। उन लोगों के लिये उन्होंने हिदायत इख़्तियार की और पाकबाज़ और उ़लमा (फ़ैस़ला करते हैं) इसके ज़रिये जो उन्होंने किताबुल्लाह को याद रखा और वो इस पर निगहबान हैं। पस लोगों से न डरो बल्कि मुझसे ही डरो और मेरी आयात के ज़रिये दुनिया की थोड़ी पूँजी न ख़रीदो और जो अल्लाह के नाज़िल किये हुए हुक्म के मुताबिक़ फ़ैस़ला नहीं करते तो वही मुंकिर हैं। बिमस्तहफ़ज़ू अय बिमस्तौदऊ मिन किताबिल्लाहि और इमाम हसन बस़री ने सूरह अंबिया की ये आयत भी तिलावत की (और याद करो) दाऊद और सुलैमान को जब उन्होंने खेती के बारे में फ़ैस़ला किया जबकि उसमें एक जमाअ़त की बकरियाँ घुस पड़ीं और मैं उनके फ़ैस़ले को देख रहा था। पस मैंने फ़ैस़ला सुलैमान को समझा दिया और मैंने दोनों को नुबुव्वत और मअ़रिफ़त दी थी, पस सुलैमान (अ़.) ने अल्लाह की हम्द की और दाऊद (अ़.) को मलामत नहीं की। अगर उन दो अंबिया का हाल जो अल्लाह ने ज़िक्र किया है न होता तो मैं समझता कि क़ाज़ी तबाह हो रहे हैं क्योंकि अल्लाह तआ़ला ने सुलैमान (अ़.) की ता'रीफ़ उनके इल्म की वजह से की है और दाऊद (अ़.) को उनके इज्तिहाद में मा'ज़ूर क़रार दिया और मुज़ाह़िम बिन ज़फ़र ने कहा कि हमसे उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ ने बयान किया कि पाँच ख़स़लतें ऐसी हैं कि अगर क़ाज़ी में उनमें से कोई एक ख़स्लत भी न हो तो उसके लिए बाइ़षे ऐ़ब है। अव्वल ये कि वो दीन की समझ वाला हो। दूसरे ये कि वो बुर्दबार हो। तीसरे वो पाकदामन हो, चौथे वो क़वी हो, पाँचवीं ये कि आ़लिम हो, इल्मे दीन की दूसरों से भी ख़ूब मा'लूमात ह़ासिल करने वाला

तश्रीह : इसीलिये उसूल क़रार पाया कि मुज्तहिद को ग़लती करने में भी ष़वाब मिलता है पस क़ाज़ी से भी ग़लती का इम्कान है। अल्लाह उसे मा'ज़ूर रखेगा और उसकी ग़लती पर मुवाख़िज़ा न करेगा। इल्ला माशाअल्लाह। स़लीबा का तर्जुमा यूँ भी है कि वो ह़क़ और इंस़ाफ़ करने पर ख़ूब पक्का और मज़बूत हो। आयत में ह़ज़रत दाऊद (अ़लैहि.) के फ़ैस़ले का ग़लत होना मज़्कूर है जिससे मा'लूम हुआ कि कभी पैग़म्बरों से भी इज्तिहाद में ग़लती हो सकती है मगर वो उस पर क़ायम नहीं रह सकते। अल्लाह तआ़ला वह्य के ज़रिये उनको ख़बर कर देता है। मुज्तहिदीन से ग़लती का होना ऐन

मुम्किन है। उनकी ग़लती पर जमे रहना यही अँधी तक़्लीद है जिसके बारे में अल्लाह ने फ़र्माया, **इत्तख़ज़ू अह़बारहुम व रुह़बानहुम अर्बाबम मिन् दूनिल्लाहि शैअ अल्आय:** शाफ़िइया ने कहा क़ज़ा की शर्त ये है कि आदमी मुसलमान मुत्तक़ी परहेज़गार मुकल्लफ़ आज़ाद मर्द सुनता देखता बोलता हो तो काफ़िर या नाबालिग़ या मज्नून या ग़ुलाम लौण्डी या औरत या ख़न्षा या फ़ासिक़ बहरे या गूँगे या अँधे की क़ज़ा दुरुस्त नहीं है। अहले ह़दीष़ और शाफ़िइया के नज़दीक क़ज़ा के लिये मुज्तहिद होनो ज़रूरी है या'नी क़ुर्आन व ह़दीष़ और नासिख़ और मन्सूख़ का आ़लिम होना इसी त़रह क़ज़ाया-ए-स़ह़ाबा और ताबेईन से वाक़िफ़ होना और हर मुक़द्दमा में अल्लाह की किताब के मुवाफ़िक़ हुक्म दे। अगर अल्लाह की किताब में न मिले तो ह़दीष़ के मुवाफ़िक़ अगर ह़दीष़ में भी न मिले तो स़ह़ाबा के इज्माअ़ के मुवाफ़िक़ अगर स़ह़ाबा में इख़्तिलाफ़ हो तो जिसका क़ौल क़ुर्आन व ह़दीष़ के ज़्यादा मुवाफ़िक़ देखे उस पर हुक्म दे और अहले ह़दीष़ और मुह़क़्क़िक़ीन उ़लमा ने मुक़ल्लिद की क़ज़ा जाइज़ नहीं रखी और यही स़ह़ीह़ है।

बाब 17 : हुक्काम और हुकूमत के आ़मिलों का तनख़्वाह लेना

١٧- باب رِزْقِ الْحُكّامِ وَالْعَامِلِينَ

और क़ाज़ी शुरैह क़ज़ा की तनख़्वाह लेते थे और आइशा (रज़ि.) ने कहा कि (यतीम का) निगराँ अपने काम के मुत़ाबिक़ ख़र्चा लेगा और अबूबक्र व उ़मर (रज़ि.) ने भी (ख़लीफ़ा होने पर) बैतुलमाल से बक़द्रे किफ़ायत तनख़्वाह ली थी।

عَلَيْهَا وَكَانَ شُرَيْحٌ الْقَاضِي يَأْخُذُ عَلَى الْقَضَاءِ أَجْرًا وَقَالَتْ عَائِشَةُ: يَأْكُلُ الْوَصِيُّ بِقَدْرِ عُمَالَتِهِ وَأَكَلَ أَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ.

जुम्हूर उ़लमा का यही क़ौल है कि हुकूमत और क़ज़ा की तनख़्वाह लेना दुरुस्त है मगर बक़द्रे किफ़ाफ़ होना न कि ह़द से आगे बढ़ना।

7163. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐ़ब ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुह्री ने, उन्हें नमर के भांजे साइब बिन यज़ीद ने ख़बर दी, उन्हें हुवैत़िब बिन अ़ब्दुल उ़ज़्ज़ा ने ख़बर दी, उन्हें अ़ब्दुल्लाह बिन सईदी ने ख़बर दी कि वो उ़मर (रज़ि.) के पास उनके ज़माना-ए-ख़िलाफ़त में आए तो उनसे उ़मर (रज़ि.) ने पूछा, क्या मुझसे जो ये कहा गया है वो स़ह़ीह़ है कि तुम्हें लोगों के काम सुपुर्द किये जाते हैं और जब उसकी तनख़्वाह दी जाती है तो तुम उसे लेना पसंद नहीं करते? मैंने कहा कि ये सह़ीह़ है। उ़मर (रज़ि.) ने कहा कि तुम्हारा उससे मक़्सद किया है? मैंने अ़र्ज़ किया कि मेरे पास घोड़े और ग़ुलाम हैं और मैं ख़ुशह़ाल हूँ और मैं चाहता हूँ कि मेरी तनख़्वाह मुसलमानों पर स़दक़ा हो जाए। उ़मर (रज़ि.) ने फ़र्माया कि ऐसा न करो क्योंकि मैंने भी इसका इरादा किया था जिसका तुमने इरादा किया है आँह़ज़रत (ﷺ) मुझे अ़त़ा करते थे तो मैं अ़र्ज़ कर देता था कि इसे मुझसे ज़्यादा इसके ज़रूरतमंद को अ़त़ा कर दीजिए। आख़िर आपने एक मर्तबा मुझे माल अ़त़ा किया और मैंने वही बात दोहराई कि इसे ऐसे शख़्स़ को दे दीजिए जो इसका मुझसे ज़्यादा ज़रूरतमंद हो तो आपने फ़र्माया कि इसे लो और उसके मालिक बनने के

٧١٦٣- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ أَخْبَرَنِي السَّائِبُ بْنُ يَزِيدَ ابْنِ أُخْتِ نَمِرٍ أَنَّ حُوَيْطِبَ بْنَ عَبْدِ الْعُزَّى أَخْبَرَهُ أَنَّ عَبْدَ اللهِ بْنَ السَّعْدِيِّ أَخْبَرَهُ أَنَّهُ قَدِمَ عَلَى عُمَرَ فِي خِلاَفَتِهِ فَقَالَ لَهُ عُمَرُ : أَلَمْ أُحَدَّثْ أَنَّكَ تَلِي مِنْ أَعْمَالِ النَّاسِ أَعْمَالاً فَإِذَا أُعْطِيتَ الْعُمَالَةَ كَرِهْتَهَا؟ فَقُلْتُ : بَلَى. فَقَالَ عُمَرُ : مَا تُرِيدُ إِلَى ذَلِكَ؟ قُلْتُ: إِنَّ لِي أَفْرَاسًا وَأَعْبُدًا وَأَنَا بِخَيْرٍ وَأُرِيدُ أَنْ تَكُونَ عُمَالَتِي صَدَقَةً عَلَى الْمُسْلِمِينَ قَالَ عُمَرُ : لاَ تَفْعَلْ فَإِنِّي كُنْتُ أَرَدْتُ الَّذِي أَرَدْتَ وَكَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ يُعْطِينِي الْعَطَاءَ فَأَقُولُ : أَعْطِهِ أَفْقَرَ إِلَيْهِ مِنِّي حَتَّى أَعْطَانِي مَرَّةً مَالاً فَقُلْتُ: أَعْطِهِ أَفْقَرَ إِلَيْهِ مِنِّي فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((خُذْهُ فَتَمَوَّلْهُ وَتَصَدَّقْ بِهِ، فَمَا

बाद उसका स़दक़ा करो। ये माल जब तुम्हें इस त़रह मिले कि तुम उसके न ख़्वाहिशमंद हो और न उसे मांगा तो इसे ले लिया करो और अगर इस त़रह न मिले तो उसके पीछे न पड़ा करो। (राजेअ: 1473)

جَاءَكَ مِنْ هَذَا الْمَالِ وَأَنْتَ غَيْرُ مُشْرِفٍ، وَلاَ سَائِلٍ فَخُذْهُ وَإِلاَّ فَلاَ تُتْبِعْهُ نَفْسَكَ)). [راجع: ١٤٧٣]

7164. और ज़ुहरी से रिवायत है उन्होंने बयान किया कि मुझसे सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने कि मैंने उ़मर (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) मुझे अ़ता करते थे तो मैं कहता कि आप उसे दे दें जो इसका मुझसे ज़्यादा ज़रूरतमंद हो, फिर आपने मुझे एक मर्तबा माल दिया और मैंने कहा कि आप इसे ऐसे शख़्स़ को दे दें जो इसका मुझसे ज़्यादा ज़रूरतमंद हो तो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि इसे ले लो और इसके मालिक बनने के बाद इसका स़दक़ा कर दो। ये माल जब तुम्हें इस त़रह मिले कि तुम इसके ख़्वाहिशमंद न हो और न उसे तुमने मांगा हो तो उसे ले लिया करो और जो इस त़रह न मिले उसके पीछे न पड़ा करो। (राजेअ: 1473)

٧١٦٤ - وَعَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: حَدَّثَنِي سَالِمُ بْنُ عَبْدِ اللهِ أَنَّ عَبْدَ اللهِ بْنَ عُمَرَ قَالَ: سَمِعْتُ عُمَرَ يَقُولُ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يُعْطِينِي الْعَطَاءَ فَأَقُولُ أَعْطِهِ أَفْقَرَ إِلَيْهِ مِنِّي، حَتَّى أَعْطَانِي مَرَّةً مَالاً فَقُلْتُ: أَعْطِهِ مَنْ هُوَ أَفْقَرُ إِلَيْهِ مِنِّي فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((خُذْهُ فَتَمَوَّلْهُ وَتَصَدَّقْ بِهِ، فَمَا جَاءَكَ مِنْ هَذَا الْمَالِ وَأَنْتَ غَيْرُ مُشْرِفٍ، وَلاَ سَائِلٍ فَخُذْهُ، وَمَا لاَ فَلاَ تُتْبِعْهُ نَفْسَكَ)). [راجع: ١٤٧٣]

तश्रीह: सुब्हानल्लाह! आँहज़रत (ﷺ) ने वो बात बतलाई जो ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) को भी नहीं सूझी या'नी अगर ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) उस माल को न लेते सि़र्फ़ वापस कर देते तो उसमें इतना फ़ायदा न था जितना ले लेने में और फिर अल्लाह की राह में ख़ैरात करने में क्योंकि स़दक़ा का ष़वाब भी उसमें ह़ासिल हुआ। मुह़क़्क़िक़ीन फ़र्माते हैं कि कुछ दफ़ा माल के रद्द करने में भी नफ़्स को एक ग़ुरूर ह़ासिल होता है। अगर ऐसा हो तो उसे माल ले लेना चाहिये फिर लेकर ख़ैरात कर दे ये न लेने से अफ़ज़ल होगा। आजकल दीनी ख़िदमत करने वालों के लिये भी यही बेहतर है कि तनख़्वाह बक़द्रे किफ़ाफ़ लें, ग़नी हों तो न लें या लेकर ख़ैरात कर दें।

बाब 18 : जो मस्जिद में फ़ैस़ला करे या लिआ़न कराए

١٨ - باب مَنْ قَضَى وَلاَعَنَ فِي الْمَسْجِدِ

और उ़मर (रज़ि.) ने मस्जिदे नबवी के मिम्बर के पास लिआ़न करा दिया और शुरैह़ क़ाज़ी और शअ़बी और यह़्या बिन यअ़मर ने मस्जिद में फ़ैस़ला किया और मरवान ने ज़ैद बिन ष़ाबित को मस्जिद में मिम्बरे नबवी के पास क़सम खाने का हुक्म दिया और इमाम ह़सन बस़री (रह़.) और ज़ुरारह बिन औफ़ा दोनों मस्जिद के बाहर एक दालान में बैठकर क़ज़ा का काम किया करते थे। इब्ने अबी शैबा की रिवायत में है कि ऐन मस्जिद में बैठकर वो फ़ैस़ले करते थे। (राजेअ: 423)

وَلاَعَنَ عُمَرُ عِنْدَ مِنْبَرِ النَّبِيِّ ﷺ وَقَضَى شُرَيْحٌ وَالشَّعْبِيُّ وَيَحْيَى بْنُ يَعْمَرَ فِي الْمَسْجِدِ، وَقَضَى مَرْوَانُ عَلَى زَيْدِ بْنِ ثَابِتٍ بِالْيَمِينِ عِنْدَ الْمِنْبَرِ، وَكَانَ الْحَسَنُ وَزُرَارَةُ بْنُ أَوْفَى يَقْضِيَانِ فِي الرَّحَبَةِ خَارِجًا مِنَ الْمَسْجِدِ. [راجع: ٤٢٣]

7165. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, उनसे

٧١٦٥ - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا

सुफ़यान ने बयान किया, उनसे ज़ुह्री ने बयान किया, उनसे सहल बिन सअ़द (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने दो लिआ़न करने वालों को देखा। मैं उस वक़्त पन्द्रह साल का था और उन दोनों के बीच जुदाई करा दी गई थी।

سُفْيَانُ قَالَ الزُّهْرِيُّ: عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ قَالَ : شَهِدْتُ الْمُتَلاَعِنَيْنِ وَأَنَا ابْنُ خَمْسَ عَشْرَةَ فُرِّقَ بَيْنَهُمَا.

सहल बिन सअ़द साएदी अंसारी हैं ये आख़िरी सहाबी हैं जो मदीना में फ़ौत हुए साले वफ़ात सन 91 हिजरी है।

7166. हमसे यह्या ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने बयान किया, उन्हें इब्ने जुरैज ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने शिहाब ने ख़बर दी, उन्हें बनी साएदा के एक फ़र्द सहल (रज़ि.) ने ख़बर दी कि क़बीला अंसार का एक शख़्स नबी करीम (ﷺ) के पास आया और अ़र्ज़ किया आँहज़रत (ﷺ) का इस बारे में क्या ख़याल है अगर कोई मर्द अपनी बीवी के साथ दूसरे मर्द को देखे, क्या उसे क़त्ल कर सकता है? फिर दोनों (मियाँ-बीवी) में मेरी मौजूदगी में लिआ़न कराया गया।(राजेअ़ : 423)

٧١٦٦- حَدَّثَنَا يَحْيَى، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ، أَخْبَرَنِي ابْنُ شِهَابٍ، عَنْ سَهْلٍ أَخِي بَنِي سَاعِدَةَ أَنَّ رَجُلاً مِنَ الأَنْصَارِ جَاءَ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: أَرَأَيْتَ رَجُلاً وَجَدَ مَعَ امْرَأَتِهِ رَجُلاً أَيَقْتُلُهُ؟ فَتَلاَعَنَا فِي الْمَسْجِدِ وَأَنَا شَاهِدٌ. [راجع: ٤٢٣]

बाब 19 : हद का मुक़द्दमा मस्जिद में सुनना फिर जब हद लगाने का वक़्त आए तो मुजिरम को मस्जिद के बाहर ले जाना और उ़मर (रज़ि.) ने फ़र्माया था कि इस मुजिरम को मस्जिद से बाहर ले जाओ और हद लगाओ। (इसको इब्ने अबी शैबा ने और अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने वस्ल किया) और अ़ली (रज़ि.) से भी ऐसा ही मन्क़ूल है।

١٩- بَابُ مَنْ حَكَمَ فِي الْمَسْجِدِ حَتَّى إِذَا أَتَى عَلَى حَدٍّ أَمَرَ أَنْ يُخْرَجَ مِنَ الْمَسْجِدِ فَيُقَامَ وَقَالَ عُمَرُ: أَخْرِجَاهُ مِنَ الْمَسْجِدِ وَيُذْكَرُ عَنْ عَلِيٍّ نَحْوُهُ.

7167. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे अ़क़ील ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे अबू सलमा ने, उनसे सईद बिन मुसय्यब ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि एक शख़्स रसूले करीम (ﷺ) के पास आया। आँहज़रत (ﷺ) मस्जिद में थे और उन्होंने आपको आवाज़ दी और कहा या रसूलल्लाह! मैंने ज़िना कर लिया है। आँहज़रत (ﷺ) ने उनसे चेहरा फेर लिया लेकिन जब उसने अपने ही ख़िलाफ़ चार बार गवाही दी तो आपने उससे पूछा क्या तुम पागल हो? उसने कहा कि नहीं। फिर आपने फ़र्माया कि इन्हें ले जाओ और रजम करो। (राजेअ़ : 5271)

٧١٦٧- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ، حَدَّثَنِي اللَّيْثُ، عَنْ عُقَيْلٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ وَسَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ : أَتَى رَجُلٌ رَسُولَ اللهِ ﷺ وَهُوَ فِي الْمَسْجِدِ فَنَادَاهُ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ إِنِّي زَنَيْتُ فَأَعْرَضَ عَنْهُ، فَلَمَّا شَهِدَ عَلَى نَفْسِهِ أَرْبَعًا قَالَ : ((أَبِكَ جُنُونٌ؟)) قَالَ : لاَ. قَالَ: ((اذْهَبُوا بِهِ فَارْجُمُوهُ)). [راجع: ٥٢٧١]

7168. इब्ने शिहाब ने बयान किया कि फिर मुझे उस शख़्स ने ख़बर दी जिसने जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह(रज़ि.) से सुना था, उन्होंने बयान किया कि मैं भी उन लोगों में था जिन्होंने उस शख़्स को ईदगाह पर रजम किया था। इसकी

٧١٦٨- قَالَ ابْنُ شِهَابٍ: فَأَخْبَرَنِي مَنْ سَمِعَ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ قَالَ: كُنْتُ فِيمَنْ رَجَمَهُ بِالْمُصَلَّى. رَوَاهُ يُونُسُ وَ مَعْمَرٌ

रिवायत यूनुस, मअ़मर और इब्ने जुरैज ने ज़ुह्री से की, उनसे अबू सलमा ने, उनसे जाबिर (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से रजम के सिलसिले में यही ह़दीष़ ज़िक्र की। (राजेअ़ : 5270)

وَابْنُ جُرَيْجٍ عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ جَابِرٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ فِي الرَّجْمِ. [راجع: ٥٢٧٠]

ईदगाह के क़रीब उनको रजम किया गया। ये शख़्स माइ़ज़ बिन मालिक असलमी मदनी है जो बहुक्मे नबवी संगसार किये गये। रज़ियल्लाहु अ़न्हु व अर्ज़ाहू।

बाब 20 : फ़रीक़ैन को इमाम का नसीह़त करना

٢٠- باب مَوْعِظَةِ الإِمَامِ لِلْخُصُومِ

7169. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मस्लमा ने बयान किया, कहा हमसे इमाम मालिक ने, उनसे हिशाम ने, उनसे उनके वालिद ने, उनसे ज़ैनब बिन्ते अबी सलमा ने और उनसे उम्मे सलमा (रज़ि.) ने कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, बिलाशुब्हा मैं एक इंसान हूँ, तुम मेरे पास अपने झगड़े लाते हो। मुम्किन है तुममें से कुछ अपने मुक़द्दमे पेश करने में फ़रीक़े ष़ानी के मुक़ाबले में ज़्यादा चर्ब ज़ुबान हो और मैं तुम्हारी बात सुनकर फ़ैसला कर दूँ तो जिस शख़्स के लिये मैं उसके भाई (फ़रीक़े ष़ानी) का कोई ह़क़ दिला दूँ। चाहिये कि वो उसे न ले क्योंकि ये आग का एक टुकड़ा है जो मैं उसे देता हूँ। (राजेअ़ : 2458)

٧١٦٩- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْلَمَةَ، عَنْ مَالِكٍ، عَنْ هِشَامٍ، عَنْ أَبِيهِ عَنْ زَيْنَبَ ابْنَةِ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ أُمِّ سَلَمَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ، وَإِنَّكُمْ تَخْتَصِمُونَ إِلَيَّ، وَلَعَلَّ بَعْضَكُمْ أَنْ يَكُونَ أَلْحَنَ بِحُجَّتِهِ مِنْ بَعْضٍ فَأَقْضِي نَحْوَ مَا أَسْمَعُ، فَمَنْ قَضَيْتُ لَهُ بِحَقِّ أَخِيهِ شَيْئًا فَلاَ يَأْخُذْهُ فَإِنَّمَا أَقْطَعُ لَهُ قِطْعَةً مِنَ النَّارِ)). [راجع: ٢٤٥٨]

तशरीह : मा'लूम हुआ कि किसी भी क़ाज़ी का ग़लत़ फ़ैस़ला अल्लाह के नज़दीक स़ह़ीह़ नहीं हो सकता गो वो नाफ़िज़ कर दिया जाए, ग़लत़ ग़लत़ ही रहेगा। इस ह़दीष़ से इमाम मालिक और शाफ़िई और अह़मद और अहले ह़दीष़ और जुम्हूर उ़लमा का मज़हब ष़ाबित हुआ कि क़ाज़ी का फ़ैस़ला ज़ाहिर में नाफ़िज़ होता है लेकिन उसके फ़ैस़ले से जो चीज़ ह़राम है वो ह़लाल नहीं हो सकती न ह़लाल ह़राम होती है और इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह़.) का क़ौल रद्द हो गया कि क़ाज़ी का फ़ैस़ला ज़ाहिरन और बात़िनन दोनों त़रह़ नाफ़िज़ हो जाता है और इस मसले का ज़िक्र ऊपर हो चुका है। ह़दीष़ से ये भी निकला कि आँह़ज़रत (ﷺ) को ग़ैब का इल्म नहीं था। अल्बत्ता अल्लाह तआ़ला अगर आपको बतला देता तो मा'लूम हो जाता।

बाब 21 : अगर क़ाज़ी ख़ुद ओहद-ए-क़ज़ा ह़ासिल होने के बाद या उससे पहले एक अम्र का गवाह हो तो क्या उसकी बिना पर फ़ैस़ला कर सकता है?

٢١- باب الشَّهَادَةِ تَكُونُ عِنْدَ الْحَاكِمِ فِي وِلاَيَتِهِ الْقَضَاءَ أَوْ قَبْلَ ذَلِكَ لِلْخَصْمِ

और शुरैह़ (मक्का के क़ाज़ी) से एक आदमी (नाम नामा'लूम) ने कहा तुम इस मुक़द्दमे में गवाही दो। उन्होंने कहा तू बादशाह के पास जाकर कहना तो मैं वहाँ दूँगा। और इक्रिमा कहते हैं उ़मर (रज़ि.) ने अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ (रज़ि.) से पूछा अगर तू ख़ुद अपनी आँख से किसी को ज़िना या चोरी का जुर्म करते देखे और तू अमीर हो तो क्या उसको ह़द लगा देगा। अ़ब्दुर्रह़मान ने कहा

وَقَالَ شُرَيْحٌ الْقَاضِي: وَسَأَلَهُ إِنْسَانٌ الشَّهَادَةَ فَقَالَ: ائْتِ الأَمِيرَ حَتَّى أَشْهَدَ لَكَ وَقَالَ عِكْرِمَةُ: قَالَ عُمَرُ لِعَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوْفٍ لَوْ رَأَيْتَ رَجُلاً عَلَى حَدِّ زِنًا أَوْ سَرِقَةٍ وَأَنْتَ أَمِيرٌ فَقَالَ:

کہ نہیں۔ عمر (رضی اللہ عنہ)

شَهَادَتُكَ شَهَادَةُ رَجُلٍ مِنَ الْمُسْلِمِينَ قَالَ: صَدَقْتَ قَالَ عُمَرُ: لَوْ لاَ أَنْ يَقُولَ النَّاسُ زَادَ عُمَرُ فِي كِتَابِ اللهِ لَكَتَبْتُ آيَةَ الرَّجْمِ بِيَدِي وَأَقَرَّ مَاعِزٌ عِنْدَ النَّبِيِّ ﷺ بِالزِّنَا أَرْبَعًا فَأَمَرَ بِرَجْمِهِ وَلَمْ يُذْكَرْ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ أَشْهَدَ مَنْ حَضَرَهُ وَقَالَ حَمَّادٌ: إِذَا أَقَرَّ مَرَّةً عِنْدَ الْحَاكِمِ رُجِمَ وَقَالَ الْحَكَمُ: أَرْبَعًا.

कि नहीं। उ़मर (रज़ि.) ने कहा आख़िर तेरी गवाही एक मुसलमान की गवाही की त़रह़ होगी या नहीं? अ़ब्दुर्रह़मान ने कहा बेशक सच कहते हो। उ़मर (रज़ि.) ने कहा अगर लोग यूँ न कहें कि उ़मर ने अल्लाह की किताब में अपनी त़रफ़ से बढ़ा दिया तो मैं रजम की आयत अपने हाथ से मुस्ह़फ़ में लिख देता। और माइज़ असलमी ने आँह़ज़रत (ﷺ) के सामने चार बार ज़िना का इक़रार किया तो आप (ﷺ) ने उसको संगसार करने का हुक्म दे दिया और ये मन्क़ूल नहीं हुआ कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने उसके इक़रार पर ह़ाज़िरीन को गवाह किया हो। और ह़म्माद बिन अबी सुलैमान (उस्ताद इमाम अबू ह़नीफा रह़.) ने कहा अगर ज़िना करने वाला ह़ाकिम के सामने एक बार भी इक़रार कर ले तो संगसार किया जाएगा और ह़कम बिन उ़तैबा ने कहा, जब तक चार बार इक़रार न कर ले संगसार नहीं हो सकता।

तश्रीह: इसको इब्ने अबी शैबा ने वस़्ल किया। बाब का तर्जुमा ये है कि अगर क़ाज़ी ख़ुद ओहदा-ए-क़ज़ा ह़ासिल होने के बाद या पहले एक अम्र का गवाह हो तो क्या उसकी बिना पर फ़ैस़ला किया जा सकता है या'नी अपनी शहादत और वाकफ़ियत की बिना पर, इस मसले में इख़्तिलाफ़ है और इमाम बुख़ारी (रह़.) के नज़दीक राजेह़ यही मा'लूम होता है कि क़ाज़ी को ख़ुद अपने इल्म या गवाही पर फ़ैस़ला करना दुरुस्त नहीं बल्कि ऐसा मुक़द्दमा बादशाहे वक़्त या दूसरे क़ाज़ी के पास रुजूअ होना चाहिये और उस क़ाज़ी को मिष्ल दूसरे गवाहों के वहाँ गवाही देना चाहिये।

٧١٧٠- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ يَحْيَى، عَنْ عُمَرَ بْنِ كَثِيرٍ، عَنْ أَبِي مُحَمَّدٍ مَوْلَى أَبِي قَتَادَةَ أَنَّ أَبَا قَتَادَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَوْمَ حُنَيْنٍ: ((مَنْ لَهُ بَيِّنَةٌ عَلَى قَتِيلٍ قَتَلَهُ فَلَهُ سَلَبُهُ)) فَقُمْتُ لأَلْتَمِسَ بَيِّنَةً عَلَى قَتِيلٍ فَلَمْ أَرَ أَحَدًا يَشْهَدُ لِي، فَجَلَسْتُ ثُمَّ بَدَا لِي فَذَكَرْتُ أَمْرَهُ إِلَى رَسُولِ اللهِ فَقَالَ رَجُلٌ مِنْ جُلَسَائِهِ: سِلاَحُ هَذَا الْقَتِيلِ الَّذِي يَذْكُرُ عِنْدِي قَالَ فَأَرْضِهِ مِنْهُ فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ: كَلاَّ لاَ يُعْطِهِ أُصَيْبِغَ مِنْ قُرَيْشٍ وَيَدَعُ أَسَدًا مِنْ أُسْدِ اللهِ يُقَاتِلُ عَنِ اللهِ وَرَسُولِهِ قَالَ: فَأَمَرَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ

7170. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे यह़्या बिन सईद अंस़ारी ने, उनसे उ़मर बिन कष़ीर ने, उनसे अबू क़तादा के ग़ुलाम अबू मुह़म्मद नाफ़ेअ़ ने और उनसे अबू क़तादा (रज़ि.) ने कि रसूले करीम (ﷺ) ने हुनैन की जंग के दिन फ़र्माया, जिसके पास किसी मक़्तूल के बारे में जिसे उसने क़त्ल किया हो गवाही हो तो उसका सामान उसे मिलेगा। चुनाँचे मैं मक़्तूल के लिये गवाह तलाश करने के लिये खड़ा हुआ तो मैंने किसी को नहीं देखा जो मेरे लिये गवाही दे सके, इसलिये मैं बैठ गया। फिर मेरे सामने एक स़ूरत आई और मैंने उसका ज़िक्र आँह़ज़रत (ﷺ) से किया तो वहाँ बैठे हुए एक स़ाह़ब ने कहा कि इस मक़्तूल का सामान जिसका अबू क़तादा ज़िक्र कर रहे हैं, मेरे पास है। इन्हें इसके लिये राज़ी कर दीजिए (कि वो ये हथियार वग़ैरह मुझे दे दें) इस पर अबूबक्र (रज़ि.) ने कहा कि हर्गिज़ नहीं। अल्लाह के शेरों में से एक शेर को नज़रअंदाज़ करके जो अल्लाह और उसके रसूल की त़रफ़ से जंग करता है वो क़ुरैश के मा'मूली

عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَدَّاهُ إِلَيَّ فَاشْتَرَيْتُ مِنْهُ خِرَافًا، فَكَانَ أَوَّلَ مَالٍ تَأَثَّلْتُهُ قَالَ عَبْدُ اللهِ: عَنِ اللَّيْثِ فَقَامَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَأَدَّاهُ إِلَيَّ وَقَالَ أَهْلُ الْحِجَازِ: الْحَاكِمُ لاَ يَقْضِي بِعِلْمِهِ شَهِدَ بِذَلِكَ فِي وِلاَيَتِهِ أَوْ قَبْلَهَا، وَلَوْ أَقَرَّ خَصْمٌ عِنْدَهُ لآخَرَ بِحَقٍّ فِي مَجْلِسِ الْقَضَاءِ فَإِنَّهُ لاَ يَقْضِي عَلَيْهِ فِي قَوْلِ بَعْضِهِمْ حَتَّى يَدْعُوَ بِشَاهِدَيْنِ، فَيُحْضِرَهُمَا إِقْرَارَهُ وَقَالَ بَعْضُ أَهْلِ الْعِرَاقِ: مَا سَمِعَ أَوْ رَآهُ فِي مَجْلِسِ الْقَضَاءِ قَضَى بِهِ وَمَا كَانَ فِي غَيْرِهِ لَمْ يَقْضِ إِلاَّ بِشَاهِدَيْنِ وَقَالَ آخَرُونَ مِنْهُمْ: بَلْ يَقْضِي بِهِ لأَنَّهُ مُؤْتَمَنٌ، وَإِنَّمَا يُرَادُ مِنَ الشَّهَادَةِ مَعْرِفَةُ الْحَقِّ فَعِلْمُهُ أَكْثَرُ مِنَ الشَّهَادَةِ وَقَالَ بَعْضُهُمْ : يَقْضِي بِعِلْمِهِ فِي الأَمْوَالِ وَلاَ يَقْضِي فِي غَيْرِهَا وَقَالَ الْقَاسِمُ: لاَ يَنْبَغِي لِلْحَاكِمِ أَنْ يُمْضِيَ قَضَاءً بِعِلْمِهِ دُونَ عِلْمِ غَيْرِهِ مَعَ أَنَّ عِلْمَهُ أَكْثَرُ مِنْ شَهَادَةِ غَيْرِهِ وَلَكِنَّ فِيهِ تَعَرُّضًا لِتُهَمَةِ نَفْسِهِ عِنْدَ الْمُسْلِمِينَ، وَإِيقَاعًا لَهُمْ فِي الظُّنُونِ وَقَدْ كَرِهَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الظَّنَّ فَقَالَ: ((إِنَّمَا هَذِهِ صَفِيَّةُ)).

[راجع: ٢١٠٠]

आदमी को हथियार नहीं देंगे। बयान किया कि फिर आँहज़रत (ﷺ) ने हुक्म दिया और उन्होंने हथियार मुझे दे दिये और मैंने उससे एक बाग़ ख़रीदा। ये पहला माल था जो मैंने (इस्लाम लाने के बाद) हासिल किया था। हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने कहा और मुझसे अ़ब्दुल्लाह बिन सालेह ने बयान किया, उनसे लैष़ बिन सअ़द ने कि, फिर आँहज़रत (ﷺ) खड़े हुए और मुझे वो सामान दिला दिया, और अहले हिजाज़ इमाम मालिक वग़ैरह ने कहा कि हाकिम को सिर्फ़ अपने इल्म की बुनियाद पर फ़ैसला करना दुरुस्त नहीं। ख़्वाह वो मामला पर ओ़हद-ए-क़ज़ा हासिल होने के बाद गवाह हुआ हो या इससे पहले और अगर किसी फ़रीक़ ने उसके सामने दूसरे के लिये मज्लिसे क़ज़ा में किसी हक़ का इक़रार किया तो कुछ लोगों का ख़्याल है कि इस बुनियाद पर वो फ़ैसला नहीं करेगा बल्कि दो गवाहों को बुलाकर उनके सामने इक़रार कराएगा। और कुछ अहले इराक़ ने कहा है कि जो कुछ क़ाज़ी ने अ़दालत में देखा या सुना उसके मुताबिक़ फ़ैसला करेगा लेकिन जो कुछ अ़दालत के बाहर होगा उसकी बुनियाद पर दो गवाहों के बग़ैर फ़ैसला नहीं कर सकता और उन्हीं में से दूसरे लोगों ने कहा कि उसकी बुनियाद पर भी फ़ैसला कर सकता है क्योंकि वो अमानतदार है। शहादत का मक़्सद तो सिर्फ़ हक़ का जानना है पस क़ाज़ी का ज़ाती इल्म गवाही से बढ़कर है। और कुछ उनमें से कहते हैं कि अम्वाल के बारे में तो अपने इल्म की बुनियाद पर फ़ैसला करेगा और उसके सिवा नहीं करेगा और क़ासिम ने कहा कि हाकिम के लिए दुरुस्त नहीं कि वो कोई फ़ैसला सिर्फ़ अपने इल्म की बुनियाद पर करे और दूसरे के इल्म को नज़रअंदाज़ कर दे गो क़ाज़ी का इल्म दूसरे की गवाही से बढ़कर है लेकिन चूँकि आम मुसलमानों की नज़र में इस सूरत में क़ाज़ी के मुत्तहम होने का ख़तरा है और मुसलमानों को इस तरह बदगुमानी में मुब्तला करना है और नबी करीम (ﷺ) ने बदगुमानी को नापसंद किया था और फ़र्माया था कि ये सफ़िया (रज़ि.) मेरी बीवी हैं। (राजेअ़: 2100)

तश्रीह : जब दो अंसारियों ने आपको मस्जिद के बाहर उनके साथ चलते देखा था तो उनकी बदगुमानी दूर करने के लिये आपने ये फ़र्माया था जिसकी तफ़्सील आगे वाली हदीष़ में वारिद है। तो अगर हाकिम या क़ाज़ी ने किसी शख़्स को ज़िना या चोरी या ख़ून करते देखा तो सिर्फ़ अपने इल्म की बिना पर मुज्रिम को सज़ा नहीं दे सकता जब तक बाक़ायदा शहादत से षुबूत न हो। इमाम अहमद (रह.) से भी ऐसा ही मरवी है। इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) कहते हैं क़यास

तो ये था कि उन सब मुक़द्दमात में भी क़ाज़ी को अपने इ़ल्म पर फ़ैसला करना जाइज़ होता लेकिन मैं क़यास को छोड़ देता हूँ और इस्तिह़सान के रद्द से ये कहता हूँ कि क़ाज़ी उन मुक़द्दमात में अपने इ़ल्म की बिना पर हुक्म न दे।

٧١٧١- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللهِ الأُوَيْسِيُّ، حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ عَلِيِّ بْنِ حُسَيْنٍ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ أَتَتْهُ صَفِيَّةُ بِنْتُ حُيَيٍّ، فَلَمَّا رَجَعَتِ انْطَلَقَ مَعَهَا فَمَرَّ بِهِ رَجُلاَنِ مِنَ الأَنْصَارِ فَدَعَاهُمَا فَقَالَ: ((إِنَّمَا هِيَ صَفِيَّةُ)) قَالاَ: سُبْحَانَ اللهِ قَالَ: ((إِنَّ الشَّيْطَانَ يَجْرِي مِنَ ابْنِ آدَمَ مَجْرَى الدَّمِ)). رَوَاهُ شُعَيْبٌ وَابْنُ مُسَافِرٍ، وَابْنُ أَبِي عَتِيقٍ وَإِسْحَاقُ بْنُ يَحْيَى عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ عَلِيٍّ يَعْنِي ابْنَ حُسَيْنٍ عَنْ صَفِيَّةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ.

[راجع: ٧١٧١]

7171. हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने और उनसे जनाब ज़ैनुल आ़बेदीन अ़ली बिन हुसैन (रह.) ने कि स़फ़िया बिन्ते हुय्यि (रज़ि.) (रात के वक़्त) नबी करीम (ﷺ) के पास आईं (और आँह़ज़रत ﷺ मस्जिद में मुअ़तकिफ़ थे) जब वो वापस आने लगे तो आँह़ज़रत (ﷺ) भी उनके साथ आए। उस वक़्त दो अंस़ारी स़ह़ाबी उधर से गुज़रे तो आँह़ज़रत (ﷺ) ने उन्हें बुलाया और फ़र्माया कि ये स़फ़िया हैं। उन दोनों अंस़ारियों ने कहा, सुब्ह़ानल्लाह! (क्या हम आप पर शुब्हा करेंगे) आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि शैत़ान इंसान के अंदर इस त़रह़ दौड़ता है जैसे ख़ून दौड़ता है। इसकी रिवायत शुऐ़ब इब्ने मुसाफ़िर इब्ने अबी अ़तीक़ और इस्ह़ाक़ बिन यह़्या ने ज़ुह्‌री से की है, उनसे अ़ली बिन हुसैन ने और उनसे स़फ़िया (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से यही वाक़िया नक़ल किया है। (राजेअ़ : 7171)

٢٢- باب أَمْرِ الْوَالِي إِذَا وَجَّهَ أَمِيرَيْنِ إِلَى مَوْضِعٍ أَنْ يَتَطَاوَعَا وَلاَ يَتَعَاصَيَا

बाब 22 : जब ह़ाकिमे आला दो शख़्सों को किसी एक ही जगह का ह़ाकिम मुक़र्रर करे तो उन्हें ये हुक्म दे कि वो मिलकर रहें और एक दूसरे की मुख़ालफ़त न करें

٧١٧٢- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا الْعَقَدِيُّ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ أَبِي بُرْدَةَ قَالَ: سَمِعْتُ أَبِي قَالَ: بَعَثَ النَّبِيُّ ﷺ أَبِي وَمُعَاذَ بْنَ جَبَلٍ إِلَى الْيَمَنِ فَقَالَ: ((يَسِّرَا وَلاَ تُعَسِّرَا، وَبَشِّرَا وَلاَ تُنَفِّرَا، وَتَطَاوَعَا)) فَقَالَ لَهُ أَبُو مُوسَى: إِنَّهُ يُصْنَعُ بِأَرْضِنَا الْبِتْعُ فَقَالَ: ((كُلُّ مُسْكِرٍ حَرَامٌ)). وَقَالَ النَّضْرُ وَأَبُودَاوُدَ وَيَزِيدُ بْنُ هَارُونَ

7172. हमसे मुह़म्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल मलिक बिन अ़म्र अ़क़्दी ने बयान किया, उनसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे सईद बिन अबी बुर्दा ने बयान किया कि मैंने अपने वालिद से सुना, उन्होंने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने मेरे वालिद (अबू मूसा रज़ि.) और मुआ़ज़ बिन जबल (रज़ि.) को यमन भेजा और उनसे फ़र्माया कि आसानी पैदा करना और तंगी न करना और ख़ुशख़बरी देना और नफ़रत न दिलाना और आपस में इत्तिफ़ाक़ रखना। अबू मूसा (रज़ि.) ने पूछा कि हमारे मुल्क में शहद का नबीज़ (तिब्अ़) बनाया जाता है? आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि हर नशावर चीज़ ह़राम है। नज़्र बिन शुमैल, अबू दाऊद त़यालिसी,

यज़ीद बिन हारून और वकीअ़ ने शुअ़बा से बयान किया, उनसे सईद ने, उनसे उनके वालिद ने, उनसे उनके दादा ने नबी करीम (ﷺ) से यही हदीष़ नक़ल की। (राजेअ़ : 2261)

وَوَكِيعٌ عَنْ شُعْبَةَ، عَنْ سَعِيدٍ، عَنْ أَبِيهِ عَنْ جَدِّهِ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ.

[راجع: ٢٢٦١]

बाब 23 : हाकिम दा'वत क़ुबूल कर सकता है

٢٣- باب إِجَابَةِ الْحَاكِمِ الدَّعْوَةَ

और ह़ज़रत उष़्मान (रज़ि.) ने मुग़ीरह बिन शुअ़बा (रज़ि.) के एक ग़ुलाम की दा'वत क़ुबूल की।

وَقَدْ أَجَابَ عُثْمَانُ بْنُ عَفَّانَ عَبْدًا لِلْمُغِيرَةِ بْنِ شُعْبَةَ

7173. हमसे मुसद्दद बिन मुस्रहिद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या बिन सईद ने बयान किया, उनसे सुफ़यान ने, कहा मुझसे मंसूर ने बयान किया, उनसे अबू वाइल ने और उनसे अबू मूसा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया क़ैदियों को छुड़ाओ और दा'वत करने वाले की दा'वत क़ुबूल करो। (राजेअ़ : 3046)

٧١٧٣- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، عَنْ سُفْيَانَ، حَدَّثَنِي مَنْصُورٌ، عَنْ أَبِي وَائِلٍ، عَنْ أَبِي مُوسَى، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ ((فُكُّوا الْعَانِيَ وَأَجِيبُوا الدَّاعِيَ)).

[راجع: ٣٠٤٦]

बाब 24 : हाकिमों को जो हदिये तोह़फ़े दिये जाएँ उनका बयान

٢٤- باب هَدَايَا الْعُمَّالِ

उनका लेना उनके लिये क़त़्अ़न नाजाइज़ है वो सारा माल बैतुलमाल का है।

7174. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे ज़ुह्री ने, उन्होंने उ़र्वा से सुना, उन्हें हुमैद साएदी (रज़ि.) ने ख़बर दी, उन्होंने बयान किया कि बनी असद के एक शख़्स़ को स़दक़ा की वसूली के लिये रसूलुल्लाह (ﷺ) ने तह़्स़ीलदार बनाया, उनका नाम इब्नुल उत्बिय्या था। जब वो लौटकर आए तो उन्होंने कहा कि ये आप लोगो का है और ये मुझे हदिये में दिया गया है। फिर आँह़ज़रत (ﷺ) मिम्बर पर खड़े हुए, सुफ़यान ही ने ये रिवायत भी की कि, फिर आप मिम्बर पर चढ़े, फिर अल्लाह की ह़म्दो ष़ना बयान की और फ़र्माया, उस आ़मिल का क्या ह़ाल होगा जिसे हम तह़्स़ील के लिये भेजते हैं फिर वो आता है और कहता है कि ये माल तुम्हारा है और ये मेरा है। क्यूँ न वो अपने बाप या माँ के घर बैठा रहा और देखा होता कि उसे हदिया दिया जाता है या नहीं? उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है, आ़मिल जो चीज़ भी (हदिये के त़ौर पर) लेगा उसे क़यामत के दिन अपनी गर्दन पर उठाए हुए आएगा। अगर ऊँट होगा तो वो अपनी आवाज़ निकालता आएगा, अगर गाय

٧١٧٤- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنِ الزُّهْرِيِّ أَنَّهُ سَمِعَ عُرْوَةَ أَخْبَرَنَا أَبُو حُمَيْدٍ السَّاعِدِيُّ قَالَ: اسْتَعْمَلَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَجُلاً مِنْ بَنِي أَسَدٍ يُقَالُ لَهُ ابْنُ الأُتْبِيَّةِ عَلَى صَدَقَةٍ: فَلَمَّا قَدِمَ قَالَ: هَذَا لَكُمْ وَهَذَا أُهْدِيَ لِي فَقَامَ النَّبِيُّ ﷺ عَلَى الْمِنْبَرِ، قَالَ سُفْيَانُ أَيْضًا: فَصَعِدَ الْمِنْبَرَ فَحَمِدَ اللهَ وَأَثْنَى عَلَيْهِ ثُمَّ قَالَ: ((مَا بَالُ الْعَامِلِ نَبْعَثُهُ فَيَأْتِي يَقُولُ : هَذَا لَكَ وَهَذَا لِي، فَهَلاَّ جَلَسَ فِي بَيْتِ أَبِيهِ وَأُمِّهِ فَيَنْظُرُ أَيُهْدَى لَهُ أَمْ لاَ. وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لاَ يَأْتِي بِشَيْءٍ إِلاَّ جَاءَ بِهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ يَحْمِلُهُ عَلَى رَقَبَتِهِ، إِنْ كَانَ

بعيرًا لَهُ رُغَاءٌ، أَوْ بَقَرَةً لَهَا خُوَارٌ، أَوْ شَاةً تَيْعَرُ)) ثُمَّ رَفَعَ يَدَيْهِ حَتَّى رَأَيْنَا عُفْرَتَيْ إِبْطَيْهِ ((أَلَا هَلْ بَلَّغْتُ)) ثَلاَثًا. قَالَ سُفْيَانُ: قَصَّهُ عَلَيْنَا الزُّهْرِيُّ وَزَادَ هِشَامٌ عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي حُمَيْدٍ قَالَ: سَمِعَ أُذُنَايَ وَأَبْصَرَتْهُ عَيْنِي وَسَلُوا زَيْدَ بْنَ ثَابِتٍ فَإِنَّهُ سَمِعَهُ مَعِي، وَلَمْ يَقُلِ الزُّهْرِيُّ سَمِعَ أُذُنِي. خُوَارٌ : صَوْتٌ وَالْجُؤَارُ مِنْ تَجْأَرُونَ كَصَوْتِ الْبَقَرَةِ.

[راجع: ٩٢٥]

होगी तो वो अपनी आवाज़ निकालती आएगी, बकरी होगी तो वो बोलती आएगी, फिर आपने अपने हाथ उठाए। यहाँ तक कि हमने आपके दोनों बग़लों की सफ़ेदी देखी और आपने फ़र्माया कि मैंने पहुँचा दिया! तीन मर्तबा यही फ़र्माया, सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया कि ये ह़दीष़ हमसे ज़ुह्री ने बयान की और हिशाम ने अपने वालिद से रिवायत की, उनसे अबू ह़ुमैद (रज़ि.) ने बयान किया कि मेरे दोनों कानों ने सुना और दोनों आँखों ने देखा और ज़ैद बिन ष़ाबित स़ह़ाबी (रज़ि.) से भी पूछ क्योंकि उन्होंने भी ये ह़दीष़ मेरे साथ सुनी है। सुफ़यान ने कहा ज़ुह्री ने ये लफ़्ज़ नहीं कहा कि मेरे कानों ने सुना। इमाम बुख़ारी (रह़.) ने कहा ह़दीष़ में ख़ुवार का लफ़्ज़ है या'नी गाय की आवाज़ या जुवार का लफ़्ज़ तजारून से निकला है जो सूरह मोमिनून में है या'नी गाय की आवाज़ निकालते होंगे। (राजेअ़ : 925)

ह़ज़रत ज़ैद बिन ष़ाबित (रज़ि.) फ़ुक़्हाए बुज़ुर्ग अस्ह़ाब से हैं। अ़हदे स़िद्दीक़ी में उन्होंने क़ुर्आन को जमा किया और अ़हदे उ़ष़्मानी में नक़ल किया। 56 साल की उ़म्र में सन 45 हिजरी में मदीना मुनव्वरह में वफ़ात पाई रज़ियल्लाहु अ़न्हु व अरज़ाहू

٢٥- باب اسْتِقْضَاءِ الْمَوَالِي وَاسْتِعْمَالِهِمْ

बाब 25 : आज़ादशुदा ग़ुलाम को क़ाज़ी या ह़ाकिम बनाना

जाइज़ है जैसा कि नीचे की ह़दीष़ से ष़ाबित है।

٧١٧٥- حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ صَالِحٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ وَهْبٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي ابْنُ جُرَيْجٍ أَنَّ نَافِعًا أَخْبَرَهُ أَنَّ ابْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَخْبَرَهُ قَالَ: كَانَ سَالِمٌ مَوْلَى أَبِي حُذَيْفَةَ يَؤُمُّ الْمُهَاجِرِينَ الأَوَّلِينَ وَأَصْحَابَ النَّبِيِّ ﷺ فِي مَسْجِدِ قُبَاءٍ فِيهِمْ أَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ وَأَبُو سَلَمَةَ وَزَيْدٌ وَعَامِرُ بْنُ رَبِيعَةَ. [راجع: ٦٩٢]

7175. हमसे उ़ष़्मान बिन स़ालेह़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन वहब ने बयान किया, उन्होंने कहा मुझको इब्ने जुरैज ने ख़बर दी, उन्हें नाफ़ेअ़ ने ख़बर दी, उन्हें ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने ख़बर दी, कहा कि अबू हुज़ैफ़ह (रज़ि.) के (आज़ादकर्दा ग़ुलाम) सालिम मुहाजिर अव्वलीन की और नबी करीम (ﷺ) के दूसरे स़ह़ाबा (रज़ि.) की मस्जिद क़ुबा में इमामत किया करते थे। उन अस़्ह़ाब में अबूबक्र, उ़मर, अबू सलमा, ज़ैद और आ़मिर बिन रबीआ़ (रज़ि.) भी होते थे। (राजेअ़ : 692)

तश्रीह़ : इसकी वजह ये थी कि सालिम क़ुर्आन के बड़े क़ारी थे जबकि दूसरी ह़दीष़ में है क़ुर्आन चार शख़्सों से सीखो, अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) और सालिम मौला अबू हुज़ैफ़ह (रज़ि.) और उबई बिन कअ़ब (रज़ि.) और मुआ़ज़ बिन जबल (रज़ि.) से। एक रिवायत में है ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) कहती हैं एक बार मैंने आँह़ज़रत (ﷺ) के पास आने में देर लगाई। आपने वजह पूछी, मैंने कहा एक क़ारी को निहायत उ़म्दह तौर से मैंने क़ुर्आन पढ़ते सुना। ये सुनते ही आप

चादर लेकर बाहर निकले देखा तो वो सालिम मौला अबू हुज़ैफ़ह (रज़ि.) हैं। आपने फ़र्माया अल्लाह का शुक्र है कि उस ने मेरी उम्मत में ऐसा शख़्स बनाया। सालिम (रज़ि.) इमामत कर रहे थे जो आज़ादकर्दा गुलाम थे, उसी से गुलाम को हाकिम या क़ाज़ी बनाना षाबित हुआ, बशर्ते कि वो अहलियत रखता हो।

बाब 26 : लोगों के चौधरी या नक़ीब बनाना

٢٦- باب الْعُرَفَاءِ لِلنَّاسِ

ख़ानदान के नुमाइन्दे बनाना हदीषे ज़ैल से ज़ाहिर है।

7176,7177. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इस्माईल बिन इब्राहीम ने बयान किया, उनसे उनके चचा मूसा बिन उक़्बा ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उनसे उर्वा बिन ज़ुबैर ने बयान किया और उन्हें मरवान बिन हकम और मिस्वर बिन मख़रमा (रज़ि.) ने ख़बर दी कि रसूले करीम (ﷺ) ने जब मुसलमानों ने क़बीला हवाज़िन के क़ैदियों को इजाज़त दी तो फ़र्माया कि मुझे नहीं मा'लूम कि तुममें से किसने इजाज़त दी है और किसने नहीं दी है। पस वापस जाओ और तुम्हारा मामला हमारे पास तुम्हारे नक़ीब या चौधरी और तुम्हारे सरदार लाएँ। चुनाँचे लोग वापस चले गये और उनके ज़िम्मेदारों ने उनसे बात की और फिर आँहज़रत (ﷺ) को आकर ख़बर दी कि लोगों ने दिली ख़ुशी से इजाज़त दे दी है।

(राजेअ: 2307,2308)

٧١٧٦، ٧١٧٧- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ أُوَيْسٍ، حَدَّثَنِي إِسْمَاعِيلُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ عَمِّهِ مُوسَى بْنِ عُقْبَةَ قَالَ ابْنُ شِهَابٍ: حَدَّثَنِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ أَنَّ مَرْوَانَ بْنَ الْحَكَمِ وَالْمِسْوَرَ بْنَ مَخْرَمَةَ أَخْبَرَاهُ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ قَالَ حِينَ أَذِنَ لَهُمُ الْمُسْلِمُونَ فِي عِتْقِ سَبْيِ هَوَازِنَ فَقَالَ: ((إِنِّي لاَ أَدْرِي مَنْ أَذِنَ مِنْكُمْ مِمَّنْ لَمْ يَأْذَنْ، فَارْجِعُوا حَتَّى يَرْفَعَ إِلَيْنَا عُرَفَاؤُكُمْ أَمْرَكُمْ)) فَرَجَعَ النَّاسُ فَكَلَّمَهُمْ عُرَفَاؤُهُمْ فَرَجَعُوا إِلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فَأَخْبَرُوهُ أَنَّ النَّاسَ قَدْ طَيَّبُوا وَأَذِنُوا.

[راجع: ٢٣٠٧، ٢٣٠٨]

बाब 27 : बादशाह के सामने मुँह दर मुँह ख़ुशामद करना, पीठ पीछे उसको बुरा कहना मना है

٢٧- باب مَا يُكْرَهُ مِنْ ثَنَاءِ السُّلْطَانِ وَإِذَا خَرَجَ قَالَ : غَيْرَ ذَلِكَ.

क्योंकि ये दग़ाबाज़ी और निफ़ाक़ है जिसके मा'नी यही हैं कि ज़ाहिर में कुछ हो और बातिन में कुछ यही निफ़ाक़ है।

7178. हमसे अबू नुऐम फ़ज़्ल बिन दुकैन ने बयान किया, कहा हमसे आसिम बिन मुहम्मद बिन ज़ैद बिन अब्दुल्लाह बिन उमर ने, और उनसे उनके वालिद ने, कि कुछ लोगों ने इब्ने उमर (रज़ि.) से कहा कि हम अपने हाकिमों के पास जाते हैंऔर उनके हक़ में वो बातें कहते हैं कि बाहर आने के बाद हम उसके ख़िलाफ़ कहते हैं। इब्ने उमर (रज़ि.) ने कहा कि हम उसे निफ़ाक़ कहते थे।

٧١٧٨- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ، حَدَّثَنَا عَاصِمُ بْنُ مُحَمَّدِ بْنِ زَيْدِ بْنِ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ عُمَرَ، عَنْ أَبِيهِ قَالَ أُنَاسٌ لاِبْنِ عُمَرَ: إِنَّا نَدْخُلُ عَلَى سُلْطَانِنَا فَنَقُولُ لَهُمْ خِلاَفَ مَا نَتَكَلَّمُ إِذَا خَرَجْنَا مِنْ عِنْدِهِمْ قَالَ كُنَّا نَعُدُّهَا نِفَاقًا.

7179. हमसे क़ुतैबा ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे यज़ीद बिन अबी ह़बीब ने, उनसे इराक ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से सुना, आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि बदतरीन शख़्स दो-रुख़ा है। किसी के सामने उसका एक रुख़ होता है और दूसरे के सामने दूसरा रुख़ बरतता है। (राजेअ़ : 3494)

٧١٧٩- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبِي حَبِيبٍ، عَنْ عِرَاكٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((إِنَّ شَرَّ النَّاسِ ذُو الْوَجْهَيْنِ، الَّذِي يَأْتِي هَؤُلاَءِ بِوَجْهٍ وَهَؤُلاَءِ بِوَجْهٍ)). [راجع: ٣٤٩٤]

मुँह देखी बात करना अच्छे लोगों का शैवा नहीं ऐसे लोग सबकी नज़रों में ग़ैर मोतबर हो जाते हैं और उनका कोई मुक़ाम नहीं रहता।

बाब 28 : एक त़रफ़ा फ़ैस़ला करने का बयान

٢٨- باب الْقَضَاءِ عَلَى الْغَائِبِ

7180. हमसे मुह़म्मद बिन कष़ीर ने बयान किया, कहा हमको सुफ़यान ने ख़बर दी, उन्हें हिशाम ने, उन्हें उनके वालिद ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने कि हिन्द ने नबी करीम (ﷺ) से कहा कि (उनके शौहर) अबू सुफ़यान बख़ील हैं और मुझे उनके माल में से लेने की ज़रूरत होती है। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि दस्तूर के मुताबिक़ इतना ले लिया करो जो तुम्हारे और तुम्हारे बच्चों के लिये काफ़ी हो। (राजेअ़ : 2211)

٧١٨٠- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ، أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ، عَنْ هِشَامٍ، عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ أَنَّ هِنْدَ قَالَتْ لِلنَّبِيِّ ﷺ: إِنَّ أَبَا سُفْيَانَ رَجُلٌ شَحِيحٌ فَأَحْتَاجُ أَنْ آخُذَ مِنْ مَالِهِ قَالَ ﷺ: ((خُذِي مَا يَكْفِيكِ وَوَلَدَكِ بِالْمَعْرُوفِ)). [راجع: ٢٢١١]

आपने अबू सुफ़यान की ग़ैर ह़ाज़िरी में फ़ैस़ला दे दिया यही बाब से मुत़ाबक़त है। हिन्द बिन्ते उ़त्बा ज़ोजा अबू सुफ़यान की और माँ ह़ज़रत मुआविया (रज़ि.) की ख़िलाफ़ते फ़ारूक़ी में वफ़ात पाई (रज़ियल्लाहु अ़न्हा व अरज़ाहा)।

बाब 29 : अगर किसी शख़्स़ को ह़ाकिम दूसरे मुसलमान भाई का माल नाह़क़ दिला दे तो उसको न ले क्योंकि ह़ाकिम के फ़ैस़ला से न ह़राम ह़लाल हो सकता है न ह़लाल ह़राम हो सकता है

٢٩- باب مَنْ قُضِيَ لَهُ بِحَقِّ أَخِيهِ فَلاَ يَأْخُذْهُ فَإِنَّ قَضَاءَ الْحَاكِمِ لاَ يُحِلُّ حَرَامًا وَلاَ يُحَرِّمُ حَلاَلاً

7181. हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे स़ालेह़ ने, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उन्हें उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने ख़बर दी, उन्हें ज़ैनब बिन्ते अबी सलमा ने ख़बर दी और उन्हें नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा उम्मे सलमा (रज़ि.) ने ख़बर दी। आपने अपने हुज्रा के दरवाज़े पर झगड़े की आवाज़ सुनी तो बाहर उनकी त़रफ़ निकले। फिर आपने फ़र्माया कि मैं भी एक इंसान हूँ और मेरे पास लोग मुक़द्दमे लेकर आते हैं। मुम्किन है

٧١٨١- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ، عَنْ صَالِحٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ أَنَّ زَيْنَبَ ابْنَةَ أَبِي سَلَمَةَ أَخْبَرَتْهُ أَنَّ أُمَّ سَلَمَةَ زَوْجَ النَّبِيِّ ﷺ أَخْبَرَتْهَا عَنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ أَنَّهُ سَمِعَ خُصُومَةً بِبَابِ حُجْرَتِهِ فَخَرَجَ إِلَيْهِمْ فَقَالَ: ((إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ وَإِنَّهُ

يَأْتِينِي الْخَصْمُ، فَلَعَلَّ بَعْضَكُمْ أَنْ يَكُونَ أَبْلَغَ مِنْ بَعْضٍ، فَأَحْسِبُ أَنَّهُ صَادِقٌ فَأَقْضِي لَهُ بِذَلِكَ، فَمَنْ قَضَيْتُ لَهُ بِحَقِّ مُسْلِمٍ فَإِنَّمَا هِيَ قِطْعَةٌ مِنَ النَّارِ فَلْيَأْخُذْهَا أَوْ لِيَتْرُكْهَا)). [راجع: ٢٤٥٨]

उनमें से एक फ़रीक़ दूसरे फ़रीक़ से बोलने में ज़्यादा उम्दह हो और मैं यक़ीन कर लूँ कि वही सच्चा है और इस तरह इसके मुवाफ़िक़ फ़ैसला कर दूँ। पस जिस शख़्स के लिये भी मैं किसी मुसलमान का हक़ दिला दूँ तो वो जहन्नम का एक टुकड़ा है वो चाहे उसे ले या छोड़ दे, मैं उसको दरहक़ीक़त दोज़ख़ का एक टुकड़ा दिला रहा हूँ। (राजेअ : 2458)

हज़रत उम्मे सलमा (रज़ि.) बिन्ते अबू उमय्या हैं। पहले अबू सलमा के निकाह में थीं। सन 4 हिजरी में इनके इंतिक़ाल के बाद हरमे नबवी में दाख़िल हुईं। 84 साल की उम्र में सन 59 हिजरी में फ़ौत होकर बक़ीउल ग़रक़द में दफ़न हुईं। रज़ियल्लाहु अन्हा व अरज़ाहा।

٧١٨٢- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ قَالَ: حَدَّثَنِي مَالِكٌ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ، عَنْ عَائِشَةَ زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهَا قَالَتْ : كَانَ عُتْبَةُ بْنُ أَبِي وَقَّاصٍ عَهِدَ إِلَى أَخِيهِ سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ أَنَّ ابْنَ وَلِيدَةِ زَمْعَةَ مِنِّي فَاقْبِضْهُ إِلَيْكَ، فَلَمَّا كَانَ عَامُ الْفَتْحِ أَخَذَهُ سَعْدٌ فَقَالَ ابْنُ أَخِي: قَدْ كَانَ عَهِدَ إِلَيَّ فِيهِ فَقَامَ إِلَيْهِ عَبْدُ بْنُ زَمْعَةَ فَقَالَ أَخِي وَابْنُ وَلِيدَةِ أَبِي وُلِدَ عَلَى فِرَاشِهِ فَتَسَاوَقَا إِلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فَقَالَ سَعْدٌ: يَا رَسُولَ اللَّهِ ابْنُ أَخِي كَانَ عَهِدَ إِلَيَّ فِيهِ وَقَالَ عَبْدُ بْنُ زَمْعَةَ: أَخِي وَابْنُ وَلِيدَةِ أَبِي وُلِدَ عَلَى فِرَاشِهِ فَقَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((هُوَ لَكَ يَا عَبْدُ بْنَ زَمْعَةَ)) ثُمَّ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ: ((الْوَلَدُ لِلْفِرَاشِ، وَلِلْعَاهِرِ الْحَجَرُ)) ثُمَّ قَالَ لِسَوْدَةَ بِنْتِ زَمْعَةَ: ((احْتَجِبِي مِنْهُ)) لِمَا رَأَى مِنْ شَبَهِهِ بِعُتْبَةَ فَمَا رَآهَا حَتَّى لَقِيَ اللَّهَ تَعَالَى.

[راجع: ٢٠٥٣]

7182. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, कहा कि मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे उर्वा बिन ज़ुबैर ने और उनसे नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा मुतह्हरा आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि उत्बा बिन अबी वक़्क़ास ने अपने भाई सअद बिन अबी वक़्क़ास (रज़ि.) को ये वसिय्यत की थी कि ज़म्आ की लौण्डी (का लड़का) मेरा है। तुम उसे अपनी परवरिश में ले लेना। चुनाँचे फ़तहे मक्का के दिन सअद (रज़ि.) ने उसे ले लिया और कहा कि ये मेरा भाई है, मेरे वालिद की लौण्डी का लड़का है और उन्हीं के फ़राश पर पैदा हुआ। चुनाँचे ये दोनों आँहज़रत (ﷺ) के पास पहुँचे। सअद (रज़ि.) ने कहा कि या रसूलल्लाह! मेरे भाई का लड़का है, उन्होंने मुझे इसकी वसिय्यत की थी और अब्द बिन ज़म्आ ने कहा कि मेरा भाई है, मेरे वालिद की लौण्डी का लड़का है और उन्हीं के बिस्तर पर पैदा हुआ। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अब्द बिन ज़म्आ! ये तुम्हारा है, फिर आपने फ़र्माया कि बच्चे फ़राश का होता है और ज़ानी के लिये पत्थर है। फिर आपने सौदा बिन्ते ज़म्आ (रज़ि.) से कहा कि उस लड़के से पर्दा किया करो क्योंकि आप (ﷺ) ने लड़के की उत्बा से मुशाबिहत देख ली थी। चुनाँचे उसने सौदा (रज़ि.) को मौत तक नहीं देखा।

(राजेअ : 2053)

तश्रीह : सुब्हानल्लाह! इमाम बुख़ारी (रह.) के बारीक फ़हम पर आफ़रीं। उन्होंने इस हदीष़ से बाब का मतलब यूँ ष़ाबित

किया कि अगर क़ाज़ी की क़ज़ा ज़ाहिर और बातिन या'नी लोगों के नज़दीक और अल्लाह के नज़दीक दोनों तरह नाफ़िज़ हो जाती जैसे हनफ़िया कहते हैं तो जब आपने ये फ़ैसला किया कि वो बच्चा ज़म्आ का बेटा है तो सौदा का भाई हो जाता और उस वक़्त आप सौदा (रज़ि.) को उससे पर्दा करने का क्यूँ हुक्म देते? जब पर्दे का हुक्म दिया तो मा'लूम हुआ कि क़ज़ा-ए-क़ाज़ी से बातिनी और हक़ीक़ी अम्र नहीं बदलता गो ज़ाहिर में वो सौदा का भाई ठहरा मगर हक़ीक़तन अल्लाह के नज़दीक भाई न ठहरा, इसी वजह से पर्दा का हुक्म दिया।

बाब 30 : कुँए और उस जैसी चीज़ों के मुक़द्दमात फ़ैसल करना

٣٠- باب الْحُكْمِ فِي الْبِئْرِ وَنَحْوِهَا

7183. हमसे इस्हाक़ बिन नज़्र ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने बयान किया, कहा हमको सुफ़यान ने ख़बर दी, उन्हें मंसूर और आ'मश ने, उनसे अबू वाइल ने बयान किया कि अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जो शख़्स ऐसी क़सम खाए जो झूठी हो जिसके ज़रिये वो किसी दूसरे का माल मार ले तो अल्लाह से वो इस हाल मे मिलेगा कि वो उस पर ग़ज़बनाक होगा, फिर अल्लाह तआ़ला ने ये आयत (इसकी तस्दीक़ में) नाज़िल फ़र्माई, बिला शुब्हा जो लोग अल्लाह के अ़हद और उसकी क़समों को थोड़ी पूँजी के बदले ख़रीदते हैं। (अल आयत)। (राजेअ़ : 2356)

٧١٨٣- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ نَصْرٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ، عَنْ مَنْصُورٍ وَالأَعْمَشُ عَنْ أَبِي وَائِلٍ قَالَ: قَالَ عَبْدُ اللهِ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لاَ يَحْلِفُ عَلَى يَمِينِ صَبْرٍ يَقْتَطِعُ مَالاً، وَهُوَ فِيهَا فَاجِرٌ إِلاَّ لَقِيَ اللهَ وَهُوَ عَلَيْهِ غَضْبَانُ)) فَأَنْزَلَ اللهُ: ﴿إِنَّ الَّذِينَ يَشْتَرُونَ بِعَهْدِ اللهِ وَأَيْمَانِهِمْ ثَمَناً قَلِيلاً﴾ [آل عمران ٧٧] الآيَةَ.

[راجع: ٢٣٥٦]

7184. इतने में अश्अ़ष़ (रज़ि.) भी आ गये। अभी अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) उनसे हदीष़ बयान कर ही रहे थे। उन्होंने कहा कि मेरे ही बारे में ये आयत नाज़िल हुई थी और एक शख़्स के बारे में, मेरा उनसे कुँए के बारे में झगड़ा हुआ तो आँहज़रत (ﷺ) ने (मुझसे) कहा कि तुम्हारे पास कोई गवाही है? मैंने कहा कि नहीं। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया फिर फ़रीक़मुक़ाबिल की क़सम पर फ़ैसला होगा। मैं ने कहा कि फिर तो ये(झूठी) क़सम खा लेगा। चुनाँचे आयत, बिला शुब्हा जो लोग अल्लाह के अ़हद को अल्अख़ नाज़िल हुई। (राजेअ़ : 2357)

٧١٨٤- فَجَاءَ الأَشْعَثُ وَعَبْدُ اللهِ يُحَدِّثُهُمْ فَقَالَ: فِيَّ نَزَلَتْ وَفِي رَجُلٍ خَاصَمْتُهُ فِي بِئْرٍ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((أَلَكَ بَيِّنَةٌ؟)) قُلْتُ: لاَ، قَالَ: ((فَلْيَحْلِفْ)) قُلْتُ: إِذًا يَحْلِفَ فَنَزَلَتْ: ﴿إِنَّ الَّذِينَ يَشْتَرُونَ بِعَهْدِ اللهِ﴾ الآيَةَ.

[راجع: ٢٣٥٧]

इससे कुँए वग़ैरह के मुक़द्दमात ष़ाबित हुए और ये भी कि अगर मुद्दई के पास गवाह न हो तो मुद्दआ़ अ़लैह से क़सम ली जाएगी।

बाब 31 : नाहक़ माल उड़ाने में जो वईद है वो थोड़े और बहुत दोनों मालों को शामिल है

٣١- باب الْقَضَاءِ فِي كَثِيرِ الْمَالِ وَقَلِيلِهِ

और इब्ने उ़ययना ने बयान किया, उनसे शुबरमा (कूफ़ा के क़ाज़ी) ने कि दा'वा थोड़ा हो या बहुत सबका फ़ैसला यक्साँ है

وَقَالَ ابْنُ عُيَيْنَةَ: عَنِ ابْنِ شُبْرُمَةَ الْقَضَاءُ فِي قَلِيلِ الْمَالِ وَكَثِيرِهِ سَوَاءٌ.

7185. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुह्री ने, उन्हें उर्वा बिन ज़ुबैर ने, उन्हें ज़ैनब बिन्ते अबी सलमा (रज़ि.) ने ख़बर दी, उनसे उनकी वालिदा उम्मे सलमा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने अपने दरवाज़े पर झगड़ा करने वालों की आवाज़ सुनी और उनकी तरफ़ निकले। फिर उनसे फ़र्माया, मैं तुम्हारे ही जैसा इंसान हूँ, मेरे पास लोग मुक़द्दमा लेकर आते हैं, मुम्किन है एक फ़रीक़ दूसरे से ज़्यादा उम्दह बोलने वाला हो और मैं उसके लिये उस हक़ का फ़ैसला कर दूँ और ये समझूँ कि मैंने फ़ैसला सहीह किया है (हालाँकि वो सहीह न हो) तो जिसके लिये मैं किसी मुसलमान के हक़ का फ़ैसला कर दूँ तो बिला शुब्हा ये फ़ैसला जहन्नम का एक टुकड़ा है। (राजेअ : 2458)

٧١٨٥- حدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ أَنَّ زَيْنَبَ بِنْتَ أَبِي سَلَمَةَ أَخْبَرَتْهُ عَنْ أُمِّهَا أُمِّ سَلَمَةَ قَالَتْ : سَمِعَتُ النَّبِيُّ ﷺ جَلَبَةَ خِصَامٍ عِنْدَ بَابِهِ، فَخَرَجَ عَلَيْهِمْ فَقَالَ لَهُمْ: ((إِنَّمَا أَنَا بَشَرٌ وَإِنَّهُ يَأْتِينِي الْخَصْمُ فَلَعَلَّ بَعْضًا أَنْ يَكُونَ أَبْلَغَ مِنْ بَعْضٍ أَقْضِي لَهُ بِذَلِكَ وَأَحْسِبُ أَنَّهُ صَادِقٌ، فَمَنْ قَضَيْتُ لَهُ بِحَقِّ مُسْلِمٍ فَإِنَّمَا هِيَ قِطْعَةٌ مِنَ النَّارِ فَلْيَأْخُذْهَا أَوْ لِيَدَعْهَا)).

[راجع: ٢٤٥٨]

मा'लूम हुआ कि क़ाज़ी का फ़ैसला अगर ग़लत हो तो वो नाफ़िज़ न होगा।

बाब 32 : हाकिम (बेवक़ूफ़ और ग़ायब) लोगों की जायदादे मन्क़ूला और ग़ैर मन्क़ूला दोनों को बेच सकता है और आँहज़रत (ﷺ) ने एक मुदब्बर ग़ुलाम नुऐम बिन निहाम के हाथ बेच डाला

٣٢- باب بَيْعِ الإِمَامِ عَلَى النَّاسِ أَمْوَالَهُمْ وَضِيَاعَهُمْ وَقَدْ بَاعَ النَّبِيُّ ﷺ مُدَبَّرًا مِنْ نُعَيْمِ بْنِ النَّحَّامِ

ये हदीष आगे आ रही है।

7186. हमसे इब्ने नुमैर ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन बिश्र ने बयान किया, कहा हमसे इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे सलमा बिन कुहैल ने बयान किया, उनसे अता ने और उनसे जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि आँहज़रत (ﷺ) को मा'लूम हुआ कि आपके सहाबा में से एक ने अपने एक ग़ुलाम को मुदब्बर बना दिया है (कि उनकी मौत के बाद वो आज़ाद हो जाएगा) चूँकि उनके पास उनके सिवा और कोई माल नहीं था इसलिये आँहज़रत (ﷺ) ने उस ग़ुलाम को आठ सौ दिरहम में बेच दिया और उसकी क़ीमत उन्हें भेज दी। (राजेअ : 2141)

٧١٨٦- حدَّثَنَا ابْنُ نُمَيْرٍ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بِشْرٍ، حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، حَدَّثَنَا سَلَمَةُ بْنُ كُهَيْلٍ، عَنْ عَطَاءٍ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ قَالَ: بَلَغَ النَّبِيَّ ﷺ أَنَّ رَجُلاً مِنْ أَصْحَابِهِ أَعْتَقَ غُلاَمًا عَنْ دُبُرٍ لَمْ يَكُنْ لَهُ مَالٌ غَيْرُهُ فَبَاعَهُ بِثَمَانِمِائَةِ دِرْهَمٍ ثُمَّ أَرْسَلَ بِثَمَنِهِ إِلَيْهِ. [راجع: ٢١٤١]

बाब 33 : किसी शख़्स की सरदारी में नाफ़र्मानी से लोग ताना दें और हाकिम उनके ताने की परवाह न करे

٣٣- باب مَنْ لَمْ يَكْتَرِثْ بِطَعْنِ مَنْ لاَ يَعْلَمُ فِي الأُمَرَاءِ حَدِيثًا

7187. हमसे इस्माईल ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन मुस्लिम ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन दीनार ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने एक लश्कर भेजा और उसका अमीर उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) को बनाया लेकिन उनकी सरदारी पर त़ान किया गया। आँह़ज़रत (ﷺ) ने उस पर फ़र्माया कि अगर आज तुम इनकी इमारत को मत़ऊ़न क़रार देते हो तो तुमने इससे पहले इसके वालिद (ज़ैद रज़ि.) की इमारत को भी मत़ऊ़न क़रार दिया था और अल्लाह की क़सम वो इमारत के लिये सजावार थे और वो मुझे तमाम लोगों में सबसे ज़्यादा अ़ज़ीज़ थे और ये (उसामा रज़ि.) उनके बाद सबसे ज़्यादा मुझे अ़ज़ीज़ थे। (राजेअ़: 3730)

٧١٨٧- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ مُسْلِمٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ دِينَارٍ قَالَ: سَمِعْتُ ابْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا يَقُولُ: بَعَثَ رَسُولُ اللهِ ﷺ بَعْثًا وَأَمَّرَ عَلَيْهِمْ أُسَامَةَ بْنَ زَيْدٍ فَطُعِنَ فِي إِمَارَتِهِ وَقَالَ: ((إِنْ تَطْعُنُوا فِي إِمَارَتِهِ فَقَدْ كُنْتُمْ تَطْعُنُونَ فِي إِمَارَةِ أَبِيهِ مِنْ قَبْلِهِ، وَايْمُ اللهِ إِنْ كَانَ لَخَلِيقًا لِلإِمْرَةِ وَإِنْ كَانَ لَمِنْ أَحَبِّ النَّاسِ إِلَيَّ وَإِنَّ هَذَا لَمِنْ أَحَبِّ النَّاسِ إِلَيَّ بَعْدَهُ)). [راجع: ٣٧٣٠]

तश्रीह़ : कि बूढ़े बूढ़े लोग होते हुए आपने एक छोकरे को सरदार बनाया। ह़ालाँकि आप (ﷺ) का कोई काम मस्लिह़त और दूरअंदेशी से ख़ाली न था। हुआ ये था कि उसामा (रज़ि.) के वालिद ज़ैद बिन ह़ारिष़ा (रज़ि.) उन रूमी काफ़िरों के हाथ से शहीद हुए थे। आपने उनके बेटे को इसलिये सरदार बनाया कि वो अपने बाप के मारने वालों से बड़े जोश के साथ लड़ेंगे। दूसरे ये कि उसामा (रज़ि.) के दिल को ज़रा तसल्ली होगी। उसामा (रज़ि.) के वालिद ह़ज़रत ज़ैद (रज़ि.) को आँह़ज़रत (ﷺ) ने बेटा बनाया था जब वो ग़ज़्वा मौता में शहीद हुए तो एक इकलौता बेटा उसामा (रज़ि.) छोड़ गये। आँह़ज़रत (ﷺ) उनको बेइंतिहा चाहते थे। यहाँ तक कि एक रान पर उनको बिठाते और एक रान पर ह़ज़रत ह़सन (रज़ि.) को और फ़र्माते या अल्लाह! मैं इन दोनों से मुह़ब्बत करता हूँ तू भी इन दोनों से मुह़ब्बत कर। इस ह़दीष़ के लाने से यहाँ ये ग़र्ज़ है कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने लोगों के लग़्व त़ान व तश्नीअ़ पर कुछ ख़्याल नहीं किया और उसामा (रज़ि.) को सरदारी से अलग नहीं किया। अब ये ए'तिराज़ न होगा कि ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने अहले कूफ़ा की बेअस़ल शिकायात पर सअ़द बिन अबी वक़्क़ास़ (रज़ि.) को क्यूँ मा'ज़ूल कर दिया क्योंकि हर ज़माने और हर मौक़े की मस्लिह़त अलग होती है गो सअ़द (रज़ि.) की शिकायत जब ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने पूछा तो बेअस़ल निकलीं मगर किसी फ़ित्ने या फ़साद के डर से ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) को उनका अलग ही कर देना क़रीन-ए-मस्लिह़त नज़र आया और आँह़ज़रत (ﷺ) को ऐसे किसी फ़ित्ने और फ़साद का अंदेशा न था। बहरहाल ये अम्र इमाम की राय की त़रफ़ मफ़व्विज़ है।

बाब 34 : अलद्दिल ख़िस़ाम का बयान

٣٤- باب الأَلَدِّ الْخَصِمِ وَهُوَ الدَّائِمُ فِي الْخُصُومَةِ

या'नी उस शख़्स़ का बयान जो हमेशा लोगों से लड़ता झगड़ता रहे। लुद्दा या'नी टेढ़ी।

لُدًّا : عُوجًا

सूरह मरयम में जो है, **वनुन्ज़िरु बिही क़ौमन लुद्दा** यहाँ लुद्दा का मा'नी टेढ़ी और कज है या'नी गुमराही की त़रफ़ जाने वाले।

7188. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे यह़्या बिन सईद ने बयान किया, उनसे इब्ने जुरैज ने बयान किया, उन्होंने इब्ने अबी मुलैका से सुना, वो ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) से बयान करते थे कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया अल्लाह के

٧١٨٨- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ، عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ سَمِعْتُ ابْنَ أَبِي مُلَيْكَةَ يُحَدِّثُ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا

قالت: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((أَبْغَضُ الرِّجَالِ إِلَى اللهِ الأَلَدُّ الخَصِمُ)).
[راجع: ٢٤٥٧]

नज़दीक सबसे मबग़ूज़ वो शख़्स है जो सख़्त झगड़ालू हो। (राजेअ: 2457)

٣٥- باب إِذَا قَضَى الْحَاكِمُ بِجَوْرٍ أَوْ خِلاَفِ أَهْلِ الْعِلْمِ فَهُوَ رَدٌّ

बाब 35 : जब हाकिम का फ़ैसला ज़ालिमाना हो या उलमा के ख़िलाफ़ हो तो वो रद्द कर दिया जाएगा

उसका मानना ज़रूरी न होगा।

٧١٨٩- حدَّثَنَا مَحْمُودٌ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ سَالِمٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ بَعَثَ النَّبِيُّ ﷺ خَالِدًا ح. وحَدَّثَنِي نُعَيْمُ بْنُ حَمَّادٍ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ سَالِمٍ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: بَعَثَ النَّبِيُّ ﷺ خَالِدَ بْنَ الْوَلِيدِ إِلَى بَنِي جَذِيمَةَ فَلَمْ يُحْسِنُوا أَنْ يَقُولُوا: أَسْلَمْنَا فَقَالُوا صَبَأْنَا فَجَعَلَ خَالِدٌ يَقْتُلُ وَيَأْسِرُ وَدَفَعَ إِلَى كُلِّ رَجُلٍ مِنَّا أَسِيرَهُ فَأَمَرَ كُلَّ رَجُلٍ مِنَّا أَنْ يَقْتُلَ أَسِيرَهُ فَقُلْتُ: وَاللهِ لاَ أَقْتُلُ أَسِيرِي وَلاَ يَقْتُلُ رَجُلٌ مِنْ أَصْحَابِي أَسِيرَهُ، فَذَكَرْنَا ذَلِكَ لِلنَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: ((اللَّهُمَّ إِنِّي أَبْرَأُ إِلَيْكَ مِمَّا صَنَعَ خَالِدُ بْنُ الْوَلِيدِ)) مَرَّتَيْنِ.
[راجع: ٤٣٣٩]

7189. हमसे महमूद ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुर् रज़्ज़ाक़ ने बयान किया, कहा हमको मअ़मर ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुहरी ने, उन्हें सालिम ने और उन्हें इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने ख़ालिद (रज़ि.) को भेजा। (दूसरी सनद) इमाम बुख़ारी (रह.) ने कहा और मुझसे नुऐ़म बिन हम्माद ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुल्लाह ने ख़बर दी, कहा हमको मअ़मर ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुहरी ने, उन्हें सालिम ने, उन्हें उनके वालिद ने कि नबी करीम (ﷺ) ने ख़ालिद बिन वलीद (रज़ि.) को बनी जज़ीमा की तरफ़ भेजा (जब उन्हें इस्लाम की दा'वत दी) तो वो अस्लम्ना (हम इस्लाम लाए) कहकर अच्छी तरह इज़्हारे इस्लाम न कर सके बल्कि कहने लगे कि सबाना सबाना (हम अपने दीन से फिर गये, हम अपने दीन से फिर गये) इस पर ख़ालिद (रज़ि.) उन्हें क़त्ल और क़ैद करने लगे और हममें से हर शख़्स को उसके हिस्से का क़ैदी दिया और हमें हुक्म दिया कि हर शख़्स अपने क़ैदी को क़त्ल कर दे। इस पर मैंने कहा कि वल्लाह! मैं अपने क़ैदी को क़त्ल नहीं करूँगा और न मेरे साथियों में कोई अपने क़ैदी को क़त्ल करेगा। फिर हमने इसका ज़िक्र नबी करीम (ﷺ) से किया तो आपने फ़र्माया कि ऐ अल्लाह! मैं इससे बरात ज़ाहिर करता हूँ जो ख़ालिद बिन वलीद (रज़ि.) ने किया। दो मर्तबा। (राजेअ: 4339)

आपने ये अल्फ़ाज़ फ़र्माए। हज़रत ख़ालिद बिन वलीद (रज़ि.) हाकिम थे मगर उनके ग़लत फ़ैसले को साथियों ने नहीं माना। इसी से बाब का मतलब षाबित होता है। सच है, **ला ताअ़त लिलमख़्लूक़ फ़ी मअ़सियतिल ख़ालिक़।**

٣٦- باب الإِمَامِ يَأْتِي قَوْمًا فَيُصْلِحُ بَيْنَهُمْ

बाब 36 : इमाम किसी जमाअ़त के पास आए और उनमें आपसी सुलह करा दे

7190. हमसे अबुन नोअ़मान ने बयान किया, कहा हमसे ह़म्माद ने बयान किया, उनसे अबू ह़ाज़िम मदीनी ने बयान किया और उनसे सहल बिन सअ़द साएदी (रज़ि.) ने बयान किया कि क़बीला बनी अ़म्र बिन औ़फ़ में आपसी लड़ाई हो गई। जब आँह़ज़रत (ﷺ) को इसकी ख़बर मिली तो आपने ज़ुहर की नमाज़ पढ़ी और उनके यहाँ सुलह़ कराने के लिये तशरीफ़ लाए। जब अ़स्र की नमाज़ का वक़्त हुआ (मदीना में) तो बिलाल (रज़ि.) ने अज़ान दी और इक़ामत कही। आपने अबूबक्र (रज़ि.) को नमाज़ पढ़ाने का हुक्म दिया था। चुनाँचे वो आगे बढ़े, इतने में आँह़ज़रत (ﷺ) तशरीफ़ ले आए अबूबक्र (रज़ि.) नमाज़ ही में थे, फिर आँह़ज़रत (ﷺ) लोगों की स़फ़ को चीरते हुए आगे बढ़े और अबूबक्र (रज़ि.) के पीछे खड़े हो गये और उस स़फ़ में आ गये जो उनसे क़रीब थी। सहल (रज़ि.) ने कहा कि लोगों ने आँह़ज़रत (ﷺ) की आमद को बताने के लिये हाथ पर हाथ मारे। अबूबक्र (रज़ि.) जब नमाज़ शुरू करते तो ख़त्म करने से पहले किसी त़रफ़ तवज्जह नहीं करते थे। जब उन्होंने देखा कि हाथ पर हाथ मारना रुकता नहीं तो आप मुतवज्जह हुए और आँह़ज़रत (ﷺ) को अपने पीछे देखा लेकिन आँह़ज़रत (ﷺ) ने इशारा किया कि नमाज़ पूरी करें और आपने इस त़रह़ हाथ से अपनी जगह ठहरे रहने का इशारा किया। अबूबक्र (रज़ि.) थोड़ी देर नबी करीम (ﷺ) के हुक्म पर अल्लाह की ह़म्द करने के लिये ठहरे रहे, फिर आप उल्टे पैर पीछे आ गये। जब आँह़ज़रत (ﷺ) ने ये देखा तो आप आगे बढ़े और लोगों को आपने नमाज़ पढ़ाई। नमाज़ पूरी करने के बाद आपने फ़र्माया, अबूबक्र! जब मैंने इशारा कर दिया था तो आपको नमाज़ पूरी पढ़ाने में क्या चीज़ मानेअ़ थी? उन्होंने अ़र्ज़ किया, इब्ने अबी क़ह़ाफ़ा के लिये मुनासिब नहीं था कि वो आँह़ज़रत (ﷺ) की इमामत करे और आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि (नमाज़ में) जब कोई मामला पेश आए तो मर्दों को सुब्ह़ानल्लाह कहना चाहिये और औ़रतों को हाथ पर हाथ मारना चाहिये। (राजेअ़ : 684)

٧١٩٠- حَدَّثَنَا أَبُو النُّعْمَانِ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، حَدَّثَنَا أَبُو حَازِمٍ الْمَدِينِيُّ، عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ السَّاعِدِيِّ قَالَ: كَانَ قِتَالٌ بَيْنَ بَنِي عَمْرٍو فَبَلَغَ ذَلِكَ النَّبِيَّ ﷺ فَصَلَّى الظُّهْرَ ثُمَّ أَتَاهُمْ يُصْلِحُ بَيْنَهُمْ فَلَمَّا حَضَرَتْ صَلاَةُ الْعَصْرِ فَأَذَّنَ بِلاَلٌ وَأَقَامَ وَأَمَرَ أَبَا بَكْرٍ فَتَقَدَّمَ وَجَاءَ النَّبِيُّ ﷺ وَأَبُو بَكْرٍ فِي الصَّلاَةِ فَشَقَّ النَّاسَ حَتَّى قَامَ خَلْفَ أَبِي بَكْرٍ، فَتَقَدَّمَ فِي الصَّفِّ الَّذِي يَلِيهِ قَالَ: وَصَفَّحَ الْقَوْمُ وَكَانَ أَبُو بَكْرٍ إِذَا دَخَلَ فِي الصَّلاَةِ لَمْ يَلْتَفِتْ حَتَّى يَفْرُغَ فَلَمَّا رَأَى التَّصْفِيحَ لاَ يُمْسَكُ عَلَيْهِ الْتَفَتَ فَرَأَى النَّبِيَّ ﷺ خَلْفَهُ فَأَوْمَأَ إِلَيْهِ النَّبِيُّ ﷺ أَنِ امْضِهْ، وَأَوْمَأَ بِيَدِهِ هَكَذَا وَلَبِثَ أَبُو بَكْرٍ هُنَيَّةً يَحْمَدُ اللهَ عَلَى قَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ، ثُمَّ مَشَى الْقَهْقَرَى فَلَمَّا رَأَى النَّبِيُّ ﷺ ذَلِكَ تَقَدَّمَ فَصَلَّى النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِالنَّاسِ فَلَمَّا قَضَى صَلاَتَهُ قَالَ: ((يَا أَبَا بَكْرٍ مَا مَنَعَكَ إِذْ أَوْمَأْتُ إِلَيْكَ أَنْ لاَ تَكُونَ مَضَيْتَ)) قَالَ: لَمْ يَكُنْ لاِبْنِ أَبِي قُحَافَةَ أَنْ يَؤُمَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَقَالَ لِلْقَوْمِ: ((إِذَا نَابَكُمْ أَمْرٌ فَلْيُسَبِّحِ الرِّجَالُ، وَلْيُصَفِّحِ النِّسَاءُ)).

[راجع: ٦٨٤]

क़बीला बनी अ़म्र बिन औ़फ़ में आप सुलह़ कराने गये, इसी से बाब का मत़लब ष़ाबित हुआ, उसमें इमाम की शान घटती नहीं है बल्कि ये इसकी ख़ूबी होगी।

बाब 37 : फ़ैसला लिखने वाला अमानतदार और अक़्लमंद होना चाहिये

٣٧-باب يُسْتَحبُّ لِلْكَاتِبِ أَنْ يَكُونَ أمِيناً عَاقِلاً

7191. हमसे मुहम्मद बिन उबैदुल्लाह अबू षाबित ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम बिन सअद ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे उबैद बिन सिबाक़ ने और उनसे ज़ैद बिन षाबित (रज़ि.) ने कि जंगे यमामा में बकषरत (क़ारी सहाबा की) शहादत की वजह से अबूबक्र (रज़ि.) ने मुझे बुला भेजा। उनके पास उमर (रज़ि.) भी थे। अबूबक्र (रज़ि.) ने मुझसे कहा कि उमर मेरे पास आए और कहा कि जंगे यमामा में क़ुर्आन के क़ारियों का क़त्ल बहुत हुआ है और मेरा ख़्याल है कि दूसरी जंगों में भी इसी तरह वो शहीद किये जाएँगे और क़ुर्आन अकषर ज़ाये हो जाएगा। मैं समझता हूँ कि आप क़ुर्आन मजीद को (किताबी सूरत में) जमा करने का हुक्म दें। इस पर मैंने उमर (रज़ि.) से कहा कि मैं कोई ऐसा काम कैसे कर सकता हूँ जिसे रसूलुल्लाह (ﷺ) ने नहीं किया? उमर (रज़ि.) ने कहा वल्लाह! ये तो कारे ख़ैर है। उमर (रज़ि.) इस मामले में बराबर मुझसे कहते रहे, यहाँ तक कि अल्लाह तआला ने उसी तरह इस मामले में मेरा भी सीना खोल दिया जिस तरह उमर (रज़ि.) का था और मैं भी वही मुनासिब समझने लगा जिसे उमर (रज़ि.) मुनासिब समझते थे। ज़ैद (रज़ि.) ने बयान किया कि मुझसे अबूबक्र (रज़ि.) ने कहा कि तुम जवान हो, अक़्लमंद हो और हम तुम्हें किसी बारे में मुत्तहम भी नहीं समझते तुम आँहज़रत (ﷺ) की वह्य भी लिखते थे, पस तुम इस क़ुर्आन मजीद (की आयात) को तलाश करो और एक जगह जमा कर दो। ज़ैद (रज़ि.) ने बयान किया कि वल्लाह! अगर अबूबक्र (रज़ि.) मुझे किसी पहाड़ को उठाकर दूसरी जगह रखने का मुकल्लफ़ करते तो उसका बोझ भी मैं इतना न महसूस करता जितना कि मुझे क़ुर्आन मजीद को जमा करने के हुक्म से महसूस हुआ। मैंने उन लोगों से कहा कि आप किस तरह ऐसा काम करते हैं जो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने नहीं किया। अबूबक्र (रज़ि.) ने कहा कि वल्लाह! ये ख़ैर है। चुनाँचे मुझे आमादा करने की वो कोशिश करते रहे, यहाँ तक कि अल्लाह तआला ने इस काम के लिये मेरा भी सीना खोल दिया जिसके लिये अबूबक्र व उमर (रज़ि.) का

٧١٩١- حدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عُبَيْدِ اللهِ أبُو ثَابِتٍ، حَدَّثَنَا إبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ السَّبَّاقِ، عَنْ زَيْدِ بْنِ ثَابِتٍ قَالَ: بَعَثَ إلَيَّ أبُو بَكْرٍ لِمَقْتَلِ أهْلِ الْيَمَامَةِ، وَعِنْدَهُ عُمَرُ فَقَالَ أبُو بَكْرٍ: إنَّ عُمَرَ أتَانِي فَقَالَ: إنَّ الْقَتْلَ قَدِ اسْتَحَرَّ يَوْمَ الْيَمَامَةِ بِقُرَّاءِ الْقُرْآنِ، وَإنِّي أخْشَى أنْ يَسْتَحِرَّ الْقَتْلُ بِقُرَّاءِ الْقُرْآنِ فِي الْمَوَاطِنِ كُلِّهَا، فَيَذْهَبَ قُرْآنٌ كَثِيرٌ، وَإنِّي أرَى أنْ تَأْمُرَ بِجَمْعِ الْقُرْآنِ قُلْتُ: كَيْفَ أفْعَلُ شَيْئًا لَمْ يَفْعَلْهُ رَسُولُ اللهِ ﷺ؟ فَقَالَ عُمَرُ: هُوَ وَاللهِ خَيْرٌ، فَلَمْ يَزَلْ عُمَرُ يُرَاجِعُنِي فِي ذَلِكَ حَتَّى شَرَحَ اللهُ صَدْرِي لِلَّذِي شَرَحَ لَهُ صَدْرَ عُمَرَ، وَرَأيْتُ فِي ذَلِكَ الَّذِي رَأى عُمَرُ قَالَ زَيْدٌ : قَالَ أبُو بَكْرٍ وَإنَّكَ رَجُلٌ شَابٌّ عَاقِلٌ لاَ نَتَّهِمُكَ قَدْ كُنْتَ تَكْتُبُ الْوَحْيَ لِرَسُولِ اللهِ ﷺ فَتَتَبَّعِ الْقُرْآنَ فَاجْمَعْهُ قَالَ زَيْدٌ: فَوَاللهِ لَوْ كَلَّفَنِي نَقْلَ جَبَلٍ مِنَ الْجِبَالِ مَا كَانَ بِأثْقَلَ عَلَيَّ مِمَّا كَلَّفَنِي مِنْ جَمْعِ الْقُرْآنِ، قُلْتُ: كَيْفَ تَفْعَلاَنِ شَيْئًا لَمْ يَفْعَلْهُ رَسُولُ اللهِ ﷺ؟ قَالَ أبُو بَكْرٍ : هُوَ وَاللهِ خَيْرٌ فَلَمْ يَزَلْ يَحُثُّ مُرَاجَعَتِي حَتَّى شَرَحَ اللهُ صَدْرِي لِلَّذِي شَرَحَ اللهُ لَهُ صَدْرَ أبِي بَكْرٍ وَعُمَرَ، وَرَأيْتُ فِي ذَلِكَ الَّذِي رَأيَا

सीना खोला था और मैं भी वही मुनासिब ख़्याल करने लगा जिसे वो लोग मुनासिब ख़्याल कर रहे थे। चुनाँचे मैंने क़ुर्आन मजीद की तलाश शुरू की। उसे मैं खजूर की छाल, चमड़े वग़ैरह के टुकड़ों, पतले पत्थर के टुकड़ों और लोगों के सीनों से जमा करने लगा। मैंने सूरह तौबा की आख़िरी आयत लक़द जाअकुम रसूलुम्मिन अन्फ़ुसिकुम आख़िर तक ख़ुज़ैमा या अबू ख़ुज़ैमा (रज़ि.) के पास पाई और उसको सूरत में शामिल कर लिया। (क़ुर्आन मजीद के ये मुरत्तब) सहीफ़े अबूबक्र (रज़ि.) के पास रहे जब तक वो ज़िन्दा रहे। यहाँ तक कि अल्लाह तआला ने उन्हें वफ़ात दी, फिर वो उमर (रज़ि.) के पास आ गये और आख़िर वक़्त तक उनके पास रहे। जब आपको भी अल्लाह तआला ने वफ़ात दी तो वो हफ़्सा बिन्ते उमर (रज़ि.) के पास महफ़ूज़ रहे। मुहम्मद बिन उबैदुल्लाह ने कहा कि अल्लिख़ाफ़ के लफ़्ज़ से ठीकरी मुराद है जिसे ख़ज़फ़ कहते हैं। (राजेअ : 2807)

فَتَتَبَّعْتُ الْقُرْآنَ أَجْمَعُهُ مِنَ الْعُسُبِ وَالرِّقَاعِ وَاللِّخَافِ وَصُدُورِ الرِّجَالِ، فَوَجَدْتُ آخِرَ سُورَةِ التَّوْبَةِ ﴿لَقَدْ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مِنْ أَنْفُسِكُمْ﴾ [التوبة: ١٢٨] إِلَى آخِرِهَا مَعَ خُزَيْمَةَ أَوْ أَبِي خُزَيْمَةَ فَأَلْحَقْتُهَا فِي سُورَتِهَا وَكَانَتِ الصُّحُفُ عِنْدَ أَبِي بَكْرٍ حَيَاتَهُ حَتَّى تَوَفَّاهُ اللهُ عَزَّ وَجَلَّ، ثُمَّ عِنْدَ عُمَرَ حَيَاتَهُ حَتَّى تَوَفَّاهُ اللهُ، ثُمَّ عِنْدَ حَفْصَةَ بِنْتِ عُمَرَ. قَالَ مُحَمَّدُ بْنُ عُبَيْدِ اللَّخَافُ : يَعْنِي الْخَزَفَ.
[راجع: ٢٨٠٧]

बाब का मज़्मून इससे षाबित हुआ कि हज़रत सिद्दीक़े अकबर (रज़ि.) ने एक अहम तहरीर के लिये हज़रत ज़ैद बिन षाबित (रज़ि.) का इंतिख़ाब किया।

बाब 38 : इमाम का अपने नाइबों को और क़ाज़ी का अपने उमला को लिखना

٣٨- باب كِتَابِ الْحَاكِمِ إِلَى عُمَّالِهِ وَالْقَاضِي إِلَى أُمَنَائِهِ

7192. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने अबी लैला ने (दूसरी सनद) इमाम बुख़ारी (रह.) ने कहा कि हमसे इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे अबू लैला बिन अब्दुल्लाह बिन अब्दुर्रहमान बिन सहल ने, उनसे सहल बिन अबी हष्मा ने, उन्हें सहल और उनकी क़ौम के कुछ दूसरे ज़िम्मेदारों ने ख़बर दी कि अब्दुल्लाह बिन सहल और मुहय्यसा (रज़ि.) ख़ैबर की तरफ़ (खजूर लेने के लिये) गये। क्यों कि तंगदस्ती में मुब्तला थे, फिर मुहय्यसा (रज़ि.) को बताया गया कि अब्दुल्लाह को किसी ने क़त्ल करके गढ़े या कुँए में डाल दिया है। फिर वो यहूदियों के पास गये और कहा कि वल्लाह! तुमने ही क़त्ल किया है। उन्होंने कहा वल्लाह! हमने उन्हें नहीं क़त्ल किया। फिर वो वापस आए और अपनी क़ौम के पास आए और उनसे ज़िक्र किया। उसके बाद वो और उनके भाई हुवय्येसा जो उनसे बड़े थे और

٧١٩٢- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ، أَخْبَرَنَا مَالِكٌ، عَنْ أَبِي لَيْلَى ح حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، حَدَّثَنِي مَالِكٌ، عَنْ أَبِي لَيْلَى بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ سَهْلٍ، عَنْ سَهْلِ بْنِ أَبِي حَثْمَةَ أَنَّهُ أَخْبَرَهُ هُوَ وَرِجَالٌ مِنْ كُبَرَاءِ قَوْمِهِ أَنَّ عَبْدَ اللهِ بْنَ سَهْلٍ وَمُحَيِّصَةَ خَرَجَا إِلَى خَيْبَرَ مِنْ جَهْدٍ أَصَابَهُمْ فَأُخْبِرَ مُحَيِّصَةُ أَنَّ عَبْدَ اللهِ قُتِلَ وَطُرِحَ فِي فَقِيرٍ - أَوْ عَيْنٍ - فَأَتَى يَهُودَ فَقَالَ: أَنْتُمْ وَاللهِ قَتَلْتُمُوهُ قَالُوا : مَا قَتَلْنَاهُ وَاللهِ، ثُمَّ أَقْبَلَ حَتَّى قَدِمَ عَلَى قَوْمِهِ فَذَكَرَ لَهُمْ وَأَقْبَلَ هُوَ وَأَخُوهُ حُوَيِّصَةُ، وَهُوَ أَكْبَرُ

مِنْهُ وَعَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ سَهْلٍ، فَذَهَبَ لِيَتَكَلَّمَ وَهُوَ الَّذِي كَانَ بِخَيْبَرَ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ لِمُحَيِّصَةَ: ((كَبِّرْ كَبِّرْ)) يُرِيدُ السِّنَّ. فَتَكَلَّمَ حُوَيِّصَةُ ثُمَّ تَكَلَّمَ مُحَيِّصَةُ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِمَّا أَنْ يَدُوا صَاحِبَكُمْ، وَإِمَّا أَنْ يُؤْذِنُوا بِحَرْبٍ)) فَكَتَبَ رَسُولُ اللهِ ﷺ إِلَيْهِمْ بِهِ فَكُتِبَ مَا قَتَلْنَاهُ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ لِحُوَيِّصَةَ وَمُحَيِّصَةَ وَعَبْدِ الرَّحْمَنِ: ((أَتَحْلِفُونَ وَتَسْتَحِقُّونَ دَمَ صَاحِبِكُمْ)) قَالُوا: لاَ قَالَ: ((أَفَتَحْلِفُ لَكُمْ يَهُودُ)) قَالُوا: لَيْسُوا بِمُسْلِمِينَ فَوَدَاهُ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، مِنْ عِنْدِهِ مِائَةَ نَاقَةٍ حَتَّى أُدْخِلَتِ الدَّارَ قَالَ سَهْلٌ : فَرَكَضَتْنِي مِنْهَا نَاقَةٌ.

[راجع: ٢٧٠٢]

अ़ब्दुर्रहमान बिन सहल (रज़ि.) आए, फिर मुहय्यसा (रज़ि.) ने बात करनी चाही क्योंकि आप ही ख़ैबर में मौजूद थे लेकिन आँहज़रत (ﷺ) ने उनसे कहा कि बड़े को आगे करो, बड़े को। आपकी मुराद उमर की बड़ाई थी। चुनाँचे हुवय्येसा ने बात की, फिर मुहय्यसा ने भी बात की। उसके बाद आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि यहूदी तुम्हारे साथी की दियत अदा करें वरना लड़ाई के लिये तैयार हो जाएँ। चुनाँचे आँहज़रत (ﷺ) ने यहूदियों को इस मुक़द्दमे में लिखा। उन्होंने जवाब में ये लिखा कि हमने उन्हें नहीं क़त्ल किया है। फिर आपने हुवय्येसा, मुहय्यसा और अ़ब्दुर्रहमान (रज़ि.) से कहा कि क्या आप लोग क़सम खाकर अपने शहीद साथी के ख़ून के मुस्तहिक़ हो सकते हैं? उन लोगों ने कहा कि नहीं (क्योंकि जुर्म करते देखा नही था) फिर आपने फ़र्माया, क्या आप लोगों के बजाय यहूदी क़सम खाएँ (कि उन्होंने क़त्ल नहीं किया है?) उन्होंने कहा कि वो मुसलमान नहीं हैं और वो झूठी क़सम खा सकते हैं। चुनाँचे आँहज़रत (ﷺ) ने अपनी तरफ़ से सौ ऊँटों की दियत अदा की और वो ऊँट घर में लाए गये। सहल (रज़ि.) ने बयान किया कि उनमें से एक ऊँटनी ने मुझे लात मारी। (राजेअ़ : 2702)

आपने यहूदियों को उस मुक़द्दमे क़त्ल के बारे में सवालनामा लिखवाकर भेजा इसी से बाब का मतलब षाबित हुआ।

٣٩- باب هَلْ يَجُوزُ لِلْحَاكِمِ أَنْ يَبْعَثَ رَجُلاً وَحْدَهُ لِلنَّظَرِ فِي الأُمُورِ؟

बाब 39 : क्या हाकिम के लिये जाइज़ है कि वो किसी एक शख़्स को मामलात की देखभाल के लिये भेजे

٧١٩٣، ٧١٩٤- حَدَّثَنَا آدَمُ، حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي ذِئْبٍ، حَدَّثَنَا الزُّهْرِيُّ، عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ عَبْدِ اللهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ، وَزَيْدِ بْنِ خَالِدٍ الْجُهَنِيِّ قَالاَ : جَاءَ أَعْرَابِيٌّ فَقَالَ يَا رَسُولَ اللهِ اقْضِ بَيْنَنَا بِكِتَابِ اللهِ فَقَامَ خَصْمُهُ فَقَالَ : صَدَقَ فَاقْضِ بَيْنَنَا بِكِتَابِ اللهِ فَقَالَ الأَعْرَابِيُّ: إِنَّ ابْنِي كَانَ عَسِيفًا عَلَى هَذَا فَزَنَى بِامْرَأَتِهِ فَقَالُوا لِي: عَلَى

7193,7194. हमसे आदम ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने अबी ज़िब ने बयान किया, कहा हमसे ज़ुहरी ने बयान किया, उनसे उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह ने और उनसे अबू हुरैरह और ज़ैद बिन ख़ालिद जुह्नी (रज़ि.) ने बयान किया कि एक देहाती आए और अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! हमारा फ़ैसला किताबुल्लाह के मुताबिक़ कर दीजिए। फिर दूसरे फ़रीक़ खड़े हुए और उन्होंने भी कहा कि ये सहीह कहते हैं, हमारा फ़ैसला किताबुल्लाह से कर दीजिए। फिर देहाती ने कहा, मेरा लड़का इस शख़्स के यहाँ मज़दूर था, फिर उसने इसकी बीवी के साथ ज़िना कर लिया तो लोगों ने मुझसे कहा कि तुम्हारे लड़के का हुक्म उसे रजम करना है लेकिन मैंने अपने लड़के की तरफ़ से

ابنِكَ الرَّجْمُ، فَفَدَيْتُ ابْنِي مِنْهُ بِمِائَةٍ مِنَ الْغَنَمِ وَوَلِيدَةٍ، ثُمَّ سَأَلْتُ أَهْلَ الْعِلْمِ فَقَالُوا: إِنَّمَا عَلَى ابْنِكَ جَلْدُ مِائَةٍ وَتَغْرِيبُ عَامٍ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لأَقْضِيَنَّ بَيْنَكُمَا بِكِتَابِ اللهِ، أَمَّا الْوَلِيدَةُ وَالْغَنَمُ فَرَدٌّ عَلَيْكَ وَعَلَى ابْنِكَ جَلْدُ مِائَةٍ وَتَغْرِيبُ عَامٍ وَأَمَّا أَنْتَ يَا أُنَيْسُ)) لِرَجُلٍ ((فَاغْدُ عَلَى امْرَأَةِ هَذَا فَارْجُمْهَا)) فَغَدَا عَلَيْهَا أُنَيْسٌ فَرَجَمَهَا. [راجع: ٢٣١٤، ٢٣١٥]

सौ बकरियों और एक बाँदी का फ़िदया दे दिया। फिर मैंने अहले इल्म से पूछा तो उन्होंने कहा कि तुम्हारे लड़के को सौ कोड़े मारे जाएँगे और एक साल के लिये शहर बदर होगा। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैं तुम्हारे बीच अल्लाह की किताब के मुताबिक़ फ़ैसला करूँगा। बाँदी और बकरियाँ तो तुम्हें वापस मिलेंगी और तेरे लड़के की सज़ा सौ कोड़े और एक साल के लिये जलावतन होना है और उनैस (जो एक सहाबी थे) से फ़र्माया कि तुम इसकी बीवी के पास जाओ और उसे रजम करो। चुनाँचे उनैस(रज़ि.) उसके पास गये और उसे रजम किया। (राजेअ : 2314, 2315)

तश्रीह : तो आँहज़रत (ﷺ) ने उनैस को अपना नाइब बनाकर भेजा था और उनैस के सामने उसके इक़रार का वही हुक्म हुआ जैसे वो आँहज़रत (ﷺ) के सामने इक़रार करती अगर उनैस गवाह बनाकर भेजे गये होते तो एक शख़्स की गवाही पर इक़रार कैसे षाबित हो सकता है। हाफ़िज़ ने कहा इमाम बुख़ारी (रह.) ने ये बाब लाकर इमाम मुहम्मद के इख़्तिलाफ़ की तरफ़ इशारा किया। उनका मज़हब ये है कि क़ाज़ी किसी शख़्स के इक़रार पर कोई हुक्म नहीं दे सकता, जब तक दो आदिल शख़्सों को जो क़ाज़ी की मज्लिस में रहा करते हैं उसके इक़रार पर गवाह न बना दे और जब वो दोनों उसके इक़रार पर गवाही दें तब क़ाज़ी उनकी शहादत की बिना पर हुक्म दे।

٤٠- باب تَرْجَمَةِ الْحُكَّامِ وَهَلْ يَجُوزُ تَرْجُمَانٌ وَاحِدٌ؟

बाब 40 : हाकिम के सामने मुतर्जिम का रहना

और क्या एक ही शख़्स तर्जुमानी केलिये काफ़ी है?

٧١٩٥- وقال خَارِجَةُ بْنُ زَيْدِ بْنِ ثَابِتٍ عَنْ زَيْدِ بْنِ ثَابِتٍ إِنَّ النَّبِيَّ ﷺ أَمَرَهُ أَنْ يَتَعَلَّمَ كِتَابَ الْيَهُودِ حَتَّى كَتَبْتُ لِلنَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كُتُبَهُ وَأَقْرَأْتُهُ كُتُبَهُمْ إِذَا كَتَبُوا إِلَيْهِ وَقَالَ عُمَرُ: وَعِنْدَهُ عَلِيٌّ وَعَبْدُ الرَّحْمَنِ وَعُثْمَانُ مَاذَا تَقُولُ هَذِهِ؟ قَالَ عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ حَاطِبٍ فَقُلْتُ: تُخْبِرُكَ بِصَاحِبِهِمَا الَّذِي صَنَعَ بِهِمَا وَقَالَ أَبُو جَمْرَةَ : كُنْتُ أُتَرْجِمُ بَيْنَ ابْنِ عَبَّاسٍ وَبَيْنَ النَّاسِ. وَقَالَ بَعْضُ النَّاسِ: لاَ بُدَّ لِلْحَاكِمِ مِنْ مُتَرْجِمَيْنِ.

7195. और ख़ारिजा बिन ज़ैद बिन षाबित ने अपने वालिद ज़ैद बिन षाबित (रज़ि.) से बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हुक्म दिया कि वो यहूदियों की तहरीर सीखें, यहाँ तक कि मैं यहूदियों के नाम आँहज़रत (ﷺ) के ख़ुतूत लिखता था और जब यहूदी आपको लिखते तो उनके ख़ुतूत आपको पढ़कर सुनाता था। उमर (रज़ि.) ने अब्दुर्रहमान बिन हातिब से पूछा, उस वक़्त उनके पास अली, अब्दुर्रहमान, और उष्मान (रज़ि.)भी मौजूद थे कि ये लौण्डी क्या कहती है? अब्दुर्रहमान बिन हातिब ने कहा कि अमीरुल मोमिनीन ये आपको उसके बारे में बताती है जिसने उसके साथ ज़िना किया है (जो यरग़ूस नाम का ग़ुलाम था) और अबू जम्रह ने कहा कि मैं इब्ने अब्बास (रज़ि.) और लोगों के बीच तर्जुमानी करता था और कुछ लोगो (इमाम मुहम्मद और इमाम शाफ़िई) ने कहा है कि हाकिम के लिये दो तर्जुमानों का होना ज़रूरी है।

तश्रीह : तर्जुमान एक भी काफ़ी है जब वो षिक़्ह और आदिल हो। इमाम मालिक का यही क़ौल है और इमाम अबू ह़नीफ़ा और इमाम अह़मद भी इसी के क़ाइल हैं। इमाम बुख़ारी (रह़.) का भी यही क़ौल मा'लूम होता है लेकिन शाफ़ई ने कहा जब ह़ाकिम फ़रीक़ैन या एक फ़रीक़ की ज़ुबान न समझता हो तो दो शख़्स आदिल बतौर मुतर्जिम के ज़रूरी हैं जो ह़ाकिम को उसका बयान तर्जुमा करके सुनाएँ। ख़ारजिया के क़ौल को इमाम बुख़ारी (रह़.) ने तारीख़ में वस्ल किया। कहते हैं ज़ैद बिन षाबित (रज़ि.) ऐसे ज़हीन थे कि पन्द्रह दिन की मेह़नत में यहूद की किताबत पढ़ने लगे और लिखने लगे। इस ह़दीष़ से ये भी मालूम हुआ कि काफ़िरों की ज़बान और तहरीर दोनों सीखना सही है। खासकर जब ज़रूरत हो क्योंकि आँहज़रत ने ज़ैद से फ़र्माया था मुझको यहूदियों से लिखवाने मे इत्मीनान नहीं होता। लौण्डी ने अपनी ज़ुबान में कहा कि फ़लाँ गुलाम यरग़ूस नामी ने मुझसे ज़िना किया और कहा कि मैं ह़ामला हूँ। इसको अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ और सईद बिन मंसूर ने वस्ल किया। अबू जम्रह की ये ह़दीष़ पीछे किताबुल इल्म में मौसूलन गुज़र चुकी है। पस षाबित हुआ कि तर्जुमा को ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) वग़ैरह ने शहादत पर क़यास किया है। यहाँ से उन लोगों का जवाब हो गया जो कहते हैं इमाम बुख़ारी (रह़.) ने बाज़ुन्नास के लफ़्ज़ से इमाम अबू ह़नीफ़ा की तह़क़ीर की है क्योंकि बाज़ुन्नास कोई तह़क़ीर का कलिमा नहीं अगर तह़क़ीर का कलिमा होता तो इमाम शाफ़िई के लिये क्यूँकर इस्ते'माल करते।

7196. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐ़ब ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुह्री ने, उन्हें उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह ने ख़बर दी और उन्हें अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने ख़बर दी कि अबू सुफ़यान बिन ह़र्ब ने उन्हें ख़बर दी कि हिरक़्ल ने उन्हें क़ुरैश की एक जमाअ़त के साथ बुला भेजा, फिर अपने तर्जुमान से कहा, उनसे कहो कि मैं उनके बारे में पूछूँगा। अगर ये मुझसे झूठ बात कहे तो उसे झुठला दें। फिर पूरी ह़दीष़ बयान की, फिर उसने तर्जुमान से कहा, उससे कहो कि अगर तुम्हारी बातें स़ह़ीह़ हैं तो वो शख़्स इस मुल्क का भी मालिक हो जाएगा जो इस वक़्त मेरे क़दमों के नीचे है। (राजेअ़ : 7)

٧١٩٦- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ أَخْبَرَنِي عُبَيْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ اللهِ أَنَّ عَبْدَ اللهِ بْنَ عَبَّاسٍ أَخْبَرَهُ أَنَّ أَبَا سُفْيَانَ بْنَ حَرْبٍ أَخْبَرَهُ أَنَّ هِرَقْلَ أَرْسَلَ إِلَيْهِ فِي رَكْبٍ مِنْ قُرَيْشٍ ثُمَّ قَالَ لِتَرْجُمَانِهِ : قُلْ لَهُمْ إِنِّي سَائِلٌ هَذَا فَإِنْ كَذَبَنِي فَكَذِّبُوهُ، فَذَكَرَ الْحَدِيثَ فَقَالَ لِلتَّرْجُمَانِ: قُلْ لَهُ إِنْ كَانَ مَا تَقُولُ حَقًّا فَسَيَمْلِكُ مَوْضِعَ قَدَمَيَّ هَاتَيْنِ.[راجع: ٧]

तश्रीह : यहाँ ये ए'तिराज़ हुआ है कि हिरक़्ल का काम क्या हुज्जत है वो तो काफ़िर था। नस़ारानियों ने उसका जवाब यूँ दिया है कि गो हिरक़्ल काफ़िर है मगर अगले पैग़म्बरों की किताबों और उनके ह़ालात से ख़ूब वाक़िफ़ था तो गोया पहली शरीअ़तों में भी एक ही मुतर्जिम का तर्जुमा करना काफ़ी समझा जाता था। कुछ ने कहा हिरक़्ल के फ़ेअल से ग़रज़ नहीं बल्कि इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने जो इस उम्मत के आ़लिम थे इस क़िस्से को नक़ल किया और इस पर ये ए'तिराज़ न किया कि एक शख़्स का तर्जुमा ग़ैर काफ़ी था तो मा'लूम हुआ कि वो एक शख़्स की मुतर्जिमी काफ़ी समझते थे।

बाब 41 : इमाम का अपने आ़मिलों से ह़िसाब तलब करना

٤١- باب مُحَاسَبَةِ الإِمَامِ عُمَّالَهُ

7197. हमसे मुह़म्मद बिन सलाम ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दह बिन सुलैमान ने ख़बर दी, उनसे हिशाम बिन उ़र्वा ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने, उनसे अबू ह़ुमैद साइदी ने कि नबी करीम (ﷺ) ने इब्नुल उत्बिय्या को बनी सुलैम के स़दक़ा की वसूलयाबी के लिये आ़मिल बनाया। जब वो

٧١٩٧- حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ أَخْبَرَنَا عَبْدَةُ حَدَّثَنَا هِشَامُ بْنُ عُرْوَةَ، عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي حُمَيْدٍ السَّاعِدِيِّ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ اسْتَعْمَلَ ابْنَ الأُتْبِيَّةِ عَلَى صَدَقَاتِ بَنِي سُلَيْمٍ، فَلَمَّا جَاءَ

आँहज़रत (ﷺ) के पास (वसूलयाबी करके) आए और आँहज़रत (ﷺ) ने उनसे हिसाब तलब किया तो उन्होंने कहा ये तो आप लोगों का है और ये मुझे हदिया दिया गया है। इस पर आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि फिर तुम अपने माँ बाप के घर क्यूँ न बैठे रहे, अगर तुम सच्चे हो तो वहाँ भी तुम्हारे पास हदिया आता। फिर आप खड़े हुए और लोगों को ख़ुत्बा दिया। आपने हम्दो षना के बाद फ़र्माया। अम्माबअद! मैं कुछ लोगों को कुछ उन कामों के लिये आमिल बनाता हूँ जो अल्लाह तआला ने मुझे सौंपे हैं, फिर तुममें से कोई एक आता है और कहता है कि ये माल तुम्हारा है और ये हदिया है जो मुझे दिया गया है। अगर वो सच्चा है तो फिर क्यूँ न वो अपने बाप या अपनी माँ के घर में बैठा रहा ताकि वहीं उसका हदिया पहुँच जाता। पस अल्लाह की क़सम! तुममें से कोई अगर उस माल में से कोई चीज़ लेगा। हिशाम ने आगे का मज़्मून इस तरह बयान किया कि बिला हक़ के तो क़यामत के दिन अल्लाह तआला उसे इस तरह लाएगा कि वो उसको उठाए हुए होगा। आगाह हो जाओ कि मैं उसे पहचान लूँगा जो अल्लाह के पास वो शख़्स लेकर आएगा। ऊँट जो आवाज़ निकाल रहा होगा या गाय जो अपनी आवाज़ निकाल रही होगी या बकरी जो अपनी आवाज़ निकाल रही होगी। फिर आपने अपने हाथ उठाये यहाँ तक कि मैंने आपके बग़लों की सफ़ेदी देखी और फ़र्माया क्या मैंने पहुँचा दिया। (राजेअ: 925)

إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ وَحَاسَبَهُ قَالَ: هَذَا الَّذِي لَكُمْ وَهَذِهِ هَدِيَّةٌ أُهْدِيَتْ لِي فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((فَهَلاَّ جَلَسْتَ فِي بَيْتِ أَبِيكَ وَبَيْتِ أُمِّكَ حَتَّى تَأْتِيَكَ هَدِيَّتُكَ إِنْ كُنْتَ صَادِقًا)) ثُمَّ قَامَ رَسُولُ اللهِ ﷺ فَخَطَبَ النَّاسَ وَحَمِدَ اللهَ وَأَثْنَى عَلَيْهِ ثُمَّ قَالَ: ((أَمَّا بَعْدُ فَإِنِّي أَسْتَعْمِلُ رِجَالاً مِنْكُمْ عَلَى أُمُورٍ مِمَّا وَلاَّنِي اللهُ فَيَأْتِي أَحَدُكُمْ فَيَقُولُ: هَذَا لَكُمْ وَهَذِهِ هَدِيَّةٌ أُهْدِيَتْ لِي فَهَلاَّ جَلَسَ فِي بَيْتِ أَبِيهِ وَبَيْتِ أُمِّهِ حَتَّى تَأْتِيَهُ هَدِيَّتُهُ إِنْ كَانَ صَادِقًا فَوَ اللهِ لاَ يَأْخُذُ أَحَدُكُمْ مِنْهَا شَيْئًا)) قَالَ هِشَامٌ: ((بِغَيْرِ حَقِّهِ إِلاَّ جَاءَ اللهَ يَحْمِلُهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ أَلاَ فَلأَعْرِفَنَّ مَا جَاءَ اللهَ رَجُلٌ بِبَعِيرٍ لَهُ رُغَاءٌ، أَوْ بِبَقَرَةٍ لَهَا خُوَارٌ، أَوْ شَاةٍ تَيْعَرُ)) ثُمَّ رَفَعَ يَدَيْهِ حَتَّى رَأَيْتُ بَيَاضَ إِبْطَيْهِ ((أَلاَ هَلْ بَلَّغْتُ؟)).[راجع: ٩٢٥]

तश्रीह : जिस हुकूमत के उम्माल और अफ़सरान बद-दयानत होंगे उसका ज़रूर एक दिन बेड़ा ग़र्क़ होगा। इसीलिये आप (ﷺ) ने इस सख़्ती के साथ उस आमिल से बाज़पुर्स की और उसकी बद दयानती पर आपने सख़्त लफ़्ज़ों में उसे डांटा। (ﷺ)

बाब 42 : इमाम का ख़ास मुशीर जिसे बित़ाना भी कहते हैं या'नी राज़दार दोस्त

٤٢- باب بِطَانَةِ الإِمَامِ وَأَهْلِ مَشُورَتِهِ الْبِطَانَةُ : الدُّخَلاَءُ.

7198. हमसे अस्बग़ ने बयान किया, कहा हमको इब्ने वहब ने ख़बर दी, उन्हें यूनुस ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने शिहाब ने, उन्हें अबू सलमा ने और उन्हें अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, अल्लाह ने जब भी कोई नबी भेजा या किसी को ख़लीफ़ा बनाया तो उसके साथ दो रफ़ीक़ थे एक तो उन्हें नेकी के लिये कहता और उस पर उभारता और दूसरा उन्हें बुराई के लिये कहता और उस पर उभारता। पस मा'सूम वो है

٧١٩٨- حَدَّثَنَا أَصْبَغُ، أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي يُونُسُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((مَا بَعَثَ اللهُ مِنْ نَبِيٍّ وَلاَ اسْتَخْلَفَ مِنْ خَلِيفَةٍ إِلاَّ كَانَتْ لَهُ بِطَانَتَانِ، بِطَانَةٌ تَأْمُرُهُ بِالْمَعْرُوفِ وَتَحُضُّهُ عَلَيْهِ

وَبِطَانَةٌ تَأْمُرُهُ بِالشَّرِّ وَتَحُضُّهُ عَلَيْهِ، فَالْمَعْصُومُ مَنْ عَصَمَ اللهُ تَعَالَى)). وَقَالَ سُلَيْمَانُ: عَنْ يَحْيَى، أَخْبَرَنِي ابْنُ شِهَابٍ بِهَذَا وَعَنِ ابْنِ أَبِي عَتِيقٍ وَمُوسَى عَنِ ابْنِ شِهَابٍ مِثْلَهُ وَقَالَ شُعَيْبٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ حَدَّثَنِي أَبُو سَلَمَةَ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ قَوْلَهُ : وَقَالَ الأَوْزَاعِيُّ: وَمُعَاوِيَةُ بْنُ سَلاَّمٍ حَدَّثَنَا الزُّهْرِيُّ حَدَّثَنِي أَبُو سَلَمَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ وَقَالَ ابْنُ أَبِي حُسَيْنٍ، وَسَعِيدُ بْنُ زِيَادٍ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ قَوْلَهُ وَقَالَ عُبَيْدُ بْنُ أَبِي جَعْفَرٍ حَدَّثَنِي صَفْوَانُ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ أَبِي أَيُّوبَ قَالَ : سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ.

[راجع: ٦٦١١]

जिसे अल्लाह बचाए रखे। और सुलैमान बिन बिलाल ने इस ह़दीष़ को यह्या बिन सईद अंस़ारी से रिवायत किया, कहा मुझको इब्ने शिहाब ने ख़बर दी (उसको इस्माईली ने वस़्ल किया) और इब्ने अबी अ़तीक़ और मूसा बिन उ़क़्बा से भी, उन दोनों ने इब्ने शिहाब से यही ह़दीष़ (इसको बैहक़ी ने वस़्ल किया) और शुऐ़ब बिन अबी ह़म्ज़ा ने ज़ुह्री से यूँ रिवायत की मुझसे अबू सलमा ने बयान किया, उन्होंने अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) से उनका क़ौल (या'नी ह़दीष़ को मौक़ूफ़न नक़ल किया) और इमाम औज़ाई और मुआ़विया बिन सलाम ने कहा, मुझसे ज़ुह्री ने बयान किया, कहा मुझसे अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रह़मान ने, उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से, उन्होंने आँह़ज़रत (ﷺ) से और अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबी हुसैन और सईद बिन ज़ियाद ने इसको अबू सलमा से रिवायत किया, उन्होंने अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) से मौक़ूफ़न (या'नी अबू सईद का क़ौल) और अ़ब्दुल्लाह बिन अबी जा'फ़र ने कहा, मुझसे स़फ़्वान बिन सुलैम ने बयान किया, उन्होंने अबू सलमा से, उन्होंने अबू अय्यूब से, कहा मैंने आँह़ज़रत (ﷺ) से सुना। (राजेअ़ : 6611)

तशरीह़ : इसको इमाम निसाई ने वस़्ल किया। ह़दीष़े मज़्कूर का मत़लब ये है कि पैग़म्बरों को भी शैत़ान बहकाना चाहता है मगर उन पर उसका दाँव नहीं चलता क्योंकि अल्लाह तआ़ला उनको मा'स़ूम रखना चाहता है। बाक़ी दूसरे ख़लीफ़ा और बादशाह कभी बदकार मुशीर के दाँव में फंस जाते हैं और बुरे काम करने लगते हैं। कुछ ने कहा नेक रफ़ीक़ से फ़रिश्ता और बुरे रफ़ीक़ से शैत़ान मुराद है। कुछ ने कहा नफ़्से अम्मारा और नफ़्से मुत्मइन्नः मुराद हैं। औज़ाई की रिवायत को इमाम अह़मद ने और मुआ़विया (रज़ि.) की रिवायत को इमाम निसाई ने वस़्ल किया। उन दोनों ने रावी ह़दीष़ अबू हुरैरह (रज़ि.) को क़रार दिया और ऊपर की रिवायतों में अबू सईद थे और अ़ब्दुल्लाह बिन अबी हुसैन और सईद की रिवायतों को मा'लूम नहीं किसने वस़्ल किया। सनद में तफ़्स़ील का ह़ास़िल ये है कि इस ह़दीष़ में अबू सलमा पर रावियों का इख़्तिलाफ़ है। कोई कहता है अबू सलमा (रज़ि.) ने अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत की। कोई कहता है अबू सईद से, कोई कहता है अबू अय्यूब से, कोई अबू सईद से मौक़ूफ़न नक़ल करता है कोई मर्फ़ूअ़न।

٤٣- باب كَيْفَ يُبَايِعُ الإِمَامُ النَّاسَ

बाब 43 : इमाम लोगों से किन बातों पर बेअ़त ले?

٧١٩٩- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، حَدَّثَنِي مَالِكٌ، عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي عُبَادَةُ بْنُ الْوَلِيدِ قَالَ: أَخْبَرَنِي أَبِي عَنْ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ قَالَ: بَايَعْنَا رَسُولَ اللهِ ﷺ عَلَى السَّمْعِ وَالطَّاعَةِ فِي الْمَنْشَطِ وَالْمَكْرَهِ.

7199. हमसे इस्माईल ने बयान किया, कहा मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे यह्या बिन सईद ने, उन्होंने कहा कि मुझको उ़बादह बिन वलीद ने ख़बर दी, उन्हें उनके वालिद ने ख़बर दी, उनसे उ़बादह बिन स़ामित (रज़ि.) ने बयान किया कि हमने रसूलुल्लाह (ﷺ) से आपकी सुनने और इत़ाअ़त करने की बेअ़त की ख़ुशी और नाख़ुशी दोनों ह़ालतों

में। (राजेअ़ : 18)

[راجع: ١٨]

7200. और इस शर्त पर कि जो शख़्स सरदारी के लायक़ होगा (मष़लन क़ुरैश में से हो और शरअ़ पर क़ायम हो) उसकी सरदारी क़ुबूल कर लेंगे उससे झगड़ा न करेंगे और ये कि हम ह़क़ को लेकर खड़े होंगे या ह़क़ बात कहेंगे जहाँ भी हों और अल्लाह के रास्ते में मलामत करने वाले की मलामत की परवाह न करेंगे। (राजेअ़ : 7056)

٧٢٠٠- وَأَنْ لاَ نُنَازِعَ الأَمْرَ أَهْلَهُ وَأَنْ نَقُومَ أَوْ نَقُولَ بِالْحَقِّ حَيْثُمَا كُنَّا لاَ نَخَافُ فِي اللهِ لَوْمَةَ لاَئِمٍ.

[راجع: ٧٠٥٦]

7201. हमसे अ़म्र बिन अ़ली ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे ख़ालिद बिन ह़ारिष़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे ह़ुमैद ने बयान किया और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) सर्दी में सुबह के वक़्त बाहर निकले और मुहाजिरीन और अंसार ख़ंदक़ खोद रहे थे, फिर आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया,

ऐ अल्लाह! ख़ैर तो आख़िरत ही की ख़ैर है। पस अंसार और मुहाजिरीन की मग़्फ़िरत फ़र्मा।

इसका जवाब लोगों ने दिया कि,

हम वो हैं जिन्होंने मुह़म्मद (ﷺ) से
जिहाद पर बेअ़त की है हमेशा के लिये
जब तक हम ज़िन्दा हैं।

(राजेअ़ : 2834)

٧٢٠١- حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عَلِيٍّ، حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ الْحَارِثِ، حَدَّثَنَا حُمَيْدٌ، عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: خَرَجَ النَّبِيُّ ﷺ فِي غَدَاةٍ بَارِدَةٍ وَالْمُهَاجِرُونَ وَالأَنْصَارُ يَحْفِرُونَ الْخَنْدَقَ فَقَالَ :

اللَّهُمَّ إِنَّ الْخَيْرَ خَيْرُ الآخِرَةْ
فَاغْفِرْ لِلأَنْصَارِ وَالْمُهَاجِرَةْ

فَأَجَابُوا :

نَحْنُ الَّذِينَ بَايَعُوا مُحَمَّدًا
عَلَى الْجِهَادِ مَا بَقِينَا أَبَدًا

[راجع: ٢٨٣٤]

तश्रीह : मौलाना वह़ीदुज्ज़माँ (रह़.) ने दुआ-ए-नबवी और अंसार के शे'र का तर्जुमा शे'र में यूँ अदा किया है,

फ़ायदा जो कुछ कि है वो आख़िरत का फ़ायदा — बख़्श दे अंसार और परदेसियों को ऐ ख़ुदा!
अपने पैग़म्बर मुह़म्मद (ﷺ) से ये बेअ़त हमने की — जान जब तक है लड़ेंगे के काफ़िरों से हम सदा

7202. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें अ़ब्दुल्लाह बिन दीनार ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि जब हम रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुनने और इत़ाअ़त करने की बेअ़त करते तो आप हमसे फ़र्माते कि जितनी तुम्हें त़ाक़त हो।

٧٢٠٢- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ، أَخْبَرَنَا مَالِكٌ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ دِينَارٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: كُنَّا إِذَا بَايَعْنَا رَسُولَ اللهِ ﷺ عَلَى السَّمْعِ وَالطَّاعَةِ يَقُولُ لَنَا: ((فِيمَا اسْتَطَعْتَ)).

7203. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे यह़्या ने बयान

٧٢٠٣- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا يَحْيَى،

किया, उनसे सुफ़यान ने, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन दीनार ने बयान किया, कहा कि मैं उस वक़्त अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) के पास मौजूद था जब सब लोग अ़ब्दुल मलिक बिन मरवान से बेअ़त के लिये जमा हो गये। बयान किया कि उन्होंने अ़ब्दुल मलिक को लिखा कि, मैं सुनने और इताअ़त करने का इक़रार करता हूँ अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुल मलिक अमीरुल मोमिनीन के लिये अल्लाह के दीन और उसके रसूल की सुन्नत के मुताबिक़ जितनी भी मुझमें कुव्वत होगी और ये कि मेरे लड़के भी इसका इक़रार करते हैं। (दीगर मक़ामात : 7205, 7272)

عَنْ سُفْيَانَ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ دِينَارٍ قَالَ: شَهِدْتُ ابْنَ عُمَرَ حَيْثُ اجْتَمَعَ النَّاسُ عَلَى عَبْدِ الْمَلِكِ قَالَ: كَتَبَ إِنِّي أُقِرُّ بِالسَّمْعِ وَالطَّاعَةِ لِعَبْدِ اللهِ عَبْدِ الْمَلِكِ أَمِيرِ الْمُؤْمِنِينَ عَلَى سُنَّةِ اللهِ وَسُنَّةِ رَسُولِهِ، مَا اسْتَطَعْتُ وَإِنَّ بَنِيَّ قَدْ أَقَرُّوا بِمِثْلِ ذَلِكَ.[طرفاه في: ٧٢٠٥، ٧٢٧٢].

तश्रीह : हुआ ये कि जब यज़ीद ख़लीफ़ा हुआ तो अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) ने इससे बेअ़त नहीं की। यज़ीद के मरते ही अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) ने ख़िलाफ़त का दा'वा किया। उधर मुआ़विया बिन यज़ीद बिन मुआ़विया ख़लीफा हुआ कुछ लोगों ने अ़ब्दुल्लाह से, कुछ लोगों ने मुआ़विया बिन यज़ीद से बेअ़त की लेकिन ये मुआ़विया जिया नहीं चालीस दिन ही सल्तनत करके फ़ौत हो गया और मरवान ख़लीफ़ा बन बैठा वो छः महीने जी कर फ़ौत गया और अपने बेटे अ़ब्दुल मलिक को ख़लीफ़ा कर गया। अ़ब्दुल मलिक ने हज्जाज बिन यूसुफ़ ज़ालिम को अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) से लड़ने के लिये रवाना किया। जब हज्जाज ग़ालिब हुआ और अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर शहीद हुए तो अब सब लोगों का इत्तिफ़ाक़ अ़ब्दुल मलिक पर हो गया। उस वक़्त अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने अपने बेटों समेत उससे बेअ़त कर ली। अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) के बेटों के नाम ये थे। (1) अ़ब्दुल्लाह और (2) अबूबक्र और (3) अबू उ़बैदह और (4) बिलाल और (5) उ़मर (रज़ि.)। ये सब सफ़िया बिन्ते अबी उ़बैद से थे और (6) अ़ब्दुर्रहमान उनकी माँ अ़ल्क़मा बिन्ते नाफ़िस थी और (7) सालिम और (8) उ़बैदुल्लाह और (9) हम्ज़ा की माँ लौण्डी थी इसी तरह (10) ज़ैद इनकी माँ भी लौण्डी थी।

7204. हमसे यअ़क़ूब बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे हुशैम ने बयान किया, कहा हमको सय्यार ने ख़बर दी, उन्हें शअ़बी ने, उनसे जरीर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुनने और इताअ़त करने की बेअ़त की तो आपने मुझे इसकी तल्क़ीन की कि जितनी मुझमें ताक़त हो और हर मुसलमान के साथ ख़ैर ख़्वाही करने पर भी बेअ़त की। (राजेअ़ : 57)

٧٢٠٤- حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، حَدَّثَنَا هُشَيْمٌ، أَخْبَرَنَا سَيَّارٌ، عَنِ الشَّعْبِيِّ، عَنْ جَرِيرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ قَالَ: بَايَعْتُ النَّبِيَّ ﷺ عَلَى السَّمْعِ وَالطَّاعَةِ فَلَقَّنَنِي فِيمَا اسْتَطَعْتُ وَالنُّصْحِ لِكُلِّ مُسْلِمٍ.

[راجع: ٥٧]

7205. हमसे अ़म्र बिन अ़ली ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे यह्या ने बयान किया, उनसे सुफ़यान ने बयान किया, उन्होंने कहा मुझसे अ़ब्दुल्लाह बिन दीनार ने बयान किया, कहा कि जब लोगों ने अ़ब्दुल मलिक की बेअ़त की तो अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने उसे लिखा, अल्लाह के बन्दे अ़ब्दुल मलिक अमीरुल मोमिनीन के नाम, मैं इक़रार करता हूँ सुनने और इताअ़त करने की। अल्लाह के बन्दे अ़ब्दुल मलिक अमीरुल मोमिनीन के लिये अल्लाह के दीन और उसके रसूल

٧٢٠٥- حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عَلِيٍّ، حَدَّثَنَا يَحْيَى، عَنْ سُفْيَانَ قَالَ : حَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ دِينَارٍ قَالَ: لَمَّا بَايَعَ النَّاسُ عَبْدَ الْمَلِكِ كَتَبَ إِلَيْهِ عَبْدُ اللهِ بْنُ عُمَرَ إِلَى عَبْدِ اللهِ عَبْدِ الْمَلِكِ أَمِيرِ الْمُؤْمِنِينَ إِنِّي أُقِرُّ بِالسَّمْعِ وَالطَّاعَةِ لِعَبْدِ اللهِ عَبْدِ الْمَلِكِ أَمِيرِ الْمُؤْمِنِينَ عَلَى سُنَّةِ اللهِ وَسُنَّةِ

की सुन्नत के मुताबिक़, जितनी मुझमें ताक़त होगी और मेरे बेटों ने भी इसका इक़रार किया। (राजेअ : 7203)

رَسُولِهِ، فِيمَا اسْتَطَعْتُ وَإِنَّ بَنِيَّ قَدْ أَقَرُّوا بِذَلِكَ.[راجع: ٧٢٠٣]

7206. हमसे अब्दुल्लाह बिन मस्लमा ने बयान किया, कहा हमसे हातिम ने बयान किया, उनसे यज़ीद ने बयान किया कि मैंने सलमा (रज़ि.) से पूछा आप लोगों ने सुलह हुदैबिया के मौक़े पर रसूलुल्लाह (ﷺ) से किस बात पर बेअत की थी? उन्होंने कहा कि मौत पर। (राजेअ : 2060)

٧٢٠٦- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْلَمَةَ، حَدَّثَنَا حَاتِمٌ عَنْ يَزِيدَ قَالَ : قُلْتُ لِسَلَمَةَ عَلَى أَيِّ شَيْءٍ بَايَعْتُمُ النَّبِيَّ ﷺ يَوْمَ الْحُدَيْبِيَةِ؟ قَالَ : عَلَى الْمَوْتِ.

[راجع: ٢٠٦٠]

7207. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद बिन अस्मा ने बयान किया, कहा हमसे जुवैरिया बिन अस्मा ने बयान किया, उनसे इमाम मालिक ने, उनसे ज़ुहरी ने, उन्हें हुमैद बिन अब्दुर्रहमान ने ख़बर दी और उन्हें मिस्वर बिन मख़रमा ने ख़बर दी कि वो छ:आदमी जिनको उमर (रज़ि.) ख़िलाफ़त के लिए नामज़द कर गये थे (या'नी अली, उष्मान, ज़ुबैर, तलहा, और अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि. कि उनमें से किसी एक को इत्तिफ़ाक़ से ख़लीफ़ा बना लिया जाए) ये सब जमा हुए और मश्विरा किया। उनसे अब्दुर्रहमान बिन औफ़ ने कहा ख़लीफ़ा होने के लिए मैं आप लोगों से कोई मुक़ाबला नहीं करूँगा। अल्बत्ता अगर आप लोग चाहें तो आप लोगों के लिए कोई ख़लीफ़ा आप ही में से मैं चुन दूँ। चुनाँचे सबने मिलकर उसका इख़्तियार अब्दुर्रहमान बिन औफ़ को दे दिया। जब उन लोगों ने इंतिख़ाब की ज़िम्मेदारी अब्दुर्रहमान (रज़ि.) के सुपुर्द कर दी तो सब लोग उनकी तरफ़ झुक गये। जितने लोग भी उस जमाअत के पीछे चल रहे थे, उनमें अब मैंने किसी को भी ऐसा न देखा जो अब्दुर्रहमान के पीछे न चल रहा हो। सब लोग उन ही की तरफ़ माइल हो गये और उन दिनों में उनसे मश्विरा करते रहे। जब वो रात आई जिसकी सुबह को हमने उष्मान (रज़ि.) से बेअत की। मिस्वर (रज़ि.) ने बयान किया तो अब्दुर्रहमान (रज़ि.) रात गये मेरे यहाँ आए और दरवाज़ा खटखटाया यहाँ तक कि मैं बेदार हो गया। उन्होंने कहा मेरा ख़याल है आप सो रहे थे, अल्लाह की क़सम! मैं इन रातों में बहुत कम सो सका हूँ। जाइये! ज़ुबैर और सअद को बुला लाइये। मैं उन दोनों बुज़ुर्गों को बुला लाया और उन्होंने

٧٢٠٧- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدِ بْنِ أَسْمَاءَ، حَدَّثَنَا جُوَيْرِيَةُ، عَنْ مَالِكٍ عَنِ الزُّهْرِيِّ أَنَّ حُمَيْدَ بْنَ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، أَخْبَرَهُ أَنَّ الْمِسْوَرَ بْنَ مَخْرَمَةَ أَخْبَرَهُ أَنَّ الرَّهْطَ الَّذِينَ وَلاَّهُمْ عُمَرُ اجْتَمَعُوا فَتَشَاوَرُوا قَالَ لَهُمْ عَبْدُ الرَّحْمَنِ: لَسْتُ بِالَّذِي أُنَافِسُكُمْ عَلَى هَذَا الأَمْرِ وَلَكِنَّكُمْ إِنْ شِئْتُمْ اخْتَرْتُ لَكُمْ مِنْكُمْ فَجَعَلُوا ذَلِكَ إِلَى عَبْدِ الرَّحْمَنِ، فَلَمَّا وَلَّوْا عَبْدَ الرَّحْمَنِ أَمْرَهُمْ فَمَالَ النَّاسُ عَلَى عَبْدِ الرَّحْمَنِ حَتَّى مَا أَرَى أَحَدًا مِنَ النَّاسِ يَتْبَعُ أُولَئِكَ الرَّهْطَ وَلاَ يَطَأُ عَقِبَهُ وَمَالَ النَّاسُ عَلَى عَبْدِ الرَّحْمَنِ يُشَاوِرُونَهُ تِلْكَ اللَّيَالِي، حَتَّى إِذَا كَانَتِ اللَّيْلَةُ الَّتِي أَصْبَحْنَا مِنْهَا فَبَايَعْنَا عُثْمَانَ قَالَ الْمِسْوَرُ طَرَقَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ بَعْدَ هَجْعٍ مِنَ اللَّيْلِ، فَضَرَبَ الْبَابَ حَتَّى اسْتَيْقَظْتُ فَقَالَ: أَرَاكَ نَائِمًا فَوَ اللهِ مَا اكْتَحَلْتُ هَذِهِ اللَّيْلَةَ بِكَبِيرِ نَوْمٍ، انْطَلِقْ فَادْعُ الزُّبَيْرَ وَسَعْدًا فَدَعَوْتُهُمَا لَهُ: فَشَاوَرَهُمَا ثُمَّ دَعَانِي فَقَالَ:

: ادْعُ لِي عَلِيًّا فَدَعَوْتُهُ فَنَاجَاهُ حَتَّى ابْهَارَّ اللَّيْلُ ثُمَّ قَامَ عَلِيٌّ مِنْ عِنْدِهِ، وَهُوَ عَلَى طَمَعٍ وَقَدْ كَانَ عَبْدُ الرَّحْمَنِ يَخْشَى مِنْ عَلِيٍّ شَيْئًا، ثُمَّ قَالَ: ادْعُ لِي عُثْمَانَ فَدَعَوْتُهُ فَنَاجَاهُ، حَتَّى فَرَّقَ بَيْنَهُمَا الْمُؤَذِّنُ بِالصُّبْحِ فَلَمَّا صَلَّى لِلنَّاسِ الصُّبْحَ، وَاجْتَمَعَ أُولَئِكَ الرَّهْطُ عِنْدَ الْمِنْبَرِ، فَأَرْسَلَ إِلَى مَنْ كَانَ حَاضِرًا مِنَ الْمُهَاجِرِينَ وَالأَنْصَارِ وَأَرْسَلَ إِلَى أُمَرَاءِ الأَجْنَادِ وَكَانُوا وَافَوْا تِلْكَ الْحَجَّةَ مَعَ عُمَرَ، فَلَمَّا اجْتَمَعُوا تَشَهَّدَ عَبْدُ الرَّحْمَنِ ثُمَّ قَالَ : أَمَّا بَعْدُ يَا عَلِيُّ إِنِّي قَدْ نَظَرْتُ فِي أَمْرِ النَّاسِ فَلَمْ أَرَهُمْ يَعْدِلُونَ بِعُثْمَانَ، فَلاَ تَجْعَلَنَّ عَلَى نَفْسِكَ سَبِيلاً فَقَالَ: أُبَايِعُكَ عَلَى سُنَّةِ اللهِ وَرَسُولِهِ وَالْخَلِيفَتَيْنِ مِنْ بَعْدِهِ، فَبَايَعَهُ عَبْدُ الرَّحْمَنِ وَبَايَعَهُ النَّاسُ الْمُهَاجِرُونَ وَالأَنْصَارُ وَأُمَرَاءُ الأَجْنَادِ وَالْمُسْلِمُونَ. [راجع: ١٣٩٢]

उनसे मश्विरा किया, फिर मुझे बुलाया और कहा कि मेरे लिये अ़ली (रज़ि.) को भी बुला दीजिए। मैंने उन्हें भी बुलाया और उन्होंने उनसे भी सरगोशी की। यहाँ तक कि आधी रात गुज़र गई। फिर अ़ली (रज़ि.) उनके पास से खड़े हो गये और उनको अपने ही लिये उम्मीद थी। अ़ब्दुर्रहमान के दिल में भी उनकी त़रफ़ से यही डर था, फिर उन्होंने कहा कि मेरे लिये उ़़्मान (रज़ि.) को भी बुला लाइये। मैं उन्हें भी बुला लाया और उन्होंने उनसे भी सरगोशी की। आख़िर सुबह के मुअज़्ज़िन ने उनके बीच जुदाई की। जब लोगों ने सुबह की नमाज़ पढ़ ली और ये सब लोग मिम्बर के पास जमा हुए तो उन्होंने मौजूद मुहाजिरीन अंसार और लश्करों के क़ाएदीन को बुलाया। उन लोगों ने उस साल हज्ज, ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) के साथ किया था। जब सब लोग जमा हो गये तो अ़ब्दुर्रहमान (रज़ि.) ने ख़ुत़्बा दिया फिर कहा अम्मा बअ़द! ऐ अ़ली! मैंने लोगों के ख़यालात मा'लूम किये और मैंने देखा कि वो उ़़्मान को मुक़द्दम समझते हैं और उनके बराबर किसी को नहीं समझते, इसलिये आप अपने दिल में कोई मैल पैदा न करें। फिर कहा मैं आप (उ़़्मान रज़ि.) से अल्लाह के दीन और उसके रसूल की सुन्नत और आपके दो ख़ुलफ़ा के त़रीक़ के मुत़ाबिक़ बेअ़त करता हूँ। चुनाँचे पहले उनसे अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ (रज़ि.) ने बेअ़त की, फिर सब लोगों ने और मुहाजिरीन, अंसार और फ़ौजों के सरदारों और तमाम मुसलमानों ने बेअ़त की। (राजेअ : 1392)

तश्रीह : अ़ब्दुर्रहमान (रज़ि.) ये डरते थे कि ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) के मिज़ाज में ज़रा सख़्ती है और आ़म लोग उनसे ख़ुश नहीं हैं। उनसे ख़िलाफ़त सम्भलती है या नहीं ऐसा न हो कोई फ़ित्ना खड़ा हो जाए। कुछ कहते हैं ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) के मिज़ाज शरीफ़ में ज़राफ़त और ख़ुशत़बई बहुत थी। अ़ब्दुर्रहमान (रज़ि.) को ये डर हुआ कि इस मिज़ाज के साथ ख़िलाफ़त का काम अच्छी त़रह से चलेगा या नहीं। चुनाँचे एक शख़्स ने ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) से इसी ज़राफ़त और ख़ुश त़बई की निस्बत कहा **हाज़ल्लज़ी अख़्ख़रक इलर्राबिआ** पस बाद में ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) ने बेअ़त कर ली अम्रे इलाही यही था कि पहले ह़ज़रत उ़़्मान (रज़ि.) ख़लीफ़ा हों और अख़ीर में जनाब मुर्तज़ा (रज़ि.) को ख़िलाफ़त मिले।

बाब 44 : जिसने दो मर्तबा बेअ़त की

٤٤- باب مَنْ بَايَعَ مَرَّتَيْنِ

तश्रीह : लफ़्ज़े बेअ़त बेअ़ से मुश्तक़ है। बेअ़त करने वाला जिसके हाथ पर बेअ़त कर रहा है गोया अपनी जान व माल से इस्लाम के जिहाद के लिये बेच रहा है। ऐसा अ़हदनामा ह़स्बे ज़रूरत बार बार भी लिया जा सकता है। इस्लाम क़ुबूल करने का अ़हद एक ही दफ़ा भी काफ़ी है। तज्दीदे ईमान के लिये बार बार भी ये अ़हदनामा दोहरायाजा सकता है। इस्लाम क़ुबूल करने की बेअ़त किसी भी अच्छे आ़लिम स़ालेह इमाम के हाथ पर की जा सकती है। ह़ालाते ह़ाज़रा

में इमाम को चाहिये कि किसी भी सरकारी अ़दालत में इसका बयान रजिस्टर करा दे ताकि आइन्दा कोई फ़ित्ना न हो सके।

7208. हमसे अबुल आ़सिम ने बयान किया, कहा हमसे यज़ीद बिन अबी उ़बैद ने, उनसे सलमा (रज़ि.) ने बयान किया कि हमने नबी करीम (ﷺ) से दरख़्त के नीचे बेअ़त की। आँहज़रत (ﷺ) ने मुझसे फ़र्माया, सलमा! क्या तुम बेअ़त नहीं करोगे? मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! मैंने पहली ही मर्तबा में बेअ़त कर ली है। फ़र्माया कि और दूसरी मर्तबा में भी कर लो। (राजेअ़ : 2060)

٧٢٠٨- حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ، عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبِي عُبَيْدٍ، عَنْ سَلَمَةَ قَالَ : بَايَعْنَا النَّبِيَّ ﷺ تَحْتَ الشَّجَرَةِ فَقَالَ لِي: ((يَا سَلَمَةُ أَلاَ تُبَايِعُ)) قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ قَدْ بَايَعْتُ فِي الأَوَّلِ قَالَ: ((وَفِي الثَّانِي)).

[راجع: ٢٩٦٠]

दोबारा बेअ़त का मत़लब तज्दीदे अ़हद (वादे का नवीनीकरण) है जो जिस क़दर मज़बूत़ किया जा सके बेहतर है। इसीलिये आँहज़रत (ﷺ) ने कुछ स़हाबा से बार बार बेअ़त ली है। सलमा बिन अक्वा बड़े बहादुर और लड़ने वाले मर्द थे तीरंदाज़ी और दौड़ में बेनज़ीर थे। उनकी फ़ज़ीलत ज़ाहिर करने के लिये उनसे दो मर्तबा बेअ़त ली गई।

बाब 45 : देहातियों का इस्लाम और जिहाद पर बेअ़त करना

٤٥- باب بَيْعَةِ الأَعْرَابِ

7209. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मस्लमा ने बयान किया, कहा हमसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे मुह़म्मद बिन मुंकदिर ने, उनसे जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने कि एक देहाती ने नबी करीम (ﷺ) से इस्लाम पर बेअ़त की फिर उसे बुख़ार हो गया तो उसने कहा कि मेरी बेअ़त फ़स्ख़ कर दीजिए। आँहज़रत (ﷺ) ने इंकार किया फिर वो आँहज़रत (ﷺ) के पास आया और कहने लगा कि मेरी बेअ़त फ़स्ख़ कर दीजिए। आँहज़रत (ﷺ) ने इंकार किया आख़िर वो (ख़ुद ही मदीना से) चला गया तो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मदीना भट्टी की त़रह है अपनी मैल कुचैल दूर कर देता है और स़ाफ़ माल को रख लेता है। (राजेअ़ : 1883)

٧٢٠٩- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْلَمَةَ، عَنْ مَالِكٍ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ الْمُنْكَدِرِ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ أَعْرَابِيًّا بَايَعَ رَسُولَ اللهِ ﷺ عَلَى الإِسْلاَمِ فَأَصَابَهُ وَعْكٌ فَقَالَ : أَقِلْنِي بَيْعَتِي فَأَبَى ثُمَّ جَاءَهُ فَقَالَ: أَقِلْنِي بَيْعَتِي فَأَبَى، فَخَرَجَ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((الْمَدِينَةُ كَالْكِيرِ تَنْفِي خَبَثَهَا وَيَنْصَعُ طِيبُهَا)).

[راجع: ١٨٨٣]

बेअ़त फ़स्ख़ कराने की दरख़्वास्त देना नापसंदीदा काम है। मदीना मुनव्वरह की ख़ास़ फ़ज़ीलत भी इससे स़ाबित हुई।

बाब 46 : नाबालिग़ लड़के का बेअ़त करना

٤٦- باب بَيْعَةِ الصَّغِيرِ

ह़दीस़ और बाब से ज़ाहिर है कि अपने नाबालिग़ बच्चे को वालदैन ख़लीफ़ा इस्लाम या बुज़ुर्ग आदमी के यहाँ बेअ़त के लिये लेकर आ सकते हैं और बुज़ुर्ग उसके सर पर दस्ते शफ़क़त फेरकर दुआएँ दे सकता है।

7210. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यज़ीद ने बयान किया, उनसे सईद बिन अबी अय्यूब ने बयान किया, उनसे अबू अ़क़ील ज़ुह्रा बिन मअ़बद ने बयान किया, उन्होंने अपने दादा अ़ब्दुल्लाह

٧٢١٠- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يَزِيدَ، حَدَّثَنَا سَعِيدٌ هُوَ ابْنُ أَبِي أَيُّوبَ، قَالَ : حَدَّثَنِي أَبُو عَقِيلٍ زُهْرَةُ

بْنُ مَعْبَدٍ، عَنْ جَدِّهِ عَبْدِ اللهِ بْنِ هِشَامٍ، وَكَانَ قَدْ أَدْرَكَ النَّبِيَّ ﷺ وَذَهَبَتْ بِهِ أُمُّهُ زَيْنَبُ ابْنَةُ حُمَيْدٍ إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ فَقَالَتْ: يَا رَسُولَ اللهِ بَايِعْهُ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ ((هُوَ صَغِيرٌ)) فَمَسَحَ رَأْسَهُ وَدَعَا لَهُ وَكَانَ يُضَحِّي بِالشَّاةِ الْوَاحِدَةِ عَنْ جَمِيعِ أَهْلِهِ. [راجع: ۲۵۰۱]

बिन हिशाम (रज़ि.) से और उन्होंने आँहज़रत (ﷺ) का ज़माना पाया था और उनकी वालिदा ज़ैनब बिन्ते हुमैद उनको रसूलुल्लाह (ﷺ) की ख़िदमत में लेकर हाज़िर हुई थीं और अर्ज़ किया था या रसूलल्लाह! इससे बेअ़त ले लीजिए। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि ये अभी कमसिन है फिर आँहज़रत (ﷺ) ने उसके सर पर हाथ फेरा और उनके लिये दुआ फ़र्माई और वो अपने तमाम घरवालों की तरफ़ से एक ही बकरी क़ुर्बानी किया करते थे। (राजेअ : 2501)

तश्रीह : यही सुन्नत है कि हर एक घर की तरफ़ से ईदुल अज़्हा में एक बकरी क़ुर्बानी की जाए। सारे घर वालों की तरफ़ से एक ही बकरी भी काफ़ी है। अब ये जो रिवाज हो गया है कि बहुत सी बकरियाँ क़ुर्बानी करते हैं ये सुन्नते नबवी के ख़िलाफ़ है और सिर्फ़ फ़ख़्र के लिये लोगों ने ऐसा इख़्तियार कर लिया है जैसे किताबुल अज़्हिया में गुज़र चुका है। हाफ़िज़ ने कहा अ़ब्दुल्लाह बिन हिशाम आँहज़रत (ﷺ) की दुआ की बरकत से बहुत मुद्दत तक ज़िन्दा रहे।

٤٧- باب مَنْ بَايَعَ ثُمَّ اسْتَقَالَ الْبَيْعَةَ

बाब 47 : बेअ़त करने के बाद उसका फ़स्ख़ कराना नहीं हो सकता

٧٢١١- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ، أَخْبَرَنَا مَالِكٌ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ الْمُنْكَدِرِ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ أَنَّ أَعْرَابِيًّا بَايَعَ رَسُولَ اللهِ ﷺ عَلَى الإِسْلاَمِ، فَأَصَابَ الأَعْرَابِيَّ وَعْكٌ بِالْمَدِينَةِ، فَأَتَى الأَعْرَابِيُّ إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ، فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ أَقِلْنِي بَيْعَتِي، فَأَبَى رَسُولُ اللهِ ﷺ ثُمَّ جَاءَ فَقَالَ: أَقِلْنِي بَيْعَتِي فَأَبَى، ثُمَّ جَاءَهُ فَقَالَ: أَقِلْنِي بَيْعَتِي فَأَبَى، فَخَرَجَ الأَعْرَابِيُّ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِنَّمَا الْمَدِينَةُ كَالْكِيرِ تَنْفِي خَبَثَهَا وَيَنْصَعُ طِيبُهَا)). [راجع: ۱۸۸۳]

7211. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको इमाम मालिक ने ख़बरदी, उन्हें मुहम्मद बिन मुंकदिर ने और उन्हें जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने कि एक देहाती ने रसूले करीम (ﷺ) से इस्लाम पर बेअ़त की फिर उसे मदीना में बुख़ार हो गया तो वो आँहज़रत (ﷺ) के पास आया और कहा कि या रसूलल्लाह! मेरी बेअ़त फ़स्ख़ कर दीजिए। आँहज़रत (ﷺ) ने इंकार किया फिर वो दोबारा आया और कहा कि मेरी बेअ़त फ़स्ख़ कर दीजिए। आँहज़रत (ﷺ) ने इस मर्तबा भी इंकार किया फिरवो आया और बेअ़त फ़स्ख़ करने का मुतालबा किया। आँहज़रत (ﷺ) ने इस मर्तबा भी इंकार किया। इसके बाद वो ख़ुद ही (मदीना से) चला गया। आँहज़रत (ﷺ) ने उस पर फ़र्माया कि मदीना भट्टी की तरह है अपनी मैल कुचैल को दूर कर देता है और ख़ालिस माल रख लेता है। (राजेअ : 1883)

तश्रीह : हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह मशहूर सहाबी अंसारी हैं। सब जंगों में शरीक हुए। अहादीषे कषीरा के रावी हैं सन 74 हिजरी में बउम्र 94 साल वफ़ात पाई रज़ियल्लाहु अ़न्हु व अरज़ाहु।

बाब 48 : जिसने किसी से बेअ़त की और मक़्सद ख़ालिस़ दुनिया कमाना हो उसकी बुराई का बयान

٤٨- باب مَنْ بَايَعَ رَجُلاً لاَ يُبَايِعُهُ إِلاَّ لِلدُّنْيَا.

7212. हमसे अ़ब्दान ने बयान किया, कहा हमसे अबू ह़म्ज़ा मुह़म्मद बिन सीरीन ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे अबू स़ालेह़ ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, तीन आदमी ऐसे हैं जिनसे अल्लाह तआ़ला क़यामत के दिन बात नहीं करेगा और न उन्हें पाक करेगा और उनके लिये बहुत सख़्त अ़ज़ाब दुख देने वाला अ़ज़ाब होगा। एक वो शख़्स़ जिसके पास रास्ते में ज़्यादा पानी हो और वो मुसाफ़िर को उसमें से न पिलाए। दूसरा वो शख़्स़ जो इमाम से बेअ़त करे और बेअ़त की ग़र्ज़ सिर्फ़ दुनिया कमाना हो अगर वो इमाम उसे कुछ दुनिया दे दे तो बेअ़त पूरी करे वरना तोड़ दे। तीसरा वो शख़्स़ जो किसी दूसरे से कुछ माल मताअ़ अ़स्र के बाद बेच रहा हो और क़सम खाए कि उसे उस सामान की इतनी इतनी क़ीमत मिल रही थी और फिर ख़रीदने वाला उसे सच्चा समझकर उस माल को ले ले हालाँकि उसे उसकी उतनी क़ीमत नहीं मिल रही थी। (राजेअ़ : 2358)

٧٢١٢- حَدَّثَنَا عَبْدَانُ، عَنْ أَبِي حَمْزَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((ثَلاَثَةٌ لاَ يُكَلِّمُهُمُ اللهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَلاَ يُزَكِّيهِمْ، وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ رَجُلٌ عَلَى فَضْلِ مَاءٍ بِالطَّرِيقِ يَمْنَعُ مِنْهُ ابْنَ السَّبِيلِ، وَرَجُلٌ بَايَعَ إِمَامًا لاَ يُبَايِعُهُ إِلاَّ لِدُنْيَاهُ إِنْ أَعْطَاهُ مَا يُرِيدُ وَفَى لَهُ وَإِلاَّ لَمْ يَفِ لَهُ، وَرَجُلٌ يُبَايِعُ رَجُلاً بِسِلْعَةٍ بَعْدَ الْعَصْرِ فَحَلَفَ بِاللهِ لَقَدْ أُعْطِيَ بِهَا كَذَا وَكَذَا فَصَدَّقَهُ فَأَخَذَهَا وَلَمْ يُعْطَ بِهَا)).

[راجع: ٢٣٥٨]

तश्रीह़ : मआ़ज़ल्लाह ये कैसी सख़्तदिली और क़सावते क़ल्बी है। बुज़ुर्गों ने तो ये किया है कि मरते वक़्त भी ख़ुद पानी न पिया और दूसरे मुसलमान भाई के पास भेज दिया चुनाँचे जंगे यरमूक़ में जिसमें बहुत से स़ह़ाबा शरीक थे। एक स़ाह़ब बयान करते हैं मैं अपने चचाज़ाद भाई के पास जो ज़ख़्मी होकर पड़ा था पानी लेकर गया इतने में उसके पास एक और मुसलमान ज़ख़्मी पड़ा था उसने पानी मांगा। मेरे भाई ने इशारे से कहा पहले उसको पिलाओ। जब मैं उसके पिलाने को गया तो एक और ज़ख़्मी ने पानी मांगा उसने इशारे से कहा उसके पास ले जाओ मगर जब तक पानी लेकर उसके पास पहुँचा वो जान बह़क़ तस्लीम हुआ। लौटकर आया तो वो शख़्स़ शहीद हो चुका था जिसके पिलाने के लिये मेरे भाई ने कहा था आगे जो बढ़ा तो क्या देखता हूँ मेरा भाई भी शहीद हो चुका है (रज़ि.)। मुस्लिम की रिवायत में तीन आदमी और हैं एक बूढ़ा ह़रामकार, दूसरे झूठा बादशाह, तीसरे मग़रूर फ़क़ीर। एक रिवायत में टख़्नों से नीचे इज़ार लटकाने वाला, दूसरा ख़ैरात करके एह़सान जताने वाला, तीसरा झूठी क़सम खाकर माल बेचने वाला मज़्कूर है। एक रिवायत में क़सम खाकर किसी का माल छीन लेने वाला मज़्कूर है।

बाब 49 : औरतों से बेअ़त लेना, उसको इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से रिवायत किया है

٤٩- باب بَيْعَةِ النِّسَاءِ

رَوَاهُ ابْنُ عَبَّاسٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ.

तश्रीह़ : ह़दीस़ बाब में ब सिलसिला बेअ़त लफ़्ज़ **बैन अयदियकुम व अरजुलकुम** आया है वो इसलिये कि अकस़र गुनाह हाथ और पैर से स़ादिर होते हैं। इसलिये इफ़्तिरा में उन्हों का बयान किया। कुछ ने कहा ये मुह़ावरा है जैसे कहते हैं, **बिमा कसबत अयदियकुम** और पैर का ज़िक्र मह़ज़ ताकीद के लिये है। कुछ ने कहा **बन अयदियकुम व अरजुलकुम**

से क़ल्ब मुराद है। इफ़्तिरा पहले क़ल्ब से किया जाता है। आदमी दिल में उसकी निय्यत करता है फिर ज़ुबान से निकालता है। ह़दीष़ ज़ैल का ता'ल्लुक़ बाब का तर्जुमा से समझ में नहीं आता मगर इमाम बुख़ारी (रह़.) की बारीकबीनी है कि ये शर्तें सूरह मुम्तह़िना में क़ुर्आन मजीद में औरतों के बाब में मज़्कूर हैं, **या अय्युहन्नबिय्यु इज़ा जाअकल मु'मिनात युबायिअनक अ़ला अल्ला युश्रिक्न बिल्लाहि शैआ** अख़ीर आयत तक तो इमाम बुख़ारी (रह़.) ने उ़बादह की ह़दीष़ बयान करके इस आयत की त़रफ़ इशारा किया जिसमें स़राह़तन औ़रतों का ज़िक्र है। कुछ ने कहा इमाम बुख़ारी (रह़.) ने अपनी आ़दत के मुवाफ़िक़ इस ह़दीष़ के दूसरे त़रीक़ की त़रफ़ इशारा किया। इसमें स़ाफ़ यूँ मज़्कूर है कि उ़बादह ने कहा आँह़ज़रत (ﷺ) ने हमसे उन शर्तों पर बेअ़त ली जिन पर औ़रतों से बेअ़त की कि हम अल्लाह के साथ किसी को शरीक न करेंगी, चोरी न करेंगी। ह़दीष़ दाम में औ़रतों से बेअ़त करना मज़्कूर है। निसाई और त़बरी की रिवायत में यूँ है, उमैमा बिन्ते रफ़ीक़ा (रज़ि.) कई औ़रतों के साथ आँह़ज़रत (ﷺ) के पास गई। कहने लगी हाथ लाइये हम आपसे मुस़ाफ़ा करें। आपने फ़र्माया मैं औ़रतों से मुस़ाफ़ा नहीं करता। यह्या बिन सलाम ने अपनी तफ़्सीर में शअबी से निकाला कि औ़रतें कपड़ा रखकर आपका हाथ थामतीं या'नी बेअ़त के वक़्त।

7213. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐ़ब ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुह्री ने (दूसरी सनद) और लैष़ ने बयान किया कि मुझसे यूनुस ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, कहा मुझको अबू इदरीस ख़ौलानी ने ख़बर दी, उन्होंने उ़बादह बिन स़ामित (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि हम मज्लिस में मौजूद थे कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया मुझसे बेअ़त करो कि अल्लाह के साथ किसी को शरीक नहीं ठहराओगे, चोरी नहीं करोगे, ज़िना नहीं करोगे, अपनी औलाद को क़त्ल नहीं करोगे और अपनी त़रफ़ से गढ़कर किसी पर बोह्तान नहीं लगाओगे और नेक काम में नाफ़र्मानी नहीं करोगे। पस जो कोई तुममें से इस वादे को पूरा करेगा उसका ष़वाब अल्लाह के यहाँ उसे मिलेगा और जो कोई इन कामों में से किसी बुरे काम को करेगा, उसकी सज़ा उसे दुनिया में ही मिल जाएगी तो ये उसके लिये कफ़्फ़ारा होगा और जो कोई इनमें से किसी बुराई का काम करेगा और अल्लाह पाक उसे छुपा लेगा तो उसका मामला अल्लाह के ह़वाले है। चाहे तो उसकी सज़ा दे और चाहे तो उसे माफ़ कर दे। चुनाँचे हमने उस पर आँह़ज़रत (ﷺ) से बेअ़त की। (राजेअ़ : 18)

٧٢١٣- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، وَقَالَ اللَّيْثُ، حَدَّثَنِي يُونُسُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ أَخْبَرَنِي أَبُو إِدْرِيسَ الْخَوْلاَنِيُّ أَنَّهُ سَمِعَ عُبَادَةَ بْنَ الصَّامِتِ يَقُولُ: قَالَ لَنَا رَسُولُ اللهِ ﷺ وَنَحْنُ فِي مَجْلِسٍ: ((تُبَايِعُونِي عَلَى أَنْ لاَ تُشْرِكُوا بِاللهِ شَيْئًا وَلاَ تَسْرِقُوا وَلاَ تَزْنُوا، وَلاَ تَقْتُلُوا أَوْلاَدَكُمْ وَلاَ تَأْتُوا بِبُهْتَانٍ تَفْتَرُونَهُ بَيْنَ أَيْدِيكُمْ وَأَرْجُلِكُمْ، وَلاَ تَعْصُوا فِي مَعْرُوفٍ فَمَنْ وَفَى مِنْكُمْ فَأَجْرُهُ عَلَى اللهِ، وَمَنْ أَصَابَ مِنْ ذَلِكَ شَيْئًا فَعُوقِبَ فِي الدُّنْيَا فَهُوَ كَفَّارَةٌ لَهُ، وَمَنْ أَصَابَ مِنْ ذَلِكَ شَيْئًا فَسَتَرَهُ اللهُ فَأَمْرُهُ إِلَى اللهِ إِنْ شَاءَ عَاقَبَهُ، وَإِنْ شَاءَ عَفَا عَنْهُ)) فَبَايَعْنَاهُ عَلَى ذَلِكَ.

[راجع: ١٨]

बेअ़त इक़रार को कहते हैं जो ख़लीफ़ा-ए-इस्लाम के हाथ पर हाथ रखकर किया जाए या फिर किसी नेक स़ालेह़ इंसान के हाथ पर हो।

7214. हमसे मह़मूद बिन ग़ीलान ने बयान किया, कहा हमसे

٧٢١٤- حَدَّثَنَا مَحْمُودٌ، حَدَّثَنَا عَبْدُ

ज़्अब्दुर्रज़्ज़ाक़ बिन हम्माम ने बयान किया, कहा हमको मअ़मर ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुह्री ने, उन्हें उ़र्वा ने और उनसे आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) औरतों से ज़ुबानी इस आयत के अह्काम की बेअ़त लेते कि वो अल्लाह के साथ किसी को शरीक नहीं ठहराएंगी आख़िर आयत तक। बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के हाथ ने कभी किसी औ़रत का हाथ नहीं छुआ, सिवा उस औ़रत के जो आपकी लौण्डी हो। (राजेअ : 2713)

الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يُبَايِعُ النِّسَاءَ بِالْكَلاَمِ بِهَذِهِ الآيَةِ ﴿لاَ يُشْرِكْنَ بِاللهِ شَيْئًا﴾ [الممتحنة: ١٢] قَالَتْ : وَمَا مَسَّتْ يَدُ رَسُولِ اللهِ ﷺ يَدَ امْرَأَةٍ إِلاَّ امْرَأَةً يَمْلِكُهَا. [راجع: ٢٧١٣]

या आपकी बीवी हो। उन सबसे ग़ैर औ़रतें मुराद हैं। बेअ़त में भी आपने उनका हाथ नहीं छुआ। निसाई और त़बरी की रिवायत में यूँ है, उमैमा बिन्ते रक़ीक़ा कई औ़रतों के साथ आँह़ज़रत (ﷺ) के पास आईं और मुस़ाफ़े के लिये कहा। आपने फ़र्माया कि मैं औ़रतों से मुस़ाफ़ा नहीं करता।

7215. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल वारिष़ ने बयान किया, उनसे अय्यूब ने, उनसे ह़फ़्स़ा ने और उनसे उम्मे अ़तिया (रज़ि.) ने कि हमने रसूलुल्लाह (ﷺ) से बेअ़त की तो आपने मेरे सामने सूरह मुम्तह़िना की ये आयत पढ़ी, ये कि वो अल्लाह के साथ किसी को शरीक न ठहराएँगी आख़िर तक और हमें आपने नौह़ा से मना किया फिर हममें से एक औ़रत ने अपना हाथ खींच लिया और कहा कि फ़लाँ औ़रत ने किसी नौह़ा में मेरी मदद की थी (मेरे साथ मिलकर नौह़ा किया था) और मैं उसे उसका बदला देना चाहती हूँ। इस पर आँह़ज़रत (ﷺ) ने कुछ नहीं कहा, फिर वो गईं और वापस आईं (मेरे साथ बेअ़त करने वाली औ़रतों में से) किसी औ़रत ने उस बेअ़त को पूरा नहीं किया, सिवा उम्मे सुलैम और उम्मे अ़ला और मुआ़ज़ (रज़ि.) की बीवी अबू सब्रह् की बेटी के या अबू सब्रह् की बेटी और मुआ़ज़ की बीवी के और सब औ़रतों ने अह्कामे बेअ़त को पूरे त़ौर पर अदा न करके बेअ़त को नहीं निभाया। ग़फ़रल्लाहु लहुन्न अज्मईन। (राजेअ : 1306)

٧٢١٥- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ، عَنْ أَيُّوبَ، عَنْ حَفْصَةَ، عَنْ أُمِّ عَطِيَّةَ قَالَتْ: بَايَعْنَا النَّبِيَّ ﷺ فَقَرَأَ عَلَيَّ ﴿أَنْ لاَ يُشْرِكْنَ بِاللهِ شَيْئًا﴾ [الممتحنة : ١٢] وَنَهَانَا عَنِ النِّيَاحَةِ، فَقَبَضَتِ امْرَأَةٌ مِنَّا يَدَهَا فَقَالَتْ فُلاَنَةُ أَسْعَدَتْنِي وَأَنَا أُرِيدُ أَنْ أَجْزِيَهَا فَلَمْ يَقُلْ شَيْئًا فَذَهَبَتْ ثُمَّ رَجَعَتْ فَمَا وَفَتِ امْرَأَةٌ إِلاَّ أُمُّ سُلَيْمٍ وَأُمُّ الْعَلاَءِ وَابْنَةُ أَبِي سَبْرَةَ امْرَأَةُ مُعَاذٍ أَوِ ابْنَةُ أَبِي سَبْرَةَ وَامْرَأَةُ مُعَاذٍ.

[راجع: ١٣٠٦]

तश्रीह : रिवायत में हाथ खींचने से मुराद ये है कि बेअ़त की शर्तें कुबूल करने में उसने तवक़्क़ुफ़ किया। बेअ़त पर क़ायम रहने वाली वो पाँच औ़रतें ये हैं। उम्मे सुलैम और उम्मे अ़ला, अबी सब्रह् की बेटी और मुआ़ज़ की औ़रत, और एक औ़रत ये सब नौह़ा करने से रुक गईं। ये रावी का शक है कि अबू सब्रह् की बेटी वो मुआ़ज़ की बीवी थी या मुआ़ज़ की बीवी उसके सिवा थी। ह़ाफ़िज़ ने कहा स़ह़ीह़ ये है कि स़ह़ीह़ वाव अ़त़फ़ के साथ है क्यों कि मुआ़ज़ की बीवी उम्मे अ़म्र बिन्ते ख़ल्लाद थी। निसाई की रिवायत में स़ाफ़ यूँ है आपने फ़र्माया जा इसका बदला कर आ वो गई फिर आई और आपसे बेअ़त की शायद ये नौह़ा उस क़िस्म का न होगा जो क़त्अ़न ह़राम है या ये इजाज़त ख़ास़ त़ौर से उस औ़रत के लिये होगी। कुछ मालिकिया का ये क़ौल है कि नौह़ा ह़राम नहीं है मगर नौह़ा में जाहिलियत के ह़राम काम हैं जैसे कपड़े फाड़ना, चेहरे या बदन

नोचना, ख़ाक उड़ाना। कुछ ने कहा उस वक़्त तक नौहा हराम नहीं हुआ था। क़स्तलानी ने कहा सहीह ये है कि पहले नौहा जाइज़ था फिर मकरूहे तन्ज़ीही हुआ फिर मकरूहे तहरीमी। (वहीदी)

बाब 50 : उसका गुनाह जिसने बेअ़त तोड़ी

٥٠- باب مَنْ نَكَثَ بَيْعَةً

और अल्लाह तआ़ला का सूरह फ़तह में फ़र्मान यक़ीनन जो लोग आपसे बेअ़त करते हैं वो दरहक़ीक़त अल्लाह से बेअ़त करते हैं। अल्लाह का हाथ उनके हाथों के ऊपर है। पस जो कोई इस बेअ़त को तोड़ेगा बिला शक उसका नुक़्सान उसे ही पहुँचेगा और जो कोई इस अ़हद को पूरा करे जो अल्लाह से उसने किया है तो अल्लाह उसे बड़ा अज्र अ़ता करेगा। (अल फ़तह : 10)

وَقَوْلِهِ تَعَالَى: ﴿إِنَّ الَّذِينَ يُبَايِعُونَكَ إِنَّمَا يُبَايِعُونَ اللهَ يَدُ اللهِ فَوْقَ أَيْدِيهِمْ فَمَنْ نَكَثَ فَإِنَّمَا يَنْكُثُ عَلَى نَفْسِهِ وَمَنْ أَوْفَى بِمَا عَاهَدَ عَلَيْهِ اللهَ فَسَيُؤْتِيهِ أَجْرًا عَظِيمًا﴾ [الفتح : ١٠].

और वो चौदह सौ हज़रात थे। ये अस्हाबुश्शजरा के नाम से मशहूर हैं, रज़ियल्लाहु अ़न्हुम अज्मईन।

7216. हमसे अबू नुऐ़म (फ़ज़्ल बिन दुकैन) ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन मुंकदिर ने, उन्होंने कहा मैंने जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह अंसारी (रज़ि.) से सुना, वो कहते थे एक गंवार (नाम मा'लूम) या क़ैस बिन अबी हाज़िम आँहज़रत (ﷺ) के पास आया, कहने लगा या रसूलल्लाह! इस्लाम पर मुझसे बेअ़त लीजिए। आपने उससे बेअ़त ले ली, फिर दूसरे दिन बुख़ार में हिलहिलाता आया कहने लगा मेरी बेअ़त फ़स्ख़ कर दीजिए। आपने इंकार किया (बेअ़त फ़स्ख़ नहीं की) जब वो पीठ मोड़कर चलता हुआ तो फ़र्माया मदीना क्या है (लोहार की भट्टी है) पलीद और नापाक (मैल कुचैल) को छांट डालता है और खरा सुथरा माल रख लेता है। (राजेअ : 1883)

٧٢١٦- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ الْمُنْكَدِرِ سَمِعْتُ جَابِرًا قَالَ: جَاءَ أَعْرَابِيٌّ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ، فَقَالَ: بَايِعْنِي عَلَى الإِسْلاَمِ فَبَايَعَهُ عَلَى الإِسْلاَمِ ثُمَّ جَاءَ الْغَدَ مَحْمُومًا فَقَالَ : أَقِلْنِي فَأَبَى، فَلَمَّا وَلَّى قَالَ: ((الْمَدِينَةُ كَالْكِيرِ تَنْفِي خَبَثَهَا وَيَنْصَعُ طِيبُهَا)).

[راجع: ١٨٨٣]

बाब 51 : एक ख़लीफ़ा मरते वक़्त किसी और को ख़लीफ़ा कर जाए तो कैसा है?

٥١- باب الاسْتِخْلاَفِ

व अय तअ़य्यनल ख़लीफ़तु इन्द मौतिही ख़लीफ़तन बअ़दहू औ युअ़य्यिनु जमाअ़तन लियतख़य्यरू मिन्हुम वाहिदन (फ़तह) या'नी ख़लीफ़ा अपनी मौत के वक़्त किसी को ख़लीफ़ा नामज़द कर जाए या एक जमाअ़त बना जाए जो अपने में से किसी एक को ख़लीफ़ा मुंतख़ब कर लें।

7217. हमसे यह्या बिन यह्या ने बयान किया, कहा हमको सुलैमान बिन बिलाल ने ख़बर दी, उन्हें यह्या बिन सईद ने, कहा मैंने क़ासिम बिन मुहम्मद से सुना कि आइशा (रज़ि.) ने कहा (अपने सरदर्द पर) हाय सर फटा जाता है। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, अगर तुम मर जाओ और मैं ज़िन्दा रहा तो मैं तुम्हारे लिये मग़्फ़िरत माँगूगा और तुम्हारे लिये दुआ करूँगा।

٧٢١٧- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ يَحْيَى، أَخْبَرَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ بِلاَلٍ، عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ سَمِعْتُ الْقَاسِمَ بْنَ مُحَمَّدٍ قَالَ: قَالَتْ عَائِشَةُ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا وَارَأْسَاهُ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((ذَاكِ لَوْ كَانَ وَأَنَا حَيٌّ

فَأَسْتَغْفِرُ لَكِ وَأَدْعُو لَكِ)) فَقَالَتْ عَائِشَةُ: وَاثُكْلِيَاهُ وَاللهِ إِنِّي لأَظُنُّكَ تُحِبُّ مَوْتِي وَلَوْ كَانَ ذَلِكَ لَظَلِلْتَ آخِرَ يَوْمِكَ مُعَرِّسًا بِبَعْضِ أَزْوَاجِكَ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((بَلْ أَنَا وَارَأْسَاهُ لَقَدْ هَمَمْتُ أَوْ أَرَدْتُ أَنْ أُرْسِلَ إِلَى أَبِي بَكْرٍ وَابْنِهِ فَأَعْهَدَ أَنْ يَقُولَ الْقَائِلُونَ أَوْ يَتَمَنَّى الْمُتَمَنُّونَ)) ثُمَّ قُلْتُ: يَأْبَى اللهُ وَيَدْفَعُ الْمُؤْمِنُونَ أَوْ يَدْفَعُ اللهُ وَيَأْبَى الْمُؤْمِنُونَ. [راجع: ٥٦٦٦]

आइशा (रज़ि.) ने उस पर कहा अफ़सोस मेरा ख़याल है कि आप मेरी मौत चाहते हैं और अगर ऐसा हो गया तो आप दिन के आख़िरी वक़्त ज़रूर किसी दूसरी औरत से शादी कर लेंगे। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया तो नहीं बल्कि मैं अपना सर दुखने का इज़्हार करता हूँ। मेरा इरादा हुआ था कि अबूबक्र और उनके बेटे को बुला भेजूँ और उन्हें (अबूबक्र को) ख़लीफ़ा बना दूँ ताकि उस पर किसी दा'वा करने वाले या उसकी ख़्वाहिश रखने वाले के लिये कोई गुंजाइश न रहे लेकिन फिर मैंने सोचा कि अल्लाह ख़ुद (किसी दूसरे को ख़लीफ़ा) नहीं होने देगा और मुसलमान भी उसे दूर करेंगे। या (आपने इस तरह फ़र्माया कि) अल्लाह दूर करेगा और मुसलमान किसी और को ख़लीफा न होने देंगे। (राजेअ : 5666)

तश्रीह : दूसरी रिवायत में यूँ है कि आपने मर्ज़े मौत में फ़र्माया, आइशा! अपने बाप और भाई को बुला लो ताकि मैं अबूबक्र (रज़ि.) के लिये ख़िलाफ़त लिख जाऊँ। उसके आख़िर में भी ये है कि अल्लाह पाक और मुसलमान लोग अबूबक्र (रज़ि.) के सिवा और किसी की ख़िलाफ़त नहीं मानेंगे। इस ह़दीष़ से स़ाफ़ मा'लूम हुआ कि ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) की ख़िलाफ़त इरादा-ए-इलाही और मर्ज़ी-ए-नबवी के मुवाफ़िक़ थी। अब जो लोग ऐसे पाक नफ़्स ख़लीफ़ा को ग़ास़िब और ज़ालिम जानते हैं वो ख़ुद नापाक और पलीद हैं।

٧٢١٨- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ، أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ، عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ، عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ قَالَ: قِيلَ لِعُمَرَ أَلاَ تَسْتَخْلِفُ؟ قَالَ: إِنْ أَسْتَخْلِفْ فَقَدِ اسْتَخْلَفَ مَنْ هُوَ خَيْرٌ مِنِّي أَبُو بَكْرٍ، وَإِنْ أَتْرُكْ فَقَدْ تَرَكَ مَنْ هُوَ خَيْرٌ مِنِّي رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَأَثْنَوْا عَلَيْهِ فَقَالَ: رَاغِبٌ رَاهِبٌ وَدِدْتُ أَنِّي نَجَوْتُ مِنْهَا كَفَافًا لاَ لِي وَلاَ عَلَيَّ لاَ أَتَحَمَّلُهَا حَيًّا وَمَيِّتًا.

7218. हमसे मुहम्मद बिन यूसुफ़ फ़रयाबी ने बयान किया, कहा हमको सुफ़यान ष़ौरी ने ख़बर दी, उन्हें हिशाम बिन उर्वा ने, उन्हें उनके वालिद ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) जब ज़ख़्मी हुए तो उनसे कहा गया कि आप अपना ख़लीफ़ा किसी को क्यूँ नहीं मुंतख़ब कर देते? आपने फ़र्माया कि अगर किसी का ख़लीफ़ा मुंतख़ब करता हूँ (तो उसकी भी मिष़ाल है कि) उस शख़्स़ ने अपना ख़लीफ़ा मुंतख़ब किया था जो मुझसे बेहतर थे या'नी अबूबक्र (रज़ि.) और अगर मैं उसे मुसलमानों की राय पर छोड़ता हूँ तो (उसकी भी मिष़ाल मौजूद है कि) उस बुज़ुर्ग ने (ख़लीफ़ा का इंतिख़ाब मुसलमानों के लिये) छोड़ दिया था जो मुझसे बेहतर था या'नी रसूले करीम (ﷺ)। फिर लोगों ने आपकी ता'रीफ़ की, फिर उन्होंने कहा कि कोई तो दिल से मेरी ता'रीफ़ करता है कोई डरकर। अब मैं तो यही ग़नीमत समझता हूँ कि ख़िलाफ़त की ज़िम्मेदारियों में अल्लाह के यहाँ बराबर बराबर छूट जाऊँ, न मुझे कुछ ष़वाब मिले और न कोई अ़ज़ाब। मैंने ख़िलाफ़त का बोझ अपनी ज़िंदगी भर उठाया। अब मरने पर मैं इस भार को नहीं उठाऊँगा।

तशरीह : सुब्हानल्लाह! ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) की एह़तियात उन्होंने जब देखा कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने तो किसी को ख़लीफ़ा नहीं किया, मुसलमानों की राय पर छोड़ा और अबूबक्र सि़द्दीक़ (रज़ि.) ख़लीफ़ा कर गये तो वो ऐसे रास्ते चले जिसमें दोनो की पैरवी हो जाती है या'नी कुछ मश्विरा पर छोड़ा कुछ मुक़र्रर कर दिया। उन्होंने छः आदमियों को जो उस वक़्त अफ़ज़ल और आ़ला थे, मुअ़य्यन किया फिर उन छः में से किसी की तअ़य्युन मुसलमानों की राय पर छोड़ दी। गोया दोनों सुन्नतों पर अ़मल किया। दूसरे तक़्वा शिआ़री देखिए कि अ़शरा मुबश्शरा में से सई़द बिन ज़ैद भी ज़िन्दा थे मगर उनका नाम तक न लिया, इस ख़्याल से कि वो ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) से कुछ रिश्ता रखते थे। हाय! ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) की त़रह़ मुसलमानों में कौन बेनफ़्स और आ़दिल और मुंसि़फ़ पैदा हुआ है। उनका एक एक काम ऐसा है जो उनकी फ़ज़ीलत पहचानने के लिये काफ़ी है और अफ़सोस है इन अ़क़्ल के अँधों पर जो ऐसे फ़र्दे फ़रीद को जिसका नज़ीर इस्लाम में नहीं हुआ बुरा जानते हैं।

7219. हमसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमको हिशाम ने ख़बर दी, उन्हें मअ़मर ने, उन्हें ज़ुह्री ने, उन्हें अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने ख़बर दी कि उन्होंने उ़मर (रज़ि.) का दूसरा ख़ुत्बा सुना जब आप मिम्बर पर बैठे हुए थे, ये वाक़िया रसूलल्लाह (ﷺ) की वफ़ात के दूसरे दिन का है। उन्होंने कलिमा-ए-शहादत पढ़ा, ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ख़ामोश थे और कुछ नहीं बोल रहे थे, फिर कहा मुझे उम्मीद थी कि आँह़ज़रत (ﷺ) ज़िन्दा रहेंगे और हमारे कामों की तदबीर व इंतिज़ाम करते रहेंगे। उनका मंशा ये था कि आँह़ज़रत (ﷺ) उन सब लोगों के बाद तक ज़िन्दा रहेंगे तो अगर आज मुह़म्मद (ﷺ) वफ़ात पा गये हैं तो अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारे सामने नूर (क़ुर्आन) को बाक़ी रखा है जिसके ज़रिये तुम हिदायत हासि़ल करते रहोगे और अल्लाह ने ह़ज़रत मुह़म्मद (ﷺ) को इससे हिदायत की और ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) आँह़ज़रत (ﷺ) के साथी (जो ग़ारे स़ौर में) दो में से दूसरे हैं, बिला शक वो तुम्हारे उमूरे ख़िलाफ़त के लिये तमाम मुसलमानों में सबसे बेहतर हैं, पस उठो और उनसे बेअ़त करो। एक जमाअ़त उनसे पहले ही सक़ीफ़ा बनी साएदा में बेअ़त कर चुकी थी, फिर आ़म लोगों ने मिम्बर पर बेअ़त की। ज़ुह्री ने बयान किया, उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने, उन्होंने उ़मर (रज़ि.) से सुना कि वो ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) से, उस दिन कह रहे थे, मिम्बर पर चढ़ आइये। चुनाँचे वो इसका बराबर इस़रार करते रहे, यहाँ तक कि अबूबक्र (रज़ि.) मिम्बर पर चढ़ गये और सब लोगों ने आपसे बेअ़त की।

(दीगर मक़ाम : 7269)

٧٢١٩- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى، أَخْبَرَنَا هِشَامٌ، عَنْ مَعْمَرٍ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، أَخْبَرَنِي أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّهُ سَمِعَ خُطْبَةَ عُمَرَ الآخِرَةَ حِينَ جَلَسَ عَلَى الْمِنْبَرِ وَذَلِكَ الْغَدَ مِنْ يَوْمِ تُوُفِّيَ النَّبِيُّ ﷺ فَتَشَهَّدَ وَأَبُو بَكْرٍ صَامِتٌ لاَ يَتَكَلَّمُ قَالَ: كُنْتُ أَرْجُو أَنْ يَعِيشَ رَسُولُ اللهِ ﷺ حَتَّى يَدْبُرَنَا، يُرِيدُ بِذَلِكَ أَنْ يَكُونَ آخِرَهُمْ فَإِنْ يَكُ مُحَمَّدٌ ﷺ قَدْ مَاتَ فَإِنَّ اللهَ تَعَالَى قَدْ جَعَلَ بَيْنَ أَظْهُرِكُمْ نُورًا تَهْتَدُونَ بِهِ، هَدَى اللهُ مُحَمَّدًا ﷺ وَإِنَّ أَبَا بَكْرٍ صَاحِبُ رَسُولِ اللهِ ﷺ ثَانِيَ اثْنَيْنِ، فَإِنَّهُ أَوْلَى الْمُسْلِمِينَ بِأُمُورِكُمْ فَقُومُوا فَبَايِعُوهُ، وَكَانَ طَائِفَةٌ مِنْهُمْ قَدْ بَايَعُوهُ قَبْلَ ذَلِكَ فِي سَقِيفَةِ بَنِي سَاعِدَةَ، وَكَانَتْ بَيْعَةُ الْعَامَّةِ عَلَى الْمِنْبَرِ قَالَ الزُّهْرِيُّ: عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ سَمِعْتُ عُمَرَ يَقُولُ لأَبِي بَكْرٍ يَوْمَئِذٍ: اصْعَدِ الْمِنْبَرَ فَلَمْ يَزَلْ بِهِ حَتَّى صَعِدَ الْمِنْبَرَ فَبَايَعَهُ النَّاسُ عَامَّةً. [طرفه في : ٧٢٦٩].

तश्रीह : सक़ीफ़ा का तर्जुमा मौलाना वहीदुज़्ज़माँ (रह.) ने मँडवे से किया है। उ़र्फ़े आ़म में बनू साएदा की चौपाली ठीक है। **कानत मकानु इज्तिमाइहिम लिल्हुकूमाति** या'नी वो पंचायत घर था। इब्ने मुईन ने कहा कि ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) का इस़रार ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) को मिम्बर पर चढ़ाने का दुरुस्त था ताकि आपका सबसे तआ़रुफ़ हो जाए और ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) तवाज़ोअ़ की बिना पर चढ़ने से इंकार कर रहे थे। आख़िर चढ़ गये और अब बेअ़ते उ़मूमी हुई जबकि सक़ीफ़ा बनू साएदा की बेअ़त ख़ुस़ूसी थी। बाब की मुनासबत इससे निकली कि ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने अबूबक्र सि़द्दीक़ (रज़ि.) की निस्बत फ़र्माया वो तुम सब में ख़िलाफ़त के ज़्यादा मुस्तह़िक़ और ज़्यादा लायक़ हैं। शिया कहते हैं कि ह़ज़रत सि़द्दीक़ (रज़ि.) की ख़िलाफ़त ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ही के ज़ोर और इस़रार से हुई वरना ह़ज़रत सि़द्दीक़ (रज़ि.) बिलकुल दुर्वेश सि़फ़त और मुंकसिरुल मिज़ाज और ख़िलाफ़त से मुतनफ़्फ़िर थे। हम कहते हैं अगर ऐसा ही हो जब भी क्या क़बाह़त है। ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने अपने नज़दीक जिसको ख़िलाफ़त के लायक़ समझा इसके लिये ज़ोर दिया और ह़क़पसंद लोगों का यही क़ायदा होता है। अगर ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) की ये राय ग़लत़ होती तो दूसरे हज़ारों स़ह़ाबा जो वहाँ मौजूद थे वो क्यूँ इत्तिफ़ाक़ करते? ग़र्ज़ बइज्माअ़ स़ह़ाबा अबूबक्र सि़द्दीक़ (रज़ि.) ख़िलाफ़त के अहल और क़ाबिल ठहरे।

7220. हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने, उनसे मुहम्मद बिन जुबैर बिन मुत़इम ने, उनसे उनके वालिद ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) के पास एक ख़ातून आईं और किसी मामले में आपसे बातचीत की, फिर आँह़ज़रत (ﷺ) ने उनसे कहा कि वो दोबारा आपके पास आएँ। उन्होंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! अगर मैं आऊँ और आपको न पाऊँ तो फिर आप क्या फ़र्माते हैं? जैसे उनका इशारा वफ़ात की त़रफ़ हो। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अगर मुझे न पाओ तो अबूबक्र (रज़ि.) के पास आइयो। (राजेअ़ : 3659)

٧٢٢٠- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ، عَنْ أَبِيهِ عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ جُبَيْرِ بْنِ مُطْعِمٍ عَنْ أَبِيهِ قَالَ: أَتَتِ النَّبِيَّ ﷺ امْرَأَةٌ فَكَلَّمَتْهُ فِي شَيْءٍ فَأَمَرَهَا أَنْ تَرْجِعَ إِلَيْهِ قَالَتْ: يَا رَسُولَ اللهِ أَرَأَيْتَ إِنْ جِئْتُ وَلَمْ أَجِدْكَ كَأَنَّهَا تُرِيدُ الْمَوْتَ قَالَ : ((إِنْ لَمْ تَجِدِينِي فَأْتِي أَبَا بَكْرٍ)). [راجع: ٣٦٥٩]

तश्रीह : ये ह़दीष़ स़ाफ़ दलील है इस बात की कि आँह़ज़रत (ﷺ) को मा'लूम था कि आपके बाद ह़ज़रत अबूबक्र (रज़ि.) ख़लीफ़ा होंगे। दूसरी रिवायत में जिसे त़बरानी और इस्माईली ने निकाला यूँ है कि आँह़ज़रत (ﷺ) से एक गंवार ने बेअ़त की, पूछा अगर आपकी वफ़ात हो जाए तो किसके पास आऊँ? आपने फ़र्माया कि अबूबक्र (रज़ि.) के पास आना। पूछा अगर वो भी गुज़र जाएँ? फ़र्माया कि फिर उ़मर (रज़ि.) के पास। तर्तीब ख़िलाफ़त का ये खुला हुआ षुबूत है।

7221. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे यह्या ने बयान किया, उनसे सुफ़यान ने, उनसे क़ैस बिन मुस्लिम ने, उनसे त़ारिक़ बिन शिहाब ने कि अबूबक्र (रज़ि.) ने क़बाइल बुज़ाख़ा के वफ़्द से (जो आँह़ज़रत ﷺ की वफ़ात के बाद मुर्तद हो गया था और अब मुआ़फ़ी केलिये आया था) फ़र्माया कि ऊँटों की दुमों के पीछे पीछे जंगलों मे घूमते रहो, यहाँ तक कि अल्लाह तआ़ला अपने नबी (ﷺ) के ख़लीफ़ा और मुहाजिरीन को कोई अम्र बतला दे जिसकी वजह से वो तुम्हारा क़ुसूर माफ़ कर दे।

٧٢٢١- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا يَحْيَى عَنْ سُفْيَانَ، حَدَّثَنِي قَيْسُ بْنُ مُسْلِمٍ، عَنْ طَارِقِ بْنِ شِهَابٍ، عَنْ أَبِي بَكْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ لِوَفْدِ بُزَاخَةَ: تَتْبَعُونَ أَذْنَابَ الإِبِلِ حَتَّى يُرِيَ اللهُ خَلِيفَةَ نَبِيِّهِ ﷺ وَالْمُهَاجِرِينَ أَمْرًا يَعْذِرُونَكُمْ بِهِ.

तश्रीह : ये बुज़ाख़ा वाले बहुत से लोग थे। तै और असद और ग़त्फ़ान क़बीलों के। उन्होंने क्या किया कि आँहज़रत (ﷺ) की वफ़ात के बाद इस्लाम से फिर गये और तुलैहा बिन ख़ुवैलिद असदी पर ईमान लाए जिसने आँहज़रत (ﷺ) के बाद पैग़म्बरी का झूठा दा'वा किया था। ख़ालिद बिन वलीद (रज़ि.) जब मुसैलमा को क़त्ल व क़मअ से फ़ारिग़ हुए तो उन लोगों की तरफ़ मुतवज्जह हुए। आख़िर उन पर ग़ालिब आए। उन्होंने आजिज़ होकर तौबा की और अपनी तरफ़ से चंद लोगों को माफ़ी क़ुसूर के लिये अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) के पास भिजवाया और अबूबक्र (रज़ि.) ने फ़र्माया या तो जंग इख़्तियार करो, माल अस्बाब घर बार अहलो अयाल हम सब तुमसे ले लेंगे और जो लूट का माल हाथ आया है वो मुसलमान पर तक़्सीम हो जाएगा और जो लोग हममे से मारे गये उनकी दियत दो। तुम्में से जो लोग मारे गये उनको दाख़िले जहन्नम समझो और तुम ग़रीब रइय्यत की तरह जंगल में ऊँट चराते रहो, यहाँ तक कि अल्लाह तआला अपने पैग़म्बर के ख़लीफ़ा और मुहाजिरीन को वो बात बतलाए जिससे वो तुम्हारा क़ुसूर माफ़ करे।

बाब

باب

7222,7223. हमसे मुहम्मद बिन मुषन्ना ने बयान किया, कहा हमसे गुन्दर मुहम्मद बिन जा'फ़र ने बयान किया, कहा हमसे शुअबा बिन हज्जाज ने बयान किया, उनसे अब्दुल मलिक बिन उमैर ने, उन्होंने जाबिर बिन समुरह (रज़ि.) से सुना, कहा कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना, आपने फ़र्माया कि (मेरी उम्मत में) बारह अमीर होंगे, फिर आपने कोई ऐसी एक बात फ़र्माई जो मैंने नहीं सुनी। बाद में मेरे वालिद ने बताया कि आपने ये फ़र्माया कि वो सबके सब क़ुरैश ख़ानदान से होंगे।

٧٢٢٢، ٧٢٢٣- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ سَمِعْتُ جَابِرَ بْنَ سَمُرَةَ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: ((يَكُونُ اثْنَا عَشَرَ أَمِيرًا)) فَقَالَ: كَلِمَةً لَمْ أَسْمَعْهَا فَقَالَ أَبِي: إِنَّهُ قَالَ: ((كُلُّهُمْ مِنْ قُرَيْشٍ)).

तश्रीह : दूसरी रिवायत में है ये दीन बराबर इज़्ज़त से रहेगा, बारह ख़लीफ़ाओं के ज़माने तक। अबू दाऊद की रिवायत में यूँ है कि ये दीन बराबर क़ायम रहेगा, यहाँ तक कि तुम पर बारह ख़लीफ़ा होंगे और सब पर उम्मत इत्तिफ़ाक़ करेगी। ये बारह ख़लीफ़ा आँहज़रत (ﷺ) की उम्मत में गुज़र चुके हैं। हज़रत सिद्दीक़ (रज़ि.) से लेकर उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (रह.) तक चौदह शख़्स हाकिम हुए हैं। उनमें से दो का ज़माना बहुत क़लील रहा। एक मुआविया बिन यज़ीद, दूसरे मरवान का। उनको निकाल डालो तो वही बारह ख़लीफ़ा होते हैं, जिन्होंने बहुत ज़ोर शोर के साथ ख़िलाफ़त की। उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (रह.) के बाद फिर ज़माने का रंग बदल गया और हज़रत हसन और अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) पर गो सब लोग जमा नहीं हुए थे मगर अकषर लोग तो पहले जमा हो गये इसलिये उन दोनों साहिबों की भी ख़िलाफ़त हक़ और सहीह है। इमामिया ने इस हदीष से ये दलील ली है कि बारह ख़लीफ़ा मुराद हैं या'नी हज़रत अली (रज़ि.) से लेकर जनाब मुहम्मद बिन हसन मह्दी तक मगर उसमें ये शुब्हा होता है कि हज़रत हसन (रज़ि.) के बाद फिर किसी इमाम पर लोग जमा नहीं हुए न उनको शौकत और हुकूमत हासिल हुई बल्कि अकषर जान के डर से छुपे रहे तो ये लोग इस हदीष से कैसे मुराद हो सकते हैं, वल्लाहु आलम।

बाब 52 : झगड़ा और फ़िस्क़ व फ़िजूर करने वालों को मा'लूम होने के बाद घरों से निकालना

٥٢- باب إِخْرَاجِ الْخُصُومِ وَأَهْلِ الرِّيَبِ مِنَ الْبُيُوتِ

उमर (रज़ि.) ने अबूबक्र (रज़ि.) की बहन (उम्मे फ़रवा) को उस वक़्त (घर से) निकाल दिया था जब (अबूबक्र सिद्दीक़

بَعْدَ الْمَعْرِفَةِ وَقَدْ أَخْرَجَ عُمَرُ أُخْتَ أَبِي

बَكْرٍ حِينَ نَاحَتْ.

रज़ि. पर) नौहा कर रही थीं।

٧٢٢٤- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، حَدَّثَنِي مَالِكٌ، عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لَقَدْ هَمَمْتُ أَنْ آمُرَ بِحَطَبٍ يُحْتَطَبُ، ثُمَّ آمُرَ بِالصَّلاَةِ فَيُؤَذَّنُ لَهَا ثُمَّ آمُرَ رَجُلاً فَيَؤُمَّ النَّاسَ ثُمَّ أُخَالِفُ إِلَى رِجَالٍ فَأُحَرِّقَ عَلَيْهِمْ بُيُوتَهُمْ، وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لَوْ يَعْلَمُ أَحَدُكُمْ أَنَّهُ يَجِدُ عَرْقًا سَمِينًا أَوْ مَرْمَاتَيْنِ حَسَنَتَيْنِ لَشَهِدَ الْعِشَاءَ)).

[راجع: ٦٤٤]

7224. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, कहा मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे अबुज़्ज़िनाद ने, उनसे अअ़रज ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है मेरा इरादा हुआ कि मैं लकड़ियों के जमा करने का हुक्म दूँ फिर नमाज़ के लिये अज़ान देने का, फिर किसी से कहूँ कि वो लोगो को नमाज़ पढ़ाए और मैं उसके बजाय उन लोगों के पास जाऊँ (जो जमाअ़त में शरीक नहीं होते) और उन्हें उनके घरों समेत जला दूँ। क़सम है उस ज़ात की जिसके हाथ में मेरी जान है कि तुमसे किसी को अगर ये उम्मीद हो कि वहाँ मोटी हड्डी या मरमाते ह़सना (बकरी के खुर) के बीच का गोश्त मिलेगा तो ज़रूर (नमाज़) इशा में शरीक हो। (राजेअ़ : 644)

बाब का मत़लब यूँ निकला कि रसूले पाक (ﷺ) ने नमाज़ बा जमाअ़त तर्क करने वालों को जलाने का इरादा फ़र्माया।

٥٣- باب هَلْ لِلإِمَامِ أَنْ يَمْنَعَ الْمُجْرِمِينَ وَأَهْلَ الْمَعْصِيَةِ مِنَ الْكَلاَمِ مَعَهُ وَالزِّيَارَةِ وَنَحْوِهِ

बाब 53 : क्या इमाम के लिए जाइज़ है कि वो मुज्रिमों और गुनहगारों को अपने साथ बातचीत करने और मुलाक़ात वग़ैरह करने से रोक दे

٧٢٢٥- حَدَّثَنِي يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ عُقَيْلٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ كَعْبِ بْنِ مَالِكٍ أَنَّ عَبْدَ اللهِ بْنَ كَعْبِ بْنِ مَالِكٍ وَكَانَ قَائِدَ كَعْبٍ مِنْ بَنِيهِ حِينَ عَمِيَ قَالَ سَمِعْتُ كَعْبَ بْنَ مَالِكٍ قَالَ: لَمَّا تَخَلَّفَ عَنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ فِي غَزْوَةِ تَبُوكَ فَذَكَرَ حَدِيثَهُ وَنَهَى رَسُولُ اللهِ ﷺ الْمُسْلِمِينَ عَنْ كَلاَمِنَا فَلَبِثْنَا عَلَى ذَلِكَ خَمْسِينَ لَيْلَةً وَآذَنَ رَسُولُ اللهِ ﷺ بِتَوْبَةِ اللهِ عَلَيْنَا.

7225. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ ने बयान किया, उनसे उ़क़ैल ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे अ़ब्दुर्रहमान बिन अ़ब्दुल्लाह बिन कअ़ब बिन मालिक ने कि अ़ब्दुल्लाह बिन कअ़ब बिन मालिक, कअ़ब बिन मालिक (रज़ि.) के नाबीना हो जाने के ज़माने में उनके सब लड़कों में यही रास्ते में उनकेसाथ चलते थे, ने बयान किया कि मैंने कअ़ब बिन मालिक (रज़ि.) से सुना, उन्होंने कहा कि जब वो ग़ज़्वा तबूक़ में रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ नहीं जा सके थे, फिर उन्होंने अपना पूरा वाक़िया बयान किया और आँह़ज़रत (ﷺ) ने मुसलमानों को हमसे बातचीत करने से रोक दिया था तो हम पचास दिन उसी ह़ालत में रहे, फिर आँह़ज़रत (ﷺ) ने ऐलान किया कि अल्लाह ने हमारी तौबा क़ुबूल कर ली है। (राजेअ़ : 2757)

[راجع: ٢٧٥٧]

तशरीह : हज़रत कअ़ब बिन मालिक ने ग़ज़्व-ए-तबूक़ से बिला इजाज़त ग़ैर हाज़िरी की थी और ये बड़ा भारी मिल्ली जुर्म था जो उनसे स़ादिर हुआ। रसूले करीम (ﷺ) ने उनसे और उनके साथियों से पूरा तर्के मवालात फ़र्माया यहाँ तक कि उनकी तौबा अल्लाह ने क़ुबूल की। अब ऐसे मामलात ख़लीफ़ा इस्लाम की स़वाब दीद पर मौक़ूफ़ किये जा सकते हैं।

95. किताबुत्तमन्ना

किताब नेकतरीन आरज़ुओं के जाइज़ होने में

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(तमन्ना उ़र्फ़े आ़म में आदमी का यूँ कहना काश! ऐसा होता, तमन्ना और तरज्जी मे ये फ़र्क़ है कि तमन्ना उस बात में भी होती है जो मुहाल हो जैसे कहना कि काश! जवानी फिर आ जाती और तरज्जो हमेशा उन ही बातों में होती है जो होने वाली हों)

बाब 1 : आरज़ू करने के बारे में और जिसने शहादत की आरज़ू की

١- باب مَا جَاءَ فِي التَّمَنِّي وَمَنْ تَمَنَّى الشَّهَادَةَ

7226. हमसे सईद बिन उ़फ़ैर ने बयान किया, कहा मुझसे लैष़ बिन सअ़द ने, कहा मुझसे अ़ब्दुर्रहमान बिन ख़ालिद ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे अबू सलमा और सईद बिन मुसय्यब ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना, आपने फ़र्माया, उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है। अगर उन लोगों का ख़याल न होता जो मेरे साथ ग़ज़्वा में शरीक न हो सकने को बुरा जानते हैं मगर अस्बाब की कमी की वजह से वो शरीक नहीं हो सकते और कोई ऐसी चीज़ मेरे पास नहीं है जिस पर उन्हें सवार करूँ तो मैं कभी (ग़ज़्वात में शरीक होने से) पीछे न रहता। मेरी तो ख़्वाहिश है कि अल्लाह के रास्ते में क़त्ल किया जाऊँ फिर ज़िन्दा किया जाऊँ फिर क़त्ल किया जाऊँ, फिर ज़िन्दा किया जाऊँ, फिर क़त्ल किया जाऊँ और फिर ज़िंदा किया जाऊँ और फिर मारा जाऊँ। (राजेअ़ : 36)

٧٢٢٦- حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ عُفَيْرٍ، حَدَّثَنِي اللَّيْثُ، حَدَّثَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ خَالِدٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ وَ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ اَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: ((وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لَوْ لاَ اَنَّ رِجَالاً يَكْرَهُونَ أَنْ يَتَخَلَّفُوا بَعْدِي وَلاَ أَجِدُ مَا أَحْمِلُهُمْ، مَا تَخَلَّفْتُ لَوَدِدْتُ أَنِّي أُقْتَلُ فِي سَبِيلِ اللهِ ثُمَّ أُحْيَا، ثُمَّ أُقْتَلُ، ثُمَّ أُحْيَا، ثُمَّ أُقْتَلُ، ثُمَّ أُحْيَا، ثُمَّ أُقْتَلُ)).

[راجع: ٣٦]

ऐसी पाकीज़ा तमन्नाएँ करना बिला शुब्हा जाइज़ है। जैसा कि ख़ुद आँहज़रत (ﷺ) से ये मन्क़ूल है।

7227. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमको मालिक ने ख़बर दी, उन्हें अबुज़्ज़िनाद ने, उन्हें अअ़रज ने और उन्हें अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है। मेरी आरज़ू है कि मैं अल्लाह के रास्ते में जंग करूँ और क़त्ल किया जाऊँ फिर ज़िन्दा किया जाऊँ, फिर क़त्ल किया जाऊँ, फिर ज़िन्दा किया जाऊँ, फिर क़त्ल किया जाऊँ, अबू हुरैरह (रज़ि.) इन अल्फ़ाज़ को तीन बार दोहराते थे कि मैं अल्लाह का गवाह करके कहता हूँ। (राजेअ़ : 36)

٧٢٢٧- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ، أَخْبَرَنَا مَالِكٌ، عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ وَدِدْتُ أَنِّي أُقَاتِلُ فِي سَبِيلِ اللهِ، فَأُقْتَلُ ثُمَّ أُحْيَا، ثُمَّ أُقْتَلُ، ثُمَّ أُحْيَا، ثُمَّ أُقْتَلُ ثُمَّ أُحْيَا)) فَكَانَ أَبُو هُرَيْرَةَ يَقُولُهُنَّ ثَلاَثًا أَشْهَدُ بِاللهِ.

[راجع: ٣٦]

कि आँहज़रत (ﷺ) ने इसी तरह फ़र्माया। आख़िर में ख़त्ज शहादत पर किया क्योंकि मक़्सूद वही थी जो आपको बतला दिया गया था कि अल्लाह आपकी जान की हिफ़ाज़त करेगा जैसा कि फ़र्माया, **वल्लाहु यअ़सिमुक मिनन्नासि** लेकिन ये आरज़ू महज़ फ़ज़ीलते जिहाद के ज़ाहिर करने के लिये आपने फ़र्माई।

बाब 2 : नेक काम जैसे ख़ैरात की आरज़ू करना

और नबी करीम (ﷺ) का इर्शाद है, अगर मेरे पास उहुद पहाड़ के बराबर सोना होता तो मैं उसे भी ख़ैरात कर देता।

٢- باب تَمَنِّي الْخَيْرِ

وَقَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ: ((لَوْ كَانَ لِي أُحُدٌ ذَهَبًا)).

7228. हमसे इस्हाक़ बिन नस्र ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने बयान किया, उनसे मअ़मर ने, उनसे हम्माम बिन मुनब्बा ने, उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, अगर मेरे पास उहुद पहाड़ के बराबर सोना होता तो मैं पसंद करता कि अगर उनके लेने वाले मिल जाएँ तो तीन दिन गुज़रने से पहले ही मेरे पास उसमें से एक दीनार भी न बचे, सिवा उसके जिसे मैं अपने ऊपर क़र्ज़ की अदायगी के लिये रोक लूँ। (राजेअ़ : 2389)

٧٢٢٨- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ نَصْرٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، عَنْ مَعْمَرٍ، عَنْ هَمَّامٍ سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((لَوْ كَانَ عِنْدِي أُحُدٌ ذَهَبًا لأَحْبَبْتُ أَنْ لاَ يَأْتِيَ ثَلاَثٌ وَعِنْدِي مِنْهُ دِينَارٌ لَيْسَ شَيْءٌ أَرْصُدُهُ فِي دَيْنٍ عَلَيَّ أَجِدُ مَنْ يَقْبَلُهُ)).

[راجع: ٢٣٨٩]

तश्रीह : बस असल दुर्वेशी ये है जो आँहज़रत (ﷺ) ने बयान फ़र्मा दी कि कल के लिये कुछ न रख छोड़े, जो रुपया या माल मताअ़ आए वो गुरबा और मुस्तहिक़्क़ीन को फ़ौरन तक़्सीम कर दे। अगर कोई शख़्स ख़ज़ाना अपने लिये जमा करे और तीन दिन से ज़्यादा रुपया पैसा अपने पास रख छोड़े तो उसको दुर्वेश न कहेंगे बल्कि दुनियादार कहेंगे। एक बुज़ुर्ग के पास रुपया आया, उन्होंने पहले चालीसवाँ हिस्सा उसमें से ज़कात का निकाला फिर बाक़ी 39 हिस्से भी तक़्सीम कर दिये और कहने लगे मैंने ज़कात का ष़वाब ह़ासिल करने के लिये पहले चालीसवाँ हिस्सा निकाला अगर सब एक बारगी ख़ैरात कर देता तो उस फ़र्ज़ के ष़वाब से महरूम रहता। हैदराबाद में बहुत से मशाइख़ और दुर्वेश ऐसे नज़र आते हैं कि दुनियादार उनसे बमरातिब बेहतर हैं। अफ़सोस! उनको अपने तईं दुर्वेश कहते हुए शर्म नहीं आती वो तो साहूकारों की तरह माल व

मताअ़ दौलत इकट्ठा करते हैं उनको महाजन या साहूकार का लक़ब देना चाहिये न कि शाह और फ़क़ीर का। (वहीदी) इल्ला माशाअल्लाह।

बाब 3 : नबी करीम (ﷺ) का इर्शाद कि अगर मुझे पहले से वो मा'लूम होता जो बाद को मा'लूम हुआ

٣- باب قَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ: ((لَوِ اسْتَقْبَلْتُ مِنْ أَمْرِي مَا اسْتَدْبَرْتُ)).

7229. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे उ़क़ैल ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे उ़र्वा (रज़ि.) ने कि आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने (ह़ज्जतुल वदाअ़ के मौक़े पर) फ़र्माया अगर मुझको अपना ह़ाल पहले से मा'लूम होता जो बाद में मा'लूम हुआ तो मैं अपने साथ क़ुर्बानी का जानवर न लाता और उ़मरह करके दूसरे लोगों की त़रह मैं भी एह़राम खोल डालता। (राजेअ़ : 294)

٧٢٢٩- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ عُقَيْلٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ حَدَّثَنِي عُرْوَةُ أَنَّ عَائِشَةَ قَالَتْ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((لَوِ اسْتَقْبَلْتُ مِنْ أَمْرِي مَا اسْتَدْبَرْتُ. مَا سُقْتُ الْهَدْيَ وَلَحَلَلْتُ مَعَ النَّاسِ حِينَ حَلُّوا)). [راجع: ٢٩٤]

7230. हमसे ह़सन बिन उ़मर जुर्मी ने बयान किया, कहा हमसे यज़ीद बिन ज़ुरैअ़ बस़री ने, उनसे ह़बीब बिन अबी क़ुरैबा ने, उनसे अ़त़ा बिन अबी रिबाह़ ने, उनसे जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के (ह़ज्जतुल वदाअ़ के मौक़े पर) साथ थे, फिर हमने ह़ज्ज के लिये तल्बिया कहा और 4 ज़िलहिज्ज को मक्का पहुँचे, फिर आँह़ज़रत (ﷺ) ने हमे बैतुल्लाह और स़फ़ा और मरवा के त़वाफ़ का हुक्म दिया और ये कि हम उसे उ़मरः बना लें और उसके बाद ह़लाल हो जाएँ (सिवा उनके जिनके साथ क़ुर्बानी का जानवर हो वो ह़लाल नहीं हो सकते) बयान किया कि आँह़ज़रत (ﷺ) और त़लह़ा (रज़ि.) के सिवा हममें से किसी के पास क़ुर्बानी का जानवर न था और अ़ली (रज़ि.) यमन से आए थे और उनके साथ भी हदी थी और कहा कि मैं भी उसका एह़राम बाँधकर आया हूँ जिसका रसूलुल्लाह (ﷺ) ने एह़राम बाँधा है, फिर दूसरे लोग कहने लगे कि क्या हम अपनी औ़रतों के साथ सुहबत करने के बाद मिना जा सकते हैं ? (इस ह़ाल में कि हमारे ज़कर मनी टपकाते हों?) आँह़ज़रत (ﷺ) ने इसपर फ़र्माया कि जो बात मुझे बाद में मा'लूम हुई अगर पहले ही मा'लूम होती तो मैं हदी साथ न लाता और अगर मेरे साथ हदी न होती तो मैं भी ह़लाल हो जाता। बयान किया कि आँह़ज़रत (ﷺ) से सुराक़ा बिन मालिक ने मुलाक़ात की। उस वक़्त आप बड़े शैत़ान पर रमी कर रहे थे और पूछा या रसूलल्लाह

٧٢٣٠- حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ عُمَرَ، حَدَّثَنَا يَزِيدُ، عَنْ حَبِيبٍ، عَنْ عَطَاءٍ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ قَالَ: كُنَّا مَعَ رَسُولِ اللهِ ﷺ فَلَبَّيْنَا بِالْحَجِّ وَقَدِمْنَا مَكَّةَ لأَرْبَعٍ خَلَوْنَ مِنْ ذِي الْحِجَّةِ، فَأَمَرَنَا النَّبِيُّ ﷺ أَنْ نَطُوفَ بِالْبَيْتِ وَبِالصَّفَا وَالْمَرْوَةِ، وَأَنْ نَجْعَلَهَا عُمْرَةً وَلْنَحِلَّ إِلاَّ مَنْ كَانَ مَعَهُ هَدْيٌ قَالَ: وَلَمْ يَكُنْ مَعَ أَحَدٍ مِنَّا هَدْيٌ غَيْرَ النَّبِيِّ ﷺ وَطَلْحَةَ وَجَاءَ عَلِيٌّ مِنَ الْيَمَنِ مَعَهُ الْهَدْيُ فَقَالَ: أَهْلَلْتُ بِمَا أَهَلَّ بِهِ رَسُولُ اللهِ ﷺ فَقَالُوا: نَنْطَلِقُ إِلَى مِنًى وَذَكَرُ أَحَدِنَا يَقْطُرُ قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِنِّي لَوِ اسْتَقْبَلْتُ مِنْ أَمْرِي مَا اسْتَدْبَرْتُ مَا أَهْدَيْتُ وَلَوْ لاَ أَنَّ مَعِي الْهَدْيَ لَحَلَلْتُ)) قَالَ: وَلَقِيَهُ سُرَاقَةُ وَهْوَ يَرْمِي جَمْرَةَ الْعَقَبَةِ فَقَالَ يَا رَسُولَ اللهِ: أَلَنَا هَذِهِ خَاصَّةً؟ قَالَ: ((لاَ بَلْ لِلأَبَدِ)) قَالَ: وَكَانَتْ عَائِشَةُ قَدِمَتْ مَكَّةَ وَهِيَ

(ﷺ)! ये हमारे लिये ख़ास है? आपने फ़र्माया कि नहीं बल्कि हमेशा के लिये है। बयान किया कि आइशा (रज़ि.) भी मक्का आई थीं लेकिन वो हाइज़ा थीं तो आँहज़रत (ﷺ) ने उन्हें तमाम आ'माले हज्ज अदा करने का हुक्म दिया, सिर्फ़ वो पाक होने से पहले तवाफ़ नहीं कर सकती थीं और न नमाज़ पढ़ सकती थीं। जब सब लोग बत्हा में उतरे तो आइशा (रज़ि.) ने कहा या रसूलल्लाह! क्या आप सब लोग उमरह व हज्ज दोनों करके लौटेंगे और मेरा सिर्फ़ हज्ज होगा? बयान किया कि फिर आँहज़रत (ﷺ) ने अब्दुर्रहमान बिन अबीबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) को हुक्म दिया कि आइशा (रज़ि.) को साथ लेकर मुक़ामे तन्ईम जाएँ। चुनाँचे उन्होंने भी अय्यामे हज्ज के बाद ज़िल्हिज्ज में उमरह किया। (राजेअ : 1557)

حَائِضٌ فَأَمَرَهَا النَّبِيُّ ﷺ أَنْ تَنْسُكَ الْمَنَاسِكَ كُلَّهَا، غَيْرَ أَنَّهَا لاَ تَطُوفُ وَلاَ تُصَلِّي حَتَّى تَطْهُرَ، فَلَمَّا نَزَلُوا الْبَطْحَاءَ قَالَتْ عَائِشَةُ: يَا رَسُولَ اللهِ أَتَنْطَلِقُونَ بِحَجَّةٍ عُمْرَةٍ وَأَنْطَلِقُ بِحَجَّةٍ؟ قَالَ: ثُمَّ أَمَرَ عَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنَ أَبِي بَكْرٍ الصِّدِّيقِ أَنْ يَنْطَلِقَ مَعَهَا إِلَى التَّنْعِيمِ فَاعْتَمَرَتْ عُمْرَةً فِي ذِي الْحِجَّةِ بَعْدَ أَيَّامِ الْحَجِّ.

[راجع: ١٥٥٧]

बाब 4 : आँहज़रत (ﷺ) का यूँ फ़र्माना कि काश ऐसा और ऐसा होता

٤- باب قَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ: ((لَيْتَ كَذَا وَكَذَا))

7231. हमसे ख़ालिद बिन मुख़्लद ने बयान किया, कहा हमसे सुलैमान बिन बिलाल ने बयान किया, कहा मुझसे यह्या बिन सईद ने बयान किया, उन्होंने अब्दुल्लाह बिन आमिर बिन रबीआ से सुना कि आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि एक रात नबी करीम (ﷺ) को नींद न आई, फिर आपने फ़र्माया, काश! मेरे सहाबा में से कोई नेक मर्द मेरे लिये आज रात पहरा देता। इतने में हमने हथियारों की आवाज़ सुनी। आँहज़रत (ﷺ) ने पूछा कौन साहब हैं? बताया गया कि सअद बिन अबी वक़्क़ास (रज़ि.) हैं या रसूलल्लाह! (उन्होंने कहा) मैं आप (ﷺ) के लिये पहरा देने आया हूँ, फिर आँहज़रत (ﷺ) सोये यहाँ तक कि हमने आपके ख़र्राटे की आवाज़ सुनी। अबू अब्दुल्लाह इमाम बुख़ारी (रह.) ने बयान किया कि आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि बिलाल (रज़ि.) जब नये नये मदीना आए तो बहालते बुख़ार हैरानी में ये श'र पढ़ते थे। काश! मैं जानता कि मैं एक रात उस वादी में गुज़ार सकूँगा (वादी मक्का में) और मेरे चारों तरफ़ इज़्ख़र और जलील घास होगी। फिर मैंने नबी (ﷺ) से उसकी ख़बर की। (राजेअ : 2885)

٧٢٣١- حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ مَخْلَدٍ، حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ بِلاَلٍ، حَدَّثَنِي يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ سَمِعْتُ عَبْدَ اللهِ بْنَ عَامِرِ بْنِ رَبِيعَةَ قَالَ: قَالَتْ عَائِشَةُ أَرِقَ النَّبِيُّ ﷺ، ذَاتَ لَيْلَةٍ فَقَالَ: ((لَيْتَ رَجُلاً صَالِحًا مِنْ أَصْحَابِي يَحْرُسُنِي اللَّيْلَةَ)) إِذْ سَمِعْنَا صَوْتَ السِّلاَحِ قَالَ : ((مَنْ هَذَا؟)) قِيلَ: سَعْدٌ يَا رَسُولَ اللهِ جِئْتُ أَحْرُسُكَ فَنَامَ النَّبِيُّ ﷺ حَتَّى سَمِعْنَا غَطِيطَهُ. قَالَ أَبُو عَبْدِ اللهِ: وَقَالَتْ عَائِشَةُ: قَالَ بِلاَلٌ: أَلاَ لَيْتَ شِعْرِي هَلْ أَبِيتَنَّ لَيْلَةً

بِوَادٍ وَحَوْلِي إِذْخِرٌ وَجَلِيلُ

فَأَخْبَرْتُ النَّبِيَّ ﷺ. [راجع: ٢٨٨٥]

तश्रीह : मौलाना वहीदुज़्ज़माँ मरहूम ने इस शे'र का तर्जुमा शे'र में यूँ किया है,

काश! मैं मक्का की पाऊँ एक रात — गिर्द मेरे हो जलील इज़्ख़र नबात

ये पहरा का ज़िक्र मदीना में शुरू शुरू आते वक़्त का है क्योंकि दुश्मनों का हर तरफ़ भीड़ थी। आपकी दुआ सअ़द (रज़ि.) के हक़ में क़ुबूल हुई।

बाब 5 : क़ुर्आन मजीद और इल्म की आरज़ू करना

٥- باب تَمَنِّي الْقُرْآنِ وَالْعِلْمِ

7232. हमसे उ़ष्मान बिन अबी शैबा ने बयान किया, कहा हमसे जरीर बिन अ़ब्दुल ह़मीद ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे अबू स़ालेह ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, रश्क स़िर्फ़ दो शख़्सों पर हो सकता है एक वो जिसे अल्लाह ने क़ुर्आन दिया है और वो उसे दिन रात पढ़ता रहता है और उस पर (सुनने वाला) कहे कि अगर मुझे भी उसका ऐसा ही इल्म होता जैसा कि उस शख़्स को दिया गया है तो मैं भी इसी त़रह करता जैसा कि ये करता है और दूसरा वो शख़्स जिसे अल्लाह ने माल दिया और वो उसे अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करता है तो (देखने वाला) कहे कि अगर मुझे भी इतना दिया जाता जैसा उसे दिया गया है तो मैं भी इसी त़रह करता जैसा कि ये कर रहा है। हमसे कुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे जरीर ने फिर यही ह़दीष़ बयान की। (राजेअ़ : 5026)

٧٢٣٢- حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((لاَ تَحَاسُدَ إِلاَّ فِي اثْنَتَيْنِ: رَجُلٌ آتَاهُ اللهُ الْقُرْآنَ فَهُوَ يَتْلُوهُ آنَاءَ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ يَقُولُ : لَوْ أُوتِيتُ مِثْلَ مَا أُوتِيَ هَذَا لَفَعَلْتُ كَمَا يَفْعَلُ، وَرَجُلٌ آتَاهُ اللهُ مَالاً يُنْفِقُهُ فِي حَقِّهِ فَيَقُولُ : لَوْ أُوتِيتُ مِثْلَ مَا أُوتِيَ هَذَا لَفَعَلْتُ كَمَا يَفْعَلُ)). حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ حَدَّثَنَا جَرِيرٌ بِهَذَا.
[راجع: ٥٠٢٦]

बाब 6 : जिसकी तमन्ना करना मना है

٦- باب مَا يُكْرَهُ مِنَ التَّمَنِّي

और अल्लाह ने सूरह निसा में फ़र्माया, और न तमन्ना करो उस चीज़ की जिसके ज़रिये अल्लाह तआ़ला ने तुममें से कुछ को कुछ पर (माल में) फ़ज़ीलत दी है। मर्द अपनी कमाई का ष़वाब पाएँगे और औ़रतें अपनी कमाई का और अल्लाह तआ़ला से उसका फ़ज़्ल मांगो बिलाशुब्हा अल्लाह हर चीज़ का जानने वाला है। (निसा : 32)

﴿وَلاَ تَتَمَنَّوْا مَا فَضَّلَ اللهُ بِهِ بَعْضَكُمْ عَلَى بَعْضٍ لِلرِّجَالِ نَصِيبٌ مِمَّا اكْتَسَبُوا وَلِلنِّسَاءِ نَصِيبٌ مِمَّا اكْتَسَبْنَ وَاسْأَلُوا اللهَ مِنْ فَضْلِهِ إِنَّ اللهَ كَانَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا﴾ [النِّسَاء : ٣٢].

अल्लाह हर एक की ह़ालत जानता है जिसको जितना दिया है, उसी में उसकी ह़िक्मत है पस लोगों को देखकर हवस करना क्या ज़रूरी है।

7233. हमसे ह़सन बिन रबीअ़ ने बयान किया, उनसे अबुल अह़वस़ ने, उनसे आ़सिम ने बयान किया, उनसे नज़्र बिन अनस ने बयान किया कि अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कहा, अगर मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से ये न सुना होता कि मौत की तमन्ना न करो तो मैं मौत की आरज़ू करता।

(राजेअ़ : 5671)

٧٢٣٣- حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ الرَّبِيعِ، حَدَّثَنَا أَبُو الأَحْوَصِ، عَنْ عَاصِمٍ، عَنِ النَّضْرِ بْنِ أَنَسٍ قَالَ : قَالَ أَنَسٌ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ لَوْ لاَ أَنِّي سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((لاَ تَتَمَنَّوُا الْمَوْتَ لَتَمَنَّيْتُ)).
[راجع: ٥٦٧١]

तश्रीह : ह़ज़रत अनस (रज़ि.) की उ़म्र बहुत लम्बी हुई थी। उन्होंने त़रह़ त़रह़ के फ़ित्ने और फ़साद मुसलमानों में देखे मष़लन ह़ज़रत उ़ष़्मान (रज़ि.) की शहादत, ह़ज़रत हुसैन (रज़ि.) की शहादत, ख़ारजियों का ज़ोर ज़ुल्म, इस वजह से मौत को पसंद करने लगे। क़स्तलानी (रह़.) ने कहा अगर आदमी को दीन की ख़राबी और फ़ित्ने में पड़ने का डर हो तब तो मौत की आरज़ू करना बिला कराहत जाइज़ है। मैं कहता हूँ एक ह़दीष़ में है, **इज़ा अरत्तु बिइबादिक फ़ित्नतन फ़क़्बिज़्नी इलैक ग़ैर मफ़्तून** दूसरी ह़दीष़ में है ऐसे वक़्त में यूँ दुआ़ करना बेहतर है, **अल्लाहुम्म अहयिनी मा कानतिल हयातु ख़ैरल्ली व तवफ़्फ़नी इज़ा कानतिल वफ़ातु ख़ैरल्ली.**

7234. हमसे मुह़म्मद ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दह ने बयान किया, उनसे इब्ने अबी ख़ालिद ने, उनसे क़ैस ने बयान किया कि हम ख़ब्बाब बिन अरत (रज़ि.) की ख़िदमत में उनकी एयादत के लिये ह़ाज़िर हुए। उन्होंने सात दाग़ लगवाए थे, फिर उन्होंने कहा कि अगर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने हमें मौत की दुआ़ करने से मना न किया होता तो मैं इसकी दुआ़ करता।

(राजेअ़ : 5672)

٧٢٣٤- حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ، حَدَّثَنَا عَبْدَةُ، عَنِ ابْنِ أَبِي خَالِدٍ، عَنْ قَيْسٍ قَالَ: أَتَيْنَا خَبَّابَ بْنَ الأَرَتِّ نَعُودُهُ، وَقَدِ اكْتَوَى سَبْعًا فَقَالَ: لَوْ لاَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ نَهَانَا أَنْ نَدْعُوَ بِالْمَوْتِ لَدَعَوْتُ بِهِ. [راجع: ٥٦٧٢]

7235. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुह़म्मद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे हिशाम बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको मअ़मर ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुह्री ने, उन्हें अबी उ़बैद ने जिनका नाम सअ़द बिन उ़बैद है, अ़ब्दुर्रह़मान बिन अज़्हर के मौला कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, कोई शख़्स तुममें मौत की आरज़ू न करे, अगर वो नेक है तो मुम्किन है नेकी में और ज़्यादा हो और अगर बुरा है तो मुम्किन है उससे तौबा कर ले।

(राजेअ़ : 39)

٧٢٣٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ، حَدَّثَنَا هِشَامُ بْنُ يُوسُفَ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ أَبِي عُبَيْدٍ اسْمُهُ سَعْدُ بْنُ عُبَيْدٍ مَوْلَى عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَزْهَرَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((لاَ يَتَمَنَّى أَحَدُكُمُ الْمَوْتَ إِمَّا مُحْسِنًا فَلَعَلَّهُ يَزْدَادُ، وَإِمَّا مُسِيئًا فَلَعَلَّهُ يَسْتَعْتِبُ)). [راجع: ٣٩]

तश्रीह : कुछ नुस्ख़ों में यहाँ इतनी इ़बारत और ज़ाइद है क़ाल अबू अ़ब्दुल्लाह अबू उ़बैद इस्मुहू सअ़द बिन उ़बैद मौला अ़ब्दुर्रह़मान बिन अज़्हर या'नी इमाम बुख़ारी (रह़.) ने कहा कि अबू उ़बैद का नाम सअ़द बिन उ़बैद है वो अ़ब्दुर्रह़मान बिन अज़्हर का ग़ुलाम था।

बाब 7 : किसी शख़्स का कहना कि अगर अल्लाह न होता तो हमको हिदायत न होती

٧- باب قَوْلِ الرَّجُلِ : لَوْ لاَ اللهُ مَا اهْتَدَيْنَا

7236. हमसे अ़ब्दान ने बयान किया, कहा हमको हमारे वालिद उ़ष़्मान बिन जुब्ला ने ख़बरदी, उन्हें शुअ़बा ने, उनसे अबू इस्ह़ाक़ ने बयान किया और उनसे बराअ बिन आ़ज़िब (रज़ि.) ने कि ग़ज़्व-ए-ख़ंदक़ के दिन (ख़ंदक़ खोदते हुए) रसूलुल्लाह (ﷺ) भी ख़ुद हमारे साथ मिट्टी उठाया करते थे। मैंने आँह़ज़रत (ﷺ) को इस ह़ाल में देखा कि मिट्टी ने आपके पेट की सफ़ेदी को छुपा दिया था। आप फ़र्माते थे, अगर तू न

٧٢٣٦- حَدَّثَنَا عَبْدَانُ، أَخْبَرَنِي أَبِي، عَنْ شُعْبَةَ، حَدَّثَنَا أَبُو إِسْحَاقَ، عَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَنْقُلُ مَعَنَا التُّرَابَ يَوْمَ الأَحْزَابِ، وَلَقَدْ رَأَيْتُهُ وَارَى التُّرَابُ بَيَاضَ بَطْنِهِ يَقُولُ :

لَوْ لاَ أَنْتَ مَا اهْتَدَيْنَا
وَنَحْنُ وَلاَ تَصَدَّقْنَا وَلاَ صَلَّيْنَا
فَأَنْزِلَنْ سَكِينَةً عَلَيْنَا إِن الأُلَى (وَرُبَّمَا قَالَ)
إِنَّ الْمَلاَ قَدْ بَغَوا عَلَيْنَا إِذَا أَرَادُوا فِتْنَةً
أَبَيْنَا أَبَيْنَا يَرْفَعُ بِهَا صَوْتَهُ.
[راجع: ٢٨٣٦]

होता (ऐ अल्लाह!) तो हम न हिदायत पाते, न हम सदक़ा देते, न नमाज़ पढ़ते। पस हम पर दिल जम्ई नाज़िल फ़र्मा। इस मुआनिदीन की जमाअत ने हमारे ख़िलाफ़ हद से आगे बढ़कर हमला किया है। जब ये फ़ित्ना चाहते हैं तो हम उनकी बात नहीं मानते, नहीं मानते। इस पर आप आवाज़ को बुलंद कर देते। (राजेअ: 2836)

तशरीह : मौलाना वहीदुज़्ज़माँ का मंज़ूम तर्जुमा यूँ है,

ऐ अल्लाह अगर तू न होता तो कहाँ मिलती नजात
कैसे पढ़ते हम नमाज़ें कैसे देते हम ज़कात
अब उतार हम पर तसल्ली ऐ शहे आली सिफ़ात
पाँव जमवा दे लड़ाई में तू दे हमको सबात

(ये मिस्रा बारहवें पारे में है यहाँ मज़्कूर नहीं है)

बे सबब हम पर ये दुश्मन ज़ुल्म से चढ़ आए हैं, जब वो फ़ित्ना चाहें तो सुनते नहीं हम उनकी बात

आप बुलंद आवाज़ से ये अश्आर पढ़ते।

٨- باب كَرَاهِيَةِ التَّمَنِّي لِقَاءَ الْعَدُوِّ
وَرَوَاهُ الأَعْرَجُ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ.

बाब 8 : दुश्मन से मुठभेड़ होने की आरज़ू करना मना है. इसको अअरज ने अबू हुरैरह (रज़ि.) से, उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से नक़ल किया है

٧٢٣٧- حَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ، حَدَّثَنَا مُعَاوِيَةُ بْنُ عَمْرٍو، حَدَّثَنَا أَبُو إِسْحَاقَ، عَنْ مُوسَى بْنِ عُقْبَةَ، عَنْ سَالِمٍ أَبِي النَّضْرِ مَوْلَى عُمَرَ بْنِ عُبَيْدِ اللهِ وَكَانَ كَاتِبًا لَهُ قَالَ : كَتَبَ إِلَيْهِ عَبْدُ اللهِ بْنُ أَبِي أَوْفَى فَقَرَأْتُهُ فَإِذَا فِيهِ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ : ((لاَ تَمَنَّوْا لِقَاءَ الْعَدُوِّ وَسَلُوا اللهَ الْعَافِيَةَ)). [راجع: ٢٨١٨]

7237. मुझसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मुस्नदी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे मुआविया बिन अ़म्र ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अबू इस्हाक़ ने बयान किया, उनसे मूसा बिन उ़क़्बा ने बयान किया, उनसे उ़मर बिन उ़बैदुल्लाह के ग़ुलाम सालिम अबुन्नज़्र ने बयान किया, जो अपने आक़ा के कातिब थे। बयान किया कि अ़ब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा (रज़ि.) ने उन्हें लिखा और मैंने उसे पढ़ा तो उसमे ये मज़्मून था रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया है कि दुश्मन से मुठभेड़ होने की तमन्ना न करो और अल्लाह से आफ़ियत की दुआ मांगा करो। (राजेअ: 2818)

٩- باب مَا يَجُوزُ مِنَ اللَّوْ
وَقَوْلِهِ تَعَالَى : ﴿لَوْ أَنَّ لِي بِكُمْ قُوَّةً﴾.

बाब 9 : लफ़्ज़ अगर मगर के इस्ते'माल का जवाज़ और अल्लाह तआ़ला का इर्शाद अगर मुझे तुम्हारा मुक़ाबला करने की कुव्वत होती

तश्रीह : इमाम बुख़ारी (रह़.) ने ये बाब लाकर उस त़रफ़ इशारा किया कि मुस्लिम ने जो अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत की कि अगर मगर कहना शैत़ान का काम खोलता है और निसाई ने जो रिवायत की जब तुझ पर कोई बला आए तो यूँ न कह अगर मैं ऐसा करता अगर यूँ होता बल्कि यूँ कह अल्लाह की तक़्दीर में यूँ ही था। उसने जो चाहा वो क्या तो उन रिवायतों का ये मत़लब नहीं है कि अगर मगर कहना मुत़्लक़न मना है। अगर ऐसा होता तो अल्लाह और रसूल के कलाम में अगर का लफ़्ज़ क्यूँ आता। बल्कि इन रिवायतों का मत़लब ये है कि अपनी तदबीर पर नाज़ाँ होकर और अल्लाह की मशिय्यत से ग़ाफ़िल होकर अगर मगर कहना मना है। आयत के अल्फ़ाज़ ह़ज़रत लूत़ अ़लैहिस्सलाम के हैं जो उन्होंने क़ौम की फ़रिश्तों के साथ गुस्ताख़ी देखकर कहे थे।

7238. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, कहा हमसे अबुज़ ज़िनाद ने बयान किया, उनसे क़ासिम बिन मुहम्मद ने बयान किया कि इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने दो लिआ़न करने वालों का ज़िक्र किया तो उस पर अ़ब्दुल्लाह बिन शद्दाद ने पूछा, क्या यही वो हैं जिनके बारे में रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया था कि, अगर मैं किसी औ़रत को बग़ैर गवाह के रजम कर सकता तो उसे करता। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा कि नहीं वो एक औ़रत थी जो (इस्लाम लाने के बाद) खुले आ़म (फ़ह़्श काम) करती थी। (राजेअ़ : 5310)

٧٢٣٨- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، حَدَّثَنَا أَبُو الزِّنَادِ، عَنِ الْقَاسِمِ بْنِ مُحَمَّدٍ قَالَ : ذَكَرَ ابْنُ عَبَّاسٍ الْمُتَلاَعِنَيْنِ فَقَالَ عَبْدُ اللهِ بْنُ شَدَّادٍ: أَهِيَ الَّتِي قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((لَوْ كُنْتُ رَاجِمًا امْرَأَةً مِنْ غَيْرِ بَيِّنَةٍ)). قَالَ: لاَ تِلْكَ امْرَأَةٌ أَعْلَنَتْ. [راجع: ٥٣١٠]

मगर क़ायदे से षुबूत न था या'नी चार ऐनी (चश्मदीद) गवाह नहीं थे।

7239. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने कि अ़म्र बिन दीनार ने कहा, हमसे अ़त़ा बिन अबी रिबाह़ ने बयान किया, एक रात ऐसा हुआ आँह़ज़रत (ﷺ) ने इशा की नमाज़ में देर की। आख़िर ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) निकले और कहने लगे या रसूलल्लाह! नमाज़ पढ़िये औ़रतें और बच्चे सोने लगे। उस वक़्त आप (ﷺ) (हुज्रे से) बरामद हुए आपके सर से पानी टपक रहा था (ग़ुस्ल करके बाहर तशरीफ़ लाए) फ़र्माने लगे अगर मेरी उम्मत पर या यूँ फ़र्माया लोगों पर दुश्वार न होता। सुफ़यान बिन उ़ययना ने यूँ कहा मेरी उम्मत पर दुश्वार न होता तो मैं इस वक़्त (इतनी रात गई) उनको ये नमाज़ पढ़ने का हुक्म देता। और इब्ने जुरैज ने (इसी सनद से सुफ़यान से, उन्होंने इब्ने जुरैज से) उन्होंने अ़त़ा से रिवायत की, उन्होंने इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने उस नमाज़ (या'नी इशा की नमाज़) में देर की। ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) आए और कहने लगे या रसूलल्लाह! औ़रतें बच्चे तो सो गये। ये सुनकर आप (ﷺ) बाहर तशरीफ़ लाए, अपने सर की एक जानिब से

٧٢٣٩- حَدَّثَنَا عَلِيٌّ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ عَمْرٌو: حَدَّثَنَا عَطَاءٌ قَالَ: أَعْتَمَ النَّبِيُّ ﷺ بِالْعِشَاءِ فَخَرَجَ عُمَرُ فَقَالَ: الصَّلاَةَ يَا رَسُولَ اللهِ رَقَدَ النِّسَاءُ وَالصِّبْيَانُ، فَخَرَجَ وَرَأْسُهُ يَقْطُرُ يَقُولُ: ((لَوْ لاَ أَنْ أَشُقَّ عَلَى أُمَّتِي - أَوْ عَلَى النَّاسِ)) وَقَالَ سُفْيَانُ أَيْضًا ((عَلَى أُمَّتِي لأَمَرْتُهُمْ بِالصَّلاَةِ هَذِهِ السَّاعَةَ)) وَقَالَ ابْنُ جُرَيْجٍ: عَنْ عَطَاءٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ أَخَّرَ النَّبِيُّ ﷺ هَذِهِ الصَّلاَةَ فَجَاءَ عُمَرُ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ رَقَدَ النِّسَاءُ وَالْوِلْدَانُ فَخَرَجَ وَهُوَ يَمْسَحُ الْمَاءَ عَنْ شِقِّهِ يَقُولُ: ((إِنَّهُ لَلْوَقْتُ لَوْ لاَ أَنْ أَشُقَّ عَلَى أُمَّتِي)) وَقَالَ عَمْرٌو : حَدَّثَنَا عَطَاءٌ لَيْسَ فِيهِ ابْنُ عَبَّاسٍ أَمَّا عَمْرٌو فَقَالَ

رَأْسُهُ يَقْطُرُ وَقَالَ ابْنُ جُرَيْجٍ: يَمْسَحُ الْمَاءَ عَنْ شِقِّهِ وَقَالَ عَمْرٌو: ((لَوْ لاَ أَنْ أَشُقَّ عَلَى أُمَّتِي)) وَقَالَ ابْنُ جُرَيْجٍ : ((إِنَّهُ لَلْوَقْتُ لَوْ لاَ أَنْ أَشُقَّ عَلَى أُمَّتِي)) وَقَالَ إِبْرَاهِيمُ بْنُ الْمُنْذِرِ: حَدَّثَنَا مَعْنٌ حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ مُسْلِمٍ عَنْ عَمْرٍو، عَنْ عَطَاءٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ.

[راجع: ٥٧١]

पानी पोंछ रहे थे, फ़र्मा रहे थे इस नमाज़ का (उम्दह) वक़्त यही है अगर मेरी उम्मत पर शाक़ न हो। अ़म्र बिन दीनार ने इस ह़दीष़ में यूँ नक़ल किया। हमसे अ़ता ने बयान किया और इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) का ज़िक्र नहीं किया लेकिन अ़म्र ने यूँ कहा आपके सर से पानी टपक रहा था। और इब्ने जुरैज की रिवायत में यूँ है आप (ﷺ) सर के एक जानिब पानी पोंछ रहे थे और अ़म्र ने कहा आप (ﷺ) ने फ़र्माया अगर मेरी उम्मत पर भारी न होता। और इब्ने जुरैज ने कहा आपने फ़र्माया अगर मेरी उम्मत पर शाक़ न होता तो इस नमाज़ का (अफ़ज़ल) वक़्त तो यही है। और इब्राहीम बिन मुंज़िर (इमाम बुख़ारी रह. के शैख़) ने कहा हमसे मअ़न बिन ईसा ने बयान किया, कहा मुझसे मुहम्मद बिन मुस्लिम ने, उन्होंने अ़म्र बिन दीनार से, उन्होंने अ़ता बिन अबी रिबाह़ से, उन्होंने इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से, उन्होंने आँह़ज़रत (ﷺ) से। फिर यही ह़दीष़ नक़ल की। (राजेअ़ : 571)

٧٢٤٠- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ جَعْفَرِ بْنِ رَبِيعَةَ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ سَمِعْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ إِنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((لَوْ لاَ أَنْ أَشُقَّ عَلَى أُمَّتِي لأَمَرْتُهُمْ بِالسِّوَاكِ)).

[راجع: ٨٨٧]

7240. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे जा'फ़र बिन रबीआ़ ने, उनसे अ़ब्दुर्रह़मान अअ़रज ने और उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया अगर मेरी उम्मत पर शाक़ न होता तो मैं इन पर मिस्वाक करना वाजिब क़रार दे देता। (राजेअ़ : 887)

٧٢٤١- حَدَّثَنَا عَيَّاشُ بْنُ الْوَلِيدِ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الأَعْلَى، حَدَّثَنَا حُمَيْدٌ، عَنْ ثَابِتٍ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: وَاصَلَ النَّبِيُّ ﷺ آخِرَ الشَّهْرِ وَوَاصَلَ أُنَاسٌ مِنَ النَّاسِ فَبَلَغَ النَّبِيَّ ﷺ فَقَالَ: ((لَوْ مُدَّ بِي الشَّهْرُ لَوَاصَلْتُ وِصَالاً يَدَعُ الْمُتَعَمِّقُونَ تَعَمُّقَهُمْ، إِنِّي لَسْتُ مِثْلَكُمْ إِنِّي أَظَلُّ يُطْعِمُنِي رَبِّي وَيَسْقِينِي)).

تَابَعَهُ سُلَيْمَانُ بْنُ الْمُغِيرَةِ، عَنْ ثَابِتٍ، عَنْ

7241. हमसे अ़य्याश बिन वलीद ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल आ़ला ने बयान किया, कहा हमसे हुमैद त़वील ने, उनसे ष़ाबित ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने रमज़ान के आख़िरी दिनों में स़ौमे विस़ाल रखा तो कुछ स़हाबा ने भी स़ौमे विस़ाल रखा। आँह़ज़रत (ﷺ) को इसकी ख़बर मिली तो आपने फ़र्माया अगर इस महीने के दिन और बढ़ जाते तो मैं इतने दिन मुतवातिर विस़ाल करता कि हवस करने वाले अपनी हवस छोड़ देते, मैं तुम लोगों जैसा नहीं हूँ। मैं इस त़रह़ दिन गुज़ारता हूँ कि मेरा रब मुझे खिलाता पिलाता है। इस रिवायत की मुताबअ़त सुलैमान बिन मुग़ीरह ने की, उनसे ष़ाबित ने, उनसे अनस (रज़ि.) ने, उनसे नबी करीम (ﷺ) ने ऐसा फ़र्माया जो ऊपर मज़्कूर हुआ।

(राजेअ: 1961)

أَنَسٍ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ.[راجع: ١٩٦١]

तश्रीह : या'नी ह़क़ीक़त में जन्नत का खाना पानी इस सूरत में आपका विसाली रोज़ा ज़ाहिरी होगा न कि ह़क़ीक़त में। मगर कुछ ने कहा कि खाने पीने से मिजाज़ी मा'नी मुराद है कि वो मुझको कुव्वत देता रहता है जो तुमको खाने पीने से ह़ासिल होती है। स़ौमे विस़ाल उस रोज़े को कहते हैं जिसमें इफ़्तार व सेह़र के वक़्त में भी नहीं खाया जाता और रोज़े को मुसलसल जारी रखा जाता है।

7242. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, कहा हमको ज़ुह्री ने ख़बर दी और लैष़ ने कहा कि मुझसे अ़ब्दुर्रह़मान बिन ख़ालिद ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब (ज़ुह्री) ने, उन्हें सईद बिन मुसय्यब ने ख़बर दी और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने स़ौमे विस़ाल से मना किया तो स़हाबा ने अ़र्ज़ की कि आप तो विस़ाल करते हैं। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया तुममें कौन मुझ जैसा है, मैं तो इस ह़ाल मे रात गुज़ारता हूँ कि मेरा रब मुझे खिलाता पिलाता है लेकिन जब लोग न माने तो आपने एक दिन के साथ दूसरा दिन मिलाकर (विस़ाल का) रोज़ा रखा, फिर लोगों ने (ईद का) चाँद देखा तो आपने फ़र्माया कि अगर चाँद न होता तो मैं और विस़ाल करता। गोया आपने उन्हें तम्बीह करने के लिये ऐसा फ़र्माया। (राजेअ : 1965)

٧٢٤٢- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ ح وَقَالَ اللَّيْثُ: حَدَّثَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ خَالِدٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ أَنَّ سَعِيدَ بْنَ الْمُسَيَّبِ أَخْبَرَهُ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ قَالَ: نَهَى رَسُولُ اللهِ ﷺ عَنِ الْوِصَالِ قَالُوا: فَإِنَّكَ تُوَاصِلُ قَالَ: ((أَيُّكُمْ مِثْلِي إِنِّي أَبِيتُ يُطْعِمُنِي رَبِّي وَيَسْقِينِ)) فَلَمَّا أَبَوْا أَنْ يَنْتَهُوا وَاصَلَ بِهِمْ يَوْمًا ثُمَّ يَوْمًا ثُمَّ رَأَوُا الْهِلاَلَ فَقَالَ : ((لَوْ تَأَخَّرَ لَزِدْتُكُمْ)). كَالْمُنَكِّلِ لَهُمْ.

[راجع: ١٩٦٥]

7243. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे अबुल अह़वस़ ने बयान किया, कहा हमसे अश्अ़ष़ ने, उनसे अस्वद बिन यज़ीद ने और उनसे आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से (ख़ाना ए का'बा के) ह़तीम के बारे मे पूछा कि क्या ये भी ख़ाना-ए-का'बा का ह़िस्सा है? फ़र्माया कि हाँ। मैं ने कहा, फिर क्यूँ उन लोगों ने इसे बैतुल्लाह में दाख़िल नहीं किया? आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुम्हारी क़ौम के पास ख़र्च की कमी हो गई थी। मैंने कहा कि ये ख़ाना-ए-का'बा का दरवाज़ा ऊँचाई पर क्यूँ है? फ़र्माया कि ये इसलिये उन्होंने किया है ताकि जिसे चाहें अंदर दाख़िल करें और जिसे चाहें रोक दें। अगर तुम्हारी क़ौम (क़ुरैश) का ज़माना, जाहिलियत से क़रीब न होता और मुझे डर न होता कि उनके दिलों में इससे इंकार पैदा होगा तो मैं ह़तीम को भी ख़ाना-ए-काबा में शामिल कर देता और उसके दरवाज़े को

٧٢٤٣- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا أَبُو الأَحْوَصِ، حَدَّثَنَا أَشْعَثُ، عَنِ الأَسْوَدِ بْنِ يَزِيدَ عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: سَأَلْتُ النَّبِيَّ ﷺ، عَنِ الْجَدْرِ أَمِنَ الْبَيْتِ هُوَ؟ قَالَ: ((نَعَمْ)) قُلْتُ: فَمَا لَهُمْ لَمْ يُدْخِلُوهُ فِي الْبَيْتِ؟ قَالَ: ((إِنَّ قَوْمَكِ قَصُرَتْ بِهِمُ النَّفَقَةُ)) قُلْتُ: فَمَا شَأْنُ بَابِهِ مُرْتَفِعًا؟ قَالَ: ((فَعَلَ ذَاكِ قَوْمُكِ لِيُدْخِلُوا مَنْ شَاؤُوا وَيَمْنَعُوا مَنْ شَاؤُوا، لَوْ لاَ أَنَّ قَوْمَكِ حَدِيثٌ عَهْدُهُمْ بِالْجَاهِلِيَّةِ فَأَخَافُ أَنْ تُنْكِرَ قُلُوبُهُمْ أَنْ أُدْخِلَ الْجَدْرَ فِي الْبَيْتِ وَأَنْ

ज़मीन के बराबर कर देता। (राजेअ़ : 121)

أَلْصِقَ بَابَهُ فِي الأَرْضِ)).[راجع: ١٢٦]

तश्रीह : ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) ने अपनी ख़िलाफ़त में ऐसा कर दिया था। पूर्वी और पश्चिमी दो दरवाज़े बना दिये थे मगर ह़ज्जाज बिन यूसुफ़ ने ज़िद में आकर इस इमारत को तुड़वा कर पहली ह़ालत पर कर दिया। आज तक इसी ह़ालत पर है। दूसरी रिवायत में यूँ है उसके दो दरवाज़े रखता एक मश्रिक़ी, एक मग़रिबी। अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) ने अपनी ख़िलाफ़त में ये ह़दीष़ ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) से सुनकर जैसा मंशा आँह़ज़रत (ﷺ) का था इसी त़रह़ का'बा को बना दिया मगर अल्लाह ह़ज्जाज ज़ालिम से समझे उसने क्या किया कि अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) की ज़िद से फिर का'बा तुड़वाकर जैसा जाहिलियत के ज़माने में था वैसा ही कर दिया अगर का'बा में दो दरवाज़े रहते तो दाख़िले के वक़्त कैसी राह़त रहती, हवा आती और निकलती रहती अब एक ही दरवाज़ा और रोशनदान भी नदारद। इधर लोगों का हुजूम। दाख़िले के वक़्त वो तकलीफ़ होती है कि मआ़ज़ल्लाह और गर्मी और ह़ब्स के मारे नमाज़ भी अच्छी त़रह़ इत्मीनान से नहीं पढ़ी जाती।

7244. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको शुऐ़ब ने ख़बर दी, उन्होंने कहा हमसे अबुज़्ज़िनाद ने बयान किया, उनसे अअ़रज ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया अगर हिजरत (की फ़ज़ीलत) न होती तो मैं अंस़ार का एक फ़र्द बनना (पसंद करता) और अगर दूसरे लोग किसी वादी में चलें और अंस़ार एक वादी या घाटी में चलें तो मैं अंस़ार की वादी या घाटी में चलूँगा। (राजेअ़ : 3779)

٧٢٤٤- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، حَدَّثَنَا أَبُو الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((لَوْ لاَ الْهِجْرَةُ لَكُنْتُ امْرَأً مِنَ الأَنْصَارِ، وَلَوْ سَلَكَ النَّاسُ وَادِيًا وَسَلَكَتِ الأَنْصَارُ وَادِيًا أَوْ شِعْبًا، لَسَلَكْتُ وَادِيَ الأَنْصَارِ أَوْ شِعْبَ الأَنْصَارِ)).[راجع: ٣٧٧٩]

अंस़ार की फ़ज़ीलत बयान करना मक़्सूद है।

7245. हमसे मूसा ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे वुहैब ने बयान किया, उनसे अ़म्र बिन यह़्या ने, उनसे अ़ब्बाद बिन तमीम ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ैद (रज़ि.) ने बयान किया कि अगर हिजरत न होती तो मैं अंस़ार का एक फ़र्द होता और अगर लोग किसी वादी या घाटी में चले तो मैं अंस़ार की वादी या घाटी में चलूँगा। इस रिवायत की मुताबअ़त अबुत तियाह़ ने की, उनसे अनस (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से। उसमें दर्रे का ज़िक्र है। (राजेअ़ : 4330)

٧٢٤٥- حَدَّثَنَا مُوسَى، حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ، عَنْ عَمْرِو بْنِ يَحْيَى، عَنْ عَبَّادِ بْنِ تَمِيمٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ زَيْدٍ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ ((لَوْ لاَ الْهِجْرَةَ لَكُنْتُ امْرَأً مِنَ الأَنْصَارِ، وَلَوْ سَلَكَ النَّاسُ وَادِيًا أَوْ شِعْبًا لَسَلَكْتُ وَادِيَ الأَنْصَارِ وَشِعْبَهَا)).تَابَعَهُ أَبُو التَّيَّاحِ، عَنْ أَنَسٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ فِي الشِّعْبِ.

[راجع: ٤٣٣٠]

तश्रीह : ये ह़दीष़ किताबुल मग़ाज़ी में मौसूलन गुज़र चुकी है। इस बाब में इमाम बुख़ारी (रह़.) ने उन अह़ादीष़ को जमा किया है जिनमें अगर का लफ़्ज़ है तो मा'लूम हुआ कि अगर मगर कहना मुत्लक़न मना नहीं है और दूसरी ह़दीष में जो आया है अगर मगर से बचा रह वो ख़ास़ मौक़ों पर मह़मूल है या'नी जब किसी कारे ख़ैर का इरादा करे और उस पर क़ुदरत हो तो कर डाले। इसमें अगर मगर न निकाले दूसरे अगर जब कोई मुस़ीबत पेश आए, कुछ नुक़्स़ान हो जाए तो अल्लाह की तक़्दीर और उसके इरादे से समझे। इसमें भी अगर मगर निकालना और यूँ कहना अगर हम ऐसा करते तो ये मुस़ीबत न

आती मना है क्योंकि इसमे तक़्दीरे इलाही पर बेए'तिमादी और अपनी तदबीर पर भरोसा निकलता है।

96. किताबिल अख़्बारिल आहाद

किताब ख़बरे वाहिद के बयान में

(उन अहादीष़ का बयान जिनको एक सच्चे और मोतबर शख़्स ने रिवायत किया हो)

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

बाब 1 : एक सच्चे शख़्स की ख़बर पर अज़ान नमाज़ रोज़े फ़राइज़ सारे अह़काम में अ़मल होना

١- باب مَا جَاءَ فِي إِجَازَةِ خَبَرِ الْوَاحِدِ الصَّدُوقِ

فِي الأَذَانِ وَالصَّلاَةِ وَالصَّوْمِ وَالْفَرَائِضِ وَالأَحْكَامِ وَقَوْلِ اللهِ تَعَالَى : ﴿فَلَوْ لاَ نَفَرَ مِنْ كُلِّ فِرْقَةٍ مِنْهُمْ طَائِفَةٌ لِيَتَفَقَّهُوا فِي الدِّينِ وَلِيُنْذِرُوا قَوْمَهُمْ إِذَا رَجَعُوا إِلَيْهِمْ لَعَلَّهُمْ يَحْذَرُونَ﴾ [التوبة : ١٢٢] وَيُسَمَّى الرَّجُلُ طَائِفَةً لِقَوْلِهِ تَعَالَى ﴿وَإِنْ طَائِفَتَانِ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ اقْتَتَلُوا﴾ [الحجرات : ٩] فَلَوِ اقْتَتَلَ رَجُلاَنِ دَخَلاَ فِي مَعْنَى الآيَةِ لِقَوْلِهِ تَعَالَى : ﴿إِنْ جَاءَكُمْ فَاسِقٌ بِنَبَإٍ فَتَبَيَّنُوا﴾ [الحجرات: ٦] وَكَيْفَ بَعَثَ النَّبِيُّ ﷺ أُمَرَاءَهُ وَاحِدًا بَعْدَ وَاحِدٍ، فَإِنْ سَهَا أَحَدٌ مِنْهُمْ رُدَّ إِلَى السُّنَّةِ.

और अल्लाह तआ़ला ने सूरह तौबा में फ़र्माया, ऐसा क्यूँ नहीं करते हर फ़िर्क़े में से कुछ लोग निकलें ताकि वो दीन की समझ ह़ासिल करें और लौटकर अपनी क़ौम के लोगों को डराएँ इसलिये कि वो तबाही से बचे रहें। और एक शख़्स को भी त़ाइफ़ा कह सकते हैं जैसे सूरह ह़ुजुरात की इस आयत में फ़र्माया, अगर मुसलमानों के दो त़ाइफ़े लड़ पड़ें और उसमें वो दो मुसलमान भी दाख़िल हैं जो आपस में लड़ पड़ें (तो हर एक मुसलमान एक त़ाइफ़ा हुआ) और (इसी सूरत में) अल्लाह तआ़ला ने फ़र्माया, मुसलमानों! जल्दी मत किया करो) अगर तुम्हारे पास बदकार शख़्स कुछ ख़बर लाए तो उसकी तह़क़ीक़ कर लिया करो। और अगर ख़बरे वाहिद मक़्बूल न होती तो आँह़ज़रत (ﷺ) एक शख़्स को ह़ाकिम बनाकर और उसके बाद दूसरे शख़्स को क्यूँ भेजते और ये क्यूँ कहते कि अगर पहला ह़ाकिम कुछ भूल जाए तो दूसरा ह़ाकिम उसको सुन्नत के त़रीक़ पर लगा दे।

तश्रीह : जिनको इस्तिलाह़ अहले ह़दीष़ में ख़बरे वाह़िद कहते हैं अकष़र स़ह़ीह़ अह़ादीष़ इस क़िस्म की हैं कि उनको एक या दो स़ह़ाबा या एक या दो ताबिइयों ने रिवायत किया है। ख़बरे वाह़िद का जब रावी सच्चा और ष़िक़ह और मो'तबर हो तो उसका क़ुबूल करना तमाम इमामों ने वाजिब रखा है और हमेशा क़यास को ऐसी ह़दीष़ के मुक़ाबिल तर्क कर दिया है। बल्कि इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह़.) ने तो और ज़्यादा एह़तियात़ की है। उन्होंने कहा है कि मुर्सल और ज़ईफ़ ह़दीष़ यहाँ तक कि स़ह़ाबी का क़ौल भी हुज्जत है और क़यास को उसके मुक़ाबले में तर्क कर देंगे। अल्लाह तआ़ला इमाम अबू ह़नीफा (रह़.) को जज़ा-

ए-ख़ैर दे वो अहले सुन्नत या'नी अहले ह़दीष़ के पेशवा थे। हमारे ज़माने मे जो लोग अपने तईं ह़नफ़ी कहते हैं और स़ह़ीह़ ह़दीष़ को सुनकर भी क़यास की पैरवी नहीं छोड़ते वो सच्चे ह़नफ़ी नहीं हैं बल्कि बदनाम कुनिन्दा नकूनामे चंद अपने इमाम के झूठे नामलेवा हैं। **सच्चे ह़नफ़ी अहले ह़दीष़ हैं जो इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह़.) की हिदायत और इर्शाद के मुताबिक़ चलते हैं और तमाम अ़क़ाइद और स़िफ़ाते इलाही और उस़ूल में उनके हम ए'तिक़ाद और हम-अमल हैं।** इस आयत ज़ैल से ख़बरे वाह़िद का ह़ुज्जत होना निकलता है क्योंकि त़ाइफ़ा एक शख़्स़ को भी कह सकते हैं और कुछ फ़िर्क़े में स़िर्फ़ तीन ही आदमी होते हैं। इस दूसरी आयत से स़ाफ़ निकलता है कि अगर नेक और सच्चा और मो'तबर शख़्स़ कोई ख़बर लाए तो उसको मान लेना चाहिये। इसमें तह़क़ीक़ की ज़रूरत नहीं क्योंकि अगर उसकी ख़बर का भी यही हुक्म हो जो बदकार की ख़बर का है तो नेक और बदकार दोनों का यक्साँ होना लाज़िम आएगा। इब्ने कष़ीर ने कहा आयत से ये भी निकला कि फ़ासिक़ और बदकार शख़्स़ की रिवायत की हुई ह़दीष़ ह़ुज्जत नहीं, इसी त़रह़ मज्हूलुल ह़ाल की। ह़दीष़ मज़्कूर से ज़ाहिर हुआ कि अगर ख़बरे वाह़िद क़ुबूल के लायक़ न होती तो एक शख़्स़ वाह़िद को ह़ाकिम बनाकर भेजना या एक शख़्स़ वाह़िद का दूसरे की ग़लती ज़ाहिर करना उसको ठीक रास्ते पर लगाना उसके कुछ मा'नी न होते।

٧٢٤٦- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ، حَدَّثَنَا أَيُّوبُ، عَنْ أَبِي قِلاَبَةَ، حَدَّثَنَا مَالِكٌ قَالَ: أَتَيْنَا النَّبِيَّ ﷺ وَنَحْنُ شَبَبَةٌ مُتَقَارِبُونَ، فَأَقَمْنَا عِنْدَهُ عِشْرِينَ لَيْلَةً وَكَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ رَفِيقًا فَلَمَّا ظَنَّ أَنَّا قَدِ اشْتَهَيْنَا أَهْلَنَا أَوْ قَدِ اشْتَقْنَا سَأَلَنَا عَمَّنْ تَرَكْنَا بَعْدَنَا، فَأَخْبَرْنَاهُ قَالَ: ((ارْجِعُوا إِلَى أَهْلِيكُمْ فَأَقِيمُوا فِيهِمْ، وَعَلِّمُوهُمْ وَمُرُوهُمْ)) وَذَكَرَ أَشْيَاءَ أَحْفَظُهَا أَوْ لاَ أَحْفَظُهَا ((وَصَلُّوا كَمَا رَأَيْتُمُونِي أُصَلِّي، فَإِذَا حَضَرَتِ الصَّلاَةُ فَلْيُؤَذِّنْ لَكُمْ أَحَدُكُمْ، وَلْيَؤُمَّكُمْ أَكْبَرُكُمْ)). [راجع: ٦٢٨]

7246. हमसे मुह़म्मद बिन मुष़न्ना ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल वह्हाब ने बयान किया, कहा हमसे अय्यूब ने बयान किया, उनसे अबू क़िलाबा ने, उनसे मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि हम नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए। हम सब जवान और हम उ़म्र थे। हम आपकी ख़िदमत में बीस दिन तक ठहरे रहे। आँह़ज़रत (ﷺ) बहुत शफ़ीक़ थे। जब आपने मा'लूम किया कि अब हमारा दिल अपने घर वालों की त़रफ़ मुश्ताक़ है तो आपने हमसे पूछा कि अपने पीछे हम किन लोगों को छोड़कर आए हैं। हमने आपको बताया तो आपने फ़र्माया कि अपने घर चले जाओ और उनके साथ रहो और उन्हें इस्लाम सिखाओ और दीन बताओ और बहुत सी बातें आपने कहीं जिनमें कुछ मुझे याद नहीं हैं और कुछ याद हैं और (फ़र्माया कि) जिस त़रह़ मुझे तुमने नमाज़ पढ़ते देखा उसी त़रह़ नमाज़ पढ़ो। पस जब नमाज़ का वक़्त आ जाए तो तुममें से एक तुम्हारे लिये अज़ान कहे और जो उ़म्र में सबसे बड़ा हो वो इमामत कराये। (राजेअ़ : 628)

बाब का तर्जुमा उससे निकला कि आपने फ़र्माया तुममें से एक शख़्स़ अज़ान दे तो मा'लूम हुआ कि एक शख़्स़ के अज़ान देने पर लोगों को अमल करना और नमाज़ पढ़ लेना दुरुस्त है। आख़िर ये भी तो ख़बरे वाह़िद है।

٧٢٤٧- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، عَنْ يَحْيَى، عَنِ التَّيْمِيِّ، عَنْ أَبِي عُثْمَانَ، عَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ((لاَ يَمْنَعَنَّ أَحَدَكُمْ أَذَانُ بِلاَلٍ مِنْ سَحُورِهِ، فَإِنَّهُ يُؤَذِّنُ - أَوْ قَالَ يُنَادِي

7247. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे यह़्या क़त्त़ान ने, उनसे सुलैमान तैती ने, उनसे अबू उ़ष़्मान नह्दी ने, उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, किसी शख़्स़ को ह़ज़रत बिलाल (रज़ि.) की अज़ान सेह़री खाने से न रोके क्योंकि वो स़िर्फ़ इसलिये अज़ान देते हैं या निदा करते हैं ताकि जो नमाज़ के

لِيَرْجِعَ قَائِمَكُمْ، وَيُنَبِّهَ نَائِمَكُمْ وَلَيْسَ الْفَجْرُ أَنْ يَقُولَ هَكَذَا)) وَجَمَعَ يَحْيَى كَفَّيْهِ حَتَّى يَقُولَ: هَكَذَا وَمَدَّ يَحْيَى إِصْبَعَيْهِ السَّبَّابَتَيْنِ.

[راجع: ٦٢١]

लिये बेदार हैं वो वापस आ जाएँ और जो सोये हुए हैं वो बेदार हो जाएँ और फ़ज्र वो नहीं है जो इस त़रह़ लम्बी धारी होती है। यह़्या ने उसके इज़्हार के लिये अपने दोनों हाथ मिलाये और कहा यहाँ तक कि वो इस त़रह़ ज़ाहिर हो जाए और उसके इज़्हार के लिये उन्होंने अपनी दोनों शहादत की उँगलियों को फैला कर बतलाया। (राजेअ़ : 621)

या'नी चौड़े आसमान के किनारे किनारे फैली हुई सुबह़ स़ादिक़ होती है।

٧٢٤٨- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ مُسْلِمٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ دِينَارٍ قَالَ: سَمِعْتُ عَبْدَ اللهِ بْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((إِنَّ بِلاَلاً يُنَادِي بِلَيْلٍ، فَكُلُوا وَاشْرَبُوا حَتَّى يُنَادِيَ ابْنُ أُمِّ مَكْتُومٍ)).

[راجع: ٦١٧]

7248. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन मुस्लिम ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन दीनार ने बयान किया, उन्हों ने अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) से सुना कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया बिलाल (रज़ि.) (रमज़ान में) रात ही में अज़ान देते हैं (वो नमाज़े फ़ज्र की अज़ान नहीं होती) पस तुम खाओ पियो, यहाँ तक कि अ़ब्दुल्लाह इब्ने उम्मे मक्तूम अज़ान दें (तो खाना पीना बन्द कर दो)। (राजेअ़ : 617)

बाब का तर्जुमा इससे निकला कि आपने एक शख़्स़ बिलाल या अ़ब्दुल्लाह इब्ने उम्मे मक्तूम की अज़ान को अ़मल के लिये काफ़ी समझा इससे भी ख़बरे वाहि़द का इष़्बात हुआ। वाहि़द शख़्स़ जब मो'तबर हुए उसका रिवायत करना भी उसी त़रह़ हुज्जत है जैसे शख़्से वाहि़द की अज़ान जुम्ला मुसलमानों के लिये हुज्जत है। ख़बरे वाहि़द को हुज्जत न मानने वाले को चाहिये कि शख़्से वाहि़द की अज़ान को भी तस्लीम न करे। **इज़्लैस फ़लैस।**

٧٢٤٩- حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ عُمَرَ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنِ الْحَكَمِ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ عَلْقَمَةَ عَنْ عَبْدِ اللهِ قَالَ: صَلَّى بِنَا النَّبِيُّ ﷺ الظُّهْرَ خَمْسًا، فَقِيلَ: أَزِيدَ فِي الصَّلاَةِ قَالَ: ((وَمَا ذَاكَ؟)) قَالُوا صَلَّيْتَ خَمْسًا فَسَجَدَ سَجْدَتَيْنِ بَعْدَ مَا سَلَّمَ.

[راجع: ٤٠١]

7249. हमसे ह़फ़्स़ बिन उ़मर ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने, उनसे ह़कम बिन उ़त्बा ने, उनसे इब्राहीम नख़ई ने, उनसे अ़ल्क़मा बिन क़ैस ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने हमें ज़ुहर की पाँच रकअ़त नमाज़ पढ़ाई तो आपसे पूछा गया क्या नमाज़ (की रकअ़तों) में कुछ बढ़ गया है? आँह़ज़रत (ﷺ) ने पूछा, क्या बात है? स़ह़ाबा ने कहा कि आपने पाँच रकअ़त नमाज़ पढ़ाई है। फिर आँह़ज़रत (ﷺ) ने सलाम के बाद दो सज्दे (सह्व के) किये। (राजेअ़ : 401)

तश्रीह : अगरचे इस रिवायत की तत़्बीक़ बाब का तर्जुमा से मुश्किल है क्योंकि ये कहने वाले कि आपने पाँच रकअ़त पढ़ी है। कई आदमी मा'लूम होते हैं लेकिन इमाम बुख़ारी (रह़.) ने अपनी आ़दत के मुवाफ़िक़ इस ह़दीष़ के दूसरे त़रीक़ की त़रफ़ इशारा किया जिसे ख़ुद उन्होंने किताबुस्सलात बाब **इज़ा स़ल्ला ख़म्सन** में रिवायत किया है। उसमें ये स़ैग़ा मुफ़रद यूँ हैं कि **क़ाल स़ल्लयतु ख़म्सन** तो बाब की मुत़ाबक़त ह़ास़िल हो गई। इसलिये कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने एक शख़्स़ के कहने पर अ़मल किया। ह़ाफ़िज़ ने कहा कि उस शख़्स़ का नाम मा'लूम न हो सका। आँह़ज़रत (ﷺ) ने सिर्फ़ एक

शख़्स के कहने पर ए'तिबार कर लिया अगर एक मो'तबर आदमी का कहना नाक़ाबिले ए'तिबार होता तो आप ऐसा क्यूँ करते। मा'लूम हुआ कि शख़्से वाहिद मो'तबर की रिवायत को तस्लीम करना अक़्लन व नक़्लन हर तरह से दुरुस्त है जो लोग मुत्लक़न ख़बरे वाहिद के तस्लीम करने से इंकार करते हैं उनका ये कहना किसी तरह से भी दुरुस्त नहीं है।

7250. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, उन्होंने कहा मुझसे मालिक ने बयान किया, उनसे अय्यूब सुख़ितयानी ने, उनसे मुहम्मद बिन सीरीन ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने दो ही रकअ़त पर (मग़्रिब या इशा की नमाज़ में) नमाज़ ख़त्म कर दी तो ज़ुल यदैन (रज़ि.) ने कहा कि या रसूलल्लाह! नमाज़ कम कर दी गई है या आप भूल गये हैं? आपने पूछा क्या ज़ुलयदैन सहीह कहते हैं? लोगों ने कहा जी हाँ। फिर आँहज़रत (ﷺ) खड़े हुए और दो आख़िरी रकअ़तें पढ़ीं फिर सलाम फेरा, फिर तक्बीर कही और सज्दा किया (नमाज़ के आ़म) सज्दे जैसा या उससे लम्बा, फिर आपने सर उठाया, फिर तक्बीर कही और नमाज़ के सज्दे जैसा सज्दा किया, फिर सर उठाया। (राजेअ़ : 482)

٧٢٥٠- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، حَدَّثَنِي مَالِكٌ، عَنْ أَيُّوبَ عَنْ مُحَمَّدٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ انْصَرَفَ مِنَ اثْنَتَيْنِ فَقَالَ لَهُ ذُو الْيَدَيْنِ: أَقُصِرَتِ الصَّلاَةُ يَا رَسُولَ اللهِ أَمْ نَسِيتَ؟ فَقَالَ: ((أَصَدَقَ ذُو الْيَدَيْنِ)) فَقَالَ النَّاسُ: نَعَمْ. فَقَامَ رَسُولُ اللهِ ﷺ فَصَلَّى رَكْعَتَيْنِ أُخْرَيَيْنِ ثُمَّ سَلَّمَ، ثُمَّ كَبَّرَ، ثُمَّ سَجَدَ مِثْلَ سُجُودِهِ أَوْ أَطْوَلَ ثُمَّ رَفَعَ ثُمَّ كَبَّرَ، فَسَجَدَ مِثْلَ سُجُودِهِ ثُمَّ رَفَعَ.

[راجع: ٤٨٢]

बाब का तर्जुमा इससे निकला कि आपने ज़ुलयदैन अकेले शख़्स की ख़बर को क़ाबिले अ़मल जानकर मंज़ूर कर लिया और तस्दीक़े मज़ीद के लिये दूसरे लोगों से भी पूछ लिया। अगर एक शख़्स की ख़बर क़ाबिले अ़मल न होती तो आप ज़ुलयदैन के कहने पर कुछ ख़्याल ही न करते, इससे ख़बरे वाहिद की दूसरों से तस्दीक़ कर लेना भी षाबित हुआ।

7251. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, कहा मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन दीनार ने, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि मस्जिदे क़ुबा में लोग सुबह की नमाज़ पढ़ रहे थे कि एक आने वाले ने उनके पास पहुँच कर कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) पर रात क़ुर्आन की आयत नाज़िल हुई है और आपको हुक्म दिया गया है कि नमाज़ में का'बा की तरफ़ चेहरा कर लें पस तुम भी उसी तरफ़ रुख़ कर लो। उन लोगों के चेहरे शाम (या'नी बैतुल मक़्दिस) की तरफ़ थे, फिर वो लोग का'बा की तरफ़ मुड़ गये। (राजेअ़ : 304)

٧٢٥١- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، حَدَّثَنِي مَالِكٌ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ دِينَارٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ قَالَ: بَيْنَا النَّاسُ بِقُبَاءٍ فِي صَلاَةِ الصُّبْحِ إِذْ جَاءَهُمْ آتٍ فَقَالَ: إِنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَدْ أُنْزِلَ عَلَيْهِ اللَّيْلَةَ قُرْآنٌ، وَقَدْ أُمِرَ أَنْ يَسْتَقْبِلَ الْكَعْبَةَ فَاسْتَقْبِلُوهَا، وَكَانَتْ وُجُوهُهُمْ إِلَى الشَّأْمِ فَاسْتَدَارُوا إِلَى الْكَعْبَةِ. [راجع: ٣٠٤]

बाब की मुताबक़त ये है कि एक शख़्स की ख़बर पर मस्जिदे क़ुबा वालों ने अ़मल किया।

7252. हमसे यह्या बिन मूसा बल्ख़ी ने बयान किया, कहा हमसे वकीअ़ बिन जर्राह ने बयान किया, उनसे इस्राईल बिन यूनुस ने, उनसे अबू इस्हाक़ सबीई ने और उनसे बरा बिन

٧٢٥٢- حَدَّثَنَا يَحْيَى، حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، عَنْ إِسْرَائِيلَ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنِ الْبَرَاءِ

قَالَ: لَمَّا قَدِمَ رَسُولُ اللهِ ﷺ الْمَدِينَةَ صَلَّى نَحْوَ بَيْتِ الْمَقْدِسِ سِتَّةَ عَشَرَ أَوْ سَبْعَةَ عَشَرَ شَهْرًا، وَكَانَ يُحِبُّ أَنْ يُوَجَّهَ إِلَى الْكَعْبَةِ، فَأَنْزَلَ اللهُ تَعَالَى: ﴿قَدْ نَرَى تَقَلُّبَ وَجْهِكَ فِي السَّمَاءِ فَلَنُوَلِّيَنَّكَ قِبْلَةً تَرْضَاهَا﴾ [البقرة : ١٤٤] فَوُجِّهَ نَحْوَ الْكَعْبَةِ وَصَلَّى مَعَهُ رَجُلٌ الْعَصْرَ، ثُمَّ خَرَجَ فَمَرَّ عَلَى قَوْمٍ مِنَ الأَنْصَارِ فَقَالَ: هُوَ يَشْهَدُ أَنَّهُ صَلَّى مَعَ النَّبِيِّ ﷺ وَأَنَّهُ قَدْ وُجِّهَ إِلَى الْكَعْبَةِ فَانْحَرَفُوا وَهُمْ رُكُوعٌ فِي صَلاَةِ الْعَصْرِ.

[راجع: ٤٠]

आ़ज़िब (रज़ि.) ने बयान किया कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) मदीना तशरीफ़ लाए तो आप सोलह या सत्रह महीने तक बैतुल मक़्दिस की त़रफ़ चेहरा करके नमाज़ पढ़ते रहे लेकिन आपकी आरज़ू थी कि का'बा की त़रफ़ चेहरा करके नमाज़ पढ़ें। फिर अल्लाह तआ़ला ने सूरह बक़र: में ये आयत नाज़िल की, मैं आपका चेहरा बार बार आसमान की त़रफ़ उठने को देखता हूं पस अ़न्क़रीब मैं आपके चेहरे को उस क़िब्ले की त़रफ़ फेर दूंगा जिससे आप ख़ुश होंगे, चुनाँचे रुख़ का'बा की त़रफ़ कर दिया गया। एक स़ाह़ब ने अ़स्र की नमाज़ आँह़ज़रत (ﷺ) के साथ पढ़ी, फिर वो मदीना से निकलकर अंस़ार की एक जमाअ़त तक पहुँचे और कहा कि वो गवाही देते हैं कि उन्होंने आँह़ज़रत (ﷺ) के साथ नमाज़ पढ़ी है और का'बा की त़रफ़ चेहरा करने का हुक्म हो गया है चुनाँचे सब लोग का'बा की रुख़ हो गये ह़ालाँकि वो अ़स्र की नमाज़ के रुकूअ़ में थे। (राजेअ़ : 40)

तश्रीह: ये वाक़िया तह़वीले क़िब्ला के पहले दिन मस्जिदे बनी ह़ारिष़ या'नी मस्जिदे क़िब्लतैन का है। कुछ रिवायतों में ज़ुह्र की नमाज़ मज़्कूर है और अगली ह़दीष़ का वाक़िया दूसरे रोज़ का मस्जिदे क़ुबा का है तो दोनों रिवायतों में इख़्तिलाफ़ नहीं रहा। बाब की मुत़ाबक़त ज़ाहिर है कि ख़बरे वाह़िद को तस्लीम करके उस पर जुम्हूर स़ह़ाबा ने अ़मल किया। जो लोग ख़बरे वाह़िद के मुंकिर हैं वो जुम्हूरे स़ह़ाबा के तर्ज़े अ़मल से मुंकिर है

٧٢٥٣- حَدَّثَنِي يَحْيَى بْنُ قَزَعَةَ، حَدَّثَنِي مَالِكٌ، عَنْ إِسْحَاقَ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي طَلْحَةَ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كُنْتُ أَسْقِي أَبَا طَلْحَةَ الأَنْصَارِيَّ وَأَبَا عُبَيْدَةَ بْنَ الْجَرَّاحِ وَأُبَيَّ بْنَ كَعْبٍ شَرَابًا مِنْ فَضِيخٍ وَهُوَ تَمْرٌ فَجَاءَهُمْ آتٍ فَقَالَ: إِنَّ الْخَمْرَ قَدْ حُرِّمَتْ فَقَالَ أَبُو طَلْحَةَ: يَا أَنَسُ قُمْ إِلَى هَذِهِ الْجِرَارِ فَاكْسِرْهَا قَالَ أَنَسٌ: فَقُمْتُ إِلَى مِهْرَاسٍ لَنَا فَضَرَبْتُهَا بِأَسْفَلِهِ حَتَّى انْكَسَرَتْ.

[راجع: ٢٤٦٤]

7253. मुझसे यह़्या बिन क़ज़आ़ ने बयान किया, उन्हों ने कहा मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे इस्ह़ाक़ बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अबी त़लह़ा ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं अबू त़लह़ा अंस़ारी, अबू उ़बैदह बिन जर्राह़ और उबई बिन कअ़ब (रज़ि.) को खजूर की शराब पिला रहा था। इतने में एक आने वाले शख़्स़ ने आकर ख़बर दी कि शराब ह़राम कर दी गई है। अबू त़लह़ा (रज़ि.) ने उस शख़्स़ की ख़बर सुनते ही कहा अनस! इन मटकों को बढ़कर सबको तोड़ दो। अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं एक हवन दस्ता की त़रफ़ बढ़ा जो हमारे पास था और मैंने उसके निचले ह़िस्से से उन मटकों पर मारा जिससे वो सब टूट गये। (राजेअ़ : 2464)

तश्रीह: सुब्ह़ानल्लाह! स़ह़ाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम की ईमानदारी और तक़्वा शिआ़री, ईमान हो तो ऐसा हो। बाब की मुत़ाबक़त ज़ाहिर है कि एक शख़्स़ की ख़बर पर शराब के ह़राम हो जाने पर ए'तिमाद कर लिया। इससे भी ख़बरे

वाहिद पर अ़मल का इष्बात हुआ।

7254. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा बिन हज्जाज ने बयान किया, कहा हमसे अबू इस्हाक़ ने, उनसे सुलह बिन ज़फ़र ने और उनसे हुज़ैफ़ह (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) ने अहले नजरान से फ़र्माया मैं तुम्हारे पास एक अमानतदार आदमी जो हक़ीक़ी अमानतदार होगा भेजूँगा। आँहज़रत (ﷺ) के सहाबा मुंतज़िर रहे (कि कौन इस सिफ़त से मौसूफ़ है) तो आपने हज़रत अबू उ़बैदह (रज़ि.) को भेजा। (राजेअ़ : 3745)

٧٢٥٤- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ أَبِي إِسْحَاقَ، عَنْ صِلَةَ، عَنْ حُذَيْفَةَ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ لأَهْلِ نَجْرَانَ ((لأَبْعَثَنَّ إِلَيْكُمْ رَجُلاً أَمِينًا حَقَّ أَمِينٍ)) فَاسْتَشْرَفَ لَهَا أَصْحَابُ النَّبِيِّ ﷺ فَبَعَثَ أَبَا عُبَيْدَةَ. [راجع: ٣٧٤٥]

इससे भी ख़बरे वाहिद का इष्बात हुआ कि आपने अकेले अबू उ़बैदह (रज़ि.) को रवाना करने का ऐलान किया और उनको भेजा। सदक़ रसूलुल्लाहि (ﷺ)

7255. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे ख़ालिद बिन मिहरान ने बयान किया, उनसे अबू क़िलाबा ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, हर उम्मत में एक अमानतदार होता है और इस उम्मत के अमानतदार अबू उ़बैदह इब्नुल जर्राह (रज़ि.) हैं। (राजेअ़ : 3744)

٧٢٥٥- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ خَالِدٍ، عَنْ أَبِي قِلاَبَةَ، عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لِكُلِّ أُمَّةٍ أَمِينٌ، وَأَمِينُ هَذِهِ الأُمَّةِ أَبُو عُبَيْدَةَ)). [راجع: ٣٧٤٤]

ये ईमानदारी और अमानतदारी में फ़र्दे फ़रीद थे गो और सब सहाबा भी ईमानदार दयानतदार थे मगर इनका दर्जा उस ख़ास सिफ़त में बहुत ही बढ़ा हुआ था जैसे हज़रत उ़ष्मान (रज़ि.) का दर्जा हया में, हज़रत अ़ली (रज़ि.) का शुजाअ़त में। (रज़ियल्लाहु अ़न्हुम अज्मईन)

7256. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे यह्या बिन सईद ने बयान किया, उनसे उ़बैद बिन हुसैन ने बयान किया, उनसे हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने कि हज़रत उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि क़बीला अंसार के एक साहब थे (औस बिन ख़ौला नाम) जब वो रसूलुल्लाह (ﷺ) की मज्लिस में शिर्कत न कर सकते और मैं शरीक होता तो उन्हें आकर आँहज़रत (ﷺ) की मज्लिस की ख़बरें बताता और जब मैं आँहज़रत (ﷺ) की मज्लिस में शरीक न हो पाता और वो शरीक होते तो वो आकर आँहज़रत (ﷺ) की मज्लिस की ख़बरें मुझे बताते। (राजेअ़ : 89)

٧٢٥٦- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، عَنْ يَحْيَى بْنِ سَعِيدٍ، عَنْ عُبَيْدِ بْنِ حُنَيْنٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ عَنْ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمْ قَالَ: وَكَانَ رَجُلٌ مِنَ الأَنْصَارِ إِذَا غَابَ عَنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ وَشَهِدْتُهُ أَتَيْتُهُ بِمَا يَكُونُ مِنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ، وَإِذَا غِبْتُ عَنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ وَشَهِدَ أَتَانِي بِمَا يَكُونُ مِنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ. [راجع: ٨٩]

इस हदीष से ख़बरे वाहिद का हुज्जत होना निकलता है क्योकि हज़रत उ़मर (रज़ि.) उनकी ख़बर पर यक़ीन रखते और वो हज़रत उ़मर की ख़बर पर ए'तिमाद करता था। पस ख़बरे वाहिद पर तवातुर अ़मल होता आ रहा है मगर मुक़ल्लिदीन को अल्लाह अ़क़्ल दे कि वो क्यूँ एक सहीह बात के ज़बरदस्ती से मुंकिर हो गये हैं।

7257. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे

٧٢٥٧- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا

غُنْدَرٌ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ زُبَيْدٍ، عَنْ سَعْدِ بْنِ عُبَيْدَةَ، عَنْ أَبِي عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ عَلِيٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ بَعَثَ جَيْشًا وَأَمَّرَ عَلَيْهِمْ رَجُلاً، فَأَوْقَدَ نَارًا وَقَالَ: ادْخُلُوهَا فَأَرَادُوا أَنْ يَدْخُلُوهَا وَقَالَ آخَرُونَ: إِنَّمَا فَرَرْنَا مِنْهَا فَذَكَرُوا لِلنَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ لِلَّذِينَ أَرَادُوا أَنْ يَدْخُلُوهَا: ((لَوْ دَخَلُوهَا لَمْ يَزَالُوا فِيهَا إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ)) وَقَالَ لِلآخَرِينَ: ((لاَ طَاعَةَ فِي مَعْصِيَةٍ إِنَّمَا الطَّاعَةُ فِي الْمَعْرُوفِ)). [راجع: ٤٣٤٠]

गुन्दर ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे ज़ुबैद ने, उनसे सअ़द बिन उ़बैदह ने, उनसे अबू अ़ब्दुर्रहमान ने और उनसे ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने एक लश्कर भेजा और उसका अमीर एक स़ाहब अ़ब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ह सहमी को बनाया, फिर (उसने क्या किया कि) आग जलवाई और (लश्करियों से) कहा कि इसमें दाख़िल हो जाओ। जिस पर कुछ लोगों ने दाख़िल होना चाहा लेकिन कुछ लोगों ने कहा कि हम आग ही से भागकर आए हैं। फिर इसका ज़िक्र आँह़ज़रत (ﷺ) से किया तो आपने उनसे फ़र्माया, जिन्होंने आग में दाख़िल होने का इरादा किया था कि अगर तुम इसमें दाख़िल हो जाते तो उसमें क़यामत तक रहते और दूसरे लोगों से कहा कि अल्लाह तआ़ला की नाफ़र्मानी में किसी की इत़ाअ़त हलाल नहीं है इत़ाअ़त स़िर्फ़ नेक कामों में है। (राजेअ़ : 4340)

तश्रीह : बाक़ी अल्लाह व रसूल के हुक्म के ख़िलाफ़ किसी का हुक्म न मानना चाहिये, बादशाह हो या वज़ीर सब छप्पर पर रहे हमारा बादशाह ह़क़ीक़ी अल्लाह है। ये दुनिया के झूठे बादशाह गोया गुड़ियों के बादशाह हैं ये क्या कर सकते हैं बहुत हुआ तो दुनिया की चंद रोज़ा ज़िन्दगी ले लेंगे वो भी बादशाह ह़क़ीक़ी चाहेगा वरना एक बाल इनसे बाँका नहीं हो सकता। इस ह़दीष़ की मुताबक़त बाब क तर्जुम से यूँ निकलती है कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने जाइज़ बातों में सरदार की इत़ाअ़त का हुक्म दिया, ह़ालाँकि वो एक शख़्स़ होता है दूसरे ये कि कुछ स़ह़ाबा ने उसकी बात सुनी और आग में भी घुसना चाहा।

٧٢٥٨، ٧٢٥٩- حَدَّثَنَا زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، حَدَّثَنَا أَبِي، عَنْ صَالِحٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ أَنَّ عُبَيْدَ اللهِ بْنَ عَبْدِ اللهِ أَخْبَرَهُ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ، وَزَيْدَ بْنَ خَالِدٍ أَخْبَرَاهُ أَنَّ رَجُلَيْنِ اخْتَصَمَا إِلَى النَّبِيِّ ﷺ. [راجع: ٢٣١٤، ٢٣١٥]

7258,7259. हमसे ज़ुहैर बिन ह़र्ब ने बयान किया, कहा हमसे यअ़क़ूब बिन इब्राहीम ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने बयान किया, उनसे स़ालेह़ ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उन्हें उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह ने ख़बर दी और उन्हें अबू हुरैरह (रज़ि.) और ज़ैद बिन ख़ालिद (रज़ि.) ने ख़बर दी कि दो शख़्स़ रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास अपना झगड़ा लेकर आए। दूसरी सनद और इमाम बुख़ारी (रह़.) ने कहा (तफ़्स़ील आगे ह़दीष़े ज़ैल में है)। (राजेअ़ : 2314, 2315)

٧٢٦٠- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، أَخْبَرَنِي عُبَيْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُتْبَةَ بْنِ مَسْعُودٍ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ قَالَ: بَيْنَمَا نَحْنُ عِنْدَ رَسُولِ اللهِ ﷺ إِذْ قَامَ رَجُلٌ مِنَ الأَعْرَابِ فَقَالَ: يَا

7260. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुहरी ने, कहा मुझको उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़त्बा बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने ख़बर दी और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास मौजूद थे कि देहातियों में से एक स़ाहब खड़े हुए और कहा कि या रसूलल्लाह! किताबुल्लाह के मुत़ाबिक़ मेरा

رَسُولَ اللهِ اقْضِ لِي بِكِتَابِ اللهِ فَقَامَ خَصْمُهُ فَقَالَ: صَدَقَ يَا رَسُولَ اللهِ اقْضِ لَهُ بِكِتَابِ اللهِ وَائْذَنْ لِي فَقَالَ لَهُ النَّبِيُّ ﷺ ((قُلْ)) فَقَالَ: إِنَّ ابْنِي كَانَ عَسِيفًا عَلَى هَذَا، وَالْعَسِيفُ: الأَجِيرُ، فَزَنَى بِامْرَأَتِهِ فَأَخْبَرُونِي أَنَّ عَلَى ابْنِي الرَّجْمَ، فَافْتَدَيْتُ مِنْهُ بِمِائَةٍ مِنَ الْغَنَمِ وَوَلِيدَةٍ، ثُمَّ سَأَلْتُ أَهْلَ الْعِلْمِ فَأَخْبَرُونِي أَنَّ عَلَى امْرَأَتِهِ الرَّجْمَ، وَإِنَّمَا عَلَى ابْنِي جَلْدُ مِائَةٍ وَتَغْرِيبُ عَامٍ، فَقَالَ: ((وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لأَقْضِيَنَّ بَيْنَكُمَا بِكِتَابِ اللهِ، أَمَّا الْوَلِيدَةُ وَالْغَنَمُ فَرُدُّوهَا وَأَمَّا ابْنُكَ فَعَلَيْهِ جَلْدُ مِائَةٍ وَتَغْرِيبُ عَامٍ، وَأَمَّا أَنْتَ يَا أُنَيْسُ - لِرَجُلٍ مِنْ أَسْلَمَ - فَاغْدُ عَلَى امْرَأَةِ هَذَا فَإِنِ اعْتَرَفَتْ فَارْجُمْهَا)) فَغَدَا عَلَيْهَا أُنَيْسٌ فَاعْتَرَفَتْ فَرَجَمَهَا.

फ़ैसला कर दीजिए। उसके बाद उनका मुक़ाबिल फ़रीक़ खड़ा हुआ और कहा इन्होंने सहीह कहा या रसूलल्लाह! हमारा फ़ैसला किताबुल्लाह के मुताबिक़ कर दीजिए और मुझे कहने की इजाज़त दीजिए। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि कहो। उन्होंने कहा कि मेरा लड़का इनके यहाँ मज़दूरी करता था (असीफ़ बमा'नी अजीर, मज़दूर है) फिर उसने इनकी औरत से ज़िना कर लिया तो लोगों ने मुझे बताया कि मेरे बेटे पर रजम की सज़ा होगी लेकिन मैंने उसकी तरफ़ से सौ बकरियों और एक बाँदी का फ़िदया दिया (और लड़के को छुड़ा लिया) फिर मैंने अहले इल्म से पूछा तो उन्होंने बताया कि इसकी बीवी को रजम की सज़ा लागू होगी और मेरे लड़के को सौ कोड़े और एक साल के लिये जलावतनी की। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है! मैं तुम्हारे बीच किताबुल्लाह के मुताबिक़ फ़ैसला करूँगा। बाँदी और बकरियाँ वापस कर दो और तुम्हारे लड़के को सौ कोड़े और एक साल जलावतनी की सज़ा है और ऐ उनैस! (क़बीला असलम के एक सहाबी) इसकी बीवी के पास जाओ, अगर वो ज़िना का इक़रार करती है तो उसे रजम कर दो। चुनाँचे उनैस (रज़ि.) उनके पास गये और उसने इक़रार कर लिया फिर उनैस (रज़ि.) ने उसको संगसार कर डाला।

तश्रीह : बाब की मुताबक़त इससे निकली कि आपने एक शख़्से वाहिद को ईज़ा का हुक्म दिया। उसने हुक्मे शरई या'नी रजम जारी किया। कुछ ने कहा आपने हर फ़रीक़ की जो एक तने तन्हा था बात क़ुबूल की उसकी तस्दीक़ फ़र्माई। इमाम इब्ने क़य्यिम ने फ़र्माया, ख़बरे वाहिद तीन क़िस्म की है एक ये कि क़ुर्आन के मुवाफ़िक़ हो, दूसरे ये कि उसमें क़ुर्आन की तफ़्सील हो, तीसरे ये कि उसमें एक नया हुक्म हो जो क़ुर्आन में नहीं है। हर हाल में इसका इत्तिबाअ़ वाजिब है क्योंकि अल्लाह तआला ने अपनी इताअत के अलावा रसूलुल्लाह (ﷺ) की इताअत का जुदागाना हुक्म दिया। पस अगर ख़बरे वाहिद वही क़ाबिले क़ुबूल हो जो क़ुर्आन के मुवाफ़िक़ है तो रसूल की इताअत अलग और ख़ास नहीं हुई और हनफ़िया जो कहते हैं कि क़ुर्आन पर ज़्यादती ख़बरे वाहिद से नहीं हो सकती बल्कि ख़बरे मशहूर या मुतवातिर होना ज़रूर है। उन्होंने बहुत से मसाइल में अपने इस उसूल के ख़ुद ख़िलाफ़ किया है जैसे खजूर के नबीज़ से वुज़ू के जवाज़ और निसाबे सुर्क़ा और मेहर दस दिरहम से कम न होना और एक औरत और उसकी फूफी या ख़ाला में जमा हराम होना और शुफ़आ या रहन और सद हा मसाईल में जिनमें आहादे अहादीष़ वारिद हैं और बावजूद इसके हनफ़िया ने इससे कलामुल्लाह पर ज़्यादती की है। मैं कहता हूँ हनफ़िया का कोई उसूल जमता ही नहीं है। उसूल में तो ये लिखते हैं कि ख़बरे वाहिद और क़ौले सहाबी भी हुज्जत है। **युत्रकु बिहिल क़ियास** और फिर सैंकड़ों मसाइल में हदीष़ के ख़िलाफ़ क़यास पर अमल करते हैं। उसूल में लिखते हैं कि किताबुल्लाह पर ज़्यादती के लिये ख़बरे मशहूर या मुतवातिर ज़रूरी है और फिर सैंकड़ों मसाइल में ख़बरे वाहिद से ज़्यादती करते हैं और जहाँ चाहते हैं वहाँ ख़बरे मशहूर को भी ये बहाना करके कि मुख़ालिफ़ किताबुल्लाह है तर्क कर देते हैं। मष़लन **यमीनु मअश्शाहिदिल वाहिद** की अहादीष़ को। ग़र्ज़ ये अजब उसूल हैं जो समझ में नहीं आते और हक़ ये है कि ये इमाम अबू हनीफ़ा (रह़.) के उसूल नहीं हैं ख़ुद पिछलों ने क़ायम किये हैं और वही हक़ तआला के पास जवाबदार बनेंगे अल्लाह

इंसाफ़ नसीब करे। आमीन।

बाब 2 : नबी करीम (ﷺ) का ज़ुबैर (रज़ि.) को अकेले काफ़िरों की ख़बर लाने के लिये भेजना

٢- باب بَعْثِ النَّبِيِّ ﷺ الزُّبَيْرَ طَلِيعَةً وَحْدَهُ

हज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) इस बाबे ये षाबित कर रहे हैं कि ख़बरे वाह़िद की सेह़त पर रसूले करीम (ﷺ) ने ख़ुद ए'तिमाद किया अगर ऐसा न हो तो आप वाह़िद शख़्स़ या'नी ह़ज़रत ज़ुबैर (रज़ि.) को उस मा'रके के लिये न भेजते।

٧٢٦١- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، حَدَّثَنَا ابْنُ الْمُنْكَدِرِ قَالَ: سَمِعْتُ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ قَالَ: نَدَبَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ النَّاسَ يَوْمَ الْخَنْدَقِ فَانْتَدَبَ الزُّبَيْرُ ثُمَّ نَدَبَهُمْ فَانْتَدَبَ الزُّبَيْرُ ثُمَّ نَدَبَهُمْ فَانْتَدَبَ الزُّبَيْرُ فَقَالَ: ((لِكُلِّ نَبِيٍّ حَوَارِيٌّ، وَحَوَارِيَّ الزُّبَيْرُ)) قَالَ سُفْيَانُ: حَفِظْتُهُ مِنِ ابْنِ الْمُنْكَدِرِ وَقَالَ لَهُ أَيُّوبُ: يَا أَبَا بَكْرٍ حَدِّثْهُمْ عَنْ جَابِرٍ فَإِنَّ الْقَوْمَ يُعْجِبُهُمْ أَنْ تُحَدِّثَهُمْ عَنْ جَابِرٍ فَقَالَ فِي ذَلِكَ الْمَجْلِسِ: سَمِعْتُ جَابِرًا فَتَابَعَ بَيْنَ أَحَادِيثَ سَمِعْتُ جَابِرًا قُلْتُ لِسُفْيَانَ: فَإِنَّ الثَّوْرِيَّ يَقُولُ يَوْمَ قُرَيْظَةَ: فَقَالَ كَذَا حَفِظْتُهُ مِنْهُ كَمَا أَنَّكَ جَالِسٌ يَوْمَ الْخَنْدَقِ قَالَ سُفْيَانُ: هُوَ يَوْمٌ وَاحِدٌ وَتَبَسَّمَ سُفْيَانُ.

[راجع: ٢٨٤٦]

7261. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़यय्ना ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन मुंकदिर ने कहा कि मैंने जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) से सुना, बयान किया कि ग़ज़्वा-ए-ख़ंदक़ के दिन नबी करीम (ﷺ) ने (दुश्मन से ख़बर लाने के लिये) स़हाबा से कहा तो ज़ुबैर (रज़ि.) तैयार हो गये फिर उनसे कहा तो ज़ुबैर (रज़ि.) ही तैयार हुए। फिर कहा, फिर भी उन्होंने ही आमादगी दिखलाई। उसके बाद आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि हर नबी के ह़वारी (मददगार) होते हैं और मेरे ह़वारी ज़ुबैर (रज़ि.) हैं और सुफ़यान बिन उ़यय्ना ने बयान किया कि मैंने ये रिवायत इब्नुल मुंकदिर से याद की और अय्यूब ने इब्नुल मुंकदिर से कहा, ऐ अबूबक्र! (ये मुहम्मद बिन मुंकदिर की कुन्नियत है) उनसे जाबिर (रज़ि.) की ह़दीष़ बयान कीजिए क्योंकि लोग पसंद करते हैं कि आप जाबिर (रज़ि.) की अह़ादीष़ बयान करें तो उन्होंने उसी मज्लिस में कहा कि मैंने जाबिर (रज़ि.) से सुना और चार अह़ादीष़ में पे दर पे ये कहा कि मैंने जाबिर (रज़ि.) से सुना। अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने कहा कि मैंने सुफ़यान बिन उ़यय्ना से कहा कि सुफ़यान ष़ौरी तो ग़ज़्वा क़ुरैज़ा कहते हैं (बजाय ग़ज़्वा ख़ंदक़ के) उन्होंने कहा मैंने इतने ही यक़ीन के साथ याद किया है जैसा कि तुम इस वक़्त बैठे हो उन्होंने ग़ज़्वा ख़ंदक़ कहा, सुफ़यान ने कहा कि ये दोनों एक ही ग़ज़्वा हैं (क्योंकि) ग़ज़्वा ख़ंदक़ के फ़ौरन बाद उसी दिन ग़ज़्वा क़ुरैज़ा पेश आया और वो मुस्कुराए। (राजेअ़ : 2846)

तश्रीह : बनी क़ुरैज़ा के दिन से वो दिन मुराद है जब जंगे ख़ंदक़ में आँह़ज़रत (ﷺ) ने बनी क़ुरैज़ा की ख़बर लाने के लिये फ़र्माया था वो दिन मुराद नहीं है जब बनी क़ुरैज़ा का मुह़ास़रा (घेराव) किया और उनसे जंग शुरू की क्योंकि ये जंग, जंगे ख़ंदक़ के बाद हुई जो कई दिन तक क़ायम रही थी। बाब की मुत़ाबक़त ज़ाहिर है कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने अकेले एक शख़्स़ ज़ुबैर (रज़ि.) को ख़बर लाने के लिये भेजा और एक शख़्स़ की ख़बर क़ाबिले ए'तिमाद समझी।

बाब 3 : अल्लाह तआला का सूरह अहज़ाब में फ़र्माना कि, नबी के घरों में न दाख़िल हो मगर इजाज़त लेकर जब तुमको खाने के लिये बुलाया जाए। ज़ाहिर है कि इजाज़त के लिये एक शख़्स का भी इज़्न देना काफ़ी है।

٣- باب قَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿لاَ تَدْخُلُوا بُيُوتَ النَّبِيِّ إِلاَّ أَنْ يُؤْذَنَ لَكُمْ﴾ [الأحزاب : ٥٣] فَإِذَا أَذِنَ لَهُ وَاحِدٌ جَازَ.

जुम्हूर का यही क़ौल है क्योंकि आयत मे कोई क़ैद नहीं है कि एक शख़्स या इतने शख़्स इजाज़त दें बल्कि इज़्न के लिये एक आदिल शख़्स का इज़्न देना काफ़ी है क्योंकि ऐसे मामले में झूठ बोलने का मौक़ा नहीं है इससे भी ख़बरे वाहिद की सेहत षाबित होती है।

7262. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद ने बयान किया, उनसे अय्यूब ने, उनसे अबू उष्मान ने और उनसे अबू मूसा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) एक बाग़ में दाख़िल हुए और मुझे दरवाज़ा की निगरानी का हुक्म दिया, फिर एक सहाबी आए और इजाज़त मांगी। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि उन्हें इजाज़त दे दो और उन्हें जन्नत की बशारत दे दो। वो अबूबक्र (रज़ि.) थे। फिर उमर (रज़ि.) आए। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि उन्हें भी इजाज़त दे दो और उन्हें जन्नत की बशारत दे दो। फिर उष्मान (रज़ि.) आए। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि उन्हें भी इजाज़त दे दो और जन्नत की बशारत दे दो। (राजेअ : 3674)

٧٢٦٢- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، عَنْ أَيُّوبَ، عَنْ أَبِي عُثْمَانَ، عَنْ أَبِي مُوسَى أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ دَخَلَ حَائِطًا، وَأَمَرَنِي بِحِفْظِ الْبَابِ، فَجَاءَ رَجُلٌ يَسْتَأْذِنُ فَقَالَ: ((ائْذَنْ لَهُ وَبَشِّرْهُ بِالْجَنَّةِ)) فَإِذَا أَبُوبَكْرٍ، ثُمَّ جَاءَ عُمَرُ فَقَالَ: ((ائْذَنْ لَهُ وَبَشِّرْهُ بِالْجَنَّةِ)) ثُمَّ جَاءَ عُثْمَانُ فَقَالَ: ((ائْذَنْ لَهُ وَبَشِّرْهُ بِالْجَنَّةِ)).
[راجع: ٣٦٧٤]

बाब का तर्जुमा की मुताबक़त ज़ाहिर है कि उन्होंने एक शख़्स या'नी अबू मूसा (रज़ि.) की इजाज़त को काफ़ी समझा।

7263. हमसे अ़ब्दुल अज़ीज़ बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे सुलैमान बिन बिलाल ने बयान किया, उनसे यह्या ने, उनसे उ़बैद बिन हुनैन ने, उन्होंने इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से सुना, और उनसे उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं हाज़िर हुआ तो रसूलुल्लाह (ﷺ) अपने बालाख़ाने मे तशरीफ़ रखते थे और आपका एक काला ग़ुलाम सीढ़ी के ऊपर (निगरानी कर रहा) था। मैंने उससे कहा कि कहो कि उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) खड़ा है और इजाज़त चाहता है। (राजेअ : 89)

٧٢٦٣- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ بِلاَلٍ، عَنْ يَحْيَى، عَنْ عُبَيْدِ بْنِ حُنَيْنٍ، سَمِعَ ابْنَ عَبَّاسٍ عَنْ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمْ قَالَ: جِئْتُ فَإِذَا رَسُولُ اللهِ ﷺ فِي مَشْرُبَةٍ لَهُ وَغُلاَمٌ لِرَسُولِ اللهِ ﷺ أَسْوَدُ عَلَى رَأْسِ الدَّرَجَةِ فَقُلْتُ: قُلْ هَذَا عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ فَأَذِنَ لِي.
[راجع: ٨٩]

हज़रत उ़मर (रज़ि.) ने ये ख़बर सुनी कि आँहज़रत (ﷺ) ने अपनी बीवियों को तलाक़ दे दी है। इस तहक़ीक़ के लिये आए और एक दरबान रिबाह नामी की इजाज़त लेने पर ए'तिमाद किया। इससे ख़बरे वाहिद का हुज्जत होना षाबित हुआ।

बाब 4 : नबी करीम (ﷺ) का आमिलों और क़ासिदों को एक के बाद एक भेजना

٤- باب مَا كَانَ يَبْعَثُ النَّبِيُّ ﷺ مِنَ الأُمَرَاءِ وَالرُّسُلِ وَاحِدًا بَعْدَ وَاحِدٍ وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: بَعَثَ النَّبِيُّ ﷺ، دِحْيَةَ الْكَلْبِيَّ بِكِتَابِهِ إِلَى عَظِيمِ بُصْرَى أَنْ يَدْفَعَهُ إِلَى قَيْصَرَ.

इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने दहिया कल्बी (रज़ि.) को अपने ख़त़ के साथ अ़ज़ीमे बस़रा के पास भेजा कि वो ये ख़त़ क़ैस़र शाहे रोम तक पहुँचा दे।

और ह़ात़िब बिन अबी बल्तआ को ख़त़ देकर मक़ूक़स बादशाह इस्कंदरिया के पास भेजा ये ख़त़ अब तक मौजूद है और इसकी अ़क्सी (स्कैन) तस्वीरें छप चुकी हैं और शुजाअ बिन अबी शमुरह को बल्क़ाअ के ह़ाकिम के पास भेजा।

٧٢٦٤- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ، حَدَّثَنِي اللَّيْثُ، عَنْ يُونُسَ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ أَنَّهُ قَالَ: أَخْبَرَنِي عُبَيْدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُتْبَةَ أَنَّ عَبْدَ اللهِ بْنَ عَبَّاسٍ أَخْبَرَهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ بَعَثَ بِكِتَابِهِ إِلَى كِسْرَى، فَأَمَرَهُ أَنْ يَدْفَعَهُ إِلَى عَظِيمِ الْبَحْرَيْنِ، يَدْفَعُهُ عَظِيمُ الْبَحْرَيْنِ إِلَى كِسْرَى فَلَمَّا قَرَأَهُ كِسْرَى مَزَّقَهُ فَحَسِبْتُ أَنَّ ابْنَ الْمُسَيَّبِ قَالَ: فَدَعَا عَلَيْهِمْ رَسُولُ اللهِ ﷺ أَنْ يُمَزَّقُوا كُلَّ مُمَزَّقٍ.[راجع: ٦٤]

7264. हमसे यह़्या बिन बुकैर ने बयान किया, उन्हों ने कहा मुझसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे यूनुस ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उन्हें उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़त्बा ने ख़बर दी, उन्हें अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने ख़बर दी कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने किसरा परवेज़ शाहे ईरान को ख़त़ भेजा और क़ासिद अ़ब्दुल्लाह बिन हु़ज़ाफ़ा (रज़ि.) को हुक्म दिया कि ख़त़ बह़रीन के गवर्नर मुंज़िर बिन सावी के ह़वाले करें वो उसे किसरा तक पहुँचाएगा। जब किसरा ने वो ख़त़ पढ़ा तो उसे फाड़ दिया। मुझे याद है कि सईद बिन मुसय्यब ने बयान किया कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने उसे बद्दुआ दी कि अल्लाह उन्हें भी टुकड़े टुकड़े कर दे। (राजेअ : 64)

तश्रीह : टुकड़े टुकड़े कर दे, उनकी हुकूमत का नामोनिशान न रहे। ऐसा ही हुआ। ईरान वालों की सल्तनत ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) की ख़िलाफ़त में बिलकुल नाबूद हो गई और फिर आज तक पारसियों को सल्तनत नस़ीब नहीं हुई सारी दुनिया में वे दूसरों की रइयत (प्रजा) हैं। इनकी शहज़ादियाँ तक क़ैद होकर मुसलमानों के तस़र्रुफ़ में आईं। इससे बढ़कर और क्या ज़िल्लत होगी मरदूद किसरा परवेज़ एक छोटे से मुल्क का बादशाह होकर ये दिमाग़ रखता था कि परवरदिगारे आ़लम के मह़बूब का ख़त़ जो आँखों पर रखना था उसने ह़क़ीर जानकर फाड़ डाला, उसकी सज़ा मिली। ये दुनिया के (जाहिल) बादशाह दरह़क़ीक़त त़ागूत हैं। मा'लूम नहीं अपने तईं क्या समझते हैं कहो जैसे तुम वैसे ही अल्लाह की दूसरी मख़्लूक़ तुममें क्या लअ़ल लटकते हैं ज्यों ज्यों दुनिया में इ़ल्म की तरक़्क़ी होती जाती है त्यों त्यों बादशाहों के नाक के कीड़े झड़ते जाते हैं और आज के ज़माने में तो कोई इन नामोनिहाद बादशाहों को एक कोड़ी बराबर भी नहीं पूछता है। अ़ज़्मत और इ़ज़्ज़त का तो क्या ज़िक्र है। (आज सन 1978 ईस्वी का दौर तो बहुत ही इ़बरत अंगेज़ है)।

٧٢٦٥- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا يَحْيَى، عَنْ يَزِيدَ بْنِ أَبِي عُبَيْدٍ، حَدَّثَنَا سَلَمَةُ بْنُ الأَكْوَعِ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ لِرَجُلٍ مِنْ

7265. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे यह़्या क़त्तान ने बयान किया, उनसे यज़ीद बिन अबी उ़बैद ने, उनसे सलमा बिन अक्वा (रज़ि .) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने क़बीला असलम के एक स़ाहब हिन्द बिन अस्मा से फ़र्माया कि अपनी

أَسْلَمَ : ((أَذِّنْ فِي قَوْمِكَ أَوْ فِي النَّاسِ يَوْمَ عَاشُورَاءَ أَنَّ مَنْ أَكَلَ فَلْيُتِمَّ بَقِيَّةَ يَوْمِهِ، وَمَنْ لَمْ يَكُنْ أَكَلَ فَلْيَصُمْ)).

क़ौम में या लोगों में ए'लान कर दो आशूरा के दिन कि जिसने खा लिया हो वो अपना बक़िया (बेखाए) पूरा करे और जिसने न खाया हो वो रोज़ा रखे। (राजेअ : 1924)

बाब का तर्जुमा इससे निकला कि आपने एक ही शख़्स को अपनी तरफ़ से ऐलची मुक़र्रर कर दिया।

٥- باب وَصَاةِ النَّبِيِّ ﷺ وُفُودَ الْعَرَبِ أَنْ يُبَلِّغُوا مَنْ وَرَاءَهُمْ

قَالَهُ مَالِكُ بْنُ الْحُوَيْرِثِ.

बाब 5 : वफ़ूदे अरब को नबी करीम (ﷺ) की ये वसिय्यत कि उन लोगों को जो मौजूद नहीं हैं दीन की बातें पहुँचा दें

ये मालिक बिन हुवेरिष़ सहाबी ने नक़ल किया।

٧٢٦٦- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ الْجَعْدِ، أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ ح وَحَدَّثَنِي إِسْحَاقُ، أَخْبَرَنَا النَّضْرُ، أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ، عَنْ أَبِي جَمْرَةَ قَالَ : كَانَ ابْنُ عَبَّاسٍ يُقْعِدُنِي عَلَى سَرِيرِهِ فَقَالَ : إِنَّ وَفْدَ عَبْدِ الْقَيْسِ لَمَّا أَتَوْا رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: ((مَنِ الْوَفْدُ؟)) قَالُوا: رَبِيعَةُ قَالَ: ((مَرْحَبًا بِالْوَفْدِ أَوِ الْقَوْمِ غَيْرَ خَزَايَا وَلاَ نَدَامَى)) قَالُوا يَا رَسُولَ اللهِ : إِنَّ بَيْنَنَا وَبَيْنَكَ كُفَّارَ مُضَرَ، فَمُرْنَا بِأَمْرٍ نَدْخُلُ بِهِ الْجَنَّةَ وَنُخْبِرُ بِهِ مَنْ وَرَاءَنَا، فَسَأَلُوا عَنِ الأَشْرِبَةِ فَنَهَاهُمْ عَنْ أَرْبَعٍ وَأَمَرَهُمْ بِأَرْبَعٍ أَمَرَهُمْ بِالإِيمَانِ بِاللهِ، قَالَ: ((هَلْ تَدْرُونَ مَا الإِيمَانُ بِاللهِ؟)) قَالُوا: اللهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ قَالَ: ((شَهَادَةُ أَنْ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ، وَحْدَهُ لاَ شَرِيكَ لَهُ، وَأَنَّ مُحَمَّدًا رَسُولُ اللهِ وَإِقَامُ الصَّلاَةِ وَإِيتَاءُ الزَّكَاةِ - وَأَظُنُّ فِيهِ - صِيَامُ رَمَضَانَ وَتُؤْتُوا مِنَ الْمَغَانِمِ الْخُمُسَ

7266. हमसे अली बिन अल जअद ने बयान किया, कहा हमको शुअबा ने ख़बर दी (दूसरी सनद) इमाम बुख़ारी (रह.) ने कहा कि और मुझसे इस्हाक़ बिन राह्वै ने बयान किया, कहा हमको नज़्र बिन शुमैल ने ख़बर दी, कहा हमको शुअबा ने ख़बर दी, उनसे अबू जम्रह ने बयान किया कि इब्ने अब्बास (रज़ि.) मुझे ख़ास अपने तख़्त पर बिठा लेते थे। उन्होंने एक बार बयान किया कि क़बीला अब्दुल क़ैस का वफ़्द आया जब वो लोग नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में पहुँचे तो आँहज़रत (ﷺ) ने पूछा किस क़ौम का वफ़्द है? उन्होंने कहा कि रबीआ क़बीला का (अब्दुल क़ैस इसी क़बीले की एक शाख़ है) आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया मुबारक हो इस वफ़्द का या यूँ फ़र्माया कि मुबारक हो बिला रुस्वाई और शर्मिन्दगी उठाए आए हो। उन्होंने कहा या रसूलल्लाह! हमारे और आपके बीच में मुज़र काफ़िरों का मुल्क पड़ता है। आप हमें ऐसी बात का हुक्म दीजिए जिससे हम जन्नत में दाख़िल हों और अपने पीछे रह जाने वालों को भी बताएँ। फिर उन्होंने शराब के बर्तनों के बारे में पूछा तो आँहज़रत (ﷺ) ने उन्हें चार चीज़ों से रोका और चार चीज़ों का हुक्म दिया। आपने ईमान बिल्लाह का हुक्म दिया। पूछा जानते हो ईमान बिल्लाह क्या चीज़ है? उन्होंने कहा कि अल्लाह और उसका रसूल ज़्यादा जानते हैं। फ़र्माया ये कि गवाही देना कि अल्लाह के सिवा और कोई मा'बूद नहीं और मुहम्मद (ﷺ) अल्लाह के रसूल हैं और नमाज़ क़ायम करने का (हुक्म दिया) और ज़कात देने का। मेरा ख़्याल है कि हदीष़

وَنَهَاهُمْ عَنِ الدُّبَّاءِ وَالْحَنْتَمِ وَالْمُزَفَّتِ وَالنَّقِيرِ)) وَرُبَّمَا قَالَ: الْمُقَيَّرِ قَالَ: ((احْفَظُوهُنَّ وَأَبْلِغُوهُنَّ مَنْ وَرَاءَكُمْ)).

[راجع: ٥٣]

में रमज़ान के रोज़ों का भी ज़िक्र है और ग़नीमत में से पाँचवाँ हिस्सा (बैतुलमाल) में देना और आपने उन्हें दुब्बाअ, हन्तुम, मुज़फ़्फ़त औरनक़ीर के बर्तन (जिनमें अरब लोग शराब रखते और बनाते थे) के इस्ते'माल से मना किया और कुछ औक़ात मुक़य्यर कहा। फ़र्माया कि इन्हें याद रखो और इन्हें पहुँचा दो जो नहीं आ सके हैं। (राजेअ : 53)

तश्रीह : मुक़य्यर या'नी क़ार लगा हुआ क़ारूरा रोग़न है जो कश्तियों पर मला जाता है। बाब का तर्जुमा इसी फ़िक़रे से निकलता है कि अपने मुल्क वालों को पहुँचा दो क्योंकि ये आम है। एक शख़्स भी उनमें का ये बाते दूसरे को पहुँचा सकता है। इसी से ख़बरे वाहिद का हुज्जत होना ष़ाबित हुआ। दुब्बाअ कद्दू का तूम्बा, हन्तुम सब्ज़ लाखी और राल का बर्तन, नक़ीर कुरैदी हुई लकड़ी का बर्तन। उस वक़्त इन बर्तनों में शराब बनाई जाती थी। इसलिये आपने इन बर्तनों के इस्ते'माल से भी रोक दिया, अब ये ख़तरात ख़त्म हैं।

٦- باب خَبَرِ الْمَرْأَةِ الْوَاحِدَةِ

बाब 6 : एक औरत की ख़बर का बयान

अगर ये औरत ष़िक़ह हो तो उसकी ख़बर भी वाजिबुल क़ुबूल है।

٧٢٦٧- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْوَلِيدِ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ تَوْبَةَ الْعَنْبَرِيِّ، قَالَ: قَالَ لِي الشَّعْبِيُّ، أَرَأَيْتَ حَدِيثَ الْحَسَنِ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ، وَقَاعَدْتُ ابْنَ عُمَرَ قَرِيبًا مِنْ سَنَتَيْنِ أَوْ سَنَةٍ وَنِصْفٍ، فَلَمْ أَسْمَعْهُ يُحَدِّثُ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ غَيْرَ هَذَا، قَالَ: كَانَ نَاسٌ مِنْ أَصْحَابِ النَّبِيِّ ﷺ فِيهِمْ سَعْدٌ فَذَهَبُوا يَأْكُلُونَ مِنْ لَحْمٍ فَنَادَتْهُمْ امْرَأَةٌ مِنْ بَعْضِ أَزْوَاجِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ إِنَّهُ لَحْمُ ضَبٍّ فَأَمْسَكُوا فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((كُلُوا أَوْ أَطْعَمُوا فَإِنَّهُ حَلاَلٌ)) أَوْ قَالَ: لاَ بَأْسَ بِهِ شَكَّ فِيهِ وَلَكِنَّهُ لَيْسَ مِنْ طَعَامِي.

7267. हमसे मुहम्मद बिन वलीद ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन जा'फ़र ने, कहा हमसे शुअबा ने, उनसे तौबा बिन कैसान अम्बरी ने बयान किया कि मुझसे शअबी ने कहा कि तुमने देखा इमाम हसन बस़री नबी करीम (ﷺ) से कितनी हदीष़ (मुर्सलन) रिवायत करते हैं। मैं इब्ने उमर (रज़ि.) की ख़िदमत में तक़रीबन अढ़ाई साल रहा लेकिन मैंने उनको आँहज़रत (ﷺ) से इस हदीष़ के सिवा और कोई हदीष़ बयान करते नहीं सुना। उन्होंने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) के स़हाबा में से कई अस्हाब जिनमें सअद (रज़ि.) भी थे (दस्तरख़्वान पर बैठे हुए थे) लोगों ने गोश्त खाने के लिये हाथ बढ़ाया तो अज़्वाजे मुतहहरात में से एक बीवी मुतहहरा उम्मुल मोमिनीन मैमूना (रज़ि.) ने आगाह किया कि ये साण्डे का गोश्त है। सब लोग खाने से रुक गये, फिर आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि खाओ (आपने कुलू फ़र्माया या अत़अमू) इसलिये कि हलाल है या फ़र्माया कि इस खाने में कोई हर्ज नहीं अल्बत्ता ये जानवर मेरी ख़ूराक नहीं है। मुझको इसके खाने से एक क़िस्म की नफ़रत आती है।

शअबी का ये मत़लब नहीं कि मआज़ल्लाह इमाम हसन बस़री झूठे हैं बल्कि उनका मत़लब ये है कि इमाम हसन बस़री हदीष़ बयान करने में बहुत जुर्रात करते हैं हालाँकि वो ताबेई हैं। हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रजि.) स़हाबी होकर बहुत कम हदीष़ बयान करते थे। ये एहतियात की बिना पर था कि ख़ुदा न ख़्वास्ता कोई ग़लत हदीष़ बयान में आए और मैं ज़िन्दा दोज़ख़ी बनूँ क्यूँकर ग़लत हदीष़ बयान करूँ।

तश्रीह : क़ुर्आन व ह़दीष़ पर चंगुल मारना और उनके ख़िलाफ़ राय व क़यास से बचना बुनियादे ईमान है। सबसे पहले राय क़यास पर अ़मल करने और नस़्से स़रीह़ को रद्द करने वाला इब्लीस है। क़ुर्आन मजीद की सरीह़ आयात और रसूले करीम (ﷺ) की ह़दीष़ के मुंकिर की सज़ा यही है कि वो दोज़ख़ में अपना ठिकाना बना रहा है। एक औ़रत ज़ात ने गोश्त के बारे में बतलाया कि वो सांडे का गोश्त है। इसकी ख़बर को सबने तस्लीम किया। इसी से औ़रत की ख़बर भी क़ुबूल की जाएगी बशर्ते कि वो ष़िक़ह हो। इसी से ख़बरे वाहि़द का हुज्जत होना ष़ाबित हुआ जो लोग ख़बरे वाहि़द को हुज्जत नहीं मानते उनका मसलक स़ह़ीह़ नहीं है तमाम अह़ादीष़ के नक़ल करने से ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) का यही मक़्सद है। **वल्ह़म्दु अव्वलन व आख़िरन** ये बाब ख़त्म हुआ।

97. किताबुल ए'तिसाम बिल किताब वस्सुन्नः

किताबुल्लाह व सुन्नते रसूलुल्लाह (ﷺ) को मज़बूती से थामे रहना

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

तश्रीह : अल इअतिस़ामु इफ़्तिआलुम मिनल इ़स्मति वल्मुरादु इम्तिष़ालु क़ौलिही तआ़ला वअतस़िमू बिहब्लिल्लाहि जमीअ़न अल्आय: क़ालल किर्मानी हाज़िहित्तर्जुमतु मुन्तज़िअ़तुम मिन क़ौलिही तआ़ला वअ़तस़िमू बिहब्लिल्लाहि जमीअ़न लिअन्नल मुराद बिल्हब्लि अल्किताब वस्सुन्नह अ़ला सबीलिल इस्तिआरति वल जामिउ़ कौनुहुमा सबबल लिल मक़्सूदि व हुवष़्ष़वाबु वन्नजातु मिनल अ़ज़ाबि कमा अन्नल हब्ल सबबुन लिहुसूलिल मक़्सूदि बिही मिनस्सुक़्या व ग़ैरूहू वल्मुरादु बिल किताबि अल्क़ुर्आन लित्तअ़ब्बुदि बितिलावतिही व बिस्सुन्नति मा जाअ अनिन्नबिय्यि (ﷺ) मिन अक़्वालिही व अफ़्वालिही व तक़्रीरातिही व मा हुम बिफ़िअ़लिही वस्सुन्नतु फ़ी अस़्लिल लुग़ति अत्तरीक़तु व फ़ी इस्तिलाहिल उस़ूलिय्यीन वल मुहद्दिष़ीन मा तक़द्दम क़ाल इब्नु बत्ताल ला इ़स्मत लिअहदिन इल्ला फ़ी किताबिल्लाहि औ फ़ी सुन्नति रसूलिही औ फ़ी इज्माइन उ़लमाइ अ़ला मअ़ना फ़ी अहदिहिमा ष़ुम्म तकल्लम अलस्सुन्नति बिइतिबारि मा जाअ अनिन्नबिय्यि (ﷺ). (फ़त्हुल बारी)

लफ़्ज़ ए'तिस़ाम बाब इफ़्तिआ़ल का मस़दर इ़स्मत से माख़ूज़ है। इससे मुराद अल्लाह के इर्शाद, **वअ़तस़िमू बिहब्लिल्लाहि जमीआ़** की ता'मील है। किर्मानी ने कहा कि ये तर्जुमा अल्लाह के क़ौल, **वअ़तस़िमू बिहब्लिल्लाहि जमीआ़** से माख़ूज़ है क्योंकि ह़ब्ल से मुराद अल्लाह की किताब और उसके रसूल की सुन्नत है और मक़्सूद उनसे ष़वाबे आख़िरत पाना और अ़ज़ाबे आख़िरत से नजात ह़ासिल करना है जैसा कि रस्सी से खींचकर कुँए से पानी पिया जाता है और रस्सी में लटककर उसे मज़बूती से पकड़कर कुँए से बाहर आया जा सकता है। पस किताब से मुराद क़ुर्आन मजीद है जिसकी मह़ज़ तिलावत करना भी इ़बादत है और सुन्नत से मुराद रसूले करीम (ﷺ) के अक़्वाल और अफ़्आ़ल और आपका अपने सामने किसी काम को होते देखकर ष़ाबित रखना है और लफ़्ज़ सुन्नत लुग़त में त़रीक़े पर बोला जाता है और उस़ूलियों और मुह़द्दिष़ीन की इस्तिलाह में रसूले करीम (ﷺ) के अक़्वाल व अफ़्आ़ल और तक़रीर पर बोला जाता है। इब्ने बत्ताल ने कहा ग़लती से बचना स़िर्फ़ किताबुल्लाह या फिर सुन्नते रसूलुल्लाह (ﷺ) ही में है या फिर इज्माए उ़लमा में जो क़ुर्आन व ह़दीष़ के मुत़ाबिक़ हो।

7268. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबेर हुमैदी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, उनसे मिस्अ़र

٧٢٦٨- حَدَّثَنَا الْحُمَيْدِيُّ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ مِسْعَرٍ وَغَيْرِهِ عَنْ قَيْسِ بْنِ

مُسْلِمٍ، عَنْ طَارِقِ بْنِ شِهَابٍ قَالَ: قَالَ رَجُلٌ مِنَ الْيَهُودِ لِعُمَرَ يَا أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ لَوْ أَنَّ عَلَيْنَا نَزَلَتْ هَذِهِ الآيَةُ ﴿الْيَوْمَ أَكْمَلْتُ لَكُمْ دِينَكُمْ وَأَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِي وَرَضِيتُ لَكُمُ الإِسْلاَمَ دِينًا﴾ [المائدة: ٣] لاَتَّخَذْنَا ذَلِكَ الْيَوْمَ عِيدًا فَقَالَ عُمَرُ: إِنِّي لأَعْلَمُ أَيَّ يَوْمٍ نَزَلَتْ هَذِهِ الآيَةُ نَزَلَتْ يَوْمَ عَرَفَةَ فِي يَوْمِ جُمُعَةٍ. سَمِعَ سُفْيَانُ مِنْ مِسْعَرٍ، وَمِسْعَرٌ قَيْسًا وَقَيْسٌ طَارِقًا.

[راجع: ٤٥]

बिन क़ुदाम और उनके अलावा (सुफ़यान षौरी) ने, उनसे क़ैस बिन मुस्लिम ने, उनसे तारिक़ बिन शिहाब ने बयान किया, कि एक यहूदी (कअब अहबार इस्लाम लाने से पहले) ने हज़रत उमर (रज़ि.) से कहा, ऐ अमीरुल मोमिनीन! अगर हमारे यहाँ सूरह माइदह की ये आयत नाज़िल होती कि, आज मैंने तुम्हारे लिये तुम्हारे दीन को मुकम्मल कर दिया और तुम पर अपनी नेअमत को पूरा कर दिया और तुम्हारे लिये इस्लाम को बतौरे दीन के पसंद कर लिया, तो हम उस दिन को ईद (ख़ुशी) का दिन बना लेते। हज़रत उमर (रज़ि.) ने कहा कि मैं जानता हूँ कि ये आयत किस दिन नाज़िल हुई थी। अरफ़ा के दिन नाज़िल हुई और जुम्आ का दिन था। इमाम बुख़ारी (रह.) ने कहा ये रिवायत सुफ़यान ने मिस्अर से सुनी। मिस्अर ने क़ैस से सुना और क़ैस ने तारिक़ से। (राजेअ : 45)

तश्रीह : तो उस दिन मुसलमानों की दो ईद या'नी अरफ़ा और जुम्आ थीं और इत्तिफ़ाक़ से यहूद और नसारा और मजूस की ईदें भी उसी दिन आ गई थीं। इससे पेशतर कभी ऐसा नहीं हुआ। अल्फ़ाज़ **समिअ सुफ़यानु** में हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने सिमाअ की सराहत कर दी। इस हदीष की मुनासबत बाब से यूँ है कि अल्लाह पाक ने उम्मते मुहम्मदिया पर इस आयत में एहसान जतलाया कि मैंने आज तुम्हारा दीन पूरा कर दिया, अपना एहसान तुम पर तमाम कर दिया। ये जब ही होगा कि उम्मत अल्लाह व रसूल के अहकाम पर क़ायम रहे। क़ुर्आन व हदीष की पैरवी करती रहे। इससे ये भी ज़ाहिर हुआ कि नुज़ूले आयत के वक़्त इस्लाम मुकम्मल हो गया बाद में अँधी तक़्लीद से तक़्लीदी मज़ाहिब ने इस्लाम में इज़ाफ़ा करके तक़्लीद बग़ैर इस्लाम की तक्मील का मज़ाक़ उड़ाया। **फ़िया असफ़ा।**

٧٢٦٩- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ عُقَيْلٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ أَخْبَرَنِي أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ أَنَّهُ سَمِعَ عُمَرَ الْغَدَ حِينَ بَايَعَ الْمُسْلِمُونَ أَبَا بَكْرٍ، وَاسْتَوَى عَلَى مِنْبَرِ رَسُولِ اللهِ ﷺ تَشَهَّدَ قَبْلَ أَبِي بَكْرٍ فَقَالَ : أَمَّا بَعْدُ فَاخْتَارَ اللهُ لِرَسُولِهِ ﷺ الَّذِي عِنْدَهُ عَلَى الَّذِي عِنْدَكُمْ، وَهَذَا الْكِتَابُ الَّذِي هَدَى اللهُ بِهِ رَسُولَكُمْ فَخُذُوا بِهِ تَهْتَدُوا وَإِنَّمَا هَدَى اللهُ بِهِ رَسُولَهُ.

[راجع: ٧٢١٩]

7269. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष बिन सअद ने बयान किया, उनसे अक़ील बिन ख़ालिद ने, उनसे इब्ने शिहाब ने और उन्हें अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने ख़बर दी कि उन्होंने उमर (रज़ि.) से वो ख़ुत्बा सुना जो उन्होंने वफ़ाते नबवी के दूसरे दिन पढ़ा था। जिस दिन मुसलमानों ने अबूबक्र (रज़ि.) से बेअत की थी। हज़रत उमर (रज़ि.) रसूलुल्लाह (ﷺ) के मिम्बर पर चढ़े और अबूबक्र (रज़ि.) से पहले ख़ुत्बा पढ़ा फिर कहा, अम्माबअद! अल्लाह तआला ने अपने रसूल के लिये वो चीज़ (आख़िरत) पसंद की जो उसके पास थी उसके बजाय जो तुम्हारे पास थी या'नी दुनिया और ये किताबुल्लाह मौजूद है जिसके ज़रिये अल्लाह तआला ने तुम्हारे रसूल को दीन व सीधा रास्ता बतलाया पस उसे तुम थामे रहो तो हिदायतयाब रहोगे या'नी उस रास्ते पर रहोगे जो अल्लाह ने अपने पैग़म्बर को बतलाया था। (राजेअ : 7219)

तश्रीह : अगर क़ुर्आन को छोड़ दोगे तो गुमराह हो जाओगे। क़ुर्आन का मत़लब ह़दीष़ से खुलता है तो क़ुर्आन व ह़दीष़ यही दीन की अस़ल बुनियादें हैं। हर मुसलमान को उन दोनों को थामना या'नी समझकर इन्हीं के मुवाफ़िक़ ए'तिक़ाद और अ़मल करना ज़रूरी है। जिस शख़्स़ का ए'तिक़ाद या अ़मल क़ुर्आन व ह़दीष़ के मुवाफ़िक़ न हो, वो कभी अल्लाह का वली और मुक़र्रब बन्दा नहीं हो सकता और जिस शख़्स़ में जितना इत्तिबाअ़े क़ुर्आन व ह़दीष़ ज़्यादा है, उतना ही विलायत में उसका दर्जा बुलन्द है। मुसलमानों! ख़ूब समझ रखो मौत सर पर खड़ी है और आख़िरत में अपने परवरदिगार के सामने ह़ाज़िर होना ज़रूर है, ऐसा न हो कि तुम वहाँ शर्मिन्दा बनो और उस वक़्त की शर्मिन्दगी कुछ फ़ायदा न दे। देखो यही क़ुर्आन व ह़दीष़ की पैरवी तुमको नजात दिलवाने वाली और तुम्हारे बचाव के लिये एक उम्दा दस्तावेज़ है। बाक़ी सब चीज़ें ढोंग हैं। कश्फ़ व करामात, तस़व्वुरे शैख़, दुर्वेशी के शत़्ह़यात दूसरे ख़ुराफ़ात जैसे ह़ाल, क़ाल, न्याज़, अ़अ़रास, मेले-ठेले चराग़ाँ स़न्दल ये चीज़ें कुछ काम आने वाली नहीं हैं। एक शख़्स़ ने ह़ज़रत जुनैद (रह़.) को जो रईसुल औलिया थे, ख़्वाब में देखा पूछा, कहो क्या गुज़री? उन्होंने कहा वो दुर्वेशी के ह़क़ाइक़ और दक़ाइक़ और फ़क़ीरी के नुक्ते और ज़राइफ़ सब गये गुज़रे कुछ काम नहीं आए। चंद रकअ़तें तहज्जुद की जो हम सेह़र के क़रीब (सुन्नत के मुवाफ़िक़) पढ़ा करते थे, उन्होंने ही हमको बचाया। या अल्लाह! क़ुर्आन व ह़दीष़ पर हमको जमाए और शैत़ानी उ़लूम और वस्वसों से बचाए रख, आमीन।

7270. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे वुहैब बिन ख़ालिद ने बयान किया, उनसे ख़ालिद ह़ज़्ज़ाअ ने, उनसे इक्रिमा ने, उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने मुझे अपने सीने से लगाया और फ़र्माया ऐ अल्लाह! इसे क़ुर्आन का इल्म सिखा।

(राजेअ़ : 75)

٧٢٧٠- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ، عَنْ خَالِدٍ، عَنْ عِكْرِمَةَ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ : ضَمَّنِي إِلَيْهِ النَّبِيُّ ﷺ وَقَالَ: ((اللَّهُمَّ عَلِّمْهُ الْكِتَابَ)).

[راجع: ٧٥]

आँह़ज़रत (ﷺ) की दुआ़ का ये अष़र हुआ कि ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) उम्मत के बड़े आ़लिम हुए ख़ास़ त़ौर पर इल्म तफ़्सीर में उनका कोई नज़ीर न था।

7271. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन स़ब्बाह़ ने बयान किया, कहा हमसे मुअ़तमिर बिन सुलैमान ने बयान किया, कहा कि मैंने औ़फ़ अअ़राबी से सुना, उनसे अबुल मिन्हाल ने बयान किया, उन्होंने अबू बर्ज़ा (रज़ि.) से सुना, उन्होंने कहा कि अल्लाह तआ़ला ने तुम्हें इस्लाम और मुह़म्मद (ﷺ) के ज़रिये ग़नी कर दिया है या बुलंद दर्जा कर दिया है। (राजेअ़ : 7112)

٧٢٧١- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ صَبَّاحٍ، حَدَّثَنَا مُعْتَمِرٌ قَالَ : سَمِعْتُ عَوْفًا أَنَّ أَبَا الْمِنْهَالِ حَدَّثَهُ أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا بَرْزَةَ قَالَ : إِنَّ اللهَ يُغْنِيكُمْ أَوْ نَعَشَكُمْ بِالإِسْلاَمِ وَبِمُحَمَّدٍ ﷺ. [راجع: ٧١١٢]

वरना इस्लाम से पहले तुम ज़लील और मुह़ताज थे।

7272. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, कहा मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन दीनार ने कि अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने अ़ब्दुल मलिक बिन मरवान को ख़त़ लिखा कि वो इसकी बेअ़त क़ुबूल करते हैं और ये लिखा कि मैं तेरा हुक्म सुनूँगा और मानूँगा बशर्ते कि अल्लाह की शरीअ़त और उसके रसूल की सुन्नत के मुवाफ़िक़ हो जहाँ तक मुझसे मुम्किन होगा।

٧٢٧٢- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، حَدَّثَنِي مَالِكٌ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ دِينَارٍ أَنَّ عَبْدَ اللهِ بْنَ عُمَرَ كَتَبَ إِلَى عَبْدِ الْمَلِكِ بْنِ مَرْوَانَ يُبَايِعُهُ وَأَقِرُّ بِذَلِكَ بِالسَّمْعِ وَالطَّاعَةِ عَلَى سُنَّةِ اللهِ وَسُنَّةِ رَسُولِهِ فِيمَا اسْتَطَعْتُ.

(राजेअ: 7203) [راجع: ۷۲۰۳]

ये हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) की शहादत के बाद की बात है जब अब्दुल मलिक बिन मरवान की ख़िलाफ़त पर लोगों का इत्तिफ़ाक़ हो गया।

बाब 1 : नबी करीम (ﷺ) का इर्शाद कि मैं जवामिउ़ल कलिम के साथ भेजा गया हूँ

١- باب قَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ: ((بُعِثْتُ بِجَوَامِعِ الْكَلِمِ))

जिनके लफ्ज़ थोड़े और मआनी बहुत हों।

7273. हमसे अब्दुल अज़ीज़ बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम बिन सअद ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे सईद बिन मुसय्यब ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, मुझे जवामिउ़ल कलिम (मुख़्तसर अल्फ़ाज़ में बहुत से मआनी को समो देना) के साथ भेजा गया है और मेरी मदद रुअ़ब के ज़रिये की गई और मैं सोया हुआ था कि मैंने ख़्वाब में देखा कि मेरे पास ज़मीन के ख़ज़ानों की चाबियाँ रख दी गईं। अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा कि आँहज़रत (ﷺ) तो चले गये और तुम मज़े कर रहे हो या इसी जैसा कोई कलिमा कहा। (राजेअ: 2977)

٧٢٧٣- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ ((بُعِثْتُ بِجَوَامِعِ الْكَلِمِ، وَنُصِرْتُ بِالرُّعْبِ، وَبَيْنَا أَنَا نَائِمٌ رَأَيْتُنِي أُتِيتُ بِمَفَاتِيحِ خَزَائِنِ الأَرْضِ، فَوُضِعَتْ فِي يَدِي)) قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ فَقَدْ ذَهَبَ رَسُولُ اللهِ ﷺ وَأَنْتُمْ تَلْغَثُونَهَا، أَوْ تَرْغَثُونَهَا أَوْ كَلِمَةً تُشْبِهُهَا.[راجع: ۲۹۷۷]

हदीष़ में **तल्ग़ष़ूनहा** है ये कलिमा लग़ीष़ से निकला है। लग़ीष़ खाने को जिसमें जो मिले हों कहते हैं या'नी जिस तरह इत्तिफ़ाक़ पड़े खाते हो या लफ़्ज़ तरग़िष़ूनहा है जो रग़ुष़ से निकला है। अरब लोग कहते हैं, **रग़िष़ल जुद्दी उम्महू** या'नी बकरी के बच्चे ने अपनी माँ का दूध पी लिया।

7274. हमसे अब्दुल अज़ीज़ बिन अब्दुल्लाह उवैसी ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ बिन सअद ने बयान किया, उनसे सईद बिन अबी सईद ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, अंबिया में से कोई नबी ऐसा नहीं जिनको कुछ निशानियाँ (या'नी मुअजज़ात) न दिये गये हों जिनके मुताबिक़ उन पर ईमान लाया गया या (आपने फ़र्माया कि) इंसान ईमान लाए और मुझे जो बड़ा मुअजज़ा दिया गया वो क़ुर्आन मजीद है जो अल्लाह ने मेरी तरफ़ भेजा। पस मैं उम्मीद करता हूँ कि क़यामत के दिन शुमार में तमाम अंबिया से ज़्यादा पैरवी करने वाले मेरे होंगे। (राजेअ: 4981)

٧٢٧٤- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ سَعِيدٍ، عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ ((مَا مِنَ الأَنْبِيَاءِ نَبِيٌّ إِلاَّ أُعْطِيَ مِنَ الآيَاتِ مَا مِثْلُهُ أُومِنَ أَوْ آمَنَ عَلَيْهِ الْبَشَرُ وَإِنَّمَا كَانَ الَّذِي أُوتِيتُ وَحْيًا أَوْحَاهُ اللهُ إِلَيَّ فَأَرْجُو أَنِّي أَكْثَرُهُمْ تَابِعًا يَوْمَ الْقِيَامَةِ)).

[راجع: ٤٩٨١]

तश्रीह : क़ुर्आन ऐसा मुअजज़ा है जो क़यामत तक बाक़ी है। आज क़ुर्आन उतरे चौदह सौ बरस से ज़्यादा हो चुके

हैं लेकिन किसी से क़ुर्आन की एक सूरत न बन सकी बावजूद ये कि हर ज़माने में क़ुर्आन के हजारों मुख़ालिफ़ और दुश्मन गुज़र चुके। अब कोई ये न कहे कि मर्दुम शुमारी की रू से नस़ारा की ता'दाद ब निस्बत मुसलमानों के ज़्यादा मा'लूम होती है तो मुसलमानों का शुमार आख़िरत में क्यूँकर ज़्यादा होगा। इसलिये कि नस़ारा जो ह़ज़रत ईसा (अ.) की उम्मत कहलाने के लायक़ हैं, वही हैं जो आँह़ज़रत (ﷺ) की बिअ़षत तक गुज़र चुके, उनमें भी वो नस़ारा जो ह़ज़रत ईसा (अ.) की सच्ची शरीअ़त पर क़ायम रहे या'नी तौह़ीदे इलाही के क़ाइल और ह़ज़रत ईसा (अ.) को अल्लाह का बन्दा और पैग़म्बर समझते थे। उन नस़ारा से क़यामत के दिन मुसलमान ता'दाद में ज़्यादा होंगे। इस ज़माने के नस़ारा दरह़क़ीक़त ह़ज़रत ईसा (अ.) की उम्मत और सच्चे नस़ारा नहीं हैं, वो स़िर्फ़ ह़ज़रत ईसा (अ.) के नामलेवा हैं उन्होंने अपना दीन बदल डाला और दीन के बड़े रुक्न या'नी तौह़ीद ही को ख़राब कर दिया। अफ़सोस इसी त़रह़ नाम के मुसलमानों ने भी अपना दीन बदल डाला और शिर्क करने लगे, इस क़िस्म के मुसलमान भी दरह़क़ीक़त मुसलमान नहीं हैं न उम्मते मुह़म्मदी में उनका शुमार हो सकता है।

बाब 2 : नबी करीम (ﷺ) की सुन्नतों की पैरवी करना

٢- باب الإِقْتِدَاءِ بِسُنَنِ رَسُولِ اللهِ ﷺ

और अल्लाह तआला का सूरह फ़ुर्क़ान में फ़र्माना कि, ऐ परवरदिगार! हमको परहेज़गारों का पेशवा बना दे। मुजाहिद ने कहा या'नी इमाम बना दे कि हम लोग अगले लोगों स़ह़ाबा और ताबेईन की पैरवी करें और हमारे बाद जो लोग आएं वो हमारी पैरवी करें और अ़ब्दुल्लाह बिन औ़न ने कहा तीन बातें ऐसी हैं जिनको मैं ख़ास़ अपने लिये और दूसरे मुसलमान भाइयों के लिये पसंद करता हूँ, एक तो इल्मे ह़दीष़; मुसलमानों को उसे ज़रूर ह़ास़िल करना चाहिये। दूसरे क़ुर्आन मजीद, उसे समझकर पढ़ें और लोगो से क़ुर्आन के मत़ालिब की तह़क़ीक़ करते रहें। तीसरे ये कि मुसलमानों का ज़िक्र हमेशा ख़ैर व भलाई के साथ किया करें, किसी की बुराई का ज़िक्र न करें।

وَقَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿وَاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِينَ إِمَامًا﴾ قَالَ: أَئِمَّةً نَقْتَدِي بِمَنْ قَبْلَنَا وَيَقْتَدِي بِنَا مَنْ بَعْدَنَا، وَقَالَ ابْنُ عَوْنٍ: ثَلاَثٌ أُحِبُّهُنَّ لِنَفْسِي وَلإِخْوَانِي هَذِهِ السُّنَّةُ أَنْ يَتَعَلَّمُوهَا وَيَسْأَلُوا عَنْهَا، وَالْقُرْآنُ أَنْ يَتَفَهَّمُوهُ وَيَسْأَلُوا عَنْهُ وَيَدَعُوا النَّاسَ إِلاَّ مِنْ خَيْرٍ.

7275. हमसे अ़म्र बिन अ़ब्बास ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुर्रह़मान बिन मह्दी ने, कहा हमसे सुफ़यान ष़ौरी ने, उनसे वास़िल ने, उनसे अबू वाइल ने बयान किया कि इस मस्जिद (ख़ाना का'बा) में, मैं शैबा बिन उ़ष़्मान ह़ज्बी (जो का'बा के कलीद बरदार थे) के पास बैठा तो उन्हों ने कहा कि जहाँ तुम बैठे हो, वहीं उ़मर (रज़ि.) भी मेरे पास बैठे थे और उन्होंने कहा था कि मेरा इरादा है कि का'बा में किसी त़रह़ का सोना चाँदी न छोड़ूँ और सब मुसलमानों में तक़्सीम कर दूँ जो नज़्रुल्लाह का'बा में जमा है। मैंने कहा कि आप ऐसा नहीं कर सकते। कहा क्यूँ? मैंने कहा कि आपके दोनों साथियों (रसूलुल्लाह ﷺ और अबूबक्र रज़ि.) ने ऐसा नहीं किया था। इस पर उन्होंने कहा कि वो दोनों बुज़ुर्ग ऐसे ही थे जिनकी इक़्तिदा करनी ही

٧٢٧٥- حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عَبَّاسٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ وَاصِلٍ، عَنْ أَبِي وَائِلٍ قَالَ: جَلَسْتُ إِلَى شَيْبَةَ فِي هَذَا الْمَسْجِدِ قَالَ: جَلَسَ إِلَيَّ عُمَرُ فِي مَجْلِسِكَ هَذَا فَقَالَ: هَمَمْتُ أَنْ لاَ أَدَعَ فِيهَا صَفْرَاءَ وَلاَ بَيْضَاءَ، إِلاَّ قَسَمْتُهَا بَيْنَ الْمُسْلِمِينَ قُلْتُ: مَا أَنْتَ بِفَاعِلٍ قَالَ: لِمَ قُلْتُ لَمْ يَفْعَلْهُ صَاحِبَاكَ؟ قَالَ: هُمَا الْمَرْآنِ يُقْتَدَى بِهِمَا.

[راجع: ١٥٩٤]

चाहिये। (राजेअ : 1594)

7276. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, कहा कि मैंने आ'मश से पूछा तो उन्होंने ज़ैद बिन वहब से बयान किया कि मैंने हुज़ैफ़ह बिन यमान (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि अमानतदारी आसमान से कुछ लोगों के दिलों की जड़ों में उतरी। (या'नी उनकी फ़ित्रत में दाख़िल है) और क़ुर्आन मजीद नाज़िल हुआ तो उन्होंने क़ुर्आन मजीद का मत़लब समझा और सुन्नत का इल्म ह़ासिल किया तो क़ुर्आन व ह़दीष़ दोनों से इस ईमानदारी को जो फ़ित्रती थी पूरी क़ुव्वत मिल गई। (राजेअ : 6497)

٧٢٧٦- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ : سَأَلْتُ الأَعْمَشَ فَقَالَ عَنْ زَيْدِ ابْنِ وَهْبٍ سَمِعْتُ حُذَيْفَةَ يَقُولُ: حَدَّثَنَا رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((إِنَّ الأَمَانَةَ نَزَلَتْ مِنَ السَّمَاءِ فِي جَذْرِ قُلُوبِ الرِّجَالِ، وَنَزَلَ الْقُرْآنُ فَقَرَؤُا الْقُرْآنَ وَعَلِمُوا مِنَ السُّنَّةِ)).

[راجع: ٦٤٩٧]

तश्रीह : क़ुर्आन की तफ़्सीर ह़दीष़ शरीफ़ है बग़ैर ह़दीष़ के क़ुर्आन का स़ह़ीह़ मत़लब मा'लूम नहीं होता जितने गुमराह फ़िर्क़े इस उम्मत में हैं वो क्या करते हैं कि क़ुर्आन को ले लेते हैं और ह़दीष़ को छोड़ देते हैं और चूँकि क़ुर्आन की कुछ आयतें मुतशाबेह हैं, उनमें अपनी राय को दख़ल देकर गुमराह हो जाते है। इसलिये मुसलमानों को लाज़िम है कि क़ुर्आन को ह़दीष़ के साथ मिलाकर पढ़ें और जो तफ़्सीर ह़दीष़ के मुवाफ़िक़ हो उसी को इख़्तियार करें। अल्लाह के फ़ज़्लो करम से इस आख़िरी ज़माने में जब त़रह़ त़रह़ के फ़ित्ने मुसलमानों में नमूद हो रहे हैं और दज्जाल और शैत़ान के नाइब हर जगह फैल रहे हैं उसने आ़म मुसलमानों का ईमान बचाने के लिये क़ुर्आन की एक मुख़्तस़र और स़ह़ीह़ तफ़्सीर या'नी तफ़्सीरे मुवज़्ज़िहतुल फ़ुर्क़ान मुरत्तब करा दी। अब हर मुसलमान बड़ी आसानी के साथ क़ुर्आन का स़ह़ीह़ मत़लब समझ सकता है और उन दज्जाली और शैत़ानी फंदों से अपने तईं बच सकता है। अल्ह़म्दुलिल्लाह मुंतख़ब ह़वाशी और ष़नाई तर्जुमा वाला क़ुर्आन मजीद भी इस मक़्स़द के लिये बेह़द मुफ़ीद है।

7277. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, कहा हमको अ़म्र बिन मुर्रह ने ख़बर दी, कहा मैंने मर्रतुल हम्दानी से सुना, बयान किया कि अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने कहा, सबसे अच्छी बात किताबुल्लाह है और सबसे अच्छा त़रीक़ा मुह़म्मद (रज़ि.) का त़रीक़ है और सबसे बुरी नई बात (बिदअ़त) पैदा करना है (दीन में) और बिला शुब्हा जिसका तुमसे वा'दा किया जाता है वो आकर रहेगी और तुम परवरदिगार से बचकर कहीं नहीं जा सकते। (राजेअ : 6098)

٧٢٧٧- حَدَّثَنَا آدَمُ بْنُ أَبِي إِيَاسٍ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، أَخْبَرَنَا عَمْرُو بْنُ مُرَّةَ سَمِعْتُ مُرَّةَ الْهَمْدَانِيَّ يَقُولُ : قَالَ عَبْدُ اللهِ إِنَّ أَحْسَنَ الْحَدِيثِ كِتَابُ اللهِ، وَأَحْسَنَ الْهَدْيِ هَدْيُ مُحَمَّدٍ ﷺ، وَشَرَّ الأُمُورِ مُحْدَثَاتُهَا وَإِنَّ مَا تُوعَدُونَ لآتٍ وَمَا أَنْتُمْ بِمُعْجِزِينَ. [راجع: ٦٠٩٨]

तश्रीह : आख़िरत अ़ज़ाबे क़ब्र ह़श्र नश्र ये सब कुछ ज़रूर होकर रहेगा। दूसरी मर्फ़ूअ़ ह़दीष़ में है जाबिर (रज़ि.) की **कुल्लु बिदअ़तिन ज़लालह** और ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) की ह़दीष़ में है, **मन अह़दष़ फ़ी अम्रिना हाज़ा मा लैस मिन्हु फहुव रदुन** और इरबाज़ बिन सारिया की ह़दीष़ में है, **इय्याकुम व मुहदष़ातिल उमूर फइन्न कुल्ल बिदअ़तिन ज़लालह** इसको इब्ने माजा और ह़ाकिम और इब्ने ह़िब्बान ने स़ह़ीह़ कहा। ह़ाफ़िज़ ने कहा बिदअ़ते शरई वो है जो दीन में नई बात निकाली जाए जिसकी अस़ल शरअ़ से न हो। ऐसी हर बिदअ़त मज़्मूम और क़बीह़ है लेकिन लुग़त मे बिदअ़त हर नई बात को कहते हैं। इसमें कुछ बात अच्छी होती है और कुछ बुरी। इमाम शाफ़िई ने कहा एक बिदअ़त

मह़मूद है जो सुन्नत के मुवाफ़िक़ हो, दूसरी मज़्मूम जो सुन्नत के ख़िलाफ़ हो और इमाम बैहक़ी ने मनाक़िबे शाफ़िई में उनसे निकाला, उन्होंने कहा नये काम दो क़िस्म के हैं एक तो वो जो किताब व सुन्नत और आष़ारे स़ह़ाबा और इज्माअ़ के ख़िलाफ़ हैं, वो बिदअ़ते ज़लालत है। दूसरे वो जो उनके ख़िलाफ़ नहीं हैं वो गो मुह़द्दष़ हों मगर मज़्मूम नहीं हैं। मैं कहता हूँ बिदअ़त की तह़क़ीक़ में उ़लमा के मुख़्तलिफ़ अक़्वाल हैं और उन्होंने इस बाब में जुदागाना रसाइल और किताबें तस़्नीफ़ किये हैं और बेहतर रिसाला मौलाना इस्माईल स़ाह़ब का है ईज़ाह़ुल ह़क़। इब्ने अ़ब्दुस्सलाम ने कहा बिदअ़त पाँच क़िस्म की है कुछ बिदअ़त वाजिब है जैसे इल्मे स़र्फ़ और नह़्व का ह़ासिल करना जिससे क़ुर्आन व ह़दीष़ का मतलब समझ में आए। कुछ मुस्तह़ब हैं जैसे तरावीह़ में जमा होना, मदरसे बनाना, सराय बनाना। कुछ ह़राम हैं जो ख़िलाफ़े सुन्नत हैं जैसे क़दरिया मुरज़िया मुशब्बिहा के बिदआ़त; कुछ मुबाह़ हैं जैसे मुस़ाफ़ा, नमाज़े फ़ज्र या नमाज़े अ़स्र के बाद और खाने पीने की लज़्ज़तें वग़ैरह कुछ मकरूह और ख़िलाफ़े औला। मैं कहता हूँ इब्ने अ़ब्दुस्सलाम की मुराद बिदअ़त से बिदअ़ते लग़्वी है। बेशक इसकी कई क़िस्में हो सकती हैं लेकिन बिदअ़ते शरई जिसकी कोई अस़्ल किताब व सुन्नत से न हो और क़ुरूने ष़लाष़ा के बाद दीन में निकाली जाए वो निरी गुमराही है ऐसी बिदअ़त कोई अच्छी नहीं हो सकती और स़र्फ़ व नह़्व का इल्म ह़ासिल करना या मदरसे या सराय बनाना या नमाज़े तरावीह़ में जमा होना बिदअ़ते शरई नहीं है क्योंकि उनकी अस़्ल किताबो सुन्नत से पाई जाती है और इनमें की कुछ बातें स़ह़ाबा और ताबेईन के वक़्त में शुरू हो गई थीं। बिदअ़ते शरई वो है जो स़ह़ाबा और ताबेईन और तबअ़ ताबेईन के बाद दीन में निकाली जाए और उसकी अस़्ल किताब और सुन्नत से न हो। रहा मुस़ाफ़ा अ़स्र और फ़ज्र की नमाज़ के बाद तो गो इब्ने अ़ब्दुस्सलाम ने इसको मुबाह़ कहा मगर अकष़र उ़लमा ने इसको बिदअ़ते मज़्मूम क़रार दिया है। इसी त़रह़ ईदैन के भी मुस़ाफ़ा और मुआ़नक़ा से मना किया है।

7278,79. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, उनसे ज़ुह्री ने, उनसे उ़बैदुल्लाह ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) और ज़ैद बिन ख़ालिद (रज़ि.) ने बयान किया कि हम नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में मौजूद थे आपने फ़र्माया यक़ीनन मैं तुम्हारे बीच किताबुल्लाह से फ़ैस़ला करूँगा। (राजेअ़ : 2314, 2315)

٧٢٧٨، ٧٢٧٩- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، حَدَّثَنَا الزُّهْرِيُّ، عَنْ عُبَيْدِ اللهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ وَزَيْدِ بْنِ خَالِدٍ قَالَ: كُنَّا عِنْدَ النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: ((لأَقْضِيَنَّ بَيْنَكُمَا بِكِتَابِ اللهِ)). [راجع: ٢٣١٤، ٢٣١٥]

7280. हमसे मुह़म्मद बिन सिनान ने बयान किया, उनसे फ़ुलैह़ बिन सुलैमान ने बयान किया, उनसे बिलाल बिन अ़ली ने बयान किया, उनसे अ़त़ा बिन यसार ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया सारी उम्मत जन्नत में जाएगी सिवाय उनके जिन्होने इंकार किया। स़ह़ाबा ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! इंकार कौन करेगा? फ़र्माया कि जो मेरी इत़ाअ़त करेगा वो जन्नत में दाख़िल होगा और जो मेरी नाफ़र्मानी करेगा उसने इंकार किया।

٧٢٨٠- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سِنَانٍ، حَدَّثَنَا فُلَيْحٌ، حَدَّثَنَا هِلاَلُ بْنُ عَلِيٍّ، عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((كُلُّ أُمَّتِي يَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ، إِلاَّ مَنْ أَبَى)) قَالُوا : يَا رَسُولَ اللهِ وَمَنْ أَبَى؟ قَالَ: ((مَنْ أَطَاعَنِي دَخَلَ الْجَنَّةَ، وَمَنْ عَصَانِي فَقَدْ أَبَى)).

7281. हमसे मुह़म्मद बिन उ़बादह ने बयान किया, कहा हमको यज़ीद बिन हारून ने ख़बर दी, कहा हमसे सुलैम बिन ह़य्यान ने बयान किया और यज़ीद बिन हारून ने उनकी ता'रीफ़ की, कहा हमसे सईद बिन मीनाअ ने बयान किया,

٧٢٨١- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبَادَةَ، أَخْبَرَنَا يَزِيدُ، حَدَّثَنَا سَلِيمُ بْنُ حَيَّانَ وَأَثْنَى عَلَيْهِ، حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ مِينَاءَ، حَدَّثَنَا أَوْ سَمِعْتُ

جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ يَقُولُ: جَاءَتْ مَلاَئِكَةٌ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَهُوَ نَائِمٌ فَقَالَ بَعْضُهُمْ: إِنَّهُ نَائِمٌ وَقَالَ بَعْضُهُمْ: إِنَّ الْعَيْنَ نَائِمَةٌ وَالْقَلْبَ يَقْظَانُ فَقَالُوا : إِنَّ لِصَاحِبِكُمْ هَذَا مَثَلاً، فَاضْرِبُوا لَهُ مَثَلاً، فَقَالَ بَعْضُهُمْ : إِنَّهُ نَائِمٌ وَقَالَ بَعْضُهُمْ: إِنَّ الْعَيْنَ نَائِمَةٌ وَالْقَلْبَ يَقْظَانُ فَقَالُوا: مَثَلُهُ كَمَثَلِ رَجُلٍ بَنَى دَارًا، وَجَعَلَ فِيهَا مَأْدُبَةً وَبَعَثَ دَاعِيًا فَمَنْ أَجَابَ الدَّاعِيَ دَخَلَ الدَّارَ. وَأَكَلَ مِنَ الْمَأْدُبَةِ، وَمَنْ لَمْ يُجِبِ الدَّاعِيَ لَمْ يَدْخُلِ الدَّارَ وَلَمْ يَأْكُلْ مِنَ الْمَأْدُبَةِ، فَقَالُوا : أَوِّلُوهَا لَهُ يَفْقَهْهَا فَقَالَ بَعْضُهُمْ : إِنَّهُ نَائِمٌ وَقَالَ بَعْضُهُمْ: إِنَّ الْعَيْنَ نَائِمَةٌ وَالْقَلْبَ يَقْظَانُ، فَقَالُوا: فَالدَّارُ الْجَنَّةُ، وَالدَّاعِي مُحَمَّدٌ ﷺ، فَمَنْ أَطَاعَ مُحَمَّدًا، فَقَدْ أَطَاعَ اللهَ، وَمَنْ عَصَى مُحَمَّدًا ﷺ فَقَدْ عَصَى اللهَ، وَمُحَمَّدٌ فَرْقٌ بَيْنَ النَّاسِ. تَابَعَهُ قُتَيْبَةُ عَنْ لَيْثٍ، عَنْ خَالِدٍ عَنْ سَعِيدِ بْنِ أَبِي هِلاَلٍ، عَنْ جَابِرٍ خَرَجَ عَلَيْنَا النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ.

उन्होंने कहा कि मैंने जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि फ़रिश्ते नबी करीम (ﷺ) के पास आए, जिब्रईल (अ.) व मीकाइल (अ.) और आप सोये हुए थे। एक ने कहा कि ये सोये हुए हैं, दूसरे ने कहा कि इनकी आँखें सो रही हैं लेकिन इनका दिल बेदार है। उन्होंने कहा कि तुम्हारे इन स़ाहब (आँह़ज़रत ﷺ) की एक मिष़ाल है पस उनकी मिष़ाल बयान करो तो उनमें से एक ने कहा कि ये सो रहे हैं। दूसरे ने कहा कि आँख सो रही है और दिल बेदार है। उन्होंने कहा कि इनकी मिष़ाल उस शख़्स़ जैसी है जिसने एक घर बनाया और वहाँ खाने की दा'वत की और बुलाने वाले को भेजा, पस जिसने बुलाने वाले की दा'वत क़ुबूल कर ली वो घर में दाख़िल हो गया और दस्तरख़्वान से खाया और जिसने बुलाने वाले की दा'वत क़ुबूल नहीं की वो घर में दाख़िल नहीं हुआ और दस्तरख़्वान से खाना नहीं खाया, फिर उन्होंने कहा कि इसकी इनके लिये तफ़्सीर कर दो ताकि ये समझ जाएँ। कुछ ने कहा कि ये तो सोये हुए हैं लेकिन कुछ ने कहा कि आँखें भले ही सो रही हैं लेकिन दिल बेदार है। फिर उन्होंने कहा कि घर तो जन्नत है और बुलाने वाले मुहम्मद (ﷺ) हैं। पस जो इनकी इत़ाअ़त करेगा वो अल्लाह की इत़ाअ़त करेगा और जो इनकी नाफ़र्मानी करेगा वो अल्लाह की नाफ़र्मानी करेगा और मुह़म्मद (ﷺ) अच्छे और बुरे लोगों के बीच फ़र्क़ करने वाले हैं। मुह़म्मद बिन ड़बादह के साथ इस ह़दीष़ को क़ुतैबा बिन सईद ने भी लैष़ से रिवायत किया, उन्होंने ख़ालिद बिन यज़ीद मिस्री से, उन्होंने सईद बिन अबी हिलाल से, उन्होंने जाबिर से कि आँह़ज़रत (ﷺ) हम पर बेदार हुए, फिर यही ह़दीष़ नक़ल की इसे तिर्मिज़ी ने वस़्ल किया।

तश्रीह : इस ह़दीष़ से वाज़ेह़ त़ौर पर मा'लूम हुआ कि क़ुर्आन व ह़दीष़ ही दीन के अस़लुल उसूल हैं और सुन्नते नबवी ही बहरह़ाल मुक़द्दम है। इमाम, उस्ताद, बुज़ुर्ग सबको छोड़ा जा सकता है मगर क़ुर्आन व ह़दीष़ को मुक़द्दम रखना होगा, यही नजात का रास्ता है।

मसलके सुन्नत पे ऐ सालिक चला जा बे धड़क
जन्नतुल फ़िरदौस को सीधी गई है ये सड़क

٧٢٨٢- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ

7282. हमसे अबू नुऐम फ़ज़्ल बिन दुकैन ने बयान किया,

عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ هَمَّامٍ عَنْ حُذَيْفَةَ قَالَ : يَا مَعْشَرَ الْقُرَّاءِ اسْتَقِيمُوا فَقَدْ سُبِقْتُمْ سَبْقًا بَعِيدًا، فَإِنْ أَخَذْتُمْ يَمِينًا وَشِمَالاً لَقَدْ ضَلَلْتُمْ ضَلاَلاً بَعِيدًا.

कहा हमसे सुफ़यान ष़ौरी ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे इब्राहीम ने, उनसे हम्माम ने और उनसे हुज़ैफ़ह (रज़ि.) ने कहा कि ऐ क़ुर्आन व ह़दीष़ पढ़ने वालों! तुम अगर क़ुर्आन व ह़दीष़ पर न जमोगे, इधर उधर दाएँ बाएँ रास्ते लोगे तो गुमराह होओगे बहुत ही बड़े गुमराह।

तश्रीह : या'नी उन लोगों से कहीं अफ़ज़ल होगे जो तुम्हारे बाद आएँगे। ये तर्जुमा उस वक़्त है जब लफ़्ज़ ह़दीष़ **फ़क़द सबक़्तुम बिही** सैग़ा मा'रूफ़ हो अगर ब सैग़ा मज्हूल **सबिक़्तुम** हो तर्जुमा ये होगा कि तुम ह़दीष़ और क़ुर्आन पर जम जाओ क्योंकि दूसरे लोग ह़दीष़ और क़ुर्आन की पैरवी करते हैं तुमसे बहुत आगे बढ़ गये हैं या'नी दूर निकल गये हैं।

٧٢٨٣- حَدَّثَنَا أَبُو كُرَيْبٍ، حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، عَنْ بُرَيْدٍ، عَنْ أَبِي بُرْدَةَ عَنْ أَبِي مُوسَى عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: ((إِنَّمَا مَثَلِي وَمَثَلُ مَا بَعَثَنِي اللهُ بِهِ، كَمَثَلِ رَجُلٍ أَتَى قَوْمًا فَقَالَ: يَا قَوْمِ إِنِّي رَأَيْتُ الْجَيْشَ بِعَيْنَيَّ وَإِنِّي أَنَا النَّذِيرُ الْعُرْيَانُ، فَالنَّجَاءَ، فَأَطَاعَهُ طَائِفَةٌ مِنْ قَوْمِهِ فَأَدْلَجُوا فَانْطَلَقُوا عَلَى مَهَلِهِمْ فَنَجَوْا، وَكَذَّبَتْ طَائِفَةٌ مِنْهُمْ فَأَصْبَحُوا مَكَانَهُمْ، فَصَبَّحَهُمُ الْجَيْشُ فَأَهْلَكَهُمْ وَاجْتَاحَهُمْ فَذَلِكَ مَثَلُ مَنْ أَطَاعَنِي، فَاتَّبَعَ مَا جِئْتُ بِهِ، وَمَثَلُ مَنْ عَصَانِي وَكَذَّبَ بِمَا جِئْتُ بِهِ مِنَ الْحَقِّ)).

7283. हमसे अबू कुरैब मुहम्मद बिन अ़ला ने बयान किया, कहा हमसे उसामा ने बयान किया, उनसे बुरैद ने, उनसे उनके दादा अबू बुर्दा ने और उनसे अबू मूसा अश्अ़री (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया मेरी और जिस दा'वत के साथ मुझे अल्लाह तआ़ला ने भेजा है उसकी मिष़ाल एक ऐसे शख़्स़ जैसी है जो किसी क़ौम के पास आए और कहे कि ऐ क़ौम! मैंने एक लश्कर अपनी आँखों से देखा है और मैं नंग धड़ंग तुमको डराने वाला हूँ, पस बचाव की सूरत करो तो उस क़ौम के एक गिरोह ने बात मान ली और रात के शुरू ही में निकल भागे और ह़िफ़ाज़त की जगह चले गये। इसलिये नजात पा गये लेकिन उनकी दूसरी जमाअ़त ने झुठलाया और अपनी जगह ही पर मौजूद रहे, फिर सुबह़ सवेरे ही दुश्मन के लश्कर ने उन्हें आ लिया और उन्हें मारा और उनको बर्बाद कर दिया। तो ये मिष़ाल है इसकी जो मेरी इत़ाअ़त करें और जो दा'वत मैं लाया हूँ उसकी पैरवी करें और उसकी मिष़ाल है जो मेरी नाफ़र्मानी करें और जो ह़क़ मैं लेकर आया हूँ उसे झुठलाएँ।

तश्रीह : अ़रब में क़ायदा था जब दुश्मन नज़दीक आन पहुँचता और कोई शख़्स़ उसको देख लेता उसको ये डर होता कि मेरे पहुँचने से पहले ये लश्कर मेरी क़ौम पर पहुँच जाएगा तो नंगा होकर जल्दी जल्दी चीखता चिल्लाता भागता कुछ कहते हैं अपने कपड़े उतारकर झण्डे की त़रह़ एक लकड़ी पर लगाता और चिल्लाता हुआ भागता।

٧٢٨٤، ٧٢٨٥- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا لَيْثٌ، عَنْ عُقَيْلٍ، عَنِ الزُّهْرِيِّ أَخْبَرَنِي عُبَيْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ

7284, 7285. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे अ़क़ील ने, उनसे ज़ुहरी ने, उन्हें उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़त्बा ने ख़बर दी, उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि जब नबी करीम

عُتْبَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: لَمَّا تُوُفِّيَ رَسُولُ اللهِ ﷺ وَاسْتُخْلِفَ أَبُو بَكْرٍ بَعْدَهُ وَكَفَرَ مَنْ كَفَرَ مِنَ الْعَرَبِ قَالَ عُمَرُ لأَبِي بَكْرٍ: كَيْفَ تُقَاتِلُ النَّاسَ وَقَدْ قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((أُمِرْتُ أَنْ أُقَاتِلَ النَّاسَ حَتَّى يَقُولُوا: لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ فَمَنْ قَالَ : لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ عَصَمَ مِنِّي مَالَهُ وَنَفْسَهُ إِلاَّ بِحَقِّهِ وَحِسَابُهُ عَلَى اللهِ)) فَقَالَ : وَاللهِ لأُقَاتِلَنَّ مَنْ فَرَّقَ بَيْنَ الصَّلاَةِ وَالزَّكَاةِ، فَإِنَّ الزَّكَاةَ حَقُّ الْمَالِ، وَاللهِ لَوْ مَنَعُونِي عِقَالاً كَانُوا يُؤَدُّونَهُ إِلَى رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَقَاتَلْتُهُمْ عَلَى مَنْعِهِ فَقَالَ عُمَرُ : فَوَاللهِ مَا هُوَ إِلاَّ أَنْ رَأَيْتُ اللهَ قَدْ شَرَحَ صَدْرَ أَبِي بَكْرٍ لِلْقِتَالِ فَعَرَفْتُ أَنَّهُ الْحَقُّ. قَالَ ابْنُ بُكَيْرٍ: وَعَبْدُ اللهِ عَنِ اللَّيْثِ (عِنَاقًا) وَهُوَ أَصَحُّ.
[راجع: ١٣٩٩، ١٤٠٠]

(ﷺ) की वफ़ात हुई और आपके बाद अबूबक्र (रज़ि.) को ख़लीफ़ा बनाया गया और अरब के कई क़बाइल फिर गये। अबूबक्र (रज़ि.) ने उनसे लड़ना चाहा तो उमर (रज़ि.) ने अबूबक्र (रज़ि.) से कहा कि आप लोगों से किस बुनियाद पर जंग करेंगे जबकि आँहज़रत (ﷺ) ने ये फ़र्माया था कि मुझे हुक्म दिया गया है कि लोगों सेउस वक़्त तक जंग करूँ जब तक वो कलिमा ला इलाहा इल्लल्लाह का इक़रार न कर लें पस जो शख़्स इक़रार कर ले कि ला इलाहा इल्लल्लाह तो मेरी तरफ़ से उसका माल और उसकी जान महफ़ूज़ है। अल्बत्ता किसी हक़ के बदल हो तो वो और बात है (मषलन किसी का माल मार ले और किसी का ख़ून करे) अब उसके बाक़ी आ'माल का हिसाब अल्लाह के हवाले है लेकिन अबूबक्र (रज़ि.) ने कहा कि वल्लाह! मैं तो उस शख़्स से जंग करूँगा जिसने नमाज़ और ज़कात में फ़र्क़ किया है क्योंकि ज़कात माल का हक़ है, वल्लाह! अगर वो मुझे एक रस्सी भी देने से रुकेंगे जो वो रसूलुल्लाह (ﷺ) को देते थे तो मैं उनसे उनके इंकार पर भी जंग करूँगा। उमर (रज़ि.)ने कहा फिर जो मैंने ग़ौर किया मुझे यक़ीन हो गया कि अल्लाह तआला ने अबूबक्र (रज़ि.) के दिल में लड़ाई की तज्वीज़ डाली है तो मैंने जान लिया कि वो हक़ पर हैं। इब्ने बुकैर और अब्दुल्लाह बिन सालेह ने लैष से इनाक़न कहा या'नी बकरी का बच्चा और यही ज़्यादा सहीह है। (राजेअ: 1399, 1400)

क्योंकि ज़कात में बकरी का बच्चा तो आ जाता है मगर रस्सी ज़कात में नहीं दी जाती। कुछ ने कहा कि आँहज़रत (ﷺ) ने जब मुहम्मद बिन मस्लमा को ज़कात वसूल करने के लिये भेजा तो वो हर शख़्स से ज़कात के जानवर बाँधने के लिये रस्सी लेते, इसी तरह तबअ़न रस्सी भी ज़कात में दी जाती।

٧٢٨٦- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، حَدَّثَنِي ابْنُ وَهْبٍ، عَنْ يُونُسَ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ حَدَّثَنِي عُبَيْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُتْبَةَ أَنَّ عَبْدَ اللهِ بْنَ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَدِمَ عُيَيْنَةُ بْنُ حِصْنِ بْنِ حُذَيْفَةَ بْنِ بَدْرٍ فَنَزَلَ عَلَى ابْنِ أَخِيهِ الْحُرِّ بْنِ قَيْسِ بْنِ حِصْنٍ، وَكَانَ مِنَ النَّفَرِ الَّذِينَ يُدْنِيهِمْ عُمَرُ وَكَانَ

7286. मुझसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, कहा मुझसे अब्दुल्लाह बिन वहब ने बयान किया, उनसे यूनुस बिन यज़ीद ऐली ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे उबैदुल्लाह बिन अब्दुल्लाह बिन उत्बा ने, उनसे अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि उययना बिन हुज़ैफ़ह बिन बद्र मदीना आए और अपने भतीजे अल्हुर्र बिन क़ैस बिन हसन के यहाँ क़याम किया। अल्हुर्र बिन क़ैस उन लोगों मे से थे जिन्हें उमर (रज़ि.) अपने क़रीब रखते थे। क़ुर्आन मजीद के उलमा उमर (रज़ि.) के शरीके मज्लिस व मश्वरा रहते थे। ख़्वाह वो

बूढ़े हों या जवान। फिर उ़ययना ने अपने भतीजे हुर्रि से कहा, भतीजे! क्या अमीरुल मोमिनीन के यहाँ कुछ रसूख़ ह़ासिल है कि तुम मेरे लिये उनके यहाँ ह़ाज़िरी की इजाज़त ले दो? उन्होंने कहा कि मैं आपके लिये इजाज़त माँगूंगा। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर उन्होंने उ़ययना के लिये इजाज़त चाही (और आपने इजाज़त दे दी) फिर जब उ़ययना मज्लिस में पहुँचे तो कहा ऐ इब्ने ख़त्ताब! वल्लाह! तुम हमें बहुत ज़्यादा नहीं देते और न हमारे बीच इंसाफ़ के साथ फ़ैसला करते हो। इस पर उ़मर (रज़ि.) गुस्सा हो गये, यहाँ तक कि आपने उन्हें सज़ा देने का इरादा कर लिया। इतने में ह़ज़रत अल्हुर्रि ने कहा, अमीरुल मोमिनीन! अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी (ﷺ) से फ़र्माया है कि, मुआ़फ़ करने का त़रीक़ा इख़्तियार करो और भलाई का हुक्म दो और जाहिलों से ए'राज़ करो, और ये शख़्स जाहिलों में से है। पस वल्लाह! उ़मर (रज़ि.) के सामने जब ये आयत उन्होंने तिलावत की तो आप ठण्डे हो गये और उ़मर (रज़ि.) की आ़दत थी कि अल्लाह की किताब पर फ़ौरन अ़मल करते। (राजेअ : 4642)

الْقُرَّاءُ أَصْحَابُ مَجْلِسِ عُمَرَ وَمُشَاوَرَتِهِ كُهُولاً كَانُوا أَوْ شُبَّانًا، فَقَالَ عُيَيْنَةُ لاِبْنِ أَخِيهِ: يَا ابْنَ أَخِي هَلْ لَكَ وَجْهٌ عِنْدَ هَذَا الأَمِيرِ فَتَسْتَأْذِنَ لِي عَلَيْهِ؟ قَالَ : سَأَسْتَأْذِنُ لَكَ عَلَيْهِ قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: فَاسْتَأْذَنَ لِعُيَيْنَةَ فَلَمَّا دَخَلَ قَالَ : يَا ابْنَ الْخَطَّابِ وَاللهِ مَا تُعْطِينَا الْجَزْلَ وَمَا تَحْكُمُ بَيْنَنَا بِالْعَدْلِ، فَغَضِبَ عُمَرُ حَتَّى هَمَّ بِأَنْ يَقَعَ بِهِ فَقَالَ الْحُرُّ : يَا أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ إِنَّ اللهَ تَعَالَى قَالَ لِنَبِيِّهِ ﷺ ﴿خُذِ الْعَفْوَ وَأْمُرْ بِالْعُرْفِ وَأَعْرِضْ عَنِ الْجَاهِلِينَ﴾[الأعراف: ١٩٩] وَإِنَّ هَذَا مِنَ الْجَاهِلِينَ فَوَاللهِ مَا جَاوَزَهَا عُمَرُ حِينَ تَلاَهَا عَلَيْهِ، وَكَانَ وَقَّافًا عِنْدَ كِتَابِ اللهِ. [راجع: ٤٦٤٢]

तश्रीह : ये उ़ययना बिन ह़स्न आँह़ज़रत (ﷺ) के अ़हद में मुसलमान हो गया था फिर जब त़लीह़ा असदी ने आँह़ज़रत (ﷺ) की वफ़ात के बाद नुबुव्वत का दा'वा किया तो उ़ययना भी उसके मुअ़तक़िदों में शरीक हो गया। अबूबक्र (रज़ि.) की ख़िलाफ़त में त़लीह़ा पर मुसलमानों ने ह़मला किया तो वो भाग गया लेकिन उ़ययना क़ैद हो गया। उसको मदीना लाया गया। अबूबक्र (रज़ि.) ने उससे कहा तौबा कर, उसने तौबा की। सुब्ह़ानल्लाह! इ़ल्म की क़द्रदानी जब ही होती है जब बादशाह और रईस आ़लिमों को मुक़र्रब रखते हैं। इ़ल्म ऐसी ही चीज़ है कि जवान में हो या बूढ़े में, हर त़रह़ उससे अफ़ज़लियत पैदा होती है। एक जवान आ़लिम दर्जा और मर्तबे मे उस सौ बरस के बूढ़े से कहीं ज़ाइद है जो कमबख़्त जाहिल लठ हो। ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) मे जहाँ और फ़ज़ीलतें जमा थीं वहाँ इ़ल्म की क़द्रदानी भी बदर्ज-ए-कमाल उनमें थी। सुब्ह़ानल्लाह! ख़िलाफ़त ऐसे लोगों को सज़ावार है जो क़ुर्आन व ह़दीष़ के ऐसे ताबेअ़ और मुत़ीअ़ हों। अब उन जाहिलों से पूछना चाहिये कि उ़ययना बिन ह़स्न तो तुम्हारा ही भाई था फिर उसने ऐसी बदतमीज़ी क्यूँ की अगर ज़रा भी इ़ल्म रखता होता तो ऐसी बेअदबी की बात मुँह से न निकालता। हुर्रि बिन क़ैस जो आ़लिम थे, उनकी वजह से उसकी इ़ज़्ज़त बच गई वरना ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) के हाथ से वो मार खाता कि छठी का दूध याद आ जाता।

7287. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मस्लमा क़अ़म्बी ने बयान किया, उनसे मालिक ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन उ़र्वा ने, उनसे फ़ात़िमा बिन्ते मुंज़िर ने, उनसे अस्मा बिन्ते अबीबक्र (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं आ़इशा (रज़ि.) के यहाँ गई। जब सूरज ग्रहण हुआ था और लोग नमाज़ पढ़ रहे थे। आ़इशा (रज़ि.) भी खड़ी नमाज़ पढ़ रही थीं। मैंने कहा लोगों को

٧٢٨٧- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْلَمَةَ، عَنْ مَالِكٍ، عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ عَنْ فَاطِمَةَ بِنْتِ الْمُنْذِرِ عَنْ أَسْمَاءَ ابْنَةِ أَبِي بَكْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّهَا قَالَتْ : أَتَيْتُ عَائِشَةَ حِينَ خَسَفَتِ الشَّمْسُ وَالنَّاسُ قِيَامٌ

क्या हो गया है (कि बेवक़्त नमाज़ पढ़ रहे हैं) तो उन्होंने हाथ से आसमान की तरफ़ इशारा किया और कहा सुब्हानल्लाह! मैंने कहा कोई निशानी है? उन्होंने सर से इशारा किया कि हाँ। फिर जब रसूलुल्लाह (ﷺ) नमाज़ से फ़ारिग़ हो गये तो आपने अल्लाह की हम्दो ष़ना के बाद फ़र्माया, कोई चीज़ ऐसी नहीं लेकिन मैंने आज इस जगह से उसे देख लिया, यहाँ तक कि जन्नत और दोज़ख़ भी और मुझे वह्य की गई है कि तुम लोग क़ब्रों में भी आज़माए जाओगे, दज्जाल के फ़ित्ने के क़रीब क़रीब। पस मोमिन या मुस्लिम मुझे यक़ीन नहीं कि अस्मा (रज़ि.) ने इनमें से कौनसा लफ़्ज़ कहा था तो वो (क़ब्र में फ़रिश्तों के सवाल पर कहेगा) मुहम्मद (ﷺ) हमारे पास रोशन निशानात लेकर आए और हमने उनकी दा'वत क़ुबूल की और ईमान लाए। उससे कहा जाएगा कि आराम से सो रहो, हमें मा'लूम था कि तुम मोमिन हो और मुनाफ़िक़ या शक में मुब्तला मुझे यक़ीन नहीं कि इनमें से कौनसा लफ़्ज़ अस्मा (रज़ि.) ने कहा था, तो वो कहेगा (आँहज़रत ﷺ के बारे में सवाल पर कि) मुझे मा'लूम नहीं, मैंने लोगों को जो कहते सुना वही मैंने भी कह दिया। (राजेअ : 86)

وَهْيَ قَائِمَةٌ تُصَلِّي فَقُلْتُ: مَا لِلنَّاسِ؟ فَأَشَارَتْ بِيَدِهَا نَحْوَ السَّمَاءِ فَقَالَتْ: سُبْحَانَ اللهِ، فقلت: آيَةٌ؟ قَالَتْ بِرَأْسِهَا: أَنْ نَعَمْ فَلَمَّا انْصَرَفَ رَسُولُ اللهِ ﷺ، حَمِدَ اللهَ وَأَثْنَى عَلَيْهِ ثُمَّ قَالَ: ((مَا مِنْ شَيْءٍ لَمْ أَرَهُ إِلاَّ وَقَدْ رَأَيْتُهُ فِي مَقَامِي هَذَا، حَتَّى الْجَنَّةَ وَالنَّارَ وَأُوحِيَ إِلَيَّ أَنَّكُمْ تُفْتَنُونَ فِي الْقُبُورِ قَرِيبًا مِنْ فِتْنَةِ الدَّجَّالِ، فَأَمَّا الْمُؤْمِنُ أَوِ الْمُسْلِمُ)) لاَ أَدْرِي أَيَّ ذَلِكَ قَالَتْ أَسْمَاءُ: فَيَقُولُ مُحَمَّدٌ: ((جَاءَنَا بِالْبَيِّنَاتِ فَأَجَبْنَا وَآمَنَّا فَيُقَالُ: نَمْ صَالِحًا عَلِمْنَا أَنَّكَ مُوقِنٌ، وَأَمَّا الْمُنَافِقُ أَوِ الْمُرْتَابُ)) لاَ أَدْرِي أَيَّ ذَلِكَ قَالَتْ أَسْمَاءُ ((فَيَقُولُ : لاَ أَدْرِي سَمِعْتُ النَّاسَ يَقُولُونَ شَيْئًا فَقُلْتُهُ)). [راجع: ٨٦]

बाब का मत़लब इस फ़िक़रे से निकला कि हमने उनका कहना मान लिया, उन पर ईमान लाए।

7288. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, कहा मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे अबुज़्ज़िनाद ने, उनसे अअ़रज ने, उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जब तक मैं तुमसे यक्सू रहूँ तुम भी मुझे छोड़ दो (और सवालात वग़ैरह न करो) क्योंकि तुमसे पहले की उम्मतें अपने (ग़ैर ज़रूरी) सवाल और अंबिया के सामने इख़्तिलाफ़ की वजह से तबाह हो गईं। पस जब मैं तुम्हें किसी चीज़ से रोकूँ तो तुम भी उससे परहेज़ करो और जब मैं तुम्हें किसी बात का हुक्म दूँ तो बजा लाओ जिस ह़द तक तुममें त़ाक़त हो।

٧٢٨٨- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: ((دَعُونِي مَا تَرَكْتُكُمْ، إِنَّمَا هَلَكَ مَنْ كَانَ قَبْلَكُمْ بِسُؤَالِهِمْ وَاخْتِلاَفِهِمْ عَلَى أَنْبِيَائِهِمْ، فَإِذَا نَهَيْتُكُمْ عَنْ شَيْءٍ فَاجْتَنِبُوهُ، وَإِذَا أَمَرْتُكُمْ بِأَمْرٍ فَأْتُوا مِنْهُ مَا اسْتَطَعْتُمْ)).

या'नी जिस बात का ज़िक्र मैं तुमसे न करूँ वो मुझसे मत पूछो या'नी बिला ज़रूरत सवालात न करो।

बाब 3 : बेफ़ायदा बहुत सवालात करना मना है

٣- باب مَا يُكْرَهُ مِنْ كَثْرَةِ السُّؤَالِ وَتَكَلُّفِ مَا لاَ يَعْنِيهِ

इसी त़रह बेफ़ायदा सख़्ती उठाना और वो बातें बनाना जिनमें

وَقَوْلِهِ تَعَالَى : ﴿لاَ تَسْأَلُوا عَنْ أَشْيَاءَ إِنْ تُبْدَلَكُمْ تَسُؤْكُمْ﴾ [المائدة : ١٠١].

कोई फ़ायदा नहीं और अल्लाह ने सूरह माइदह में फ़र्माया मुसलमानों! ऐसी बातें न पूछो कि अगर बयान की जाएँ तो तुमको बुरी लगें। (अल माइदह : 101)

जब तक कोई ह़ादषा न हो तो ख़्वाह मख़्वाह फ़र्ज़ी सवालात करना मना है जैसा कि फ़ुक़हा की आ़दत है कि वो अगर मगर से बाल की खाल निकालते रहते हैं।

٧٢٨٩- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يَزِيدَ الْمُقْرِىءُ، حَدَّثَنَا سَعِيدٌ، حَدَّثَنِي عُقَيْلٌ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ عَامِرِ بْنِ سَعْدِ بْنِ أَبِي وَقَّاصٍ، عَنْ أَبِيهِ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ، قَالَ : ((إِنَّ أَعْظَمَ الْمُسْلِمِينَ جُرْمًا مَنْ سَأَلَ عَنْ شَيْءٍ لَمْ يُحَرَّمْ فَحُرِّمَ مِنْ أَجْلِ مَسْأَلَتِهِ)).

7289. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यज़ीद अल्मुक़्री ने बयान किया, कहा हमसे सईद बिन अबी अय्यूब ने बयान किया, कहा मुझसे अ़क़ील बिन ख़ालिद ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे आ़मिर बिन सईद बिन अबी वक़्क़ास ने, उनसे उनके वालिद ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, सबसे बड़ा मुज्रिम वो मुसलमान है जिसने किसी ऐसी चीज़ के बारे में पूछा जो ह़राम नहीं थी और उसके पूछने की वजह से वो ह़राम हो गई।

गो सवाल तह़रीम की इ़ल्लत नहीं मगर जब उसकी ह़ुर्मत का ह़ुक्म सवाल के बाद उतरा तो गोया सवाल ही उसकी ह़ुर्मत का बाइ़ष हुआ।

٧٢٩٠- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ أَخْبَرَنَا عَفَّانُ، حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ، حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ عُقْبَةَ سَمِعْتُ أَبَا النَّضْرِ يُحَدِّثُ عَنْ بُسْرِ بْنِ سَعِيدٍ، عَنْ زَيْدِ بْنِ ثَابِتٍ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ اتَّخَذَ حُجْرَةً فِي الْمَسْجِدِ مِنْ حَصِيرٍ فَصَلَّى رَسُولُ اللهِ ﷺ فِيهَا لَيَالِيَ حَتَّى اجْتَمَعَ إِلَيْهِ نَاسٌ فَفَقَدُوا صَوْتَهُ لَيْلَةً، فَظَنُّوا أَنَّهُ قَدْ نَامَ فَجَعَلَ بَعْضُهُمْ يَتَنَحْنَحُ لِيَخْرُجَ إِلَيْهِمْ فَقَالَ: ((مَا زَالَ بِكُمُ الَّذِي رَأَيْتُ مِنْ صَنِيعِكُمْ، حَتَّى خَشِيتُ أَنْ يُكْتَبَ عَلَيْكُمْ وَلَوْ كُتِبَ عَلَيْكُمْ مَا قُمْتُمْ بِهِ. فَصَلُّوا أَيُّهَا النَّاسُ فِي بُيُوتِكُمْ، فَإِنَّ أَفْضَلَ صَلاَةِ الْمَرْءِ فِي بَيْتِهِ إِلاَّ الصَّلاَةَ الْمَكْتُوبَةَ)). [راجع: ٧٣١]

7290. हमसे इस्ह़ाक़ बिन मंसूर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको अ़फ़्फ़ान बिन मुस्लिम ने ख़बरदी, उन्हों ने कहा हमसे वुहैब ने बयान किया, कहा हमसे मूसा इब्ने उ़क़्बा ने बयान किया, कहा मैंने अबुन्नज़्र से सुना, उन्होंने बुस्र बिन सईद से बयान किया, उनसे ज़ैद बिन षाबित (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने मस्जिदे नबवी में चटाई से घेरकर एक हुज्रा बना लिया और रमज़ान की रातों में उसके अंदर नमाज़ पढ़ने लगे फिर और लोग भी जमा हो गये तो एक रात आँह़ज़रत (ﷺ) की आवाज़ नहीं आई। लोगों ने समझा कि आँह़ज़रत (ﷺ) सो गये हैं। इसलिये उनमें से कुछ खंखारने लगे ताकि आप बाहर तशरीफ़ लाएँ, फिर आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैं तुम लोगों के काम से वाक़िफ़ हूँ, यहाँ तक कि मुझे डर हुआ कि कहीं तुम पर ये नमाज़े तरावीह़ फ़र्ज़ न कर दी जाए और अगर फ़र्ज़ कर दी जाए तो तुम उसे क़ायम नहीं रख सकोगे। पस ऐ लोगों! अपने घरों मे ये नमाज़ पढ़ो क्योंकि नमाज़ फ़र्ज़ के सिवा इंसान की सबसे अफ़ज़ल नमाज़ उसके घर में है। (राजेअ : 731)

तश्रीह: या जो नमाज़ जमाअ़त से अदा की जाती है जैसे ई़दैन गहन की नमाज़ वग़ैरह या तह़िय्यतुल मस्जिद कि वो ख़ास़ मस्जिद ही के ता'ज़ीम के लिये है। इस ह़दीष़ की मुनासबत बाब का तर्जुमा से ये है कि उन लोगों को

मस्जिद में उस नमाज़ का हुक्म नहीं हुआ था मगर उन्होंने अपने नफ़्स पर सख़्ती की, आपने उससे बाज़ रखा। मा'लूम हुआ कि सुन्नत की पैरवी अफ़ज़ल है और ख़िलाफ़े सुन्नत इबादत के लिये सख़्ती उठाना क़ैदें लगाना कोई उम्दह बात नहीं है।

7291. हमसे यूसुफ़ बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा हम्माद बिन उसामा ने बयान किया, उनसे बुरैद बिन अबी बुर्दा ने, उनसे अबू बुर्दा ने और उनसे अबू मूसा अश्अरी (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) से कुछ चीज़ों के बारे में पूछा गया जिन्हें आपने नापसंद किया जब लोगों ने बहुत ज़्यादा पूछना शुरू कर दिया तो आप नाराज़ हुए और फ़र्माया पूछो! इस पर एक सहाबी खड़े हुए और पूछा या रसूलल्लाह! मेरे वालिद कौन हैं? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुम्हारे वालिद हुज़ाफ़ह हैं। फिर दूसरे सहाबी खड़े हुए और पूछा मेरे वालिद कौन हैं? फ़र्माया कि तुम्हारे वालिद शैबा के मौला सालिम हैं। फिर जब उमर (रज़ि.) ने आँहज़रत (ﷺ) के चेहरा पर गुस्से के आषार महसूस किये तो अर्ज़ किया हम अल्लाह अज़्ज़ व जल की बारगाह में आपको गुस्सा दिलाने से तौबा करते हैं।

٧٢٩١- حَدَّثَنَا يُوسُفُ بْنُ مُوسَى حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، عَنْ بُرَيْدِ بْنِ أَبِي بُرْدَةَ، عَنْ أَبِي بُرْدَةَ عَنْ أَبِي مُوسَى الأَشْعَرِيِّ قَالَ: سُئِلَ رَسُولُ اللهِ ﷺ عَنْ أَشْيَاءَ كَرِهَهَا، فَلَمَّا أَكْثَرُوا عَلَيْهِ الْمَسْأَلَةَ غَضِبَ وَقَالَ: ((سَلُونِي)) فَقَامَ رَجُلٌ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ مَنْ أَبِي؟ قَالَ: ((أَبُوكَ حُذَافَةُ)) ثُمَّ قَامَ آخَرُ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ مَنْ أَبِي فَقَالَ: ((أَبُوكَ سَالِمٌ مَوْلَى شَيْبَةَ)) فَلَمَّا رَأَى عُمَرُ مَا بِوَجْهِ رَسُولِ اللهِ ﷺ مِنَ الْغَضَبِ قَالَ: إِنَّا نَتُوبُ إِلَى اللهِ عَزَّوَجَلَّ.

किसी ने ये पूछा मेरी ऊँटनी इस वक़्त कहाँ है? किसी ने पूछा क़यामत कब आएगी? किसी ने पूछा क्या हर साल हज्ज फ़र्ज़ है वग़ैरह वग़ैरह।

7292. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अबू अवाना ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल मलिक बिन उमैर कूफ़ी ने बयान किया, उनसे मुग़ीरह (रज़ि.) के कातिब वर्राद ने बयान किया कि मुआविया (रज़ि.) ने मुग़ीरह (रज़ि.) को लिखा कि जो तुमने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना है वो मुझे लिखिये तो उन्होंने उन्हें लिखा कि नबी करीम (ﷺ) हर नमाज़ के बाद कहते थे, तन्हा अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं, उसका कोई शरीक नहीं, मुल्क उसी का है और तमाम ता'रीफ़ उसी के लिये है और वो हर चीज़ पर क़ादिर है। ऐ अल्लाह! जो तू अता करे उसे कोई रोकने वाला नहीं और जिसे तू रोके उसे कोई देने वाला नहीं और किसी नसीबवर का नसीब तेरे मुक़ाबले में उसे नफ़ा नहीं पहुँचा सकेगा और उन्हें ये भी लिखा कि आँहज़रत बेफ़ायदा बहुत सवाल करने से मना करते थे और माल ज़ाया करने से और आप माँओं की नाफ़र्मानी करने से मना करते थे और लड़कियों को ज़िन्दा गाड़ने से और अपना हक़ महफ़ूज़ रखने और दूसरों का हक़ न देने से और बे ज़रूरत

٧٢٩٢- حَدَّثَنَا مُوسَى، حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ حَدَّثَنَا عَبْدُ الْمَلِكِ، عَنْ وَرَّادٍ كَاتِبِ الْمُغِيرَةِ قَالَ: كَتَبَ مُعَاوِيَةُ إِلَى الْمُغِيرَةِ اكْتُبْ إِلَيَّ مَا سَمِعْتَ مِنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ فَكَتَبَ إِلَيْهِ إِنَّ نَبِيَّ اللهِ ﷺ كَانَ يَقُولُ فِي دُبُرِ كُلِّ صَلاَةٍ: ((لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيكَ لَهُ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ، وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ، اللَّهُمَّ لاَ مَانِعَ لِمَا أَعْطَيْتَ، وَلاَ مُعْطِيَ لِمَا مَنَعْتَ، وَلاَ يَنْفَعُ ذَا الْجَدِّ مِنْكَ الْجَدُّ))، وَكَتَبَ إِلَيْهِ إِنَّهُ كَانَ يَنْهَى عَنْ قِيلٍ وَقَالٍ وَكَثْرَةِ السُّؤَالِ، وَإِضَاعَةِ الْمَالِ وَكَانَ يَنْهَى عَنْ عُقُوقِ

मांगने से मना फ़र्माते थे। (राजेअ़ : 844)

الأُمَّهَاتِ وَوَأْدِ الْبَنَاتِ وَمَنْعٍ وَهَاتِ.

[راجع: ٨٤٤]

7293. हमसे सुलैमान बिन ह़र्ब ने बयान किया, कहा हमसे ह़म्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे ष़ाबित ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि हम उ़मर (रज़ि.) के पास थे तो आपने फ़र्माया कि हमें तकल्लुफ़ इख़्तियार करने से मना किया गया है।

٧٢٩٣- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، عَنْ ثَابِتٍ، عَنْ أَنَسٍ قَالَ: كُنَّا عِنْدَ عُمَرَ فَقَالَ : نُهِينَا عَنِ التَّكَلُّفِ.

तश्रीह़ : अबू नुऐ़म ने मुस्तख़रज में निकाला अनस (रज़ि.) से कि हम ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) के पास थे वो चार पैवन्द लगे हुए एक कुर्ता पहने थे। इतने में उन्होंने ये आयत पढ़ी, **व फ़ाकिहतंव व अब्बा** तो कहने लगे फ़ाकिहतन तो हमको मा'लूम है लेकिन अब्बा क्या चीज़ है। फिर कहने लगे इसी त़रह़ हमको तकल्लुफ़ से मना किया गया और अपने तईं आप पुकारने लगे कहने लगे ऐ उ़मर की माँ के बेटे! यही तो तकल्लुफ़ है अगर तुझको ये मा'लूम न हुआ कि अब्बन क्या चीज़ है तो क्या नुक़्सान है?

7294. हमसे अबूल यमान ने बयान किया, उन्हों ने कहा हमसे शुऐ़ब ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुहरी ने (दूसरी सनद) इमाम बुख़ारी (रह़.) ने कहा और मुझसे मह़मूद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको मअ़मर ने ख़बर दी, कि नबी करीम (ﷺ) सूरज ढलने के बाद बाहर तशरीफ़ लाए और ज़ुह्र की नमाज़ पढ़ी, फिर सलाम फेरने के बाद आप मिम्बर पर खड़े हुए और क़यामत का ज़िक्र किया और आपने ज़िक्र किया कि उससे पहले बड़े बड़े वाक़ियात होंगे, फिर आपने फ़र्माया कि तुममें से जो शख़्स किसी चीज़ के बारे में सवाल करना चाहे तो सवाल करे। आज मुझसे जो सवाल भी करोगे मैं उसका जवाब दूँगा जब तक मैं अपनी इस जगह पर हूँ। अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि उस पर लोग बहुत ज़्यादा रोने लगे और आँह़ज़रत (ﷺ) बार बार वही फ़र्माते थे कि मुझसे पूछो। उन्होंने बयान किया कि फिर एक स़ह़ाबी खड़े हुए और पूछा, मेरी जगह कहाँ है? (जन्नत या जहन्नम में) या रसूलल्लाह! आँह़ज़रत (ﷺ) ने बयान किया कि जहन्नम में। फिर अ़ब्दुल्लाह बिन हु़ज़ाफ़ह (रज़ि.) खड़े हुए और कहा मेरे वालिद कौन हैं या रसूलल्लाह! फ़र्माया कि तुम्हारे वालिद हु़ज़ाफ़ा हैं। बयान किया कि फिर आप मुसलसल कहते रहे कि मुझसे पूछो, मुझसे पूछो। आख़िर उ़मर (रज़ि.) ने घुटनों के बल बैठकर कहा, हम अल्लाह से रब की हैषियत से, इस्लाम से दीन की हैषियत से,

٧٢٩٤- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ ح وَحَدَّثَنِي مَحْمُودٌ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، أَخْبَرَنِي أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ خَرَجَ حِينَ زَاغَتِ الشَّمْسُ، فَصَلَّى الظُّهْرَ، فَلَمَّا سَلَّمَ قَامَ عَلَى الْمِنْبَرِ فَذَكَرَ السَّاعَةَ وَذَكَرَ أَنَّ بَيْنَ يَدَيْهَا أُمُورًا عِظَامًا، ثُمَّ قَالَ: ((مَنْ أَحَبَّ أَنْ يَسْأَلَ عَنْ شَيْءٍ فَلْيَسْأَلْ عَنْهُ، فَوَ اللهِ لاَ تَسْأَلُونِي عَنْ شَيْءٍ إِلاَّ أَخْبَرْتُكُمْ بِهِ مَا دُمْتُ فِي مَقَامِي هَذَا)) قَالَ أَنَسٌ: فَأَكْثَرَ النَّاسُ الْبُكَاءَ وَأَكْثَرَ رَسُولُ اللهِ ﷺ أَنْ يَقُولَ: ((سَلُونِي)) فَقَالَ أَنَسٌ : فَقَامَ إِلَيْهِ رَجُلٌ فَقَالَ: أَيْنَ مَدْخَلِي يَا رَسُولَ اللهِ؟ قَالَ: ((النَّارُ)) فَقَامَ عَبْدُ اللهِ بْنُ حُذَافَةَ فَقَالَ: مَنْ أَبِي يَا رَسُولَ اللهِ؟ قَالَ: ((أَبُوكَ حُذَافَةُ)) قَالَ : ثُمَّ أَكْثَرَ أَنْ يَقُولَ:

मुहम्मद (ﷺ) से रसूल की हैषियत से राज़ी व ख़ुश हैं। उमर(रज़ि.) ने ये कलिमात कहे तो आँहज़रत (ﷺ) ख़ामोश हो गये, फिर आपने फ़र्माया उस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है, अभी मुझ पर जन्नत और दोज़ख़ इस दीवार की चौड़ाई में मेरे सामने की गई थी (या'नी उनकी तस्वीरें) जब मैं नमाज़ पढ़ रहा था, आज की तरह मैंने ख़ैरो शर्र कभी नहीं देखा। (राजेअ : 93)

((سَلُونِي سَلُونِي)) فَبَرَكَ عُمَرُ عَلَى رُكْبَتَيْهِ فَقَالَ : رَضِينَا بِاللهِ رَبًّا وَبِالإِسْلاَمِ دِينًا وَبِمُحَمَّدٍ رَسُولاً. فَسَكَتَ رَسُولُ اللهِ ﷺ حِينَ قَالَ عُمَرُ ذَلِكَ، ثُمَّ قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((أَوْلَى وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ لَقَدْ عُرِضَتْ عَلَيَّ الْجَنَّةُ وَالنَّارُ آنِفًا فِي عَرْضِ هَذَا الْحَائِطِ وَأَنَا أُصَلِّي فَلَمْ أَرَ كَالْيَوْمِ فِي الْخَيْرِ وَالشَّرِّ)). [راجع: ٩٣]

7295. हमसे मुहम्मद बिन अ़ब्दुर्रहीम ने बयान किया, कहा हमको रौह बिन उ़बादह ने ख़बरदी, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, कहा मुझको मूसा बिन अनस ने ख़बर दी कि मैंने अनस बिन मालिक (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि एक साहब ने कहा या रसूलल्लाह! मेरे वालिद कौन हैं? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि, तुम्हारे वालिद फ़लाँ हैं। और ये आयत नाज़िल हुई ऐ लोगों! ऐसी चीज़ें न पूछो, अल आयत। (सूरह माइदह : 101)। (राजेअ : 93)

٧٢٩٥- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحِيمِ، أَخْبَرَنَا رَوْحُ بْنُ عُبَادَةَ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، أَخْبَرَنِي مُوسَى بْنُ أَنَسٍ قَالَ: سَمِعْتُ أَنَسَ بن مَالِكٍ قَالَ : قَالَ رَجُلٌ يَا نَبِيَّ اللهِ مَنْ أَبِي؟ قَالَ: ((أَبُوكَ فُلاَنٌ)) وَنَزَلَتْ ﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لاَ تَسْأَلُوا عَنْ أَشْيَاءَ﴾ [المائدة : ١٠١] الآيَةَ.[راجع: ٩٣]

तश्रीह : ख़ुदा न ख़्वास्ता किसी का बाप सहीह न हो और आपसे पूछने पर उस हक़ीक़त को ज़ाहिर कर दें तो पूछने वाले की कितनी रुस्वाई हो सकती है। इसलिये एहतियातन बेजा सवाल करने से मना किया गया। आपको अल्लाह पाक वह्य के ज़रिये से आगाह कर देता था। ये कोई ग़ैबदानी की बात नहीं बल्कि महज़ अल्लाह का अ़तिया है जो वो अपने रसूलों नबियों को बख़्शता है, **कुल ला यअ़लमु मन फ़िस्समावाति वमन फ़िल अ़रज़िल ग़ैब इल्लल्लाह अल्अख़।**

7296. हमसे हसन बिन सब्बाह ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे शबाबा ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे वरक़ा ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुर्रहमान ने बयान किया, उन्होंने अनस बिन मालिक (रज़ि.) से सुना कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया इंसान बराबर सवाल करता रहेगा। यहाँ तक कि सवाल करेगा कि ये तो अल्लाह है, हर चीज़ का पैदा करने वाला लेकिन अल्लाह को किसने पैदा किया?

٧٢٩٦- حَدَّثَنَا الْحَسَنُ بْنُ صَبَّاحٍ، حَدَّثَنَا شَبَابَةُ، حَدَّثَنَا وَرْقَاءُ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ سَمِعْتُ أَنَسَ بْنَ مَالِكٍ يَقُولُ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((لَنْ يَبْرَحَ النَّاسُ يَتَسَاءَلُونَ حَتَّى يَقُولُوا: هَذَا اللهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ فَمَنْ خَلَقَ اللهَ؟)).

मआज़ल्लाह ये शैतान उनके दिलों में वस्वसे डालेगा। दूसरी रिवायत में है कि जब ऐसा वस्वसा आए तो **अऊज़ुबिल्लाह** पढ़ो या **आमन्तु बिल्लाहि** कहो या **अल्लाहु अहद अल्लाहुस्समद** और बाईं तरफ़ थूको और **अऊज़ुबिल्लाह** पढ़ो।

7297. हमसे मुहम्मद बिन उ़बैद बिन मैमून ने बयान किया,

٧٢٩٧- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عُبَيْدِ بْنِ

कहा हमसे ईसा बिन यूनुस ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे इब्राहीम ने, उनसे अ़ल्क़मा ने, उनसे इब्ने मसऊ़द (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं नबी करीम (ﷺ) के साथ मदीना के एक खेत में था। आँहज़रत (ﷺ) खजूर की एक शाख़ पर टेक लगाए हुए थे कुछ यहूदी उधर से गुज़रे तो उनमें से कुछ ने कहा कि इनसे रूह़ के बारे में पूछो। लेकिन दूसरे ने कहा कि इनसे न पूछो। कहीं ऐसी बात न सुना दें जो तुम्हें नापसंद हो। आख़िर आपके पास वो लोग आए और कहा, अबुल क़ासिम! रूह़ के बारे में हमें बताइये? फिर आँहज़रत (ﷺ) थोड़ी देर खड़े देखते रहे। मैं समझ गया कि आप पर वह्य नाज़िल हो रही है। मैं थोड़ी दूर हट गया, यहाँ तक कि वह्य का नुज़ूल पूरा हो गया, फिर आपने ये आयत पढ़ी, और आपसे रूह़ के बारे में पूछते हैं। कहिये कि रूह़ मेरे रब के हुक्म में से है। (सूरह इस्रा : 85)। (राजेअ़ : 125)

مَيْمُونٍ، حَدَّثَنَا عِيسَى بْنُ يُونُسَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ عَلْقَمَةَ، عَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: كُنْتُ مَعَ النَّبِيِّ ﷺ فِي حَرْثٍ بِالْمَدِينَةِ وَهُوَ يَتَوَكَّأُ عَلَى عَسِيبٍ، فَمَرَّ بِنَفَرٍ مِنَ الْيَهُودِ فَقَالَ بَعْضُهُمْ: سَلُوهُ عَنِ الرُّوحِ؟ وَقَالَ بَعْضُهُمْ لاَ تَسْأَلُوهُ لاَ يُسْمِعُكُمْ مَا تَكْرَهُونَ فَقَامُوا إِلَيْهِ فَقَالُوا: يَا أَبَا الْقَاسِمِ حَدِّثْنَا عَنِ الرُّوحِ فَقَامَ سَاعَةً يَنْظُرُ فَعَرَفْتُ أَنَّهُ يُوحَى إِلَيْهِ فَتَأَخَّرْتُ عَنْهُ حَتَّى صَعِدَ الْوَحْيُ ثُمَّ قَالَ: (﴿وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الرُّوحِ قُلِ: الرُّوحُ مِنْ أَمْرِ رَبِّي﴾) [الأسراء: ٨٥].

[راجع: ١٢٥]

तश्रीह़ : उन यहूदियों ने आपस में ये स़लाह़ की थी कि इनसे रूह़ के बारे में पूछो। अगर ये रूह़ की कुछ ह़क़ीक़त बयान करें जब तो समझ जाएँगे कि ये ह़कीम हैं, पैग़म्बर नहीं हैं। चूँकि किसी पैग़म्बर ने रूह़ की ह़क़ीक़त नहीं बयान की। अगर ये भी बयान न करें तो मा'लूम होगा कि पैग़म्बर हैं। इस पर कुछ ने कहा न पूछो, इसलिये कि अगर उन्होंने भी रूह़ की ह़क़ीक़त बयान नहीं की तो उनकी पैग़म्बरी का एक और षुबूत पैदा होगा और तुमको नागवार गुज़रेगा। रूह़ की ह़क़ीक़त में आदम (अ़लैहि.) से लेकर आज तक हज़ारों ह़कीमों ने ग़ौर किया और अब तक इसकी ह़क़ीक़त मा'लूम नहीं हुई। अब अम्र ये कि रूह़ के पीछे पड़े हैं लेकिन उनको भी अब तक पूरी ह़क़ीक़त मा'लूम न हो सकी, पर इतना तो मा'लूम हो गया कि बेशक रूह़ एक जौहर है जिसकी सूरत ज़ी-रूह़ की सूरत की सी होती है। मष़लन आदमी की रूह़ उसकी सूरत पर, कुत्ते की रूह़ उसकी सूरत पर और ये जौहर एक लत़ीफ़ जौहर है जिसका हर जुज़ जिस्मे ह़ैवानी के हर जुज़ मे समा जाता है और बवजह शिद्दते लत़ाफ़त के उसको न पकड़ सकते हैं न बन्द कर सकते हैं। रूह़ की लत़ाफ़त इस दर्जा है कि शीशे में से भी पार हो जाती है ह़ालाँकि हवा और पानी दूसरे अज्सामे लत़ीफ़ा उसमें से नहीं निकल सकते। ये अल्लाह तआ़ला की ह़िक्मत है। उसने रूह़ को अपनी ज़ाते मुक़द्दस का एक नमूना इस दुनिया में रखा है ताकि जो लोग स़िर्फ़ मह़सूसात को मानते हैं वो रूह़ पर ग़ौर करके मुजर्रदात या'नी जिन्नों और फ़रिश्तों और परवरदिगार को भी मानें क्योंकि रूह़ के वजूद से इंकार करना ये मुम्किन नहीं हो सकता है। हर आदमी जानता है कि साठ बरस उधर मैं फ़लाने मुल्क में गया था। मैंने ये काम किये थे ह़ालाँकि उस साठ बरस में उसका बदन कई बार बदल गया। यहाँ तक कि उसका कोई जुज़ क़ायम नहीं रहा, फिर वो चीज़ क्या है जो नहीं बदली और जिस पर मैं का इत़्लाक़ होता है। अल्लाह तआ़ला ने आदमियों का कमज़ोरी दिखाने के लिये रूह़ की ह़क़ीक़त को पोशीदा कर दी। पैग़म्बरों को इतना ही बतलाया गया कि वो परवरदिगार का अम्र या'नी हुक्म है। मष़लन एक आदमी कहीं का ह़ाकिम हो ता'ल्लुक़दार हो या तह़सीलदार या डिप्टी कलेक्टर पर इसकी मौक़ूफ़ी का हुक्म बादशाहे पास से स़ादिर हो जाए। देखो वो शख़्स़ वही रहता है जो पहले था इसकी कोई चीज़ नहीं बदलती लेकिन मौक़ूफ़ी के बाद उसको ता'ल्लुक़दार या तह़सीलदार या डिप्टी कलेक्टर नहीं कहते। आख़िर क्या चीज़ इसमें से जाती रही, वही हुक्म बादशाह का जाता रहा। इसी

तरह रूह भी परवरदिगार का एक हुक्म है या'नी हैवत की सिफ़त का ज़हूर है। जहाँ ये हुक्म उठ गया, हैवान मर गया उसका जिस्म वग़ैरह सब वैसा ही रहता है।

बाब 4 : नबी करीम (ﷺ) के कामों की पैरवी करना

٤- باب الإِقْتِدَاء بِأَفْعَالِ النَّبِيِّ ﷺ

तश्रीह : अल्लाह तआला ने फ़र्माया, **लक़द कान लकुम फ़ी रसूलिल्लाहि उस्वतुल हसना** अल्अख़ या'नी अल्लाह के रसूल (ﷺ) में तुम्हारे लिये उम्दह नमूना है। पस हर काम में आँहज़रत (ﷺ) की पैरवी करना ईमान की निशानी है। सहाबा (रज़ि.) हर फ़ेअल में आपकी पैरवी किया करते थे। जो आपके किसी काम को मकरूह जाने, वो ईमान से ख़ाली है। इत्तिबाअ़े नबवी का यही मतलब है कि आप (ﷺ) का हर नक़्शे क़दम आपके अक़ाइद व आ'माल का जुज़ हो और पूरे तौर पर इत्तिबाअ़ की जाए। हर सुन्नते नबवी को सरमाया-ए-सआदते दारैन समझा जाए। **अल्लाहुम्म वफ़्फ़िक़्ना लिइत्तिबाइ हबीबिक (ﷺ)।**

7298. हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे अब्दुल्लाह बिन दीनार ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने सोने की एक अंगूठी बनवाई तो दूसरे लोगों ने भी सोने की अंगूठियाँ बनवा लीं, फिर आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैंने सोने की एक अंगूठी बनवाई थी, फिर आपने फेंक दिया और फ़र्माया कि मैं इसे कभी नहीं पहनूँगा। चुनाँचे और लोगों ने भी अपनी अंगूठियाँ फेंक दीं। (राजेअ : 5865)

٧٢٩٨- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ دِينَارٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ : اتَّخَذَ النَّبِيُّ ﷺ خَاتَمًا مِنْ ذَهَبٍ فَاتَّخَذَ النَّاسُ خَوَاتِيمَ مِنْ ذَهَبٍ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِنِّي اتَّخَذْتُ خَاتَمًا مِنْ ذَهَبٍ)) فَنَبَذَهُ وَقَالَ : ((إِنِّي لَنْ أَلْبَسَهُ أَبَدًا)) فَنَبَذَ النَّاسُ خَوَاتِيمَهُمْ.

[راجع: ٥٨٦٥]

बाद में सोने की अंगूठी मर्दों के लिये हराम क़रार पाई तो आपने और सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम सबने सोने की अंगूठियों को ख़त्म कर दिया। औरतों के लिये ये हलाल है।

बाब 5 : किसी अम्र में तशद्दुद और सख़्ती करना

या इल्म की बात में बेमौक़ा फ़िज़ूल झगड़ा करना और दीन में ग़ुलू करना, बिदअतें निकालना, हद से बढ़ जाना मना है क्योंकि अल्लाह पाक ने सूरह निसा में फ़र्माया, किताबवालों! अपने दीन में हद से मत बढ़ो। (सूरह निसा : 171)

وَالتَّنَازُعِ فِي الْعِلْمِ وَالْغُلُوِّ فِي الدِّينِ وَالْبِدَعِ. لِقَوْلِهِ تَعَالَى: ﴿يَا أَهْلَ الْكِتَابِ لاَ تَغْلُوا فِي دِينِكُمْ وَلاَ تَقُولُوا عَلَى اللهِ إِلاَّ الْحَقَّ﴾ [النساء : ١٧١].

तश्रीह : जैसे यहूद ने हज़रत ईसा (अ.) को घटाकर उनकी पैग़म्बरी का भी इंकार कर दिया और नसारा ने चढ़ाया कि उनको अल्लाह बना दिया, दोनों बातें ग़ुलू हैं। ग़ुलू उसी को कहते हैं जिसकी मुसलमानों में भी बहुत सी मिषालें हैं। शिया और अहले बिदअ़त ने ग़ुलू में यहूद और नसारा की पैरवी की। **हदाहुमुल्लाहु तआला।**

7299. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम ने, कहा हमको मअ़मर ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुहरी ने, उन्हें अबू सलमा ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, तुम सौमे विसाल

٧٢٩٩- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ، حَدَّثَنَا هِشَامٌ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ : قَالَ

النَّبِيُّ ﷺ: ((لاَ تُوَاصِلُوا)) قَالُوا: إِنَّكَ تُوَاصِلُ قَالَ: ((إِنِّي لَسْتُ مِثْلَكُمْ إِنِّي أَبِيتُ يُطْعِمُنِي رَبِّي وَيَسْقِينِي)) فَلَمْ يَنْتَهُوا عَنِ الْوِصَالِ قَالَ: فَوَاصَلَ بِهِمُ النَّبِيُّ ﷺ يَوْمَيْنِ أَوْ لَيْلَتَيْنِ، ثُمَّ رَأَوُا الْهِلاَلَ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لَوْ تَأَخَّرَ الْهِلاَلُ لَزِدْتُكُمْ)) كَالْمُنَكِّلِ لَهُمْ.[راجع: ١٩٦٥]

(इफ़्तार व सेहर के बग़ैर कई दिन के रोज़े) न रखा करो। सहाबा ने कहा कि आँहज़रत (ﷺ) तो सौमे विसाल रखते हैं। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैं तुम जैसा नहीं हूँ। मैं रात गुज़ारता हूँ और मेरा रब मुझे खिलाता पिलाता है लेकिन लोग सौमे विसाल से नहीं रुके। बयान किया कि फिर आँहज़रत (ﷺ) ने उनके साथ दो दिन या दो रातों में सौमे विसाल किया, फिर लोगों ने चाँद देख लिया तो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अगर चाँद न नज़र आता तो मैं और विसाल करता। आँहज़रत (ﷺ) का मक़्सद उन्हें सरज़िंश करना था। (राजेअ : 1965)

तश्रीह : गो ये रिवायत बाब के मुताबिक़ नहीं है, मगर इमाम बुख़ारी (रह.) ने अपनी आदत के मुवाफ़िक़ इसके दूसरे तरीक़ की तरफ़ इशारा किया। इसमें साफ़ यूँ मज़्कूर है कि मैं इतने तै करता कि ये सख़्ती करने वाले अपनी सख़्ती को छोड़ देते। इस हदीष़ से ये निकलता है कि हर इबादत और रियाज़त इसी तरह दीन के सब कामों में आँहज़रत (ﷺ) के इर्शाद और आपकी सुन्नत की पैरवी करना ज़रूरी है। इसमें ज़्यादा ष़वाब है बाक़ी किसी बात में गुलू करना या हद से बढ़ जाना मष़लन सारी रात जागते रहना या हमेशा रोज़ा रखना ये कुछ अफ़ज़ल नहीं है। क्या तुमने वो शे'र नहीं सुना,

बे ज़ुहद व वरअ कोश व सिदक़ व सफ़ा
व लेकिन बैफ़ज़ाए बर मुस्तफ़ा

इसी तरह ये जो कुछ मुसलमानों ने आदत कर ली है कि ज़रा से मकरूह काम को देखा तो उसको हराम कह दिया या सुन्नत या मुस्तहब पर फ़र्ज़ वाजिब की तरह सख़्ती की या हराम या मकरूह काम को शिर्क क़रार दे दिया और मुसलमान को मुश्रिक बना दिया, ये तरीक़ा अच्छा नहीं है और गुलू में दाख़िल है। **वला तक़ूलू हाज़ा हलालुन व हाज़ा हराम लितफ़्तरू अलल्लाहिल कज़िब।**

٧٣٠٠- حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصِ بْنِ غِيَاثٍ، حَدَّثَنَا أَبِي حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، حَدَّثَنِي إِبْرَاهِيمُ التَّيْمِيُّ، حَدَّثَنِي أَبِي قَالَ: خَطَبَنَا عَلِيٌّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَلَى مِنْبَرٍ مِنْ آجُرٍّ وَعَلَيْهِ سَيْفٌ فِيهِ صَحِيفَةٌ مُعَلَّقَةٌ. فَقَالَ: وَاللهِ مَا عِنْدَنَا مِنْ كِتَابٍ يُقْرَأُ إِلاَّ كِتَابُ اللهِ، وَمَا فِي هَذِهِ الصَّحِيفَةِ فَنَشَرَهَا فَإِذَا فِيهَا أَسْنَانُ الإِبِلِ وَإِذَا فِيهَا الْمَدِينَةُ حَرَمٌ مِنْ عَيْرٍ إِلَى كَذَا، فَمَنْ أَحْدَثَ فِيهَا حَدَثًا فَعَلَيْهِ لَعْنَةُ اللهِ وَالْمَلاَئِكَةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ، لاَ يَقْبَلُ اللهُ مِنْهُ صَرْفًا وَلاَ عَدْلاً

7300. हमसे उमर बिन हफ़्स बिन ग़यास़ ने बयान किया, कहा हमसे हमारे वालिद ने, कहा हमसे अअमश ने बयान किया, कहा मुझसे इब्राहीम तैमी ने बयान किया, कहा मुझसे मेरे वालिद ने बयान किया, कहा कि अली (रज़ि.) ने हमें ईंट के बने हुए मिम्बर पर खड़े होकर ख़ुत्बा दिया। आप तलवार लिये हुए थे जिसमें एक सहीफ़ा लटका हुआ था। आपने फ़र्माया वल्लाह! हमारे पास किताबुल्लाह के सिवा कोई और किताब नहीं जिसे पढ़ा जाए और सिवा इस सहीफ़े के। फिर उन्होंने उसे खोला तो उसमें दियत में दिये जाने वाले ऊँटों की उम्रों का बयान था (कि दियत में इतनी इतनी उम्र के ऊँट दिये जाएँ) और उसमें ये भी था कि मदीना तय्यिबा की ज़मीन ईर पहाड़ी से स़ौर पहाड़ी तक हरम है। पस उसमें जो कोई नई बात (बिदअत) निकालेगा उस पर अल्लाह की ला'नत है और फ़रिश्तों की और तमाम लोगों की। अल्लाह उससे किसी फ़र्ज़

या नफ़्ल इबादत को क़ुबूल नहीं करेगा और उसमें ये भी था कि मुसलमानों की ज़िम्मेदारी (अहद या अमान) एक है उसका ज़िम्मेदार उनमें सबसे अदना मुसलमान भी हो सकता है। पस जिसने किसी मुसलमान का ज़िम्मा तोड़ा, उस पर अल्लाह की ला'नत है और फ़रिश्तों की और तमाम लोगों की। अल्लाह उसकी न फ़र्ज़ इबादत क़ुबूल करेगा और न नफ़्ल इबादत और उसमें ये भी था कि जिसने किसी से अपने वालियों की इजाज़त के बग़ैर विलाअ का रिश्ता क़ायम किया उस पर अल्लाह और फ़रिश्तों और तमाम इंसानों की ला'नत है, अल्लाह न उसकी फ़र्ज़ नमाज़ क़ुबूल करेगा न नफ़्ल। (राजेअ : 111)

وَإِذَا فِيهِ ذِمَّةُ الْمُسْلِمِينَ وَاحِدَةٌ يَسْعَى بِهَا أَدْنَاهُمْ فَمَنْ أَخْفَرَ مُسْلِمًا فَعَلَيْهِ لَعْنَةُ اللهِ وَالْمَلاَئِكَةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ، لاَ يَقْبَلُ اللهُ مِنْهُ صَرْفًا وَلاَ عَدْلاً وَإِذَا فِيهَا مَنْ وَالَى قَوْمًا بِغَيْرِ إِذْنِ مَوَالِيهِ، فَعَلَيْهِ لَعْنَةُ اللهِ وَالْمَلاَئِكَةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ لاَ يَقْبَلُ اللهُ مِنْهُ صَرْفًا وَلاَ عَدْلاً.

[راجع: ١١١]

तश्रीह़ : बाब का मत़लब यहीं से निकला और गो ह़दीष़ में इस जगह की क़ैद है मगर बिद्अत का हुक्म हर जगह एक है। दूसरी रिवायत में यूँ है, उसमें ये भी था कि जो अल्लाह के सिवा और किसी की ता'ज़ीम के लिये ज़िब्ह़ करे उस पर अल्लाह ने ला'नत की और जो कोई ज़मीन का निशान चुरा ले उस पर अल्लाह ने ला'नत की और जो शख़्स अपने बाप पर ला'नत करे उस पर अल्लाह ने ला'नत की और जो शख़्स किसी बिद्अती को अपने यहाँ ठिकाना दे उस पर अल्लाह ने ला'नत की। इस ह़दीष़ से ये भी निकला कि शिया लोग जो बहुत सी किताबें जनाबे अमीर की त़रफ़ मन्सूब करते हैं जैसे स़ह़ीफ़े कामिला वग़ैरह या जनाबे अमीर का कोई और क़ुर्आन इस मुरव्वज क़ुर्आन के सिवा जानते हैं वो झूठे हैं। इसी त़रह़ सूरह अ़ली जो कुछ शियों ने अपनी किताबों में नक़ल की है, **लअ़नतुल्लाहु अ़ला वाज़िइही**। अल्बत्ता कुछ रिवायतों से इतना ष़ाबित होता है कि जनाबे अमीर के क़ुर्आन शरीफ़ की तर्तीब दूसरी त़रह़ पर थी या'नी बए'तिबार तारीख़े नुज़ूल के और एक ताबेई कहते हैं कि अगर ये क़ुर्आन मजीद मौजूद होता तो हमको बहुत फ़ायदा ह़ासिल होते या'नी सूरतों की तक़्दीम व ताख़ीर मा'लूम हो जाती। बाक़ी क़ुर्आन यही था जो अब मुरव्वज है। इससे ज़्यादा उसमें कोई सूरत न थी।

7301. हमसे उ़मर बिन ह़फ़्स़ ने बयान किया, कहा मुझसे मेरे वालिद ने बयान किया, कहा हमसे आ'मश ने बयान किया, उनसे मुस्लिम ने, उनसे मसरूक़ ने, उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने कोई काम किया जिससे कुछ लोगों ने बचना परहेज़ करना इख़्तियार किया। जब आँह़ज़रत (ﷺ) को उसकी ख़बर पहुँची तो आपने फ़र्माया कि उन लोगों का क्या ह़ाल होगा जो ऐसी चीज़ से परहेज़ इख़्तियार करते हैं जो मैं करता हूँ। वल्लाह मैं इनसे ज़्यादा अल्लाह के बारे में इल्म रखता हूँ और उनसे ज़्यादा ख़शिय्यत रखता हूँ। (राजेअ : 6101)

٧٣٠١- حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، حَدَّثَنَا مُسْلِمٌ، عَنْ مَسْرُوقٍ قَالَ : قَالَتْ عَائِشَةُ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا صَنَعَ النَّبِيُّ ﷺ شَيْئًا تَرَخَّصَ فِيهِ وَتَنَزَّهَ عَنْهُ قَوْمٌ فَبَلَغَ ذَلِكَ النَّبِيَّ ﷺ فَحَمِدَ اللهَ ثُمَّ قَالَ: ((مَا بَالُ أَقْوَامٍ يَتَنَزَّهُونَ عَنِ الشَّيْءِ أَصْنَعُهُ فَوَ اللهِ إِنِّي أَعْلَمُهُمْ بِاللهِ وَأَشَدُّهُمْ لَهُ خَشْيَةً)).

[راجع: ٦١٠١]

तश्रीह़ : दाऊदी ने कहा आँह़ज़रत (ﷺ) ने जो काम किया, इससे बचना इसको ख़िलाफ़े तक़्वा समझना बड़ा गुनाह है बल्कि इल्ह़ाद और बेदीनी है।

मैं कहता हूँ जो कोई आँहज़रत (ﷺ) के अफ़आल को तक़्वा या औला के ख़िलाफ़ या आपकी इबादत को बेहक़ीक़त समझे उससे कहना चाहिये तुझको तक़्वा कहाँ से मा'लूम हुआ और तूने इबादत क्या समझी न तूने अल्लाह को देखा न तू अल्लाह से मिला जो कुछ तूने इल्म हासिल किया वो आँहज़रत (ﷺ) के ज़रिये से। फिर अल्लाह की मर्ज़ी तू क्या जाने, जो आँहज़रत (ﷺ) ने किया या बतलाया उसी में अल्लाह की मर्ज़ी है।

ख़िलाफ़े पयम्बर कसे रह गुज़ीद   कि हर्गिज़ बमंज़िल नख़ाहद रसीद

7302. हमसे मुहम्मद बिन मुक़ातिल अबुल हसन मरवज़ी ने बयान किया, कहा हमको वकीअ ने ख़बर दी, उन्हें नाफ़ेअ बिन उमर ने, उनसे इब्ने अबी मुलैका ने बयान किया कि उम्मत के दो बेहतरीन इंसान क़रीब था कि हलाक हो जाते (या'नी अबूबक्र व उमर रज़ि.) जिस वक़्त नबी करीम (ﷺ) के पास बनी तमीम का वफ़्द आया तो उनमें से एक साहब (उमर रज़ि.) ने बनी मुजाशेअ में से अक़रअ बिन हाबिस हन्ज़ली (रज़ि.) को उनका सरदार बनाए जाने का मश्वरा दिया (तो उन्होंने ये दरख़्वास्त की कि किसी को हमारा सरदार बना दीजिए) और दूसरे साहब (अबूबक्र रज़ि.) ने दूसरे (क़अक़ाअ बिन सईद बिन ज़ुरारह) को बनाए जाने का मश्वरा दिया। इस पर अबूबक्र ने उमर से कहा कि आपका मक़सद सिर्फ़ मेरी मुख़ालफ़त करना है। उमर (रज़ि.) ने कहा कि मेरी निय्यत आपकी मुख़ालफ़त करना नहीं है और नबी करीम (ﷺ) की मौजूदगी में दोनों बुज़ुर्गों की आवाज़ बुलंद हो गई। चुनाँचे ये आयत नाज़िल हुई, ऐ लोगों! जो ईमान लाए हो अपनी आवाज़ को बुलंद न करो, इर्शादे इलाही अज़ीम तक। इब्ने अबी मुलैका ने बयान किया कि इब्ने ज़ुबैर (रज़ि.) कहते थे कि उमर (रज़ि.) ने इस आयत के उतरने के बाद ये तरीक़ा इख़्तियार किया और इब्ने ज़ुबैर ने अबूबक्र (रज़ि.) अपने नाना का ज़िक्र किया वो जब आँहज़रत (ﷺ) से कुछ अर्ज़ करते तो इतनी आहिस्तगी से जैसे कोई कान में बात करता है यहाँ तक कि आँहज़रत (ﷺ) को बात सुनाई न देती तो आप दोबारा पूछते क्या कहा। (राजेअ : 4367)

٧٣٠٢- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مُقَاتِلٍ، أَخْبَرَنَا وَكِيعٌ، عَنْ نَافِعٍ عَنِ بْنِ عُمَرَ، عَنِ ابْنِ أَبِي مُلَيْكَةَ قَالَ: كَادَ الْخَيِّرَانِ أَنْ يَهْلِكَا أَبُو بَكْرٍ وَعُمَرُ لَمَّا قَدِمَ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ وَفْدُ بَنِي تَمِيمٍ أَشَارَ أَحَدُهُمَا بِالأَقْرَعِ بْنِ حَابِسٍ الْحَنْظَلِيِّ أَخِي بَنِي مُجَاشِعٍ وَأَشَارَ الآخَرُ بِغَيْرِهِ فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ لِعُمَرَ إِنَّمَا أَرَدْتَ خِلاَفِي فَقَالَ عُمَرُ : مَا أَرَدْتُ خِلاَفَكَ فَارْتَفَعَتْ أَصْوَاتُهُمَا عِنْدَ النَّبِيِّ ﷺ فَنَزَلَتْ: ﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لاَ تَرْفَعُوا أَصْوَاتَكُمْ﴾ [الحجرات: ٢] إِلَى قَوْلِهِ ﴿عَظِيمٌ﴾ قَالَ ابْنُ أَبِي مُلَيْكَةَ : قَالَ ابْنُ الزُّبَيْرِ : فَكَانَ عُمَرُ بَعْدُ وَلَمْ يَذْكُرْ ذَلِكَ عَنْ أَبِيهِ يَعْنِي أَبَا بَكْرٍ إِذَا حَدَّثَ النَّبِيَّ ﷺ بِحَدِيثٍ حَدَّثَهُ كَأَخِي السِّرَارِ لَمْ يُسْمِعْهُ حَتَّى يَسْتَفْهِمَهُ.

[راجع: ٤٣٦٧]

तश्रीह : इस हदीष की मुताबक़त बाब से ये है कि इसमें झगड़ा करने का ज़िक्र है क्योंकि अबूबक्र और उमर (रज़ि.) दोनों तौलियत के बाब में झगड़ रहे थे या'नी किसको हाकिम बनाया जाए, ये एक इल्म की बात थी।

7303. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, उन्होंने कहा मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन उर्वा ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने बयान किया और उनसे उम्मुल मोमिनीन आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि

٧٣٠٣- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، حَدَّثَنِي مَالِكٌ، عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ أُمِّ الْمُؤْمِنِينَ أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ

रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अपनी बीमारी में फ़र्माया अबूबक्र से कहो कि लोगों को नमाज़ पढ़ाएँ हज़रत आइशा (रज़ि.) ने कहा कि मैंने जवाबन अर्ज़ किया कि अबूबक्र (रज़ि.) अगर आप (ﷺ) की जगह खड़े होंगे तो रोने की शिद्दत की वजह से अपनी आवाज़ लोगो को नहीं सुना सकेंगे इसलिये आप (ﷺ) उमर (रज़ि.) को हुक्म दीजिए। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अबूबक्र (रज़ि.) से कहो कि लोगों को नमाज़ पढ़ाएँ। आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने हफ़्सा (रज़ि.)से कहा कि तुम कहो कि अबूबक्र (रज़ि.) आपकी जगह खड़े होगे तो शिद्दत बुकाअ की वजह से लोगों को सुना नहीं सकेंगे, इसलिये आप उमर (रज़ि.) को नमाज़ पढ़ाने का हुक्म दें। हफ़्सा (रज़ि.) ने ऐसा ही किया। इस पर आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि बिला शुब्हा तुम लोग यूसुफ़ पैग़म्बर की साथवालियाँ हो? अबूबक्र से कहो कि लोगा को नमाज़ पढ़ाएँ। बाद में हफ़्सा (रज़ि.) ने आइशा (रज़ि.) से कहा कि मैंने तुमसे कुछ कभी भलाई नहीं देखी।(राजेअ : 198)

قَالَ فِي مَرَضِهِ : ((مُرُوا أَبَا بَكْرٍ يُصَلِّي بِالنَّاسِ)) قَالَتْ عَائِشَةُ : قُلْتُ إِنَّ أَبَا بَكْرٍ إِذَا قَامَ فِي مَقَامِكَ لَمْ يُسْمِعِ النَّاسَ مِنَ الْبُكَاءِ فَمُرْ عُمَرَ فَلْيُصَلِّ بِالنَّاسِ فَقَالَ: ((مُرُوا أَبَا بَكْرٍ فَلْيُصَلِّ بِالنَّاسِ)) فَقَالَتْ: عَائِشَةُ فَقُلْتُ لِحَفْصَةَ : قُولِي إِنَّ أَبَا بَكْرٍ إِذَا قَامَ فِي مَقَامِكَ لَمْ يُسْمِعِ النَّاسَ مِنَ الْبُكَاءِ، فَمُرْ عُمَرَ فَلْيُصَلِّ بِالنَّاسِ فَفَعَلَتْ حَفْصَةُ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِنَّكُنَّ لأَنْتُنَّ صَوَاحِبُ يُوسُفَ مُرُوا أَبَا بَكْرٍ فَلْيُصَلِّ لِلنَّاسِ)) فَقَالَتْ حَفْصَةُ لِعَائِشَةَ : مَا كُنْتُ لأُصِيبَ مِنْكِ خَيْرًا.

[راجع: ١٩٨]

तश्रीह : तुमने भिड़कर मुझसे एक बता कहलवाई और आँहज़रत (ﷺ) को मुझ पर गुस्सा कराया। ये हदीष इस बाब में इसलिये लाए कि इससे इख़्तिलाफ़ करने की या बार बार एक ही मुक़द्दमा मे अर्ज़ करने के झगड़ा करने की बुराई निकलती है।

7304. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने अबी ज़िब ने, कहा हमसे ज़ुह्री ने, उनसे सहल बिन सअद साएदी (रज़ि.) ने बयान किया कि उवैमिर अज्लानी आसिम बिन अदी के पास आया और कहा उस शख़्स के बारे मे आपका क्या ख़याल है जो अपनी बीवी के साथ किसी दूसरे मर्द को पाए और उसे क़त्ल कर दे, क्या आप लोग मक़्तूल के बदले में उसे क़त्ल कर देंगे? आसिम! मेरे लिये आप रसूलुल्लाह (ﷺ) से इसके बारे में पूछ दीजिए। चुनाँचे उन्होंने आँहज़रत (ﷺ) से पूछा लेकिन आपने इस तरह के सवाल को नापसंद किया और मअयूब जाना। आसिम (रज़ि.) ने वापस आकर उन्हें बताया कि आँहज़रत (ﷺ) ने इस तरह के सवाल को नापसंद किया है। उस पर उवैमिर (रज़ि.) बोले कि वल्लाह! मैं ख़ुद आँहज़रत (ﷺ) के पास जाऊँगा ख़ैर उवैमिर आपके पास आए और आसिम के लौट जाने के बाद अल्लाह तआला ने क़ुर्आन मजीद की आयत आप

٧٣٠٤- حَدَّثَنَا آدَمُ، حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي ذِئْبٍ، حَدَّثَنَا الزُّهْرِيُّ، عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ السَّاعِدِيِّ قَالَ: جَاءَ عُوَيْمِرٌ الْعَجْلاَنِيُّ إِلَى عَاصِمِ بْنِ عَدِيٍّ فَقَالَ: أَرَأَيْتَ رَجُلاً وَجَدَ مَعَ امْرَأَتِهِ رَجُلاً فَيَقْتُلُهُ أَتَقْتُلُونَهُ بِهِ؟ سَلْ لِي يَا عَاصِمُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَسَأَلَهُ فَكَرِهَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الْمَسَائِلَ وَعَابَ، فَرَجَعَ عَاصِمٌ فَأَخْبَرَهُ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كره الْمَسَائِلَ فَقَالَ عُوَيْمِرٌ: وَاللهِ لآتِيَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَجَاءَ وَقَدْ أَنْزَلَ اللهُ تَعَالَى الْقُرْآنَ خَلْفَ عَاصِمٍ فَقَالَ

لهٗ : قَدْ أَنْزَلَ اللهُ فِيكُمْ قُرْآنًا فَدَ عَابَهُما فَتَقَدَّمَا فَتَلاَعَنَا ثُمَّ قَالَ عُوَيمِرٌ كَذَبْتُ عَلَيْهَا يَارَسُولَ اللهِ إِنْ أَمْسَكْتُهَا فَفَارَقَهَا وَلَمْ يَأْمُرْهُ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِفِرَاقِهَا فَجَرَتِ السُّنَّةُ فِي الْمُتَلاَعِنَيْنِ وَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((انْظُرُوهَا فَإِنْ جَاءَتْ بِهِ أَحْمَرَ قَصِيرًا مِثْلَ وَحَرَةٍ فَلاَ أُرَاهُ إِلاَّ قَدْ كَذَبَ، وَإِنْ جَاءَتْ بِهِ أَسْحَمَ أَعْيَنَ ذَا أَلْيَتَيْنِ فَلاَ أَحْسِبُ إِلاَّ قَدْ صَدَقَ)) عَلَيْهَا فَجَاءَتْ بِهِ عَلَى الأَمْرِ الْمَكْرُوهِ.

(ﷺ) पर नाज़िल की। चुनाँचे आँहज़रत (ﷺ) ने उनसे कहा कि तुम्हारे बारे में अल्लाह तआ़ला ने क़ुर्आन नाज़िल किया है, फिर आपने दोनों (मियाँ बीवी) को बुलाया। दोनों आगे बढ़े और लिआ़न किया। फिर उ़वैमिर ने कहा कि या रसूलल्लाह! अगर मैं इसे अब भी अपने पास रखता हूँ तो इसका मत़लब ये है कि मैं झूठा हूँ चुनाँचे उसने फ़ौरी त़ौर पर अपनी बीवी को जुदा कर दिया। आँहज़रत (ﷺ) ने जुदा करने का हुक्म नहीं दिया था। फिर लिआ़न करने वालों में यही त़रीक़ा राइज हो गया। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि देखते रहो उसका बच्चा लाल लाल पस्त क़द बामहनी की त़रह पैदा हो तो मैं समझता हूँ कि वो उ़वैमिर ही का बच्चा है। उ़वैमिर ने औ़रत पर झूठा बोह्तान बाँधा और अगर साँवले रंग का बड़ी आँखों वाला बड़े बड़े कूल्हे वाला पैदा हो, जब मैं समझूँगा कि उ़वैमिर सच्चा है फिर उस औ़रत का बच्चा उस मकरूह सू़रत का या'नी जिस मर्द से वो बदनाम हुई थी, उसी सू़रत का पैदा हुआ।

बाब का तर्जुमा इससे निकलता है कि आँहज़रत (ﷺ) ने ऐसे सवालात को बुरा जाना।

٧٣٠٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، حَدَّثَنِي عُقَيْلٌ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: أَخْبَرَنِي مَالِكُ بْنُ أَوْسٍ النَّصْرِيُّ وَكَانَ مُحَمَّدُ بْنُ جُبَيْرِ بْنِ مُطْعِمٍ ذَكَرَ لِي ذِكْرًا مِنْ ذَلِكَ فَدَخَلْتُ عَلَى مَالِكٍ فَسَأَلْتُهُ فَقَالَ : انْطَلَقْتُ حَتَّى أَدْخُلَ عَلَى عُمَرَ أَتَاهُ حَاجِبُهُ يَرْفَا فَقَالَ : هَلْ لَكَ فِي عُثْمَانَ وَعَبْدِ الرَّحْمَنِ وَالزُّبَيْرِ وَسَعْدٍ يَسْتَأْذِنُونَ؟ قَالَ: نَعَمْ فَدَخَلُوا فَسَلَّمُوا وَجَلَسُوا فَقَالَ : هَلْ لَكَ فِي عَلِيٍّ وَعَبَّاسٍ فَأَذِنَ لَهُمَا؟ قَالَ الْعَبَّاسُ: يَا أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ اقْضِ بَيْنِي وَبَيْنَ الظَّالِمِ اسْتَبَّا فَقَالَ الرَّهْطُ : عُثْمَانُ وَأَصْحَابُهُ يَا أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ اقْضِ

7305. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ तनीसी ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने, उनसे अ़क़ील ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उन्हें मालिक बिन औस नज़्री ने ख़बर दी कि मुहम्मद बिन जुबैर बिन मुत्इम ने मुझसे इस सिलसिले में ज़िक्र किया था, फिर मैं मालिक के पास गया और उनसे इस हदीष़ के बारे में पूछा। उन्होंने बयान किया कि मैं रवाना हुआ और उ़मर (रज़ि.) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुआ। इतने में उनके दरबान यरफ़ाअ आए और कहा कि उ़ष्मान, अ़ब्दुर्रहमान, ज़ुबैर और सअ़द (रज़ि.) अंदर आने की इजाज़त चाहते हैं, क्या उन्हें इजाज़त दी जाए? उ़मर (रज़ि.) ने कहा कि हाँ। चुनाँचे सब लोग अंदर आ गये और सलाम किया और बैठ गये, फिर यरफ़ाअ ने आकर पूछा कि क्या अ़ली और अ़ब्बास (रज़ि.) को इजाज़त दी जाए? उन ह़ज़रात को भी अंदर बुलाया। अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा कि अमीरुल मोमिनीन! मेरे और ज़ालिम के बीच फ़ैसला कर दीजिए। आपस में दोनों ने सख़्त कलामी की। इस पर उ़ष्मान (रज़ि.) और उनके साथियों की जमाअ़त ने कहा कि अमीरुल मोमिनीन! इनके बीच फ़ैसला

بَيْنَهُمَا وَأَرِحْ أَحَدَهُمَا مِنَ الآخَرِ، فَقَالَ: اتَّئِدُوا أَنْشُدُكُمْ بِاللهِ الَّذِي بِإِذْنِهِ تَقُومُ السَّمَاءُ وَالأَرْضُ هَلْ تَعْلَمُونَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: ((لاَ نُورَثُ مَا تَرَكْنَا صَدَقَةٌ))؟ يُرِيدُ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَفْسَهُ قَالَ الرَّهْطُ : قَدْ قَالَ ذَلِكَ، فَأَقْبَلَ عُمَرُ عَلَى عَلِيٍّ وَعَبَّاسٍ فَقَالَ: أَنْشُدُكُمَا بِاللهِ هَلْ تَعْلَمَانِ أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ ذَلِكَ؟ قَالاَ نَعَمْ قَالَ عُمَرُ فَإِنِّي مُحَدِّثُكُمْ عَنْ هَذَا الأَمْرِ إِنَّ اللهَ كَانَ خَصَّ رَسُولَهُ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي هَذَا الْمَالِ بِشَيْءٍ لَمْ يُعْطِهِ أَحَدًا غَيْرَهُ، فَإِنَّ اللهَ يَقُولُ ﴿وَمَا أَفَاءَ اللهُ عَلَى رَسُولِهِ مِنْهُمْ فَمَا أَوْ جَفْتُمْ عَلَيْهِ﴾ [الحشر: ٦] الآيَةَ فَكَانَتْ هَذِهِ خَالِصَةً لِرَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ثُمَّ وَاللهِ مَا احْتَازَهَا دُونَكُمْ، وَلاَ اسْتَأْثَرَ بِهَا عَلَيْكُمْ وَقَدْ أَعْطَاكُمُوهَا وَبَثَّهَا فِيكُمْ، حَتَّى بَقِيَ مِنْهَا هَذَا الْمَالُ وَكَانَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يُنْفِقُ عَلَى أَهْلِهِ نَفَقَةَ سَنَتِهِمْ مِنْ هَذَا الْمَالِ، ثُمَّ يَأْخُذُ مَا بَقِيَ فَيَجْعَلُهُ مَجْعَلَ مَالِ اللهِ، فَعَمِلَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِذَلِكَ حَيَاتَهُ أَنْشُدُكُمْ بِاللهِ هَلْ تَعْلَمُونَ ذَلِكَ؟ فَقَالُوا: نَعَمْ. ثُمَّ قَالَ لِعَلِيٍّ وَعَبَّاسٍ أَنْشُدُكُمَا اللهَ هَلْ تَعْلَمَانِ ذَلِكَ؟ قَالاَ : نَعَمْ ثُمَّ تَوَفَّى اللهُ

कर दीजिए ताकि दोनों को आराम हासिल हो। उमर (रज़ि.) ने कहा कि सब्र करो मैं तुम्हें अल्लाह की क़सम दिलाता हूँ जिसकी इजाज़त से आसमान व ज़मीन क़ायम हैं। क्या आप लोगों को मा'लूम है कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया था कि हमारी मीराष़ नहीं तक़्सीम होती, हम जो कुछ छोड़ें वो स़दक़ा है। आँहज़रत (ﷺ) ने उससे ख़ुद अपनी ज़ात मुराद ली थी। जमाअत ने कहा कि हाँ। आँहज़रत (ﷺ) ने ये फ़र्माया था, फिर आप अली और अब्बास (रज़ि.) की त़रफ़ मुतवज्जह हुए और कहा कि मैं आप लोगों को अल्लाह की क़सम देता हूँ। क्या आप लोगों को मा'लूम है कि आँहज़रत (ﷺ) ने ये फ़र्माया था? उन्होंने भी कहा कि हाँ। उमर(रज़ि.) ने उसके बाद कहा कि फिर मैं आप लोगों से इस बारे में बातचीत करता हूँ। अल्लाह तआला ने अपने रसूल का उस माल में से एक हिस़्सा मख़्सूस़ किया था जो उसने आपके सिवा किसी को नहीं दिया। इसलिये कि अल्लाह तआला फ़र्माता है कि मा अफ़ाअल्लाहु अला रसूलिही मिन्हुम फ़मा औ जफ़्तुम (अल आयत) तो ये माल ख़ास़ आँहज़रत (ﷺ) के लिये था, फिर वल्लाह! आँहज़रत (ﷺ) ने उसे आप लोगो को नज़रअंदाज़ करके अपने लिये जमा नहीं किया और न उसे अपनी ज़ाती जायदाद बनाया। आँहज़रत (ﷺ) ने उसे आप लोगों को भी दिया और सब में तक़्सीम किया, यहाँ तक उसमें से ये माल बाक़ी रह गया तो आँहज़रत (ﷺ) उसमें से अपने घर वालों का सालाना ख़र्च देते थे, फिर बाक़ी अपने क़ब्ज़े में ले लेते थे और उसे बैतुलमाल में रखकर आम मुसलमानों के ज़रूरियात में ख़र्च करते थे। आँहज़रत (ﷺ) ने ज़िन्दगी भर इसके मुताबिक़ अमल किया। मैं आप लोगों को अल्लाह की क़सम देता हूँ क्या आपको इसका इल्म है? स़हाबा ने कहा कि हाँ फिर आपने अली और अब्बास (रज़ि.) से कहा, मैं आप दोनों हज़रात को भी अल्लाह की क़सम देता हूँ क्या आप लोगों को इसका इल्म है? उन्होंने भी कहा कि हाँ। फिर अल्लाह तआला ने अपने नबी (ﷺ) को वफ़ात दी और अबूबक्र (रज़ि.) ने आँहज़रत (ﷺ) के वली होने की हैष़ियत से उस पर क़ब्ज़ा किया और उसमें उसी त़रह अमल किया जैसा कि आँहज़रत (ﷺ) करते थे। आप दोनों हज़रात भी यहीं मौजूद थे। आपने अली (रज़ि.) और अब्बास (रज़ि.) की त़रफ़ मुतवज्जह होकर ये बात कही

और आप लोगों का ख़्याल था कि अबूबक्र (रज़ि.) इस मामले में ख़ताकार हैं और अल्लाह ख़ूब जानता है कि वो इस मामले में सच्चे और नेक और सबसे ज़्यादा हक़ की पैरवी करने वाले थे, फिर अल्लाह तआला ने अबूबक्र (रज़ि.) को भी वफ़ात दी और मैंने कहा कि मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) और अबूबक्र (रज़ि.) का वली हूँ इस तरह मैंने भी उस जायदाद को अपने क़ब्ज़े में दो साल तक रखा और उसमें उसी के मुताबिक़ अमल करता रहा जैसा कि आँहज़रत (ﷺ) और अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) ने किया था, फिर आप दोनों हज़रात मेरे पास आए और आप लोगों का मामला एक ही था। कोई इख़्तिलाफ़ नहीं था। आप (अब्बास रज़ि.) अपने भाई के लड़के की तरफ़ से अपनी मीराष़ लेने आए और ये (अली रज़ि.) अपनी बीवी की तरफ़ से उनके वालिद की मीराष़ का मुतालबा करने आए। मैंने तुमसे कहा कि ये जायदाद तक़्सीम नहीं हो सकती लेकिन तुम लोग चाहो तो मैं एहतिमाम के तौर पर आपको ये जायदाद दे दूँ लेकिन शर्त ये है कि आप लोगों पर अल्लाह का अहद और उसकी मीष़ाक़ है कि इसको उसी तरह ख़र्च करोगे जिस तरह रसूलुल्लाह (ﷺ) ने किया था और जिस तरह अबूबक्र (रज़ि.) ने किया था और जिस तरह मैंने अपने ज़मान-ए-विलायत में किया अगर ये मंज़ूर न हो तो फिर मुझसे इस मामले में बात न करें। आप दोनों हज़रात ने कहा कि इस शर्त के साथ हमारे हवाले जायदाद कर दें। चुनाँचे मैंने इस शर्त के साथ आपके हवाले जायदाद कर दी थी। मैं आप लोगों को अल्लाह की क़सम देता हूँ। क्या मैंने उन लोगों को इस शर्त के साथ जायदाद दी थी? जमाअत ने कहा कि हाँ, फिर आप अली और अब्बास (रज़ि.) की तरफ़ मुतवज्जह हुए और कहा मैं आप लोगों को अल्लाह की क़सम देता हूँ। क्या मैंने जायदाद आप लोगों को इस शर्त के साथ हवाले की थी? उन्होंने भी कहा हाँ। फिर आपने कहा, क्या आप लोग मुझसे इसके सिवा और फ़ैसला चाहते हैं। पस उस ज़ात की क़सम! जिसके हुक्म से आसमान और ज़मीन क़ायम हैं, उसमें, मैं इसके सिवा और कोई फ़ैसला नहीं कर सकता यहाँ तक कि क़यामत आ जाए। अगर आप लोग इसका इंतिज़ाम नहीं कर सकते तो फिर मेरे हवाले कर दो मैं इसका भी इंतिज़ाम कर लूँगा। (राजेअ : 2904)

نَبِيَّهُ ﷺ فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ: أَنَا وَلِيُّ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَبَضَهَا أَبُو بَكْرٍ فَعَمِلَ فِيهَا بِمَا عَمِلَ فِيهَا رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَأَنْتُمَا حِينَئِذٍ وَأَقْبَلَ عَلَى عَلِيٍّ وَعَبَّاسٍ تَزْعُمَانِ أَنَّ أَبَا بَكْرٍ فِيهَا كَذَا وَاللهُ يَعْلَمُ أَنَّهُ فِيهَا صَادِقٌ بَارٌّ رَاشِدٌ تَابِعٌ لِلْحَقِّ ثُمَّ تَوَفَّى اللهُ أَبَا بَكْرٍ فَقُلْتُ: أَنَا وَلِيُّ رَسُولِ اللهِ ﷺ وَأَبِي بَكْرٍ فَقَبَضْتُهَا سَنَتَيْنِ أَعْمَلُ فِيهَا بِمَا عَمِلَ بِهِ رَسُولُ اللهِ ﷺ وَأَبُو بَكْرٍ، ثُمَّ جِئْتُمَانِي وَكَلِمَتُكُمَا عَلَى كَلِمَةٍ وَاحِدَةٍ وَأَمْرُكُمَا جَمِيعٌ جِئْتَنِي تَسْأَلُنِي نَصِيبَكَ مِنِ ابْنِ أَخِيكَ وَأَتَانِي هَذَا يَسْأَلُنِي نَصِيبَ امْرَأَتِهِ مِنْ أَبِيهَا فَقُلْتُ: إِنْ شِئْتُمَا دَفَعْتُهَا إِلَيْكُمَا عَلَى أَنَّ عَلَيْكُمَا عَهْدَ اللهِ وَمِيثَاقَهُ، تَعْمَلاَنِ فِيهَا بِمَا عَمِلَ بِهِ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَبِمَا عَمِلَ فِيهَا أَبُو بَكْرٍ وَبِمَا عَمِلْتُ فِيهَا مُنْذُ وَلِيتُهَا وَإِلاَّ فَلاَ تُكَلِّمَانِي فِيهَا فَقُلْتُمَا: ادْفَعْهَا إِلَيْنَا بِذَلِكَ، فَدَفَعْتُهَا إِلَيْكُمَا بِذَلِكَ أَنْشُدُكُمُ اللهَ هَلْ دَفَعْتُهَا إِلَيْهِمَا بِذَلِكَ؟ قَالَ الرَّهْطُ : نَعَمْ فَأَقْبَلَ عَلَى عَلِيٍّ وَعَبَّاسٍ فَقَالَ: أَنْشُدُكُمَا بِاللهِ هَلْ دَفَعْتُهَا إِلَيْكُمَا بِذَلِكَ؟ قَالاَ: نَعَمْ قَالَ: أَفَتَلْتَمِسَانِ مِنِّي قَضَاءً غَيْرَ ذَلِكَ فَوَالَّذِي بِإِذْنِهِ تَقُومُ السَّمَاءُ وَالأَرْضُ لاَ أَقْضِي فِيهَا قَضَاءً غَيْرَ ذَلِكَ حَتَّى تَقُومَ السَّاعَةُ فَإِنْ عَجَزْتُمَا عَنْهَا فَادْفَعَاهَا إِلَيَّ

فَأَنَا أَكْفِيكُمَاهَا.

[راجع: ٢٩٠٤]

बाब का तर्जुमा की मुताबक़त इस तरह है कि हज़रत उ़ष्मान (रज़ि.) और उनके साथियो ने अ़ली और अ़ब्बास (रज़ि.) के झगड़े और इख़्तिलाफ़ को बुरा समझा। जब तो हज़रत उ़मर (रज़ि.) से कहा, इन दोनों का फ़ैसला करके इनको आराम दीजिए।

बाब 6 : जो शख़्स बिदअ़ती को ठिकाना दे, उसको अपने पास ठहराए

٦- باب إِثْمِ مَنْ آوَى مُحْدِثًا رَوَاهُ عَلِيٌّ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ.

उसका बयान इस बाब में हज़रत अ़ली (रज़ि.) ने आँहज़रत (ﷺ) से रिवायत की है।

7306. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल वाहिद ने बयान किया, कहा हमसे आ़सिम ने बयान किया, कहा कि मैंने अनस (रज़ि.) से पूछा क्या रसूलल्लाह (ﷺ) ने मदीना मुनव्वरह को हुर्मत वाला शहर क़रार दिया है? फ़र्माया कि हाँ फ़लाँ जगह (ष़ौर) तक। इस इलाक़े का पेड़ नहीं काटा जाएगा जिसने इस हुदूद में कोई नई बात पैदा की, उस पर अल्लाह की, फ़रिश्तों की और तमाम इंसानों की ला'नत है। आ़सिम ने बयान किया कि फिर मुझे मूसा बिन अनस ने ख़बर दी कि अनस (रज़ि.) ने ये भी बयान किया था कि, या किसी ने दीन में बिदअ़त पैदा करने वाले को पनाह दी। (राजेअ़ : 1867)

٧٣٠٦- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا عبد الوَاحِدِ، حَدَّثَنَا عَاصِمٌ قَالَ: قُلْتُ لأَنَسٍ : أَحَرَّمَ رَسُـولُ اللهِ ﷺ الْمَدِينَةَ؟ قَالَ: نَعَمْ مَا بَيْنَ كَذَا إِلَى كَذَا لاَ يُقْطَعُ شَجَرُهَا، مَنْ أَحْدَثَ فِيهَا حَدَثًا فَعَلَيْهِ لَعْنَةُ اللهِ وَالْمَلاَئِكَةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِينَ. قَالَ عَاصِمٌ: فَأَخْبَرَنِي مُوسَى بْنُ أَنَسٍ أَنَّهُ قَالَ : أَوْ آوَى مُحْدِثًا.

[راجع: ١٨٦٧]

तश्रीह : मआ़ज़ल्लाह बिदअ़त से आँहज़रत (ﷺ) को कितनी नफ़रत थी कि फ़र्माया जो कोई बिदअ़ती को अपने पास उतारे जगह दे, उस पर भी ला'नत। मुसलमानों! अपने पैग़म्बर साहब के फ़र्मान पर ग़ौर करो बिदअ़त से और बिदअ़तियों की सुह़बत से बचते रहो और हर वक़्त सुन्नते नबवी और सुन्नत पर चलने वालों के आ़शिक़ रहो। अगर किसी काम के बिदअ़ते ह़सना या सय्यिआ होने में इख़्तिलाफ़ हो जैसे मज्लिसे मीलाद या क़याम वग़ैरह तो इससे भी बचना ही अफ़ज़ल होगा, इसलिये कि इसका करना कुछ फ़र्ज़ नहीं है और न करने में एह़तियात़ है। मुसलमानों! तुम जो बिदअ़त की त़रफ़ जाते हो ये तुम्हारी नादानी है अगर आख़िरत का ष़वाब चाहते हो तो आँहज़रत (ﷺ) की एक अदना सुन्नत पर अ़मल कर लो जैसे फ़ज्र की सुन्नत के बाद ज़रा सा लेट जाना इसमें हज़ार मौलूद से ज़्यादा तुमको ष़वाब मिलेगा।

बाब 7 : दीन के मसाइल में राय पर अ़म्ल करने की मज़म्मत, इसी त़रह़ बेज़रूरत क़यास करने की बुराई

٧- باب مَا يُذْكَرُ مِنْ ذَمِّ الرَّأْيِ وَتَكَلُّفِ الْقِيَاسِ

﴿وَلاَ تَقْفُ﴾ ﴿مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ﴾

[الأسراء: ٣٦].

जैसा कि इर्शादे बारी है सूरह बनी इस्राईल में वला तक़्फु ला तक़ुल मा लैस लक बिही इल्म या'नी न कहो वो बात जिसका तुमको इल्म न हो।

तश्रीह : या तकल्लुफ़ के साथ क़यास करने की जैसे ह़नफ़िया ने इस्तिह़सान निकाला है या'नी क़यासे जली के ख़िलाफ़ एक

बारीक इल्लत को लेना हमारी शरअ़ में उन बातों को किसी सहाबी ने पसंद नहीं किया बल्कि हमेशा किताब व सुन्नत पर अ़मल करते रहे जिस मसले में किताब व सुन्नत का हुक्म न मिला इसमें अपनी राय को दख़ल दिया वो भी सीधे साधे तौर से और पेचदार वजहों से हमेशा परहेज़ किया। बाब का तर्जुमा में राय की मज़म्मत से वही राय मुराद है जो नस़ होने के बावजूद राय को तर्जीह दी जाए।

٧٣٠٧- حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ تَلِيدٍ، حَدَّثَنِي ابْنُ وَهْبٍ، حَدَّثَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ شُرَيْحٍ وَغَيْرُهُ عَنْ أَبِي الأَسْوَدِ، عَنْ عُرْوَةَ قَالَ: حَجَّ عَلَيْنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَمْرٍو فَسَمِعْتُهُ يَقُولُ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((إِنَّ اللَّهَ لاَ يَنْزِعُ الْعِلْمَ بَعْدَ أَنْ أَعْطَاهُمُوهُ انْتِزَاعًا، وَلَكِنْ يَنْتَزِعُهُ مِنْهُمْ مَعَ قَبْضِ الْعُلَمَاءِ بِعِلْمِهِمْ، فَيَبْقَى نَاسٌ جُهَّالٌ يُسْتَفْتَوْنَ فَيُفْتُونَ بِرَأْيِهِمْ فَيُضِلُّونَ وَيَضِلُّونَ)) فَحَدَّثْتُ عَائِشَةَ زَوْجَ النَّبِيِّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ثُمَّ إِنَّ عَبْدَ اللَّهِ بْنَ عَمْرٍو حَجَّ بَعْدُ فَقَالَتْ: يَا ابْنَ أُخْتِي انْطَلِقْ إِلَى عَبْدِ اللَّهِ فَاسْتَثْبِتْ لِي مِنْهُ الَّذِي حَدَّثْتَنِي عَنْهُ، فَجِئْتُهُ فَسَأَلْتُهُ فَحَدَّثَنِي بِهِ كَنَحْوِ مَا حَدَّثَنِي فَأَتَيْتُ عَائِشَةَ فَأَخْبَرْتُهَا، فَعَجِبَتْ فَقَالَتْ: وَاللَّهِ لَقَدْ حَفِظَ عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَمْرٍو.

[راجع: ١٠٠]

7307. हमसे सईद बिन तलीद ने बयान किया, कहा मुझसे अ़ब्दुल्लाह बिन वहब ने, कहा मुझसे अ़ब्दुर्रहमान बिन शुरैह़ और उनके अ़लावा इब्ने लहया ने बयान किया, उनसे अबुल अस्वद ने और उनसे उ़र्वा ने बयान किया कि अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स़ (रज़ि.) ने हमें साथ लेकर ह़ज्ज किया तो मैंने उन्हें ये कहते सुना कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना, आपने फ़र्माया कि अल्लाह तआ़ला इल्म को, उसके बाद कि तुम्हें दिया है एकदम से नहीं उठा लेगा बल्कि उसे इस तरह ख़त्म करेगा कि उ़लमा को उनके इल्म के साथ उठा लेगा फिर कुछ जाहिल लोग बाक़ी रह जाएँगे, उनसे फ़त्वा पूछा जाएगा और वो फ़त्वा अपनी राय के मुताबिक़ देंगे। पस वो लोगों को गुमराह करेंगे और वो ख़ुद भी गुमराह होंगे। फिर मैंने ये ह़दीष़ आँह़ज़रत (ﷺ) की ज़ोजा मुतह्हरा आ़इशा (रज़ि.) से बयान की। उनके बाद अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने दोबारा ह़ज्ज किया तो उम्मुल मोमिनीन ने मुझसे कहा कि भांजे अ़ब्दुल्लाह के पास जाओ और मेरे लिये इस ह़दीष़ को सुनकर ख़ूब मज़बूत कर लो जो ह़दीष़ तुमने मुझसे उनके वास्ते से बयान की थी। चुनाँचे मैं उनके पास आया और मैंने उनसे पूछा तो उन्होंने मुझसे वो ह़दीष़ बयान की, इसी तरह जैसा कि वो पहले मुझसे बयान कर चुके थे, फिर मैं आ़इशा (रज़ि.) के पास आया और उन्हें उसकी ख़बर दी तो उन्हें तअ़ज्जुब हुआ और बोलीं कि वल्लाह! अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र ने ख़ूब याद रखा। (राजेअ़ : 100)

कि इतनी मुद्दत के बाद भी ह़दीष़ में एक लफ़्ज़ का भी फ़र्क़ नहीं किया।

٧٣٠٨- حَدَّثَنَا عَبْدَانُ، أَخْبَرَنَا أَبُو حَمْزَةَ سَمِعْتُ الأَعْمَشَ قَالَ: سَأَلْتُ أَبَا وَائِلٍ هَلْ شَهِدْتَ صِفِّينَ؟ قَالَ: نَعَمْ. فَسَمِعْتُ سَهْلَ بْنَ حُنَيْفٍ يَقُولُ ح. وحَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا أَبُو

7308. हमसे अ़ब्दान ने बयान किया, कहा हमको अबू ह़म्ज़ा ने ख़बर दी, कहा मैंने आ'मश से सुना, कहा कि मैंने अबू वाइल से पूछा तुम स़िफ़्फ़ीन की लड़ाई में शरीक थे? कहा कि हाँ, फिर मैंने सहल बिन ह़नीफ़ को कहते सुना (दूसरी सनद) इमाम बुख़ारी (रह.) ने कहा और हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अबू अ़वाना ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे अबू वाइल ने बयान किया कि सहल

عَوَانَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي وَائِلٍ قَالَ: قَالَ سَهْلُ بْنُ حُنَيْفٍ يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّهِمُوا رَأْيَكُمْ عَلَى دِينِكُمْ، لَقَدْ رَأَيْتُنِي يَوْمَ أَبِي جَنْدَلٍ، وَلَوْ أَسْتَطِيعُ أَنْ أَرُدَّ أَمْرَ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَرَدَدْتُهُ، وَمَا وَضَعْنَا سُيُوفَنَا عَلَى عَوَاتِقِنَا إِلَى أَمْرٍ يُفْظِعُنَا إِلاَّ أَسْهَلْنَ بِنَا إِلَى أَمْرٍ نَعْرِفُهُ، غَيْرَ هَذَا الأَمْرِ قَالَ: وَقَالَ أَبُو وَائِلٍ شَهِدْتُ صِفِّينَ وَبِئْسَتْ صِفِّينَ.

[راجع: ٣١٨١]

बिन ह़नीफ़ (रज़ि.) ने (जंगे स़िफ़्फ़ीन के मौक़े पर) कहा कि लोगों! अपने दीन के मुक़ाबले मे अपनी राय को बेह़क़ीक़त समझो। मैंने अपने आपको अबू जन्दल (रज़ि.) के वाक़िये के दिन (सुलह हुदैबिया के मौक़े पर) देखा कि अगर मेरे अंदर रसूलुल्लाह (ﷺ) के हुक्म से हटने की त़ाक़त होती तो मैं उस दिन आपसे इंह़िराफ़ करता (और कुफ़्फ़ारे क़ुरैश के साथ उन शराइत़ को क़ुबूल न करता) और हमने जब किसी मुहिम पर अपनी तलवारें काँधों पर रखीं (लड़ाई शुरू की) तो उन तलवारों की बदौलत हमको एक आसानी मिल गई जिसे हम पहचानते थे मगर इस मुहिम में (या'नी जंगे स़िफ़्फ़ीन में हम मुश्किल में गिरफ़्तार हैं दोनों त़रफ़ वाले अपने अपने दलाइल पेश करते हैं) अबू आ'मश ने कहा कि अबू वाइल ने बताया कि मैं स़िफ़्फ़ीन में मौजूद था और स़िफ़्फ़ीन की लड़ाई भी क्या बुरी लड़ाई थी जिसमें मुसलमान आपस में कट मरे। (राजेअ : 3181)

तश्रीह : कुछ नुस्ख़ों में यहाँ इतनी इ़बारत ज़्यादा है, **क़ाल अबू अ़ब्दुल्लाहि इत्तहमू रायकुम यक़ूलु मालम यकुन फ़ीहि किताबुन व ला सुन्नतुन व ला यम्बी लहू अंय्युफ़्तिय** इमाम बुख़ारी (रह़.) ने कहा **इत्तहमू रायकुम** जो सहल की कलाम में है इसका ये मत़लब है कि हर मसले में जब तक किताब और सुन्नत से कोई दलील न हो तो अपनी राय को स़ह़ीह़ न समझो और राय पर फ़त्वा न दो बल्कि किताबो सुन्नत में ग़ौर करके उसमें से उसका हुक्म निकालो। इब्ने अ़ब्दुल बर्र ने कहा राय मज़्मूम से वही राय मुराद है कि किताबो सुन्नत को छोड़कर आदमी क़यास पर अ़मल करे।

٨- باب مَا كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يُسْأَلُ مِمَّا لَمْ يُنْزَلْ عَلَيْهِ الْوَحْيُ

فَيَقُولُ : ((لاَ أَدْرِي)) أَوْ لَمْ يُجِبْ حَتَّى يُنْزَلَ عَلَيْهِ الْوَحْيُ وَلَمْ يَقُلْ بِرَأْيٍ وَلاَ بِقِيَاسٍ لِقَوْلِهِ تَعَالَى: ﴿بِمَا أَرَاكَ اللهُ﴾ [النساء : ١٠٥]

وَقَالَ ابْنُ مَسْعُودٍ : سُئِلَ النَّبِيُّ ﷺ عَنِ الرُّوحِ فَسَكَتَ حَتَّى نَزَلَتِ الآيَةُ.

बाब 8 : आँह़ज़रत (ﷺ) ने कोई मसला राय या क़यास से नहीं बतलाया

बल्कि जब आपसे कोई ऐसी बात पूछी जाती जिस बाब में वह्य न उतरी होती तो आप फ़र्माते मैं नहीं जानता या वह्य उतरने तक ख़ामोश रहते कुछ जवाब न देते क्योंकि अल्लाह पाक ने सूरह निसा में फ़र्माया ताकि अल्लाह जैसा तुझको बतलाये उसके मुवाफ़िक़ तू हुक्म दे। (सूरह निसा : 105)

और अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने कहा आँह़ज़रत (ﷺ) से पूछा गया रूह़ क्या चीज़ है? आप ख़ामोश हो रहे यहाँ तक कि ये आयत उतरी।

٧٣٠٩- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ: سَمِعْتُ ابْنَ الْمُنْكَدِرِ يَقُولُ: سَمِعْتُ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ يَقُولُ: مَرِضْتُ

7309. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, कहा मैं ने मुहम्मद बिन मुंकदिर से सुना, बयान किया कि मैंने जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह

(रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैं बीमार पड़ा तो रसूलुल्लाह (ﷺ) और अबूबक्र (रज़ि.) अयादत के लिये तशरीफ़ लाए। ये दोनों बुज़ुर्ग पैदल चलकर आए थे, फिर आँहज़रत (ﷺ) पहुँचे तो मुझ पर बेहोशी तारी थी। आँहज़रत (ﷺ) ने वुज़ू किया और वुज़ू का पानी मुझ छिड़का, उससे मुझे अफ़ाक़ा हुआ तो मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह! और कुछ औक़ात सुफ़यान ने ये अल्फ़ाज़ बयान किये कि मैंने कहा। अय रसूलुल्लाह! मैं अपने माल के बारे में किस तरह फ़ैसला करूँ, मैं अपने माल का क्या करूँ? बयान किया कि आँहज़रत (ﷺ) ने कोई जवाब नहीं दिया। यहाँ तक कि मीराष़ की आयत नाज़िल हुई। (राजेअ : 194)

فَجَاءَنِي رَسُولُ اللهِ ﷺ يَعُودُنِي وَأَبُو بَكْرٍ وَهُمَا مَاشِيَانِ، فَأَتَانِي وَقَدْ أُغْمِيَ عَلَيَّ، فَتَوَضَّأَ رَسُولُ اللهِ ﷺ ثُمَّ صَبَّ وَضُوءَهُ عَلَيَّ فَأَفَقْتُ فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ وَرُبَّمَا قَالَ: سُفْيَانُ فَقُلْتُ: أَيْ رَسُولَ اللهِ كَيْفَ أَقْضِي فِي مَالِي كَيْفَ أَصْنَعُ فِي مَالِي؟ قَالَ: فَمَا أَجَابَنِي بِشَيْءٍ حَتَّى نَزَلَتْ آيَةُ الْمِيرَاثِ. [راجع: ١٩٤]

तश्रीह : ह़दीष़ से आपका सुकूत निकला, वह्य उतरने तक लेकिन ये फ़र्माना कि मैं नहीं जानता इब्ने ह़िब्बान की रिवायत में है, एक शख़्स ने आप (ﷺ) से पूछा कौनसी जगह अफ़ज़ल है? आपने फ़र्माया नहीं जानता। दारे क़ुत्नी और ह़ाकिम की रिवायत में है आपने फ़र्माया मैं नहीं जानता ह़ुदूदे गुनाह करने वालों का कफ़्फ़ारा है या नहीं। मिह्लब ने कहा आँह़ज़रत (ﷺ) ने कुछ मुश्किल मुक़ामात में सुकूत फ़र्माया लेकिन आप ही ने अपनी उम्मत को क़यास की ता'लीम फ़र्माई। एक औरत से फ़र्माया अगर तेरे बाप पर क़र्ज़ होता तो तू अदा करती या नहीं? तो अल्लाह का ह़क़ ज़रूर अदा करना होगा। ये ऐने क़यास है और इमाम बुख़ारी (रह़.) का मतलब ये नहीं है कि बिलकुल क़यास न करना चाहिये बल्कि उनका मतलब ये है कि ऐसा क़यास जो उसूले शरइया के ख़िलाफ़ हो या किसी दलीले शरई पर मबनी न हो सिर्फ़ एक ख़्याली बात हो न करना चाहिये और ये मसला तो उलमा का इज्मा है कि नस़ मौजूद होते हुए क़यास जाइज़ नहीं और जो शख़्स ह़दीष़ का ख़िलाफ़ करता है ह़ालाँकि वो दूसरी ह़दीष़ से उसका मुआरिज़ा न करता हो न उसके नस्ख़ का दा'वा करे न उसकी सनद में क़दह़ करे तो उसकी अदालत जाती रहेगी वो लोगों का इमाम कहाँ हो सकता है और इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह़.) ने फ़र्माया जो आँह़ज़रत (ﷺ) से ष़ाबित हो वो तो सर और आँखों पर है और स़ह़ाबा के मुख़्तलिफ़ क़ौलों में से हम कोई क़ौल चुन लेंगे। मैं कहता हूँ बस ह़नफ़िया को अपने इमाम के क़ौल पर तो कम अज़्कम चलना चाहिये।

बाब 9 : रसूलुल्लाह (ﷺ) का अपनी उम्मत के मर्दों और औरतों को वही बातें सिखाना जो अल्लाह ने आपको सिखाई थीं बाक़ी राय और तम्षील आपने नहीं सिखाई

٩- باب تَعْلِيمِ النَّبِيِّ ﷺ أُمَّتَهُ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَاءِ مِمَّا عَلَّمَهُ اللهُ لَيْسَ بِرَأْيٍ وَلاَ تَمْثِيلٍ

तम्षील या'नी एक चीज़ का हुक्म दूसरी चीज़ के मिष्ल क़रार देना बवजह इल्लत जामेआ के जिसको क़यास कहते हैं।

7310. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे अबू अवाना ने बयान किया, उनसे अब्दुर्रहमान बिन अस्बहानी ने, उनसे अबू स़ालेह ज़क्वान ने और उनसे अबू सईद (रज़ि.) ने कि एक ख़ातून नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुईं और कहा या रसूलल्लाह! आपकी तमाम अह़ादीष़ मर्द ले गये, हमारे लिये भी आप कोई दिन अपनी तरफ़ से मख़्सूस कर दें जिसमें हम आपके पास आएँ और आप हमें वो ता'लीमात दें जो

٧٣١٠- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ الأَصْبَهَانِيِّ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ ذَكْوَانَ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ جَاءَتِ امْرَأَةٌ إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ: فَقَالَتْ يَا رَسُولَ اللهِ ذَهَبَ الرِّجَالُ بِحَدِيثِكَ فَاجْعَلْ لَنَا مِنْ نَفْسِكَ يَوْمًا نَأْتِيكَ فِيهِ

अल्लाह ने आपको सिखाई है। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि फिर फ़लाँ फ़लाँ दिन फ़लाँ फ़लाँ जगह जमा हो जाओ। चुनाँचे औरतें जमा हुईं और आँहज़रत (ﷺ) उनके पास आये और उन्हें उसकी ता'लीम दी जो अल्लाह ने आपको सिखाया था। फिर आपने फ़र्माया, तुममें से जो औरत भी अपनी ज़िंदगी में अपने तीन बच्चे आगे भेज देगी (या'नी उनकी वफ़ात हो जाएगी) तो वो उसके लिये दोज़ख़ से रुकावट बन जाएँगे। इस पर उनमें से एक ख़ातून ने कहा, या रसूलल्लाह! दो? उन्होंने इस कलिमे को दो मर्तबा दोह्राया, फिर आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, हाँ दो, दो, दो भी यही दर्जा रखते हैं। (राजेअ : 101)

تُعَلِّمُنَا مِمَّا عَلَّمَكَ اللهُ فَقَالَ : اجْتَمِعْنَ فِي يَوْمِ كَذَا وَكَذَا فِي مَكَانِ كَذَا وَكَذَا فَاجْتَمَعْنَ فَأَتَاهُنَّ رَسُولُ اللهِ ﷺ فَعَلَّمَهُنَّ مِمَّا عَلَّمَهُ اللهُ، ثُمَّ قَالَ: ((مَا مِنْكُنَّ امْرَأَةٌ تُقَدِّمُ بَيْنَ يَدَيْهَا مِنْ وَلَدِهَا ثَلاَثَةً، إِلاَّ كَانَ لَهَا حِجَابًا مِنَ النَّارِ)) فَقَالَتْ: امْرَأَةٌ مِنْهُنَّ يَا رَسُولَ اللهِ وَاثْنَيْنِ قَالَ : فَأَعَادَتْهَا مَرَّتَيْنِ ثُمَّ قَالَ: ((وَاثْنَيْنِ وَاثْنَيْنِ وَاثْنَيْنِ)).
[راجع: ١٠١]

बाब का मत्लब यहीं से निकलता है। किरमानी ने कहा इस क़ौल से कि वो उसके लिये दोज़ख़ से आड़ होंगे क्योंकि ये अम्र बग़ैर अल्लाह के बतलाए क़यास और राय से मा'लूम नहीं हो सकता।

बाब 10 : नबी करीम (ﷺ) का इर्शाद, मेरी उम्मत की एक जमाअत हक़ पर ग़ालिब रहेगी

और जंग करती रहेगी और इमाम बुख़ारी (रह.) ने कहा कि उस गिरोह से दीन के आलिमों का गिरोह मुराद है।

١٠- باب قَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ: ((لاَ تَزَالُ طَائِفَةٌ مِنْ أُمَّتِي ظَاهِرِينَ عَلَى الْحَقِّ، يُقَاتِلُونَ وَهُمْ أَهْلُ الْعِلْمِ)).

अली बिन अब्दुल्लाह मदीनी उस्ताद इमाम बुख़ारी (रह.) ने कहा कि इससे जमाअत अहले हदीष़ मुराद है।

7311. हमसे उबैदुल्लाह बिन मूसा ने बयान किया, उनसे इस्माईल ने, उनसे क़ैस ने, उनसे मुग़ीरह बिन शुअबा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया मेरी उम्मत का एक गिरोह हमेशा ग़ालिब रहेगा (उसमें इल्मी व दीनी ग़ल्बा भी दाख़िल है) यहाँ तक कि क़यामत आ जाएगी और वो ग़ालिब ही रहेंगे। (राजेअ : 3640)

٧٣١١- حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ مُوسَى، عَنْ إِسْمَاعِيلَ، عَنْ قَيْسٍ، عَنِ الْمُغِيرَةِ بْنِ شُعْبَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((لاَ يَزَالُ طَائِفَةٌ مِنْ أُمَّتِي ظَاهِرِينَ حَتَّى يَأْتِيَهُمْ أَمْرُ اللهِ وَهُمْ ظَاهِرُونَ)). [راجع: ٣٦٤٠]

तश्रीह : ये दूसरी हदीष़ के ख़िलाफ़ नहीं है जिसमें ये है कि क़यामत बदतरीन ख़ल्कुल्लाह पर क़ायम होगी क्योंकि ये बदतरीन लोग एक मुक़ाम में होंगे और वो गिरोह दूसरे मुक़ाम में होगा या इस हदीष़ में अम्रुल्लाह से ये मुराद है यहाँ तक कि क़यामत क़रीब आन पहुँचे तो क़यामत से कुछ पहले ये फ़िर्क़ा वाले मर जाएँगे और निरे बुरे लोग रह जाएँगे दूसरी हदीष़ में है कि क़यामत के क़रीब एक हवा चलेगी जिससे हर मोमिन की रूह क़ब्ज़ हो जाएगी।

7312. हमसेइस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल्लाह बिन वहब ने बयान किया, उनसे यूनुस ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उन्हें हुमैद ने ख़बर दी, कहा कि मैंने मुआविया बिन अबी सुफ़यान (रज़ि.) से सुना, वो ख़ुत्बा दे

٧٣١٢- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ، عَنْ يُونُسَ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، أَخْبَرَنِي حُمَيْدٌ قَالَ: سَمِعْتُ مُعَاوِيَةَ بْنَ

أَبِي سُفْيَانَ يَخْطُبُ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((مَنْ يُرِدِ اللهُ بِهِ خَيْرًا يُفَقِّهْهُ فِي الدِّينِ، وَإِنَّمَا أَنَا قَاسِمٌ وَيُعْطِي اللهُ وَلَنْ يَزَالَ أَمْرُ هَذِهِ الأُمَّةِ مُسْتَقِيمًا حَتَّى تَقُومَ السَّاعَةُ، أَوْ حَتَّى يَأْتِيَ أَمْرُ اللهِ)). [راجع: ٧١]

रहे थे, उन्होंने कहा कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना है। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अल्लाह जिसके साथ ख़ैर का इरादा करता है उसे दीन की समझ फ़र्मा देता है और मैं तो सिर्फ़ तक़्सीम करने वाला हूँ और देता अल्लाह है और इस उम्मत का मामला हमेशा दुरुस्त रहेगा, यहाँ तक कि क़यामत क़ायम हो जाए या (आपने यूँ फ़र्माया कि) यहाँ तक कि अल्लाह का हुक्म आ पहुँचे। (राजेअ: 71)

तश्रीह: मा'लूम हुआ कि अल्लाह का दीन इस्लाम क़यामत तक क़ायम रहेगा मुआनिदीने इस्लाम लाख कोशिश करें मगर,

फूँकों से ये चराग़ बुझाया न जाएगा

١١- باب قَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿أَوْ يَلْبِسَكُمْ شِيَعًا﴾ [الأنعام : ٦٥]

बाब 11 : अल्लाह तआला का सूरह अन्आम में यूँ फ़र्माना कि या वो तुम्हारे कई फ़िर्क़े कर दे

٧٣١٣- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ عَمْرٌو: سَمِعْتُ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا يَقُولُ: لَمَّا نَزَلَ عَلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ ﴿قُلْ هُوَ الْقَادِرُ عَلَى أَنْ يَبْعَثَ عَلَيْكُمْ عَذَابًا مِنْ فَوْقِكُمْ﴾ [الانعام : ٦٥] قال أَعُوذُ بِوَجْهِكَ ﴿أَوْ مِنْ تَحْتِ أَرْجُلِكُمْ﴾ [الانعام : ٦٥] قَالَ أَعُوذُ بِوَجْهِكَ فَلَمَّا نَزَلَتْ: ﴿أَوْ يَلْبِسَكُمْ شِيَعًا وَيُذِيقَ بَعْضَكُمْ بَأْسَ بَعْضٍ﴾ قَالَ هَاتَانِ أَهْوَنُ أَوْ أَيْسَرُ. [راجع: ٤٦٢٨]

7313. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे अम्र बिन दीनार ने बयान किया कि मैंने जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि जब रसूलुल्लाह (ﷺ) पर ये आयत नाज़िल हुई कि, कहो कि वो इस पर क़ादिर है कि तुम पर तुम्हारे ऊपर से अज़ाब भेजे। तो आँहज़रत (ﷺ) ने कहा कि मैं तेरे बाअज़्मत व बुज़ुर्ग मुँह की पनाह मांगता हूँ, या तुम्हारे पैरों के नीचे से (अज़ाब भेजे) तो उस पर फिर आँहज़रत (ﷺ) ने कहा कि मैं तेरे मुबारक मुँह की पनाह मांगता हूँ, फिर जब ये आयत नाज़िल हुई कि, या तुम्हें फ़िर्क़ों में बांट दे और तुममें से कुछ को कुछ का डर चखाए, तो आपने फ़र्माया कि ये दोनों आसान व सहल हैं। (राजेअ: 4628)

ऊपर से पत्थरों या बारिश का अज़ाब मुराद है। नीचे से ज़लज़ला और ज़मीन में धंस जाना मुराद है।

١٢- باب مَنْ شَبَّهَ أَصْلاً مَعْلُومًا بِأَصْلٍ مُبَيَّنٍ، قَدْ بَيَّنَ اللهُ حُكْمَهُمَا لِيَفْهَمَ السَّائِلُ.

बाब 12 : एक अम्रे मा'लूम को दूसरे अम्रे वाज़ेह से तश्बीह देना जिसका हुक्म अल्लाह ने बयान कर दिया है ताकि पूछने वाला समझ जाए

तश्रीह: इसी को क़यास कहते हैं। बाब की दोनों अहादीष से क़यास का जवाज़ निकलता है लेकिन इब्ने मसऊद (रज़ि.) ने सहाबा में से और आमिर शअबी और इब्ने सीरीन ने फ़ुक़हा में से क़यास का इंकार किया है। बाक़ी तमाम फ़ुक़हा ने क़यास के जवाज़ पर इत्तिफ़ाक़ किया है। जब इसकी ज़रूरत हो और जुम्हूरे सहाबा और ताबेईन से क़यास मन्क़ूल

है और ऊपर जो इमाम बुख़ारी (रह़.) ने राय और क़यास की मज़म्मत बयान की है, इससे मुराद वही क़यास और राय है जो फ़ासिद हो लेकिन क़यास स़ह़ीह़ शराइत़ के साथ वो भी जब ह़दीष़ और क़ुर्आन में वो मसला स़राह़त के साथ न मिले। अकष़र उ़लमा ने जाइज़ रखा है और बग़ैर उसके काम चलना दुश्वार है।

٧٣١٤- حدَّثَنَا أصبغُ بْنُ الْفَرَجِ، حَدَّثَنِي ابْنُ وَهْبٍ، عَنْ يُونُسَ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ أَعْرَابِيًّا أَتَى رَسُولَ اللهِ ﷺ فَقَالَ: إِنَّ امْرَأَتِي وَلَدَتْ غُلاَمًا أَسْوَدَ وَإِنِّي أَنْكَرْتُهُ، فَقَالَ لَهُ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((هَلْ لَكَ مِنْ إِبِلٍ))؟ قَالَ: نَعَمْ. قَالَ: ((فَمَا أَلْوَانُهَا؟)) قَالَ: حُمْرٌ قَالَ: ((هَلْ فِيهَا مِنْ أَوْرَقَ؟)) قَالَ: إِنَّ فِيهَا لَوُرْقًا قَالَ ((فَأَنَّى تُرَى ذَلِكَ جَاءَهَا؟)) قَالَ يَا رَسُولَ اللهِ عِرْقٌ نَزَعَهَا قَالَ : ((وَلَعَلَّ هَذَا عِرْقٌ نَزَعَهُ، وَلَمْ يُرَخِّصْ لَهُ فِي الانْتِفَاءِ مِنْهُ)).
[راجع: ٥٣٠٥]

7314. हमसे अस्बग़ बिन फ़रज ने बयान किया, कहा मुझसे अ़ब्दुल्लाह बिन वहब ने बयान किया, उनसे यूनुस बिन यज़ीद ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रह़मान ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि एक अअ़राबी नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत मे ह़ाज़िर हुआ और कहा कि मेरी बीवी के यहाँ काला लड़का पैदा हुआ है जिसको मैं अपना नहीं समझता। आँह़ज़रत (ﷺ) ने उनसे फ़र्माया कि तुम्हारे पास ऊँट हैं? उन्होंने कहा कि है। पूछा कि उनके रंग कैसे हैं? कहा कि सुर्ख़ हैं। पूछा कि उनमें कोई ख़ाकी भी है? उन्होंने कहा कि हाँ उनमें ख़ाकी भी है। उस पर आँह़ज़रत (ﷺ) ने पूछा कि फिर किस त़रह़ तुम समझते हो कि उस रंग का पैदा हुआ? उन्होंने कहा कि या रसूलल्लाह! किसी रग ने ये रंग खींच लिया होगा। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मुम्किन है उस बच्चे का रंग भी किसी रग ने खींच लिया हो? और आँह़ज़रत (ﷺ) ने उनको बच्चे के इंकार करने की इजाज़त नहीं दी। (राजेअ़ : 5305)

٧٣١٥- حدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ، عَنْ أَبِي بِشْرٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ أَنَّ امْرَأَةً جَاءَتْ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَتْ: إِنَّ أُمِّي نَذَرَتْ أَنْ تَحُجَّ فَمَاتَتْ قَبْلَ أَنْ تَحُجَّ أَفَأَحُجُّ عَنْهَا؟ قَالَ: ((نَعَمْ حُجِّي عَنْهَا، أَرَأَيْتِ لَوْ كَانَ عَلَى أُمِّكِ دَيْنٌ أَكُنْتِ قَاضِيَتَهُ؟)) قَالَتْ: نَعَمْ قَالَ: ((فَاقْضُوا الَّذِي لَهُ فَإِنَّ اللهَ أَحَقُّ بِالْوَفَاءِ)). [راجع: ١٨٥٢]

7315. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे अबू अ़वाना ने बयान किया, उनसे अबू बिश्र ने, उनसे सईद बिन जुबैर ने और उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कि एक ख़ातून रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास आईं और अ़र्ज़ किया कि मेरी वालिदा ने ह़ज्ज करने की नज़्र मानी थी और वो (अदायगी से पहले ही) वफ़ात पा गईं। क्या मैं उनकी त़रफ़ से ह़ज्ज कर लूँ? आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि हाँ उनकी त़रफ़ से ह़ज्ज कर लो। तुम्हारा क्या ख़्याल है, अगर तुम्हारी वालिदा पर क़र्ज़ होता तो तुम उसे पूरा करतीं? उन्होंने कहा कि हाँ। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि फिर उस क़र्ज़ को भी पूरा कर जो अल्लाह तआ़ला का है क्योंकि इस क़र्ज़ का पूरा करना ज़्यादा ज़रूरी है। (राजेअ़ : 1852)

١٣- باب مَا جَاءَ فِي اجْتِهَادِ الْقُضَاةِ بِمَا أَنْزَلَ اللهُ تَعَالَى لِقَوْلِهِ:

बाब 13 : क़ाज़ियों को कोशिश करके अल्लाह की किताब के मुवाफ़िक़ हुक्म देना चाहिये क्योंकि अल्लाह पाक ने फ़र्माया,

﴿وَمَنْ لَمْ يَحْكُمْ بِمَا أَنْزَلَ اللهُ فَأُولَئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ﴾ [المائدة : ٤٥]
وَمَدَحَ النَّبِيُّ ﷺ صاحبَ الْحِكْمَةِ حِينَ يَقْضِي بِهَا وَيُعَلِّمُهَا لاَ يَتَكَلَّفُ مِنْ قِبَلِهِ وَمُشَاوَرَةِ الْخُلَفَاءِ وَسُؤَالِهِمْ أَهْلَ الْعِلْمِ.

जो लोग अल्लाह के उतारे मुवाफ़िक़ फ़ैसला न करें वही लोग ज़ालिम हैं और आँहज़रत (ﷺ) ने इस इल्म वाले की ता'रीफ़ की जो इल्म (क़ुर्आन व हदीष़) के मुवाफ़िक़ फ़ैसला करता है और लोगों को क़ुर्आन व हदीष़ सिखलाता है और अपनी तरफ़ से कोई बात नहीं बताता। इस बाब में ये भी बयान है कि ख़ुल्फ़ा ने अहले इल्म से मश्वरे लिये हैं।

तश्रीह : हाफ़िज़ साहब फ़र्माते हैं, क़ाल अबू अली अल्कराबीसी साहिबुश्शाफ़िइ फ़ी किताबि आदाबिल क़ज़ाइ ला आलमु बैनल उलमाइ मिम्मन सलफ़ ख़िलाफ़न अन्नन्नास अंय्यक़्ज़िय बैनल मुस्लिमीन मिन बिअन्न फ़ज़्लहू व सदक़हू व इल्महू व वर्अहू क़ारिअल लिकिताबिल्लाहि आलिमन बिअक्ष़रि अहकामिही आलिमन बिसुननि रसूलिल्लाहि हाफ़िज़न लिअक्ष़रिहा व कज़ा अक़्वालुस्सहाबति आलिमन बिलविफ़ाक़ि वल्ख़िलाफ़ि व अक़्वालु फ़ुक्हाइत्ताबिइन यअरिफ़ुस्सहीह मिनस्सक़ीमि यत्तबिउ फ़िन्नवाज़िलि अल्किताब फ़इल्लम यजिद अमल बिमत्तफ़क़ अलैहिस्सहाबतु फ़इन इख़्तलफ़ू फ़ी वज्दिहिश्शुब्हा बिल्क़ुर्आनि षुम्म बिस्सुन्नति षुम्म बिफ़त्वस्सहाबति अमल बिही व यकूनु कष़ीरुल मुज़ाकरति मअ अहलिल इल्मि वल्मुशावरति लहुम मअ फ़ज़्लिन व वरइन व यकूनु हाफ़िज़न बिही व यकूनु कष़ीरल मुज़ाकरति मअ अहलिल इल्मि वल्मुशावरति लहुम मअ फ़ज़्लिन व वरइन व यकूनु हाफ़िज़न लिलिसानिही व बत्निही व फ़र्जिही फ़हुमा लिकालिमिल ख़ुसूमि. (फ़त्हुल बारी) या'नी अबू अली कराबीसी ने कहा किताब आदाबुल क़ज़ा में और ये हज़रत इमाम शाफ़िई के शागिर्दों मे से हैं कि मैं उलम-ए-सलफ़ में इस बारे में किसी का इख़्तिलाफ़ नहीं पाता कि जो शख़्स मुसलमानों में अहद क़ज़ा पर फ़ाइज़ हुआ उसका इल्म व फ़ज़्ल व सिदक़ और तक़्वा ज़ाहिर होना चाहिये। वो किताबुल्लाह का पढ़ने वाला, उसके अक्ष़र अहकाम का जानने वाला, रसूले करीम (ﷺ) की सुन्नतों का आलिम बल्कि अक्ष़र सुनन का हाफ़िज़ होना चाहिये। इसी तरह अक़्वाले सहाबा का भी जानने वाला हो। नवाज़िल में किताबुल्लाह का इत्तिबाअ करने वाला हो, अगर किताबुल्लाह में न पा सके तो फिर सुनने नबवी में फिर अक़्वाले मुत्तफ़क़ा सहाबा किराम में माहिर हो और अहले इल्म व अहले मुशावरत के साथ कष़ीरुल मुज़ाकिरा हो, फ़ज़्ल व वरअ को हाथ से न देने वाला और अपनी ज़ुबान को कलामे हराम से, पेट को लुक़्मा हराम से और शर्मगाह को हराम कारी से पूरे तौर पर बचाने वाला हो और ख़स्म के कलाम को समझने वाला हो।

٧٣١٦– حَدَّثَنَا شِهَابُ بْنُ عَبَّادٍ، حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ حُمَيْدٍ، عَنْ إِسْمَاعِيلَ عَنْ قَيْسٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((لاَ حَسَدَ إِلاَّ فِي اثْنَتَيْنِ : رَجُلٌ آتَاهُ اللهُ مَالاً فَسُلِّطَ عَلَى هَلَكَتِهِ فِي الْحَقِّ، وَآخَرُ آتَاهُ اللهُ حِكْمَةً فَهُوَ يَقْضِي بِهَا وَيُعَلِّمُهَا)). [راجع: ٧٣]

7316. हमसे शिहाब बिन अब्बाद ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम बिन हुमैद ने बयान किया, उनसे इस्माईल बिन अबी ख़ालिद ने, उनसे क़ैस बिन अबी हाज़िम ने, उनसे अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, रश्क दो ही आदमियों पर हो सकता है, एक वो जिसे अल्लाह ने माल दिया और उसे (माल को) राहे हक़ में लटाने की पूरी तरह तौफ़ीक़ मिली होती है और दूसरा वो जिसे अल्लाह ने हिक्मत दी है और वो उसके ज़रिये फ़ैसला करता है और उसकी ता'लीम देता है। (राजेअ : 73)

हिक्मत से क़ुर्आन व हदीष़ का पुख़्ता इल्म मुराद है जिसे हदीष़ में फ़ुक़ाहत कहा गया हैं। **मय्युंरिदिल्लाह बिही ख़ैरन युफ़क़्क़िहहु फ़िद्दीन** क़ुर्आन व हदीष़ की फ़ुक़ाहत मुराद है।

٧٣١٧– حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ، أَخْبَرَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، حَدَّثَنَا هِشَامٌ، عَنْ أَبِيهِ، عَنِ الْمُغِيرَةِ بْنِ شُعْبَةَ قَالَ: سَأَلَ عُمَرُ بْنُ

7317. हमसे मुहम्मद बिन सलाम ने बयान किया, कहा हमको अबू मुआविया ने ख़बर दी, कहा हमसे हिशाम ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे मुग़ीरह बिन शुअबा (रज़ि.)

ने बयान किया कि उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) ने औरत के इम्लास़ के बारे में (स़हाबा से) पूछा। ये उस औरत को कहते हैं जिसके पेट पर (जबकि वो ह़ामला हो) मार दिया गया और उसका नातमाम (अधूरा) बच्चा गिर गया हो। उमर (रज़ि.) ने पूछा आप लोगों में से किसी ने नबी करीम (ﷺ) से इसके बारे में कोई ह़दीष़ सुनी है? मैंने कहा कि मैंने सुनी है। पूछा क्या ह़दीष़ है? मैंने बयान किया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना है कि ऐसी स़ूरत में एक ग़ुलाम या बाँदी तावान के त़ौर पर है। उमर (रज़ि.) ने कहा कि तुम अब छूट नहीं सकते यहाँ तक कि तुमने जो ह़दीष़ बयान की है इस सिलसिले में नजात का कोई ज़रिया (या'नी कोई शहादत कि वाक़ई आँह़ज़रत ﷺ ने ये ह़दीष़ फ़र्माई थी) लाओ। (राजेअ़ :6905)

الْخَطَّابِ عَنْ إِمْلاَصِ الْمَرْأَةِ وَهْيَ الَّتِي يُضْرَبُ بَطْنُهَا فَتُلْقِي جَنِينًا؟ فَقَالَ: أَيُّكُمْ سَمِعَ مِنَ النَّبِيِّ ﷺ فِيهِ شَيْئًا؟ فَقُلْتُ أَنَا فَقَالَ: مَا هُوَ؟ قُلْتُ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ: ((فِيهِ غُرَّةٌ عَبْدٌ أَوْ أَمَةٌ)). فَقَالَ: لاَ تَبْرَحْ حَتَّى تَجِيئَنِي بِالْمَخْرَجِ فِيمَا قُلْتَ.

[راجع: ٦٩٠٥]

7318. फिर मैं निकला तो मुह़म्मद बिन मस्लमा (रज़ि.) मिल गए और मैं उन्हें लाया और उन्होंने मेरे साथ गवाही दी कि उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) को फ़र्माते सुना है कि उसमें एक ग़ुलाम या बाँदी की तावान है। हिशाम बिन उ़र्वा के साथ इस ह़दीष़ को इब्ने अबिज़्ज़िनाद ने भी अपने बाप से, उन्होंने उ़र्वा से, उन्होंने मुग़ीरह से रिवायत किया। (राजेअ़ : 6906)

٧٣١٨- فَخَرَجْتُ فَوَجَدْتُ مُحَمَّدَ بْنَ مَسْلَمَةَ فَجِئْتُ بِهِ فَشَهِدَ مَعِي أَنَّهُ سَمِعَ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((فِيهِ غُرَّةٌ عَبْدٌ أَوْ أَمَةٌ)). تَابَعَهُ ابْنُ أَبِي الزِّنَادِ عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عُرْوَةَ عَنِ الْمُغِيرَةِ. [راجع: ٦٩٠٦]

तश्रीह : बाब का तर्जुमा इससे निकला कि ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ख़लीफ़-ए-वक़्त थे, मगर उन्होंने दूसरे स़ह़ाबा से ये मसला पूछा। अब ये ए'तिराज़ न होगा कि ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने जो सिर्फ़ मुग़ीरह (रज़ि.) का बयान क़ुबूल न किया तो ख़बरे वाह़िद क्यूँकर ह़ुज्जत होगी ह़ालाँकि वो ह़ुज्जत है जैसे ऊपर गुज़र चुका क्योंकि ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने मज़ीद एह़तियात़ और मज़बूती के लिये दूसरी गवाही त़लब की न कि इसलिये कि ख़बरे वाह़िद उनके पास ह़ुज्जत न थी क्योंकि मुह़म्मद बिन मस्लमा की शहादत के बाद भी ये ख़बरे वाह़िद ही रही।

बाब 14 : नबी करीम (ﷺ) का ये फ़र्मान कि ऐ मुसलमानों! तुम अगले लोगों की चाल पर चलोगे

١٤- باب قَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ: ((لَتَتْبَعُنَّ سَنَنَ مَنْ كَانَ قَبْلَكُمْ))

7319. हमसे अह़मद बिन यूनुस ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने अबी ज़िब ने बयान किया, उनसे मक़्बरी ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, क़यामत उस वक़्त तक क़ायम नहीं होगी जब तक मेरी उम्मत इस त़रह़ पिछली उम्मतों के मुत़ाबिक़ नहीं हो जाएगी जैसे बालिश्त, बालिश्त के और हाथ, हाथ के बराबर होता है। पूछा गया या रसूलल्लाह (ﷺ)! अगली उम्मतों से कौन मुराद हैं, पारसी

٧٣١٩- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ، حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي ذِئْبٍ، عَنِ الْمَقْبُرِيِّ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((لاَ تَقُومُ السَّاعَةُ حَتَّى تَأْخُذَ أُمَّتِي بِأَخْذِ الْقُرُونِ قَبْلَهَا شِبْرًا بِشِبْرٍ، وَذِرَاعًا بِذِرَاعٍ)) فَقِيلَ يَا رَسُولَ اللهِ كَفَارِسَ

और नसरानी? आपने फ़र्माया, फिर और कौन?

وَالرُّومِ فَقَالَ: وَمَنِ النَّاسِ إِلاَّ أُولَئِكَ؟.

तश्रीह : जब मुसलमानों की सल्तनत क़ायम हुई पहले उन्होंने ईरानियों की चाल-ढाल, वज़अ-क़त्अ इख़्तियार की, फिर बाद के ज़माने में मुग़लिया सुल्तानों की सल्तनत सन 1200 हिजरी तक रही तो उन्हीं की सब बातें जारी हो गईं। यहाँ तक कि दीने इलाही जारी हो गया उसके बाद अंग्रेज़ों की हुकूमत हुई अब अकषर मुसलमान उनकी मुशाबिहत कर रहे हैं। खाने, पीने, लिबास, मुआशरत, नशिस्त व बरख़ास्त सब रस्मों में उन ही की पैरवी कर रहे हैं।

7320. हमसे मुहम्मद बिन अब्दुल अज़ीज़ ने बयान किया, कहा हमसे यमन के अबू उमर सन्आनी ने बयान किया, उनसे ज़ैद बिन असलम ने, उनसे अ़ता बिन यसार ने और उनसे अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया तुम अपने से पहली उम्मतों की एक-एक बालिश्त और एक एक गज़ में इत्तिबाअ करोगे। यहाँ तक कि अगर वो किसी गोह के सूराख़ में दाख़िल हुए होंगे तो तुम उसमें भी उनकी इत्तिबाअ करोगे। हमने पूछा या रसूलल्लाह! क्या यहूद और नसारा मुराद हैं? फ़र्माया फिर कौन?

٧٣٢٠- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الْعَزِيزِ، حَدَّثَنَا أَبُو عُمَرَ الصَّنْعَانِي مِنَ الْيَمَنِ، عَنْ زَيْدِ بْنِ أَسْلَمَ، عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: قَالَ: ((لَتَتْبَعُنَّ سَنَنَ مَنْ كَانَ قَبْلَكُمْ شِبْرًا بِشِبْرٍ وَذِرَاعًا بِذِرَاعٍ، حَتَّى لَوْ دَخَلُوا جُحْرَ ضَبٍّ تَبِعْتُمُوهُمْ)) قُلْنَا يَا رَسُولَ اللهِ الْيَهُودَ وَالنَّصَارَى؟ قَالَ: ((فَمَنْ؟)).

तश्रीह : गोह के बिल में घुसने का मतलब ये है कि उन ही की सी चाल-ढाल इख़्तियार कर लोगे। अच्छी हो या बुरी हर हाल में उनकी चाल चलना पसंद करोगे। हमारे ज़माने में बिल्कुल यही हाल है। मुसलमानों से कुव्वते इज्तिहादी और इख़्तिराई का माद्दा बिलकुल सल्ब हो गया है। पस जैसे अंग्रेज़ों को करते देखा वही काम ख़ुद भी करने लगते हैं, कुछ सोचते ही नहीं कि आया ये काम हमारे मुल्क और हमारी आबो हवा के लिहाज़ से मुनासिब और क़रीन-ए-अक़्ल भी है या नहीं। अल्लाह तआला रहम करे।

बाब 15 : उसका गुनाह जो किसी गुमराही की तरफ़ बुलाए या कोई बुरी रस्म क़ायम करे

١٥- باب إِثْمِ مَنْ دعا إِلَى ضَلاَلَةٍ أَوْ سَنَّ سُنَّةً سَيِّئَةً لِقَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿وَمِنْ أَوْزَارِ الَّذِينَ يُضِلُّونَهُمْ﴾ [النحل: ٢٥] الآيَةَ.

अल्लाह पाक के फ़र्मान व मिन औज़ारल्लज़ीना अल्अख़ की रोशनी में या'नी अल्लाह तआला ने सूरह नहल में फ़र्माया उन लोगों का भी बोझ उठाएँगे जिसको बेइल्मी की वजह से गुमराह कर रहे हैं। (सूरह नहल : 25)

7321. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर हुमैदी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने, कहा हमसे आ'मश ने, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुर्रह ने, उनसे मसरूक़ ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, जो शख़्स भी ज़ुल्म के साथ क़त्ल किया जाएगा उसके (गुनाह का) एक हिस्सा आदम (अ.) के पहले बेटे

٧٣٢١- حَدَّثَنَا الْحُمَيْدِيُّ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مُرَّةَ، عَنْ مَسْرُوقٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لَيْسَ مِنْ نَفْسٍ تُقْتَلُ ظُلْمًا إِلاَّ كَانَ عَلَى ابْنِ آدَمَ الأَوَّلِ كِفْلٌ

(क़ाबील) पर भी पड़ेगा। कुछ औक़ात सुफ़यान ने इस तरह बयान किया कि, उसके ख़ून का क्योंकि उसी ने सबसे पहले नाहक़ ख़ून की बुरी रस्म क़ायम की। (राजेअ : 3335)

مِنْهَا)) وَرُبَّمَا قَالَ سُفْيَانُ مِنْ دَمِهَا لأَنَّهُ أَوَّلُ مَنْ سَنَّ الْقَتْلَ أَوَّلاً. [راجع: ٣٣٣٥]

तश्रीह : इस बाब में स़रीह़ अह़ादीष़ वारिद हैं मगर इमाम बुख़ारी (रह़.) अपनी शर्त पर न होने की वजह से शायद उनको न ला सके। इमाम मुस्लिम और अबू दाऊद और तिर्मिज़ी ने अबू हुरैरह (रज़ि.) से निकाला। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया जो शख़्स़ गुमराही की तरफ़ बुलाएगा उस पर उसका गुनाह और उन लोगों का जो इस पर अ़मल करते रहेंगे पड़ता रहेगा। अ़मल करने वालों का गुनाह कुछ कम न होगा और इमाम मुस्लिम (रह़.) ने जरीर बिन अ़ब्दुल्लाह बजली से रिवायत किया कि जो शख़्स़ इस्लाम में बुरी रस्म क़ायम करे उस पर उसका बोझ और अ़मल करने वालों का बोझ पड़ता रहेगा अ़मल करने वालों का बोझ कुछ कम न होगा।

ख़ात्मा

अल्ह़म्दुलिल्लाह! पारा 29 की तस्वीद और तीन बार नज़रेष़ानी करने के बाद आज इस अ़ज़ीम ख़िदमत से फ़ारिग़ हुआ। अल्लाह पाक का किस मुँह से शुक्र अदा करूँ कि मह़ज़ उसकी तौफ़ीक़ व इआनत से ये पारा इख़्तिताम को पहुँचा। इस पारे में किताबुल फ़ितन, किताबुल अह़काम, किताबु अख़्बारिल आह़ाद, किताबुल एअतिस़ाम बिल किताब वस्सुन्नत जैसी अहम किताबें शामिल हैं जिसके अदक़ मसाइल बहुत कुछ तशरीह़ तलब हैं। मैंने जो कुछ लिखा है वो समुन्दर के मुक़ाबले पर पानी का एक क़तरा है। पहले पारों की तरह तर्जुमा व ह़वाशी में बहुत ग़ौर किया गया है। माहिरीने फ़न्ने ह़दीष़ फिर भी किसी जगह ख़ामी मह़सूस करें तो अज़्राहे करम ख़ामी पर ख़बर करके मशकूर करें। अल्लाह उनको जज़ा-ए-ख़ैर देगा। अल्लाह पाक से बार बार दुआ है कि वो लग़्ज़िशों के लिये अपनी मग़्फ़िरत से नवाज़े और भूल चूक को माफ़ करे और इस ख़िदमत को क़ुबूल करके क़ुबूले आ़म अ़ता करे, आमीन।

या अल्लाह! इस ख़िदमते ह़दीष़े नबवी (ﷺ) को क़ुबूल करके मेरे लिये, मेरे वालिदैन और औलाद व असातिज़ा व तमाम मुआविनीने किराम के लिये ज़रिया-ए-नजाते दारैन बनाइयो और हम सबके बुज़ुर्गों के लिये भी इसे बतौरे स़दक़ा-ए-जारिया क़ुबूल कीजियो और क़यामत के दिन हम सबको जवारे रिसालते मआब (ﷺ) में जगह दीजियो, आमीन।

रब्बना तक़ब्बल मिन्ना इन्नका अन्तस्समीउ़ल अ़लीम व तुब अ़लैना इन्नक अन्तत्तव्वाबुर्रह़ीम व स़ल्लल्लाहु अ़ला ख़ैरि ख़ल्क़िही मुह़म्मद व अ़ला आलिही व अस़्ह़ाबिही अज्मईन बिरह़मतिक या अरह़मर्राह़िमीन।

ख़ादिमे ह़दीष़

मुह़म्मद दाऊद राज़ अ़ब्दुल्लाह अस्सलफ़ी

मुक़ीम मस्जिदे अहले ह़दीष़ 1421 अजमेरी गेट देहली नम्बर 6

यकुम ज़िलह़िज्जतुल ह़राम सन 1397 हिजरी)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

तीसवां पारा

बाब 16 : आँह़ज़रत (ﷺ) ने आलिमों के इत्तिफ़ाक़ करने का जो ज़िक्र किया है उसकी तर्ग़ीब दी है और मक्का और मदीना के आलिमों के इज्माअ का बयान

١٦- باب مَا ذَكَرَ النَّبِيُّ ﷺ وَحَضَّ عَلَى اتِّفَاقِ أَهْلِ الْعِلْمِ وَمَا اجْتَمَعَ عَلَيْهِ الْحَرَمَانِ: مَكَّةُ وَالْمَدِينَةُ وَمَا كَانَ بِهَا مِنْ مَشَاهِدِ النَّبِيِّ ﷺ وَالْمُهَاجِرِينَ وَالأَنْصَارِ وَمُصَلَّى النَّبِيِّ ﷺ وَالْمِنْبَرِ وَالْقَبْرِ.

और मदीना मे जो आँह़ज़रत (ﷺ)और मुहाजिरीन और अंसार के मुतबर्रक मुक़ामात हैं और आँह़ज़रत (ﷺ) के नमाज़ पढ़ने की जगह और मिम्बर और आपकी क़ब्र शरीफ़ का बयान।

तशरीह़ : या अल्लाह इस मुबारकतरीन वक़्ते सेह़र में मेरी ग़ल्तियाँ माफ़ करने वाले, मेरी क़लम में त़ाक़त अ़त़ा कर ताकि मैं तेरे ह़बीब रसूले करीम ह़ज़रत सय्यदना व मौलाना मुह़म्मद (ﷺ) के इर्शादाते आ़लिया के अ़ज़ीम ज़ख़ीरे की ये आख़िरी मंज़िल तेरी और तेरे ह़बीब (ﷺ) की ऐन मंशा के मुत़ाबिक़ लिख सकूँ और उसे बख़ैर व ख़ूबी इशाअ़त में ला सकूँ। या अल्लाह! इस अ़ज़ीम ख़िदमत को क़ुबूल करके तमाम मुआ़विनीने किराम व मुख़्लिसीने इ़ज़ाम के ह़क़ में इसे बत़ौरे स़दक़ा-ए-जारिया क़ुबूल कर ले और मेरी आल औलाद के लिये, वालिदैन के लिये ज़ख़ीरा-ए-दारैन बनाइयो। **आमीन या रब्बल आ़लमीन। रब्बि यस्सिर व ला तुअ़स्सिर व तम्मि बिल्ख़ैर बिक नस्तईनु।** (ख़ादिम मुह़म्मद दाऊद राज़ 17 रमज़ान सन 1397 हिजरी)

ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) ने ये बाब मुनअ़क़िद करके उन मुआ़निदीन के मुँह पर तमाचा मारा है जो कहते रहते हैं कि अहले ह़दीष़ मदीना की ह़क़ीक़ी अ़ज़्मत नहीं करते, ये इज्माअ़ के मुंकिर हैं, ये दरूद नहीं पढ़ते हैं। अल्लाह ऐसे लोगों को नेक हिदायत दे कि वो ऐसी हफ़्वाते बात़िला से बाज़ आएँ। किसी मोमिन मुसलमान पर तोह्मत इल्ज़ाम लगाना बदतरीन गुनाह है। बहरह़ाल अकष़र उ़लमा का ये क़ौल है कि इज्माअ़ जब मो'तबर होता है कि तमाम जहान के मुज्तहिदीने इस्लाम उस मसले पर इत्तिफ़ाक़ कर लें, एक का भी इख़्तिलाफ़ न हो। ह़ज़रत इमाम मालिक ने अहले मदीना का इज्माअ़ भी मो'तबर कहा है। ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) के कलाम से ये निकलता है कि अहले मक्का और अहले मदीना दोनों का इज्माअ़ भी हुज्जत है। मगर ह़ाफ़िज़ ने कहा इमाम बुख़ारी (रह़.) का मत़लब ये नहीं है कि अहले मक्का व मदीना का इज्माअ़ हुज्जत है बल्कि उनका मत़लब ये है कि इख़्तिलाफ़ के वक़्त उस जानिब को तरजीह़ होगी जिस पर अहले मक्का और अहले मदीना इत्तिफ़ाक़ करें। कुछ लोगों ने अहले बैत और ख़ुलफ़ा-ए-अरबआ़ का इत्तिफ़ाक़। कुछ लोगों ने अइम्मा-ए-अरबआ़ का इत्तिफ़ाक़ इज्माअ़ समझा है। मगर जुम्हूर का वही क़ौल है कि ऐसे इत्तिफ़ाक़ात इज्माअ़ नहीं हो सकते। जब तक तमाम जहान के मुज्तहिदीने इस्लाम इत्तिफ़ाक़ न कर लें । ह़ज़रत इमाम शौकानी (रह़.) ने कहा इज्माअ़ का दा'वा एक ऐसा दा'वा है कि त़ालिबे ह़क़ को उससे कुछ डर न करना चाहिये। मैं (वह़ीदुज़्ज़माँ) कहता हूँ इस वक़्त (1323 हिजरी) में ह़रमैन शरीफ़ैन में बहुत सी बिदआ़त और उमूर ख़िलाफ़े शरअ़ जारी हैं। (मगर आज सऊ़दी दौर 1397 हिजरी में) अल्ह़म्दुलिल्लाह इस हुकूमत ने ह़रमैन शरीफ़ैन को बेशतर बिदआ़त और ख़ुराफ़ात से पाक कर दिया है। अल्लाह पाक तह़फ़्फ़ुज़े ह़रमैन शरीफ़ैन के

लिये इस हुकूमत को क़ायम दायम रखे और इनको हमेशा किताबो सुन्नत की इत्तिबाअ पर इस्तिक़ामत अ़ता करे (आमीन) पस ख़िलाफ़े शरअ उमूर में अहले हरमैन का इज्माअ कोई हुज्जत नहीं है। त़ालिबे ह़क़ को हमेशा दलील की पैरवी करनी चाहिये और जिस क़ौल की दलील क़वी हो। उसको इख़्तियार करना चाहिये गो उसके क़ाइल क़लील हों अल्बत्ता बहुत से मसाइल हैं जिन पर तमाम जहान के उ़लम-ए-इस्लाम से शरक़न व ग़रबन इत्तिफ़ाक़ किया है और एक मुज्तहिद या आ़लिम से भी उनमें इख़्तिलाफ़ मन्क़ूल नहीं है। ऐसे मसाइल मे बेशक इज्माअ का ख़िलाफ़ करना जाइज़ नहीं है (ख़ुलास़ा शरह़ वह़ीदी) अइम्मा अरबआ़ की तक़्लीदे जामिद पर भी इज्माअ का दा'वा करना स़ह़ीह़ नहीं है कि हर क़र्न और हर ज़माने में इस जमूद की मुख़ालफ़त करने वाले बेशतर अकाबिरे उ़लम-ए-इस्लाम होते चले आ रहे हैं। जैसा कि कुतुबे तारीख़ में तफ़्स़ील से ज़िक्र मौजूद है। (देखो कुतुबे ईलामुल मूक़िईन व मेअ़यारुल ह़क़ वग़ैरह)

7322. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, उन्होने कहा मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उन्होंने मुहम्मद बिन मुंकदिर से, उन्होंने जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह अंसारी (रज़ि.) से कि एक गंवार (क़ैस बिन अबी ह़ाज़िम या क़ैस बिन ह़ाज़िम या और कोई) ने आँह़ज़रत (ﷺ) से इस्लाम पर बेअ़त की, फिर मदीना में उसको तप आने लगी। वो आँह़ज़रत (ﷺ) के पास आया। कहने लगा या रसूलल्लाह! मेरी बेअ़त तोड़ दीजिए। आँह़ज़रत (ﷺ) ने इंकार किया। फिर आया और कहने लगा या रसूलल्लाह! मेरी बेअ़त फ़स्ख़ कर दीजिए। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फिर इंकार किया। उसके बाद वो मदीने से निकलकर अपने जंगल को चला गया तो आँह़ज़रत (ﷺ)ने फ़र्माया कि मदीना लोहार की भट्टी की त़रह़ है जो अपनी मैल कुचैल को दूर कर देती है और खरे पाकीज़ा माल को रख लेती है। (राजेअ़: 1883)

٧٣٢٢– حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، حَدَّثَنِي مَالِكٌ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ الْمُنْكَدِرِ، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ السَّلَمِيِّ، أَنَّ أَعْرَابِيًّا بَايَعَ رَسُولَ اللهِ ﷺ عَلَى الإِسْلاَمِ فَأَصَابَ الأَعْرَابِيَّ وَعْكٌ بِالْمَدِينَةِ فَجَاءَ الأَعْرَابِيُّ إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ أَقِلْنِي بَيْعَتِي، فَأَبَى رَسُولُ اللهِ ﷺ ثُمَّ جَاءَهُ فَقَالَ: أَقِلْنِي بَيْعَتِي فَأَبَى ثُمَّ جَاءَهُ فَقَالَ: أَقِلْنِي بَيْعَتِي فَأَبَى، فَخَرَجَ الأَعْرَابِيُّ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِنَّمَا الْمَدِينَةُ كَالْكِيرِ تَنْفِي خَبَثَهَا وَيَنْصَعُ طَيِّبُهَا)). [راجع: ١٨٨٣]

तश्रीह: इस ह़दीष़ की मुत़ाबक़त बाब का तर्जुमा से इस त़रह़ है कि जब मदीना सब शहरों से अफ़ज़ल हुआ तो वहाँ के उ़लमा का इज्माअ ज़रूर मो'तबर होगा क्योंकि मदीना में बुरे और बदकार लोग ठहर ही नहीं सकते। वहाँ के उ़लमा सबसे अच्छे ही होंगे मगर ये हुक्म ह़याते नबवी के साथ था। बाद में बहुत से अकाबिर स़ह़ाबा मदीना छोड़कर चले गये थे।

7323. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल वाह़िद बिन ज़ियाद ने बयान किया, कहा हमसे मअ़मर बिन राशिद ने बयान किया, उनसे ज़ुह्री ने, उनसे उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह ने, उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ (रज़ि.) को (क़ुर्आन मजीद) पढ़ाया करता था। जब वो आख़िरी ह़ज्ज आया जो उ़मर (रज़ि.) ने किया था तो अ़ब्दुर्रह़मान ने मिना में मुझसे कहा काश! तुम अमीरुल मोमिनीन को आज देखते जब उनके पास एक शख़्स़ आया और कहा कि फ़लाँ शख़्स़

٧٣٢٣– حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ، حَدَّثَنَا مَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ عَبْدِ اللهِ قَالَ حَدَّثَنِي ابْنُ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: كُنْتُ أُقْرِىءُ عَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنَ عَوْفٍ فَلَمَّا كَانَ آخِرُ حَجَّةٍ حَجَّهَا عُمَرُ فَقَالَ عَبْدُ الرَّحْمَنِ بِمِنًى: لَوْ شَهِدْتَ أَمِيرَ الْمُؤْمِنِينَ

कहता है कि अगर अमीरुल मोमिनीन का इंतिक़ाल हो जाए तो हम फ़लाँ से बेअ़त कर लेंगे। ये सुनकर उ़मर (रज़ि.) ने कहा कि मैं आज सह पहर को खड़े होकर लोगों को ख़ुत्बा सुनाऊँगा और उन को डराऊँगा जो (आम मुसलमानों के ह़क़ को) ग़सब करना चाहते हैं और ख़ुद अपनी राय से अमीर मुंतख़ब करने का इरादा रखते हैं। मैंने अ़र्ज़ किया कि आप ऐसा न करें क्योंकि मौसमे ह़ज्ज में हर त़रह़ के नावाक़िफ़ और मा'मूली लोग जमा हो जाते हैं। ये सब कष़रत से आपकी मज्लिस में जमा हो जाएँगे और मुझे डर है कि वो आपकी बात का स़ह़ीह़ मत़लब न समझकर कुछ और मा'नी न कर लें और उसे मुँह दर मुँह उड़ाते फिरें। इसलिये अभी तवक़्क़ुफ़ कीजिए। जब आप मदीने पहुँचें जो दारुल हिजरत और दारुस्सन्नह (सुन्नत का घर) है तो वहाँ आपके मुख़ात़ब रसूलुल्लाह (ﷺ) के स़ह़ाबा, मुहाजिरीन व अंस़ार ख़ालिस़ ऐसे ही लोग मिलेंगे वो आपकी बात को याद रखेंगे और उसका मत़लब भी ठीक बयान करेंगे। उस पर अमीरुल मोमिनीन ने कहा कि वल्लाह! मैं मदीना पहुँच कर जो पहला ख़ुत्बा दूँगा उसमें उसका बयान करूँगा। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि फिर हम मदीने आए तो ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) जुम्आ के दिन दोपहर ढले आए और ख़ुत्बा सुनाया। उन्होंने कहा अल्लाह पाक ने ह़ज़रत मुह़म्मद (ﷺ) को सच्चा रसूल बनाकर भेजा और आप पर क़ुर्आन उतारा। उस क़ुर्आन में रजम की आयत भी थी। (राजेअ़ : 2462)

أَتَاهُ رَجُلٌ قَالَ : إِنَّ فُلاَنًا يَقُولُ : لَوْ مَاتَ أَمِيرُ الْمُؤْمِنِينَ لَبَايَعْنَا فُلاَنًا فَقَالَ عُمَرُ لأَقُومَنَّ الْعَشِيَّةَ فَأُحَذِّرَ هَؤُلاَءِ الرَّهْطَ الَّذِينَ يُرِيدُونَ أَنْ يَغْصِبُوهُمْ قُلْتُ: لاَ تَفْعَلْ فَإِنَّ الْمَوْسِمَ يَجْمَعُ رَعَاعَ النَّاسِ يَغْلِبُونَ عَلَى مَجْلِسِكَ فَأَخَافُ أَنْ لاَ يُنْزِلُوهَا عَلَى وَجْهِهَا فَيُطِيرُ بِهَا كُلُّ مُطِيرٍ، فَأَمْهِلْ حَتَّى تَقْدَمَ الْمَدِينَةَ دَارَ الْهِجْرَةِ وَدَارَ السُّنَّةِ فَتَخْلُصَ بِأَصْحَابِ رَسُولِ اللهِ ﷺ: مِنَ الْمُهَاجِرِينَ وَالأَنْصَارِ فَيَحْفَظُوا مَقَالَتَكَ وَيُنْزِلُوهَا عَلَى وَجْهِهَا فَقَالَ: وَاللهِ لأَقُومَنَّ بِهِ فِي أَوَّلِ مَقَامٍ أَقُومُهُ بِالْمَدِينَةِ، قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ فَقَدِمْنَا الْمَدِينَةَ فَقَالَ : إِنَّ اللهَ بَعَثَ مُحَمَّدًا بِالْحَقِّ وَأَنْزَلَ عَلَيْهِ الْكِتَابَ فَكَانَ فِيمَا أُنْزِلَ آيَةُ الرَّجْمِ.

[راجع: ٢٤٦٢]

ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) का ख़िलाफ़त के बारे में फ़र्माने का मत़लब ये था कि अम्रे ख़िलाफ़त में राय देने का ह़क़ सारे मुसलमानों को है। पस जिस पर अकष़र लोग इत्तिफ़ाक़ कर लें उससे बेअ़त कर लेना चाहिये। पस ये कहना ग़लत़ है कि हम फ़लाँ से बेअ़त कर लेंगे। बेअ़त कर लेना कोई खेल तमाशा नहीं है, ये मुसलमानों के जुम्हूर का ह़क़ है। ख़लीफ़तुल मुस्लिमीन का इंतिख़ाब मा'मूली बात नहीं है। इस रिवायत की बाब से मुत़ाबक़त ये है कि उसमें मदीना की फ़ज़ीलत मज़्कूर है कि वो दारुस्सुन्नह है। किताब व सुन्नत का घर है तो वहाँ के उ़लमा का इज्माअ़ बनिस्बत और शहरों के ज़्यादा मो'तबर होगा। ह़ाफ़िज़ ने कहा कि स़ह़ाबा का इज्माअ़ भी ह़ुज्जत है या नहीं उसमें भी इख़्तिलाफ़ है।

7324. हमसे सुलैमान बिन ह़र्ब ने बयान किया, कहा हमसे ह़म्माद बिन ज़ैद ने, उनसे अय्यूब सुख़्तियानी ने, उनसे मुह़म्मद बिन सीरीन ने बयान किया कि हम अबू हुरैरह (रज़ि.) के पास थे और उनके जिस्म पर कत्तान के दो कपड़े गेरू में रंगे हुए थे। उन्होंने उन ही कपड़ों में नाक स़ाफ़ की और कहा वाह वाह

٧٣٢٤- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا حَمَّادٌ، عَنْ أَيُّوبَ عَنْ مُحَمَّدٍ قَالَ: كُنَّا عِنْدَ أَبِي هُرَيْرَةَ وَعَلَيْهِ ثَوْبَانِ مُمَشَّقَانِ مِنْ كَتَّانٍ فَتَمَخَّطَ فَقَالَ: بَخٍ بَخٍ أَبُو

देखो अबू हुरैरह (रज़ि.) कत्तान के कपड़ों में नाक स़ाफ़ करता है, अब ऐसा मालदार हो गया ह़ालाँकि मैंने अपने आपको एक ज़माना में ऐसा पाया है कि मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) के मिम्बर और आइशा (रज़ि.) के हुज्रे के बीच बेहोश होकर गिर पड़ता था और गुज़रने वाला मेरी गर्दन पर ये समझकर पैर रखता था कि मैं पागल हो गया हूँ, ह़ालाँकि मुझे जुनून नहीं होता था, बल्कि स़िर्फ़ भूख की वजह से मेरी ये ह़ालत हो जाती थी।

هُرَيْرَةَ، يَتَمَخَّطُ فِي الْكَتَّانِ لَقَدْ رَأَيْتُنِي وَإِنِّي لأَخِرُّ فِيمَا بَيْنَ مِنْبَرِ رَسُولِ اللهِ ﷺ إِلَى حُجْرَةِ عَائِشَةَ مَغْشِيًّا عَلَيَّ فَيَجِيءُ الْجَائِي، فَيَضَعُ رِجْلَهُ عَلَى عُنُقِي وَيُرَى أَنِّي مَجْنُونٌ وَمَا بِي جُنُونٌ مَا بِي إِلاَّ الْجُوعُ.

तश्रीह़ : ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) का मत़लब ये है कि मैं या तो ऐसी तंगी में था कि खाने को रोटी का टुकड़ा तक न था कि आज रेशमी कपड़ों मे नाक स़ाफ़ कर रहा हूँ। इस ह़दीष़ में रसूले करीम (ﷺ) के मिम्बर का ज़िक्र है। यही बाब से मुत़ाबक़त है। हुज्रा आइशा (रज़ि.) भी एक तारीख़ी जगह है जिसमे रसूले करीम (ﷺ) आराम फ़र्मा रहे हैं।

7325. हमसे मुह़म्मद बिन कष़ीर ने बयान किया, कहा हमको सुफ़यान ष़ौरी ने ख़बर दी, उनसे अ़ब्दुर्रह़मान बिन आ़बिस ने बयान किया, कहा कि इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से पूछा गया कि क्या आप नबी करीम (ﷺ) के साथ ईद में गये हैं? कहा कि हाँ मैं उस वक़्त कमसिन था। अगर आँह़ज़रत (ﷺ) से मुझको इतना नज़दीक का रिश्ता न होता और मैं कमसिन न होता तो आपके साथ भी नहीं रह सकता था। आँह़ज़रत (ﷺ) घर से निकलकर उस निशान के पास आए जो कष़ीर बिन स़ल्त के मकान के पास है और वहाँ आपने नमाज़े ईद पढ़ाई फिर ख़ुत्बा दिया। उन्होंने अज़ान और इक़ामत का ज़िक्र नहीं किया, फिर आपने स़दक़ा देने का हुक्म दिया तो औरतें अपने कानों और गर्दनों की त़रफ़ हाथ बढ़ाने लगी ज़ेवरों का स़दक़ा देने के लिये। उसके बाद आँह़ज़रत (ﷺ) ने बिलाल (रज़ि.) को हुक्म फ़र्माया। वो आए और स़दक़े में मिली हुई चीज़ों को लेकर आँह़ज़रत (ﷺ) के पास वापस गये। (राजेअ : 98)

٧٣٢٥- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ، أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَابِسٍ قَالَ: سُئِلَ ابْنُ عَبَّاسٍ أَشَهِدْتَ الْعِيدَ مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: نَعَمْ وَلَوْ لاَ مَنْزِلَتِي مِنْهُ مَا شَهِدْتُهُ مِنَ الصِّغَرِ، فَأَتَى الْعَلَمَ الَّذِي عِنْدَ دَارِ كَثِيرِ بْنِ الصَّلْتِ فَصَلَّى، ثُمَّ خَطَبَ وَلَمْ يَذْكُرْ أَذَانًا وَلاَ إِقَامَةً، ثُمَّ أَمَرَ بِالصَّدَقَةِ، فَجَعَلَ النِّسَاءُ يُشِرْنَ إِلَى آذَانِهِنَّ وَحُلُوقِهِنَّ فَأَمَرَ بِلاَلاً فَأَتَاهُنَّ ثُمَّ رَجَعَ إِلَى النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ.

[راجع: ٩٨]

इस ह़दीष़ की मुनासबत बाब से ये है कि उसमें आँह़ज़रत (ﷺ) का कष़ीर बिन स़ल्त के घर के पास तशरीफ़ ले जाना और वहाँ ईद की नमाज़ पढ़ना मज़्कूर है।

7326. हमसे अबू नुऐ़म ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन दीनार ने और उनसे इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) क़ुबा में तशरीफ़ लाते थे, कभी पैदल और कभी सवारी पर।

٧٣٢٦- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ دِينَارٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَانَ يَأْتِي قُبَاءَ مَاشِيًا وَرَاكِبًا.

(राजेअ : 1191)

[راجع: ۱۱۹۱]

क़ुबा मदीना के क़रीब वो बस्ती जिसमें आपने बवक़्ते हिजरत नुज़ूले इज्लाल फ़र्माया उसकी मस्जिद भी एक तारीख़ी जगह है जिसका ज़िक्र क़ुर्आन में मज़्कूर हुआ।

७३२٧- حَدَّثَنَا عُبَيْدُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ لِعَبْدِ اللهِ بْنِ الزُّبَيْرِ: ادْفِنِّي مَعَ صَوَاحِبِي وَلاَ تَدْفِنِّي مَعَ النَّبِيِّ ﷺ فِي الْبَيْتِ فَإِنِّي أَكْرَهُ أَنْ أُزَكَّى.

[راجع: ۱۳۹۱]

7327. हमसे उ़बैद बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन उ़र्वा ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे आ़इशा (रज़ि.) ने कि उन्होंने अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि.) से कहा था कि मुझे इंतिक़ाल के बाद मेरी सौकनों के साथ दफ़न करना। आँहज़रत (ﷺ) के साथ हुजरा में दफ़न मत करना क्योकि मैं पसंद नहीं करती कि मेरी आपकी और बीवियों से ज़्यादा पाकी बयान की जाए। (राजेअ : 1391)

٧٣٢٨- وَعَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيهِ أَنَّ عُمَرَ أَرْسَلَ إِلَى عَائِشَةَ ائْذَنِي لِي أَنْ أُدْفَنَ مَعَ صَاحِبَيَّ فَقَالَتْ: إِيْ وَاللهِ، قَالَ: وَكَانَ الرَّجُلُ إِذَا أَرْسَلَ إِلَيْهَا مِنَ الصَّحَابَةِ قَالَتْ: لاَ وَاللهِ لاَ أُوثِرُهُمْ بِأَحَدٍ أَبَدًا.

7328. और हिशाम से रिवायत है, उनसे उनके वालिद ने बयान किया कि उ़मर (रज़ि.) ने आ़इशा (रज़ि.) के यहाँ आदमी भेजा कि मुझे इजाज़त दें कि आँहज़रत (ﷺ) के साथ दफ़न किया जाऊँ। उन्होंने कहा कि हाँ अल्लाह की क़सम! मैं उनको इजाज़त देती हूँ। रावी ने बयान किया कि पहले जब कोई सहाबी उनसे वहाँ दफ़न होने की इजाज़त मांगते तो वो कहला देती थीं कि नहीं! अल्लाह की क़सम! मैं उनके साथ किसी और को दफ़न नहीं होने दूँगी।

ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ने बराहे तवाज़ोअ़ ये नहीं मंज़ूर किया कि दूसरी बीवियों से बढ़ चढ़कर रहें और आँहज़रत (ﷺ) के पास दफ़न हों।

٧٣٢٩- حَدَّثَنَا أَيُّوبُ بْنُ سُلَيْمَانَ، حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ أَبِي أُوَيْسٍ، عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ بِلاَلٍ، عَنْ صَالِحِ بْنِ كَيْسَانَ قَالَ ابْنُ شِهَابٍ: أَخْبَرَنِي أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ كَانَ يُصَلِّي الْعَصْرَ فَيَأْتِي الْعَوَالِيَ وَالشَّمْسُ مُرْتَفِعَةٌ.
وَزَادَ اللَّيْثُ، عَنْ يُونُسَ وَبُعْدُ الْعَوَالِي أَرْبَعَةُ أَمْيَالٍ أَوْ ثَلاَثَةٌ. [راجع: ٥٤٨]

7329. हमसे अय्यूब बिन सुलैमान ने बयान किया, कहा हमसे अबूबक्र बिन उवैस ने बयान किया, उनसे सुलैमान बिन बिलाल ने, उनसे स़ालेह़ बिन कैसान ने, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, कि मुझे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने ख़बर दी कि रसूलुल्लाह (ﷺ) अ़स्र की नमाज़ पढ़कर उन गाँव मे जाते जो मदीना की बुलंदी पर वाक़ेअ़ हैं वहाँ पहुँच जाते और सूरज बुलंद रहता। अ़वाली मदीना का भी यही हुक्म है और लैष़ ने भी इस ह़दीष़ को यूनुस से रिवायत किया। उसमें इतना ज़्यादा है कि ये गाँव मदीना से तीन चार मील पर वाक़ेअ़ हैं। (राजेअ़ : 548)

जहाँ आपके क़दम मुबारक पहुँच गये उस जगह को तारीख़ी अहमियत ह़ासिल हो गई।

बाब के तर्जुमे से मुत़ाबक़त इस त़रह़ है कि मदीना के अत़राफ़ में बड़े बड़े गाँव थे। उनमें आँहज़रत (ﷺ) तशरीफ़

ले गये हैं तो उनको भी एक तारीख़ी बुजुर्गी हासिल है।

7330. हमसे अम्र बिन ज़ुरारह ने बयान किया, कहा हमसे क़ासिम बिन मालिक ने बयान किया, उनसे जईद ने, उन्होंने साइब बिन यज़ीद से सुना, उन्होंने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) के ज़माने में स़ाअ तुम्हारे वक़्त की मुद से एक मुद और एक तिहाई मुद का होता था, फिर स़ाअ की मिक़्दार बढ़ गई या'नी हज़रत उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ (रह.) के ज़माने में वो चार मुद का हो गया। (राजेअ : 1859)

٧٣٣٠- حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ زُرَارَةَ، حَدَّثَنَا الْقَاسِمُ بْنُ مَالِكٍ، عَنِ الْجُعَيْدِ سَمِعْتُ السَّائِبَ بْنَ يَزِيدَ يَقُولُ: كَانَ الصَّاعُ عَلَى عَهْدِ النَّبِيِّ ﷺ مُدًّا وَثُلُثًا بِمُدِّكُمُ الْيَوْمَ وَقَدْ زِيدَ فِيهِ. [راجع: ١٨٥٩]

बाब से इस हदीष़ की मुताबक़त इस तरह से है कि ख़्वाह उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ (रह.) के ज़माने में उस मुद की मिक़्दार बढ़ गई हो लेकिन अहकामे शरइया में जैसे सदक़ा फ़ित्र वग़ैरह है उसी स़ाअ का ए'तिबार रहा जो अहले मदीना और आँहज़रत (ﷺ) का था।

7331. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मस्लमा ने बयान किया, उनसे इमाम मालिक ने, उनसे इस्हाक़ बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अबी त़लहा ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, ऐ अल्लाह! इन मदीना वालों के पैमाने में इन्हें बरकत दे और इनके स़ाअ और मुद में इन्हें बरकत दे। आपकी मुराद अहले मदीना (के स़ाअ व मुद) से थी। (मदनी स़ाअ और मुद को भी तारीख़ी अ़ज़्मत हासिल है) (राजेअ: 2130)

٧٣٣١- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْلَمَةَ، عَنْ مَالِكٍ، عَنْ إِسْحَاقَ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي طَلْحَةَ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((اللَّهُمَّ بَارِكْ لَهُمْ فِي مِكْيَالِهِمْ، وَبَارِكْ لَهُمْ فِي صَاعِهِمْ وَمُدِّهِمْ)) يَعْنِي أَهْلَ الْمَدِينَةِ. [راجع: ٢١٣٠]

7332. हमसे इब्राहीम बिन मुंज़िर ने बयान किया, कहा हमसे अबू ज़म्रह ने बयान किया, कहा हमसे मूसा बिन उ़क़्बा ने, उनसे नाफ़ेअ ने और उनसे इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) के पास यहूदी एक मर्द और एक औ़रत को लेकर आए जिन्होंने ज़िना किया था तो आँहज़रत (ﷺ) उनके लिये रजम का हुक्म दियाऔर उन्हें मस्जिद की उस जगह के क़रीब रजम किया गया जहाँ जनाज़े रखे जाते हैं। (राजेअ : 1329)

٧٣٣٢- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ الْمُنْذِرِ، حَدَّثَنَا أَبُو ضَمْرَةَ، حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ عُقْبَةَ، عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ أَنَّ الْيَهُودَ جَاؤُوا إِلَى النَّبِيِّ ﷺ بِرَجُلٍ وَامْرَأَةٍ زَنَيَا فَأَمَرَ بِهِمَا فَرُجِمَا قَرِيبًا مِنْ حَيْثُ تُوضَعُ الْجَنَائِزُ عِنْدَ الْمَسْجِدِ. [راجع: ١٣٢٩]

बाब की मुताबक़त इस तरह से है कि मस्जिद के क़रीब ये मुक़ाम भी तारीख़ी तौर पर मुतबर्रक है क्योंकि आप अकष़र जनाज़े की नमाज़ भी उसी जगह पढ़ाया करते थे।

7333. हमसे इस्माईल ने बयान किया, कहा मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे मुत्तलिब के मौला अ़म्र ने और उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि उहुद पहाड़ रसूलुल्लाह (ﷺ) को (रास्ते मे) दिखाई दिया तो आपने फ़र्माया कि ये वो पहाड़ है जो हमसे मुहब्बत रखता है और हम

٧٣٣٣- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، حَدَّثَنِي مَالِكٌ عَنْ عَمْرٍو مَوْلَى الْمُطَّلِبِ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ طَلَعَ لَهُ أُحُدٌ فَقَالَ: ((هَذَا جَبَلٌ يُحِبُّنَا

وَنُحِبُّهُ، اللَّهُمَّ إِنَّ إِبْرَاهِيمَ حَرَّمَ مَكَّةَ وَإِنِّي أُحَرِّمُ مَا بَيْنَ لاَبَتَيْهَا)).
تَابَعَهُ سَهْلٌ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي أُحُدٍ.

उससे मुहब्बत रखते हैं। ऐ अल्लाह! इब्राहीम (अ.) ने मक्का को हुर्मत वाला क़रार दिया था और मैं तेरे हुक्म से उसके दोनों पथरीले किनारों के बीच इलाक़ा को हुर्मत वाला क़रार देता हूँ। इस रिवायत की मुताबअ़त सहल(रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से उहुद के बारे में की है।

उहुद पहाड़ को रसूले करीम (ﷺ) ने अपना महबूब क़रार दिया। पस ये पहाड़ हर मुसलमान के लिये महबूब है।

٧٣٣٤- حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي مَرْيَمَ، حَدَّثَنَا أَبُو غَسَّانَ، حَدَّثَنِي أَبُو حَازِمٍ، عَنْ سَهْلٍ أَنَّهُ كَانَ بَيْنَ جِدَارِ الْمَسْجِدِ مِمَّا يَلِي الْقِبْلَةَ وَبَيْنَ الْمِنْبَرِ مَمَرُّ الشَّاةِ. [راجع: ٤٩٦]

7334. हमसे इब्ने अबी मरयम ने बयान किया, कहा हमसे अबू ग़स्सान ने बयान किया, कहा मुझसे अबू हाज़िम ने बयान किया, उनसे सहल (रज़ि.) ने कि मस्जिदे नबवी की क़िब्ला की तरफ़ की दीवार और मिम्बर के बीच बकरियों के गुज़रने जितना फ़ासला था। (राजेअ़ : 496)

मस्जिदे नबवी की दीवार और मिम्बर तारीख़ी तक़द्दुस रखते हैं। **तिल्क आष़ारुना तदुल्लु अ़लैना फ़न्ज़ुरू बअ़दना इलल आष़ार।**

٧٣٣٥- حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عَلِيٍّ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ مَهْدِيٍّ، حَدَّثَنَا مَالِكٌ، عَنْ خُبَيْبِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ حَفْصِ بْنِ عَاصِمٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((مَا بَيْنَ بَيْتِي وَمِنْبَرِي رَوْضَةٌ مِنْ رِيَاضِ الْجَنَّةِ وَمِنْبَرِي عَلَى حَوْضِي)). [راجع: ١١٩٦]

7335. हमसे अ़म्र बिन अ़ली ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अ़ब्दुर्रहमान बिन मह्दी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे मालिक ने बयान किया, उनसे ख़ुबैब बिन अ़ब्दुर्रहमान ने बयान किया, उनसे हफ़्स़ बिन आ़स़िम ने बयान किया और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, मेरे हुज्रे और मेरे मिम्बर के बीच की ज़मीन जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ है और मेरा ये मिम्बर मेरे हौज़ पर होगा। (राजेअ़ : 1196)

मस्जिदे नबवी मे मज़्कूरा हिस़्सा जन्नत की क्यारी है यहाँ की नमाज़ और दुआओं मे अ़जीब लुत्फ़ होता है। **कमा जर्रब्ना मिरारन।**

٧٣٣٦- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا جُوَيْرِيَةُ، عَنْ نَافِعٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ قَالَ: سَابَقَ النَّبِيُّ ﷺ بَيْنَ الْخَيْلِ فَأُرْسِلَتِ الَّتِي ضُمِّرَتْ مِنْهَا وَأَمَدُهَا مِنَ الْحَفْيَاءِ إِلَى ثَنِيَّةِ الْوَدَاعِ، وَالَّتِي لَمْ تُضَمَّرْ أَمَدُهَا ثَنِيَّةُ الْوَدَاعِ إِلَى مَسْجِدِ بَنِي زُرَيْقٍ وَأَنَّ عَبْدَ اللهِ كَانَ فِيمَنْ سَابَقَ. [راجع: ٤٢٠]

7336. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे जुवैरिया ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ़ ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने घोड़ों की दौड़ कराई और वो घोड़े छोड़े गये जो घुड़दौड़ के लिये तैयार किये गये थे तो उनके दौड़ने का मैदान मुक़ामे हफ़्याअ से ष़निय्यतुल विदाअ़ तक था और जो तैयार नहीं किये गये थे उनके दौड़ने का मैदान ष़निय्यतुल विदाअ़ से मस्जिदे बनी ज़ुरैक़ तक था और अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) भी उन लोगों में थे जिन्होंने मुक़ाबले में हिस़्सा लिया था। (राजेअ़ : 420)

मुक़ामे हफ़्याअ से ष़निय्यतुल विदाअ़ तक का मैदान भी तारीख़ी अ़ज़्मत का ह़ामिल है क्योंकि अ़हदे रिसालत में यहाँ जिहाद

के लिये तैयारकर्दा घोड़ों की दौड़ हुआ करती थी।

7337. हमसे क़ुतैबा ने बयान किया, उनसे लैष़ ने, उनसे नाफ़ेअ़ ने और उनसे इब्ने ड़मर (रज़ि.) ने (दूसरी सनद) और मुझसे इस्हाक़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको ईसा और इब्ने इदरीस ने ख़बर दी और इब्ने अबी ग़निय्या ने ख़बर दी, उन्हे अबू हय्यान ने, उन्हें शअ़बी ने और उनसे हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ड़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने ड़मर (रज़ि.) को नबी करीम (ﷺ) के मिम्बर पर (ख़ुत़्बा देते) सुना। (राजेअ़ : 4619)

٧٣٣٧- حدَّثنَا قُتَيْبَةُ، عَنْ لَيْثٍ، عَنْ نَافِعٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ ح. وَحَدَّثَنِي إِسْحَاقُ، أَخْبَرَنَا عِيسَى وَابْنُ إِدْرِيسَ، وَابْنُ أَبِي غَنِيَّةَ، عَنْ أَبِي حَيَّانَ، عَنِ الشَّعْبِيِّ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ : سَمِعْتُ عُمَرَ عَلَى مِنْبَرِ النَّبِيِّ ﷺ. [راجع: ٤٦١٩]

7338. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुह्री ने, उन्हें साइब बिन यज़ीद ने ख़बर दी, उन्होंने ड़ष्मान बिन अ़फ़्फ़ान (रज़ि.) से सुना, जो नबी करीम (ﷺ) के मिम्बर से हमें ख़िताब कर रहे थे। (राजेअ़ : 250)

٧٣٣٨- حدَّثنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، أَخْبَرَنِي السَّائِبُ بْنُ يَزِيدَ سَمِعَ عُثْمَانَ بْنَ عَفَّانَ خَطَبَنَا عَلَى مِنْبَرِ النَّبِيِّ ﷺ. [راجع: ٢٥٠]

तश्रीह : मिम्बरे नबवी की अ़ज़्मत का क्या कहना मगर स़द अफ़सोस कि दुश्मनों ने उस मिम्बर की अ़ज़्मत को भी भुला दिया और ह़ज़रत सय्यदना ड़ष्मान ग़नी (रज़ि.) की उसी मिम्बर पर भी तौहीन की। क़द ख़ाबू व ख़सिरू फ़िदुनिया वल आख़िरह।

7339. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल आला ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम बिन हस्सान ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन ड़र्वा ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने कि आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि मेरे और रसूलुल्लाह (ﷺ) के लिये ये लगन रखी जाती थी और हम दोनों उससे एक साथ नहाते थे। (राजेअ़ : 250)

٧٣٣٩- حدَّثنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الأَعْلَى، حَدَّثَنَا هِشَامُ بْنُ حَسَّانَ أَنَّ هِشَامَ بْنَ عُرْوَةَ حَدَّثَهُ عَنْ أَبِيهِ أَنَّ عَائِشَةَ قَالَتْ: كَانَ يُوضَعُ لِي وَلِرَسُولِ اللهِ هَذَا الْمِرْكَنُ فَنَشْرَعُ فِيهِ جَمِيعًا. [راجع: ٢٥٠]

वो लगन (देग) भी तारीख़ी चीज़ बन गई।

7340. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्बाद बिन अ़ब्बाद ने बयान किया, कहा हमसे आसि़म अह़वल ने बयान किया और उनसे अनस (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने अंसार और क़ुरैश के बीच मेरे इस घर में भाईचारा कराया जो मदीना मुनव्वरह में है। (राजेअ़ : 2294)

٧٣٤٠- حدَّثنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا عَبَّادُ بْنُ عَبَّادٍ، حَدَّثَنَا عَاصِمٌ الأَحْوَلُ عَنْ أَنَسٍ قَالَ: حَالَفَ النَّبِيُّ ﷺ بَيْنَ الأَنْصَارِ وَقُرَيْشٍ فِي دَارِي الَّتِي بِالْمَدِينَةِ. [راجع: ٢٢٩٤]

7341. और आपने क़बाइले बनी सुलेम के लिये एक महीना तक दुआ-ए-क़ुनूत पढ़ी, जिसमें उनके लिये बद्दुआ की। (राजेअ़ : 1001)

٧٣٤١- وَقَنَتَ شَهْرًا يَدْعُو عَلَى أَحْيَاءٍ مِنْ بَنِي سُلَيْمٍ. [راجع: ١٠٠١]

ये वो बद बातिन ग़द्दार थे जो चंद क़ुर्आन के क़ारियों को मदऊ करके अपने पास ले गये थे फिर उनको धोखे से शहीद कर डाला था।

7342. हमसे अबू कुरैब ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, कहा हमसे बुरैद ने बयान किया, कहा कि मैं मदीना मुनव्वरह आया और अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम (रज़ि.) से मेरी मुलाक़ात हुई तो उन्होंने कहा कि मेरे साथ घर चलो तो मैं तुम्हें उस प्याले में पिलाऊँगा जिसमें रसूलुल्लाह (ﷺ) ने पिया था और फिर हम उस नमाज़ पढ़ने की जगह नमाज़ पढ़ेंगे जहाँ आँहज़रत (ﷺ) ने नमाज़ पढ़ी थी। चुनाँचे मैं उनके साथ गया और उन्होंने मुझे सत्तू पिलाया और खजूर खिलाई और मैंने उनके नमाज़ पढ़ने की जगह नमाज़ पढ़ी। (राजेअ़: 3814)

٧٣٤٢- حدَّثَنَا أبو كُرَيْبٍ حَدَّثَنَا أبو أُسَامَةَ حَدَّثَنَا بُرَيْدٌ عَنْ أَبِي بُرْدَةَ قَالَ : قَدِمْتُ الْمَدِينَةَ فَلَقِيَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ سَلاَمٍ فَقَالَ لِي انْطَلِقْ إِلَى الْمَنْزِلِ فَأَسْقِيَكَ فِي قَدَحٍ شَرِبَ فِيهِ رَسُولُ اللهِ ﷺ وَتُصَلِّي فِي مَسْجِدٍ صَلَّى فِيهِ النَّبِيُّ ﷺ فَانْطَلَقْتُ مَعَهُ فَسَقَانِي سَوِيقًا وَأَطْعَمَنِي تَمْرًا وَصَلَّيْتُ فِي مَسْجِدِهِ. [راجع: ٣٨١٤]

तश्रीह: हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन सलाम उ़लमा यहूद में से ज़बरदस्त आ़लिम थे। उनकी कुन्नियत अबू यूसुफ़ है। बनू औ़फ़ बिन ख़ज़रज के हलीफ़ थे। आँहज़रत (ﷺ) ने उनको भी जन्नत की बशारत दी। सन 43 हिजरी में मदीना में वफ़ात हुई। उनके बहुत से मनाक़िब हैं। ह़दीष़ में प्याल-ए-नबवी का ज़िक्र है। यही बाब से मुत़ाबक़त है फिर आपकी एक नमाज़ पढ़ने की जगह का भी ज़िक्र है। ऐसे तारीख़ी मक़ामात का देखने के शुक्राना पर दो रकअ़त नफ़्ल नमाज़ अदा करना भी ष़ाबित हुआ।

7343. हमसे सईद बिन रबीअ़ ने बयान किया, कहा हमसे अ़ली बिन मुबारक ने बयान किया, उनसे यह्या बिन कष़ीर ने, उनसे इक्रिमा ने बयान किया, उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने और उनसे उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि मुझसे नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि मेरे पास रात एक मेरे रब की त़रफ़ से आने वाला आया। आँहज़रत (ﷺ) उस वक़्त वादी अ़क़ीक़ में थे और कहा कि इस मुबारक वादी में नमाज़ पढ़िये और कहिये कि उ़मरह और ह़ज्ज (की निय्यत करता हूँ) और हारून बिन इस्माईल ने बयान किया कि हमसे अ़ली ने बयान किया, (उन अल्फ़ाज़ के साथ) उ़मरह फ़ी ह़ज्जतिन। (राजेअ़ : 1534)

٧٣٤٣- حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ الرَّبِيعِ حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ الْمُبَارَكِ عَنْ يَحْيَى بْنِ أَبِي كَثِيرٍ حَدَّثَنِي عِكْرِمَةُ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ أَنَّ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ حَدَّثَهُ قَالَ حَدَّثَنِي النَّبِيُّ ﷺ قَالَ أَتَانِي اللَّيْلَةَ آتٍ مِنْ رَبِّي وَهُوَ بِالْعَقِيقِ أَنْ صَلِّ فِي هَذَا الْوَادِي الْمُبَارَكِ وَقُلْ عُمْرَةٌ وَحَجَّةٌ وَقَالَ هَارُونُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ حَدَّثَنَا عَلِيٌّ عُمْرَةٌ فِي حَجَّةٍ. [راجع: ١٥٣٤]

अ़क़ीक़ एक मैदान है जो मदीना के पास आप हिजरत के नौंवे साल ह़ज्ज को चले जब उस मैदान में पहुँचे जिसका नाम अ़क़ीक़ था तो आपने ये ह़दीष़ बयान फ़र्माई। ह़दीष़ में मुबारक वादी का ज़िक्र है। यही बाब से मुत़ाबक़त है।

7344. हमसे मुहम्मद बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ष़ौरी ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन दीनार ने और उनसे इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ)ने अहले नजद के लिये मुक़ामे क़र्न, जुह़फ़ा को अहले शाम के लिये और ज़ुल हुलैफ़ह को अहले मदीना के लिये मीक़ात मुक़र्रर

٧٣٤٤- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ دِينَارٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ وَقَّتَ النَّبِيُّ ﷺ قَرْنًا: لأَهْلِ نَجْدٍ وَالْجُحْفَةَ لأَهْلِ الشَّامِ وَذَا الْحُلَيْفَةِ لأَهْلِ

किया। बयान किया कि मैंने ये नबी करीम (ﷺ) से सुना और मुझे मा'लूम हुआ है कि आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अहले यमन के लिये यलमलम (मीक़ात है) और इराक़ का ज़िक्र हुआ तो उन्होंने कहा कि आँहज़रत (ﷺ) के ज़माने में इराक़ नहीं था।

الْمَدِينَةِ: قَالَ سَمِعْتُ هَذَا مِنَ النَّبِيِّ ﷺ وَبَلَغَنِي أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ: قَالَ: ((وَلأَهْلِ الْيَمَنِ (يَلَمْلَمُ)) وَذُكِرَ الْعِرَاقُ فَقَالَ : لَمْ يَكُنْ عِرَاقٌ يَوْمَئِذٍ.

ये मीक़ात एहरामे हज्ज की मीक़ात हैं इस लिहाज़ से क़ाबिले ज़िक्र हैं यही बाब से मुताबक़त है।

7345. हमसे अ़ब्दुर्रहमान बिन मुबारक ने बयान किया, कहा हमसे फ़ुज़ैल ने बयान किया, उन्हों ने कहा हमसे मूसा बिन इस्माईल बिन उ़क़्बा ने बयान किया, उनसे सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह ने, उनसे उनके वालिद अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) को जबकि आप मुक़ामे ज़ुल हुलैफ़ह में पड़ाव किये हुए थे, ख़्वाब दिखाया गया और कहा गया कि आप एक मुबारक वादी में हैं। (राजेअ़ : 483)

٧٣٤٥ - حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ الْمُبَارَكِ حَدَّثَنَا الْفُضَيْلُ حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ عُقْبَةَ حَدَّثَنِي سَالِمُ بْنُ عَبْدِ اللهِ عَنْ أَبِيهِ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ أُرِيَ وَهُوَ فِي مُعَرَّسِهِ بِذِي الْحُلَيْفَةِ فَقِيلَ لَهُ إِنَّكَ بِبَطْحَاءَ مُبَارَكَةٍ. [راجع: ٤٨٣]

तश्रीह : जुलहुलैफ़ह में एक मुबारक वादी है जिसका ज़िक्र किया गया। ह़ाफ़िज़ ने कहा इमाम बुख़ारी (रह़.) ने इस बाब में जो अह़ादीष़ बयान की उससे मदीना की फ़ज़ीलत ज़ाहिर की और इसकी फ़ज़ीलत में शक क्या है? वहाँ वह्य उतरती रही, वहीं आँह़ज़रत (ﷺ) की क़ब्र है और मिम्बर है जो बहिश्त की एक क्यारी है। कलाम इसमें हैं कि क्या मदीना के आ़लिम दूसरे मुल्कों के आ़लिमों पर मुक़द्दम हैं, तो अगर ये मक़सूद हो कि आँह़ज़रत (ﷺ) के ज़माने में या उस ज़माने में जब तक स़ह़ाबा किराम (रज़ि.) मदीना में जमा थे तो ये मुसल्लम हैं। अगर ये मुराद हो कि हर ज़माने में तो इसमें नज़ाअ़ है और कोई वजह नहीं कि मदीने के आ़लिम हर ज़माने में दूसरे मुल्कों के आ़लिमों पर मुक़द्दम हों। इसलिये कि अइम्म-ए-मुज्तहिदीन के ज़माने के बाद फिर मदीना में एक भी आ़लिम ऐसा नहीं हुआ जो दूसरे मुल्कों के किसी आ़लिम से भी ज़्यादा इ़ल्म रखता हो या दूसरे मुल्कों के सब आ़लिमों से बढ़कर हो बल्कि मदीना में ऐसे-ऐसे बिदअ़ती और बदनिय्यत लोग जाकर रहे जिसके बिदअ़ती और बदनिय्यत होने में कोई शक नहीं हो सकता।

बाब 17 : अल्लाह तआ़ला का फ़र्मान सूरह आले इमरान में कि ऐ पैग़म्बर! आपको उस काम में कोई दख़ल नहीं आख़िर आयत तक

١٧ - باب قَوْلِ اللهِ تَعَالَى : ﴿لَيْسَ لَكَ مِنَ الأَمْرِ شَيْءٌ﴾

7346. हमसे अह़मद बिन मुह़म्मद ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, कहा हमको मअ़मर ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुह्री ने, उन्हें सालिम ने और उन्हे अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने, उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से सुना, आप फ़ज्र की नमाज़ में ये दुआ़ रुकूअ़ से सर उठाने के बाद पढ़ते थे कि, ऐ अल्लाह! फ़लाँ और फ़लाँ को अपनी रह़मत से दूर कर दे। उस पर अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल ने ये आयत नाज़िल की कि आपको इस मामले में कोई इख़्तियार नहीं है। या

٧٣٤٦ - حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ مُحَمَّدٍ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ سَالِمٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ أَنَّهُ سَمِعَ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ فِي صَلاَةِ الْفَجْرِ رَفَعَ رَأْسَهُ مِنَ الرُّكُوعِ قَالَ: ((اللَّهُمَّ رَبَّنَا وَلَكَ الْحَمْدُ فِي الأَخِيرَةِ)) ثُمَّ قَالَ : ((اللَّهُمَّ الْعَنْ فُلاَنًا

وَفُلاَنًا)) فَأَنْزَلَ اللهُ عَزَّ وَجَلَّ: ﴿لَيْسَ لَكَ مِنَ الأَمْرِ شَيْءٌ أَوْ يَتُوبَ عَلَيْهِمْ أَوْ يُعَذِّبَهُمْ فَإِنَّهُمْ ظَالِمُونَ﴾ [آل عمران: ١٢٨]. [راجع: ٤٦٩]

अल्लाह! उनकी तौबा क़ुबूल कर ले या उन्हें अ़ज़ाब दे कि बिला शुब्हा वो ह़द से तजावुज़ करने वाले हैं। (राजेअ़ : 469)

١٨- باب قَوْلِهِ تَعَالَى : ﴿وَكَانَ الإِنْسَانُ أَكْثَرَ شَيْءٍ جَدَلاً﴾ [الكهف: ٥٤] وَقَوْلِهِ تَعَالَى: ﴿وَلاَ تُجَادِلُوا أَهْلَ الْكِتَابِ إِلاَّ بِالَّتِي هِيَ أَحْسَنُ﴾ [العنكبوت: ٤٦].

बाब 18 : अल्लाह तआ़ला का इर्शाद सूरह कहफ़ में, और इंसान सबसे ज़्यादा झगड़ालू है

और इर्शादे ख़ुदावन्दी सूरह अ़न्कबूत में, और तुम अहले किताब से बह़ष़ न करो लेकिन उस त़रीक़े से जो अच्छा हो या'नी नर्मी के साथ अल्लाह के पैग़म्बरों और उसकी किताबों का अदब मल्ह़ूज़ रखकर उनसे बह़ष़ करो। (अ़न्कबूत : 46)

٧٣٤٧- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ ح. حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ سَلاَمٍ أَخْبَرَنَا عَتَّابُ بْنُ بَشِيرٍ عَنْ إِسْحَاقَ عَنِ الزُّهْرِيِّ أَخْبَرَنِي عَلِيُّ بْنُ حُسَيْنٍ أَنَّ حُسَيْنَ بْنَ عَلِيٍّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَخْبَرَهُ أَنَّ عَلِيَّ بْنَ أَبِي طَالِبٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ إِنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ طَرَقَهُ وَفَاطِمَةَ عَلَيْهَا السَّلاَمُ بِنْتَ رَسُولِ اللهِ ﷺ فَقَالَ لَهُمْ أَلاَ تُصَلُّونَ فَقَالَ عَلِيٌّ فَقُلْتُ يَا رَسُولَ اللهِ إِنَّمَا أَنْفُسُنَا بِيَدِ اللهِ فَإِذَا شَاءَ أَنْ يَبْعَثَنَا بَعَثَنَا فَانْصَرَفَ رَسُولُ اللهِ ﷺ حِينَ قَالَ لَهُ ذَلِكَ : وَلَمْ يَرْجِعْ إِلَيْهِ شَيْئًا، ثُمَّ سَمِعَهُ وَهُوَ مُدْبِرٌ يَضْرِبُ فَخِذَهُ وَهُوَ يَقُولُ: ﴿وَكَانَ الإِنْسَانُ أَكْثَرَ شَيْءٍ جَدَلاً﴾. مَا أَتَاكَ لَيْلاً فَهُوَ طَارِقٌ وَيُقَالُ الطَّارِقُ: النَّجْمُ وَالثَّاقِبُ الْمُضِيءُ يُقَالُ: أَثْقِبْ نَارَكَ لِلْمُوقِدِ. [راجع: ١١٢٧]

7347. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐ़ब ने ख़बर दी (दूसरी सनद) इमाम बुख़ारी (रह.) ने कहा कि और मुझसे मुह़म्मद बिन सलाम बैकुन्दी ने बयान किया, कहा हमको अ़त्ताब बिन बशीर ने ख़बर दी, उन्हें इस्ह़ाक़ इब्ने अबी राशिद ने, उन्हें ज़ुह्‌री ने, उन्हे ज़ैनुल आ़बेदीन अ़ली बिन हुसैन (रज़ि.) ने ख़बर दी और उन्हें उनके वालिद हुसैन बिन अ़ली (रज़ि.) ने ख़बर दी कि अ़ली बिन अबी त़ालिब (रज़ि.) ने बयान किया कि उनके और फ़ात़िमा बिन्ते रसूलुल्लाह (अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम) के घर एक रात आँह़ज़रत (ﷺ) तशरीफ़ लाए और फ़र्माया क्या तुम लोग तहज्जुद की नमाज़ नहीं पढ़ते। अ़ली (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने अ़र्ज़ किया, या रसूलल्लाह! हमारी जानें अल्लाह के हाथ में हैं पस जब वो हमें उठाना चाहे तो हमको उठा देगा। ज्यों ही मैंने आँह़ज़रत (ﷺ) से ये कहा तो आप पीठ मोड़कर वापस जाने लगे और कोई जवाब नहीं दिया लेकिन वापस जाते हुए आप अपनी रान पर हाथ मार रहे थे और कह रहे थे कि, और इंसान बड़ा ही झगड़ालू है, अगर कोई तुम्हारे पास रात में आए तो त़ारिक़ कहलाएगा और क़ुर्आन में जो वत्त़ारिक़ का लफ़्ज़ आया है उससे मुराद सितारा है और ष़ाक़िब बमा'नी चमकता हुआ। अ़रब लोग आग जलाने वाले से कहते हैं अष़्क़ुब नारक या'नी आग रोशन कर। इससे लफ़्ज़े ष़ाक़िब है।(राजेअ़ : 1127)

तश्रीह : हज़रत अली (रज़ि.) ने ये जवाब बतरीक़ इंकार के नहीं दिया मगर उनसे नींद की हालत में ये कलाम निकल गया, इसमे शक नहीं कि अगर वो आँहज़रत (ﷺ) के फ़र्माने पर उठ खड़े होते और नमाज़ पढ़ते तो और ज़्यादा अफ़ज़ल होता। अगरचे हज़रत अली (रज़ि.) ने जो कहा वो भी दुरुस्त था मगर किसी शख़्स का जगाना और बेदार करना भी अल्लाह ही का जगाना और बेदार करना है। हज़रत अली (रज़ि.) का उस मौक़े पर ये कहना कि जब अल्लाह हमको जगाएगा तो उठेंगे महज़ मुजादिला और मुकाबिरा था, इसलिये आँहज़रत (ﷺ) ये आयत पढ़ते हुए तशरीफ़ ले गये। और तहज्जुद की नमाज़ कुछ फ़र्ज़ न थी कि आँहज़रत (ﷺ) उनको मजबूर करते। दूसरे मुम्किन है कि हज़रत अली (रज़ि.) उसके बाद उठे हों और तहज्जुद की नमाज़ पढ़ी हो। (वहीदी)

٧٣٤٨- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ سَعِيدٍ عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ بَيْنَا نَحْنُ فِي الْمَسْجِدِ خَرَجَ رَسُولُ اللهِ ﷺ فَقَالَ: انْطَلِقُوا إِلَى يَهُودَ فَخَرَجْنَا مَعَهُ حَتَّى جِئْنَا بَيْتَ الْمِدْرَاسِ فَقَامَ النَّبِيُّ ﷺ فَنَادَاهُمْ فَقَالَ: ((يَا مَعْشَرَ يَهُودَ أَسْلِمُوا تَسْلَمُوا)) فَقَالُوا: بَلَّغْتَ يَا أَبَا الْقَاسِمِ قَالَ: فَقَالَ لَهُمْ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((ذَلِكَ أُرِيدُ أَسْلِمُوا تَسْلَمُوا)) فَقَالُوا: قَدْ بَلَّغْتَ يَا أَبَا الْقَاسِمِ فَقَالَ لَهُمْ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((ذَلِكَ أُرِيدُ)) ثُمَّ قَالَهَا الثَّالِثَةَ فَقَالَ: ((اعْلَمُوا إِنَّمَا الأَرْضُ للهِ وَرَسُولِهِ، وَإِنِّي أُرِيدُ أَنْ أُجْلِيَكُمْ مِنْ هَذِهِ الأَرْضِ، فَمَنْ وَجَدَ مِنْكُمْ بِمَالِهِ شَيْئًا فَلْيَبِعْهُ، وَإِلاَّ فَاعْلَمُوا أَنَّمَا الأَرْضُ للهِ وَرَسُولِهِ)).

[راجع: ٣١٦٧]

7348. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, उनसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे सईद मक़्बरी ने, उनसे उनके वालिद अबू सईद कैसान ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि हम मस्जिदे नबवी में थे कि रसूलुल्लाह (ﷺ) बाहर तशरीफ़ लाए और फ़र्माया यहूदियों के पास चलो। चुनाँचे हम आँहज़रत (ﷺ) के साथ रवाना हुए। जब हम उनके मदरसे तक पहुँचे तो आँहज़रत (ﷺ) ने खड़े होकर उन्हें आवाज़ दी और फ़र्माया ऐ यहूदियों! इस्लाम लाओ तो तुम सलामत रहोगे। इस पर यहूदियों ने कहा कि अबुल क़ासिम! आप (ﷺ) ने अल्लाह का हुक्म पहुँचा दिया। रावी ने बयान किया कि आँहज़रत (ﷺ) ने दोबारा उनसे फ़र्माया कि यही मेरा मक़्सद है, इस्लाम लाओ तो तुम सलामत रहोगे। उन्होंने कहा कि अबुल क़ासिम! आपने अल्लाह का पैग़ाम पहुँचा दिया। फिर आपने यही बात तीसरी बार कही और फ़र्माया, जान लो कि सारी ज़मीन अल्लाह और उसके रसूल की है और मैं चाहता हूँ कि तुम्हें इस जगह से बाहर कर दूँ। पस तुममें से जो कोई अपनी जायदाद के बदले में कोई क़ीमत पाता हो तो उसे बेच ले वरना जान लो कि ज़मीन अल्लाह और उसके रसूल की है। (तुमको ये शहर छोड़ना होगा)। (राजेअ : 3167)

١٩- باب قَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿وَكَذَلِكَ جَعَلْنَاكُمْ أُمَّةً وَسَطًا﴾ [البقرة ١٤٣] وَمَا أَمَرَ النَّبِيُّ ﷺ بِلُزُومِ الْجَمَاعَةِ وَهُمْ أَهْلُ الْعِلْمِ.

बाब 19 : अल्लाह तआ़ला का इर्शाद, और मैंने इसी तरह

तुम्हें उम्मते वस्त बना दिया (या'नी मोतदिल और सीधी राह पर चलने वाली) और उसके बारे में रसूलुल्लाह (ﷺ) ने जमाअ़त को लाज़िम पकड़ने का हुक्म दिया और आपकी मुराद जमाअ़त से अहले इल्म की जमाअ़त थी।

٧٣٤٩- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ مَنْصُورٍ،

7349. हमसे इस्हाक़ बिन मंसूर ने बयान किया, कहा हमसे

حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، حَدَّثَنَا أَبُو صَالِحٍ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((يُجَاءُ بِنُوحٍ يَوْمَ الْقِيَامَةِ، فَيُقَالُ لَهُ: هَلْ بَلَّغْتَ؟ فَيَقُولُ: نَعَمْ. يَا رَبِّ فَتُسْأَلُ أُمَّتُهُ هَلْ بَلَّغَكُمْ فَيَقُولُونَ مَا جَاءَنَا مِنْ نَذِيرٍ فَيَقُولُ مَنْ شُهُودُكَ فَيَقُولُ مُحَمَّدٌ وَأُمَّتُهُ فَيُجَاءُ بِكُمْ فَتَشْهَدُونَ)) ثُمَّ قَرَأَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ﴿وَكَذَلِكَ جَعَلْنَاكُمْ أُمَّةً وَسَطًا﴾ - قَالَ عَدْلاً - ﴿لِتَكُونُوا شُهَدَاءَ عَلَى النَّاسِ وَيَكُونَ الرَّسُولُ عَلَيْكُمْ شَهِيدًا﴾ [البقرة : ١٤٣]. وَعَنْ جَعْفَرِ بْنِ عَوْنٍ، حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ بِهَذَا.
[راجع: ٣٣٣٩]

अबू उसामा ने बयान किया, कहा हमसे आ'मश ने बयान किया, कहा हमसे अबू स़ालेह़ (ज़क्वान) ने बयान किया, उनसे अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया क़यामत के दिन नूह़ (अ.) को लाया जाएगा और उनसे पूछा जाएगा, क्या तुमने अल्लाह का पैग़ाम पहुँचा दिया था? वो अ़र्ज़ करेंगे कि हाँ ऐ रब! फिर उनकी उम्मत से पूछा जाएगा कि क्या इन्होंने तुम्हें अल्लाह का पैग़ाम पहुँचा दिया था? वो कहेंगे कि हमारे पास कोई डराने वाला नहीं आया। अल्लाह तआला ह़ज़रत नूह़ (अ.) से पूछेगा, तुम्हारे गवाह कौन हैं? नूह़ (अ.) अ़र्ज़ करेंगे कि मुह़म्मद (ﷺ) और उनकी उम्मत। फिर तुम्हें लाया जाएगा और तुम लोग उनके ह़क़ में शहादत (गवाही) दोगे, फिर रसूलुल्लाह (ﷺ) ने ये आयत पढ़ी, और इसी त़रह़ मैंने तुम्हें दरम्यानी उम्मत बनाया, कहा कि वस्त़ बमा'नी अ़दल (मियानारवी) है, ताकि तुम लोगों के लिए गवाह बनो और रसूल तुम पर गवाह बने। इस्ह़ाक़ बिन मंस़ूर से जा'फ़र बिन औ़न ने रिवायत किया, कहा हमसे आ'मश ने बयान किया, उनसे अबू स़ालेह़ ने, उनसे अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने और उनसे नबी करीम (ﷺ) ने यही ह़दीष़ बयान की। (राजेअ़ : 3339)

तश्रीह : ह़ालाँकि मुसलमानों ने ह़ज़रत नूह़ (अ.) को दुनिया में नहीं देखा न उनकी उम्मत वालों को मगर यक़ीन के साथ गवाही देंगे क्योंकि जो बात अल्लाह और रसूल के फ़र्माने से और तवातुर के साथ सुनी जाए वो मिष्ल देखी हुई बात की यक़ीनी होती है और दुनिया में भी ऐसी गवाही ली जाती है। मष़लन एक शख़्स़ किसी का बेटा हो और सब लोगों में मशहूर हो तो ये गवाही दे सकते हैं कि वो फ़लाँ शख़्स़ का बेटा है ह़ालाँकि उसको पैदा होते वक़्त आँख से किसी ने नहीं देखा। इस आयत से कुछ ने ये निकाला है कि इज्माअ़ हुज्जत है क्योंकि अल्लाह तआ़ला ने इस उम्मत को उम्मते आ़दिला फ़र्माया और ये मुम्किन नहीं कि सारी उम्मत का इज्माअ़ नाह़क़ और बात़िल पर हो जाए।

٢٠- بَابُ إِذَا اجْتَهَدَ الْعَامِلُ - أَوِ الْحَاكِمُ- فَأَخْطَأَ خِلاَفَ الرَّسُولِ مِنْ غَيْرِ عِلْمٍ، فَحُكْمُهُ مَرْدُودٌ لِقَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ: ((مَنْ عَمِلَ عَمَلاً لَيْسَ عَلَيْهِ أَمْرُنَا فَهُوَ رَدٌّ)).

बाब 20 : जबकि कोई आ़मिल या ह़ाकिम इज्तिहाद करे और लाइल्मी में रसूल (ﷺ) के हुक्म के ख़िलाफ़ कर जाए तो उसका फ़ैस़ला नाफ़िज़ नहीं होगा क्योंकि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया था कि जिसने कोई ऐसा काम किया जिसके बारे में हमारा कोई फ़ैस़ला नहीं था तो वो रद्द है

उन कुछ लोगों के क़ौल की तर्दीद मक़्स़ूद है जो क़ाज़ी के हर फ़ैस़ले को बहरह़ाल नाफ़िज़ व ह़क़ क़रार देते हैं।

7350, 7351. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, उनसे उनके भाई अबूबक्र ने बयान किया, उनसे सुलैमान बिन बिलाल ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल मजीद बिन सुहैल बिन अ़ब्दुर्रहमान बिन औ़फ़ ने बयान किया, उन्होंने सईद बिन मुसय्यब से सुना, वो अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) और अबू हुरैरह (रज़ि.) से बयान करते थे कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने बनी अ़दी अंसारी के एक साह़ब सुवाद बिन अ़ज़िया को ख़ैबर का आमिल बनाकर भेजा तो वो उ़म्दह क़िस्म की खजूरें वसूल करके लाए। आँहुज़ूर (ﷺ) ने पूछा क्या ख़ैबर की तमाम खजूरें ऐसी ही हैं? उन्होंने कहा कि नहीं या रसूलल्लाह! अल्लाह की क़सम! हम ऐसी एक स़ाअ़ खजूर दो स़ाअ़ (ख़राब) खजूर के बदले ख़रीद लेते हैं। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि ऐसा न किया करो बल्कि (जिंस को जिंस के बदले) बराबर बराबर में ख़रीदो, या यूँ करो कि रद्दी खजूर नक़द बेच डालो फिर ये खजूर उसके बदले ख़रीद लो। इसी त़रह हर चीज़ को जो तौलकर बिकती है उसका हुक्म उन ही चीज़ों का है जो नाप कर बिकती हैं। (राजेअ़ : 2201,2202)

٧٣٥٠، ٧٣٥١- حدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، عَنْ أَخِيهِ عَنْ سُلَيْمَانَ بْنِ بِلاَلٍ، عَنْ عَبْدِ الْمَجِيدِ بْنِ سُهَيْلِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَوْفٍ أَنَّهُ سَمِعَ سَعِيدَ بْنَ الْمُسَيَّبِ يُحَدِّثُ أَنَّ أَبَا سَعِيدٍ الْخُدْرِيَّ وَأَبَا هُرَيْرَةَ حَدَّثَاهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ بَعَثَ أَخَا بَنِي عَدِيٍّ الأَنْصَارِيَّ وَاسْتَعْمَلَهُ عَلَى خَيْبَرَ فَقَدِمَ بِتَمْرٍ جَنِيبٍ فَقَالَ لَهُ رَسُولُ اللهِ ﷺ ((أَكُلُّ تَمْرِ خَيْبَرَ هَكَذَا)) قَالَ: لاَ وَاللهِ يَا رَسُولَ اللهِ إِنَّا لَنَشْتَرِي الصَّاعَ بِالصَّاعَيْنِ مِنَ الْجَمْعِ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((لاَ تَفْعَلُوا، وَلَكِنْ مِثْلاً بِمِثْلٍ - أَوْ بِيعُوا هَذَا - وَاشْتَرُوا بِثَمَنِهِ مِنْ هَذَا وَكَذَلِكَ الْمِيزَانُ)). [راجع: ٢٢٠١، ٢٢٠٢]

बाब 21 : ह़ाकिम का स़वाब, जबकि वो इज्तिहाद करे और स़ेह़त पर हो या ग़लती़ कर जाए

٢١- باب أَجْرِ الْحَاكِمِ إِذَا اجْتَهَدَ فَأَصَابَ أَوْ أَخْطَأَ

स़वाब बहरह़ाल मिलेगा।

7352. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यज़ीद मुक़्री मक्की ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे ह़ैवह बिन शुरैह ने बयान किया, उन्होंने कहा मुझसे यज़ीद बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अल्हाद ने बयान किया, उनसे मुह़म्मद बिन इब्राहीम बिन ह़ारिस़ ने, उनसे बुस्र बिन सईद ने, उनसे अ़म्र बिन आ़स़ के मौला अबू क़ैस ने, उनसे अ़म्र बिन आ़स़ (रज़ि.) ने, उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना, आपने फ़र्माया कि जब ह़ाकिम कोई फ़ैस़ला अपने इज्तिहाद से करे और फ़ैस़ला स़ह़ीह़ हो तो उसे दोहरा स़वाब मिलता है और जब किसी फ़ैस़ले में इज्तिहाद करे और ग़लती़ कर जाए तो उसे इकहरा स़वाब मिलता है (इज्तिहाद का) बयान किया कि फिर मैंने ये ह़दीस़ अबूबक्र बिन अ़म्र बिन ह़ज़म से बयान की तो उन्होंने बयान किया कि मुझसे अबू

٧٣٥٢- حدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يَزِيدَ الْمُقْرِىءُ الْمَكِّيُّ، حَدَّثَنَا حَيْوَةُ بْنُ شُرَيْحٍ، حَدَّثَنِي يَزِيدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ الْهَادِ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ بْنِ الْحَارِثِ، عَنْ بُسْرِ بْنِ سَعِيدٍ، عَنْ أَبِي قَيْسٍ مَوْلَى عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ، عَنْ عَمْرِو بْنِ الْعَاصِ أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((إِذَا حَكَمَ الْحَاكِمُ فَاجْتَهَدَ ثُمَّ أَصَابَ فَلَهُ أَجْرَانِ، وَإِذَا حَكَمَ فَاجْتَهَدَ ثُمَّ أَخْطَأَ فَلَهُ أَجْرٌ)) قَالَ: فَحَدَّثْتُ

بِهَذَا الْحَدِيثِ أَبَا بَكْرِ بْنِ عَمْرِو بْنِ حَزْمٍ فَقَالَ: هَكَذَا حَدَّثَنِي أَبُو سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ. وَقَالَ عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ الْمُطَّلِبِ: عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي بَكْرٍ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ مِثْلَهُ.

सलमा बिन अ़ब्दुर्रहमान ने इसी त़रह़ बयान किया और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया। और अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन मुत़्त़लिब ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन अबीबक्र ने बयान किया, उनसे अबू सलमा (रज़ि.) ने बयान किया और उनसे नबी करीम (ﷺ) ने इसी त़रह़ बयान किया।

तशरीह : या'नी मुर्सलन रिवायत की, उसके वालिद ने मौसूलन रिवायत की थी। इस ह़दीष़ से ये निकला कि हर मसले में ह़क़ एक ही अम्र होता है लेकिन मुज्तहिद अगर ग़लती करे तो भी उससे मुवाख़ज़ा न होगा बल्कि उसको अज्र और ष़वाब मिलेगा। ये उस सूरत में है जब मुज्तहिद जान बूझकर नस़ या इज्माअ़ का ख़िलाफ़ न करे वरना गुनहगार होगा और उसकी अ़दालत जाती रहेगी। जैसे ऊपर गुज़र चुका। इस ह़दीष़ से कुछ ने ये भी निकाला है कि हर क़ाज़ी मुज्तहिद होना चाहिये वरना उसकी क़ज़ा स़ह़ीह़ न होगी। अहले ह़दीष़ का यही क़ौल है और यही राजेह़ है और ह़नफ़िया ने मुक़ल्लिद क़ाज़ी की भी क़ज़ा जाइज़ रखी है और ये कहा है कि मुक़ल्लिद को अपने इमाम के हुक्म के बरख़िलाफ़ हुक्म देना जाइज़ नहीं मगर उस पर कोई दलील नहीं है। मुम्किन है कि आदमी कुछ मसाइल में मुक़ल्लिद हो कुछ मसाइल में मुज्तहिद हो जिस मसले में आदमी तमाम दलाइल को अच्छी त़रह़ देख ले उसमें वो मुज्तहिद हो जाता है और जब उस मसले में मुज्तहिद हो गया तो अब उसको इस मसले में तक़्लीद दुरुस्त नहीं है बल्कि दलील पर अ़मल करना चाहिये। यही क़ौल ह़क़ और यही ष़वाब है और जिसने इसके ख़िलाफ़ किया है कि दलील मा'लूम होने पर भी उसके ख़िलाफ़ अपने इमाम की तक़्लीद पर जमा रहा उसका क़ौल नामा'कूल और ग़लत़ है। दलील मा'लूम होने के बाद दलील की पैरवी करना ज़रूरी है और तक़्लीद जाइज़ नहीं और अल्लाह तआ़ला ने जाबजा क़ुर्आन मे ऐसे मुक़ल्लिदों की मज़म्मत की है जो दलील मा'लूम होने पर भी तक़्लीद पर जमे रहते थे ये स़रीह़ जिहालत और नाइंसाफ़ी है।

बाब 22 : उस शख़्स़ का रद्द जो ये समझता है

٢٢- باب الْحُجَّةِ عَلَى مَنْ قَالَ: إِنَّ أَحْكَامَ النَّبِيِّ ﷺ كَانَتْ ظَاهِرَةً وَمَا كَانَ يَغِيبُ بَعْضُهُمْ عَنْ مَشَاهِدِ النَّبِيِّ ﷺ وَأُمُورِ الإِسْلاَمِ

कि आँह़ज़रत (ﷺ) के तमाम अह़काम हर एक स़ह़ाबी को मा'लूम रहते थे इस बाब में ये भी बयान किया है कि बहुत से स़ह़ाबा आँह़ज़रत (ﷺ) के पास से ग़ायब रहते थे और उनको इस्लाम की कई बातों की ख़बर न होती थी।

तशरीह : तो कुछ बात अकाबिर स़ह़ाबा पर जैसे ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) या अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) थे, पोशीदा रह जाती। जब दूसरे स़ह़ाबा से सुनते तो फ़ौरन उस पर अ़मल करते और अपनी राय से रुजूअ़ करते। स़ह़ाबा, ताबेईन, अइम्मा-ए-दीन सबके ज़मानों में यही होता रहा कुछ अह़ादीष़ उनको पहुँचीं, कुछ न पहुँचीं क्योंकि उस ज़माने में ह़दीष़ की किताबें जमा नहीं हुई थीं। अब ह़नफ़िया का ये समझना कि इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह़.) को सब अह़ादीष़ पहुँची थीं बिलकुल ख़िलाफ़े अ़क़्ल और ख़िलाफ़े वाक़िया है। ऐसा होता तो ख़ुद इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह़.) ये क्यूँ फ़र्माते कि जहाँ तुमको आँह़ज़रत (ﷺ) की ह़दीष़ मिल जाए तो मेरा क़ौल छोड़ दो। जब ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) को सब अह़ादीष़ न पहुँची हों तो इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह़.) की निस्बत ये ख़्याल करना क्यूँकर स़ह़ीह़ हो सकता है और जब ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) से कुछ मसाइल मे ग़लती हुई है तो और इमाम या मुज्तहिद किस शुमार व क़त़ार में हैं। पस अस़ल इमाम व मुक़्तदा मा'सूम अ़निल ख़त़ा सय्यदना मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह (ﷺ) ही हैं। उम्मत में किसी का ये मुक़ाम नहीं है।

٧٣٥٣- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا يَحْيَى، عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ، حَدَّثَنِي عَطَاءٌ، عَنْ عُبَيْدِ

7353. हमसे मुसद्दद बिन मुसर्हिद ने बयान किया, कहा हमसे यह़्या बिन सईद क़त़्त़ान ने बयान किया, उनसे इब्ने जुरैज

ने, उनसे अ़ता बिन अबी रिबाह़ ने, उनसे उ़बैद बिन उ़मैर ने बयान किया कि अबू मूसा अश्अ़री (रज़ि.) ने उ़मर (रज़ि.) से (मिलने की) इजाज़त चाही और ये देखकर कि ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) मशग़ूल हैं आप जल्दी से वापस चले गये। फिर उ़मर (रज़ि.) ने कहा कि क्या मैंने अभी अ़ब्दुल्लाह बिन कैस (अबू मूसा रज़ि .) की आवाज़ नहीं सुनी थी? उन्हें बुला लो। चुनाँचे उन्हें बुलाया गया तो उ़मर (रज़ि.) ने पूछा कि ऐसा क्यूँ किया? (कि जल्दी वापस हो गये) उन्होंने कहा कि हमें ह़दीष़ में इसका हुक्म दिया गया है। ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने कहा कि इस ह़दीष़ पर कोई गवाह लाओ, वरना मैं तुम्हारे साथ ये (सख़्ती) करूँगा। चुनाँचे ह़ज़रत अबू मूसा (रज़ि.) अंस़ार की एक मज्लिस में गये। उन्होंने कहा कि इसकी गवाही हममें से सबसे छोटा दे सकता है। चुनाँचे अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) खड़े हुए और कहा कि हमें दरबारे नबवी से इसका हुक्म दिया जाता था। इस पर उ़मर (रज़ि.) ने कहा कि आँह़ज़रत (ﷺ) का ये हुक्म मुझे मा'लूम नहीं था, मुझे बाज़ार के कामों ख़रीद व फ़रोख़्त ने इस ह़दीष़ से ग़ाफ़िल रखा। (राजेअ़ : 2062)

بْنِ عُمَيْرٍ قَالَ: اسْتَأْذَنَ أَبُو مُوسَى عَلَى عُمَرَ فَكَأَنَّهُ وَجَدَهُ مَشْغُولاً فَرَجَعَ فَقَالَ عُمَرُ: أَلَمْ أَسْمَعْ صَوْتَ عَبْدِ اللهِ بْنِ قَيْسٍ ائْذَنُوا لَهُ؟ فَدُعِيَ لَهُ فَقَالَ: مَا حَمَلَكَ عَلَى مَا صَنَعْتَ؟ فَقَالَ: إِنَّا كُنَّا نُؤْمَرُ بِهَذَا، قَالَ: فَأْتِنِي عَلَى هَذَا بِبَيِّنَةٍ أَوْ لأَفْعَلَنَّ بِكَ، فَانْطَلَقَ إِلَى مَجْلِسٍ مِنَ الأَنْصَارِ فَقَالُوا: لاَ يَشْهَدُ إِلاَّ أَصَاغِرُنَا، فَقَامَ أَبُو سَعِيدٍ الْخُدْرِيُّ فَقَالَ : قَدْ كُنَّا نُؤْمَرُ بِهَذَا، فَقَالَ عُمَرُ: خَفِيَ عَلَيَّ هَذَا مِنْ أَمْرِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَلْهَانِي الصَّفْقُ بِالأَسْوَاقِ.

[راجع: ٢٠٦٢]

ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने अपनी निस्यान (भूल) को फ़ौरन तस्लीम करके ह़दीषे नबवी के आगे सर झुका दिया। एक मोमिन मुसलमान की यही शान होनी चाहिये कि ह़दीषे पाक के सामने इधर उधर की बातें छोड़कर सरे तस्लीम ख़म कर दे। बाब और ह़दीष़ में मुताबक़त ज़ाहिर है कि कुछ अह़ादीष़ ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) को बाद में मा'लूम हुईं, ये कोई ऐ़ब की बात नहीं है। मज़्मूने ह़दीष़ एक बहुत बड़े अदबी, अख़्लाक़ी, समाजी अम्र पर मुश्तमिल है अल्लाह हर मुसलमान को इस पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ दे, आमीन।

7354. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने, कहा मुझसे ज़ुह्री ने, उन्होंने अअ़रज से सुना, उन्होने बयान किया कि मुझे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने ख़बर दी, उन्होंने कहा कि तुम समझते हो कि अबू हुरैरह (रज़ि.) रसूलुल्लाह (ﷺ) की बहुत ज़्यादा ह़दीष़ बयान करते हैं, अल्लाह के हुज़ूर में सबको जाना है। बात ये थी कि मैं एक मिस्कीन शख़्स था और पेट भरने के बाद हर वक़्त आँह़ज़रत (ﷺ) के साथ रहना चाहता था लेकिन मुहाजिरीन को बाज़ार के कारोबार मशग़ूल रखते थे और अंस़ार को अपने माला की देखभाल मस़रूफ़ रखती थी। मैं एक दिन आँह़ज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर था और आपने फ़र्माया कि कौन अपनी चादर फैलाएगा, यहाँ तक मैं अपनी बात पूरी कर लूँ और फिर वो अपनी चादर समेट ले और उसके बाद कभी मुझसे सुनी हुई कोई

٧٣٥٤- حَدَّثَنَا عَلِيٌّ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، حَدَّثَنِي الزُّهْرِيُّ أَنَّهُ سَمِعَ مِنَ الأَعْرَجِ يَقُولُ: أَخْبَرَنِي أَبُو هُرَيْرَةَ قَالَ: إِنَّكُمْ تَزْعُمُونَ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ يُكْثِرُ الْحَدِيثَ عَلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ، وَاللهُ الْمَوْعِدُ إِنِّي كُنْتُ امْرَأً مِسْكِينًا أَلْزَمُ رَسُولَ اللهِ ﷺ عَلَى مِلْءِ بَطْنِي، وَكَانَ الْمُهَاجِرُونَ يَشْغَلُهُمُ الصَّفْقُ بِالأَسْوَاقِ، وَكَانَتِ الأَنْصَارُ يَشْغَلُهُمُ الْقِيَامُ عَلَى أَمْوَالِهِمْ، فَشَهِدْتُ مِنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ ذَاتَ يَوْمٍ وَقَالَ: ((مَنْ

يَبْسُطْ رِدَاءَهُ حَتَّى أَقْضِيَ مَقَالَتِي ثُمَّ يَقْبِضْهُ فَلَنْ يَنْسَ شَيْئًا سَمِعَهُ مِنِّي؟)) فَبَسَطْتُ بُرْدَةً كَانَتْ عَلَيَّ فَوَ الَّذِي بَعَثَهُ بِالْحَقِّ مَا نَسِيتُ شَيْئًا سَمِعْتُهُ مِنْهُ.[راجع: ١١٨]

बात न भूले। चुनाँचे मैंने अपनी चादर जो मेरे जिस्म पर थी, फैला दी और उस ज़ात की क़सम! जिसने आँहज़रत (ﷺ) को ह़क़ के साथ भेजा था फिर कभी मैं आपकी कोई ह़दीष़ जो आपसे सुनी थी, नहीं भूला। (राजेअ : 118)

तश्रीह : ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) को पाँच हज़ार से ज़ाइद अह़ादीष़ बरज़ुबान याद थीं। कुछ लोग इस कष़रते ह़दीष़ पर रश्क करते, उनके जवाब में आपने ये बयान दिया जो यहाँ मज़्कूर है बाब और ह़दीष़ में मुताबक़त ज़ाहिर है।

٢٣- بَابُ مَنْ رَأَى تَرْكَ النَّكِيرِ مِنَ النَّبِيِّ ﷺ حُجَّةً لاَ مِنْ غَيْرِ الرَّسُولِ

बाब 23 : आँह़ज़रत (ﷺ) से एक बात कही जाए और आप उस पर इंकार न करें जिसे तक़रीर कहते हैं तो ये हुज्जत है। आँह़ज़रत (ﷺ) के सिवा और किसी की तक़रीर हुज्जत नहीं

तश्रीह : क्योंकि आप ख़ता से मा'सूम और मह़फ़ूज़ थे और आप (ﷺ) का इंकार न करना इस फ़ेअ़ल के जवाज़ की दलील है। दूसरे लोगों का सुकूत जवाज़ की दलील नहीं हो सकता। कुछ ने कहा अगर एक स़ह़ाबी ने दूसरे स़ह़ाबा के सामने या एक मुज्तहिद ने एक बात कही और दूसरे स़ह़ाबा ने या मुज्तहिदों ने उसको सुनकर उस पर सुकूत किया तो इज्माअ़े सुकूती कहलाया जाएगा वो भी हुज्जत है जैसे ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने मुतआ़ की हुर्मत पर बरसरे मिम्बर बयान किया और दूसरे स़ह़ाबा ने उस पर इंकार नहीं किया तो गोया इसकी हुर्मत पर इज्माअ़े सुकूती हो गया।

٧٣٥٥- حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ حُمَيْدٍ، حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ مُعَاذٍ، حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ سَعْدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ الْمُنْكَدِرِ قَالَ: رَأَيْتُ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ يَحْلِفُ بِاللهِ إِنَّ ابْنَ الصَّيَّادِ الدَّجَّالُ قُلْتُ تَحْلِفُ بِاللهِ قَالَ: إِنِّي سَمِعْتُ عُمَرَ يَحْلِفُ عَلَى ذَلِكَ عِنْدَ النَّبِيِّ ﷺ فَلَمْ يُنْكِرْهُ النَّبِيُّ ﷺ.

7355. हमसे ह़म्माद बिन ह़ुमैद ने बयान किया, कहा हमसे उ़बैदुल्लाह बिन मुआ़ज़ ने, कहा हमसे हमारे वालिद ह़ज़रत मुआ़ज़ बिन ह़स्सान ने बयान किया, उनसे शुअ़बा बिन ह़ज्जाज ने बयान किया, उनसे सअ़द बिन इब्राहीम ने, उनसे मुह़म्मद बिन मुंकदिर ने बयान किया कि मैंने जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) को देखा कि वो इब्ने स़य्याद के वाक़िये पर अल्लाह की क़सम खाते थे। मैंने उनसे कहा कि आप अल्लाह की क़सम खाते हैं? उन्होंने कहा कि मैंने उ़मर (रज़ि.) को नबी करीम (ﷺ) के सामने अल्लाह की क़सम खाते देखा और आँह़ज़रत (ﷺ) ने उस पर कोई इंकार नहीं किया।

तश्रीह : अगर इब्ने स़य्याद दज्जाल न होता तो आप ज़रूर ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) को उस पर क़सम खाने से मना करते। यहाँ ये इश्काल होता है कि ऊपर किताबुल जनाइज़ में गुज़र चुका है कि ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने उसकी गर्दन मारना चाही तो आपने फ़र्माया अगर वो दज्जाल है तब तो तू इसकी गर्दन न मार सकेगा। अगर दज्जाल नहीं है तो इसका मारना तेरे ह़क़ में बेहतर न होगा। इससे मा'लूम होता है कि ख़ुद आँह़ज़रत (ﷺ) को उसके दज्जाल होने में शक था, फिर ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) के क़सम खाने पर आपने इंकार क्यूँ नहीं किया। इसका जवाब ये है कि शायद पहले आँह़ज़रत (ﷺ) को उसके दज्जाल होने में शुब्हा हो फिर ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने ये क़सम खाई उस वक़्त मा'लूम हो गया कि वही दज्जाल है। अबू दाऊद ने इब्ने उ़मर (रज़ि.) से निकाला वो क़सम खाते थे और कहते थे बेशक इब्ने स़य्याद ही मसीह़ दज्जाल है और मुम्किन है कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) पर इसलिये इंकार न किया हो कि इब्ने स़य्याद भी उन तीस दज्जालों में से एक दज्जाल

हो जिसके निकलने का ज़िक्र दूसरी ह़दीष़ में है। इस मा'नी में उसका दज्जाल होना यक़ीनी हुआ और मुस्लिम ने तमीम दारी (रज़ि.) का क़िस्सा निकाला कि उन्होंने दज्जाल को एक जज़ीरे (टापू) पर देखा और आँह़ज़रत (ﷺ) से ये क़िस्सा नक़ल किया और मुस्लिम ने अबू सईद (रज़ि.) से निकाला कि इब्ने स़य्याद का और मेरा मक्का तक साथ हुआ, वो कहने लगा लोगों को क्या हो गया है मुझको दज्जाल समझते हैं। क्या तुमने आँह़ज़रत (ﷺ) से ये नहीं सुना कि दज्जाल मक्का और मदीना में नहीं जाएगा? मैंने कहा बेशक सुना है। क्या तुमने आँह़ज़रत (ﷺ) से ये नहीं सुना कि उसकी औलाद न होगी? मैंने कहा बेशक सुना है। इब्ने स़य्याद ने कहा मेरी तो औलाद भी हुई है और मैं मदीना में पैदा हुआ, अब मक्का में जा रहा हूँ। और अबू दाऊद ने जाबिर (रज़ि.) से रिवायत किया कि इब्ने स़य्याद वाक़िया ह़र्रा में गुम हो गया। कुछ ने कहा वो मदीना में मरा और लोगों ने उस पर नमाज़ पढ़ी। एक रिवायत में है कि इब्ने स़य्याद ने कहा अल्बत्ता ये तो है कि मैं दज्जाल को पहचानता हूँ और उसके पैदा होने की जगह जानता हूँ, ये भी जानता हूँ अब वो जहाँ है। ये सुनते ही अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने कहा, अरे कम्बख़्त! तेरी तबाही हो सारे दिन या'नी तूने फिर शुब्हा में डाल दिया। एक रिवायत में अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ के ब-सनद स़ह़ीह़ इब्ने उ़मर (रज़ि.) से यूँ है कि इब्ने स़य्याद की एक आँख फूल गई थी। मैंने उससे पूछा तेरी आँख कब से फूली? उसने कहा मैं नहीं जानता। मैंने कहा तू झूठा है आँख तेरी सर में है और तू कहता है मैं नहीं जानता। ये सुनकर उसने अपनी आँख पर हाथ फेरा और तीन बार गधे की आवाज़ निकाली। मैंने इसका ज़िक्र उम्मुल मोमिनीन ह़फ़्स़ा (रज़ि.) से किया। उन्होंने कहा तू उससे बचा रह क्योंकि मैंने लोगों से ये कहते सुना है कि दज्जाल को ग़ुस्सा दिलाया जाएगा उस वक़्त वो निकल पड़ेगा, फिर स़ह़ाबा को उसमें शुब्हा ही रहा कि इब्ने स़य्याद दज्जाल है या नहीं। इमाम अह़मद ने अबू ज़र्र (रज़ि.) से निकाला अगर मैं दस बार क़सम खाऊँ कि इब्ने स़य्याद दज्जाल है तो ये उससे बेहतर है कि मैं एक बार ये क़सम खाऊँ कि वो दज्जाल नहीं है। इब्ने स़य्याद भी एक क़िस्म का दज्जाल था मगर दज्जाले मौऊ़द वो है जो क़यामत के क़रीब ज़ाहिर होगा।

बाब 24 : दलाइले शरइया से अह़काम का निकाला जाना और दलालत के मा'नी और उसकी तफ़्सीर क्या होगी?

٢٤- باب الأَحْكَامِ الَّتِي تُعْرَفُ بِالدَّلاَئِلِ وَكَيْفَ مَعْنَى الدَّلاَلَةِ وَتَفْسِيرُهَا

रसूलुल्लाह (ﷺ) ने घोड़े वग़ैरह के अह़काम बयान किये फिर आपसे गधों के बारे में पूछा गया तो आपने ये आयत बयान फ़र्माई कि, जो एक ज़र्रा बराबर भी भलाई करेगा वो उसे देख लेगा। और आँह़ज़रत (ﷺ) से साहना के बारे में पूछा गया तो आपने फ़र्माया कि मैं ख़ुद उसे नहीं खाता और (दूसरों के लिये) इसे ह़राम भी नहीं क़रार देता और आँह़ज़रत (ﷺ) के दस्तरख़्वान पर साहना खाया गया और उससे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने इस्तिदलाल किया कि वो ह़राम नहीं है (ये भी दलालत की मिष़ाल है ये ह़दीष़ आगे आ रही है)

وَقَدْ أَخْبَرَ النَّبِيُّ ﷺ أَمْرَ الْخَيْلِ وَغَيْرِهَا ثُمَّ سُئِلَ عَنِ الْحُمُرِ فَدَلَّهُمْ عَلَى قَوْلِهِ تَعَالَى: ﴿فَمَنْ يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَرَهُ﴾ وَسُئِلَ النَّبِيُّ ﷺ عَنِ الضَّبِّ فَقَالَ ((لاَ آكُلُهُ وَلاَ أُحَرِّمُهُ)) وَأُكِلَ عَلَى مَائِدَةِ النَّبِيِّ ﷺ الضَّبُّ فَاسْتَدَلَّ ابْنُ عَبَّاسٍ بِأَنَّهُ لَيْسَ بِحَرَامٍ.

तश्रीह़ : दलाइले शरइया या'नी उसूले शरअ़ वो दो हैं क़ुर्आन और ह़दीष़ और कुछ ने इज्माअ़ और क़यास को भी बढ़ाया है लेकिन इमामुल ह़रमैन शरीफ़ैन और ग़ज़ाली ने क़यास को ख़ाजिर किया है और सच ये है कि क़यास कोई ह़ुज्जते शरई नहीं है या'नी ह़ुज्जते मुल्ज़िमा इसके लिये कि एक मुज्तहिद का क़यास दूसरे मुज्तहिद को काफ़ी नहीं है तो ह़ुज्जते मुल्ज़िमा दो ही चीज़ें हुईं किताब और सुन्नत। अल्बत्ता क़यास ह़ुज्जते मुज़्हरा है या'नी हर मुज्तहिद जिस मसले मे कोई नस़ किताब और सुन्नत से न पाए तो अपने क़यास पर अ़मल कर सकता है। अल्बत्ता इज्माअ़ ह़ुज्जते मुल्ज़िमा हो सकता है बशर्ते कि इज्माअ़ हो अगर एक मुज्तहिद का भी उसमें ख़िलाफ़ हो तो इज्माअ़ बाक़ी उ़लमा का ह़ुज्जत न होगा। दलालत

के मा'नी ये हैं कि एक शै जिसमे कोई नस़ ख़ास़ न वारिद हो उसको किसी चीज़ मन्सूस़ के हुक्म में दाख़िल करना बद दलालते अ़क़्ल, जिसकी मिष़ाल आगे ख़ुद इमाम बुख़ारी (रह़.) ने बयान की है। (वह़ीदी)

٧٣٥٦- حدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، حَدَّثَنِي مَالِكٌ، عَنْ زَيْدِ بْنِ أَسْلَمَ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ السَّمَّانِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((الْخَيْلُ لِثَلاَثَةٍ: لِرَجُلٍ أَجْرٌ، وَلِرَجُلٍ سِتْرٌ، وَعَلَى رَجُلٍ وِزْرٌ، فَأَمَّا الرَّجُلُ الَّذِي لَهُ أَجْرٌ فَرَجُلٌ رَبَطَهَا فِي سَبِيلِ اللهِ، فَأَطَالَ فِي مَرْجٍ أَوْ رَوْضَةٍ فَمَا أَصَابَتْ فِي طِيَلِهَا ذَلِكَ الْمَرْجِ وَالرَّوْضَةِ كَانَ لَهُ حَسَنَاتٍ وَلَوْ أَنَّهَا قَطَعَتْ طِيَلَهَا فَاسْتَنَّتْ شَرَفًا أَوْ شَرَفَيْنِ كَانَتْ آثَارُهَا وَأَرْوَاثُهَا حَسَنَاتٍ لَهُ وَلَوْ أَنَّهَا مَرَّتْ بِنَهَرٍ فَشَرِبَتْ مِنْهُ وَلَمْ يُرِدْ أَنْ يَسْقِيَ بِهِ كَانَ ذَلِكَ حَسَنَاتٍ لَهُ وَهْيَ لِذَلِكَ الرَّجُلِ أَجْرٌ وَرَجُلٌ رَبَطَهَا تَغَنِّيًا وَتَعَفُّفًا وَلَمْ يَنْسَ حَقَّ اللهِ فِي رِقَابِهَا وَلاَ ظُهُورِهَا فَهْيَ لَهُ سِتْرٌ، وَرَجُلٌ رَبَطَهَا فَخْرًا وَرِيَاءً فَهْيَ عَلَى ذَلِكَ وِزْرٌ)) وَسُئِلَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَنِ الْحُمُرِ قَالَ: ((مَا أَنْزَلَ اللهُ عَلَيَّ فِيهَا إِلاَّ هَذِهِ الآيَةَ الْفَاذَّةَ الْجَامِعَةَ ﴿فَمَنْ يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَرَهُ وَمَنْ يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَرَهُ﴾)).
[راجع: ٢٣٧١]

7356. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, कहा मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे ज़ैद बिन असलम ने, उनसे अबू स़ालेह़ सिमान ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया घोड़े तीन त़रह़ के लोगों के लिये हैं। एक शख़्स़ के लिये उनका रखना कारे ष़वाब है, दूसरे के लिये बराबर-बराबर न अ़ज़ाब, न ष़वाब और तीसरे के लिये वबाले जान हैं । जिसके लिये वो अज्र है ये वो शख़्स़ है जिसने उसे अल्लाह के रास्ते के लिये बाँधकर रखा और उसकी रस्सी चरागाह में लम्बी कर दी तो वो घोड़ा जितनी दूर तक चरागाह में घूमकर चरेगा वो मालिक की नेकियों में तरक़्क़ी का ज़रिया होगा और अगर घोड़े ने उस लम्बी रस्सी को भी तुड़वा लिया और एक या दो दौड़ उसने लगाई तो उसके निशानाते क़दम और उसकी लीद भी मालिक के लिये बाइ़ष़े अज्रो ष़वाब होगी और अगर घोड़ा किसी नहर से गुज़रा और उसने नहर का पानी पी लिया, मालिक ने उसे पिलाने का कोई इरादा भी नहीं किया था तब भी मालिक के लिये अज्र का बाइ़ष़ बनेगा और ऐसा घोड़ा अपने मालिक के लिये ष़वाब होता है। और दूसरा शख़्स़ बराबर-बराबर वाला वो है जो घोड़े को इज़्हारे बेनियाज़ी या अपने बचाव की ग़र्ज़ से बाँधता है और उसकी पुश्त और गर्दन पर अल्लाह के ह़क़ को भी नहीं भूलता तो ये घोड़ा उसके लिये न अ़ज़ाब है न ष़वाब और तीसरा वो शख़्स़ है जो घोड़े को फ़ख़्र और रिया के लिये बाँधता है तो ये उसके लिये वबाले जान है और रसूलुल्लाह (ﷺ) से गधों के बारे में पूछा गया तो आपने फ़र्माया कि अल्लाह तआ़ला ने इस सिलसिले में मुझ पर इस जामेअ़ और नादिर आयत के सिवा और कुछ नाज़िल नहीं किया है। पस जो कोई एक ज़र्रा बराबर भी भलाई करेगा वो उसे देख लेगा और जो कोई एक ज़र्रा बराबर भी बुराई करेगा वो उसे देखेगा।
(राजेअ़ : 2371)

गधे पालकर उनसे अपना काम लेना और बोझ वग़ैरह उठाने के लिये किसी को बत़ौर इमदाद अपना गधा दे देना आयत **फ़मंय्यअ़मल मिष़्क़ाल ज़र्रतिन ख़ैरय्यंरा, व मय्यंअ़मल मिष़्क़ाल ज़र्रतिन शर्रय्यंरा** के तह़त बाइ़ष़े ख़ैर व ष़वाब होगा। आँह़ज़रत (ﷺ) ने अम्रे ख़ैर पर इस आयत को बत़ौर दलीले आ़म पेश फ़र्माया।

7357. हमसे यह्या बिन जा'फ़र बैकुन्दी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, उनसे मंसूर बिन स़फ़िया ने, उनसे उनके वालिदा ने और उनसे आ़इशा (रज़ि.) ने कि एक ख़ातून ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सवाल किया (दूसरी सनद) इमाम बुख़ारी (रह.) ने कहा और हमसे मुहम्मद ने बयान किया कि या'नी इब्ने उ़क़्बा ने, कहा हमसे फ़ुज़ैल बिन सुलैमान नुमैरी ने बयान किया, कहा हमसे मंसूर बिन अ़ब्दुर्रहमान बिन शैबा ने बयान किया, उनसे उनकी वालिदा ने और उनसे आ़इशा (रज़ि.) ने कि एक औ़रत ने रसूले करीम (ﷺ) से हैज़ के बारे में पूछा कि इससे गुस्ल किस त़रह़ किया जाए? आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मुश्क लगा हुआ एक कपड़ा लेकर उससे पाकी ह़ासिल कर। उस औ़रत ने पूछा, या रसूलल्लाह! मैं उससे पाकी किस त़रह़ ह़ासिल करूँगी? आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि उससे पाकी ह़ासिल करो। उन्होंने फिर पूछा कि किस त़रह़ पाकी ह़ासिल करूँ? आँह़ज़रत (ﷺ) ने फिर वही जवाब दिया कि पाकी ह़ासिल करो। आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं आँह़ज़रत (ﷺ) का मंशा समझ गई और उस औ़रत को मैंने अपनी तरफ़ खींच लिया और उन्हें त़रीक़ा बताया कि पाकी से आपका मत़लब ये है कि उस कपड़े को ख़ून के मुक़ामों पर फेर ताकि ख़ून की बदबू दूर हो जाए। (राजेअ़ : 314)

٧٣٥٧- حَدَّثَنَا يَحْيَى، حَدَّثَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ، عَنْ مَنْصُورِ بْنِ صَفِيَّةَ، عَنْ أُمِّهِ عَنْ عَائِشَةَ أَنَّ امْرَأَةً سَأَلَتِ النَّبِيَّ ﷺ ح. حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ هُوَ ابْنُ عُقْبَةَ، حَدَّثَنَا الْفُضَيْلُ بْنُ سُلَيْمَانَ النُّمَيْرِيُّ، حَدَّثَنَا مَنْصُورُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ شَيْبَةَ، حَدَّثَتْنِي أُمِّي عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّ امْرَأَةً سَأَلَتِ النَّبِيَّ ﷺ عَنِ الْحَيْضِ كَيْفَ تُغْتَسَلُ مِنْهُ؟ قَالَ: ((تَأْخُذِينَ فُرْصَةً مُمَسَّكَةً فَتَوَضَّئِينَ بِهَا)) قَالَتْ: كَيْفَ أَتَوَضَّأُ بِهَا يَا رَسُولَ اللهِ؟ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((تَوَضَّئِي)) قَالَت كَيْفَ أَتَوَضَّأُ بِهَا يَا رَسُولَ اللهِ؟ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((تَوَضَّئِينَ بِهَا)) قَالَتْ عَائِشَةُ : فَعَرَفْتُ الَّذِي يُرِيدُ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَجَذَبْتُهَا إِلَيَّ فَعَلَّمْتُهَا.

[راجع: ٣١٤]

बाब का तर्जुमा इससे निकलता है कि ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) ब-दलालते अ़क़्ल समझ गईं कि कपड़े से वुज़ू तो नहीं हो सकता तो लफ़्ज़ तवज़्ज़ा इससे आपकी मुराद यही है कि उसको बदन पर फेरकर पाकी ह़ासिल कर ले।

7358. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अबू अ़वाना ने बयान किया, उनसे अबू बिश्र ने, उनसे सईद बिन जुबैर ने और उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कि उम्मे हुफ़ैद बिन्ते ह़ारिष़ बिन ह़ज़्न ने रसूलुल्लाह (ﷺ) को घी और पनीर और भुना हुआ साण्डहा हदिये में भेजा। आँह़ज़रत (ﷺ) ने ये चीज़ें क़ुबूल फ़र्मा लीं और आपके दस्तरख़्वान पर उन्हें खाया गया लेकिन आँह़ज़रत (ﷺ) ने उस (साण्डे को) हाथ नहीं लगाया, जैसे आपको पसंद न हो और अगर वो ह़राम होता तो आपके दस्तरख़्वान पर न खाया जाता और न आप खाने के लिये कहते। (राजेअ़ : 2575)

٧٣٥٨- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَعِيلَ، حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ، عَنْ أَبِي بِشْرٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ أَنَّ أُمَّ حُفَيْدٍ بِنْتِ الْحَارِثِ بْنِ حَزْنٍ أَهْدَتْ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ سَمْنًا وَأَقِطًا وَأَضُبًّا، فَدَعَا بِهِنَّ النَّبِيُّ ﷺ فَأُكِلْنَ عَلَى مَائِدَتِهِ فَتَرَكَهُنَّ النَّبِيُّ ﷺ كَالْمُتَقَذِّرِ لَهُ، وَلَوْ كُنَّ حَرَامًا مَا أُكِلْنَ مَا مَائِدَتِهِ وَلاَ أَمَرَ بِأَكْلِهِنَّ.

[راجع: ٢٥٧٥]

तश्रीह : रसूलुल्लाह (ﷺ) ने साहना को खाना तबअन पसंद नहीं फ़र्माया मगर आपके दस्तरख़्वान पर सहाबा ने उसे खाया। आपने उनको मना नहीं फ़र्माया। साहना तो हराम हो ही नहीं सकता वो तो अरबों की असली गिज़ा है। ख़ुसूसन उन अरबों की जो सेहरा नशीन हैं। चुनाँचे फ़िरदौसी कहता है,

ज़शेर शुत्र ख़ुर्दन व सो सिमार

अरब रा बजाय रसीद अस्त कार

इस हदीष़ से इमाम बुख़ारी (रह.) ने दलालते शरइया की मिष़ाल दी कि जब साहना आँहज़रत (ﷺ) के दस्तरख़्वान पर दूसरे लोगों ने खाए तो मा'लूम हुआ कि वो हलाल हैं अगर हराम होते तो आप अपने दस्तरख़्वान पर रखने भी न देते खाना तो दूर की बात है।

७٣٥٩- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ صَالِحٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي يُونُسُ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ أَخْبَرَنِي عَطَاءُ بْنُ أَبِي رَبَاحٍ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((مَنْ أَكَلَ ثُومًا أَوْ بَصَلاً، فَلْيَعْتَزِلْنَا أَوْ لِيَعْتَزِلْ مَسْجِدَنَا وَلْيَقْعُدْ فِي بَيْتِهِ))، وَإِنَّهُ أُتِيَ بِبَدْرٍ قَالَ ابْنُ وَهْبٍ: يَعْنِي طَبَقًا فِيهِ خَضِرَاتٌ مِنْ بُقُولٍ فَوَجَدَ لَهَا رِيحًا فَسَأَلَ عَنْهَا، فَأُخْبِرَ بِمَا فِيهَا مِنَ الْبُقُولِ فَقَالَ: فَقَرِّبُوهَا فقربوها إِلَى بَعْضِ أَصْحَابِهِ كَانَ مَعَهُ، فَلَمَّا رَآهُ كَرِهَ أَكْلَهَا قَالَ: ((كُلْ فَإِنِّي أُنَاجِي مَنْ لاَ تُنَاجِي)). وَقَالَ ابْنُ عُفَيْرٍ: عَنِ ابْنِ وَهْبٍ بِقِدْرٍ فِيهِ خَضِرَاتٌ وَلَمْ يَذْكُرِ اللَّيْثُ وَأَبُو صَفْوَانَ عَنْ يُونُسَ قِصَّةَ الْقِدْرِ، فَلاَ أَدْرِي هُوَ مِنْ قَوْلِ الزُّهْرِيِّ أَوْ فِي الْحَدِيثِ.

[راجع: ٨٥٤]

7359. हमसे अहमद बिन सालेह ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल्लाह बिन वहब ने बयान किया, कहा मुझे यूनुस ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने शिहाब ने कहा कि मुझको अता बिन अबी रिबाह ने ख़बर दी, उन्हें जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया जो शख़्स कच्ची लहसुन या प्याज़ खाए वो हमसे दूर रहे या (ये फ़र्माया कि) हमारी मस्जिद से दूर रहे और अपने घर में बैठा रहे (यहाँ तक कि वो बू दूर हो जाए) और आपके पास एक तबाक़ लाया गया जिसमें सब्ज़ियाँ थीं। आँहज़रत (ﷺ) ने उसमें बू महसूस की, फिर आपको उसमें रखी हुई सब्ज़ियों के बारे में बताया गया तो आपने अपने कुछ सहाबी की तरफ़ जो आपके साथ थे इशारा करके फ़र्माया कि इनके पास ले जाओ लेकिन जब उन सहाबी ने उसे देखा तो उन्होंने भी उसे खाना पसंद नहीं किया। आँहज़रत (ﷺ) ने उस पर उनसे फ़र्माया कि तुम खा लो क्योंकि मैं जिससे सरगोशी करता हूँ तुम उससे नहीं करते। (आपकी मुराद फ़रिश्तों से थी) सईद बिन कष़ीर बिन उफ़ैर ने जो हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) के शैख़ हैं, अब्दुल्लाह बिन वहब से इस हदीष़ में यूँ रिवायत किया कि आँहज़रत (ﷺ) के पास एक हाँडी लाई गई जिसमें तरकारियाँ थीं और लैष़ व अबू सफ़्वान अब्दुल्लाह बिन सईद अम्वी ने भी इस हदीष़ को यूनुस से रिवायत किया लेकिन उन्होंने हाँडी का क़िस्सा नहीं बयान किया, अब मैं नहीं जानता कि हाँडी का क़िस्सा हदीष़ में दाख़िल है या ज़ुह्री ने बढ़ा दिया है। (राजेअ : 854)

٧٣٦٠- حَدَّثَنِي عُبَيْدُ اللهِ بْنُ سَعْدِ بْنِ

7360. मुझसे अब्दुल्लाह बिन सअद बिन इब्राहीम ने बयान

किया, कहा मुझसे मेरे वालिद और चचा ने बयान किया, कहा कि मुझसे मेरे वालिद ने बयान किया और उनसे उनके वालिद ने, उन्हें मुहम्मद बिन जुबैर ने ख़बर दी और उन्हें उनके वालिद जुबैर बिन मुत़इम (रज़ि.) ने ख़बर दी कि एक ख़ातून रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास आईं तो आँहज़रत (ﷺ) ने उन्हें एक हुक्म दिया। उन्होंने अ़र्ज किया, या रसूलल्लाह! अगर मैं आपको न पाऊँ तो फिर क्या करूँगी? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि ज़ब मुझे न पाओ तो अबूबक्र (रज़ि.) के पास जाना। हुमैदी ने इब्राहीम बिन सअ़द से ये इज़ाफ़ा किया कि ग़ालिबन ख़ातून की मुराद वफ़ात थी। इमाम बुख़ारी (रह.) ने कहा हुमैदी ने इस रिवायत में इब्राहीम बिन सअ़द से इतना बढ़ाया है कि आपको न पाऊँ, इससे मुराद ये है कि आपकी वफ़ात हो जाए। (राजेअ़ : 3659)

إِبْرَاهِيمَ، حَدَّثَنَا أَبِي وَعَمِّي قَالاَ: حَدَّثَنَا أَبِي عَنْ أَبِيهِ أَخْبَرَنِي مُحَمَّدُ بْنُ جُبَيْرٍ أَنَّ أَبَاهُ جُبَيْرَ بْنَ مُطْعِمٍ أَخْبَرَهُ أَنَّ امْرَأَةً أَتَتْ رَسُولَ اللهِ ﷺ فَكَلَّمَتْهُ فِي شَيْءٍ، فَأَمَرَهَا بِأَمْرٍ فَقَالَتْ: أَرَأَيْتَ يَا رَسُولَ اللهِ إِنْ لَمْ أَجِدْكَ قَالَ: ((إِنْ لَمْ تَجِدِينِي فَأْتِي أَبَا بَكْرٍ)). زَادَ الْحُمَيْدِيُّ عَنْ إِبْرَاهِيمَ بْنِ سَعْدٍ كَأَنَّهَا تَعْنِي الْمَوْتَ.
[راجع: ٣٦٥٩]

तश्रीह : इस ह़दीष़ को इमाम बुख़ारी (रह़.) दलालत की मिष़ाल के त़ौर पर लाए कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने औ़रत के ये कहने से कि मैं आपको न पाऊँ ये समझ लिया कि मुराद इसकी मौत है। कुछ ने कहा इसमें दलालत है अबूबक्र स़िद्दीक़ (रज़ि.) के ख़लीफ़ा होने की और ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) ने जो कहा कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने किसी को ख़लीफ़ा नहीं किया तो इसका मत़लब ये है कि स़राह़त के साथ, बाक़ी इशारे के त़ौर पर तो कई अह़ादीष़ से मा'लूम होता है कि आप अबूबक्र स़िद्दीक़ (रज़ि.) को ख़लीफ़ा करना चाहते थे। मष़लन ये ह़दीष़ और मर्ज़े मौत में अबूबक्र (रज़ि.) को नमाज़ पढ़ाने का हुक्म देने की ह़दीष़ और ह़ज़रत आइशा (रज़ि) की वो ह़दीष़ कि अपने भाई और बाप को बुला भेज, मैं लिख दूँ, ऐसा न हो कोई आरज़ू करने वाला कुछ और आरज़ू करे और वो ह़दीष़ कि स़ह़ाबा ने आपसे पूछा, हम आपके बाद किसको ख़लीफ़ा करें फ़र्माया अबूबक्र (रज़ि.) को करोगे तो वो ऐसे हैं उ़मर(रज़ि.) को करोगे तो वो ऐसे हैं, अ़ली (रज़ि .) को करोगे तो वो ऐसे हैं मगर मुझको उम्मीद नहीं कि तुम अ़ली (रज़ि.) को करोगे। इस ह़दीष़ में भी अबूबक्र (रज़ि.) को पहले बयान किया और शाह वलीउल्लाह स़ाह़ब ने इज़ालतुल ख़ुलफ़ा में इस बह़ष़ को बहुत तफ़्स़ील से बयान किया है।

बाब 25 : नबी करीम (ﷺ) का फ़र्मान कि, अहले किताब से दीन की कोई बात न पूछो

٢٥- باب قَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ: ((لاَ تَسْأَلُوا أَهْلَ الْكِتَابِ عَنْ شَيْءٍ))

7361. अबुल यमान इमाम बुख़ारी (रह.) के शैख़ ने बयान किया, कि हमको शुऐ़ब ने ख़बर दी, उन्हे ज़ुहरी ने, उन्हें हुमैद बिन अ़ब्दुर्रह़मान ने ख़बर दी, उन्होंने मुआ़विया (रज़ि.) से सुना, वो मदीने में क़ुरैश की एक जमाअ़त से ह़दीष़ बयान कर रहे थे। मुआ़विया (रज़ि.) ने कअ़ब अह़बार बहुत सच्चे थे और बावजूद उसके कभी कभी उनकी बात झूठ निकलती थी। ये मत़लब नहीं है कि कअ़ब अह़बार झूठ बोलते थे।

٧٣٦١- وَقَالَ أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ أَخْبَرَنِي حُمَيْدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ سَمِعَ مُعَاوِيَةَ يُحَدِّثُ رَهْطًا مِنْ قُرَيْشٍ بِالْمَدِينَةِ، وَذَكَرَ كَعْبَ الأَحْبَارِ فَقَالَ: إِنْ كَانَ مِنْ أَصْدَقِ هَؤُلاَءِ الْمُحَدِّثِينَ الَّذِينَ يُحَدِّثُونَ عَنْ أَهْلِ الْكِتَابِ، وَإِنْ كُنَّا مَعَ ذَلِكَ لَنَبْلُو عَلَيْهِ

الْكَذِبَ.

तश्रीह : कअ़ब अह़बार (रज़ि.) यहूद के बड़े आलिम थे जो ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) की ख़िलाफ़त में मुसलमान हो गये थे।

7362. मुझसे मुह़म्मद बिन बश्शार ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे उ़ष्मान बिन उ़मर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको अ़ली बिन मुबारक ने ख़बर दी, उन्होंने कहा हमसे यह्या बिन अबी कष़ीर ने, उन्हें अबू सलमा ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि अहले किताब तौरात इब्रानी ज़ुबान में पढ़ते थे और उसकी तफ़्सीर मुसलमानों के लिये अ़रबी में करते थे तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि अहले किताब की न तस्दीक़ करो और न उनकी तक्ज़ीब करो क्योंकि हम ईमान लाए अल्लाह पर और उस पर जो हम पर नाज़िल हुआ और जो हमसे पहले तुम पर नाज़िल हुआ आख़िर आयत तक जो सूरह बक़रह में है। (राजेअ़ : 4485)

٧٣٦٢- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ عُمَرَ، أَخْبَرَنَا عَلِيُّ بْنُ الْمُبَارَكِ، عَنْ يَحْيَى بْنِ أَبِي كَثِيرٍ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: كَانَ أَهْلُ الْكِتَابِ يَقْرَؤُونَ التَّوْرَاةَ بِالْعِبْرَانِيَّةِ، وَيُفَسِّرُونَهَا بِالْعَرَبِيَّةِ لأَهْلِ الإِسْلاَمِ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((لاَ تُصَدِّقُوا أَهْلَ الْكِتَابِ وَلاَ تُكَذِّبُوهُمْ وَقُولُوا: آمَنَّا بِاللهِ وَمَا أُنْزِلَ إِلَيْنَا وَمَا أُنْزِلَ إِلَيْكُمْ)) الآيَةَ. [راجع: ٤٤٨٥]

7363. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इब्राहीम बिन सअ़द ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको इब्ने शिहाब ने ख़बर दी, उन्हे उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़त्बा ने और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान क़िया कि तुम अहले किताब से किसी चीज़ के बारे में क्यूँ पूछते हो जबकि तुम्हारी किताब जो रसूलुल्लाह (ﷺ) पर नाज़िल हुई वो ताज़ा भी है और मह़फ़ूज़ भी और तुम्हें उसने बता भी दिया है कि अहले किताब ने अपना दीन बदल डाला और अल्लाह की किताब में तब्दीली कर दी और उसे अपने हाथ से अज़्ख़ुद बनाकर लिखा और कहा कि ये अल्लाह की त़रफ़ से है ताकि उसके ज़रिये दुनिया का थोड़ा सा माल कमा लें। तुम्हारे पास (क़ुर्आन व ह़दीष़ का) जो इल्म है वो तुम्हें उनसे पूछने से मना करता है। वल्लाह! मैं तो नहीं देखता कि अहले किताब में से कोई तुमसे इसके बारे में पूछता हो जो तुम पर नाज़िल किया गया हो। (राजेअ़ : 2685)

٧٣٦٣- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ، أَخْبَرَنَا ابْنُ شِهَابٍ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ عَبْدِ اللهِ أَنَّ ابْنَ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: كَيْفَ تَسْأَلُونَ أَهْلَ الْكِتَابِ عَنْ شَيْءٍ وَكِتَابُكُمُ الَّذِي أُنْزِلَ عَلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ أَحْدَثُ تَقْرَؤُونَهُ مَحْضًا لَمْ يُشَبْ وَقَدْ حَدَّثَكُمْ أَنَّ أَهْلَ الْكِتَابِ بَدَّلُوا كِتَابَ اللهِ وَغَيَّرُوهُ، وَكَتَبُوا بِأَيْدِيهِمُ الْكِتَابَ وَقَالُوا: هُوَ مِنْ عِنْدِ اللهِ لِيَشْتَرُوا بِهِ ثَمَنًا قَلِيلاً أَلاَ يَنْهَاكُمْ مَا جَاءَكُمْ مِنَ الْعِلْمِ عَنْ مَسْأَلَتِهِمْ، لاَ وَاللهِ مَا رَأَيْنَا مِنْهُمْ رَجُلاً يَسْأَلُكُمْ عَنِ الَّذِي أُنْزِلَ عَلَيْكُمْ. [راجع: ٢٦٨٥]

तश्रीह : तुम्हारे पास अल्लाह का सच्चा कलाम क़ुर्आन मौजूद है, इसकी शरह़ ह़दीष़ तुम्हारे पास है फिर बड़े शर्म की बात है कि तुम उनसे पूछो। बहुत से उ़लमा ने इस ह़दीष़ के रू से तौरात और इंजील और अगली आसमानी किताबों का मुतालअ़ा करना भी मकरूह रखा है क्योंकि उनमें तह़रीफ़ और तब्दीली हुई। ऐसा न हो ज़ईफ़ुल ईमान लोगों का

ए'तिक़ाद बिगड़ जाए लेकिन जिस शख़्स को ये डर न हो और वो अहले किताब से मुबाहिसा करना चाहे और इस्लाम पर जो ए'तिराज़ात वो करते हैं उनको जवाब देता हो तो उसके लिये मकरूह नहीं है बल्कि अज्र है। **इन्नमल आमालु बिन्नियात।**

बाब 26 : अह़कामे शरअ़ में झगड़ा करने की कराहत का बयान

٢٦- باب كَرَاهِيَةِ الْخِلاَفِ

7364. हमसे इस्हाक़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको अ़ब्दुर्रह़मान बिन मह्दी ने ख़बर दी, उन्हें सलाम बिन अबी मुतीअ़ ने, उन्हें अबू इमरान जौनी ने, उनसे जुन्दब बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, जब तक तुम्हारे दिल मिले रहें क़ुर्आन पढ़ो और जब तुममें इख़्तिलाफ़ हो जाए तो उससे दूर हो जाओ। (राजेअ़ : 5060)

٧٣٦٤- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ مَهْدِيٍّ، عَنْ سَلاَّمِ بْنِ أَبِي مُطِيعٍ، عَنْ أَبِي عِمْرَانَ الْجَوْنِيِّ، عَنْ جُنْدَبِ بْنِ عَبْدِ اللهِ الْبَجَلِيِّ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((اقْرَؤُوا الْقُرْآنَ مَا ائْتَلَفَتْ قُلُوبُكُمْ، فَإِذَا اخْتَلَفْتُمْ فَقُومُوا عَنْهُ))

[راجع: ٥٠٦٠]

तश्रीह़ : या'नी जब कोई शुब्हा दरपेश हो और झगड़ा पड़े तो इख़्तिलाफ़ न करो बल्कि उस वक़्त क़िरात ख़त्म करके अलग अलग हो जाओ। मुराद ह़ज़रत की झगड़े से डराना है न कि क़िरात से मना करना क्योंकि नफ़्से क़िरात मना नहीं है।

7365. हमसे इस्हाक़ बिन मंसूर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको अ़ब्दुस्समद बिन अ़ब्दुल वारिष़ ने ख़बर दी, कहा हमसे हम्माम बिन यह्या बस़री ने बयान किया, कहा हमसे अबू इमरान जौनी ने और उनसे जुन्दब बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया जब तक तुम्हारे दिलों में इत्तिहाद और इत्तिफ़ाक़ हो क़ुर्आन पढ़ो और जब इख़्तिलाफ़ हो जाए तो उससे दूर हो जाओ और यज़ीद बिन हारून वास्ती ने हारून अअ़वर से बयान किया, उनसे अबू इमरान ने बयान किया, उनसे जुन्दुब (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से बयान किया। (राजेअ़ : 5060)

٧٣٦٥- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ الصَّمَدِ، حَدَّثَنَا هَمَّامٌ، حَدَّثَنَا أَبُو عِمْرَانَ الْجَوْنِيُّ، عَنْ جُنْدَبِ بْنِ عَبْدِ اللهِ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((اقْرَؤُوا الْقُرْآنَ مَا ائْتَلَفَتْ قُلُوبُكُمْ، فَإِذَا اخْتَلَفْتُمْ فَقُومُوا عَنْهُ)). وَقَالَ يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ، عَنْ هَارُونَ الأَعْوَرِ حَدَّثَنَا أَبُو عِمْرَانَ، عَنْ جُنْدَبٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ مِثْلَهُ. [راجع: ٥٠٦٠]

जिसे दारमी ने वस्ल किया।

7366. हमसे इब्राहीम बिन मूसा ने बयान किया, कहा हमको हिशाम ने ख़बर दी, उन्हें मअ़मर ने, उन्हें ज़ुह्री ने, उन्हें उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह ने और उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि जब आँह़ज़रत (ﷺ) की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया तो घर में बहुत से स़हाबा मौजूद थे, जिनमे उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) भी थे। उस वक़्त आपने फ़र्माया कि

٧٣٦٦- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ مُوسَى، أَخْبَرَنَا هِشَامٌ، عَنْ مَعْمَرٍ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ عَبْدِ اللهِ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: لَمَّا حُضِرَ النَّبِيُّ ﷺ قَالَ: وَفِي الْبَيْتِ رِجَالٌ فِيهِمْ عُمَرُ بْنُ الْخَطَّابِ قَالَ:

((هَلُمَّ أَكْتُبْ لَكُمْ كِتَابًا لَنْ تَضِلُّوا بَعْدَهُ)) قَالَ عُمَرُ: إِنَّ النَّبِيَّ ﷺ غَلَبَهُ الْوَجَعُ وَعِنْدَكُمُ الْقُرْآنُ فَحَسْبُنَا كِتَابُ اللهِ، وَاخْتَلَفَ أَهْلُ الْبَيْتِ وَاخْتَصَمُوا فَمِنْهُمْ مَنْ يَقُولُ: قَرِّبُوا يَكْتُبْ لَكُمْ رَسُولُ اللهِ ﷺ كِتَابًا، لَنْ تَضِلُّوا بَعْدَهُ، وَمِنْهُمْ مَنْ يَقُولُ مَا قَالَ عُمَرُ فَلَمَّا أَكْثَرُوا اللَّغَطَ وَالاخْتِلاَفَ عِنْدَ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((قُومُوا عَنِّي)). قَالَ عُبَيْدُ اللهِ : فَكَانَ ابْنُ عَبَّاسٍ يَقُولُ : إِنَّ الرَّزِيَّةَ كُلَّ الرَّزِيَّةِ مَا حَالَ بَيْنَ رَسُولِ اللهِ ﷺ وَبَيْنَ أَنْ يَكْتُبَ لَهُمْ ذَلِكَ الْكِتَابَ مِنِ اخْتِلاَفِهِمْ وَلَغَطِهِمْ.

[راجع: ١١٤]

आओ मैं तुम्हारे लिये एक ऐसा मक्तूब लिख दूँ कि उसके बाद तुम कभी गुमराह न हो। उ़मर (रज़ि.) ने कहा कि उस वक़्त आपने फ़र्माया कि आओ मैं तुम्हारे लिये एक ऐसा मक्तूबा लिख दूँ कि उसके बाद तुम कभी गुमराह न हो। उ़मर (रज़ि.) ने कहा आँह़ज़रत (ﷺ) तकलीफ़ में मुब्तला हैं, तुम्हारे पास अल्लाह की किताब है और यही हमारे लिये काफ़ी है। घर के लोगों मे भी इख़्तिलाफ़ हो गया और आपस में बह़ष़ करने लगे। उनमें से कुछ ने कहा कि आँह़ज़रत (ﷺ) के क़रीब (लिखने का सामान) कर दो। वो तुम्हारे लिये ऐसी चीज़ लिख देंगे कि उसके बाद तुम गुमराह नहीं होओगे और कुछ ने वही बात कही जो उ़मर (रज़ि) कह चुके थे। जब आँह़ज़रत (ﷺ) के पास लोग इख़्तिलाफ़ व बह़ष़ ज़्यादा करने लगे तो आपने फ़र्माया कि मेरे पास से हट जाओ। उ़बैदुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) कहा करते थे कि सबसे भारी मुसीबत तो वो थे जो रसूले करीम (ﷺ) और उस नविश्त लिखवाने के बीच ह़ाइल हुए या'नी झगड़ा और शोर। (वल ख़ैर फ़ीमा वक़अ) (राजेअ : 114)

तश्रीह : आँह़ज़रत (ﷺ) ने उस झगड़े और शोर और इख़्तिलाफ़ को देखकर अपना इरादा बदल दिया जो ऐन मंशा-ए-इलाही के तह़त हुआ। बाद मे आप काफ़ी वक़्त तक होश में रहे मगर ये ख़्याल दोबारा ज़ारी नहीं किया। बाद में अम्रे ख़िलाफ़त में जो कुछ हुआ वो ऐन अल्लाह और रसूल की मंशा के मुत़ाबिक़ हुआ। ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) का भी यही मत़लब था। ह़दीष़ और बाब में वजहे मुनासबत ये है कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने इख़्तिलाफ़े बाहमी को पसंद नहीं फ़र्माया।

٢٧- بَابُ نَهْيِ النَّبِيِّ ﷺ عَلَى التَّحْرِيمِ إِلاَّ مَا تُعْرَفُ إِبَاحَتُهُ

बाब 27 : नबी करीम (ﷺ) किसी चीज़ से लोगों को मना करें तो वो ह़राम होगा मगर ये कि उसकी अबाह़त दलाइल से मा'लूम हो जाए

وَكَذَلِكَ أَمْرُهُ نَحْوَ قَوْلِهِ حِينَ أَحَلُّوا أَصِيبُوا مِنَ النِّسَاءِ وَقَالَ جَابِرٌ : وَلَمْ يَعْزِمْ عَلَيْهِمْ وَلَكِنْ أَحَلَّهُنَّ لَهُمْ، وَقَالَتْ أُمُّ عَطِيَّةَ : نُهِينَا عَنِ اتِّبَاعِ الْجَنَائِزِ وَلَمْ يُعْزَمْ عَلَيْنَا.

इसी त़रह आप जिस काम का हुक्म करें। मष़लन जब लोग ह़ज्ज से फ़ारिग़ हो गये तो आँह़ज़रत (ﷺ) का ये इर्शाद कि अपनी बीवियों के पास जाओ। जाबिर (रज़ि.) ने कहा कि स़ह़ाबा पर आपने इसका करना ज़रूरी नहीं क़रार दिया बल्कि सिर्फ़ इसे ह़लाल किया था। उम्मे अ़त़िया (रज़ि.) ने कहा हमें जनाज़े के साथ चलने से मना किया गया है लेकिन ह़राम नहीं हुआ।

तश्रीह : ह़ज़रत जाबिर (रज़ि.) के इस अष़र को इस्माईली ने वस्ल किया है। मत़लब इमाम बुख़ारी (रह़.) का ये है कि अस़ल में अम्र वुजूब के लिये और नही तह़रीम के लिये मौज़ूअ है मगर जहाँ क़राइन या दूसरे दलाइल से मा'लूम हो जाए कि वुजूब और तह़रीम मक़्सूद नहीं है तो वहाँ अम्र इबाह़त के लिये और नही कराहत के लिये हो सकती है। ह़दीष़े ज़ैल से बाब की मुत़ाबक़त ज़ाहिर है कि औरतों से सुह़बत करने का जो हुक्म आपने दिया था वो वुजूब के लिये न था

। क़ुर्आन में भी ऐसे अम्र मौजूद हैं जैसे फ़र्माया, **व इज़ा ह़ललतुम फ़स्तादू** (अल माइदह : 2) या'नी जब तुम एह़राम खोल डालो तो शिकार करो ह़ालाँकि शिकार करना कुछ वाजिब नहीं है। इसी त़रह़, **फ़इज़ा क़ुज़ियतुस़्स़लातु फन्तशिरू फ़िल अर्ज़ वब्तग़ू मिन फ़ज़्लिल्लाह**। (अल जुम्आ : 10)

7367. हमसे मक्की बिन इब्राहीम ने बयान किया, उनसे इब्ने जुरैज ने बयान किया, उनसे अ़त़ा ने बयान किया, उनसे जाबिर (रज़ि.) ने (दूसरी सनद) ह़ज़रत इमाम अबू अ़ब्दुल्लाह बुख़ारी (रह.) ने कहा कि मुह़म्मद बिन बक्र बरक़ी ने बयान किया, उनसे इब्ने जुरैज ने बयान किया, कहा कि मुझे अ़त़ा ने ख़बर दी उन्होंने जाबिर (रज़ि.) से सुना, उस वक़्त और लोग भी उनके साथ मौजूद थे, उन्होंने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) के स़ह़ाबा ने आँह़ज़रत (ﷺ) के साथ ख़ालिस़ ह़ज्ज का एह़राम बाँधा उसके साथ उ़म्रह का नहीं बाँधा। अ़त़ा ने बयान किया कि जाबिर (रज़ि.) ने क़हा कि फिर आँह़ज़रत (ﷺ) 4 ज़िल्ह़िज्ज की सुबह़ को आए और जब हम भी ह़ाज़िर हुए तो आपने हमें हुक्म दिया कि हम ह़लाल हो जाएँ और आपने फ़र्माया कि ह़लाल हो जाओ और अपनी बीवियों के पास जाओ। अ़त़ा ने बयान किया और उनसे जाबिर (रज़ि.) ने कि उन पर ये ज़रूरी नहीं क़रार दिया बल्कि सिर्फ़ ह़लाल किया, फिर आँह़ज़रत (ﷺ) को मा'लूम हुआ कि हममें ये बात हो रही है कि अ़रफ़ा पहुँचने में सिर्फ़ पाँच दिन रह गये हैं और फिर भी आँह़ज़रत (ﷺ) ने हमे अपनी औरतों के पास जाने का हुक्म दिया है, क्या हम अ़रफ़ात इस ह़ालत में जाएँ कि मज़ी या मनी हमारे ज़कर से टपक रही हो। अ़त़ा ने कहा कि जाबिर (रज़ि.) ने अपने हाथ से इशारा किया कि इस त़रह़ मज़ी टपक रही हो, उसको हिलाया। फिर आँह़ज़रत (ﷺ) खड़े हुए और फ़र्माया, तुम्हें मा'लूम है कि मैं तुममें अल्लाह से सबसे ज़्यादा डरने वाला हूँ, तुममें सबसे ज़्यादा सच्चा हूँऔर सबसे ज़्यादा नेक हूँ और अगर मेरे पास हदी (क़ुर्बानी का जानवर) न होता तो मैं भी ह़लाल हो जाता, पस तुम भी ह़लाल हो जाओ। अगर मुझे वो बात पहले से मा'लूम हो जाती जो बाद में मा'लूम हुई तो मैं क़ुर्बानी का जानवर साथ न लाता। चुनाँचे हम ह़लाल हो गये और हमने आँह़ज़रत (ﷺ) की बात सुनी और आपकी इत़ाअ़त

٧٣٦٧- حَدَّثَنَا الْمَكِّيُّ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ قَالَ عَطَاءٌ: قَالَ جَابِرٌ: ح قَالَ أَبُو عَبْدِ اللهِ: وَقَالَ مُحَمَّدُ بْنُ بَكْرٍ حَدَّثَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ، قَالَ أَخْبَرَنِي عَطَاءٌ، سَمِعْتُ جَابِرَ بْنَ عَبْدِ اللهِ فِي أُنَاسٍ مَعَهُ، قَالَ: أَهَلَّ أَصْحَابُ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي الْحَجِّ خَالِصًا لَيْسَ مَعَهُ عُمْرَةٌ، قَالَ عَطَاءٌ: قَالَ جَابِرٌ: فَقَدِمَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ صُبْحَ رَابِعَةٍ مَضَتْ مِنْ ذِي الْحِجَّةِ فَلَمَّا قَدِمْنَا أَمَرَنَا النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَنْ نَحِلَّ وَقَالَ: ((أَحِلُّوا وَأَصِيبُوا مِنَ النِّسَاءِ)) قَالَ عَطَاءٌ: قَالَ جَابِرٌ: وَلَمْ يَعْزِمْ عَلَيْهِمْ وَلَكِنْ أَحَلَّهُنَّ لَهُمْ، فَبَلَغَهُ أَنَّا نَقُولُ لَمَّا لَمْ يَكُنْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ عَرَفَةَ إِلاَّ خَمْسٌ، أَمَرَنَا أَنْ نَحِلَّ إِلَى نِسَائِنَا فَنَأْتِي عَرَفَةَ تَقْطُرُ مَذَاكِيرُنَا الْمَذْيَ قَالَ: وَيَقُولُ جَابِرٌ بِيَدِهِ هَكَذَا، وَحَرَّكَهَا فَقَامَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقَالَ: ((قَدْ عَلِمْتُمْ أَنِّي أَتْقَاكُمْ لِلَّهِ، وَأَصْدَقُكُمْ وَأَبَرُّكُمْ، وَلَوْلاَ هَدْيِي لَحَلَلْتُ كَمَا تَحِلُّونَ، فَحِلُّوا، فَلَوِ اسْتَقْبَلْتُ مِنْ أَمْرِي مَا اسْتَدْبَرْتُ مَا أَهْدَيْتُ)) فَحَلَلْنَا وَسَمِعْنَا وَأَطَعْنَا.

[راجع: ١٥٥٧]

की। (राजेअ : 1557)

٧٣٦٨- حدَّثَنَا أَبُو مَعْمَرٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ، عَنِ الْحُسَيْنِ، عَنِ ابْنِ بُرَيْدَةَ، حَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ الْمُزَنِيُّ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((صَلُّوا قَبْلَ صَلاَةِ الْمَغْرِبِ)) قَالَ فِي الثَّالِثَةِ : لِمَنْ شَاءَ كَرَاهِيَةَ أَنْ يَتَّخِذَهَا النَّاسُ سُنَّةً. [راجع: ١١٨٣]

7368. हमसे अबू मअ़मर ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल वारिष़ बिन सईद ने बयान किया, उनसे हुसैन बिन ज़क्वान मुअ़ल्लम ने, उनसे उ़बैदुल्लाह बिन बुरैदा ने, कहा मुझसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुग़फ़्फ़ल मुज़्नी ने बयान किया, और उनसे नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि मग़रिब की नमाज़ से पहले भी नमाज़ पढ़ो और तीसरी मर्तबा में फ़र्माया कि जिसका जी चाहे क्योंकि आप पसंद नहीं करते थे कि इसे लोग लाज़मी सुन्नत बना लें। (राजेअ : 1183)

इस ह़दीष़ से भी मा'लूम हुआ कि अस़ल में अम्र वजूब के लिये है जब तो आपने तीसरी बार **लिमन शाअ** फ़र्माकर ये वजूब दूर किया।

٢٨- باب قَوْلِ اللهِ تَعَالَى : ﴿وَأَمْرُهُمْ شُورَى بَيْنَهُمْ﴾ [الشورى: ٣٨] ﴿وَشَاوِرْهُمْ فِي الأَمْرِ﴾ [آل عمران: ١٥٩] وَأَنَّ الْمُشَاوَرَةَ قَبْلَ الْعَزْمِ وَالتَّبَيُّنِ لِقَوْلِهِ تَعَالَى: ﴿فَإِذَا عَزَمْتَ فَتَوَكَّلْ عَلَى اللهِ﴾ فَإِذَا عَزَمَ الرَّسُولُ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لَمْ يَكُنْ لِبَشَرٍ التَّقَدُّمُ عَلَى اللهِ وَرَسُولِهِ وَشَاوَرَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ أَصْحَابَهُ يَوْمَ أُحُدٍ فِي الْمُقَامِ وَالْخُرُوجِ فَرَأَوْا لَهُ الْخُرُوجَ، فَلَمَّا لَبِسَ لأَمَتَهُ وَعَزَمَ قَالُوا: أَقِمْ، فَلَمْ يَمِلْ إِلَيْهِمْ بَعْدَ الْعَزْمِ وَقَالَ: ((لاَ يَنْبَغِي لِنَبِيٍّ يَلْبَسُ لأَمَتَهُ فَيَضَعُهَا حَتَّى يَحْكُمَ اللهُ)) وَشَاوَرَ عَلِيًّا وَأُسَامَةَ فِيمَا رَمَى بِهِ أَهْلُ الإِفْكِ عَائِشَةَ، فَسَمِعَ مِنْهُمَا حَتَّى نَزَلَ الْقُرْآنُ فَجَلَدَ الرَّامِينَ وَلَمْ يَلْتَفِتْ إِلَى تَنَازُعِهِمْ، وَلَكِنْ حَكَمَ بِمَا أَمَرَهُ اللهُ وَكَانَتِ الأَئِمَّةُ بَعْدَ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ

बाब 28 : अल्लाह तआ़ला का (सूरह शूरा में) फ़र्माना मुसलमानों का काम आपस में स़लाह और मश्वरे से चलता है

(और सूरह आले इमरान में) फ़र्माना ऐ पैग़म्बर! उनसे कामों में मश्वरा ला, और ये भी बयान है कि मश्वरा एक काम का मुसम्मम अ़ज़्म और उसके बयान कर देने से पहले लेना चाहिये जैसे फ़र्माया फिर जब एक बात ठहरा ले (या'नी स़लाह व मश्वरे के बाद) तो अल्लाह पर भरोसा कर (उसको कर गुज़र) फिर जब आँह़ज़रत (ﷺ) मश्वरे के बाद एक काम ठहरा लें अब किसी आदमी को अल्लाह और उसके रसूल से आगे बढ़ना दुरुस्त नहीं (या'नी दूसरी राय देना) और आँह़ज़रत (ﷺ) ने जंगे उहुद म अपने अस्ह़ाब से मश्वरा लिया कि मदीना ही में रहकर लड़ें या बाहर निकलकर। जब आपने ज़िरह पहन ली और बाहर निकल कर लड़ना ठहरा लिया, अब कुछ लोग कहने लगे मदीना ही में रहना अच्छा है। आपने उनके क़ौल की त़रफ़ इल्तिफ़ात नहीं किया क्योंकि (मश्वरे के बाद) आप एक बात ठहरा चुके थे। आपने फ़र्माया कि जब पैग़म्बर (लड़ाई मुस्तद होकर) अपनी ज़िरह पहन ले (हथियार वग़ैरह बाँधकर लैस हो जाए) अब बग़ैर अल्लाह के हुक्म के उसको उतार नहीं सकता। (इस ह़दीष़ को त़बरानी ने इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से वस़्ल किया) और आँह़ज़रत (ﷺ) ने अ़ली और उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) से आ़इशा (रज़ि.) पर जो बोह्तान लगाया गया था उस मुक़द्दमे में मश्वरा किया

وَسَلَّمَ يَسْتَشِيرُونَ الأُمَنَاءَ مِنْ أَهْلِ الْعِلْمِ فِي الأُمُورِ الْمُبَاحَةِ لِيَأْخُذُوا بِأَسْهَلِهَا، فَإِذَا وَضَحَ الْكِتَابُ أَوِ السُّنَّةُ لَمْ يَتَعَدَّوْهُ إِلَى غَيْرِهِ اقْتِدَاءً بِالنَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَرَأَى أَبُوبَكْرٍ قِتَالَ مَنْ مَنَعَ الزَّكَاةَ فَقَالَ عُمَرُ: كَيْفَ تُقَاتِلُ وَقَدْ قَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((أُمِرْتُ أَنْ أُقَاتِلَ النَّاسَ حَتَّى يَقُولُوا: لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ، فَإِذَا قَالُوا: لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ عَصَمُوا مِنِّي دِمَاءَهُمْ وَأَمْوَالَهُمْ إِلاَّ بِحَقِّهَا)) فَقَالَ أَبُو بَكْرٍ: وَاللهِ لأُقَاتِلَنَّ مَنْ فَرَّقَ بَيْنَ مَا جَمَعَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، ثُمَّ تَابَعَهُ بَعْدُ عُمَرُ فَلَمْ يَلْتَفِتْ أَبُو بَكْرٍ إِلَى مَشُورَةٍ إِذْ كَانَ عِنْدَهُ حُكْمُ رَسُولِ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: فِي الَّذِينَ فَرَّقُوا بَيْنَ الصَّلاَةِ وَالزَّكَاةِ، وَأَرَادُوا تَبْدِيلَ الدِّينِ وَأَحْكَامِهِ قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((مَنْ بَدَّلَ دِينَهُ فَاقْتُلُوهُ)) وَكَانَ الْقُرَّاءُ أَصْحَابُ مَشُورَةِ عُمَرَ كُهُولاً كَانُوا أَوْ شُبَّانًا وَكَانَ وَقَّافًا عِنْدَ كِتَابِ اللهِ عَزَّ وَجَلَّ.

और उनकी राय सुनी यहाँ तक कि क़ुर्आन उतरा और आपने तोह्मत लगाने वालो को कोड़े मारे और अ़ली और उसामा (रज़ि.) में जो इख़्तिलाफ़े राय था उस पर कुछ इल्तिफ़ात नहीं किया (अ़ली की राय ऊपर गुज़री है) बल्कि आपने अल्लाह के इर्शाद के मुवाफ़िक़ हुक्म दिया और आँहज़रत (ﷺ) की वफ़ात के बाद जितने इमाम और ख़लीफ़ा हुए वो ईमानदार लोगों से और आ़लिमों से मुबाह कामों में मश्वरा लिया करते ताकि जो काम आसान हो, उसको इख़्तियार करें फिर जब उनको क़ुर्आन व ह़दीष़ का हुक्म मिल जाता तो उसके ख़िलाफ़ किसी की न सुनते क्योंकि आँहज़रत (ﷺ) की पैरवी सब पर मुक़द्दम है और अबूबक्र स़िद्दीक़ (रज़ि.) ने उन लोगों से जो ज़कात नहीं देते थे लड़ना मुनासिब समझा तो उ़मर (रज़ि.) ने कहा तुम उन लोगों से कैसे लड़ोगे आँहज़रत (ﷺ) ने तो ये फ़र्माया है मुझको लोगों से लड़ने का हुक्म हुआ यहाँ तक कि वो ला इलाहा इल्लल्लाह कहें जब उन्होंने ला इलाहा इल्लल्लाह कह लिया तो अपनी जानों और मालों को मुझसे बचा लिया। अबूबक्र (रज़ि.) ने ये जवाब दिया, मैं तो उन लोगों से ज़रूर लड़ूँगा जो उन फ़र्ज़ों को जुदा करें जिनको आँहज़रत (ﷺ) ने यक्साँ रखा। उसके बाद उ़मर (रज़ि.) की वही राय हो गई। ग़र्ज़ अबूबक्र (रज़ि.) ने उ़मर (रज़ि.) के मश्वरे पर कुछ इल्तिफ़ात न किया क्योंकि उनके पास आँहज़रत (ﷺ) का हुक्म मौजूद था कि जो लोग नमाज़ और ज़कात में फ़र्क़ करें, दीन के अहम काम और अरकान को बदल डालें उनसे लड़ना चाहिये (वो काफ़िर हो गये) और आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया जो शख़्स़ अपना दीन बदल डाले (इस्लाम से फिर जाए) उसको मार डालो और उ़मर (रज़ि.) के मश्वरे में वही स़हाबा शरीक रहते जो क़ुर्आन के क़ारी थे (या'नी आ़लिम लोग) जवान हों या बूढ़े और उ़मर (रज़ि.) जहाँ अल्लाह की किताब का कोई हुक्म सुनते बस ठहर जाते उसके मुवाफ़िक़ अ़मल करते उसके ख़िलाफ़ किसी का मश्वरा नहीं सुनते।

तश्रीह : सुब्हानल्लाह! उ़म्दह अख़्लाक़ ह़ासिल करने के लिये क़ुर्आन से ज़्यादा कोई किताब नहीं है। इस आयतें शूरा में वो त़रीक़ा इख़्तिस़ार के साथ बयान कर दियाजो बड़ी बड़ी किताबों का लब्बे लुबाब है। ह़ासिल ये है कि आदमी को दीनी और दुनियावी कामों में सिर्फ़ अपनी मुंफ़रिद राय पर भरोसा करना बाइ़षे तबाही और बर्बादी है। हर काम में अ़क़्लमंदों और उ़लमा से मश्वरा लेना चाहिये, फिर कुछ लोग क्या करते हैं कि मश्वरा ही लेते लेते वहमी मिज़ाज हो जाते हैं। उनमें क़ुव्वते फ़ैसला बिलकुल नहीं होती। ऐसे आदमियों से भी कोई काम पूरा नहीं होता तो फ़र्माया पस मश्वरे के बाद

एक काम जो ठहरा ले अब कोई वहम न कर और अल्लाह के भरोसे पर कर गुज़र यही कुव्वते फ़ैसला है। ये सब बाब में मज़्कूरा अहादीष ऊपर मौसूलन गुज़र चुकी हैं। इमाम बुख़ारी (रह.) का मतलब ये है कि हाकिम और बादशाहे इस्लाम को सल्तनत के कामों में उलमा और अक़्लमंदों से मश्वरा लेना चाहिये लेकिन जिस काम में अल्लाह और रसूल का हुक्म साफ़ साफ़ मौजूद हो उसमें मश्वरे की हाजत नहीं अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) के हुक्म पर अमल करना चाहिये अगर मश्वरे वाले उसके ख़िलाफ़ मश्वरा दें तो उसको बेकार समझना चाहिये। अल्लाह और रसूल पर किसी की तक़्दीम जाइज़ नहीं है। दुऊ कुल्ल क़ौलिन इन्द क़ौलि मुहम्मद (ﷺ)।

٧٣٦٩- حَدَّثَنَا الأُوَيْسِيُّ، حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ، عَنْ صَالِحٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ حَدَّثَنِي عُرْوَةُ وَابْنُ الْمُسَيَّبِ وَ عَلْقَمَةُ بْنُ وَقَّاصٍ، وَعُبَيْدُ اللهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا حِينَ قَالَ لَهَا أَهْلُ الإِفْكِ قَالَتْ: وَدَعَا رَسُولُ اللهِ ﷺ عَلِيَّ بْنَ أَبِي طَالِبٍ وَأُسَامَةَ بْنَ زَيْدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا حِينَ اسْتَلْبَثَ الْوَحْيُ يَسْأَلُهُمَا، وَهُوَ يَسْتَشِيرُهُمَا فِي فِرَاقِ أَهْلِهِ، فَأَمَّا أُسَامَةُ فَأَشَارَ بِالَّذِي يَعْلَمُ مِنْ بَرَاءَةِ أَهْلِهِ، وَأَمَّا عَلِيٌّ فَقَالَ: لَمْ يُضَيِّقِ اللهُ عَلَيْكَ وَالنِّسَاءُ سِوَاهَا كَثِيرٌ، وَسَلِ الْجَارِيَةَ تَصْدُقْكَ فَقَالَ: ((هَلْ رَأَيْتِ مِنْ شَيْءٍ يُرِيبُكِ؟)) قَالَتْ: مَا رَأَيْتُ أَمْرًا أَكْثَرَ مِنْ أَنَّهَا جَارِيَةٌ حَدِيثَةُ السِّنِّ تَنَامُ عَنْ عَجِينِ أَهْلِهَا فَتَأْتِي الدَّاجِنُ فَتَأْكُلُهُ، فَقَامَ عَلَى الْمِنْبَرِ فَقَالَ: ((يَا مَعْشَرَ الْمُسْلِمِينَ مَنْ يَعْذِرُنِي مِنْ رَجُلٍ بَلَغَنِي أَذَاهُ فِي أَهْلِي وَاللهِ مَا عَلِمْتُ عَلَى أَهْلِي إِلاَّ خَيْرًا)) فَذَكَرَ بَرَاءَةَ عَائِشَةَ. وَقَالَ أَبُو أُسَامَةَ عَنْ هِشَامٍ.

[راجع: ٢٥٦٣]

7369. हमसे अब्दुल अज़ीज़ बिन अब्दुल्लाह उवैसी ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम बिन सअ़द ने, उनसे सालेह बिन कैसान ने, उनसे इब्ने शिहाब ने, कहा कि मुझसे उर्वा बिन मुसय्यब और अल्क़मा बिन वक़्क़ास और उबैदुल्लाह बिन अब्दुल्लाह ने बयान किया और उनसे आइशा (रज़ि.) ने कि जब तोहमत लगाने वालों ने उन पर तोहमत लगाई थी और रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अली बिन अबी तालिब (रज़ि.), उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) को बुलाया क्योंकि इस मामले में वह्य उस वक़्त तक नहीं आई थी और आँहज़रत (ﷺ) अपनी अहले ख़ाना को जुदा करने के सिलसिले में उनसे मश्वरा लेना चाहते थे तो उसामा (रज़ि.) ने वही मश्वरा दिया जो उन्हें मा'लूम था या'नी आँहज़रत (ﷺ) की अहले ख़ाना की बराअत का लेकिन अली (रज़ि.) ने कहा कि अल्लाह तआला ने आप पर कोई पाबन्दी तो आइद नहीं की है और उनके सिवा और बहुत सी औरतें हैं, बाँदी से आप पूछ लें, वो आपसे सहीह बात बता देगी। चुनाँचे आँहज़रत (ﷺ) ने पूछा कि क्या तुमने कोई ऐसी बात देखी है जिससे शक होता है। उन्होंने कहा मैंने इसके सिवा और कुछ नहीं देखा कि वो कम उम्र लड़की हैं, आटा गूंधकर भी सो जाती हैं और पड़ौस की बकरी आकर उसे खा जाती है (या'नी कम उम्री की वजह से मिज़ाज में बेपरवाही है) उसके बाद आँहज़रत (ﷺ) मिम्बर पर खड़े हुए और फ़र्माया, ऐ मुसलमानों ! मेरे मामले में उससे कौन निपटेगा जिसकी अज़िय्यतें अब मेरे अहले ख़ाना तक पहुँच गई हैं। अल्लाह की क़सम! मैंने उनके बारे मे भलाई के सिवा और कुछ नहीं जाना है। फिर आपने आइशा (रज़ि.) की पाक दामनी का क़िस्सा बयान किया और अबू उसामा ने हिशाम बिन उर्वा से बयान किया। (राजेअ : 2563)

٧٣٧٠- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ حَرْبٍ،

7370. हमसे मुहम्मद बिन हर्ब ने बयान किया, कहा हमसे

حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ أَبِي زَكَرِيَّا الْغَسَّانِيُّ، عَنْ هِشَامٍ عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ عَائِشَةَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خَطَبَ النَّاسَ فَحَمِدَ اللهَ وَأَثْنَى عَلَيْهِ، وَقَالَ: ((مَا تُشِيرُونَ عَلَيَّ فِي قَوْمٍ يَسُبُّونَ أَهْلِي، مَا عَلِمْتُ عَلَيْهِمْ مِنْ سُوءٍ قَطُّ))، وَعَنْ عُرْوَةَ قَالَ: لَمَّا أُخْبِرَتْ عَائِشَةُ بِالأَمْرِ قَالَتْ: يَا رَسُولَ اللهِ أَتَأْذَنُ لِي أَنْ أَنْطَلِقَ إِلَى أَهْلِي فَأَذِنَ لَهَا، وَأَرْسَلَ مَعَهَا الْغُلاَمَ وَقَالَ رَجُلٌ مِنَ الأَنْصَارِ: سُبْحَانَكَ مَا يَكُونُ لَنَا أَنْ نَتَكَلَّمَ بِهَذَا، سُبْحَانَكَ هَذَا بُهْتَانٌ عَظِيمٌ.

[راجع: ٢٥٩٣]

यह्या बिन ज़करिया ने बयान किया, उनसे हिशाम बिन उ़र्वा ने, उनसे उ़र्वा और उनसे आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने लोगों को ख़िताब किया और अल्लाह की हम्दो ष़ना के बाद फ़र्माया, तुम मुझे उन लोगों के बारे में क्या मश्वरा देते हो जो मेरे अहले ख़ाना को बदनाम करते हैं हालाँकि उनके बारे में मुझे कोई बुरी बात कभी नहीं मा'लूम हुई। उ़र्वा से रिवायत है, उन्होंने हमसे बयान किया कि आ़इशा (रज़ि.) को जब इस वाक़िये का इल्म हुआ (कि कुछ लोग उन्हें बदनाम कर रहे हैं) तो उन्होंने आँह़ज़रत (ﷺ) से कहा या रसूलल्लाह! क्या मुझे आप अपने वालिद के घर जाने की इजाज़त देंगे? आँह़ज़रत (ﷺ) ने उन्हें इजाज़त दी और उनके साथ गुलाम को भेजा। अंसार में से एक स़ाह़ब अबू अय्यूब (रज़ि.) ने कहा सुब्हानक मा यकूना लना अन नतकल्लम बिहाज़ा सुब्हानका हाज़ा बोह्तानन अ़ज़ीम तेरी ज़ात पाक है ऐ अल्लाह! हमारे लिये मुनासिब नहीं कि हम इस त़रह़ की बातें करें। तेरी ज़ात पाक है, ये तो बहुत बड़ा बोह्तान है। (राजेअ़ : 2593)

ये वाक़िया पीछे तफ़्स़ील से बयान हो चुका है।

97. किताबुत्तौहीद वर्रद्दु अलल जहमिय्या वग़ैरहुम

अल्लाह की तौहीद उसकी ज़ात व सिफ़ात के बयान में, और जहमिय्या वग़ैरह की तर्दीद

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

तश्रीह : इमाम बुख़ारी (रह़.) जब आ'माल के बयान से फ़ारिग़ हुए तो अ़क़ाइद का बयान शुरू किया गोया अदना से आला की त़रफ़ तरक़्क़ी की। ऊपर ख़्वारिज और रवाफ़िज़ का रद्द हो चुका है। अब क़दरियों और जहमियों का रद्द इस किताब में किया। यही चार फ़िर्क़े बिदअ़तियों के सरकर्दा हैं। जुहैमा मन्सूब है जहम बिन स़फ़्वान की त़रफ़ जो एक बिदअ़ती शख़्स़ हिशाम बिन अ़ब्दुल मलिक की ख़िलाफ़त में ज़ाहिर हुआ था। ये अल्लाह की उन सिफ़ात की जो क़ुर्आन व ह़दीष़ में वारिद हैं बिलकुल नफ़ी करता था गोया अपने नज़दीक तन्ज़ीह में मुबालग़ा करता था और अहले ह़दीष़ को मुशब्बिहा और मुजस्समा क़रार देता, आख़िर मुस्लिम बिन अह़वर ने इसकी गर्दन काटी। कमबख़्त का मुँह काला हो गया। इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह़.) ने कहा जहम ने नफ़ी तश्बीह मे यहाँ तक मुबालग़ा किया कि अल्लाह को ला शैइन और मअ़दूम बना दिया। मैं कहता हूँ हमारे ज़माने में भी अल्लाह रह़म करे जहम के मुत्तबिईन का हुजूम हो रहा है और अल्लाह तआ़ला की निस्बत ये कहा जाता है कि वो किसी मकान और जिहत

में नहीं है, न उतरता है न चढ़ता है, न बात करता है, न हंसता है, न तअ़ज्जुब करता है। मआ़ज़ल्लाह अहले ह़दीष़ इन सब सिफ़ात के क़ाइल हैं। वो कहते हैं अल्लाह जल्ले जलालुहू की ज़ाते मुक़द्दस अ़र्श के ऊपर है मगर वो अ़र्श का मोह़ताज नहीं। अ़र्श व फ़र्श सब उसके मुह़ताज हैं। वो जब चाहता है आवाज़ और हुरूफ़ के साथ बात करता है जिस लुग़त में चाहता है कलाम करता है। जहाँ चाहता है उतरता है, तजल्ली फ़र्माता है फिर अ़र्श की त़रफ़ चढ़ जाता है। वो देखता है, सुनता है, हंसता है, तअ़ज्जुब करता है। अ़र्श पर रहकर रत्ती रत्ती तह़तुश्शुरा तक सब जानता है, उसके इ़ल्म और समझ और बस़र से कोई चीज़ बाहर नहीं हो सकती। वो इ़ल्म से सबके साथ है और मदद से मोमिनों के साथ है और रह़मत और करम से नेक बन्दों के साथ है, उसके हाथ हैं, पैर हैं, मुँह है, उँगलियाँ हैं, कमर है जैसे उसकी ज़ाते मुक़द्दस को लायक़ है; न ये कि मख़्लूक़ के हाथों और पैर या चेहरे या उँगलियों या आँखों या कमर की त़रह़ जैसे उसकी ज़ात मख़्लूक़ की ज़ात से मुशाबेह नहीं है वैसे ही उसकी सिफ़ात भी मख़्लूक़ात के सिफ़ात से नहीं मिलतीं। न उसकी किसी सिफ़त की हम तश्बीह दे सकते हैं वो जिस सूरत में चाहे तजल्ली फ़र्मा सकता है और क़यामत के दिन भी एक सूरत में ज़ाहिर होगा फिर दूसरी सूरत में और मोमिनीन और नेक बन्दे उसके दीदार से मुशर्रफ़ होंगे। ये ख़ुलास़ा है अहले ह़दीष़ के और अहले सुन्नत के ए'तिक़ाद का जिसमें किसी अगले इमाम का इख़्तिलाफ़ नहीं। अल्लाह तआ़ला सच्चे मुसलमानों को इसी ए'तिक़ाद पर क़ायम रखे और इसी ए'तिक़ाद पर मारे। इसी ए'तिक़ाद पर ह़श्र करे और पिछले मौलवियों की गुमराही से बचाए रखे। जिन्होंने अपने अ़क़ाइद बदल डाले और स़ह़ाबा और ताबेईन और मुज्तहिदीने उम्मत या'नी इमाम अबू ह़नीफ़ा, शाफ़िई, मालिक, अह़मद बिन ह़ंबल, सुफ़यान ष़ौरी, औज़ाई, इस्ह़ाक़ बिन राह्वै, इमाम बुख़ारी, तिर्मिज़ी, त़बरानी, इब्ने जरीर, शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी, इब्ने ह़ज़्म, इब्ने तैमिया, इब्ने क़य्यिम और अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक वग़ैरहुम रिज़्वानुल्लाहि अ़लैहिम अज्मईन के ख़िलाफ़ अपना ए'तिक़ादियाँ क़ायम किया कि अल्लाह के कलाम में ह़र्फ़ और सूरत नहीं है, न वो अ़र्श के ऊपर है न फ़र्श पर, न आगे न पीछे, न दाहिने न बाएं, ऊपर न नीचे, न वो उतर सकता है न चढ़ सकता है, न बात कर सकता है, न किसी सूरत में ज़ाहिर हो सकता है न उसके चेहरा है न आँख, न हाथ न पैर। फ़िर्क़-ए-ज़ाल्ला में मुअ़तज़िला बहुत आगे हैं जिनके बारे में ह़ाफ़िज़ स़ाह़ब फ़र्माते हैं :

व क़द सम्मल मुअ़तज़िलतु अन्फ़ुसहुम अहलुल अदल वत्तौह़ीद व अ़नौ बित्तौह़ीद मअ़तक़द व ला मिन नफ़ियिस्सिफ़ातिल इलाहियति लिइअ़तिक़ादि अन्न इष़्बितहा लियस्तलज़िमत तश्बीहु व मन शब्बहल्लाहु बिख़ल्क़िही अश्रक व हुम फ़िन्नफ़्यि मुवाफ़िक़ून लिल्जहमिय्यति व अम्मा अहलुस्सुन्नति फ़फ़स्सरूत्तौह़ीद बिनफियित्तश्बीहि वत्तअ़तीलि व मिन ष़म्मा कालल जुनैद फ़ीमा हकाहू व अबुल क़ासिम अल्कुशैरी अत्तौह़ीदु इफ़रादुल क़दीमि मिनल मुहदष़ व क़ाल अबुल क़ासिम अत्तमीमि फ़ी किताबिल हुज्जति अत्तौह़ीदु मस्दरून वह्हद युवह्हिदु व मअ़ना वह्हत्तुल्लाह इअ़तकत्तुहू मुन्फ़रिदन बिज़ातिही व स़िफ़ातिही ला नज़ीर लहू व ला शबीह व क़ील मअ़ना वह्हत्तुह अलिम्तुहू वाहिदन औ क़ील सुलिबत अन्हुल कैफ़ियतु कल कमियतु फ़हुवा वाहिदुन फ़ी ज़ातिही लनक़्क़िसाम लहू व फ़ी स़िफ़ातिही ला शबीह लहू व फ़ी इलाहियतिन व मुल्किही व तदबीरिही ला शरीक लहू व ला रब्ब सिवाहू व ला ख़ालिक़ ग़ैरूहू व क़ाल इब्नु बत्ताल तज़म्मनत तर्जुमतुल बाब इन्नल्लाह लैस बिजिस्मिन लिअन्नल जिस्म मुरक्कबुन मिन अश्याअ मुख़्तलिफ़तिन व ज़ालिक यरूहु अलल जहमिय्यति फ़ी जअ़मिहिम अन्नहू जिस्मुन कज़ा वजत्तु फ़ीही व लअ़ल्लहू अराद अंय्यकूलल मुशब्बहतु व अम्मल जहमिय्यतु फ़लम यख़्तलिफ़ अहदु मिम्मन सन्नफ़ फ़िल मक़ालाति अन्नहुम यन्फ़ूनस्सिफ़ात हत्ता नसबू इलत्तअ़तीलि व ष़बत अन अबी हनीफ़त अन्नहू क़ाल बालग जहमुन फ़ी नफ़ियित तश्बीहि हत्ता क़ाल इन्नल्लाह लैस बिशैइन व क़ालल किरमानी अल्जमिय्यतु फ़िर्कतुम मिनल मुब्तदिअ़ह यन्तसिबून इला जहम बिन सफ़वान मुकद्दमुत ताइफ़तिल क़ाइलह अन्न ला कदरहू लिल अ़ब्दि अस़्लन व हुम जब्रियतुन बिफ़त्हिल जीम व सुकूनिल मुवह्हदह व मात मक़्तूलन फ़ी ज़मनि हिशाम बिन अ़ब्दुल मलिक इन्तिहा व लैस अन्करूहू अलल जहमियति मज़हबुल जबर ख़ास़्सतन व इन्नमल्लज़ी अत्बक़स्सलफ़ुअ़ला जम्मिहिम बिसबबिही इन्कारस्सिफ़ाति हत्ता क़ालू अन्नल क़ुर्आन लैस कलामुल्लाहि व अन्नहू मख़्लूक़ुन (फ़त्हुल बारी, पारा 30, पेज नं. 702 मत्बअ़ अंसारी)

इबारते मज़्कूरा का ख़ुलास़ा ये है कि, फ़िर्क़ा मुअ़तज़िला ने अपना नाम स़ाह़िबे अ़दल व तौह़ीद रखा है और उनकी तौह़ीद से नफ़ी सिफ़ाते इलाहिया मुराद है क्योंकि इष़्बात में तश्बीह लाज़िम आती है और जिसने अल्लाह की तश्बीह मख़्लूक़ से दी वो मुश्रिक हो जाता है और वो इस नफ़ी में फ़िर्क़ा जहमिया के मुवाफ़िक़ हैं लेकिन अहले सुन्नत ने तौह़ीद की तफ़्सीर नफ़ीये तश्बीह व तअ़त़ील से की है। इसी क़िस्म का क़ौल जुनैद (रह़.) से मन्क़ूल है। अबुल क़ासिम क़ुशैरी ने कहा कि तौह़ीद से ऐसी

ज़ात मुराद है जो क़दीम से हादिष़ नहीं। अबुल क़ासिम तमीमी ने किताबुल हुज्ज मे तहरीर फ़र्माया है कि तौहीद मस़दर है जिसके सैग़े वह्हद यवह्हिद हैं। तौहीद से ऐसा ए'तिक़ाद मुराद है कि अल्लाह अपनी ज़ात और सिफ़ात में मुंफ़रिद है। न उसकी कोई शबोह है न नज़ीर। कुछ का क़ौल ये है कि अल्लाह कैफ़ियत और कमियत से बेनियाज़ है। या'नी अल्लाह अपनी ज़ात और सिफ़ात में कमी व बेशी और तग़य्युरात से बालातर है और उसकी ज़ात इब्न व अब्ब की तक़्सीम से भी पाक है। उसकी सिफ़ात तश्बीह से मुनज़्ज़ा हैं। उसकी मा'बूदियत और हुकूमत व तदबीरे ख़लाइक़ मे कोई शरीक नहीं। न उसके सिवा कोई रब और ख़ालिक़ है। इब्ने बत्ताल ने इतना इज़ाफ़ा और किया कि अल्लाह की ज़ात जिस्म से बेनियाज़ है क्योंकि जिस्म की ता'रीफ़ ये है कि वो चंद मुख़्तलिफ़ चीज़ों से बनता है जिससे जहमिया की तर्दीद होती है जो जिस्म को तस्लीम करते हैं और ग़ालिबन उससे मुशब्बिहा के क़ौल की तर्दीद भी मुराद है। फ़िर्क़ा जहमिया की सारी किताबों में बिला इख़्तिलाफ़ ये अक़ीदा तहरीर है कि अल्लाह की सारी सिफ़तें जो बयान की जाती हैं ग़लत हैं और उन्होंने अल्लाह की ज़ात को मुअत्तल (बेकार) क़रार दिया। इमाम अबू हनीफ़ा (रह. ने फ़र्माया कि फ़िर्क़ा जहमिया इस अक़ीदे में बहुत ग़ुलू कर गये कि अल्लाह की कोई हस्ती नहीं। किर्मानी का क़ौल है कि ये फ़िर्क़ा जहमिया नया फ़िर्क़ा है जो जहम बिन स़फ़्वान की तरफ़ मन्सूब है। पहले वो जबरिया अक़ीदा का क़ाइल था कि बन्दा मजबूरे महज़ है जो जहम हिशाम बिन अब्दुल मलिक के ज़माने में क़त्ल किया गया जिन वजूह पर लोगों ने इस फ़िर्के जहमिया की तर्दीद की है, उनमें जबर का ख़ास़ मुक़ाम है और सलफ़ ने उनकी मज़म्मत पर जो इत्तिफ़ाक़ किया है वो उनके इंकार सिफ़ात की बिना पर है। वो यहाँ तक कह गये कि क़ुर्आन अल्लाह का कलाम नहीं बल्कि जुम्ला मख़्लूक़ात की तरह एक मख़्लूक़ है। फ़िर्क़ा मुअतज़िला का बानी एक शख़्स़ वास़िल बिन अता नामी गुज़रा है जो बनी उमय्या के आख़िरी ख़लीफ़ा मरवानुल हिमार के अहद मे फ़ौत हुआ। वजहे तस्मिया ये है कि हज़रत हसन बस़री से किसी ने कहा कि (कबीरा गुनाह कुफ़्र है और स़ाहिबे कबीरा काफ़िर है) और मुरजिया के क़ौल (मोमिन को गुनाह से मुत्लक़ ज़रर नहीं जिस तरह कि काफ़िर को इताअत से कोई नफ़ा नहीं) उन दोनों में आप फ़ैसला फ़र्माएँ आप अभी ख़ामोश थे कि आपका एक शागिर्द वास़िल बिन अता नामी बोल उठा कि स़ाहिबे कबीरा का हुक्म दोनों के दरम्यान है न वो मोमिन है और न काफ़िर। वास़िल ये कहता हुआ एक सुतून की तरफ़ अलग हो गया। इस पर हसन बस़री (रह.) ने फ़र्माया कि **इअतज़िल अन्ना वास़िल** या'नी वास़िल मुअतज़ली (हमसे अलग हो, वो हो गया) वास़िल ने अपने ख़्यालात की इशाअत शुरू की और अनेक लोगों, जो पहले भी तक़दीर के मसले वग़ैरह में उसके हमख़्याल थे, उसके साथ हो गये। उनका गिरोह एक फ़िर्क़ा बन गया। जिनका नाम हज़रत इमाम हसन बस़री (रह.) के क़ौल के मुताबिक़ दूसरों की ज़ुबान पर मुअतज़िला पड़ गया लेकिन ख़ुद उन्होंने अपने लिये अहलुल अदल वत्तौहीद रखा। इसलिये कि उनके नज़दीक ख़ुदा पर वाजिब है कि मुतीअ को ष़वाब दे और आस़ी को अगर वो बग़ैर तौबा के मर गया हो तो अज़ाब करे वरना उसका अदल क़ायम नहीं रहेगा। नीज़ उनके नज़दीक भी जहमिया की तरह सिफ़ाते बारी का मफ़्हूम ज़ात पर कोई ज़ाइद अम्र नहीं उसकी सिफ़ाते ऐन उसकी ज़ात है वरना तअद्दद लाज़िम आएगा और तौहीद क़ायम नहीं रहेगी ये फ़िर्क़ा एक वक़्त में बहुत बढ़ गया था और ख़लीफ़ा मामून रशीद के दरबार में उन ख़्यालाते फ़ासिदा के मुअतज़िली आलिम अबू हज़ील अल्लाफ़ और इब्राहीम निज़ाम थे। उन ही लोगों ने ये अक़ीदा निकाला कि क़ुर्आन मजीद मख़्लूक़ है। इमाम अहमद बिन हंबल (रह.) को मामून के दरबार में इब्तिला में डलवाने वाले यही झूठे उलमा थे। मज़ीद तफ़्सीलात के लिये किताब तारीख़ अहले हदीष़ मुअल्लिफ़ा मौलाना मीर सियालकोटी का मुतालआ किया जाए।

बाब 1 : आँहज़रत (ﷺ) का अपनी उम्मत को अल्लाह तबारक व तआ़ला की तौहीद की तरफ़ दा'वत देना

١ - باب مَا جَاءَ فِي دُعَاءِ النَّبِيِّ ﷺ أُمَّتَهُ إِلَى تَوْحِيدِ اللهِ تَبَارَكَ وَتَعَالَى

उम्मत में उम्मते दा'वत और उम्मते इजाबत दोनों दाख़िल हैं। रसूले करीम (ﷺ) की अव्वलीन दा'वत, दा'वते तौहीद है और सारे अंबिया की भी अव्वलीन दा'वत यही रही है जैसा कि आयत **वमा अर्सल्नाक मिन क़ब्लिक मिन रसूलिन इल्ला नूहीहि इलैहि अन्नहू ला इलाहा इल्ला अना फ़अबुदून** से ज़ाहिर है।

7371. हमसे अबू आस़िम नबील ने बयान किया, उन्होंने

٧٣٧١- حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ، حَدَّثَنَا زَكَرِيَّا

कहा हमसे ज़करिया बिन इस्हाक़ ने बयान किया, उनसे यह्या बिन अ़ब्दुल्लाह बिन स़ैफ़ी ने बयान किया, उनसे अबू मअ़बद ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने मुआ़ज़ बिन जबल (रज़ि.) को यमन भेजा (दूसरी सनद) (राजेअ़ : 1395)

بْنُ إِسْحَقَ، عَنْ يَحْيَى بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ صَيْفِيٍّ، عَنْ أَبِي مَعْبَدٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ بَعَثَ مُعَاذًا إِلَى الْيَمَنِ. [راجع: ١٣٩٥]

7372. और मुझसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद बिन अबी अस्वद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे फ़ज़्ल बिन अ़ला ने बयान किया, उनसे इस्माईल बिन उमय्या ने बयान किया, उनसे यह्या बिन अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद बिन स़ैफ़ी ने बयान किया, उन्होंने इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) के गुलाम अबू मअ़बद से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैंने ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) से सुना, उन्होंने कहा कि जब रसूले करीम (ﷺ) ने मुआ़ज़ बिन जबल (रज़ि.) को यमन भेजा, तो उनसे फ़र्माया कि तुम अहले किताब में से एक क़ौम के पास जा रहे हो। इसलिये सबसे पहले उन्हे इसकी दा'वत देना कि वो अल्लाह को एक मानें (और मेरी रिसालत का इक़रार करे) जब उसे वो समझ लें तो फिर उन्हें बताना कि अल्लाह ने एक दिन और रात में उन पर पाँच नमाज़ें फ़र्ज़ की हैं। जब वो नमाज़ पढ़ने लगें तो उन्हें बताना कि अल्लाह ने उन पर उनके मालों में ज़कात फ़र्ज़ की है, जो उनके अमीरों से ली जाएगी और उनके ग़रीबों को लौटा दी जाएगी। जब वो इसका भी इक़रार कर लें तो उनसे ज़कात लेना और लोगों के उम्दह माल लेने से परहेज़ करना। (राजेअ़ : 1395)

٧٣٧٢- وحدَّثني عَبْدُ اللهِ بْنِ مُحَمَّدِ بْنُ أَبِي الأَسْوَدِ، حَدَّثَنَا الْفَضْلُ بْنُ الْعَلاَءِ، حَدَّثَنَا إِسْمَعِيلُ بْنُ أُمَيَّةَ، عَنْ يَحْيَى بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ صَيْفِيٍّ أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا مَعْبَدٍ مَوْلَى ابْنِ عَبَّاسٍ يَقُولُ: سَمِعْتُ ابْنَ عَبَّاسٍ يَقُولُ: لَمَّا بَعَثَ النَّبِيُّ ﷺ مُعَاذًا نَحْوَ الْيَمَنِ قَالَ لَهُ: إِنَّكَ تَقْدَمُ عَلَى قَوْمٍ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ فَلْيَكُنْ أَوَّلَ مَا تَدْعُوهُمْ إِلَى أَنْ يُوَحِّدُوا اللهَ تَعَالَى فَإِذَا عَرَفُوا ذَلِكَ فَأَخْبِرْهُمْ أَنَّ اللهَ فَرَضَ عَلَيْهِمْ خَمْسَ صَلَوَاتٍ فِي يَوْمِهِمْ وَلَيْلَتِهِمْ، فَإِذَا صَلَّوْا فَأَخْبِرْهُمْ أَنَّ اللهَ افْتَرَضَ عَلَيْهِمْ زَكَاةً فِي أَمْوَالِهِمْ تُؤْخَذُ مِنْ غَنِيِّهِمْ فَتُرَدُّ عَلَى فَقِيرِهِمْ، فَإِذَا أَقَرُّوا بِذَلِكَ فَخُذْ مِنْهُمْ، وَتَوَقَّ كَرَائِمَ أَمْوَالِ النَّاسِ.

[راجع: ١٣٩٥]

तश्रीह : तौह़ीद की दो क़िस्में हैं। तौह़ीदे रुबूबियत, तौह़ीदे उलूहियत। अल्लाह को रब मानना ये क़िस्म तो अकष़र कुफ़्फ़ार और मुश्रिकीन को भी तस्लीम रही है। दूसरी तौह़ीद के मा'नी ये कि इबादत व बंदगी के जितने काम हैं उनको ख़ालिस़ एक अल्लाह के लिये बजा लाना। मुश्रिकीन को इससे इंकार रहा और आज अकष़र नामोनिहाद मुसलमानों का भी यही ह़ाल है कि वो इबादत व बंदगी अल्लाह के सिवा बुज़ुर्गों और औलिया किराम की भी बजा लाते हैं। अकष़र मुसलमान नुमा मुश्रिकीन क़ब्रों को सज्दा करते हैं बुज़ुर्गाने इस्लाम के नाम की नज़्र नियाज़ करते हैं। इस ह़दीष़ मे ब सिलसिला तब्लीग़ पहले तौह़ीदे उलूहियत की दा'वत देना ज़रूरी क़रार दिया है फिर दीगर अरकाने इस्लाम की तब्लीग़ करना। किताबुत्तौह़ीद से ह़दीष़ से ह़दीष़ का यही ता'ल्लुक़ है कि बहरहाल तौह़ीदे उलूहियत मुक़द्दम है।

7373. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे

٧٣٧٣- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا

ग़ुन्दर ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे अबू हुसैन और अश्अ़ष बिन सुलैम ने, उन्होंने अस्वद बिन हिलाल से सुना, उनसे मुआ़ज़ बिन जबल (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, ऐ मुआ़ज़! क्या तुम्हें मा'लूम है कि अल्लाह का उसके बन्दों पर क्या ह़क़ है? उन्होंने कहा कि अल्लाह और उसके रसूल ही ज़्यादा जानते हैं। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि ये है कि वो स़िर्फ़ उसी की इबादत करें और उसका कोई शरीक़ न ठहराएँ। क्या तुम्हें मा'लूम हैं कि फिर बन्दों का अल्लाह पर क्या ह़क़ है? अ़र्ज़ किया कि अल्लाह और उसके रसूल ही ज़्यादा जानते हैं। फ़र्माया ये है कि वो उन्हें अ़ज़ाब न दे। (राजेअ़ : 2856)

غُنْدَرٌ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ أَبِي حَصِينٍ وَالأَشْعَثِ بْنِ سُلَيْمٍ سَمِعَا الأَسْوَدَ بْنَ هِلاَلٍ، عَنْ مُعَاذِ بْنِ جَبَلٍ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((يَا مُعَاذُ أَتَدْرِي مَا حَقُّ اللهِ عَلَى الْعِبَادِ؟)) قَالَ: اللهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ قَالَ: ((أَنْ يَعْبُدُوهُ وَلاَ يُشْرِكُوا بِهِ شَيْئًا، أَتَدْرِي مَا حَقُّهُمْ عَلَيْهِ؟)) قَالَ: اللهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ. قَالَ: ((أَنْ لاَ يُعَذِّبَهُمْ)).

[راجع: ٢٨٥٦]

तश्रीह : इबादत व बंदगी के कामों में अल्लाह पाक को वह्दहू ला शरीक लहू माने। यही वो ह़क़ है जो अल्लाह ने अपने हर बन्दे बन्दी के ज़िम्मे वाजिब क़रार दिया है। बन्दे ऐसा करें तो उनका ह़क़ बज़िम्मे अल्लाह पाक ये है कि वो उनको बख़्श दे और जन्नत में दाख़िल करे।

7374. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, उन्होंने कहा मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुर्रह़मान बिन अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबी स़अ़स़आ ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने और उनसे ह़ज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने बयान किया कि एक शख़्स़ ने एक-दूसरे शख़्स़ क़तादा बिन नोअ़मान को बार बार कुल हुवल्लाहु अह़द पढ़ते सुना। सुबह हुई तो नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में ह़ाज़िर होकर इस त़रह़ वाक़िया बयान किया जैसे वो उसे कम समझते हों। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया उस ज़ात की क़सम! जिसके हाथ में मेरी जान है! ये सूरत तिहाई क़ुर्आन के बराबर है। इस्माईल बिन जा'फ़र ने इमाम मालिक से ये बढ़ाया कि उनसे अ़ब्दुर्रह़मान ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने कहा कि मुझे मेरे भाई क़तादा बिन नोअ़मान ने ख़बर दी नबी करीम (ﷺ) से। (राजेअ़ : 5013)

٧٣٧٤- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، حَدَّثَنِي مَالِكٌ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي صَعْصَعَةَ عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ أَنَّ رَجُلاً سَمِعَ رَجُلاً يَقْرَأُ: ﴿قُلْ هُوَ اللهُ أَحَدٌ﴾ يُرَدِّدُهَا فَلَمَّا أَصْبَحَ جَاءَ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَذَكَرَ لَهُ ذَلِكَ، وَكَأَنَّ الرَّجُلَ يَتَقَالُّهَا فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ، إِنَّهَا لَتَعْدِلُ ثُلُثَ الْقُرْآنِ)). وَزَادَ إِسْمَاعِيلُ بْنُ جَعْفَرٍ، عَنْ مَالِكٍ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ أَخْبَرَنِي أَخِي قَتَادَةُ بْنُ النُّعْمَانِ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ. [راجع: ٥٠١٣]

तश्रीह : इस सूरत को सूरह इख़्लास़ कहा गया है। इसमें तमाम क़िस्मों के शिर्क की तर्दीद करते हुए ख़ालिस़ तौह़ीद को पेश किया गया है। इसका हर एक लफ़्ज़ तौह़ीद का मज़्हर है। मज़ामीने क़ुर्आन के तीन ह़िस़्से हैं। एक ह़िस़्सा तौह़ीदे इलाही और उसके स़िफ़ात और अफ़्आ़ल का बयान, दूसरा क़स़स़ का बयान, तीसरा अह़कामे शरीअ़त का बयान, तो कुल हुवल्लाहु अह़द में एक ह़िस़्सा मौजूद है इसलिये इस सूरत का मक़ाम तिहाई क़ुर्आन के बराबर हुआ। सूरह इख़्लास़ की तफ़्सीर में ह़ज़रत शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ फ़र्माते हैं, कुछ उ़लमा ने कहा है कि शिर्कत कभी अ़दद मे होती है जिसकी

लफ़्ज़ अह़द से नफ़ी कर दी गई है और कभी शिर्कत मर्तबा और मन्सब में होती है उसकी नफ़ी लफ़्ज़े समद से की गई है। कभी शिर्कत निस्बत में होती है जिसकी लफ़्ज़ लम यलिद से नफ़ी की गई है और कभी शिर्कत काम और ताष़ीर मे होती है उसकी नफ़ी लफ़्ज़े वलम यकुल्लहू कुफ़ुवन अह़द से की गई है। आगे ह़ज़रत शाह स़ाह़ब फ़र्माते हैं कि दुनिया के मज़ाहिबे बातिला पाँच हैं। अव्वल दहरिया, दौम फ़लासफ़ा, सौम ष़नविया, चौथा यहूद व नस़ारा, पाँचवाँ मजूसिया और हर एक के ज़िक्र में ह़ज़रत शाह स़ाह़ब ने इस सूरह का वो कलिमा ज़िक्र किया है जिससे उस फ़िर्के की तर्दीद होती है। पस इस सूरह को मसल-ए-तौह़ीद में जामेअ़ व मानेअ़ क़रार दिया गया है इसीलिये इसकी फ़ज़ीलत है जो इस ह़दीष़ में मज़्कूर है।

7375. हमसे मुह़म्मद ने बयान किया, कहा हमसे अह़मद बिन स़ालेह़ ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने वहब ने बयान किया, उनसे अ़म्र ने, उनसे अबू हिलाल ने और उनसे अबुर्रिजाल मुह़म्मद बिन अ़ब्दुर्रह़मान ने, उनसे उनकी वालिदा अ़म्र बिन्ते अ़ब्दुर्रह़मान ने, वो उम्मुल मोमिनीन आ़इशा (रज़ि.) की परवरिश में थीं। उन्होंने आ़इशा (रज़ि.) से बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने एक स़ाह़ब को एक मुहिम पर रवाना किया। वो स़ाह़ब अपने साथियों को नमाज़ पढ़ाते थे और नमाज़ में ख़त्म क़ुल हुवल्लाहु अह़द पर करते थे। जब लोग वापस आए तो उसका ज़िक्र आँह़ज़रत (ﷺ) से किया। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि उनसे पूछो कि वो ये त़र्ज़े अ़मल क्यूँ इख़्तियार किये हुए थे। चुनाँचे लोगों ने पूछा तो उन्होंने कहा कि वो ऐसा इसलिये करते थे कि ये अल्लाह की स़िफ़त है और मैं उसे पढ़ना अ़ज़ीज़ रखता हूँ। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि उन्हें बता दो कि अल्लाह भी उन्हें अ़ज़ीज़ रखता है।

٧٣٧٥- حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ صَالِحٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ، حَدَّثَنَا عَمْرٌو، عَنِ ابْنِ أَبِي هِلاَلٍ أَنَّ أَبَا الرِّجَالِ مُحَمَّدَ بْنَ عَبْدِ الرَّحْمَنِ حَدَّثَهُ عَنْ أُمِّهِ عَمْرَةَ بِنْتِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، وَكَانَتْ فِي حَجْرِ عَائِشَةَ زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ عَنْ عَائِشَةَ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ بَعَثَ رَجُلاً عَلَى سَرِيَّةٍ، وَكَانَ يَقْرَأُ لأَصْحَابِهِ فِي صَلاَتِهِ فَيَخْتِمُ بِقُلْ هُوَ اللهُ أَحَدٌ فَلَمَّا رَجَعُوا ذَكَرُوا ذَلِكَ لِلنَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: ((سَلُوهُ لأَيِّ شَيْءٍ يَصْنَعُ ذَلِكَ؟)) فَسَأَلُوهُ فَقَالَ: لأَنَّهَا صِفَةُ الرَّحْمَنِ، وَأَنَا أُحِبُّ أَنْ أَقْرَأَ بِهَا فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((أَخْبِرُوهُ أَنَّ اللهَ يُحِبُّهُ)).

तश्रीह़ : इस सूरह शरीफ़ में अल्लाह तआ़ला की अव्वलीन स़िफ़त वह़दानियत दूसरी स़िफ़ते स़मदानियत को ज़ाहिर किया गया है। मअ़रिफ़ते इलाही के समझने के सिलसिले में वजूदे बारी तआ़ला की ज़ात इससे बिलकुल पाक है कि वो औलाद मिष़्ल मख़्लूक़ के रखता हो या कोई उसका जनने वाला हो वो इन दोनों सिलसिलों से बहुत दूर है। इस सिलसिले के लिये मुज़क्कर हो या मुअन्नष़ हम ज़ात होना ज़रूरी है और सारी कायनात में उसका हम ज़ात कोई नहीं है। वो इस बारे में भी वह़दहू ला शरीक लहू है। इन तमाम कामों को समझकर मअ़रिफ़ते इलाही ह़ास़िल करना अंबिया किराम का यही अव्वलीन पैग़ाम है। यही अस़ल दा'वते दीन है **ला इलाहा इल्लल्लाह** का यही मफ़्हूम है।

बाब 2 : अल्लाह तआ़ला का इर्शाद सूरह बनी इस्राईल में कि आप कह दीजिए कि अल्लाह को पुकारो या रह़मान को, जिस नाम से भी पुकारोगे

٢- باب قَوْلِ اللهِ تَبَارَكَ وَتَعَالَى : ﴿قُلِ ادْعُوا اللهَ أَوِ ادْعُوا الرَّحْمَنَ أَيًّامَا تَدْعُوا

तो अल्लाह के सब नाम अच्छे हैं. (बनी इस्राईल) ﴿فَلَهُ الْأَسْمَاءُ الْحُسْنَى﴾ [الأسراء: ١١٠]

तश्रीह : निन्नान्वे नाम तो बहुत मशहूर हैं जो तिर्मिज़ी की ह़दीष़ में वारिद हैं और उनके सिवा भी बहुत नाम और स़िफ़ात क़ुर्आन व ह़दीष़ में वारिद हैं। उन सबसे अल्लाह को याद कर सकते हैं लेकिन अपने त़रफ़ से कोई नाम या स़िफ़त तराशना जाइज़ नहीं। ह़ज़राते सूफ़िया ने फ़र्माया है कि अल्लाह के मुबारक नामों में अ़जीब आष़ार हैं बशर्ते कि आदमी पाक होकर अदब से इनको पढ़ा करे और ये भी ज़रूरी है कि ह़लाल का लुक़्मा खाता हो, ह़राम से परहेज़ करता हो। मष़लन ग़िना और तवंगरी के लिये या ग़नी या मुग़्नी का विर्द रखे। शिफ़ा और तन्दुरुस्ती के लिये या शाफ़ी या काफ़ी या माफ़ी का, ह़ुसूले मत़ालिब के लिये या क़ाज़ियुल ह़ाजात या काफ़ियुल मुहिम्मात का, दुश्मन पर ग़ल्बा ह़ासिल करने के लिये या अ़ज़ीज़ या क़ह्हार का, अज़्दियादे इ़ज़्ज़त और आबरू के लिये या राफ़ेअ़ या मुइ़ज़्ज़ का, अ़ला हाज़ल क़यास। (वह़ीदी)

7376. हमसे मुह़म्मद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको अबू मुआ़विया ने ख़बर दी, उन्हें आ'मश ने, उन्हें ज़ैद बिन वहब और अबू ज़िब्यान ने और उनसे जरीर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया जो लोगों पर रह़म नही खाता अल्लाह भी उस पर रह़म नहीं खाता।

(राजेअ़ : 6013)

٧٣٧٦- حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ، أَخْبَرَنَا أَبُو مُعَاوِيَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ زَيْدِ بْنِ وَهْبٍ وَأَبِي ظَبْيَانَ، عَنْ جَرِيرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ قَالَ : قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((لاَ يَرْحَمُ اللهُ مَنْ لاَ يَرْحَمُ النَّاسَ)). [راجع: ٦٠١٣]

बाब की मुत़ाबक़त ज़ाहिर है कि अल्लाह की एक स़िफ़त रह़म भी है तो रह़मान और रह़ीम नामों से भी उसे पुकार सकते हैं।

7377. हमसे अबुन नोअ़मान ने बयान किया, कहा हमसे ह़म्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे आ़सिम अह़वल ने, उनसे अबू उ़ष़्मान नह्दी ने और उनसे उसामा बिन ज़ैद (रज़ि.) ने बयान किया कि हम रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास थे कि आपकी एक स़ाह़बज़ादी ह़ज़रत ज़ैनब के भेजे हुए एक शख़्स़ आपकी ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए कि उनके लड़के जाँकनी में मुब्तला हैं और वो आँह़ुज़ूर (ﷺ) को बुला रही हैं। आँह़ज़रत (ﷺ) ने उनसे फ़र्माया कि तुम जाकर उन्हें बता दो कि अल्लाह ही का सब माल है जो चाहे ले ले और जो चाहे दे दे और उसकी बारगाह में हर चीज़ के लिये एक वक़्त मुक़र्रर है। पस उनसे कहो कि स़ब्र करें और उस पर स़ब्र ष़वाब की निय्यत से करें। स़ाह़बज़ादी ने दोबारा आपको क़सम देकर कहला भेजा कि आप ज़रूर तशरीफ़ लाएँ। चुनाँचे आँह़ज़रत (ﷺ) खड़े हुए और आपके साथ सअ़द बिन मुआ़ज़ और मुआ़ज़ बिन जबल (रज़ि.) भी खड़े हुए (फिर जब आप स़ाह़बज़ादी के घर पहुँचे तो) बच्चे आपको दिया गया और उसकी सांस उखड़ रही थी जैसे पुरानी मुश्क का ह़ाल होता है। ये देखकर आँह़ज़रत (ﷺ) की आँखों मे आँसू भर आए। उस पर सअ़द (रज़ि.) ने कहा या

٧٣٧٧- حَدَّثَنَا أَبُو النُّعْمَانِ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، عَنْ عَاصِمٍ الأَحْوَلِ، عَنْ أَبِي عُثْمَانَ النَّهْدِيِّ، عَنْ أُسَامَةَ بْنِ زَيْدٍ قَالَ: كُنَّا عِنْدَ النَّبِيِّ ﷺ إِذْ جَاءَهُ رَسُولُ إِحْدَى بَنَاتِهِ يَدْعُوهُ إِلَى ابْنِهَا فِي الْمَوْتِ فَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((ارْجِعْ فَأَخْبِرْهَا أَنَّ للهِ مَا أَخَذَ، وَلَهُ مَا أَعْطَى وَكُلُّ شَيْءٍ عِنْدَهُ بِأَجَلٍ مُسَمًّى، فَمُرْهَا فَلْتَصْبِرْ وَلْتَحْتَسِبْ)) فَأَعَادَتِ الرَّسُولَ أَنَّهَا أَقْسَمَتْ لَتَأْتِيَنَّهَا فَقَامَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، وَقَامَ مَعَهُ سَعْدُ بْنُ عُبَادَةَ وَمُعَاذُ بْنُ جَبَلٍ فَدُفِعَ الصَّبِيُّ إِلَيْهِ وَنَفْسُهُ تَقَعْقَعُ كَأَنَّهَا فِي شَنٍّ، فَفَاضَتْ عَيْنَاهُ فَقَالَ لَهُ سَعْدٌ : يَا رَسُولَ اللهِ مَا هَذَا؟ قَالَ:

((هَذِهِ رَحْمَةٌ جَعَلَهَا اللهُ فِي قُلُوبِ عِبَادِهِ وَإِنَّمَا يَرْحَمُ اللهُ مِنْ عِبَادِهِ الرُّحَمَاءَ)). [راجع: ١٢٨٤]

रसूलल्लाह! ये क्या है? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि ये रहमत है जो अल्लाह तआला ने अपने बन्दों के दिलों में रखी है और अल्लाह भी अपने उन्हीं बन्दों पर रहम करता है जो रहम दिल होते हैं। (राजेअ : 1284)

तर्जुम-ए-बाब यहीं से निकला कि अल्लाह के लिये सिफ़ते रहम का इष्बात हुआ।

٣- باب قَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿أَنَا الرَّزَّاقُ ذُو الْقُوَّةِ الْمَتِينُ﴾

बाब 3 : अल्लाह तआला का इर्शाद सूरह वज़्ज़ारियात में, मैं बहुत रोज़ी देने वाला, ज़ोरदार मज़बूत हूँ

तश्रीह : कुर्आन मजीद में यूँ है, **इन्नल्लाह हुवर्रज़्ज़ाकु ज़ुल कुव्वतिल मतीन** (अज़्ज़ारियात : 58) हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने यहाँ लफ़्ज़ **अन्नर्रज़्ज़ाक़** लिखे हैं। इब्ने मसऊद (रज़ि) की यही क़िरात है।

٧٣٧٨- حَدَّثَنَا عَبْدَانُ، عَنْ أَبِي حَمْزَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنْ أَبِي عَبْدِ الرَّحْمَنِ السُّلَمِيِّ، عَنْ أَبِي مُوسَى الأَشْعَرِيِّ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((مَا أَحَدٌ أَصْبَرَ عَلَى أَذًى سَمِعَهُ مِنَ اللهِ يَدْعُونَ لَهُ الْوَلَدَ، ثُمَّ يُعَافِيهِمْ وَيَرْزُقُهُمْ)). [راجع: ٦٠٩٩]

7378. हमसे अब्दान ने बयान किया, उनसे अबू हम्ज़ा ने, उनसे आ'मश ने, उनसे सईद बिन जुबैर ने, उनसे अबू अब्दुर्रहमान सुल्मी ने और उनसे अबू मूसा अश्अरी (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, तकलीफ़ वो बात सुनकर अल्लाह से ज़्यादा सब्र करने वाला कोई नहीं है। कमबख़्त मुश्रिक कहते हैं कि अल्लाह औलाद रखता है और फिर भी वो उन्हें माफ़ करता है और उन्हें रोज़ी देता है। (राजेअ : 6099)

٤- باب قَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿عَالِمُ الْغَيْبِ فَلاَ يُظْهِرُ عَلَى غَيْبِهِ أَحَدًا﴾

[الجن: ٢٦]. ﴿وَإِنَّ اللهَ عِنْدَهُ عِلْمُ السَّاعَةِ﴾، وَأَنْزَلَهُ بِعِلْمِهِ - ﴿وَمَا تَحْمِلُ مِنْ أُنْثَى وَلاَ تَضَعُ إِلاَّ بِعِلْمِهِ﴾ - ﴿إِلَيْهِ يُرَدُّ عِلْمُ السَّاعَةِ﴾. قَالَ يَحْيَى بْنُ زِيَادٍ الظَّاهِرُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ عِلْمًا وَالْبَاطِنُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ عِلْمًا.

बाब 4 : अल्लाह तआला का इर्शाद है सूरह जिन में कि, वो ग़ैब का जानने वाला है और अपने ग़ैब को किसी पर नहीं खोलता।

और सूरह लुक़्मान में फ़र्माया, बिला शुब्हा अल्लाह के पास क़यामत का इल्म है, और उसने अपने इल्म ही से उसे नाज़िल किया। और औरत जिसे अपने पेट में उठाती है और जो कुछ जनती है वो उसी के इल्म के मुताबिक़ होता है और उसी की तरफ़ क़यामत में लौटाया जाएगा। यह्या बिन ज़ियाद फ़रा ने कहा हर चीज़ पर ज़ाहिर है या'नी इल्म की वजह से और हर चीज़ पर बातिन है या'नी इल्म की वजह है।

٧٣٧٩- حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ مَخْلَدٍ، حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ بِلاَلٍ، حَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ

7379. हमसे ख़ालिद बिन मुख़्लद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सुलैमान बिन बिलाल ने बयान किया, उन्होंने

دِينَارٍ، عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((مَفَاتِيحُ الْغَيْبِ خَمْسٌ لاَ يَعْلَمُهَا إِلاَّ اللهُ لاَ يَعْلَمُ مَا تَغِيضُ الأَرْحَامُ إِلاَّ اللهُ، وَلاَ يَعْلَمُ مَا فِي غَدٍ، إِلا اللهُ وَلاَ يَعْلَمُ مَتَى يَأْتِي الْمَطَرُ أَحَدٌ إِلاَّ اللهُ، وَلاَ تَدْرِي نَفْسٌ بِأَيِّ أَرْضٍ تَمُوتُ إِلاَّ اللهُ، وَلاَ يَعْلَمُ مَتَى تَقُومُ السَّاعَةُ إِلاَّ اللهُ)).

[راجع: ١٠٣٩]

कहा मुझसे अ़ब्दुल्लाह बिन दीनार ने बयान किया और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया। ग़ैब की पाँच कुंजियाँ हैं, जिन्हें अल्लाह के सिवा और कोई नहीं जानता। अल्लाह के सिवा और कोई नहीं जानता कि रह़म मादर में क्या है, अल्लाह के सिवा और कोई नहीं जानता कि कल क्या होगा, अल्लाह के सिवा और कोई नहीं जानता कि बारिश कब आएगी, अल्लाह के सिवा और कोई नहीं जानता कि किस जगह कोई मरेगा और अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता कि क़यामत कब क़ायम होगी? (राजेअ़ : 1039)

तश्रीह़ : इस पर सब मुसलमानों का इत्तिफ़ाक़ है कि ग़ैब का इ़ल्म आँह़ज़रत (ﷺ) को भी न था मगर जो बात अल्लाह तआ़ला आपको बतला देता वो मा'लूम हो जाती। इब्ने इस्ह़ाक़ ने मग़ाज़ी में नक़ल किया कि आँह़ज़रत (ﷺ) की ऊँटनी गुम हो गई तो इब्ने स़ल्लत कहने लगा। मुह़म्मद (ﷺ) अपने तईं पैग़म्बर कहते हैं और आसमान के ह़ालात तुमसे बयान करते हैं लेकिन उनको अपनी ऊँटनी की ख़बर नहीं वो कहाँ है? ये बात आँह़ज़रत (ﷺ) को पहुँची तो फ़र्माया एक शख़्स़ ऐसा ऐसा कहता है और मैं तो क़सम अल्लाह की वही बात जानता हूँ जो अल्लाह तआ़ला ने मुझको बतलाई और अब अल्लाह तआ़ला ने मुझको बतला दिया वो ऊँटनी फ़लाँ घाटी में है, एक पेड़ पर अटकी हुई है, आख़िर स़ह़ाबा गये और उसको लेकर आए।

٧٣٨٠- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ إِسْمَاعِيلَ، عَنِ الشَّعْبِيِّ، عَنْ مَسْرُوقٍ، عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ : مَنْ حَدَّثَكَ أَنَّ مُحَمَّدًا ﷺ رَأَى رَبَّهُ فَقَدْ كَذَبَ وَهُوَ يَقُولُ: ﴿لاَ تُدْرِكُهُ الأَبْصَارُ﴾ [الأنعام: ١٠٣] وَمَنْ حَدَّثَكَ أَنَّهُ يَعْلَمُ الْغَيْبَ فَقَدْ كَذَبَ، وَهُوَ يَقُولُ: ﴿لاَ يَعْلَمُ الْغَيْبَ إِلاَّ اللهُ﴾).

[راجع: ٣٢٣٤]

7380. हमसे मुह़म्मद बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे इस्माईल ने बयान किया, उनसे शअ़बी ने बयान किया, कि अगर तुमसे कोई ये कहता है कि मुह़म्मद (ﷺ) ने अपने रब को देखा तो वो ग़लत़ कहता है क्योंकि अल्लाह तआ़ला अपने बारे में ख़ुद कहता है कि नज़रें उसको देख नहीं सकतीं और जो कोई कहता है कि आँह़ज़रत (ﷺ) ग़ैब जानते थे तो ग़लत़ कहता है क्योंकि अल्लाह तआ़ला ख़ुद कहता है कि ग़ैब का इ़ल्म अल्लाह के सिवा और किसी को नहीं। (राजेअ़ : 3234)

तश्रीह़ : सच है,

इ़ल्म ग़ैबी किस नुमी दांद बजुज़ परवरदिगारगर किंसे दा'वा कन्द हर्गिज़ अज़्बावर मदार

जो ग़ाली लोग रसूले करीम (ﷺ) के लिये इ़ल्मे ग़ैब स़ाबित करते हैं वो क़ुर्आन मजीद की तह़रीफ़ करते हैं और अज़्ख़ुद एक ग़लत़ अ़क़ीदा घड़ते हैं। लोगों को ऐसे ख़न्नास लोगों से दूर रहकर अपने दीन व ईमान की ह़िफ़ाज़त करनी चाहिये। रसूले करीम (ﷺ) ने जो भी ग़ायबाना ख़बरें दी हैं वो सब वह्य इलाही से हैं। उनको ग़ैब कहना लोगों को धोखा देना है।

٥- باب قَوْلِ اللهِ تَعَالَى : ﴿السَّلاَمُ

बाब 5 : अल्लाह तआ़ला का इर्शाद सूरह ह़श्र में,

الْمُؤْمِنُ﴾ [الحشر: ٢٣].

अल्लाह सलामती देने वाला (अस्सलाम) अमन देने वाला (मुअ'मिन) है। (अल ह़श्र : 23)

सबको सलामत रखने वाला और सबको अमन देने वाला।

٧٣٨١- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ يُونُسَ، حَدَّثَنَا زُهَيْرٌ، حَدَّثَنَا مُغِيرَةُ، حَدَّثَنَا شَقِيقُ بْنُ سَلَمَةَ قَالَ: قَالَ عَبْدُ اللهِ كُنَّا نُصَلِّي خَلْفَ النَّبِيِّ ﷺ فَنَقُولُ: السَّلاَمُ عَلَى اللهِ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِنَّ اللهَ هُوَ السَّلاَمُ، وَلَكِنْ قُولُوا: التَّحِيَّاتُ لِلَّهِ وَالصَّلَوَاتُ وَالطَّيِّبَاتُ، السَّلاَمُ عَلَيْكَ أَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهُ، السَّلاَمُ عَلَيْنَا وَعَلَى عِبَادِ اللهِ الصَّالِحِينَ أَشْهَدُ أَنْ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ)).

[راجع: ٨٣١]

7381. हमसे अह़मद बिन यूनुस ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे ज़ुहैर ने बयान किया, कहा हमसे मुग़ीरह ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे शक़ीक़ बिन सलमा ने बयान किया और उनसे अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि हम (इब्तिदा इस्लाम में) रसूलुल्लाह (ﷺ) के पीछे नमाज़ पढ़ते थे और कहते थे अस्सलामु अ़लल्लाह तो आँह़ज़रत (ﷺ) ने हमसे फ़र्माया कि अल्लाह तो ख़ुद ही अस्सलाम है। अल्बत्ता इस तरह़ कहा करो, अत्तह़िय्यात लिल्लाहि वस्सलावातु वत्तय्यिबातु अस्सलामु अ़लैक अय्युहन्नबिय्यु व रह़मतुल्लाहि व बरकातुहू अस्सलामु अ़लैना व अ़ला इबादिल्लाहिस्सालिहीन अश्हदु अल्ला इलाहा इल्लल्लाहु व अश्हदु अन्ना मुहम्मदन अ़ब्दुहू व रसूलुहू। (राजेअ़ : 831)

٦- باب قَوْلِ اللهِ تَعَالَى : ﴿مَلِكِ النَّاسِ﴾

فِيهِ ابْنُ عُمَرَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ.

बाब 6 : अल्लाह तआ़ला का इर्शाद सूरह नास में कि, लोगों का बादशाह इस बाब मे इब्ने उ़मर (रज़ि.) की एक रिवायत नबी (ﷺ) से मरवी है

٧٣٨٢- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ صَالِحٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي يُونُسُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ سَعِيدٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((يَقْبِضُ اللهُ الأَرْضَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ، وَيَطْوِي السَّمَاءَ بِيَمِينِهِ ثُمَّ يَقُولُ: أَنَا الْمَلِكُ أَيْنَ مُلُوكُ الأَرْضِ؟)). وَقَالَ شُعَيْبٌ وَالزُّبَيْدِيُّ وَابْنُ مُسَافِرٍ وَإِسْحَاقُ بْنُ يَحْيَى عَنِ الزُّهْرِيِّ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ.

[راجع: ٤٨١٢]

7382. हमसे अह़मद बिन स़ालेह़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इब्ने वहब ने बयान किया, उन्होंने कहा मुझको यूनुस ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने शिहाब ने, उन्हें सईद ने, उन्हें ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया अल्लाह क़यामत के दिन ज़मीन को अपनी मुट्ठी में ले लेगा और आसमान को अपने दाएँ हाथ में लपेट लेगा फिर फ़र्माएगा मैं बादशाह हूँ, कहाँ हैं ज़मीन के बादशाह। शुऐ़ब और ज़ुबैदी बिन मुसाफ़िर और इस्ह़ाक़ बिन यह़्या ने ज़ुह्री से बयान किया और उनसे अबू सलमा (रज़ि.) ने। (राजेअ़ : 4812)

٧- باب قَوْلِ اللهِ تَعَالَى:

बाब 7 : अल्लाह तआ़ला का इर्शाद, और वही ग़ालिब है, ह़िक्मत वाला

﴿وَهُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ﴾ ﴿سُبْحَانَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُونَ﴾ [الصافات: ١٨٠] ﴿وَلِلَّهِ الْعِزَّةُ وَلِرَسُولِهِ﴾ [المنافقون:٨] وَمَنْ حَلَفَ بِعِزَّةِ اللهِ وَصِفَاتِهِ. وَقَالَ أَنَسٌ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((تَقُولُ جَهَنَّمُ قَطْ قَطْ وَعِزَّتِكَ)). وَقَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: ((يَبْقَى رَجُلٌ بَيْنَ الْجَنَّةِ وَالنَّارِ آخِرُ أَهْلِ النَّارِ دُخُولاً الْجَنَّةَ، فَيَقُولُ: رَبِّ اصْرِفْ وَجْهِي عَنِ النَّارِ لاَ وَعِزَّتِكَ لاَ أَسْأَلُكَ غَيْرَهَا)) قَالَ أَبُو سَعِيدٍ: إِنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ، قَالَ: ((قَالَ اللهُ عَزَّ وَجَلَّ لَكَ ذَلِكَ وَعَشَرَةُ أَمْثَالِهِ)) وَقَالَ أَيُّوبُ: ((وَعِزَّتِكَ لاَ غِنَى لِي عَنْ بَرَكَتِكَ)).

और फ़र्माया, ऐ रसूल! तेरा मालिक इज़्ज़त वाला है, उन बातों से पाक है जो ये काफ़िर बनाते हैं, और फ़र्माया, इज़्ज़त अल्लाह और उसके रसूल ही के लिये है, और जो शख़्स अल्लाह की इज़्ज़त और उसकी दूसरी सिफ़ात की क़सम खाए तो वो क़सम मुनअ़क़िद हो जाएगी, और अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जब अल्लाह उसमें अपना क़दम रख देगा तो जहन्नम कहेगी कि बस बस तेरी इज़्ज़त की क़सम! और अबू हुरैरह (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से बयान किया कि एक शख़्स जन्नत और दोज़ख़ के बीच बाक़ी रह जाएगा जो सबसे आख़िरी दोज़ख़ी होगा जिसे जन्नत मे दाख़िल होना है और कहेगा ऐ रब! मेरा चेहरा जहन्नम से फेर दे, तेरी इज़्ज़त की क़सम! उसके सिवा और मैं कुछ नहीं मागूंगा। अबू सईद (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल कहेगा कि तुम्हारे लिये ये है और उससे दस गुना और अय्यूब (अ़लैहि.) ने दुआ़ की, और तेरी इज़्ज़त की क़सम! क्या मैं तेरी इनायत और सरफ़राज़ी से कभी बेपरवाह हो सकता हूँ।

हज़रत इमाम ने सिफ़ाते इलाहिया का इष्बात फ़र्माया जो मुअ़तज़िला की तर्दीद है।

٧٣٨٣- حَدَّثَنَا أَبُو مَعْمَرٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ، حَدَّثَنَا حُسَيْنٌ الْمُعَلِّمُ، حَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ بُرَيْدَةَ، عَنْ يَحْيَى بْنِ يَعْمَرَ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ، كَانَ يَقُولُ ((أَعُوذُ بِعِزَّتِكَ الَّذِي لاَ إِلَهَ إِلاَّ أَنْتَ الَّذِي لاَ يَمُوتُ وَالْجِنُّ وَالإِنْسُ يَمُوتُونَ)).

7383. हमसे अबू मअ़मर ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल वारिष़ ने बयान किया, कहा हमसे हुसैन मुअ़ल्लिम ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन बुरैदा ने, उनसे यह्या बिन यअ़मर ने और उन्हें इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) कहा करते थे। तेरी इज़्ज़त की पनाह माँगता हूँ कि कोई मा'बूद तेरे सिवा नहीं, तेरी ऐसी ज़ात है जिसे मौत और जिन्न व इंस फ़ना हो जाएँगे।

٧٣٨٤- حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي الأَسْوَدِ، حَدَّثَنَا حَرَمِيٌّ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((يُلْقَى فِي النَّارِ)) ح. وَقَالَ لِي خَلِيفَةُ حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ، حَدَّثَنَا سَعِيدٌ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسٍ ح وعن مُعْتَمِرٍ سَمِعْتُ أَبِي عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسٍ عَنِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

7384. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन अस्वद ने बयान किया, कहा हमसे ह़रमी बिन अ़म्मारा ने, कहा हमसे शुअ़बा ने, उनसे क़तादा ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया लोगों को दोज़ख़ मे डाला जाएगा (दूसरी सनद) और मुझसे ख़लीफ़ा बिन ख़यात ने बयान किया, कहा हमसे यज़ीद बिन ज़ुरैअ़ ने बयान किया, कहा हमसे सईद बिन अबी ड़रूबा ने, उनसे क़तादा ने, उनसे अनस (रज़ि.) ने। (तीसरी सनद) और ख़लीफ़ा बिन ख़य्यात ने इस हदीष़ को मुअ़तमिर बिन सुलैमान से रिवायत किया, कहा मैंने अपने वालिद से सुना,

قَالَ ((لاَ يَزَالُ يُلْقَى فِيهَا وَتَقُولُ: هَلْ مِنْ مَزِيدٍ؟ حَتَّى يَضَعَ فِيهَا رَبُّ الْعَالَمِينَ قَدَمَهُ، فَيَنْزَوِي بَعْضُهَا إِلَى بَعْضٍ ثُمَّ تَقُولُ: قَدْ قَدْ بِعِزَّتِكَ وَكَرَمِكَ، وَلاَ تَزَالُ الْجَنَّةُ تَفْضُلُ حَتَّى يُنْشِئَ اللهُ لَهَا خَلْقًا فَيُسْكِنَهُمْ فَضْلَ الْجَنَّةِ)).

[راجع: ٤٨٤٨]

उन्होंने क़तादा से, उन्होंने अनस (रज़ि.) से कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया दोज़ख़ियों को बराबर दोज़ख़ में डाला जाता रहेगा और कहती जाएगी क्या अभी और है। यहाँ तक कि रब्बुल आलमीन उस पर अपना क़दम रख देगा और फिर उसका कुछ हिस़्सा कुछ से सिमट जाएगा और उस वक़्त वो कहेगी कि बस बस, तेरी इ़ज़्ज़त और करम की क़सम! और जन्नत में जगह बाक़ी रह जाएगी। यहाँ तक कि अल्लाह उसके लिये एक और मख़्लूक़ पैदा कर देगा और वो लोग जन्नत के बाक़ी हिस़्सों में रहेंगे। (राजेअ़ : 4848)

तश्रीह : दोज़ख यूँ कहेगी कि अभी बहुत जगह ख़ाली है और लाओ और लाओ। इस ह़दीष़ से क़दम का ष़ुबूत होता है। अहले ह़दीष़ ने यद और वजह और ऐन और ह़क़ू और इस्बअ़ (अंगुली) की त़रह इसकी भी तावील नहीं की लेकिन तावील करने वाले कहते हैं क़दम रखने से ये मुराद है कि अल्लाह तआ़ला उसे ज़लील कर देगा लेकिन ये तावील ठीक नहीं है।

٨- باب قَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالأَرْضَ بِالْحَقِّ﴾ [الأنعام : ٧٣]

बाब 8 : अल्लाह तआ़ला का इर्शाद सूरह अन्आ़म में, और वही ज़ात है जिसने आसमान और ज़मीन को ह़क़ के साथ पैदा किया (अल अन्आ़म : 73)

तश्रीह : या'नी अपने वजूद की पहचान करवाने के लिये इसलिये कि मस़्नूअ़ से स़ानेअ़ पर इस्तिदलाल होता है। कुछ ने कहा मत़लब इमाम बुख़ारी (रह़.) का ये है कि इस आयत से ये ष़ाबित करें कि उसके कलाम पर ह़क़ का इत़्लाक़ होता है या'नी आसमान और ज़मीन को कलिमा-ए-कुन से जो ह़क़ है पैदा किया ह़क़ का इत़्लाक़ ख़ुद परवरदिगार पर भी होता है या'नी हमेशा क़ायम रहने वाला और बाक़ी रहने वाला कभी फ़ना न होने वाला। वो अपनी इन सारी सिफ़ात में वह़दहू ला शरीक लहू है।

٧٣٨٥- حَدَّثَنَا قَبِيصَةُ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ، عَنْ سُلَيْمَانَ، عَنْ طَاوُسٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَدْعُو مِنَ اللَّيْلِ: ((اللَّهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ، أَنْتَ رَبُّ السَّمَاوَاتِ وَالأَرْضِ لَكَ الْحَمْدُ أَنْتَ قَيِّمُ السَّمَاوَاتِ وَالأَرْضِ وَمَنْ فِيهِنَّ، لَكَ الْحَمْدُ أَنْتَ نُورُ السَّمَاوَاتِ وَالأَرْضِ قَوْلُكَ الْحَقُّ، وَوَعْدُكَ الْحَقُّ، وَلِقَاؤُكَ حَقٌّ وَالْجَنَّةُ حَقٌّ وَالنَّارُ حَقٌّ، وَالسَّاعَةُ حَقٌّ، اللَّهُمَّ لَكَ

7385. हमसे क़बीस़ा बिन उ़क़्बा ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ष़ौरी ने बयान किया, उनसे इब्ने जुरैज ने, उनसे सुलैमान अह़वल ने, उनसे त़ाउस ने और उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) रात में दुआ़ करते थे, ऐ अल्लाह! तेरे ही लिये ता'रीफ़ है तू आसमान और ज़मीन का मालिक है। ह़म्द तेरे ही लिये है तू आसमान व ज़मीन का क़ायम करने वाला है और उन सबका जो उसमें हैं। तेरे ही लिये ह़म्द है तू आसमान और ज़मीन का नूर है। तेरा क़ौल ह़क़ है और तेरा वा'दा सच है और तेरी मुलाक़ात सच है और जन्नत सच है और दोज़ख़ सच है और क़यामत सच है। ऐ अल्लाह! मैंने तेरे ही सामने सर झुका दिया, मैं तुझ ही पर ईमान लाया, मैंने तेरे ही ऊपर भरोसा किया और तेरी ही त़रफ़ रुजूअ़ किया। मैंने तेरी ही मदद के साथ मुक़ाबला किया और मैं तुझ

ही से इंसाफ़ का तलबगार हूँ। पस तू मेरी मग़्फ़िरत कर, उन तमाम गुनाहों में जो मैं पहले कर चुका हूँ और जो बाद में मुझसे सादिर हों जो मैंने छुपा रखे हैं और जिनका मैंने इज़्हार किया है, तू ही मेरा मा'बूद है और तेरे सिवा और कोई मा'बूद नहीं। और हमसे षाबित बिन मुहम्मद ने बयान किया और कहा कि हमसे सुफ़यान षौरी ने फिर यही हदीष बयान की और उसमें यूँ है कि तू हक़ है और तेरा कलाम हक़ है। (राजेअ : 1120)

أَسْلَمْتُ وَبِكَ آمَنْتُ وَعَلَيْكَ تَوَكَّلْتُ وَإِلَيْكَ أَنَبْتُ، وَبِكَ خَاصَمْتُ وَإِلَيْكَ حَاكَمْتُ، فَاغْفِرْلِي مَا قَدَّمْتُ وَمَا أَخَّرْتُ وَأَسْرَرْتُ وَأَعْلَنْتُ، أَنْتَ إِلَهِي لاَ إِلَهَ لِي غَيْرُكَ)). حَدَّثَنَا ثَابِتُ بْنُ مُحَمَّدٍ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ بِهَذَا وَقَالَ: أَنْتَ الْحَقُّ وَقَوْلُكَ الْحَقُّ. [راجع: ١١٢٠]

बाब और हदीष में मुताबक़त ये है कि अल्लाह पाक पर लफ़्ज़े हक़ का इत्लाक़ दुरुस्त है।

बाब 9 : अल्लाह तआला का इर्शाद, और अल्लाह बहुत सुनने वाला, बहुत देखने वाला है।

٩- بَابُ قَوْلِ اللهِ تَعَالَى ﴿وَكَانَ اللهُ سَمِيعًا بَصِيرًا﴾

और आ'मश ने तमीम से बयान किया, उनसे उर्वा बिन ज़ुबैर ने, उनसे आइशा (रज़ि.) ने कि उन्होंने कहा सारी हम्द उसी अल्लाह के लिए सजावार है जो तमाम आवाज़ों को सुनता है फिर ख़ौला बिन्ते षअल्बा का क़िस्सा बयान किया तो उस पर अल्लाह तआला ने ये आयत नाज़िल की अल्लाह तआला ने उसकी बात सुन ली जो आपसे अपने शौहर के बारे में झगड़ा करती थी। (मुजादिला : 1)

وَقَالَ الأَعْمَشُ عَنْ تَمِيمٍ، عَنْ عُرْوَةَ، عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: الْحَمْدُ للهِ الَّذِي وَسِعَ سَمْعُهُ الأَصْوَاتَ فَأَنْزَلَ اللهُ تَعَالَى عَلَى النَّبِيِّ ﷺ: ((قَدْ سَمِعَ اللهُ قَوْلَ الَّتِي تُجَادِلُكَ فِي زَوْجِهَا﴾. [المجادله:١]

7386. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, कहा हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अय्यूब सुख़ितयानी ने, उनसे अबू उष्मान नह्दी ने और उनसे अबू मूसा अश्अरी (रज़ि.) ने बयान किया कि हम नबी करीम (ﷺ) के साथ एक सफ़र में थे और जब हम बुलन्दी पर चढ़ते तो (ज़ोर से चिल्लाकर) तक्बीर कहते। इस पर आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि लोगों! अपने ऊपर रहम खाओ! अल्लाह बहरा नहीं है और न वो कहीं दूर है। तुम एक बहुत सुनने, बहुत वाक़िफ़ कार और क़रीब रहने वाली ज़ात को बुलाते हो। फिर आँहज़रत (ﷺ) मेरे पास आए। मैं उस वक़्त दिल में ला हौल वला कुव्वत इल्ला बिल्लाह कह रहा था। आँहज़रत (ﷺ) ने मुझसे फ़र्माया अब्दुल्लाह बिन क़ैस! ला हौल वला कुव्वत इल्ला बिल्लाह कहा करो कि ये जन्नत के ख़ज़ानों मे से एक ख़ज़ाना है। या आपने फ़र्माया कि क्या मैं तुम्हें ये न बता दूँ। (राजेअ : 2992)

٧٣٨٦- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، عَنْ أَيُّوبَ، عَنْ أَبِي عُثْمَانَ، عَنْ أَبِي مُوسَى قَالَ: كُنَّا مَعَ النَّبِيِّ ﷺ فِي سَفَرٍ، فَكُنَّا إِذَا عَلَوْنَا كَبَّرْنَا فَقَالَ: ((ارْبَعُوا عَلَى أَنْفُسِكُمْ فَإِنَّكُمْ لاَ تَدْعُونَ أَصَمَّ وَلاَ غَائِبًا تَدْعُونَ سَمِيعًا بَصِيرًا قَرِيبًا)) ثُمَّ أَتَى عَلَيَّ وَأَنَا أَقُولُ فِي نَفْسِي لاَ حَوْلَ وَلاَ قُوَّةَ إِلاَّ بِاللهِ فَقَالَ لِي: ((يا عبد الله بن قيس قل: لاَ حَوْلَ وَلاَ قُوَّةَ إِلاَّ بِاللهِ، فَإِنَّهَا كَنْزٌ مِنْ كُنُوزِ الْجَنَّةِ- أَوْ قَالَ - أَلاَ أَدُلُّكَ بِهِ)).

तश्रीह : वो यही **ला हौल वला क़ुव्वत इल्ला बिल्लाह** है। अल्लाह तआ़ला ग़ायब नहीं है। इसका ये मा'नी है कि वो हर जगह हर चीज़ को हर आवाज़ को देख और सुन रहा है। आवाज़ क्या चीज़ है वो तो दिलों तक की बात जानता है। ये जो कहा करते हैं अल्लाह हर जगह ह़ाज़िर व नाज़िर है इसका भी यही मा'नी है कि कोई चीज़ उसके इ़ल्म और समअ़ और बस़र से पोशिदा नहीं है इसका मत़लब ये नहीं है जैसे जहमिया मुलाइना समझते हैं कि अल्लाह अपनी ज़ाते क़ुदसी स़िफ़ात से हर मकान और हर जगह में मौजूद है, ज़ाते मुक़द्दस तो उसकी बाला-ए-अ़र्श है मगर उसका इ़ल्म और समअ़ और बस़र हर जगह है, हुज़ूर का यही मा'नी है। ख़ुद इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह़.) फ़र्माते हैं अल्लाह आसमान पर है ज़मीन में नहीं है। ये कलिमा **ला हौल वला क़ुव्वत इल्ला बिल्लाह** अजब पुरअष़र कलिमा है। अल्लाह तआ़ला ने इस कलिमे में ये अष़र रखा है कि जो कोई इसको हमेशा पढ़ा करे वो हर शर्र से मह़फ़ूज़ रहता है। हमारे पीर व मुर्शिद ह़ज़रत मुजद्दिद का ख़त्म रोज़ाना यही था कि सौ सौ बार अव्वल और आख़िर दुरूद शरीफ़ पढ़ते और पाँच सौ मर्तबा **ला हौल वला क़ुव्वत इल्ला बिल्लाह** और दुनिया और आख़िरत के तमाम मुहिम्मात और मक़ास़िद ह़ासिल होने के लिये ये बारह कलिमे मैंने तजुर्बे किये हैं जो कोई इनको हर वक़्त जब फ़ुर्सत हो बिला क़ैदे अ़दद पढ़ता रहे इंशाअल्लाह तआ़ला उसकी कुल मुरादें पूरी होंगी। **1. सुब्ह़ानल्लाह वबिह़म्दिही 2. सुब्ह़ानल्लाहिल अ़ज़ीम, 3. अस्तग़्फ़िरुल्लाह ला इलाहा इल्लल्लाहु 4. ला हौल वला क़ुव्वत इल्ला बिल्लाह, 5. या राफ़िअ़ 6. या मुइ़ज़्ज़ 7. या ग़नी 8. या मुग़निय्यु 9. या ह़य्यु या क़य्यूमु बिरह़्मतिक या अस्तग़ीषु 10. या अरह़मर्राह़िमीन 11. ला इलाहा इल्ला अन्त सुब्ह़ानक इन्नी कुन्तु मिनज़्ज़ालिमीन 12. ह़स्बुनल्लाहु वनिअ़मल वकील निअ़मल मौला वनिअ़मन्नस़ीर**। ऐसा हुआ कि एक मुल्ह़िद बेदीन शख़्स़ अहले ह़दीष़ और अहले इ़ल्म का बड़ा दुश्मन था और इस क़दर त़ाक़तवर हो गया था कि उसका कोई मुक़ाबला न कर सकता था। हर शख़्स़ को ख़ुसूस़न दीनदारों को उसके शर्र से अपनी इ़ज़्ज़त व आबरू सम्भालना दुश्वार हो गया था। अल्लाह तआ़ला ने इन ही कलिमों के तुफ़ैल से उसका क़िला ढहा दिया और अपने बन्दों को राह़त दी। जब उसके **फ़िन्नार वस्सक़र** होने की ख़बर आई तो दफ़अ़तन ये माद्द-ए-तारीख़े दिल में गुज़रा।

चूँकि बोझल रफ़्त अज़्दुनिया — **गुश्ता तारीख़ अव बमा ज़िम्मा**
राय बैरूँ कुन व बगीर ह़दीष़ — **मात फ़िरऔन हाज़िही अल्उम्मा।**

7387,88. हमसे यह़्या बिन सुलैमान ने बयान किया, उन्होंने कहा मुझसे इब्ने वहब ने बयान किया, उन्होंने कहा मुझको अ़म्र ने ख़बर दी, उन्हें यज़ीद ने, उन्हें अबुल ख़ैर ने, उन्होंने अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र (रज़ि.) से सुना कि अबूबक्र स़िद्दीक़ (रज़ि.) ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से कहा या रसूलल्लाह! मुझे ऐसी दुआ़ सिखा दीजिए जो मैं अपनी नमाज़ में किया करूँ। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि ये पढ़ा करो, ऐ अल्लाह! मैंने अपनी जान पर बहुत ज़ुल्म किया है और तेरे सिवा गुनाहों को और कोई नहीं बख़्शता। पस मेरे गुनाह अपने पास से बख़्श दे बिलाशुब्हा तू बड़ा मग़्फ़िरत करने वाला, बड़ा रह़म करने वाला है। (राजेअ़ : 834)

٧٣٨٧، ٧٣٨٨- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سُلَيْمَانَ، حَدَّثَنِي ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي عَمْرٌو، عَنْ يَزِيدَ عَنْ أَبِي الْخَيْرِ سَمِعَ عَبْدَ اللهِ بْنَ عَمْرٍو أَنَّ أَبَا بَكْرٍ الصِّدِّيقَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ لِلنَّبِيِّ ﷺ: يَا رَسُولَ اللهِ عَلِّمْنِي دُعَاءً أَدْعُو بِهِ فِي صَلاَتِي قَالَ : ((قُلِ اللَّهُمَّ إِنِّي ظَلَمْتُ نَفْسِي ظُلْمًا كَثِيرًا، وَلاَ يَغْفِرُ الذُّنُوبَ إِلاَّ أَنْتَ فَاغْفِرْ لِي مِن عِندِكَ مَغْفِرَةً إِنَّكَ أَنْتَ الْغَفُورُ الرَّحِيمُ)). [راجع: ٨٣٤]

तश्रीह : इस ह़दीष़ की मुनासबत बाब का तर्जुमे से मुश्किल है। कुछ ने कहा अल्लाह तआ़ला से दुआ़ करना है दुआ़ करना उसी वक़्त फ़ायदा देगा जब वो सुनता देखता हो तो आपने अबूबक्र स़िद्दीक़ (रज़ि.) को ये दुआ़ करने

का हुक्म दिया तो मा'लूम हुआ कि वो सुनता देखता है। मैं कहता हूँ सुब्हानल्लाह! इमाम बुख़ारी (रह.) की बारीकी फ़हम इस दुआ में अल्लाह तआला को मुख़ातब किया है ब सैग़ा अम्र और बकाफ़ ख़िताब और अल्लाह तआला का मुख़ातब करना उसी वक़्त सहीह होगा जब वो सुनता देखता और हाज़िर हो वरना ग़ायब शख़्स को कौन मुख़ातब करेगा पस इस दुआ से बाब का मतलब षाबित हो गया। दूसरे ये कि हदीष में वारिद है जब कोई तुममें से नमाज़ पढ़ता है तो अपने परवरदिगार से सरगोशी करता है और सरगोशी की हालत में कोई बात कहना उसी वक़्त मुअष्षिर होगी जब मुख़ातब बख़ूबी सुनता हो तो इस हदीष को उस हदीष के साथ मिलाने से ये निकला कि अल्लाह तआला का सिमाअ बेइंतिहा है वो अर्श पर रहकर भी नमाज़ी की सरगोशी सुन लेता है और यही बाब का मतलब है। (वहीदी)

7389. हमसे अब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको इब्ने वहब ने ख़बर दी, उन्होंने कहा मुझको यूनुस ने ख़बर दी, उन्हें इब्ने शिहाब ने, उनसे उर्वा ने बयान किया और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जिब्रईल (अ.) ने मुझे पुकारकर कहा कि अल्लाह ने आपकी क़ौम की बात सुन ली और वो भी सुन लिया जो उन्होंने आपको जवाब दिया। (राजेअ : 3231)

٧٣٨٩- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ، أَخْبَرَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي يُونُسُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، حَدَّثَنِي عُرْوَةُ أَنَّ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا حَدَّثَتْهُ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِنَّ جِبْرِيلَ عَلَيْهِ السَّلاَمُ نَادَانِي قَالَ: ((إِنَّ اللهَ قَدْ سَمِعَ قَوْلَ قَوْمِكَ وَمَا رَدُّوا عَلَيْكَ)). [راجع: ٣٢٣١]

बाब 10 : अल्लाह तआला का सूरह अन्आम में फ़र्माना कि, कह दीजिये कि वही क़ुदरत वाला है. (अल अन्आम : 65)

١٠- باب قَوْلِ اللهِ تَعَالَى : ﴿قُلْ هُوَ الْقَادِرُ﴾ [الأنعام : ٦٥]

7390. हमसे इब्राहीम बिन मुंज़िर ने बयान किया, कहा हमसे मअन बिन ईसा ने बयान किया, कहा मुझसे अब्दुर्रहमान बिन अबी मवाली ने बयान किया, कहा कि मैंने मुहम्मद बिन मुंकदिर से सुना, वो अब्दुल्लाह बिन हसन बिन हसन बिन अली (रज़ि.) से बयान करते थे, उन्होंने कहा कि मुझे जाबिर बिन अब्दुल्लाह सुलमी (रज़ि.) ने ख़बर दी, उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह (ﷺ) अपने सहाबा को हर मुबाह काम में इस्तिख़ारा करना सिखाते थे जिस तरह आप क़ुर्आन की सूरत सिखाते थे। आप फ़र्माते कि जब तुममें से कोई किसी काम का क़स्द करे तो उसे चाहिये कि फ़र्ज़ के सिवा दो रकअत नफ़्ल नमाज़ पढ़े, फिर सलाम के बाद ये दुआ करे, ऐ अल्लाह! मैं तेरे इल्म के तुफ़ैल इस काम में ख़ैरियत तलब करता हूँ और तेरी क़ुदरत के तुफ़ैल ताक़त मांगता हूँ और तेरा फ़ज़्ल क्योंकि तुझे क़ुदरत है और मुझे नहीं, तू जानता है मैं नही जानता, और तू ग़ुयूब का बहुत बहुत जानने वाला है। ऐ अल्लाह! पस अगर तू ये बात जानता है (इस वक़्त) इस्तिख़ारा करने वाले को उस

٧٣٩٠- حَدَّثَنِي إِبْرَاهِيمُ بْنُ الْمُنْذِرِ، حَدَّثَنَا مَعْنُ بْنُ عِيسَى، حَدَّثَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ أَبِي الْمَوَالِي قَالَ: سَمِعْتُ مُحَمَّدَ بْنَ الْمُنْكَدِرِ يُحَدِّثُ عَبْدَ اللهِ بْنَ الْحَسَنِ يَقُولُ : أَخْبَرَنِي جَابِرُ بْنُ عَبْدِ اللهِ السُّلَمِيُّ قَالَ: كَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: يُعَلِّمُ أَصْحَابَهُ الإِسْتِخَارَةَ فِي الأُمُورِ كُلِّهَا، كَمَا يُعَلِّمُ السُّورَةَ مِنَ الْقُرْآنِ يَقُولُ: ((إِذَا هَمَّ أَحَدُكُمْ بِالأَمْرِ فَلْيَرْكَعْ رَكْعَتَيْنِ مِنْ غَيْرِ الْفَرِيضَةِ، ثُمَّ لِيَقُلِ: اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْتَخِيرُكَ بِعِلْمِكَ وَأَسْتَقْدِرُكَ بِقُدْرَتِكَ، وَأَسْأَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ فَإِنَّكَ تَقْدِرُ وَلاَ أَقْدِرُ، وَتَعْلَمُ وَلاَ

أعْلَمُ وَأَنْتَ عَلاَّمُ الْغُيُوبِ، اللَّهُمَّ فَإِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ هَذَا الأَمْرَ، ثُمَّ يُسَمِّيهِ بِعَيْنِهِ خَيْرًا لِي فِي عَاجِلِ أَمْرِي وَآجِلِهِ، قَالَ - أَوْ فِي دِينِي وَمَعَاشِي وَعَاقِبَةِ أَمْرِي - فَاقْدُرْهُ لِي وَيَسِّرْهُ لِي ثُمَّ بَارِكْ لِي فِيهِ، اللَّهُمَّ إِنْ كُنْتَ تَعْلَمُ أَنَّهُ شَرٌّ لِي فِي دِينِي وَمَعَاشِي، وَعَاقِبَةِ أَمْرِي - أَوْ قَالَ فِي عَاجِلِ أَمْرِي وَآجِلِهِ - فَاصْرِفْنِي عَنْهُ وَاقْدُرْ لِي الْخَيْرَ حَيْثُ كَانَ ثُمَّ رَضِّنِي بِهِ)).[راجع: ١١٦٢]

काम का नाम लेना चाहिये) कि इस काम में मेरे लिये दुनिया और आख़िरत मे भलाई है या इस तरह फ़र्माया कि, मेरे दीन में और गुज़रान में और मेरे हर अंजाम के ए'तिबार से भलाई है तो इस पर मुझे क़ादिर बना दे और मेरे लिये इसे आसान कर दे, फिर इसमें में मेरे लिये बरकत अ़ता फ़र्मा। ऐ अल्लाह! और अगर तू जानता है कि ये काम मेरे लिये बुरा है। मेरे दीन और गुज़ारे के ए'तिबार से और मेरे अंजाम के ए'तिबार से, या फ़र्माया कि मेरी दुनिया व दीन के ए'तिबार से तो मुझे इस काम से दूर कर दे और मेरे लिये भलाई मुक़द्दर कर दे जहाँ भी वो हो और फिर मुझे उस पर राज़ी और ख़ुश रख। (राजेअ़ : 1162)

ये ह़दीष़ पीछे गुज़र चुकी है यहाँ इसको इसलिये लाए कि इसमें कुदरते इलाही का बयान है। इस्तिख़ारा के मा'नी ख़ैर का त़लब करना ये नमाज़ और दुआ़ मस्नून है।

١١- باب مُقَلِّبِ الْقُلُوبِ

وَقَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿وَنُقَلِّبُ أَفْئِدَتَهُمْ وَأَبْصَارَهُمْ﴾ [الانعام : ١١٠]

बाब 11 : अल्लाह की एक स़िफ़त ये भी है कि वो दिलों का फेरने वाला है और अल्लाह तआ़ला का सूरह अन्आ़म में फ़र्मान, और मैं उनके दिलों को और उनकी आँखों को फेर दूंगा

٧٣٩١- حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ سُلَيْمَانَ، عَنِ ابْنِ الْمُبَارَكِ، عَنْ مُوسَى بْنِ عُقْبَةَ، عَنْ سَالِمٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ قَالَ: أَكْثَرَ مَا كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَحْلِفُ ((لاَ وَمُقَلِّبِ الْقُلُوبِ)). [راجع: ٦٦١٧]

7391. मुझे सई़द बिन सुलैमान ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने बयान किया, उनसे मूसा बिन उ़क़्बा ने, उनसे सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) क़सम इस त़रह खाते, क़सम उसकी जो दिलों को फेर देने वाला है। (राजेअ़ : 6617)

मैं ये बात नहीं कहूँगा या ये काम नहीं करूँगा दिलों के फेरने वाले की क़सम! दिलों का फेरना ये भी अल्लाह की स़िफ़त है और ये उसी के हाथ में है वो इस स़िफ़त में भी वहदुहू ला शरीक लहू है।

١٢- باب إِنَّ لِلَّهِ مِائَةَ اسْمٍ إِلاَّ وَاحِدَةً قَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ : ذُو الْجَلاَلِ الْعَظَمَةِ، الْبَرُّ : اللَّطِيفُ.

बाब 12 : इस बयान में कि अल्लाह के निन्नान्वे नाम हैं. इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा कि ज़ुल जलाल के मा'नी और अ़ज़्मत वाला. बर्र के मा'नी लत़ीफ़ और बारीक बीन.

तश्रीह : ये निन्नान्वे नाम एक रिवायत में वारिद हैं लेकिन इसकी इस्नाद ज़ईफ़ है। इसलिये इमाम बुख़ारी (रह़.) इसको

इस किताब में न ला सके। अहले ह़दीष़ के नज़दीक अल्लाह के अस्मा और सिफ़ात उसकी ज़ात की त़रह़ ग़ैर मख़्लूक़ हैं और जहमिया ने उनको मख़्लूक़ कहा है। **लअ़नहुमुल्लाहु तआ़ला।** निन्नान्वे का अ़दद कुछ ह़स्र के लिये नहीं है, उनके सिवा भी और नाम क़ुर्आन और अह़ादीष़ में वारिद हैं। जैसे मुक़ल्लिब क़ुलूब, ज़ुल जबरूत, ज़ुल मलकूत, ज़ुल किब्रियाअ, ज़ुल अ़ज़्मा, काफ़ी, दाइम, स़ादिक़, ज़िल मआ़रिज, ज़िल फ़ज़्ल, ग़ालिब वग़ैरह।

7392. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको शुऐ़ब ने ख़बर दी, कहा हमसे अबुज़्ज़िनाद ने बयान किया, उनसे अअ़रज ने बयान किया, और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, अल्लाह तआ़ला के निन्नान्वे नाम हैं। जो इन्हें याद कर लेगा वो जन्नत में जाएगा। (राजेअ़ : 2736)

٧٣٩٢- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، حَدَّثَنَا أَبُو الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((إِنَّ للهِ تِسْعَةً وَتِسْعِينَ اسْماً مِائَةً إِلاَّ وَاحِدًا، مَنْ أَحْصَاهَا دَخَلَ الْجَنَّةَ)) أَحْصَيْنَاهُ : حَفِظْنَاهُ. [راجع: ٢٧٣٦]

सूरह यासीन की आयत **व कुल्ल शैइन अह़स़नाहु फ़ी इमामिम मुबीन** (यासीन : 12) में ये लफ़्ज़ वारिद हुआ है।

बाब 13 : अल्लाह के नामों के वसीले से मांगना और उनके ज़रिये पनाह चाहना

١٣- باب السُّؤَالِ بِأَسْمَاءِ اللهِ تَعَالَى وَالاسْتِعَاذَةِ بِهَا

तश्रीह : ये बाब लाकर ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) ने अहले ह़दीष़ का मज़हब ष़ाबित किया कि इस्मे ऐ़न मुसम्मा है और मुसम्मा की त़रह़ ग़ैर मख़्लूक़ है और जहमियों का रद्द किया क्योंकि अगर इस्म मख़्लूक़ होता और मुसम्मा का ग़ैर होता तो ग़ैरुल्लाह से मांगना और ग़ैरुल्लाह से पनाह चाहना क्यूँकर जाइज़ हो सकता है।

7393. हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे सई़द बिन इब्ने अबी सई़द मक़्बरी ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जो शख़्स़ अपने बिस्तर पर जाए तो उसे चाहिये कि उसे अपने कपड़े के किनारे से तीन मर्तबा स़ाफ़ कर ले और ये दुआ़ पढ़े, ऐ मेरे रब! तेरा नाम लेकर मैं अपनी करवट रखता हूँ और तेरे नाम ही के साथ इसे उठाऊँगा। अगर तूने मेरी जान को बाक़ी रखा तो इसे माफ़ करना और अगर इसे (अपनी त़रफ़ सोते ही में) उठा लिया तो इसकी ह़िफ़ाज़त इस त़रह़ करना जिस त़रह़ तू अपने नेकोकार बन्दों की ह़िफ़ाज़त करता है। इस रिवायत की मुताबअ़त यह़्या और बिश्र बिन फ़ज़्ल ने उ़बैदुल्लाह से की है। उनसे सई़द ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने और उनसे नबी करीम (ﷺ) ने और ज़ुहैर, अबू ज़म्रह और इस्माई़ल बिन ज़करिया ने उ़बैदुल्लाह से ये इज़ाफ़ा किया कि उनसे सई़द ने, उनसे उनके वालिद ने और

٧٣٩٣- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللهِ حَدَّثَنِي مَالِكٌ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ أَبِي سَعِيدٍ الْمَقْبُرِيِّ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: قَالَ: ((إِذَا جَاءَ أَحَدُكُمْ إِلَى فِرَاشِهِ فَلْيَنْفُضْهُ بِصَنِفَةِ ثَوْبِهِ ثَلاَثَ مَرَّاتٍ وَلْيَقُلْ : بِاسْمِكَ رَبِّي وَضَعْتُ جَنْبِي وَبِكَ أَرْفَعُهُ، إِنْ أَمْسَكْتَ نَفْسِي فَاغْفِرْ لَهَا وَإِنْ أَرْسَلْتَهَا فَاحْفَظْهَا بِمَا تَحْفَظُ بِهِ عِبَادَكَ الصَّالِحِينَ)). تَابَعَهُ يَحْيَى وَبِشْرُ بْنُ الْمُفَضَّلِ، عَنْ عُبَيْدِ اللهِ، عَنْ سَعِيدٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ. وَزَادَ زُهَيْرٌ وَأَبُو ضَمْرَةَ وَإِسْمَاعِيلُ بْنُ زَكَرِيَّا عَنْ عُبَيْدِ

الله، عَنْ سَعِيدٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ. وَرَوَاهُ ابْنُ عَجْلاَنَ، عَنْ سَعِيدٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ.

[راجع: ٦٣٢٠]

उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने और उनसे नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया और इसकी रिवायत इब्ने अ़ज्लान ने की, उनसे सईद ने, उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने और उनसे नबी करीम (ﷺ) ने। (राजेअ़ : 6320)

تَابَعَهُ مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، وَ الدَّرَاوَرْدِيُّ وَأُسَامَةُ بْنُ حَفْصٍ.

इसकी मुताबअ़त मुहम्मद बिन अ़ब्दुर्रहमान दरावर्दी और उसामा बिन हफ़्स ने की।

मुहम्मद बिन अ़ब्दुर्रहमान त़फ़ावी और उसामा बिन हफ़्स की रिवायतें ख़ुद इस किताब में मौसूलन गुज़र चुकी हैं और अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ की रिवायत को अ़दी (रज़ि.) ने वस्ल किया है।

٧٣٩٤- حَدَّثَنَا مُسْلِمٌ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ عَبْدِ الْمَلِكِ، عَنْ رِبْعِيٍّ، عَنْ حُذَيْفَةَ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ إِذَا أَوَى إِلَى فِرَاشِهِ قَالَ: ((اللَّهُمَّ بِاسْمِكَ أَحْيَا وَأَمُوتُ)) وَإِذَا أَصْبَحَ قَالَ: ((الْحَمْدُ لله الَّذِي أَحْيَانَا بَعْدَ مَا أَمَاتَنَا وَإِلَيْهِ النُّشُورُ)).

[راجع: ٦٣٢١]

7394. हमसे मुस्लिम बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल मलिक बिन उ़मैर ने, उनसे रिब्ई बिन ह़िराश ने और उनसे हुज़ैफ़ह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) जब अपने बिस्तर पर लेटने जाते तो ये दुआ़ करते, ऐ अल्लाह! तेरे नाम के साथ ज़िन्दा हूँ और उसी के साथ मरूँगा, और जब सुबह होती तो ये दुआ़ करते, तमाम ता'रीफ़ें उस अल्लाह के लिये है जिसने उसके बाद ज़िन्दा किया कि हम मर चुके थे और उसी की त़रफ़ उठकर जाना है। (राजेअ़ : 6321)

मरने से यहाँ सोना मुराद है। नींद मौत की बहन है कमा वरद।

٧٣٩٥- حَدَّثَنَا سَعْدُ بْنُ حَفْصٍ، حَدَّثَنَا شَيْبَانُ، عَنْ مَنْصُورٍ، عَنْ رِبْعِيِّ بْنِ حِرَاشٍ. عَنْ خَرَشَةَ بْنِ الْحُرِّ، عَنْ أَبِي ذَرٍّ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ إِذَا أَخَذَ مَضْجَعَهُ مِنَ اللَّيْلِ قَالَ: ((بِاسْمِكَ نَمُوتُ وَنَحْيَا)) فَإِذَا اسْتَيْقَظَ قَالَ: ((الْحَمْدُ للهِ الَّذِي أَحْيَانَا بَعْدَ مَا أَمَاتَنَا وَإِلَيْهِ النُّشُورُ)).

[راجع: ٦٣٢٥]

7395. हमसे सअ़द बिन हफ़्स ने बयान किया, कहा हमसे शैबान ने बयान किया, उनसे मंसूर ने, उनसे रिब्ई बिन हराश ने, उनसे ख़रशा बिन हुर्रि ने और उनसे अबू ज़र्र (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) जब रात में लेटने जाते तो कहते, हम तेरे ही नाम से मरेंगे और उसी से ज़िन्दा होंगे, और जब बेदार होते तो कहते, तमाम ता'रीफ़ उस अल्लाह के लिये है जिसने हमें मारने के बाद ज़िन्दा किया और उसी की त़रफ़ जाना है। (राजेअ़ : 6325)

अल्लाह के नाम के साथ बरकत लेना और मदद त़लब करना षाबित हुआ यही बाब से मुताबक़त है।

٧٣٩٦- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنْ مَنْصُورٍ، عَنْ سَالِمٍ، عَنْ

7396. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे जरीर ने बयान किया, उनसे मंसूर ने, उनसे सालिम ने, उनसे

كُرَيْبٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((لَوْ أَنَّ أَحَدَكُمْ إِذَا أَرَادَ أَنْ يَأْتِيَ أَهْلَهُ فَقَالَ: بِسْمِ اللهِ اللَّهُمَّ جَنِّبْنَا الشَّيْطَانَ، وَجَنِّبِ الشَّيْطَانَ مَا رَزَقْتَنَا فَإِنَّهُ إِنْ يُقَدَّرْ بَيْنَهُمَا وَلَدٌ فِي ذَلِكَ لَمْ يَضُرَّهُ شَيْطَانٌ أَبَدًا)).[راجع: ١٤١]

कुरैब ने और उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, जब तुममें से कोई अपनी बीवी के पास जाने का इरादा करे और ये दुआ पढ़ ले, शुरू अल्लाह के नाम से, ऐ अल्लाह! हमें शैत़ान से दूर रखना और तू जो हमें बच्चा अ़ता करे उसे भी शैत़ान से दूर रखना, तो अगर उसी सुहबत मे उन दोनों से कोई बच्चा नस़ीब हुआ तो शैत़ान उसे कभी नुक़्स़ान नहीं पहुँचा सकेगा। (राजेअ़ : 141)

बवक़्ते जिमाअ़ भी अल्लाह के नाम के साथ बरकत त़लब करना स़ाबित हुआ, यही बाब से मुत़ाबक़त है।

٧٣٩٧- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مَسْلَمَةَ، حَدَّثَنَا فُضَيْلٌ، عَنْ مَنْصُورٍ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ هَمَّامٍ عَنْ عَدِيِّ بْنِ حَاتِمٍ قَالَ: سَأَلْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قُلْتُ: أُرْسِلُ كِلاَبِي الْمُعَلَّمَةَ قَالَ: ((إِذَا أَرْسَلْتَ كِلاَبَكَ الْمُعَلَّمَةَ وَذَكَرْتَ اسْمَ اللهِ فَأَمْسَكْنَ فَكُلْ، وَإِذَا رَمَيْتَ بِالْمِعْرَاضِ فَخَرَقَ فَكُلْ)).

[راجع: ١٧٥]

7396. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मस्लमा ने बयान किया, कहा हमसे फ़ुज़ैल ने बयान किया, उनसे मंसूर ने, उनसे इब्राहीम ने, उनसे हम्माम ने, उनसे अ़दी बिन ह़ातिम (रज़ि.) ने कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से पूछा कि मैं अपने सधाए हुए कुत्ते को शिकार के लिये छोड़ता हूँ। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि जब तुम सधाए हुए कुत्ते छोड़ते हो और उनके साथ अल्लाह का नाम भी ले लो, फिर वो कोई शिकार करे और उसे खाएँ नहीं, तो तुम उसे खा सकते हो और जब शिकार पर बिन फाल के तीर या'नी लकड़ी से कोई शिकार मारे लेकिन वो नोक से लगकर जानवर का गोश्त चीर दे तो ऐसा शिकार भी खाओ। (राजेअ़ : 175)

अल्लाह के नाम की बरकत से ऐसा शिकार भी ह़लाल है।

٧٣٩٨- حَدَّثَنَا يُوسُفُ بْنُ مُوسَى، حَدَّثَنَا أَبُوخَالِدٍ الأَحْمَرُ قَالَ: سَمِعْتُ هِشَامَ بْنَ عُرْوَةَ يُحَدِّثُ عَنْ أَبِيهِ، عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ : قَالُوا يَا رَسُولَ اللهِ إِنَّ هُنَا أَقْوَامًا حَدِيثًا عَهْدُهُمْ بِشِرْكٍ يَأْتُونَا بِلُحْمَانٍ لاَ نَدْرِي يَذْكُرُونَ اسْمَ اللهِ عَلَيْهَا أَمْ لاَ؟ قَالَ: ((اذْكُرُوا أَنْتُمُ اسْمَ اللهِ وَكُلُوا)). تَابَعَهُ مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ وَالدَّرَاوَرْدِيُّ، وَأُسَامَةُ بْنُ حَفْصٍ. [راجع: ٥٠٥٧]

7397. हमसे यूसुफ़ बिन मूसा ने बयान किया, उन्हों ने कहा हमसे अबुल ख़ालिद अह़मर ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने हिशाम बिन उ़र्वा से सुना, वो अपने वालिद (उ़र्वा बिन ज़ुबैर) से बयान करते थे कि उनसे उम्मुल मोमिनीन आ़इशा स़िद्दीक़ा (रज़ि.) ने बयान किया कि लोगों ने कहा या रसूलल्लाह! वहाँ के क़बीले अभी ह़ाल ही में इस्लाम लाए हैं और वो हमें गोश्त लाकर देते हैं। हमें यक़ीन नहीं होता कि ज़िब्ह़ करते वक़्त उन्होंने अल्लाह का नाम लिया था या नहीं (तो क्या हम उसे खा सकते हैं?) आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुम उस पर अल्लाह का नाम लेकर उसे खा लिया करो। इस रिवायत की मुताबअ़त मुह़म्मद बिन अ़ब्दुर्रह़मान दरावर्दी और उसामा बिन ह़फ़्स़ ने की। (राजेअ़ : 5057)

बरकत और हि़ल्लत और मदद के लिये अल्लाह का नाम इस्ते'माल करना षाबित हुआ, यही बाब से मुनासबत है।

7399. हमसे ह़फ़्स़ बिन ड़मर ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम ने बयान किया, उनसे क़तादा ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने दो मेंढ़ों की क़ुर्बानी की और ज़िब्ह़ करते वक़्त बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अकबर पढ़ा। (राजेअ़ : 5553)

٧٣٩٩- حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ عُمَرَ، حَدَّثَنَا هِشَامٌ، عَنْ قَتَادَةَ عَنْ أَنَسٍ قَالَ: ضَحَّى النَّبِيُّ ﷺ بِكَبْشَيْنِ يُسَمِّي وَيُكَبِّرُ. [راجع: ٥٥٥٣]

7400. हमसे ह़फ़्स़ बिन ड़मर ह़ौज़ी ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे अस्वद बिन क़ैस ने और उनसे जुन्दब (रज़ि.) ने कि वो नबी करीम (ﷺ) के साथ ज़िल्हिज्ज की दसवीं तारीख़ को मौजूद थे। आपने नमाज़ पढ़ाई फिर ख़ुत्बा दिया और फ़र्माया जिसने नमाज़ से पहले जानवर ज़िब्ह़ कर लिया तो उसकी जगह दूसरा जानवर ज़िब्ह़ करे और जिसने ज़िब्ह़ अभी न किया हो तो वो अल्लाह का नाम लेकर ज़िब्ह़ करे। (राजेअ़ : 985)

٧٤٠٠- حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ عُمَرَ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنِ الأَسْوَدِ بْنِ قَيْسٍ، عَنْ جُنْدَبٍ أَنَّهُ شَهِدَ النَّبِيَّ ﷺ يَوْمَ النَّحْرِ صَلَّى ثُمَّ خَطَبَ فَقَالَ: ((مَنْ ذَبَحَ قَبْلَ أَنْ يُصَلِّيَ فَلْيَذْبَحْ مَكَانَهَا أُخْرَى، وَمَنْ لَمْ يَذْبَحْ فَلْيَذْبَحْ بِاسْمِ اللهِ)). [راجع: ٩٨٥]

अल्लाह की किब्रियाई के साथ उसका नाम लेना उससे मदद चाहना यही बाब से मुताबक़त है।

7401. हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे वरक़ा ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन दीनार ने बयान किया और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन ड़मर (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, अपने बाप दादाओं की क़सम न खाया करो। अगर किसी को क़सम खानी ही हो तो अल्लाह के नाम की क़सम खाये वरना ख़ामोश रहे।

٧٤٠١- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ، حَدَّثَنَا وَرْقَاءُ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ دِينَارٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لاَ تَحْلِفُوا بِآبَائِكُمْ، وَمَنْ كَانَ حَالِفًا فَلْيَحْلِفْ بِاللهِ)).

तिर्मिज़ी ने इब्ने ड़मर (रज़ि.) से रिवायत किया और ह़ाकिम ने कहा स़ह़ीह़ है कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया जिसने अल्लाह के सिवा और किसी की क़सम खाई उसने शिर्क किया। इस बाब में ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) ने मुतअ़द्दिद अह़ादीष लाकर ये षाबित किया कि इस्म मुसम्मा का ऐन है अगर ग़ैर होता तो न इस्म से मदद ली जाती न इस्म पर ज़िब्ह़ करना जाइज़ होता न इस्म पर कुत्ता छोड़ा जाता। अ़ला हाज़ल क़यास।

बाब 14 : अल्लाह तआ़ला को ज़ात कह सकते हैं (उसी तरह शख़्स़ भी कह सकते हैं)

١٤- باب مَا يُذْكَرُ فِي الذَّاتِ وَالنُّعُوتِ وَأَسَامِي اللهِ

ये उसके अस्मा और स़िफ़ात हैं। और ख़ुबैब बिन अ़दी (रज़ि.) ने मरते वक़्त कहा कि ये सब तकलीफ़ अल्लाह की ज़ाते मुक़द्दस के लिये है तो अल्लाह के नाम के साथ उन्होंने ज़ात का लफ़्ज़ लगाया

وَقَالَ خُبَيْبٌ: وَذَلِكَ فِي ذَاتِ الإِلَهِ فَذَكَرَ الذَّاتَ بِاسْمِهِ تَعَالَى.

7402. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुहरी ने, उन्हें अ़म्र बिन अबी सुफ़यान बिन उसैद बिन जारिया ष़क़फ़ी ने ख़बर दी, जो बनी ज़ुहरा के ह़लीफ़

٧٤٠٢- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ أَخْبَرَنِي عَمْرُو بْنُ

أَبِي سُفْيَانَ بْنِ أَسِيدِ بْنِ جَارِيَةَ الثَّقَفِيُّ حَلِيفٌ لِبَنِي زُهْرَةَ، وَكَانَ مِنْ أَصْحَابِ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ قَالَ: بَعَثَ رَسُولُ اللهِ ﷺ عَشَرَةً مِنْهُمْ خُبَيْبٌ الأَنْصَارِيُّ فَأَخْبَرَنِي عُبَيْدُ اللهِ بْنُ عِيَاضٍ أَنَّ ابْنَةَ الْحَارِثِ أَخْبَرَتْهُ أَنَّهُمْ حِينَ اجْتَمَعُوا اسْتَعَارَ مِنْهَا مُوسَى يَسْتَحِدُّ بِهَا، فَلَمَّا خَرَجُوا مِنَ الْحَرَمِ لِيَقْتُلُوهُ قَالَ خُبَيْبٌ الأَنْصَارِيُّ:

وَلَسْتُ أُبَالِي حِينَ أُقْتَلُ مُسْلِمًا
عَلَى أَيِّ شِقٍّ كَانَ لِلَّهِ مَصْرَعِي
وَذَلِكَ فِي ذَاتِ الإِلَهِ وَإِنْ يَشَأْ
يُبَارِكْ عَلَى أَوْصَالِ شِلْوٍ مُمَزَّعِ

فَقَتَلَهُ ابْنُ الْحَرِثِ فَأَخْبَرَ النَّبِيُّ ﷺ أَصْحَابَهُ خَبَرَهُمْ يَوْمَ أُصِيبُوا.

[راجع: ٣٠٤٥]

थे और अबू हुरैरह (रज़ि.) के शागिर्दों में थे कि अबू हुरैरह (रज़ि .) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने अ़ज़्ल और क़ारा वालों की दरख़्वास्त पर दस अकाबिर स़हाबा को जिनमें ख़ुबैब (रज़ि.) भी थे, उनके यहाँ भेजा। इब्ने शिहाब ने कहा कि मुझे उ़बैदुल्लाह बिन अ़याज़ ने ख़बर दी कि हारिष़ की स़ाहबज़ादी ज़ैनब ने उन्हें बताया कि जब लोग ख़ुबैब (रज़ि.) को क़त्ल करने के लिये आमादा हुए (और वो क़ैद में थे) तो उसी ज़माने में उन्होंने उनसे स़फ़ाई करने के लिये उस्तरा लिया था, जब वो लोग ख़ुबैब (रज़ि.) को हरम से बाहर क़त्ल करने ले गये तो उन्होंने ये अश्आ़र कहे।

जिनमें अल्लाह पर लफ़्ज़े ज़ात का इत्लाक़ किया गया है यही बाब से मुताबक़त है।

और जब मैं मुसलमान होने की हालत में क़त्ल किया जा रहा हूँ तो मुझे इसकी परवाह नहीं कि मुझे किस पहलू पर क़त्ल किया जाएगा और मेरा ये मरना अल्लाह के लिये है और अगर वो चाहेगा तो मेरे टुकड़े टुकड़े किये हुए हिस़्सों पर बरकत नाज़िल करेगा।

फिर इब्नुल हारिष़ ने उन्हें क़त्ल कर दिया और नबी करीम (ﷺ) ने अपने स़हाबा को इस हादष़े की ख़बर उसी दिन दी जिस दिन ये हज़रात शहीद किये गये थे। (राजेअ़ : 3045)

तश्रीह : बनू लह्यान के दो सौ आदमियों ने उनको घेर लिया। सात बुज़ुर्ग शहीद हो गये तीन को क़ैद करके ले चले। उन ही में हज़रत ख़ुबैब (रज़ि.) भी थे जिसे बनू हारिष़ ने ख़रीद लिया और एक मुद्दत तक उनको क़ैद रखकर क़त्ल किया। हज़रत मौलाना वहीदुज़्ज़माँ ने उन अश्आ़र का तर्जुमा यूँ किया है,

जब मुसलमाँ बन के दुनिया से चलूँ — मुझको क्या डर है किसी करवट गिरूँ
मेरा मरना है अल्लाह की ज़ात में — वो अगर चाहे न होऊँगा मैं ज़बूँ
तन जो टुकड़े टुकड़े अब हो जाएगा — उसके टुकड़ों पर वो बरकत दे फ़ज़ूँ

१٥- باب قَوْلِ اللهِ تَعَالَى :

﴿وَيُحَذِّرُكُمُ اللهُ نَفْسَهُ﴾ [آل عمران: ٢٨] وَقَوْلِ اللهِ تَعَالَى ﴿تَعْلَمُ مَا فِي نَفْسِي وَلاَ أَعْلَمُ مَا فِي نَفْسِكَ﴾ [المائدة :

बाब 15 : अल्लाह तआ़ला का इर्शाद सूरह आले इमरान में

और अल्लाह अपनी ज़ात से तुम्हें डराता है। और अल्लाह तआ़ला का इर्शाद सूरह माइदह में (ईसा अ़. के अल्फ़ाज़ में) और या अल्लाह! तू वो जानता है जो मेरे नफ़्स में है लेकिन मैं वो नहीं जानता जो तेरे नफ़्स में है। (अल माइदह : 116)

.[١١٦

अल्लाह पर उसके नफ़्स का इत़्लाक़ हुआ जो नस्से स़रीह़ है लिहाज़ा तावील नाजाइज़ है।

7403. हमसे उ़मर बिन ह़फ़्स़ बिन ग़ियाष़ ने बयान किया, उन्होंने कहा मुझसे मेरे वालिद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे आ'मश ने बयान किया, उनसे शक़ीक़ ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, कोई भी अल्लाह से ज़्यादा ग़ैरतमंद नहीं और इसीलिये उसने फ़वाह़िश को ह़राम क़रार दिया है और अल्लाह से ज़्यादा कोई ता'रीफ़ पसंद करने वाला नहीं। (राजेअ़ : 4634)

٧٤٠٣- حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصِ بْنِ غِيَاثٍ، حَدَّثَنَا أَبِي حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، عَنْ شَقِيقٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((مَا مِنْ أَحَدٍ أَغْيَرُ مِنَ اللهِ، مِنْ أَجْلِ ذَلِكَ حَرَّمَ الْفَوَاحِشَ مَا أَحَدٌ أَحَبُّ إِلَيْهِ الْمَدْحُ مِنَ اللهِ)). [راجع: ٤٦٣٤]

तश्रीह़ : आदमी के लिये ये ऐ़ब है कि अपनी ता'रीफ़ पसंद करे लेकिन परवरदिगार के ह़क़ में ये ऐ़ब नहीं है क्योंकि वो ता'रीफ़ के लायक़ है। उसकी जितनी ता'रीफ़ की जाए कम है। इस ह़दीष़ की मुत़ाबक़त बाब से इस त़रह़ है कि इमाम बुख़ारी (रह़.) ने इसको लाकर इसके दूसरे त़रीक़ की त़रफ़ अपनी आ़दत के मुवाफ़िक़ इशारा किया। ये त़रीक़ तफ़्सीर सूरह अन्आम में गुज़र चुका है। उसमें इतना ज़्यादा है, **व लिज़ालिक मदह़ नफ़्सहू** तो नफ़्स का इत़्लाक़ परवरदिगार पर ष़ाबित हुआ। किरमानी ने इस पर ख़्याल नहीं किया और जिस ह़दीष़ की शरह़ किताबुत्तफ़्सीर में कर आए थे उसको यहाँ भूल गये। उन्होंने कहा मुत़ाबक़त इस त़रह़ से है कि अह़द का लफ़्ज़ भी नफ़्स के लफ़्ज़ के मिष़्ल है।

7404. हमसे अ़ब्दान ने बयान किया, उनसे अबू ह़म्ज़ा ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे अबू स़ालेह़ ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जब अल्लाह तआ़ला ने मख़्लूक़ को पैदा किया तो अपनी किताब मे उसे लिखा, उसने अपनी ज़ात के बारे में भी लिखा और ये अब भी अ़र्श पर लिखा हुआ मौजूद है कि, मेरी रह़मत मेरे ग़ज़ब पर ग़ालिब है। (राजेअ़ : 3194)

٧٤٠٤- حَدَّثَنَا عَبْدَانُ، عَنْ أَبِي حَمْزَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((لَمَّا خَلَقَ اللهُ الْخَلْقَ كَتَبَ فِي كِتَابِهِ وَهُوَ يَكْتُبُ عَلَى نَفْسِهِ، وَهُوَ وَضْعٌ عِنْدَهُ عَلَى الْعَرْشِ إِنَّ رَحْمَتِي تَغْلِبُ غَضَبِي)).[راجع: ٣١٩٤]

7405. हमसे उ़मर बिन ह़फ़्स़ ने बयान किया, कहा हमसे हमारे वालिद ने, कहा हमसे आ'मश ने, कहा मैं ने अबू स़ालेह़ से सुना और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया अल्लाह तआ़ला फ़र्माता है कि मैं अपने बन्दे के गुमान के साथ हूँ और जब भी वो मुझे याद करता है तो मैं उसके साथ हूँ। पस जब वो मुझे अपने दिल मे याद करता है तो मैं भी उसे अपने दिल में याद करता हूँ और जब वो मुझे मज्लिस में याद करता है तो मैं उसे उससे बेहतर फ़रिश्तों की मज्लिस में याद करता हूँ और अगर वो मुझसे एक बालिश्त क़रीब आता है तो मैं उससे एक हाथ क़रीब हो जाता हूँ और

٧٤٠٥- حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصٍ، حَدَّثَنَا أَبِي حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ سَمِعْتُ أَبَا صَالِحٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَقُولُ اللهُ تَعَالَى: ((أَنَا عِنْدَ ظَنِّ عَبْدِي بِي، وَأَنَا مَعَهُ إِذَا ذَكَرَنِي، فَإِنْ ذَكَرَنِي فِي نَفْسِهِ ذَكَرْتُهُ فِي نَفْسِي، وَإِنْ ذَكَرَنِي فِي مَلأٍ ذَكَرْتُهُ فِي مَلأٍ خَيْرٍ مِنْهُمْ، وَإِنْ تَقَرَّبَ إِلَيَّ بِشِبْرٍ

अगर वो मुझसे एक हाथ क़रीब आता है तो मैं उससे दो हाथ क़रीब हो जाता हूँ और अगर वो मेरी त़रफ़ चलकर आता है तो मैं उसके पास दौड़कर आ जाता हूँ। (दीगर मक़ाम : 7505, 7537)

تَقَرَّبْتُ إِلَيْهِ ذِرَاعًا، وَإِنْ تَقَرَّبَ إِلَيَّ ذِرَاعًا تَقَرَّبْتُ إِلَيْهِ بَاعًا، وَإِنْ أَتَانِي يَمْشِي أَتَيْتُهُ هَرْوَلَةً)). [طرفاه في : ٧٥٠٥، ٧٥٣٧].

तश्रीह : या'नी मेरा बन्दा मेरे साथ जैसा गुमान रखेगा मैं उसी त़रह़ उससे पेश आऊँगा। अगर ये गुमान रखेगा कि मैं उसके क़ुसूर माफ़ कर दूँगा तो ऐसा ही होगा। अगर ये गुमान रखेगा कि मैं उसको अ़ज़ाब दूँगा तो ऐसा ही होगा। ह़दीष़ से ये निकला कि रजा का पहलू बन्दे में ग़ालिब होना चाहिये और परवरदिगार के साथ नेक गुमान रखना चाहिये। अगर गुनाह बहुत हैं तो भी ये ख़्याल रखना चाहिये कि वो ग़फ़ूरुर्रह़ीम है। उसकी रह़मत से मायूस नहीं होना चाहिये। **इन्नल्लाह यग़्फ़िरुज़्ज़ुनुब जमीअ़न अन्नहू हुवल ग़फ़ूरुर्रह़ीम.** (अज़्ज़ुमर : 53)

बाब 16 : सूरह क़सस़ में अल्लाह तआ़ला का इर्शाद, अल्लाह के चेहरे के सिवा तमाम चीज़ें मिट जाने वाली हैं

١٦- باب قَوْلِ اللهِ تَعَالَى : ﴿كُلُّ شَيْءٍ هَالِكٌ إِلاَّ وَجْهَهُ﴾ [القصص : ٨٨]

तश्रीह : ग़र्ज़ इमाम बुख़ारी (रह़.) की ये है कि चेहरे का इत्लाक़ परवरदिगार पर क़ुर्आन व ह़दीष़ में आ रहा है और गुमराह जहमिया ने इसका इंकार किया है। उन्होंने चेहरे से ज़ात और यद से क़ुदरत के साथ तावील की है। ह़ज़रत इमाम अबू ह़नीफ़ा (रह़.) ने इसका रद्द किया है।

7406. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे ह़म्माद ने बयान किया, उनसे अ़म्र ने और उनसे जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि जब ये आयत नाज़िल हुई। आप कह दीजिए कि वो क़ादिर है इस पर कि तुम पर तुम्हारे ऊपर से अ़ज़ाब नाज़िल करे, तो नबी करीम (ﷺ) ने कहा, मैं तेरे चेहरे की पनाह माँगता हूँ। फिर आयत के ये अल्फ़ाज़ नाज़िल हुए जिनका तर्जुमा ये है कि, वो तुम्हारे ऊपर से तुम पर अ़ज़ाब नाज़िल करे या तुम्हारे पैरों के नीचे से अ़ज़ाब आ जाए। तो आँह़ज़रत (ﷺ) ने फिर ये दुआ़ की कि मैं तेरे चेहरे की पनाह चाहता हूँ। फिर ये आयत नाज़िल हुई जिनका तर्जुमा ये है, या तुम्हें फ़िर्क़ाबन्दी में मुब्तला कर दे (कि ये भी अ़ज़ाब की क़िस्म है) तो आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि ये आसान है ब निस्बत अगले अ़ज़ाबों के। (राजेअ़ : 4628)

٧٤٠٦- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، عَنْ عَمْرٍو، عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ قَالَ: لَمَّا نَزَلَتْ هَذِهِ الآيَةُ: ﴿قُلْ هُوَ الْقَادِرُ عَلَى أَنْ يَبْعَثَ عَلَيْكُمْ عَذَابًا مِنْ فَوْقِكُمْ﴾ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((أَعُوذُ بِوَجْهِكَ فَقَالَ: ﴿أَوْ مِنْ تَحْتِ أَرْجُلِكُمْ﴾)) [الانعام: ٦٥] فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((أَعُوذُ بِوَجْهِكَ قَالَ: ﴿أَوْ يَلْبِسَكُمْ شِيَعًا﴾)) [الانعام : ٦٥] فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((هَذَا أَيْسَرُ)).

[راجع: ٤٦٢٨]

क्योंकि उनमें सब तबाह हो जाते हैं। मा'लूम हुआ कि फ़िर्क़ाबन्दी भी अल्लाह तआ़ला का अ़ज़ाब है। उम्मत अ़र्से से इस अ़ज़ाब में मुब्तला हैं और वो इसको अ़ज़ाब मानने के लिये तैयार नहीं, स़द अफ़सोस।

बाब 17 : सूरह त़ाहा (39) में अल्लाह तआ़ला का ह़ज़रत मूसा (अ़.) से फ़र्माना कि, मेरी आँखों के सामने तू परवरिश पाए. और इर्शाद इलाही

١٧- باب قَوْلِ اللهِ تَعَالَى : [طه : ٣٩] ﴿وَلِتُصْنَعَ عَلَى عَيْنِي﴾ تُغَذَّى وَقَوْلِهِ جَلَّ ذِكْرُهُ : ﴿تَجْرِي

سورہ قمر میں، نوح کی کشتی میری آنکھوں کے سامنے
﴿بِأَعْيُنِنَا﴾ [القمر : ١٤]

सूरह क़मर में, नूह़ की कश्ती मेरी आँखों के सामने पानी पर तैर रही थी. (क़मर : 14)

अल्लाह पर लफ़्ज़े आँख का इत्लाक़ ष़ाबित हुआ।

٧٤٠٧- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا جُوَيْرِيَةُ عَنْ نَافِعٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ قَالَ: ذُكِرَ الدَّجَّالُ عِنْدَ النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: ((إِنَّ اللهَ لاَ يَخْفَى عَلَيْكُمْ إِنَّ اللهَ لَيْسَ بِأَعْوَرَ)) وَأَشَارَ بِيَدِهِ إِلَى عَيْنِهِ ((وَإِنَّ الْمَسِيحَ الدَّجَّالَ أَعْوَرُ عَيْنِ الْيُمْنَى، كَأَنَّ عَيْنَهُ عِنَبَةٌ طَافِيَةٌ)). [راجع: ٣٠٥٧]

7407. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे जुवैरिया ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ़ ने बयान किया और उनसे अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) के पास दज्जाल का ज़िक्र हुआ तो आपने फ़र्माया कि तुम्हें अच्छी तरह मा'लूम है कि अल्लाह काना नहीं है और आपने हाथ से अपनी आँख की तरफ़ इशारा किया और मसीह दज्जाल की दाएँ आँख कानी होगी। जैसे उसकी आँख पर अंगूर का एक उठा हुआ दाना हो। (राजेअ़ : 3057)

ष़ाबित हुआ कि उसकी शान के मुत़ाबिक़ उसकी आँख है और वो बेऐब है जिसकी तावील जाइज़ नहीं।

٧٤٠٨- حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ عُمَرَ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، أَخْبَرَنَا قَتَادَةُ قَالَ : سَمِعْتُ أَنَسًا رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((مَا بَعَثَ اللهُ مِنْ نَبِيٍّ إِلاَّ أَنْذَرَ قَوْمَهُ الأَعْوَرَ الْكَذَّابَ، إِنَّهُ أَعْوَرُ وَإِنَّ رَبَّكُمْ لَيْسَ بِأَعْوَرَ، مَكْتُوبٌ بَيْنَ عَيْنَيْهِ كَافِرٌ)). [راجع: ٧١٣١]

7408. हमसे ह़फ़्स़ बिन उ़मर ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, कहा हमको क़तादा ने ख़बर दी, कहा कि मैं ने अनस (रज़ि.) से सुना, और उनसे नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि अल्लाह ने जितने नबी भी भेजे उन सबने झूठे काने दज्जाल से अपनी क़ौम को डराया। वो दज्जाल काना होगा और तुम्हारा रब (आँखों वाला है) काना नहीं है। उस दज्जाल की दोनों आँखों के बीच लिखा हुआ होगा लफ़्ज़े काफ़िर। (राजेअ़ : 7131)

ये मसीह दज्जाल का ह़ाल है जो दज्जाल ह़क़ीक़ी होगा बाक़ी मजाज़ी दज्जाल मौलवियों, पीरों, इमामों की शक्ल में आकर उम्मत को गुमराह करेंगे जैसा कि ह़दीष़ में **ष़लाष़ून दज्जालून कज़्ज़ाबून** के अल्फ़ाज़ आए हैं। ह़दीष़ में अल्लाह की बेऐब आँख का ज़िक्र आया। यही बाब से मुत़ाबक़त है।

١٨- باب قَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿هُوَ اللهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ﴾

बाब 18 : अल्लाह तआ़ला का इर्शाद सूरह ह़श्र में, वही अल्लाह हर चीज़ का पैदा करने वाला और हर चीज़ का नक़्शा खींचने वाला है

٧٤٠٩- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ، حَدَّثَنَا عَفَّانُ، حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ، حَدَّثَنَا مُوسَى هُوَ ابْنُ عُقْبَةَ، حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ يَحْيَى بْنِ حَبَّانَ، عَنِ ابْنِ مُحَيْرِيزٍ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ فِي غَزْوَةِ بَنِي الْمُصْطَلِقِ أَنَّهُمْ أَصَابُوا سَبَايَا فَأَرَادُوا أَنْ يَسْتَمْتِعُوا بِهِنَّ وَلاَ

7409. हमसे इस्ह़ाक़ ने बयान किया, कहा हमसे अ़फ़्फ़ान ने बयान किया, कहा हमसे वुहैब ने बयान किया, कहा हमसे मूसा बिन उ़क़्बा ने बयान किया, कहा मुझसे मुह़म्मद बिन यह़्या बिन ह़िब्बान ने बयान किया, उनसे इब्ने मुहैरीज़ ने और उनसे अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने कि ग़ज़्वा बनू मुस्त़लिक़ मे उन्हें बाँदियाँ ग़नीमत में मिलीं तो उन्होंने चाहा कि उनसे हम

يَحْمِلْنَ فَسَأَلُوا النَّبِيَّ ﷺ عَنِ الْعَزْلِ فَقَالَ ((مَا عَلَيْكُمْ أَنْ لاَ تَفْعَلُوا فَإِنَّ اللهَ قَدْ كَتَبَ مَنْ هُوَ خَالِقٌ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ)) وَقَالَ مُجَاهِدٌ عَنْ قَزَعَةَ: سَمِعْتُ أَبَا سَعِيدٍ فَقَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لَيْسَتْ نَفْسٌ مَخْلُوقَةٌ إِلاَّ اللهُ خَالِقُهَا)). [راجع: ٢٢٢٩]

बिस्तरी करें लेकिन ह़मल न ठहरे। चुनाँचे लोगों ने आँह़ज़रत (ﷺ) से अ़ज़्ल के बारे में पूछा तो आपने फ़र्माया कि अगर तुम अ़ज़्ल भी करो तो कोई क़बाहत नहीं मगर क़यामत तक जिस जान के बारे में अल्लाह तआ़ला ने पैदा होना लिख दिया है वो ज़रूर पैदा होकर रहेगी (इसलिये तुम्हारा अ़ज़्ल करना बेकार है मौजूदा जबरन नस्लबन्दी का जवाज़ निकालना बिल्कुल ग़लत़ है)। और मुजाहिद ने क़ज़अ़ा से बयान किया कि उन्होंने अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कोई भी जान जो पैदा होनी है, अल्लाह तआ़ला ज़रूर उसे पैदा करके रहेगा।(राजेअ़ : 2229)

अ़ज़्ल का मा'नी सुह़बत करने पर इंज़ाल के वक़्त ज़कर को बाहर निकाल देना है। आयत के **अल्फ़ाज़ ख़ालिक़ुल बारियुल मुस़व्विर** हर सेह का इससे इ़ष्बात होता है, यही बाब से ता'ल्लुक़ है।

١٩- باب قَوْلِ اللهِ تَعَالَى : ﴿لِمَا خَلَقْتُ بِيَدَيَّ﴾ [ص : ٧٥]

बाब 19 : अल्लाह तआ़ला ने (शैत़ान से) फ़र्माया, तूने उसको क्यूँ सज्दा नहीं किया जिसे मैंने अपने दोनों हाथों से बनाया (स़ाद : 75)

अल्लाह तआ़ला के लिये दोनों हाथों का होना बरह़क़ है मगर जैसा अल्लाह है वैसे उसके हाथ हैं हमको उनकी कैफ़ियत मा'लूम नहीं। इसमें कुरेद करना बिदअ़त है। अल्लाह तआ़ला की तमाम स़िफ़ाते वारिदा के बारे में यही ए'तिक़ाद रखना चाहिये। **आमन्ना बिल्लाहि कमा हुवा बिअस्माइही व स़िफ़ातिही।**

٧٤١٠- حَدَّثَنِي مُعَاذُ بْنُ فَضَالَةَ، حَدَّثَنَا هِشَامٌ، عَنْ قَتَادَةَ عَنْ أَنَسٍ أَنَّ النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: ((يَجْمَعُ اللهُ الْمُؤْمِنِينَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ كَذَلِكَ، فَيَقُولُونَ: لَوِ اسْتَشْفَعْنَا إِلَى رَبِّنَا حَتَّى يُرِيحَنَا مِنْ مَكَانِنَا هَذَا، فَيَأْتُونَ آدَمَ فَيَقُولُونَ : يَا آدَمُ أَمَا تَرَى النَّاسَ؟ خَلَقَكَ اللهُ بِيَدِهِ وَأَسْجَدَ لَكَ مَلاَئِكَتَهُ، وَعَلَّمَكَ أَسْمَاءَ كُلِّ شَيْءٍ شَفِّعْ لَنَا إِلَى رَبِّنَا حَتَّى يُرِيحَنَا مِنْ مَكَانِنَا هَذَا فَيَقُولُ: لَسْتُ هُنَاكَ وَيَذْكُرُ لَهُمْ خَطِيئَتَهُ الَّتِي أَصَابَ، وَلَكِنِ ائْتُوا نُوحًا فَإِنَّهُ أَوَّلُ رَسُولٍ بَعَثَهُ اللهُ إِلَى أَهْلِ الأَرْضِ، فَيَأْتُونَ نُوحًا فَيَقُولُ: لَسْتُ هُنَاكُمْ وَيَذْكُرُ خَطِيئَتَهُ الَّتِي أَصَابَ، وَلَكِنِ

7410. मुझसे मुआ़ज़ बिन फ़ुज़ाला ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम दस्तवाई ने, उन्होंने क़तादा बिन दआ़मा ने, उन्होंने अनस (रज़ि.) से कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया अल्लाह तआ़ला क़यामत के दिन उसी त़रह़ जैसे हम दुनिया में जमा होते हैं, मोमिनों को इकट्ठा करेगा (वो गर्मी वग़ैरह से परेशान होकर) कहेंगे काश! हम किसी की सिफ़ारिश अपने मालिक के पास ले जाते ताकि हमें अपनी इस ह़ालत से आराम मिलता। चुनाँचे सब मिलकर आदम (अ़.) के पास आएँगे। उनसे कहेंगे, आदम (अ़.)! आप लोगों का ह़ाल नहीं देखते किस बला में गिरफ़्तार हैं। आपको अल्लाह तआ़ला ने (ख़ास़) अपने हाथ से बनाया और फ़रिश्तों से आपको सज्दा कराया और हर चीज़ के नाम आपको बतलाए (हर लुग़त मे बोलना बात करना सिखाया) कुछ सिफ़ारिश कीजिए ताकि हमको इस जगह से नजात होकर आराम मिले। कहेंगे मैं इस लायक़ नहीं, उनको वो गुनाह याद आ जाएगा जो उन्होंने किया था (मम्नूअ़ पेड़ में से खाना) मगर तुम लोग ऐसा करो नूह़ (अ़.)

ائْتُوا إِبْرَاهِيمَ خَلِيلَ الرَّحْمَنِ، فَيَأْتُونَ إِبْرَاهِيمَ فَيَقُولُ: لَسْتُ هُنَاكُمْ وَيَذْكُرُ لَهُمْ خَطَايَاهُ الَّتِي أَصَابَهَا، وَلَكِنِ ائْتُوا مُوسَى عَبْدًا آتَاهُ اللهُ التَّوْرَاةَ وَكَلَّمَهُ تَكْلِيمًا، فَيَأْتُونَ مُوسَى فَيَقُولُ: لَسْتُ هُنَاكُمْ وَيَذْكُرُ لَهُمْ خَطِيئَتَهُ الَّتِي أَصَابَ، وَلَكِنِ ائْتُوا عِيسَى عَبْدَ اللهِ وَرَسُولَهُ وَكَلِمَتَهُ وَرُوحَهُ فَيَأْتُونَ عِيسَى فَيَقُولُ: لَسْتُ هُنَاكُمْ، وَلَكِنِ ائْتُوا مُحَمَّدًا صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ عَبْدًا غُفِرَ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ وَمَا تَأَخَّرَ، فَيَأْتُونِي فَانْطَلِقُ فَأَسْتَأْذِنُ عَلَى رَبِّي فَيُؤْذَنُ لِي عَلَيْهِ فَإِذَا رَأَيْتُ رَبِّي وَقَعْتُ لَهُ سَاجِدًا، فَيَدَعُنِي مَا شَاءَ اللهُ أَنْ يَدَعَنِي ثُمَّ يُقَالُ لِي: ارْفَعْ مُحَمَّدُ وَقُلْ: يُسْمَعْ وَسَلْ تُعْطَهْ وَاشْفَعْ تُشَفَّعْ، فَأَحْمَدُ رَبِّي بِمَحَامِدَ عَلَّمَنِيهَا، ثُمَّ أَشْفَعُ فَيَحُدُّ لِي حَدًّا، فَأُدْخِلُهُمُ الْجَنَّةَ ثُمَّ أَرْجِعُ فَإِذَا رَأَيْتُ رَبِّي وَقَعْتُ سَاجِدًا فَيَدَعُنِي مَا شَاءَ اللهُ أَنْ يَدَعَنِي ثُمَّ يُقَالُ: ارْفَعْ مُحَمَّدُ وَقُلْ: يُسْمَعْ وَسَلْ تُعْطَهْ وَاشْفَعْ تُشَفَّعْ فَأَحْمَدُ رَبِّي بِمَحَامِدَ عَلَّمَنِيهَا، ثُمَّ أَشْفَعُ فَيَحُدُّ لِي حَدًّا، فَأُدْخِلُهُمُ الْجَنَّةَ ثُمَّ أَرْجِعُ فَإِذَا رَأَيْتُ رَبِّي وَقَعْتُ سَاجِدًا، فَيَدَعُنِي مَا شَاءَ اللهُ أَنْ يَدَعَنِي، ثُمَّ يُقَالُ ارْفَعْ مُحَمَّدُ قُلْ يُسْمَعْ وَسَلْ تُعْطَهْ، وَاشْفَعْ تُشَفَّعْ فَأَحْمَدُ رَبِّي بِمَحَامِدَ عَلَّمَنِيهَا، ثُمَّ أَشْفَعُ فَيَحُدُّ لِي حَدًّا فَأُدْخِلُهُمُ الْجَنَّةَ، ثُمَّ أَرْجِعُ فَأَقُولُ : يَا

पैग़म्बर के पास जाओ वो पहले पैग़म्बर हैं जिनको अल्लाह तआला ने ज़मीन वालों की तरफ़ भेजा था। आख़िर वो सब लोग नूह (अ.) के पास आएँगे, वो भी यही जवाब देंगे, मैं इस लायक़ नहीं अपनी ख़ता जो उन्होंने (दुनिया में) की थी याद करेंगे। कहेंगे तुम लोग ऐसा करो, इब्राहीम (अ.) के पास जाओ जो अल्लाह के ख़लील हैं। (उनके पास जाएँगे) वो भी अपनी ख़ताएँ याद करके कहेंगे मैं इस लायक़ नही तुम मूसा (अ.) पैग़म्बर के पास जाओ अल्लाह ने उनको तौरात इनायत फ़र्माई। उनसे बोलकर बातें कीं। ये लोग मूसा(अ.) के पास आएँगे वो भी यही कहेंगे मैं इस लायक़ नहीं अपनी ख़ता जो उन्होंने दुनिया में की थी याद करेंगे मगर तुम ऐसा करो ईसा (अ.) पैग़म्बर के पास जाओ वो अल्लाह के बन्दे, उसके रसूल, उसके ख़ास कलिमा और ख़ास रूह हैं । ये लोग ईसा (अ.) के पास आएँगे वो कहेंगे मैं इस लायक़ नहीं तुम ऐसा करो मुहम्मद (ﷺ) के पास जाओ वो अल्लाह के ऐसे बन्दे हैं जिनकी अगली पिछली ख़ताएँ सब बख़्श दी गईं हैं । आख़िर ये सब लोग जमा होकर मेरे पास आएँगे। मैं चलूँगा और अपने परवरदिगार की बारगाह मे हाज़िर होने की इजाज़त माँगूँगा, मुझको इजाज़त मिलेगी। मैं अपने परवरदिगार को देखते ही सज्दे में गिर पड़ूँगा और जब तक उसको मंज़ूर होगा वो मुझको सज्दे ही में पड़े रहने देगा। उसके बाद हुक्म होगा, मुहम्मद (ﷺ)! अपना सर उठाओ और अ़र्ज़ करो तुम्हारी अ़र्ज़ सुनी जाएगी, तुम्हारी दरख़्वास्त मंज़ूर होगी, तुम्हारी सिफ़ारिश मक़्बूल होगी। उस वक़्त मैं अपने मालिक की ऐसी ऐसी ता'रीफ़ें करूँगा जो वो मुझको सिखा चुका है (या सिखलाएगा)। फिर लोगों की सिफ़ारिश शुरू कर दूँगा। सिफ़ारिश की एक हद मुक़र्रर कर दी जाएगी। मैं उनको बहिश्त में ले जाऊँगा , फिर लौटकर अपने परवरदिगार के पास हाज़िर होऊँगा और उसको देखते ही सज्दे में गिर पड़ूँगा जब तक परवरदिगार चाहेगा मुझको सज्दे में पड़े रहने देगा। उसके बाद इर्शाद होगा, मुहम्मद (ﷺ) अपना सर उठाओ जो तुम कहोगे सुना जाएगा और सिफ़ारिश करोगे तो कुबूल होगी फिर मैं अपने परवरदिगार की ऐसी ता'रीफ़ें करूँगा जो अल्लाह ने मुझको सिखलाईं (या सिखलाएगा)। उसके बाद सिफ़ारिश कर दूँगा लेकिन सिफ़ारिश की एक हद मुक़र्रर

رَبِّ مَا بَقِيَ فِي النَّارِ إِلاَّ مَنْ حَبَسَهُ الْقُرْآنُ، وَوَجَبَ عَلَيْهِ الْخُلُودُ قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: يُخْرَجُ مِنَ النَّارِ مَنْ قَالَ: لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ وَكَانَ فِي قَلْبِهِ مِنَ الْخَيْرِ، مَا يَزِنُ شَعِيرَةً ثُمَّ يُخْرَجُ مِنَ النَّارِ مَنْ قَالَ: لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ وَكَانَ فِي قَلْبِهِ مِنَ الْخَيْرِ مَا يَزِنُ بُرَّةً، ثُمَّ يُخْرَجُ مِنَ النَّارِ مَنْ قَالَ: لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ وَكَانَ فِي قَلْبِهِ مَا يَزِنُ مِنَ الْخَيْرِ ذَرَّةً)).

[راجع: ٤٤]

कर दी जाएगी। मैं उनको बहिश्त में ले जाऊँगा फिर लौटकर अपने परवरदिगार के पास ह़ाज़िर होऊँगा उसको देखते ही सज्दे में गिर पड़ूँगा जब तक परवरदिगार चाहेगा मुझको सज्दे में पड़ा रहने देगा। उसके बाद इर्शाद होगा मुहम्मद अपना सर उठाओ जो तुम कहोगे सुना जाएगा और सिफ़ारिश करोगे तो क़ुबूल होगी फिर मैं अपने परवरदिगार की ऐसी ता'रीफ़ें करूँगा जो अल्लाह ने मुझको सिखाई (या सिखलाएगा)। उसके बाद सिफ़ारिश शुरू कर दूँगा लेकिन सिफ़ारिश की एक ह़द मुक़र्रर कर दी जाएगी। मैं उनको बहिश्त में ले जाऊँगा फिर लौटकर अपने परवरदिगार के पास ह़ाज़िर होऊँगा। अ़र्ज़ करूँगा, या पाक परवरदिगार! अब तू दोज़ख़ में ऐसे ही लोग रह गये हैं जो क़ुर्आन के ब-मोजिब दोज़ख़ ही मे हमेशा रहने के लायक़ हैं (या'नी काफ़िर और मुश्रिक) अनस (रज़ि.) ने कहा आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, दोज़ख़ से वो लोग भी निकाल लिये जाएँगे जिन्होंने (दुनिया में) ला इलाहा इल्लल्लाह कहा होगा और उनके दिल में एक जौ बराबर ईमान होगा फिर वो लोग भी निकाल लिये जाएँगे जिन्होंने ला इलाहा इल्लल्लाह कहा होगा और उनके दिल में गेहूँ के बराबर ईमान होगा। (गेहूँ जौ से छोटा होता है) फिर वो भी निकाल लिये जाएँगे जिन्होंने ला इलाहा इल्लल्लाह कहा होगा और उनके दिल में चींटी बराबर (या ज़र्रा बराबर) ईमान होगा। (राजेअ़ : 44)

तश्रीह: ये ह़दीष़ इससे पहले किताबुत्तफ़्सीर में गुज़र चुकी है। यहाँ इसको इसलिये लाए कि इसमें अल्लाह तआ़ला के हाथ का बयान है। दूसरी ह़दीष़ मे है कि अल्लाह तआ़ला ने तीन चीज़ें ख़ास़ अपने मुबारक हाथों से बनाईं। तौरात अपने हाथ से लिखी। आदम का पुतला अपने हाथ से बनाया। जन्नते अ़दन के पेड़ अपने हाथ से बनाए।

٧٤١١- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، حَدَّثَنَا أَبُوالزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ، قَالَ: ((يَدُ اللهِ مَلأَى لاَ يَغِيضُهَا نَفَقَةٌ سَحَّاءُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ)) وَقَالَ: ((أَرَأَيْتُمْ مَا أَنْفَقَ مُنْذُ خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالأَرْضَ، فَإِنَّهُ لَمْ يَغِضْ مَا فِي يَدِهِ)) وَقَالَ :((عَرْشُهُ عَلَى الْمَاءِ

7411. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐ़ब ने ख़बर दी, कहा हमसे अबुज़्ज़िनाद ने बयान किया, उनसे अअ़रज ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, अल्लाह का हाथ भरा हुआ है। उसे रात दिन की बख़्शिश भी कम नहीं करती। आपने फ़र्माया क्या तुम्हें मा'लूम है कि जब उसने आसमान व ज़मीन पैदा किये हैं उसने कितना ख़र्च किया है। उसने भी उसमें कोई कमी नहीं पैदा की जो उसके हाथ में है और फ़र्माया कि उसका अ़र्श पानी पर है और उसके दूसरे हाथ में तराज़ू है। जिसे वो

झुकाता और उठाता रहता है। (राजेअ : 4684)

وَبِيَدِهِ الأُخْرَى الْمِيزَانُ يَخْفِضُ وَيَرْفَعُ)).

[راجع: ٤٦٨٤]

तश्रीह : अल्लाह के लिये हाथ का इष्बात मक़्सूद है जिसकी तावील करना दुरुस्त नहीं है। हिन्दुओं की क़दीम (पुरानी) किताबों से भी यही षाबित होता है कि पहले दुनिया में बहुत पानी और नाराइन या'नी परवरदिगार का तख़्त पानी पर था। पानी मे से एक बुख़ार निकला उससे हवा पैदा हुई। हवाओं के आपस में लड़ने से आग पैदा हुई, पानी की तलछट और दर्द से ज़मीन का माद्दा बना, वल्लाहु आलम। (वहीदी)

7412. हमसे मुक़द्दम बिन मुहम्मद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे हमारे चचा क़ासिम बिन यह्या ने बयान किया, उनसे उबैदुल्लाह ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ ने बयान किया और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि क़यामत के दिन ज़मीन उसकी मुट्ठी में होगी और आसमान उसके दाहिने हाथ में होगा, फिर कहेगा कि मैं बादशाह हूँ। इसकी रिवायत सईद ने मालिक से की। (राजेअ : 3194)

٧٤١٢- حَدَّثَنَا مُقَدَّمُ بْنُ مُحَمَّدٍ، قَالَ: حَدَّثَنِي عَمِّي الْقَاسِمُ بْنُ يَحْيَى، عَنْ عُبَيْدِ اللهِ، عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ، أَنَّهُ قَالَ: ((إِنَّ اللهَ يَقْبِضُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ الأَرْضَ، وَتَكُونُ السَّمَاوَاتُ بِيَمِينِهِ ثُمَّ يَقُولُ: أَنَا الْمَلِكُ)) رَوَاهُ سَعِيدٌ عَنْ مَالِكٍ.[راجع: ٣١٩٤]

7413. और उमर बिन हम्ज़ा ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने सालिम से सुना, उन्होंने इब्ने उमर (रज़ि.) से और उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से यही हदीष। अबुल यमान ने बयान किया, उन्हें शुऐब ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुह्री ने, उन्हें अबू सलमा ने ख़बरदी और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया। अल्लाह ज़मीन को अपनी मुट्ठी में ले लेगा। (राजेअ : 4812)

٧٤١٣- وَقَالَ عُمَرُ بْنُ حَمْزَةَ: سَمِعْتُ سَالِمًا سَمِعْتُ ابْنَ عُمَرَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ بِهَذَا، وَقَالَ أَبُواليَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ أَخْبَرَنِي أَبُوسَلَمَةَ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((يَقْبِضُ اللهُ الأَرْضَ)). [راجع: ٤٨١٢]

अल्लाह के लिये मुट्ठी का इष्बात हुआ।

7414. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, उन्होंने कहा उसने यह्या बिन सईद से सुना, उन्होंने सुफ़यान से, उन्होंने कहा हमसे मंसूर और सुलैमान ने बयान किया, उनसे इब्राहीम ने बयान किया, उनसे उबैदह ने बयान किया और उनसे अब्दुल्लाह ने बयान किया कि एक यहूदी नबी करीम (ﷺ) के पास आया और कहा ऐ मुहम्मद (ﷺ)! अल्लाह आसमानों को एक उँगली पर रोक लेगा और ज़मीन को भी एक उँगली पर और पहाड़ों को एक उँगली पर और पेड़ों को एक उँगली पर और मख़्लूक़ात को एक उँगली पर, फिर फ़र्माएगा कि मैं बादशाह हूँ। उसके बाद रसूलुल्लाह (ﷺ) मुस्कुरा दिये। यहाँ तक कि आपके आगे के

٧٤١٤- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، سَمِعَ يَحْيَى بْنَ سَعِيدٍ، عَنْ سُفْيَانَ حَدَّثَنِي مَنْصُورٌ وَسُلَيْمَانُ عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ عَبِيدَةَ عَنْ عَبْدِ اللهِ أَنَّ يَهُودِيًّا جَاءَ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ: يَا مُحَمَّدُ إِنَّ اللهَ يُمْسِكُ السَّمَاوَاتِ عَلَى إِصْبَعٍ، وَالأَرَضِينَ عَلَى إِصْبَعٍ وَالْجِبَالَ عَلَى إِصْبَعٍ وَالشَّجَرَ عَلَى إِصْبَعٍ وَالْخَلاَئِقَ عَلَى إِصْبَعٍ ثُمَّ يَقُولُ: أَنَا

الْمَلِكُ، فَضَحِكَ رَسُولُ اللهِ ﷺ حَتَّى بَدَتْ نَوَاجِذُهُ ثُمَّ قَرَأَ: ﴿وَمَا قَدَرُوا اللهَ حَقَّ قَدْرِهِ﴾ [الانعام: ٩١]

[راجع: ٣٨١١]

दंदाने मुबारक दिखाई देने लगे। फिर सूरह अन्आम की आयत पढ़ी। वमा क़दरुल्लाह हक़्क़ा क़दरिही (अन्आम : 91)। (राजेअ : 3811)

قَالَ يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ وَزَادَ فِيهِ فُضَيْلُ بْنُ عِيَاضٍ، عَنْ مَنْصُورٍ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنْ عُبَيْدَةَ، عَنْ عَبْدِ اللهِ فَضَحِكَ رَسُولُ اللهِ ﷺ تَعَجُّبًا وَتَصْدِيقًا لَهُ.

यह्या बिन सईद ने बयान किया कि इस रिवायत में फ़ुज़ैल बिन अयाज़ ने मंसूर से इज़ाफ़ा किया, उनसे इब्राहीम ने, उनसे उबैदह ने, उनसे अब्दुल्लाह (रज़ि.) ने कि फिर आँहज़रत (ﷺ) उस पर तअ़ज्जुब की वजह से और उसकी तस्दीक़ करते हुए हंस दिये।

अल्लाह के वास्ते उसकी शान के मुताबिक़ उँगलियों का इष्बात हुआ। ह़दीष़ से अल्लाह के लिये पाँचों उँगलियों का इष्बात है। पस अल्लाह पर उसकी जुम्ला सिफ़ात के साथ बग़ैर तावील व तक्यीफ़ ईमान लाना फ़र्ज़ है।

٧٤١٥- حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصِ بْنِ غِيَاثٍ، حَدَّثَنَا أَبِي حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ سَمِعْتُ إِبْرَاهِيمَ قَالَ: سَمِعْتُ عَلْقَمَةَ يَقُولُ : قَالَ عَبْدُ اللهِ جَاءَ رَجُلٌ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ فَقَالَ: يَا أَبَا الْقَاسِمِ إِنَّ اللهَ يُمْسِكُ السَّمَاوَاتِ عَلَى إِصْبَعٍ، وَالأَرَضِينَ عَلَى إِصْبَعٍ وَالشَّجَرَ عَلَى إِصْبَعٍ وَالثَّرَى عَلَى إِصْبَعٍ، وَالْخَلاَئِقَ عَلَى إِصْبَعٍ ثُمَّ يَقُولُ: أَنَا الْمَلِكُ، أَنَا الْمَلِكُ فَرَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ ضَحِكَ حَتَّى بَدَتْ نَوَاجِذُهُ ثُمَّ قَرَأَ: ﴿وَمَا قَدَرُوا اللهَ حَقَّ قَدْرِهِ﴾ [راجع: ٤٨١١]

7415. हमसे उमर बिन ह़फ़्स़ बिन ग़याष़ ने बयान किया, उन्हों ने कहा मुझसे मेरे वालिद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे आ'मश ने बयान किया, उन्होंने इब्राहीम से सुना, कहा कि मैंने अल्क़मा से सुना, उन्होने बयान किया कि अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने कहा कि अहले किताब में से एक शख़्स नबी करीम (ﷺ) के पास आया और कहा कि ऐ अबुल क़ासिम! अल्लाह आसमानों को एक उँगली पर रोक लेगा, ज़मीन को एक उँगली पर रोक लेगा, पेड़ और मिट्टी को एक उँगली पर रोक लेगा और तमाम मख़्लूक़ात को एक उँगली पर रोक लेगा और फिर फ़र्माएगा कि मैं बादशाह हूँ, मैं बादशाह हूँ। मैंने आँहज़रत (ﷺ) को देखा कि आप उस पर हंस दिये। यहाँ तक कि आपके दांत दिखाई देने लगे, फिर ये आयत पढ़ी, वमा क़दरुल्लाह हक़्क़ा क़दरिही। (राजेअ : 4811)

(आगे मज़्कूर है, **वल अर्ज़ु जमीअ़न क़ब्ज़तहू यौमल क़ियामति**) उस दिन सारी ज़मीन उसकी मुट्ठी में होगी। सलफ़े स़ालिह़ीन ने इन सिफ़ात की तावील को पसंद नहीं फ़र्माया है। **व हाज़ा हुवस्सिरातुल मुस्तक़ीम।**

٢٠- باب قَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ: ((لاَ شَخْصَ أَغْيَرُ مِنَ اللهِ))

बाब 20 : नबी करीम (ﷺ) का इर्शाद, अल्लाह से ज़्यादा ग़ैरतमंद और कोई नहीं

وَقَالَ عُبَيْدُ اللهِ بْنِ عَمْرٍو، عَنْ عَبْدِ

और उ़बैदुल्लाह इब्ने अ़म्र ने अ़ब्दुल मलिक से रिवायत की कि,

الْمَلِكِ؟ لاَ شَخْصَ أَغْيَرُ مِنَ اللهِ.

अल्लाह से ज़्यादा ग़ैरतमंद कोई नहीं।

٧٤١٦- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْمَلِكِ عَنْ وَرَّادٍ كَاتِبِ الْمُغِيرَةِ، عَنِ الْمُغِيرَةِ قَالَ: قَالَ سَعْدُ بْنُ عُبَادَةَ لَوْ رَأَيْتُ رَجُلاً مَعَ امْرَأَتِي لَضَرَبْتُهُ بِالسَّيْفِ غَيْرَ مُصْفَحٍ، فَبَلَغَ ذَلِكَ رَسُولَ اللهِ ﷺ فَقَالَ: ((تَعْجَبُونَ مِنْ غَيْرَةِ سَعْدٍ؟ وَاللهِ لأَنَا أَغْيَرُ مِنْهُ، وَاللهُ أَغْيَرُ مِنِّي وَمِنْ أَجْلِ غَيْرَةِ اللهِ حَرَّمَ الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ، وَلاَ أَحَدَ أَحَبُّ إِلَيْهِ الْعُذْرُ مِنَ اللهِ، وَمِنْ أَجْلِ ذَلِكَ بَعَثَ الْمُبَشِّرِينَ وَالْمُنْذِرِينَ، وَلاَ أَحَدَ أَحَبُّ إِلَيْهِ الْمِدْحَةُ مِنَ اللهِ، وَمِنْ أَجْلِ ذَلِكَ وَعَدَ اللهُ الْجَنَّةَ)).

[راجع: ٦٨٤٦]

7416. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अबू अ़वाना ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल मलिक ने बयान किया, उनसे मुग़ीरह (रज़ि.) के कातिब वर्राद ने और उनसे मुग़ीरह (रज़ि.) ने बयान किया कि सअ़द बिन उ़बादह (रज़ि.) ने कहा कि अगर मैं अपनी बीवी के साथ किसी ग़ैर मर्द को देखूँ तो सीधी तलवार से उसकी गर्दन मार दूँ फिर ये बात रसूलुल्लाह (ﷺ) तक पहुँची तो आपने फ़र्माया क्या तुम्हें सअ़द की ग़ैरत पर हैरत है? बिला शुब्हा मैं उनसे ज़्यादा ग़ैरतमंद हूँ और अल्लाह तआ़ला मुझसे ज़्यादा ग़ैरतमंद है और अल्लाह ने ग़ैरत ही की वजह से फ़वाहिश को हराम किया है। चाहे वो ज़ाहिर में हों या छुपकर और मअ़ज़रत अल्लाह से ज़्यादा किसी को पसंद नहीं, इसीलिये उसने बशारत देने वाले और डराने वाले भेजे और ता'रीफ़ अल्लाह से ज़्यादा किसी को पसंद नहीं। इसी वजह से उसने जन्नत का वा'दा किया है। (राजेअ़ : 6846)

٢١- باب قُلْ أَيُّ شَيْءٍ أَكْبَرُ شَهَادَةً؟

فَسَمَّى اللهُ تَعَالَى نَفْسَهُ شَيْئًا قُلِ اللهُ وَسَمَّى النَّبِيُّ ﷺ الْقُرْآنَ شَيْئًا، وَهُوَ صِفَةٌ مِنْ صِفَاتِ اللهِ، وَقَالَ: ﴿كُلُّ شَيْءٍ هَالِكٌ إِلاَّ وَجْهَهُ﴾.

बाब 21 : सूरह अन्आ़म में अल्लाह तआ़ला ने फ़र्माया

ऐ पैग़म्बर! उनसे पूछ किस चीज़ की गवाही सबसे बड़ी गवाही है, तो अल्लाह तआ़ला ने अपनी ज़ात को शैइन से ता'बीर किया। इसी तरह नबी करीम (ﷺ) ने क़ुर्आन को शैअन कहा। जबकि क़ुर्आन भी अल्लाह की सिफ़ात में से एक सिफ़त है और अल्लाह तआ़ला ने फ़र्माया कि, अल्लाह की ज़ात के सिवा हर चीज़ ख़त्म होने वाली है।

٧٤١٧- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ، أَخْبَرَنَا مَالِكٌ، عَنْ أَبِي حَازِمٍ، عَنْ سَهْلِ بْنِ سَعْدٍ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ لِرَجُلٍ: ((أَمَعَكَ مِنَ الْقُرْآنِ شَيْءٌ؟)) قَالَ: نَعَمْ. سُورَةُ كَذَا وَسُورَةُ كَذَا لِسُوَرٍ سَمَّاهَا.

7417. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमको मालिक ने ख़बर दी, उन्हें अबू हाज़िम ने और उनसे सहल बिन सअ़द (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने एक स़ाहब से पूछा क्या आपको क़ुर्आन में से कुछ शै याद है? उन्हों ने कहा कि हाँ। फ़लाँ फ़लाँ सूरतें। उन्होंने उनके नाम बताए। (राजेअ़ : 2310)

[راجع: ٢٣١٠]

ये आपने उस आदमी से फ़र्माया था जिसने एक औरत से निकाह की दरख़्वास्त की थी मगर महर के लिये उसके पास कुछ न था। क़ुर्आन को लफ़्ज़ शै से ता'बीर किया।

बाब 22 : सूरह हूद में अल्लाह का फ़र्मान, और उसका अर्श पानी पर था, और वो अर्शे अज़ीम का रब है

अबुल आलिया ने बयान किया कि इस्तवा इलस्समाइ का मफ़्हूम ये है कि वो आसमान की तरफ़ बुलंद हुआ फ़सव्व हुन्ना या'नी फिर उन्हें पैदा किया। मुजाहिद ने कहा कि इस्तवा बमा'नी अला अलल अर्श है। इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने फ़र्माया कि मजीद बमा'नी करीम है अल वदूद बमा'नी अल हबीब बोलते हैं, हमीद मजीद। गोया ये फ़ईल के वज़न पर माजिद से है और महमूद हमीद से मुश्तक़ है।

٢٢- باب ﴿وَكَانَ عَرْشُهُ عَلَى الْمَاءِ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ﴾

قَالَ أَبُوالْعَالِيَةِ: اسْتَوَى إِلَى السَّمَاءِ: ارْتَفَعَ، فَسَوَّاهُنَّ : خَلَقَهُنَّ، وَقَالَ مُجَاهِدٌ اسْتَوَى: عَلاَ عَلَى الْعَرْشِ، وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: الْمَجِيدُ: الْكَرِيمُ، وَالْوَدُودُ: الْحَبِيبُ يُقَالُ لَهُ: حَمِيدٌ مَجِيدٌ كَأَنَّهُ فَعِيلٌ مِنْ مَاجِدٍ مَحْمُودٌ مِنْ حَمِيدٍ.

7418. हमसे अब्दान ने बयान किया, उनसे अबू हम्ज़ा ने, उनसे आ'मश ने, उनसे जामेअ बिन शद्दाद ने, उनसे सफ़्वान बिन मुहरिज़ ने और उनसे इमरान बिन हुसैन (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं नबी करीम (ﷺ) के पास था कि आपके पास बनू तमीम के कुछ लोग आए। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया, ऐ बनू तमीम! बशारत क़ुबूल करो। उन्होंने उस पर कहा कि आपने हमें बशारत दे दी, अब हमें बख़्शिश भी दीजिए। फिर आपके पास यमन के कुछ लोग पहुँचे तो आपने फ़र्माया कि ऐ अहले यमन! बनू तमीम ने बशारत नहीं क़ुबूल की तुम उसे क़ुबूल करो। उन्होंने कहा कि हमने क़ुबूल कर ली। हम आपके पास इसलिये हाज़िर हुए हैं ताकि दीन की समझ हासिल करें और ताकि आपसे इस दुनिया की इब्तिदा के बारे में पूछें कि किस तरह थी? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अल्लाह था और कोई चीज़ नहीं थी और अल्लाह का अर्श पानी पर था। फिर उसने आसमान व ज़मीन पैदा किये और लौहे महफ़ूज़ में हर चीज़ लिख दी (इमरान बयान करते हैं कि) मुझे एक शख़्स ने आकर ख़बर दी कि इमरान अपनी ऊँटनी की ख़बर लो, वो भाग गई है। चुनाँचे मैं उसकी तलाश में निकला। मैंने देखा कि मेरे और उसके बीच का चटियल मैदान हाइल है और अल्लाह की क़सम! मेरी तमन्ना थी कि वो चली ही गई होती और

٧٤١٨- حَدَّثَنَا عَبْدَانُ، عَنْ أَبِي حَمْزَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ جَامِعِ بْنِ شَدَّادٍ، عَنْ صَفْوَانَ بْنِ مُحْرِزٍ، عَنْ عِمْرَانَ بْنِ حُصَيْنٍ قَالَ: إِنِّي عِنْدَ النَّبِيِّ ﷺ، إِذْ جَاءَهُ قَوْمٌ مِنْ بَنِي تَمِيمٍ فَقَالَ: ((اقْبَلُوا الْبُشْرَى يَا بَنِي تَمِيمٍ)) قَالُوا: بَشَّرْتَنَا فَأَعْطِنَا، فَدَخَلَ نَاسٌ مِنْ أَهْلِ الْيَمَنِ فَقَالَ: ((اقْبَلُوا الْبُشْرَى يَا أَهْلَ الْيَمَنِ إِذْ لَمْ يَقْبَلْهَا بَنُو تَمِيمٍ)) قَالُوا: قَبِلْنَا جِئْنَاكَ لِنَتَفَقَّهَ فِي الدِّينِ وَلِنَسْأَلَكَ عَنْ هَذَا الأَمْرِ مَا كَانَ؟ قَالَ: ((كَانَ اللهُ وَلَمْ يَكُنْ شَيْءٌ قَبْلَهُ، وَكَانَ عَرْشُهُ عَلَى الْمَاءِ ثُمَّ خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالأَرْضَ، وَكَتَبَ فِي الذِّكْرِ كُلَّ شَيْءٍ))، ثُمَّ أَتَانِي رَجُلٌ فَقَالَ: يَا عِمْرَانُ أَدْرِكْ نَاقَتَكَ، فَقَدْ ذَهَبَتْ فَانْطَلَقْتُ أَطْلُبُهَا، فَإِذَا السَّرَابُ يَنْقَطِعُ دُونَهَا، وَايْمُ اللهِ لَوَدِدْتُ أَنَّهَا قَدْ

ذَهَبْتُ وَلَمْ أَقُمْ. [راجع: ٣١٩٠]

में आप (ﷺ) की मज्लिस से न उठा होता। (राजेअ़ : 3190)

अल्लाह का अ़र्श पर मुस्तवी होना बरहक़ है, इस पर बग़ैर तावील के ईमान लाना ज़रूरी है और तावील से बचना सलफ़ का तरीक़ा है।

٧٤١٩- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنْ هَمَّامٍ حَدَّثَنَا أَبُوهُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((إِنَّ يَمِينَ اللهِ مَلأَى، لاَ يَغِيضُهَا نَفَقَةٌ سَحَّاءُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ أَرَأَيْتُمْ مَا أَنْفَقَ مُنْذُ خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالأَرْضَ فَإِنَّهُ لَمْ يَنْقُصْ مَا فِي يَمِينِهِ، وَعَرْشُهُ عَلَى الْمَاءِ وَبِيَدِهِ الأُخْرَى الْفَيْضُ يَرْفَعُ وَيَخْفِضُ)). [راجع: ٤٦٨٤]

7419. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने बयान किया, कहा हमको मअ़मर ने ख़बर दी, उन्हें हम्माम ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, अल्लाह तआ़ला का हाथ भरा हुआ है उसे कोई ख़र्च कम नहीं करता जो दिन और रात वो करता रहता है। क्या तुम्हें मा'लूम है कि जबसे ज़मीन और आसमान को उसने पैदा किया है कितना ख़र्च कर दिया है। उस सारे ख़र्च ने उसमें कोई कमी नहीं की जो उसके हाथ में है और उसका अ़र्श पानी पर था और उसके दूसरे हाथ में तराज़ू है जिसे वो उठाता और झुकाता है। (राजेअ़ : 4684)

अल्लाह के दोनों हाथ षाबित हैं जैसा अल्लाह है वैसे उसके हाथ हैं। इसकी कैफ़ियत में कुरेद करना बिदअ़त है।

٧٤٢٠- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ أَبِي بَكْرٍ الْمُقَدَّمِيُّ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، عَنْ ثَابِتٍ عَنْ أَنَسٍ قَالَ: جَاءَ زَيْدُ بْنُ حَارِثَةَ يَشْكُو فَجَعَلَ النَّبِيُّ ﷺ، يَقُولُ: ((اتَّقِ اللهَ وَأَمْسِكْ عَلَيْكَ زَوْجَكَ)) قَالَتْ عَائِشَةُ: لَوْ كَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ كَاتِمًا شَيْئًا لَكَتَمَ هَذِهِ قَالَ: فَكَانَتْ زَيْنَبُ تَفْخَرُ عَلَى أَزْوَاجِ النَّبِيِّ ﷺ تَقُولُ: زَوَّجَكُنَّ أَهَالِيكُنَّ وَزَوَّجَنِي اللهُ تَعَالَى مِنْ فَوْقِ سَبْعِ سَمَاوَاتٍ. وَعَنْ ثَابِتٍ: ﴿وَتُخْفِي فِي نَفْسِكَ مَا اللهُ مُبْدِيهِ وَتَخْشَى النَّاسَ﴾ نَزَلَتْ فِي شَأْنِ زَيْنَبَ وَزَيْدِ بْنِ حَارِثَةَ. [راجع: ٤٧٨٧]

7420. हमसे अह़मद ने बयान किया, कहा हमसे मुह़म्मद बिन अबीबक्र मुक़द्दमी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे ह़म्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे षाबित ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि ज़ैद बिन ह़ारिषा (रज़ि.) (अपनी बीवी की) शिकायत करने लगे तो आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अल्लाह से डरो और अपनी बीवी को अपने पास ही रखो। आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि अगर आँह़ज़रत (ﷺ) किसी बात को छुपाने वाले होते तो उसे ज़रूर छुपाते। बयान किया कि चुनाँचे ज़ैनब (रज़ि.) तमाम अज़्वाजे मुत़ह्हरात पर फ़ख़्र से कहती थीं कि तुम लोगों की तुम्हारे घर वालों ने शादी की और मेरी अल्लाह तआ़ला ने सात आसमानों के ऊपर से शादी की और षाबित (रज़ि.) से मरवी है कि आयत, और आप उस चीज़ को अपने दिल में छुपाते हैं जिसे अल्लाह ज़ाहिर करने वाला है, ज़ैनब और ज़ैद बिन ह़ारिषा (रज़ि.) के बारे में नाज़िल हुई थी। (राजेअ़ : 4787)

ह़दीष़ से अल्लाह तआ़ला का सातों आसमानों के ऊपर होना षाबित है। बाब से यही मुनासबत है।

٧٤٢١- حَدَّثَنَا خَلاَّدُ بْنُ يَحْيَى، حَدَّثَنَا عِيسَى بْنُ طَهْمَانَ قَالَ: سَمِعْتُ أَنَسَ بْنَ

7421. हमसे ख़ल्लाद बिन यह़्या ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे ईसा बिन त़हमान ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मैंने अनस बिन मालिक (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया

कि पर्दा की आयत उम्मुल मोमिनीन ज़ैनब बिन्ते जह्श (रज़ि.) के बारे में नाज़िल हुई और उस दिन आपने रोटी और गोश्त के वलीमे की दा'वत दी और ज़ैनब (रज़ि.) अज़्वाजे मुतह्हरात पर फ़ख़्र किया करती थीं और कहती थीं कि मेरा निकाह अल्लाह ने आसमान पर कराया था। (राजेअ : 4791)

مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُولُ: نَزَلَتْ آيَةُ الْحِجَابِ فِي زَيْنَبَ بِنْتِ جَحْشٍ وَأَطْعَمَ عَلَيْهَا يَوْمَئِذٍ خُبْزًا وَلَحْمًا، وَكَانَ تَفْخَرُ عَلَى نِسَاءِ النَّبِيِّ ﷺ وَكَانَتْ تَقُولُ: إِنَّ اللهَ أَنْكَحَنِي فِي السَّمَاءِ.[راجع: ٤٧٩١]

इस हक़ीक़त को उन ही लफ़्ज़ों मे बिला चूँ चरा तस्लीम करना सलफ़ का तरीक़ा है।

7422. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उन्होंने कहा हमसे अबुज़्ज़िनाद ने बयान किया, उनसे अअ़रज ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, अल्लाह तआ़ला ने जब मख़्लूक़ पैदा की तो अ़र्श के ऊपर अपने पास लिख दिया कि मेरी रहमत मेरे ग़ुस्से से बढ़कर है।

٧٤٢٢- حَدَّثَنَا أَبُوالْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، حَدَّثَنَا أَبُوالزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((إِنَّ اللهَ لَمَّا قَضَى الْخَلْقَ كَتَبَ عِنْدَهُ فَوْقَ عَرْشِهِ، إِنَّ رَحْمَتِي سَبَقَتْ عَلَى غَضَبِي)).

अ़र्श एक मख़्लूक़ है जिसका वजूद क़दीम है।

7423. हमसे इब्राहीम बिन मुंज़िर ने बयान किया, उन्होंने कहा मुझसे मुहम्मद बिन फ़ुलैह ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझसे मेरे वालिद ने बयान किया, उन्होंने कहा मुझसे हिलाल ने बयान किया, उनसे अ़ता बिन यसार ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जो अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाया, नमाज़ क़ायम की, रमज़ान के रोज़े रखे तो अल्लाह पर हक़ है कि उस जन्नत में दाख़िल करे। ख़्वाह उसने हिजरत की हो या वहीं मुक़ीम रहा हो जहाँ उसकी पैदाइश हुई थी। सहाबा ने कहा या रसूलल्लाह (ﷺ)! क्या हम उसकी ख़बर लोगों को न दें? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि जन्नत में सौ दर्जे हैं जिन्हें अल्लाह तआ़ला ने अपने रास्ते में जिहाद करने वालों के लिये तैयार किया है, दोनों दर्जों के बीच इतना फ़ासला है जितना आसमान और ज़मीन के बीच है। पस जब तुम अल्लाह से सवाल करो तो फ़िरदौस का सवाल करो क्योंकि वो दरम्याना दर्जे की जन्नत है और बुलंद तरीन और उसके ऊपर रहमान का अ़र्श है और उसी से जन्नत की नहरें निकलती हैं। (राजेअ : 2790)

٧٤٢٣- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ الْمُنْذِرِ، حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ فُلَيْحٍ قَالَ: حَدَّثَنِي أَبِي حَدَّثَنِي هِلاَلٌ، عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((مَنْ آمَنَ بِاللهِ وَرَسُولِهِ وَأَقَامَ الصَّلاَةَ وَصَامَ رَمَضَانَ، كَانَ حَقًّا عَلَى اللهِ أَنْ يُدْخِلَهُ الْجَنَّةَ، هَاجَرَ فِي سَبِيلِ اللهِ أَوْ جَلَسَ فِي أَرْضِهِ الَّتِي وُلِدَ فِيهَا)) قَالُوا: يَا رَسُولَ اللهِ أَفَلاَ نُنَبِّئُ النَّاسَ بِذَلِكَ؟ قَالَ: ((إِنَّ فِي الْجَنَّةِ مِائَةَ دَرَجَةٍ أَعَدَّهَا اللهُ لِلْمُجَاهِدِينَ فِي سَبِيلِهِ، كُلُّ دَرَجَتَيْنِ مَا بَيْنَهُمَا كَمَا بَيْنَ السَّمَاءِ وَالأَرْضِ، فَإِذَا سَأَلْتُمُ اللهَ فَسَلُوهُ الْفِرْدَوْسَ، فَإِنَّهُ أَوْسَطُ الْجَنَّةِ وَأَعْلَى الْجَنَّةِ، وَفَوْقَهُ عَرْشُ الرَّحْمَنِ وَمِنْهُ تَفَجَّرُ أَنْهَارُ الْجَنَّةِ)).[راجع: ٢٧٩٠]

जन्नतों को और अ़र्श को उसी तर्तीब से तस्लीम करना आयत **अल्लज़ीन यूमिनून बिल ग़ैबि** का तक़ाज़ा है, **आमन्ना बिमा क़ालल्लाहु व क़ालर्रसूल।**

7424. हमसे यह्या बिन जा'फ़र ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अबू मुआविया ने बयान किया, उनसे आ'मश ने और उनसे इब्राहीम तैमी ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे अबू ज़र्र (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं मस्जिद में दाख़िल हुआ और रसूल (ﷺ) बैठे हुए थे, फिर जब सूरज ग़ुरूब हुआ तो आपने फ़र्माया ऐ अबू ज़र्र! क्या तुम्हें मा'लूम है ये कहाँ जाता है? बयान किया कि मैंने अ़र्ज़ किया अल्लाह और उसके रसूल ज़्यादा जानने वाले हैं। फ़र्माया कि ये जाता है और सज्दा की इजाज़त चाहता है फिर उसे इजाज़त दी जाती है और गोया उससे कहा जाता है कि वापस वहाँ जाओ जहाँ से आए हो। चुनाँचे वो मग़रिब की त़रफ़ से तुलूअ़ होता है, फिर आपने ये आयत पढ़ी ज़ालिक मुस्तक़र्रूल्लहा अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) की क़िरात यूँ ही है। (राजेअ़ : 3199)

٧٤٢٤- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ جَعْفَرٍ، حَدَّثَنَا أَبُومُعَاوِيَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ هُوَ التَّيْمِيُّ عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي ذَرٍّ قَالَ: دَخَلْتُ الْمَسْجِدَ وَرَسُولُ اللهِ ﷺ جَالِسٌ، فَلَمَّا غَرَبَتِ الشَّمْسُ قَالَ: ((يَا أَبَا ذَرٍّ هَلْ تَدْرِي أَيْنَ تَذْهَبُ هَذِهِ؟)) قَالَ: قُلْتُ اللهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ قَالَ : فَإِنَّهَا تَذْهَبُ تَسْتَأْذِنُ فِي السُّجُودِ فَيُؤْذَنُ لَهَا وَكَأَنَّهَا قَدْ قِيلَ لَهَا ارْجِعِي مِنْ حَيْثُ جِئْتِ فَتَطْلُعُ مِنْ مَغْرِبِهَا ثُمَّ قَرَأَ: ﴿ذَلِكَ مُسْتَقَرٌّ لَهَا﴾ فِي قِرَاءَةِ عَبْدِ اللهِ. [راجع: ٣١٩٩]

तश्रीह : ये ह़दीष़ ऊपर गुज़र चुकी है। इस ह़दीष़ से ये निकलता है कि सूरज ह़रकत करता है और ज़मीन साकिन है जैसे अगले फ़लासफ़ा (पूर्व दार्शनिकों) का क़ौल था और मुम्किन है कि ह़रकत से ये मुराद हो कि ज़ाहिर में सूरज ह़रकत करता हुआ मा'लूम होता है मगर उस सूरत में लौट जाने का लफ़्ज़ ज़रा ग़ैर चस्पाँ होगा। दूसरा शुब्हा इस ह़दीष़ में ये होता है कि तुलूअ़ और ग़ुरूब सूरज का बए'तिबारे इख़्तिलाफ़ अक़ालीम और बलदान तो हर आन में हो रहा है फिर लाज़िम आता है कि सूरज हर आन में सज्दा कर रहा हो और इजाज़त त़लब कर रहा हो। उसका जवाब ये है कि बेशक हर आन में वो एक मुल्क मे तुलूअ़ दूसरे में ग़ुरूब हो रहा है और हर आन में अल्लाह तआ़ला का सज्दा गुज़ार और त़ालिबे हुक्म है। उसमें कोई इस्तिब्आद नहीं। सज्दे से ये सज्दा थोड़े मुराद है जैसे आदमी सज्दा करता है बल्कि सज्दा क़हरी और ह़ाली या'नी इत़ाअ़त अवामिरे ख़ुदावन्दी। दूसरी रिवायत में है कि वो अ़र्श के तले सज्दा करता है। ये भी बिलकुल स़ह़ीह़ है। मा'लूम हुआ परवरदिगार का अ़र्श भी करवी है और सूरज हर त़रफ़ से उसके तले वाक़ेअ़ है क्यों कि अ़र्श तमाम आ़लम के वस्त़ और तमाम आ़लम को मुह़ीत़ है। अब ये इश्काल रहेगा **फ़इन्नहा तज़्हबु ह़त्ता तस्जुद तह़तल अ़र्श** तह़तुल अ़र्श में ह़त्ता के क्या मा'नी रहेंगे? इसका जवाब ये है कि ह़त्ता यहाँ तअ़लील के लिये है या'नी वो इसलिये चल रहा है कि वो हमेशा अ़र्श के तले सर बसजूद और मुत़ीअ़ अवामिर ख़ुदावन्दी रहे। **नोट :** साइंसदानों और जियोग्राफ़ियादानों के मफ़रूज़े आए रोज़ बदलते रहते हैं हमें इसी चीज़ पर ईमान रखना चाहिये कि सूरज ह़रकत करता है और सज्दा भी, कैफ़ियत अल्लाह तआ़ला बेहतर जानता है। (मह़मूदुल ह़सन असद)

7425. हमसे मूसा बिन इब्राहीम ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इब्राहीम ने, उन्होंने कहा हमसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उनसे उ़बैद बिन सिबाक़ ने बयान किया और उनसे ज़ैद बिन ष़ाबित (रज़ि.) ने बयान किया। और लैष़ ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुर्रह़मान बिन ख़ालिद ने बयान किया, उनसे

٧٤٢٥- حَدَّثَنَا مُوسَى عَنْ إِبْرَاهِيمَ، حَدَّثَنَا ابْنُ شِهَابٍ، عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ السَّبَّاقِ أَنَّ زَيْدَ بْنَ ثَابِتٍ وَقَالَ اللَّيْثُ: حَدَّثَنِي عَبْدُ الرَّحْمَنِ بْنُ خَالِدٍ. عَنِ ابْنِ

شِهَابٍ، عَنِ ابْنِ السَّبَّاقِ أَنَّ زَيْدَ بْنَ ثَابِتٍ حَدَّثَهُ قَالَ: أَرْسَلَ إِلَيَّ أَبُو بَكْرٍ فَتَتَبَّعْتُ الْقُرْآنَ، حَتَّى وَجَدْتُ آخِرَ سُورَةِ التَّوْبَةِ مَعَ أَبِي خُزَيْمَةَ الأَنْصَارِيِّ لَمْ أَجِدْهَا مَعَ أَحَدٍ غَيْرِهِ ﴿لَقَدْ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مِنْ أَنْفُسِكُمْ﴾ حَتَّى خَاتِمَةِ بَرَاءَةَ. حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ يُونُسَ بِهَذَا وَقَالَ مَعَ أَبِي خُزَيْمَةَ الأَنْصَارِيِّ. [راجع: ٢٨٠٧]

इब्ने शिहाब ने, उनसे इब्ने इस्हाक़ ने और उनसे ज़ैद बिन ष़ाबित (रज़ि.) ने बयान किया कि अबूबक्र (रज़ि.) ने मुझे बुला भेजा, फिर मैंने क़ुर्आन की तलाश की और सूरह तौबा की आख़िरी आयत अबू ख़ुज़ैमा अंस़ारी (रज़ि.) के पास पाई। ये आयात मुझे किसी और के पास नहीं मिली थीं। लक़द जाअकुम रसूलुम मिन अन्फ़ुसिकुम सूरह बरात के आख़िर तक। हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, उनसे लैष़ ने बयान किया, और उनसे यूनुस ने यही बयान किया और बयान किया कि अबू ख़ुज़ैमा अंस़ारी (रज़ि.) के पास सूरह तौबा की आख़िरी आयत पाई। (राजेअ : 2807)

बाब की मुनासबत इस आयत मे अ़र्श का ज़िक्र है।

٧٤٢٦- حَدَّثَنَا مُعَلَّى بْنُ أَسَدٍ، حَدَّثَنَا وُهَيْبٌ، عَنْ سَعِيدٍ عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَبِي الْعَالِيَةِ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَقُولُ عِنْدَ الْكَرْبِ: ((لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ الْعَلِيمُ الْحَلِيمُ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ، لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ رَبُّ السَّمَاوَاتِ وَرَبُّ الأَرْضِ وَرَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيمِ)). [راجع: ٦٣٤٥]

7426. हमसे मुअ़ल्ला बिन असद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे वुहैब ने बयान किया, उनसे सईद ने बयान किया, उनसे क़तादा ने बयान किया, उनसे अबुल आ़लिया ने और उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) परेशानी के वक़्त ये दुआ़ करते थे, अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं जो अ़र्शे अ़ज़ीम का रब है। अल्लाह के सिवा कोई रब नहीं जो आसमानों का रब है, ज़मीन का रब है और अ़र्शे करीम का रब है। (राजेअ : 6345)

अ़र्शे अ़ज़ीम एक ष़ाबितशुदा ह़क़ीक़त है। अल्लाह जाने तावील करने वालों ने इस पर क्यूँ ग़ौर नहीं किया।

٧٤٢٧- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ عَمْرِو بْنِ يَحْيَى عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((يَصْعَقُونَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ، فَإِذَا أَنَا بِمُوسَى آخِذٌ بِقَائِمَةٍ مِنْ قَوَائِمِ الْعَرْشِ)). [راجع: ٢٤١٢]

7427. हमसे मुहम्मद बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे अ़म्र बिन यह्या ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, क़यामत के दिन सब लोग बेहोश कर दिये जाएँगे फिर मैं सबसे पहले होश में आकर मूसा (अ़लैहि.) को देखूँगा कि वो अ़र्श का एक पाया पकड़े खड़े होंगे। (राजेअ : 2412)

٧٤٢٨- وَقَالَ الْمَاجِشُونُ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ الْفَضْلِ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ

7428. और माजिशून ने अ़ब्दुल्लाह बिन फ़ज़ल से रिवायत की, उनसे अबू सलमा ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि

عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((فَأَكُونُ أَوَّلَ مَنْ بُعِثَ، فَإِذَا مُوسَى آخِذٌ بِالْعَرْشِ)). [راجع: ٢٤١١]

नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, फिर मैं सबसे पहले उठने वाला होऊँगा और देखूँगा कि मूसा (अलैहि.) अर्श का पाया थामे हुए हैं। (राजेअ : 2411)

बाब से ये मुनासबत है कि इसमें अर्श का ज़िक्र है। अर्श की तावील करने वाले तरीक़े सलफ़ के ख़िलाफ़ बोलते हैं। ग़फ़रल्लाहु लहुम। (आमीन)

٢٣- باب قَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿تَعْرُجُ الْمَلاَئِكَةُ وَالرُّوحُ إِلَيْهِ﴾ وَقَوْلِهِ جَلَّ ذِكْرُهُ: ﴿إِلَيْهِ يَصْعَدُ الْكَلِمُ الطَّيِّبُ﴾

बाब 23 : सूरह मआरिज में अल्लाह तआला का फ़र्मान, फ़रिश्ते और रूहुल कुदुस उसकी तरफ़ चढ़ते हैं।

وَقَالَ أَبُوجَمْرَةَ: عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ بَلَغَ أَبَا ذَرٍّ مَبْعَثُ النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ لأَخِيهِ: اعْلَمْ لِي عِلْمَ هَذَا الرَّجُلِ الَّذِي يَزْعُمُ أَنَّهُ يَأْتِيهِ الْخَبَرُ مِنَ السَّمَاءِ. وَقَالَ مُجَاهِدٌ: الْعَمَلُ الصَّالِحُ يَرْفَعُ الْكَلِمَ الطَّيِّبَ. يُقَالُ ذِي الْمَعَارِجِ : الْمَلاَئِكَةُ تَعْرُجُ إِلَى اللهِ.

और अल्लाह जल्ला ज़िक्रुहू का सूरह फ़ातिर में फ़र्मान कि, उसकी तरफ़ पाकीज़ा कलिमे चढ़ते हैं, और अबू जमरह ने बयान किया, उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कि अबू ज़र्र (रज़ि.) को जब नबी करीम (ﷺ) के बिअ़षत की ख़बर मिली तो उन्होंने अपने भाई से कहा कि मुझे उस शख़्स की ख़बर लाकर दो जो कहता है कि उसके पास आसमान से वह्य आती है। और मुजाहिद ने कहा नेक अमल या पाकीज़ा कलिमे को उठा लेता है। (अल्लाह तक पहुँचा देता है) ज़िल मआरिज से मुराद फ़रिश्ते हैं जो आसमान की तरफ़ चढ़ते हैं।

तश्रीह : इस बाब में इमाम बुख़ारी (रह़.) ने अल्लाह जल्ले जलालुहू के बलन्दी व फ़ौक़ियत के इष्बात के दलाइल बयान किये हैं। अहले ह़दीष़ का इस पर इत्तिफ़ाक़ है कि अल्लाह तआला जिहते फ़ौक़ में है और अल्लाह को ऊपर समझना ये इंसान की फ़ित्रत में दाख़िल है। जाहिल से जाहिल शख़्स जब मुसीबत के वक़्त फ़रियाद करता है तो चेहरा ऊपर उठाकर फ़रियाद करता है मगर जहमिया और उनके इत्तिबाअ ने बरख़िलाफ़ शरीअत व बरख़िलाफ़ फ़ितरते इंसानी फ़ौक़ियते रह़मानी का इंकार किया है। चुनाँचे मन्क़ूल है कि जहम नमाज़ में भी बजाय **सुब्हान रब्बियल आला** के सुब्हान रब्बियल अस्फ़ल कहा करता। (ला'नतुल्लाह अलैहि)

٧٤٢٩- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، حَدَّثَنِي مَالِكٌ، عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((يَتَعَاقَبُونَ فِيكُمْ مَلاَئِكَةٌ بِاللَّيْلِ، وَمَلاَئِكَةٌ بِالنَّهَارِ، وَيَجْتَمِعُونَ فِي صَلاَةِ الْعَصْرِ وَصَلاَةِ الْفَجْرِ، ثُمَّ يَعْرُجُ الَّذِينَ بَاتُوا فِيكُمْ فَيَسْأَلُهُمْ وَهُوَ أَعْلَمُ بِهِمْ فَيَقُولُ كَيْفَ تَرَكْتُمْ عِبَادِي؟ فَيَقُولُونَ: تَرَكْنَاهُمْ وَهُمْ يُصَلُّونَ وَأَتَيْنَاهُمْ وَهُمْ يُصَلُّونَ)). [راجع: ٥٥٥]

7429. हमसे इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे अबुज़्ज़िनाद ने, उनसे अअरज ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया एक के बाद एक तुम्हारे पास रात और दिन के फ़रिश्ते आते रहते हैं और ये अस्र और फ़ज्र की नमाज़ में जमा होते हैं, फिर वो ऊपर चढ़ते हैं। जिन्होंने रात तुम्हारे साथ गुज़ारी होती है। फिर अल्लाह तुम्हारे बारे में उनसे पूछता है ह़ालाँकि उसे तुम्हारी ख़ूब ख़बर है। पूछता है कि मेरे बन्दों को तुमने किस ह़ाल में छोड़ा? वो कहते हैं कि हमने इस ह़ाल में छोड़ा कि वो नमाज़ पढ़ रहे थे। (राजेअ : 555)

7430. और ख़ालिद बिन मुख़्लद ने बयान किया, उनसे सुलैमान ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन दीनार ने बयान किया, उनसे अबू स़ालेह़ ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया जिसने ह़लाल कमाई से एक खजूर के बराबर भी ख़ैरात की और अल्लाह तक ह़लाल कमाई ही की ख़ैरात पहुँचती है, तो अल्लाह उसे अपने दाएँ हाथ से क़ुबूल कर लेता है और ख़ैरात करने वाले के लिये उसे इस त़रह़ बढ़ाता रहता है जैसे कोई तुममें से अपने बछेरे की परवरिश करता है, यहाँ तक कि वो पहाड़ बराबर हो जाती है। और वरक़ा ने इस ह़दीष़ को अ़ब्दुल्लाह बिन दीनार से रिवायत किया, उन्हों ने सईद बिन यसार से, उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से और उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से, उसमें भी ये फ़िक़्रा है कि अल्लाह की त़रफ़ वही ख़ैरात चढ़ती है जो ह़लाल कमाई में से हो। (राजेअ़ : 1410)

٧٤٣٠- وَقَالَ خَالِدُ بْنُ مَخْلَدٍ، حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ حَدَّثَنِي عَبْدُ اللهِ بْنُ دِينَارٍ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((مَنْ تَصَدَّقَ بِعَدْلِ تَمْرَةٍ مِنْ كَسْبٍ طَيِّبٍ وَلاَ يَصْعَدُ إِلَى اللهِ إِلاَّ الطَّيِّبُ، فَإِنَّ اللهَ يَتَقَبَّلُهَا بِيَمِينِهِ، ثُمَّ يُرَبِّيهَا لِصَاحِبِهِ كَمَا يُرَبِّي أَحَدُكُمْ فَلُوَّهُ، حَتَّى تَكُونَ مِثْلَ الْجَبَلِ)). وَرَوَاهُ وَرْقَاءُ عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ دِينَارٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ يَسَارٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ: ((وَلاَ يَصْعَدُ إِلَى اللهِ إِلاَّ الطَّيِّبُ)).

[راجع: ١٤١٠]

इसको इमाम बैहक़ी ने वस़्ल किया है। इमाम बुख़ारी (रह़.) की ग़र्ज़ इस सनद के लाने से ये है कि वरक़ा और सुलैमान दोनों की रिवायत में इतना इख़्तिलाफ़ है कि वरक़ा अपना शैख़ुश शैख़ सईद बिन यसार को बयान करता है और सुलैमान अबू स़ालेह़ को, बाक़ी बस बातों में इत्तिफ़ाक़ है कि अल्लाह की त़रफ़ पाक चीज़ ही जाती है। अल्लाह के लिये दाएँ हाथ का इष़्बात भी है।

7431. हमसे अ़ब्दुल आ़ला बिन ह़म्माद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे यज़ीद बिन ज़ुरैअ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सईद ने बयान किया, उनसे क़तादा ने, उनसे अबुल आ़लिया ने और उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ये दुआ़ परेशानी के वक़्त करते थे, कोई मा'बूद अल्लाह के सिवा नहीं जो अ़ज़ीम है और बुर्दबार है। कोई मा'बूद अल्लाह के सिवा नहीं जो अ़र्शे अ़ज़ीम का रब है। कोई मा'बूद अल्लाह के सिवा नहीं जो आसमानों का रब है और अ़र्शे करीम का रब है। (राजेअ़ : 6345)

٧٤٣١- حَدَّثَنَا عَبْدُ الأَعْلَى بْنُ حَمَّادٍ، حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ، حَدَّثَنَا سَعِيدٌ، عَنْ قَتَادَةَ عَنْ أَبِي الْعَالِيَةِ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ أَنَّ نَبِيَّ اللهِ ﷺ كَانَ يَدْعُو بِهِنَّ عِنْدَ الْكَرْبِ: ((لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ الْعَظِيمُ الْحَلِيمُ، لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ، لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ رَبُّ السَّمَاوَاتِ وَرَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيمِ)).

[راجع: ٦٣٤٥]

इसमे अ़र्शे अ़ज़ीम का ज़िक्र है बाब से यही मुनासबत है।

7432. हमसे क़बीस़ा ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने बयान किया, उनसे इब्ने अबी नुअ़मि या अबू नुअ़मि ने.... क़बीस़ा को शक था.... और उनसे अबू सईद (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी

٧٤٣٢- حَدَّثَنَا قَبِيصَةُ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ أَبِيهِ، عَنِ ابْنِ أَبِي نُعْمٍ، أَوْ أَبِي نُعْمٍ شَكَّ قَبِيصَةُ عَنْ أَبِي سَعِيدٍ قَالَ: بُعِثَ إِلَى

النَّبِيِّ ﷺ بِذُهَيْبَةٍ فَقَسَمَهَا بَيْنَ أَرْبَعَةٍ.
وَحَدَّثَنِي إِسْحَاقُ بْنُ نَصْرٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا سُفْيَانُ عَنْ أَبِيهِ، عَنِ ابْنِ أَبِي نُعْمٍ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ قَالَ: بَعَثَ عَلِيٌّ وَهُوَ بِالْيَمَنِ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ بِذُهَيْبَةٍ فِي تُرْبَتِهَا، فَقَسَمَهَا بَيْنَ الأَقْرَعِ بْنِ حَابِسٍ الْحَنْظَلِيِّ ثُمَّ أَحَدِ بَنِي مُجَاشِعٍ وَبَيْنَ عُيَيْنَةَ بْنِ بَدْرٍ الْفَزَارِيِّ، وَبَيْنَ عَلْقَمَةَ بْنِ عُلاَثَةَ الْعَامِرِيِّ ثُمَّ أَحَدِ بَنِي كِلاَبٍ وَبَيْنَ زَيْدِ الْخَيْلِ الطَّائِيِّ، ثُمَّ أَحَدِ بَنِي نَبْهَانَ فَتَغَضَّبَتْ قُرَيْشٌ وَالأَنْصَارُ فَقَالُوا: يُعْطِيهِ صَنَادِيدَ أَهْلِ نَجْدٍ وَيَدَعُنَا قَالَ: إِنَّمَا أَتَأَلَّفُهُمْ فَأَقْبَلَ رَجُلٌ غَائِرُ الْعَيْنَيْنِ، نَاتِئُ الْجَبِينِ، كَثُّ اللِّحْيَةِ، مُشْرِفُ الْوَجْنَتَيْنِ، مَحْلُوقُ الرَّأْسِ، فَقَالَ: يَا مُحَمَّدُ اتَّقِ اللَّهَ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((فَمَنْ يُطِيعُ اللَّهَ إِذَا عَصَيْتُهُ فَيَأْمَنِّي عَلَى أَهْلِ الأَرْضِ وَلاَ تَأْمَنُونِي)) فَسَأَلَ رَجُلٌ مِنَ الْقَوْمِ قَتْلَهُ أُرَاهُ خَالِدَ بْنَ الْوَلِيدِ فَمَنَعَهُ النَّبِيُّ ﷺ فَلَمَّا وَلَّى قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِنَّ مِنْ ضِنْضِيءِ هَذَا قَوْمًا يَقْرَؤُونَ الْقُرْآنَ لاَ يُجَاوِزُ حَنَاجِرَهُمْ، يَمْرُقُونَ مِنَ الإِسْلاَمِ مُرُوقَ السَّهْمِ مِنَ الرَّمِيَّةِ، يَقْتُلُونَ أَهْلَ الإِسْلاَمِ وَيَدَعُونَ أَهْلَ الأَوْثَانِ لَئِنْ أَدْرَكْتُهُمْ لأَقْتُلَنَّهُمْ قَتْلَ عَادٍ)).[راجع: ٣٣٤٤]

करीम (ﷺ) के पास कुछ सोना भेजा गया तो आपने उसे चार आदमियों में बांट दिया। और मुझसे इस्हाक़ बिन नस्र ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने बयान किया, उन्हें सुफ़यान ने ख़बर दी, उन्हें उनके वालिद ने, उन्हें इब्ने अबी नुअ़मि ने और उनसे अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने बयान किया कि अ़ली (रज़ि.) ने यमन से कुछ सोना आँहज़रत (ﷺ) की ख़िदमत में भेजा तो आँहज़रत (ﷺ) ने उसे अक़्रअ़ बिन हाबिस हंज़ली, उ़ययना बिन बद्र फ़ुज़ारी, अ़ल्क़मा बिन अ़लाषा आ़मिरी और ज़ैद ख़ैल ताई में तक़्सीम कर दिया। इस पर क़ुरैश और अंसार को ग़ुस्सा आ गया और उन्होंने कहा कि आँहज़रत (ﷺ) नजद के रईसों को तो देते हैं और हमें छोड़ देते हैं। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैं एक मस्लिहत के लिये उनका दिल बहलाता हूँ। फिर एक शख़्स जिसकी आँखें धंसी हुई थीं, पेशानी उभरी हुई थी, दाढ़ी घनी थी, दोनों कुल्ले फुले हुए थे और सर गठा हुआ था उस मरदूद ने कहा ऐ मुहम्मद! अल्लाह से डर। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अगर मैं भी उसकी नाफ़र्मानी करूँगा तो फिर कौन उसकी इताअ़त करेगा? उसने मुझे ज़मीन पर अमीन बनाया है और तुम मुझे अमीन नहीं समझते। फिर हाज़िरीन में से एक सहाबी हज़रत ख़ालिद (रज़ि.) या हज़रत उ़मर (रज़ि.) ने उसके क़त्ल की इजाज़त मांगी तो आँहज़रत (ﷺ) ने मना कर दिया। फिर जब वो जाने लगा तो आपने फ़र्माया कि उस शख़्स की नस्ल से ऐसे लोग पैदा होंगे जो क़ुर्आन के सिर्फ़ लफ़्ज़ पढ़ेंगे लेकिन क़ुर्आन उनके हलक़ के नीचे नहीं उतरेगा, वो इस्लाम से इस तरह निकालकर फेंक दिये जाएँगे जिस तरह तीर शिकारी जानवर में से पार निकल जाता है, वो अहले इस्लाम को (काफ़िर कहकर) क़त्ल करेंगे और बुतपरस्तों को छोड़ देंगे, अगर मैंने उनका दौर पाया तो उन्हें क़ौमे आ़द की तरह नेस्तनाबूद कर दूँगा। (राजेअ़ : 3344)

तश्रीह : इस बाब में इमाम बुख़ारी (रह.) इस हदीष़ को इसलिये लाए कि इसके दूसरे तरीक़ (किताबुल मग़ाज़ी) में यूँ है कि मैं उस पाक परवरदिगार का अमीन हूँ जो आसमानों में या'नी अ़र्शे अ़ज़ीम पर है। हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने अपनी आ़दत के मुवाफ़िक़ उस तरीक़ की तरफ़ इशारा किया है।

7433. हमसे अय्याश बिन वलीद ने बयान किया, कहा हमसे वकीअ ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे इब्राहीम तैमी ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे अबू ज़र्र (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं ने नबी करीम (ﷺ) से आयत, वश्शम्सु तज्री लिमुस्तक़र्रिल्लहा के बारे में पूछा तो आपने फ़र्माया कि उसका मुस्तक़र्र अ़र्श के नीचे है।

(राजेअ: 3199)

٧٤٣٣- حَدَّثَنَا عَيَّاشُ بْنُ الْوَلِيدِ، حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ التَّيْمِيِّ عَنْ أَبِيهِ عَنْ أَبِي ذَرٍّ قَالَ: سَأَلْتُ النَّبِيَّ ﷺ عَنْ قَوْلِهِ ﴿وَالشَّمْسُ تَجْرِي لِمُسْتَقَرٍّ لَهَا﴾ قَالَ مُسْتَقَرُّهَا تَحْتَ الْعَرْشِ.

[راجع: ٣١٩٩]

तश्रीह: बाब की सब अहादीष़ से इमाम बुख़ारी (रह़.) ने उ़लू और फ़ौक़ियते बारी तआला ष़ाबित की और उसके लिये जिहत फ़ौक़ ष़ाबित की जैसे अहले ह़दीष़ का मज़हब है और इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) की रिवायत में जो रब्बुल अ़र्श है उससे भी यही मतलब निकाला क्योंकि अ़र्श तमाम अज्साम के ऊपर है और रब्बुल अ़र्श के ऊपर होगा और तअ़ज्जुब है इब्ने मुनीर से कि उन्होंने इमाम बुख़ारी (रह़.) के मशरब के ख़िलाफ़ ये कहा कि इस बाब से इब्ताले जिहत मक़्सूद है। अगर इमाम बुख़ारी (रह़.) की ये ग़र्ज़ होती तो वो स़ऊद और उ़रूज की आयतें और उ़लू की अहादीष़ इस बाब में क्यूँ लाए मा'लूम नहीं कि फ़लासफ़ा के चूज़ों का अष़र इब्ने मुनीर और इब्ने ह़जर और ऐसे उ़लमा ह़दीष़ पर क्यूँकर पड़ गया जो इष़्बात जिहत की दलीलों से उल्टा मतलब समझते हैं या'नी इब्ताल जिहत, **इन्न हाज़ा लशैउन उ़जाब।**

बाब 24 : सूरह क़यामत में अल्लाह तआला का इर्शाद, उस दिन कुछ चेहरे तरोताज़ा होंगे, वो अपने रब को देखने वाले होंगे, या देख रहे होंगे

٢٤- باب قَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿وُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ نَاضِرَةٌ إِلَى رَبِّهَا نَاظِرَةٌ﴾

इस बाब मे इमाम बुख़ारी (रह़.) ने दीदारे इलाही का इष़्बात किया जिसका जहमिया और मुअतज़िला और रवाफ़िज़ ने इंकार किया।

7434. हमसे अ़म्र बिन औ़न ने बयान किया, कहा हमसे ख़ालिद और हशीम ने बयान किया, उनसे इस्माईल ने, उनसे क़ैस ने और उनसे जरीर (रज़ि.) ने कि हम नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में बैठे थे कि आपने चाँद की त़रफ़ देखा। चौदहवीं रात का चाँद था और फ़र्माया कि तुम लोग अपने रब को इसी त़रह़ देखोगे जिस त़रह़ इस चाँद को देख रहे हो और उसके देखने में कोई धक्का पैल नहीं होगी। पस अगर तुम्हें इसकी त़ाक़त हो कि सूरज तुलूअ होने के पहले और सूरज ग़ुरूब होने के पहले की नमाज़ों में सुस्ती न हो तो ऐसा कर लो।

(राजेअ: 554)

٧٤٣٤- حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عَوْنٍ حَدَّثَنَا خَالِدٌ، وَهُشَيْمٌ عَنْ إِسْمَاعِيلَ، عَنْ قَيْسٍ، عَنْ جَرِيرٍ قَالَ كُنَّا جُلُوسًا عِنْدَ النَّبِيِّ ﷺ إِذْ نَظَرَ إِلَى الْقَمَرِ لَيْلَةَ الْبَدْرِ قَالَ: ((إِنَّكُمْ سَتَرَوْنَ رَبَّكُمْ كَمَا تَرَوْنَ هَذَا الْقَمَرَ لاَ تُضَامُونَ فِي رُؤْيَتِهِ، فَإِنِ اسْتَطَعْتُمْ أَنْ لاَ تُغْلَبُوا عَلَى صَلاَةٍ قَبْلَ طُلُوعِ الشَّمْسِ وَصَلاَةٍ قَبْلَ غُرُوبِ الشَّمْسِ فَافْعَلُوا)).

[راجع: ٥٥٤]

तश्रीह: ये तश्बीह रुइयत की है साथ रुइयत के जैसे चाँद की रुइयत हर शख़्स़ को बेवक़्त और बिला तकलीफ़ के मयस्सर होती है उसी त़रह़ आख़िरत में परवरदिगार का दीदार भी मोमिन को बेवक़्त और बिला तकलीफ़

ह़ासिल होगा। अब क़स्तलानी (रह़.) ने जो स़अलूखी से नक़ल किया कि उसकी रुइयत बिला जिहत होगी तमाम जिहात में क्योंकि वो जिहत से पाक है। ये अ़जीब कलाम है जिस पर कोई दलील नहीं है और मंशा उन ख़्यालात का वही तक़्लीद है फ़लासफ़ा और पिछले मुतकल्लिमीन की। अल्लाह तआला ने या उसके रसूल ने कहाँ फ़र्माया है कि वो तआला शाना जिहत या जिस्मियत से पाक और मुनज़्ज़ह है। ये दिल की तराशी हुई बातें हैं।

7435. हमसे यूसुफ़ बिन मूसा ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे आ़स़िम बिन यूसुफ़ यरबूई ने बयान किया, उनसे अबू शिहाब ने बयान किया, उनसे इस्माईल बिन अबी ख़ालिद ने बयान किया, उनसे क़ैस बिन अबी ह़ाज़िम ने बयान किया और उनसे जरीर बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुम अपने रब को स़ाफ़ स़ाफ़ देखोगे। (राजेअ़ : 554)

٧٤٣٥- حَدَّثَنَا يُوسُفُ بْنُ مُوسَى، حَدَّثَنَا عَاصِمُ بْنُ يُوسُفَ الْيَرْبُوعِيُّ، حَدَّثَنَا أَبُوشِهَابٍ، عَنْ إِسْمَاعِيلَ بْنِ أَبِي خَالِدٍ، عَنْ قَيْسِ بْنِ أَبِي حَازِمٍ، عَنْ جَرِيرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِنَّكُمْ سَتَرَوْنَ رَبَّكُمْ عِيَانًا)). [راجع: ٥٥٤]

ष़ाबित हुआ कि क़यामत के दिन दीदार ह़क़ तआ़ला बरह़क़ है।

7436. हमसे अ़ब्दह बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, कहा हमसे ह़ुसैन जुअ़फ़ी ने बयान किया, उनसे ज़ाइदा ने, उनसे बयान बिन बिश्र ने, उनसे क़ैस बिन अबी ह़ाज़िम ने और उनसे जरीर (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूले करीम (ﷺ) चौदह्वीं रात को हमारे पास तशरीफ़ लाए और फ़र्माया कि तुम अपने रब को क़यामत के दिन इस त़रह देखोगे जिस त़रह इस चाँद को देख रहे हो। उसके देखने मे कोई मुज़ाह़िमत नहीं होगी। खुल्लम खुल्ला देखोगे। बेतकल्लुफ़, बेमुशक़्क़त, बेज़हमत। (राजेअ़ : 554)

٧٤٣٦-حَدَّثَنَا عَبْدَةُ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا حُسَيْنٌ الْجُعْفِيُّ، عَنْ زَائِدَةَ حَدَّثَنَا بَيَانُ بْنُ بِشْرٍ، عَنْ قَيْسِ بْنِ أَبِي حَازِمٍ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ قَالَ: خَرَجَ عَلَيْنَا رَسُولُ اللهِ ﷺ لَيْلَةَ الْبَدْرِ فَقَالَ: ((إِنَّكُمْ سَتَرَوْنَ رَبَّكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ كَمَا تَرَوْنَ هَذَا، لاَ تُضَامُّونَ فِي رُؤْيَتِهِ)). [راجع: ٥٥٤]

तशरीह : क़यामत के दिन दीदारे बारी तआ़ला ह़क़ है जो हर मोमिन मुसलमान को बिला दिक़्क558त होगा जैसे चौदह्वीं रात का चाँद सबको स़ाफ़ नज़र आता है। **अल्लाहुम्मर्ज़ुक़्ना आमीन**

7437. हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अ़ब्दुल्लाह उवैसी ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, उनसे अ़त़ा बिन यज़ीद लैष़ी ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि लोगों ने पूछा या रसूलल्लाह (ﷺ)! क्या हम क़यामत के दिन अपने रब को देखेंगे? आँह़ज़रत (ﷺ) ने पूछा, क्या चौदह्वीं रात का चाँद देखने में कोई दुश्वारी होती है? लोगों ने अ़र्ज़ किया नहीं या रसूलल्लाह (ﷺ)! फिर आपने पूछा क्या जब बादल न हों तो तुम्हें सूरज को देखने में कोई दुश्वारी होती है? लोगों ने कहा नहीं या रसूलल्लाह! आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि फिर तुम इसी त़रह

٧٤٣٧- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَزِيدَ اللَّيْثِيِّ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ النَّاسَ قَالُوا: يَا رَسُولَ اللهِ هَلْ نَرَى رَبَّنَا يَوْمَ الْقِيَامَةِ؟ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((هَلْ تُضَارُّونَ فِي الْقَمَرِ لَيْلَةَ الْبَدْرِ؟)) قَالُوا: لاَ يَا رَسُولَ اللهِ قَالَ: ((فَهَلْ تُضَارُّونَ فِي الشَّمْسِ

لَيْسَ دُونَهَا سَحَابٌ؟)) قَالُوا: لاَ، يَا رَسُولَ اللهِ قَالَ: ((فَإِنَّكُمْ تَرَوْنَهُ كَذَلِكَ، يَجْمَعُ اللهُ النَّاسَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَيَقُولُ: مَنْ كَانَ يَعْبُدُ شَيْئًا فَلْيَتَّبِعْهُ، فَيَتَّبِعُ مَنْ كَانَ يَعْبُدُ الشَّمْسَ، الشَّمْسَ وَيَتَّبِعُ مَنْ كَانَ يَعْبُدُ الْقَمَرَ، وَيَتَّبِعُ مَنْ كَانَ يَعْبُدُ الطَّوَاغِيتَ الطَّوَاغِيتَ، وَتَبْقَى هَذِهِ الأُمَّةُ فِيهَا شَافِعُوهَا أَوْ مُنَافِقُوهَا)) شَكَّ إِبْرَاهِيمُ ((فَيَأْتِيهِمُ اللهُ فَيَقُولُ : أَنَا رَبُّكُمْ فَيَقُولُونَ: هَذَا مَكَانُنَا حَتَّى يَأْتِيَنَا رَبُّنَا، فَإِذَا جَاءَ رَبُّنَا عَرَفْنَاهُ، فَيَأْتِيهِمُ اللهُ فِي صُورَتِهِ الَّتِي يَعْرِفُونَ فَيَقُولُ: أَنَا رَبُّكُمْ فَيَقُولُونَ: أَنْتَ رَبُّنَا، فَيَتَّبِعُونَهُ وَيُضْرَبُ الصِّرَاطُ بَيْنَ ظَهْرَيْ جَهَنَّمَ، فَأَكُونُ أَنَا وَأُمَّتِي أَوَّلَ مَنْ يُجِيزُهَا، وَلاَ يَتَكَلَّمُ يَوْمَئِذٍ إِلاَّ الرُّسُلُ وَدَعْوَى الرُّسُلِ يَوْمَئِذٍ، اللَّهُمَّ سَلِّمْ سَلِّمْ وَفِي جَهَنَّمَ كَلاَلِيبُ مِثْلُ شَوْكِ السَّعْدَانِ، هَلْ رَأَيْتُمُ السَّعْدَانَ؟)) قَالُوا: نَعَمْ يَا رَسُولَ اللهِ قَالَ: ((فَإِنَّهَا مِثْلُ شَوْكِ السَّعْدَانِ غَيْرَ أَنَّهُ لاَ يَعْلَمُ قَدْرَ عِظَمِهَا إِلاَّ اللهُ، تَخْطَفُ النَّاسَ بِأَعْمَالِهِمْ، فَمِنْهُمُ الْمُوبَقُ بِعَمَلِهِ أَوِ الْمُوثَقُ بِعَمَلِهِ وَمِنْهُمُ الْمُخَرْدَلُ أَوِ الْمُجَازَى أَوْ نَحْوُهُ، ثُمَّ يَتَجَلَّى حَتَّى إِذَا فَرَغَ اللهُ مِنَ الْقَضَاءِ بَيْنَ الْعِبَادِ وَأَرَادَ أَنْ يُخْرِجَ بِرَحْمَتِهِ مَنْ أَرَادَ مِنْ أَهْلِ النَّارِ أَمَرَ الْمَلاَئِكَةَ أَنْ يُخْرِجُوا مِنَ النَّارِ، مَنْ كَانَ لاَ يُشْرِكُ بِاللهِ شَيْئًا

अल्लाह तआला को देखोगे क़यामत के दिन अल्लाह तआला लोगों को जमा करेगा और फ़र्माएगा कि तुममें जो कोई जिस चीज़ की पूजा-पाठ किया करता था वो उसके पीछे लग जाए। चुनाँचे जो सूरज की पूजा करता था वो सूरज के पीछे हो जाएगा, जो चाँद की पूजा करता था वो चाँद के पीछे हो जाएगा और जो बुतों की पूजा करता था वो बुतों के पीछे लग जाएगा (इसी तरह क़ब्रों ता'ज़ियों के पुजारी क़ब्रों ता'ज़ियो के पीछे लग जाएँगे) फिर ये उम्मत बाक़ी रह जाएगी उसमें बड़े दर्जे के शफ़ाअत करने वाले भी होंगे या मुनाफ़िक़ भी होंगे इब्राहीम को उन लफ़्ज़ों में शक था। फिर अल्लाह उनके पास आएगा और फ़र्माएगा कि मैं तुम्हारा रब हूँ। वो जवाब देंगे कि हम यहीं रहेंगे। यहाँ तक कि हमारा रब आ जाए जब हमारा रब आ जाएगा तो हम उसे पहचान लेंगे। चुनाँचे अल्लाह तआला उनके पास उस सूरत में आएगा जिसे वो पहचानते होंगे और फ़र्माएगा कि मैं तुम्हारा रब हूँ, वो इक़रार करेंगे कि तू हमारा रब है। चुनाँचे वो उसके पीछे हो जाएँगे और दोज़ख़ की पीठ पर पुल सिरात नसब कर दिया जाएगा और मैं और मेरी उम्मत सबसे पहले उसको पार करने वाले होंगे और उस दिन सिर्फ़ अम्बिया बात कर सकेंगे और उन अंबिया की ज़ुबान पर ये होगा। ऐ अल्लाह! मुझको महफ़ूज़ रख मुझको महफ़ूज़ रख। और दोज़ख़ में पेड़ सअदान के कांटों की तरह आँकड़े होंगे। क्या तुमने सअदान देखा है? लोगों ने जवाब दिया कि हाँ या रसूलल्लाह (ﷺ)! तो आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि वो सअदान के कांटों ही की तरह होंगे। अल्बत्ता वो इतने बड़े होंगे कि उसका तूल व अर्ज़ अल्लाह के सिवा और किसी को मा'लूम न होगा। वो लोगों को उनके आमाल के बदले मे उचक लेंगे तो उनमे से कुछ वो होंगे जो तबाह होने वाले होंगे और अपने बुरे अमल की वजह से वो दोजख़ में गिर जाएँगे या अपने अमल के साथ बँधे होंगे और उनमे से कुछ टुकड़े कर दिये जाएँगे या बदला दिये जाएँगे या उसी जैसे अल्फ़ाज़ बयान किये। फिर अल्लाह तजल्ली फ़र्माएगा और जब बन्दों के बीच फ़ैसला करके फ़ारिग़ होगा और दोज़ख़ियों में से जिसे अपनी रहमत से बाहर निकालना चाहेगा तो फ़रिश्तों को हुक्म देगा कि जो अल्लाह के साथ किसी को शरीक नहीं ठहराते थे, उन्हें दोज़ख़ से बाहर निकाल लें, ये वो लोग होंगे जिन पर अल्लाह तआला रहम करना चाहेगा

بِمَنْ اَرَادَ اللهُ اَنْ يَرْحَمَهُ مِمَّنْ يَشْهَدُ اَنْ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ فَيَعْرِفُونَهُمْ فِي النَّارِ بِأَثَرِ السُّجُودِ تَأْكُلُ النَّارُ ابْنَ آدَمَ إِلاَّ اَثَرَ السُّجُودِ حَرَّمَ اللهُ عَلَى النَّارِ اَنْ تَأْكُلَ اَثَرَ السُّجُودِ، فَيَخْرُجُونَ مِنَ النَّارِ قَدِ امْتُحِشُوا، فَيُصَبُّ عَلَيْهِمْ مَاءُ الْحَيَاةِ، فَيَنْبُتُونَ تَحْتَهُ كَمَا تَنْبُتُ الْحِبَّةُ فِي حَمِيلِ السَّيْلِ، ثُمَّ يَفْرُغُ اللهُ مِنَ الْقَضَاءِ بَيْنَ الْعِبَادِ وَيَبْقَى رَجُلٌ مُقْبِلٌ بِوَجْهِهِ عَلَى النَّار هُوَ آخِرُ اَهْلِ النَّارُ دُخُولاً الْجَنَّةَ، فَيَقُولُ: اَيْ رَبِّ اصْرِفْ وَجْهِي عَنِ النَّارِ فَإِنَّهُ قَدْ قَشَبَنِي رِيحُهَا وَاَحْرَقَنِي ذَكَاؤُهَا، فَيَدْعُو اللهَ بِمَا شَاءَ اَنْ يَدْعُوَهُ ثُمَّ يَقُولُ اللهُ هَلْ عَسَيْتَ إِنْ أُعْطِيتَ ذَلِكَ اَنْ تَسْأَلَنِي غَيْرَهُ؟ فَيَقُولُ: لاَ وَعِزَّتِكَ لاَ اَسْأَلُكَ غَيْرَهُ، وَيُعْطِي رَبَّهُ مِنْ عُهُودٍ وَمَوَاثِيقَ مَا شَاءَ، فَيَصْرِفُ اللهُ وَجْهَهُ عَنِ النَّارِ فَإِذَا اَقْبَلَ عَلَى الْجَنَّةِ وَرَآهَا سَكَتَ مَا شَاءَ اللهُ اَنْ يَسْكُتَ، ثُمَّ يَقُولُ: اَيْ رَبِّ قَدِّمْنِي إِلَى بَابِ الْجَنَّةِ، فَيَقُولُ اللهُ لَهُ: اَلَسْتَ قَدْ اَعْطَيْتَ عُهُودَكَ وَمَوَاثِيقَكَ اَنْ لاَ تَسْأَلَنِي غَيْرَ الَّذِي أُعْطِيتَ اَبَدًا؟ وَيْلَكَ يَا ابْنَ آدَمَ مَا اَغْدَرَكَ فَيَقُولُ: اَيْ رَبِّ وَيَدْعُو اللهَ حَتَّى يَقُولَ: هَلْ عَسَيْتَ إِنْ أُعْطِيتَ ذَلِكَ اَنْ تَسْأَلَ غَيْرَهُ؟ فَيَقُولُ: لاَ وَعِزَّتِكَ لاَ اَسْأَلُكَ غَيْرَهُ وَيُعْطِي مَا شَاءَ مِنْ عُهُودٍ وَمَوَاثِيقَ فَيُقَدِّمُهُ إِلَى بَابِ الْجَنَّةِ، فَإِذَا قَامَ

उनमें से जिन्होंने कलिमा ला इलाहा इल्लल्लाह का इक़रार किया था। चुनाँचे फ़रिश्ते उन्हें सज्दों के निशान से दोज़ख़ में पहचानेंगे। दोज़ख इब्ने आदम का हर हिस्सा जलाकर ख़ाक कर देगी सिवा सज्दे के निशान के, क्योंकि अल्लाह तआला ने दोज़ख़ पर हराम किया है कि वो सज्दे के निशान को जलाए (या अल्लाह! हम गुनाहगारों को दोज़ख़ से महफ़ूज़ रखियो हमको तेरी रहमत से यही उम्मीद है, आमीन) चुनाँचे ये लोग दोज़ख़ से इस हाल में निकाले जाएँगे कि ये जल भुन चुके होंगे। फिर उन पर आबे हयात डाला जाएगा और ये उसके नीचे से इस तरह उगकर निकलेंगे जिस तरह सैलाब के कूड़े करकट से सब्ज़ा उग आता है। फिर अल्लाह तआला बन्दों के बीच फ़ैसले से फ़ारिग़ होगा। एक शख़्स बाक़ी रह जाएगा जिसका चेहरा दोज़ख़ की तरफ़ होगा, वो उन दोज़ख़ियों मे सबसे आख़िरी इंसान होगा जिसे जन्नत में दाख़िल होना है। वो कहेगा ऐ रब! मेरा चेहरा दोज़ख़ से फेर दे क्योंकि मुझे इसकी गर्म हवा ने परेशान कर रखा है और इसकी तेज़ी ने झुलसा डाला है। फिर अल्लाह तआला से वो उस वक़्त तक दुआ करता रहेगा जब तक अल्लाह चाहेगा। फिर अल्लाह तआला फ़र्माएगा क्या अगर मैं तेरा ये सवाल पूरा कर दूँ तो तू मुझसे कुछ और न मांगेगा? वो कहेगा नहीं, तेरी इ़ज़्ज़त की क़सम! इसके सिवा और कोई चीज़ नहीं मांगूगा और वो शख़्स अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त से बड़े अ़हद व पैमान करेगा। चुनाँचे अल्लाह उसके चेहरे को दोज़ख़ की तरफ़ से फेर देगा। फिर जब वो जन्नत की तरफ़ रुख़ करेगा और उसे देखेगा तो उतनी देर खामोश रहेगा जितनी देर अल्लाह तआला उसे ख़ामोश रखेगा। फिर वो कहेगा ऐ रब! मुझे सिर्फ़ जन्नत के दरवाज़े तक पहुँचा दे। अल्लाह तआला फ़र्माएगा क्या तूने वा'दा नहीं किया था कि जो कुछ मैंने दे दिया है उसके सिवा और कुछ कभी तू नहीं मांगेगा? अफ़सोस! इब्ने आदम तू कितना वा'दा ख़िलाफ़ है। फिर वो कहेगा ऐ रब! और अल्लाह से दुआ करेगा। आख़िर अल्लाह तआला पूछेगा क्या अगर मैंने तेरा ये सवाल पूरा कर दिया तू उसके सिवा कुछ और मांगेगा? वो कहेगा तेरी इ़ज़्ज़त की क़सम! इसके सिवा और कुछ नहीं मांगूगा और जितने अल्लाह चाहेगा वो शख़्स वा'दा करेगा। चुनाँचे उसे जन्नत के दरवाज़े तक पहुँचा देगा। फिर जब

إِلَى بَابِ الْجَنَّةِ انْفَهَقَتْ لَهُ الْجَنَّةُ فَرَأَى مَا فِيهَا مِنَ الْحَبْرَةِ وَالسُّرُورِ، فَيَسْكُتُ مَا شَاءَ اللهُ أَنْ يَسْكُتَ ثُمَّ يَقُولُ: أَيْ رَبِّ أَدْخِلْنِي الْجَنَّةَ فَيَقُولُ اللهُ: أَلَسْتَ قَدْ أَعْطَيْتَ عُهُودَكَ وَمَوَاثِيقَكَ أَنْ لاَ تَسْأَلَ غَيْرَ مَا أُعْطِيتَ؟ فَيَقُولُ: وَيْلَكَ يَا ابْنَ آدَمَ مَا أَغْدَرَكَ فَيَقُولُ: أَيْ رَبِّ لاَ أَكُونَنَّ أَشْقَى خَلْقِكَ، فَلاَ يَزَالُ يَدْعُو حَتَّى يَضْحَكَ اللهُ مِنْهُ، فَإِذَا ضَحِكَ مِنْهُ قَالَ لَهُ ادْخُلِ الْجَنَّةَ فَإِذَا دَخَلَهَا قَالَ اللهُ لَهُ: تَمَنَّهْ فَسَأَلَ رَبَّهُ وَتَمَنَّى حَتَّى إِنَّ اللهَ لَيُذَكِّرُهُ يَقُولُ: كَذَا وَكَذَا حَتَّى انْقَطَعَتْ بِهِ الأَمَانِيُّ قَالَ اللهُ ذَلِكَ لَكَ وَمِثْلُهُ مَعَهُ)).

[راجع: ٨٠٦]

वो जन्नत को देखेगा कि उसके अंदर किस क़दर ख़ैरियत और मसर्रत है। उसके बाद अल्लाह तआला जितनी देर चाहेगा वो शख़्स ख़ामोश रहेगा। फिर कहेगा ऐ रब! मुझे जन्नत में पहुँचा दे। अल्लाह तआला उस पर कहेगा क्या तूने वा'दा नहीं किया था कि जो कुछ मैंने तुझे दे दिया है उसके सिवा तू और कुछ नहीं मांगेगा। अल्लाह तआला फ़र्माएगा अफ़सोस! इब्ने आदम तू कितना वा'दा ख़िलाफ़ है। वो कहेगा ऐ रब! मुझे अपनी मख़्लूक़ में सबसे बढ़कर बदबख़्त न बना। चुनाँचे वो लगातार दुआएँ करता रहेगा यहाँ तक कि अल्लाह तआला उसकी दुआओं से हंस देगा, जब हंस देगा तो उसके बारे में कहेगा कि इसे जन्नत में दाख़िल कर दो। जब जन्नत में उसे दाख़िल कर देगा तो उससे फ़र्माएगा कि अपनी आरज़ुएँ बयान कर, वो अपनी तमाम आरज़ुएँ बयान कर देगा। यहाँ तक कि अल्लाह तआला उसे याद दिलाएगा। वो कहेगा कि फ़लाँ चीज़, फ़लाँ चीज़, यहाँ तक कि उसकी आरज़ुएँ ख़त्म हो जाएँगी तो अल्लाह तआला कहेगा कि ये आरज़ुएँ और इन्हीं जैसी और तुम्हें मिलेंगी। (अल्लाहुम्मर्ज़ुक़्ना आमीन)

(राजेअ: 806)

٧٤٣٨- قَالَ عَطَاءُ بْنُ يَزِيدَ : وَأَبُو سَعِيدٍ الْخُدْرِيُّ مَعَ أَبِي هُرَيْرَةَ لاَ يَرُدُّ عَلَيْهِ مِنْ حَدِيثِهِ شَيْئًا حَتَّى إِذَا حَدَّثَ أَبُو هُرَيْرَةَ أَنَّ اللهَ تَبَارَكَ وَتَعَالَى قَالَ: ((ذَلِكَ لَكَ، وَمِثْلُهُ مَعَهُ))، قَالَ أَبُو سَعِيدٍ الْخُدْرِيُّ: وَعَشَرَةُ أَمْثَالِهِ مَعَهُ يَا أَبَا هُرَيْرَةَ قَالَ أَبُو

7438. अता बिन यज़ीद ने बयान किया, कि अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) उस वक़्त अबू हुरैरह (रज़ि.) के साथ मौजूद थे उनकी हदीष़ का कोई हिस्सा रद्द नहीं करते थे। अल्बत्ता जब अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा कि अल्लाह तआला कहेगा कि, ये और इन्हीं जैसी तुम्हें और मिलेंगी तो अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने कहा कि इसके दस गुना मिलेगी ऐ अबू हुरैरह! अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा कि मुझे याद आँहज़रत (ﷺ) का यही इर्शाद है कि, ये और इन्हीं जैसी और, उस पर अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने कहा कि मैं गवाही देता हूँ कि आँहज़रत (ﷺ) से मैंने आपका ये इर्शाद याद किया है कि, तुम्हें ये सब चीज़ें मिलेंगी और इससे दस गुना और अबू हुरैरह (रज़ि.) ने फ़र्माया कि ये शख़्स जन्नत में सबसे आख़िरी दाख़िल होने वाला होगा।

(राजेअ: 22)

هُرَيْرَةَ : مَا حَفِظْتُ إِلاَّ قَوْلَهُ: ((ذَلِكَ لَكَ وَمِثْلُهُ مَعَهُ))، قَالَ ابو سَعِيدِ الْخُدْرِيُّ: أَشْهَدُ أَنِّي حَفِظْتُ مِنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ قَوْلَهُ : ((ذَلِكَ لَكَ وَعَشَرَةُ أَمْثَالِهِ))، قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ : ذَلِكَ الرَّجُلُ آخِرُ أَهْلِ الْجَنَّةِ دُخُولاً الْجَنَّةَ. [راجع: ٢٢]

तश्रीह : इस ह़दीष़ को यहाँ लाने का मक़्सद ये है कि इसमें अल्लाह तआला के आने का ज़िक्र है। मुअतज़िला, जहमिया, मुतकल्लिमीन ने अल्लाह के आने का इंकार किया है और ऐसी आयात व अह़ादीष़ जिनमें अल्लाह के आने का ज़िक्र है। उनकी दूर अज़्कार तावीलात की हैं । अल्लाह तआला अपनी शान के मुत़ाबिक़ आता भी है। वो हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है मगर उसकी ह़रकत को हम किसी मख़्लूक़ की ह़रकत से तश्बीह नही दे सकते न इसकी ह़क़ीक़त को हम जान सकते हैं। वो अ़र्श पर है और उससे आसमाने दुनिया पर नुज़ूल भी फ़र्माता है जिसकी कैफ़ियत हमको मा'लूम नहीं। ऐसे ही इस ह़दीष़ में अल्लाह तआला के हंसने का भी ज़िक्र है। उसका हंसना भी बरह़क़ है जिसकी तावील करना ग़लत़ है। सलफ़े स़ालेह़ीन का यही मसलक था कि उसकी शान व स़िफ़त जिस त़रह़ क़ुर्आन व ह़दीष़ में मज़्कूर है इस पर बिला चूँ चरा ईमान लाना फ़र्ज़ है। **आमन्ना बिल्लाहि कमा हुव बिअस्माइही व स़िफ़ातिही** दोनों स़ह़ाबियों का लफ़्ज़ी इख़्तिलाफ़ अपने अपने सिमाअ़ के मुत़ाबिक़ है। दोनों का मत़लब एक ही है कि अल्लाह तआला उन जन्नतियों को बेशुमार नेअमतें अ़त़ा करेगा सच है, **मा तश्तहिल अन्फ़ुसु व तलज़्ज़ुल अअ़युनु** (ज़ुख़रुफ़ : 71)

7439. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने, उनसे ख़ालिद बिन यज़ीद ने, उनसे सईद बिन अबी हिलाल ने, उनसे ज़ैद बिन असलम ने, उनसे अ़त़ा बिन यसार ने और उनसे अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने बयान किया कि हमने कहा या रसूलल्लाह! क्या हम क़यामत के दिन अपने रब को देखेंगे। आँह़ज़रत (ﷺ) ने पूछा क्या तुमको सूरज और चाँद देखने में कुछ तकलीफ़ होती है जबकि आसमान भी स़ाफ़ हो? हमने कहा कि नहीं। आँह़ज़रत (ﷺ) ने उस पर फ़र्माया कि फिर अपने रब की दीदार में तुम्हें कोई तकलीफ़ नहीं पेश आएगी। जिस त़रह़ सूरज और चाँद को देखने में नहीं पेश आती। फिर आपने फ़र्माया कि एक आवाज़ देने वाला आवाज़ देगा कि हर क़ौम उसके साथ जाए जिसकी वो पूजा किया करती थी। चुनाँचे स़लीब के पुजारी अपनी स़लीब के साथ, बुतों के पुजारी अपने बुतों के साथ, तमाम झूठे मा'बूदों के पुजारी अपने झूठे मा'बूदों के साथ चले जाएँगे और स़िर्फ़ वो लोग बाक़ी रह जाएँगे जो ख़ालिस़ अल्लाह की इ़बादत करने वाले थे। उनमे नेक व बद दोनों क़िस्म के मुसलमान होंगे और अहले किताब के कुछ बाक़ी मांदा लोग

٧٤٣٩- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ بْنُ سَعْدٍ، عَنْ خَالِدِ بْنِ يَزِيدَ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ أَبِي هِلاَلٍ، عَنْ زَيْدٍ عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ قَالَ: قُلْنَا يَا رَسُولَ اللهِ هَلْ نَرَى رَبَّنَا يَوْمَ الْقِيَامَةِ؟ قَالَ: ((هَلْ تُضَارُّونَ فِي رُؤْيَةِ الشَّمْسِ وَالْقَمَرِ إِذَا كَانَتْ صَحْواً؟)) قُلْنَا: لاَ قَالَ: ((فَإِنَّكُمْ لاَ تُضَارُّونَ فِي رُؤْيَةِ رَبِّكُمْ يَوْمَئِذٍ إِلاَّ كَمَا تُضَارُّونَ فِي رُؤْيَتِهِمَا)) ثُمَّ قَالَ: ((يُنَادِي مُنَادٍ لِيَذْهَبْ كُلُّ قَوْمٍ إِلَى مَا كَانُوا يَعْبُدُونَ، فَيَذْهَبُ أَصْحَابُ الصَّلِيبِ مَعَ صَلِيبِهِمْ، وَأَصْحَابُ الأَوْثَانِ مَعَ أَوْثَانِهِمْ، وَأَصْحَابُ كُلِّ آلِهَةٍ مَعَ آلِهَتِهِمْ، حَتَّى يَبْقَى مَنْ كَانَ يَعْبُدُ اللهَ

مِنْ بَرٍّ أَوْ فَاجِرٍ وَغُبَّرَاتٍ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ، ثُمَّ يُؤْتَى بِجَهَنَّمَ تُعْرَضُ كَأَنَّهَا سَرَابٌ فَيُقَالُ لِلْيَهُودِ: مَا كُنْتُمْ تَعْبُدُونَ؟ قَالُوا كُنَّا نَعْبُدُ عُزَيْرًا ابْنَ اللهِ فَيُقَالُ: كَذَبْتُمْ لَمْ يَكُنْ لِلهِ صَاحِبَةٌ وَلاَ وَلَدٌ، فَمَا تُرِيدُونَ؟ قَالُوا: نُرِيدُ أَنْ تَسْقِيَنَا فَيُقَالُ: اشْرَبُوا فَيَتَسَاقَطُونَ فِي جَهَنَّمَ، ثُمَّ يُقَالُ لِلنَّصَارَى: مَا كُنْتُمْ تَعْبُدُونَ؟ فَيَقُولُونَ: كُنَّا نَعْبُدُ الْمَسِيحَ ابْنَ اللهِ فَيُقَالُ: كَذَبْتُمْ لَمْ يَكُنْ لِلهِ صَاحِبَةٌ وَلاَ وَلَدٌ فَمَا تُرِيدُونَ؟ فَيَقُولُونَ: نُرِيدُ أَنْ تَسْقِيَنَا فَيُقَالُ: اشْرَبُوا فَيَتَسَاقَطُونَ حَتَّى يَبْقَى مَنْ كَانَ يَعْبُدُ اللهَ مِنْ بَرٍّ أَوْ فَاجِرٍ فَيُقَالُ لَهُمْ: مَا يَحْبِسُكُمْ وَقَدْ ذَهَبَ النَّاسُ فَيَقُولُونَ: فَارَقْنَاهُمْ وَنَحْنُ أَحْوَجُ مِنَّا إِلَيْهِ الْيَوْمَ وَإِنَّا سَمِعْنَا مُنَادِيًا يُنَادِي لِيَلْحَقْ كُلُّ قَوْمٍ بِمَا كَانُوا يَعْبُدُونَ، وَإِنَّمَا نَنْتَظِرُ رَبَّنَا قَالَ: فَيَأْتِيهِمُ الْجَبَّارُ فِي صُورَةٍ غَيْرِ صُورَتِهِ الَّتِي رَأَوْهُ فِيهَا أَوَّلَ مَرَّةٍ فَيَقُولُ: أَنَا رَبُّكُمْ فَيَقُولُونَ: أَنْتَ رَبُّنَا فَلاَ يُكَلِّمُهُ إِلاَّ الأَنْبِيَاءُ فَيَقُولُ: هَلْ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُ آيَةٌ تَعْرِفُونَهُ؟ فَيَقُولُونَ: السَّاقُ فَيَكْشِفُ عَنْ سَاقِهِ، فَيَسْجُدُ لَهُ كُلُّ مُؤْمِنٍ وَيَبْقَى مَنْ كَانَ يَسْجُدُ لِلهِ رِيَاءً وَسُمْعَةً، فَيَذْهَبُ كَيْمَا يَسْجُدَ فَيَعُودُ ظَهْرُهُ طَبَقًا وَاحِدًا، ثُمَّ يُؤْتَى بِالْجَسْرِ فَيُجْعَلُ بَيْنَ ظَهْرَيْ جَهَنَّمَ)) قُلْنَا: يَا رَسُولَ اللهِ وَمَا الْجَسْرُ؟ قَالَ: ((مَدْحَضَةٌ

भी होंगे। फिर दोज़ख़ उनके सामने पेश की जाएगी वो ऐसी चमकदार होगी जैसे मैदान का रेत होता है (जो दूर से पानी मा'लूम होता है) फिर यहूद से पूछा जाएगा कि तुम किसकी पूजा किया करते थे। वे कहेंगे हम उ़जैर इब्ने अल्लाह की पूजा किया करते थे। उन्हें जवाब मिलेगा कि तुम झूठे हो अल्लाह के न कोई बीवी है और न कोई लड़का। तुम क्या चाहते हो? वो कहेंगे कि हम पानी पीना चाहते हैं कि हमें उससे सैराब किया जाए। उनसे कहा जाएगा कि पियो वो उस चमकती रेत की त़रफ़ पानी जानकर चलेंगे और फिर वो जहन्नम में डाल दिये जाएँगे। फिर नस़ारा से कहा जाएगा कि तुम किसकी पूजा करते थे? वो जवाब देंगे कि हम मसीह़ इब्ने अल्लाह की पूजा करते थे। उनसे कहा जाएगा कि तुम झूठे हो। अल्लाह के न बीवी थी और न कोई बच्चा, अब तुम क्या चाहते हो? वो कहेंगे कि हम चाहते हैं कि पानी से सैराब किये जाएँ। उनसे कहा जाएगा कि पियो (उनको भी उस चमकती रेत की त़रफ़ चलाया जाएगा) और उन्हें भी जहन्नम में डाल दिया जाएगा। यहाँ तक कि वही बाक़ी रह जाएँगे जो ख़ालिस़ अल्लाह की इबादत करते थे। नेक व बद दोनों क़िस्म के मुसलमान, उनसे कहा जाएगा कि तुम लोग क्यूँ रुके हुए हो जबकि सब लोग जा चुके हैं? वो कहेंगे हम दुनिया में उनसे ऐसे वक़्त जुदा हुए कि हमें उनकी दुनियावी फ़ायदे के लिये बहुत ज़्यादा ज़रूरत थी और हमने एक आवाज़ देने वाले को सुना है कि हर क़ौम उसके साथ हो जाए जिसकी वो इबादत करती थी और हम अपने रब के मुंतज़िर हैं। बयान किया कि फिर अल्लाह जब्बार उनके सामने उस स़ूरत के अ़लावा दूसरी स़ूरत में आएगा जिसमें उन्होंने उसे पहली मर्तबा देखा होगा और कहेगा कि मैं तुम्हारा रब हूँ! लोग कहेंगे कि तू ही हमारा रब है और उस दिन अंबिया के सिवा और कोई बात नहीं करेगा। फिर पूछेगा क्या तुम्हें उसकी कोई निशानी मा'लूम है? वो कहेंगे कि, साक़ (पिण्डली) फिर अल्लाह अपनी पिण्डली को खोलेगा और हर मोमिन उसके लिये सज्दे में गिर जाएगा। स़िर्फ़ वो लोग बाक़ी रह जाएँगे जो दिखावे और शोहरत के लिये उसे सज्दा करते थे, वो भी सज्दा करना चाहेंगे लेकिन उनकी पीठ तख़्ते की त़रह़ होकर रह जाएगी। फिर उन्हें पुल स़िरात़ पर लाया जाएगा। हमने पूछा या

مَزِلَّةٌ عَلَيْهِ خَطَاطِيفُ وَكَلاَلِيبُ وَحَسَكَةٌ مُفَلْطَحَةٌ لَهَا شَوْكَةٌ عُقَيْفَاءُ، تَكُونُ بِنَجْدٍ يُقَالُ لَهَا : السَّعْدَانُ الْمُؤْمِنُ عَلَيْهَا كَالطَّرْفِ وَكَالْبَرْقِ وَكَالرِّيحِ وَكَأَجَاوِيدِ الْخَيْلِ وَالرِّكَابِ فَنَاجٍ مُسَلَّمٌ وَنَاجٍ مَخْدُوشٌ وَمَكْدُوسٌ فِي نَارِ جَهَنَّمَ حَتَّى يَمُرَّ آخِرُهُمْ يُسْحَبُ سَحْبًا فَمَا أَنْتُمْ بِأَشَدَّ لِي مُنَاشَدَةً فِي الْحَقِّ قَدْ تَبَيَّنَ لَكُمْ مِنَ الْمُؤْمِنِ يَوْمَئِذٍ لِلْجَبَّارِ وَإِذَا رَأَوْا أَنَّهُمْ قَدْ نَجَوْا فِي إِخْوَانِهِمْ يَقُولُونَ: رَبَّنَا إِخْوَانُنَا الَّذِينَ كَانُوا يُصَلُّونَ مَعَنَا وَيَصُومُونَ مَعَنَا وَيَعْمَلُونَ مَعَنَا، فَيَقُولُ اللهُ تَعَالَى: اذْهَبُوا فَمَنْ وَجَدْتُمْ فِي قَلْبِهِ مِثْقَالَ دِينَارٍ مِنْ إِيمَانٍ فَأَخْرِجُوهُ، وَيُحَرِّمُ اللهُ صُوَرَهُمْ عَلَى النَّارِ فَيَأْتُونَهُمْ وَبَعْضُهُمْ قَدْ غَابَ فِي النَّارِ إِلَى قَدَمِهِ وَإِلَى أَنْصَافِ سَاقَيْهِ، فَيُخْرِجُونَ مَنْ عَرَفُوا، ثُمَّ يَعُودُونَ فَيَقُولُ اذْهَبُوا فَمَنْ وَجَدْتُمْ فِي قَلْبِهِ مِثْقَالَ نِصْفِ دِينَارٍ فَأَخْرِجُوهُ، فَيُخْرِجُونَ مَنْ عَرَفُوا، ثُمَّ يَعُودُونَ فَيَقُولُ: اذْهَبُوا فَمَنْ وَجَدْتُمْ فِي قَلْبِهِ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ مِنْ إِيمَانٍ فَأَخْرِجُوهُ، فَيُخْرِجُونَ مَنْ عَرَفُوا)) قَالَ أَبُو سَعِيدٍ: فَإِنْ لَمْ تُصَدِّقُونِي فَاقْرَأُوا: ﴿إِنَّ اللهَ لاَ يَظْلِمُ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ وَإِنْ تَكُ حَسَنَةً يُضَاعِفْهَا﴾ فَيَشْفَعُ النَّبِيُّونَ وَالْمَلاَئِكَةُ وَالْمُؤْمِنُونَ فَيَقُولُ الْجَبَّارُ: بَقِيَتْ شَفَاعَتِي فَيَقْبِضُ قَبْضَةً مِنَ النَّارِ فَيُخْرِجُ أَقْوَامًا قَدِ

रसूलल्लाह! पुल क्या चीज़ है? आपने फ़र्माया वो एक फिसलवाँ गिरने का मुक़ाम है उस पर संसियाँ हैं, आँकड़े हैं, चौड़े चौड़े कांटे हैं, उनके सर ख़मदार सअदान के कांटों की त़रह, बिजली की त़रह, हवा की त़रह, तेज़ रफ़्तार घोड़ों और सवारी की त़रह गुज़र जाएँगे। उनमें कुछ तो स़हीह सलामत नजात पाने वाले होंगे और कुछ जहन्नम की आग से झुलस कर बच निकलने वाले होंगे यहाँ तक कि आख़िरी शख़्स़ उस पर से घिसटते हुए गुज़रेगा। तुम लोग आज के दिन अपना ह़क़ लेने के लिये जितना तक़ाज़ा और मुत़ालबा मुझसे करते हो उससे ज़्यादा मुसलमान लोग अल्लाह से तक़ाज़ा और मुत़ालबा करेंगे और जब वो देखेंगे कि अपने भाइयों में से उन्हें नजात मिली है तो वो कहेंगे कि ऐ हमारे रब! हमारे भाई भी हमारे साथ नमाज़ पढ़ते थे और हमारे साथ रोज़े रखते थे और हमारे साथ दूसरे (नेक) आमाल करते थे (उनको भी दोज़ख़ से नजात फ़र्मा) चुनाँचे अल्लाह तआला फ़र्माएगा कि जाओ और जिसके दिल में एक अशरफ़ी के बराबर भी ईमान पाओ उसे दोज़ख़ से निकाल लो और अल्लाह उनके चेहरों को दोज़ख़ पर ह़राम कर देगा। चुनाँचे वो आएँगे और देखेंगे कि कुछ का तो जहन्नम मे क़दम और आधी पिण्डली जली हुई है। चुनाँचे जिन्हें वो पहचानेंगे उन्हें दोज़ख़ से निकालेंगे, फिर वापस आएँगे और अल्लाह तआला उनसे फ़र्माएगा कि जाओ और जिसके दिल में आधी अशरफ़ी के बराबर भी ईमान हो उसे भी निकाल लाओ। चुनाँचे जिनको वो पहचानते होंगे उनको निकालेंगे। फिर वो वापस आएँगे और अल्लाह तआला फ़र्माएगा कि जाओ और जिसके दिल में ज़र्रा बराबर ईमान हो उसे भी निकाल लाओ। चुनाँचे पहचाने जाने वालों को निकालेंगे। अबू सईद (रज़ि.) ने उस पर कहा कि अगर तुम मेरी तस्दीक़ नहीं करते तो ये आयत पढ़ो, अल्लाह तआला ज़र्रा बराबर भी किसी पर ज़ुल्म नहीं करता। अगर नेकी है तो उसे बढ़ाता है। फिर अंबिया और मोमिनीन और फ़रिश्ते शफ़ाअत करेंगे और परवरदिगार का इर्शाद होगा कि अब ख़ास़ मेरी शफ़ाअत बाक़ी रह गई है। चुनाँचे अल्लाह तआला दोज़ख़ से एक मुट्ठी भर लेगा और ऐसे लोगों को निकालेगा जो कोयला हो गये होंगे। फिर वो जन्नत के सिरे पर एक नहर मे डाल दिये

जाएँगे जिसे नहरे आबे ह़यात कहा जाता है और ये लोग उसके किनारे से इस त़रह़ उभरेंगे जिस त़रह़ सैलाब के कूड़े करकट से सब्ज़ा उभर आता है। तुमने ये मंज़र किसी चट्टान के या किसी पेड़ के किनारे देखा होगा तो जिस पर धूप पड़ती रहती है वो सब्ज़ उभरता है और जिस पर साया होता है वो सफ़ेद उभरता है। फिर वो इस त़रह़ निकलेंगे जैसे मोती चमकता है। उसके बाद उनकी गर्दनों पर मुहर कर दी जाएँगी (कि ये अल्लाह के आज़ादकर्दा ग़ुलाम हैं) और उन्हें जन्नत में दाख़िल किया जाएगा। अहले जन्नत उन्हें उ़त्क़ाउर्रह़मान कहेंगे। उन्हें अल्लाह ने बिला अ़मल के जो उन्होंने किया हो और बिला ख़ैर के जो उनसे स़ादिर हुई हो जन्नत में दाख़िल किया है। और उनसे कहा जाएगा कि तुम्हें वो सब कुछ मिलेगा जो तुम देखते हो और इतना ही और भी मिलेगा। (राजेअ़ : 22)

امْتَحِشُوا فَيُلْقَوْنَ فِي نَهَرٍ بِأَفْوَاهِ الْجَنَّةِ يُقَالُ لَهُ مَاءُ الْحَيَاةِ، فَيَنْبُتُونَ فِي حَافَتَيْهِ كَمَا تَنْبُتُ الْحِبَّةُ فِي حَمِيلِ السَّيْلِ قَدْ رَأَيْتُمُوهَا إِلَى جَانِبِ الصَّخْرَةِ وَإِلَى جَانِبِ الشَّجَرَةِ فَمَا كَانَ إِلَى الشَّمْسِ مِنْهَا كَانَ أَخْضَرَ وَمَا كَانَ مِنْهَا إِلَى الظِّلِّ كَانَ أَبْيَضَ فَيَخْرُجُونَ كَأَنَّهُمُ اللُّؤْلُؤُ فَيُجْعَلُ فِي رِقَابِهِمِ الْخَوَاتِيمُ فَيَدْخُلُونَ الْجَنَّةَ فَيَقُولُ أَهْلُ الْجَنَّةِ: هَؤُلاَءِ عُتَقَاءُ الرَّحْمَنِ أَدْخَلَهُمُ الْجَنَّةَ بِغَيْرِ عَمَلٍ عَمِلُوهُ، وَلاَ خَيْرٍ قَدَّمُوهُ فَيُقَالُ لَهُمْ: لَكُمْ مَا رَأَيْتُمْ وَمِثْلُهُ مَعَهُ)).[راجع: ٢٢]

(उ़त्क़ाउर्रह़मान या'नी रह़म करने वाले अल्लाह के आज़ादकर्दा बन्दे ये उस उम्मत के गुनहगार बे अ़मल लोग होंगे **अल्लाहुम्मग़्फ़िर लिजमीइल मुस्लिमीन वल मुस्लिमात** (आमीन) झूठे मा'बूदों के पुजारियों की त़रह़ क़ब्रों को पूजने वाले उन क़ब्रों के साथ और ता'ज़िये अ़लम वग़ैरह के पुजारी उनके साथ चले जाएँगे।

7440. और ह़ज्जाज बिन मिन्हाल ने बयान किया, कहा हमसे हम्माम बिन यह़्या ने बयान किया, कहा हमसे क़तादा बिन दआ़मा ने बयान किया और उनसे अनस (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया क़यामत के दिन मोमिनों को (गर्म मैदान में) रोक रखा जाएगा यहाँ तक कि उसकी वजह से वो ग़मगीन हो जाएँगे और स़लाह़ करके) कहेंगे कि काश! कोई हमारे रब से हमारी शफ़ाअ़त करता कि हमें इस ह़ालत से नजात मिलती। चुनाँचे वो मिलकर आदम (अ़.) के पास आएँगे और कहेंगे कि आप इंसानों के बाप हैं, अल्लाह ने

٧٤٤٠- وَقَالَ حَجَّاجُ بْنُ مِنْهَالٍ: حَدَّثَنَا هَمَّامُ بْنُ يَحْيَى، حَدَّثَنَا قَتَادَةُ، عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ، قَالَ: ((يُحْبَسُ الْمُؤْمِنُونَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ حَتَّى يُهِمُّوا بِذَلِكَ فَيَقُولُونَ: لَوِ اسْتَشْفَعْنَا إِلَى رَبِّنَا فَيُرِيحُنَا مِنْ مَكَانِنَا فَيَأْتُونَ آدَمَ فَيَقُولُونَ أَنْتَ آدَمُ أَبُو النَّاسِ خَلَقَكَ اللهُ

بِيَدِهِ وَأَسْكَنَكَ جَنَّتَهُ وَأَسْجَدَ لَكَ مَلَائِكَتَهُ وَعَلَّمَكَ أَسْمَاءَ كُلِّ شَيْءٍ لِتَشْفَعْ لَنَا عِنْدَ رَبِّكَ حَتَّى يُرِيحَنَا مِنْ مَكَانِنَا هَذَا قَالَ: فَيَقُولُ: لَسْتُ هُنَاكُمْ، قَالَ: وَيَذْكُرُ خَطِيئَتَهُ الَّتِي أَصَابَ أَكْلَهُ مِنَ الشَّجَرَةِ وَقَدْ نُهِيَ عَنْهَا، وَلَكِنِ ائْتُوا نُوحًا أَوَّلَ نَبِيٍّ بَعَثَهُ اللهُ تَعَالَى إِلَى أَهْلِ الأَرْضِ، فَيَأْتُونَ نُوحًا فَيَقُولُ: لَسْتُ هُنَاكُمْ وَيَذْكُرُ خَطِيئَتَهُ الَّتِي أَصَابَ سُؤَالَهُ رَبَّهُ بِغَيْرِ عِلْمٍ، وَلَكِنِ ائْتُوا إِبْرَاهِيمَ خَلِيلَ الرَّحْمَنِ قَالَ: فَيَأْتُونَ إِبْرَاهِيمَ فَيَقُولُ: إِنِّي لَسْتُ هُنَاكُمْ، وَيَذْكُرُ ثَلاَثَ كَلِمَاتٍ كَذَبَهُنَّ، وَلَكِنِ ائْتُوا مُوسَى عَبْدًا آتَاهُ اللهُ التَّوْرَاةَ وَكَلَّمَهُ وَقَرَّبَهُ نَجِيًّا قَالَ : فَيَأْتُونَ مُوسَى فَيَقُولُ: إِنِّي لَسْتُ هُنَاكُمْ وَيَذْكُرُ خَطِيئَتَهُ الَّتِي أَصَابَ قَتْلَهُ النَّفْسَ وَلَكِنِ ائْتُوا عِيسَى عَبْدَ اللهِ وَرَسُولَهُ وَرُوحَ اللهِ وَكَلِمَتَهُ، قَالَ: فَيَأْتُونَ عِيسَى فَيَقُولُ: لَسْتُ هُنَاكُمْ وَلَكِنِ ائْتُوا مُحَمَّدًا ﷺ عَبْدًا غَفَرَ اللهُ لَهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِهِ وَمَا تَأَخَّرَ، فَيَأْتُونِي فَأَسْتَأْذِنُ عَلَى رَبِّي فِي دَارِهِ فَيُؤْذَنُ لِي عَلَيْهِ فَإِذَا رَأَيْتُهُ وَقَعْتُ سَاجِدًا فَيَدَعُنِي مَا شَاءَ اللهُ أَنْ يَدَعَنِي فَيَقُولُ: ارْفَعْ مُحَمَّدُ وَقُلْ: يُسْمَعْ وَاشْفَعْ تُشَفَّعْ وَسَلْ تُعْطَ قَالَ فَأَرْفَعُ رَأْسِي فَأُثْنِي عَلَى رَبِّي بِثَنَاءٍ وَتَحْمِيدٍ يُعَلِّمُنِيهِ ثُمَّ أَشْفَعُ فَيَحُدُّ لِي حَدًّا، فَأَخْرُجُ فَأُدْخِلُهُمُ الْجَنَّةَ)) قَالَ قَتَادَةُ:

आपको अपने हाथ से पैदा किया और आपको जन्नत में मुक़ाम अ़ता किया, आपको सज्दा करने का फ़रिश्तों को हुक्म दिया और आपको हर चीज़ के नाम सिखाए। आप हमारी शफ़ाअ़त अपने रब के हुज़ूर में करें ताकि हमें इस हालत से नजात दे। बयान किया कि आदम (अ़.) कहेंगे कि मैं इस लायक़ नहीं और वो अपनी उस ग़लती को याद करेंगे जो बावजूद रोकने के पेड़ खा लेने की वजह से उनसे हुई थी और कहेंगे कि नूह़ (अ़.) के पास जाओ क्योंकि वो पहले नबी हैं जिन्हें अल्लाह तआ़ला ने ज़मीन वालों की त़रफ़ रसूल बनाकर भेजा था। चुनाँचे लोग नूह़ (अ़.) के पास आएँगे तो वो भी ये फ़र्माएँगे कि मैं इस लायक़ नहीं और अपनी उस ग़लती को याद करेंगे जो बग़ैर इल्म के अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त से सवाल करके (अपने बेटे की बख़्शिश के लिये) उन्होंने की थी और कहेंगे कि इब्राहीम (अ़.) के पास जाओ जो अल्लाह के ख़लील हैं। बयान किया कि सब लोग इब्राहीम (अ़.) के पास आएँगे। तो वो भी यही उ़ज़्र करेंगे कि मैं इस लायक़ नहीं और वो उन तीन बातों को याद करेंगे जिनमें आपने बज़ाहिर ग़लतबयानी की थी और कहेंगे कि मूसा (अ़लैहि.) के पास जाओ। वो ऐसे बन्दे हैं जिन्हें अल्लाह तआ़ला ने तौरात दी और उनसे बात की और उनको नज़दीक करके उनसे सरगोशी की। बयान किया कि फिर लोग मूसा (अ़.) के पास आएँगे तो वो भी कहेंगे कि मैं इस लायक़ नहीं हूँ और वो अपनी ग़लती याद करेंगे जो एक शख़्स को क़त्ल करके उन्होंने की थी। अल्बत्ता ईसा (अ़.) के पास जाओ वो अल्लाह के बन्दे, उसके रसूल, अल्लाह की रूह़ और उसका कलिमा हैं। चुनाँचे लोग ईसा (अ़लैहि.) के पास आएँगे। वो फ़र्माएँगे कि मैं इस लायक़ नही हूँ तुम लोग ह़ज़रत मुह़म्मद (ﷺ) के पास जाओ। वो ऐसे बन्दे हैं कि अल्लाह ने उनके अगले पिछले तमाम गुनाह माफ़ कर दिये हैं।

चुनाँचे लोग मेरे पास आएँगे और मैं अपने रब से उसके दरे दौलत या'नी अ़र्शे मुअ़ल्ला पर आने के लिये इजाज़त चाहूँगा। मुझे उसकी इजाज़त दी जाएगी फिर मैं अल्लाह तआ़ला को देखते ही सज्दे में गिर पड़ूँगा और अल्लाह तआ़ला मुझे जब तक चाहेगा उसी हालत में रहने देगा। फिर

وَسَمِعْتُهُ أَيْضًا يَقُولُ: ((فَأَخْرُجُ فَأُخْرِجُهُمْ مِنَ النَّارِ وَأُدْخِلُهُمُ الْجَنَّةَ، ثُمَّ أَعُودُ فَأَسْتَأْذِنُ عَلَى رَبِّي فِي دَارِهِ فَيُؤْذَنُ لِي عَلَيْهِ، فَإِذَا رَأَيْتُهُ وَقَعْتُ سَاجِدًا فَيَدَعُنِي مَا شَاءَ اللهُ أَنْ يَدَعَنِي ثُمَّ يَقُولُ: ارْفَعْ مُحَمَّدُ وَقُلْ يُسْمَعْ وَاشْفَعْ تُشَفَّعْ وَسَلْ تُعْطَهْ قَالَ: فَأَرْفَعُ رَأْسِي فَأُثْنِي عَلَى رَبِّي بِثَنَاءٍ وَتَحْمِيدٍ يُعَلِّمُنِيهِ قَالَ: ثُمَّ أَشْفَعُ فَيَحُدُّ لِي حَدًّا فَأَخْرُجُ فَأُدْخِلُهُمُ الْجَنَّةَ)) قَالَ قَتَادَةُ: وَسَمِعْتُهُ يَقُولُ: ((فَأَخْرُجُ فَأُخْرِجُهُمْ مِنَ النَّارِ وَأُدْخِلُهُمُ الْجَنَّةَ، ثُمَّ أَعُودُ الثَّالِثَةَ فَأَسْتَأْذِنُ عَلَى رَبِّي فِي دَارِهِ فَيُؤْذَنُ لِي عَلَيْهِ، فَإِذَا رَأَيْتُهُ وَقَعْتُ سَاجِدًا فَيَدَعُنِي مَا شَاءَ اللهُ أَنْ يَدَعَنِي ثُمَّ يَقُولُ: ارْفَعْ مُحَمَّدُ وَقُلْ يُسْمَعْ وَاشْفَعْ تُشَفَّعْ وَسَلْ تُعْطَهْ قَالَ فَأَرْفَعُ رَأْسِي فَأُثْنِي عَلَى رَبِّي بِثَنَاءٍ وَتَحْمِيدٍ يُعَلِّمُنِيهِ قَالَ : ثُمَّ أَشْفَعُ فَيَحُدُّ لِي حَدًّا فَأَخْرُجُ فَأُدْخِلُهُمُ الْجَنَّةَ)) قَالَ قَتَادَةُ: وَقَدْ سَمِعْتُهُ يَقُولُ: ((فَأَخْرُجُ فَأُخْرِجُهُمْ مِنَ النَّارِ وَأُدْخِلُهُمُ الْجَنَّةَ حَتَّى مَا يَبْقَى فِي النَّارِ إِلاَّ مَنْ حَبَسَهُ الْقُرْآنُ أَيْ وَجَبَ عَلَيْهِ الْخُلُودُ قَالَ: ثُمَّ تَلاَ هَذِهِ الآيَةَ ﴿عَسَى أَنْ يَبْعَثَكَ رَبُّكَ مَقَامًا مَحْمُودًا﴾ قَالَ: وَهَذَا الْمَقَامُ الْمَحْمُودُ الَّذِي وُعِدَهُ نَبِيُّكُمْ ﷺ)). [راجع: ٤٤]

फ़र्माएगा कि ऐ मुहम्मद (ﷺ)! सर उठाओ, कहो सुना जाएगा, शफ़ाअत करो तुम्हारी शफ़ाअत क़ुबूल की जाएगी, जो मांगोगे दिया जाएगा। बयान किया कि फिर मैं अपना सर उठाऊँगा और अपने रब की ह़म्दो ष़ना करूँगा जो वो मुझे सिखाएगा। बयान किया कि फिर मैं शफ़ाअत करूँगा। चुनाँचे मेरे लिये ह़द मुक़र्रर की जाएगी और मैं उसके मुताबिक़ लोगों को दोज़ख़ से निकाल कर जन्नत मे दाख़िल करूँगा। क़तादा ने बयान किया कि मैंने अनस (रज़ि.) को ये कहते हुए सुना कि फिर मैं निकालूँगा और जहन्नम से निकालकर जन्नत मे दाख़िल करूँगा। फिर तीसरी मर्तबा अपने रब से उसके दर दौलत के लिये इजाज़त चाहूँगा और मुझे इसकी इजाज़त दी जाएगी। फिर मैं अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त को देखते ही उसके लिये सज्दे में गिर पड़ूँगा और अल्लाह तआला जब तक चाहेगा मुझे यूँ ही छोड़े रखेगा। फिर फ़र्माएगा ऐ मुहम्मद! सर उठाओ, कहो सुना जाएगा, शफ़ाअत करो क़ुबूल की जाएगी, मांगो दिया जाएगा। आपने बयान किया कि फिर मैं अपना सर उठाऊँगा और अपने रब की ऐसी ह़म्दो ष़ना करूँगा जो वो मुझे सिखाएगा। बयान किया कि फिर शफ़ाअत करूँगा और मेरे लिये ह़द मुक़र्रर कर दी जाएगी और मैं उसके मुताबिक़ जहन्नम से लोगों को निकालकर जन्नत में दाख़िल करूँगा। क़तादा ने बयान किया, कि मैंने अनस (रज़ि.) को ये कहते सुना कि फिर मैं लोगों को निकालूँगा और उन्हें जहन्नम से निकालकर जन्नत में दाख़िल करूँगा, यहाँ तक कि जहन्नम मे सिर्फ़ वही लोग बाक़ी रह जाएँगे जिन्हें क़ुर्आन ने रोक रखा होगा या'नी उन्हे हमेशा ही उसमे रहना होगा (या'नी कुफ़्फ़ार व मुश्रिकीन) फिर आपने ये आयत तिलावत की। क़रीब है कि आपका रब मुक़ामे मह़मूद पर आपको भेजेगा, फ़र्माया कि यही वो मुक़ामे मह़मूद है जिसके लिये अल्लाह तआला ने अपने ह़बीब (ﷺ) से वा'दा किया है। (राजेअ : 44)

तश्रीह : मक़ामे मह़मूद वो रफ़ीउश्शान दर्जा है जो ख़ास़ हमारे रसूले करीम (ﷺ) को इनायत होगा। एक रिवायत में है कि उस मुक़ाम पर अगले और पिछले सब रश्क करेंगे। रिवायत में ऊपर अल्लाह के घर का ज़िक्र आया है। घर से मुराद जन्नत है इज़ाफ़त तशरीफ़ के लिये है जैसे बैतुल्लाह। मस़ाबीह़ वाले ने कहा तर्जुमा यूँ है मैं अपने मालिक से इजाज़त चाहूँगा जब मैं उसके घर या'नी जन्नत में हूँ। यहाँ घर से मुराद ख़ास़ वो मुक़ाम है जहाँ अल्लाह तआला उस वक़्त तजल्ली फ़र्मा होगा वो अ़र्शे मुअल्ला है और अ़र्श को स़ह़ाबा ने अल्लाह का घर कहा है। एक स़ह़ाबी का क़ौल है, व कान

मकानुल्लाहि आला व अफ़्रेंड़। (वहीदी)

हदीष़ में अल्लाह के लिये पिण्डली का ज़िक्र है इस पर जिस तरह वो मज़्कूर है बिला तावील ईमान लाना ज़रूरी है। इसकी हक़ीक़त अल्लाह के हवाले करना सलफ़ का तरीक़ा है। इसी तरह अहले नार को मुट्ठी भरकर निकालने और जन्नत में दाख़िल करने का ज़िक्र है जो बरहक़ है जैसा अल्लाह तआला रब्बुल आलमीन है वैसी उसकी मुट्ठी है जिसकी तफ़्सील मा'लूम करना हमारी अक़्लों से दूर है। अल्लाह की मुट्ठी का क्या ठिकाना है। बड़े ही ख़ुशनसीब होंगे वो दोज़ख़ी जो अल्लाह की मुट्ठी में आकर दोज़ख़ से नजात पाकर जन्नत में दाख़िल होंगे।

हाफ़िज़ साहब नक़ल करते हैं, **ला तुज़ाम्मून फ़ी रूयतिही बिज़म्मि वत्तश्दीदि मअनाहू तज्तमिऊन लिरूयतिही फ़ी जिहतिन व ला युज़म्मु बअ़ज़ुकुम इला बअ़ज़िन व मअनाहू बिफ़त्हित्ताइ कज़ालिक वल अस्लु ला ततज़ामून फ़ी रूयतिही बिइज्तिमाइन फ़ी जिहतिन फ़इन्नकुम तरौनहू फ़ी जिहातिकुम कुल्लिहा** (ख़ुलासा फ़त्हुल बारी) या'नी लफ़्ज़ तुज़ाम्मून ता के पेश और मीम के तशदीद के साथ इसके मा'नी ये कि उस अल्लाह के दीदार करने में तुम्हारी भीड़ नहीं होगी। तुम उसे हर तरफ़ से देख सकोगे और कोई किसी से नहीं टकराएगा और ता का फ़त्ह के साथ भी मा'नी यही है। असल में ये लफ़्ज़ ला ततज़ाम्मून दो ता के साथ है एक ता को तख़्फ़ीफ़ के लिये हज़फ़ कर दिया गया मतलब यही है कि तुम उसका हर तरफ़ से दीदार कर सकोगे भीड़ भाड़ नहीं होगी जैसा कि चाँद के देखने का मंज़र होता है। लफ़्ज़े ताग़ूत से शयातीन और अस्नाम और गुमराही व ज़लालत के सरदार मुराद हैं। अष़रुस्सुजूद से मुराद चेहरा या सारे हिस्से सजूद मुराद हैं, **क़ाल अयाज़ यदुल्लु अन्नल मुराद बिअष़रिस्सुजूदि अल्वज्हु ख़ास्सतन** अष़रे सज्दा से ख़ास चेहरा मुराद है। आख़िर हदीष़ में एक आख़िरी ख़ुशनसीब इंसान का ज़िक्र है जो सबसे पीछे जन्नत में दाख़िल होकर सरूर (ख़ुशी) हासिल करेगा। दुआ है कि अल्लाह तआला जुम्ला क़ारेइने बुख़ारी शरीफ़ मर्दों औरतों को जन्नत में दाख़िला अता करे और सबको दोज़ख़ से बचाए, आमीन। **अल्लाहुम्म इन्ना नस्अलुकल जन्नत व नऊज़ुबिक मिनन्नारि फ़तक़ब्बल दुआअना या रब्बल आलमीन आमीन!**

7441. हमसे उबैदुल्लाह बिन सअद बिन इब्राहीम ने बयान किया, उन्होंने कहा मुझसे मेरे चचा ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने बयान किया, उनसे सालेह ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने अंसार को बुला भेजा और उन्हें एक ढेरे में जमा किया और उनसे कहा कि सब्र करो यहाँ तक कि तुम अल्लाह और उसके रसूल से आकर मिलो। मैं हौज़े कौषर पर होऊँगा। (राजेअ : 3146)

٧٤٤١- حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ سَعْدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ، حَدَّثَنِي عَمِّي حَدَّثَنَا أَبِي عَنْ صَالِحٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ قَالَ: حَدَّثَنِي أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ أَرْسَلَ إِلَى الأَنْصَارِ فَجَمَعَهُمْ فِي قُبَّةٍ وَقَالَ لَهُمْ: ((اصْبِرُوا حَتَّى تَلْقَوُا اللهَ وَرَسُولَهُ، فَإِنِّي عَلَى الْحَوْضِ)). [راجع: ٣١٤٦]

अल्लाह और उसके रसूल की मुलाक़ात महशर में बरहक़ है इसका इंकार करने वाले गुमराह हैं। हदीष़े हाज़ा का यही मक़्सूद है। माले ग़नीमत के बारे में अंसार को कुछ दफ़ा कुछ मलाल हो जाता था इस पर आपने उनको तसल्ली दिलाई।

बाब का तर्जुमा की मुताबिक़त इस तरह निकली कि फ़र्माया तुम अल्लाह से मिल जाओ या'नी अल्लाह का दीदार तुमको हासिल हो।

7442. मुझसे ष़ाबित बिन मुहम्मद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे इब्ने जुरैज ने बयान किया, उनसे सुलैमान अहवल ने बयान किया, उनसे ताउस ने

٧٤٤٢- حَدَّثَنِي ثَابِتُ بْنُ مُحَمَّدٍ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنِ ابْنِ جُرَيْجٍ، عَنْ سُلَيْمَانَ

बयान किया और उनसे ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) रात के वक़्त तहज्जुद की नमाज़ में ये दुआ पढ़ा करते थे। ऐ अल्लाह! ऐ हमारे रब! ह़म्द तेरे ही लिये है, तू आसमान और ज़मीन का थामने वाला है और उन सबका जो इनमें हैं और तेरे ही लिये ह़म्द है, तू आसमान और ज़मीन का नूर है और उन सबका जो उनमें हैं। तू सच्चा है। तेरा क़ौल सच्चा, तेरा वा'दा सच्चा, तेरी मुलाक़ात सच्ची है, जन्नत सच है, दोज़ख सच है, क़यामत सच है। ऐ अल्लाह! मैं तेरे सामने झुका, तुझ पर ईमान लाया, तुझ पर भरोसा किया, तेरे पास अपने झगड़े ले गया और तेरी ही मदद से मुक़ाबला किया, पस तू मुझे माफ़ कर दे, मेरे वो गुनाह भी जो मैं पहले कर चुका हूँ और वो भी जो बाद में करूँगा और वो भी जो मैंने पोशीदा त़ौर पर किये हैं और वो भी ज़ाहिर त़ौर पर किया और वो भी जिनमें तू मुझसे ज़्यादा जानता है। तेरे सिवा और कोई मा'बूद नहीं। अबू अ़ब्दुल्लाह ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने कहा कि क़ैस बिन सअ़द और अबुज़ुबैर ने त़ाउस के ह़वाले से क़याम बयान किया और मुजाहिद ने क़य्यूम कहा या'नी हर चीज़ की निगरानी करने वाला और उ़मर (रज़ि.) ने क़याम पढ़ा और दोनों ही मदह़ के लिये हैं।

(राजेअ़: 1120)

الأَحْوَلِ، عَنْ طَاوُسٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ، إِذَا تَهَجَّدَ مِنَ اللَّيْلِ قَالَ: ((اللَّهُمَّ رَبَّنَا لَكَ الْحَمْدُ أَنْتَ قَيِّمُ السَّمَاوَاتِ وَالأَرْضِ وَلَكَ الْحَمْدُ أَنْتَ رَبُّ السَّمَاوَاتِ وَالأَرْضِ وَمَنْ فِيهِنَّ، وَلَكَ الْحَمْدُ أَنْتَ نُورُ السَّمَاوَاتِ وَالأَرْضِ وَمَنْ فِيهِنَّ، أَنْتَ الْحَقُّ وَقَوْلُكَ الْحَقُّ، وَوَعْدُكَ الْحَقُّ وَلِقَاؤُكَ الْحَقُّ، وَالْجَنَّةُ حَقٌّ وَالنَّارُ حَقٌّ وَالسَّاعَةُ حَقٌّ، اللَّهُمَّ لَكَ أَسْلَمْتُ وَبِكَ آمَنْتُ وَعَلَيْكَ تَوَكَّلْتُ، وَإِلَيْكَ خَاصَمْتُ وَبِكَ حَاكَمْتُ فَاغْفِرْ لِي مَا قَدَّمْتُ وَمَا أَخَّرْتُ وَمَا أَسْرَرْتُ وَأَعْلَنْتُ وَمَا أَنْتَ أَعْلَمُ بِهِ مِنِّي لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ)). قَالَ أَبُو عَبْدِ اللهِ قَالَ قَيْسُ بْنُ سَعْدٍ وَأَبُو الزُّبَيْرِ عَنْ طَاوُسٍ قَيَّامٌ. وَقَالَ مُجَاهِدٌ الْقَيُّومُ: الْقَائِمُ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ، وَقَرَأَ عُمَرُ الْقَيَّامُ وَكِلاَهُمَا مَدْحٌ. [راجع: ١١٢٠]

क़याम मुबालिग़ा का सैग़ा है मा'नी वही है या'नी ख़ूब थामने वाला। क़ैस की रिवायत को मुस्लिम और अबू दाऊद ने और अबुज़ुबैर की रिवायत को इमाम मालिक ने मौत़ा में वस्ल किया है।

7443. हमसे यूसुफ़ बिन मूसा ने बयान किया, कहा कि हमसे उसामा ने बयान किया, कहा मुझसे आ'मश ने बयान किया, उनसे ख़ुषैमा बिन अ़ब्दुर्रह़मान ने औरउनसे अ़दी बिन ह़ातिम (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया तुममें कोई ऐसा नहीं होगा जिससे उसका रब कलाम न करे। उसके और बन्दे के बीच कोई तर्जुमान न होगा और न कोई ह़िजाब होगा जो उसे छुपाए रखे। (राजेअ़: 1413)

٧٤٤٣- حَدَّثَنَا يُوسُفُ بْنُ مُوسَى، حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ حَدَّثَنِي الأَعْمَشُ، عَنْ خَيْثَمَةَ، عَنْ عَدِيِّ بْنِ حَاتِمٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((مَا مِنْكُمْ مِنْ أَحَدٍ إِلاَّ سَيُكَلِّمُهُ رَبُّهُ لَيْسَ بَيْنَهُ وَبَيْنَهُ تَرْجُمَانٌ، وَلاَ حِجَابٌ يَحْجُبُهُ)). [راجع: ١٤١٣]

बल्कि हर मोमिन अल्लाह तआ़ला को बग़ैर ह़िजाब के देखेगा और उससे बात करेगा या अल्लाह! हमको भी ये दर्जा नसीब करियो, आमीन।

7444. हमसे अली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अ़ब्दुस्समद ने बयान किया, उनसे अबू इमरान ने, उनसे अबूबक्र बिन अ़ब्दुल्लाह बिन क़ैस ने, उनसे उनके वालिद ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया दो जन्नतें ऐसी होंगी जो ख़ुद और उसमें सारा सामान चाँदी का होगा और दो जन्नतें ऐसी होंगी जो ख़ुद और उसका सारा सामान सोने का होगा और जन्नते अ़दन में क़ौम और अल्लाह के दीदार के बीच सिर्फ़ किब्रियाई की चादर रुकावट होगी जो अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त के चेहरे पर पड़ी होगी।
(राजेअ: 4878)

٧٤٤٤- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ الصَّمَدِ، عَنْ أَبِي عِمْرَانَ، عَنْ أَبِي بَكْرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ قَيْسٍ عَنْ أَبِيهِ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((جَنَّتَانِ مِنْ فِضَّةٍ آنِيَتُهُمَا وَمَا فِيهِمَا وَجَنَّتَانِ مِنْ ذَهَبٍ، آنِيَتُهُمَا وَمَا فِيهِمَا وَمَا بَيْنَ الْقَوْمِ وَبَيْنَ أَنْ يَنْظُرُوا إِلَى رَبِّهِمْ إِلاَّ رِدَاءُ الْكِبْرِ عَلَى وَجْهِهِ فِي جَنَّةِ عَدْنٍ)).
[راجع: ٤٨٧٨]

तश्रीह: मा'लूम हुआ कि जब परवरदिगार को मंज़ूर होगा उस किब्रियाई की चादर को अपने चेहरे पर से हटा देगा और जन्नती उसके दीदार से मुशर्रफ़ होंगे। ये भी मा'लूम हुआ कि जन्नते अ़दन तमाम ह़िजाबों के परे है। जन्नते अ़दन में जब आदमी पहुँच गया तो उसने सारे ह़िजाबों को तै कर लिया। अल्लाह पाक हम सबको हमारे माँ बाप, आल औलाद और तमाम क़ारेईने बुख़ारी शरीफ़ को जन्नतुल अ़दन का दाख़िला नसीब करे आमीन या रब्बल आ़लमीन।

7445. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर हुमैदी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अ़ब्दुल मलिक बिन अअ़यन और जामेअ़ बिन अबी राशिद ने, उनसे अबू वाइल ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया जिसने किसी मुसलमान का माल झूठी क़सम खाकर मार लिया तो वो अल्लाह से इस ह़ाल में मिलेगा कि वो उस पर ग़ज़बनाक होगा। अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि) ने कहा कि फिर आँहज़रत (ﷺ) ने तस्दीक़न क़ुर्आन मजीद की इस आयत की तिलावत की। बिला शुब्हा जो लोग अल्लाह के अ़हद और उसकी क़समों को थोड़ी क़ीमत के बदले में बेच देते हैं यही वो लोग हैं जिनका आख़िरत में कोई ह़िस्सा नहीं और अल्लाह उनसे बात नहीं करेगा, आख़िर आयत तक। (सूरह आले इमरान)। (राजेअ: 2356)

٧٤٤٥- حَدَّثَنَا الْحُمَيْدِيُّ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْمَلِكِ بْنُ أَعْيَنَ وَجَامِعُ بْنُ أَبِي رَاشِدٍ، عَنْ أَبِي وَائِلٍ عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((مَنِ اقْتَطَعَ مَالَ امْرِىءٍ مُسْلِمٍ بِيَمِينٍ كَاذِبَةٍ، لَقِيَ اللهَ وَهُوَ عَلَيْهِ غَضْبَانُ)) قَالَ عَبْدُ اللهِ: ثُمَّ قَرَأَ رَسُولُ اللهِ ﷺ مِصْدَاقَهُ مِنْ كِتَابِ اللهِ جَلَّ ذِكْرُهُ: ﴿إِنَّ الَّذِينَ يَشْتَرُونَ بِعَهْدِ اللهِ وَأَيْمَانِهِمْ ثَمَنًا قَلِيلاً أُولَئِكَ لاَ خَلاَقَ لَهُمْ فِي الآخِرَةِ وَلاَ يُكَلِّمُهُمُ اللهُ﴾ الآيَةَ.
[راجع: ٢٣٥٦]

लफ़्ज़े ह़दीष़ लक़ियल्लाहु व हुव अ़लैहि ग़ज़बानु से बाब का मत़लब निकलता है।

7446. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मुस्नदी ने बयान किया,

٧٤٤٦- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ،

حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ عَمْرٍو، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((ثَلاَثَةٌ لاَ يُكَلِّمُهُمُ اللهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ، وَلاَ يَنْظُرُ إِلَيْهِمْ رَجُلٌ حَلَفَ عَلَى سِلْعَةٍ لَقَدْ أُعْطِيَ بِهَا أَكْثَرَ مِمَّا أُعْطِيَ وَهُوَ كَاذِبٌ، وَرَجُلٌ حَلَفَ عَلَى يَمِينٍ كَاذِبَةٍ بَعْدَ الْعَصْرِ لِيَقْتَطِعَ بِهَا مَالَ امْرِىءٍ مُسْلِمٍ، وَرَجُلٌ مَنَعَ فَضْلَ مَاءٍ فَيَقُولُ اللهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ: الْيَوْمَ أَمْنَعُكَ فَضْلِي كَمَا مَنَعْتَ فَضْلَ مَا لَمْ تَعْمَلْ يَدَاكَ)).

[راجع: ٢٣٥٨]

कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़यैयना ने बयान किया, उनसे अ़म्र बिन दीनार ने, उनसे अबू स़ालेह़ सिमान ने, और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया तीन आदमी ऐसे हैं जिनसे अल्लाह तआ़ला क़यामत के दिन बात नहीं करेगा और न उनकी त़रफ़ रह़मत की नज़र से देखेगा। एक वो जिसने किसी सामान के बारे में क़सम खाई कि उसे उसने इतने में ख़रीदा है, हालाँकि वो झूठा है। दूसरा वो शख़्स़ जिसने अ़स्र के बाद झूठी क़सम इसलिये खाई कि किसी मुसलमान का माल नाह़क़ मार ले और तीसरा वो शख़्स़ जिसने ज़रूरत से फ़ालतू पानी मांगने वाले को नहीं दिया तो अल्लाह तआ़ला क़यामत के दिन उससे कहेगा कि जिस त़रह तूने उस ज़रूरत से ज़्यादा फ़ालतू चीज़ से दूसरे को रोका जिसे तेरे हाथों ने बनाया भी नहीं था, मैं भी तुझे अपना फ़ज़्ल नहीं दूँगा।

(राजेअ़: 2358)

बाब की मुत़ाबक़त इससे हुई कि क़यामत के दिन अल्लाह तआ़ला काफ़िरों और गुनहगारों को अपने दरबारे आ़लिया में शर्फ़े बारयाबी नहीं देगा। ख़ास़ त़ौर पर ये तीन क़िस्म के गुनहगार जिनका ज़िक्र यहाँ हुआ है। अल्लाहुम्म ला तज्अ़ल्ना मिन्हुम आमीन।

٧٤٤٧- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْمُثَنَّى، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ، حَدَّثَنَا أَيُّوبُ، عَنْ مُحَمَّدٍ، عَنِ ابْنِ أَبِي بَكْرَةَ عَنْ أَبِي بَكْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((الزَّمَانُ قَدِ اسْتَدَارَ كَهَيْئَتِهِ يَوْمَ خَلَقَ اللهُ السَّمَاوَاتِ وَالأَرْضَ، السَّنَةُ اثْنَا عَشَرَ شَهْرًا مِنْهَا أَرْبَعَةٌ حُرُمٌ ثَلاَثٌ مُتَوَالِيَاتٌ، ذُو الْقَعْدَةِ، وَذُوا الْحِجَّةِ، وَالْمُحَرَّمُ، وَرَجَبُ مُضَرَ الَّذِي بَيْنَ جُمَادَى وَشَعْبَانَ أَيُّ شَهْرٍ هَذَا؟)) قُلْنَا: اللهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ، فَسَكَتَ حَتَّى ظَنَنَّا أَنَّهُ سَيُسَمِّيهِ بِغَيْرِ اسْمِهِ قَالَ: ((أَلَيْسَ ذَا الْحِجَّةِ؟)) قُلْنَا: بَلَى، قَالَ: ((أَيُّ بَلَدٍ هَذَا؟)) قُلْنَا: اللهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ، فَسَكَتَ حَتَّى ظَنَنَّا أَنَّهُ سَيُسَمِّيهِ

7447. हमसे मुह़म्मद बिन मुष़न्ना ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अ़ब्दुल वह्हाब ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अय्यूब सुख़्तियानी ने बयान किया, उनसे मुह़म्मद बिन सीरीन ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबीबक्र ने बयान किया और उनसे अबूबक्र (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया ज़माना अपनी उस अस़ली क़दीम हैबत पर घूमकर आ गया है जिस पर अल्लाह तआ़ला ने ज़मीन और आसमान को पैदा किया था। साल बारह महीने का होता है जिनमें चार हुर्मत वाले महीने हैं। तीन मुसलसल या'नी ज़ीक़अ़द ज़िलह़िज्ज मुह़र्रम और रजबे मुज़र जो जमादिल आख़िर और शाबान के बीच में आता है। फिर आपने पूछा कि ये कौनसा महीना है? हमने कहा कि अल्लाह और उसके रसूल को ज़्यादा इ़ल्म है। आप ख़ामोश हो गये और हमने समझा कि आप इसका कोई नया नाम रखेंगे लेकिन आपने फ़र्माया क्या ये ज़िलह़िज्ज नहीं है? हमने कहा क्यूँ नहीं। फिर फ़र्माया ये कौनसा शहर है? हमने कहा अल्लाह और उसके

بِغَيْرِ اسْمِهِ قَالَ: ((أَلَيْسَ الْبَلْدَةَ؟)) قُلْنَا: بَلَى. قَالَ: ((فَأَيُّ يَوْمٍ هَذَا؟)) قُلْنَا: اللهُ وَرَسُولُهُ أَعْلَمُ، فَسَكَتَ حَتَّى ظَنَنَّا أَنَّهُ سَيُسَمِّيهِ بِغَيْرِ اسْمِهِ قَالَ: ((أَلَيْسَ يَوْمَ النَّحْرِ؟)) قُلْنَا: بَلَى، قَالَ: ((فَإِنَّ دِمَاءَكُمْ وَأَمْوَالَكُمْ)) قَالَ مُحَمَّدٌ: وَأَحْسِبُهُ قَالَ: ((وَأَعْرَاضَكُمْ عَلَيْكُمْ حَرَامٌ كَحُرْمَةِ يَوْمِكُمْ هَذَا، فِي بَلَدِكُمْ هَذَا فِي شَهْرِكُمْ هَذَا وَسَتَلْقَوْنَ رَبَّكُمْ فَيَسْأَلُكُمْ عَنْ أَعْمَالِكُمْ أَلاَ فَلاَ تَرْجِعُوا بَعْدِي ضُلاَّلاً يَضْرِبُ بَعْضُكُمْ رِقَابَ بَعْضٍ أَلاَ لِيُبَلِّغِ الشَّاهِدُ الْغَائِبَ، فَلَعَلَّ بَعْضَ مَنْ يَبْلُغُهُ أَنْ يَكُونَ أَوْعَى مِنْ بَعْضِ مَنْ سَمِعَهُ)). فَكَانَ مُحَمَّدٌ إِذَا ذَكَرَهُ قَالَ: صَدَقَ النَّبِيُّ ﷺ، ثُمَّ قَالَ: ((أَلاَ هَلْ بَلَّغْتُ، أَلاَ هَلْ بَلَّغْتُ؟)). [راجع: ٦٧]

रसूल को ज़्यादा इल्म है। फिर आप ख़ामोश हो गये और हमने समझा कि आप इसका कोई नया नाम रखेंगे लेकिन आपने फ़र्माया क्या ये बलदे तय्यिबा (मक्का) नहीं है? हमने अर्ज़ किया क्यूँ नहीं। फिर फ़र्माया ये कौनसा दिन है? हमने अर्ज़ किया अल्लाह और उसके रसूल को ज़्यादा इल्म है। फिर आप ख़ामोश हो गये। हमने समझा कि आप इसका कोई और नाम रखेंगे लेकिन आपने फ़र्माया क्या ये यौमुन्नहर (क़ुर्बानी का दिन) नहीं है? हमने कहा क्यूँ नहीं फिर फ़र्माया कि फिर तुम्हारा ख़ून और तुम्हारे अम्वाल। मुहम्मद ने बयान किया कि मुझे ख़्याल है कि ये भी कहा कि और तुम्हारी इज़्ज़त तुम पर उसी तरह हुर्मत वाले हैं जैसे तुम्हारे इस दिन की हुर्मत तुम्हारे इस शहर और इस महीने में है और अन्क़रीब तुम अपने रब से मिलोगे और वो तुम्हारे आमाल के बारे में तुमसे सवाल करेगा। आगाह हो जाओ कि मेरे बाद गुमराह न हो जाना कि एक दूसरे को क़त्ल करने लगो। आगाह हो जाओ! जो मौजूद हैं वो ग़ैर हाज़िरों को मेरी ये बात पहुँचा दें। शायद कोई जिसे बात पहुँचाई गई हो वो यहाँ सुनने वाले से ज़्यादा महफ़ूज़ रखने वाला हो। चुनाँचे मुहम्मद बिन सीरीन जब इसका ज़िक्र करते तो कहते कि आँहज़रत (ﷺ) ने सच फ़र्माया। फिर आपने फ़र्माया हाँ क्या मैंने पहुँचा दिया। हाँ! क्या मैंने पहुँचा दिया।

(राजेअ : 67)

तश्रीह : यहाँ ये हदीष़ इसलिये लाए कि इसमें अल्लाह से मिलने का ज़िक्र है। रजब के साथ मज़र क़बील का ज़िक्र इसलिये लाए कि मज़र वाले रजब का बहुत अदब किया करते थे। आख़िर में क़ुर्आन व हदीष़ याद रखने वालों का ज़िक्र आया। चुनाँचे बाद के ज़मानों में इमाम बुख़ारी, इमाम मुस्लिम जैसे मुहद्दिष़ीन किराम पैदा हुए जिन्होंने हज़ारों अहादीष़ को याद रखा और फ़न्न हदीष़ की ख़िदमत की कि क़यामत तक आने वाले उनके लिये दुआ करते रहेंगे। अल्लाह उन सबको जज़ा-ए-ख़ैर दे और अल्लाह तआला तमाम अगलों और पिछलों को जन्नतुल फ़िरदौस में जमा फ़र्माए आमीन या रब्बल आलमीन।

इस हदीष़ से ये भी ज़ाहिर हुआ कि मुसलमान की बेइज़्ज़ती करना का'बा शरीफ़ की मक्कतुल मुकर्रमा की बेइज़्ज़ती करने के बराबर है मगर कितने लोग हैं जो इस गुनाह के इर्तिकाब से बच गये हैं। इल्ला माशाअल्लाह। ये भी ज़ाहिर हुआ कि मुसलमानों की ख़ानाजंगी बदतरीन गुनाह है उनके माल व जान पर नाहक़ हाथ डालना भी अकबरुल कबाइर (बड़े) गुनाहों में से है। आख़िर में तब्लीग़ के लिये भी आपने ताकीदे शदीद फ़र्माई, **वफ़्फ़कनल्लाहु बिमा युहब्बि व यर्ज़ा।**

٢٥- بَابُ مَا جَاءَ فِي قَوْلِ اللهِ تَعَالَى:

बाब 25 : अल्लाह तआला के इस इर्शाद के बारे में रिवायात कि, बिला शुब्हा अल्लाह की रहमत

नेकोकारों से क़रीब है

﴿إِنَّ رَحْمَةَ اللهِ قَرِيبٌ مِنَ الْمُحْسِنِينَ﴾

7448. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल वाहिद बिन ज़ियाद ने बयान किया, कहा हमसे आ़सिम अहवल ने बयान किया, उनसे अबू उ़श्मान नहदी ने और उनसे उसामा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) की एक साहबज़ादी (हज़रत ज़ैनब रज़ि.) का लड़का जाँकनी के आ़लम में था तो उन्होंने आँहज़रत (ﷺ) को बुला भेजा। आँहज़रत (ﷺ) ने उन्हें कहलाया कि अल्लाह ही का वो है जो वो लेता है और वो भी जिसे वो देता है और सबके लिये एक मुद्दत मुक़र्रर है, पस सब्र करो और उसे ष़वाब का काम समझो। लेकिन उन्होंने फिर दोबारा बुला भेजा और क़सम दिलाई। चुनाँचे आँहज़रत (ﷺ) उठे और मैं भी आपके साथ चला। मुआ़ज़ बिन जबल, उबई बिन कअ़ब और अ़ब्बाद बिन सामित (रज़ि.) भी साथ थे। जब हम साहबज़ादी के घर में दाख़िल हुए तो लोगों ने बच्चे को आँहज़रत (ﷺ) की गोद में दे दिया। उस वक़्त बच्चे की सांस उखड़ रही थी। ऐसा मा'लूम होता था जैसे पुरानी मुश्क। आँहज़रत (ﷺ) ये देखकर रो दिये तो सअ़द बिन उ़बादह (रज़ि.) ने अ़र्ज़ किया, आप रोते हैं! आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया अल्लाह अपने बन्दों में रहम करने वालों पर ही रहम खाता है। (राजेअ: 1284)

٧٤٤٨- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَاحِدِ، حَدَّثَنَا عَاصِمٌ، عَنْ أَبِي عُثْمَانَ عَنْ أُسَامَةَ قَالَ: كَانَ ابْنٌ لِبَعْضِ بَنَاتِ النَّبِيِّ ﷺ يَقْضِي فَأَرْسَلَتْ إِلَيْهِ أَنْ يَأْتِيَهَا فَأَرْسَلَ إِنَّ للهِ مَا أَخَذَ وَ للهِ مَا أَعْطَى، وَكُلٌّ إِلَى أَجَلٍ مُسَمًّى فَلْتَصْبِرْ وَلْتَحْتَسِبْ، فَأَرْسَلَتْ إِلَيْهِ فَأَقْسَمَتْ عَلَيْهِ فَقَامَ رَسُولُ اللهِ ﷺ وَقُمْتُ مَعَهُ، وَمُعَاذُ بْنُ جَبَلٍ وَأُبَيُّ بْنُ كَعْبٍ وَعُبَادَةُ بْنُ الصَّامِتِ فَلَمَّا دَخَلْنَا نَاوَلُوا رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الصَّبِيَّ وَنَفْسُهُ تَقَلْقَلُ فِي صَدْرِهِ حَسِبْتُهُ قَالَ : كَأَنَّهَا شَنَّةٌ فَبَكَى رَسُولُ اللهِ ﷺ فَقَالَ سَعْدُ بْنُ عُبَادَةَ: أَتَبْكِي فَقَالَ : ((إِنَّمَا يَرْحَمُ اللهُ مِنْ عِبَادِهِ الرُّحَمَاءَ)).[راجع: ١٢٨٤]

तश्रीह : दूसरी रिवायत में है कि ये रहम अल्लाह ने अपने बन्दों के दिलों में डाला है। ऐसे लोगों के लिये मुसीबतज़दा लोगों को देखकर दिल में रंज होना एक फ़ित्री बात है, **अर्राहिमून यर्हमुहुमुर्रहमानु सदक़ रसूलुल्लाहि (ﷺ)।**

7449. हमसे उ़बैदुल्लाह बिन सअ़द बिन इब्राहीम ने बयान किया, कहा हमसे यअ़क़ूब बिन इब्राहीम ने, कहा मुझसे मेरे वालिद ने, उनसे सालेह बिन कैसान ने, उनसे अअ़रज ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जन्नत व दोज़ख़ ने अपने रब के हुज़ूर में झगड़ा किया। जन्नत ने कहा ऐ रब! क्या हाल है कि मुझमें कमज़ोर और गिरे पड़े लोग ही दाख़िल होंगे और दोज़ख़ ने कहा कि मुझमें तो दाख़िला के लिये मुतकब्बिरों को ख़ास कर दिया गया है। इस पर अल्लाह तआ़ला ने जन्नत से कहा कि तू मेरी रहमत है और जहन्नम से कहा कि तू मेरा अ़ज़ाब है। तेरे ज़रिये मैं जिसे चाहता हूँ उसमें मुब्तला करता हूँ और तुममें से हर एक की

٧٤٤٩- حَدَّثَنَا عُبَيْدُ اللهِ بْنُ سَعْدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ، حَدَّثَنَا يَعْقُوبُ، حَدَّثَنَا أَبِي عَنْ صَالِحِ بْنِ كَيْسَانَ، عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((اخْتَصَمَتِ الْجَنَّةُ وَالنَّارُ إِلَى رَبِّهِمَا فَقَالَتِ الْجَنَّةُ : يَا رَبِّ مَالَهَا لاَ يَدْخُلُهَا إِلاَّ ضُعَفَاءُ النَّاسِ وَسَقَطُهُمْ وَقَالَتِ النَّارُ يَعْنِي أُوثِرْتُ بِالْمُتَكَبِّرِينَ فَقَالَ اللهُ تَعَالَى لِلْجَنَّةِ: أَنْتِ رَحْمَتِي، وَقَالَ لِلنَّارِ: أَنْتِ عَذَابِي أُصِيبُ

भरती होने वाली है। कहा कि जहाँ तक जन्नत का ता'ल्लुक़ है तो अल्लाह अपनी मख़्लूक़ में किसी पर ज़ुल्म नही करेगा और दोज़ख़ की इस तरह से कि अल्लाह अपनी मख़्लूक़ में से जिसको चाहेगा और दोज़ख़ के लिये पैदा करेगा वो उसमें डाली जाएगी उसके बाद भी दोज़ख़ कहेगी और कुछ मख़्लूक़ है (मैं अभी ख़ाली हूँ) तीन बार ऐसा ही होगा। आख़िर परवरदिगार अपना पैर उसमें रख देगा। उस वक़्त वो भर जाएगी, एक पर एक उलट कर सिमट जाएगी। कहने लगेगी बस बस बस मैं भर गई। (राजेअ : 4849)

بِكِ مَنْ أَشَاءُ وَلِكُلٍّ وَاحِدَةٍ مِنْكُمَا مِلْؤُهَا قَالَ : فَأَمَّا الْجَنَّةُ فَإِنَّ اللهَ لاَ يَظْلِمُ مِنْ خَلْقِهِ أَحَدًا، وَإِنَّهُ يُنْشِىءُ لِلنَّارِ مَنْ يَشَاءُ فَيُلْقَوْنَ فِيهَا فَتَقُولُ: هَلْ مِنْ مَزِيدٍ؟ ثَلاَثًا حَتَّى يَضَعَ فِيهَا قَدَمَهُ فَتَمْتَلِيءُ وَيُرَدُّ بَعْضُهَا إِلَى بَعْضٍ وَتَقُولُ: قَطْ قَطْ قَطْ)).

[راجع: ٤٨٤٩]

ये अल्लाह का क़दम रखना बरहक़ है जिसकी तफ़्सील अल्लाह ही को मा'लूम है उसमें कुरैद करना बिदअ़त है और तस्लीम करना सलफ़ का तरीक़ा है।

7450. हमसे हफ़्स बिन उमर हौज़ी ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम दस्तवाई ने बयान किया, उनसे क़तादा ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, कुछ लोग उन गुनाहों की वजह से जो उन्होंने किये होंगे, आग से झुलस जाएँगे। ये उनकी सज़ा होगी। फिर अल्लाह अपनी रहमत से उन्हें जन्नत में दाख़िल करेगा और उन्हें जहन्नमीन कहा जाएगा। और हम्माम ने बयान किया, उनसे क़तादा ने, उनसे अनस (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से यही हदीष बयान की। (राजेअ : 6559)

٧٤٥٠- حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ عُمَرَ، حَدَّثَنَا هِشَامٌ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((لَيُصِيبَنَّ أَقْوَامًا سَفْعٌ مِنَ النَّارِ بِذُنُوبٍ أَصَابُوهَا عُقُوبَةً، ثُمَّ يُدْخِلُهُمُ اللهُ الْجَنَّةَ بِفَضْلِ رَحْمَتِهِ يُقَالُ لَهُمْ: الْجَهَنَّمِيُّونَ)). وَقَالَ هَمَّامٌ: حَدَّثَنَا قَتَادَةُ حَدَّثَنَا أَنَسٌ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ.

[راجع: ٦٥٥٩]

बाब 26 : अल्लाह तआ़ला का सूरह फ़ातिर में ये फ़र्मान कि बिला शुब्हा अल्लाह आसमानों और ज़मीन को थामे हुए है वो अपनी जगह से टल नहीं सकते

٢٦- باب قَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿إِنَّ اللهَ يُمْسِكُ السَّمَاوَاتِ وَالأَرْضَ أَنْ تَزُولاَ﴾

7451. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अबू अवाना ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे इब्राहीम ने, उनसे अ़ल्क़मा ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने कि एक यहूदी आ़लिम रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास आए और कहा, ऐ मुहम्मद (ﷺ)! क़यामत के दिन अल्लाह तआ़ला आसमानों को एक उँगली पर, ज़मीन को एक उँगली पर, पहाड़ों को एक उँगली पर, पेड़ और नहरों को एक उँगली पर और तमाम मख़्लूक़ात को एक उँगली पर रखेगा। फिर अपने हाथ से इशारा करके कहेगा कि मैं ही बादशाह हूँ। इस पर

٧٤٥١- حَدَّثَنَا مُوسَى، حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنْ عَلْقَمَةَ، عَنْ عَبْدِ اللهِ قَالَ : جَاءَ حَبْرٌ إِلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ فَقَالَ: يَا مُحَمَّدُ إِنَّ اللهَ يَضَعُ السَّمَاءَ عَلَى إِصْبَعٍ، وَالأَرْضَ عَلَى إِصْبَعٍ، وَالْجِبَالَ عَلَى إِصْبَعٍ وَالشَّجَرَ وَالأَنْهَارَ عَلَى إِصْبَعٍ، وَسَائِرَ الْخَلْقِ عَلَى

إِصْبَعٍ ثُمَّ يَقُولُ بِيَدِهِ: أَنَا الْمَلِكُ، فَضَحِكَ رَسُولُ اللهِ ﷺ وَقَالَ: ((﴿وَمَا قَدَرُوا اللهَ حَقَّ قَدْرِهِ﴾)). [راجع: ٤٨١١]

आँहज़रत (ﷺ) हंस दिये और ये आयत पढ़ी, वमा क़दरुल्लाह हक़्क़ा क़दरिही जो सूरह ज़ुमर में है। (राजेअ : 4811)

अल्लाह के लिये उँगली का इष्बात हुआ जिसकी तावील करना तरीक़-ए-सलफ़ सालिहीन के ख़िलाफ़ है।

٢٧- باب مَا جَاءَ فِي تَخْلِيقِ السَّمَاوَاتِ وَالأَرْضِ وَغَيْرِهَا مِنَ الْخَلاَئِقِ

बाब 27 : आसमानों और ज़मीन और दूसरी मख़्लूक़ के पैदा करने का बयान

وَهُوَ فِعْلُ الرَّبِّ تَبَارَكَ وَتَعَالَى وَأَمْرُهُ فَالرَّبُّ بِصِفَاتِهِ وَفِعْلِهِ وَأَمْرِهِ وَهُوَ الْخَالِقُ الْمُكَوِّنُ غَيْرُ مَخْلُوقٍ، وَمَا كَانَ بِفِعْلِهِ وَأَمْرِهِ وَتَخْلِيقِهِ وَتَكْوِينِهِ فَهُوَ مَفْعُولٌ وَمَخْلُوقٌ وَمُكَوَّنٌ.

और ये पैदा करना अल्लाह तबारक व तआला का एक फ़ेअल और उसका अम्र है। पस अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त अपनी सिफ़ात, अपने फ़ेअल और अपने अम्र समेत ख़ालिक़ है, वही बनाने वाला है और ग़ैर मख़्लूक़ है और जो चीज़ भी उसके फ़ेअल, उसके अम्र, उसकी तख़्लीक़ और उसकी तक्वीन से बनी हैं वो सब मख़्लूक़ और मुकव्वन हैं।

तशरीह : ये बाब लाकर इमाम बुख़ारी (रह़.) ने अहले सुन्नत का मज़हब षाबित किया कि अल्लाह की सिफ़ात ख़्वाह ज़ातिया हों जैसे इ़ल्म, क़ुदरत, ख़्वाह अफ़आलिया हों ख़ल्क़, तरज़ीक़, कलाम, नुज़ूल, इस्तवा वग़ैरह ये सब ग़ैर मख़्लूक़ हैं और मुअतज़िला व जहमिया का रद्द किया। इमाम बुख़ारी (रह़.) ने रिसाला ख़ल्क़े अफ़आलुल इ़बाद में लिखा है कि क़दरिया तमाम अफ़आल का ख़ालिक़ बशर को जानते हैं और जबरिया तमाम अफ़आल का ख़ालिक़ और फ़ाइल अल्लाह को कहते हैं और जहमिया कहते हैं फ़ेअल और मफ़ऊ़ल एक है। इसी वजह से वो कलिमा कुन को भी मख़्लूक़ कहते हैं और सलफ़ अहले सुन्नत का ये क़ौल है कि तख़्लीक़ अल्लाह का फ़ेअल है और मख़्लूक़ हमारे अफ़आल हैं न कि अल्लाह तआला के अफ़आल वो अल्लाह की सिफ़ात हैं। अल्लाह की ज़ात सिफ़ात के सिवा बाक़ी सब चीज़ें मख़्लूक़ हैं। (वह़ीदी)

٧٤٥٢- حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ أَبِي مَرْيَمَ، أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ جَعْفَرٍ، أَخْبَرَنِي شَرِيكُ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي نَمِرٍ، عَنْ كُرَيْبٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ: بِتُّ فِي بَيْتِ مَيْمُونَةَ لَيْلَةً وَالنَّبِيُّ ﷺ عِنْدَهَا لأَنْظُرَ كَيْفَ صَلاَةُ رَسُولِ اللهِ ﷺ بِاللَّيْلِ فَتَحَدَّثَ رَسُولُ اللهِ ﷺ مَعَ أَهْلِهِ سَاعَةً ثُمَّ رَقَدَ فَلَمَّا كَانَ ثُلُثُ اللَّيْلِ الآخِرِ أَوْ بَعْضُهُ قَعَدَ فَنَظَرَ إِلَى السَّمَاءِ فَقَرَأَ: ﴿إِنَّ فِي خَلْقِ السَّمَاوَاتِ وَالأَرْضِ - إِلَى قَوْلِهِ لأُولِي - الأَلْبَابِ﴾

7452. हमसे सईद बिन अबी मरयम ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको मुहम्मद बिन जा'फ़र ने ख़बर दी, उन्होंने कहा मुझे शुरैक बिन अ़ब्दुल्लाह बिन अबी नम्र ने ख़बर दी, उन्हें कुरैब ने और उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि एक रात मैंने उम्मुल मोमिनीन मैमूना (रज़ि.) के घर गुज़ारी। उस रात नबी करीम (ﷺ) उन्हीं के पास थे। मेरा मक़्सद रात में आँहज़रत (ﷺ) की नमाज़ को देखना था। आँहज़रत (ﷺ) ने थोड़ी देर तो अपनी अहलिया के साथ बातचीत की, फिर सो गये। जब रात का आख़िरी तिहाई हिस्सा या कुछ हिस्सा बाक़ी रह गया तो आप उठ बैठे और आसमान की तरफ़ देखकर ये आयत पढ़ी। बिला शुब्हा आसमानों और ज़मीन की पैदाइश में अ़क़्ल रखने वालों के लिये निशानियाँ हैं, फिर उठकर

आपने वुज़ू किया और मिस्वाक की। फिर ग्यारह रकअ़तें पढ़ीं। फिर बिलाल (रज़ि.) ने नमाज़ के लिये अज़ान दी और आपने दो रकअ़त नमाज़ पढ़ी, फिर बाहर आ गये और लोगों को सुबह की नमाज़ पढ़ाई। (राजेअ़ : 117)

ثُمَّ قَامَ فَتَوَضَّأَ وَاسْتَنَّ ثُمَّ صَلَّى إِحْدَى عَشْرَةَ رَكْعَةً، ثُمَّ أَذَّنَ بِلاَلٌ بِالصَّلاَةِ فَصَلَّى رَكْعَتَيْنِ ثُمَّ خَرَجَ فَصَلَّى لِلنَّاسِ الصُّبْحَ. [راجع: ١١٧]

तश्रीह : आयत, **इन्न फ़ी ख़ल्क़िस्समावाति वल अर्ज़ि अल्अख़** में अल्लाह तआ़ला ने आसमान और ज़मीन की पैदाइश और उसमें ग़ौर करने का ज़िक्र फ़र्माया है। अल्लाह तआ़ला की सिफ़ाते फ़ेअ़लिया में इख़्तिलाफ़ है। हज़रत इमाम अबू हनीफ़ा (रह.) ने उनको भी क़दीम कहा है और अश्अ़री और मुहक़्क़िक़ीन अहले हदीष़ कहते हैं कि सिफ़ाते फ़ेअ़लिया जैसे कलाम, नुज़ूल, इस्तवा, तक्वीन वग़ैरह ये सब हादिष़ हैं और उनके हुदूष़ से परवरदिगार का हुदूष़ लाज़िम नहीं आता और ये क़ायदा फ़लासफ़ा का बाँधा हुआ कि हवादिष़ का महल्ल भी हादिष़ होता है महज़ ग़लत और लग्व है। अल्लाह तआ़ला हर रोज़ बेशुमार काम करता है। फ़र्माया, **कुल्ल यौमिन हुव फ़ी शान** फिर क्या अल्लाह हादिष़ है हर्गिज़ नहीं वो क़दीम है अब जिन लोगों ने सिफ़ाते फ़ेअ़लिया को भी क़दीम कहा है उनका मतलब ये है कि अस़ल सिफ़त क़दीम है मगर उसका ता'ल्लुक़ हादिष़ है। मष़लन ख़ल्क़ की सिफ़त क़दीम है लेकिन ज़ैद से इसका ता'ल्लुक़ हादिष़ है। इसी तरह सिफ़ते इस्तवा क़दीम है मगर अ़र्श से इसका ता'ल्लुक़ हादिष़ है। उम्मुल मोमिनीन हज़रत मैमूना (रज़ि.) उम्मुल फ़ज़ल हज़रत अ़ब्बास (रज़ि.) की बीवी की बहन हैं जो बेवा हो गई थीं बाद में ख़ुद हज़रत अ़ब्बास की दरख़्वास्त पर उनका हरमे नबवी में दाख़िला हुआ। निकाह ख़ुद हज़रत अ़ब्बास (रज़ि.) ने पाँच सौ दिरहम महर पर किया। ये हुज़ूर (ﷺ) का आख़िरी निकाह था जो माह ज़ीक़अ़दा सन 7 हिजरी मे बमुक़ामे सरिफ़ हुआ। बहुत ही नेक अल्लाह वाली ख़ातून थीं। सन 51 हिजरी में बमुक़ाम सरिफ़ ही इंतिक़ाल फ़र्माया और उसी जगह दफ़्न हुईं। आइशा (रज़ि.) का बयान है कि मैमूना (रज़ि.) स़ालिहा और नेक नाम और हम सबसे ज़्यादा तक़्वा वाली थीं। वो अपने क़राबतदारों से बहुत नेक सुलूक करती थीं। **रज़ियल्लाहु अ़न्हा व अर्ज़ाहा** (आमीन)

बाब 28 : सूरह वस़्स़ाफ़्फ़ात में अल्लाह के फ़र्मान कि, मैं तो पहले ही अपने भेजे हुए बन्दों के बाब में ये फ़र्मा चुका हूँ कि एक रोज़ इनकी मदद होगी और मेरा ही लश्कर ग़ालिब होगा

٢٨- باب قوله تعالى: ﴿وَلَقَدْ سَبَقَتْ كَلِمَتُنَا لِعِبَادِنَا الْمُرْسَلِينَ....﴾

ये बाब लाकर इमाम बुख़ारी (रह.) ने उस तरफ़ इशारा किया है कि सिफ़ाते अफ़्आ़ल जैसे कलाम वग़ैरह क़दीम नहीं हैं वरना उनमें सब्क़त और तक़्दीम और ताख़ीर क्यूँकर हो सकता था।

7453. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, कहा हमसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे अबुज़्ज़िनाद ने, उनसे अअ़रज ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया जब अल्लाह मख़्लूक़ को पैदा कर चुका तो अ़र्श के ऊपर अपने पास ये लिखा कि मेरी रहमत मेरे ग़ुस़्से से आगे बढ़ गई है। (राजेअ़ : 3194)

٧٤٥٣- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، حَدَّثَنِي مَالِكٌ، عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((لَمَّا قَضَى اللهُ الْخَلْقَ كَتَبَ عِنْدَهُ فَوْقَ عَرْشِهِ إِنَّ رَحْمَتِي سَبَقَتْ غَضَبِي)). [راجع: ٣١٩٤]

मा'लूम हुआ कि रहम और ग़ुस़्सा दोनों सिफ़ाते अफ़्आ़लिया में हैं जब तो एक दूसरे से आगे हो सकता है। आयत से कलाम के क़दीम न होने का और हदीष़ से रहम और ग़ुस़्से के क़दीम न होने का इष़्बात किया।

7454. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे आ'मश ने बयान किया, उन्होंने ज़ैद बिन वहब से सुना और उन्होंने अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) से सुना कि हमसे रसूलुल्लाह (ﷺ) ने बयान फ़र्माया जो स़ादिक़ व मस्दूक़ हैं कि इंसान का नुत़्फ़ा माँ के पेट में चालीस दिन और चालीस रातों तक जमा रहता है फिर वो ख़ून की फुटकी बन जाता है। फिर वो गोश्त का लोथड़ा हो जाता है। फिर उसके बाद फ़रिश्ता भेजा जाता है और उसे चार चीज़ों का हुक्म होता है। चुनाँचे वो उसकी रोज़ी, उसकी मौत, उसका अ़मल और ये कि वो बदबख़्त है या नेकबख़्त लिख लेता है। फिर उसमें रूह फूँकता है और तुममें से एक शख़्स जन्नत वालों के से अ़मल करता है और जब उसके और जन्नत के बीच सिर्फ़ एक हाथ का फ़र्क़ रह जाता है तो उसकी तक़्दीर ग़ालिब आती है और वो दोज़ख वालों के अ़मल करने लगता है और दोज़ख़ में दाख़िल होता है। इसी त़रह एक शख़्स दोज़ख़ वालों के अ़मल करता है और जब उसके और दोज़ख़ के बीच सिर्फ़ एक बालिश्त की दूरी रह जाती है तो तक़्दीर ग़ालिब हाती है और जन्नत वालों के काम करने लगता है। फिर जन्नत में दाख़िल होता है। (राजेअ़ : 3208)

٧٤٥٤- حدَّثَنَا آدَمُ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، سَمِعْتُ زَيْدَ بْنَ وَهْبٍ، سَمِعْتُ عَبْدَ اللهِ بْنَ مَسْعُودٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ حَدَّثَنَا رَسُولُ اللهِ ﷺ وَهُوَ الصَّادِقُ الْمَصْدُوقُ: ((إِنَّ خَلْقَ أَحَدِكُمْ يُجْمَعُ فِي بَطْنِ أُمِّهِ أَرْبَعِينَ يَوْمًا وَأَرْبَعِينَ لَيْلَةً، ثُمَّ يَكُونُ عَلَقَةً مِثْلَهُ، ثُمَّ يَكُونُ مُضْغَةً مِثْلَهُ، ثُمَّ يُبْعَثُ إِلَيْهِ الْمَلَكُ فَيُؤْذَنُ بِأَرْبَعِ كَلِمَاتٍ فَيَكْتُبُ رِزْقَهُ وَأَجَلَهُ وَعَمَلَهُ وَشَقِيٌّ أَمْ سَعِيدٌ، ثُمَّ يَنْفَخُ فِيهِ الرُّوحُ، فَإِنَّ أَحَدَكُمْ لَيَعْمَلُ بِعَمَلِ أَهْلِ الْجَنَّةِ حَتَّى لاَ يَكُونُ بَيْنَهَا وَبَيْنَهُ إِلاَّ ذِرَاعٌ فَيَسْبِقُ عَلَيْهِ الْكِتَابُ فَيَعْمَلُ بِعَمَلِ أَهْلِ النَّارِ فَيَدْخُلُ النَّارَ، وَإِنَّ أَحَدَكُمْ لَيَعْمَلُ بِعَمَلِ أَهْلِ النَّارِ حَتَّى مَا يَكُونُ بَيْنَهَا وَبَيْنَهُ إِلاَّ ذِرَاعٌ فَيَسْبِقُ عَلَيْهِ الْكِتَابُ فَيَعْمَلُ عَمَلَ أَهْلِ الْجَنَّةِ فَيَدْخُلُهَا)). [راجع: ٣٢٠٨]

तश्रीह : तो ए'तिबार ख़ात्मा का है। इस ह़दीष़ से ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) ने ये ष़ाबित किया कि अल्लाह का कलाम ह़ादिष़ होता है क्योंकि जब नुत़्फ़ा पर चार महीने गुज़र लेते हैं, उस वक़्त फ़रिश्ता भेजा जाता है और अल्लाह तआ़ला सिर्फ़ चार चीज़ों के लिखने का उसको हुक्म देता है।

7455. हमसे ख़ल्लाद बिन यह़्या ने बयान किया, कहा हमसे उ़मर बिन ज़र्र ने बयान किया, कहा हमने अपने वालिद ज़र्र बिन अ़ब्दुल्लाह से सुना, वो सईद बिन जुबैर से बयान करते थे और वो इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया ऐ जिब्रईल! आपको हमारे पास इससे ज़्यादा आने में क्या रुकावट है जितना आप आते रहते हैं? इस पर ये आयत सूरह मरयम की नाज़िल हुई। और हम नाज़िल नहीं होते लेकिन आपके रब के हुक्म से, उसी का है वो कुछ जो हमारे सामने है और जो हमारे पीछे है, अल आयत। बयान किया कि मुह़म्मद (ﷺ) को यही जवाब आयत में उतरा। (राजेअ़ : 2318)

٧٤٥٥- حدَّثَنَا خَلاَّدُ بْنُ يَحْيَى، حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ ذَرٍّ، سَمِعْتُ أَبِي يُحَدِّثُ عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((يَا جِبْرِيلُ مَا يَمْنَعُكَ أَنْ تَزُورَنَا أَكْثَرَ مِمَّا تَزُورُنَا)) فَنَزَلَتْ : ﴿وَمَا نَتَنَزَّلُ إِلاَّ بِأَمْرِ رَبِّكَ لَهُ مَا بَيْنَ أَيْدِينَا وَمَا خَلْفَنَا﴾ إِلَى آخِرِ الآيَةِ قَالَ: هَذَا كَانَ الْجَوَابَ لِمُحَمَّدٍ ﷺ.

[راجع: ٢٣١٨]

तश्रीह : इस आयत और हदीष से हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने ये षाबित किया कि अल्लाह तआला का कलाम और हुक्म हादिष होता है क्योंकि फ़रिश्तों को वक़्तन फ़वक़्तन इर्शादात और अहकाम सादिर होते रहते हैं और रद्द हुआ उन लोगों का जो अल्लाह का कलाम क़दीम और अज़ली जानते हैं। अल्बत्ता ये सहीह है कि अल्लाह का कलाम मख़्लूक़ नहीं है बल्कि उसकी ज़ात की तरह ग़ैर मख़्लूक़ है। बाक़ी उसमें आवाज़ है, हुरूफ़ हैं, जिस लुग़त में मंज़ूर होता है अल्लाह उसमें कलाम करता है। अहले हदीष का यही ए'तिक़ाद है और जिन मुतकल्लिमीन ने इसके ख़िलाफ़ ए'तिक़ाद क़ायम किये हैं वो ख़ुद भी बहक गये। दूसरों को भी बहका गये। ज़ल्लू फ़अज़ल्लू।

٧٤٥٦- حدَّثَنَا يَحْيَى حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ عَلْقَمَةَ، عَنْ عَبْدِ اللهِ قَالَ: كُنْتُ أَمْشِي مَعَ رَسُولِ اللهِ ﷺ فِي حَرْثٍ بِالْمَدِينَةِ، وَهُوَ مُتَّكِئٌ عَلَى عَسِيبٍ، فَمَرَّ بِقَوْمٍ مِنَ الْيَهُودِ فَقَالَ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ : سَلُوهُ عَنِ الرُّوحِ وَقَالَ بَعْضُهُمْ : لاَ تَسْأَلُوهُ فَسَأَلُوهُ عَنِ الرُّوحِ فَقَامَ مُتَوَكِّئًا عَلَى الْعَسِيبِ وَأَنَا خَلْفَهُ فَظَنَنْتُ أَنَّهُ يُوحَى إِلَيْهِ فَقَالَ: ((﴿وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الرُّوحِ قُلِ الرُّوحُ مِنْ أَمْرِ رَبِّي وَمَا أُوتِيتُمْ مِنَ الْعِلْمِ إِلاَّ قَلِيلاً﴾)) فَقَالَ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ قَدْ قُلْنَا لَكُمْ لاَ تَسْأَلُوهُ.

[راجع: ١٢٥]

7456. हमसे यह्या बिन जा'फ़र ने बयान किया, कहा हमसे वकीअ बिन जर्राह ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे इब्राहीम नख़ई ने, उनसे अल्क़मा ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने कि मैं रसूलुल्लाह (ﷺ) के साथ मदीना के एक खेत में जा रहा था और आँहज़रत (ﷺ) एक खजूर की छड़ी पर टेक लेते जाते थे। फिर आप यहूदियों की एक जमाअत से गुज़रे तो उनमें से कुछ ने कुछ से कहा कि इनसे रूह के बारे में पूछो और कुछ ने कहा कि इसके बारे में मत पूछो। आख़िर उन्होंने पूछा तो आप छड़ी पर टेक लगाकर खड़े हो गये और मैं आपके पीछे था। मैंने समझ लिया कि आप पर वह्य नाज़िल हो रही है। चुनाँचे आपने ये आयत पढ़ी, और लोग आपसे रूह के बारे में पूछते हैं, कह दीजिए कि रूह मेरे रब के अम्र में से है और तुम्हें इल्म बहुत थोड़ा दिया गया है। (सूरह बनी इस्राईल) इस पर कुछ यहूदियों ने अपने साथियों से कहा कि हमने कहा न था कि मत पूछो (तफ़्सील आइन्दा आने वाली हदीष में मुलाहिज़ा हो)। (राजेअ : 125)

٧٤٥٧- حدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ حَدَّثَنِي مَالِكٌ، عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ، قَالَ: ((تَكَفَّلَ اللهُ لِمَنْ جَاهَدَ فِي سَبِيلِهِ لاَ يُخْرِجُهُ إِلاَّ الْجِهَادُ فِي سَبِيلِهِ، وَتَصْدِيقُ كَلِمَاتِهِ بِأَنْ يُدْخِلَهُ الْجَنَّةَ أَوْ يُرْجِعَهُ إِلَى مَسْكَنِهِ الَّذِي خَرَجَ مِنْهُ مَعَ مَا نَالَ مِنْ أَجْرٍ أَوْ غَنِيمَةٍ)).

7457. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, कहा हमसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे अबुज़्ज़िनाद ने, उनसे अअरज ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया जिस शख़्स ने अल्लाह के रास्ते में जिहाद किया और उसके लिये निकलने का मक़्सद उसके रास्ते में जिहाद और उसके कलाम की तस्दीक़ के सिवा और कुछ नहीं था तो अल्लाह उसका ज़ामिन है कि उसे जन्नत में दाख़िल करे (अगर वो शहीद हो गया) या षवाब और माले ग़नीमत के साथ उसे वहीं वापस लौटाए जहाँ से वो आया है।

(राजेअ: 36)

[راجع: ٣٦]

इस हदीष़ की मुनासबत बाब के तर्जुमे से ये है कि इसमें अल्लाह के कलाम का ज़िक्र है जो क़ुर्आन के अ़लावा है। हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) को यही षाबित करना है कि अल्लाह तआ़ला क़ुर्आन के अ़लावा भी कलाम करता है ये जहमिया मुअ़तज़िला मुंकिरीने हदीष़ की तर्दीद है।

7458. हमसे मुहम्मद बिन कष़ीर ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे अबू वाइल ने और उनसे अबू मूसा (रज़ि.) ने कि एक शख़्स़ नबी करीम (ﷺ) के पास आया और कहा कि कोई शख़्स़ हमिय्यत की वजह से लड़ता है, कोई बहादुरी की वजह से लड़ता है और कोई दिखावे के लिये लड़ता है। तो उनमें कौन अल्लाह के रास्ते में है? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि जो इस लिये लड़ता है कि अल्लाह का कलिमा ही बुलंद रहे।

(राजेअ: 123)

٧٤٥٨- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ كَثِيرٍ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي وَائِلٍ، عَنْ أَبِي مُوسَى قَالَ: جَاءَ رَجُلٌ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ الرَّجُلُ: يُقَاتِلُ حَمِيَّةً، وَيُقَاتِلُ شَجَاعَةً، وَيُقَاتِلُ رِيَاءً، فَأَيُّ ذَلِكَ فِي سَبِيلِ اللهِ؟ قَالَ: ((مَنْ قَاتَلَ لِتَكُونَ كَلِمَةُ اللهِ هِيَ الْعُلْيَا فَهُوَ فِي سَبِيلِ اللهِ)).

[راجع: ١٢٣]

शिर्क और कुफ़्र दब जाए तौहीद व सुन्नत का बोल बाला हो, वो अल्लाह की राह मे लड़ता है। बाक़ी उन लड़ाइयों में से कोई लड़ाई अल्लाह की राह में नहीं है। इसी तरह माल व दौलत या हुकूमत के लिये लड़ाई भी अल्लाह की राह में लड़ना नहीं है। हदीष़ में अल्लाह के कलिमे का ज़िक्र है। यही बाब से मुनासबत है।

बाब 29 : अल्लाह तआ़ला का इर्शाद सूरह नहल में इन्नमा क़ौलुना लिशैइन अल्अख़,

या'नी मैं तो जब कोई चीज़ बनाना चाहता हूँ तो कह देता हूँ हो जा तो वो हो जाती है।

٢٩- باب قَوْلِ اللهِ تَعَالَى :

﴿إِنَّمَا قَوْلُنَا لِشَيْءٍ إِذَا أَرَدْنَاهُ أَنْ نَقُولَ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ﴾

तशरीह: सूरह यासीन में है कि **इन्नमा अमरहू इज़ा अराद शैअन अय्यंक़ूल लहू कुन फ़यकून।** (सूरह यासीन : 82) मत़लब इमाम बुख़ारी (रह़.) का इस बाब से ये है कि क़ौल और अम्र दोनों से एक ही चीज़ मुराद है। या'नी हक़ तआ़ला का कलिमा-ए-कुन फ़र्माना। अल्लाह ने सब मख़्लूक़ को कलिमा-ए-कुन से पैदा फ़र्माया। अगर कुन भी मख़्लूक़ होता तो मख़्लूक़ का मख़्लूक़ से पैदा करना लाज़िम आता।

7459. हमसे शिहाब बिन अ़ब्बाद ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम बिन हुमैद ने बयान किया, उनसे इस्माईल ने, उनसे क़ैस ने, उनसे मुग़ीरह बिन शुअ़बा (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना, आपने फ़र्माया कि मेरी उम्मत में से एक गिरोह दूसरों पर ग़ालिब रहेगा, यहाँ तक कि, अमरुल्लाह या'नी (क़यामत) आ जाएगी।

(राजेअ: 71, 3640)

٧٤٥٩- حَدَّثَنَا شِهَابُ بْنُ عَبَّادٍ، حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ حُمَيْدٍ، عَنْ إِسْمَاعِيلَ عَنْ قَيْسٍ، عَنِ الْمُغِيرَةِ بْنِ شُعْبَةَ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((لاَ يَزَالُ مِنْ أُمَّتِي طَائِفَةٌ ظَاهِرِينَ عَلَى النَّاسِ حَتَّى يَأْتِيَهُمْ أَمْرُ اللهِ)).

[راجع: ٧١، ٣٦٤٠]

वो गिरोह वही है जिसने **मा अना अ़लैहि व अस्हाबी** को अपना दस्तूरुल अ़मल बनाया। जिससे सच्चे अहले हदीष़ों की

जमाअ़त मुराद है कि उम्मत मे ये लोग फ़िर्क़ाबन्दी से महफ़ूज़ रहे और सिर्फ़ क़ालल्लाहु व क़ालर्रसूल को इन्होंने अपना मज़हब व मसलक क़रार दिया और तौहीद व सुन्नत को अपना मशरब बनाया। जिनका क़ौल है,

मा अहले ह़दीष़ीम दग़ाराना शनासीम सद शुक्र कि दर मज़हब मा ह़ीला व फ़न नीस्त

अइम्मा अरबआ़ और कितने ही मुह़क़्क़िक़ीन, फ़ुक़हा-ए-किराम भी इसी में दाख़िल हैं। जिन्होंने अंधी तक़्लीद को अपना शिआ़र नहीं बनाया। **कष़्ष़रल्लाहु मसाअ़यहुम** (आमीन)

7460. हमसे हुमैदी ने बयान किया, कहा हमसे वलीद बिन मुस्लिम ने बयान किया, कहा हमसे इब्ने जाबिर ने बयान किया, कहा मुझसे ड़मैर बिन हानी ने बयान किया, उन्होंने मुआ़विया (रज़ि.) से सुना, बयान किया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना, आपने फ़र्माया कि मेरी उम्मत में से एक गिरोह हमेशा क़ुर्आन व ह़दीष़ पर क़ायम रहेगा, उसे झुठलाने वाले और मुख़ालिफ़ीन कोई नुक़्सान नहीं पहुँचा सकेंगे, यहाँ तक कि अम्रुल्लाह (क़यामत) आ जाएगी और वो इसी ह़ाल में होंगे। इस पर मालिक इब्ने यख़ामिर ने कहा कि मैंने मुआ़ज़ (रज़ि.) से सुना, वो कहते थे कि ये गिरोह शाम में होगा। इस पर मुआ़विया (रज़ि.) ने कहा कि ये मालिक (रज़ि.) कहते हैं कि मुआ़ज़ (रज़ि.) ने कहा था कि ये गिरोह शाम में होगा।

٧٤٦٠- حَدَّثَنَا الْحُمَيْدِيُّ، حَدَّثَنَا الْوَلِيدُ بْنُ مُسْلِمٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ جَابِرٍ حَدَّثَنِي عُمَيْرُ بْنُ هَانِيءٍ أَنَّهُ سَمِعَ مُعَاوِيَةَ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((لاَ يَزَالُ مِنْ أُمَّتِي أُمَّةٌ قَائِمَةٌ بِأَمْرِ اللهِ، لاَ يَضُرُّهُمْ مَنْ كَذَّبَهُمْ وَلاَ مَنْ خَالَفَهُمْ، حَتَّى يَأْتِيَ أَمْرُ اللهِ وَهُمْ عَلَى ذَلِكَ)) فَقَالَ مَالِكُ بْنُ يُخَامِرَ: سَمِعْتُ مُعَاذًا يَقُولُ: وَهُمْ بِالشَّامِ فَقَالَ مُعَاوِيَةُ: هَذَا مَالِكٌ يزعم أَنَّهُ سَمِعَ مُعَاذًا يَقُولُ: وَهُمْ بِالشَّامِ.

7461. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐ़ब ने ख़बर दी, उन्हें अ़ब्दुल्लाह बिन अबी हुसैन ने, कहा हमसे नाफ़ेअ़ बिन जुबैर ने बयान किया और उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि .) ने कहा कि नबी करीम (ﷺ) मुसैलमा के पास रुके। वो अपने ह़ामियों के साथ मदीना में आया था और उससे फ़र्माया कि अगर तू मुझसे ये लकड़ी का टुकड़ा भी मांगे तो मैं ये भी तुझको नहीं दे सकता और तुम्हारे बारे में अल्लाह ने जो हुक्म दे रखा है तू उससे आगे नहीं बढ़ सकता और अगर तूने इस्लाम से पीठ फेरी तो अल्लाह तुझे हलाक कर देगा। (राजेअ़: 3620)

٧٤٦١- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي حُسَيْنٍ، حَدَّثَنَا نَافِعُ بْنُ جُبَيْرٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ وَقَفَ النَّبِيُّ ﷺ عَلَى مُسَيْلِمَةَ فِي أَصْحَابِهِ فَقَالَ: ((لَوْ سَأَلْتَنِي هَذِهِ الْقِطْعَةَ مَا أَعْطَيْتُكَهَا وَلَنْ تَعْدُوَ أَمْرَ اللهِ فِيكَ وَلَئِنْ أَدْبَرْتَ لَيَعْقِرَنَّكَ اللهُ)).

[راجع: ٣٦٢٠]

तश्रीह: मुसैलमा कज़्ज़ाब ने यमामा में नुबुव्वत का दा'वा किया था और बहुत से लोग उसके पैरोकार हो गये थे। वो लोगों को शुअ़बदा दिखा दिखाकर गुमराह करता था। वो मदीना आया और आँह़ज़रत (ﷺ) से ये दरख़्वास्त की कि अगर आप अपने बाद मुझको ख़लीफ़ा कर जाएँ तो मैं अपने साथियों के साथ आप पर ईमान ले आता हूँ। उस वक़्त आपने ये ह़दीष़ फ़र्माई कि ख़िलाफ़त तो बड़ी चीज़ है मैं एक छड़ी का टुकड़ा भी तुझको नहीं दूँगा। आख़िर मुसैलमा अपने साथियों को लेकर चला गया और यमामा के मुल्क में उसकी जमाअ़त बहुत बढ़ गई। ह़ज़रत सिद्दीक़े अकबर (रज़ि.) ने अपने अ़हदे ख़िलाफ़त में उस पर लश्करकशी की जिसमें आख़िर मुसलमान ग़ालिब आए और वह़शी ने उसे क़त्ल किया, उसके सब साथी तितर-बितर हो गये। ह़दीष़ में अम्रुल्लाह का लफ़्ज़ आया है यही बाब से मुनासबत है।

7462. हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अब्दुल वाहिद बिन ज़ियाद ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे इब्राहीम नख़ई ने, उनसे अल्क़मा बिन क़ैस ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं नबी करीम (ﷺ) के साथ मदीना के एक खेत में चल रहा था। आँहज़रत (ﷺ) अपने हाथ की छड़ी का सहारा लेते जाते थे, फिर हम यहूदियों की एक जमाअत के पास से गुज़रे तो उन लोगों ने आपस में कहा कि इनसे रूह के बारे में पूछो। कुछ यहूदियों ने मश्वरा दिया कि न पूछो, कहीं कोई ऐसी बात न कहें जिसका (उनकी ज़ुबान से निकलना) तुम पसंद न करो। लेकिन कुछ ने इसरार किया कि नहीं! हम पूछेंगे। चुनाँचे उनमें से एक ने उठकर कहा ऐ अबुल क़ासिम (ﷺ)! रूह क्या चीज़ है? आँहज़रत (ﷺ) इस पर ख़ामोश हो गये। मैंने समझ लिया कि आप पर वह्य नाज़िल हो रही है। फिर आपने ये आयत पढ़ी, और लोग आपसे रूह के बारे में पूछते हैं। कह दीजिए कि रूह मेरे रब के अम्र में से है और तुम्हें इसका इल्म बहुत थोड़ा दिया गया है। (सूरह बनी इस्राईल) आ'मश ने कहा कि हमारी क़िरात में इसी तरह है। (राजेअ : 125)

٧٤٦٢- حَدَّثَنَا مُوسَى بْنُ إِسْمَاعِيلَ، عَنْ عَبْدِ الْوَاحِدِ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ عَلْقَمَةَ عَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ قَالَ بَيْنَا أَنَا أَمْشِي مَعَ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فِي بَعْضِ حَرْثِ الْمَدِينَةِ وَهُوَ يَتَوَكَّأُ عَلَى عَسِيبٍ مَعَهُ فَمَرَرْنَا عَلَى نَفَرٍ مِنَ الْيَهُودِ فَقَالَ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ: سَلُوهُ عَنِ الرُّوحِ؟ فَقَالَ بَعْضُهُمْ: لاَ تَسْأَلُوهُ أَنْ يَجِيءَ فِيهِ بِشَيْءٍ تَكْرَهُونَهُ فَقَالَ بَعْضُهُمْ: لَنَسْأَلَنَّهُ فَقَامَ إِلَيْهِ رَجُلٌ مِنْهُمْ فَقَالَ: يَا أَبَا الْقَاسِمِ مَا الرُّوحُ؟ فَسَكَتَ عَنْهُ النَّبِيُّ ﷺ فَعَلِمْتُ أَنَّهُ يُوحَى إِلَيْهِ فَقَالَ: ((﴿وَيَسْأَلُونَكَ عَنِ الرُّوحِ قُلِ الرُّوحُ مِنْ أَمْرِ رَبِّي وَمَا أُوتُوا مِنَ الْعِلْمِ إِلاَّ قَلِيلاً﴾)) قَالَ الأَعْمَشُ: هَكَذَا فِي قِرَاءَتِنَا.

[راجع: ١٢٥]

तश्रीह : मशहूर क़िरात में **वमा उतीतुम** है। रूह के बारे में अल्लाह तआला ने जो फ़र्माया वो हक़ीक़त है कि इस क़द्र कद व काविश के बावजूद आज तक दुनिया को रूह का हक़ीक़ी इल्म न हो सका। यहूदी इस मा'कूल जवाब को सुनकर बिलकुल ख़ामोश हो गये क्योंकि आगे क़ील और क़ाल का दरवाज़ा ही बन्द कर दिया गया। आयत **कुलिर्रूह मिन अम्रि रब्बी** मे रूह की हक़ीक़त को वाज़ेह कर दिया गया कि वो एक अम्रे रब है जब तक वो जानदार में है, उसकी क़द्र व क़ीमत है और जब वो इससे अल्लाह के हुक्म से जुदा हो जाए तो वो जानदार बेक़द्र व क़ीमत होकर रह जाता है। रूह के बारे में फ़लासफ़ा और मौजूदा साइंसदानों ने कुछ कहा है वो सब तख़्मीनी बातें हैं चूँकि ये सिलसिला ज़िक्रे रूह हदीष़ में अम्रे रब का ज़िक्र है इसीलिये इस हदीष़ को यहाँ लाया गया।

बाब 30 : सूरह कहफ़ में अल्लाह तआला का

इर्शाद, कहिये कि अगर समुन्दर मेरे रब के कलिमात को लिखने के लिये रोशनाई बन जाएँ तो समुन्दर ख़त्म हो जाएँगे इससे पहले कि मेरे रब के कलिमात ख़त्म होंगे इतना ही हम और बढ़ा दें।

और सूरह लुक़्मान में फ़र्माया और अगर ज़मीन के सारे दरख़्त

٣٠- باب قَوْلِ اللهِ تَعَالَى:

﴿قُلْ لَوْ كَانَ الْبَحْرُ مِدَادًا لِكَلِمَاتِ رَبِّي لَنَفِدَ الْبَحْرُ قَبْلَ أَنْ تَنْفَدَ كَلِمَاتُ رَبِّي وَلَوْ جِئْنَا بِمِثْلِهِ مَدَدًا﴾. ﴿وَلَوْ أَنَّ مَا فِي الأَرْضِ مِنْ شَجَرَةٍ أَقْلاَمٌ وَالْبَحْرُ يَمُدُّهُ مِنْ بَعْدِهِ

क़लम बन जाएँ और सात समुन्दर रोशनाई के हो जाएँ तो भी मेरे रब के कलिमात नहीं ख़त्म होंगे। बिलाशुब्हा तुम्हारा रब ही वो है जिसने आसमानों को और ज़मीन को छः दिनों में पैदा किया, फिर वो अ़र्श पर बैठा। वो रात को दिन से ढाँपता है जो एक दूसरे की त़लब में दौड़ते हैं और सूरज और चाँद और सितारे उसके हुक्म के ताबेअ़ हैं। आगाह हो जाओ कि ख़ल्क़ और अम्र उसी के लिये है। अल्लाह बाबरकत है जो दोनों जहान का पालने वाला है।

سَبْعَةُ أَبْحُرٍ مَا نَفِدَتْ كَلِمَاتُ اللهِ﴾. ﴿إِنَّ رَبَّكُمُ اللهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَى عَلَى الْعَرْشِ يُغْشِي اللَّيْلَ النَّهَارَ يَطْلُبُهُ حَثِيثًا وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ وَالنُّجُومَ مُسَخَّرَاتٍ بِأَمْرِهِ أَلاَ لَهُ الْخَلْقُ وَالأَمْرُ تَبَارَكَ اللهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ﴾.

इन आयतों को लाकर इमाम बुख़ारी (रह़.) ने ये स़ाबित किया है कि अम्र ख़ल्क़ में दाख़िल नहीं। जब तो फ़र्माया **अला लहुल ख़ल्क़ु वल्अम्रू** और दूसरी आयात और अह़ादीष़ में कलिमात से वही अवामिर और इर्शादात मुराद हैं। अ़र्श पर अल्लाह का इस्तवा एक ह़क़ीक़त है जिसकी कुरैद में जाना बिदअ़त और कैफ़ियत मा'लूम करने की कोशिश करना जिहालत और उसे हू ब हू तस्लीम कर लेना त़रीक़ा सलफ़े स़ालिह़ीन है। क़ुर्आन मजीद की सात आयात में अल्लाह के अ़र्श पर मुस्तवी होने का ज़िक्र है। वो अ़र्श से सारी कायनात पर हुकूमत कर रहा है।

4763. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको इमाम मालिक ने ख़बर दी, उन्हें अबुज़्ज़िनाद ने, उन्हें अअ़रज ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया जिसने अल्लाह के रास्ते में जिहाद किया और अपने घर से स़िर्फ़ इस ग़र्ज़ से निकला कि ख़ालिस़ अल्लाह के रास्ते में जिहाद करे और उसके कलिमे तौह़ीद की तस्दीक़ करे तो अल्लाह तआ़ला उसकी ज़मानत ले लेता है कि उसे जन्नत में दाख़िल करेगा या फिर स़वाब और ग़नीमत के साथ उसके घर वापस करेगा। (राजेअ़ : 36)

٧٤٦٣- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ، أَخْبَرَنَا مَالِكٌ، عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((تَكَفَّلَ اللهُ لِمَنْ جَاهَدَ فِي سَبِيلِهِ لاَ يُخْرِجُهُ مِنْ بَيْتِهِ، إِلاَّ الْجِهَادُ فِي سَبِيلِهِ وَتَصْدِيقُ كَلِمَتِهِ أَنْ يُدْخِلَهُ الْجَنَّةَ أَوْ يَرُدَّهُ إِلَى مَسْكَنِهِ بِمَا نَالَ مِنْ أَجْرٍ أَوْ غَنِيمَةٍ)). [راجع: ٣٦]

तश्रीह : कलिमा से कलिमा त़य्यिबा मुराद है जिसकी तस्दीक़ करना ईमान की अव्वलीन बुनियाद है। जिसकी दिल से तस्दीक़ करना, ज़ुबान से इसका इक़रार करना और अ़मल से इसका षुबूत देना ज़रूरी है।

बाब 31 : मशिय्यत और इराद-ए-ख़ुदावन्दी का

٣١- باب فِي الْمَشِيئَةِ وَالإِرَادَةِ

बयान और अल्लाह ने सूरह इंफ़ितरत में फ़र्माया, तुम कुछ नहीं चाह सकते जब तक अल्लाह न चाहे, और सूरह आले इमरान में फ़र्माया कि, वो अल्लाह जिसे चाहता है मुल्क देता है और सूरह कहफ़ में फ़र्माया, और तुम किसी चीज़ के बारे में ये न कहो कि में कल ये काम करने वाला हूँ मगर ये कि कि अल्लाह चाहे, और सूरह क़स़स़ में फ़र्माया कि, आप जिसे चाहें हिदायत नहीं

﴿وَمَا تَشَاؤُونَ إِلاَّ أَنْ يَشَاءَ اللهُ﴾ - وَقَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿تُؤْتِي الْمُلْكَ مَنْ تَشَاءُ﴾ ﴿وَلاَ تَقُولَنَّ لِشَيْءٍ إِنِّي فَاعِلٌ ذَلِكَ غَدًا إِلاَّ أَنْ يَشَاءَ اللهُ﴾ - ﴿إِنَّكَ لاَ تَهْدِي مَنْ أَحْبَبْتَ وَلَكِنَّ اللهَ يَهْدِي مَنْ

يَشَاءُ﴾ قَالَ سَعِيدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ: عَنْ أَبِيهِ نَزَلَتْ فِي أَبِي طَالِبٍ: ﴿يُرِيدُ اللهُ بِكُمُ الْيُسْرَ وَلاَ يُرِيدُ بِكُمُ الْعُسْرَ﴾.

दे सकते अल्बत्ता अल्लाह जिसे चाहता है हिदायत देता है, सईद बिन मुसय्यब ने अपने वालिद से कहा कि जनाब अबू तालिब के बारे में ये आयते मज़्कूरा नाज़िल हुई। और सूरह बक़रः में फ़र्माया कि, अल्लाह तुम्हारे साथ आसानी चाहता है और तुम्हारे साथ तंगी नहीं चाहता।

तश्रीह: इस बाब के लाने से इमाम बुख़ारी (रह.) की ग़र्ज़ ये है कि मशिय्यत और इरादा दोनों षाबित करें। क्योंकि दोनों एक ही हैं जबकि आयते क़ुर्आनी **फ़अआलुल लिमा युरीद** और **यफ़्अलुल्लाहु मा यशाउ** से षाबित होता है। मज़्कूरा आयात से मशिय्यते इलाही और इरादा दोनों को एक ही षाबित किया गया है।

٧٤٦٤- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ، عَنْ عَبْدِ الْعَزِيزِ، عَنْ أَنَسٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِذَا دَعَوْتُمُ اللهَ فَاعْزِمُوا فِي الدُّعَاءِ، وَلاَ يَقُولَنَّ أَحَدُكُمْ إِنْ شِئْتَ فَأَعْطِنِي فَإِنَّ اللهَ لاَ مُسْتَكْرِهَ لَهُ)). [راجع: ٦٣٣٨]

7464. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अ़ब्दुल वारिष ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ ने बयान किया, उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया जब तुम दुआ़ करो तो अ़ज़्म के साथ करो और कोई दुआ़ में ये न कहे कि अगर तू चाहे तो फ़लाँ चीज़ मुझे अ़ता कर, क्योंकि अल्लाह से कोई ज़बरदस्ती करने वाला नहीं। (राजेअ़ : 6338)

तश्रीह: दुआ़ पूरे वषूक़ और भरोसे के साथ होनी ज़रूरी है। इस अ़क़ीदे के साथ कि अल्लाह तआ़ला ज़रूर दुआ़ क़ुबूल करेगा। जल्दी या ताख़ीर मुम्किन है मगर दुआ़ ज़रूर रंग लाकर रहेगी जैसा कि रोज़मर्रा के तजरबात हैं।

٧٤٦٥- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ ح وَحَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ حَدَّثَنَا أَخِي عَبْدُ الْحَمِيدِ، عَنْ سُلَيْمَانَ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ أَبِي عَتِيقٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ عَلِيِّ بْنِ حُسَيْنٍ أَنَّ حُسَيْنَ بْنَ عَلِيٍّ عَلَيْهِمَا السَّلاَمُ أَخْبَرَهُ أَنَّ عَلِيَّ بْنَ أَبِي طَالِبٍ أَخْبَرَهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ طَرَقَهُ وَفَاطِمَةَ بِنْتَ رَسُولِ اللهِ ﷺ لَيْلَةً فَقَالَ لَهُمْ : ((أَلاَ تُصَلُّونَ؟)) قَالَ عَلِيٌّ فَقُلْتُ: يَا رَسُولَ اللهِ إِنَّمَا أَنْفُسُنَا بِيَدِ اللهِ، فَإِذَا شَاءَ أَنْ يَبْعَثَنَا بَعَثَنَا فَانْصَرَفَ رَسُولُ اللهِ ﷺ حِينَ قُلْتُ ذَلِكَ وَلَمْ يَرْجِعْ

7465. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुह्री ने, (दूसरी सनद) और हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, उन्होंने कहा मुझसे मेरे भाई अ़ब्दुल हमीद ने बयान किया, उनसे सुलैमान ने, उनसे मुहम्मद बिन अबी अ़तीक़ ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उनसे अ़ली बिन हुसैन ने बयान किया, हुसैन बिन अ़ली (रज़ि.) ने उन्हें ख़बर दी और उन्हें अ़ली बिन अबी तालिब (रज़ि.) ने ख़बर दी कि रसूलुल्लाह (ﷺ) उनके और फ़ातिमा (रज़ि.) के घर रात में तशरीफ़ लाए और उनसे कहा क्या तुम लोग नमाज़े तहज्जुद नहीं पढ़ते। अ़ली (रज़ि.) ने कहा कि मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! हमारी जानें अल्लाह के हाथ में हैं, जब वो हमें उठाना चाहेगा उठा देगा। जब मैंने ये बात कही तो आँहजरत (ﷺ) वापस चले गये और मुझे कोई जवाब नहीं दिया। अल्बत्ता मैंने आपको वापस जाते वक़्त ये कहते हुए सुना। आप अपनी रान पर हाथ मारकर ये फ़र्मा रहे थे कि इंसान बड़ा ही बहष करने वाला है।

(राजेअ : 1127)

إِلَيَّ شَيْئًا ثُمَّ سَمِعْتُهُ وَهُوَ مُدْبِرٌ يَضْرِبُ فَخِذَهُ وَيَقُولُ: ﴿وَكَانَ الإِنْسَانُ أَكْثَرَ شَيْءٍ جَدَلاً﴾. [راجع: ١١٢٧]

ये सूरह कहफ़ की आयत, **व कानल इंसानु अकषर शैइन जदला** (कहफ़ : 54) ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) का जवाब ह़क़ीक़त के लिहाज़ से तो स़ह़ीह़ था। मगर अदब का तक़ाज़ा ये था कि इस नमाज़ की तौफ़ीक़ के लिये अल्लाह से दुआ करते और आँह़ज़रत (ﷺ) से कराते तो बेहतर होता और रसूले करीम (ﷺ) भी ख़ुश ख़ुश लौटते मगर **कानल इंसानु अ़जूला** बाब और तमाम अह़ादीष़ से ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) का मक़्स़द जबरिया क़दरिया मुअ़तज़िला जैसे गुमराह फ़िर्क़ों की तर्दीद करना है जो मशिय्यत और इरादा-ए-इलाही में फ़र्क़ करते हैं ।

7466. हमसे मुह़म्मद बिन सिनान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे फ़ुलैह़ बिन सुलैमान ने, उन्होंने कहा हमसे हिलाल बिन अ़ली ने, उनसे अ़त़ा बिन यसार ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, मोमिन की मिष़ाल खेत के नर्म पौधे की सी है कि जिधर की हवा चलती है तो उसके पत्ते उधर ही झुक जाते हैं और जब हवा रुक जाती है तो पत्ते भी बराबर हो जाते हैं। इसी त़रह़ मोमिन आज़माइशों में बचाया जाता है लेकिन काफ़िर की मिष़ाल शमशाद के सख़्त पेड़ जैसी है कि एक ह़ालत पर खड़ा रहता है यहाँ तक कि अल्लाह जब चाहता है उसे उखाड़ देता है। (राजेअ : 5644)

٧٤٦٦- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سِنَانٍ، حَدَّثَنَا فُلَيْحٌ، حَدَّثَنَا هِلاَلُ بْنُ عَلِيٍّ، عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((مَثَلُ الْمُؤْمِنِ كَمَثَلِ خَامَةِ الزَّرْعِ، يَفِيءُ وَرَقُهُ مِنْ حَيْثُ أَتَتْهَا الرِّيحُ تُكَفِّئُهَا، فَإِذَا سَكَنَتِ اعْتَدَلَتْ، وَكَذَلِكَ الْمُؤْمِنُ يُكَفَّأُ بِالْبَلاَءِ، وَمَثَلُ الْكَافِرِ كَمَثَلِ الأَرْزَةِ صَمَّاءُ مُعْتَدِلَةٌ حَتَّى يَقْصِمَهَا اللهُ إِذَا شَاءَ)). [راجع: ٥٦٤٤]

तश्रीह : मोमिन की मिष़ाल कुछ नर्म खेती से है जिसके पत्ते हवा के रुख़ पर मुड़ जाते हैं इसी त़रह़ मोमिन हर हुक्मे इलाही के सामने सरंगूँ हो जाता है और काफ़िर की मिष़ाल स़नूबर के पेड़ जैसी है जो अह़कामे इलाही के सामने मुड़ना झुकना जानता ही नहीं। यहाँ तक कि अल्लाह के अ़ज़ाब मौत वग़ैरह की शक्ल में आकर उसे एक दम मोड़ देता है।

7467. हमसे ह़कम बिन नाफ़ेअ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको शुऐ़ब ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुह्री ने, कहा मुझको सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह ने ख़बर दी और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना, आप मिम्बर पर खड़े फ़र्मा रहे थे कि तुम्हारा ज़माना गुज़िश्ता उम्मतों के मुक़ाबले में ऐसा है जैसे अ़स्र से सूरज डूबने तक का वक़्त होता है। तौरात वालों को तौरात दी गई और उन्होंने उस पर अ़मल किया, यहाँ तक कि दिन आधा हो गया। फिर वो आ़जिज़ हो गये तो उन्हें उसके बदले मे एक क़ीरात़ दिया गया। फिर अहले इंजील को इंजील दी गई तो उन्होंने उस पर अ़स्र की नमाज़ के वक़्त तक अ़मल किया और फिर वो अ़मल से

٧٤٦٧- حَدَّثَنَا الْحَكَمُ بْنُ نَافِعٍ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ أَخْبَرَنِي سَالِمُ بْنُ عَبْدِ اللهِ أَنَّ عَبْدَ اللهِ بْنَ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ وَهُوَ قَائِمٌ عَلَى الْمِنْبَرِ. ((إِنَّمَا بَقَاؤُكُمْ فِيمَا سَلَفَ قَبْلَكُمْ مِنَ الأُمَمِ كَمَا بَيْنَ صَلاَةِ الْعَصْرِ إِلَى غُرُوبِ الشَّمْسِ أُعْطِيَ أَهْلُ التَّوْرَاةِ التَّوْرَاةَ، فَعَمِلُوا بِهَا حَتَّى انْتَصَفَ النَّهَارُ ثُمَّ عَجَزُوا فَأُعْطُوا قِيرَاطًا قِيرَاطًا،

ثُمَّ أُعْطِيَ أَهْلُ الإِنْجِيلِ الإِنْجِيلَ فَعَمِلُوا بِهِ حَتَّى صَلاَةِ الْعَصْرِ، ثُمَّ عَجَزُوا فَأُعْطُوا قِيرَاطًا قِيرَاطًا ثُمَّ أُعْطِيتُمُ الْقُرْآنَ فَعَمِلْتُمْ بِهِ حَتَّى غُرُوبِ الشَّمْسِ، فَأُعْطِيتُمْ قِيرَاطَيْنِ قِيرَاطَيْنِ، قَالَ أَهْلُ التَّوْرَاةِ رَبَّنَا هَؤُلاَءِ أَقَلُّ عَمَلاً وَأَكْثَرُ أَجْرًا قَالَ: هَلْ ظَلَمْتُكُمْ مِنْ أَجْرِكُمْ مِنْ شَيْءٍ؟)) قَالُوا: لاَ، فَقَالَ: ((فَذَلِكَ فَضْلِي أُوتِيهِ مَنْ أَشَاءُ)). [راجع: ٥٥٧]

आजिज़ आ गये तो उन्हें भी एक क़ीरात़ दिया गया। फिर तुम्हें क़ुर्आन दिया गया और तुमने उस पर सूरज ग़ुरूब होने तक अ़मल किया और तुम्हे उसके बदले में दो दो क़ीरात़ दिये गये। अहले तौरात ने इस पर कहा कि ऐ हमारे रब! ये लोग मुसलमान सबसे कम काम करने वाले और सबसे ज़्यादा अज्र पाने वाले हैं। अल्लाह तआ़ला ने उस पर फ़र्माया कि क्या मैंने तुम्हें अज्र देने मे कोई नाइंसाफ़ी की है? वो बोले कि नहीं! तो अल्लाह तआ़ला ने फ़र्माया कि ये तो मेरा फ़ज़्ल है, मैं जिस पर चाहता हूँ करता हूँ। (राजेअ़ : 557)

तश्रीह : इस रिवायत में इतना है कि तौरात वालों ने ये कहा और उनका वक़्त मुसलमानों के वक़्त से ज़्यादा होने में कुछ शुब्हा नहीं जिस रिवायत में है कि यहूद और नस़ारा दोनों ने ये कहा इससे ह़नफ़िया ने दलील ली है कि अ़स्र की नमाज़ का वक़्त दो मिष्ल साया से शुरू होता है मगर ये इस्तिदलाल ग़लत़ है और इस रिवायत के अल्फ़ाज़ पर तो इस इस्तिदलाल का कोई मह़ल ही नहीं है।

٧٤٦٨- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ الْمُسْنَدِيُّ حَدَّثَنَا هِشَامٌ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ أَبِي إِدْرِيسَ، عَنْ عُبَادَةَ بْنِ الصَّامِتِ قَالَ: بَايَعْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ فِي رَهْطٍ فَقَالَ: ((أُبَايِعُكُمْ عَلَى أَنْ لاَ تُشْرِكُوا بِاللَّهِ شَيْئًا وَلاَ تَسْرِقُوا وَلاَ تَزْنُوا، وَلاَ تَقْتُلُوا أَوْلاَدَكُمْ وَلاَ تَأْتُوا بِبُهْتَانٍ تَفْتَرُونَهُ بَيْنَ أَيْدِيكُمْ وَأَرْجُلِكُمْ، وَلاَ تَعْصُونِي فِي مَعْرُوفٍ، فَمَنْ وَفَى مِنْكُمْ فَأَجْرُهُ عَلَى اللَّهِ، وَمَنْ أَصَابَ مِنْ ذَلِكَ شَيْئًا فَأُخِذَ بِهِ فِي الدُّنْيَا فَهُوَ لَهُ كَفَّارَةٌ وَطَهُورٌ، وَمَنْ سَتَرَهُ اللَّهُ فَذَلِكَ إِلَى اللَّهِ إِنْ شَاءَ عَذَّبَهُ وَإِنْ شَاءَ غَفَرَ لَهُ)). [راجع: ١٨]

7468. हमसे अ़ब्दुल्लाह मुस्नदी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे हिशाम बिन यूसुफ़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको मअ़मर ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुह्री ने, उन्हें अबू इदरीस ने और उनसे उ़बादह बिन स़ामित (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से एक जमाअ़त के साथ बेअ़त की। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैं तुमसे इस बात पर बेअ़त लेता हूँ कि तुम अल्लाह के साथ किसी को शरीक न ठहराओगे, इसराफ़ नहीं करोगे, ज़िना नहीं करोगे, अपनी औलाद को क़त्ल नहीं करोगे और मनगढ़त बोह्तान किसी पर नहीं लगाओगे और नेक कामों में मेरी नाफ़र्मानी नहीं करोगी। पस तुममें से जो कोई इस अ़हद को पूरा करेगा उसका अज्र अल्लाह पर है और जिसने कहीं लग़्ज़िश कीऔर उसे दुनिया में ही पकड़ लिया गया तो ये ह़द उसके लिये कफ़्फ़ारा और पाकी बन जाएगी और जिसकी अल्लाह ने पर्दापोशी की तो फिर अल्लाह पर है जिसे चाहे अ़ज़ाब दे और जिसे चाहे उसका गुनाह बख़्श दे। (राजेअ़ : 18)

मशिय्यते ऐज़दी पर मामला है ह़दीष़ का यही इशारा है और बाब से यही ता'ल्लुक़ है।

٧٤٦٩- حَدَّثَنَا مُعَلَّى بْنُ أَسَدٍ، حَدَّثَنَا

7469. हमसे मुअ़ल्ला बिन असद ने बयान किया, उन्होंने

कहा हमसे वुहैब ने बयान किया, उनसे अय्यूब ने बयान किया, उनसे मुहम्मद ने बयान किया और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि अल्लाह के नबी सुलैमान अलैहिस्सलाम की साठ बीवियाँ थीं तो उन्होंने कहा कि आज रात में तमाम बीवियों के पास जाऊँगा और हर बीवी हामिला होगी और ऐसा बच्चा जनेगी जो शहसवार होगा और अल्लाह के रास्ते में लड़ेगा। चुनाँचे वो अपनी तमाम बीवियों के पास गये। लेकिन सिर्फ़ एक बीवी के यहाँ बच्चा पैदा हुआ और वो भी अधूरा। हुज़ूरे अकरम (ﷺ) ने फ़र्माया कि अगर सुलैमान (अ.) ने इंशाअल्लाह कह दिया होता तो फिर हर बीवी हामिला होती और शहसवार जनती जो अल्लाह के रास्ते में जिहाद करता।

وُهَيْبٌ، عَنْ أَيُّوبَ، عَنْ مُحَمَّدٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ نَبِيَّ اللهِ سُلَيْمَانَ عَلَيْهِ الصَّلاَةُ وَالسَّلاَمُ كَانَ لَهُ سِتُّونَ امْرَأَةً فَقَالَ: لأَطُوفَنَّ اللَّيْلَةَ عَلَى نِسَائِي فَلَتَحْمِلْنَ كُلُّ امْرَأَةٍ وَلْتَلِدْنَ فَارِسًا يُقَاتِلُ فِي سَبِيلِ اللهِ، فَطَافَ عَلَى نِسَائِهِ فَمَا وَلَدَتْ مِنْهُنَّ إِلاَّ امْرَأَةٌ وَلَدَتْ شِقَّ غُلاَمٍ قَالَ نَبِيُّ اللهِ: ((لَوْ كَانَ سُلَيْمَانُ اسْتَثْنَى لَحَمَلَتْ كُلُّ امْرَأَةٍ مِنْهُنَّ فَوَلَدَتْ فَارِسًا يُقَاتِلُ فِي سَبِيلِ اللهِ)).

बाब का तर्जुमा लफ़्ज़ इंशाअल्लाह से निकला क्योंकि इसमें मशिय्यते इलाही का ज़िक्र है। अगर सुलैमान (अलैहि.) मशिय्यते इलाही का सहारा लेते तो अल्लाह ज़रूर उनकी मंशा पूरी करता, मगर अल्लाह को ये मंज़ूर न था इसलिये वो इंशाअल्लाह कहना भी भूल गये।

7470. हमसे मुहम्मद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अब्दुल वह्हाब ष़क़फ़ी ने बयान किया, उन्होंने हमसे ख़ालिद हज़्ज़ाअ ने बयान किया, उनसे इक्रिमा ने बयान किया और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) एक अअराबी की एयादत के लिये तशरीफ़ ले गये और उससे कहा कि कोई मुज़ायक़ा नहीं ये (बीमारी) तुम्हारे लिये पाकी का बाइष़ है। इस पर उन्होंने कहा कि जनाब ये वो बुख़ार है जो एक बूढ़े पर जोश मार रहा है और उसे क़ब्र तक पहुँचा के रहेगा, आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि फिर यूँ ही होगा। (राजेअ: 3616)

٧٤٧٠- حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ الثَّقَفِيُّ، حَدَّثَنَا خَالِدٌ الْحَذَّاءُ، عَنْ عِكْرِمَةَ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ دَخَلَ عَلَى أَعْرَابِيٍّ يَعُودُهُ فَقَالَ: ((لاَ بَأْسَ عَلَيْكَ طَهُورٌ إِنْ شَاءَ اللهُ)) قَالَ : قَالَ الأَعْرَابِيُّ طَهُورٌ بَلْ هِيَ حُمَّى تَفُورُ عَلَى شَيْخٍ كَبِيرٍ تُزِيرُهُ الْقُبُورَ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((فَنَعَمْ إِذًا)).

[راجع: ٣٦١٦]

तश्रीह : तबरानी की रिवायत में है कि आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया जब तू हमारी बात नहीं मानता तो जैसा कि तू नहीं समझता है वैसा ही होगा और अल्लाह का हुक्म पूरा होकर रहेगा। फिर दूसरे दिन शाम भी नहीं होने पाई थी कि वो दुनिया से गुज़र गया।

7471. हमसे इब्ने सलाम ने बयान किया, कहा हमको हुशैम ने ख़बर दी, उन्हें हुसैन ने, उन्हें अब्दुल्लाह इब्ने अबी क़तादा ने, उन्हें उनके वालिद ने कि जब सब लोग सोये और नमाज़ क़ज़ा हो गई तो नबी (ﷺ) ने फ़र्माया कि अल्लाह तुम्हारी रूहों को जब चाहता है रोक देता है और जब चाहता है छोड़ देता है। पस तुम अपनी ज़रूरतों से फ़ारिग़ होकर वुज़ू करो। आख़िर जब

٧٤٧١- حَدَّثَنَا ابْنُ سَلاَمٍ، أَخْبَرَنَا هُشَيْمٌ عَنْ حُصَيْنٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي قَتَادَةَ عَنْ أَبِيهِ حِينَ نَامُوا عَنِ الصَّلاَةِ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِنَّ اللهَ قَبَضَ أَرْوَاحَكُمْ حِينَ شَاءَ وَرَدَّهَا حِينَ شَاءَ)) فَقَضَوْا حَوَائِجَهُمْ

सूरज पूरी तरह तुलूअ हो गया और ख़ूब दिन निकल आया तो आप खड़े हुए और नमाज़ पढ़ी। (राजेअ : 595)

وَتَوَضَّئُوا إِلَى أَنْ طَلَعَتِ الشَّمْسُ وَابْيَضَّتْ فَقَامَ فَصَلَّى. [راجع: ٥٩٥]

इसमें भी मशिय्यते इलाही का ज़िक्र है जो सब पर ग़ालिब है।

7472. हमसे यह्या बिन क़ज़आ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इब्राहीम ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उनसे अबू सलमा ने बयान किया, और उनसे अअरज ने बयान किया (दूसरी सनद) और हमसे इस्माईल ने बयान किया, उन्होंने कहा मुझसे मेरे भाई ने बयान किया, उनसे सुलैमान ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन अबी अतीक़ ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उनसे अबू सलमा बिन अब्दुर्रहमान और सईद बिन मुसय्यब ने बयान किया कि अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि एक मुसलमान और एक यहूदी ने आपस में झगड़ा किया। मुसलमान ने कहा कि उस ज़ात की क़सम! जिसने मुहम्मद (ﷺ) को तमाम दुनिया में चुन लिया और यहूदी ने कहा कि उस ज़ात की क़सम! जिसने मूसा (अ.) को तमाम दुनिया में चुन लिया। इस पर मुसलमान ने हाथ उठाया और यहूदी को तमाँचा मार दिया। यहूदी आँहज़रत (ﷺ) के पास आया और उसने अपना और मुसलमान का मामला आपसे ज़िक्र किया। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया मुझे मूसा (अ.) पर तरजीह न दो, तमाम लोग क़यामत के दिन पहला सूर फूँकने पर बेहोश कर दिये जाएँगे। फिर दूसरा सूर फूँकने पर मैं सबसे पहले बेदार होऊँगा लेकिन मैं देखूँगा कि मूसा (अ.) अर्श का एक किनारा पकड़े हुए हैं। अब मुझे मा'लूम नहीं कि क्या वो उनमे थे जिन्हें बेहोश किया गया था और मुझसे पहले ही उन्हें होश आ गया या उन्हें अल्लाह तआला ने इस्तिष्ना कर दिया था।

٧٤٧٢- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ قَزَعَةَ، حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، وَالأَعْرَجِ وَحَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ حَدَّثَنِي أَخِي عَنْ سُلَيْمَانَ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ أَبِي عَتِيقٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ وَ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ قَالَ : اسْتَبَّ رَجُلٌ مِنَ الْمُسْلِمِينَ وَرَجُلٌ مِنَ الْيَهُودِ فَقَالَ الْمُسْلِمُ : وَالَّذِي اصْطَفَى مُحَمَّدًا عَلَى الْعَالَمِينَ فِي قَسَمٍ يُقْسِمُ بِهِ فَقَالَ الْيَهُودِيُّ: وَالَّذِي اصْطَفَى مُوسَى عَلَى الْعَالَمِينَ، فَرَفَعَ الْمُسْلِمُ يَدَهُ عِنْدَ ذَلِكَ فَلَطَمَ الْيَهُودِيَّ فَذَهَبَ الْيَهُودِيُّ إِلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ، فَأَخْبَرَهُ بِالَّذِي كَانَ مِنْ أَمْرِهِ وَأَمْرِ الْمُسْلِمِ فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((لاَ تُخَيِّرُونِي عَلَى مُوسَى فَإِنَّ النَّاسَ يَصْعَقُونَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَأَكُونُ أَوَّلَ مَنْ يُفِيقُ فَإِذَا مُوسَى بَاطِشٌ بِجَانِبِ الْعَرْشِ، فَلاَ أَدْرِي أَكَانَ فِيمَنْ صَعِقَ فَأَفَاقَ قَبْلِي أَوْ كَانَ مِمَّنِ اسْتَثْنَى اللَّهُ)).

या'नी हज़रत मूसा (अ.) पर फ़ज़ीलत न दो ये आपने तवाज़ोअ की राह से फ़र्माया या ये मतलब है कि इस तौर से फ़ज़ीलत न दो कि हज़रत मूसा (अ.) की तौहीन निकले या ये वाक़िया पहले का है जबकि आपको मा'लूम न था कि आप सारे अंबिया से अफ़ज़ल हैं। इस्तिष्ना का ज़िक्र इस आयत में है, **फ़सइक़ मन फ़िस्समावाति वमन फ़िल अरज़ि इल्ला मन शाअल्लाह** (सूरह ज़ुमर) बाब का मतलब आयत के लफ़्ज़ इल्ला मन शाअल्लाह से निकला जिनसे जिब्राईल, मीकाईल, इस्राफ़ील, इज़्राईल, रिज़्वान, ख़ाज़िने बहिश्त, हामिलाने अर्श मुराद हैं ये बेहोश न होंगे।

7473. हमसे इस्हाक़ बिन अबी ईसा ने बयान किया, उन्होंने

٧٤٧٣- حَدَّثَنَا إِسْحَقُ بْنُ أَبِي عِيسَى،

कहा हमको यज़ीद बिन हारून ने ख़बर दी, उन्हें शुअबा ने ख़बर दी, उन्हें क़तादा ने और उन्हें अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया दज्जाल मदीना तक आएगा लेकिन देखेगा कि फ़रिश्ता उसकी हिफ़ाज़त कर रहे हैं। पस न तो दज्जाल उससे क़रीब हो सकेगा और न ताऊन, अगर अल्लाह ने चाहा। (राजेअ : 1881)

أَخْبَرَنَا يَزِيدُ بْنُ هَارُونَ، أَخْبَرَنَا شُعْبَةُ، عَنْ قَتَادَةَ عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((الْمَدِينَةُ يَأْتِيهَا الدَّجَّالُ فَيَجِدُ الْمَلاَئِكَةَ يَحْرُسُونَهَا، فَلاَ يَقْرَبُهَا الدَّجَّالُ وَلاَ الطَّاعُونُ إِنْ شَاءَ اللهُ)). [راجع: ١٨٨١]

इसमें भी लफ़्ज़ इंशाअल्लाह के साथ मशिय्यते इलाही का ज़िक्र है। यही बाब से मुताबक़त है और ये हक़ीक़त है कि हर चीज़ अल्लाह की मशिय्यत पर मौक़ूफ़ है।

7474. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, उन्हों ने कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुहरी ने, उनसे अबू सलमा इब्ने अ़ब्दुर्रहमान ने बयान किया और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया हर नबी की एक दुआ क़ुबूल होती है तो मैं चाहता हूँ अगर अल्लाह ने चाहा कि अपनी दुआ क़यामत के दिन अपनी उम्मत की शफ़ाअत के लिये महफ़ूज़ रखूँ। (राजेअ : 6304)

٧٤٧٤- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ حَدَّثَنِي أَبُو سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ أَنَّ أَبَا هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ: ((لِكُلِّ نَبِيٍّ دَعْوَةٌ فَأُرِيدُ إِنْ شَاءَ اللهُ أَنْ أَخْتَبِيءَ دَعْوَتِي شَفَاعَةً لأُمَّتِي يَوْمَ الْقِيَامَةِ)). [راجع: ٦٣٠٤]

7475. हमसें यसरा बिन सफ़्वान बिन जमीलुल लख़्मी ने बयान किया, कहा हमसे इब्राहीम बिन सअद ने बयान किया, उनसे ज़ुहरी ने, उनसे सईद बिन मुसय्यब ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया मैं सोया हुआ था कि मैंने अपने आपको एक कुँए पर देखा। फिर मैंने जितना अल्लाह तआला ने चाहा उसमें से पानी निकाला। उसके बाद अबूबक्र बिन अबी क़ुहाफ़ा (रज़ि.) ने डोल ले लिया और उन्होंने भी एक या दो डोल पानी निकाला अल्बत्ता उनके खींचने मे कमज़ोरी थी और अल्लाह उन्हें माफ़ करे। फिर उमर (रज़ि.) ने उसे ले लिया और वो उनके हाथ में एक बड़ा डोल बन गया। मैंने किसी क़वी व बहादुर को इस तरह डोल पर डोल निकालते नहीं देखा, यहाँ तक कि लोगों ने उनके चारों तरफ़ मवेशियों के लिये बाड़ें बना लीं।

٧٤٧٥- حَدَّثَنَا يَسَرَةُ بْنُ صَفْوَانَ بْنِ جَمِيلٍ اللَّخْمِيُّ، حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ سَعْدٍ، عَنِ الزُّهْرِيِّ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((بَيْنَا أَنَا نَائِمٌ رَأَيْتُنِي عَلَى قَلِيبٍ، فَنَزَعْتُ مَا شَاءَ اللهُ أَنْ أَنْزِعَ ثُمَّ أَخَذَهَا ابْنُ أَبِي قُحَافَةَ فَنَزَعَ ذَنُوبًا أَوْ ذَنُوبَيْنِ وَفِي نَزْعِهِ ضَعْفٌ وَاللهُ يَغْفِرُ لَهُ ثُمَّ أَخَذَهَا عُمَرُ فَاسْتَحَالَتْ غَرْبًا، فَلَمْ أَرَ عَبْقَرِيًّا مِنَ النَّاسِ يَفْرِي فَرِيَّهُ حَتَّى ضَرَبَ النَّاسُ حَوْلَهُ بِعَطَنٍ)).

रसूले करीम (ﷺ) ने क़दम क़दम पर लफ़्ज़ इंशाअल्लाह का इस्ते'माल फ़र्माकर मशिय्यते इलाही बारी तआला पर हर काम को मौक़ूफ़ रखा। डोल खींचने की ता'बीर उमूरे ख़िलाफ़त को अंजाम देने से है। अहदे सिद्दीक़ी भी कामयाब रहा मगर अहदे फ़ारूक़ी में इस्लाम को जो वुस्अत हुई और अम्रे ख़िलाफ़त मुस्तहकम (मज़बूत) हुआ वो ज़ाहिर है। उसी पर इशारा है।

7476. हमसे मुहम्मद बिन अ़ला ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, उनसे बुरैद ने, उनसे अबूबुर्दा ने और उनसे अबू मूसा (रज़ि.) ने बयान किया कि जब नबी करीम (ﷺ) के पास कोई मांगने वाला आता या कोई ज़रूरतमंद आता तो आप फ़र्माते कि इसकी सिफ़ारिश करो ताकि तुम्हें भी ष़वाब मिले। अल्लाह अपने रसूल की ज़ुबान पर वही जारी करता है जो चाहता है। (राजेअ़ : 1432)

٧٤٧٦- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلاَءِ، حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، عَنْ بُرَيْدٍ، عَنْ أَبِي بُرْدَةَ، عَنْ أَبِي مُوسَى قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ، إِذَا أَتَاهُ السَّائِلُ وَرُبَّمَا قَالَ جَاءَهُ السَّائِلُ أَوْ صَاحِبُ الْحَاجَةِ قَالَ: ((اشْفَعُوا فَلْتُؤْجَرُوا)) وَيَقْضِي اللهُ عَلَى لِسَانِ رَسُولِهِ مَا شَاءَ. [راجع:١٤٣٢]

तश्रीह : मशिय्यते बारी का वाज़ेह इज़्हार है। अल्लाह जो चाहता है मेरी ज़ुबान से अ़तिया के अल्फ़ाज़ निकलते हैं, सिफ़ारिश करने वाले मुफ़्त में ष़वाब ह़ासिल कर लेते हैं पस क्यूँ सिफ़ारिश के लिये ज़ुबान न खोलो ताकि अज्र पाओ।

7477. हमसे यह़्या ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने बयान किया, उनसे मअ़मर ने, उनसे हम्माम ने और उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कोई शख़्स इस तरह़ दुआ न करे कि ऐ अल्लाह! अगर तू चाहे तो मेरी मग़्फ़िरत कर, अगर तू चाहे तो मुझ पर रह़म कर, अगर तू चाहे तो मुझे रोज़ी दे बल्कि पुख़्तगी के साथ सवाल करना चाहिये क्योंकि अल्लाह जो चाहता है करता है कोई उस पर जबर करने वाला नहीं। (राजेअ़ : 6339)

٧٤٧٧- حَدَّثَنَا يَحْيَى، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، عَنْ مَعْمَرٍ، عَنْ هَمَّامٍ سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((لاَ يَقُلْ أَحَدُكُمُ اللَّهُمَّ اغْفِرْ لِي إِنْ شِئْتَ ارْحَمْنِي إِنْ شِئْتَ ارْزُقْنِي إِنْ شِئْتَ وَلْيَعْزِمْ مَسْأَلَتَهُ إِنَّهُ يَفْعَلُ مَا يَشَاءُ لاَ مُكْرِهَ لَهُ)).

[راجع: ٦٣٣٩]

7478. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अबू ह़फ़्स़ अ़म्र ने बयान किया, उनसे औज़ाई ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उनसे उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उ़त्बा बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने बयान किया कि वो और हुर्र बिन क़ैस बिन हुसैन फ़ुज़ारी मूसा (अ़.) के साथी के बारे में इख़्तिलाफ़ कर रहे थे कि क्या वो ख़िज़्र (अ़.) ही थे। इतने में उबई बिन कअ़ब (रज़ि .) का उधर से गुज़र हुआ और इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने उन्हें बुलाया और उनसे कहा कि मैं और मेरा ये साथी इस बारे में शक में हैं कि मूसा (अ़.) के वो स़ाह़ब कौन थे जिनसे मुलाक़ात के लिये ह़ज़रत मूसा (अ़.) ने रास्ता पूछा था। क्या आपने रसूलुल्लाह (ﷺ) से इस सिलसिले में कोई ह़दीष़ सुनी है। उन्होंने कहा कि हाँ। मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना है। आपने फ़र्माया कि मूसा (अ़.) बनी इस्राईल के एक मज्मअ़े में थे कि एक शख़्स ने

٧٤٧٨- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ ابْنُ مُحَمَّدٍ، حَدَّثَنَا أَبُو حَفْصٍ عَمْرٌو، حَدَّثَنَا الأَوْزَاعِيُّ، حَدَّثَنِي ابْنُ شِهَابٍ، عَنْ عُبَيْدِ اللهِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُتْبَةَ بْنِ مَسْعُودٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا أَنَّهُ تَمَارَى هُوَ وَالْحُرُّ بْنُ قَيْسِ بْنِ حِصْنٍ الْفَزَارِيُّ فِي صَاحِبِ مُوسَى أَهُوَ خَضِرٌ؟ فَمَرَّ بِهِمَا أُبَيُّ بْنُ كَعْبٍ الأَنْصَارِيُّ فَدَعَاهُ ابْنُ عَبَّاسٍ فَقَالَ: إِنِّي تَمَارَيْتُ أَنَا وَصَاحِبِي هَذَا فِي صَاحِبِ مُوسَى الَّذِي سَأَلَ السَّبِيلَ إِلَى لُقِيِّهِ هَلْ سَمِعْتَ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَذْكُرُ

شَأْنُهُ؟ قَالَ: نَعَمْ إِنِّي سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ، يَقُولُ: ((بَيْنَا مُوسَى فِي مَلَإٍ بَنِي إِسْرَائِيلَ إِذْ جَاءَهُ رَجُلٌ فَقَالَ: هَلْ تَعْلَمُ أَحَدًا أَعْلَمَ مِنْكَ؟ فَقَالَ مُوسَى: لاَ فَأُوحِيَ إِلَى مُوسَى بَلَى عَبْدُنَا خَضِرٌ فَسَأَلَ مُوسَى السَّبِيلَ إِلَى لُقِيِّهِ، فَجَعَلَ اللهُ لَهُ الْحُوتَ آيَةً وَقِيلَ لَهُ إِذَا فَقَدْتَ الْحُوتَ فَارْجِعْ فَإِنَّكَ سَتَلْقَاهُ، فَكَانَ مُوسَى يَتْبَعُ أَثَرَ الْحُوتِ فِي الْبَحْرِ فَقَالَ فَتَى مُوسَى لِمُوسَى: ﴿أَرَأَيْتَ إِذْ أَوَيْنَا إِلَى الصَّخْرَةِ فَإِنِّي نَسِيتُ الْحُوتَ وَمَا أَنْسَانِيهِ إِلاَّ الشَّيْطَانُ أَنْ أَذْكُرَهُ؟﴾ قَالَ مُوسَى: ﴿ذَلِكَ مَا كُنَّا نَبْغِي فَارْتَدَّا عَلَى آثَارِهِمَا قَصَصًا، فَوَجَدَا﴾ خَضِرًا وَكَانَ مِنْ شَأْنِهِمَا مَا قَصَّ اللهُ)).[راجع: ٧٤]

आकर पूछा क्या आप किसी ऐसे शख़्स को जानते हैं जो आपसे ज़्यादा इल्म रखता हो? मूसा (अ.) ने कहा कि नहीं। चुनाँचे आप पर वह्य नाज़िल हुई कि क्यूँ नहीं हमारा बन्दा ख़िज़्र है। मूसा (अ.) ने उनसे मुलाक़ात का रास्ता मा'लूम किया और अल्लाह तआला ने उसके लिए मछली को निशान क़रार दिया और आपसे कहा गया कि जब तुम मछली को गुम पाओ तो लौट जाना कि वहीं उनसे मुलाक़ात होगी। चुनाँचे मूसा (अ.) मछली का निशान दरिया में ढूँढने लगे और आपके साथी ने आपको बताया कि आपको मा'लूम है। जब हमने चट्टान पर डेरा डाला था तो वहीं मैं मछली भूल गया और मुझे शैतान ने उसे भुला दिया। मूसा (अ.) ने कहा कि ये जगह वही है जिसकी तलाश में हम सरगर्दां हैं पस वो दोनों अपने क़दमों के निशानों पर वापस लौटे और उन्होंने हज़रत ख़िज़्र (अ.) को पा लिया उन ही दोनों का ये क़िस्सा है जो अल्लाह ने बयान फ़र्माया। (राजेअ : 74)

٧٤٧٩- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ وَقَالَ أَحْمَدُ بْنُ صَالِحٍ: حَدَّثَنَا ابْنُ وَهْبٍ، أَخْبَرَنِي يُونُسُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ أَبِي سَلَمَةَ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ قَالَ: ((نَنْزِلُ غَدًا إِنْ شَاءَ اللهُ بِخَيْفِ بَنِي كِنَانَةَ حَيْثُ تَقَاسَمُوا عَلَى الْكُفْرِ)) يُرِيدُ الْمُحَصَّبَ. [راجع: ١٥٨٩]

7479. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इब्ने वहब ने बयान किया, उन्होंने कहा मुझको यूनुस ने इब्ने शिहाब से ख़बर दी, उन्होंने अबू सलमा बिन अब्दुर्रहमान से, उन्होंने हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से रिवायत किया, उन्होंने हज़रत रसूले करीम (ﷺ) से रिवायत किया कि आपने (हज्जतुल विदाअ के मौक़े पर) फ़र्माया कि हम कल इंशा अल्लाह ख़ैफ़े बनू किनाना में क़याम करेंगे जहाँ एक ज़माना में कुफ़्फ़ारे मक्का ने कुफ़्र ही पर क़ायम रहने की आपस में क़समें खाईं थीं आपकी मुराद वादी मुहस्सब से थी।

(राजेअ : 1589)

٧٤٨٠- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ عُيَيْنَةَ، عَنْ عَمْرٍو، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُمَرَ قَالَ: حَاصَرَ النَّبِيُّ ﷺ أَهْلَ الطَّائِفِ فَلَمْ يَفْتَحْهَا فَقَالَ:

7480. हमसे अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद मुस्नदी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उयैना ने, उन्होंने अम्र बिन दीनार से, उन्होंने अबुल अब्बास (साइब बिन फ़ुरूख़) से, उन्होंने अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि.) से, उन्होंने कहा आँहज़रत (ﷺ) ने ताइफ़ वालों को घेर लिया, उसको फ़तह नहीं किया।

((إِنَّا قَافِلُونَ إِنْ شَاءَ اللهُ)) فَقَالَ الْمُسْلِمُونَ : نَقْفُلُ وَلَمْ نَفْتَحْ قَالَ: فَاغْدُوا عَلَى الْقِتَالِ فَغَدَوْا فَأَصَابَتْهُمْ جِرَاحَاتٌ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِنَّا قَافِلُونَ غَدًا إِنْ شَاءَ اللهُ)) فَكَأَنَّ ذَلِكَ أَعْجَبَهُمْ فَتَبَسَّمَ رَسُولُ اللهِ ﷺ. [راجع: ٤٣٢٥]

आख़िर आपने फ़र्माया कल अल्लाह ने चाहा तो हम मदीना को लौट चलेंगे। इस पर मुसलमान बोले वाह हम फ़तह किये बग़ैर लौट जाएँ। आपने फ़र्माया ऐसा है तो फिर कल सवेरे लड़ाई शुरू करो। सुबह को मुसलमान लड़ने गये लेकिन (क़िला फ़तह नहीं हुआ) मुसलमान ज़ख़्मी हुए। फिर आपने फ़र्माया, सुबह को अल्लाह ने चाहा तो हम मदीना लौट चलेंगे। इस पर मुसलमान ख़ुश हुए। मुसलमानों का ये हाल देखकर आँहज़रत (ﷺ) मुस्कुराए।

٢٢- باب قَوْلِهِ تَعَالَى:

﴿وَلاَ تَنْفَعُ الشَّفَاعَةُ عِنْدَهُ إِلاَّ لِمَنْ أَذِنَ لَهُ حَتَّى إِذَا فُزِّعَ عَنْ قُلُوبِهِمْ قَالُوا: مَاذَا قَالَ رَبُّكُمْ قَالُوا الْحَقَّ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيرُ﴾ وَلَمْ يَقُلْ مَا ذَا خَلَقَ رَبُّكُمْ وَقَالَ جَلَّ ذِكْرُهُ : ﴿مَنْ ذَا الَّذِي يَشْفَعُ عِنْدَهُ إِلاَّ بِإِذْنِهِ﴾.

बाब 22 : अल्लाह तआला का इर्शाद, और उसके यहाँ किसी की शफ़ाअत बग़ैर

अल्लाह की इजाज़त के फ़ायदे नहीं दे सकती। (वहाँ फ़रिश्तों का भी ये हाल है) कि जब अल्लाह पाक कोई हुक्म उतारता है तो फ़रिश्ते उसे सुनकर अल्लाह के ख़ौफ़ से घबरा जाते हैं यहाँ तक कि जब उनकी घबराहट दूर होती है तो वो आपस में पूछते हैं कि तुम्हारे रब का क्या इर्शाद हुआ है वो फ़रिश्ते कहते हैं कि जो कुछ उसने फ़र्माया वो हक़ है और वो बुलंद है बड़ा। यहाँ फ़रिश्ते अल्लाह के अम्र के लिये लफ़्ज़ मा ज़ा ख़लक़ रब्बुकुम नही इस्ते'माल करते हैं (पस अल्लाह के कलाम को मख़्लूक़ कहना ग़लत है जैसा कि मुअतज़िला कहते हैं) और अल्लाह जल्ला ज़िक्रुहू ने फ़र्माया कि, कौन है कि उसकी इजाज़त के बग़ैर उसकी शफ़ाअत किसी के काम आ सके मगर जिसको वो हुक्म दे।

وَقَالَ مَسْرُوقٌ: عَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ إِذَا تَكَلَّمَ اللهُ بِالْوَحْيِ سَمِعَ أَهْلُ السَّمَاوَاتِ شَيْئًا فَإِذَا فُزِّعَ عَنْ قُلُوبِهِمْ وَسَكَنَ الصَّوْتُ عَرَفُوا أَنَّهُ الْحَقُّ وَنَادَوْا مَاذَا قَالَ رَبُّكُمْ؟ قَالُوا: الْحَقَّ.

मसरूक़ बिन अज्दइ ताबेई ने इब्ने मसऊद (रज़ि.) से नक़ल किया कि जब अल्लाह तआला वह्य के लिये कलाम करता है कि तो आसमान वाले भी कुछ सुनते हैं। फिर जब उनके दिलों से डर दूर हो जाता है और आवाज़ चुप हो जाती है तो वो समझ जाते हैं कि ये कलाम हक़ है और आवाज़ देते हैं एक दूसरे को कि तुम्हारे रब ने क्या फ़र्माया, जवाब देते हैं कि बजा इर्शाद फ़र्माया।

وَيُذْكَرُ عَنْ جَابِرٍ: عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ أُنَيْسٍ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((يَحْشُرُ اللهُ الْعِبَادَ فَيُنَادِيهِمْ بِصَوْتٍ يَسْمَعُهُ مَنْ

और जाबिर (रज़ि.) से इसकी रिवायत की जाती है, उनसे अब्दुल्लाह बिन उनैस (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना, आपने फ़र्माया अल्लाह अपने बन्दों को जमा करेगा और ऐसी आवाज़ के ज़रिये उनको पुकारेगा

بَعُدَ كَمَا يَسْمَعُهُ مَنْ قَرُبَ أَنَا الْمَلِكُ أَنَا الدَّيَّانُ)).

जिसे दूर वाले उसी तरह सुनेंगे जिस तरह नज़दीक वाले सुनेंगे। मैं बादशाह हूँ हर एक के आमाल का बदला देने वाला हूँ।

तशरीह : ये बाब लाकर हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने मुतकल्लिमीन का रद्द किया मुअतज़िला का भी जो कहते हैं कि अल्लाह का कलाम मख़्लूक़ है और मख़्लूक़ात की तरह है। मुतकल्लिमीन कहते हैं कि अल्लाह के कलाम में न हुरूफ़ हैं न आवाज़ बल्कि अल्लाह का कलाम इबारत है एक कलामे नफ़्सी से जो एक सिफ़ते अज़ली है उसकी ज़ात से क़ायम है और सुकूत के मनाफ़ी है। इस कलाम से अगर अरबी में ता'बीर करो तो वो क़ुर्आन है अगर सुरयानी में करो तो वो इंजील है अगर इबरानी में करो तो वो तौरात है। मैं वहीदुज़्ज़माँ कहता हूँ कि ये एक लग्व ख़्याल है जो मुतकल्लिमीन ने एक फ़ासिद क़ायदे की बिना पर बाँधा है। उन्होंने ये तसव्वुर किया कि अगर अल्लाह के कलाम में हुरूफ़ और आवाज़ें हों और वो हर वक़्त जब अल्लाह चाहे उससे सादिर होता रहे तो अल्लाह हवादिष़ का महल्ल हो जाएगा और जो हवादिष़ का महल्ल हो वो हादिष़ होता है हालाँकि ये क़ायदा ख़ुद एक ढकोसला है और मुकम्मल फ़ासिद है। एक ज़ाते क़दीम फ़ाइल मुख़्तार से नई नई बातें सादिर होना उसके हुदूष़ को मुस्तल्ज़िम नहीं हैं। उसके कमाल पर दाल हैं और हमारी शरीअत और नीज़ अगली शरीअतें सब इस बात से भरी हुई हैं कि अल्लाह जब चाहे कलाम करता है और फ़रिश्ते उसका कलाम सुनते हैं। उसके हुक्म के मुवाफ़िक़ अमल करते हैं। हज़रत मूसा (अ.) ने उसका कलाम सुना जिसमें आवाज़ थी। अल्लाह हर रोज़ हर आन नए नए अहकाम सादिर करता है। नई नई मख़्लूक़ात पैदा करता है। क्या इससे उसके क़दीम और अज़्ली होने में कोई फ़र्क़ आया हर्गिज़ नहीं ख़ुद फ़लासफ़ा जिन्होंने इस क़ायदे फ़ासिदा की बिना डाली है वो कहते हैं अक़्ल फ़अ्आले क़दीम है हालाँकि हज़ारों हवादिष़ और चीजें उससे सादिर होते हैं। ग़र्ज़ मसला कलाम में हज़ारों आदमी गुमराह हो गये हैं और उन्होंने जादह मुस्तक़ीम से मुँह मोड़कर बेमतलब तावीलात इख़्तियार की हैं और अपनी दानिस्त में ये लोग बड़े मुहक़्क़िक़ और दानिशमंद बनते हैं हालाँकि महज़ बेवक़ूफ़ और महज़ बेअक़्ल हैं। अल्लाह जो हर शै पर क़ादिर और तमाम कमालात से मौसूफ़ है और उसने अपनी एक अदना मख़्लूक़ इंसान को कलाम की ताक़त दी है वो तो कलाम न कर सके न अपनी आवाज़ किसी को सुना सके और उसकी मख़्लूक़ फ़राग़त से जब चाहें बातें किया करें ये क्या नादानी का ख़्याल है।

٧٤٨١- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ عَمْرٍو، عَنْ عِكْرِمَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ يَبْلُغُ بِهِ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: ((إِذَا قَضَى اللهُ الأَمْرَ فِي السَّمَاءِ ضَرَبَتِ الْمَلاَئِكَةُ بِأَجْنِحَتِهَا خُضْعَانًا)) لِقَوْلِهِ: كَأَنَّهُ سِلْسِلَةٌ عَلَى صَفْوَانٍ قَالَ عَلِيٌّ: وَقَالَ غَيْرُهُ صَفْوَانٍ يَنْفُذُهُمْ ذَلِكَ فَإِذَا فُزِّعَ عَنْ قُلُوبِهِمْ قَالُوا: مَاذَا قَالَ رَبُّكُمْ؟ قَالُوا: الْحَقَّ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيرُ.

7481. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उयैना ने, उनसे अम्र बिन मुर्रह ने, उनसे इक्रिमा ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने नबी (ﷺ) से नक़ल किया कि आपने फ़र्माया, जब अल्लाह तआला आसमान में कोई फ़ैसला करता है तो फ़रिश्ते उसके फ़र्मान के आगे आजिज़ी का इज़्हार करने के लिये अपने बाज़ू मारते हैं (और उनसे ऐसी आवाज़ निकलती है) जैसे पत्थर पर ज़ंजीर मारी गई हो। अली बिन अब्दुल्लाह मदीनी ने कहा सुफ़यान के सिवा दूसरे रावियों ने इस हदीष़ में बजाय सफ़्वान के फ़त्हा के साथ फ़ासिफ़ून रिवायत किया है और अबू सुफ़यान ने सफ़्वान पर सकूने फ़ा रिवायत किया है दोनों के मा'नी एक ही हैं या'नी चिकना साफ़ चिकना साफ़ पत्थर और इब्ने आमिर ने फ़ज़्अ ब सेग़ा मअरूफ़ पढ़ा है। कुछ ने फ़रग़ राय मह्मला से पढ़ा है या'नी जब उनके दिलों को फ़राग़त हासिल हो जाती है। मतलब वही है कि डर जाता रहा है फिर वो हुक्म फ़रिश्तों में

قَالَ عَلِيٌّ وَحَدَّثَنَا سُفْيَانُ حَدَّثَنَا عَمْرٌو، عَنْ عِكْرِمَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ بِهَذَا. قَالَ سُفْيَانُ: قَالَ عَمْرٌو: سَمِعْتُ عِكْرِمَةَ، حَدَّثَنَا أَبُو هُرَيْرَةَ قَالَ عَلِيٌّ قُلْتُ لِسُفْيَانَ، قَالَ: سَمِعْتُ عِكْرِمَةَ: قَالَ سَمِعْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ: قَالَ نَعَمْ. قُلْتُ لِسُفْيَانَ: إِنَّ إِنْسَانًا رَوَى عَنْ عَمْرٍو، عَنْ عِكْرِمَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ يَرْفَعُهُ أَنَّهُ قَرَأَ فُرِّغَ قَالَ سُفْيَانُ: هَكَذَا قَرَأَ عَمْرٌو فَلاَ أَدْرِي سَمِعَهُ هَكَذَا أَمْ لاَ. قَالَ سُفْيَانُ: وَهِيَ قِرَاءَتُنَا.

[راجع: ٤٧٠١]

आता है और जब उनके दिलों से डर दूर होता है तो वो पूछते हैं कि तुम्हारे रब ने क्या कहा? जवाब देते हैं कि ह़क़, अल्लाह वो बुलंद व अ़ज़ीम है।

और अ़ली ने बयान किया, उनसे सुफ़यान ने, उसे अ़म्र ने, उनसे इक्रिमा ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने यही ह़दीष़ बयान की और सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, उनसे अ़म्र ने बयान किया, उन्होंने इक्रिमा से सुना और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया, अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने कहा कि मैंने सुफ़यान बिन उ़ययना से पूछा कि उन्होंने कहा कि मैंने इक्रिमा से सुना, उन्होंने कहा कि मैंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना, तो सुफ़यान बिन उ़ययना ने इसकी तस्दीक़ की। अ़ली ने कहा मैंने सुफ़यान बिन उ़ययना से पूछा कि एक शख़्स ने अ़म्र से रिवायत की, उन्होंने इक्रिमा से और उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से बह़वाला रसूलुल्लाह (ﷺ) के कि आपने फ़ज़अ पढ़ा। सुफ़यान बिन उ़ययना ने कहा कि अ़म्र बिन दीनार (रज़ि.) ने भी इसी त़रह पढ़ा था, मुझे मा'लूम नहीं कि उन्होंने इसी त़रह उनसे सुना था या नहीं। सुफ़यान ने कहा कि यही हमारी क़िरात है। (राजेअ़ : 4701)

इन सनदों को बयान करके ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) ने ये ष़ाबित किया कि ऊपर की रिवायत जो अ़न अ़न के साथ है वो मुत्तस़िल है।

٧٤٨٢- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ أَخْبَرَنِي أَبُو سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّهُ كَانَ يَقُولُ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((مَا أَذِنَ اللهُ لِشَيْءٍ مَا أَذِنَ لِلنَّبِيِّ ﷺ يَتَغَنَّى بِالْقُرْآنِ)) وَقَالَ صَاحِبٌ لَهُ يُرِيدُ أَنْ يَجْهَرَ بِهِ. [راجع: ٥٠٢٣]

7482. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने, उनसे अ़क़ील ने, उनसे इब्ने शिहाब ने और उनको अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रहमान ने ख़बर दी और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि अल्लाह तआ़ला किसी बात को इतना मुतवज्जह होकर नहीं सुनता जितना नबी करीम (ﷺ) का क़ुर्आन पढ़ना मुतवज्जह होकर सुनता है जो ख़ुश आवाज़ी से उसको पढ़ता है। अबू हुरैरह (रज़ि.) के एक साथी ने कहा इस ह़दीष़ में यतग़न्ना बिल क़ुर्आनि का ये मा'नी है कि इसको पुकार कर पढ़ता है। (राजेअ़ : 5023)

٧٤٨٣- حَدَّثَنَا عُمَرُ بْنُ حَفْصِ بْنِ غِيَاثٍ حَدَّثَنَا أَبِي، حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، حَدَّثَنَا أَبُو صَالِحٍ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((يَقُولُ اللهُ

7483. हमसे उ़मर बिन ह़फ़्स़ बिन ग़याष़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे हमारे वालिद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे आ'मश ने बयान किया, उनसे अबू स़ालेह़ ने बयान किया और उनसे अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया अल्लाह तआ़ला फ़र्माएगा ऐ

आदम! वो कहेंगे, लब्बैक व सअ़देक, फिर आवाज़ से निदा देगा कि अल्लाह तुम्हें हुक्म देता है कि अपनी नस्ल में से दोज़ख़ का लश्कर निकाल। (राजेअ : 3348)

يَا آدَمُ فَيَقُولُ: لَبَّيْكَ وَسَعْدَيْكَ فَيُنَادِي بِصَوتٍ إِنَّ اللهَ يَأْمُرُكَ أَنْ تُخْرِجَ مِنْ ذُرِّيَّتِكَ بَعْثًا إِلَى النَّارِ)). [راجع: ٣٣٤٨]

तश्रीह : यहाँ से अल्लाह के कलाम में आवाज़ षाबित हुई और उन नादानों का रद्द हुआ जो कहते हैं कि अल्लाह के कलाम में न आवाज़ है न हुरूफ़ हैं। मआ़ज़ल्लाह अल्लाह के लफ़्ज़ों को कहते हैं ये अल्लाह के कलाम नहीं हैं क्योंकि अल्फ़ाज़ और हुरूफ़ और अस्वात सब हादिष हैं। इमाम अहमद ने फ़र्माया कि ये कमबख़्त लफ़्ज़िया जहमिया से बदतर हैं।

7484. हमसे उ़बैद बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, उनसे हिशाम ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि जिस क़द्र मुझे ख़दीजा (रज़ि.) पर ग़ैरत आती थी और किसी औरत पर नहीं आती थी और उनके रब ने हुक्म दिया था कि उन्हें जन्नत में एक घर की बशारत दे दें। (राजेअ : 3816)

٧٤٨٤- حَدَّثَنَا عُبَيْدُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: مَا غِرْتُ عَلَى امْرَأَةٍ مَا غِرْتُ عَلَى خَدِيجَةَ، وَلَقَدْ أَمَرَهُ رَبُّهُ أَنْ يُبَشِّرَهَا بِبَيْتٍ فِي الْجَنَّةِ. [راجع: ٣٨١٦]

इस ह़दीष़ से इमाम बुख़ारी (रह़.) ने ये षाबित किया कि अल्लाह का कलाम सिर्फ़ नफ़्सी और क़दीम नहीं है बल्कि वक़्तन फ़वक़्तन वो कलाम करता रहता है। चुनाँचे ह़ज़रत ख़दीजा (रज़ि.) को बशारत देने के लिये उसने कलाम किया।

बाब 33 : जिब्रईल के साथ अल्लाह का कलाम करना और अल्लाह का फ़रिश्तों को पुकारना। और मअ़मर बिन मुषन्ना ने कहा आयत, इन्नक लतुलक़्क़ियल क़ुर्आन (सूरह नमल) का मफ़्हूम है जो फ़र्माया कि, ऐ पैग़म्बर! आपको क़ुर्आन अल्लाह की त़रफ़ से मिलता है जो ह़िक्मत वाला ख़बरदार है। इसका मत़लब ये है कि क़ुर्आन आप पर डाला जाता है और आप उसको लेते हैं जैसे सूरह बक़र: में फ़र्माया कि, आदम ने अपने परवरदिगार से चंद कलिमे ह़ासिल किये रब का इस्तिक़्बाल करके।

٣٣- باب كَلاَمِ الرَّبِّ مَعَ جِبْرِيلَ وَنِدَاءِ اللهِ الْمَلاَئِكَةَ.

وَقَالَ مَعْمَرٌ: وَإِنَّكَ لَتُلَقَّى الْقُرْآنَ أَيْ يُلْقَى عَلَيْكَ، وَتَلَقَّاهُ أَنْتَ أَيْ تَأْخُذُهُ عَنْهُمْ وَمِثْلُهُ فَتَلَقَّى آدَمُ مِنْ رَبِّهِ كَلِمَاتٍ.

तश्रीह : अस़ल में तलक़्क़ि के मा'नी आगे जाकर मिलने या'नी इस्तिक़्बाल करने के हैं चूँकि आँह़ज़रत (ﷺ) वह्य के इंतिज़ार में रहते जिस वक़्त वह्य उतरती तो गोया आप वह्य का इस्तिक़्बाल करते। इस क़ौल से इमाम बुख़ारी (रह़.) ने ये निकाला कि अल्लाह के कलाम में हुरूफ़ और अल्फ़ाज़ हैं।

7485. मुझसे इस्ह़ाक़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अ़ब्दुस़्समद ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुर्रह़मान इब्ने अ़ब्दुल्लाह बिन दीनार ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने, उनसे अबू स़ालेह़ ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया जब अल्लाह तआ़ला

٧٤٨٥- حَدَّثَنِي إِسْحَاقُ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الصَّمَدِ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ هُوَ ابْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ دِينَارٍ عَنْ أَبِيهِ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ : قَالَ

رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: ((إِنَّ اللهَ تَبَارَكَ وَتَعَالَى إِذَا أَحَبَّ عَبْدًا نَادَى جِبْرِيلَ إِنَّ اللهَ قَدْ أَحَبَّ فُلاَنًا فَأَحِبَّهُ فَيُحِبُّهُ جِبْرِيلُ، ثُمَّ يُنَادِي جِبْرِيلُ فِي السَّمَاءِ إِنَّ اللهَ قَدْ أَحَبَّ فُلاَنًا، فَأَحِبُّوهُ فَيُحِبُّهُ أَهْلُ السَّمَاءِ وَيُوضَعُ لَهُ الْقَبُولُ فِي أَهْلِ الأَرْضِ)).

[راجع: ٣٢٠٩]

किसी बन्दे से मुहब्बत करता है तो जिब्राईल (अ.) को आवाज़ देता है कि अल्लाह फ़लाँ से मुहब्बत करता है तुम भी उससे मुहब्बत करो। चुनाँचे जिब्राईल (अ.) भी उससे मुहब्बत करते हैं। फिर वो आसमान में आवाज़ देते हैं कि अल्लाह फ़लाँ से मुहब्बत करता है तुम भी उससे मुहब्बत करो। चुनाँचे अहले आसमान भी उससे मुहब्बत करने लगते हैं और इस तरह रूए ज़मीन में भी उसे मक़्बूलियत हासिल हो जाती है।

(राजेअ़ : 3209)

उसकी ता'ज़ीम और मुहब्बत सबके दिलों में समा जाती है। ये ख़ालिसन मुवह्हिदीन सुन्नते नबवी के ताबेदारों का ज़िक्र है उन ही को दूसरे लफ़्ज़ों में औलिया अल्लाह कहा जाता है न कि फ़ुस्साक़ फ़ुज्जार बिदअ़ती लोग वो तो अल्लाह और रसूल के दुश्मन हैं।

٧٤٨٦- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، عَنْ مَالِكٍ عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ، قَالَ: ((يَتَعَاقَبُونَ فِيكُمْ مَلاَئِكَةٌ بِاللَّيْلِ وَمَلاَئِكَةٌ بِالنَّهَارِ، وَيَجْتَمِعُونَ فِي صَلاَةِ الْعَصْرِ وَصَلاَةِ الْفَجْرِ، ثُمَّ يَعْرُجُ الَّذِينَ بَاتُوا فِيكُمْ فَيَسْأَلُهُمْ وَهُوَ أَعْلَمُ بِهِمْ كَيْفَ تَرَكْتُمْ عِبَادِي؟ فَيَقُولُونَ : تَرَكْنَاهُمْ وَهُمْ يُصَلُّونَ وَأَتَيْنَاهُمْ وَهُمْ يُصَلُّونَ)).

[راجع: ٥٥٥]

7486. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, उनसे मालिक ने, उनसे अबुज़्ज़िनाद ने, उनसे अअ़रज ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया तुम्हारे पास रात और दिन के फ़रिश्ते एक के बाद एक आते हैं और अ़स्र और फ़ज्र की नमाज़ों में दोनों वक़्त के फ़रिश्ते इकट्ठे होते हैं। फिर जब वो फ़रिश्ते ऊपर जाते हैं जिन्होंने रात तुम्हारे साथ गुज़ारी है तो अल्लाह तआ़ला उनसे पूछता है हालाँकि वो बन्दों के अहवाल का सबसे ज़्यादा जानने वाला है कि तुमने मेरे बन्दों को किस हाल में छोड़ा? वो जवाब देते हैं कि हमने उन्हें इस हाल में छोड़ा कि वो नमाज़ पढ़ रहे थे और जब हम उनके पास गये जब भी वो नमाज़ पढ़ रहे थे। (राजेअ़ : 555)

इस हदीष़ से इमाम बुख़ारी (रह़.) ने ये निकाला कि अल्लाह तआ़ला फ़रिश्तों से कलाम करता है।

٧٤٨٧- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ وَاصِلٍ عَنِ الْمَعْرُورِ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا ذَرٍّ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((أَتَانِي جِبْرِيلُ فَبَشَّرَنِي أَنَّهُ مَنْ مَاتَ لاَ يُشْرِكُ بِاللهِ شَيْئًا، دَخَلَ الْجَنَّةَ قُلْتُ: وَإِنْ سَرَقَ وَإِنْ زَنَى قَالَ: وَإِنْ سَرَقَ وَإِنْ زَنَى)).[راجع: ١٢٣٧]

7487. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे ग़ुन्दर ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे वासिल ने, उनसे मअ़रूर ने बयान किया कि मैंने अबू ज़र्र (रज़ि.) से सुना कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया मेरे पास जिब्राईल (अ.) आए और मुझे ये बशारत दी कि जो शख़्स इस हाल में मरेगा कि वो अल्लाह के साथ किसी को शरीक नहीं ठहराता होगा तो वो जन्नत में जाएगा। मैंने पूछा गो उसने चोरी की और ज़िना भी की हो? फ़र्माया कि गो उसने चोरी और ज़िना किया हो। (राजेअ़ : 1237)

तश्रीह : दूसरी आयत में है कि **व मा नतनज़्ज़लु इल्ला बिअम्रि रब्बिक** (मरयम : 64) एक तो जिब्रईल (अ.) उस वक़्त उतरते थे जब अल्लाह का हुक्म होता इसलिये ये बशारत जो उन्होंने आँहज़रत (ﷺ) को दी **बिअम्रि** इलाही थी गोया अल्लाह ने हज़रत जिब्रईल (अ.) से फ़र्माया कि जाकर हज़रत मुहम्मद (ﷺ) को ये बशारत दे दो पस बाब की मुताबक़त हासिल हो गई।

बाब 34 : सूरह निसा में अल्लाह तआला का इर्शाद, अल्लाह तआला ने इस क़ुर्आन को जानकर उतारा

और फ़रिश्ते भी गवाह हैं। मुजाहिद ने बयान किया कि आयत यतनज़्ज़लुल अम्रू बयनहुन्ना का मफ़्हूम ये है कि सातों आसमान और सातों ज़मीनों के बीच अल्लाह के हुक्म उतरते रहते हैं। (सूरह तलाक़)

٣٤- باب قَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿أَنْزَلَهُ بِعِلْمِهِ وَالْمَلاَئِكَةُ يَشْهَدُونَ﴾ قَالَ مُجَاهِدٌ : يَتَنَزَّلُ الأَمْرُ بَيْنَهُنَّ بَيْنَ السَّمَاءِ السَّابِعَةِ وَالأَرْضِ السَّابِعَةِ.

तश्रीह : इस बाब में हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने ये षाबित किया कि क़ुर्आन अल्लाह का उतारा हुआ कलाम है। या'नी अल्लाह तआला जिब्रईल (अ.) को ये कलाम सुनाता था और जिब्रईल (अ.) मुहम्मद (ﷺ) को तो यही क़ुर्आन या'नी अल्फ़ाज़ व मआनी अल्लाह का कलाम हैं इसको अल्लाह ने उतारा है। मतलब ये है कि वो मख़्लूक़ नहीं है जैसे कि जहमिया और मुअतज़िला ने गुमान किया है।

7488. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अबुल अहवस़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अबू इस्हाक़ हम्दानी ने बयान किया, उनसे बराअ बिन आज़िब (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, ऐ फ़लाँ! जब तुम अपने बिस्तर पर जाओ तो ये दुआ करो। ऐ अल्लाह! मैंने अपनी जान तेरे सुपुर्द कर दी और अपना रुख़ तेरी तरफ़ मोड़ दिया और अपना मामला तेरे सुपुर्द कर दिया और तेरी पनाह ली, तेरी तरफ़ रग़बत की वजह से और तुझसे डरकर। तेरे सिवा कोई पनाह और नजात की जगह नहीं, मैं तेरी किताब पर ईमान लाया जो तूने नाज़िल की और तेरे नबी पर ईमान लाया जो तूने भेजे। पस अगर तुम आज रात मर गये तो फ़ितरत पर मरोगे और सुबह को ज़िन्दा उठे तो षवाब मिलेगा। (राजेअ : 247)

٧٤٨٨- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا أَبُو الأَحْوَصِ، حَدَّثَنَا أَبُو إِسْحَاقَ الْهَمْدَانِيُّ، عَنِ الْبَرَاءِ بْنِ عَازِبٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((يَا فُلاَنُ إِذَا أَوَيْتَ إِلَى فِرَاشِكَ فَقُلْ: اللَّهُمَّ أَسْلَمْتُ نَفْسِي إِلَيْكَ وَوَجَّهْتُ وَجْهِي إِلَيْكَ، وَفَوَّضْتُ أَمْرِي إِلَيْكَ، وَأَلْجَأْتُ ظَهْرِي إِلَيْكَ رَغْبَةً وَرَهْبَةً إِلَيْكَ، لاَ مَلْجَأَ وَلاَ مَنْجَا مِنْكَ إِلاَّ إِلَيْكَ آمَنْتُ بِكِتَابِكَ الَّذِي أَنْزَلْتَ وَبِنَبِيِّكَ الَّذِي أَرْسَلْتَ، فَإِنَّكَ إِنْ مُتَّ فِي لَيْلَتِكَ مُتَّ عَلَى الْفِطْرَةِ وَإِنْ أَصْبَحْتَ أَصَبْتَ أَجْرًا)).

[راجع: ٢٤٧]

लफ़्ज़ **बिकिताबिकल्लज़ी उन्ज़िलत** से बाब का मतलब षाबित हुआ कि क़ुर्आन मजीद अल्लाह का उतारा हुआ कलाम है।

7489. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे इस्माईल बिन अबी ख़ालिद ने, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूले करीम (ﷺ) ने ग़ज़्वा-ए-ख़ंदक़ के दिन फ़र्माया, ऐ

٧٤٨٩- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ إِسْمَاعِيلَ بْنَ أَبِي خَالِدٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ أَبِي أَوْفَى قَالَ: قَالَ رَسُولُ

الله ﷺ يَوْمَ الأَحْزَابِ: ((اللَّهُمَّ مُنْزِلَ الْكِتَابِ سَرِيعَ الْحِسَابِ اهْزِمِ الأَحْزَابَ وَزَلْزِلْ بِهِمْ)). زَادَ الْحُمَيْدِيُّ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، حَدَّثَنَا ابْنُ أَبِي خَالِدٍ، سَمِعْتُ عَبْدَ الله سَمِعْتُ النَّبِيَّ ..

[راجع: ٢٩٣٣]

अल्लाह! किताब (क़ुर्आन) के नाज़िल करने वाले! जल्द ह़िसाब लेने वाले! इन दुश्मन जमाअ़तों को शिकस्त दे और इनके पाँव डगमगा दे। ह़ुमैदी ने इसे यूँ रिवायत किया कि हमसे सुफ़यान बिन उ़यैना ने बयान किया, कहा हमसे इस्माईल बिन अबी ख़ालिद ने बयान किया और उन्होंने अ़ब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा (रज़ि.) से सुना, कहा मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना।

(राजेअ़ : 2933)

तश्रीह़ : मज़्मूने बाब लफ़्ज़ मुंज़िलल किताब से निकला। सनदे मज़्कूरा में सुफ़यान के सिमाअ़ की इब्ने अबी ख़ालिद से और इब्ने अबी ख़ालिद के सिमाअ़ की अ़ब्दुल्लाह बिन अबी औफ़ा से स़राह़त है।

٧٤٩٠- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا عَنْ هُشَيْمٍ، عَنْ أَبِي بِشْرٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ الله عَنْهُمَا: ﴿وَلاَ تَجْهَرْ بِصَلاَتِكَ وَلاَ تُخَافِتْ بِهَا﴾، قَالَ: أُنْزِلَتْ وَرَسُولُ الله ﷺ مُتَوَارٍ بِمَكَّةَ فَكَانَ إِذَا رَفَعَ صَوْتَهُ سَمِعَ الْمُشْرِكُونَ فَسَبُّوا الْقُرْآنَ وَمَنْ أَنْزَلَهُ، وَمَنْ جَاءَ بِهِ وَقَالَ الله تَعَالَى: ﴿وَلاَ تَجْهَرْ بِصَلاَتِكَ وَلاَ تُخَافِتْ بِهَا﴾ لاَ تَجْهَرْ بِصَلاَتِكَ حَتَّى يَسْمَعَ الْمُشْرِكُونَ ﴿وَلاَ تُخَافِتْ بِهَا﴾ عَنْ أَصْحَابِكَ فَلاَ تُسْمِعُهُمْ ﴿وَابْتَغِ بَيْنَ ذَلِكَ سَبِيلاً﴾ أَسْمِعْهُمْ وَلاَ تَجْهَرْ حَتَّى يَأْخُذُوا عَنْكَ الْقُرْآنَ.[راجع: ٤٧٢٢]

7490. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, उनसे हुशैम बिन बशीर ने, उनसे अबी बिश्र ने, उनसे सईद बिन जुबैर ने और उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने सूरह बनी इस्राईल की आयत व ला तज्हरु बिस़लातिका वला तुख़ाफ़ित बिहा के बारे में ये कि ये उस वक़्त नाज़िल हुई जब रसूलुल्लाह (ﷺ) मक्का में छुपकर इबादत करते थे। जब आप नमाज़ में आवाज़ बुलंद करते तो मुश्रिकीन सुनते और क़ुर्आन मजीद और उसके नाज़िल करने वाले अल्लाह को और उसके लाने वाले जिब्रईल (अ़.) को गाली देते (और आँह़ज़रत ﷺ को भी) इसीलिये अल्लाह तआ़ला ने फ़र्माया कि, अपनी नमाज़ में न आवाज़ बुलंद करो और न बिल्कुल आहिस्ता या'नी आवाज़ इतनी बुलंद भी न कर कि मुश्रिकीन सुन लें और इतनी आहिस्ता भी न कर कि आपके साथी भी न सुन सकें बल्कि इनके दरम्यानी का रास्ता इख़्तियार कर। मत़लब ये है कि इतनी आवाज़ से पढ़ो कि आपके अस़्ह़ाब सुन लें और क़ुर्आन सीख लें, इससे ज़्यादा चिल्ला कर न पढ़ें। (राजेअ़ : 4722)

٣٥- باب قَوْلِ الله تَعَالَى : ﴿يُرِيدُونَ أَنْ يُبَدِّلُوا كَلاَمَ الله﴾

बाब 35 : सूरह फ़तह में अल्लाह तआ़ला का इर्शाद, ये गंवार चाहते हैं कि अल्लाह का कलाम बदल दें।

إِنَّهُ لَقَوْلٌ فَصْلٌ حَقٌّ وَمَا هُوَ بِالْهَزْلِ: بِاللَّعِبِ

या'नी अल्लाह ने जो वादे ह़ुदैबिया के मुसलमानों से किये थे कि उनको बिला शिर्कते ग़ैर फ़तह़ मिलेगी। और सूरह त़ारिक़ में फ़र्माया कि, क़ुर्आन मजीद फ़ैस़ला करने वाला कलाम है वो कुछ हंसी दिल लगी नहीं है।

तशरीह : इस बाब के लाने से इमाम बुख़ारी (रह.) की ग़र्ज़ ये है कि अल्लाह का कलाम कुछ क़ुर्आन से ख़ास नहीं है बल्कि अल्लाह जब चाहता है ह़स्बे ज़रूरत और ह़स्बे मौक़ा कलाम करता है। चुनाँचे सुलह़ हुदबिया में जब मुसलमान बहुत रंजीदा थे अपने रसूल के ज़रिये से अल्लाह ने उनसे वा'दा किया था कि उनको बिला शिर्कत ग़ैर एक फ़तह़ ह़ासिल होगी ये भी अल्लाह का एक कलाम था और जो आँह़ज़रत (ﷺ) ने अल्लाह के कलाम नक़ल किये हैं वो सब उसी के कलाम हैं।

7491. हमसे हुमैदी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, कहा हमसे ज़ुह्री ने, उनसे सईद बिन मुसय्यब ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया अल्लाह तआला फ़र्माता है कि इब्ने आदम मुझे तकलीफ़ पहुँचाता है, ज़माने को बुरा भला कहता है, ह़ालाँकि मैं ही ज़माने को पैदा करने वाला हूँ। मेरे ही हाथ में तमाम काम हैं, मैं जिस त़रह़ चाहता हूँ रात और दिन को फेरता रहता हूँ। (राजेअ : 4826)

٧٤٩١- حَدَّثَنَا الْحُمَيْدِيُّ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، حَدَّثَنَا الزُّهْرِيُّ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ الْمُسَيَّبِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ : قَالَ النَّبِيُّ ﷺ، قَالَ اللهُ تَعَالَى : ((يُؤْذِينِي ابْنُ آدَمَ، يَسُبُّ الدَّهْرَ وَأَنَا الدَّهْرُ بِيَدِي الأَمْرُ أُقَلِّبُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ)). [راجع: ٤٨٢٦]

बाब का तर्जुमा की मुत़ाबक़त ज़ाहिर है कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने इस ह़दीष़ को अल्लाह का कलाम फ़र्माया।

7492. हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे आ'मश ने बयान किया, उनसे अबू स़ालेह़ ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल फ़र्माता है कि रोज़ा ख़ालिस़ मेरे लिये होता है और मैं ही इसका बदला देता हूँ। बन्दा अपनी शह्वत, खाना, पीना, मेरी रज़ा के लिये छोड़ता है और रोज़ा गुनाहों से बचने की ढाल है और रोज़ेदार के लिये दो ख़ुशियाँ हैं। एक ख़ुशी उस वक़्त जब वो इफ़्तार करता है और एक ख़ुशी उस वक़्त जब वो अपने रब से मिलता है और रोज़ेदार के मुँह की बू अल्लाह के नज़दीक मुश्क व अ़म्बर की ख़ुश्बू से ज़्यादा पाकीज़ा है। (राजेअ : 1894)

٧٤٩٢- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ، حَدَّثَنَا الأَعْمَشُ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((يَقُولُ اللهُ عَزَّ وَجَلَّ: الصَّوْمُ لِي وَأَنَا أَجْزِي بِهِ، يَدَعُ شَهْوَتَهُ وَأَكْلَهُ وَشُرْبَهُ مِنْ أَجْلِي، وَالصَّوْمُ جُنَّةٌ وَلِلصَّائِمِ فَرْحَتَانِ: فَرْحَةٌ حِينَ يُفْطِرُ، وَفَرْحَةٌ حِينَ يَلْقَى رَبَّهُ، وَلَخُلُوفُ فَمِ الصَّائِمِ أَطْيَبُ عِنْدَ اللهِ مِنْ رِيحِ الْمِسْكِ)). [راجع: ١٨٩٤]

रोज़ेदार के बारे में ये ह़दीष़ कलामे इलाही के त़ौर पर वारिद हुई है या'नी अल्लाह ने ख़ुद ऐसा ऐसा फ़र्माया है। ये उसका कलाम है जो क़ुर्आन मजीद के अ़लावा है। इससे भी कलामे इलाही ष़ाबित हुआ और मुअ़तज़िला और जहमिया का रद्द हुआ जो अल्लाह के कलाम करने से मुंकिर हैं। बाब का तर्जुमा की मुत़ाबक़त ज़ाहिर है कि रसूले करीम (ﷺ) ने इस ह़दीष़ को अल्लाह का कलाम फ़र्माया।

7493. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुह़म्मद मुस्नदी ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने बयान किया, कहा हमको मअ़मर ने ख़बर दी, उन्हें हम्माम ने और उन्हें अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, अय्यूब (अ.) कपड़े उतारकर नहा रहे थे कि सोने की टिड्डियों का एक दल उन पर आकर गिरा और आप उन्हें अपने कपड़े मे समेटने लगे। उनके रब ने उन्ह पुकारा कि ऐ

٧٤٩٣- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ مُحَمَّدٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنْ هَمَّامٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((بَيْنَمَا أَيُّوبُ يَغْتَسِلُ عُرْيَانًا خَرَّ عَلَيْهِ رِجْلُ جَرَادٍ مِنْ ذَهَبٍ، فَجَعَلَ يَحْثِي فِي

अय्यूब! क्या मैंने तुझे मालदार बनाकर इन टिड्डियों से बेपरवाह नहीं कर दिया है। उन्होंने अ़र्ज़ किया क्यूँ नहीं बेशक तूने मुझको बेपरवाह मालदार किया है मगर तेरा फ़ज़्ल और करम और रहमत से भी मैं कहीं बेपरवाह हो सकता हूँ। (राजेअ़ : 279)

ثَوْبِهِ فَنَادَاهُ رَبُّهُ: يَا أَيُّوبُ أَلَمْ أَكُنْ أَغْنَيْتُكَ عَمَّا تَرَى؟ قَالَ: بَلَى يَا رَبِّ، وَلَكِنْ لاَ غِنَى بِي عَنْ بَرَكَتِكَ)). [راجع: ٢٧٩]

तश्रीह : साफ़ ज़ाहिर है कि अल्लाह पाक ने ख़ुद हज़रत अय्यूब (अ.) से ख़िताब किया और कलाम किया और ये कलाम बाआवाज़े बुलंद है ये कहना कि अल्लाह के कलाम में हुरूफ़ और आवाज़ नहीं है किस क़दर कमअ़क़्ली और गुमराही की बात है आजकल भी ऐसे लोग बहुत हैं जो जहमिया और मुअ़तज़िला जैसा अ़क़ीदा रखते हैं। अल्लाह उनको नेक समझ अ़ता करे, आमीन।

7494. हमसे इस्माईल ने बयान किया, कहा मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे शिहाब ने, उनसे अबू अ़ब्दुल्लाह अग़र्र ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया हमारा रब तबारक व तआ़ला हर रात आसमाने दुनिया पर आता है। उस वक़्त जब रात का आख़िरी तिहाई हिस्सा बाक़ी रह जाता है और कहता है कि मुझे कौन बुलाता है कि मैं उसे जवाब दूँ, मुझसे कौन मांगता है कि मैं उसे अ़ता करूँ, मुझसे कौन मग़्फ़िरत तलब करता है कि मैं उसकी मग़्फ़िरत करूँ? (राजेअ़ : 1145)

٧٤٩٤- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، حَدَّثَنَا مَالِكٌ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، عَنْ أَبِي عَبْدِ اللهِ الأَغَرِّ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ ((يَتَنَزَّلُ رَبُّنَا تَبَارَكَ وَتَعَالَى كُلَّ لَيْلَةٍ إِلَى السَّمَاءِ الدُّنْيَا حِينَ يَبْقَى ثُلُثُ اللَّيْلِ الآخِرُ فَيَقُولُ: مَنْ يَدْعُونِي فَأَسْتَجِيبَ لَهُ مَنْ يَسْأَلُنِي فَأُعْطِيَهُ مَنْ يَسْتَغْفِرُنِي فَأَغْفِرَ لَهُ)). [راجع: ١١٤٥]

अल्लाह पाक का अ़र्शे मुअ़ल्ला से आसमाने दुनिया पर उतरना और कलाम करना षाबित हुआ जो लोग अल्लाह के बारे में इन चीज़ों से इंकार करते हैं उनको ग़ौर करना चाहिये कि इससे वाज़ेह़ दलील और क्या होगी।

7495. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐ़ब ने ख़बर दी, कहा हमसे अबुज़्ज़िनाद ने बयान किया, उनसे अअ़रज ने और उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना, उन्होंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना, आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि गो दुनिया में हम सबसे आख़िरी उम्मत हैं लेकिन आख़िरत में सबसे आगे होंगे। (राजेअ़ : 238)

٧٤٩٥- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، حَدَّثَنَا أَبُو الزِّنَادِ أَنَّ الأَعْرَجَ حَدَّثَهُ أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ أَنَّهُ سَمِعَ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ: ((نَحْنُ الآخِرُونَ السَّابِقُونَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ)).[راجع: ٢٣٨]

7496. और इसी सनद से ये भी मरवी है कि अल्लाह तआ़ला फ़र्माता है तुम ख़र्च करो तो मैं तुम पर ख़र्च करूँगा। (राजेअ़ : 4684)

٧٤٩٦- وَبِهَذَا الإِسْنَادِ قَالَ اللهُ: ((أَنْفِقْ أُنْفِقْ عَلَيْكَ)).[راجع: ٤٦٨٤]

यहाँ भी अल्लाह पाक का ऐसा कलाम मज़्कूर हुआ जो क़ुर्आन में नहीं है और यक़ीनन अल्लाह का कलाम है जिसे ह़दीषे क़ुदसी कहते हैं।

7497. हमसे ज़ुहैर बिन हर्ब ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन फ़ुज़ैल ने बयान किया, उनसे अ़म्मारा बिन क़अ़क़ाअ़ ने,

٧٤٩٧- حَدَّثَنَا زُهَيْرُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا ابْنُ فُضَيْلٍ، عَنْ عُمَارَةَ، عَنْ أَبِي زُرْعَةَ،

عن ابي هُرَيْرَةَ فَقَالَ : هٰذِهِ خَدِيجَةُ أَتَتْكَ بِإِنَاءٍ فِيهِ طَعَامٌ أَوْ إِنَاءٍ فِيهِ شَرَابٌ فَأَقْرِئْهَا مِنْ رَبِّهَا السَّلَامَ وَبَشِّرْهَا بِبَيْتٍ مِنْ قَصَبٍ لَا صَخَبَ فِيهِ وَلَا نَصَبَ.

[راجع: ٣٨٢٠]

उनसे अबू ज़रआ ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि (जिब्रईल अ.ने कहा या रसूलल्लाह!) ये ख़दीजा (रज़ि.) जो आपके पास बर्तन में खाना या पानी लेकर आती हैं इन्हें उनके रब की तरफ़ से सलाम कहिए और इन्हें ख़ोलदार मोती के एक महल की ख़ुशख़बरी सुनाइये, जिसमें न शोर होगा और न कोई तकलीफ़ होगी। (राजेअ : 3820)

यहाँ भी अल्लाह का कलाम बहक़्क़े हज़रत ख़दीजा(रज़ि.) नक़ल हुआ यही बाब से मुताबक़त है। हज़रत ख़दीजा (रज़ि.) की फ़ज़ीलत षाबित हुई। ख़दीजा बिन्ते ख़ुवैलिद (रज़ि.) क़ुरैश की बहुत मालदार शरीफ़तरीन ख़ातून जिन्होंने आँहज़रत (ﷺ) से ख़ुद रग़बत से निकाह किया। आप अर्सा से बेवा थीं बाद में आँहज़रत (ﷺ) के साथ इस वफ़ाशिआरी से ज़िंदगी गुज़ारी कि जिसकी मिषाल मिलनी मुश्किल है। 65 साल की उम्र में हिजरते नबवी से तीन साल पहले रमज़ान शरीफ़ में इंतिक़ाल हुआ और मक्का के मशहूर क़ब्रिस्तान जीहून में आपको दफ़न किया गया। आपकी जुदाई का आँहज़रत (ﷺ) को सख़्ततरीन सदमा हुआ। **इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजेऊन।**

٧٤٩٨- حَدَّثَنَا مُعَاذُ بْنُ أَسَدٍ، أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنْ هَمَّامِ بْنِ مُنَبِّهٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((قَالَ اللهُ: أَعْدَدْتُ لِعِبَادِي الصَّالِحِينَ مَا لَا عَيْنٌ رَأَتْ وَلَا أُذُنٌ سَمِعَتْ وَلَا خَطَرَ عَلَى قَلْبِ بَشَرٍ)).

[راجع: ٣٢٤٤]

7498. हमसे मुआज़ बिन असद ने बयान किया, कहा हमको अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, कहा हमको मअ़मर ने ख़बर दी, उन्हें हम्माम बिन मुनब्बा ने और उन्हें अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया अल्लाह तआ़ला फ़र्माता है कि जन्नत में मैंने अपने नेक बन्दों के लिये वो चीज़ें तैयार कर रखी हैं जिन्हें न आँखों ने देखा, न कानों ने सुना और न किसी इंसान के दिल में उनका ख़याल गुज़रा। (राजेअ : 3244)

इस हदीष में साफ़ अल्लाह का कलाम नक़ल हुआ है अल्लाह पाक आज के मुअतज़िलों और मुंकिरों को इन अहादीष पर ग़ौर करने की हिदायत बख़्शे।

٧٤٩٩- حَدَّثَنَا مَحْمُودٌ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، أَخْبَرَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ، أَخْبَرَنِي سُلَيْمَانُ الأَحْوَلُ أَنَّ طَاوُسًا أَخْبَرَهُ أَنَّهُ سَمِعَ ابْنَ عَبَّاسٍ يَقُولُ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ إِذَا تَهَجَّدَ مِنَ اللَّيْلِ قَالَ: ((اللَّهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ أَنْتَ نُورُ السَّمٰوَاتِ وَالأَرْضِ، وَلَكَ الْحَمْدُ أَنْتَ قَيِّمُ السَّمَاوَاتِ وَالأَرْضِ، وَلَكَ الْحَمْدُ، أَنْتَ رَبُّ السَّمٰوَاتِ وَالأَرْضِ وَمَنْ فِيهِنَّ، أَنْتَ

7499. हमसे महमूद बिन ग़ीलान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ ने बयान किया, कहा हमको इब्ने जुरैज ने ख़बर दी, उन्होंने कहा मुझको सुलैमान अहवल ने ख़बर दी, उन्हें ताउस यमानी ने ख़बर दी, उन्होंने हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) जब रात में तहज्जुद पढ़ने उठते तो कहते ऐ अल्लाह! हम्द तेरे ही लिये है कि तू आसमान व ज़मीन का नूर है। हम्द तेरे ही लिये है कि तू आसमान और ज़मीन का थामने वाला है। हम्द तेरे ही लिये है कि तू आसमान और ज़मीन का और जो कुछ इसमें है सबका रब है। तू सच है, तेरा वा'दा सच्चा है और तेरा क़ौल सच्चा है। तेरी मुलाक़ात सच्ची है, जन्नत सच

الْحَقُّ وَوَعْدُكَ الْحَقُّ، وَقَوْلُكَ الْحَقُّ وَلِقَاؤُكَ الْحَقُّ، وَالْجَنَّةُ حَقٌّ وَالنَّارُ حَقٌّ وَالنَّبِيُّونَ حَقٌّ وَالسَّاعَةُ حَقٌّ، اللَّهُمَّ لَكَ أَسْلَمْتُ وَبِكَ آمَنْتُ وَعَلَيْكَ تَوَكَّلْتُ، وَإِلَيْكَ أَنَبْتُ وَبِكَ خَاصَمْتُ وَإِلَيْكَ حَاكَمْتُ فَاغْفِرْ لِي مَا قَدَّمْتُ وَمَا أَخَّرْتُ وَمَا أَسْرَرْتُ وَمَا أَعْلَنْتُ أَنْتَ إِلَهِي لاَ إِلَهَ إِلاَّ أَنْتَ)). [راجع: ١١٢٠]

है और दोज़ख़ सच है। सारे अंबिया सच्चे हैं और क़यामत सच है। ऐ अल्लाह! मैं तेरे सामने ही झुका, तुझ पर ईमान लाया, तुझ पर भरोसा किया, तेरी ही तरफ़ रुजूअ किया, तेरे ही सामने अपना झगड़ा करता और तुझ ही से अपना फ़ैसला चाहता हूँ पस तू मेरी मग़्फ़िरत फ़र्मा अगले पिछले तमाम गुनाहों की जो मैंने छुपाकर किये और जो ज़ाहिर किये। तू ही मेरा मा'बूद है, तेरे सिवा और कोई मा'बूद नहीं। (राजेअ : 1120)

दुआ-ए-मुबारका में लफ़्ज़ **क़ौलकल हक़्क़** से बाब का तर्जुमा निकला कि या अल्लाह! तेरा कलाम करना हक़ है। इससे ही उन लोगों की तर्दीद होती है जो अल्लाह के कलाम में हुरूफ़ और आवाज़ होने के मुंकिर हैं।

٧٥٠٠- حَدَّثَنَا حَجَّاجُ بْنُ مِنْهَالٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ عُمَرَ النُّمَيْرِيُّ، حَدَّثَنَا يُونُسُ بْنُ يَزِيدَ الأَيْلِيُّ، قَالَ: سَمِعْتُ الزُّهْرِيَّ قَالَ : سَمِعْتُ عُرْوَةَ بْنَ الزُّبَيْرِ وَسَعِيدَ بْنَ الْمُسَيَّبِ وَعَلْقَمَةَ بْنَ وَقَّاصٍ وَعُبَيْدَ اللهِ بْنَ عَبْدِ اللهِ عَنْ حَدِيثِ عَائِشَةَ زَوْجِ النَّبِيِّ ﷺ حِينَ قَالَ لَهَا أَهْلُ الإِفْكِ مَا قَالُوا فَبَرَّأَهَا اللهُ مِمَّا قَالُوا: وَكُلٌّ حَدَّثَنِي طَائِفَةً مِنَ الْحَدِيثِ الَّذِي حَدَّثَنِي عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: وَلَكِنْ وَاللهِ مَا كُنْتُ أَظُنُّ أَنَّ اللهَ يُنْزِلُ فِي بَرَاءَتِي وَحْيًا يُتْلَى وَلَشَأْنِي فِي نَفْسِي كَانَ أَحْقَرَ مِنْ أَنْ يَتَكَلَّمَ اللهُ فِيَّ بِأَمْرٍ يُتْلَى، وَلَكِنِّي كُنْتُ أَرْجُو أَنْ يَرَى رَسُولُ اللهِ ﷺ فِي النَّوْمِ رُؤْيَا يُبَرِّئُنِي اللهُ بِهَا فَأَنْزَلَ اللهُ تَعَالَى: ﴿إِنَّ الَّذِينَ جَاؤُوا بِالإِفْكِ﴾ الْعَشْرَ الآيَاتِ. [راجع: ٢٥٩٣]

7500. हमसे हज्जाज बिन मिन्हाल ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर नुमैरी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे यूनुस बिन यज़ीद ने ऐली से बयान किया, कहा कि मैंने ज़ुह्री से सुना, उन्होंने कहा कि मैंने उ़र्वा बिन ज़ुबैर, सईद बिन मुसय्यब, अ़ल्क़मा बिन वक़्क़ास़ और उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) से सुना, नबी करीम (ﷺ) की ज़ोजा मुतह्हरा आ़इशा (रज़ि.) के बारे में जब तोह्मत लगाने वालों ने उन पर तोह्मत लगाई थी और अल्लाह ने उससे उन्हें बरी क़रार दिया था। उन सबने बयान किया और हर एक ने मुझसे आ़इशा (रज़ि.) की बयान की हुई बात का एक हिस़्सा बयान किया। उम्मुल मोमिनीन ने कहा कि अल्लाह की क़सम! मुझे ये ख़्याल नहीं था कि अल्लाह तआ़ला मेरी पाकी बयान करने के लिये वह्य नाज़िल करेगा जिसकी तिलावत होगी। मेरे दिल में मेरा दर्जा उससे बहुत कम था कि अल्लाह मेरे बारे में (क़ुर्आन मजीद में) वह्य नाज़िल करे जिसकी तिलावत होगी, अल्बत्ता मुझे उम्मीद थी कि रसूले करीम (ﷺ) कोई ख़्वाब देखेंगे जिसके ज़रिये अल्लाह मेरी बराअत कर देगा। लेकिन अल्लाह तआ़ला ने ये आयात नाज़िल की हैं इन्नल लज़ीन जाऊ बिल इफ़्कि अल्अख़ । दस आयात। (राजेअ : 2593)

दस आयतें जो सूरह नूर में हैं। मक़्सद अल्लाह का कलाम षाबित करना है जो बख़ूबी ज़ाहिर है। आयाते मज़्कूरा हज़रत आइशा (रज़ि.) की बराअत के बारे में नाज़िल हुईं। हज़रत आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि.) हज़रत अबूबक्र (रज़ि.) की साहबज़ादी और रसूले करीम (ﷺ) की बहुत ही महबूबा बीवी हैं जिनके मनाक़िब बहुत हैं। सन 58 हिजरी बमाहे रमज़ान 17 की शब में वफ़ात हुई। रात में दफ़न किया गया। उन दिनों हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) आमिले मदीना थे। उन्होंने नमाज़े जनाज़ा पढ़ाई। रज़ियल्लाहु अन्हा व अर्ज़ाहु, आमीन।

٧٥٠١- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا الْمُغِيرَةُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((يَقُولُ اللهُ إِذَا أَرَادَ عَبْدِي أَنْ يَعْمَلَ سَيِّئَةً فَلاَ تَكْتُبُوهَا عَلَيْهِ حَتَّى يَعْمَلَهَا، فَإِنْ عَمِلَهَا فَاكْتُبُوهَا بِمِثْلِهَا وَإِنْ تَرَكَهَا مِنْ أَجْلِي فَاكْتُبُوهَا لَهُ حَسَنَةً، وَإِذَا أَرَادَ أَنْ يَعْمَلَ حَسَنَةً فَلَمْ يَعْمَلْهَا فَاكْتُبُوهَا لَهُ حَسَنَةً فَإِنْ عَمِلَهَا فَاكْتُبُوهَا لَهُ بِعَشْرِ أَمْثَالِهَا إِلَى سَبْعِمِائَةِ)).

7501. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे मुग़ीरह बिन अ़ब्दुर्रहमान ने बयान किया, उनसे अबुज़्ज़िनाद ने बयान किया, उनसे अअ़रज ने बयान किया और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया अल्लाह तआ़ला फ़र्माता है कि जब मेरा बन्दा किसी बुराई का इरादा करे तो उसे न लिखो यहाँ तक कि उसे कर न ले। जब उसको कर ले फिर उसे उसके बराबर लिखो और अगर उस बुराई को वो मेरे डर से छोड़ दे तो उसके हक़ में एक नेकी लिखो और अगर बन्दा कोई नेकी करना चाहे तो उसके लिये इरादा ही पर एक नेकी लिख लाए और अगर वो इस नेकी को कर भी ले तो उस जैसी दस नेकियाँ उसके लिये लिखो।

इससे भी अल्लाह का कलाम करना षाबित हुआ कि वो क़ुर्आन के अलावा भी कलाम नाज़िल करता है। जैसा कि इन तमाम अहादीष में मौजूद है।

٧٥٠٢- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنِي سُلَيْمَانُ بْنُ بِلاَلٍ، عَنْ مُعَاوِيَةَ بْنِ أَبِي مُزَرِّدٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ يَسَارٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((خَلَقَ اللهُ الْخَلْقَ، فَلَمَّا فَرَغَ مِنْهُ قَامَتِ الرَّحِمُ فَقَالَ : مَهْ قَالَتْ: هَذَا مَقَامُ الْعَائِذِ بِكَ مِنَ الْقَطِيعَةِ فَقَالَ: أَلاَ تَرْضَيْنَ أَنْ أَصِلَ مَنْ وَصَلَكِ وَأَقْطَعَ مَنْ قَطَعَكِ؟ قَالَتْ: بَلَى يَا رَبِّ قَالَ: فَذَلِكَ لَكِ)) ثُمَّ قَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ: ﴿فَهَلْ عَسَيْتُمْ إِنْ تَوَلَّيْتُمْ أَنْ تُفْسِدُوا فِي الأَرْضِ وَتُقَطِّعُوا أَرْحَامَكُمْ؟﴾. [راجع: ٤٨٣٠]

7502. हमसे इस्माईल बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, उन्होंने कहा मुझसे सुलैमान बिन बिलाल ने बयान किया, उनसे मुआ़विया बिन अबी मुज़र्रद ने बयान किया और उनसे सईद बिन यसार ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया अल्लाह तआ़ला ने मख़्लूक़ पैदा की और जब उससे फ़ारिग़ हो गया तो रहम खड़ा हुआ। अल्लाह तआ़ला ने फ़र्माया कि ठहर जा। उसने कहा कि ये क़तअ़ रहम (नाता तोड़ना) से तेरी पनाह मांगने का मुक़ाम है। अल्लाह तआ़ला ने फ़र्माया क्या तुम इस पर राज़ी नहीं कि मैं नाता को जोड़ने वाले से अपने रहम का नाता जोड़ूँ और नाता को काटने वालों से जुदा हो जाऊँ। उसने कहा कि ज़रूर, मेरे रब! अल्लाह तआ़ला ने फ़र्माया, कि फिर यही तेरा मक़ाम है। फिर अबू हुरैरह (रज़ि.) ने सूरह मुहम्मद की ये आयत पढ़ी। मुम्किन है कि अगर तुम हाकिम बन जाओ तो ज़मीन में फ़साद करो और क़तअ़ रहम करो। (राजेअ़ : 4830)

अल्लाह तआला का एक वाज़ेह कलाम नक़ल हुआ ये बाब से मुताबक़त है। दूसरी रिवायत में है कि अल्लाह ने नात़ा से फ़सीह बलीग़ ज़ुबान में ये बातचीत की। बाब का तर्जुमा इससे निकला कि अल्लाह तआला ने नात़ा से कलाम किया। आयत में ये भी बतलाया गया है कि अकषर लोग दुनियावी इक़्तिदा व दौलत मिलने पर फ़साद और क़तअ रहमी ज़रूर करते हैं। इल्ला माशा अल्लाह।

٧٥٠٣- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ صَالِحٍ عَنْ عُبَيْدِ اللهِ، عَنْ زَيْدِ بْنِ خَالِدٍ قَالَ: مُطِرَ النَّبِيُّ ﷺ فَقَالَ: ((قَالَ اللهُ أَصْبَحَ مِنْ عِبَادِي كَافِرٌ بِي وَمُؤْمِنٌ بِي)).
[راجع: ٨٤٦]

7503. हमसे मुसद्दद बिन मुस्रहिद ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उ़ययना ने बयान किया, उनसे स़ालेह़ ने, उनसे उ़बैदुल्लाह ने, उनसे ज़ैद बिन ख़ालिद (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) के ज़माने में बारिश हुई तो आपने फ़र्माया कि अल्लाह तआला फ़र्माता है कि मेरे कुछ बन्दे सुबह़ काफ़िर होकर करते हैं और कुछ बन्दे सुबह़ मोमिन होकर करते हैं। (राजेअ: 846)

कलामे इलाही के लिये वाज़ेह़तरीन दलील है। दूसरी ह़दीष़ में तफ़्सील है कि बारिश होने पर जो लोग बारिश को अल्लाह की त़रफ़ से जानते हैं वो मोमिन हो जाते हैं और जो सितारों की ताष़ीर से बारिश का अ़क़ीदा रखते हैं वो अल्लाह के साथ कुफ़्र करने वाले हो जाते हैं।

٧٥٠٤- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، حَدَّثَنِي مَالِكٌ، عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ، قَالَ: ((قَالَ اللهُ إِذَا أَحَبَّ عَبْدِي لِقَائِي أَحْبَبْتُ لِقَاءَهُ، وَإِذَا كَرِهَ لِقَائِي كَرِهْتُ لِقَاءَهُ)).

7504. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, कहा मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे अबुज़्ज़िनाद ने, उनसे अअ़रज ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, अल्लाह तआला फ़र्माता है कि जब मेरा बन्दा मुझसे मुलाक़ात पसंद करता है तो मैं भी उससे मुलाक़ात पसंद करता हूँ और जब वो मुझसे मुलाक़ात नापसंद करता है तो मैं भी नापसंद करता हूँ।

एक फ़र्माने इलाही जो हर मुसलमान के याद रखने की चीज़ है। अल्लाह तआला हम सबको उसे आख़िर वक़्त में याद रखने की सआदत अ़ता करे आमीन या रब्बल आ़लमीन।

٧٥٠٥- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، حَدَّثَنَا أَبُو الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ، قَالَ: ((قَالَ اللهُ أَنَا عِنْدَ ظَنِّ عَبْدِي بِي)).
[راجع: ٧٤٠٥]

7505. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, कहा हमसे अबुज़्ज़िनाद ने बयान किया, उनसे अअ़रज ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया अल्लाह तआला फ़र्माता है कि मैं अपने बन्दे के गुमान के साथ हूँ जो वो मेरे बारे में रखता है। (राजेअ: 7405)

ये फ़र्माने इलाही भी इस क़ाबिल है कि हर मोमिन बन्दा हर वक़्त उसे ज़हन में रखकर ज़िंदगी गुज़ारे और अल्लाह के साथ हर वक़्त नेक गुमान रखे। बुराई का हर्गिज़ गुमान न रखे। जन्नत मिलने पर भी पूरा यक़ीन रखे। अल्लाह अपनी रहमत से उसके साथ वही करेगा जो उसका गुमान है। ह़दीष़ भी कलामे इलाही है ये इस ह़क़ीक़त की रोशन दलील है।

٧٥٠٦- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، حَدَّثَنِي مَالِكٌ، عَنْ أَبِي الزِّنَادِ، عَنِ الأَعْرَجِ عَنْ أَبِي

7506. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, कहा मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे

هُرَيْرَةَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، قَالَ: ((قَالَ رَجُلٌ لَمْ يَعْمَلْ خَيْرًا قَطُّ، فَإِذَا مَاتَ فَحَرِّقُوهُ وَاذْرُوا نِصْفَهُ فِي الْبَرِّ وَنِصْفَهُ فِي الْبَحْرِ، فَوَ اللهِ لَئِنْ قَدَرَ اللهُ عَلَيْهِ لَيُعَذِّبَنَّهُ عَذَابًا لاَ يُعَذِّبُهُ أَحَدًا مِنَ الْعَالَمِينَ. فَأَمَرَ اللهُ الْبَحْرَ فَجَمَعَ مَا فِيهِ وَأَمَرَ الْبَرَّ فَجَمَعَ مَا فِيهِ ثُمَّ قَالَ: لِمَ فَعَلْتَ؟ قَالَ: مِنْ خَشْيَتِكَ وَأَنْتَ أَعْلَمُ فَغَفَرَ لَهُ)).

[راجع: ٣٤٨١]

अबुज़्ज़िनाद ने, उनसे अअ़रज ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया एक शख़्स ने जिसने (बनी इस्राईल में से) कोई नेक काम कभी नहीं किया था, वस़िय्यत की कि जब वो मर जाए तो उसे जला डालें और उसकी आधी राख ख़ुश्की में और आधी दरिया में बिखेर दें क्योंकि अल्लाह की क़सम! अगर अल्लाह ने मुझ पर क़ाबू पा लिया तो ऐसा अ़ज़ाब मुझको देगा जो दुनिया के किसी शख़्स को भी वो नहीं देगा। फिर अल्लाह ने समुन्दर को हुक्म दिया और उसने तमाम राख जमा कर दी जो उसके अंदर थी। फिर उसने ख़ुश्की को हुक्म दिया और उसने भी अपनी तमाम राख जमा कर दी जो उसके अंदर थी। फिर अल्लाह तआ़ला ने उससे पूछा तूने ऐसा क्यूँ किया था? उसने अ़र्ज़ किया ऐ रब! तेरे डर से मैंने ऐसा किया और तू सबसे ज़्यादा जानने वाला है। पस अल्लाह तआ़ला ने उसको बख़्श दिया। (राजेअ़ : 3481)

क्योंकि वो शख़्स भले ही गुनहगार था पर मुवह्हिद था। अहले तौहीद के लिये मग़्फ़िरत की बड़ी उम्मीद है। आदमी को चाहिये कि शिर्क से हमेशा बचता रहे और तौहीद पर क़ायम रहे अगर शिर्क पर मरा तो मग़्फ़िरत की उम्मीद बिल्कुल नहीं है। क़ब्रों को पूजना, ता'ज़ियों और अ़लम के आगे सर झुकाना, मज़ारात का त़वाफ़ करना, किसी ख़्वाजा व क़ुतुब की नज़्र व नियाज़ करना, ये सारे शिर्किया काम हैं अल्लाह इन सबसे बचाए आमीन।

٧٥٠٧- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ إِسْحَاقَ، حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عَاصِمٍ، حَدَّثَنَا هَمَّامٌ، حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ بْنُ عَبْدِ اللهِ سَمِعْتُ عَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنَ أَبِي عَمْرَةَ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: ((إِنَّ عَبْدًا أَصَابَ ذَنْبًا وَرُبَّمَا قَالَ: أَذْنَبَ ذَنْبًا فَقَالَ: رَبِّ أَذْنَبْتُ ذَنْبًا وَرُبَّمَا قَالَ: أَصَبْتُ فَاغْفِرْ فَقَالَ رَبُّهُ: أَعَلِمَ عَبْدِي أَنَّ لَهُ رَبًّا يَغْفِرُ الذَّنْبَ وَيَأْخُذُ بِهِ، غَفَرْتُ لِعَبْدِي ثُمَّ مَكَثَ مَا شَاءَ اللهُ ثُمَّ أَصَابَ ذَنْبًا أَوْ أَذْنَبَ ذَنْبًا فَقَالَ: رَبِّ أَذْنَبْتُ أَوْ أَصَبْتُ آخَرَ فَاغْفِرْهُ فَقَالَ: أَعَلِمَ عَبْدِي أَنَّ لَهُ رَبًّا يَغْفِرُ الذَّنْبَ وَيَأْخُذُ بِهِ، غَفَرْتُ

7507. हमसे अह़मद बिन इस्ह़ाक़ ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अ़म्र बिन आ़सिम ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे हम्माम ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इस्ह़ाक़ बिन अ़ब्दुल्लाह ने, उन्होंने अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबी अ़म्र से सुना, कहा कि मैंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना, आपने फ़र्माया कि एक बन्दे ने बहुत गुनाह किये और कहा ऐ मेरे रब! मैं तेरा ही गुनहगार बन्दा हूँ, तू मुझे बख़्श दे। अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने फ़र्माया मेरा बन्दा जानता है कि उसका कोई रब ज़रूर है जो गुनाह को माफ़ करता है और गुनाह की वजह से सज़ा भी देता है मैंने अपने बन्दे को बख़्श दिया फिर बन्दा रुका रहा जितना अल्लाह ने चाहा और फिर उसने गुनाह किया और अ़र्ज़ किया मेरे रब! मैंने दोबारा गुनाह कर लिया, उसे भी बख़्श दे। अल्लाह तआ़ला ने फ़र्माया, मेरा बन्दा जानता है कि उसका रब ज़रूर है जो गुनाह माफ़ करता है और उसके बदले में सज़ा देता है, मैंने अपने बन्दे को बख़्श दिया। फिर जब तक अल्लाह ने चाहा बन्दा गुनाह से

لِعَبْدِي ثُمَّ مَكَثَ مَا شَاءَ اللهُ ثُمَّ أَذْنَبَ ذَنْبًا، وَرُبَّمَا قَالَ : أَصَابَ ذَنْبًا قَالَ : قَالَ رَبِّ أَصَبْتُ أَوْ: أَذْنَبْتُ آخَرَ فَاغْفِرْهُ لِي فَقَالَ: أَعَلِمَ عَبْدِي أَنَّ لَهُ رَبًّا يَغْفِرُ الذَّنْبَ، وَيَأْخُذُ بِهِ غَفَرْتُ لِعَبْدِي ثَلاَثًا فَلْيَعْمَلْ مَا شَاءَ)).

रुका रहा और फिर उसने गुनाह किया और अल्लाह के हुज़ूर में अ़र्ज़ किया, ऐ मेरे रब! मैंने गुनाह फिर कर लिया है तू मुझे बख़्श दे। अल्लाह तआ़ला ने फ़र्माया मेरा बन्दा जानता है कि उसका एक रब ज़रूर है जो गुनाह माफ़ करता है वरना उसकी वजह से सज़ा भी देता है मैंने अपने बन्दे को बख़्श दिया। तीन मर्तबा, पस अब जो चाहे अ़मल करे।

तश्रीह : ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) का मक़्सद ये है कि अल्लाह तआ़ला का कलाम करना ह़क़ है। इस ह़दीष़ में भी अल्लाह का कलाम एक गुनहगार के बारे में मज़्कूर हुआ और ये बतलाना भी मक़्सद है कि क़ुर्आन मजीद अल्लाह का कलाम है मगर क़ुर्आन मजीद के अ़लावा भी अल्लाह कलाम करता है। रसूले करीम (ﷺ) स़ादिक़ुल मस्दूक़ हैं। आपने ये कलामे इलाही नक़ल फ़र्माया है जो लोग अल्लाह के कलाम का इंकार करते हैं, उनके नज़दीक रसूलुल्लाह (ﷺ) स़ादिक़ुल मस्दूक़ नहीं हैं। इस ह़दीष़ से इस्तिग़्फ़ार की भी बड़ी फ़ज़ीलत ष़ाबित हुई बशर्ते कि गुनाहों से तौबा करते रहना चाहिये और इस्तिग़्फ़ार करता रहे तो उसको ज़रर न होगा। इस्तिग़्फ़ार की तीन शर्तें हैं। गुनाह से अलग हो जाना, नादिम होना, आगे के लिये ये निय्यत करना कि अब न करूँगा। इस निय्यत से अगर फिर गुनाह हो जाए तो फिर इस्तिग़्फ़ार करे। दूसरी ह़दीष़ में है अगर एक दिन में सत्तर बार वही गुनाह करे लेकिन इस्तिग़्फ़ार करता रहे तो उसने इस़रार नहीं किया। इस़रार के ये मा'नी हैं कि गुनाह पर नादिम न हो उसके फिर करने की निय्यत रखे। स़िर्फ़ ज़ुबान से इस्तिग़्फ़ार करता रहे कि ऐसा इस्तिग़्फ़ार, ख़ुद इस्तिग़्फ़ार के क़ाबिल है। **अल्लाहुम्म इन्ना नस्तग़्फ़िरुक व नतूबु इलैक फ़ग़्फ़िरलना या ख़ैरल ग़ाफ़िरीन, आमीन।**

٧٥٠٨- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ أَبِي الأَسْوَدِ، حَدَّثَنَا مُعْتَمِرٌ، سَمِعْتُ أَبِي حَدَّثَنَا قَتَادَةُ عَنْ عُقْبَةَ بْنِ عَبْدِ الْغَافِرِ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ أَنَّهُ ذَكَرَ رَجُلاً فِيمَنْ سَلَفَ أَوْ فِيمَنْ كَانَ قَبْلَكُمْ قَالَ كَلِمَةً يَعْنِي ((أَعْطَاهُ اللهُ مَالاً وَوَلَدًا، فَلَمَّا حَضَرَتِ الْوَفَاةُ قَالَ لِبَنِيهِ : أَيَّ أَبٍ كُنْتُ لَكُمْ قَالُوا خَيْرَ أَبٍ قَالَ: فَإِنَّهُ لَمْ يَبْتَئِرْ أَوْ لَمْ يَبْتَئِزْ عِنْدَ اللهِ خَيْرًا، وَإِنْ يَقْدِرِ اللهُ عَلَيْهِ يُعَذِّبْهُ فَانْظُرُوا إِذَا مُتُّ فَأَحْرِقُونِي حَتَّى إِذَا صِرْتُ فَحْمًا فَاسْحَقُونِي أَوْ قَالَ فَاسْحَكُونِي فَإِذَا كَانَ يَوْمُ رِيحٍ عَاصِفٍ فَأَذْرُونِي فِيهَا)) فَقَالَ نَبِيُّ اللهِ ﷺ: ((فَأَخَذَ مَوَاثِيقَهُمْ عَلَى ذَلِكَ وَرَبِّي فَفَعَلُوا، ثُمَّ

7508. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन अबिल अस्वद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे मुअ़तमिर ने बयान किया, उन्होंने कहा मैंने अपने वालिद से सुना, उन्होंने कहा हमसे क़तादा ने बयान किया, उनसे उ़क़्बा बिन अ़ब्दुल ग़ाफ़िर ने और उनसे अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने पिछली उम्मतों मे से एक शख़्स का ज़िक्र किया। उसके बारे में आपने एक कलिमा फ़र्माया या'नी अल्लाह ने उसे माल और औलाद सब कुछ दिया था। जब उसके मरने का वक़्त क़रीब आया तो उसने अपने लड़कों से पूछा कि मैं तुम्हारे लिये कैसा बाप ष़ाबित हुआ। उन्होंने कहा कि बेहतरीन बाप। उस पर उसने कहा कि लेकिन तुम्हारे बाप ने अल्लाह के यहाँ कोई नेकी नहीं भेजी है और अगर कहीं अल्लाह ने मुझे पकड़ लिया तो सख़्त अ़ज़ाब देगा तो देखो जब मैं मर जाऊँ तो मुझे जला देना, यहाँ तक कि जब मैं कोयला हो जाऊँ तो उसे ख़ूब पीस लेना और जिस दिन तेज़ आँधी आए उसमे मेरी ये राख उड़ा देना। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि उस पर उसमे अपने बेटों से पुख़्ता अ़हद लिया और अल्लाह की क़सम! कि उन लड़कों ने ऐसा ही किया,

जलाकर राख कर डाला, फिर उन्होंने उसकी राख को तेज़ हवा के दिन उड़ा दिया। फिर अल्लाह तआला ने कुन कहा कि हो जा तो वो फ़ौरन एक मर्द बन गया जो खड़ा हुआ था। अल्लाह तआला ने फ़र्माया, ऐ मेरे बन्दे! तुझे किस बात ने उस पर आमादा किया कि तूने ये काम कराया। उसने कहा कि तेरे डर ने। बयान किया कि अल्लाह तआला ने उसको कोई सज़ा नहीं दी बल्कि उस पर रहम किया। फिर मैंने ये बात अबू उष्मान नह्दी से बयान की तो उन्होंने कहा मैंने उसे सलमान फ़ारसी से सुना, अल्बत्ता उन्होंने ये लफ़्ज़ ज़्यादा किये कि, अज़्रूनी फ़िल बह्र या'नी मेरी राख को दरिया में डाल देना या कुछ ऐसा ही बयान किया।

اذْرُوهُ فِي يَوْمٍ عَاصِفٍ فَقَالَ اللهُ عَزَّ وَجَلَّ: كُنْ فَإِذَا هُوَ رَجُلٌ قَائِمٌ، قَالَ اللهُ: أَيْ عَبْدِي مَا حَمَلَكَ عَلَى أَنْ فَعَلْتَ مَا فَعَلْتَ؟ قَالَ: مَخَافَتُكَ أَوْ فَرَقٌ مِنْكَ، قَالَ: فَمَا تَلاَفَاهُ أَنْ رَحِمَهُ عِنْدَهَا)) وَقَالَ مَرَّةً أُخْرَى: فَمَا تَلاَفَاهُ غَيْرُهَا فَحَدَّثْتُ بِهِ أَبَا عُثْمَانَ فَقَالَ: سَمِعْتُ هَذَا مِنْ سَلْمَانَ غَيْرَ أَنَّهُ زَادَ فِيهِ اذْرُونِي فِي الْبَحْرِ أَوْ كَمَا حَدَّثَ.

हमसे मूसा बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे मुअतमिर बिन सुलैमान ने बयान किया और उसने लम यब्तइज़ के अल्फ़ाज़ कहे। (राजेअ: 3478)

.....– حَدَّثَنَا مُوسَى، حَدَّثَنَا مُعْتَمِرٌ وَقَالَ: لَمْ يَبْتَئِرْ. [راجع: ٣٤٧٨]

और ख़लीफ़ा बिन ख़य्यात (इमाम बुख़ारी के शैख़) ने कहा हमसे मुअतमिर ने बयान किया कि फिर यही हदीष़ नक़ल की इसमें लम यब्तइज़ है। क़तादा ने इसके मा'नी ये किये हैं। या'नी कोई नेकी आख़िरत के लिये ज़ख़ीरा नहीं की।

وَقَالَ لِي خَلِيفَةُ: حَدَّثَنَا مُعْتَمِرٌ وَقَالَ: لَمْ يَبْتَئِرْ فَسَّرَهُ قَتَادَةُ لَمْ يَدَّخِرْ.

अल्लाह ने उस गुनहगार बन्दे को फ़र्माया कि ऐ बन्दे! तूने ये ह़रकत क्यूँ कराई? इसी से बाब का मत़लब निकलता है कि अल्लाह का कलाम करना बरह़क़ है जो लोग कलामे इलाही से इंकार करते हैं वो स़रीह़ आयात और अह़ादीष़े नबविया के मुंकिर हैं हदाहुमुल्लाह। रावियों ने लफ़्ज यब्तइर या लम यब्तइज़ राअ और ज़ाअ से नक़ल किया है। कुछ ने राअ के साथ कुछ ने ज़ाअ के साथ रिवायत किया। मत़लब दोनों का एक ही है। ह़ज़रत अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) का नाम सअ़द बिन मालिक है। बनी ख़ुदर एक अंस़ारी क़बीला है। ह़ज़रत अबू सईद उ़लमा व फ़ुज़ला-ए-अंस़ार से हैं। हुफ़्फ़ाज़े ह़दीष़ में शुमार किये जाते हैं। बउ़म्र 84 साल सन 74 हिजरी में फ़ौत हुए। बक़ीअ ग़रक़द में दफ़न किये गये। **रज़ियल्लाहु अ़न्हु व अर्ज़ाहू आमीन।**

बाब 36 : अल्लाह तआला का क़यामत के दिन अंबिया और दूसरे लोगों से कलाम करना बरह़क़ है

٣٦- باب كَلاَمِ الرَّبِّ عَزَّ وَجَلَّ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مَعَ الأَنْبِيَاءِ وَغَيْرِهِمْ

7509. हमसे यूसुफ़ बिन राशिद ने बयान किया, कहा हमसे अह़मद बिन अ़ब्दुल यरबोई ने बयान किया, कहा हमसे अबूबक्र बिन अ़य्याश ने, उनसे हुमैद ने बयान किया कि मैंने अनस (रज़ि.) से सुना, कहा कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना, आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि क़यामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त क़ुबूल की जाएगी। मैं कहूँगा ऐ रब! जिसके दिल में राई के दाने के बराबर भी ईमान हो उसको भी जन्नत में दाख़िल कर दे। ऐसे लोग जन्नत में दाख़िल कर दिये जाएँगे। मैं फिर अ़र्ज़ करूँगा। ऐ रब! जन्नत में उसे भी दाख़िल कर दे जिसके दिल में

٧٥٠٩- حَدَّثَنَا يُوسُفُ بْنُ رَاشِدٍ، حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا أَبُو بَكْرِ بْنُ عَيَّاشٍ، عَنْ حُمَيْدٍ قَالَ: سَمِعْتُ أَنَسًا رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((إِذَا كَانَ يَوْمُ الْقِيَامَةِ شُفِّعْتُ فَقُلْتُ: يَا رَبِّ أَدْخِلِ الْجَنَّةَ مَنْ

मा'मूली सा भी ईमान हो। अनस (रज़ि.) ने कहा गोया मैं इस वक़्त भी आँहज़रत (ﷺ) की उँगलियों की तरफ़ देख रहा हूँ। (राजेअ: 44)

كَانَ فِي قَلْبِهِ خَرْدَلَةٌ، فَيَدْخُلُونَ ثُمَّ أَقُولُ: أَدْخِلِ الْجَنَّةَ مَنْ كَانَ فِي قَلْبِهِ أَدْنَى شَيْءٍ)) فَقَالَ أَنَسٌ: كَأَنِّي أَنْظُرُ إِلَى أَصَابِعِ رَسُولِ اللهِ ﷺ. [راجع: ٤٤]

तश्रीह: जिनसे आप इशारा कर रहे थे। रोज़े मह्शर में आँहज़रत (ﷺ) का एक मुकालमा नक़ल हुआ है। इससे बाब का मतलब ष़ाबित होता है। अल्लाह तआला रोज़े क़यामत आँहज़रत (ﷺ) और दीगर बन्दों से कलाम करेगा। इसमें जह्मिया और मुअतज़िला का रद्द है जो अल्लाह के कलाम का इंकार करते हैं।

7510. हमसे सुलैमान बिन हर्ब ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे सईद बिन हिलाल अ़म्बरी ने बयान किया, उन्होंने कहा कि बस़रा के कुछ लोग हमारे पास जमा हो गये। फिर हम अनस बिन मालिक (रज़ि.) के पास गये और अपने साथ ष़ाबित को भी ले गये ताकि वो हमारे लिये शफ़ाअ़त की ह़दीष़ पूछें। ह़ज़रत अनस (रज़ि.) अपने मह़ल में थे और जब हम पहुँचे तो वो चाश्त की नमाज़ पढ़ रहे थे। हमने मुलाक़ात की इजाज़त चाही और हमें इजाज़त मिल गई। उस वक़्त वो अपने बिस्तर पर बैठे थे। हमने ष़ाबित से कहा कि ह़दीष़े शफ़ाअ़त से पहले उनसे और कुछ न पूछना। चुनाँचे उन्होंने कहा ऐ अबू ह़म्ज़ा! ये आपके भाई बस़रा से आए हैं और आपसे शफ़ाअ़त की ह़दीष़ पूछना चाहते हैं। उन्होंने कहा कि हमसे मुह़म्मद (ﷺ) ने बयान किया, आपने फ़र्माया कि क़यामत का दिन जब आएगा तो लोग ठाठें मारते हुए समुन्दर की त़रह़ ज़ाहिर होंगे। फिर वो आदम (अ़.) के पास आएँगे और उनसे कहेंगे कि हमारी अपने रब के पास शफ़ाअ़त कर दीजिए। वो कहेंगे कि मैं इस क़ाबिल नहीं हूँ, तुम इब्राहीम (अ़.) के पास जाओ, वो अल्लाह के ख़लील हैं। लोग इब्राहीम (अ़.) के पास आएँगे वो भी कहेंगे कि मैं इस क़ाबिल नहीं हूँ, हाँ! तुम मूसा (अ़.) के पास जाओ कि वो अल्लाह से शर्फ़े हमकलामी पाने वाले हैं । लोग मूसा (अ़.) के पास आएँगे और वो भी कहेंगे कि मैं इस क़ाबिल नहीं हूँ, अल्बत्ता ईसा (अ़.) के पास जाओ कि वो अल्लाह की रूह़ और उसका कलिमा हैं। चुनाँचे लोग ईसा (अ़.) के पास आएँगे वो भी कहेंगे कि मैं इस क़ाबिल नहीं हूँ, हाँ! तुम मुह़म्मद (ﷺ) के पास जाओ। लोग मेरे पास आएँगे और मैं कहूँगा कि मैं शफ़ाअ़त के

٧٥١٠- حَدَّثَنَا سُلَيْمَانُ بْنُ حَرْبٍ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، حَدَّثَنَا مَعْبَدُ بْنُ هِلاَلٍ الْعَنَزِيُّ قَالَ: اجْتَمَعْنَا نَاسٌ مِنْ أَهْلِ الْبَصْرَةِ فَذَهَبْنَا إِلَى أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ وَذَهَبْنَا مَعَنَا بِثَابِتٍ إِلَيْهِ يَسْأَلُهُ لَنَا عَنْ حَدِيثِ الشَّفَاعَةِ: فَإِذَا هُوَ فِي قَصْرِهِ فَوَافَقْنَاهُ يُصَلِّي الضُّحَى، فَاسْتَأْذَنَّا فَأَذِنَ لَنَا وَهُوَ قَاعِدٌ عَلَى فِرَاشِهِ فَقُلْنَا لِثَابِتٍ: لاَ تَسْأَلْهُ عَنْ شَيْءٍ أَوَّلَ مِنْ حَدِيثِ الشَّفَاعَةِ فَقَالَ يَا أَبَا حَمْزَةَ هَؤُلاَءِ إِخْوَانُكَ مِنْ أَهْلِ الْبَصْرَةِ جَاؤُوكَ يَسْأَلُونَكَ عَنْ حَدِيثِ الشَّفَاعَةِ؟ فَقَالَ: حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ ﷺ قَالَ: ((إِذَا كَانَ يَوْمُ الْقِيَامَةِ مَاجَ النَّاسُ بَعْضُهُمْ فِي بَعْضٍ فَيَأْتُونَ آدَمَ فَيَقُولُونَ: اشْفَعْ لَنَا إِلَى رَبِّكَ فَيَقُولُ: لَسْتُ لَهَا، وَلَكِنْ عَلَيْكُمْ بِإِبْرَاهِيمَ فَإِنَّهُ خَلِيلُ الرَّحْمَنِ، فَيَأْتُونَ إِبْرَاهِيمَ فَيَقُولُ : لَسْتُ لَهَا وَلَكِنْ عَلَيْكُمْ بِمُوسَى فَإِنَّهُ كَلِيمُ اللهِ، فَيَأْتُونَ مُوسَى فَيَقُولُ: لَسْتُ لَهَا وَلَكِنْ عَلَيْكُمْ بِعِيسَى، فَإِنَّهُ رُوحُ اللهِ وَكَلِمَتُهُ، فَيَأْتُونَ

عِيسَى فَيَقُولُ: لَسْتُ لَهَا، وَلَكِنْ عَلَيْكُمْ بِمُحَمَّدٍ ﷺ فَيَأْتُونِي فَأَقُولُ أَنَا لَهَا فَأَسْتَأْذِنُ عَلَى رَبِّي فَيُؤْذَنُ لِي وَيُلْهِمُنِي مَحَامِدَ أَحْمَدُهُ بِهَا لاَ تَحْضُرُنِي الآنَ فَأَحْمَدُهُ بِتِلْكَ الْمَحَامِدِ وَأَخِرُّ لَهُ سَاجِداً فَيُقَالُ : يَا مُحَمَّدُ ارْفَعْ رَأْسَكَ وَقُلْ يُسْمَعْ لَكَ وَسَلْ تُعْطَ، وَاشْفَعْ تُشَفَّعْ فَأَقُولُ يَا رَبِّ: أُمَّتِي أُمَّتِي فَيُقَالُ: انْطَلِقْ فَأَخْرِجْ مِنْهَا مَنْ كَانَ فِي قَلْبِهِ مِثْقَالُ شَعِيرَةٍ مِنْ إِيمَانٍ، فَأَنْطَلِقُ فَأَفْعَلُ ثُمَّ أَعُودُ فَأَحْمَدُهُ بِتِلْكَ الْمَحَامِدِ، ثُمَّ أَخِرُّ لَهُ سَاجِداً فَيُقَالُ: يَا مُحَمَّدُ ارْفَعْ رَأْسَكَ وَقُلْ يُسْمَعْ لَكَ وَسَلْ تُعْطَ وَاشْفَعْ تُشَفَّعْ، فَأَقُولُ: يَا رَبِّ أُمَّتِي أُمَّتِي فَيُقَالُ : انْطَلِقْ فَأَخْرِجْ مِنْهَا مَنْ كَانَ فِي قَلْبِهِ مِثْقَالُ ذَرَّةٍ، أَوْ خَرْدَلَةٍ مِنْ إِيمَانٍ فَأَنْطَلِقُ فَأَفْعَلُ، ثُمَّ أَعُودُ فَأَحْمَدُهُ بِتِلْكَ الْمَحَامِدِ، ثُمَّ أَخِرُّ لَهُ سَاجِداً فَيُقَالُ: يَا مُحَمَّدُ ارْفَعْ رَأْسَكَ وَقُلْ يُسْمَعْ لَكَ وَسَلْ تُعْطَ وَاشْفَعْ تُشَفَّعْ، فَأَقُولُ : يَا رَبِّ أُمَّتِي أُمَّتِي فَيَقُولُ: انْطَلِقْ فَأَخْرِجْ مَنْ كَانَ فِي قَلْبِهِ أَدْنَى أَدْنَى مِثْقَالِ حَبَّةٍ من خَرْدَلٍ مِنْ إِيمَانٍ، فَأَخْرِجْهُ مِنَ النَّارِ، فَأَنْطَلِقُ فَأَفْعَلُ)). فَلَمَّا خَرَجْنَا مِنْ عِنْدِ أَنَسٍ قُلْتُ لِبَعْضِ أَصْحَابِنَا : لَوْ مَرَرْنَا بِالْحَسَنِ وَهُوَ مُتَوَارٍ فِي مَنْزِلِ أَبِي خَلِيفَةَ وَحَدَّثْنَاهُ بِمَا حَدَّثَنَا أَنَسُ بْنُ مَالِكٍ فَأَتَيْنَاهُ فَسَلَّمْنَا عَلَيْهِ فَأَذِنَ لَنَا فَقُلْنَا لَهُ : يَا أَبَا سَعِيدٍ جِئْنَاكَ مِنْ

लिये हूँ और फिर मैं अपने रब से इजाज़त चाहूँगा और मुझे इजाज़त दी जाएगी और अल्लाह तआला ता'रीफ़ों के अल्फ़ाज़ मुझे इल्हाम करेगा जिनके ज़रिये मैं अल्लाह की ह़म्द बयान करूँगा जो इस वक़्त मुझे याद नहीं हैं। चुनाँचे जब मैं ये ता'रीफ़ें बयान करूँगा और अल्लाह के ह़ुज़ूर में सज्दा करने वाला हो जाऊँगा तो मुझसे कहा जाएगा ऐ मुह़म्मद! अपना सर उठाओ, जो कहो वो सुना जाएगा। जो मांगोगे वो दिया जाएगा। जो शफ़ाअ़त करोगे क़ुबूल की जाएगी। फिर मैं कहूँगा ऐ रब! मेरी उम्मत, मेरी उम्मत। कहा जाएगा कि जाओ और उन लोगों को दोज़ख़ से निकाल लो जिनके दिल में ज़र्रा या राई बराबर भी ईमान हो। चुनाँचे मैं जाऊँगा और ऐसा ही करूँगा। फिर मैं लौटूँगा और यही ता'रीफ़ें फिर करूँगा और अल्लाह के लिये सज्दे में चला जाऊँगा। मुझसे कहा जाएगा। अपना सर उठाओ कहो आपकी सुनी जाएगी। मैं कहूँगा ऐ रब! मेरी उम्मत! मेरी उम्मत। अल्लाह तआ़ला फ़र्माएगा जाओ और जिसके दिल में एक राई के दाने के कम से कमतर ह़िस़्से के बराबर भी ईमान हो उसे भी जहन्नम से निकाल लो। फिर मैं जाऊँगा और निकालूँगा। फिर जब हम अनस (रज़ि.) के पास से निकले तो मैं ने अपने कुछ साथियों से कहा कि हमें इमाम ह़सन बस़री (रह़.) के पास भी चलना चाहिये, वो उस वक़्त अबू ख़लीफ़ा के मकान में थे और उनसे वो ह़दीष़ बयान करनी चाहिये जो अनस (रज़ि.) ने हमसे बयान की है। चुनाँचे हम उनके पास आए और उन्हें सलाम किया। फिर उन्होंने हमें इजाज़त दी और हमने उनसे कहा ऐ अबू सईद! हम आपके पास आपके भाई अनस बिन मालिक (रज़ि.) के यहाँ से आए हैं और उन्होने हमसे जो शफ़ाअ़त के बारे में ह़दीष़ बयान की, उस जैसी ह़दीष़ हमने नहीं सुनी। उन्होंने कहा कि बयान करो। हमने उनसे ह़दीष़ बयान की। जब उस मुक़ाम तक पहुँचे तो उन्होने कहा कि और बयान करो। हमने कहा कि इससे ज़्यादा उन्होंने नहीं बयान की। उन्होंने कहा कि जब अनस (रज़ि.) स़ेह़तमंद थे बीस साल अब से पहले तो उन्होंने मुझसे ये ह़दीष़ बयान की थी। मुझे मा'लूम नहीं कि वो बाक़ी भूल गये या इसलिये बयान करना नापसंद किया कि कहीं लोग भरोसा न कर बैठें। हमने कहा अबू सईद! फिर आप हमसे वो ह़दीष़

عِنْدَ أخِيكَ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ فَلَمْ نَرَ مِثْلَ مَا حَدَّثَنَا فِي الشَّفَاعَةِ فَقَالَ : هِيهِ فَحَدَّثْنَاهُ بِالْحَدِيثِ فَانْتَهَى إِلَى هَذَا الْمَوْضِعِ فَقَالَ: هِيهِ، فَقُلْنَا لَمْ يَزِدْ لَنَا عَلَى هَذَا فَقَالَ: لَقَدْ حَدَّثَنِي وَهُوَ جَمِيعٌ مُنْذُ عِشْرِينَ سَنَةً فَلاَ أَدْرِي أَنَسِيَ أَمْ كَرِهَ أَنْ تَتَّكِلُوا، فَقُلْنَا يَا أَبَا سَعِيدٍ فَحَدِّثْنَا فَضَحِكَ وَقَالَ: خُلِقَ الإِنْسَانُ عَجُولاً مَا ذَكَرْتُهُ إِلاَّ وَأَنَا أُرِيدُ أَنْ أُحَدِّثَكُمْ حَدَّثَنِي كَمَا حَدَّثَكُمْ بِهِ، قَالَ: ((ثُمَّ أَعُودُ الرَّابِعَةَ فَأَحْمَدُهُ بِتِلْكَ ثُمَّ أَخِرُّ لَهُ سَاجِداً فَيُقَالُ : يَا مُحَمَّدُ ارْفَعْ رَأْسَكَ وَقُلْ يُسْمَعْ وَسَلْ تُعْطَهْ وَاشْفَعْ تُشَفَّعْ فَأَقُولُ: يَا رَبِّ ائْذَنْ لِي فِيمَنْ قَالَ: لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ فَيَقُولُ: وَعِزَّتِي وَجَلاَلِي وَكِبْرِيَائِي وَعَظَمَتِي لأُخْرِجَنَّ مِنْهَا مَنْ قَالَ: لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللهُ)). [راجع: ٤٤]

बयान कीजिए। आप उस पर हंसे और फ़र्माया इंसान बड़ा जल्दबाज़ पैदा किया गया है। मैंने इसका ज़िक्र ही इसलिये किया है कि तुमसे बयान करना चाहता हूँ। अनस (रज़ि.) ने मुझसे इसी तरह ह़दीष़ बयान की जिस तरह तुमसे बयान की (और उसमें ये लफ़्ज़ और बढ़ाए) आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि फिर मैं चौथी मर्तबा लौटूँगा और वही ता'रीफ़ें करूँगा और अल्लाह के लिये सज्दे में चला जाऊँगा। अल्लाह फ़र्माएगा ऐ मुहम्मद! अपना सर उठाओ जो कहोगे सुना जाएगा जो मांगोगे दिया जाएगा, शफ़ाअत करोगे क़ुबूल की जाएगी। मैं कहूँगा ऐ रब! मुझे उनके बारे में भी इजाज़त दीजिए जिन्होंने ला इलाहा इल्लल्लाह कहा है। अल्लाह तआला फ़र्माएगा मेरी इ़ज़्ज़त की क़सम! मेरे जलाल, मेरी किब्रियाई, मेरी बड़ाई की क़सम! उसमें से उन्हें भी निकालूँगा जिन्होंने कलिमा ला इलाहा इल्लल्लाह कहा है। (राजेअ : 44)

तश्रीह : इस ह़दीष़ के दूसरे त़रीक़ में है कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मुझसे अल्लाह तआला फ़र्माएगा कि जिसके दिल में एक जौ बराबर भी या राई के दाने बराबर भी ईमान है उसको तुम दोज़ख़ से निकाल लाओ। इसी से बाब का मत़लब ष़ाबित होता है। इसी से शफ़ाअत का इज़्न ष़ाबित होता है जो रसूले करीम (ﷺ) को अ़र्श पर सज्दा में एक नामा'लूम मुद्दत तक रहने के बाद ह़ासिल होगा। आप अपनी उम्मत का इस दर्जा ख़्याल फ़र्माएँगे कि जब तक एक गुनहगार मुवह्ह़िद मुसलमान भी दोज़ख में बाक़ी रहेगा आप बराबर शफ़ाअत के लिये इज़्न मांगते रहेंगे। अल्लाह तआला क़यामत के दिन हर मोमिन मुसलमान को और हम सब क़ारेईने बुख़ारी शरीफ़ को अपने ह़बीब की शफ़ाअत नसीब फ़र्माए, आमीन या रब्बल आ़लमीन। नीज़ ये भी रोशन त़ौर पर ष़ाबित हुआ कि अल्लाह तआला क़यामत के दिन अपने रसूले करीम (ﷺ) से इतना इतना ख़ुश होगा कि आपकी हर सिफ़ारिश क़ुबूल करेगा और आपकी सिफ़ारिश से दोज़ख़ से हर उस मुवह्ह़िद मुसलमान को भी नजात दे देगा जिसके दिल में एक राई के दाने या उससे भी कमतर ईमान होगा। या अल्लाह! हम तमाम क़ारेईने बुख़ारी शरीफ़ को रोज़े मह़शर अपने ह़बीब की शफ़ाअत नसीब करियो जो लोग जहमिया मुअतज़िला वग़ैरह कलामे इलाही का इंकार करते हैं उनका भी इस ह़दीष़ से ख़ूब ख़ूब रद्द हुआ। ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि.) ख़ादिमे नबवी क़बीला ख़ज़रज से हैं। रसूले करीम (ﷺ) की दस साल ख़िदमत की। ख़िलाफ़ते फ़ारूक़ी में बस़रा में जा रहे थे। सन 91 हिजरी में बउम्र 103 साल एक सौ औलाद ज़कूर व उनाष़ छोड़कर बस़रा में वफ़ात पाने वाले आख़िरी स़ह़ाबी हैं। रज़ियल्लाहु अ़न्हु व अर्ज़ाहु।

٧٥١١- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ خَالِدٍ، حَدَّثَنَا

7511. हमसे मुहम्मद बिन ख़ालिद ने बयान किया, उन्होंने

कहा हमसे उ़बैदुल्लाह बिन मूसा ने बयान किया, उनसे इस्राईल ने, उनसे मंसूर ने, उनसे इब्राहीम ने, उनसे उ़बैदह ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, जन्नत में सबसे बाद में दाख़िल होने वाला और दोज़ख़ से सबसे बाद में निकलने वाला वो शख़्स होगा जो घिसटकर निकलेगा। उससे उसका रब कहेगा जन्नत में दाख़िल हो जा। वो कहेगा मेरे रब! जन्नत तो बिलकुल भरी हुई है। इस त़रह़ अल्लाह तआ़ला तीन मर्तबा उससे ये कहेगा और हर मर्तबा ये बन्दा जवाब देगा कि जन्नत तो भरी हुई है। फिर अल्लाह तआ़ला फ़र्माएगा तेरे लिये दुनिया के दस गुना है।

(राजेअ़ : 6571)

عُبَيْدُ اللهِ بْنُ مُوسَى، عَنْ إِسْرَائِيلَ، عَنْ مَنْصُورٍ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ عَبِيدَةَ عَنْ عَبْدِ اللهِ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((إِنَّ آخِرَ أَهْلِ الْجَنَّةِ دُخُولاً الْجَنَّةَ، وَآخِرَ أَهْلِ النَّارِ خُرُوجًا مِنَ النَّارِ رَجُلٌ يَخْرُجُ حَبْوًا فَيَقُولُ لَهُ رَبُّهُ : ادْخُلِ الْجَنَّةَ فَيَقُولُ: رَبِّ الْجَنَّةُ مَلأَى فَيَقُولُ لَهُ ذَلِكَ ثَلاَثَ مَرَّاتٍ، فَكُلُّ ذَلِكَ يُعِيدُ عَلَيْهِ الْجَنَّةُ مَلأَى فَيَقُولُ: إِنَّ لَكَ مِثْلَ الدُّنْيَا عَشْرَ مِرَارٍ)).

[راجع: ٦٥٧١]

बाब का मत़लब ह़दीष़ के आख़िरी मज़्मून से निकला जब अल्लाह तआ़ला अपने बन्दे से ख़ुद कलाम करेगा और उसे सौ गुनी जन्नत की नेअ़मतों की बशारत देगा। ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ह़ज़्ली हैं। दारे अरक़म में इस्लाम क़ुबूल किया सफ़र और ह़ज़र में निहायत ही ख़ुलूस़ के साथ रसूले करीम (ﷺ) की ख़िदमत की। साठ साल की उ़म्र में वफ़ात पाई। सन 32 हिजरी में बक़ीअ़ ग़रक़द में दफ़न हुए। रज़ियल्लाहु अ़न्हु व अर्ज़ाहु।

7512. हमसे अ़ली बिन ह़जर ने बयान किया, कहा हमको ईसा बिन यूनुस ने ख़बर दी, उन्हें आ'मश ने, उन्हें ख़ैष़मा ने और उनसे अ़दी बिन ह़ातिम (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, तुममें से हर शख़्स से तुम्हारा रब इस त़रह़ बात करेगा कि तुम्हारे और उसके बीच कोई तर्जुमान नहीं होगा वो अपने दाएँ त़रफ़ देखेगा और उसे अपने आ़माल के सिवा और कुछ नज़र नहीं आएगा और वो अपने बाएँ त़रफ़ देखेगा और उसे अपने आ़माल के सिवा कुछ नज़र नहीं आएगा। फिर अपने सामने देखेगा तो अपने सामने जहन्नम के सिवा और कोई चीज़ न देखेगा। पस जहन्नम से बचो ख़्वाह खजूर के एक टुकड़े ही के ज़रिये हो सके। आ'मश ने बयान किया कि मुझसे अ़म्र बिन मुर्रह़ ने बयान किया, उनसे ख़ैष़मा ने इसी त़रह़ और उसमें ये लफ़्ज़ ज़्यादा किये कि (जहन्नम से बचो) ख़्वाह एक अच्छी बात ही के ज़रिये।

(राजेअ़ : 1413)

٧٥١٢ - حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ حُجْرٍ، أَخْبَرَنَا عِيسَى بْنُ يُونُسَ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ خَيْثَمَةَ، عَنْ عَدِيِّ بْنِ حَاتِمٍ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((مَا مِنْكُمْ أَحَدٌ إِلاَّ سَيُكَلِّمُهُ رَبُّهُ، لَيْسَ بَيْنَهُ وَبَيْنَهُ تَرْجُمَانٌ، فَيَنْظُرُ أَيْمَنَ مِنْهُ فَلاَ يَرَى إِلاَّ مَا قَدَّمَ مِنْ عَمَلِهِ، وَيَنْظُرُ أَشْأَمَ مِنْهُ فَلاَ يَرَى إِلاَّ مَا قَدَّمَ وَيَنْظُرُ بَيْنَ يَدَيْهِ، فَلاَ يَرَى إِلاَّ النَّارَ تِلْقَاءَ وَجْهِهِ فَاتَّقُوا النَّارَ وَلَوْ بِشِقِّ تَمْرَةٍ)) قَالَ الأَعْمَشُ: وَحَدَّثَنِي عَمْرُو بْنُ مُرَّةَ عَنْ خَيْثَمَةَ وَزَادَ فِيهِ وَلَوْ بِكَلِمَةٍ طَيِّبَةٍ.

[راجع: ١٤١٣]

इस ह़दीष़ में स़ाफ़ त़ौर पर बन्दे से अल्लाह का कलाम करना ष़ाबित है जो बराहे रास्त बग़ैर किसी वास्ते के ख़ुद होगा। तौह़ीद के बाद वो जो आ़माल काम आएँगे उनमें फ़ी सबीलिल्लाह किसी ग़रीब मिस्कीन यतीम बेवा की मदद करना बड़ी अहमियत रखता है वो मदद ख़्वाह कितनी ही ह़क़ीर हो अगर उसमें ख़ुलूस़ है तो अल्लाह उसे बहुत बढ़ा देगा। अदना से अदना मद्द

खजूर का आधा हिस्सा भी है। अल्लाह तौफ़ीक़ बख्शे और क़ुबूल करे।

हज़रत अदी बिन हातिम (रज़ि.) सन 67 हिजरी मे बउम्र 110 साल कूफ़ा में फ़ौत हुए। बड़े ख़ानदानी बुज़ुर्ग थे बहुत बड़े सख़ी हातिम ताई के बेटे हैं। शाबान सन 7 हिजरी में मुसलमान हुए। कुछ मुअर्रिख़ीन ने उनकी उम्र एक सौ अस्सी बरस लिखी है। रज़ियल्लाहु अन्हु व अर्ज़ाहु।

7513. हमसे उष्मान बिन अबी शैबा ने बयान किया, उन्होने कहा हमसे जरीर ने बयान किया, उनसे मंसूर ने बयान किया, उनसे इब्राहीम ने बयान किया, उनसे उबैदह ने और उनसे अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि.) ने बयान किया कि यहूदियों का एक आलिम ख़िदमते नबवी में हाज़िर हुआ और कहा कि जब क़यामत क़ायम होगी तो अल्लाह तआला आसमानों को एक उँगली पर, ज़मीन को एक उँगली पर, पानी और कीचड़ को एक उँगली पर और तमाम मख़्लूक़ात को एक उँगली पर उठा लेगा और फिर उसे हिलाएगा और कहेगा मैं बादशाह हूँ, मैं बादशाह हूँ। मैंने देखा कि आँहज़रत (ﷺ) हंसने लगे यहाँ तक कि आपके दंदाने मुबारक खुल गये, उसकी बात की तस्दीक़ और तअज्जुब करते हुए। फिर आँहज़रत (ﷺ) ने ये आयत पढ़ी। उन्होंने अल्लाह की शान के मुताबिक़ क़द्र नहीं की, इर्शादे इलाही, युश्रिकून तक। (राजेअ : 4811)

٧٥١٣- حدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ أَبِي شَيْبَةَ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنْ مَنْصُورٍ، عَنْ إِبْرَاهِيمَ عَنْ عُبَيْدَةَ، عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: جَاءَ حَبْرٌ مِنَ الْيَهُودِ إِلَى النَّبِيِّ ﷺ فَقَالَ : إِنَّهُ إِذَا كَانَ يَوْمُ الْقِيَامَةِ جَعَلَ اللهُ السَّمَاوَاتِ عَلَى إِصْبَعٍ وَالأَرَضِينَ عَلَى إِصْبَعٍ، وَالْمَاءَ وَالثَّرَى عَلَى إِصْبَعٍ وَالْخَلاَئِقَ عَلَى إِصْبَعٍ ثُمَّ يَهُزُّهُنَّ ثُمَّ يَقُولُ: أَنَا الْمَلِكُ أَنَا الْمَلِكُ فَلَقَدْ رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَضْحَكُ حَتَّى بَدَتْ نَوَاجِذُهُ تَعَجُّبًا وَتَصْدِيقًا لِقَوْلِهِ ثُمَّ قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ﴿وَمَا قَدَرُوا اللهَ حَقَّ قَدْرِهِ - إِلَى قَوْلِهِ - يُشْرِكُونَ﴾. [راجع: ٤٨١١]

इस हदीष में भी अल्लाह पाक का कलाम करना मज़्कूर है। बाब से यही मुताबक़त है। हदीष से ये भी षाबित हुआ कि अहले किताब की सच्ची बातों की तस्दीक़ करना कोई मअयूब बात नहीं है। आँहज़रत (ﷺ) को हंसी इस बात पर आई कि एक यहूदी अल्लाह की शान किस किस तौर पर बयान कर रहा है। हालाँकि यहूद वो क़ौम है जिसने अल्लाह पाक की क़द्र व मंज़िलत को कमाहक़्क़हु नहीं समझा और हज़रत उज़ैर (अ.) को ख़्वाह मख़्वाह अल्लाह का बेटा बना डाला हालाँकि अल्लाह पाक ऐसे रिश्तों नातों से बहुत दूर व आला है। **सदक़ लम यलिद व लम यूलद व लम यकुल्लहू कुफ़ुअन अहद।**

7514. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अबू अवाना ने बयान किया, उनसे क़तादा ने बयान किया, उनसे सफ़्वान बिन मुहरिज़ ने बयान किया कि एक शख़्स ने इब्ने उमर (रज़ि.) से पूछा सरगोशी के बारे में आपने रसूलुल्लाह (ﷺ) से किस तरह सुना है। उन्होंने बयान किया कि तुममें से कोई अपने रब के क़रीब जाएगा यहाँ तक कि अल्लाह तआला अपना पर्दा उस पर डाल देगा और कहेगा तूने ये ये अमल किया था? बन्दा कहेगा कि हाँ। चुनाँचे वो इसका इक़रार करेगा। फिर अल्लाह तआला फ़र्माएगा कि मैंने दुनिया में तेरे

٧٥١٤- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ صَفْوَانَ بْنِ مُحْرِزٍ أَنَّ رَجُلاً سَأَلَ ابْنَ عُمَرَ كَيْفَ سَمِعْتَ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ فِي النَّجْوَى؟ قَالَ: ((يَدْنُو أَحَدُكُمْ مِنْ رَبِّهِ حَتَّى يَضَعَ كَنَفَهُ عَلَيْهِ، فَيَقُولُ: أَعَمِلْتَ كَذَا وَكَذَا فَيَقُولُ: نَعَمْ، وَيَقُولُ عَمِلْتَ كَذَا وَكَذَا فَيَقُولُ: نَعَمْ فَيُقَرِّرُهُ، ثُمَّ يَقُولُ: إِنِّي سَتَرْتُ عَلَيْكَ

गुनाह पर पर्दा डाला था और आज भी तुझे माफ़ करता हूँ।

فِي الدُّنْيَا وَأَنَا أَغْفِرُهَا لَكَ الْيَوْمَ)).

आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा हमसे शैबान ने बयान किया, कहा हमसे क़तादा ने बयान किया, कहा हमसे स़फ़्वान ने बयान किया, उनसे इब्ने उ़मर (रज़ि.) ने कि मैंने रसूले करीम (ﷺ) से सुना। (राजेअ़ : 2441)

وَقَالَ آدَمُ: حَدَّثَنَا شَيْبَانُ، حَدَّثَنَا قَتَادَةُ، حَدَّثَنَا صَفْوَانُ عَنِ ابْنِ عُمَرَ سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ. [راجع: ٢٤٤١]

तश्रीह : इस सनद के लाने से इमाम बुख़ारी (रह़.) की ग़र्ज़ ये है कि स़फ़्वान से क़तादा के सिमाअ़ की तस़रीह़ हो जाए और इंक़िताअ़ का अन्देशा दूर हो जाए। ह़दीष़ की बाब से मुत़ाबिक़त ये है कि अल्लाह तआ़ला का बन्दे से सरगोशी करना मज़्कूर है। ह़दीष़ और बाब की मुत़ाबक़त ज़ाहिर है उसके बाद अब कहाँ गये वो लोग जो कहते हैं अल्लाह का कलाम एक क़दीम नफ़्सी सिफ़त है न उसमें आवाज़ है न ह़ुरूफ़ हैं। फ़र्माइये ये क़दीम सिफ़त मौक़ा ब मौक़ा क्यूँकर ह़ादिष़ होती रहती है। अगर कहते हैं कि इसका ता'ल्लुक़ ह़ादिष़ है जैसे समअ़ और बस़र वग़ैरह हैं तो मस्मूअ़ और मुबस़्स़िराते इलाही का ग़ैर है। इसलिये ता'ल्लुक़ ह़ादिष़ हो सकता है यहाँ तो कलाम उसी की सिफ़त है उसका ग़ैर नहीं है। अगर उसके कला म में आवाज़ और ह़ुरूफ़ नहीं हैं तो फिर पैग़म्बरों ने उसका कलाम क यूँ कर सुना और मुतवातिर अह़ादीष़ में जो आया है कि उसने दूसरे लोगों से भी कलाम किया और ख़ुसूस़न मोमिनों से आख़िरत में कलाम करेगा तो ये कलाम जब उसमे आवाज़ और ह़ुरूफ़ नहीं हैं क्यूँकर समझ में आया और आ सकता है। अफ़सोस है कि ये (मुतकल्लिमीन) लोग इतना इ़ल्म पढ़कर फिर इस मसले में बेवक़ूफ़ी की चाल चले और मा'लूम नहीं किया क्या तावीलात करते हैं। इस क़िस्म की तावीलें दरह़क़ीक़त सिफ़ते कलाम का इंकार करना है फिर सिरे से यूँ नहीं कह देते कि अल्लाह तआ़ला कलाम ही नहीं करता जैसे जअ़द बिन दिरहम मरदूद था। आजकल भी अकष़र नेचरी मग़रिब ज़दा नामो निहाद मुसलमान ऐसी ही बातें करते हैं **हदाहुमुल्लाहु इला स़िरात़िम्मुस्तक़ीम।**

बाब 37 : सूरह निसा में अल्लाह तआ़ला का इर्शाद कि, अल्लाह ने मूसा से कलाम किया

٣٧- بَابُ قَوْلِهِ: ﴿وَكَلَّمَ اللهُ مُوسَى تَكْلِيمًا﴾

तश्रीह : अल्लाह तआ़ला ने इस आयत में उन लोगों का रद्द किया है जो ये कहते हैं कि ये कलाम न था। ह़क़ीक़त में बल्कि किसी फ़रिश्ते या पेड़ में अल्लाह ने बात करने की क़ुव्वत पैदा कर दी थी। ऐसा ख़्याल बिलकुल ग़लत़ है। फिर ह़ज़रत मूसा (अ.) की फ़ज़ीलत ही क्या हुई? इस आयत में लफ़्ज़ कल्लमल्लाहु के बाद फिर तक्लीमा फ़र्माकर इसकी ताकीद की। या'नी ख़ुद अल्लाह पाक ने ह़ज़रत मूसा (अ.) से बिला तवस्सुते ग़ैर बातें कीं। इसीलिये ह़ज़रत मूसा (अ.) को कलीमुल्लाह कहते हैं और उनको दूसरे पैग़म्बरों पर इसी वजह से फ़ज़ीलत ह़ासिल हुई। ये कलाम ख़ुद अल्लाह तआ़ला ने एक पेड़ पर से किया। हमारे रसूले करीम (ﷺ) से अल्लाह पाक ने अ़र्श पर बुलाकर बराहे रास्त कलाम फ़र्माया सच है, **तिल्कर्रुसुलु फ़ज़्ज़ल्ना बअ़ज़हुम अ़ला बअ़ज़िन** (बक़रः : 253)

7515. हमसे यह़्या बिन बुकैर ने बयान किया, कहा हमसे लैष़ ने बयान किया, कहा हमसे अ़क़ील ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, कहा हमसे ह़ुमैद बिन अ़ब्दुर्रह़मान ने बयान किया और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया आदम और मूसा (अ़.) ने बह़ष़ की, मूसा (अ़.) ने कहा कि आप आदम हैं जिन्होंने अपनी नस्ल को जन्नत से निकाला। आदम (अ़.) ने कहा कि आप मूसा (अ़.) हैं जिन्हें अल्लाह ने अपने पैग़ाम और कलाम के लिये

٧٥١٥- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، حَدَّثَنَا عُقَيْلٌ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ حَدَّثَنَا حُمَيْدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ قَالَ: ((احْتَجَّ آدَمُ وَمُوسَى فَقَالَ مُوسَى: أَنْتَ آدَمُ الَّذِي أَخْرَجْتَ ذُرِّيَّتَكَ مِنَ الْجَنَّةِ قَالَ آدَمُ: أَنْتَ

मूसा अल्लज़ी इस्तफ़ाका ... मुंतख़ब किया और फिर भी आप मुझे एक ऐसी बात के लिये मलामत करते हैं जो अल्लाह ने मेरी पैदाइश से पहले ही मेरी तक़्दीर में लिख दी थी। चुनाँचे आदम (अ.) मूसा (अ.) पर ग़ालिब आए। (राजेअ : 3409)

مُوسَى الَّذِي اصْطَفَاكَ اللهُ تَعَالَى بِرِسَالاَتِهِ وَبِكَلاَمِهِ، ثُمَّ تَلُومُنِي عَلَى أَمْرٍ قَدْ قُدِّرَ عَلَيَّ قَبْلَ أَنْ أُخْلَقَ فَحَجَّ آدَمُ مُوسَى)). [راجع: ٣٤٠٩]

तश्रीह : इस ह़दीष़ में ह़ज़रत मूसा (अ.) के लिये कलाम का स़ाफ़ अष़्बात है पस इसकी तावील करने वाले सरासर ग़लती पर हैं। जब अल्लाह हर चीज़ पर क़ादिर है तो क्या वो इस पर क़ादिर नहीं कि वो बिला तवस्सुत ग़ैर जिससे चाहे कलाम कर सके जैसा कि ह़ज़रत मूसा (अ.) से किया। ये जहमिया और मुअतज़िला के ख़्याले फ़ासिदा की स़रीह़ तर्दीद है।

7516. हमसे मुस्लिम बिन इब्राहीम ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे हिशाम ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे क़तादा ने बयान किया, उनसे अनस (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया ईमान वाले क़यामत के दिन जमा किये जाएँगे और वो कहेंगे कि काश! कोई हमारी शफ़ाअत करता ताकि हम अपनी इस ह़ालत से नजात पाते चुनाँचे वो आदम (अ.) के पास आएँगे और कहेंगे कि आप आदम (अ.) हैं इंसानों के परदादा। अल्लाह ने आपको अपने हाथ से पैदा किया, आपको सज्दा करने का फ़रिश्तों को हुक्म दिया और हर चीज़ के नाम आपको सिखाए पस आप अपने रब के ह़ुज़ूर में हमारी शफ़ाअत कर दीजिए। आप जवाब देंगे कि मैं इस क़ाबिल नहीं हूँ और आप अपनी ग़लती उन्हें याद दिलाएँगे जो आपसे सरज़द हुई थी। (राजेअ : 44)

٧٥١٦- حَدَّثَنَا مُسْلِمُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ، حَدَّثَنَا هِشَامٌ، حَدَّثَنَا قَتَادَةُ، عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((يُجْمَعُ الْمُؤْمِنُونَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَيَقُولُونَ: لَوِ اسْتَشْفَعْنَا إِلَى رَبِّنَا فَيُرِيحُنَا مِنْ مَكَانِنَا هَذَا فَيَأْتُونَ آدَمَ فَيَقُولُونَ لَهُ: أَنْتَ آدَمُ أَبُو الْبَشَرِ خَلَقَكَ اللهُ بِيَدِهِ وَأَسْجَدَ لَكَ الْمَلاَئِكَةَ وَعَلَّمَكَ أَسْمَاءَ كُلِّ شَيْءٍ فَاشْفَعْ لَنَا إِلَى رَبِّنَا حَتَّى يُرِيحَنَا فَيَقُولُ لَهُمْ: لَسْتُ هُنَاكُمْ وَيَذْكُرُ لَهُمْ خَطِيئَتَهُ الَّتِي أَصَابَ)). [راجع: ٤٤]

तश्रीह : ये ह़दीष़ मुख़्तस़र है और इसमें दूसरे त़रीक़ की त़रफ़ इशारा है जिसमें ज़िक्र है कि उस वक़्त ह़ज़रत आदम (अ.) कहेंगे कि तुम ऐसा करो कि ह़ज़रत मूसा (अ.) के पास जाओ वो ऐसे बन्दे हैं कि अल्लाह ने उनसे कलाम किया, उनको तौरात इनायत की और ऊपर भी गुज़रा है कि यूँ कहा कि मूसा (अ.) के पास जाओ उनको अल्लाह ने तौरात इनायत फ़र्माई और उनसे कलाम किया इससे बाब का मत़लब ष़ाबित होता है।

7517. हमसे अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ बिन अ़ब्दुल्लाह उवैसी ने बयान किया, उन्होंने कहा मुझसे सुलैमान बिन बिलाल ने बयान किया, उनसे शरीक बिन अ़ब्दुल्लाह बिन उबई ने बयान किया, उन्होंने बयान किया कि मैंने अनस बिन मालिक (रज़ि.) से सुना, उन्होंने वो वाक़िया बयान किया जिस रात रसूलुल्लाह (ﷺ) को मस्जिदे का'बा से मेअराज के लिये ले जाया गया कि वह्य आने से पहले आपके पास फ़रिश्ते आए। आँहज़रत (ﷺ) मस्जिदे ह़राम में सोये हुए थे। उनमें से एक ने

٧٥١٧- حَدَّثَنَا عَبْدُ الْعَزِيزِ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنِي سُلَيْمَانُ، عَنْ شَرِيكِ بْنِ عَبْدِ اللهِ أَنَّهُ قَالَ: سَمِعْتُ ابْنَ مَالِكٍ يَقُولُ: لَيْلَةَ أُسْرِيَ بِرَسُولِ اللهِ ﷺ مِنْ مَسْجِدِ الْكَعْبَةِ ((إِنَّهُ جَاءَهُ ثَلاَثَةُ نَفَرٍ قَبْلَ أَنْ يُوحَى إِلَيْهِ وَهُوَ نَائِمٌ فِي الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ فَقَالَ:

पूछा कि वो कौन हैं? दूसरे ने जवाब दिया कि वो उनमें सबसे बेहतर हैं। तीसरे ने कहा कि उनमें जो सबसे बेहतर हैं उन्हें ले लो। उस रात को बस इतना ही वाक़िया पेश आया और आँहज़रत (ﷺ) ने उसके बाद उन्हें नहीं देखा। यहाँ तक कि वो दूसरी रात आए। जबकि आपका दिल देख रहा था और आपकी आँखें सो रही थीं लेकिन दिल नहीं सो रहा था। अंबिया का यही हाल होता है। उनकी आँखे सोती हैं लेकिन उनके दिल नहीं सोते। चुनाँचे उन्होंने आपसे बात नहीं की। बल्कि आपको उठाकर ज़मज़म के कुएँ के पास लाए। यहाँ जिब्रईल (अ.) ने आपका काम सम्भाला और आपके गले से दिल के नीचे तक सीना चाक किया और सीना और पेट को पाक करके ज़मज़म के पानी से उसे अपने हाथ से धोया। यहाँ तक कि आपका पेट साफ़ हो गया। फिर आपके पास सोने का तश्त लाया गया जिसमें सोने का एक बर्तन ईमान व हिक्मत से भरा हुआ था। उससे आपके सीने और हलक़ की रगों को सिया और उसे बराबर कर दिया। फिर आपको लेकर आसमाने दुनिया पर चढ़े और उसके दरवाज़ों में से एक दरवाज़े पर दस्तक दी। आसमान वालों ने उनसे पूछा आप कौन हैं? उन्होंने कहा कि जिब्रईल। उन्होंने पूछा और आपके साथ कौन है? जवाब दिया कि मेरे साथ मुहम्मद (ﷺ) हैं। पूछा, क्या इन्हें बुलाया गया है? जवाब दिया कि हाँ। आसमान वालों ने कहा ख़ूब अच्छे आए और अपने ही लोगों मे आए हो। आसमान वाले इससे ख़ुश हुए। उनमें से किसी को मा'लूम नहीं होता कि अल्लाह तआला ज़मीन में क्या करना चाहता है जब तक वो उन्हें बता न दे। आँहज़रत (ﷺ) ने आसमाने दुनिया पर आदम (अ.) को पाया। जिब्रईल (अ.) ने आपसे कहा कि ये आपके बुज़ुर्ग तरीन दादा आदम हैं आप इन्हें सलाम कीजिए। आदम (अ.) ने सलाम का जवाब दिया। कहा कि ख़ूब अच्छे आए और अपने ही लोगों में आए हो। मुबारक हो अपने बेटे को, आप क्या ही अच्छे बेटे हैं। आपने आसमाने दुनिया में दो नहरें देखीं जो बह रही थीं। पूछा ऐ जिब्रईल! ये नहरें कैसी हैं? जिब्रईल (अ.) ने जवाब दिया कि ये नील और फ़ुरात का मम्बअ है। फिर आप आसमान पर और चले तो देखा कि एक दूसरी नहर है जिसके ऊपर मोती और ज़बरजद का महल है। इस पर अपना

أَوَّلُهُمْ أَيُّهُمْ هُوَ، فَقَالَ أَوْسَطُهُمْ: هُوَ خَيْرُهُمْ فَقَالَ آخِرُهُمْ: خُذُوا خَيْرَهُمْ فَكَانَتْ تِلْكَ اللَّيْلَةُ، فَلَمْ يَرَهُمْ حَتَّى أَتَوْهُ لَيْلَةً أُخْرَى فِيمَا يَرَى قَلْبُهُ، وَتَنَامُ عَيْنُهُ وَلاَ يَنَامُ قَلْبُهُ، وَكَذَلِكَ الأَنْبِيَاءُ تَنَامُ أَعْيُنُهُمْ وَلاَ تَنَامُ قُلُوبُهُمْ، فَلَمْ يُكَلِّمُوهُ حَتَّى احْتَمَلُوهُ فَوَضَعُوهُ عِنْدَ بِئْرِ زَمْزَمَ، فَتَوَلاَّهُ مِنْهُمْ جِبْرِيلُ، فَشَقَّ جِبْرِيلُ مَا بَيْنَ نَحْرِهِ إِلَى لَبَّتِهِ حَتَّى فَرَغَ مِنْ صَدْرِهِ وَجَوْفِهِ فَغَسَلَهُ مِنْ مَاءِ زَمْزَمَ بِيَدِهِ، حَتَّى أَنْقَى جَوْفَهُ ثُمَّ أُتِيَ بِطَسْتٍ مِنْ ذَهَبٍ فِيهِ تَوْرٌ مِنْ ذَهَبٍ مَحْشُوًّا إِيمَانًا وَحِكْمَةً فَحَشَا بِهِ صَدْرَهُ وَلَغَادِيدَهُ - يَعْنِي عُرُوقَ حَلْقِهِ - ثُمَّ أَطْبَقَهُ ثُمَّ عَرَجَ بِهِ إِلَى السَّمَاءِ الدُّنْيَا، فَضَرَبَ بَابًا مِنْ أَبْوَابِهَا فَنَادَاهُ أَهْلُ السَّمَاءِ مَنْ هَذَا؟ فَقَالَ: جِبْرِيلُ قَالُوا: وَمَنْ مَعَكَ؟ قَالَ: مَعِي مُحَمَّدٌ قَالَ: وَقَدْ بُعِثَ قَالَ: نَعَمْ قَالُوا: فَمَرْحَبًا بِهِ وَأَهْلاً فَيَسْتَبْشِرُ بِهِ أَهْلُ السَّمَاءِ لاَ يَعْلَمُ أَهْلُ السَّمَاءِ بِمَا يُرِيدُ اللهُ بِهِ فِي الأَرْضِ حَتَّى يُعْلِمَهُمْ، فَوَجَدَ فِي السَّمَاءِ الدُّنْيَا آدَمَ فَقَالَ لَهُ جِبْرِيلُ: هَذَا أَبُوكَ فَسَلِّمْ عَلَيْهِ، فَسَلَّمَ عَلَيْهِ وَرَدَّ عَلَيْهِ آدَمُ فَقَالَ: مَرْحَبًا وَأَهْلاً بِبُنَيَّ نِعْمَ الاِبْنُ أَنْتَ، فَإِذَا هُوَ فِي السَّمَاءِ الدُّنْيَا بِنَهَرَيْنِ يَطَّرِدَانِ فَقَالَ: مَا هَذَانِ النَّهَرَانِ يَا جِبْرِيلُ؟ قَالَ: هَذَانِ النِّيلُ وَالْفُرَاتُ عُنْصُرُهُمَا، ثُمَّ مَضَى بِهِ

हाथ मारा तो वो मुश्क है। पूछा जिब्रईल! ये क्या है? जवाब दिया कि ये कौषर है जिसे अल्लाह ने आपके लिये महफ़ूज़ कर रखा है। फिर आप दूसरे आसमान पर चढ़े। फ़रिश्तों ने यहाँ भी वही सवाल किया जो पहले आसमान पर किया था। कौन हैं? कहा जिब्रईल! पूछा आपके साथ कौन हैं? कहा मुहम्मद (ﷺ)। पूछा गया इन्हें बुलाया गया है? उन्होंने कहा कि हाँ। फ़रिश्ते बोले इन्हें मरहबा और बशारत हो। फिर आपको लेकर तीसरे आसमान पर चढ़े और यहाँ भी वही सवाल किया जो पहले और दूसरे आसमान पर किया था। फिर चौथे आसमान पर लेकर चढ़े और यहाँ भी वही सवाल किया। फिर पाँचवें आसमान पर आपको लेकर चढ़े और यहाँ भी वही सवाल किया। फिर छठे आसमान पर आपको लेकर चढ़े और यहाँ भी वही सवाल किया। फिर आपको लेकर सातवें आसमान पर चढ़े और यहाँ भी वही सवाल किया। हर आसमान पर अंबिया हैं जिनके नाम आपने लिये। मुझे ये याद है कि इदरीस (अ.) दूसरे आसमान पर, हारून (अ.), चौथे आसमान पर, और दूसरे नबी पाँचवें आसमान पर। जिनके नाम मुझे याद नहीं और इब्राहीम (अ.) छठे आसमान पर और मूसा (अ.) सातवें आसमान पर। ये उन्हें अल्लाह तआला से शर्फ़े हम-कलामी की वजह से फ़ज़ीलत मिली थी। मूसा (अ.) ने कहा मेरे रब! मेरा ख़याल नहीं था कि किसी को मुझसे बढ़ाया जाएगा। फिर जिब्रईल (अ.) उन्हें लेकर उससे भी ऊपर गये जिसका इल्म अल्लाह के सिवा और किसी को नहीं यहाँ तक कि आपको सिदरतुल मुन्तहा पर लेकर आए और रब्बुल इज़्ज़त तबारक व तआला से क़रीब हुए और इतने क़रीब जैसे कमान के दोनों किनारे या इससे भी क़रीब। फिर अल्लाह ने और दूसरी बातों के साथ आपकी उम्मत पर दिन और रात में पचास नमाज़ों की भी वह्य की। फिर आप उतरे और जब मूसा (अ.) के पास पहुँचे तो उन्होंने आपको रोक लिया और पूछा ऐ मुहम्मद (ﷺ)! आपके रब ने आपसे क्या अहद लिया है? फ़र्माया कि मेरे रब ने मुझसे दिन और रात में पचास नमाज़ों का अहद लिया है। मूसा (अ.) ने फ़र्माया कि आपकी उम्मत में इसकी ताक़त नहीं। वापस जाइये और अपनी और अपनी उम्मत की तरफ़ से कमी की दरख़्वास्त कीजिए। चुनाँचे

فِي السَّمَاءِ فَإِذَا هُوَ بِنَهَرٍ آخَرَ عَلَيْهِ قَصْرٌ مِنْ لُؤْلُؤٍ وَزَبَرْجَدٍ فَضَرَبَ يَدَهُ فَإِذَا هُوَ مِسْكٌ قَالَ: مَا هَذَا يَا جِبْرِيلُ؟ قَالَ: هَذَا الْكَوْثَرُ الَّذِي خَبَأَ لَكَ رَبُّكَ، ثُمَّ عَرَجَ إِلَى السَّمَاءِ الثَّانِيَةِ فَقَالَتِ الْمَلاَئِكَةُ لَهُ مِثْلَ مَا قَالَتْ لَهُ الأُولَى مَنْ هَذَا؟ قَالَ: جِبْرِيلُ، قَالُوا: وَمَنْ مَعَكَ؟ قَالَ: مُحَمَّدٌ ﷺ قَالُوا وَقَدْ بُعِثَ إِلَيْهِ؟ قَالَ: نَعَمْ. قَالُوا: مَرْحَبًا بِهِ وَأَهْلاً، ثُمَّ عَرَجَ بِهِ إِلَى السَّمَاءِ الثَّالِثَةِ وَقَالُوا لَهُ مِثْلَ مَا قَالَتِ الأُولَى وَالثَّانِيَةُ، ثُمَّ عَرَجَ بِهِ إِلَى الرَّابِعَةِ فَقَالُوا لَهُ مِثْلَ ذَلِكَ ثُمَّ، عَرَجَ بِهِ إِلَى السَّمَاءِ الْخَامِسَةِ فَقَالُوا لَهُ مِثْلَ ذَلِكَ، ثُمَّ عَرَجَ بِهِ إِلَى السَّادِسَةِ فَقَالُوا لَهُ مِثْلَ ذَلِكَ، ثُمَّ عَرَجَ بِهِ إِلَى السَّمَاءِ السَّابِعَةِ فَقَالُوا لَهُ مِثْلَ ذَلِكَ، كُلُّ سَمَاءٍ فِيهَا أَنْبِيَاءُ قَدْ سَمَّاهُمْ فَأَوْعَيْتُ مِنْهُمْ إِدْرِيسَ فِي الثَّانِيَةِ، وَهَارُونَ فِي الرَّابِعَةِ، وَآخَرَ فِي الْخَامِسَةِ لَمْ أَحْفَظِ اسْمَهُ وَإِبْرَاهِيمَ فِي السَّادِسَةِ، وَمُوسَى فِي السَّابِعَةِ بِتَفْضِيلِ كَلاَمِ اللهِ فَقَالَ مُوسَى: رَبِّ لَمْ أَظُنَّ أَنْ يُرْفَعَ عَلَيَّ أَحَدٌ، ثُمَّ عَلاَ بِهِ فَوْقَ ذَلِكَ بِمَا لاَ يَعْلَمُهُ إِلاَّ اللهُ حَتَّى جَاءَ سِدْرَةَ الْمُنْتَهَى، وَدَنَا الْجَبَّارُ رَبُّ الْعِزَّةِ فَتَدَلَّى حَتَّى كَانَ مِنْهُ قَابَ قَوْسَيْنِ أَوْ أَدْنَى، فَأَوْحَى اللهُ فِيمَا أَوْحَى إِلَيْهِ خَمْسِينَ صَلاَةً عَلَى أُمَّتِكَ كُلَّ يَوْمٍ وَلَيْلَةٍ. ثُمَّ هَبَطَ حَتَّى بَلَغَ مُوسَى فَاحْتَبَسَهُ مُوسَى

आँहज़रत (ﷺ) जिब्राईल (अ.) की तरफ़ मुतवज्जह हुए और उन्होंने भी इशारा क्या कि हाँ अगर चाहें तो बेहतर है। चुनाँचे आप फिर इन्हें लेकर अल्लाह तआला की बारगाह में हाज़िर हुए और अपने मुक़ाम पर खड़े होकर अर्ज़ किया ऐ रब! हमसे कमी कर दे क्योंकि मेरी उम्मत इसकी ताक़त नहीं रखती। चुनाँचे अल्लाह तआला ने दस नमाज़ों की कमी कर दी। फिर आप मूसा (अ.) के पास आए तो उन्होंने आपको रोका। मूसा (अ.) आप (ﷺ) को इस तरह बराबर अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त के पास वापस करते रहे। यहाँ तक कि पाँच नमाज़ें हो गईं। पाँच नमाज़ों पर भी उन्होंने आँहज़रत (ﷺ) को रोका और कहा ऐ मुहम्मद(ﷺ)! मैंने अपनी क़ौम बनी इस्राईल का तजुर्बा इससे कम पर किया है वो नातवाँ ष़ाबित हुए और उन्होंने छोड़ दिया। आपकी उम्मत तो जिस्म, दिल, बदन, नज़र और कान हर ए'तिबार से कमज़ोर है, आप वापस जाइये और अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त इसमें भी कमी कर देगा। हर मर्तबा आँहज़रत (ﷺ) जिब्राईल (अ.) की तरफ़ मुतवज्जह होते थे ताकि उनसे मश्वरा लें और जिब्राईल (अ.) उसे नापसंद नहीं करते थे। जब वो आपको पाँचवीं मर्तबा भी ले गये तो अ़र्ज़ किया। ऐ रब! मेरी उम्मत जिस्म, दिल, निगाह और हैषियत से कमज़ोर है, पस हमसे और कमी कर दे। अल्लाह तआला ने उस पर फ़र्माया कि वो क़ौल मेरे यहाँ बदला नहीं जाता जैसा कि मैंने तुम पर उम्मुल किताब में फ़र्ज़ किया है। और फ़र्माया कि हर नेकी का ष़वाब दस गुना है पस ये उम्मुल किताब में पचास नमाज़ें हैं लेकिन तुम पर फ़र्ज़ पाँच ही हैं। चुनाँचे आप मूसा (अ.) के पास वापस आए और उन्होंने पूछा क्या हुआ? आपने कहा कि हमसे ये तख़्फ़ीफ़ की कि हर नेकी के बदले दस का ष़वाब मिलेगा। मूसा (अ.) ने कहा कि मैंने बनी इस्राईल को इससे कम पर आज़माया है और उन्होंने छोड़ दिया। पस आप वापस जाइये और मज़ीद कमी कराइये। आँहज़रत (ﷺ) ने उस पर कहा ऐ मूसा! वल्लाह मुझे अपने रब से अब शर्म आती है क्योंकि बार बार आ जा चुका हूँ। उन्होंने कहा कि फिर अल्लाह का नाम लेकर उतर जाओ। फिर जब आप बेदार हुए तो मस्जिदे हराम में थे। उसके बाद आँहज़रत (ﷺ) मस्जिदे हराम ही में थे कि जाग उठे। जाग उठने से ये मुराद है कि वो हालत मेअराज की जाती

فَقَالَ: يَا مُحَمَّدُ مَاذَا عَهِدَ إِلَيْكَ رَبُّكَ؟ قَالَ: عَهِدَ إِلَيَّ خَمْسِينَ صَلاَةً كُلَّ يَوْمٍ وَلَيْلَةٍ قَالَ: إِنَّ أُمَّتَكَ لاَ تَسْتَطِيعُ ذَلِكَ، فَارْجِعْ فَلْيُخَفِّفْ عَنْكَ رَبُّكَ وَعَنْهُمْ، فَالْتَفَتَ النَّبِيُّ ﷺ إِلَى جِبْرِيلَ كَأَنَّهُ يَسْتَشِيرُهُ فِي ذَلِكَ فَأَشَارَ إِلَيْهِ جِبْرِيلُ أَنْ نَعَمْ إِنْ شِئْتَ، فَعَلاَ بِهِ إِلَى الْجَبَّارِ فَقَالَ وَهُوَ مَكَانَهُ: يَا رَبِّ خَفِّفْ عَنَّا، فَإِنَّ أُمَّتِي لاَ تَسْتَطِيعُ هَذَا، فَوَضَعَ عَنْهُ عَشْرَ صَلَوَاتٍ ثُمَّ رَجَعَ إِلَى مُوسَى فَاحْتَبَسَهُ فَلَمْ يَزَلْ يُرَدِّدُهُ مُوسَى إِلَى رَبِّهِ حَتَّى صَارَتْ إِلَى خَمْسِ صَلَوَاتٍ، ثُمَّ احْتَبَسَهُ مُوسَى عِنْدَ الْخَمْسِ فَقَالَ: يَا مُحَمَّدُ وَاللَّهِ لَقَدْ رَاوَدْتُ بَنِي إِسْرَائِيلَ قَوْمِي عَلَى أَدْنَى مِنْ هَذَا، فَضَعُفُوا فَتَرَكُوهُ فَأُمَّتُكَ أَضْعَفُ أَجْسَادًا وَقُلُوبًا وَأَبْدَانًا وَأَبْصَارًا وَأَسْمَاعًا، فَارْجِعْ فَلْيُخَفِّفْ عَنْكَ رَبُّكَ كُلَّ ذَلِكَ يَلْتَفِتُ النَّبِيُّ ﷺ إِلَى جِبْرِيلَ لِيُشِيرَ عَلَيْهِ وَلاَ يَكْرَهُ ذَلِكَ جِبْرِيلُ فَرَفَعَهُ عِنْدَ الْخَامِسَةِ فَقَالَ: يَا رَبِّ إِنَّ أُمَّتِي ضُعَفَاءُ أَجْسَادُهُمْ وَقُلُوبُهُمْ وَأَسْمَاعُهُمْ وَأَبْدَانُهُمْ فَخَفِّفْ عَنَّا؟ فَقَالَ الْجَبَّارُ: يَا مُحَمَّدُ: قَالَ لَبَّيْكَ وَسَعْدَيْكَ قَالَ: إِنَّهُ لاَ يُبَدَّلُ الْقَوْلُ لَدَيَّ كَمَا فَرَضْتُ عَلَيْكَ فِي أُمِّ الْكِتَابِ قَالَ: فَكُلُّ حَسَنَةٍ بِعَشْرِ أَمْثَالِهَا فَهِيَ خَمْسُونَ فِي أُمِّ الْكِتَابِ، وَهِيَ خَمْسٌ عَلَيْكَ، فَرَجَعَ إِلَى مُوسَى فَقَالَ: كَيْفَ

فَعَلْتَ؟ فَقَالَ: خَفَّفَ عَنَّا أَعْطَانَا بِكُلِّ حَسَنَةٍ عَشْرَ أَمْثَالِهَا قَالَ مُوسَى: قَدْ وَاللهِ رَاوَدْتُ بَنِي إِسْرَائِيلَ عَلَى أَدْنَى مِنْ ذَلِكَ، فَتَرَكُوهُ، ارْجِعْ إِلَى رَبِّكَ فَلْيُخَفِّفْ عَنْكَ أَيْضًا قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: يَا مُوسَى قَدْ وَاللهِ اسْتَحْيَيْتُ مِنْ رَبِّي مِمَّا اخْتَلَفْتُ إِلَيْهِ قَالَ: فَاهْبِطْ بِسْمِ اللهِ، قَالَ: وَاسْتَيْقَظَ وَهُوَ فِي مَسْجِدِ الْحَرَامِ)).

[راجع: ٣٥٧٠]

रही और आप अपनी हालत में आ गए। (राजेअ : 3570)

٣٨- باب كَلاَمِ الرَّبِّ مَعَ أَهْلِ الْجَنَّةِ

बाब 38 : अल्लाह तआला का जन्नत वालों से बातें करना

٧٥١٨- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سُلَيْمَانَ، حَدَّثَنِي ابْنُ وَهْبٍ، قَالَ حَدَّثَنِي مَالِكٌ، عَنْ زَيْدِ بْنِ أَسْلَمَ، عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِنَّ اللهَ يَقُولُ لأَهْلِ الْجَنَّةِ: يَا أَهْلَ الْجَنَّةِ فَيَقُولُونَ: لَبَّيْكَ رَبَّنَا وَسَعْدَيْكَ وَالْخَيْرُ فِي يَدَيْكَ فَيَقُولُ: هَلْ رَضِيتُمْ؟ فَيَقُولُونَ: وَمَا لَنَا لاَ نَرْضَى يَا رَبِّ وَقَدْ أَعْطَيْتَنَا مَا لَمْ تُعْطِ أَحَدًا مِنْ خَلْقِكَ، فَيَقُولُ: أَلاَ أُعْطِيكُمْ أَفْضَلَ مِنْ ذَلِكَ؟ فَيَقُولُونَ: يَا رَبِّ وَأَيُّ شَيْءٍ أَفْضَلُ مِنْ ذَلِكَ، فَيَقُولُ : أُحِلُّ عَلَيْكُمْ رِضْوَانِي فَلاَ أَسْخَطُ عَلَيْكُمْ بَعْدَهُ أَبَدًا)).

[راجع: ٦٥٤٩]

7518. हमसे यह्या बिन सुलैमान ने बयान किया, उन्होंने कहा मुझसे अ़ब्दुल्लाह बिन वहब ने बयान किया, उन्होंने कहा कि मुझे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे ज़ैद बिन असलम ने बयान किया, उनसे अ़ता बिन यसार ने बयान किया और उनसे अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया अल्लाह तआला जन्नत वालों से कहेगा ऐ जन्नत वालों! वो बोलेंगे हाज़िर तेरी ख़िदमत के लिये मुस्तैद, सारी भलाई तेरे दोनों हाथों में है। अल्लाह तआला पूछेगा क्या तुम ख़ुश हो? वो जवाब देंगे क्यूँ नहीं हम ख़ुश होंगे ऐ रब! और तूने हमें वो चीज़ें अ़ता की हैं जो किसी मख़्लूक़ को नहीं अ़ता कीं। अल्लाह तआला फ़र्माएगा क्या मैं तुम्हें इससे अफ़ज़ल इन्आम न दूँ? जन्नती पूछेंगे ऐ रब! इससे अफ़ज़ल क्या चीज़ हो सकती है अल्लाह तआला फ़र्माएगा कि मैं अपनी ख़ुशी तुम पर उतारता हूँ और अब कभी तुमसे नाराज़ नहीं होऊँगा। (राजेअ : 6549)

इस पर सब इन्आमात तसद्दुक़ हैं। गुलाम के लिये इससे बढ़कर ख़ुशी किसी चीज़ में नहीं हो सकती कि आक़ा राज़ी रहे व रिज़्वान मिनल्लाहि अकबर का यही मतलब है।

٧٥١٩- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ سِنَانٍ، حَدَّثَنَا

7519. हमसे मुहम्मद बिन सिनान ने बयान किया, उन्होंने

فُلَيْحٌ، حَدَّثَنَا هِلاَلٌ، عَنْ عَطَاءِ بْنِ يَسَارٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ، كَانَ يَوْمًا يُحَدِّثُ وَعِنْدَهُ رَجُلٌ مِنْ أَهْلِ الْبَادِيَةِ: ((أَنَّ رَجُلاً مِنْ أَهْلِ الْجَنَّةِ اسْتَأْذَنَ رَبَّهُ فِي الزَّرْعِ فَقَالَ أَوَلَسْتَ فِيمَا شِئْتَ؟ قَالَ: بَلَى، وَلَكِنِّي أُحِبُّ أَنْ أَزْرَعَ فَأَسْرَعَ وَبَذَرَ فَتَبَادَرَ الطَّرْفَ نَبَاتُهُ وَاسْتِوَاؤُهُ وَاسْتِحْصَادُهُ وَتَكْوِيرُهُ أَمْثَالَ الْجِبَالِ فَيَقُولُ اللهُ تَعَالَى: دُونَكَ يَا ابْنَ آدَمَ فَإِنَّهُ لاَ يُشْبِعُكَ شَيْءٌ)) فَقَالَ الأَعْرَابِيُّ: يَا رَسُولَ اللهِ لاَ تَجِدُ هَذَا إِلاَّ قُرَشِيًّا أَوْ أَنْصَارِيًّا فَإِنَّهُمْ أَصْحَابُ زَرْعٍ، فَأَمَّا نَحْنُ فَلَسْنَا بِأَصْحَابِ زَرْعٍ فَضَحِكَ رَسُولُ اللهِ ﷺ. [راجع: ٢٣٤٨]

कहा हमसे फ़ुलैह़ बिन सुलैमान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे बिलाल बिन अ़ली ने बयान किया, उनसे अ़त़ा बिन यसार ने बयान किया और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूले करीम (ﷺ) एक दिन बातचीत कर रहे थे, उस वक़्त आपके पास एक बदवी भी था कि अहले जन्नत में से एक शख़्स ने अल्लाह तआ़ला से खेती की इजाज़त चाही तो अल्लाह तआ़ला ने कहा कि क्या वो सब कुछ तुम्हारे पास नहीं है जो तुम चाहते हो? वो कहेगा कि ज़रूर है लेकिन मैं चाहता हूँ कि खेती करूँ। चुनाँचे बहुत जल्दी वो बीज डालेगा और पलक झपकने तक उसका उगना, बराबर, कटना और पहाड़ों की त़रह़ ग़ल्ले के अम्बार लग जाना हो जाएगा। अल्लाह तआ़ला कहेगा इब्ने आदम! इसे ले ले, तेरे पेट को कोई चीज़ नहीं भर सकती। देहाती ने कहा या रसूलल्लाह! इसका मज़ा तो क़ुरैशी या अंसारी ही उठाएँगे क्योंकि वही खेतीबाड़ी वाले हैं, हम तो किसान हैं नहीं। आँह़ज़रत (ﷺ) को ये बात सुनकर हंसी आ गई। (राजेअ़ : 2348)

٣٩- باب ذِكْرِ اللهِ بِالأَمْرِ

وَذِكْرِ الْعِبَادِ بِالدُّعَاءِ وَالتَّضَرُّعِ وَالرِّسَالَةِ وَالإِبْلاَغِ لِقَوْلِهِ تَعَالَى: ﴿فَاذْكُرُونِي أَذْكُرْكُمْ﴾ ﴿وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَأَ نُوحٍ إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ: يَا قَوْمِ إِنْ كَانَ كَبُرَ عَلَيْكُمْ مَقَامِي وَتَذْكِيرِي بِآيَاتِ اللهِ فَعَلَى اللهِ تَوَكَّلْتُ فَأَجْمِعُوا أَمْرَكُمْ وَشُرَكَاءَكُمْ ثُمَّ لاَ يَكُنْ أَمْرُكُمْ عَلَيْكُمْ غُمَّةً ثُمَّ اقْضُوا إِلَيَّ وَلاَ تُنْظِرُونِ فَإِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَمَا سَأَلْتُكُمْ مِنْ أَجْرٍ إِنْ أَجْرِيَ إِلاَّ عَلَى اللهِ وَأُمِرْتُ أَنْ أَكُونَ مِنَ الْمُسْلِمِينَ﴾ غُمَّةٌ : هَمٌّ وَضِيقٌ.

बाब 39 : अल्लाह अपने बन्दों को हुक्म करके याद करता है और बन्दे उससे दुआ़

और आ़जिज़ी करके और अल्लाह का पैग़ाम दूसरों को पहुँचाकर उसकी याद करते हैं जैसा कि सूरह बक़रः में फ़र्माया तुम मेरी याद करो मैं तुम्हारी याद करूँगा और सूरह यूनुस में फ़र्माया, ऐ पैग़म्बर! इनको नूह़ का क़िस्सा सुना जब उसने अपनी क़ौम से कहा, भाइयों! अगर मेरा रहना तुममें और अल्लाह की आयात पढ़कर सुनाना तुम पर गिराँ गुज़रता है तो मैंने अल्लाह पर अपना काम छोड़ दिया (उस पर भरोसा किया) तुम भी अपने शरीकों के साथ मिलकर (मेरे क़त्ल या इख़राज की) ठहरा लो। फिर इस तज्वीज़ के पूरा करने में कुछ फ़िक्र न करो बेताम्मुल कर डालो। मुझको ज़रा भी फ़ुर्सत न दो, अगर तुम मेरी बातें न मानो तो ख़ैर मैं तुमसे कुछ दुनिया की उज्रत नहीं मांगता मेरी उज्रत तो अल्लाह ही पर है उसकी त़रफ़ से मुझको उसके ताबेदारों में शरीक रहने का हुक्म मिला है।

قَالَ مُجَاهِدٌ : اقْضُوا إِلَيَّ مَا فِي أَنْفُسِكُمْ يُقَالُ الْرُقِ : افْصِ. وَقَالَ مُجَاهِدٌ: ﴿وَإِنْ أَحَدٌ مِنَ الْمُشْرِكِينَ اسْتَجَارَكَ فَأَجِرْهُ حَتَّى يَسْمَعَ كَلَامَ اللهِ﴾ إِنْسَانٌ يَأْتِيهِ فَيَسْتَمِعُ مَا يَقُولُ : وَمَا أُنْزِلَ عَلَيْهِ فَهُوَ آمِنٌ حَتَّى يَأْتِيَهُ فَيَسْمَعَ مِنْهُ كَلَامَ اللهِ وَحَتَّى يَبْلُغَ مَأْمَنَهُ حَيْثُ جَاءَ النَّبَأُ الْعَظِيمُ الْقُرْآنُ صَوَابًا حَقًّا فِي الدُّنْيَا وَعَمِلَ بِهِ.

ग़ुम्मतुन का मा'नी ग़म और तंगी। मुजाहिद ने कहा षुम्मक़्ज़ू इलय्या का मा'नी ये है जो कुछ तुम्हारे दिलों में है उसको पूरा कर डालो, क़िस्सा तमाम करो। अरब लोग कहते हैं उफ़्रुक़ या'नी फ़ैसला कर दे और मुजाहिद ने इस आयत की तफ़्सीर में व इन अहदम मिनल मुश्रिकीनस्तजारक अल्अख़ (सूरह तौबा में) कहा या'नी अगर कोई काफ़िर आँहज़रत (ﷺ) के पास अल्लाह का कलाम और जो आप पर उतरा उसको सुनने के लिये आए तो उसको अमन है जब तक वो इस तरह आता और अल्लाह का कलाम और जो आप पर उतरा उसको सुनने के लिये आए तो उसको अमन है जब तक वो इस तरह आता और अल्लाह का कलाम सुनता रहे और जब वो उस अमन की जगह न पहुँच जाए जहाँ से वो आया था और सूरह नबा में नबइल अ़ज़ीम से क़ुर्आन मुराद है और इस सूरह में जो क़ाल स़वाबा है तो स़वाब से हक़ बात कहना और उस पर अ़मल करना मुराद है।

٤٠- باب قَوْلِ اللهِ تَعَالَى:

﴿فَلَا تَجْعَلُوا لِلَّهِ أَنْدَادًا﴾ وَقَوْلِهِ جَلَّ ذِكْرُهُ: ﴿وَتَجْعَلُونَ لَهُ أَنْدَادًا ذَلِكَ رَبُّ الْعَالَمِينَ﴾ وَقَوْلِهِ: ﴿وَالَّذِينَ لَا يَدْعُونَ مَعَ اللهِ إِلَهًا آخَرَ﴾ ﴿وَلَقَدْ أُوحِيَ إِلَيْكَ وَإِلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكَ لَئِنْ أَشْرَكْتَ لَيَحْبَطَنَّ عَمَلُكَ وَلَتَكُونَنَّ مِنَ الْخَاسِرِينَ بَلِ اللهَ فَاعْبُدْ وَكُنْ مِنَ الشَّاكِرِينَ﴾. وَقَالَ عِكْرِمَةُ : وَمَا يُؤْمِنُ أَكْثَرُهُمْ بِاللهِ إِلَّا وَهُمْ مُشْرِكُونَ، وَلَئِنْ سَأَلْتَهُمْ مَنْ خَلَقَهُمْ وَمَنْ خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالأَرْضَ؟ لَيَقُولُنَّ: اللهُ. فَذَلِكَ إِيمَانُهُمْ وَهُمْ يَعْبُدُونَ غَيْرَهُ، وَمَا ذُكِرَ فِي خَلْقِ أَفْعَالِ الْعِبَادِ وَاكْتِسَابِهِمْ لِقَوْلِهِ تَعَالَى: ﴿وَخَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ فَقَدَّرَهُ تَقْدِيرًا﴾. وَقَالَ مُجَاهِدٌ: مَا تَنَزَّلُ

बाब 40 : सूरह बक़र: में अल्लाह तआ़ला का इर्शाद, पस अल्लाह के शरीक न बनाओ

और अल्लाह का इर्शाद (सूरह ह़ामीम सज्दा में) तुम उसके शरीक बनाते हो। वो तो तमाम दुनिया का मालिक है। अल्लाह का इर्शाद, और वो लोग जो अल्लाह के साथ किसी दूसरे मअ़बूद को नहीं पुकारते (सूरह फ़ुरक़ान) और बिला शुब्हा आप पर और आपसे पहले पैग़म्बरों पर वह्य भेजी गई कि अगर तुमने शिर्क किया तो तुम्हारा अ़मल ग़ारत हो जाएगा और तुम नुक़्सान उठाने वालों में हो जाओगे, (सूरह ज़ुमर) और इक्रिमा ने कहा, वमा युमिन अक़्षरुहुम बिल्लाहि इल्ला वहुम मुश्रिकून का मतलब ये है कि, अगर तुम उनसे पूछो कि आसमान और ज़मीन को किसने पैदा किया तो वो जवाब देंगे कि अल्लाह ने। ये उनका ईमान है लेकिन वो इबादत ग़ैरुल्लाह की करते हैं। और इस बाब में ये भी बयान है कि बन्दे के अफ़्आल उनका कस्ब सब मख़्लूक़े इलाही हैं क्योंकि अल्लाह ने सूरह फ़ुरक़ान में फ़र्माया, उसी परवरदिगार ने हर चीज़ को पैदा किया फिर एक अंदाज़ से उसको दुरुस्त किया। और मुजाहिद ने कहा कि सूरह ह़ज्ज में जो है वमा नुनज़्ज़िलुल मलाइकत इल्ला बिल ह़क़्क़ का मा'नी ये है कि फ़रिश्ते अल्लाह का पैग़ाम और

उसका अ़ज़ाब लेकर उतरते हैं और सूरह अह़ज़ाब में जो फ़र्माया सच्चों से उनकी सच्चाई का ह़ाल पूछे यानी पैग़म्बरों से जो अल्लाह का हुक्म पहुँचाते हैं और सूरह ह़िज्र में फ़र्माया, हम क़ुर्आन के निगहबान हैं। मुजाहिद ने कहा या'नी अपने पास और सूरह ज़ुमर में फ़र्माया और सच्ची बात लेकर आया या'नी क़ुर्आन और हमने इसको सच्चा जाना या'नी मोमिन जो क़यामत के दिन परवरदिगार से अ़र्ज़ करेगा तूने मुझको क़ुर्आन दिया था, मैंने उस पर अ़मल किया।

الْمَلاَئِكَةَ إِلاَّ بِالْحَقِّ بِالرِّسَالَةِ وَالْعَذَابِ لِيَسْأَلَ الصَّادِقِينَ عَنْ صِدْقِهِمْ الْمُبَلِّغِينَ الْمُؤَدِّينَ مِنَ الرُّسُلِ، وَإِنَّا لَهُ حَافِظُونَ عِنْدَنَا وَالَّذِي جَاءَ بِالصِّدْقِ الْقُرْآنُ وَصَدَّقَ بِهِ الْمُؤْمِنُ يَقُولُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ: هَذَا الَّذِي أَعْطَيْتَنِي عَمِلْتُ بِمَا فِيهِ.

7520. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे जरीर ने बयान किया, उनसे मंसूर ने, उनसे अबू वाइल ने, उनसे अ़म्र बिन शुरह़बील ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने बयान किया कि मैं ने नबी करीम (ﷺ) से पूछा कि कौनसा गुनाह अल्लाह के यहाँ सबसे बड़ा है? फ़र्माया ये कि तुम अल्लाह के साथ किसी को शरीक ठहराओ ह़ालाँकि उसी ने तुम्हें पैदा किया है। मैंने कहा ये तो बहुत बड़ा गुनाह है। मैंने अ़र्ज़ किया फिर कौनसा? फ़र्माया ये कि तुम अपने बच्चे को इस ख़तरे की वजह से क़त्ल न करो कि वो तुम्हारे साथ खाएगा। मैंने अ़र्ज़ किया फिर कौनसा? फ़र्माया ये कि तुम अपने पड़ौसी की बीवी से ज़िना करो। (राजेअ़ : 4477)

٧٥٢٠- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنْ مَنْصُورٍ، عَنْ أَبِي وَائِلٍ، عَنْ عَمْرِو بْنِ شُرَحْبِيلَ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ قَالَ: سَأَلْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ أَيُّ الذَّنْبِ أَعْظَمُ عِنْدَ اللَّهِ؟ قَالَ: ((أَنْ تَجْعَلَ لِلَّهِ نِدًّا وَهُوَ خَلَقَكَ)) قُلْتُ: إِنَّ ذَلِكَ لَعَظِيمٌ قُلْتُ: ثُمَّ أَيٌّ؟ قَالَ: ((ثُمَّ أَنْ تَقْتُلَ وَلَدَكَ تَخَافُ أَنْ يَطْعَمَ مَعَكَ)) قُلْتُ: ثُمَّ أَيٌّ؟ قَالَ: ((ثُمَّ أَنْ تُزَانِيَ بِحَلِيلَةِ جَارِكَ)).[راجع: ٤٤٧٧]

ज़िना बहरह़ाल बुरा काम है मगर ये बहुत ही ज़्यादा बुरा है।

तश्रीह़ : इमाम बुख़ारी (रह़.) ने ये ह़दीष़ लाकर उस त़रफ़ इशारा किया कि क़दरिया और मुअ़तज़िला जो बन्दे को अपने अफ़्आ़ल का ख़ालिक़ कहते हैं वो गोया अल्लाह का बराबर वाला बन्दे को बनाते हैं तो उनका ये ए'तिक़ाद बहुत बड़ा गुनाह है। अल्लाह की इ़बादत के कामों में किसी ग़ैर को शरीक साझी बनाना शिर्क है जो इतना बड़ा गुनाह है कि बग़ैर तौबा किये हुए मरने वाले मुश्रिक के लिये जन्नत क़त़्अ़न ह़राम है। सारा क़ुर्आन मजीद शिर्क की बुराई बयान करने से भरा हुआ है फिर भी नामोनिहाद मुसलमान हैं जिन्होंने मज़ाराते बुज़ुर्गान को इ़बादतगाह बनाया हुआ है। मज़ारों पर सज्दा करना बुज़ुर्गों से अपनी मुरादें मांगना उसके लिये नज़्र नियाज़ करना आ़म जाहिलों ने मा'मूल बना रखा है जो खुला हुआ शिर्क है। ऐसे मुसलमानों को सोचना चाहिये कि वो अस़ल इस्लाम से किस क़दर दूर जा पड़े हैं।

बाब 41 : सूरह ह़ामीम सज्दा में अल्लाह तआ़ला का फ़र्मान

कि, तुम जो दुनिया में छुपकर गुनाह़ करते थे तो इस डर से नहीं कि तुम्हारे कान और तुम्हारी आँखें और तुम्हारे चमड़े तुम्हारे ख़िलाफ़ क़यामत के दिन गवाही देंगे (तुम क़यामत के क़ाइल ही न थे) तुम समझते रहे कि अल्लाह को हमारे बहुत सारे कामों की ख़बर तक नहीं है।

٤١- بَابٌ

قَوْلِ اللَّهِ تَعَالَى: ﴿وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَتِرُونَ أَنْ يَشْهَدَ عَلَيْكُمْ سَمْعُكُمْ وَلاَ أَبْصَارُكُمْ وَلاَ جُلُودُكُمْ وَلَكِنْ ظَنَنْتُمْ أَنَّ اللَّهَ لاَ يَعْلَمُ كَثِيرًا مِمَّا تَعْمَلُونَ﴾.

7521. हमसे हुमैदी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे मंसूर ने बयान किया, उनसे मुजाहिद ने बयान किया, उनसे अबू मअ़मर ने बयान किया और उनसे अ़ब्दुल्लाह (रज़ि.) ने बयान किया कि ख़ाना का'बा के पास दो ष़क़फ़ी और एक क़ुरैशी या (ये कहा कि) दो क़ुरैशी और एक ष़क़फ़ी जमा हुए जिनके पेट की चर्बी बहुत थी (तोंद बड़ी थी) और जिनमे सूझबूझ की बड़ी कमी थी। उनमें से एक ने कहा क्या तुम्हारा ख़याल है कि अल्लाह वो सब कुछ सुनता है जो हम कहते हैं। दूसरे ने कहा जब हम ज़ोर से बोलते हैं तो सुनता है लेकिन अगर हम आहिस्ता बोलें तो नहीं सुनता। इस पर अल्लाह ने ये आयत नाज़िल की कि तुम जो दुनिया में छुपकर गुनाह करते थे तो इस डर से नहीं कि तेरे कान तुम्हारी आँखें और तुम्हार चमड़े तुम्हारे ख़िलाफ़ क़यामत के दिन गवाही देंगे आख़िर तक। (राजेअ : 4816)

٧٥٢١- حَدَّثَنَا الْحُمَيْدِيُّ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، حَدَّثَنَا مَنْصُورٌ، عَنْ مُجَاهِدٍ، عَنْ أَبِي مَعْمَرٍ، عَنْ عَبْدِ اللهِ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: اجْتَمَعَ عِنْدَ الْبَيْتِ ثَقَفِيَّانِ وَقُرَشِيٌّ - أَوْ قُرَشِيَّانِ وَثَقَفِيٌّ - كَثِيرَةٌ شَحْمُ بُطُونِهِمْ قَلِيلَةٌ فِقْهُ قُلُوبِهِمْ فَقَالَ: أَحَدُهُمْ أَتَرَوْنَ أَنَّ اللهَ يَسْمَعُ مَا نَقُولُ؟ قَالَ الآخَرُ: يَسْمَعُ إِنْ جَهَرْنَا وَلاَ يَسْمَعُ إِنْ أَخْفَيْنَا وَقَالَ الآخَرُ: إِنْ كَانَ يَسْمَعُ إِذَا جَهَرْنَا فَإِنَّهُ يَسْمَعُ إِذَا أَخْفَيْنَا فَأَنْزَلَ اللهُ تَعَالَى: ﴿وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَتِرُونَ أَنْ يَشْهَدَ عَلَيْكُمْ سَمْعُكُمْ وَلاَ أَبْصَارُكُمْ وَلاَ جُلُودُكُمْ﴾ الآيَةَ.

[راجع: ٤٨١٦]

बाब 42 : सूरह रहमान में अल्लाह तआ़ला का

फ़र्मान, परवरदिगार हर दिन एक नया काम कर रहा है, और सूरह अंबिया में फ़र्माया कि, उनके पास उनके रब की तरफ़ से कोई नया हुक्म नहीं आता, और अल्लाह तआ़ला का सूरह तलाक़ में फ़र्मान, मुम्किन है कि अल्लाह इसके बाद कोई नई बात पैदा कर दे, सिर्फ़ इतनी बात है कि अल्लाह का नया काम करना मख़्लूक़ के नये काम करने से मुशाबिहत नहीं रखता। क्योंकि अल्लाह तआ़ला ने सूरह शूरा में फ़र्माया है, उस जैसी कोई चीज़ नहीं (न ज़ात में न सिफ़ात में) और वो बहुत सुनने वाला, बहुत देखने वाला है, और इब्ने मसऊ़द (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) की ये हदीष़ बयान की कि अल्लाह तआ़ला जो नया हुक्म चाहता है देता है और उसने नया हुक्म ये दिया है कि तुम नमाज़ में बातें न करो।

٤٢- باب قَوْلِ اللهِ تَعَالَى:

﴿كُلَّ يَوْمٍ هُوَ فِي شَأْنٍ وَمَا يَأْتِيهِمْ مِنْ ذِكْرٍ مِنْ رَبِّهِمْ مُحْدَثٍ﴾ وَقَوْلِهِ تَعَالَى: ﴿لَعَلَّ اللهَ يُحْدِثُ بَعْدَ ذَلِكَ أَمْرًا﴾ وَأَنَّ حَدَثَهُ لاَ يُشْبِهُ حَدَثَ الْمَخْلُوقِينَ لِقَوْلِهِ تَعَالَى: ﴿لَيْسَ كَمِثْلِهِ شَيْءٌ وَهُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ﴾ وَقَالَ ابْنُ مَسْعُودٍ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ إِنَّ اللهَ عَزَّ وَجَلَّ يُحْدِثُ مِنْ أَمْرِهِ مَا يَشَاءُ وَإِنَّ مِمَّا أَحْدَثَ أَنْ لاَ تَكَلَّمُوا فِي الصَّلاَةِ.

तश्रीह : इसको अबू दाऊद ने वस्ल किया। ये बाब लाकर इमाम बुख़ारी (रह़.) ने ये ष़ाबित किया कि अल्लाह की सिफ़ाते फ़ेअ़लिया जैसे कलाम करना, ज़िन्दा करना, मारना, पैदा करना, उतरना, चढ़ना, तअ़ज्जुब करना, वक़्तन फ़वक़्तन, हादिष़ होते रहते हैं। इस तरह हर साअ़त उस परवरदिगार के नये नये इंतिज़ामात नमूद होते रहते हैं। नये नये अह़काम स़ादिर होते रहते हैं और जिन लोगों ने सिफ़ाते फ़ेअ़ लिया का इस बिना पर इंकार किया है कि वो ह़ादिष़ हैं और अल्लाह तआ़ला ह़वादिष़ का मह़ल नहीं हो सकता, वो बेवक़ूफ़ हैं। क़ुर्आन व ह़दीष़ दोनों से ये ष़ाबित है कि वो नये नये काम करता है। नये नये अह़काम उतारता रहता है। **इन्नल्लाह अ़ला कुल्लि शैइन क़दीर** आयाते बाब में पहले ये फ़र्माया कि उसकी

मिष्ल कोई चीज़ नहीं है। ये तंज़ीह हुई फिर फ़र्माया वो सुनता और जानता है ये उसकी सिफ़ात का इष्बात हुआ अहले हदीष इस एतिक़ाद पर हैं जो मुतवस्सित है, दरम्याने तअ़तील और तश्बीह के मुअत्तता तो जहमिया और मुअ़तज़िला हैं जो अल्लाह की उन तमाम सिफ़ात का इंकार करते हैं, जो मख़्लूक़ में भी पाये जाते हैं जैसे सुनना, देखना, बात करना वग़ैरह और मुशब्बहा मुजस्समा हैं जो अल्लाह पाक की तमाम सिफ़ात को मख़्लूक़ से मुशाबिहत देते हैं और कहते हैं कि अल्लाह तआ़ला भी आदमी की तरह गोश्त पोस्त से मुरक्कब है। हमारी ही तरह मुतरादिफ़ आँखें रखता है। हालाँकि **लैस कमिष्लिही शैउन व हुवस्समीउल बसीर**। अहले हदीष सिफ़ाते बारी को किसी मख़्लूक़ से मुशाबिहत नहीं देते।

7522. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे हातिम बिन हारून ने बयान किया, कहा हमसे अय्यूब ने बयान किया, उनसे इक्रिमा ने और उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि तुम अहले किताब से उनकी किताबों के मसाइल के बारे में क्यूँकर सवाल करते हो, तुम्हारे पास तो ख़ुद अल्लाह तआ़ला की किताब मौजूद है जो ज़माने के ए'तिबार से भी तुमसे सबसे ज़्यादा क़रीब है, तुम उसे पढ़ते रहो, वो ख़ालिस़ है उसमें कोई मिलावट नहीं। (राजेअ़ : 2885)

٧٥٢٢- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا حَاتِمُ بْنُ وَرْدَانَ، حَدَّثَنَا أَيُّوبُ، عَنْ عِكْرِمَةَ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: كَيْفَ تَسْأَلُونَ أَهْلَ الْكِتَابِ عَنْ كُتُبِهِمْ وَعِنْدَكُمْ كِتَابُ اللهِ أَقْرَبُ الْكُتُبِ عَهْدًا بِاللهِ تَقْرَؤُونَهُ مَحْضًا لَمْ يُشَبْ.

[راجع: ٢٨٨٥]

7523. हमसे अबुल यमान ने बयान किया, कहा हमको शुऐब ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुह्री ने, उन्हें उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह ने ख़बर दी और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि ऐ मुसलमानों! तुम अहले किताब से किसी मसले मे क्यूँ पूछते हो। तुम्हारी किताब जो अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारे नबी (ﷺ) पर नाज़िल की है वो अल्लाह के यहाँ से बिलकुल ताज़ा आई है, ख़ालिस़ है, उसमें कोई मिलावट नहीं हुई और अल्लाह तआ़ला ने ख़ुद तुम्हें बता दिया है कि अहले किताब ने अल्लाह की किताबों को बदल डाला। वो हाथ से एक किताब लिखते और दा'वा करते कि ये अल्लाह की तरफ़ से है ताकि उसके ज़रिये से थोड़ी पूँजी हासिल करें, तुमको जो अल्लाह ने क़ुर्आन व हदीष का इल्म दिया है क्या वो तुमको इससे मना नहीं करता कि तुम दीन की बातें अहले किताब से पूछो। अल्लाह की क़सम! हम तो उनके किसी आदमी को नहीं देखते कि जो कुछ तुम्हारे ऊपर नाज़िल हुआ है उसके बारे में वो तुमसे पूछते हैं। (राजेअ़ : 2685)

٧٥٢٣- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ، أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ أَخْبَرَنِي عُبَيْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ اللهِ أَنَّ عَبْدَ اللهِ بْنَ عَبَّاسٍ قَالَ: يَا مَعْشَرَ الْمُسْلِمِينَ كَيْفَ تَسْأَلُونَ أَهْلَ الْكِتَابِ عَنْ شَيْءٍ وَكِتَابُكُمُ الَّذِي أَنْزَلَ اللهُ عَلَى نَبِيِّكُمْ ﷺ أَحْدَثُ الأَخْبَارِ بِاللهِ مَحْضًا لَمْ يُشَبْ؟ وَقَدْ حَدَّثَكُمُ اللهُ أَنَّ أَهْلَ الْكِتَابِ قَدْ بَدَّلُوا مِنْ كُتُبِ اللهِ وَغَيَّرُوا، فَكَتَبُوا بِأَيْدِيهِمْ قَالُوا: هُوَ مِنْ عِنْدِ اللهِ لِيَشْتَرُوا بِذَلِكَ ثَمَنًا قَلِيلاً أَوَلاَ يَنْهَاكُمْ مَا جَاءَكُمْ مِنَ الْعِلْمِ، عَنْ مَسْأَلَتِهِمْ فَلاَ وَاللهِ مَا رَأَيْنَا رَجُلاً مِنْهُمْ يَسْأَلُكُمْ عَنِ الَّذِي أُنْزِلَ عَلَيْكُمْ.

[راجع: ٢٦٨٥]

तश्रीह : अहले किताब की किताबें पुरानी और मख़्लूत हो चुकी हैं फिर तुमको ख़ब्त हो गया है कि तुम उनसे पूछते हो हालाँकि अगर वो तुमसे पूछते तो एक बात थी क्योंकि तुम्हारी किताब बिलकुल महफ़ूज़ और नई नाज़िल हुई है।

बाब 43 : सूरह क़यामह मे अल्लाह तआला का इर्शाद, क़ुर्आन नाज़िल होते वक़्त

उसके साथ अपनी ज़ुबान को हरकत न दिया करो, आप उस आयत के उतरने से पहले वह्य उतरते वक़्त ऐसा करते थे।

अबू हुरैरह (रज़ि.) ने नबी करीम (ﷺ) से ये नक़ल किया कि अल्लाह तआला फ़र्माता है कि, मैं अपने बन्दे के साथ हूँ। उस वक़्त तक जब भी वो मुझे याद करता है और मेरी याद म अपने होंठ हिलाता है।

٤٣- باب قَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿لاَ تُحَرِّكْ بِهِ لِسَانَكَ﴾ وَفِعْلِ النَّبِيِّ ﷺ حَيْثُ يُنْزَلُ عَلَيْهِ الْوَحْيُ وَقَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ اللهُ تَعَالَى: ((أَنَا مَعَ عَبْدِي حَيْثُ مَا ذَكَرَنِي وَتَحَرَّكَتْ بِي شَفَتَاهُ)).

तश्रीह : इस हदीष़ से ये षाबित हुआ कि ज़िक्र वही मुअतबर है जो ज़ुबान से किया जाए और जब तक ज़ुबान से न हो दिल से याद करना ए'तिबार के लायक़ नहीं। ज़ुबान और दिल दोनों से ज़िक्र होना लाज़िम व मल्ज़ूम है।

7524. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे अबू अवाना ने बयान किया, उनसे मूसा इब्ने अबी आइशा ने, उनसे सईद बिन जुबैर ने और उनसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने। सूरह क़यामह में अल्लाह तआला का इर्शाद ला तुहर्रिक बिही लिसानक के बारे में वह्य नाज़िल होती तो आँहज़रत (ﷺ) पर उसका बहुत बार पड़ता और आप अपने होंठ हिलाते। मुझसे इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा कि मैं तुम्हें हिला के दिखाता हूँ जिस तरह आँहज़रत (ﷺ) हिलाते थे। सईद ने कहा कि जिस तरह इब्ने अब्बास (रज़ि.) होंठ हिलाकर दिखाते थे, मैं तुम्हारे सामने इसी तरह हिलाता हूँ। चुनाँचे उन्होंने अपने होंठ हिलाए (इब्ने अब्बास रज़ि. ने बयान किया कि) इस पर अल्लाह तआला ने ये आयत नाज़िल की कि, ला तुहर्रिक बिही लिसानक लितअजला बिही इन्ना अलैना जम्अहू व क़ुर्आनहू या'नी तुम्हारे सीने में क़ुर्आन का जमा देना और उसको पढ़ा देना हमारा काम है जब हम (जिब्राईल अ. की ज़ुबान पर) उसको पढ़ चुकें उस वक़्त तुम उसके पढ़ने की पैरवी करो। मतलब ये है कि जिब्राईल (अ.) के पढ़ते वक़्त कान लगाकर सुनते रहो और ख़ामोश रहो, ये हमारा ज़िम्मा है हम तुमसे वैसा ही पढ़वा देंगे। इब्ने अब्बास (रज़ि.) ने कहा कि इस आयत के उतरने के बाद जब हज़रत जिब्राईल (अ.) आते (क़ुर्आन सुनाते) तो आप कान लगाकर सुनते। जब जिब्राईल (अ.)

٧٥٢٤- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا أَبُو عَوَانَةَ، عَنْ مُوسَى بْنِ أَبِي عَائِشَةَ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ فِي قَوْلِهِ تَعَالَى: ﴿لاَ تُحَرِّكْ بِهِ لِسَانَكَ﴾ قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يُعَالِجُ مِنَ التَّنْزِيلِ شِدَّةً، وَكَانَ يُحَرِّكُ شَفَتَيْهِ فَقَالَ لِي ابْنُ عَبَّاسٍ: أُحَرِّكُهُمَا لَكَ كَمَا كَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ يُحَرِّكُهُمَا فَقَالَ سَعِيدٌ: أَنَا أُحَرِّكُهُمَا كَمَا ابْنُ عَبَّاسٍ يُحَرِّكُهُمَا، فَحَرَّكَ شَفَتَيْهِ فَأَنْزَلَ اللهُ تَعَالَى عَزَّوَجَلَّ ﴿لاَ تُحَرِّكْ بِهِ لِسَانَكَ لِتَعْجَلَ بِهِ إِنَّ عَلَيْنَا جَمْعَهُ وَقُرْآنَهُ﴾ قَالَ: جَمْعَهُ فِي صَدْرِكَ ثُمَّ تَقْرَؤُهُ ﴿فَإِذَا قَرَأْنَاهُ فَاتَّبِعْ قُرْآنَهُ﴾ قَالَ: فَاسْتَمِعْ لَهُ وَأَنْصِتْ ﴿ثُمَّ إِنَّ عَلَيْنَا﴾ أَنْ تَقْرَأَهُ قَالَ: فَكَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ، إِذَا أَتَاهُ جِبْرِيلُ عَلَيْهِ السَّلاَمُ اسْتَمَعَ فَإِذَا انْطَلَقَ جِبْرِيلُ قَرَأَهُ

النَّبِيُّ ﷺ كَمَا أَقْرَأَهُ. [راجع: ٥]

चले जाते तो आप लोगो को इसी तरह पढ़कर सुना देते जैसे जिब्रईल (अ.) ने आपको पढ़कर सुनाया था। (राजेअ : 5)

तशरीह : हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) का मक़्सद ये है कि हमारे अल्फ़ाज़ क़ुर्आन जो मुँह से निकलते हैं ये हमारा फ़ेल है जो मख़्लूक़ है और क़ुर्आन अल्लाह का कलाम है जो ग़ैर मख़्लूक़ है। हज़रत सईद बिन जुबैर मशहूर ताबेई असदी कूफ़ी हैं । हज्जाज बिन यूसुफ़ (अ.) ने उनको शाबान सन 99 हिजरी में बउम्र 50 साल शहीद किया। हज़रत सईद बिन जुबैर (रह.) की बद्दुआ से हज्जाज बिन यूसुफ़ पन्द्रह दिन बाद मर गया। यूँ कहता हुआ कि मैं जब सोने का इरादा करता हूँ तो सईद बिन जुबैर मेरा पैर पकड़ लेता है। हज़रत सईद बिन जुबैर मज़ाफ़ाते इराक़ में दफ़न किये गये, **रहिमहुल्लाह रहमतुंव्वासिआ।**

٤٤- باب قَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿وَأَسِرُّوا قَوْلَكُمْ أَوِ اجْهَرُوا بِهِ إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ الاَ يَعْلَمُ مَنْ خَلَقَ وَهُوَ اللَّطِيفُ الْخَبِيرُ﴾ يَتَخَافَتُونَ: يَتَسَارُّونَ.

बाब 44 : सूरह मुल्क में अल्लाह तआला का फ़र्मान, अपनी बात आहिस्ता से कहो

या ज़ोर से अल्लाह तआला दिल की बातों को जानने वाला है। क्या वो उसे नहीं जानेगा जो उसने पैदा किया और वो बहुत बारीक देखने वाला और ख़बरदार है। यतख़ाफ़तून के मा'नी यतसार्रूना या'नी जो चुपके बात करते हैं।

बाब का मतलब ये है कि तुम्हारी ज़ुबान से जो अल्फ़ाज़ निकलते हैं वो उसी के पैदा किये हुए हैं इसीलिये वो उनको बख़ूबी जानता है।

٧٥٢٥- حَدَّثَنِي عَمْرُو بْنُ زُرَارَةَ، عَنْ هُشَيْمٍ، أَخْبَرَنَا أَبُو بِشْرٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا فِي قَوْلِهِ تَعَالَى: ﴿وَلاَ تَجْهَرْ بِصَلاَتِكَ وَلاَ تُخَافِتْ بِهَا﴾ قَالَ نَزَلَتْ وَرَسُولُ اللهِ ﷺ مُخْتَفٍ بِمَكَّةَ فَكَانَ إِذَا صَلَّى بِأَصْحَابِهِ رَفَعَ صَوْتَهُ بِالْقُرْآنِ، فَإِذَا سَمِعَهُ الْمُشْرِكُونَ سَبُّوا الْقُرْآنَ وَمَنْ أَنْزَلَهُ وَمَنْ جَاءَ بِهِ، فَقَالَ اللهُ لِنَبِيِّهِ ﷺ: ﴿وَلاَ تَجْهَرْ بِصَلاَتِكَ﴾ أَيْ بِقِرَاءَتِكَ، فَيَسْمَعَ الْمُشْرِكُونَ فَيَسُبُّوا الْقُرْآنَ ﴿وَلاَ تُخَافِتْ بِهَا﴾ عَنْ أَصْحَابِكَ فَلاَ تُسْمِعُهُمْ ﴿وَابْتَغِ بَيْنَ ذَلِكَ سَبِيلاً﴾ [راجع: ٤٧٢٢]

7535. मुझसे अम्र बिन ज़ुरारह ने बयान किया, उनसे हुशैम ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको अबू बिश्र ने ख़बर दी, उन्हें सईद बिन जुबैर ने और उन्हें हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने। अल्लाह तआला के इर्शाद, वला तज्हरु बिसलातिक वला तुख़ाफ़ित बिहा के बारे में कि ये आयत जब नाज़िल हुई तो रसूले करीम (ﷺ) मक्का में छुपकर (आमाले इस्लाम अदा करते थे) लेकिन जब अपने सहाबा को नमाज़ पढ़ाते तो क़ुर्आन मजीद बुलंद आवाज़ से पढ़ते, जब मुश्रिकीन सुनते तो क़ुर्आन मजीद को, उसके उतारने वाले को और उसे लेकर आने वाले को गाली देते। चुनाँचे अल्लाह तआला ने अपने नबी से कहा कि अपनी क़िरात में आवाज़ बुलंद न करें कि मुश्रिकीन सुनें और फिर क़ुर्आन को गाली दें और न इतना आहिस्ता ही न पढ़ें कि आपके सहाबा भी न सुन सकें बल्कि इन दोनों के दरम्यान का रास्ता इख़्तियार करें। (राजेअ : 4722)

तशरीह : कुफ़्फ़ारे मक्का का यही हाल था जो यहाँ बयान हुआ है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) का इल्म व फ़ज़्ल के लिये ख़ुद रसूले करीम (ﷺ) ने दुआ की थी उनको इस उम्मत का रुहबान कहा गया है बउम्र 71 साल सन 68 हिजरी में फ़ौत हुए ताइफ़ में दफ़न हुए। **रज़ियल्लाहु अन्हु व अर्ज़ाहु।**

7526. हमसे उबैद बिन इस्माईल ने बयान किया, कहा हमसे अबू उसामा ने बयान किया, उनसे हिशाम ने, उनसे उनके वालिद ने और उनसे आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि आयत वला तज्हर बिस़लातिक वला तुख़ाफ़ित बिहा दुआ के बारे में नाज़िल हुई। या'नी दुआ न बहुत चिल्लाकर मांग न आहिस्ता बल्कि दरम्याना रास्ता इख़्तियार कर। (राजेअ : 4723)

٧٥٢٦- حَدَّثَنَا عُبَيْدُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا أَبُو أُسَامَةَ، عَنْ هِشَامٍ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ: نَزَلَتْ هَذِهِ الآيَةُ: ﴿وَلاَ تَجْهَرْ بِصَلاَتِكَ وَلاَ تُخَافِتْ بِهَا﴾ فِي الدُّعَاءِ. [راجع: ٤٧٢٣]

7527. हमसे इस्हाक़ बिन मंसूर ने बयान किया, कहा हमसे अबू आसिम ने, कहा हमको इब्ने जुरैज ने ख़बर दी, कहा हमको इब्ने शिहाब ने ख़ बर दी, उन्हें अबू सलमा ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया जो ख़ुशआवाज़ी से क़ुर्आन नहीं पढ़ता वो हम मुसलमानों के त़रीक़ पर नहीं है और अबू हुरैरह (रज़ि.) के सिवा दूसरे लोगों ने इस ह़दीष़ में इतना ज़्यादा किया है या'नी इसको पुकार कर न पढ़ो।

٧٥٢٧- حَدَّثَنَا إِسْحَاقُ، حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ، أَخْبَرَنَا ابْنُ جُرَيْجٍ، أَخْبَرَنَا ابْنُ شِهَابٍ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((لَيْسَ مِنَّا مَنْ لَمْ يَتَغَنَّ بِالْقُرْآنِ - وَزَادَ غَيْرُهُ - يَجْهَرُ بِهِ)).

तश्रीह़ : अगली ह़दीष़ और इस ह़दीष़ से इमाम बुख़ारी (रह़.) ने ये निकाला कि हमारे मुँह से जो क़ुर्आन के अल्फ़ाज़ निकलते हैं वो अल्फ़ाज़े क़ुर्आन ग़ैर मख़्लूक़ हैं मगर हमारा फ़ेल मख़्लूक़ है। इमाम बुख़ारी (रह़.) ने फ़र्माया कि जो मुझसे यूँ नक़ल करता है कि लफ़्ज़ी बिलक़ुर्आन मख़्लूक़ वो झूठा है मैंने ये नहीं कहा बल्कि सिर्फ़ ये कहा था कि हमारे अफ़्आल मख़्लूक़ हैं और बस। क़ुर्आन मजीद उसका कलाम ग़ैर मख़्लूक़ है यही सलफ़ स़ालिह़ीन अहले ह़दीष़ का अक़ीदा है और यही इमाम बुख़ारी (रह़.) का।

बाब 45 : नबी करीम (ﷺ) का इर्शाद

٤٥- بَابُ قَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ:

कि, एक शख़्स जिसे अल्लाह ने क़ुर्आन का इल्म दिया और रात और दिन उसमें मशग़ूल रहता है। और एक शख़्स है जो कहता है कि काश! मुझे भी उसी जैसा क़ुर्आन का इल्म होता तो मैं भी ऐसा ही करता जैसा कि ये करता है तो अल्लाह तआ़ला ने वाज़ेह कर दिया कि इस क़ुर्आन के साथ क़याम इसका फ़ेअल है। और फ़र्माया कि, उसकी निशानियों में से आसमान व ज़मीन का पैदा करना है और तुम्हारी ज़ुबानों और रंगों का मुख़्तलिफ़ होना है। और अल्लाह जल्ला ज़िक्रुहू, ने सूरह ह़ज्ज में फ़र्माया और नेकी करते रहो ताकि तुम मुराद को पहुँचो।

((رَجُلٌ آتَاهُ اللهُ الْقُرْآنَ فَهُوَ يَقُومُ بِهِ آنَاءَ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ، وَرَجُلٌ يَقُولُ: لَوْ أُوتِيتُ مِثْلَ مَا أُوتِيَ هَذَا فَعَلْتُ كَمَا يَفْعَلُ فَبَيَّنَ اللهُ أَنَّ قِيَامَهُ بِالْكِتَابِ هُوَ فِعْلُهُ)) وَقَالَ: ﴿وَمِنْ آيَاتِهِ خَلْقُ السَّمَاوَاتِ وَالأَرْضِ وَاخْتِلاَفُ أَلْسِنَتِكُمْ وَأَلْوَانِكُمْ﴾ وَقَالَ جَلَّ ذِكْرُهُ: ﴿وَافْعَلُوا الْخَيْرَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ﴾)).

7528. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे जरीर ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे अबू स़ालेह़ ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया रश्क सिर्फ़ दो आदमियों पर किया जा सकता

٧٥٢٨- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي صَالِحٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((لاَ تَحَاسُدَ إِلاَّ فِي اثْنَتَيْنِ رَجُلٌ آتَاهُ اللهُ الْقُرْآنَ فَهُوَ

है। एक उस पर जिसे अल्लाह ने क़ुर्आन का इल्म दिया और वो उसकी तिलावत रात दिन करता रहता है तो एक देखने वाला कहता है कि काश! मुझे भी उसी जैसा क़ुर्आन का इल्म होता तो मैं भी उसकी तरह तिलावत करता रहता और दूसरा वो शख़्स है जिसे अल्लाह ने माल दिया और वो उसे उसके हक़ में ख़र्च करता है जिसे देखने वाला कहता है कि काश! मुझे भी अल्लाह इतना माल देता तो मैं भी उसी तरह ख़र्च करता जैसे ये करता है। (राजेअ : 5026)

يَتْلُوهُ آنَاءَ اللَّيْلِ وَآنَاءَ النَّهَارِ، فَهُوَ يَقُولُ لَوْ أُوتِيتُ مِثْلَ مَا أُوتِيَ هَذَا لَفَعَلْتُ كَمَا يَفْعَلُ، وَرَجُلٌ آتَاهُ اللهُ مَالاً فَهُوَ يُنْفِقُهُ فِي حَقِّهِ فَيَقُولُ لَوْ أُوتِيتُ مِثْلَ مَا أُوتِيَ عَمِلْتُ فِيهِ مِثْلَ مَا يَعْمَلُ)).

[راجع: ٥٠٢٦]

7529. हमसे अली बिन अब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान बिन उयय्ना ने बयान किया, उनसे ज़ुह्री ने बयान किया, उनसे सालिम ने और उनसे उनके वालिद (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, रश्क के क़ाबिल तो दो ही आदमी हैं। एक वो जिसे अल्लाह ने क़ुर्आन दिया और वो उसकी तिलावत रात व दिन करता रहता है और दूसरा वो जिसे अल्लाह ने माल दिया हो और वो उसे रात और दिन ख़र्च करता रहा। अली बिन अब्दुल्लाह ने कहा कि मैंने ये हदीष़ सुफ़यान बिन उयय्ना से कई बार सुनी। लेकिन अख़बरना के लफ़्ज़ों के साथ उन्हें कहता सुना बावजूद उसके उनकी ये हदीष़ सहीह और मुत्तसिल है। (राजेअ : 5025)

٧٥٢٩- حَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ عَبْدِ اللهِ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، قَالَ الزُّهْرِيُّ: عَنْ سَالِمٍ عَنْ أَبِيهِ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((لاَ حَسَدَ إِلاَّ فِي اثْنَتَيْنِ: رَجُلٌ آتَاهُ اللهُ الْقُرْآنَ فَهُوَ يَتْلُوهُ آنَاءَ اللَّيْلِ وَآنَاءَ النَّهَارِ، وَرَجُلٌ آتَاهُ اللهُ مَالاً فَهُوَ يُنْفِقُهُ آنَاءَ اللَّيْلِ وَآنَاءَ النَّهَارِ)). سَمِعْتُ سُفْيَانَ مِرَارًا لَمْ أَسْمَعْهُ يَذْكُرُ الْخَبَرَ وَهُوَ مِنْ صَحِيحِ حَدِيثِهِ.

[راجع: ٥٠٢٥]

तश्रीह : बाब और अहादीषे ज़ैल (नीचे की हदीषों) से इमाम बुख़ारी (रह.) ने ये षाबित किया है कि क़ुर्आन मजीद ग़ैर मख़्लूक़ है और हम जो तिलावत करते हैं ये हमारा फ़ेअ़ल है जो फ़ेअ़ल होने की हैषियत से मख़्लूक़ है। कलामे इलाही हर वक़्त और हर हालत में कलामे इलाही है जो ग़ैर मख़्लूक़ है।

बाब 46 : अल्लाह तआला का सूरह माइदह में फ़र्माना

٤٦- باب قَوْلِ اللهِ تَعَالَى:

ऐ रसूल! आपके परवरदिगार की तरफ़ से जो आप पर उतरा उसको बे खटके) लोगों को पहुँचा दो। अगर तू ऐसा न करो तो आपने (जैसे) अल्लाह का पैग़ाम नहीं पहुँचाया। और ज़ुह्री ने कहा अल्लाह की तरफ़ से पैग़ाम भेजना और उसके रसूल पर अल्लाह का पैग़ाम पहुँचाना और हमारे ऊपर उसका तस्लीम करना है और सूरह जिन्न में फ़र्माया, इसलिये कि वो पैग़म्बर जान ले कि फ़रिश्तों ने अपने मालिक का पैग़ाम पहुँचा दिया, और सूरह अअराफ़ में (नूह और हूद की ज़ुबानों से) फ़र्माया, मैं तुमको अपने मालिक के पैग़ामात पहुँचाता हूँ और कअब बिन मालिक जब आँहज़रत (ﷺ) को छोड़कर ग़ज़्व-ए-तबूक मे पीछे रह गये थे उन्होंने कहा अन्क़रीब अल्लाह और उसका

﴿يَا أَيُّهَا الرَّسُولُ بَلِّغْ مَا أُنْزِلَ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ وَإِنْ لَمْ تَفْعَلْ فَمَا بَلَّغْتَ رِسَالَتَهُ﴾ وَقَالَ الزُّهْرِيُّ: مِنَ اللهِ عَزَّ وَجَلَّ الرِّسَالَةُ وَعَلَى رَسُولِ اللهِ ﷺ الْبَلاَغُ وَعَلَيْنَا التَّسْلِيمُ، وَقَالَ: ﴿لِيَعْلَمَ أَنْ قَدْ أَبْلَغُوا رِسَالاَتِ رَبِّهِمْ﴾ وَقَالَ تَعَالَى: ﴿أُبَلِّغُكُمْ رِسَالاَتِ رَبِّي﴾، وَقَالَ كَعْبُ بْنُ مَالِكٍ حِينَ تَخَلَّفَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ ﴿وَسَيَرَى اللهُ عَمَلَكُمْ وَرَسُولُهُ﴾ وَقَالَتْ عَائِشَةُ: إِذَا

रसूल तुम्हारे काम देख लेगा और ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने कहा जब तुझको किसी का काम अच्छा लगे तो यूँ कहकर अ़मल किये जाओ अल्लाह और उसका रसूल और मुसलमान तुम्हारा काम देख लेंगे, किसी का नेक अ़मल तुझको धोखा में न डाले और मअ़मर ने कहा सूरह बक़र: में ये जो फ़र्माया ज़ालिकल किताबु ला रैब फ़ीही तो किताब से मुराद क़ुर्आन है वो हिदायत करने वाला है या'नी सच्चा रास्ता बताने वाला है परहेज़गारों को। जैसे सूरह मुम्तहिना मे फ़र्माया, ये अल्लाह का हुक्म है इसमें कोई शक नहीं, या'नी बिलाशक ये अल्लाह की उतारी हुई आयात हैं या'नी क़ुर्आन की निशानियाँ (मतलब ये है कि दोनों आयात में ज़ालिक से हाज़ा मुराद है) इसकी मिषाल ये है जैसे सूरह यूनुस में व जरैना बिहिम से वजरैना बिकुम मुराद है और अनस ने कहा आँह़ज़रत (ﷺ) ने उनके मामूँ ह़राम बिन मिल्हान को उनकी क़ौम बनी आ़मिर की त़रफ़ भेजा। ह़राम ने उनसे कहा क्या तुम मुझको अमान दोगे कि मैं आँह़ज़रत (ﷺ) का पैग़ाम तुमको पहुँचा दूँ और उनसे बातें करने लगे।

أَعْجَبَكَ حُسْنُ عَمَلِ امْرِىءٍ فَقُلْ: ((اعْمَلُوا فَسَيَرَى اللهُ عَمَلَكُمْ وَرَسُولُهُ وَالْمُؤْمِنُونَ))، وَلاَ يَسْتَخِفَّنَّكَ أَحَدٌ وَقَالَ مَعْمَرٌ : ﴿ذَلِكَ الْكِتَابُ﴾ هَذَا الْقُرْآنُ ﴿هُدًى لِلْمُتَّقِينَ﴾ بَيَانٌ وَدَلاَلَةٌ كَقَوْلِهِ تَعَالَى : ﴿ذَلِكُمْ حُكْمُ اللهِ﴾ هَذَا حُكْمُ اللهِ لاَ رَيْبَ فِيهِ لاَ شَكَّ تِلْكَ آيَاتُ اللهِ يَعْنِي هَذِهِ أَعْلاَمُ الْقُرْآنِ وَمِثْلُهُ ﴿حَتَّى إِذَا كُنْتُمْ فِي الْفُلْكِ وَجَرَيْنَ بِهِمْ﴾ يَعْنِي بِكُمْ، وَقَالَ أَنَسٌ: بَعَثَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خَالَهُ حَرَامًا إِلَى قَوْمِهِ وَقَالَ: أَتُؤْمِنُونِي أُبَلِّغْ رِسَالَةَ رَسُولِ اللهِ ﷺ فَجَعَلَ يُحَدِّثُهُمْ.

तश्रीह : इस बाब से ग़र्ज़ इमाम बुख़ारी (रह.) की ये है कि अल्लाह का पैग़ाम या'नी क़ुर्आन ग़ैर मख़्लूक़ है लेकिन उसका पहुँचाना उसका सुनाना ये रसूले करीम (ﷺ) का फ़ेअल है। इसीलिये अल्लाह ने उसी के ख़िलाफ़ के लिये फ़इल्लम तफ़अलु में फ़ेल का सैग़ा इस्ते'माल फ़र्माया। क़ुर्आन मजीद का ग़ैर मख़्लूक़ होना उम्मत का मुत्तफ़क़ा अ़क़ीदा है। आ़इशा (रज़ि.) का क़ौल उन लोगों के बारे में है जो बज़ाहिर क़ुर्आन के बड़े क़ारी और नमाज़ी थे मगर उ़ष्मान (रज़ि.) के बाग़ी होकर उनके क़त्ल पर मुस्तैद हुए। आइशा (रज़ि.) के कलाम का मतलब यही है कि किसी की एक आध अच्छी बात देखकर ये ए'तिक़ाद न कर लेना चाहिये कि वो अच्छा आदमी है बल्कि अख़्लाक़ और अ़मल के लिहाज़ से उसकी अच्छी तरह से जाँच कर लेनी चाहिये।

7530. हमसे फ़ज़ल बिन यअ़क़ूब ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन जा'फ़र अर्रक़ी ने बयान किया, उनसे मुअ़तमिर बिन सुलैमान ने बयान किया, उनसे सईद बिन उ़बैदुल्लाह ष़क़फ़ी ने बयान किया, उनसे बक्र बिन अ़ब्दुल्लाह मुज़नी और ज़ियाद बिन जुबैर बिन ह़य्या ने बयान किया, उनसे जुबैर बिन ह़य्या ने बयान किया, उनसे मुग़ीरह बिन शुअ़बा (रज़ि.) ने (ईरान की फ़ौज के सामने) कहा कि हमारे नबी (ﷺ) ने हमें अपने रब के पैग़ामात में से ये पैग़ाम पहुँचाया कि हममे से जो (फ़ी सबीलिल्लाह) क़त्ल किया जाएगा वो जन्नत में जाएगा। (राजेअ़ : 3159)

٧٥٣٠- حَدَّثَنَا الْفَضْلُ بْنُ يَعْقُوبَ، حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ جَعْفَرٍ الرَّقِّيُّ، حَدَّثَنَا الْمُعْتَمِرُ بْنُ سُلَيْمَانَ، حَدَّثَنَا سَعِيدُ بْنُ عُبَيْدِ اللهِ الثَّقَفِيُّ، حَدَّثَنَا بَكْرُ بْنُ عَبْدِ اللهِ الْمُزَنِيُّ وَزِيَادُ بْنُ جُبَيْرِ بْنِ حَيَّةَ، عَنْ جُبَيْرِ بْنِ حَيَّةَ قَالَ الْمُغِيرَةُ : أَخْبَرَنَا نَبِيُّنَا ﷺ، عَنْ رِسَالَةِ رَبِّنَا، أَنَّهُ مَنْ قُتِلَ مِنَّا صَارَ إِلَى الْجَنَّةِ. [راجع: ٣١٥٩]

7531. हमसे मुह़म्मद बिन यूसुफ़ फ़रयाबी ने बयान किया,

٧٥٣١- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ يُوسُفَ،

कहा हमसे सुफ़यान ष़ौरी ने बयान किया, कहा हमसे इस्माईल ने, उनसे शअ़बी ने, उनसे मसरूक़ ने और उनसे आ़इशा (रज़ि.)ने बयान किया कि अगर कोई तुमसे ये बयान करता है कि मुहम्मद (ﷺ) ने कोई चीज़ छुपाई (दूसरी सनद) और मुहम्मद बिन यूसुफ़ फ़रयाबी ने बयान किया, कहा हमसे अबू आ़मिर अ़क़्दी ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा बिन ह़ज्जाज ने, उनसे इस्माईल बिन अबी ख़ालिद ने, उनसे शअ़बी ने, उनसे मसरूक़ ने और उनसे आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि अगर तुमसे कोई ये बयान करता है कि नबी करीम (ﷺ) ने वह्य में से कुछ छुपा लिया तो उसकी तस्दीक़ न करना (वो झूठा है) क्योंकि अल्लाह तआ़ला ख़ुद फ़र्माता है कि, ऐ रसूल! पहुँचा दीजिए वो पैग़ाम जो आपके पास आपके रब की त़रफ़ से नाज़िल हुआ है और अगर आपने ये नहीं किया तो आपने अपने रब का पैग़ाम नहीं पहुँचाया। (राजेअ़ : 3234)

حَدَّثَنَا سُفْيَانُ عَنْ إِسماعيل، عَنْ الشَّعْبِيِّ عَنْ مَسْرُوقٍ، عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا قَالَتْ : مَنْ حَدَّثَكَ أَنَّ مُحَمَّدًا ﷺ كَتَمَ شَيْئًا؟ وَقَالَ مُحَمَّدٌ: حَدَّثَنَا أَبُو عَامِرٍ الْعَقَدِيُّ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ إِسْمَاعِيلَ بْنِ أَبِي خَالِدٍ، عَنِ الشَّعْبِيِّ عَنْ مَسْرُوقٍ، عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: مَنْ حَدَّثَكَ أَنَّ النَّبِيَّ ﷺ كَتَمَ شَيْئًا مِنَ الْوَحْيِ فَلاَ تُصَدِّقْهُ إِنَّ اللهَ تَعَالَى يَقُولُ: ﴿يَا أَيُّهَا الرَّسُولُ بَلِّغْ مَا أُنْزِلَ إِلَيْكَ مِنْ رَبِّكَ وَإِنْ لَمْ تَفْعَلْ فَمَا بَلَّغْتَ رِسَالَتَهُ﴾. [راجع: ٣٢٣٤]

7532. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, कहा हमसे जरीर ने बयान किया, उनसे आ'मश ने, उनसे अबू वाइल ने, उनसे अ़म्र बिन शुरह़बील ने बयान किया और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने बयान किया कि एक स़ाह़ब ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह! कौनसा गुनाह अल्लाह के नज़दीक सबसे बड़ा है? फ़र्माया कि तुम अल्लाह की इबादत में किसी को साझी बनाओ ह़ालाँकि तुम्हें अल्लाह ने पैदा किया है। पूछा फिर कौनसा? फ़र्माया ये कि तुम अपने बच्चे को इस डर से मार डालो कि वो तुम्हारे साथ खाएगा। पूछा फिर कौनसा? फ़र्माया ये कि तुम अपने पड़ौसी की बीवी के साथ ज़िना करो। चुनाँचे अल्लाह तआ़ला ने सूरह फ़ुरक़ान में इसकी तस्दीक़ में. क़ुर्आन नाज़िल फ़र्माया, और वो लोग जो अल्लाह के साथ किसी दूसरे मा'बूदे बात़िल को नहीं पुकारते और जो किसी ऐसे की जान नहीं लेते जिसे अल्लाह ने ह़राम किया है सिवा ह़क़ के और जो ज़िना नहीं करते और जो कोई ऐसा करेगा वो गुनाह से भिड़ जाएगा। (राजेअ़ : 4477)

٧٥٣٢- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا جَرِيرٌ، عَنِ الأَعْمَشِ، عَنْ أَبِي وَائِلٍ، عَنْ عَمْرِو بْنِ شُرَحْبِيلٍ قَالَ: قَالَ عَبْدُ اللهِ قَالَ رَجُلٌ: يَا رَسُولَ اللهِ أَيُّ الذَّنْبِ أَكْبَرُ عِنْدَ اللهِ تَعَالَى؟ قَالَ: ((أَنْ تَدْعُوَ للهِ نِدًّا وَهُوَ خَلَقَكَ)) قَالَ: ثُمَّ أَيٌّ؟ قَالَ: ((ثُمَّ أَنْ تَقْتُلَ وَلَدَكَ فخافتا أَنْ يَطْعَمَ مَعَكَ)) قَالَ: ثُمَّ أَيٌّ؟ قَالَ: ((أَنْ تُزَانِيَ حَلِيلَةَ جَارِكَ)) فَأَنْزَلَ اللهُ تَصْدِيقَهَا ﴿وَالَّذِينَ لاَ يَدْعُونَ مَعَ اللهِ إِلَهًا آخَرَ وَلاَ يَقْتُلُونَ النَّفْسَ الَّتِي حَرَّمَ اللهُ إِلاَّ بِالْحَقِّ وَلاَ يَزْنُونَ وَمَنْ يَفْعَلْ ذَلِكَ﴾ الآيَةَ.

[راجع: ٤٤٧٧]

तश्रीह : अष़ामा एक दोज़ख़ का नाला है वो उसमें डाला जाएगा। इस ह़दीष़ की मुनासबत बाब का तर्जुमा से इस त़रह़ है कि आँह़ज़रत (ﷺ) की तब्लीग़ दो क़िस्म की थी। एक तो ये कि ख़ास़ क़ुर्आन की जो आयतें उतरतीं वो आप लोगों को सुनाते दूसरे क़ुर्आन से जो बातें निकालकर आप बयान करते फिर आपके इस्तिम्बात़ इर्शाद के मुत़ाबिक़ क़ुर्आन में स़ाफ़ स़ाफ़ वही अल्लाह की त़रफ़ से उतारा जाता।

बाब 47 : अल्लाह तआला का सूरह आले इमरान में

٤٧- باب قَوْلِ اللهِ تَعَالَى:

यूँ फ़र्माना ऐ रसूल! कह दो, अच्छा तौरात लाओ उसे पढ़कर सुनाओ अगर तुम सच्चे हो और आँहज़रत (ﷺ) का यूँ फ़र्माना कि तौरात वाले तौरात दिये गये उन्होंने उस पर अमल किया। इंजील वाले इंजील दिये गये और उन्होंने उस पर अमल किया। तुम क़ुर्आन दिये गये तुमने इस पर अमल किया और अबू रज़ीन ने कहा यत्लूनहू हक़्क़ तिलावति का मतलब ये है कि इसकी पैरवी करते हैं उस पर जैसा अमल करना चाहिये वैसा अमल करते हैं तो तिलावत करना एक अमल ठहरा। अरब कहते हैं युत्ला या'नी पढ़ा जाता है और कहते हैं फ़लाँ शख़्स की तिलावत या क़िरात अच्छी है और क़ुर्आन में सूरह वाक़िआ में है

﴿قُلْ فَأْتُوا بِالتَّوْرَاةِ فَاتْلُوهَا﴾ وَقَوْلِ النَّبِيِّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((أُعْطِيَ أَهْلُ التَّوْرَاةِ التَّوْرَاةَ، فَعَمِلُوا بِهَا وَأُعْطِيَ أَهْلُ الإِنْجِيلِ الإِنْجِيلَ فَعَمِلُوا بِهِ، وَأُعْطِيتُمُ الْقُرْآنَ فَعَمِلْتُمْ بِهِ)) وَقَالَ أَبُو رَزِينٍ يَتْلُونَهُ حَقَّ تِلاَوَتِهِ يَتَّبِعُونَهُ وَ يَعْمَلُونَ بِهِ حَقَّ عَمَلِهِ، يُقَالُ يُتْلَى: يُقْرَأُ حَسَنُ التِّلاَوَةِ حَسَنُ الْقِرَاءَةِ لِلْقُرْآنِ.

ला यमस्सुहू इल्लल मुतह्हिरून। या'नी क़ुर्आन का मज़ा वही पाएँगे इसका फ़ायदा वही उठाएँगे जो कुफ़्र से पाक या'नी क़ुर्आन पर ईमान लाते हैं और क़ुर्आन को उसके हक़ के साथ वही उठाएगा जिसको आख़िरत पर यक़ीन होगा क्योंकि सूरह जुम्आ में फ़र्माया उन लोगों की मिषाल जिनसे तौरात उठाई गई फिर उन्होंने उसको नहीं उठाया (उस पर अमल नहीं किया) ऐसी है जैसे गधे की मिषाल जिस पर किताबें लदी हों। जिन लोगों ने अल्लाह की बातों को झुठलाया उनकी ऐसी ही बुरी गत है और अल्लाह ऐसे शरीर लोगों को राह पर नहीं लगाता और आँहज़रत (ﷺ) ने इस्लाम और ईमान दोनों को मुकम्मल फ़र्माया। अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कहा आँहज़रत (ﷺ) ने बिलाल (रज़ि.) से फ़र्माया तुम मुझसे अपना वो ज़्यादा उम्मीद का अमल बयान करो जिसको तुमने इस्लाम के ज़माने में किया हो। उन्होंने कहा या रसूलल्लाह! मैंने इस्लाम के ज़माने में इससे ज़्यादा उम्मीद का कोई काम नहीं किया है कि मैंने जब वुज़ू किया तो उसके बाद तहिय्यतुल वुज़ू की दो रकअत नमाज़ पढ़ी और आँहज़रत (ﷺ) से पूछा गया कौनसा अमल अफ़ज़ल है? आपने फ़र्माया अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाना फिर अल्लाह की राह मे जिहाद करना फिर वो हज्ज जिसके बाद गुनाह न हो।

لاَ يَمَسُّهُ: لاَ يَجِدُ طَعْمَهُ وَنَفْعَهُ إِلاَّ مَنْ آمَنَ بِالْقُرْآنِ وَلاَ يَحْمِلُهُ بِحَقِّهِ إِلاَّ الْمُوقِنُ لِقَوْلِهِ تَعَالَى: ﴿مَثَلُ الَّذِينَ حُمِّلُوا التَّوْرَاةَ ثُمَّ لَمْ يَحْمِلُوهَا كَمَثَلِ الْحِمَارِ يَحْمِلُ أَسْفَارًا بِئْسَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِآيَاتِ اللهِ وَاللهُ لاَ يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ﴾ وَسَمَّى النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ الإِسْلاَمَ وَالإِيمَانَ عَمَلاً، وَقَالَ أَبُو هُرَيْرَةَ : قَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لِبِلاَلٍ: ((أَخْبِرْنِي بِأَرْجَى عَمَلٍ عَمِلْتَهُ فِي الإِسْلاَمِ؟)) قَالَ: مَا عَمِلْتُ عَمَلاً أَرْجَى عِنْدِي أَنِّي لَمْ أَتَطَهَّرْ إِلاَّ صَلَّيْتُ وَسُئِلَ أَيُّ الْعَمَلِ أَفْضَلُ؟: ((إِيمَانٌ بِاللهِ وَرَسُولِهِ ثُمَّ الْجِهَادُ ثُمَّ حَجٌّ مَبْرُورٌ)).

7533. हमसे अब्दान ने बयान किया, उन्होंने कहा हमको अब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, उन्हे यूनुस ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुहरी ने, उन्हें सालिम ने ख़बर दी, और उन्हें हज़रत अब्दुल्लाह बिन

٧٥٣٣- حَدَّثَنَا عَبْدَانُ أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ، أَخْبَرَنَا يُونُسُ، عَنِ الزُّهْرِيِّ أَخْبَرَنِي سَالِمٌ،

उमर (रज़ि.) ने कि रसूले करीम (ﷺ) ने फ़र्माया गुज़िश्ता उम्मता के मुक़ाबले में तुम्हारा वजूद ऐसा है जैसे अ़स्र और मग़िरब के बीच का वक़्त। अहले तौरात को तौरात दी गई तो उन्हाने उस पर अ़मल किया यहाँ तक कि दिन आधा हो गया और वो आजिज़ हो गये। फिर उन्हें एक एक क़ीरात़ दिया गया। फिर अहले इंजील को इंजील दी गई और उन्होंने भी उस पर अ़मल किया यहाँ तक कि अ़स्र की नमाज़ का वक़्त हो गया। उन्हें भी एक एक क़ीरात़ दिया गया। फिर तुम्हें क़ुर्आन दिया गया और तुमने उस पर अ़मल किया यहाँ तक कि मग़िरब का वक़्त हो गया। तुम्हें दो दो क़ीरात़ दिये गये। उस पर अहले किताब ने कहा कि ये हमसे अ़मल में कम हैं और अज्र में ज़्यादा। अल्लाह तआ़ला ने फ़र्माया क्या मैंने तुम्हारा हक़ देने में कोई ज़ुल्म किया है? उन्होंने जवाब दिया कि नहीं। अल्लाह तआ़ला ने फ़र्माया कि फिर ये मेरा फ़ज़्ल है मैं जिसे चाहूँ दूँ। (राजेअ़ : 557)

عَنِ ابْنِ عُمَرَ أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ قَالَ: ((إِنَّمَا بَقَاؤُكُمْ فِيمَنْ سَلَفَ مِنَ الأُمَمِ كَمَا بَيْنَ صَلاَةِ الْعَصْرِ إِلَى غُرُوبِ الشَّمْسِ، أُوتِيَ أَهْلُ التَّوْرَاةِ التَّوْرَاةَ فَعَمِلُوا بِهَا حَتَّى انْتَصَفَ النَّهَارُ، ثُمَّ عَجَزُوا فَأُعْطُوا قِيرَاطًا قِيرَاطًا، ثُمَّ أُوتِيَ أَهْلُ الأَنْجِيلِ الإِنْجِيلَ، فَعَمِلُوا بِهِ حَتَّى صُلِّيَتِ الْعَصْرُ، ثُمَّ عَجَزُوا فَأُعْطُوا قِيرَاطًا قِيرَاطًا، ثُمَّ أُوتِيتُمُ الْقُرْآنَ فَعَمِلْتُمْ بِهِ حَتَّى غَرَبَتِ الشَّمْسُ، فَأُعْطِيتُمْ قِيرَاطَيْنِ قِيرَاطَيْنِ فَقَالَ أَهْلُ الْكِتَابِ: هَؤُلاَءِ أَقَلُّ مِنَّا عَمَلاً وَأَكْثَرُ أَجْرًا قَالَ اللهُ هَلْ ظَلَمْتُكُمْ مِنْ حَقِّكُمْ شَيْئًا؟ قَالُوا: لاَ قَالَ: فَهُوَ فَضْلِي أُوتِيهِ مَنْ أَشَاءُ)). [راجع: ٥٥٧]

तश्रीह : या'नी बनिस्बत यहूद और नस़ारा के दोनों को मिलाकर मुसलमानों का वक़्त बहुत कम था जिसमें उन्होंने काम किया क्योंकि कहाँ सुबह से लेकर अ़स्र तक, कहाँ अ़स्र से मग़िरब तक, अब हनफ़िया का ये इस्तिदलाल स़हीह़ नहीं कि अ़स्र का वक़्त दो मिस़्ल साया से शुरू होता है।

बाब 48 : नबी करीम (ﷺ) ने नमाज़ को अ़मल कहा और फ़र्माया कि जो सूरह फ़ातिहा न पढ़े उसकी नमाज़ नहीं।

٤٨- باب وَسَمَّى النَّبِيُّ ﷺ الصَّلاَةَ عَمَلاً وَقَالَ : ((لاَ صَلاَةَ لِمَنْ لَمْ يَقْرَأْ بِفَاتِحَةِ الْكِتَابِ)).

तश्रीह : इस ह़दीस़ के लाने से इमाम बुख़ारी (रह़.) की ग़र्ज़ ये है कि जब बग़ैर क़िरात फ़ातिहा के नमाज़ दुरुस्त न हुई तो नमाज़ का सबसे बड़ा हिस्सा सूरह फ़ातिहा का पढ़ना हुआ और आँह़ज़रत (ﷺ) ने दूसरी ह़दीस़ मे नमाज़ को अ़मल फ़र्माया तो क़िरात भी एक अ़मल होगी।

7534. मुझसे सुलैमान बिन ह़र्ब ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे शुअ़बा बिन ह़ज्जाज ने बयान किया, उनसे वलीद बिन अ़यज़ार ने (दूसरी सनद) और इमाम बुख़ारी (रह़.) ने कहा कि मुझसे अ़ब्बाद बिन यअ़क़ूब असदी ने बयान किया, उन्हों ने कहा हमको अ़ब्बाद बिन अ़वाम ने ख़बर दी, उन्हें शैबानी ने और उन्हें अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़ि.) ने कि एक

٧٥٣٤- حَدَّثَنِي سُلَيْمَانُ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنِ الْوَلِيدِ وَحَدَّثَنِي عَبَّادُ بْنُ يَعْقُوبَ الأَسَدِيُّ أَخْبَرَنَا عَبَّادُ بْنُ الْعَوَّامِ، عَنِ الشَّيْبَانِيِّ، عَنِ الْوَلِيدِ بْنِ الْعَيْزَارِ، عَنْ أَبِي عَمْرٍو الشَّيْبَانِيِّ، عَنِ ابْنِ مَسْعُودٍ أَنَّ

शख़्स ने नबी करीम (ﷺ) से पूछा। कौनसा अमल सबसे अफ़ज़ल है? फ़र्माया कि अपने वक़्त पर नमाज़ पढ़ना और वालदैन के साथ नेक सुलूक करना, फिर अल्लाह के रास्ते में जिहाद करना। (राजेअ : 527)

رَجُلاً سَأَلَ النَّبِيَّ ﷺ أَيُّ الأَعْمَالِ أَفْضَلُ؟ قَالَ: ((الصَّلاَةُ لِوَقْتِهَا، وَبِرُّ الْوَالِدَيْنِ ثُمَّ الْجِهَادُ فِي سَبِيلِ اللهِ)). [راجع: ٥٢٧]

बाब 49 : मआरिज में अल्लाह तआला का फ़र्मान कि आदमज़ाद दिल का कच्चा पैदा किया गया है

जब उस पर कोई मुसीबत आती है तो आह व ज़ारी करने लग जाता है और जब राहत मिलती है तो बख़ील बन जाता है। हलूआ बमा'नी ज़जूरा। बे सब्रा।

٤٩- بَابُ قَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿إِنَّ الإِنْسَانَ خُلِقَ هَلُوعًا﴾ ﴿إِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ جَزُوعًا وَإِذَا مَسَّهُ الْخَيْرُ مَنُوعًا﴾ هَلُوعًا ضَجُورًا.

इस बाब के लाने से इमाम बुख़ारी (रह.) की ग़र्ज़ ये है कि जैसा अल्लाह तआला इंसान का ख़ालिक़ है वैसे ही उसकी सिफ़ात और अख़्लाक़ का भी ख़ालिक़ है और जब सिफ़ात और अख़्लाक़ का भी ख़ालिक़ अल्लाह हुआ तो उसके अफ़आल का भी ख़ालिक़ वही होगा और मुअतज़िला का रद्द हुआ।

7535. हमसे अबुन नोअमान ने बयान किया, कहा हमसे जरीर बिन हाज़िम ने बयान किया, उनसे इमाम हसन बसरी ने, उनसे अम्र बिन तग़्लिब (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) के पास माल आया और आपने उसमे से कुछ लोगों को दिया और कुछ को नहीं दिया। फिर आँहज़रत (ﷺ) को मा'लूम हुआ कि उस पर कुछ लोग नाराज़ हुए हैं तो आपने फ़र्माया कि मैं एक शख़्स को देता हूँ और दूसरे को नहीं देता और जिसे नहीं देता वो मुझे उससे ज़्यादा अज़ीज़ होता है जिसे देता हूँ। मैं कुछ लोगों को इसलिये देता हूँ कि उनके दिलों में घबराहट और बेचैनी है और दूसरे लोगों पर ए'तिमाद करता हूँ कि अल्लाह ने उनके दिलों को बेनियाज़ी और भलाई अता फ़र्माई है। उन्हीं में से अम्र बिन तग़्लिब भी हैं। अम्र (रज़ि.) ने बयान किया कि आँहज़रत (ﷺ) के इस कलिमे के मुक़ाबले में मुझे लाल लाल ऊँट मिलते तो इतनी ख़ुशी न होती। (राजेअ : 923)

٧٥٣٥- حَدَّثَنَا أَبُو النُّعْمَانِ، حَدَّثَنَا جَرِيرُ بْنُ حَازِمٍ، عَنِ الْحَسَنِ، حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ تَغْلِبَ قَالَ: أَتَى النَّبِيَّ ﷺ، مَالٌ فَأَعْطَى قَوْمًا وَمَنَعَ آخَرِينَ، فَبَلَغَهُ أَنَّهُمْ عَتَبُوا فَقَالَ: ((إِنِّي أُعْطِي الرَّجُلَ وَأَدَعُ الرَّجُلَ وَالَّذِي أَدَعُ أَحَبُّ إِلَيَّ مِنَ الَّذِي أُعْطِي، أُعْطِي أَقْوَامًا لِمَا فِي قُلُوبِهِمْ مِنَ الْجَزَعِ وَالْهَلَعِ، وَأَكِلُ أَقْوَامًا إِلَى مَا جَعَلَ اللهُ فِي قُلُوبِهِمْ مِنَ الْغِنَى وَالْخَيْرِ مِنْهُمْ عَمْرُو بْنُ تَغْلِبَ)) فَقَالَ عَمْرٌو: مَا أُحِبُّ أَنَّ لِي بِكَلِمَةِ رَسُولِ اللهِ ﷺ، حُمْرَ النَّعَمِ. [راجع: ٩٢٣]

बाब 50 : नबी करीम (ﷺ) का अपने रब से रिवायत करना

٥٠- بَابُ ذِكْرِ النَّبِيِّ وَرِوَايَتِهِ عَنْ رَبِّهِ

7536. मुझसे मुहम्मद बिन अब्दुर्रहीम ने बयान किया, कहा हमसे अबू जैद सईद बिन रबीअ हरवी ने, कहा हमसे शुअबा ने, उनसे क़तादा ने और उनसे अनस (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने अपने रब से रिवायत किया कि अल्लाह पाक फ़र्माता

٧٥٣٦- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ الرَّحِيمِ، حَدَّثَنَا أَبُو زَيْدٍ سَعِيدُ بْنُ الرَّبِيعِ الْهَرَوِيُّ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ عَنْ قَتَادَةَ عَنْ أَنَسٍ رَضِيَ اللهُ

عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ يَرْوِيهِ عَنْ رَبِّهِ قَالَ: ((إِذَا تَقَرَّبَ الْعَبْدُ إِلَيَّ شِبْرًا تَقَرَّبْتُ إِلَيْهِ ذِرَاعًا، وَإِذَا تَقَرَّبَ مِنِّي ذِرَاعًا تَقَرَّبْتُ مِنْهُ بَاعًا، وَإِذَا أَتَانِي مَشْيًا أَتَيْتُهُ هَرْوَلَةً)).

है कि जब बन्दा मुझसे एक बालिश्त क़रीब होता है तो मैं एक हाथ उससे क़रीब होता हूँ और जब बन्दा मुझसे एक हाथ क़रीब होता है तो मैं उससे दो हाथ क़रीब होता हूँ और जब वो मेरे पास पैदल चलकर आता है तो मैं दौड़कर आ जाता हूँ।

ह़दीष़ और बाब में मुत़ाबक़त ज़ाहिर है ग़र्ज़ ये है कि उसके अ़मल से कहीं ज़्यादा ष़वाब देता हूँ।

٧٥٣٧- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، عَنْ يَحْيَى عَنِ التَّيْمِيِّ، عَنْ أَنَسِ بْنِ مَالِكٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: رُبَّمَا ذَكَرَ النَّبِيُّ ﷺ قَالَ: ((إِذَا تَقَرَّبَ الْعَبْدُ مِنِّي شِبْرًا، تَقَرَّبْتُ مِنْهُ ذِرَاعًا، وَإِذَا تَقَرَّبَ مِنِّي ذِرَاعًا، تَقَرَّبْتُ مِنْهُ بَاعًا أَوْ بُوعًا)). [راجع: ٧٤٠٥]
وَقَالَ مُعْتَمِرٌ: سَمِعْتُ أَبِي سَمِعْتُ أَنَسًا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ يَرْوِيهِ عَنْ رَبِّهِ عَزَّ وَجَلَّ.

7537. हमसे मुसद्दद ने बयान किया, उनसे यह़्या ने, उनसे तमीमी ने, उनसे अनस बिन मालिक (रज़ि.) ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि अकष़र नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कि (अल्लाह तआ़ला फ़र्माता है कि) जब बन्दा मुझसे एक बालिश्त क़रीब होता है तो मैं उससे एक हाथ क़रीब हो जाता हूँ और जब वो एक हाथ क़रीब आता है तो मैं उससे दो हाथ क़रीब होता हूँ। और मुअ़तमिर ने कहा कि मैंने अपने वालिद से सुना, उन्होंने अनस (रज़ि.) से सुना कि नबी करीम (ﷺ) अपने रब अ़ज़्ज़ व जल्ल से रिवायत करते थे।

ह़दीष़ और बाब में मुत़ाबक़त ज़ाहिर है।

٧٥٣٨- حَدَّثَنَا آدَمُ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ زِيَادٍ قَالَ: سَمِعْتُ أَبَا هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ يَرْوِيهِ عَنْ رَبِّكُمْ قَالَ: ((لِكُلِّ عَمَلٍ كَفَّارَةٌ، وَالصَّوْمُ لِي، وَأَنَا أَجْزِي بِهِ، وَلَخُلُوفُ فَمِ الصَّائِمِ أَطْيَبُ عِنْدَ اللهِ مِنْ رِيحِ الْمِسْكِ)).
[راجع: ١٨٩٤]

7538. हमसे आदम बिन अबी अयास ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, कहा हमसे मुहम्मद बिन ज़ियाद ने बयान किया, कहा कि मैंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना, उनसे नबी करीम (ﷺ) ने, अल्लाह तआ़ला से रिवायत करते हैं कि परवरदिगार ने फ़र्माया हर गुनाह का एक कफ़्फ़ारा है (जिससे वो गुनाह माफ़ हो जाता है) और रोज़ा ख़ास़ मेरे लिये है और मैं ही उसकी जज़ा दूँगा और रोज़ेदार के मुँह की बू अल्लाह के नज़दीक मुश्क की ख़ुश्बू से बढ़कर है। (राजेअ़ : 1894)

इस ह़दीष़ की मुत़ाबक़त बाब से ज़ाहिर है।

٧٥٣٩- حَدَّثَنَا حَفْصُ بْنُ عُمَرَ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ قَتَادَةَ ح وَقَالَ لِي خَلِيفَةُ حَدَّثَنَا يَزِيدُ بْنُ زُرَيْعٍ، عَنْ سَعِيدٍ، عَنْ قَتَادَةَ، عَنْ أَبِي الْعَالِيَةِ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا عَنِ النَّبِيِّ ﷺ فِيمَا يَرْوِيهِ عَنْ رَبِّهِ

7539. हमसे ह़फ़्स़ बिन उ़मर ने बयान किया, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे क़तादा ने (दूसरी सनद) और इमाम बुख़ारी (रह.) ने कहा कि मुझसे ख़लीफ़ा बिन ख़यात़ ने बयान किया, कहा हमसे यज़ीद बिन ज़ुरैअ़ ने बयान किया, उनसे सई़द ने, उनसे क़तादा ने, उनसे अबुल आ़लिया ने और उनसे इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने अपने परवरदिगार से रिवायत किया परवरदिगार ने फ़र्माया कि

قَالَ: ((لاَ يَنْبَغِي لِعَبْدٍ أَنْ يَقُولَ إِنَّهُ خَيْرٌ مِنْ يُونُسَ بْنِ مَتَّي)) وَنَسَبَهُ إِلَى أَبِيهِ.
[راجع: ٣٣٩٥]

किसी बन्दे के लिये मुनासिब नहीं कि ये कहे कि मैं यूनुस बिन मत्ता से बेहतर हूँ और आपने यूनुस को उनके बाप की त़रफ़ निस्बत दी। (राजेअ : 3395)

अल्लाह से आँह़ज़रत (ﷺ) का ख़ुद बराहे रास्त रिवायत करना यही बाब से मुत़ाबक़त है।

٧٥٤٠- حَدَّثَنَا أَحْمَدُ بْنُ أَبِي سُرَيْجٍ، أَخْبَرَنَا شَبَابَةُ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ مُعَاوِيَةَ بْنِ قُرَّةَ، عَنْ عَبْدِ اللهِ بْنِ مُغَفَّلٍ الْمُزَنِيِّ قَالَ: رَأَيْتُ رَسُولَ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ يَوْمَ الْفَتْحِ عَلَى نَاقَةٍ لَهُ يَقْرَأُ سُورَةَ الْفَتْحِ أَوْ مِنْ سُورَةِ الْفَتْحِ قَالَ: فَرَجَّعَ فِيهَا قَالَ: ثُمَّ قَرَأَ مُعَاوِيَةُ يَحْكِي قِرَاءَةَ ابْنِ مُغَفَّلٍ وَقَالَ : لَوْ لاَ أَنْ يَجْتَمِعَ النَّاسُ عَلَيْكُمْ لَرَجَّعْتُ كَمَا رَجَّعَ ابْنُ مُغَفَّلٍ يَحْكِي النَّبِيَّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فَقُلْتُ لِمُعَاوِيَةَ: كَيْفَ كَانَ تَرْجِيعُهُ؟ قَالَ ءَا ءَا ءَا ثَلاَثَ مَرَّاتٍ.
[راجع: ٤٢٨١]

7540. हमसे अह़मद बिन अबी सुरैह़ ने बयान किया, कहा हमको शबाबा ने ख़बर दी, कहा हमसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे मुआविया बिन क़ुर्रह ने, उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुग़फ़्फ़ल मुज़नी (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने फ़त्हे मक्का के दिन रसूलुल्लाह (ﷺ) को देखा कि आप अपनी एक ऊँटनी पर सवार थे और सूरह फ़तह पढ़ रहे थे या सूरह फ़तह में से कुछ आयात पढ़ रहे थे। उन्होंने बयान किया कि फिर आपने उसमें तरजीअ़ की। शुअ़बा ने कहा ये ह़दीष़ बयान करके मुआविया ने इस त़रह़ आवाज़ दोहराकर क़िरात की जैसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुग़फ़्फ़ल किया करते थे और मुआविया ने कहा अगर मुझको उसका ख़्याल न होता कि लोग तुम्हारे पास जमा होकर हुजूम करेंगे तो मैं उसी त़रह़ आवाज़ दोह्राकर क़िरात करता जिस त़रह़ अ़ब्दुल्लाह बिन मुग़फ़्फ़ल ने आँह़ज़रत (ﷺ) की त़रह़ आवाज़ दोहराने को नक़्ल किया था। शुअ़बा ने कहा मैंने मुआविया से पूछा इब्ने मुग़फ़्फ़ल क्यूँ कर आवाज़ दोहराते थे? उन्होंने कहा आं आ आ तीन तीन बार मद्द के साथ आवाज़ दोह्राते थे। (राजेअ : 4821)

आवाज़ को दोहरा दोह्राकर पहले पस्त फिर बुलंद आवाज़ से पढ़ना तरजीअ़ कहलाता है।

٥١- باب مَا يَجُوزُ مِنْ تَفْسِيرِ التَّوْرَاةِ وَغَيْرِهَا مِنْ كُتُبِ اللهِ بِالْعَرَبِيَّةِ وَغَيْرِهَا لِقَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿فَأْتُوا بِالتَّوْرَاةِ فَاتْلُوهَا إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ﴾.

बाब 51 : तौरात और उसके अ़लावा दूसरी आसमानी किताबों की तफ़्सीर और तर्जुमा अ़रबी वग़ैरह में करने का जाइज़ होना

अल्लाह तआ़ला के इस इर्शाद की रोशनी में कि, पस तुम तौरात लाओ और उसे पढ़ो अगर तुम सच्चे हो।

٧٥٤١- وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: أَخْبَرَنِي أَبُو سُفْيَانَ بْنُ حَرْبٍ أَنَّ هِرَقْلَ دَعَا تَرْجُمَانَهُ، ثُمَّ دَعَا بِكِتَابِ النَّبِيِّ ﷺ فَقَرَأَهُ بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ مِنْ مُحَمَّدٍ عَبْدِ اللهِ وَرَسُولِهِ إِلَى هِرَقْلَ وَ﴿يَا أَهْلَ الْكِتَابِ

7541. और इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि मुझे अबू सुफ़यान बिन ह़र्ब ने ख़बर दी, कि हिरक़्ल ने अपने तर्जुमान को बुलाया। फिर नबी करीम (ﷺ) का ख़त़ मंगवाया और उसे पढ़ा। शुरू अल्लाह के नाम से जो निहायत रह़म करने वाला बड़ा मेहरबान है। अल्लाह के बन्दे और उसके

रसूल मुहम्मद (ﷺ) की त़रफ़ से हिरक़्ल की जानिब। फिर ये आयत लिखी थी कि ऐ अहले किताब! उस बात पर आ जाओ जो हममें यक्साँ मानी जाती है आख़िर आयत तक। (राजेअ : 7)

﴿تَعَالَوْا إِلَى كَلِمَةٍ سَوَاءٍ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ﴾ الآيَةَ. [راجع: ٧]

तश्रीह : इससे इमाम बुख़ारी (रह़.) ने तर्जुमा का जवाज़ निकाला। आँह़ज़रत (ﷺ) ने हिरक़्ल को अ़रबी ज़ुबान में ख़त़ लिखा ह़ालाँकि आप जानते थे कि हिरक़्ल अ़रबी नहीं समझता और इसलिये उसने तर्जुमान को बुलाया तो गोया आपने तर्जुमा की इजाज़त दी। इस बाब से ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) ने उन बेवक़ूफ़ों का रद्द किया जो आसमानी किताबों या और दूसरी किताबों मष़लन ह़दीष़ की किताबों का तर्जुमा दूसरी ज़ुबान मे करना बेहतर नहीं जानते और इस आयत से उस पर इस त़रह़ इस्तिदलाल किया कि तौरात अस़ल इबरानी ज़ुबान में थी और अ़रबों को लाकर सुनाने का जो अल्लाह ने हुक्म दिया तो यक़ीनन उसका मत़लब ये होगा कि अ़रबी में तर्जुमा करके सुनाओ क्योंकि अ़रब लोग इबरानी ज़ुबान नहीं समझते थे और तर्जुमा और तफ़्सीर के जवाज़ पर सब मुसलमानों का इज्माअ़ है।

7542. हमसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे उ़ष्मान बिन उ़मर ने बयान किया, उन्हें अ़ली बिन मुबारक ने ख़बर दी, उन्हें यह्या बिन अबी कष़ीर ने, उन्हें अबू सलमा ने और उनसे ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि अहले किताब तौरात को इबरानी में पढ़ते और मुसलमानों के लिये उसकी तफ़्सीर अ़रबी में करते थे। इस पर आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि तुम न अहले किताब की तस़्दीक़ करो और न उसकी तक्ज़ीब, बल्कि कहो कि हम अल्लाह और उसकी तमाम नाज़िल की हुई किताबों पर ईमान लाए। अल आयत। (राजेअ़ : 4485)

٧٥٤٢- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا عُثْمَانُ بْنُ عُمَرَ، أَخْبَرَنَا عَلِيُّ بْنُ الْمُبَارَكِ، عَنْ يَحْيَى بْنِ أَبِي كَثِيرٍ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: كَانَ أَهْلُ الْكِتَابِ يَقْرَؤُونَ التَّوْرَاةَ بِالْعِبْرَانِيَّةِ، وَيُفَسِّرُونَهَا بِالْعَرَبِيَّةِ لأَهْلِ الإِسْلاَمِ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((لاَ تُصَدِّقُوا أَهْلَ الْكِتَابِ وَلاَ تُكَذِّبُوهُمْ ﴿وَقُولُوا آمَنَّا بِاللهِ وَمَا أُنْزِلَ﴾)) الآيَةَ. [راجع: ٤٤٨٥]

बाब का मत़लब इस ह़दीष़ से यूँ निकला कि अगर अहले किताब सच बोलें तो उनकी किताब का तर्जुमा भी वही होगा जो अल्लाह की त़रफ़ से उतरा। इमाम बैहक़ी ने कहा कि अल्लाह का कलाम बाइख़्तिलाफ़े लुग़ात मुख़्तलिफ़ नहीं होता।

7543. हमसे मुसद्दद बिन मुस्रहिद ने बयान किया, कहा हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, उनसे अय्यूब ने, उनसे नाफ़ेअ़ ने और उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) के पास एक यहूदी मर्द और औरत लाए गये, जिन्होंने ज़िना किया था। आँह़ज़रत (ﷺ) ने यहूदियों से पूछा कि तुम उनके साथ किया करते हो? उन्होंने कहा कि उनका मुँह काला करके उन्हें रुस्वा करते हैं। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि फिर तौरात लाओ और उसकी तिलावत करो अगर तुम सच्चे हो चुनाँचे वो (तौरात) लाए और एक शख़्स से जिस पर वो मुत़्मइन थे कहा कि ऐ अअ़वर! पढ़ो। चुनाँचे उसने पढ़ा और जब उसके एक मुक़ाम पर पहुँचा तो उस पर अपना हाथ रख

٧٥٤٣- حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، عَنْ أَيُّوبَ، عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: أُتِيَ النَّبِيُّ ﷺ بِرَجُلٍ وَامْرَأَةٍ مِنَ الْيَهُودِ قَدْ زَنَيَا فَقَالَ لِلْيَهُودِ: ((مَا تَصْنَعُونَ بِهِمَا؟)) قَالُوا: نُسَخِّمُ وُجُوهَهُمَا وَنُخْزِيهِمَا قَالَ: ((فَأْتُوا بِالتَّوْرَاةِ فَاتْلُوهَا إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ)) فَجَاءُوا فَقَالُوا لِرَجُلٍ مِمَّنْ يَرْضَوْنَ يَا أَعْوَرُ اقْرَأْ فَقَرَأَ حَتَّى انْتَهَى إِلَى مَوْضِعٍ

दिया। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि अपना हाथ हटाओ, जब उसने अपना हाथ उठाया तो उसमें आयते रजम बिलकुल वाज़ेह तौर पर मौजूद थी, उसने कहा, ऐ मुहम्मद! उन पर रजम का हुक्म तो वाक़ई है लेकिन हम उसे आपस में छुपाते हैं। चुनाँचे दोनों रजम किये गये। मैंने देखा कि मर्द औरत को पत्थर से बचाने के लिए उस पर झुका पड़ता था। (राजेअ : 1329)

مِنْهَا فَوَضَعَ يَدَهُ عَلَيْهِ قَالَ: ارْفَعْ يَدَكَ، فَرَفَعَ يَدَهُ فَإِذَا فِيهِ آيَةُ الرَّجْمِ تَلُوحُ فَقَالَ: يَا مُحَمَّدُ إِنَّ عَلَيْهِمَا الرَّجْمَ وَلَكِنَّا نُكَاتِمُهُ بَيْنَنَا فَأَمَرَ بِهِمَا فَرُجِمَا فَرَأَيْتُهُ يُجَانِيءُ عَلَيْهَا الْحِجَارَةَ. [راجع: ١٣٢٩]

इस हदीष़ से बाब का मतलब यूँ निकला कि आँहज़रत (ﷺ) इबरानी ज़ुबान नहीं जानते थे फिर जो आपने हुक्म दिया कि तौरात लाकर सुनाओ। गोया तर्जुमा करने की इजाज़त दी।

बाब 52

नबी करीम (ﷺ) का इर्शाद कि क़ुर्आन का अच्छा हाफ़िज़ क़यामत के दिन लिखने वाले फ़रिश्तों के साथ होगा जो इ़ज़्ज़त वाले और अल्लाह के ताबेदार हैं और ये फ़र्माना कि क़ुर्आन को अपनी आवाज़ों से ज़ीनत दो।

٥٢- باب قَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ: ((الْمَاهِرُ بِالْقُرْآنِ مَعَ سَفَرَةِ الْكِرَامِ الْبَرَرَةِ، وَزَيِّنُوا الْقُرْآنَ بِأَصْوَاتِكُمْ)).

क़ुर्आन मजीद को फ़साहत व बलाग़त के साथ जानने और अल्फ़ाज़ के साथ उसके मा'नी व मतालिब को समझने और अच्छी रिक़्क़त आमेज़ आवाज़ से उसको पढ़ने वाला क़ुर्आन मजीद का माहिर कहा जा सकता है। उसी की फ़ज़ीलत बयान हो रही है। इस बाब के लाने से इमाम बुख़ारी (रह.) की यही ग़र्ज़ है कि तिलावत या हिफ़्ज़ कई तरह पर है कोई अच्छा कोई ग़ैर जय्यद कोई ख़ुश आवाज़ी के साथ कोई बद आवाज़ी के साथ तो मा'लूम हुआ कि तिलावत और हिफ़्ज़ क़ारी की सिफ़त है और ये मख़्लूक़ है।

7544. हमसे इब्राहीम बिन हम्ज़ा ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे इब्ने अबी हाज़िम ने बयान किया, उनसे यज़ीद ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन इब्राहीम ने, उनसे अबू सलमा ने और उनसे अबू हुरैरह (रज़ि.) ने कि उन्होंने नबी करीम (ﷺ) से सुना। आपने फ़र्माया कि अल्लाह तआला किसी चीज़ को इतनी तवज्जह से नहीं सुनता जितनी तवज्जह से अच्छी आवाज़ से पढ़ने पर नबी के क़ुर्आन मजीद को सुनता है। (राजेअ : 5023)

٧٥٤٤- حَدَّثَنَا إِبْرَاهِيمُ بْنُ حَمْزَةَ، حَدَّثَنِي ابْنُ أَبِي حَازِمٍ، عَنْ يَزِيدَ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ إِبْرَاهِيمَ، عَنْ أَبِي سَلَمَةَ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ سَمِعَ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((مَا أَذِنَ اللَّهُ لِشَيْءٍ مَا أَذِنَ لِنَبِيٍّ حَسَنِ الصَّوْتِ بِالْقُرْآنِ يَجْهَرُ بِهِ)). [راجع: ٥٠٢٣]

7545. हमसे यह्या बिन बुकैर ने बयान किया, उन्हों ने कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने बयान किया, उन्हें उ़र्वा बिन ज़ुबैर, सईद बिन मुसय्यब, अ़ल्क़मा बिन वक़्क़ास़ और उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह ने ख़बर दी आइशा (रज़ि.) की बात के सिलसिले में जब तोहमत लगाने वालो ने उन पर तोहमत लगाई थी और उन रावियों में से हर एक ने वाक़िया का एक एक हिस़्सा बयान किया कि हज़रत आइशा (रज़ि.) ने बताया फिर मैं रोते रोते अपने बिस्तर

٧٥٤٥- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ يُونُسَ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ أَخْبَرَنِي عُرْوَةُ بْنُ الزُّبَيْرِ، وَسَعِيدُ بْنُ الْمُسَيَّبِ وَعَلْقَمَةُ بْنُ وَقَّاصٍ وَعُبَيْدُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ اللَّهِ عَنْ حَدِيثِ عَائِشَةَ حِينَ قَالَ لَهَا أَهْلُ الإِفْكِ مَا قَالُوا، وَكُلٌّ حَدَّثَنِي

पर लेट गई और मुझे यक़ीन था कि जब मैं इस तोह्मत से बरी हूँ तो अल्लाह तआला मेरी बराअत करेगा, लेकिन वल्लाह! इसका गुमान मुझे भी न था कि मेरे बारे में क़ुर्आन की आयात नाज़िल होंगी जिनकी क़यामत तक तिलावत की जाएगी और मेरे ख़्याल में मेरी हैषियत उससे बहुत कम थी कि अल्लाह मेरे बारे में पाक कलाम नाज़िल करे जिसकी तिलावत हो और अल्लाह तआला ने सूरह नूर की ये आयत नाज़िल की, बिला शुब्हा वो लोग जिन्होंने तोह्मत लगाई, पूरी दस आयतो तक। (राजेअ: 2593)

طَائِفَةً مِنَ الْحَدِيثِ قَالَتْ : فَاضْطَجَعْتُ عَلَى فِرَاشِي وَأَنَا حِينَئِذٍ أَعْلَمُ أَنِّي بَرِيئَةٌ، وَأَنَّ اللهَ يُبَرِّئُنِي وَلَكِنْ وَاللهِ مَا كُنْتُ أَظُنُّ أَنَّ اللهَ يُنْزِلُ فِي شَأْنِي وَحْيًا يُتْلَى وَلَشَأْنِي فِي نَفْسِي كَانَ أَحْقَرَ مِنْ أَنْ يَتَكَلَّمَ اللهُ فِيَّ بِأَمْرٍ يُتْلَى، وَأَنْزَلَ اللهُ عَزَّ وَجَلَّ ﴿إِنَّ الَّذِينَ جَاؤُوا بِالإِفْكِ عُصْبَةٌ مِنْكُمْ﴾ الْعَشْرَ الآيَاتِ كُلَّهَا. [راجع: ٢٥٩٣]

7546. हमसे अबू नुऐम ने बयान किया, कहा हमसे मिस्अर ने, उनसे अदी बिन षाबित ने, मेरा यक़ीन है कि उन्होंने बरा बिन आज़िब (रज़ि.) से नक़ल किया, उन्होंने कहा कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना कि आप इशा की नमाज़ में वत्तीनि वज़्ज़ैतून पढ़ रहे थे। मैंने आँहज़रत (ﷺ) से ज़्यादा बेहतरीन आवाज़ से क़ुर्आन पढ़ते हुए किसी को नहीं सुना। (राजेअ: 767)

٧٥٤٦- حَدَّثَنَا أَبُو نُعَيْمٍ، حَدَّثَنَا مِسْعَرٌ، عَنْ عَدِيِّ بْنِ ثَابِتٍ أُرَاهُ عَنِ الْبَرَاءِ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقْرَأُ فِي الْعِشَاءِ ﴿وَالتِّينِ وَالزَّيْتُونِ﴾ فَمَا سَمِعْتُ أَحَدًا أَحْسَنَ صَوْتًا أَوْ قِرَاءَةً مِنْهُ. [راجع: ٧٦٧]

हज़रत बरा बिन आज़िब (रज़ि.) अबू अम्मारा अंसारी हारिषी हैं। इन्होंने सन 24 हिजरी में रै को फ़तह किया। हज़रत अली (रज़ि.) के साथ जंग नहरवान में शरीक हुए। ब ज़माना मुस्अब बिन ज़ुबैर कूफ़ा में वफ़ात पाई। रज़ियल्लाहु अन्हु व अरज़ाहू।

7547. हमसे हज्जाज बिन मिन्हाल ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे हुशैम ने बयान किया, उनसे अबू बिश्र ने बयान किया, उनसे सईद बिन ज़ुबैर ने बयान किया और उनसे हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि.) ने बयान किया कि जब नबी करीम (ﷺ) मक्का मुकर्रमा में छुपकर तब्लीग़ करते थे तो क़ुर्आन बुलंद आवाज़ से पढ़ते। मुश्रिकीन जब सुनते तो क़ुर्आन को बुरा भला कहते और उसके लाने वाले को बुरा भला कहते। उस पर अल्लाह तआला ने अपने नबी करीम (ﷺ) से फ़र्माया कि, अपनी नमाज़ में न आवाज़ बुलंद करो और न बहुत पस्त। (राजेअ: 4732)

٧٥٤٧- حَدَّثَنَا حَجَّاجُ بْنُ مِنْهَالٍ، حَدَّثَنَا هُشَيْمٌ، عَنْ أَبِي بِشْرٍ، عَنْ سَعِيدِ بْنِ جُبَيْرٍ، عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ مُتَوَارِيًا بِمَكَّةَ، وَكَانَ يَرْفَعُ صَوْتَهُ فَإِذَا سَمِعَ الْمُشْرِكُونَ سَبُّوا الْقُرْآنَ وَمَنْ جَاءَ بِهِ فَقَالَ اللهُ عَزَّ وَجَلَّ لِنَبِيِّهِ ﷺ ﴿وَلاَ تَجْهَرْ بِصَلاَتِكَ وَلاَ تُخَافِتْ بِهَا﴾. [راجع: ٤٧٢٢]

7548. हमसे इस्माईल बिन अबी उवैस ने बयान किया, उन्होंने कहा मुझसे इमाम मालिक ने बयान किया, उनसे अब्दुर्रहमान बिन अब्दुल्लाह बिन अब्दुर्रहमान बिन अबी सअसआ ने बयान किया, उनसे उनके वालिद ने और उन्हें अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने ख़बर दी कि उन्होंने उनसे कहा

٧٥٤٨- حَدَّثَنَا إِسْمَاعِيلُ، حَدَّثَنِي مَالِكٌ، عَنْ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ عَبْدِ اللهِ بْنِ عَبْدِ الرَّحْمَنِ بْنِ أَبِي صَعْصَعَةَ عَنْ أَبِيهِ، أَنَّهُ أَخْبَرَهُ أَنَّ أَبَا سَعِيدٍ الْخُدْرِيَّ رَضِيَ اللهُ

मेरा ख़्याल है कि तुम बकरियों को और जंगल को पसंद करते हो। पस जब तुम अपनी बकरियों में या जंगल में हो और नमाज़ के लिये अज़ान दो तो बुलंद आवाज़ के साथ दो क्योंकि मुअज़्ज़िन कीआवाज़ जहाँ तक भी पहुँचेगी और उसे जिन्न व इंसान और दूसरी जो चीज़ें सुनेंगी वो क़यामत के दिन उसकी गवाही देंगी। अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने बयान किया कि मैंने इस हदीष़ को रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना है। (राजेअ: 609)

عَنْهُ قَالَ لَهُ: إِنِّي أَرَاكَ تُحِبُّ الْغَنَمَ وَالْبَادِيَةَ فَإِذَا كُنْتَ فِي غَنَمِكَ أَوْ بَادِيَتِكَ فَأَذَّنْتَ لِلصَّلاَةِ فَارْفَعْ صَوْتَكَ بِالنِّدَاءِ فَإِنَّهُ لاَ يَسْمَعُ مَدَى صَوْتِ الْمُؤَذِّنِ جِنٌّ وَلاَ إِنْسٌ وَلاَ شَيْءٌ إِلاَّ شَهِدَ لَهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ قَالَ أَبُو سَعِيدٍ مِنْ رَسُولِ اللهِ ﷺ. [راجع: ٦٠٩]

तश्रीह : इस बाब की पहली हदीष़ में क़ुर्आन को अच्छी आवाज़ से ज़ीनत देने का, दूसरी हदीष़ में उसकी तिलावत का, तीसरी हदीष़ में क़िरात की उ़म्दगी ख़ुशआवाज़ी का, चौथी हदीष़ में क़िरात बुलंद या पस्त आवाज़ से करने का, पाँचवीं हदीष़ में अज़ान बुलंद आवाज़ से देने का बयान है। इन सब अह़ादीष़ से इमाम बुख़ारी (रह.) ने ये निकाला कि क़िरात और चीज़ है क़ुर्आन और चीज़ है। क़िरात उन सिफ़ात से मुतस्सिफ़ होती है इससे मा'लूम हुआ कि वो क़ारी की सिफ़त और मख़्लूक़ है बरख़िलाफ़ क़ुर्आन के कि वो अल्लाह का कलाम और ग़ैर मख़्लूक़ है।

7549. हमसे क़बीसा ने बयान किया, कहा हमसे सुफ़यान ने बयान किया, उनसे मंसूर ने, उनसे उनकी वालिदा ने और उनसे आ़इशा (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) उस वक़्त भी क़ुर्आन पढ़ते थे जब आपका सरे मुबारक मेरी गोद में होता और मैं ह़ालते हैज़ में होती। (राजेअ: 297)

٧٥٤٩- حَدَّثَنَا قَبِيصَةُ، حَدَّثَنَا سُفْيَانُ، عَنْ مَنْصُورٍ عَنْ أُمِّهِ عَنْ عَائِشَةَ قَالَتْ: كَانَ النَّبِيُّ ﷺ يَقْرَأُ الْقُرْآنَ وَرَأْسُهُ فِي حَجْرِي وَأَنَا حَائِضٌ. [راجع: ٢٩٧]

ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि.) इस्लाम में मशहूरतरीन ख़ातून हरमे मुह़तरम रसूले करीम (ﷺ) जिनके बहुत से मनाक़िब हैं। बतारीख़ 17 रमज़ान सन 58 हिजरी में मंगल की रात में इंतिक़ाल फ़र्माया और रात ही को बक़ीअ़ में दफ़न हुईं। ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) ने जनाज़ा पढ़ाया। रज़ियल्लाहु अ़न्हा व अर्ज़ाहा।

बाब 53 : सूरह मुज़्ज़म्मिल में अल्लाह तआ़ला का फ़र्मान, पस क़ुर्आन में से वो पढ़ो जो तुमसे आसानी से हो सके (या'नी नमाज़ में)

٥٣- بَابُ قَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿فَاقْرَءُوا مَا تَيَسَّرَ مِنَ الْقُرْآنِ﴾

7550. हमसे यह़्या बिन बुकैर ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे लैष़ बिन सअ़द ने बयान किया, उनसे अ़क़ील ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, कहा मुझसे उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने बयान किया, उनसे मिस्वर बिन मख़रमा और अ़ब्दुर्रहमान बिन अ़ब्दुल क़ारी ने, इन दोनों ने उ़मर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैंने हिशाम बिन ह़कीम (रज़ि.) को रसूले करीम (ﷺ) की ज़िंदगी में सूरह फ़ुरक़ान पढ़ते सुना। मैंने देखा कि वो क़ुर्आन मजीद बहुत से ऐसे तरीक़ों से पढ़ रहे थे जो आँह़ज़रत (ﷺ) ने हमें नहीं पढ़ाए थे। क़रीब था कि

٧٥٥٠- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ عُقَيْلٍ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ حَدَّثَنِي عُرْوَةُ أَنَّ الْمِسْوَرَ بْنَ مَخْرَمَةَ وَعَبْدَ الرَّحْمَنِ بْنَ عَبْدٍ الْقَارِيَّ حَدَّثَاهُ أَنَّهُمَا سَمِعَا عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ يَقُولُ: سَمِعْتُ هِشَامَ بْنَ حَكِيمٍ يَقْرَأُ سُورَةَ الْفُرْقَانِ فِي حَيَاةِ رَسُولِ اللهِ ﷺ فَاسْتَمَعْتُ لِقِرَاءَتِهِ، فَإِذَا هُوَ يَقْرَأُ عَلَى حُرُوفٍ كَثِيرَةٍ لَمْ

نماز ही में उन पर मैं हमला कर दूँ लेकिन मैंने सब्र से काम लिया और जब उन्होंने सलाम फेरा तो मैंने उनकी गर्दन मे अपनी चादर का फंदा लगा दिया और उनसे कहा तुम्हें ये सूरत इस तरह किसने पढ़ाई जिसे मैंने अभी तुमसे सुना। उन्होंने कहा कि मुझे इस तरह रसूले करीम (ﷺ) ने पढ़ाई है। मैंने कहा तुम झूठे हो, मुझे ख़ुद आँहज़रत (ﷺ) ने उससे मुख़्तलिफ़ क़िरात सिखाई है जो तुम पढ़ रहे थे। चुनाँचे मैं उन्हें खींचता हुआ आँहज़रत (ﷺ) के पास ले गया और अर्ज़ किया कि मैंने इस शख़्स को सूरह फ़ुरक़ान इस तरह पढ़ते सुना जो आपने मुझे नहीं सिखाई। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि उन्हें छोड़ दो। हिशाम! तुम पढ़कर सुनाओ। उन्होंने वही क़िरात पढ़ी जो मैं उनसे सुन चुका था। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि इसी तरह ये सूरत नाज़िल हुई है। ऐ उमर! अब तुम पढ़ो! मैंने इस क़िरात के मुताबिक़ पढ़ा जो आप (ﷺ) ने मुझे सिखाई थी। आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि इस तरह भी नाज़िल हुई है। ये क़ुर्आन अरब की सात बोलियों पर उतारा गया है। पस तुम्हें जिस क़िरात में सहूलत हो पढ़ो। (राजेअ : 2419)

اللهِ ﷺ قُلْتُ إِنِّي سَمِعْتُ هَذَا يَقْرَأُ سُورَةَ الْفُرْقَانِ عَلَى حُرُوفٍ لَمْ تُقْرِئْنِيهَا فَقَالَ: ((أَرْسِلْهُ اقْرَأْ يَا هِشَامُ)) فَقَرَأَ الْقِرَاءَةَ الَّتِي سَمِعْتُهُ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((كَذَلِكَ أُنْزِلَتْ)) ثُمَّ قَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((اقْرَأْ يَا عُمَرُ)) فَقَرَأْتُ الَّتِي أَقْرَأَنِي فَقَالَ: ((كَذَلِكَ أُنْزِلَتْ إِنَّ هَذَا الْقُرْآنَ أُنْزِلَ عَلَى سَبْعَةِ أَحْرُفٍ فَاقْرَؤُوا مَا تَيَسَّرَ مِنْهُ)). [راجع: ٢٤١٩]

इस हदीष से हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने ये निकाला कि क़िरात और चीज़ है और क़ुर्आन और चीज़ है इसलिये क़िरात में इख़्तिलाफ़ हो सकता है। जैसे उमर (रज़ि.) और हिशाम (रज़ि.) की क़िरात में हुआ। मगर क़ुर्आन में इख़्तिलाफ़ नहीं हो सकता। क़िराते क़ुर्आन में सबसे ज़्यादा आसान सूरह फ़ातिहा है। लिहाज़ा वो भी उसमें दाख़िल है। ये भी मतलब है कि जहाँ से क़ुर्आन मजीद याद हो वहाँ से क़िरात कर सकते हो और जितना आसानी से क़िरात कर सको उतना ही क़िरात करो। इमाम को ख़ास हिदायत है कि वो क़िरात के वक़्त मुक़्तदियों का ज़रूर लिहाज़ रखे।

बाब 54 : सूरह क़मर में अल्लाह तआला का

फ़र्मान, और हमने क़ुर्आन मजीद को समझने या याद करने के लिये आसान किया है। और नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया हर शख़्स के लिये वही अम्र आसान किया गया है जिसके लिये वो पैदा किया गया है। मयस्सर बमा'नी तैयार किया गया (आसान किया गया) और मुजाहिद ने कहा कि, यस्सर्नल क़ुर्आन बिलिसानिक का मतलब ये है कि हमने उसकी क़िरात को तेरी ज़ुबान से आसान कर दिया। या'नी उसका पढ़ना तुझ पर आसान कर दिया। और मतरल वर्राक़ ने कहा कि, वलक़द यस्सर्नल क़ुर्आन लिज़िक्रि फ़हल मिम् मुद्दकिर का मतलब ये है कि क्या कोई शख़्स है जो इल्मे क़ुर्आन की ख़्वाहिश

٥٤- باب قَوْلِ اللهِ تَعَالَى: ﴿وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ﴾

وَقَالَ النَّبِيُّ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: ((كُلٌّ مُيَسَّرٌ لِمَا خُلِقَ لَهُ)) يُقَالُ مُيَسَّرٌ: مُهَيَّأٌ. وَقَالَ مُجَاهِدٌ: يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ بِلِسَانِكَ هَوَّنَّا قِرَاءَتَهُ عَلَيْكَ. وَقَالَ مَطَرٌ الْوَرَّاقُ ﴿وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُدَّكِرٍ﴾ قَالَ: هَلْ مِنْ طَالِبِ عِلْمٍ فَيُعَانَ

रखता हो फिर अल्लाह उसकी मदद न करे?

عَلَيْهِ؟.

7551. हमसे अबू मअ़मर ने बयान किया, कहा हमसे अ़ब्दुल वह्हाब ने, उनसे यज़ीद ने कि मुझसे मुत़र्रिफ़ बिन अ़ब्दुल्लाह ने बयान किया, उनसे इमरान (रज़ि.) ने कि मैंने कहा या रसूलल्लाह! फिर अ़मल करने वाले किस लिये अ़मल करते हैं? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि हर शख़्स के लिये उस अ़मल में आसानी पैदा कर दी गई है जिसके लिये वो पैदा किया गया है। (राजेअ: 6596)

٧٥٥١- حَدَّثَنَا أَبُو مَعْمَرٍ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَارِثِ، قَالَ يَزِيدُ: حَدَّثَنِي مُطَرِّفُ بْنُ عَبْدِ اللهِ عَنْ عِمْرَانَ قَالَ: قُلْتُ يَا رَسُولَ اللهِ فِيمَا يَعْمَلُ الْعَامِلُونَ؟ قَالَ: ((كُلٌّ مُيَسَّرٌ لِمَا خُلِقَ لَهُ)). [راجع: ٦٥٩٦]

तश्रीह: या'नी जिसकी क़िस्मत में जन्नत है उसको ख़ुद बख़ुद आमाले ख़ैर की तौफ़ीक़ होगी वो नेक कामों में राग़िब होगा और जिसकी तक़्दीर में दोज़ख़ है उसको नेक कामों से नफ़रत और बुरे कामों की रग़बत होगी। ये दोनों अहादीष़ ऊपर गुज़र चुकी हैं। यहाँ लफ़्ज़ तैसीर की मुनासबत से उनको लाए।

7552. मुझसे मुहम्मद बिन बश्शार ने बयान किया, कहा हमसे ग़ुन्दर ने बयान किया, उनसे शुअ़बा ने बयान किया, उनसे मंसूर और आ'मश ने, उन्होंने सअ़द बिन उ़बैदह से सुना, उन्होंने अबू अ़ब्दुर्रहमान असलमी से और उन्होंने अ़ली (रज़ि.) से कि नबी करीम (ﷺ) एक जनाज़ा में थे। फिर आपने एक लकड़ी ली और उससे ज़मीन कुरेदने लगे। फिर फ़र्माया तुममें कोई ऐसा नहीं जिसका ठिकाना जहन्नम में या जन्नत में लिखा न जा चुका हो। स़हाबा ने कहा फिर उसी पर भरोसा न कर लें? आँहज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि हर शख़्स के लिये उस अ़मल में आसानी पैदा कर दी गई जिसके लिये वो पैदा किया गया है। फिर आप (ﷺ) ने ये आयत पढ़ी कि जिस शख़्स ने बख़्शिश की और तक़्वा इख़्तियार किया। आख़िर आयत तक। (राजेअ: 1362)

٧٥٥٢- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَّارٍ، حَدَّثَنَا غُنْدَرٌ، حَدَّثَنَا شُعْبَةُ، عَنْ مَنْصُورٍ وَالأَعْمَشِ سَمِعَا سَعْدَ بْنَ عُبَيْدَةَ عَنْ أَبِي عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ عَلِيٍّ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ، أَنَّهُ كَانَ فِي جَنَازَةٍ فَأَخَذَ عُودًا فَجَعَلَ يَنْكُتُ فِي الأَرْضِ فَقَالَ: ((مَا مِنْكُمْ مِنْ أَحَدٍ إِلاَّ كُتِبَ مَقْعَدُهُ مِنَ النَّارِ أَوْ مِنَ الْجَنَّةِ)) قَالُوا: أَلاَ نَتَّكِلُ؟ قَالَ: ((اعْمَلُوا فَكُلٌّ مُيَسَّرٌ ﴿فَأَمَّا مَنْ أَعْطَى وَاتَّقَى﴾)) الآيَةَ. [راجع: ١٣٦٢]

बाब 55 : अल्लाह तआ़ला का सूरह बुरूज में

٥٥- باب قَوْلِ اللهِ تَعَالَى:

फ़र्माना, बल्कि वो अ़ज़ीमुल क़ुर्आन है जो लोहे महफ़ूज़ में है। और सूरह तूर में फ़र्माया। और तूर पहाड़ की क़सम और किताब की क़सम जो मस्तूर है। क़तादा ने कहा मस्तूर के मा'नी लिखी गई और उसी से है यस्तरून या'नी लिखते हैं। फ़ी उम्मिल किताब या'नी मज्मूई अस़ल किताब में ये जो सूरह क़ाफ़ में फ़र्माया मा यल्फ़िज़ु मिन क़ौल इसका मा'नी ये है कि जो बात वो मुँह से निकालता है उसके नामा-ए-आमाल में लिख दी जाती है और इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा नेकी और बदी ये फ़रिश्ता लिखता है। युहर्रिफ़ूनल कलिमा अ़न मवाज़िइही लफ़्ज़ों को

﴿بَلْ هُوَ قُرْآنٌ مَجِيدٌ فِي لَوْحٍ مَحْفُوظٍ﴾ ﴿وَالطُّورِ وَكِتَابٍ مَسْطُورٍ﴾ قَالَ قَتَادَةُ: مَكْتُوبٌ يَسْطُرُونَ: يَخُطُّونَ فِي أُمِّ الْكِتَابِ جُمْلَةِ الْكِتَابِ وَأَصْلِهِ ﴿مَا يَلْفِظُ مِنْ قَوْلٍ﴾ مَا يَتَكَلَّمُ مِنْ شَيْءٍ إِلاَّ كُتِبَ عَلَيْهِ وَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: يُكْتَبُ الْخَيْرُ وَالشَّرُّ يُحَرِّفُونَ: يُزِيلُونَ، وَلَيْسَ أَحَدٌ

يُزِيلُ لَفْظَ كِتَابٍ مِنْ كُتُبِ اللهِ عَزَّ وَجَلَّ، وَلَكِنَّهُمْ يُحَرِّفُونَهُ يَتَأَوَّلُونَهُ عَلَى غَيْرِ تَأْوِيلِهِ دِرَاسَتُهُمْ تِلاَوَتُهُمْ وَاعِيَةٌ: حَافِظَةٌ وَتَعِيهَا تَحْفَظُهَا وَأُوحِيَ إِلَيَّ هَذَا الْقُرْآنُ ﴿لأُنْذِرَكُمْ بِهِ﴾ يَعْنِي أَهْلَ مَكَّةَ وَمَنْ بَلَغَ هَذَا الْقُرْآنُ فَهُوَ لَهُ نَذِيرٌ.

وَقَالَ لِي خَلِيفَةُ بْنُ خَيَّاطٍ:

अपने ठिकानों से हटा देते हैं क्योंकि अल्लाह की किताब में से कोई लफ़्ज़ बिलकुल निकाल डालना ये किसी से नहीं हो सकता मगर उसमे तहरीफ़ करते हैं या'नी ऐसे मा'नी बयान करते हैं जो उसके अस्ली मा'नी नहीं हैं। व इन कुन्ना अन दिरासतिहिम में दिरासत से तिलावत मुराद है वाइयतुन जो सूरह हाक़्क़ा में है याद रखने वाला। तईहा या'नी याद रखे और ये जो (सूरह यूनुस में है) व अवहा इला हाजल क़ुर्आन लिउन्ज़िरकुम बिही में कुम से ख़ित़ाब मक्का वालों को है वमम्बलग़ से दूसरे तमाम जहान के लोग उन सबको ये क़ुर्आन डराने वाला है।

इमाम बुख़ारी (रह.) ने कहा मुझसे ख़लीफ़ा बिन ख़य्यात़ ने बयान किया।

٧٥٥٣- حَدَّثَنَا مُعْتَمِرٌ سَمِعْتُ أَبِي عَنْ قَتَادَةَ عَنْ أَبِي رَافِعٍ عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((لَمَّا قَضَى اللهُ الْخَلْقَ كَتَبَ كِتَابًا عِنْدَهُ غَلَبَتْ -أَوْ قَالَ- سَبَقَتْ رَحْمَتِي غَضَبِي فَهُوَ عِنْدَهُ فَوْقَ الْعَرْشِ)).

[راجع: ٣١٩٤]

7553. कहा हमसे मुअ़तमिर ने बयान किया, कहा मैंने अपने वालिद सुलैमान से सुना, उन्होंने क़तादा से, उन्होंने अबू राफ़ेअ़ से, उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से, उन्होंने आँहज़रत (ﷺ) से, आपने फ़र्माया अल्लाह तआ़ला जब ख़िल्क़त का पैदा करना ठहरा चुका (या जब ख़ल्क़त पैदा कर चुका) तो उसने अ़र्श के ऊपर अपने पास एक किताब लिख रखी उसमें यूँ है मेरी रहमत मेरे ग़ुस्से पर ग़ालिब है या मेरे ग़ुस्से से आगे बढ़ चुकी है। (राजेअ़ : 3194)

तश्रीह : हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने अपनी किताब बाब ख़ल्क़ अफ़आलुल इ़बाद में कहा कि क़ुर्आन मजीद याद किया जाता है, लिखा जाता है, जुबानों से पढ़ा जाता है। ये क़ुर्आन अल्लाह का कलाम है जो मख़्लूक़ नहीं है। मगर काग़ज़, स्याही और जिल्द ये सब चीज़ें मख़्लूक़ हैं। मज़्मूने बाब में कुतुबे साबिक़ा की तह़रीफ़ का ज़िक्र है आजकल जो नुस्ख़े तौरात और इंजील के नाम से दुनिया में मशहूर हैं उनमे तह़रीफ़े लफ़्ज़ी और मा'नी दोनों त़रह से मौजूद है। इसीलिये उस पर इज्माअ़ है कि उन किताबों का मुत़ालआ़ और इश्तिग़ाल मज़बूत ईमान लोगों के लिये जाइज़ है जो उनका रद्द करने और जवाब देने के लिये पढ़ें। आख़िर में लोहे महफ़ूज़ का ज़िक्र है। लोहे महफ़ूज़ अ़र्श के पास है। हदीष़ से ये भी निकलता है कि सिफ़ाते अफ़आल जैसे रहम और ग़ज़ब वग़ैरह ये हादिष़ हैं वरना क़दीम में साबक़ियत और मस्बूक़ियत नहीं हो सकता।

٧٥٥٤- حَدَّثَنِي مُحَمَّدُ بْنُ أَبِي غَالِبٍ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ إِسْمَاعِيلَ، حَدَّثَنَا مُعْتَمِرٌ سَمِعْتُ أَبِي يَقُولُ: حَدَّثَنَا قَتَادَةُ أَنَّ أَبَا رَافِعٍ حَدَّثَهُ أَنَّهُ سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ يَقُولُ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللهِ ﷺ يَقُولُ:

7554. मुझसे मुहम्मद बिन ग़ालिब ने बयान किया, उनसे मुहम्मद बिन इस्माईल बस़री ने बयान किया, कहा हमसे मुअ़तमिर बिन सुलैमान ने बयान किया, उन्होंने अपने वालिद से सुना, उन्होंने कहा कि हमसे क़तादा ने बयान किया, उनसे अबू राफ़ेअ़ ने हदीष़ बयान की, उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैंने रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना, आपने फ़र्माया कि अल्लाह तआ़ला ने मख़्लूक़ को पैदा करने

से पहले एक मक्तूब लिखा कि मेरी रहमत मेरे ग़ज़ब से बढ़कर है। चुनाँचे ये उसके पास अ़र्श के ऊपर लिखा हुआ है।

(राजेअ़ : 3194)

((إِنَّ اللهَ كَتَبَ كِتَابًا قَبْلَ أَنْ يَخْلُقَ الْخَلْقَ، إِنَّ رَحْمَتِي سَبَقَتْ غَضَبِي فَهُوَ مَكْتُوبٌ عِنْدَهُ فَوْقَ الْعَرْشِ)).

[راجع: ٣١٩٤]

तशरीह : अगली रिवायत में ये गुज़रा कि ख़िल्क़त पैदा करने के बाद ये किताब लिखी तो दोनो में इख़्तिलाफ़ हुआ। इसका जवाब यही दिया है कि क़ब्ल ख़ल्क़ से यही मुराद है कि पहले ख़िल्क़त का पैदा करना ठान लिया अगर ये मुराद हो कि पैदा कर चुका तब भी मुवाफ़क़त इस तरह होगी कि इस हदीष़ में पैदा करने से पहले किताब लिखने से ये मुराद है कि किताब लिखने का इरादा किया सो वो तो अल्लाह तआ़ला अज़ल में कर चुका था और ख़िल्क़त पैदा करने से पहले वो मौजूद था।

बाब 56 : सूरह स़ाफ़्फ़ात में अल्लाह तआ़ला का इर्शाद,

٥٦- باب قَوْلِ اللهِ تَعَالَى:

और अल्लाह ने पैदा किया तुम्हें और जो कुछ तुम करते हो। और सूरह क़मर में फ़र्माया, बिला शुब्हा हमने हर चीज़ को अंदाज़े से पैदा किया। और मुस़व्विरों से कहा जाएगा कि जो तुमने पैदा किया है उसमें जान डालो। और सूरह आराफ़ में फ़र्माया, बिलाशुब्हा तुम्हारा मालिक अल्लाह वो है जिसने आसमान और ज़मीन को छः दिनों में पैदा किया। फिर ज़मीन आसमन बनाकर तख़्त पर चढ़ा। रात को दिन से ढाँपता है और दिन को रात से। दोनों एक दूसरे के पीछे पीछे दौड़ते रहते है और सूरज और चाँद और सितारे उसके हुक्म के ताबेअ़ हैं। हाँ सुन लो! उसी ने सब कुछ बनाया उसी का हुक्म चलता है। अल्लाह की ज़ात बहुत बाबरकत है जो सारे जहान का पालने वाला है। सुफ़यान बिन उ़ययना ने कहा कि अल्लाह ने अम्र को ख़ल्क़ से अलग किया तब तो यूँ फ़र्माया। और नबी करीम (ﷺ) ने ईमान को भी अ़मल कहा। अबू ज़र्र और अबू हुरैरह (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) से पूछा गया कि कौनसा अ़मल सबसे अफ़ज़ल है तो आपने फ़र्माया कि अल्लाह पर ईमान लाना और अल्लाह के रास्ते में जिहाद करना। और अल्लाह तआ़ला ने फ़र्माया, ये बदला है उसका जो वो करते थे। क़बीला अ़ब्दुल क़ैस के वफ़द ने आँहज़रत (ﷺ) से कहा कि हमें आप चंद ऐसे जामेअ़ आ़माल बता दें जिन पर अगर हम अ़मल कर लें तो जन्नत मे दाख़िल हो जाएँ तो आँहज़रत (ﷺ) ने उन्हें ईमान, शहादत, नमाज़ क़ायम करने और ज़कात देने का हुक्म दिया। उसी तरह आपने इन सब चीज़ो को अ़मल

﴿وَاللهُ خَلَقَكُمْ وَمَا تَعْمَلُونَ﴾ ﴿إِنَّا كُلَّ شَيْءٍ خَلَقْنَاهُ بِقَدَرٍ﴾ وَيُقَالُ لِلْمُصَوِّرِينَ: أَحْيُوا مَا خَلَقْتُمْ ﴿إِنَّ رَبَّكُمُ اللهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَى عَلَى الْعَرْشِ يُغْشِي اللَّيْلَ النَّهَارَ يَطْلُبُهُ حَثِيثًا، وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ وَالنُّجُومَ مُسَخَّرَاتٍ بِأَمْرِهِ أَلاَ لَهُ الْخَلْقُ وَالأَمْرُ تَبَارَكَ اللهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ﴾ قَالَ ابْنُ عُيَيْنَةَ بَيَّنَ اللهُ الْخَلْقَ مِنَ الأَمْرِ لِقَوْلِهِ تَعَالَى: ﴿أَلاَ لَهُ الْخَلْقُ وَالأَمْرُ﴾ وَسَمَّى النَّبِيُّ ﷺ الإِيمَانَ عَمَلاً قَالَ أَبُو ذَرٍّ: وَأَبُو هُرَيْرَةَ سُئِلَ النَّبِيُّ ﷺ أَيُّ الأَعْمَالِ أَفْضَلُ؟ قَالَ: إِيمَانٌ بِاللهِ وَجِهَادٌ فِي سَبِيلِهِ، وَقَالَ: جَزَاءً بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ وَقَالَ وَفْدُ عَبْدِ الْقَيْسِ لِلنَّبِيِّ ﷺ مُرْنَا بِجُمَلٍ مِنَ الأَمْرِ إِنْ عَمِلْنَا بِهَا دَخَلْنَا الْجَنَّةَ، فَأَمَرَهُمْ بِالإِيمَانِ وَالشَّهَادَةِ، وَإِقَامِ الصَّلاَةِ وَإِيتَاءِ الزَّكَاةِ فَجَعَلَ ذَلِكَ كُلَّهُ عَمَلاً.

क़रार दिया।

तश्रीह : बाब के ज़ैल में ज़िक्रकर्दा आयात और अहादीष़ से अहले ह़दीष़ का मज़हब ष़ाबित होता है कि बन्दा और उसके अफ़्आल दोनों अल्लाह के मख़्लूक़ हैं क्योंकि ख़ालिक़ अल्लाह के सिवा और कोई नहीं है फ़र्माया **हल मन ख़ालिक़ुन ग़ैरुल्लाह** और इमाम बुख़ारी (रह़.) ख़ल्क़ अफ़्आलुल इबाद में ये ह़दीष़ लाए हैं। **इन्नल्लाह यस्नउ कुल्ल स़ानिइन व स़न्अतह** या'नी अल्लाह ही हर कारीगर और उसकी कारीगरी को बनाता है और रद्द हुआ मुअतज़िला और क़दरिया और शिया का जो बन्दे को अपने अफ़्आल का ख़ालिक़ बताते हैं।

7555. हमसे अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्दुल वह्हाब ने बयान किया, उनसे अ़ब्दुल वह्हाब ने, कहा हमसे अय्यूब सुख़्तियानी ने, उनसे अबू क़िलाबा ने और क़ासिम तमीमी ने, उनसे ज़ुहदम ने बयान किया कि उस क़बीला जरम और अश्अ़रियों में मुहब्बत और भाईचारा का मामला था। एक मर्तबा हम अबू मूसा अश्अ़री (रज़ि.) के पास थे कि उनके पास खाना लाया गया, जिसमें मुर्ग़ी का गोश्त भी था। उनके यहाँ एक बनी तैमुल्लाह का भी शख़्स था। ग़ालिबन वो अ़रब के ग़ुलाम लोगों में से था। अबू मूसा (रज़ि.) ने उसे अपने पास बुलाया तो उसने कहा कि मैंने मुर्ग़ी को गंदगी खाते देखा है और उसी वक़्त मैंने क़सम खा ली कि इसका गोश्त नहीं खाऊँगा। अबू मूसा (रज़ि.) ने कहा, सुनो, मैं तुमसे इसके बारे में एक ह़दीष़ रसूले करीम (ﷺ) की बयान करता हूँ। मैं आँह़ज़रत (ﷺ) के पास अश्अ़रियों के कुछ अफ़राद को लेकर ह़ाज़िर हुआ और हमने आपसे सवारी मांगी। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि वल्लाह! मैं तुम्हारे लिये सवारी का इंतिज़ाम नहीं कर सकता, न मेरे पास कोई ऐसी चीज़ है जिसे मैं तुम्हें सवारी के लिये दूँ। फिर आँह़ज़रत (ﷺ) के पास माले ग़नीमत में से कुछ ऊँट आए तो आँह़ज़रत (ﷺ) ने हमारे बारे में पूछा कि अश्अ़री लोग कहाँ हैं? चुनाँचे आपने हमें पाँच उ़म्दह ऊँट देने का हुक्म दिया। हम उन्हें लेकर चले तो हमने अपने अ़मल के बारे में सोचा कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने क़सम खाई थी कि हमें सवारी के लिये कोई जानवर नहीं देंगे और न आपके पास कोई ऐसा जानवर है जो हमें सवारी के लिये दें। हमने सोचा कि आँह़ज़रत (ﷺ) अपनी क़सम भूल गये हैं वल्लाह! हम कभी फ़लाह नहीं पा सकते। हम वापस आँह़ज़रत (ﷺ) के पास पहुँचे और आपसे सूरतेह़ाल के बारे में पूछा। आपने फ़र्माया कि मैं तुम्हें ये सवारी नहीं दे रहा हूँ बल्कि अल्लाह दे रहा है। वल्लाह! मैं अगर कोई क़सम खा लेता

٧٥٥٥- حَدَّثَنَا عَبْدُ اللَّهِ بْنُ عَبْدِ الْوَهَّابِ، حَدَّثَنَا عَبْدُ الْوَهَّابِ، حَدَّثَنَا أَيُّوبُ عَنْ أَبِي قِلاَبَةَ وَالْقَاسِمِ التَّمِيمِيِّ، عَنْ زَهْدَمٍ قَالَ: كَانَ بَيْنَ هَذَا الْحَيِّ مِنْ جَرْمٍ وَبَيْنَ الأَشْعَرِيِّينَ وُدٌّ وَإِخَاءٌ فَكُنَّا عِنْدَ أَبِي مُوسَى الأَشْعَرِيِّ فَقُرِّبَ إِلَيْهِ الطَّعَامُ فِيهِ لَحْمُ دَجَاجٍ، وَعِنْدَهُ رَجُلٌ مِنْ بَنِي تَيْمِ اللَّهِ كَأَنَّهُ مِنَ الْمَوَالِي فَدَعَاهُ إِلَيْهِ فَقَالَ: إِنِّي رَأَيْتُهُ يَأْكُلُ شَيْئًا فَقَذِرْتُهُ، فَحَلَفْتُ لاَ آكُلُهُ فَقَالَ: هَلُمَّ فَلأُحَدِّثْكَ عَنْ ذَاكَ إِنِّي أَتَيْتُ النَّبِيَّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِي نَفَرٍ مِنَ الأَشْعَرِيِّينَ نَسْتَحْمِلُهُ قَالَ: وَاللَّهِ لاَ أَحْمِلُكُمْ وَمَا عِنْدِي مَا أَحْمِلُكُمْ فَأُتِيَ النَّبِيُّ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ بِنَهْبِ إِبِلٍ فَسَأَلَ عَنَّا فَقَالَ: أَيْنَ النَّفَرُ الأَشْعَرِيُّونَ؟ فَأَمَرَ لَنَا بِخَمْسِ ذَوْدٍ غُرِّ الذُّرَى ثُمَّ انْطَلَقْنَا قُلْنَا : مَا صَنَعْنَا حَلَفَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ لاَ يَحْمِلُنَا وَمَا عِنْدَهُ مَا يَحْمِلُنَا، ثُمَّ حَمَلَنَا تَغَفَّلْنَا رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، يَمِينَهُ وَاللَّهِ لاَ نُفْلِحُ أَبَدًا، فَرَجَعْنَا إِلَيْهِ فَقُلْنَا لَهُ: فَقَالَ: ((لَسْتُ أَنَا أَحْمِلُكُمْ وَلَكِنَّ اللَّهَ حَمَلَكُمْ،

إِنِّي وَاللَّهِ لاَ أَحْلِفُ عَلَى يَمِينٍ فَأَرَى غَيْرَهَا خَيْرًا مِنْهَا إِلاَّ أَتَيْتُ الَّذِي هُوَ خَيْرٌ وَتَحَلَّلْتُهَا)).

[راجع: ٣١٣٣]

हूँ और फिर भलाई उसके ख़िलाफ़ में देखता हूँ तो वही करता हूँ जिसमें भलाई होती है और क़सम का कफ़्फ़ारा दे देता हूँ। (राजेअ़ : 3133)

इस ह़दीष़ को इमाम बुख़ारी (रह़.) यहाँ इसलिये लाए कि बन्दे के अफ़्आल का ख़ालिक़ अल्लाह तआला है जब तो आँह़ज़रत (ﷺ) ने ये फ़र्माया कि मैंने तुमको सवारी नहीं दी बल्कि अल्लाह तआला ने दी है।

٧٥٥٦- حَدَّثَنَا عَمْرُو بْنُ عَلِيٍّ، حَدَّثَنَا أَبُو عَاصِمٍ، حَدَّثَنَا قُرَّةُ بْنُ خَالِدٍ، حَدَّثَنَا أَبُو جَمْرَةَ الضُّبَعِيُّ قُلْتُ لاِبْنِ عَبَّاسٍ فَقَالَ: قَدِمَ وَفْدُ عَبْدِ الْقَيْسِ عَلَى رَسُولِ اللَّهِ ﷺ فَقَالُوا: إِنَّ بَيْنَنَا وَبَيْنَكَ الْمُشْرِكِينَ مِنْ مُضَرَ وَإِنَّا لاَ نَصِلُ إِلَيْكَ إِلاَّ فِي أَشْهُرٍ حُرُمٍ فَمُرْنَا بِجُمَلٍ مِنَ الأَمْرِ إِنْ عَمِلْنَا بِهِ دَخَلْنَا الْجَنَّةَ وَنَدْعُو إِلَيْهَا مَنْ وَرَاءَنَا قَالَ: ((آمُرُكُمْ بِأَرْبَعٍ وَأَنْهَاكُمْ عَنْ أَرْبَعٍ، آمُرُكُمْ بِالإِيمَانِ بِاللَّهِ وَهَلْ تَدْرُونَ مَا الإِيمَانُ بِاللَّهِ؟ شَهَادَةُ أَنْ لاَ إِلَهَ إِلاَّ اللَّهُ، وَإِقَامُ الصَّلاَةِ وَإِيتَاءُ الزَّكَاةِ، وَتُعْطُوا مِنَ الْمَغْنَمِ الْخُمُسَ وَأَنْهَاكُمْ عَنْ أَرْبَعٍ:- لاَ تَشْرَبُوا فِي الدُّبَّاءِ، وَالنَّقِيرِ، وَالظُّرُوفِ الْمُزَفَّتَةِ وَالْحَنْتَمَةِ)). [راجع: ٥٣]

7556. हमसे अ़म्र ने बयान किया, उनसे अबू आ़सिम ने बयान किया, उनसे क़ुर्रह बिन ख़ालिद ने बयान किया, उनसे अबू जम्रह ज़ब्ई ने बयान किया कि मैंने इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से पूछा तो आपने फ़र्माया कि क़बीला अ़ब्दुल क़ैस का वफ़्द रसूलुल्लाह (ﷺ) के पास आया और उन्होंने कहा कि हमारे और आपके बीच क़बीला मुज़र के मुश्रिकीन ह़ाइल हैं और हम आपके पास सिर्फ़ हुर्मत वाले महीनों में ही आ सकते हैं। इसलिये आप कुछ ऐसे जामेअ़ अह़काम हमें बता दीजिए कि अगर हम उन पर अ़मल करें तो जन्नत मे जाएँ और उनकी त़रफ़ उन लोगों को दा'वत दें जो हमारे पीछे हैं। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि मैं तुम्हें चार कामों का हुक्म देता हूँ और चार कामों से रोकता हूँ। मैं तुम्हें ईमान बिल्लाह का हुक्म देता हूँ। तुम्हें मा'लूम है कि ईमान बिल्लाह क्या है? ये इसकी गवाही देना कि अल्लाह के सिवा और कोई मा'बूद नहीं और नमाज़ क़ायम करने और ज़कात देने और ग़नीमत में से पाँचवाँ ह़िस्सा देने का हुक्म देता हूँ और तुम्हें चार कामों से रोकता हूँ। ये कि कद्दू की तूम्बी और लकड़ी के कुरेदे हुए बर्तन और रोग़नी बर्तनों और सब्ज़ लाखी बर्तनों में मत पिया करो। (राजेअ़ : 53)

यहाँ ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) इस ह़दीष़ को इसलिये लाए कि इसमें ईमान को अ़मल फ़र्माया तो ईमान भी और आ़माल की त़रह़ मख़्लूक़े इलाही होगा।

٧٥٥٧- حَدَّثَنَا قُتَيْبَةُ بْنُ سَعِيدٍ، حَدَّثَنَا اللَّيْثُ، عَنْ نَافِعٍ، عَنِ الْقَاسِمِ بْنِ مُحَمَّدٍ، عَنْ عَائِشَةَ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهَا أَنَّ رَسُولَ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ قَالَ: ((إِنَّ أَصْحَابَ

7557. हमसे क़ुतैबा बिन सईद ने बयान किया, उनसे लैष़ ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ़ ने बयान किया, उनसे क़ासिम बिन मुह़म्मद ने बयान किया और उनसे उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रत आइशा (रज़ि.) ने बयान किया कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया इन तस्वीरों को बनाने वालों पर क़यामत में अ़ज़ाब

होगा और उनसे कहा जाएगा कि तुमने जो बनाया है उसे ज़िन्दा भी करके दिखाओ। (राजेअ : 2105)

هَذِهِ الصُّوَرِ يُعَذَّبُونَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ، وَيُقَالُ لَهُمْ : أَحْيُوا مَا خَلَقْتُمْ؟)). [راجع: ٢١٠٥]

तश्रीह : मुराद वो लोग हैं जो तस्वीरें बनाना हलाल जानकर बनाएँ वो काफ़िर ही होंगे। कुछ ने कहा ये बतौरे ज़जा के है क्योंकि मुसलमान हमेशा के लिये अ़ज़ाब में नहीं रह सकता।

7558. हमसे अबुन नोअ़मान ने बयान किया, उनसे हम्माद बिन ज़ैद ने बयान किया, उनसे अय्यूब ने बयान किया, उनसे नाफ़ेअ ने बयान किया और उनसे हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया उन तस्वीरों के बनाने वालों पर क़यामत में अ़ज़ाब होगा और उनसे कहा जाएगा कि तुमने जो बनाया है उसे ज़िन्दा भी करो। (राजेअ : 5951)

٧٥٥٨- حَدَّثَنَا أَبُو النُّعْمَانِ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ زَيْدٍ، عَنْ أَيُّوبَ عَنْ نَافِعٍ عَنِ ابْنِ عُمَرَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((إِنَّ أَصْحَابَ هَذِهِ الصُّوَرِ يُعَذَّبُونَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَيُقَالُ لَهُمْ: أَحْيُوا مَا خَلَقْتُمْ؟)). [راجع: ٥٩٥١]

7559. हमसे मुहम्मद बिन अ़ला ने बयान किया, उनसे इब्ने फ़ुज़ैल ने बयान किया, उनसे अ़म्मारा ने, उनसे अबू ज़रआ़ ने और उन्होंने अबू हुरैरह (रज़ि.) से सुना, उन्होंने बयान किया कि मैंने नबी करीम (ﷺ) से सुना, आपने फ़र्माया कि अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल फ़र्माता है कि उस शख़्स से ह़द से तजावुज़ करने वाला और कौन है जो मेरी मख़्लूक़ की तरह मख़्लूक़ बनाता है। ज़रा वो चने का दाना पैदा करके तो देखें या गेहूँ का एक दाना या जौ का एक दाना पैदा करके तो देखें। (राजेअ : 5953)

٧٥٥٩- حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ الْعَلاَءِ، حَدَّثَنَا ابْنُ فُضَيْلٍ، عَنْ عُمَارَةَ، عَنْ أَبِي زُرْعَةَ سَمِعَ أَبَا هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: سَمِعْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَقُولُ: ((قَالَ اللهُ عَزَّ وَجَلَّ وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ ذَهَبَ يَخْلُقُ كَخَلْقِي، فَلْيَخْلُقُوا ذَرَّةً أَوْ لِيَخْلُقُوا حَبَّةً أَوْ شَعِيرَةً)). [راجع: ٥٩٥٣]

तश्रीह : इस ह़दीष़ में ये इशारा है कि हैवान बनाना तो बहुत मुश्किल है भला नबातात ही की क़िस्म से जो हैवान से अदनातर है कोई दाना या फल बना दें। जब नबातात भी नहीं बना सकते तो भला हैवान क्या बनाएँगे?

बाब 57 : फ़ासिक़ और मुनाफ़िक़ की तिलावत का बयान और उसका बयान कि उनकी आवाज़ और उनकी तिलावत उनके ह़लक़ से नीचे नहीं उतरती

٥٧- باب قِرَاءَةِ الْفَاجِرِ وَالْمُنَافِقِ وَأَصْوَاتُهُمْ وَتِلاَوَتُهُمْ لاَ تُجَاوِزُ حَنَاجِرَهُمْ

तश्रीह : इस बाब को लाकर इमाम बुख़ारी (रह़.) ने वही मसला ष़ाबित किया कि तिलावते क़ुर्आन के मग़ाइर है जब तो तिलावत तिलावत में फ़र्क़ वारिद है क्या मा'नी मुनाफ़िक़ और फ़ासिक़ की तिलावत को फ़र्माया कि वो ह़लक़ के नीचे नहीं उतरती। बस तिलावत मख़्लूक़ होगी और क़ुर्आन ग़ैर मख़्लूक़ है।

7560. हमसे हुदबा बिन ख़ालिद ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे हम्माम ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे क़तादा

٧٥٦٠- حَدَّثَنَا هُدْبَةُ بْنُ خَالِدٍ، حَدَّثَنَا هَمَّامٌ، حَدَّثَنَا قَتَادَةُ، حَدَّثَنَا أَنَسٌ عَنْ أَبِي

مُوسَى رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ ((مَثَلُ الْمُؤْمِنِ الَّذِي يَقْرَأُ الْقُرْآنَ كَالأُتْرُجَّةِ، طَعْمُهَا طَيِّبٌ وَرِيحُهَا طَيِّبٌ وَالَّذِي لاَ يَقْرَأُ كَالتَّمْرَةِ طَعْمُهَا طَيِّبٌ، وَلاَ رِيحَ لَهَا وَمَثَلُ الْفَاجِرِ الَّذِي يَقْرَأُ الْقُرْآنَ، كَمَثَلِ الرَّيْحَانَةِ رِيحُهَا طَيِّبٌ وَطَعْمُهَا مُرٌّ وَمَثَلُ الْفَاجِرِ الَّذِي لاَ يَقْرَأُ الْقُرْآنَ كَمَثَلِ الْحَنْظَلَةِ طَعْمُهَا مُرٌّ وَلاَ رِيحَ لَهَا)).

[راجع: ٥٠٢٠]

ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे अनस (रज़ि.) ने और उनसे अबू मूसा (रज़ि.) ने कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया उस मोमिन की मिषाल जो क़ुर्आ न पढ़ता है ऐसी तरन्ज की सी है कि उसका मज़ा भी अच्छा और उसकी ख़ुश्बू भी उम्दह है और वो मोमिन जो नहीं पढ़ता खजूर की तरह है कि उसका मज़ा अच्छा है लेकिन उसमें ख़ुश्बू नहीं और उस फ़ासिक़ की मिषाल जो क़ुर्आन पढ़ता है मुर्दा की तरह है कि उसकी ख़ुश्बू तो अच्छी है लेकिन उसका मज़ा कड़वा है और जो फ़ासिक़ क़ुर्आन नहीं पढ़ता उसकी मिषाल उन्दराइन की सी है कि उसका मज़ा भी कड़वा है और कोई ख़ुश्बू भी नहीं।

(राजेअ : 5020)

तश्रीह : क़ुर्आन शरीफ़ अपनी जगह पर अल्लाह का कलाम ग़ैर मख़्लूक़ और बेहतर है मगर इसके पढ़ने वालों के अमल और अख़्लाक़ की बिना पर रैहान और उन्दराइन के फलों की तरह हो जाता है। मोमिने मुख़्लिस के क़ुर्आन शरीफ़ पढ़ने का फ़ेअल ख़ुश्बूदार रैहान की तरह है और मुनाफ़िक़ के क़ुर्आन शरीफ़ पढ़ने का फ़ेअल उन्दराइन के फल की तरह है। पस क़ुर्आन शरीफ़ अल्लाह का कलाम ग़ैर मख़्लूक़ और मोमिन और मुनाफ़िक़ का तिलावत करना उनका फ़ेअल है जो फ़ेअल होने के तौर पर मख़्लूक़ है। ऐसा ही ख़ारजियों के क़ुर्आन शरीफ़ पढ़ने का हाल है जो ह़दीषे ज़ैल में बयान हो रहा है। उनका ये फ़ेअल मख़्लूक़ है। किताब ख़ल्क़े अफ़आलुल इबाद का यही ख़ुलाम़ा है कि बन्दों के अफ़आल सब मख़्लूक़ हैं जिनका ख़ालिक़ अल्लाह तबारक व तआला है।

٧٥٦١- حَدَّثَنَا عَلِيٌّ، حَدَّثَنَا هِشَامٌ، أَخْبَرَنَا مَعْمَرٌ، عَنِ الزُّهْرِيِّ ح. وَحَدَّثَنِي أَحْمَدُ بْنُ صَالِحٍ، حَدَّثَنَا عَنْبَسَةُ، قَالَ حَدَّثَنَا يُونُسُ، عَنِ ابْنِ شِهَابٍ، أَخْبَرَنِي يَحْيَى بْنُ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ أَنَّهُ سَمِعَ عُرْوَةَ بْنَ الزُّبَيْرِ قَالَتْ عَائِشَةُ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا سَأَلَ أُنَاسٌ النَّبِيَّ ﷺ عَنِ الْكُهَّانِ فَقَالَ: ((إِنَّهُمْ لَيْسُوا بِشَيْءٍ)) فَقَالُوا: يَا رَسُولَ اللهِ فَإِنَّهُمْ يُحَدِّثُونَ بِالشَّيْءِ يَكُونُ حَقًّا قَالَ: فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((تِلْكَ الْكَلِمَةُ مِنَ الْحَقِّ يَخْطَفُهَا الْجِنِّيُّ فَيُقَرْقِرُهَا فِي أُذُنِ وَلِيِّهِ، كَقَرْقَرَةِ الدَّجَاجَةِ فَيَخْلِطُونَ

7561. हमसे अ़ली बिन अ़ब्दुल्लाह मदीनी ने बयान किया, कहा हमसे हिशाम बिन यूसुफ़ ने बयान किया, कहा हमको मअ़मर ने ख़बर दी, उन्हें ज़ुह्री ने (दूसरी सनद) इमाम बुख़ारी (रह़.) ने कहा और मुझसे अह़मद बिन स़ालेह़ ने बयान किया, कहा हमसे अ़म्बसा बिन ख़ालिद ने बयान किया, कहा हमसे यूनुस बिन यज़ीद ऐली ने बयान किया, उनसे इब्ने शिहाब ने, कहा मुझको यह़्या बिन उ़र्वा बिन ज़ुबैर ने ख़बर दी कि उन्होंने उ़र्वा बिन ज़ुबैर से सुना कि आइशा (रज़ि.) ने कहा कि कुछ लोगों ने नबी करीम (ﷺ) से काहिनों के बारे में सवाल किया। आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया उनकी किसी बात का ए'तिबार नहीं। एक स़ाह़ब ने कहा कि या रसूलल्लाह! ये लोग कुछ ऐसी बातें बयान करते हैं जो स़ह़ीह़ षाबित होती हैं। बयान किया कि उस पर आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया कि ये स़ह़ीह़ बात वो है जिसे शैतान फ़रिश्तों से सुनकर याद रख लेता है और फिर उसे मुर्ग़ी के कट कट करने की तरह (काहिनों) के कानों में डाल देता है

और ये उसमें सौ से ज़्यादा झूठ मिलाते हैं। (राजेअ : 3217)

فِيهِ أَكْثَرَ مِنْ مِائَةِ كَذْبَةٍ)).

[راجع: ٣٢١٧]

तश्रीह : इस ह़दीष़ की मुनासबत बाब से ये कि काहिन कभी शैत़ान के ज़रिये से अल्लाह का कलाम उड़ा लेता है लेकिन उसका बयान करना या'नी तिलावत करना मुराद है मुनाफ़िक़ की तिलावत की त़रह़ उसी त़रह़ शैत़ान का तिलावत करना ह़ालाँकि फ़रिश्ते जो इस कलाम की तिलावत करते हैं वो अच्छी है तो मा'लूम हुआ कि तिलावत क़ुर्आन से मग़ाइर है।

7562. हमसे अबुन नोअमान मुह़म्मद बिन फ़ज़ल सदौसी ने बयान किया, उन्होंने कहा हमसे मह्दी बिन मैमून अज़्दी ने बयान किया, कहा कि मैंने मुह़म्मद बिन सीरीन से सुना, उनसे मअ़बद बिन सीरीन ने बयान किया और उनसे अबू सईद ख़ुदरी (रज़ि.) ने बयान किया कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया कुछ मश्रिक़ की त़रफ़ से निकलेंगे और क़ुर्आन पढ़ेंगे जो उनके हलक़ से नीचे नहीं उतरेगा। ये लोग दीन से इस त़रह़ दूर फेंक दिये जाएँगे जैसे तीर फेंक दिया जाता है। फिर ये लोग कभी दीन में नहीं वापस आ सकते। यहाँ तक कि तीर अपनी जगह (ख़ुद) वापस आ जाए। पूछा गया कि उनकी अ़लामत क्या होगी? तो फ़र्माया कि उनकी अ़लामत सर मुँडवाना होगी।

٧٥٦٢- حَدَّثَنَا أَبُو النُّعْمَانِ، حَدَّثَنَا مَهْدِيُّ بْنُ مَيْمُونٍ، سَمِعْتُ مُحَمَّدَ بْنَ سِيرِينَ يُحَدِّثُ عَنْ مَعْبَدِ بْنِ سِيرِينَ، عَنْ أَبِي سَعِيدٍ الْخُدْرِيِّ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: ((يَخْرُجُ نَاسٌ مِنْ قِبَلِ الْمَشْرِقِ وَيَقْرَؤُونَ الْقُرْآنَ لاَ يُجَاوِزُ تَرَاقِيَهُمْ، يَمْرُقُونَ مِنَ الدِّينِ كَمَا يَمْرُقُ السَّهْمُ مِنَ الرَّمِيَّةِ، ثُمَّ لاَ يَعُودُونَ فِيهِ حَتَّى يَعُودَ السَّهْمُ إِلَى فُوقِهِ)) قِيلَ مَا سِيمَاهُمْ؟ قَالَ: ((سِيمَاهُمُ التَّحْلِيقُ - أَوْ قَالَ - التَّسْبِيدُ)).

तश्रीह : इराक़ मदीना से मश्रिक़ की त़रफ़ है वहाँ से ख़ारजी निकले जिन्होंने ह़ज़रत अ़ली (रज़ि.) और ह़ज़रत उ़ष्मान (रज़ि.) के ख़िलाफ़ बग़ावत की।

ह़दीष़ क़र्नुश्शैत़ान वाली अस़ली मा'नों में : जिन लोगों को रसूलुल्लाह (ﷺ) की ह़दीष़ के समझने का मल्का है और जो ह़दीष़ शरीफ़ के नुकात व दक़ाइक़ और रमूज़ से कमाहक़्क़हु, वाक़िफ़ और आश्ना हैं वो जानते हैं किरसूलुल्लाह (ﷺ) का कलामे पाक पुरमग़ज़ और मुख़्तस़र होता है क्योंकि ख़ैरुल कलाम मा क़ल्ला व दल्ला कलाम की ख़ूबी यही है कि मुख़्तस़र हो लेकिन मुकम्मल और पुरअज़ मत़ालिब हो।

इस उसूल को मद्देनज़र रखकर अब अह़ादीषे ज़ैल पर ग़ौर करने से ह़क़ीक़ते अम्र ज़ाहिर हो जाएगी और त़ालिबाने ह़क़ पर ये बात रोज़े रोशन की त़रह़ अ़याँ हो जाएगी कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मश्रिक़ की जानिब रुख़ करते हुए जिस फ़ित्ने और जिस शर्र और ज़लज़ले के ख़त़रात से हमें ख़बर दी दरअस़ल इस इशारे का मुशारुन इलैह इराक़ और हिन्दुस्तान है क्योंकि इराक़ तो फ़ित्नों और शरारतों की वजह से वो नाम पैदा कर चुका है कि शायद ही दुनिया-ए-इस्लाम के मुमालिक में कोई ऐसा बदतरीन फ़ित्नाख़ेज़ मुल्क हो। इसीलिये रसूलुल्लाह (ﷺ) ने बस़रा के ज़िक्र पर फ़र्माया कि **बिहा ख़स्फ़ुन व क़ज़्फ़ुन व रज्फ़ुन व क़ौमुन यबीतून व यस्बहून क़िरदतंव व ख़नाज़ीर** (अबू दाऊद) या'नी यहाँ के लोग ऐसे शरीर और बदआमाल होंगे और ऐसे मत्लूनुल मिज़ाज, बुज़दिल और ढुलमुल यक़ीन और नाक़ाबिले ए'तिमाद व ए'तिबार होंगे कि रात को कुछ ख़्यालात लेकर सोयेंगे और दिन को कुछ और ही बनकर उठेंगे, बन्दर और सूअर होंगे।

या तो आ़दात में दय्यूष़, बेग़ैरत और मक्कार, या शक्ल व शबाहत में। और यही वजह है कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने इराक़ के लिये दुआ़ न फ़र्माई ह़ालाँकि आपको बार बार तवज्जह भी दिलाई गई कि ह़ुज़ूर! हमारी वहाँ से बहुत सी ह़ाजतें

और ज़रूरतें हैं बल्कि उसके जवाब में आँहज़रत (ﷺ) ने उस मुल्क की ग़द्दारी और फ़ितन परवरी के बारे में खरी खरी बातें फ़र्मा दीं। चुनाँचे हदीष़ शरीफ़ में है।

अनिल हसन क़ाल, क़ाल रसूलुल्लाहि (ﷺ) अल्लाहुम्म बारिक लना फ़ी मदीनतिना, अल्लहुम्म बारिक लना फ़ी शामिना, अल्लाहुम्म बारिक लना फ़ी यमनिना फ़क़ाल रजुलुन या रसूलल्लाह (ﷺ) फ़ल इराक़ु फ़इन्न फ़ीहा मीरतुना व फ़ीहा हाजातुना फसकत षुम्म अआद अलैहि फ़सकत फ़क़ाल बिहा यत्लुउ क़र्नुश्शैतानि व हुनाकज़्ज़लाज़िल वल्फ़ितन. (क़ंज़ुल उ़म्माल, जिल्द हफ़्तुम पेज नं. 16)

हज़रत हसन रावी हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने मदीना और शाम व यमन के लिये दुआ-ए-बरकत की तो एक स़हाबी दस्त बस्ता अ़र्ज़ करने लगा। हुज़ूर (ﷺ) इराक़ के लिये भी दुआ कर दें क्योंकि वो मुल्क हमारे पड़ौस ही में है और हम वहाँ से ग़ल्ला लाते हैं और तिजारत वग़ैरह और बहुत से हमारे कारोबार उस मुल्क से रहते हैं तो आप (ﷺ) ख़ामोश रहे। जब उस शख़्स़ ने इस़रार के साथ अ़र्ज़ किया तो हुज़ूर (ﷺ) ने उसके जवाब में फ़र्माया कि उस मुल्क से शैतान का सींग तुलूअ होगा और फ़ित्ने और फ़साद ऐसे होंगे जिनसे उम्मते मरहूमा के अफ़राद में एक ज़लज़ला सा पैदा हो जाएगा तो चूँकि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने स़ाफ़ तौर पर स़हाबा के ज़हननशीन करा दिया था कि इराक़ ही मंशा-ए-फ़ितन और बाइ़ष़े फ़साद फ़िल्उम्मत होगा इसलिये यही वजह है कि वो (स़हाबा) और उनके बाद वाले लोग और शारेहीने हदीष़ जो अपनी वसीअ़ुन नज़री और तबह्हुरुल इल्मी और मा'लूमात की बिना पर नजद वाली हदीष़ का अस़ली मतलब समझकर अ़वाम के सामने पेश करते रहे और उन्होंने नजद मुल्क इराक़ को क़रार दिया, जो दरअस़ल है भी।

मैं हैरान हूँ कि आजकल के लोग किस क़दर तंगख़्याल और मुतअ़स्सिब वाक़ेअ हुए हैं कि ज़रा से इख़्तिलाफ़ पर राफ़िज़ियों की सी तबर्राबाज़ी पर उतर आते हैं और अपनी अस्लियत से बेख़बर होकर मोमिनीने क़ानितीन और स़ालिहीन पर ला'नतें भेजना शुरू कर देते हैं हालाँकि उन ही का हम ख़्याल शैख़ दहलान अपनी किताब के पेज 36 पर लिखता है, 'ऐसे अम्र के सबब से जिसका षुबूत बराहीन से है अहले इस्लाम की तक्फ़ीर पर इक़्दाम कैसे हो सकता है (तो फिर क्यूँ करते हो? **आदमु यक़ूलून बिअफ़्वाहिहिम मा लैस फ़ी क़ुलूबिहिम**) हदीषे स़हीह में है कि जो शख़्स़ अपने मुसलमान भाई को काफ़िर कहकर पुकारेगा तो उनमें से एक पर बात लौटेगी। अगर वो ऐसा है जब तो उस पर पड़ेगी वरना कहने वाले पर। इस बारे में एहतियात वाजिब है। अहले क़िब्ला में से किसी पर हुक्म कुफ़्र ऐसे ही अम्र के बाइ़ष़ किया जाए जो वाज़ेह और क़ातेअ हो।' (अद्दारुस सनिय्या फ़ी रद्दिल वहाबिया उर्दू पेज 36)

मैं हैरान हूँ कि इतनी बय्यन स़राहत के होते हुए फिर ये लोग क्यूँ नजद हाय नजद पुकारते हुए शैख़ मुहम्मद बिन अ़ब्दुल वह्हाब (रह.) और उनके जानशीनों को कोस रहें हैं। मुलाहिज़ा हो कि जो नजद फ़ित्नों का बाइ़ष़ है हक़ीक़त मे वो इराक़ ही है और जो मश्रिक़ है वो हिन्दुस्तान में दारुत तक्फ़ीर बरेली है। कन्ज़ुल उ़म्माल में अमाकिने मज़्मूमा के तहत में आता है, **मुसनद उ़मर अबी मजाज़ क़ाल अरादु उ़मरु अल्ला यदउ मिस्रम्मिनल अम्सार इला अताहू फ़क़ाल लहू कअ़ब ला तातिल इराक़ फ़इन्न फ़ीहि तिस्अ़त अशारिश्शर.** (क़ंज़ुल उ़म्माल) या'नी हज़रत उ़मर (रज़ि.) ने अपने अ़हदे हुकूमत में तमाम मुमालिके महरूसा का दौरा करने का इरादा ज़ाहिर किया तो हज़रत कअ़ब ने अ़र्ज़ किया कि आप हर जगह जाएँ लेकिन इराक़ की तरफ़ न जाएँ क्योंकि वहाँ तो नौ हिस़्से बुराई और शर्र मौजूद है।

अबू इदरीस कहते हैं कि हज़रत उ़मर (रज़ि.) जब शाम में तशरीफ़ फ़र्मा हुए तो आपने वहाँ से फिर इराक़ जाने का इरादा ज़ाहिर किया तो हज़रत क़अ़ब अह्बार ने अ़र्ज किया, या अमीरुल मोमिनीन! अल्लाह की पनाह वहाँ जाने का ख़्याल तक न फ़र्माएँ। हज़रत उ़मर (रज़ि.) ने बराहे इस्तिअ़जाब इस मुख़ालफ़त और कराहते इराक़ का सबब पूछा तो हज़रत कअ़ब (रज़ि.) ने जवाब में अ़र्ज़ किया कि हुज़ूर वहाँ तो नौ हिस़्से शर्र और फ़साद है। सख़्त सख़्त बीमारियाँ और सरकश और गुमराह कुन जिन्न, हारूत मारूत हैं और वही शैतान का मर्कज़ है और उसी जगह उसने अण्डे बच्चे दे रखे हैं।

अल्लाह अल्लाह! किस क़दर पुर मग़ज़ कलाम है जो खुले खुले और स़ाफ़ अल्फ़ाज़ में रसूलुल्लाह (ﷺ) के इर्शाद **बिहा यत्लउ क़र्ननुश शैतान व हुनाकल ज़िल्ज़ाल वल फ़ितन** की स़ाफ़ साफ़ स़राहत कर रहे हैं।

अगर ख़ुद इल्म नहीं था तो किसी अहले इल्म ही से इस ह़दीष़ की तशरीह़ और मत़लब पूछ लेते, माशा अल्लाह पंजाब और हिन्दुस्तान में हज़ारों उ़लमा अहले ह़दीष़ मौजूद हैं। **(कष़्ष़रल्लाहु सवादहुम व अ़म्मा फ़ुयूज़हुम)** और फिर इस कोताह नज़री पर फ़ख़्र करते हुए ये लोग शारेह़ीने ह़दीष़ रह़िमहुमुल्लाह तआ़ला अज्मईन पर ले दे करते और उन पर ए'तिराज़ात करते और आवाज़ कसते हैं।

अब इन तस्रीह़ात के होते हुए फिर नजद ही को क़र्नुश शैत़ान का मत़्लअ़ रटे जाना कौनसा इंस़ाफ़ और कहा की अ़क़्लमंदी है जबकि मुत़ालआ़-ए-ह़दीष़ से ये स़ाफ़ साफ़ इल्म हो चुका है कि फ़ित्ना और शर्र और क़र्नुल शैत़ान इराक़ ही से त़ुलूअ़ होंगे जहाँ बस़रा, बग़दाद और कूफ़ा वग़ैरह शहर हैं।

क़ाबिले ग़ौर बात : ये है कि एक त़रफ़ तो रसूलुल्लाह (ﷺ) नजद के लोगों या'नी बनू तमीम की ता'रीफ़ व तौस़ीफ़ फ़र्माते हैं और उनको ग़य्यूर मुजाहिदीन और अ़क़्लमंद का ख़ित़ाब दे रहे हैं। **मुस्नद अबी हुरैरह ज़ुकिरलिल क़बाइल इन्द रसूलिल्लाहि (ﷺ) फ़क़ालू या रसूलुल्लाह! फ़मा तक़ूलु फी तमीम काल (ﷺ) याबल्लाहु लितमीमिन इल्ला ख़ैरन अष़्बत अक़्दाम इज़ामल हाम्मि रजअल अहलाम हफ़बतु हम्राउ ला यज़ुर्रू मन नावाहा अशद्दुन्नासि अलदज्जालि आख़िरज़्ज़मानि (रिजालुहू ष़िकातुन)** (कंज़ुल उ़म्माल जिल्द 6 पेज नं. 144)

या'नी रसूलुल्लाह (ﷺ) के सामने क़बाइले अ़रब का ज़िक्र हो रहा था। पहले हवाज़िन और बनू आ़मिर का तज़्किरा आया फिर लोगों ने बनी तमीम के बारे में इस्तिफ़्सार किया तो हु ज़ूर (ﷺ) ने अल्फ़ाज़े ज़ैल मे उनकी ता'रीफ़ व तक्रीम की कि अल्लाह तआ़ला ने बेहतरी को उस क़ौम के लिये वाजिब कर दिया (अल्लाह अल्लाह) ये लोग (या'नी नजदी) ग़ैर मुतज़लज़ल अच्छी त़बीअ़तों के मालिक, बड़े सर वाले अ़क़्लमंद बा तदबीर मुकम्मल सियासतदाँ और सुर्ख़ टीला वाले हैं। कोई त़ाक़त ख़्वाह कितनी ही चीख़ पुकार करे और उनके बरख़िलाफ़ हर चंद प्रोपेगण्डा फैलाए उनका बाल भी बीका नहीं कर सकेगी। हाँ हाँ वो अख़ीर ज़माने के दज्जाल पर जो लोग उनके बरख़िलाफ़ निहायत मुतअ़स्सिब और ज़िद्दी बद अख़्लाक़ होंगे और झगड़ालू इस्लाम के दुश्मन और फ़ितन दोज़ होंगे निहायत सख़्ती से शआ़इरे इस्लाम की पाबन्दी करते हुए बावजूद हज़ारों धमकियों और गीदड़ भभकियों के ग़ालिब रहेंगे। **व ज़हर अम्रुल्लाहि वहुम कारिहून** या'नी अख़ीर ज़माने में दज्जाल के मुक़ाबिल बड़े मज़बूत़ और न डरने वाले लोग होंगे। **वला यख़ाफ़ूना लौमत लाइमिन.**

ग़ौर करिये कि अख़ीर ज़माने में जबकि ह़क़ीक़ी इस्लाम की ता'लीम दुनिया में बहुत कम होगी, जहल व बात़िल, कुफ़्र व शिर्क, पीरपरस्ती और क़ुब्बापरस्ती आ़म होगी। क़दम क़दम पर एक आदमी लग़्ज़िश खाएगा। .... और वो ज़माना होगा जिसके बारे में रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, **मन तम्सक बि सुन्नती इन्द फ़साद उम्मती फ़लहू अज्रुन मिअत शहीद** या'नी उस वक़्त जो सुन्नते रसूलुल्लाह (ﷺ) पर अ़मल पैरा होंगे उनमें का हर एक दर्जा में सौ शहीद के बराबर होगा। ग़ौर करें कि ऐसे ज़माने मे जिन लोगों की रसूलुल्लाह (ﷺ) ता'रीफ़ करें कि अख़ीर ज़माने में दज्जाल पर बहुत सख़्त होंगे। भला अल्लाह के यहाँ उनकी कहाँ तक क़द्र होगी और वो किस आ़ली रुत्बे के लोग होंगे।

ये अम्र मुह़ताज बयान नहीं है और हर एक मुख़ालिफ़ मुत़ाबिक़ इस बात का क़ाइल है कि मौजूदा अहले नजद और मुजद्दिद इस्लाम शैख़ मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल वह्हाब नूरुल्लाह मुरक़दा बनी तमीम ही से हैं और अब मौजूदा सुल्त़ान अयदहुल्लाहु बिनस़्रही और उनकी क़ौम नजदी भी बनी तमीम ही से हैं उनका ज़बरदस्त मुआ़निदीन दह़लान लिखता है कि, ये बात स़राह़त से मा'लूम हो चुकी है कि ये मग़रूर (या'नी मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल वह्हाब रह़.) तमीम से है। और सय्यद अ़ल्वी जलाउल ज़ुलाम में लिखता है। ये मफ़रूर मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल वह्हाब क़बीला बनी तमीम से है। नीज़ मौलवी क़ुतुबुद्दीन फ़िरंगी मह़ल लखनऊ वाले भी अपने रिसाला आशूबा नजद में तस्लीम करते हैं कि शैख़ मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल वह्हाब अनारुल्लाह बरहाना क़बीला बनी तमीम में से हैं। इसके अ़लावा तारीख़ी त़ौर पर भी ये बात रोज़े रोशन की त़रह ज़ाहिर है कि नजदी क़ौम बनी तमीम में से है। इन ह़ालात के बाद ग़ौर कीजिए कि ह़दीष़ मे इस क़ौम को रसूलुल्लाह (ﷺ) ने किस बुलंद पाया की क़ौम फ़र्माया कि,

अ़न अबी हुरैरत क़ाल मा ज़िल्तु उहिब्बु बनी तमीम मुन्ज़ु ष़लाष़िन समिअ़तु रसूलल्लाहि (ﷺ)(ﷺ)

यक़ूलु फ़ीहिम हुम अशद्दु उम्मती अलदज्जालि व क़ाल व जाअत सदक़ातुहुम फ़क़ाल हाज़िही सदक़ातु क़ौमिना व कानत सबीयतुम मिन्हुम इन्द आयशत फ़क़ाल इअतक़ीहा फ़इन्नहा मि वलदि इस्माईल. (बुख़ारी अहमदी पेज 445) अबू हुरैरह जैसे जलीलुल क़द्र सहाबी फ़र्माते हैं कि भाई मैं तो बनी तमीम को बड़ा अज़ीज़ रखता हूँ। इसकी वुजूहात ज़ैल हैं।

(1) रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उनके हक़ में फ़र्माया कि ये लोग मेरी तमाम उम्मत में से दज्जाल पर सख़्त होंगे।

(2) जब बनू तमीम की ज़कात का माल जमा होकर आया तो हुज़ूर (ﷺ) ने फ़र्माया कि आज हमारी क़ौम के सदक़ात आए हैं।

(3) ये लोग (नजदी) औलाद इस्माईल अलैहिस्सलाम में से हैं। षुबूत ये है कि आइशा सिद्दीक़ा (रज़ि.) के पास एक नजदी लौण्डी थी। रसूलुल्लाह (ﷺ) को जब इल्म हुआ आपने फ़र्माया ऐ आइशा! इसे आज़ाद कर दे क्योंकि ये इस्माईल (अलैहि.) से है।

अब ग़ौर करें कि एक तरफ़ तो आँहुज़ूर (ﷺ) ने नजदियो को औलादे इस्माईल से फ़र्माया। पक्के मुसलमान, अक़्लमंद, मुदब्बिर और बा सियासत का ख़िताब दिया। वहाँ के लोगों को जन्नत की बशारत दी। **जाअ रजुलुन इला रसूलिल्लाहि (ﷺ) मिन अहलि नजद फ़इज़ा हुव यस्अलु अनिल इस्लाम फ़क़ाल (ﷺ) मन सर्रहू अंय्यन्जुर इला रजुलिम्मिन अहलिल जन्नति फ़ल यन्ज़ुर इला हाज़िही।**

या'नी एक नजदी ने रसूलुल्लाह (ﷺ) से चंद सवालात किये और उनके जवाबात तसल्ली बख़्श पाकर जब जा रहा था तो रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया कि जो शख़्स जन्नती आदमी को देखकर ख़ुश होना चाहे वो इस नजदी को देख ले।

क्या ये हो सकता है कि इसी ज़ुबान से रसूलुल्लाह (ﷺ) उस क़ौम की मज़म्मत करें और इस क़ौम को क़र्नुश शैतान से ता'बीर करें और उनके लिये दुआ न करें (ख़ुदारा इंसाफ़) कि इन रस्मी हनफ़ियों बरेलवियों, रज़ाइयों, दीदारियों, और जमाअतियों **(हदाहुमुल्लाहु इला सिरातिम्मुस्तक़ीम)** ने रसूलुल्लाह (ﷺ) की यही इज़्ज़त और यही क़द्र की कि पब्लिक के सामने अयाँ कर दिया कि हाँ रसूलुल्लाह (ﷺ) (मआज़ अल्लाह) एक तरफ़ तो एक शख़्स की मुँह पर ता'रीफ़ करते थे और जब वो चला जाता फिर मज़म्मत और उसके लिये बद्दुआ। आह षुम्म आह। **फ़मा लिहाउलाइल क़ौम ला यकादूना यफ़्क़हूना हदीषा।** (इंसाफ़ इंसाफ़)

बाब 58 : सूरह अंबिया में अल्लाह का फ़र्मान

और क़यामत के दिन मैं ठीक तराज़ू रखूंगा और आदमियों के आमाल और अक़्वाल उनमें तौले जाएँगे। मुजाहिद ने कहा कि क़िस्तास का लफ़्ज़ जो क़ुर्आन शरीफ़ में आया है रूमी ज़ुबान का लफ़्ज़ है इसके मा'नी तराज़ू के हैं क़िस्त बिल कसर मसदर है मुक़्सित के मा'नी आदिल और मुन्सिफ़ के हैं और सूरह जिन्न में जो क़ासितून का लफ़्ज़ आया है वो क़ासित की जमा है मुराद ज़ालिम और गुनहगार हैं।

٥٨ - بَابُ قَوْلِ اللهِ تَعَالَى:

﴿وَنَضَعُ الْمَوَازِينَ الْقِسْطَ لِيَوْمِ الْقِيَامَةِ﴾ وَأَنَّ أَعْمَالَ بَنِي آدَمَ وَقَوْلَهُمْ يُوزَنُ، وَقَالَ مُجَاهِدٌ: الْقُسْطَاسُ الْعَدْلُ بِالرُّومِيَّةِ وَيُقَالُ الْقِسْطُ: مَصْدَرُ الْمُقْسِطِ وَهُوَ الْعَادِلُ، وَأَمَّا الْقَاسِطُ: فَهُوَ الْجَائِرُ.

तश्रीह : हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने इस बाब में मीज़ान या'नी आमाल के तौले जाने का इष्बात किया है। अहले सुन्नत का इस पर इज्माअ है और मुअतज़िला ने इसका इंकार किया है। अब इसमें इख़्तिलाफ़ है कि ये अफ़आल या अक़्वाल ख़ुद तौलने जाएँगे या उनके दफ़्तर। कुछ ने कहा कि क़यामत में आमाल और अफ़आल मुजस्सम

नज़र आएँगे तो उनके ख़ुद तोलने से क्या मानेअ़ है। मीज़ान के षुबूत में बहुत सी आयात और अह़ादीष़ हैं जैसे **वल्वज़्नु यौमइज़िनिल्हक़्क़ु** और **फ़मन ष़क़ुलत मवाज़ीनुहू** वग़ैरह ह़ाफ़िज़ स़ाह़ब फ़र्माते हैं, **व हका हम्बलुब्नु इस्हाक़ फ़ी किताबिस्सुन्नह मिन अहमद इब्नि हम्बल अन्नहू क़ाल रद्दन अला मन अन्करल मीज़ान मा मअ़नाहू क़ालल्लाहू व नजउल्मवाज़ीनल क़िस्त लियौमिल्क़ियामति व जकरन्नबिय्यु (ﷺ) अल्मीज़ान यौमल्क़ियामति फ़मन रद्द अलन्नबिय्यि (ﷺ) फ़क़द रद्द अलल्लाहि अज़्ज़ व जल्ल.** या'नी ह़ज़रत इमाम अह़मद बिन हंबल ने मुंकिरीने मीज़ान के रद्द में फ़र्माया कि फिर इस इर्शादे इलाही का क्या मा'नी है कि मैं क़यामत के दिन इंस़ाफ़ की तराज़ू क़ायम करूंगा और नबी करीम (ﷺ) ने क़यामत के दिन मीज़ान का ज़िक्र किया। पस जिसने मीज़ान का इंकार करके ख़ुद रसूले करीम (ﷺ) के इर्शाद को रद्द किया उसने अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल के इर्शाद को भी झुठलाया। अल ग़र्ज़ मीज़ान का वक़ूअ़ क़यामत के दिन ह़क़ और सच है। लफ़्ज़ क़िस्त़ क़ाफ़ के कसरा के साथ इंस़ाफ़ के मा'नी में है जिससे मुक़्सित़ है जिसके मा'नी आ़दिल के हैं और क़स्त़ काफ़ के ज़बर के साथ मा'नी में ज़ुल्म और जबर के है जिससे लफ़्ज़ क़ासितून सूरह जिन्न में वारिद हुआ है जिसके मा'नी ज़ालिमून के हैं। क़िस्त़ासुल मुस्तक़ीम के ज़ेर के साथ और पेश के साथ **व क़रा बिहिमा फ़िल मशहूर** या'नी मशहूर क़िरात में इसे दोनों त़रह़ पढ़ा गया है। **कुल्तु अम्मा अय्यकून मिनल्क़िस्ति बिल्कस्रि व अम्मा अय्यकून मिनल्क़िस्ति बिल्फ़रहिल्लज़ी हुव बिमअ़नल्जौर** (फ़त्हुल बारी) **वल्हक़्क़ु इन्द अहलिस्सुन्नह अन्नल्मआमाल हीनइज़िन तज्सदु और तअजलु फ़ी अज्सामिन फ़तुसीरू आमालुत्ताइईन फ़ी सूरतिन हसनतिन व आमालुल्मुसईन फ़ी सूरतिन क़बीहतिन षुम्मतूज़नु व रज्जहल क़ुर्तुबी अन्नल्लज़ी यूज़नुस्साहाइफ़ुल्लती तुक्तबु फ़ीहल्आमालु व नुकिल अन इब्नि उमर क़ाल तूज़नु सहाइफ़ुल आमालि क़ाल फ़इजा ष़बत हाज़ा फ़स्सुहुफ़ु अज्सामुन फयर्तफ़िउल इश्कालु यक़्वीहि हदीषुल्बिताक़तिल्लज़ी अख़्रजहुत्तिर्मिज़ी व हस्सनहू वल्हाकिम व सह्हहू व फीहि व तूज़उस्सिजिल्लातु फी कफतिन वल्बिताक़तु फी कफतिन इन्तिहा वस्सहीहु अन्नल आमाल हियल्लती तूज़नु व कद अख़रज अबू दाऊद व त्तिर्मिज़ी व सह्हहू इब्नु हिब्बान अन अबिद्दरदा अनिन्नबिय्यि (ﷺ) क़ाल यूज़नु फ़िल्मीज़ानि यौमल्क़ियामति फ़ी ख़ल्क़िन हसनिन.** (पेज नं. 802)

ख़ुलास़ा इस इ़बारत का ये है कि अहले सुन्नत के नज़दीक ह़क़ यही है कि आ़माल उस दिन जिस्म इख़्तियार कर लेंगे। पस नेकोकारों के आ़माले ह़सना बेहतरीन ख़ूबस़ूरत शक्ल इख़्तियार कर लेंगे और बदकारो के आ़माल बुरी सूरत इख़्तियार कर लेंगे। क़ुर्तुबी ने उसे तरजीह़ दी है कि आमाल के स़ह़ाइफ़ तौले जाएँगे जिनमें वो आ़माल लिखे हुए होंगे। क़ुर्तुबी ने कहा कि पस जब ये ष़ाबित हुआ तो रफ़ए-इश्काल इस त़रह़ है कि स़ह़ाइफ़ अज्साम इख़्तियार कर लेंगे और ह़दीषे बत़ाक़ा भी इसकी त्ताईद करती है। जिसमे ये है कि पस दफ़ातिरे आमाल तराज़ू में रखे जाएँगे। जो एक पलड़े में होगा। जिसमें कलिमा त़य्यिबा लिखा होगा और वो सिज्जिलात पर ग़ालिब आ जाएगा और स़ह़ीह़ यही है कि आ़माल ही तौले जाएँगे जैसा कि तिर्मिज़ी और अबू दाऊद वग़ैरह की ह़दीष़ से ष़ाबित है कि मीज़ान में सबसे ज़्यादा वज़नदार बन्दे के अख़्लाक़े ह़सना होंगे।

क़ाल शैख़ुना सिराजुद्दीन अल्बल्क़ीनी फ़ी कलामिही अला मुनासबति अबवाबिन सहीहुल बुख़ारी अल्लज़ी नुकिल्तहू अन्हु फ़ी अवाख़िरिल्मुकद्दम ति लिमा कान अस्लुल इस्मति अव्वलन व आख़िरन हुव तौहीदुल्लाहि फ़ख़तम बिकिताबित्तौहीदि व कान आख़िरूल उमूरिल्लती यज्हरू बिहल मुफ़्लिहु मिनल ख़ासिरि नक़्ल ष़क़ुलल मवाज़ीन व ख़िफ़्फ़तहा फजअलहू आख़िर तराजिमिल्किताबि फीहिल्हदीषु अल्आमालु बिन्नियाति व जालिक फ़िदुनिया व ख़तम बिअन्नल्आमाल तूज़नु यौमल्क़ियामति व अशार इला अन्नहू इन्नमा यष़्क़ुलु मिन्हा मा कान बिन्नियतिल व तख़फ़ीफ़ुन व हष़्ष़ अलज़्ज़िकरिल मज्कूर लिमहब्बतिर्रहमानि लहू वल्ख़िफ़्फ़तु बिन्निस्बति लिमा यतअल्लकु बिल्अमलि वष़्ष़कलि बिन्निस्बति लिइज्हारिष़्ष़वाबि व जाअ तर्तीबु हाज़ल हदीषि अला उस्लूबिन अज़ीमिन व हुव अन्न हुब्बर्रब्बि साबिक़ुन व ज़िक्रुल अब्दि व ख़िफ़्फ़तु ज़िक्रि अला लिसानिही क़ाल षुम्म बय्यन मा फ़ीहा मिनष़्ष़वाबिल् अज़ीमिन्नाफ़िइ यौमल क़ियामति इन्तिहा मुलख़्ख़सन. या'नी हमारे शैख़ सिराजुद्दीन बल्क़ीनी ने कहा कि स़ह़ीह़

बुख़ारी के अब्वाब की मुनासबत जिसे मैंने अपने अवाख़िर मुक़द्दमा में लिखा है कि उनमें अव्वल और आख़िर अ़ज़्मत (पाकीज़गी) को मल्हूज़ रखा गया है जिसकी अस़्ल अल्लाह की तौहीद है। इसीलिये आपने किताब को किताबुत्तौहीद पर ख़त्म किया और आख़िर अम्र जिससे नाजी वग़ैरह नाजी में फ़र्क़ होगा वो हश्र के दिन मीज़ान का भारी और हल्का होना है इसको इसीलिये किताब का आख़िरी बाब क़रार दिया। पस ह़दीष़, **इन्नमल आमालु बिन्नियात** से किताब को शुरू किया और **निय्यतों** का ता'ल्लुक़ दुनिया से है और उस पर ख़त्म किया कि आ़माल क़यामत के दिन वज़न किये जाएँगे उसमें उधर इशारा है कि वही आ़माले ख़ैर मीज़ान में वज़नी होंगे जो ख़ालिस़ निय्यत के साथ रज़ा-ए-इलाही के लिये किये गये और ह़दीष़ जो इस बाब के तह़त मज़्कूर हुई उसमें तर्ग़ीब है और तख़्फ़ीफ़ भी है और उसमें ज़िक्र मज़्कूर की मुह़ब्बत रह़मान के लिये रग़बत दिलाता है और अ़मल की निस्बत से उसमें हल्कापन भी है कि मुख़्तस़र से अल्फ़ाज़ पर ष़वाबे अ़ज़ीम और वज़ने कष़ीर का ज़िक्र है और इस ह़दीष़ की तर्तीब भी एक बेहतरीन उस्लूब के साथ रखी गई कि रब तबारक व तआ़ला की मुह़ब्बत उन हल्के अल्फ़ाज़ को पूरे तौर पर ह़ासिल है। और बन्दे का अल्लाह को याद करने के अल्फ़ाज़ का ज़ुबान पर हल्का होना। फिर ये बयान कि उनका ष़वाबे अ़ज़ीम बन्दे को क़यामत के दिन कितना ह़ासिल होगा।

7563. हमसे अह़मद बिन इश्काब ने बयान किया, कहा हमसे मुह़म्मद बिन फ़ुज़ैल ने, उनसे अ़म्मारा बिन क़अ़क़ाअ़ ने, उन्होंने अबू ज़ुरआ़ से, उन्होंने ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) से उन्होंने कहा कि आँह़ज़रत (ﷺ) ने फ़र्माया दो कलिमे ऐसे हैं जो अल्लाह तबारक व तआ़ला को बहुत ही पसंद हैं जो ज़ुबान पर हल्के हैं और क़यामत के दिन आ़माल की तराज़ू में बोझल और बावज़न होंगे वो कलिमाते मुबारका ये हैं सुब्ह़ानल्लाह वबिह़म्दिही सुब्ह़ानल्लाहिल अ़ज़ीम।

(राजेअ़ : 6406)

٧٥٦٣- حَدَّثَنِي أَحْمَدُ بْنُ إِشْكَابَ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ فُضَيْلٍ، عَنْ عُمَارَةَ بْنِ الْقَعْقَاعِ، عَنْ أَبِي زُرْعَةَ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ النَّبِيُّ ﷺ: ((كَلِمَتَانِ حَبِيبَتَانِ إِلَى الرَّحْمَنِ خَفِيفَتَانِ عَلَى اللِّسَانِ، ثَقِيلَتَانِ فِي الْمِيزَانِ، سُبْحَانَ اللهِ وَبِحَمْدِهِ، سُبْحَانَ اللهِ الْعَظِيمِ)).

[راجع: ٦٤٠٦]

तश्रीह : **कलिमतानि ह़बीबतान इलर्रह़मानि ख़फ़ीफ़तानि अलल्लिसानि ष़क़ीलतानि फ़िल्मीज़ानि सुब्ह़ानल्लाहि व बिह़म्दिही सुब्ह़ानल्लाहिल्अ़ज़ीम.** इस ह़दीष़ को लाकर ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) ने तराज़ू का इष़्बात किया और आख़िर किताब में इस ह़दीष़ को इसलिये बयान किया कि मोमिन के मामलात जो दुनिया के बारे में थे वो सब वज़ने आ़माल पर ख़त्म होंगे उसके बाद या दोज़ख़ में चंद रोज़ के लिये जाना है या बहिश्त में हमेशा के लिये रहना। ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) का कमाल है कि आपने किताब को ह़दीष़ **इन्नमल आमालु बिन्नियात** से शुरू किया इसलिये कि हर अ़मल की मशरूइयत निय्यत ही से होती है और निय्यत ही पर ष़वाब मिलता है और इस ह़दीष़ पर ख़त्म किया क्योंकि वज़ने आ़माल का इंतिहाई नतीजा है। ग़र्ज़ ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) ने अपनी इस किताब में अ़जीब अ़जीब लताइफ़ और ज़राइफ़ रखे हैं जो ग़ौर के बाद आपकी कमाले अ़क़्ल और वफ़ूरे फ़हम और वक़्ते नज़र और बारीकी इस्तिम्बात़ पर दलालत करते हैं कोई शक नहीं कि ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह़.) की ये किताबुज जामिउ़स्सह़ीह़ बतलाती है कि वो फ़न्ने फ़िक़ह में इमामुल फ़ुक़हा और फ़न्ने ह़दीष़ में अमीरुल मोमिनीन व सय्यदुल मुह़द्दिष़ीन थे। रिवायत और दरायत दोनों में इमामे फ़न थे। अल जामिउ़स्सह़ीह़ को किताबुत्तौह़ीद पर ख़त्म करना भी ह़ज़रत इमाम की दिक़्क़ते नज़र है। फिर तौह़ीद के ज़ैल में अस्मा व सिफ़ाते इलाही का बयान करना और मुअ़तज़िला व जहिमिया व क़द्रिया वग़ैरह फ़िर्क़े बातिला का रद्द करना इस त़रफ़ इशारा है कि तौह़ीद का अ़क़ीदा अपनी वुस्अ़त के लिह़ाज़ से शुरू से आख़िर तक मसलके सलफ़ की त़रफ़ रहनुमाई करता है। किताबो सुन्नत में अल्लाह पाक के लिये जो सिफ़ात मज़्कूर हुई हैं उनको बग़ैर तावील व तक्फ़ीफ़ बिला चूँ चरा तस्लीम करना इक़्तिज़ा-ए-तौह़ीद है। मसला **इस्तवा अ़लल अ़र्श नुज़ूल व सुऊ़द व कलाम व सिमअ़ व बस़र व**

यद व कफ़ व साक़ वजह इन सबके लिये एक ही उसूल मसलके सलफ़ है कि **मा'नाहु मा'लूम व कैफ़िय्यतुहू मज्हूतुन वस्सवालु अन्हु बिदअतुन.**

अल्ग़र्ज़ किताबुत्तौहीद पर जामेउस्सहीह को ख़त्म करना और आख़िर में **वल्वज़्नु यौमिइज़िनिल हक़्कु** के तहत हदीष़ **कलिमतानि हबीबतानि इलर्रहमानि ख़फ़ीफ़तानि अलल्लिसानि ष़कीलतानि फ़िल्मीज़ानि.** अल्अख़ पर किताब का ख़त्म अक़ाइदे हक़्क़ा की तक्मील पर लतीफ़ इशारा है। तअज्जुब है दौरे हाज़िर के उन मुहक़्क़िक़ीन पर जिनकी निगाहों में हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) दिरायते हदीष़ से महज़ कोरे नज़र आते हैं जो हज़रत इमाम को मुज्तहिदे मुत्लक़ तस्लीम करने के लिये तैयार नहीं। सच है,

गर न बीनद बरोज़ शज्रर-ए-चश्म, चश्म-ए-आफ़ताब रा चे गुनाह

तर्जुमा उर्दू मे अल्फ़ाज़ की रिआयत को बामुहावरा तर्जुमा में अदा करने की कोशिश की गई है। तशरीहात के माख़ूज़ कुतुबे शुरूह अरबी व फ़ारसी व उर्दू हैं। ख़ास तौर पर मौलाना वहीदुज़्ज़माँ (रह.) के तर्जुमा व हवाशी को ज़्यादा सामने रखा गया है। फिर भी सह्व व निस्यान इंसान की ख़ामी है इसीलिये फ़ाज़िल हज़रात दरगुज़र की नज़र से इस्लाह फ़र्माएं ताकि आइन्दा छपने पर पूरी तवज्जह से काम लिया जा सके।

या अल्लाह! आज मुबारकतरीन साअत रमज़ानुल मुबारक 1398 हिजरी में तेरे हबीब मुहम्मद मुस्तफ़ा (ﷺ) के पाकीज़ा मुक़द्दस इर्शादाते गिरामी के इस अज़ीम ज़ख़ीरा को ख़त्म करने की सआदत हासिल कर रहा हूँ जो महज़ सिर्फ़ तेरे ही फ़ज़्लो करम का सदक़ा है वरना मैं तेरा हक़ीरतरीन गुनहगार बन्दा हर्गिज़ इस ख़िदमत का अहल न था। मैं तेरा शुक्र अदा करने से क़ासिर हूं कि मैं महज़ तेरी तौफ़ीक़ और तेरी ग़ैबी नुसरत व ताईद से इस अज़ीम ख़िदमत की तक्मील हुई।

या अल्लाह! तू ही बेहतर जानता है कि इस ख़िदमत की अंजामदेही में मुझसे कहाँ कहाँ लग़्ज़िश हुई होगी, तेरी और तेरे हबीब (ﷺ) की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ कहाँ कहाँ अश्हब क़लम ने ठोकरें खाई होंगी। उन सबके लिये तुझसे माफ़ी का उम्मीदवार हूं बेशक तू बख़्शने वाला मेहरबान है।

या अल्लाह! निहायत ही आजिज़ी के साथ इस अज़ीम ख़िदमत को तेरी बारगाहे आलिया में पेश करता हूँ तू क़ुबूल फ़र्माकर उसे क़ुबूले आम अता कर दे और जिन जिन हाथों में ये ज़ख़ीरा पहुँचे उनको उसे बग़ौर मुतालआ करने और हिदायाते रसूले करीम (ﷺ) पर अमल करने की सआदत अता फ़र्मा।

या अल्लाह! इस ख़िदमते अज़ीम का ष़वाब अमीरुल मोमिनीन फ़िल हदीष़ हज़रत सय्यदना व मौलाना मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी (रह.) को पहुँचाइयो और मेरे तमाम असातिज़ा-ए-किराम जिनका ता'ल्लुक़ सिलसिला-ए-सनद के साथ है और जिन जिनसे मुझको रस्मी व ग़ैर रस्मी तौर पर इल्मी और अमली व रूहानी व क़ल्बी फ़ैज़ हासिल हुआ है जो तेरी रहमत में दाख़िल हो चुके हैं और जो बक़ैदे हयात मौजूद है। मेरे तमाम अकाबिर उलमा-ए-किराम जो हरमैन शरीफ़ैन मे हों या बर्रे सग़ीर हिन्द व पाक में उन सबको उसके ष़वाबे अज़ीम से हिस्सा वाफ़िर बख़्श दीजियो फिर मेरे माँ बाप औलाद, अइज़्ज़ा व अक़ारिब फिर मेरे तमाम मुआविनीने किराम व शाऐक़ीने इज़ाम जिनकी फ़ेहरिस्त तेरे इल्म में है, उन सबको उसका पूरा पूरा ष़वाब न सिर्फ़ मुआविनीने किराम बल्कि उनके वालिदैन और तमाम बुज़ुर्गान को उसके ष़वाब में भरपूर तौर पर शिर्कत अता फ़र्माइयो। हम सबको क़यामत के दिन इस ख़िदमत के सिला में जन्नतुल फ़िरदौस में दाख़िला नसीब कीजियो। और हम सबको या अल्लाह! अपने और अपने हबीब (ﷺ) के दीदार से मुशर्रफ़ फ़र्माईयो। आप (ﷺ) के दस्ते मुबारक से जामे कौष़र और आपकी शफ़ाअते कुबरा बख़्शिश दीजियो। और हज़रत इमाम मुहम्मद बिन इस्माईल बुख़ारी (रह.) के जलवा में बार-बार बारगाहे रिसालते मआब (ﷺ) में रसाई नसीब कीजियो।

या अल्लाह! मुकर्रर बसद ख़ुशूअ व ख़ुज़ूअ तेरे दरबार में दस्त दुआ दराज़ करता हूँ कि मेरे तमाम मुआविनीने इज़ाम को दोनों जहान की बरकतों से मालामाल कर, वो मुआविनीन जिनके तआवुन से इस अज़ीम ख़िदमत की तक्मील हुई है।

या अल्लाह! इस मुबारक किताब का मुतालआ करने वाले तमाम मेरे भाईयों बहनों को इसकी क़द्र करने और इस

पर अमल पैरा होने की सआदत फ़र्मा और उन सबको तौफ़ीक़ दे कि वो अपनी नेक दुआओं मे मुझ नाचीज़ ख़ादिम को मुश्फ़िक़ाना तौर पर याद रखें और मेरी नजात और बख़्शिश के लिये दिल की गहराइयों से दुआ करें। **रब्बना तक़ब्बल मिन्ना इन्नक अन्तस्समीउल अलीम व तुब अलैना इन्नका अन्तत्तव्वाबुर्रहीम।**

ज़रूरत तो न थी मगर बुज़ुर्गाने सलफ़ रहिमहुमुल्लाह अज्मईन की इक़्तिदा में अर्ज़ गुज़ार हूँ कि इस मुबारक किताब की सनदे आलिया पहले मुझको हज़रत उस्ताज़ मौलाना अबू मुहम्मद अब्दुल वह्हाब साहब मुल्तानी सदरी देहलवी (रह.) से हासिल हुई। मरहूम के बाद हज़रत उस्ताज़ मौलाना अबू मुहम्मद अब्दुल जब्बार साहब शैख़ुल हदीष जामिआ सलफ़िया शकरादा मैवात से शर्फ़े दर्स हासिल हुआ। अल्लाह आपको शिफ़ा-ए-कामिल अता फ़र्माए और आपके फ़ुयूज़ का सिलसिला मज़ीद दराज़ करे (आमीन)। हज़रत के बाद बैहक़ी दौराँ हज़रत शैख़ अल्लामा मौलाना अबू सईद शर्फ़ुद्दीन मुहद्दिष देह्लवी (रह.) से शर्फ़े तलम्मुज़ हासिल हुआ जिनके मनाक़िब बयान करने से मेरी ज़ुबान और क़लम क़ासिर है जो बलदे कराची के क़ब्रिस्तान में आराम फ़र्मा हैं। **ताबल्लाहु षराहु व जअलल जन्नत मष्वाहू** (आमीन) उनके बाद मक्कतुल मुकर्रमा में शैख़ुल हरमैन शरीफ़ैन हज़रत मौलाना शैख़ अब्दुल हक़्क़ मुहद्दिष बहावलपूरी षुम्मल मक्की से ब तक़रीब हज्जे मुबारक 70 ईस्वी शर्फ़े इजाज़त हासिल हुआ जिसका पूरा अरबी मतन बुख़ारी शरीफ़ के पारा 10 के साथ मत्बूआ है, उस हज्ज में रू बरू का'बा शरीफ़ हज़रत मौलाना अब्दुस्सलाम बस्तवी षुम्मदेह्लवी (रह.) से समाअत करके शर्फ़े तलम्मुज़ किया **तशब्बहू इल्लम तकूनू मिष्लहुम इन्नत्तशब्बुह बिल्किरामि फ़लाहुन.**

इन तमाम असातिज़ा-ए-इज़ाम को बिलवास्ता उस्ताज़ुल कुल्ल फ़िलकुल्लि हज़रत मौलाना सय्यद मुहम्मद नज़ीर हुसैन साहब मुहद्दिष देह्लवी(रह.) से शर्फ़े तलम्मुज़ हासिल हुआ और मरहूम शैख़ को हज़रत मौलाना मुहम्मद इस्हाक़ साहब (रह.) मुहाजिरे मक्का से शर्फ़े तलम्मुज़ हासिल हुआ उनको हज़रत मौलाना शाह अब्दुल अज़ीज़ साहब मुहद्दिष देहलवी (रह.) से उनको हज़रत हुज्जतुल हिन्द शाह वलीउल्लाह मुहद्दिष देहलवी (रह .) से शर्फ़े सनद हासिल है। आगे सनद मशहूर मत्बूआ हज़रत हुज्जतुल हिन्द की मत्बूआत में मौजूद है।

उलाइक आबाइ फजिअनी बिमिष्लिहिम इज़ा जमअतना या जरीरल मजामिउ

अल्लाह पाक महशर में तमाम बुज़ुर्गाने सलफ़े सालिहीन का, साथ नसीब फ़र्माए **व सल्लल्लाहु अला ख़ैर ख़ल्क़िही मुहम्मद व अला आलिही व अस्हाबिही अज्मईन व आख़र दअवाना अनिल हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन। आमीन षुम्म आमीन व रहिमल्लाहु अब्दन क़ाल आमीन।**

ख़ादिम,

मुहम्मद दाऊद राज़ अस्सलफ़ी

तारीख़े तहरीर 19 रमज़ानुल मुबारक 1397 हिजरी

मुक़ीम हाल जामेअ अहले हदीष

बदल-ए-दारुस्सुरूर बेंगलौर

हर सहुल्लाहु इला यौमिन्नुशूर।

दुआइया कलिमात

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम.

'ल क़द काना लकुम फ़ी रसूलुल्लाहि उस्वतुन हसनः'

(तर्जुमा) **'दरहक़ीक़त तुम्हारे लिये अल्लाह के रसूल (ﷺ) में बेहतरीन नमूना है।'** (सूरह अल अहज़ाब : 21)

अल्लाह तआला ने अपने नबी (ﷺ) को तारीख़ (इतिहास) का सबसे बेहतरीन इन्सान बनाकर इन्सानी नस्ल पर सबसे बड़ा एहसान फ़र्माया है। इस तरह मा'लूम तारीख़ में एक ऐसा बुलन्दतरीन मीनार खड़ा कर दिया है कि अल्लाह पर ईमान रखने वाला जिस तरफ़ भी नज़र डाले वो आप (ﷺ) को देख ले। वो जब अपने रहनुमा की तलाश में निकले तो उसकी नज़र सबसे पहले आप (ﷺ) पर पड़े। वो जब हक़ का रास्ता जानना चाहे तो आप (ﷺ) का बुलन्द व बाला वजूद उसको सबसे पहले अपनी तरफ़ खींचे।

आप (ﷺ) सारी इन्सानियत के लिये सिर्फ़ रहमत ही नहीं बल्कि कामयाब व असल नमूना या'नी आदर्श भी हैं। रसूलुल्लाह (ﷺ) की ज़िन्दगी का एक-एक पहलू और आप (ﷺ) का एक-एक क़ौल, भटकती हुई इन्सानियत के लिये मशअले-राह है। ये तमाम क़ौल और अमली ज़िन्दगी के गोशे अहादीष की किताबों में महफ़ूज़ हैं। इसलिये आप (ﷺ) की सुन्नत व अहादीष का मुतालआ हमारे लिये निहायत ज़रूरी है। हदीष का मुतालआ दरअसल क़ुर्आन की तशरीह, उसकी वज़ाहत (Detail) है और उसके अमली पहलू का मुतालआ है। हक़ीक़त यह है कि क़ुर्आन की उसूली ता'लीमात हदीष के मतन ही से तफ़्सीली तौर पर समझ में आती है। हदीष की मदद के बग़ैर क़ुर्आन को समझना मुमकिन ही नहीं।

हदीष और सुन्नत में मौजूदा ज़माने के लिये निहायत कामयाब रहनुमाई मौजूद थी। मगर हमारे वो उलमा, जिनका ज़हन रिवाज़ी, फ़िक़ही फ्रेमवर्क में अटका रहा। उसका यह नाक़ाबिले-तलाफ़ी नुक़्सान हुआ कि सुन्नतो-अहादीष पर मस्लक-परस्ती की गर्द व गुबार की तहें छाई रहीं और मिल्लत, हदीष की सहीह और आफ़ाक़ी मा'नवियत को दर्याफ़्त न कर सकी और दूसरी ख़ुदसाख़्ता किताबें उम्मत को जदीद हालात के लिहाज़ से सहीह शरई रहनुमाई देने में नाकाम रहीं।

इन तमाम बातों को ध्यान में रखते हुए अहादीष की तमाम किताबों की इमाम और हदीष की सबसे मुस्तनद किताब सहीह बुख़ारी के सबसे सहीह तर्जुमे (दाऊद राज़ रह.) का हिन्दी वर्ज़न करने का ख़याल **'जमइय्यत अहले हदीष जोधपुर-राजस्थान'** के ज़हन में आया। **तीन साल की दिन-रात की मेहनत** फल आठवीं और आख़री जिल्द की शक्ल में आज आपके हाथ में है। इससे पहले एक के बाद दूसरी, सात जिल्दें मंज़रे-आम पर आकर आपकी मक़बूलियत का शरफ़ हासिल कर चुकी है। मैं समझता हूँ कि हमारे मुल्क में सहीह बुख़ारी के उर्दू तर्जुमे का हिन्दी वर्ज़न पहली कोशिश है जो जमइय्यत अहले हदीष जोधपुर के हाथों अमल में आई।

मग़रिबी राजस्थान और ख़ास तौर पर जोधपुर शहर, जो उर्दू व अरबी ज़बान के लिहाज़ से ख़ुश्क पड़ा है, वहाँ सहीह बुख़ारी जैसी मुस्तनद किताब की हिन्दी में इशाअत रेगिस्तान में दरया बहाने के बराबर है। इंशाअल्लाह! इस दरया से हर प्यासा सैराब होगा। इस मेहनत में लगने वाले तमाम रूफ़का, मुतर्जिम और ख़ास तौर पर जिस शख़्सियत के भी ज़हन में यह नेक ख़याल आया उन सबके लिये यह कोशिश आप (ﷺ) की शिफ़ाअत का ज़रिया बनेगी।

मैं जमइय्यत अहले हदीष का एक अदना सा कारकुन हूँ। मुझे जमइय्यत के नज़्म से मुकम्मल इत्तिफ़ाक़ है। मैं ज़िन्दगी में क़ुर्आन व सुन्नत की रहनुमाई का क़ाइल हूँ। अल्लाह तआला हमें रिया व नमूद से बचाए और जमइय्यत अहले हदीष जोधपुर के लिट्रेचर की इशाअत के सफ़र को इसी तरह जारी रखे। आमीन!

दुआओं का तालिब,

मास्टर अय्यूब खाँ